

IHYAUL ULOOM, JILD-1 (HINDI)

जिल्द : 1



इह्याउल उलूम (मूतर्जम)

-: मुसनिफ़ :-

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम

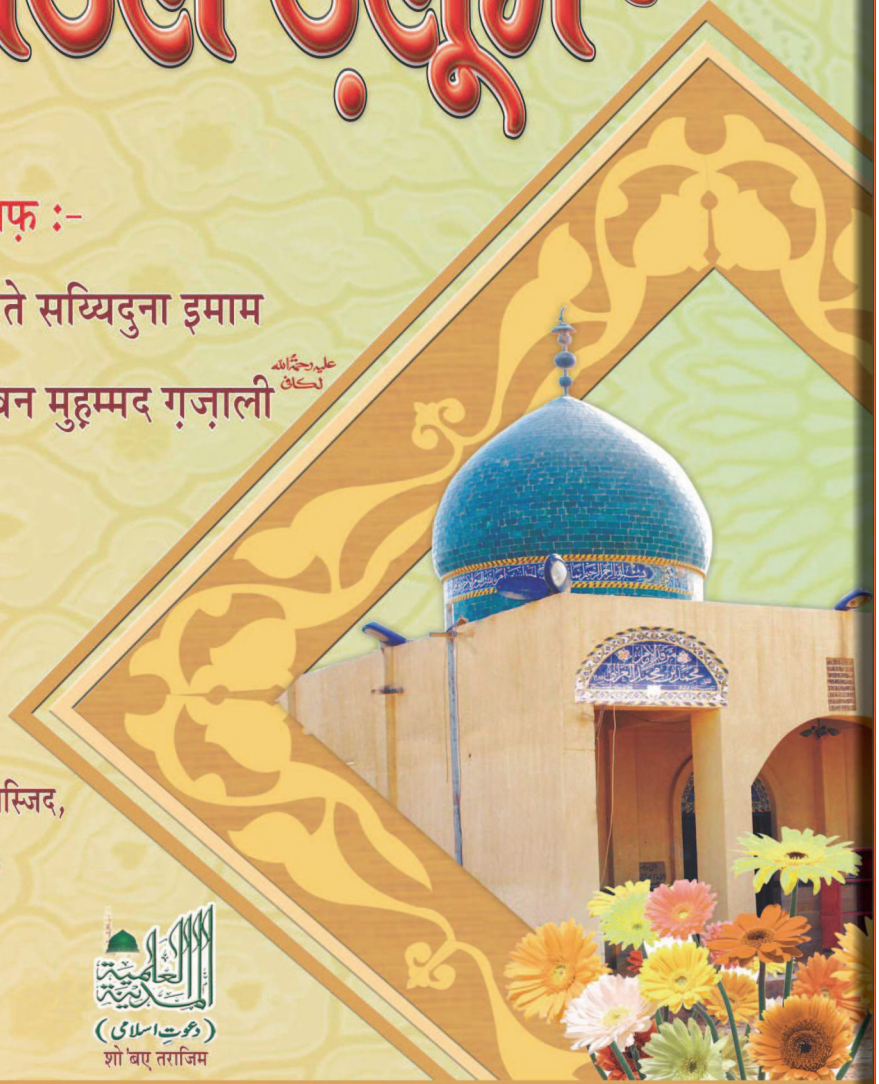
मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عليه السلام
لکھنؤ

उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद,

देहली -6 (011) 23284560

مکتبۃ الدین
(دعوتِ اسلامی)
MC 1286

دعوتِ اسلامی
(دعوتِ اسلامی)
शो'बए तराजिम



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَذْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **अब्बाह** **عَزَّوَجَلَّ** ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले ।



तालिबे ग़मे
मदीना
बकीअ व
मग़फ़िरत

13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(مُسْتَطَرَف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

(अव्वल आख़िर एक एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या 'नी इस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر ج ٥ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त्बाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

हजरते अब्दुल्ला मा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादरी रज़वी رحمۃ اللہ علیہ का एक अहम मक्तूब

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّ وَجَلَّ

अल्लाह

तालिबे ग़मे
मदीना
व बर्काअ
व मगाफिर



०३-०४-२०१२

“हलाल व हक़ाम की पहचान के लिये इह्याउल उलूम इस्लाम की आ'ला तरीन कुतुब में से है”

(फ़रमाने अल्लामा इराक़ी)

“अगर तमाम उलूम नापैद हो जाएं तो मैं इह्याउल उलूम से सब को निकाल लूंगा”

(फ़रमाने इमाम काज़रूनी)

“अगर काफ़िर इह्याउल उलूम की वरक़ गरदाती कर ले तो मुसलमान हो जाए”

(फ़रमाने इमाम सक्काफ़)

इह्याउल उलूम मुतर्जिम (जिल्द:1)

—: मुसन्निफ़ :—

हुज्जतुल इस्लाम हज़रते शय्यिदुना

इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي

(अल मुतवफ़्फ़ा सि. 505 हि.)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(शो'बए तराजिम कुतुब)

—: नाशिर :—

मक्तबतुल मदीना, देहली – 6

والصلوة والسلام على من لا نبي بعده
وعلم الناس بالصواب يا حبيب الله

जुम्ला हुकूक ब हक्के नाशिर महफूज हैं

नाम किताब : इह्याउल उलूम मुतर्जम (जिल्द : 1)

मुसन्निफ़ : हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद

बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (अल मुतवफ़्फ़ा सि. 505 हि.)

मुतर्जिमीन : मदनी उ-लमा (शो'बउ तशजिम कुतुब)

सिने त़बाअत : 12, रबीउल अव्वल, 1435 हि.

-: मक्तबतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

- ✽... देहली : 421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद, देहली-6 फ़ोन : 011-23284560
- ✽... मुम्बई : 19-20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
- ✽... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 9326310099
- ✽... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, (0145) 2629385
- ✽... हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - 08363244860
- ✽... हैदराबाद : मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, (040) 2 45 72 786

E.mail : ilmia26@yahoo.com

www.dawateislami.net

किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ जरूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये।

इल्म में तरक्की होगी । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

[illegible]

याद द्वाशत

दौराने मुतालआ जरूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़्हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये।

इल्म में तरक्की होगी । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

[illegible]

मजलिसे तराजिम (हिन्दी-गुजराती) दा'वते इस्लामी

الحمد لله الذى تबलीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिया" ने येह किताब "इह्याउल उलूम" उर्दू ज़बान में पेश की है। मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी" में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर या'नी ज़बान (या'नी बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (या'नी लिखाई) हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है।

इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त करते हुए दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

❶ कमो बेश दस⁽¹⁰⁾ मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोज़िंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तकाबुल (4) तकाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

❷ क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतिआज़ (या'नी फ़र्क) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है जिस की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये तराजिम चार्ट का बग़ौर मुतालआ फ़रमाएं।

❸ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़फ़ुज़ के ऐन मुताबिक़ ही हिन्दी-जोडणी रखी गई है और बतौर ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़्ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (ज़म वाला) हर्फ़ को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर के नीचे खोड़ा (؁) इस्ति'माल किया गया है। मफलन उ-लमा (عَلَمَاء) में "-ल" मफ़तूह और रहम (رَحْمَة) में "हू" साकिन है।

❹ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (اَ) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। जैसे : दा'वत (دَعْوَت)

❺ अरबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अरबी किताबों के हवालाजात भी अरबी ही रखे गए हैं जब कि "صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم", "عَزَّ وَجَلَّ", "رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ" और "رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ" वगैरा को भी अरबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, e-mail या sms) मुत्तलअ फ़रमा कर षवाब कमाइये।

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ٹ	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ز	ज़ = ز	ढ = ڈ	ड = ڈ	र = ر	ज़ = ذ
अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क = ق	फ = ف	ग = غ
य = ی	ह = ه	व = و	ن = ن	م = م	ل = ل
ن = ن	و = و	ف = ف	ی = ی	و = و	آ = آ

उर्दू से हिन्दी तराजिम चार्ट

-: राबिता :-

मजलिसे तराजिम, मक्तबतुल मदीना

(दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,

नागर वाड़ा, मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. + 91 9327776311

E-mail: translation.baroda@dawateislami.net

जिम्नी फेहरिस्त

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
इस किताब को पढ़ने की 23 "नियतें"	5	पहली फ़स्ल : बा'ज उलूम के मजमूम होने का सबब	119
अल मदीनतुल इल्मिया का ता'रूफ़ (अज़ अमीर अहले सुन्नत)	6	दूसरी फ़स्ल : अल्फ़ाज़े उलूम में तब्दीली का बयान	126
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	तीसरी फ़स्ल : अच्छे उलूम की क़ाबिले ता'रीफ़ मिक्दार का बयान	148
तआरुफ़े मुसनिफ़	14	बाब नम्बर 4 : लोगों के इख़्तिलाफ़ में पढ़ने की वजह, मुनाज़रे	
इब्तिदाइय्या	36	की आफ़ात की तफ़्सील और इस के जवाज़ की शराइत्	155
इल्म का बयान	42	पहली फ़स्ल : मुनाज़रों को सहाबा के मशवरों और अस्लाफ़	
बाब नम्बर 1 : इल्म, ता'लीम और तअल्लुम की		के मुजाकरों से मुशाबहत देना धोका है	157
फ़ज़ीलत और इस के अक़ली व नक़ली दलाइल का बयान	42	दूसरी फ़स्ल : मुनाज़रे की आफ़ात और उस से जनम लेने	
पहली फ़स्ल : इल्म की फ़ज़ीलत	42	वाली हलाकत ख़ैज़ आदात	164
दूसरी फ़स्ल : इल्म हासिल करने की फ़ज़ीलत	55	बाब नम्बर 5 : शागिर्द और उस्ताज़ के आदाब	173
तीसरी फ़स्ल : इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत	59	पहली फ़स्ल : तालिबे इल्म के आदाब	173
चौथी फ़स्ल : इल्म की फ़ज़ीलत पर अक़ली दलाइल	66	दूसरी फ़स्ल : राहनुमा उस्ताज़ के फ़राइज़	190
बाब नम्बर 2 : महमूद व मजमूम उलूम और इन की अक़साम व अहक़ाम	71	उस्ताज़ के आदाब	191
पहली फ़स्ल : फ़र्जे ऐन इल्म का बयान	71	बाब नम्बर 6 : इल्म की आफ़ात, उ-लमाए आख़िरत	
दूसरी फ़स्ल : फ़र्जे किफ़ाय़ा इल्म का बयान	78	और उ-लमाए सू की अलामात का बयान	201
तीसरी फ़स्ल : इल्मे तरीके आख़िरत की अक़साम	87	पहली फ़स्ल : उ-लमाए सू की निशानियां	201
सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ के फ़ज़ाइलो मनाकिब	100	दूसरी फ़स्ल : उ-लमाए आख़िरत की 12 निशानियां	207
सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ के फ़ज़ाइलो मनाकिब	111	बाब नम्बर 7 : अक़ल, इस की अज़मत, हक़ीक़त और अक़साम का बयान	283
सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ के फ़ज़ाइलो मनाकिब	115	पहली फ़स्ल : अक़ल की अज़मत	283
मनाकिबे इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम शौरी	118	दूसरी फ़स्ल : अक़ल की हक़ीक़त और इस की अक़साम	289
बाबा नम्बर 3 : उन मजमूम उलूम का बयान जिन्हें लोग अच्छा समझते हैं	119	तीसरी फ़स्ल : अक़ल के ए'तिबार से इन्सानो नुफूस में तफ़ावुत	296

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
अक़ाइद का बयान	301	बाब नम्बर 3 : ज़ाहिरी नजासतों से पाकी हासिल करना	431
पहली फ़स्ल : पहले इस्लामी रुकन कलिमए शहादत		नमाज़ का बयान	454
के मुतअल्लिक अक़ीदए अहले सुन्नत की वज़ाहत	301	बाब नम्बर 1 : नमाज़, सुजुद, जमाअत और अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल	455
कलिमए शहादत के पहले जुज़ अक़ीदए तौहीद की वज़ाहत	302	पहली फ़स्ल : अज़ान की फ़ज़ीलत	455
कलिमए शहादत के दूसरे जुज़ की वज़ाहत	306	दूसरी फ़स्ल : फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत	457
दूसरी फ़स्ल : मरहूला वार रहनुमाई करने की वजह		तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ पूरा करने की फ़ज़ीलत	460
और ए'तिक़ाद के दर्जात का बयान	310	चौथी फ़स्ल : नमाज़े बा जमाअत के फ़ज़ाइल	462
इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उलमा की आरा	313	पांचवीं फ़स्ल : फ़ज़ाइले सजदा	465
तीसरी फ़स्ल : الرِّسَالَةُ الْقُدْسِيَّةُ فِي قَوَاعِدِ الْعُقَايِدِ	346	छटी फ़स्ल : खुशूअ की फ़ज़ीलत	467
ईमान के चार बुन्यादी अरकान	346	सातवीं फ़स्ल : मस्जिद और जाए नमाज़ की फ़ज़ीलत	474
चौथी फ़स्ल : ईमान और इस्लाम के माबैन इत्तिסाल व		बाब नम्बर 2 : ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यात व आदाब का बयान	477
इन्फ़िसाल, इन के घटने बढ़ने और अस्लाफ़ का इस में		पहली फ़स्ल : नमाज़ में ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़िय्यात और	
(إِنْ شَاءَ اللَّهُ) के साथ) इस्तिषना करने की वजह का बयान	365	तकबीरे तहरीमा से इब्तिदा करना	477
त़हारत का बयान	396	दूसरी फ़स्ल : ममनूआते नमाज़	487
बाब नम्बर 1 : नजासत से त़हारत हासिल करना	405	तीसरी फ़स्ल : फ़राइज़ व सुनन में फ़र्क़	491
पहली फ़स्ल : ज़ाइल की जाने वाली नजासत का बयान	405	बाब नम्बर 3 : आ'माले क़ल्ब की बातिनी शराइत्	495
दूसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़	408	पहली फ़स्ल : खुशूअ, ख़ुजूअ और हुजूरिये क़ल्ब की शराइत्	495
तीसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करने के तरीक़े	409	दूसरी फ़स्ल : नमाज़ मुकम्मल करने वाले बातिनी उमूर	501
बाब नम्बर 2 : नजासते हुक्मी से पाकी हासिल करना	410	तीसरी फ़स्ल : हुजूरे क़ल्ब में नफ़अ बख़्श दवा	507
क़ज़ाए हाज़त के आदाब	410	चौथी फ़स्ल : नमाज़ में हुजूरिये क़ल्ब की तफ़सील	512
वुजू का तरीक़ा	416	नमाज़ की शराइत् व फ़राइज़	512
गुस्ल का तरीक़ा	427	पाचवीं फ़स्ल : खुशूअ, ख़ुजूअ से नमाज़ पढ़ने वालों की हिकायात	529
तयम्मूम का बयान	429	बाब नम्बर 4 : इमामत का बयान	535

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
पहली फ़स्ल : इमाम पर नमाज़ से पहले के नीज़ क़िराअत, अरकान और सलाम के बा'द के लाज़िम उमूर	535	शबे जुमा'रात के नवाफ़िल	612
दूसरी फ़स्ल : क़िराअत में इमाम की ज़िम्मेदारी	542	शबे जुमुआ के नवाफ़िल	612
तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ में इमाम व मुक़्तदी की ज़िम्मेदारियां	545	शबे हफ़्ता के नवाफ़िल	613
चौथी फ़स्ल : सलाम फेरने के बा'द इमाम की ज़िम्मेदारी	548	माहे रजबुल मुरज्जब के नवाफ़िल	618
बाब नम्बर 5 : जुमुअतुल मुबारक का बयान	550	माहे शा'बानुल मुअज़्ज़म के नवाफ़िल	619
पहली फ़स्ल : जुमुआ की फ़ज़ीलत	550	(1) ग्रहन की नमाज़	620
दूसरी फ़स्ल : जुमुआ की शराइत	554	(2) नमाज़े इस्तिस्का	621
तीसरी फ़स्ल : आदत की तरतीब के मुताबिक़ आदाबे जुमुआ का बयान	557	(3) नमाज़े जनाज़ा	622
चौथी फ़स्ल : जुमुआ की सुन्नतें और आदाब	573	(4) तहिय्यतुल मस्जिद	625
बाब नम्बर 6 : मुतफ़रिक् मसाइल का बयान	584	(5) तहिय्यतुल वुजू	627
बाब नम्बर 7 : नवाफ़िल का बयान	594	(6) घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त के नवाफ़िल	627
इतवार के नवाफ़िल	605	(7) नमाज़े इस्तिख़ारा	628
पीर के नवाफ़िल	606	(8) नमाज़े हाज़त	629
मंगल के नवाफ़िल	607	(9) सलातुत्तस्बीह और इस की फ़ज़ीलत	631
बुध के नवाफ़िल	607	ज़कात का बयान	635
जुमा'रात के नवाफ़िल	608	पहली फ़स्ल : ज़कात की अक़्साम और इस के वुजूब के अस्बाब	637
जुमुआ के नवाफ़िल	608	दूसरी फ़स्ल : ज़कात की अदाएगी और इस की ज़ाहिरी व बातिनी शराइत	646
हफ़्ते के नवाफ़िल	609	तीसरी फ़स्ल : ज़कात लेने वाले, मुस्तहिक़ होने के	
शबे इतवार के नवाफ़िल	609	अस्बाब और क़ब्जे के वज़ाइफ़	672
शबे पीर के नवाफ़िल	610	चौथी फ़स्ल : नफ़ली सद्क़ा के फ़ज़ाइल और लेने देने के आदाब	684
शबे मंगल के नवाफ़िल	610	रोज़ों का बयान	700
शबे बुध के नवाफ़िल	611	पहली फ़स्ल : रोज़े के वाजिबात, ज़ाहिरी सुन्नतें और रोज़ा	
		तोड़ने वाले लाज़िम उमूर का बयान	705

मजामीन	सफ़हा नम्बर	मजामीन	सफ़हा नम्बर
दूसरी फ़स्ल : रोज़े के असरार और इस की बातिनी शराइत	712	बाब नम्बर 2 : इस्तिग़फ़ार, दुरूद और दुआ के फ़ज़ाइल व आदाब	907
तीसरी फ़स्ल : नफ़ली रोज़े और इन में वज़ाइफ़ की तरतीब	720	पहली फ़स्ल : दुआ की फ़ज़ीलत	907
हज़ का बयान	726	दूसरी फ़स्ल : दुआ के दस आदाब	908
बाब नम्बर 1 : फ़ज़ाइले हज़ का बयान	727	क़हूत साली के मुतअल्लिक 12 हिक़ायात	919
पहली फ़स्ल : हज़, बैतुल्लाह, मक्का व मदीना के फ़ज़ाइल		तीसरी फ़स्ल : दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत और अज़मते मुस्तफ़ा	924
और मसाजिद की जानिब सफ़र करने का बयान	727	चौथी फ़स्ल : इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत	929
दूसरी फ़स्ल : वुजूबे हज़ की शराइत, अरकान की दुरुस्ती		बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुजुगाने दीन से मन्कूल 16 दुआएं	937
और वाजिबात व ममनूआत का बयान	744	बाब नम्बर 4 : कुरआनो हदीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआएं	952
बाब नम्बर 2 : इब्तिदाए सफ़र से वापसी तक के दस आदाब	753	बाब नम्बर 5 : मुख़लिफ़ मस्नून दुआएं	964
तवाफ़ का तरीक़ा	765	अवराद की तरतीब और शब बेदारी	
बाब नम्बर 3 : हज़ की बारीक़ियां और बातिनी आ'माल	793	की तफ़्सील का बयान	981
तिलावते कुरआन का बयान	821	बाब नम्बर 1 : अवराद की फ़ज़ीलत और तरतीब व अहक़ाम का बयान	983
बाब नम्बर 1 : कुरआन और कारिये कुरआन की फ़ज़ीलत	823	अवराद की तादाद और तरतीब का बयान	989
बाब नम्बर 2 : तिलावत के ज़हिरी आदाब	831	दिन के वज़ाइफ़ की तफ़्सील	989
बाब नम्बर 3 : तिलावत के बातिनी आदाब	846	रात के वज़ाइफ़ का बयान	1014
बाब नम्बर 4 : फ़हमे कुरआन और तफ़्सीर बिराए का बयान	875	अहवाल बदलने से वज़ाइफ़ का बदल जाना	1034
ज़िक़ुल्लाह और दुआओं का बयान	885	बाब नम्बर 2 : क़ियामुल्लैल में आसानी पैदा करने वाले	
बाब नम्बर 1 : कुरआन व हदीष और अक्वाले अस्लाफ़		अस्बाब, शब बेदारी के लिये मुस्तहब रातें, मग़रिब व इशा के	
से ज़िक़ुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान	886	दरमियानी वक़्त और शब बेदारी की फ़ज़ीलत और रात के	
पहली फ़स्ल : ज़िक़ुल्लाह की फ़ज़ीलत	886	अवकात की तफ़्सीम का बयान	1045
दूसरी फ़स्ल : मजालिसे ज़िक़ की फ़ज़ीलत	891	हिक़ायात की फ़ेहरिस्त	1077
तीसरी फ़स्ल : कलिमए तौहीद पढ़ने के फ़ज़ाइल	893	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	1078
चौथी फ़स्ल : الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسُبْحَانَ اللَّهِ और दीगर अज़कर के फ़ज़ाइल	896	माख़ज़ो मराजेअ	1114
पांचवीं फ़स्ल : हकीक़ते ज़िक़ और उस के फ़वाइद	901	अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का तअरूफ़	1119

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

“फै ग़ाने इमाम ग़ानाली ग़ाज़ी रहेंगा” के 23 हुस्फ की निश्चत से इस किताब को पढ़ने की “23 नियतें”

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم
अमल से बेहतर है। (المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج ٦، ص ١٨٥)

दो मदनी फूल : (1) बिगैर अच्छी नियत के किसी भी अमले खैर का षवाब नहीं मिलता।
(2) जितनी अच्छी नियतें ज़ियादा, उतना षवाब भी ज़ियादा।

(1) हर बार हम्द व (2) सलात और (3) तअव्वुज व (4) तस्मिया से आगाज़ करूंगा।
(इसी सफ़हा पर ऊपर दी हुई दो अरबी इबारात पढ़ लेने से चारों नियतों पर अमल हो जाएगा।
(5) रिज़ाए इलाही के लिये इस किताब का अव्वल ता आखिर मुतालआ करूंगा। (6) हत्तल वस्अ
इस का बा वुजू और (7) क़िल्ला रू मुतालआ करूंगा (8) कुरआनी आयात और (9) अहादीषे
मुबारका की ज़ियारत करूंगा। (10) जहां जहां “**अल्लाह**” का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और
(11) जहां जहां “**अश्क़ार**” का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और (12) जहां जहां
किसी सहाबी या बुजुर्ग का नाम आएगा वहां رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ पढ़ूंगा। (13) इस
किताब का मुतालआ शुरू करने से पहले इस के मुअल्लिफ़ को ईसाले षवाब करूंगा।
(14) (अपने ज़ाती नुस्खे पर) इन्दज़रूरत ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा।
(15) (अपने ज़ाती नुस्खे के) “याद दाश्त” वाले सफ़हा पर ज़रूरी निकात लिखूंगा। (16) औलिया की
सिफ़ात को अपनाऊंगा। (17) अपनी इस्लाह के लिये इस किताब के ज़रीए इल्म हासिल करूंगा।
(18) दूसरों को येह किताब पढ़ने की तरगीब दिलाऊंगा। (19) इस हदीषे पाक تَهَادَوْا تَحَابُّوْا या’नी
एक दूसरे को तोहफ़ा दो आपस में महब्बत बढ़ेगी। ﴿مَوْطِاٰمَ مَالِكٍ، الْحَدِيْثُ: ١٧٣١، ج ٢، ص ٤٠٧﴾ पर अमल
की नियत से (एक या हस्बे तौफ़ीक़) येह किताब ख़रीद कर दूसरों को तोहफ़तन दूंगा। (20) इस
किताब के मुतालए का षवाब सारी उम्मत को ईषाल करूंगा। (21) अपनी और सारी दुन्या के लोगों की
इस्लाह की कोशिश के लिये रोज़ाना फ़िक्रे मदीना करते हुए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर किया करूंगा
और हर मदनी (इस्लामी) माह की 10 तारीख़ तक अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवा दिया करूंगा
और (22) आशिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र किया करूंगा। (23) किताबत वगैरा में शर्ई
ग़लती मिली तो नाशिरीन को तहरीरी तौर पर मुत्तलअ करूंगा।

(नाशिरीन वगैरा को किताबों की अग़लात सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता।)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इलिमय्या

अज : शेखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक “दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, एहयाए सुन्नत और इशाअते इल्मे शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अज़मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्द मजालिस का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस “अल मदीनतुल इलिमय्या” भी है जो दा'वते इस्लामी के उ-लमा व मुफ़्तयाने किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- | | |
|-----------------------------|-------------------------|
| ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत | ﴿2﴾ शो'बए तराजुमे कुतुब |
| ﴿3﴾ शो'बए दर्सी कुतुब | ﴿4﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब |
| ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब | ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज |

“अल मदीनतुल इलिमय्या” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीकत, बाइषे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को असरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा’वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इल्मिया” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फरमाए और हमारे हर अमले खैर को जेवरे इख्लास से आरास्ता फरमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें जेरे गुम्बदे खजरा शहादत, जन्नतुल बकीअ में मदफन और जन्नतुल फिरदौस में जगह नसीब फरमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم



रमजानुल मुबारक 1425 हि.

तीन पैसे का ववाल

दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फैज़ाने सुन्नत” सफ़हा 900 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा’वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि दामत बरकतुहुम अलैहि फरमाते हैं: मेरे आका आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن से कर्ज़ की अदाएगी में सुस्ती और झूटे हियल (حِيلٌ) व हुज्जत करने वाले शख्स ज़ैद के बारे में इस्तिफ़सार हुवा तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ ने इरशाद फरमाया: “ज़ैद फ़ासिक व फ़ाजिर, मुर्तकिबे कबाइर, कज़़ाब, मुस्तहिफ़े अज़ाब है इस से ज़ियादा और क्या अलकाब अपने लिये चाहता है! अगर इस हालत में मर गया और दैन (कर्ज़) लोगों का इस पर बाकी रहा, इस की नेकियां उन (कर्ज़ ख़्वाहों) के मुतालबे में दी जाएंगी। क्यूंकर दी जाएंगी (या’नी किस तरह दी जाएंगी। येह भी सुन लीजिये!) तक़रीबन “तीन पैसा” दैन (कर्ज़) के इवज़ (या’नी बदले) सात सो नमाज़ें बा जमाअत (देनी पड़ेगी)। जब इस (कर्ज़ दबा लेने वाले) के पास नेकियां न रहेगी उन (कर्ज़ ख़्वाहों) के गुनाह इस (मकरूज़) के सर पर रखे जाएंगे और आग में फैंक दिया जाएगा।”

(फ़तावा रज़विय्या, जि. 25 स. 69 मुलख़बसन)

पहले इसे पढ़ लीजिये !

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने आलमे दुन्या को वुजूद बख़्शा, इस में किस्म किस्म की मख़्लूक पैदा फ़रमाई। हज़रते इन्सान की तख़लीक़ फ़रमा कर इसे अशरफ़ुल मख़्लूक़ात बनाया। इसे बे शुमार ने'मतों से नवाज़ा। मौत व हयात को पैदा कर के तख़लीक़े इन्सानी का मक़्सद भी बयान फ़रमा दिया ताकि कोई कम अक्ल येह न समझ बैठे कि इन्सान की पैदाइश का मक़्सद महज़ खाना पीना, सोना, जिन्सी ख़्वाहिशात की तक्मील, फ़त्ह व नुस्तर, ग़लबा व इक़्तिदार और दूसरों पर तसल्लुत काइम करना है, येह सोच व नज़रिया बिल्कुल फ़ासिद है क्यूंकि येह ऐसी बातें हैं जो जानवरों में भी पाई जाती हैं तो फिर इस में इन्सान की खुसूसिय्यत क्या मा'ना रखती है। इन्सान की बादशाही व सरफ़राज़ी की वजह येह है कि इसे एक ऐसी सिफ़त अता की गई है जो इस का बुन्यादी कमाल है और वोह है अक्ल, जिस के ज़रीए येह शैतान व नफ़्सानी ख़्वाहिशात पर काबू पा कर दीगर मख़्लूक़ात पर रिफ़अत पाता और मा'रिफ़ते इलाही हासिल करता है। येही वजह है कि अक्ल के दुरुस्त इस्ति'माल के सबब बा'ज़ इन्सान बा'ज़ फ़िरिश्तों से अफ़ज़ल और ग़लत इस्ति'माल के बाइष जानवरों से भी बद तर हो जाते हैं। तख़लीक़े इन्सानी का मक़्सद तो येह था जिसे कुरआने हकीम ने बयान फ़रमाया :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ
(پ ۲، الذّٰر ۵۶)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और मैं ने जिन्न और आदमी इतने ही लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें।

चाहिये तो येही था कि अपने मक़्सद को सामने रखते हुए अक्ल का दुरुस्त इस्ति'माल किया जाता लेकिन इन्सान इस मक़्सद से रू गर्दा है। मगर ऐसे माहोल में कुछ खुश नसीब वोह भी हैं जो इस मक़्सद को पाने के लिये कोशां हैं और इस के लिये हुसूले इल्म के बा'द शारए अमल पर गामज़न हैं मगर येह भी हकीक़त है कि इन में से भी ज़ियादा तर अपने ज़ाहिर को संवारने की काविश में हैं और बातिन की पाकीज़गी की तरफ़ ध्यान नहीं देते। येह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि इल्मो अमल एक दूसरे को लाज़िम व मलज़ूम हैं। जैसा कि हज़रते सय्यिद अली बिन उषमान हजवेरी अल मा'रूफ़ दाता गंज बख़्श رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “अमल बिगैर इल्म के अमल नहीं कहलाता क्यूंकि अमल उस वक़्त तक अमल नहीं बनता जब तक इसे इल्म की ताईद हासिल न हो और अमल का षवाब इल्म ही की वजह से मिलता है, लिहाज़ा अमल बिगैर इल्म के अमल नहीं बल्कि बद अमली है और यूं ही अमल को इल्म से जुदा समझना जहालत है और येह ख़याल करना कि महज़ इल्म अमल से अफ़ज़ल है, दुरुस्त नहीं क्यूंकि अमल के बिगैर इल्म, इल्म नहीं कहलाता और इल्म पर अमल न हो तो हुसूले इल्म का षवाब नहीं मिलता।”⁽¹⁾

मा'लूम हुवा कि इल्मो अमल नागुज़ीर हैं मगर फ़क़त ज़ाहिरी इल्म और ज़ाहिरी अमल हकीकी फ़ाइदा नहीं दे सकता, बातिन की इस्लाह भी ज़रूरी है। जो ज़ाहिर को संवारे लेकिन बातिन गन्दगियों से आलूदा हो तो इस की मिषाल उस शख्स की सी है जो बादशाह को दा'वत देने के बा'द सिर्फ़ अपने घर के बैरूनी हिस्से की सफ़ाई व सुथराई पर तवज्जोह दे मगर अन्दरूनी हिस्से में गन्दगियों के ढेर लगे रहने दे। ऐसे शख्स को कोई भी अक्लमन्द नहीं कहेगा। इसी तरह हुसूले इल्म के बा'द अगर बन्दा सिर्फ़ ज़ाहिर को ख़ूब मुजय्यन व आरास्ता करे और बातिन को न संवारे तो वोह भी अक्ल का दुरुस्त इस्ति'माल करने वाला नहीं कहलाएगा। फिर येह कि जिस क़दर बातिन की इस्लाह और त़हारत व सफ़ाई ज़ियादा होती जाएगी इल्म का नफ़अ भी इसी क़दर बढ़ता जाएगा।

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : “त़हारत के चार दर्जे हैं : (1) ज़ाहिर को नापाकियों, नजासतों वग़ैरा से पाक करना (2) आ'ज़ा को ज़राइम और गुनाह से पाक करना (3) दिल को बुरे अख़्लाक और ना पसन्दीदा ख़स्लतों से पाक करना (4) बातिन को ग़ैरुल्लाह से पाक करना।”

चौथे दर्जे के मुतअल्लिक़ फ़रमाते हैं : “इस से मक्सूद दिल में **अबलाह** عَزَّوَجَلَّ की जलालत व अज़मत का जुहूर और मा'रिफ़ते खुदावन्दी का हुसूल है और बातिन में मा'रिफ़ते इलाही उस वक़्त तक जा गुज़ीं नहीं हो सकती जब तक इसे ग़ैरे खुदा के ख़याल से पाक न कर लिया जाए। नीज़ बन्दा उस वक़्त तक बातिन को मजमूम सिफ़ात से पाक और अच्छी आदात से आबाद नहीं कर सकता जब तक दिल को बुरी आदत से पाक और अच्छे अख़्लाक से मुजय्यन न कर ले और जो शख्स आ'ज़ा को ममनूआत से बचा कर इबादात से मा'मूर न कर ले वोह बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ नहीं हो सकता। लिहाज़ा जब मतलूब काबिले इज़्ज़ो शरफ़ हो तो उस का रास्ता दुश्वार और त़वील होता है और इस में घाटियां ज़ियादा होती हैं और येह महज़ ख़ाम ख़याली है कि बातिन की पाकीज़गी बा आसानी हासिल हो जाएगी।”⁽¹⁾

वाजेह हुवा कि बातिन की इस्लाह व सफ़ाई के लिये मुजाहदात की मशक्क़त बरदाश्त करना, नफ़्स का मुहासबा करना और इस के साथ जिहाद लाज़िम है और येह सब से बड़ा जिहाद है। हुज़ूर रहमते अलम, हादिये बरहक़, मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जिहाद बिन्नफ़्स को जिहादे अक्बर फ़रमाया है, जैसा कि एक रिवायत में है कि “हम जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर (या'नी जिहाद बिन्नफ़्स) की तरफ़ लौटे।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा सय्यिद मुहम्मद बिन मुहम्मद हुसैनी मुर्तजा ज़बैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي इस की शर्ह में फ़रमाते हैं : “जिहाद बिन्नफ़्स से मुराद येह है कि नफ़्स को रिज़ाए इलाही के लिये इबादात पर मजबूर किया जाए और नाफ़रमानी से रोका जाए, इसे जिहादे अकबर इस लिये फ़रमाया गया कि जो अपने नफ़्स से जिहाद नहीं कर सकता उस के लिये ख़ारिजी दुश्मन से जिहाद करना भी मुमकिन नहीं क्यूंकि जो दुश्मन दो पहलूओं के दरमियान है और ग़ालिब है, जब इस से जिहाद नहीं हो पा रहा तो ख़ारिजी दुश्मन से जिहाद क्यूंकर मुमकिन होगा लिहाज़ा ख़ारिजी के मुक़ाबले में बातिनी दुश्मन से जिहाद जिहादे अकबर है।”⁽¹⁾

फिर हकीकत तो येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी का अमल क़बूल फ़रमाता है जिस का बातिन पाक और तक्वा व परहेज़गारी से मुज़य्यन व आरास्ता हो। इरशादे बारी तअ़ाला है :

لَنْ يَسْأَلَ اللَّهُ لُحُومَهَا وَلَا دِمَاءَهَا وَلَكِنْ يَسْأَلُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ

(پ ۱۷، الحج: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के खून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है।

और यूंही इस सिलसिले में येह फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी हमारे लिये मशअले राह है : “إِنَّ اللَّهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صَوْرَتِكُمْ وَلَا إِلَى أَمْوَالِكُمْ وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ” या’नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिर्फ़ तुम्हारी सूरतें और तुम्हारे अमवाल नहीं देखता बल्कि वोह तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आ’माल को भी देखता है।” मतलब येह है कि रब्ब तअ़ाला फ़क़त सूरत नहीं देखता सीरत भी देखता है।⁽²⁾

ज़ेरे नज़र किताब हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद ग़ज़ाली शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي (मुतवफ़्फ़ 505 हि.) की तसव्वुफ़ पर मशहूर व मा’रूफ़ और मो’रकतुल आरा तस्नीफ़ “**احیاء علوم الدین**” مطبوعه: دارالکتب العلمیة بیروت لبنان، ۲۰۰۸ء की पहली जिल्द का तर्जमा है। यूं तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की हर तस्नीफ़ इल्मो इरफ़ान का बेश बहा ख़ज़ाना है मगर इह्याउल उलूम ऐसी किताब है जो अपनी मिषाल आप है। इस का गहरा मुतालआ और फिर बयान कर्दा बातों पर अमल तज़कियए नफ़्स के लिये अकसीर का दर्जा रखता है। इस में रोज़ मर्रा ज़िन्दगी के कमो बेश तमाम ही मुआमलात पर सेर हासिल गुफ़्तगू की गई है और ज़ाहिरी उलूम के साथ साथ बातिनी उलूम को भी बयान किया गया है। अल ग़रज़ कुरआनो सुन्नत की ता’लीमात का निचोड़ और सलफ़े सालेहीन की ज़िन्दगियों का मा हासिल येह किताब इन्सान को “कामिल इन्सान” बनाने में बेहद मुआविन है।

चार जिल्दों पर मुहीत यह अजीमुश्शान किताब आ'माल की चार अक्साम पर मुश्तमिल है, हर जिल्द में एक किस्म के ज़ाहिरी व बातिनी अहकाम मज़कूर हैं। किताब में एक मुकद्दमा, एक ख़ातिमा और 40 अबवाब हैं।

पहली जिल्द में इबादात का ज़िक्र है जिस में दर्जे जैल 10 अबवाब हैं : (1) इल्म का बयान (2) अक़ाइद का बयान (3) तह़ारत का बयान (4) नमाज़ का बयान (5) ज़कात का बयान (6) रोज़े का बयान (7) हज़ का बयान (8) आदाबे तिलावते कुरआन का बयान (9) दुआ व अज़कार का बयान (10) अवराद की तरतीब और अवकात का बयान।

दूसरी जिल्द में आदात का ज़िक्र है जो दर्जे जैल 10 अबवाब पर मुश्तमिल है : (1) आदाबे तअाम का बयान (2) निकाह का बयान (3) रोज़गार के अहकाम का बयान (4) हलाल व हराम का बयान (5) आदाबे सोहबत का बयान (6) गोशा नशीनी का बयान (7) आदाबे सफ़र (8) वजदो समाअ का बयान (9) **أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ** का बयान (10) आदाबे ज़िन्दगी का बयान।

तीसरी जिल्द में मोहलिकात (हलाकत में डालने वाली बातों) का बयान है इस में दर्जे जैल 10 अबवाब हैं : (1) अज़ाइबाते क़ल्ब का बयान (2) रियाज़ते नफ़्स का बयान (3) पेट और नफ़्स की ख़्वाहिशात का बयान (4) ज़बान की आफ़त का बयान (5) गुस्सा, कीना, हसद और इन के नुक्सानात का बयान (6) दुन्या की मज़म्मत का बयान (7) माल की महब्बत और बुख़ल की मज़म्मत का बयान (8) हुब्बे जाह और रियाकारी का बयान (9) तकब्बुर और खुद पसन्दी की मज़म्मत का बयान (10) गुरूर की मज़म्मत का बयान।

चौथी जिल्द में मुनजियात (नजात दिलाने वाले उमूर) का बयान है इस में भी दर्जे जैल 10 अबवाब हैं : (1) तौबा का बयान (2) सब्रो शुक्र का बयान (3) ख़ौफ़ो रजा का बयान (4) फ़क्रो ज़ोहद का बयान (5) तौहीद व तवक्कुल का बयान (6) शौक व महब्बत और उन्स व रिज़ा का बयान (7) निय्यत, इख़्लास और सिद्क का बयान (8) मुराक़बा व मुहासबा का बयान (9) फ़िक्र व इब्रत का बयान (10) मौत और मा बा'दल मौत का बयान।

इस से क़ब्ल इह्याउल उलूम के खुलासे “लुबाबुल इह्या” का तर्जमा बनाम “इह्याउल उलूम का खुलासा” दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे “मक्तबतुल मदीना” से तब्ज़ हो कर अ़वाम व ख़वास में मक़बूल हो चुका है। “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” के अज़ीम जज़्बे के तहत दा'वते इस्लामी की ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती मजलिस “अल मदीनतुल इल्मिय्या” के शो'बए तराजुमे कुतुब (अरबी से उर्दू) के मदनी उ-लमा **كَثَرَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى** ने

इस तर्जमे की सआदत हासिल की है। येह मदनी उ-लमा अपनी मुसलसल काविशों से अब तक (रबीउष्पानी 1433 हि.) 27 अरबी कुतुब के उर्दू में तराजुम पेश कर चुके हैं जो इन्तिखाबे उन्वान और हुस्ने सूरी व मा'नवी के ए'तिबार से मुन्फरिद व मुमताज हैं, इन की फ़ेहरिस्त किताब के आखिर में मुलाहज़ा फ़रमाए। इन तराजुम और पेशे नज़र तर्जमे में जो भी खूबियां हैं यकीनन **रब्बे रहीम** عَزَّوَجَلَّ और उस के **महबूबे करीम** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अताओं, **औलियाए किराम** رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام की इनायतों और शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ की शफ़क़तों और पुर खुलूस दुआओं का नतीजा हैं और जो ख़ामियां हैं इन में हमारी लाशुज़री कोताह फ़हमी का दख़ल है।

अल मदीनतुल इल्मिय्या और इहयाउल उलूम

अल मदीनतुल इल्मिय्या से किसी भी अरबी किताब का तर्जमा कमो बेश 16 मराहिल से गुज़र कर आप के हाथों में पहुंचता है। जिन में तख़ीज, तर्जमा, तकाबुले आयात व तर्जमा, फ़ोरमेटिंग, प्रुफ़ रीडिंग, तफ़्तीशे तख़ीज, मुफ़ीद व नागुज़ीर हवाशी, आयाते कुरआनिय्या की पेस्टिंग, शरई तफ़्तीश और मुशिकल अल्फ़ज़ की तसहील व ए'राब, फ़ाइनल प्रुफ़ रीडिंग वगैरा ऐसे कठिन मराहिल शामिल हैं। पेशे नज़र तर्जमे पर मज़क़ूरा मराहिल के साथ साथ दर्जे ज़ैल उमूर का इल्तिज़ाम किया गया है :

- ﴿1﴾ आयाते मुबारका का तर्जमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ के तर्जमाए कुरआन “**कन्ज़ुल इमान**” से लिया गया है।
- ﴿2﴾ अहादीषे करीमा की तख़ीज अस्ल माख़ज़ से करने की कोशिश की गई है और बाकी हवाला जात में जो कुतुब दस्तियाब हो सकीं उन से तख़ीज की गई है।
- ﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي चूँकि शाफ़ेउल मज़हब हैं इस लिये फ़िक्की ए'तिबार से इख़्तिलाफ़ी मसाइल में हत्तल मक़दूर अहनाफ़ का मौक़िफ़ हाशिये में बयान कर दिया गया है।
- ﴿4﴾ जिन मक़ामात पर इन्तिहाई पेचीदा व मुशिकल अबहाष आई हैं, इन में जहां मुमकिन था वहां आसान अन्दाज़ में बयान कर दिया गया और कहीं इन का खुलासा लिखा गया और जहां मुमकिन न था इन अबहाष को हज़फ़ कर दिया गया है, अहले इल्म अस्ल किताब की तरफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं।
- ﴿5﴾ जहां कहीं लुग़वी अबहाष नफ़िस मज़मून के लिये लाज़िम व मलज़ूम थीं वहां इन्हें बरक़रार रखा गया है वरना हज़फ़ कर दी गई हैं। यूँही रिवायात वगैरा में जहां कहीं तकरार था वहां ब ए'तिबारे ज़रूरत बाकी रखा गया है वरना हज़फ़ कर दिया गया है और येह गिनती के चन्द मक़ामात हैं।

«6» अहले सुन्नत के अकाबिर मुतरजिमीन شَكَرَ اللَّهُ تَعَالَى سَعِيَهُمْ के दस्तयाब उर्दू तराजुम से भी मदद ली गई है।

«7» इह्याउल उलूम की शर्ह “इत्तिहाफुस्सादतिल मुत्तकीन” को बिल इल्तिज़ाम सामने रखा गया है।

«8» अहादीषे मुबारका का तर्जमा करते वक्त अकाबिर मुतरजिमीन अहले सुन्नत के उर्दू तराजुम से भी राहनुमाई ली गई है।

«9» किताब कमो बेश 2300 हवालाजात से मुजय्यन व आरास्ता है।

«10» हत्तल इम्कान आसान और अम फहम अल्फ़ाज़ इस्ति'माल किये गए हैं ताकि ज़ियादा से ज़ियादा इस्लामी भाई मुस्तफ़ीद हो सकें।

«11» अगर कहीं मुश्किल और ग़ैर मा'रूफ़ अल्फ़ाज़ ज़रूरी थे तो उन पर ए'राब लगा कर हिलालैन में मअानी व मतालिब लिख दिये हैं।

«12» कोशिश की गई है कि पढ़ने वालों तक वोही कैफ़ियत पहुंचे जो अस्ल किताब में जल्वे लुटा रही है।

«13» अरबी उनवानात को सामने रखते हुए मुस्तक़िल उर्दू उनवानात काइम किये गए हैं।

«14» रिवायत के मज़मून व मफ़हूम के पेशे नज़र जैली उनवानात का इज़ाफ़ा भी किया गया है।

«15» अलामाते तरकीम (रुमूजे अवकाफ़) का भी ख़याल रखा गया है।

«16» बतौरै वज़ाहत मुफ़ीद व ज़रूरी हवाशी भी तहरीर किये गए हैं।

«17» माख़ज़ो मराजेअ की फेहरिस्त किताब के आख़िर में दी गई है।

«18» किताब की तीन फेहरिस्तें बनाई गई हैं : (1) ज़िमनी (2) तफ़सीली (3) ह़िकायात, ज़िमनी फेहरिस्त आगाज़े किताब में और तफ़सीली व ह़िकायात आख़िर में दी गई है।

बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में दुआ है कि हमें इस किताब को पढ़ने, इस पर अमल करने और दूसरे इस्लामी भाइयों बिल खुसूस उ-लमाए किराम كَثَرَهُمُ اللَّهُ السَّلَام को तोहफ़तन पेश करने की सआदत अता फ़रमाए। नीज़ हमें “अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी काफ़िलों में सफ़र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक्की अता फ़रमाए। أَمِينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो 'बए तराजिमे कुतुब

(मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या)

तआरुफ़े मुशब्बिफ़

नाम व नशब और विलादते बा सआदत :

आप की कुन्यत अबू हामिद, लक़ब हुज्जतुल इस्लाम और नामे नामी, इस्मे गिरामी मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन अहमद तूसी ग़ज़ाली शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى है। आप 450 हि. में खुरासान के ज़िलअ तूस के अलाके त़ाबिरान में पैदा हुए।⁽¹⁾ खुरासान ईरान के मशरिफ़ में वाफ़ेअ एक वसीअ सूबा था। मौजूदा खुरासान में क़दीम खुरासान का निस्फ़ भी शामिल नहीं, कुछ अफ़ग़ानिस्तान और कुछ दीगर ममालिक में शामिल हो चुका है।⁽²⁾

इब्तिदाई हालात :

आप के वालिदे माजिद हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد शहर खुरासान ही में ऊन कात कर बेचा करते थे या'नी पेशे के लिहाज़ से धागे के ताजिर थे, इसी निस्बत से आप का ख़ानदान “ग़ज़ाली” कहलाता है। अभी इमाम साहिब और आप के भाई हज़रते सय्यिदुना अहमद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي कम उम्र ही थे कि 465 हि. में वालिदे मोहतरम विसाल फ़रमा गए। इन्तिक़ाल से पहले इन्होंने ने अपने एक सूफ़ी दोस्त हज़रते सय्यिदुना अबू हामिद अहमद बिन मुहम्मद राज़क़ानी قُدْسُ سِرِّهِ التُّورَانِي को वसिय्यत की थी कि “मेरा तमाम अषाषा मेरे इन दोनों बेटों की ता'लीम व परवरिश पर ख़र्च कर दीजियेगा।” वसिय्यत के मुताबिक़ इन के वालिदे गिरामी का सरमाया इन की ता'लीम व परवरिश पर सर्फ़ कर दिया गया।⁽³⁾

आलिम अवलाद की तमन्ना :

हज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन सुबकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوِي फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के वालिदे माजिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاجِد बड़े नेक इन्सान थे। अपने हाथ की कमाई से खाते या'नी ऊन कात कर फ़रोख़्त करते थे। हज़रते फ़ुक़हाए किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام की मजालिस में हाज़िर होते, उन के साथ अच्छा सुलूक करते हत्तल मक़दूर उन पर

①..... اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٩-

②..... اردو دائره معارف اسلاميه، ج ٨، ص ٩٠٧-

③..... اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٩-

खर्च करते और उन की मजालिस में खौफे खुदा से तज़रूअ व ज़ारी करते और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करते कि “मुझे बेटा अता कर और उसे फ़कीह (अलिम) बना ।” नीज़ इसी तरह मजालिसे वा’ज में हाज़िर होते । वहां भी रो रो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करते कि “मुझे बेटा अता कर और उसे वाइज़ बना ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन की येह दोनों दुआएं क़बूल फ़रमाई । (1)

इल्मी ग़िल्दी

ता’लीम के लिये शफ़र :

इब्तिदाई ता’लीम अपने शहर में ही हासिल की जहां कुतुबे फ़िक्ह हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुहम्मद राज़कानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي से पढ़ीं अभी उम्र शरीफ़ 20 साल से कम ही थी कि (ईरान के मशरिकी शहर) जुरजान तशरीफ़ ले गए वहां हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र इस्माईली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِيِّ की ख़िदमत में कुछ अर्सा रहे । फिर अपने शहर तूस लौट आए 473 हि. में (ईरान के क़दीम शहर) नैशापूर में हज़रते सय्यिदुना इमामुल हरमैन इमाम अब्दुल मलिक बिन अब्दुल्लाह जुवैनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِيِّ (मुतवफ़्फ़ा 478 हि.) की बारगाह में जानूए तलम्मुज़ तै किया और इन से उसूले दीन, इख़्तिलाफ़ी मसाइल, मुनाज़िरा, मन्तिक और हिकमत वग़ैरा में महारते ताम्मा हासिल की.... 478 हि. में हज़रते सय्यिदुना इमामुल हरमैन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के विसाल के बा’द उन की जगह आप को इस मन्सबे आ’ला पर फ़ाइज़ किया गया.....484 हि. में वजीरे निज़ामुल मुल्क ने मद्रसा निज़ामिया बग़दाद के शैख़ुल जामिआ (वाइस चान्सेलर) का ओहदा आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को पेश किया जिसे आप ने क़बूल फ़रमा लिया..... चार साल बग़दाद में तदरीस व तस्नीफ़ में मशगुलिय्यत के बा’द हज़ के इरादे से मक्कए मुअज़्ज़मा रवाना हो गए । बकौल अल्लामा इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ (मुतवफ़्फ़ा 597 हि.) “बग़दाद में आप की मजलिसे दर्स में बड़े बड़े उ-लमाए किराम हाज़िर होते जैसे इमामुल हनाबिला हज़रते सय्यिदुना अबुल ख़त्ताब महफूज़ बिन अहमद (मुतवफ़्फ़ा 510 हि.) और अलिमुल इराक़ व शैख़ुल हनाबिला अली बिन अकील बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा 513 हि.) عَلَيْهِمَا رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى वग़ैरा । येह हज़रात आप से इक्तिसाबे फ़ैज़ करते और आप के बयान पर हैरत का इज़हार करते और आप के कलाम को अपनी किताबों में नक्ल करते ।” (2)489 हि. में दिमिशक़ पहुंचे और कुछ दिन वहां

1.....طبقات الشافعية الكبرى، ج ٦، ص ١٩٤-

2.....المنتظم في تاريخ الملوك والامم، ج ٩، ص ١٦٨-

क़ियाम फ़रमाया । एक अर्सा बैतुल मुक़द्दस में गुज़ारा । फिर दोबारा दिमिशक़ तशरीफ़ लाए और जामेअ दिमिशक़ के मगरिबी मनारे पर ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे में मशगूल हो गए । दिमिशक़ में ज़ियादा तर वक़्त हज़रते सय्यिदुना शैख़ नस्र मक़दमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي की ख़ानकाह में गुज़रता था... मुल्के शाम में 10 साल क़ियाम फ़रमाया, इसी दौरान इहयाउल उलूम (4 जिल्दे), जवाहिरुल कुरआन, तफ़्सीरे याकूतुत्तावील (40 जिल्दे) मिश्कातुल अन्वार वगैरा मशहूर कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाई । फिर हिजाज़, बग़दाद और नैशापूर के दरमियान सफ़र जारी रहा और बिल आख़िर अपने आबाई शहर तूस वापस आ कर इबादत व रियाज़त में मसरूफ़ हो गए और ता दमे आख़िर वा'ज व नसीहत, इबादत व रियाज़त और तसव्वुफ़ की तदरीस में मशगूल रहे ।⁽¹⁾

असातिज़ए किराम :

आप के मशहूर असातिज़ए किराम के अस्माए गिरामी येह हैं : फ़िक़ह में हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अहमद बिन मुहम्मद राज़क़ानी..... हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू नस्र इमाईली हज़रते सय्यिदुना इमामुल हरमैन अबुल मअली इमाम जुवैनी । तसव्वुफ़ में हज़रते सय्यिदुना अबू अली फ़ज़ल बिन मुहम्मद बिन अली फ़ारमज़ी तूसी.... हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ सज्जाज । हदीष में हज़रते सय्यिदुना अबू सहल मुहम्मद बिन अहमद हफ़सी मरवज़ी..... हज़रते सय्यिदुना हाकिम अबुल फ़तह नस्र बिन अली बिन अहमद हाकिमी तूसी.... हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अहमद खुवारी..... हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन यहूया सुज्जाई जौज़नी.....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू फ़ितयान उमर बिन अबुल हसन रवासी दहिस्तानी.....और हज़रते सय्यिदुना नस्र बिन इब्राहीम मक़दसी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) ⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़बैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي (मुतवफ़ा 1205 हि.) “इत्तिहाफ़ुस्सादतिल मुत्तकीन” के मुक़द्दमे में लिखते हैं : “इल्मे कलाम व जदल में हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي के मशाइख़ के बारे में इल्म न हो सका और फ़लसफ़ा में आप का कोई उस्ताज़ न था जैसा कि अपनी किताब “الْمُنْقِذِينَ الضَّلَالِ” में आप ने खुद इस की सराहत फ़रमाई है ।”⁽³⁾

1.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ١١ تا ٩١۔

شذرات الذهب، ج ٤، ص ١٤٤ تا ١٤٥۔

2.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٢٦۔

3.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٢٦۔

तलामिजा :

हुज्जतुल इस्लाम हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के बेशुमार शागिर्द थे जिन में से अकषर मुतबद्दिहिर अल्लिम, फ़कीह, मुहद्दिष, मुफ़स्सीर और मुसन्निफ़ की हैषियत से मा'रूफ़ हैं। चन्द के अस्माए गिरामी येह हैं :

क़ाज़ी अबू नस्र अहमद बिन अब्दुल्लाह ख़मक़री (मुतवफ़्फ़ा 554 हि.)अबुल फ़त्ह अहमद बिन अली हम्बली (मुतवफ़्फ़ा 518 हि.) [मद्रसा निज़ामिया में मुतअद्द उलूम के मुदर्रिस थे] अबू मन्सूर मुहम्मद बिन इस्माईल अत्तारी तूसी (मुतवफ़्फ़ा 486 हि.).....अबू सईद मुहम्मद बिन सा'द नवक़ानी (मुतवफ़्फ़ा 554 हि.).... अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन तूमर्त [इन्हों ने स्पेन में एक अज़ीमुश्शान सल्तनत की बुन्याद रखी].....अबू हामिद मुहम्मद बिन अब्दुल मलिक जवज़क़ानी इस्फ़राइनी.....अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अली इराक़ी बग़दादी (मुतवफ़्फ़ा बा'द 540 हि.)....अबू सईद मुहम्मद बिन अली जावानी कुर्दी.....इमाम अबू सईद मुहम्मद बिन यहूया नैशापूरी (मुतवफ़्फ़ा 548 हि.).....अबू ताहिर इब्राहीम बिन मुतह्हर शैबानी (मुतवफ़्फ़ा 513 हि.) [इमाम साहिब ने एक ख़त में लिखा कि मेरे शागिर्दों में सब से मुमताज़ हैं].....अबुल फ़त्ह नस्र बिन मुहम्मद मरागी सूफ़ी..... अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन नस्र मौसीली (मुतवफ़्फ़ा 552 हि.) अबुल हसन सा'द अल ख़ैर बिन मुहम्मद अन्सारी (मुतवफ़्फ़ा 541 हि.) [येह अल्लामा इब्ने जौज़ी और इमाम समअानी के शैख़ हैं]..... अबू अब्दुल्लाह शाफ़ेअ बिन अब्दुरशीद जीली (मुतवफ़्फ़ा 541 हि.) [येह इमाम इब्ने समअानी के शैख़ हैं].....अबू अमिर दग़श बिन अली नईमी (मुतवफ़्फ़ा 542 हि.).....अबू तालिब अब्दुल करीम बिन अली राज़ी (मुतवफ़्फ़ा 528 हि.) [येह इहयाउल उलूम के हाफ़िज़ थे].....अबू मन्सूर सईद बिन मुहम्मद रज़्ज़ाज़ (मुतवफ़्फ़ा 503 हि.)अबुल हसन अली बिन मुहम्मद जुवैनी सूफ़ी.....अबू मुहम्मद सालेह बिन मुहम्मदअबुल हसन अली बिन मुतह्हर दीनवरी (मुतवफ़्फ़ा 533 हि.) [येह 80 जिल्दों पर मुश्तमिल किताब “तारीख़े दिमिशक़” के अज़ीम मुसन्निफ़ इमाम इब्ने असाकिर के उस्ताज़ व शैख़ हैं].....मरवान बिन अली तन्ज़ी (मुतवफ़्फ़ा 540 हि.).....जमालुल इस्लाम अबुल हसन अली बिन मुस्लिम सुलमी [मुअख़िबुर्रज़िज़ दोनों हज़रात भी इमाम इब्ने असाकिर के शयूख़ में से हैं] (1)

रुहानिख्त की तरफ अफ़र

शैखे कमिल की बैअत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने दौरै तालिबे इल्मी में हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू अली फ़ज़ल बिन मुहम्मद बिन अली फ़ारमज़ी तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (477 हि.) के हाथ पर (27 साल की उम्र में) बैअत की। शैख़े मौसूफ़ बहुत आली मर्तबत, फ़िक़हे शाफ़ेई के ज़बरदस्त आलिम और मज़ाहिबे सलफ़ से बा ख़बर थे और हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल कासिम कुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (417 हि.) के जलीलुल क़द्र शागिर्दों में से हैं।⁽¹⁾

बातिनी उलूम की तलाश :

आप 478 हि. ता 484 हि. सरताजे मदरिसे इस्लामिया मद्रसए निज़ामिया नैशापूर में “इमामुल हरमैन” फिर 484 हि. ता 488 हि. मर्कज़े उलूमे इस्लामिया मद्रसा निज़ामिया बग़दाद में “मुदर्रिसे आ’ला” के मन्सब पर फ़ाइज़ रहे। सुल्ताने वक़्त और मुल्क भर के उ-लमा व फु-ज़ला आप के तबहूरे इल्मी के क़ाइल हो गए और एक वक़्त ऐसा भी आया कि बादशाहे वक़्त से ज़ियादा इमाम साहिब का सिक्का लोगों के दिलों पर बैठ गया। सल्तनते सल्जूकिय्या के वज़ीरे आ’ज़म निज़ामुल मुल्क तूसी तो आप के बड़े मो’तक़िद थे और वोह ब नफ़से नफ़ीस उमूरे ममलुकत में आप से मश्वरा करते थे। तमाम उलूम की तकमील के बा’द अव्वलन इमामुल हरमैन फिर मुदर्रिसे आ’ला जैसे ओहदों पर मुतमक्किन रहने के बा वुजूद आप को जिस बातिनी व रुहानी सुकून की तलाश थी वोह हासिल न हो सका। बग़दाद जो उस वक़्त मुख़ालिफ़ फ़िर्कों और बाति़ल मज़ाहिब के बेजा मुनाज़रों और मुजादलों का दंगल बना हुवा था और दारुल ख़िलाफ़ा पर इन्तिशार और फ़ितना फ़साद की कैफ़ियत तारी थी।⁽²⁾ उस वक़्त चार फ़िर्के ज़ियादा शोहरत के हामिल थे मुतकल्लिमीन, बातिनिया, फ़लासिफ़ा और सूफ़िया, आप ने इन फ़िर्कों के उलूम व अक़ाइद की तहक़ीक़ शुरू की। इस तहक़ीक़ व जुस्तजू से इज़्तिराब और बढ़ गया मगर जब तसव्वुफ़ पर मौजूद कुतुब का मुतालआ किया तो मा’लूम हुवा कि सिर्फ़ इल्म काफ़ी नहीं बल्कि अमल की ज़रूरत। चुनान्वे,

①.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٢٦۔

②.....مقدمة احياء العلوم (مترجم ازعلامه محمدصديق هزاروی مدظله العالی)، ج ١، ص ١٩، ملخصاً۔

आप अपनी किताब “الْمُنْقَذُونَ الصَّلَالِ وَالْمُفَصَّصَ عَنِ الْأَحْوَالِ” में खुद फ़रमाते हैं: “इन वाकिआत से तहरीक पैदा हुई कि तमाम तअल्लुकात को तर्क कर के बग़दाद से निकल जाऊँ, नफ़्स किसी तरह भी तर्के तअल्लुकात पर आमादा नहीं होता था क्यूँकि इस को शोहरते अम्मा और शानो शौकत हासिल थी। रजब 488 हि. में येह ख़याल पैदा हुवा था लेकिन नफ़्स के लिय्यत व लअल (टाल मटोल) के बाइष इस पर अमल न कर सका। इस ज़ेहनी और नफ़्सानी कश्मकश ने मुझे सख़्त बीमार कर दिया और नौबत यहां तक पहुंच गई कि ज़बान को याराए गोयाई न रहा। कुव्वते हज़्म बिल्कुल ख़त्म हो गई। तबीबों ने भी साफ़ जवाब दे दिया और कहा कि ऐसी हालत में इलाज से कुछ फ़ाइदा नहीं होगा। आख़िरे कार मैं ने सफ़र का क़तई इरादा कर लिया। उमराए वक़्त, अरकाने सल्तनत और उ-लमाए किराम ने निहायत खुशामद व इकराम से रोका लेकिन मैं ने इन की एक न मानी इस लिये सब को छोड़ छाड़ कर शाम की राह ली (और फिर एक वक़्त आया कि शाम से अपने आबाई वतन “तूस” तशरीफ़ ले गए)।”⁽¹⁾

अल ग़रज़ रूहानी सुकून की खातिर आप ने मन्सबे तदरीस छोड़ दिया। दुन्या की गूनागू मसरूफ़िय्यात और रंगा रंगी से बिल्कुल कनारा कशी इख़्तियार कर ली हत्ता कि लिबासे फ़ाख़िरा के बजाए एक कम्बल ओढ़ा करते थे और लज़ीज़ ग़िज़ाओं की जगह साग पात पर गुज़र बसर होने लगी। अपने शहर तूस पहुंच कर सूफ़िया के लिये एक ख़ानकाह और शौके इल्म रखने वालों के लिये एक मद़सा ता’मीर किया और फिर ता दमे हयात अवरदो वज़ाइफ़, रियाज़त व इबादत, गोशा नशीनी और तदरीसे तसव्वुफ़ में मशगूल रहे।⁽²⁾

पांच शो दीनार के लिबास व सुवारी :

फ़कीह इब्ने रज़ाज़ अबू मन्सूर सईद बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد (मुतवफ़ा 539 हि.) बयान फ़रमाते हैं: “जब पहली बार हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي अलिमाना शानो शौकत के साथ बग़दाद में दाख़िल हुए तो हम ने उन के लिबास व सुवारी की कीमत लगाई तो वोह 500 दीनार बनी फिर जब आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने जोहद व तक्वा इख़्तियार किया और बग़दाद छोड़ दिया, मुख़्तलिफ़ मक़ामात का सफ़र करते रहे और दोबारा जब बग़दाद में दाख़िल हुए तो हम ने उन के लिबास की कीमत लगाई तो वोह पन्दरह कीरात (या’नी चन्द मा’मूली सिक्के) बनी।”⁽³⁾

①..... مقدمه احیاء العلوم (مترجم از علامه فیض احمد اویسی علیہ رحمۃ اللہ القوی)، ج ۱، ص ۲۰۔

تعریف الاحیاء بفضلائل الاحیاء علی هامش احیاء علوم الدین، ج ۵، ص ۳۶۵ تا ۳۶۸، ملخصاً۔

②.....مرأة الجنان وعبرة اليقظان، ج ۳، ص ۱۳۷، ملخصاً۔

③.....المنتظم فی تاریخ الملوك والامم، ج ۹، ص ۱۷۰۔

गोहूँ तक्वा

आप की सादगी और यादे आखिरत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي एक बार मक्कए मुअज़्ज़मा में तशरीफ़ फ़रमा थे। आप चूँकि ज़ाहिरी शानो शौकत से बे नियाज़ थे। इस लिये आप निहायत सादा और मा'मूली किस्म का लिबास पहने हुए थे। हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान तूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने अर्ज़ की : “आप के पास इस के इलावा और कोई कपड़ा नहीं है ? आप इमामे वक़्त और पेशवाए क़ौम हैं, हज़ारों लोग आप के मुरीद हैं।” आप ने जवाब दिया : “ऐसे शख्स का लिबास क्या देखते हो जो इस दुनिया में एक मुसाफ़िर की तरह मुक़ीम हो और जो इस काइनात की रंगीनियों को फ़नी और वक़्ती तसव्वुर करता है। जब वालिये दो जहां, रहमते आलमियां صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस दुनिया में मुसाफ़िर की तरह रहे और कुछ मालो ज़र इकठ्ठा न किया तो मेरी क्या हैषियत और हक़ीक़त है।”⁽¹⁾

शोहरत व नामवरी से दूरी :

एक बार आप जामेए उमवी में तशरीफ़ फ़रमा थे। मुफ़्तियाने किराम की एक जमाअत सेहने मस्जिद में मौजूद थी। एक दीहाती ने आ कर मुफ़्तियाने किराम से कोई सुवाल पुछा मगर किसी ने उस का जवाब नहीं दिया। जब कि हज़रते इमाम साहिब ख़ामोश थे फिर जब आप ने देखा किसी के पास उस का जवाब नहीं और जवाब न मिलना उस पर शाक़ गुज़रा है तो उस देहाती को अपने पास बुला कर सुवाल का जवाब बताया। मगर वोह देहाती मज़ाक़ उड़ाने लगा कि “जिस सुवाल का जवाब बड़े बड़े मुफ़्तियों ने नहीं दिया येह आ़म फ़कीर कैसे दे रहा है।” उस वक़्त मुफ़्तियाने किराम येह मन्ज़र देख रहे थे। देहाती जब आप से बात कर के फ़ारिग़ हुवा तो इन मुफ़्तियाने उज़्ज़ाम ने उसे बुला कर पूछा : “इस आ़म से आदमी ने क्या जवाब दिया ?” जब उस ने हक़ीक़ते हाल वाजेह की तो येह हज़रात इमाम साहिब के पास गए और जब उन से मुतआरिफ़ हुए तो उन से दरख़्वास्त की, कि “आप हमारे लिये एक इल्मी निशस्त का इनइक़ाद करें।” आप ने अगले दिन का फ़रमा दिया मगर उसी रात वहां से सफ़र कर गए।⁽²⁾

ख़ुद पसन्दी का ख़ौफ़ :

एक बार इत्तिफ़ाक़न हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي दिमिशक़ के मद़से “अमीनिय्या” में तशरीफ़ ले गए तो देखा कि वहां एक उस्ताज़ कह रहे थे : قَالَ الْغَزَالِي : या'नी वोह आप के कलाम के साथ तदरीस कर रहे थे। येह सुन कर आप पर ख़ुद पसन्दी (में गिरिफ़्तार होने) का ख़ौफ़ तारी हो गया तो आपने दिमिशक़ छोड़ दिया।⁽³⁾

①.....مقدمه کیمیائے سعادت (مترجم از مولانا محمد سعید احمد نقشبندی) ص ۳۱۔

②.....طبقات الشافعية الكبرى، ج ۶، ص ۱۹۹۔

③.....طبقات الشافعية الكبرى، ج ۶، ص ۱۹۹۔

दुन्या से बे रग़बती और अज़िज़ी :

“श-जरातुज्जहब” में “जादुस्सालिकीन” के हवाले से मज़कूर है : हज़रते सय्यिदुना काज़ी अबू बक्र बिन अरबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي बयान करते हैं कि “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي को लोगों के दरमियान इस हाल में पाया कि आप के हाथ में लाठी थी, पैवन्ददार लिबास ज़ेबे तन किया हुआ था और कन्धे से पानी का बरतन लटक रहा था और मैं देखा करता था कि बग़दाद में आप की मजलिसे इल्म में 400 के करीब खुशहाल और बड़े बड़े आलिम व फ़ाज़िल लोग हाज़िर होते और आप के इल्म से फ़ैज़याब होते।”⁽¹⁾

मक़ाम व मर्तबा

बारगाहे रिसालत में मक्बूलियत :

हज़रते सय्यिदुना अल्लामा इस्माईल हक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوِي तफ़सीरे रूहुल बयान, जि. 5 स. 374 सूरए ताहा, आयत नम्बर 18 के तहत नक्ल फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना इमाम राग़िब अस्फ़हानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَان ने मुहाज़िरात में ज़िक्र फ़रमाया कि साहिबे हिज़्बुल बहर, अरिफ़ बिल्लाह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : मैं मस्जिदे अक्सा में मह्वे ख़्वाब था, मैं ने देखा कि मस्जिदे अक्सा के सेहून में एक तख़्त बिछा हुआ है और लोगों का जम्पू ग़फ़ीर गुरौह दर गुरौह दाख़िल हो रहा है। मैं ने पूछा : “येह जम्पू ग़फ़ीर किन लोगों का है ?” बताया गया : “येह अम्बियाए किराम व रुसुले उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام हैं जो हज़रते सय्यिदुना हुसैन हलाज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से ज़ाहिर होने वाली एक बात पर इन की सिफ़ारिश के लिये बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए हैं।” फिर मैं ने तख़्त की तरफ़ देखा तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जैसे हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सामने तशरीफ़ फ़रमा हैं। मैं इन की ज़ियारत करने और इन का कलाम सुनने लगा। इसी दौरान हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में अर्ज की : आप का फ़रमान है : “يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ كَأَنِّي بَيْنِي وَأَسْرَائِيلَ” या’नी मेरी उम्मत के उ-लमा बनी इस्राईल के अम्बिया की तरह हैं।” लिहाज़ा मुझे इन में से कोई

दिखाएं। तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی की तरफ़ इशारा फ़रमाया। हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی से एक सुवाल किया, आप ने 10 जवाब दिये। तो हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि “जवाब सुवाल के मुताबिक़ होना चाहिये, सुवाल एक किया गया और तुम ने 10 जवाब दिये।” तो हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی وَمَا تِلْكَ بِبَيِّنَاتٍ لِّیُوسٰی (١٦) (١) : “عَزَّ وَجَلَّ ने आप से पूछा था : “तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ऐ मूसा।” तो इतना अर्ज़ कर देना काफ़ी था कि “येह मेरा असा है।” मगर आप ने इस की कई ख़ूबियां बयान फ़रमाईं। (1)

हज़रते उ-लमाए किराम كَثَرَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि गोया इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की बारगाह में अर्ज़ कर रहे हैं कि “जब आप का हम कलाम बारी तअ़ला था तो आप ने वुफूरे महब्बत और ग़लबए शौक में अपने कलाम को तूल दिया ताकि ज़ियादा से ज़ियादा हम कलामी का शरफ़ हासिल हो सके और इस वक़्त मुझे आप से हम कलाम होने का मौक़अ मिला है और कलीमे खुदा से गुफ़्तगू का शरफ़ हासिल हुवा है इस लिये मैं ने इस शौक व महब्बत से कलाम को तवालत दी है।” (2)

काबिले फख़्र हस्ती :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल हसन शाज़िली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशरफ़ हुवा तो देखा कि हुज़ूर रहमते अलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हज़रते सय्यिदुना मूसा और हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के सामने हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی पर फख़्र करते हुए फ़रमा रहे हैं : “क्या तुम्हारी उम्मतों में ग़ज़ाली जैसा आलिम है ?” दोनों ने अर्ज़ की : “नहीं।” (3)

1..... فتاویٰ رضویہ، ج ۲۸، ص ۴۱۰، اشارۃ۔

2..... کوثر الخیرات، ص ۴۰۔

3..... النبّراس شرح شرح العقائد، ص ۲۴۷۔

اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ۱، ص ۱۲۔

تعريف الاحياء بفصائل الاحياء على هامش احیاء علوم الدین، ج ۵، ص ۳۶۴۔

इमामुल अम्बिया صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ की दस्त बोशी की सद्वादत :

हज़रते सय्यिदुना जमाले हरम अबुल फत्ह अमिर बिन नजा رَحْمَةُ اللہ تعالیٰ علیہ فرमाते हैं कि मैं एक दिन मस्जिदे हराम में दाखिल हुवा तो मुझे ऊँघ आ गई। इसी हाल में जियारते रसूल صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ से मुशर्रफ़ हुवा। आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و सَلَّمَ ने इन्तिहाई खूबसूरत कुर्ता और इमामा ज़ेबे तन किया हुवा था। फिर देखा कि अइम्माए अरबआ (हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'जम, हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक, हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफेई और हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَحْمَةُ اللہ تعالیٰ علیہم अجمعिन ने एक एक कर के अपना फ़िक़ही मज़हब (या'नी कुरआनो सुन्नत और इजमाअ व इजतिहाद से माखूज नुक्तए नज़र) पेश किया तो आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و सَلَّمَ ने हर एक की तस्दीक़ फ़रमाई। फिर बद मज़हबों के एक लीडर ने इस मुक़द्दस हल्के में दाखिल होना चाहा तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ के हुक्म से उसे ज़िल्लत के साथ वहां से दूर कर दिया गया। इस के बा'द मैं ने आगे बढ़ कर अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ मेरे पास येह किताब या'नी इहयाउल उलूम है, इस में मेरा और अहले सुन्नत व जमाअत का अक़ीदा बयान किया गया है। अगर इजाज़त हो तो पेश करूं?” इजाज़त मिलने पर मैं ने किताब के बाब “क़वाइदुल अक़ाइद” से पढ़ना शुरू किया :

पढ़ते पढ़ते بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ، کِتَابُ قَوَاعِدِ الْعُقَاوِدِ وَفِیْهِ اَرْبَعَةُ فُصُوْلٍ: الْفُصْلُ الْاَوَّلُ فِیْ تَرْجَمَةِ عَقِيْدَةِ اَهْلِ السُّنَّةِ..... पढ़ते पढ़ते وَ اِنَّهُ تَعَالٰی بَعَثَ النَّبِیَّ الْاَمِّیَّ الْقُرَشِیَّ مُحَمَّدًا صَلَّی اللہُ عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم اِلٰی کَافَّةِ الْعَرَبِ وَالْعَجَمِ، وَالْجَنِّ وَالْاِنْسِ..... जब मैं इस इबारत पर पहुंचा तो मैं ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ के चेहरए अक्दस पर खुशी व मसररत के आषार देखे। फिर इरशाद फ़रमाया : “ग़ज़ाली कहां है?” तो हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली صَلَّय اللہ علیہ وسلم गुलाम हाज़िर हो कर अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّय اللہ علیہ وسلم ने उसी वक़्त हाज़िर हो कर अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّय اللہ علیہ وسلم गुलाम हाज़िर है।” और आगे बढ़ कर सलाम अर्ज किया, आप صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ व آلہ व سَلَّمَ ने सलाम का जवाब दे कर अपना हाथ मुबारक बढ़ाया तो हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली صَلَّय اللہ علیہ وسلم ने इसे बोसा दिया और इस से बरकत हासिल की। हज़रते जमाले हरम अल-अक़रम صَلَّय اللہ علیہ وسلم फ़रमाते हैं : “मैं ने उस दिन प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ व آلہ व سَلَّمَ को बहुत ज़ियादा मसरूर पाया।” जब मेरी ऊँघ की कैफ़ियत ख़त्म हुई तो मेरी आंखों से खुशी के आंसू रवां थे।

मज़ीद फ़रमाते हैं : “मक्की मदनी सुल्तान صَلَّय اللہ تعالیٰ علیہ व آلہ व सَلَّمَ का हज़राते अइम्माए अरबआ رَحْمَةُ اللہ تعالیٰ علیہ के मज़ाहिब की तस्दीक़ फ़रमाना और (इहयाउल उलूम में मज़कूर) इमाम ग़ज़ाली صَلَّय اللہ علیہ وسلم के अक़ीदे को पसन्द फ़रमा कर इस की तस्दीक़ करना **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की एक अज़ीम ने'मत और बड़ा एहसान है। हम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से सुन्नतों भरी ज़िन्दगी का सुवाल करते और मिल्लते इस्लाम पर ख़ातिमे की दुआ मांगते हैं।” आमीन।⁽¹⁾

70 हिजाबात उबूर कर लिये :

हज़रते सय्यिदुना आरिफ़ कबीर कुब्बे रब्बानी अहमद सय्याद यमनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में आस्मान के दरवाजे खुले देखे । आस्मान से फ़िरिश्तों की एक जमाअत सब्ज़ हुल्ले (या'नी जन्नती लिबास) और सुवारी लिये उतरी । वोह एक क़ब्र के सिरहाने आ कर खड़े हो गए । उस क़ब्र वाले को बाहर निकाल कर हुल्ला पहनाया, सुवारी पर सुवार किया और एक एक कर के तमाम आस्मानों से गुज़रते गए यहां तक कि उस शख्स ने 70 हिजाबात को भी उबूर कर लिया । मैं इन हिजाबात तक तो इन्हें देख सका मगर इन की इन्तिहा कहां तक थी येह न जान सका । पस जब इन के मुतअल्लिक पूछा तो बताया गया : “येह इमाम ग़ज़ाली हैं ।”⁽¹⁾

क़शमात व क़मालात

बा'दे विशाल एक क़शमत :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अक़बर मुह्युद्दीन इब्ने अरबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 638 हि.) अपनी किताब “रुहलकुदुस फ़ी मुना-स-हतिनुफ़स” में हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह इब्ने ज़ैन याबुरी इश्बिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के हालात लिखते हुए बयान फ़रमाते हैं : आप का शुमार औलियाउल्लाह में होता है । एक रात हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के रद में अबुल क़ासिम बिन हमदीन की लिखी हुई किताब पढ़ रहे थे कि बिनाई चली गई । आप ने उसी वक़्त बारगाहे खुदावन्दी में सजदा रेज़ हो कर गिर्या व ज़ारी की और क़सम खाई कि आयन्दा कभी भी इस किताब को न पढ़ूंगा, इसे अपने आप से दूर रखूंगा । उसी वक़्त बिनाई वापस लौट आई । येह हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي की क़रामत है जो इन के इन्तिक़ाल के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह इब्ने ज़ैन याबुरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के ज़रीए ज़ाहिर हुई ।⁽²⁾

गुस्ताख़ का अन्जाम :

हज़रते सय्यिदुना ताज़ुद्दीन अब्दुल वह्हाब बिन अली सुब्की عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 771 हि.) फ़रमाते हैं : एक फ़कीह ने मुझे बताया कि एक शख्स ने फ़िक़हे शाफ़ेई के दर्स में हज़रते

①.....تعريف الاحياء بفضائل الاحياء على هامش احياء علوم الدين، ج ٥، ص ٣٦٤-

طبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ج ٦، ص ٢٥٨-

②.....كشف النور عن الاصحاب القبور مع الحديقة النديه، ج ٢، ص ٨-

सय्यिदुना इमाम गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي को बुरा भला कहा तो मैं बड़ा ग़मगीन हुआ, रात इसी ग़म की हालत में नींद आ गई। ख़्वाब में हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي की ज़ियारत हुई, मैं ने बुरा भला कहने वाले शख्स का तज़क़िरा किया तो फ़रमाया “फ़िक़्र न करो वोह कल मर जाएगा।” चुनान्चे, सुब्ह जब मैं हल्क़ए दर्स में हाज़िर हुआ तो उस शख्स को हश्शाश बश्शाश देखा मगर जब वोह वहां से निकला तो घर जाते हुए रास्ते में सुवारी से गिर गया और ज़ख्मी हालत में घर पहुंचा और सूरज गुरुब होने से पहले ही मर गया।⁽¹⁾

पांच कोड़ों की सज़ा :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन अस्अद याफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي (मुतवफ़्फ़ 768 हि.) नक्ल करते हैं कि मशहूर मग़रिबी फ़कीह हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन अली बिन हिर्ज़हम (मुतवफ़्फ़ा 559 हि.) शुरूअ में इह्याउल उलूम का बहुत रद किया करते थे हत्ता कि एक बार इन्होंने ने इस किताब के कई नुस्खे जम्अ कर के जुमुआ के दिन जामेअ मस्जिद में जला डालने का इरादा किया मगर उसी जुमुआ की शब ख़्वाब देखा कि वोह जामेअ मस्जिद में दाख़िल हुए। क्या देखते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में जलवा फ़रमा हैं और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) भी मौजूद हैं और सामने हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي खड़े हैं। जब येह सामने हुए तो सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह وسلم صلی الله علیک وسلم येह मुझ से झगड़ते हैं, अगर मुआमला ऐसा ही है जैसा येह गुमान करते हैं तो मैं बारगाहे इलाही में तौबा करता हूं और अगर मेरा मौक़िफ़ आप की बरकत और इत्तिबाए सुन्नत से हासिल शुदा है और मैं हक़ पर हूं तो इन से मेरा हक़ दिलाइये।” येह सुन कर आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इह्याउल उलूम ली और एक एक सफ़हा कर के मुकम्मल मुलाहज़ा फ़रमाई फिर इरशाद फ़रमाया : “खुदा की क़सम ! येह तो बहुत अच्छी है !” फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने देखी तो फ़रमाया : “जी हां ! उस ज़ात की क़सम जिस ने आप को हक़ के साथ मबरूष फ़रमाया ! यकीनन येह बहुत अच्छी है !” फिर अमीरुल

①.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ١٤۔

طبقات الشافعية الكبرى للسبکی، ج ٦، ص ٢١٩۔

मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मुलाहज़ा की और येही फ़रमाया, पस हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़कीह अली बिन हिर्ज़हम رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَمُ को कोड़े लगाने का हुक्म दिया, जब पांच कोड़े लग चुके तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सिफ़ारिश करते हुए अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْكَ وَسَلَّمَ ! शायद इन्हों ने अपने गुमान में इस किताब को आप की सुन्नत के ख़िलाफ़ समझा तो ग़लती कर गए ।” चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने इस पर राज़ी हो गए और वोह सिफ़ारिश क़बूल कर ली गई । हज़रते सय्यिदुना अली बिन हिर्ज़हम رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ जब बेदार हुए तो कोड़ों का अषर पीठ पर मौजूद था । आप ने येह ख़्वाब अपने अस्हाब को बयान किया और रब्ब तआला की बारगाह में तौबा की और अपने इस अमल की मुआफ़ी त़लब की मगर तवील अर्से (या'नी एक महीने) तक कोड़ों का दर्द महसूस करते रहे । इस दौरान बारगाहे इलाही में गिड़ गिड़ा कर अज़िज़ी व इन्किसारी के साथ दुआ और रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, शफीए मुअज़्ज़म صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से शफ़ाअत का सुवाल करते रहते यहां तक कि दोबारा ख़्वाब में ज़ियारते सरकारे आ'ज़म صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मुशरफ़ हुए । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपना दस्ते करीमाना इन की पीठ पर फैरा तो दर्द जाता रहा और इन्हें ब हुक्मे इलाही मुआफ़ी व शफ़ाअत मिल गई । इस के बा'द से इन्हों ने इह्याउल उलूम के मुतालए को खुद पर लाज़िम कर लिया तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर बात़िन के दरवाज़े खोल दिये, इन्हों ने मा'रिफ़ते इलाही से वाफ़िर हिस्सा पाया, अकाबिर मशाइख़ की सफ़ में शुमार हुए और ज़ाहिरी व बात़िनी उलूम वाले बन गए ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन अब्दुर्रहमान सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.) नक्ल करते हैं कि “जिस दिन हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन अली बिन हिर्ज़हम رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ (मुतवफ़्फ़ा 559 हि.)” का इन्तिक़ाल हुवा तो कोड़ों का निशान उन की पीठ पर मौजूद था ।⁽²⁾

﴿.....صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَی مُحَمَّد.....﴾

①.....تعريف الاحیاء بفصائل الاحیاء علی هامش احیاء علوم الدین، ج ۵، ص ۳۵۷۔

طبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ج ۶، ص ۲۵۸۔

②.....تشبيد الاركان علی هامش احیاء علوم الدین، ج ۵، ص ۳۹۴۔

बा'शीफी कलिमात

﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन शाज़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के शागिर्द आरिफ़ बिल्लाह अबुल अब्बास मर्सी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي सिद्दीक़िय्यते उज़्मा के मक़ाम पर फ़ाइज़ थे।” (1)

﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह्युद्दीन इब्ने अरबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 638 हि.) फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي कुतुब के दर्जे पर फ़ाइज़ थे।” (2)

﴿3﴾ बा'ज बुजुर्गों से मन्कूल है : “कुतुब तीन होते हैं :

(1)....उलूम के कुतुब जैसे हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली (2)....अहवाल के कुतुब जैसे हज़रते सय्यिदुना बा यज़ीद बिस्तामी और (3)....मक़ामात के कुतुब जैसे हज़रते पीराने पीर सय्यिदुना शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ) (3)

﴿4﴾ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन यहया नैशापूरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : “मेरे उस्ताजे मोहतरम हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के मक़ाम व मर्तबे को सिर्फ़ कामिल अक्ल वाला ही पहचान सकता है।” (4)

﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के उस्ताजे मोहतरम इमामुल हरमैन अब्दुल मलिक बिन अब्दुल्लाह जुवैनी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي ने एक मौक़अ पर इरशाद फ़रमाया : “ग़ज़ाली, इल्म के बहरे ज़ख़्ख़ार (या'नी इल्म का मौजें मारता समुन्दर) हैं।” (5)

﴿6﴾ ख़तीबे नैशापूर इमाम अबुल हसन हज़रते सय्यिदुना अब्दुल ग़ाफ़िर बिन इस्माईल عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 529 हि.) फ़रमाते हैं : “इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي इस्लाम और मुसलमानों के लिये हुज्जत और अइम्मए दीन के पेशवा हैं। फ़साहत व बलागत, अन्दाजे बयान व तर्जे गुफ़्तगू और तेज़ फ़हमी व ज़हानत में इन जैसा आंखों ने नहीं देखा।” (6)

1.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج 1، ص 13 -

طبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ج 6، ص 207 -

2.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج 1، ص 13 -

3.....المرجع السابق - 4.....المرجع السابق - 5.....المرجع السابق -

6.....مرآة الجنان وعبرة اليقظان، ج 3، ص 137 -

﴿7﴾ हज़रते सय्यिदुना अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद अल मा'रूफ़ इब्ने खल्लिकान (मुतवफ़्फ़ा 681 हि.) फ़रमाते हैं : शवाफ़ेअ में इन के ज़माने के आखिर तक इन का कोई मिष्ल नहीं था ।”(1)

﴿8﴾ नैशापूर के रईसुशशाफ़ेइया हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन यहूया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ (मुतवफ़्फ़ा 548 हि.) ने फ़रमाया : “इमाम ग़ज़ाली, इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के षानी हैं ।”(2)

﴿9﴾ हज़रते सय्यिदुना इब्ने असाकिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ (मुतवफ़्फ़ा 571 हि.) फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जैसा ज़हीन व फ़तीन आंखों ने देखा न कानों ने सुना ।”(3)

﴿10﴾ सय्यिदुना हाफ़िज़ अबुल फ़ज़ल अब्दुरहीम इराक़ी رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي (मुतवफ़्फ़ा 608 हि.) फ़रमाते हैं : “उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام के नज़दीक हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ पांचवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद हैं ।”(4)

﴿11﴾ मुहद्दिष सूफ़ी शैख़ अबुल अब्बास अक़लशी رَحْمَةُ اللهِ الْفَوَى अशआर में ख़िराजे अक़ीदत यूं पेश करते हैं :

أَبَا حَامِدٍ أَنْتَ الْمُخَصَّصُ بِالْحَمْدِ وَأَنْتَ الَّذِي عَلَّمْتَنَا سُنَنَ الرَّشْدِ
وَضَعْتَ لَنَا الْإِحْيَاءَ يُحْيِي نَفُوسَنَا وَيُنْقِذُنَا مِنْ طَاعَةِ الْمَارِدِ الْمُرْدِي

तर्जमा : ऐ इमाम ग़ज़ाली ! आप ता'रीफ़ में मुनफ़रिद व मुमताज़ हैं, आप ने हमें हिदायत के रास्ते बताए । हमारे लिये इहयाउल उलूम लिखी जो हमारी जानों को ज़िन्दगी देती और हमें सरकश व नाफ़रमान की पैरवी से रोकती है ।”(5)

﴿12﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम अबुल हसन शाज़िली रَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي से मन्कूल है कि “जिसे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से कोई हाज़त हो वोह इमाम ग़ज़ाली रَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي के वसीले से दुआ करे ।”(6)

①.....وفيات الاعيان، ج ٤، ص ٥٨-

②.....طبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ج ٦، ص ٢٠٢-

③.....تاريخ مدينة دمشق، ج ٥٥، ص ٢٠٠-

④.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٣٥-

⑤.....مرآة الجنان وعبرة اليقظان، ج ٣، ص ١٣٧-

⑥.....مرآة الجنان وعبرة اليقظان، ج ٣، ص ٢٤٩-

﴿13﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي (मुतवफ़ा 748 हि.) इन अलकाबात से याद फ़रमाते :

الشيخ الامام البحر، حجة الاسلام، أعجوبة الزمان، زين الدين أبو حامد محمد بن محمد بن أحمد الطوسي، الشافعي، الغزالي، صاحب التصانيف، والذكاء المفرد - (1)

﴿14﴾ हज़रते सय्यिदुना ताजुद्दीन अब्दुल वहहाब बिन अली सुब्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي (मुतवफ़ा 771 हि.) इन अलकाबात से ज़िक्र फ़रमाते : (2)

﴿15﴾ हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي (मुतवफ़ा 911 हि.) इन अल्फ़ाज़ से तज़क़िरा फ़रमाते : (3)

﴿16﴾ मुजद्दिदे आ'ज़म, फ़कीहे अफ़ख़म, इमामे अहले सुन्नत, सय्यिदुना आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ (मुतवफ़ा 1340 हि.) आप का कौल नक़ल करते हुए इन अल्फ़ाज़ से याद फ़रमाते हैं : (4)

तस्नीफ़ व तालीफ़

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي ने कई उलूम व फुनून में सेंकड़ों कुतुबो रसाइल तस्नीफ़ किये, जिन के नाम मिल सके वोह दर्जे ज़ैल हैं :

(1) إحياء علوم الدين (2) الأملاء على مشكل الإحياء ويسمى أيضاً "الأجوبة المسكّنة عن الأسئلة المبهمة" (3) الأربعين (4) الأسماء الحسنى (5) الأقتصاد في الاعتقاد (6) إلجام العوام عن علم الكلام (7) أسرار معاملات الدين (8) أسرار الأنوار الإلهية بالآيات المتلوّه (9) أخلاق الأبرار والنّجاة من الأشرار (10) أسرار إتياع السنّة (11) أسرار الحروف والكلمات (12) أيّها الولد (13) بداية الهداية (14) البسيط في فروع المذهب (15) بيان القولين لملشافعي (16) بيان فضائح الإباحية (17) بدائع الصّنيع (18) تنبيه الغافلين (19) تلبّيس إبليس وفي هذية العارفين: تلبّيس إبليس (20) تهافت الفلاسفة (21) التعليق عليه في فروع المذهب (22) تحصيل المآخذ (23) تحصيل الأدلّة (24) تفسير القرآن العظيم

1..... سير اعلام النبلاء، الرقم ٤٦٠٣، ج ١، ص ٣٢٠۔

2..... اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٨۔

3..... تشييد الاركان على هامش احياء علوم الدين، ج ٥، ص ٣٧١۔

4..... فتاوى رضويه، ج ٤، ص ٥٢٨۔

(۲۵) التَّفْرِقَةُ بَيْنَ الْإِيمَانِ وَالزُّنْدِيقَةِ [وَفِي هَدْيَةِ الْعَارِفِينَ: التَّفْرِقَةُ بَيْنَ الْإِسْلَامِ وَالزُّنْدِيقَةِ] (۲۶) جَوَاهِرُ الْقُرْآنِ
 (۲۷) حُجَّةُ الْحَقِّ (۲۸) حَقِيقَةُ الرُّوحِ (۲۹) حَقِيقَةُ الْقَوْلَيْنِ (۳۰) خُلَاصَةُ الرَّسَائِلِ إِلَى عِلْمِ الْمَسَائِلِ
 (۳۱) رِسَالَةُ الْأَقْطَابِ (۳۲) رِسَالَةُ الطَّيْرِ (۳۳) الرَّدُّ عَلَى مَنْ طَعَنَ (۳۴) الرِّسَالَةُ الْقُدْسِيَّةُ بِإِدَّتِهَا الْبُرْهَانِيَّةُ
 (۳۵) السِّرُّ الْمَصُونُ (۳۶) شَرْحُ دَائِرَةِ عَلِيِّ ابْنِ أَبِي طَالِبٍ [الْمُسَمَّاهُ "نُجْبَةُ الْأَسْمَاءِ"] (۳۷) شِفَاءُ الْعَلِيلِ
 فِي بَيَانِ مَسْئَلَةِ التَّغْلِيلِ (۳۸) عَقِيدَةُ الْمُصْبَاحِ (۳۹) عُقُودُ الْمُخْتَصَرِ (۴۰) غَايَةُ الْغُورِ فِي مَسَائِلِ الدَّوَرِ
 (۴۱) غُورُ الدَّوَرِ (۴۲) الْفَتَاوَى [مُشْتَمِلَةٌ عَلَى مِائَةِ وَتِسْعِينَ مَسْئَلَةً غَيْرُ مُرتَّبَةٍ] (۴۳) فَاتِحَةُ الْعُلُومِ (۴۴) فَضَائِحُ
 الْإِبَاحِيَّةِ (۴۵) فَوَائِحُ السُّورِ (۴۶) الْفُرُقُ بَيْنَ الصَّالِحِ وَغَيْرِ الصَّالِحِ (۴۷) الْقَانُونُ الْكُلِّيُّ (۴۸) قَانُونُ الرَّسُولِ
 (۴۹) الْقُرْبَةُ إِلَى اللَّهِ (۵۰) الْقِسْطُ الْمُسْتَقِيمُ (۵۱) قَوَاعِدُ الْعُقَايِدِ (۵۲) الْقَوْلُ الْحَمِيلُ فِي الرَّدِّ عَلَى
 مَنْ غَيَّرَ الْإِنْجِيلَ (۵۳) كِيمِيَاءُ السَّعَادَةِ (۵۴) كَشْفُ عُلُومِ الْآخِرَةِ (۵۵) كُنْزُ الْعُدَّةِ (۵۶) اللَّبَابُ الْمُتَخَلِّ
 فِي الْجَدَلِ (۵۷) الْمُسْتَصْفَى (۵۸) الْمُنْخَوَّلُ فِي الْأُصُولِ (۵۹) الْمَأْخِذُ فِي الْخِلَافِيَّاتِ (۶۰) الْمَبَادِيءُ
 وَالْغَايَاتُ فِي أَسْرَارِ الْحُرُوفِ الْمَكْنُونَاتِ (۶۱) الْمَجَالِسُ الْغَزَالِيَّةُ [مِائَةٌ وَثَلَاثَةٌ وَتَمَانِينَ مَجْلِسًا] (۶۲) مَقَاصِدُ
 الْفَلَاسِفَةِ (۶۳) الْمُنْقِذُ مِنَ الضَّلَالِ وَالْمُفْصِّحُ عَنِ الْأَحْوَالِ (۶۴) مَعْيَارُ النَّظَرِ (۶۵) مَعْيَارُ الْعِلْمِ فِي
 الْمَنْطِقِ (۶۶) مَحَلُّ النَّظَرِ [وَفِي سِيرِ أَعْلَامِ النَّبَلَاءِ: مَحَلُّ النَّظَرِ] (۶۷) مِشْكَاةُ الْأَنْوَارِ فِي لَطَائِفِ الْأَخْيَارِ
 (۶۸) الْمُسْتَظْهَرُ فِي الرَّدِّ عَلَى الْبَاطِنِيَّةِ (۶۹) مِيزَانُ الْعَمَلِ (۷۰) مَوَاهِمُ الْبَاطِنِيَّةِ (۷۱) الْمَنْهَجُ الْأَعْلَى
 (۷۲) مِعْرَاجُ السَّالِكِينَ (۷۳) الْمَكْنُونُ فِي الْأُصُولِ (۷۴) مُسَلِّمُ السَّلَاطِينِ (۷۵) مُفَصَّلُ الْخِلَافِ
 فِي أُصُولِ الْقِيَاسِ (۷۶) مِنْهَاجُ الْعَابِدِينَ إِلَى جَنَّةِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (۷۷) نَصِيحَةُ الْمُلُوكِ (۷۸) أَلَوْجِزُ فِي
 الْفُرُوعِ (۷۹) أَلَوْسِيْطُ فِي فُرُوعِ الْفِقْهِ (۸۰) يَاقُوتُ التَّأْوِيلِ فِي تَفْسِيرِ التَّنْزِيلِ (اربعین محلدا) [۱]
 (۸۱) أَسْرَارُ الْمَلَكُوتِ (۸۲) الْإِنْتِصَارُ لِمَا فِي الْأَجْنَاسِ مِنَ الْأَسْرَارِ (۸۳) الْأَنْبِيَاءُ فِي الْوَحْدَةِ (۸۴) الْبُدُورُ
 فِي أَخْبَارِ الْبُعْثِ وَالنُّشُورِ (۸۵) الْبَيَانُ فِي مَسَالِكِ الْإِيمَانِ (۸۶) تَعْلِيْقُ الْأُصُولِ (۸۷) حُجَّةُ الشَّرْعِ
 (۸۸) حَقِيقَةُ الْقَوَانِينِ (۸۹) حَلُّ الشُّكُوكِ (۹۰) حَدَائِقُ الدَّقَائِقِ (۹۱) حَيَاةُ الْقُلُوبِ (۹۲) خَزَائِنُ الدِّينِ

(१३) أَلَدُّرُ الْمَنْظُومِ وَالسِّرِّ الْمَكْتُومِ (٩٣) خَاتَمٌ فِي عِلْمِ الْحُرُوفِ (٩٥) أَلَذَّهْبُ الْإِبْرِيْزِ (٩٦) أَلِرِّسَالَةُ اللَّذَنِّيَّةِ (٩٧) رِسَالَةُ التَّصْرِيحِ (٩٨) رِسَالَةُ الْحُدُودِ (٩٩) أَلِرِّسَالَةُ الْمُسْتَرْشِدِيَّةِ (١٠٠) رَوْضَةُ الطَّالِبِينَ وَعُمْدَةُ السَّالِكِينَ (١٠١) زَادُ الْمُتَعَلِّمِينَ (١٠٢) زَادُ الْآخِرَةِ (١٠٣) زَجَرُ النَّفْسِ (١٠٤) سُبُلُ السَّلَامِ (١٠٥) سِدْرَةُ الْمُتَنَهِّي (١٠٦) سِرُّ الْعَالَمِينَ وَكَشْفُ مَا فِي الدَّارَيْنِ (١٠٧) صِرَّةُ الْأَنَامِ (١٠٨) عُقُودُ الْمُخْتَصِرِ وَنِقَاوَةُ الْمُفْتَقِرِ [وَفِي كَشْفِ الطُّنُونِ: عُقُودُ الْمُخْتَصِرِ وَنِقَاوَةُ الْمُعْتَصِرِ] (١٠٩) غَايَةُ الْفُصُولِ (١١٠) غَايَةُ الْوُصُولِ فِي الْأُصُولِ (١١١) غُرَرُ الدَّرَرِ فِي الْمَوَاعِظِ (١١٢) فَرَضُ الدِّينِ (١١٣) فَرَضُ الْعَيْنِ (١١٤) أَسَاسُ الْقِيَاسِ (١١٥) كِتَابُ التَّوْحِيدِ وَآثِبَاتِ الصِّفَاتِ (١١٦) كِتَابُ الْحُدُودِ (١١٧) مُرْشِدُ الطَّالِبِينَ (١١٨) مُرْشِدُ السَّالِكِينَ (١١٩) مَدْخَلُ السُّلُوكِ إِلَى مَنَازِلِ الْمُلُوكِ (١٢٠) أَلْمَقْصِدُ الْأَقْصَى (١٢١) يَوَافِيتُ الْعُلُومِ (١٢٢) مَقَامَاتُ الْعُلَمَاءِ بَيْنَ يَدَيِ الْخُلَفَاءِ وَالْأَمْرَاءِ (١٢٣) مَعْرِفَةُ النَّفْسِ [١] (١٢٤) أَلْمَقْصِدُ الْأَسْنَى فِي شَرْحِ أَسْمَاءِ الْحُسْنَى (١٢٥) مَعَارِجُ الْقُدْسِ فِي أَحْوَالِ النَّفْسِ (١٢٦) أَلْوَقْفُ وَالْإِبْتِدَاءُ (١٢٧) أَلْمَعَارِفُ الْعَقْلِيَّةِ (١٢٨) عَقِيدَةُ أَهْلِ السُّنَّةِ [٢] (١٢٩) أَلْأَدَبُ فِي الدِّينِ (١٣٠) أَلْقَوَاعِدُ الْعَشْرَةِ (١٣١) قَانُونُ التَّوَاتُلِ (١٣٢) أَلْمَوَاعِظُ فِي الْأَحَادِيثِ الْقُدْسِيَّةِ (١٣٣) أَلْمَضْنُونُ بِهِ عَلَى غَيْرِ أَهْلِهِ [٣] (١٣٤) مِنْهَاجُ الْعَارِفِينَ (١٣٥) مُكَاشِفَةُ الْقُلُوبِ (١٣٦) عَجَائِبُ صَنَعَ اللَّهِ.

कुछ “इह्याउल उलूम” के बारे में

इह्याउल उलूम उ-लमा व मशाइख की नज़र में :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद गज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने अपने सफ़र बैतुल मुक़द्दस के सिलसिले में “الْمُنْقَذِينَ مِنَ الضَّلَالِ وَالْمُفَصِّحِينَ عَنِ الْأَحْوَالِ” में सराहत की जिस से ज़ाहिर होता है कि आप की इस मुसाफ़रत का बेशतर हिस्सा बैतुल मुक़द्दस में बसर हुवा और इस सफ़र का बेहतरीन इल्मी सरमाया और आप की सब से बुलन्द पाया किताब इह्याउल उलूम है जिस की मिषाल

①..... هدية العارفين، ج ٢، ص ٨٠ تا ٨١ -

②..... الاعلام للزرکلی، ج ٧، ص ٢٢ -

③..... فهرس مجموعة رسائل الامام الغزالي -

दुन्या की अख़्लाकी किताबों में मिलना मुश्किल है। अख़्लाक़िय्यात के मौजूअ पर येह एक बे मिषाल किताब है। बा'द के मुसन्निफ़ीन ने अख़्लाक़िय्यात के मौजूअ पर जो कुछ लिखा है इस का माख़ज़ इहयाउल उलूम है। मशहूर है कि आप ने इस की तसनीफ़ के लिये बैतुल मुक़द्दस में जो जगह मुन्तख़ब की थी वोह कुब्बतुस्सख़रह का मशरिकी गोशा था और आप इस गोशे में मो'तकिफ़ थे।⁽¹⁾ वैसे तो हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي की तमाम ही कुतुब इल्म के दुर्रे नायाब अपने दामन में समोए हुए हैं मगर सब से ज़ियादा शोहरत पाने वाली किताब इहयाउल उलूम अपनी मिषाल आप है। इस का पूरा नाम "احياء علوم الدين" है मगर मशहूर इहयाउल उलूम के नाम से है। येह किताब हर दौर में मशाइख़ व अरिफ़ीन, अक्ताब व औलिया और उ-लमा व सूफ़िया की तवज्जोह का मर्कज़ रही है और येह मो'तबर हस्तियां इस की क़सीदा ख़ानी में रतबुल्लिसान नज़र आती हैं। हर किसी ने अपने अपने अन्दाज़ में इस की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाई है, चन्द अक्वाल मुलाहज़ा फ़रमाइये :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबुल फ़ज़ल अब्दुरहीम इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاقِي (मुतवफ़्फ़ा 608 हि.) फ़रमाते हैं : "हलाल व हराम की पहचान के लिये इहयाउल उलूम इस्लाम की आ'ला तरीन कुतुब में से है।"⁽²⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना सय्यिद कबीर अली बिन अबू बक्र सक्काफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار (मुतवफ़्फ़ा 895 हि.) फ़रमाते हैं : "अगर काफ़िर इहयाउल उलूम की वर्क़ गरदानी कर ले तो मुसलमान हो जाए। इस में ऐसा मख़फ़ी राज़ है जो दिलों को मिक्नातीस की तरह खींचता है।"⁽³⁾

﴿3﴾ इमामुल मुकाशिफ़ीन हज़रते सय्यिदुना शैख़ अकबर मुह्युद्दीन इब्ने अरबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 638 हि.) फ़रमाते हैं : मैं इहयाउल उलूम को का'बए मुअज़्ज़मा के सामने बैठ कर पढ़ा करता था।⁽⁴⁾

﴿4﴾.....इमामुल हरमैन के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना अब्दुल ग़ाफ़िर बिन इस्माईल फ़ारिसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 529 हि.) फ़रमाते हैं : "इहयाउल उलूम जैसी किताब पहले किसी ने नहीं लिखी।"⁽⁵⁾

①.....مقدمة احياء العلوم (مترجم از علامه فيض احمد داويسي عليه رحمة الله القوي)، ج ١، ص ٢١، ملخصاً۔

②.....تعريف الاحياء بفوائد الاحياء على هامش احياء علوم الدين، ج ٥، ص ٣٥٨۔

③.....المرجع السابق، ج ٥، ص ٣٦١۔

④.....اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٣٨۔

⑤.....تاريخ مدينة دمشق، ج ٥٥، ص ٢٠١۔

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम यहया बिन शरफ़ नववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 676 हि.) ने फ़रमाया : “इह्याउल उलूम कुरआने करीम से बहुत करीब है।” (1)

﴿6﴾ ताजुल अरिफ़ीन कुतबुल औलिया हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ऐदरुस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को इह्याउल उलूम तक़रीबन पूरी हिफ़ज़ थी। आप फ़रमाते हैं : “इह्याउल उलूम को लाज़िम पकड़ लो। येह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की नज़रे रहमत और रिज़ा का ज़रीआ है तो जिस ने इस से महब्बत की और इस का मुतालआ कर के इस पर अमल किया उस ने **اَللّٰهُ** व रसूल عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और मलाइका व अम्बिया وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस ने शरीअत, तरीक़त और हकीक़त को दुन्या व आख़िरत में जम्अ कर लिया और वोह मुल्क व मल्कूत में अलामि हो गया।” नीज़ फ़रमाया : “हमारे लिये कुरआनो सुन्नत के इलावा कोई रास्ता व मे'यार नहीं और इन की मुकम्मल तशरीह व तफ़सील सय्यिदुल मुसन्निफ़ीन बक़िय्यतुल मुजतहिदीन हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने अपनी अज़ीमुश्शान तस्नीफ़ इह्याउल उलूम में फ़रमा दी है।” (2)

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह ऐदरुस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के भाई हज़रते सय्यिदुना शैख़ अली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इह्याउल उलूम को 25 मरतबा बिल इस्तीआब पढ़ा। आप हर बार ख़त्म कर के फुकरा व तलबा की दा'वत करते थे। (3)

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू मुहम्मद काज़रूनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का दा'वा था कि “अगर तमाम उलूम नापैद हो जाएं तो मैं इह्याउल उलूम से सब को निकाल लूंगा।” (4)

इह्याउल उलूम की रिवायत करने वाले :

इह्याउल उलूम की रिवायत जिन हज़रते अलिया ने फ़रमाई उन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल ख़ालिक़ बिन अहमद बग़दादी ﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन षाबित बिन हसन ख़ुजन्दी, इन की सनदे रिवायत में अल्लामा इब्ने हज़र अस्क़लानी (मुतवफ़्फ़ा 852 हि.) और हाफ़िज़ शम्सुद्दीन सखावी (मुतवफ़्फ़ा 902 हि.) जैसी अज़ीम हस्तियां भी हैं ﴿3﴾ हज़रते सय्यिदुना अबुल फुतूह अस्अद बिन अहमद इस्फ़राइनी ﴿4﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद अल मालिकी, इन की सनदे रिवायत में सय्यिदुना अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.) और हाफ़िज़ अब्दुर्रुफ़ मनावी (मुतवफ़्फ़ा 1003 हि.) जैसी अज़ीम व मो'तबर शख़्सियात भी हैं ﴿5﴾ हज़रते सय्यिदुना काज़ी अबू बक्र

①.....تعريف الاحياء بفضائل الاحياء على هامش احياء علوم الدين، ج ٥، ص ٣٥٩

②.....المرجع السابق - ③.....المرجع السابق، ص ٣٦٠ - ④.....المرجع السابق، ص ٣٥٩

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अरबी ﴿6﴾ हज़रते सय्यिदुना अबुल अब्बास अहमद बिन मुहम्मद ﴿7﴾ हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबू ताहिर अहमद बिन मुहम्मद सलफ़ी और ﴿8﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू सईद मुहम्मद बिन अस्अद नवक़ानी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) ⁽¹⁾

इहयाउल उलूम का खुलासा लिखने वाले :

सब से पहले “لِبَابِ الْأَحْيَاءِ” के नाम से इहयाउल उलूम का खुलासा करने वाले हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के भाई हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 520 हि.) हैं। दीगर उ-लमाए किराम ने भी इस का खुलासा फ़रमाया जिन के अस्माए गिरामी येह हैं :मुहम्मद बिन सईद यमनी (मुतवफ़्फ़ा 595 हि.).....यहया बिन अबुल ख़ैर....अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती (मुतवफ़्फ़ा 911 हि.).... मुहम्मद बिन उमर बलख़ी.....अब्दुल वहाब बिन अली मरागी....मिस्र के शैख़े ख़ानकाह मुहम्मद बिन अली अज़लूनी (मुतवफ़्फ़ा 812 हि.) (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) ⁽²⁾

एक खुलासा ऐनुल इल्म के नाम से हुवा जिस की शर्ह हज़रते सय्यिदुना अल्लामा मौलाना अली बिन सुल्तान हरवी हनफ़ी अल मा'रूफ़ ‘मुल्ला अली क़ारी’ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي के ने फ़रमाई। इस खुलासे के मुतअल्लिक अल्लामा इब्ने हज़र मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 974 हि.) फ़रमाते हैं : येह इहयाउल उलूम का बे मिषाल खुलासा है जो किसी हिन्दी आलिम ने किया है। ⁽³⁾

इहयाउल उलूम की शर्ह करने वाले :

इहयाउल उलूम की बेहतरीन शर्ह हज़रते सय्यिदुना अल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा हसन ज़बैदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 1205 हि.) ने “إِتْحَافُ السَّادَةِ الْمُتَّقِينَ” के नाम से लिखी है जो 14 ज़ख़ीम ज़िल्दों पर मुश्तमिल है।

अहदादीषे इहया की तख़रीज करने वाले :

इहयाउल उलूम में मज़कूर अहदादीषे मुबारका की तख़रीज करने वाले उ-लमा में सरे फ़ेहरिस्त हज़रते सय्यिदुना हाफ़िज़ अबुल फ़ज़ल अब्दुरहीम इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَاقِي (मुतवफ़्फ़ा 608 हि.) हैं जिन्हों ने अहदादीषे इहया की तख़रीज में कई ज़िल्दों पर मुश्तमिल किताब लिखी फिर

1..... إتحاف السادة المتقين، مقدمة الكتاب، ج 1، ص 62 تا 65۔

2..... كشف الظنون، ج 1، ص 24۔

إتحاف السادة المتقين، مقدمة الكتاب، ج 1، ص 56۔

3..... الخيرات الحسان في مناقب الامام الاعظم ابي حنيفة النعمان، المقدمة الاولى، ص 11، ملخصاً۔

“الْمَغْنَى عَنْ حَمَلِ الْأَسْفَارِ” के नाम से इस का इख़्तिसार किया...हफ़िज़ इराक़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَاقِي ही के शागिर्द इमाम इब्ने हज़र अस्कलानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي (मुतवफ़्फ़ा 852 हि.) ने एक जिल्द में इह्याउल उलूम की अह्दादीष की तख़रीज की और इस में उन अह्दादीष को बयान किया जिन के मुतअल्लिक़ इन के उस्ताज़े मोहतरम ने तवक्कुफ़ किया था..... और हज़रते सय्यिदुना अल्लामा कासिम बिन कुतलूबुगा हनफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي (मुतवफ़्फ़ा 879 हि.) ने “تَحْفَةُ الْأَحْيَاءِ فِي مَا فَاتَ مِنْ تَخْرِيجِ أَحَادِيثِ الْأَحْيَاءِ” के नाम से तख़रीज की। (1)

सफ़रे आख़िरत :

उम्र के आख़िरी हिस्से में अगर्चे हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي का ज़ियादा तर वक़्त इबादत में गुज़रता और शबो रोज़ मुजाहदात व रियाज़ात में बसर करते थे मगर तस्नीफ़ व तालीफ़ का मशग़ला बिल्कुल तर्क न फ़रमाया। उसूले फ़िक़ह में आप की आ'ला दर्जे की तस्नीफ़ “الْمُسْتَصْفَى” 504 हि. की तस्नीफ़ है। इस के एक बरस बा'द आप ने 55 साल की उम्र में बरोज़ पीर 14 जमादिल आख़िर 505 हि. में ब मक़ामे ताबरान (तूस) में इन्तिक़ाल फ़रमाया और वहीं मदफून हुए। विराषत में इस क़दर माल छोड़ा जो आप के अहलो इयाल के लिये काफ़ी था हालांकि आप को बहुत ज़ियादा मालो ज़र पेश किया गया मगर आप ने क़बूल न किया और कभी किसी के आगे दस्ते सुवाल दराज़ न किया। अवलाद में सिर्फ़ बेटियां ही सोगवार छोड़ीं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (मुतवफ़्फ़ा 597 हि.) ने “الثَبَاتُ عِنْدَ الْمَمَاتِ” में आप के विसाल का वाक़िआ हज़रते सय्यिदुना अहमद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي (मुतवफ़्फ़ा 520 हि.) की ज़बानी येह लिखा है कि पीर के दिन हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي सुब्ह के वक़्त बिस्तर से उठे। वुजू कर के नमाज़ पढ़ी फिर कफ़न मंगवाया और आंखों से लगा कर फ़रमाया : “मेरे रब्ब غَزَّ وَجَلَّ का हुक्म सर आंखों पर।” इतना कहा और चेहरा क़िब्ला रू कर के पाऊं फैला दिये। लोगों ने देखा तो रूह क़फ़से उन्सुरी से परवाज़ कर चुकी थी। (2)

अवलाह غَزَّ وَجَلَّ की इन पर रहमत हो और इन के सदके हमारी मग़फ़िरत हो। (अमिन بِحَاإِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ)



①.....كشف الظنون، ج ١، ص ٢٤ - اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ٥٥ -

②.....الثبات عند الممات، ص ١٧٨ - طبقات الشافعية الكبرى للسبكي، ج ٦، ص ٢١١ -

اتحاف السادة المتّقين، مقدمة الكتاب، ج ١، ص ١٤ -

इब्तिदाइया

सब से पहले मैं **अल्लाह** جَلَّ شَانُهُ की बे हिसाब और मुसलसल हम्दो षना करता हूं अगर्चे उस की शाने अज़मत के सामने तमाम हम्द करने वालों की हम्द नाक़िस है। इस के बा'द उस के रसूलों पर हदिय्यए दुरूदो सलाम भेजता हूं जो सय्यिदुल बशर के साथ साथ दूसरे तमाम रसूलों को भी शामिल हो। फिर खुदा से ख़ैर त़लब करता हूं अपने इस इरादे पर जो मैं ने इह्याए उलूमिद्दीन(या'नी दीनी उलूम को ज़िन्दा करने) के बारे में किताब लिखने का किया है। इस के बा'द ऐ दीदा व दानिस्ता इन्कार करने वालों के गुरौह में शामिल शिद्दत से मलामत करने वाले और नादानिस्ता इन्कार करने वालों के त़बक़ात में इन्कार और ला'न ता'न में हृद से बढ़ने वाले ! तेरे तअज़्जुब व हैरत का ख़ातिमा करने की कोशिश करूंगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरी ज़बान से ख़ामोशी की गिरह खोल दी है और कलाम व गुफ़्तगू का हार मेरे गले में डाल दिया है क्यूंकि तूने बातिल की मदद और जहालत को अच्छा क़रार देने में हट धर्मी इख़्तियार करने के साथ साथ वाज़ेह हक़ से आंखें बन्द कर रखी हैं और उन लोगों में फ़ितना व फ़साद फैला रखा है जो (बुरी) रस्मों से थोड़ा बहुत निकलना चाहते या उन रस्मों से तअल्लुक़ तोड़ कर इल्म पर अमल पैरा होने की कुछ न कुछ ख़्वाहिश रखते हैं। इस उम्मीद पर कि तज़किय्यए नफ़्स और दिल की इस्लाह करने में कामयाब हो जाएं जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है और तमाम उम्र की जाने वाली कोताहियों के तदारुक से नाउम्मीद हो कर ज़िन्दगी की बा'ज़ कोताहियों का तदारुक कर लें और लोगों के उस हुजूम से बच जाएं जिन के बारे में आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन सब से सख़्त अज़ाब उस अ़लिम को होगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के इल्म से नफ़अ न दिया।”⁽¹⁾

वजहे तश्नीफ़ :

मेरी ज़िन्दगी की क़सम⁽²⁾ तेरे तकब्बुर पर अड़ने का सबब इस बीमारी के सिवा कोई नहीं जिस ने बहुत से लोगों को घेर रखा है बल्कि तमाम लोग ही इस में मुलव्विष हैं या'नी

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في نشر العلم، الحديث: ١٤٤٨، ج ٢، ص ٢٨٥۔

المجالسة وجواهر العلم للدينوري، الحديث: ٩١، ج ١، ص ٥٤۔

②.....मुफ़स्सीरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान ميرआतुल मनाजीह, जि 4, स.

337 पर फ़रमाते हैं : لَعْنَةُ (या'नी मेरे उम्र की क़सम) क़समे शरई नहीं, वोह तो सिर्फ़ खुदा के नाम की होती है,

बल्कि क़समे लुग़वी है जैसे रब्ब तआला फ़रमाता है : (وَالَّذِينَ وَالرَّيُّونَ ۚ) (پ ٣٠، التین: ١) :

लिहाज़ा येह उस हदीष के ख़िलाफ़ नहीं जिस में इरशाद हुवा कि ग़ैरे खुदा की क़सम न खाओ।

आखिरत की अज़मत जानने से कासिर और इस बात से बे ख़बर हैं कि आखिरत का मुआमला बहुत संगीन और मुसीबत सख़्त है। आखिरत सामने आ रही और दुनिया पीठ फ़ैरे जा रही है। मौत करीब है। सफ़र दूर का और ज़ादे राह मा'मूली है। ख़तरा बहुत ज़ियादा और रास्ता भी बन्द है और परखने वाले साहिबे बसीरत के नज़दीक वोह इल्मो अमल ना मक्बूल है जो ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये न हो। कषीर हलाकतों और मुसीबतों की मौजूदगी में आखिरत के रास्ते पर बिगैर किसी राहनुमा और रफ़ीक़ के चलना बहुत मुश्किल और बाइषे थकन है। इस रास्ते के राहनुमा उ-लमा हैं जो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वारिष हैं। लेकिन अब ज़माना इन से ख़ाली और सिर्फ़ रसमी लोग बाक़ी हैं। इन में से अक़षर पर शैतानियत का ग़लबा है और सरकशी ने इन्हें गुमराह कर रखा है। हर एक फ़ौरी फ़ाइदे के हुसूल की कोशिश में नेकी को बुराई और बुराई को नेकी समझता है यहां तक कि इल्मे दीन नापैद हो गया और ज़मीन से हिदायत के निशानात मिट गए। इन्होंने लोगों को येह तसव्वुर दिया कि इल्म हुकूमत का फ़तवा है कि जब अहमकों में फ़साद हो जाता है तो काज़ी झगड़ों के फैसलों में इस से मदद त़लब करते हैं। या बहूषो मुबाह़षा और मुनाज़िरे का नाम इल्म है जिसे फ़ख़्रो बड़ाई का त़ालिब मुख़ालिफ़ पर ग़लबा पाने और उस को साकित व ला ज़वाब करने के लिये ज़िरह के तौर पर इस्ति'माल करता है। या मुक़फ़फ़ व मुसज्जअ क़लाम करने का नाम इल्म है जिस के ज़रीए वाइज़ लोगों को धोके में मुब्तला करता है क्यूंकि वोह समझते हैं कि इन तीन के सिवा ह़राम माल और सामाने दुनिया इक़ठ्ठा करने का कोई जाल नहीं।

राहे आखिरत का इल्म जिस पर सलफ़े सालेहीन चला करते थे, जिसे **اَعْلَاهُ** غَرْوَجَل ने अपनी किताब में फ़िक़ह, ह़िक्मत, इल्म, रोशनी, चमक और रुशदो हिदायत का नाम दिया है वोह मख़्लूक़ के दरमियान से लपेट दिया गया और उसे बिल्कुल भुला दिया गया है। चूँकि येह बात दीन में मज़बूत रखना (शिगाफ़) और निहायत तारीक़ मुसीबत है इस लिये मैं इस किताब को लिखने में मशगूल हुवा ताकि दीनी उलूम को ज़िन्दा करूं और मुतक़द्दिमीन अइम्मा के रास्तों और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और सलफ़े सालेहीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين के नज़दीक नफ़अमन्द उलूम की अज़मत को वाजेह करूं।

किताब की तरतीब और अबवाब बन्दी :

मैं ने इस किताब को बुन्यादी तौर पर चार हिस्सों में तक्सीम किया है :

- (1) इबादात (2) आदात (3) मोहलिकात (या'नी हलाक करने वाले उमूर का बयान) और (4) मुनजियात (या'नी नजात दिलाने वाले उमूर का बयान)। लेकिन इल्म की अहम्मियत के

पेशे नज़र किताब के शुरूअ में इल्म का बाब क़ाइम किया है और इस में भी पहले उस इल्म को वाज़ेह करूंगा जिसे तलब करने का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़बान से हुक्म दिया है। चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : इल्म की तलाश हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।⁽¹⁾

फिर नफ़अ बख़्श इल्म को नुक़सान देह इल्म से मुमताज़ करूंगा क्यूंकि हुज़ूरे पुर नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हम ऐसे इल्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं जो नफ़अ न दे।”⁽²⁾

इस के बा'द षाबित करूंगा कि इस ज़माने के लोग सहीह रास्ते से फिर गए हैं और चमकती रैत को पानी समझ कर धोके का शिकार हैं और उलूम के मुआमले में मग़ज़ को छोड़ कर छिलके पर इक्तिफ़ा किये बैठे हैं।

किताब के मशमूलात पर एक नज़र :

इबादात का बयान दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) इल्म (2) क़्वाइदे अक़ाइद (3) तह़ारत के असरार (4) नमाज़ के असरार (5) ज़कात के असरार (6) रोज़े के असरार (7) हज़ के असरार (8) तिलावते कुरआन के आदाब (9) अज़कार और दुआएं (10) अवक़ात के ए'तिबार से वज़ाइफ़ की तरतीब।

आदात का बयान भी दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) खाने के आदाब (2) निकाह के आदाब (3) कमाने के अहक़ाम (4) हलाल व ह़राम (5) मुख़्तलिफ़ किस्म के लोगों के साथ सोहबत और मुआशरत के आदाब (6) गोशा नशीनी (7) सफ़र के आदाब (8) समाअ और वज्द का बयान (9) नेकी की दा'वत देना और बुराई से मन्अ करना (10) आदाबे मईशत और अख़्लाके नबुव्वत।

मोहलिकात का बयान भी दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) अज़ाइबाते क़ल्ब की शर्ह (2) नफ़्स की रियाज़त (3) पेट और शर्मगाह की शहवत की आफ़ात (4) ज़बान की आफ़ात (5) गुस्सा, कीना और ह़सद की आफ़ात (6) दुन्या की मज़म्मत (7) माल और बुख़ल की मज़म्मत (8) हुब्बे जाह और रिया की मज़म्मत (9) तकब्बुर और खुद पसन्दी की मज़म्मत (10) गुरूर की मज़म्मत।

①.....سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلم والحث.....الخ، الحديث: ٢٢٢، ج ١، ص ١٢٦۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء، باب التعوذ من شر ما عمل.....الخ، الحديث: ٢٤٢٢، ص ١٢٥٤۔

मुनजियात का बयान भी दस अबवाब पर मुश्तमिल है :

(1) तौबा (2) सब्रो शुक्र (3) खौफ़ व रजा (4) फ़ख़्र व ज़ोहद (5) तौहीद और तवक्कुल (6) महब्बत, शौक़, उन्स और रिज़ा (7) निय्यत, सच्चाई और इख़लास (8) मुराक़्बा और मुहासबा (9) तफ़क्कुर (10) मौत को याद करना ।

मजीद तफ़्शील :

इबादात के बयान में इबादात के पोशीदा आदाब, इस के तरीक़ों की बारिकियां और इस के मअानी के असरार बयान करूंगा जिन की एक बा अमल अलिम को ज़रूरत होती है बल्कि जो इन्हें नहीं जानता उस का शुमार उ-लमाए आख़िरत में नहीं होता और इन में अक़षर वोह बातें हैं जिन्हें फ़िक़ह की किताबों में ज़िक्र नहीं किया गया ।

आदात के बयान में लोगों के दरमियान जारी मुआमलात के असरार, इन की गहराइयां, इन के तरीक़ों की बारिकियां और इन के जारी होने के मक़ामात की पोशीदा परहेज़गारी बयान करूंगा जिन की हर दीनदार को ज़रूरत होती है ।

मोहलिकात के बयान में हर उस बुरी सिफ़त को बयान करूंगा जिसे कुरआने पाक ने मिटाने और नफ़्स और दिल को इस से पाक रखने का हुक्म दिया है । इन में से हर आदत की ता'रीफ़ और उस की हकीक़त बयान करने के बा'द उस सबब का ज़िक्र करूंगा जिस से वोह पैदा होती है । फिर वोह आफ़ात जो इस पर मुरत्तब होती हैं । फिर वोह निशानियां जिन से इस की पहचान होती है । फिर इस से छुटकारा पाने का तरीक़ा और इस का इलाज बयान करूंगा । इन सब पर आयते मुक़द्दसा, अह़ादीषे मुबारका और आधार से दलाइल नक़ल करूंगा ।

मुनजियात के बयान में हर उस क़ाबिले ता'रीफ़ ख़स्लत को बयान करूंगा जिस में रग़्बत की जाती है । या'नी मुक़र्रबीन और सिद्दीकीन की आदात जिन के ज़रीए बन्दा रब्ब عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल करता है । नीज़ हर ख़स्लत की ता'रीफ़, इस की हकीक़त, इसे हासिल करने का तरीक़ा, फिर इस से हासिल होने वाले फ़वाइद, इसे पहचानने की अलामत और वोह फ़ज़ीलत जिस की वजह से इस में रग़्बत की जाती है नक़ली व अक़ली दलाइल के साथ बयान करूंगा ।

किताब की चन्द खुशख़बरीयात :

मज़कूरा उमूर में से बा'ज़ पर कुछ लोगों ने किताबें लिखी हैं लेकिन येह किताब उन किताबों से पांच वजह से मुमताज़ है :

﴿1﴾.... जिस चीज़ को उन्होंने ने पेचीदा रखा मैं ने उसे हल किया और जिसे उन्होंने ने इजमालन बयान किया मैं ने उसे वज़ाहत के साथ बयान किया है ।

﴿2﴾.... जिस चीज़ को उन्होंने ने तरतीब से बयान नहीं किया मैं ने उस की तरतीब काइम की और जिसे उन्होंने ने अलाहिदा अलाहिदा बयान किया मैं ने उसे यकजा जिक्र किया है ।

﴿3﴾....जिस चीज़ को उन्होंने ने त्वालत से लिखा मैं ने उसे मुख़्तसर बयान किया है ।

﴿4﴾....जो बात उन्होंने ने बार बार नक़ल की मैं ने तकरार को हज़फ़ कर दिया और अस्ल मक्सूद को बाकी रखा है ।

﴿5﴾....जिन पेचीदा बातों का समझना दुश्वार है उन्होंने ने इन्हें बिल्कुल नहीं छेड़ा अगर्चे उन्होंने ने एक ही तरीका इख़्तियार किया है लेकिन कोई बर्इद नहीं कि किसी सालिक को कोई ऐसी ख़ास बात पता चल जाए जिस से उस के रुफ़का बे ख़बर हों या वोह बे ख़बर तो न हों मगर उसे लाना भूल गए हों या भूले भी न हों लेकिन किसी मानेअ (रुकावट) की वजह से उस से पर्दा न उठाया हो । येह इस किताब की खुसूसिय्यात हैं । मज़ीद येह किताब उन उलूम की तफ़्सील पर भी मुश्तमिल है ।

किताब चार हिस्सों में तक्सीम करने की वजह :

दो बातों ने मुझे इस किताब को चार हिस्सों में तक्सीम करने की तरफ़ राग़िब किया :

पहली वजह : हकीक़त में येही अस्ल वजह है और वोह येह है कि तहकीक़ व तफ़हीम में येह तरतीब इल्मे ज़रूरी की तरह है क्यूंकि जिस इल्म के ज़रीए आख़िरत की तरफ़ तवज्जोह की जाती है उस की दो किस्में हैं : (1) इल्मे मुआमला और (2) इल्मे मुकाशफ़ा ।

इल्मे मुकाशफ़ा व इल्मे मुआमला की ता'रीफ़ :

इल्मे मुकाशफ़ा : से मुराद वोह इल्म है जिस में सिर्फ़ मा'लूमात का पता चलता है और **इल्मे मुआमला :** से मुराद वोह इल्म है जिस में मा'लूमात जानने के साथ साथ इन पर अमल भी किया जाता है । इस किताब का मक्सूद सिर्फ़ इल्मे मुआमला है इल्मे मुकाशफ़ा इस का मौजूअ नहीं क्यूंकि इसे किताबों में लाने की इजाज़त नहीं अगर्चे येह इल्मे तालिबाने हक़ का बड़ा मक्सद और सिद्दीकीन का अस्ल मक्सूद है और इल्मे मुआमला उस तक ले जाने वाला एक रास्ता है । लेकिन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने लोगों के साथ सिर्फ़ इल्मे तरीक़त व हिदायत में बात की है और इल्मे मुकाशफ़ा में इशारे और मिषाल व इजमाल के तौर पर गुफ़्तगू फ़रमाई है क्यूंकि वोह जानते थे कि लोगों की अक़लें इन की मुतहम्मिल नहीं हो सकेंगी और उ-लमा तो अम्बिया के वारिष हैं इस लिये उन के लिये इस रास्ते से फिरने की गुन्जाइश नहीं ।

इल्मे मुआमला की अक्लाम :

इल्मे मुआमला की दो किस्में हैं : (1).... इल्मे ज़ाहिर या'नी ज़ाहिरी आ'ज़ा के आ'माल का इल्म और (2)....इल्मे बातिन या'नी दिल के आ'माल का इल्म । ज़ाहिरी आ'ज़ा से सादिर होने वाला अमल या इबादत होगा या अ़दत और दिल जो हवास से पर्दे में है इस पर आलमे मलकूत से जारी होने वाला अमल महमूद होगा या मज़मूम । लिहाज़ा इस इल्म की दो किस्में हुई ज़ाहिर व बातिन । ज़ाहिरी हिस्सा जो आ'ज़ा से मुतअल्लिक है इस की दो किस्में हैं : (1) इबादत (2) अ़दत । बातिनी हिस्सा जो दिल के अहवाल और नफ़्स के अख़लाक से मुतअल्लिक है इस की भी दो किस्में हैं : (1) मज़मूम (2) महमूद । चुनान्वे, मज़मूई तौर पर ये चार किस्में हुई । इल्मे मुआमला में इन अक्लाम को नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता ।

दूसरी वजह : यह है कि मैं ने तलबा में उस फ़िक़ह की सच्ची रग़बत देखी जो इन लोगों के नज़दीक सहीह है जो ख़ौफ़े खुदा नहीं रखते । वोह इसे फ़ख़र करने और मुक़ाबलों में अपना मक़ाम व मर्तबा ज़ाहिर करने के लिये ज़िरह के तौर पर इस्ति'माल करते हैं इस की भी चार किस्में हैं । महबूब के लिबास में मल्बूस भी महबूब होता है इस लिये मैं ने किताब को फ़िक़ह की तरतीब पर लाने में ज़रा भी कोताही नहीं की ताकि लोगों के दिलों को आहिस्ता आहिस्ता इस की तरफ़ माइल किया जा सके । येही वजह है कि जिन लोगों ने उमरा के दिलों का तिब्ब की तरफ़ मैलान चाहा उन्होंने ने अपनी किताबों को सितारों की तक्वीम की सूरत में जदवलों और हिन्दसों में लिखा और इस का नाम तक्वीमे सिहूहत रखा ताकि इस जिन्स से उमरा के उन्स के बाइष इन्हें इस के मुतालाए की तरफ़ मुतवज्जेह करें और वोह इल्म कि जिस में अबदी ज़िन्दगी का फाइदा हो उस की तरफ़ लोगों के दिलों को खींचने का हीला इस हीले से अहम है जो तिब्ब की तरफ़ खींचता है क्यूंकि तिब्ब तो सिर्फ़ जिस्मानी सिहूहत का फाइदा देती है जब कि इल्म दिलों और रूहों का इलाज है इस के ज़रीए इन्सान अबदी ज़िन्दगी तक पहुंच जाता है । लिहाज़ा इस के मुक़ाबले में तिब्ब की क्या हैषियत कि जिस के ज़रीए सिर्फ़ जिस्मानी इलाज होता है और जिस्म तो कुछ ही दिनों में ख़राब हो जाएंगे । हम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़, हिदायत और सिराते मुस्तकीम पर क़ाइम रहने का सुवाल करते हैं वोही करीम और जव्वाद है ।



इल्म का बयान

येह सात अबवाब पर मुश्तमिल है : (1) इल्म, ता'लीम और तअल्लुम की फ़ज़ीलत (2) फ़र्जे ऐन और फ़र्जे किफ़ाय़ा उलूम, इल्मे फ़िक्ह और इल्मे कलाम के इल्मे दीन होने की हद और इल्मे आख़िरत व इल्मे दुन्या का बयान (3) उन मज़मूम (क़बीह) उलूम का बयान जिन्हें अ़वाम इल्मे दीन समझते हैं नीज़ इस बात का बयान कि कौन सा इल्म कितना मज़मूम है (4) आफ़ाते मुनाज़रा और लोगों के इख़िलाफ़ात और झगड़ों में मशगूल होने की वुजूहात का बयान (5) उस्ताज़ व शाग़िर्द के आदाब (6) इल्म और उ-लमा की आफ़ात और उ-लमाए दुन्या व उ-लमाए आख़िरत के दरमियान फ़र्क़ करने वाली अ़लामात का बयान और (7) अक्ल, इस की फ़ज़ीलत, इस की अक़्साम और इस के बारे में वारिद रिवायात का बयान ।

बाब नम्बर : 1

इल्म, ता'लीम और तअल्लुम की फ़ज़ीलत और

इस के अक्ली व नक्ली दलाइल का बयान

पहली फ़स्ल :

इल्म की फ़ज़ीलत

इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने बारी तअ़ाला :

﴿1﴾

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ
أُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِمَا يَقْسُطُ^ط (پ ۳، ال عمران: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आलिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर ।

देखिये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किस तरह अपनी पाक जात से आगाज़ फ़रमाया फिर मलाइका और फिर इल्म वालों का ज़िक्र फ़रमाया । शरफ़ व फ़ज़ीलत और अज़मत व कमाल के लिये येही काफ़ी है ।

﴿2﴾

يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ^ط (پ ۲۸، المجادلة: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा ।

उ-लमा की आम लोगों पर फज़ीलत : हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : “उ-लमाए किराम आम मोअमिनीन से 700 दर्जे बुलन्द होंगे, हर दो दर्जों के दरमियान 500 साल की मसाफ़त है।” (1)

﴿3﴾

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ط (پ ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान ।

﴿4﴾

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ط (پ ۲۲، فاطر: ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं ।

﴿5﴾

قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ع (پ ۱۳، الرعد: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** गवाह काफी है मुझ में और तुम में और वोह जिसे किताब का इल्म है ।

﴿6﴾

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ (پ ۱۹، النمل: ۴۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ने अर्ज़ की जिस के पास किताब का इल्म था कि मैं इसे हुज़ूर में हाज़िर कर दूंगा ।

इस में तम्बीह है कि इल्म की ताक़त से वोह इस पर क़ादिर हुवा (या'नी हज़रते सय्यिदुना सुलैमान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के वज़ीर हज़रते सय्यिदुना आसिफ़ बिन बरख़िया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इल्म की ताक़त से पलक झपकने में तख़्त लाने पर क़ादिर हुए) ।

﴿7﴾

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَكُنْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ط (پ ۲۰، القصص: ۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का षवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे ।

इस आयते मुबारका में बयान फ़रमाया कि आख़िरत की क़द्रो मन्ज़िलत इल्म के ज़रीए मा'लूम होती है ।

﴿8﴾

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَا
إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾ (پ ۲۰، العنکبوت: ۴۳)

ترجمہ کجزل ایمان : اور یہہ میپالےں ہم
لोगों के लिये बयान फरमाते हैं और इन्हें नहीं
समझते मगर इल्म वाले ।

﴿9﴾

وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ
مِنْهُمْ لَعَلَّهِ الَّذِينَ يَسْتَنْبِطُونَهُ مِنْهُمْ
(پ ۵، النساء: ۸۳)

ترجمہ کجزل ایمان : और अगर इस में रसूल
और अपने जी इख्तियार लोगों की तरफ़ रुजूअ
लाते तो ज़रूर उन से इस की हकीकत जान लेते
येह जो बा'द में काविश करते हैं ।

वाकिअत के फैसले को उ-लमाए किराम के इजतिहाद की तरफ़ लौटा कर हुक्मे इलाही
के इज़हार में इन का दर्जा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दर्जे से मिलाया ।

﴿10﴾

يَبْنِي أَدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُورِي
سَوَاتِكُمْ وَرَيْشًا ط وَ لِبَاسَ التَّقْوَى
ذَلِكَ خَيْرٌ ط (پ ۸، الاعراف: ۲۶)

ترجمہ کجزل ایمان : ऐ आदम की अवलाद !
बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ एक लिबास वोह उतारा
कि तुम्हारी शर्म की चीजें छुपाए और एक वोह कि
तुम्हारी आराइश हो और परहेज़गारी का लिबास
वोह सब से भला ।

एक कौल येह है कि इस आयत में لِبَاسًا से इल्म, رَيْشًا से यकीन और لِبَاسَ التَّقْوَى से हया
मुराद है ।

﴿11﴾

وَلَقَدْ جِئْنَاهُمْ بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَى عِلْمٍ
(پ ۸، الاعراف: ۵۲)

ترجمہ कजزل इमान : और बेशक हम उन
के पास एक किताब लाए जिसे हम ने एक बड़े
इल्म से मुफ़स्सल किया ।

﴿12﴾

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ
(پ ۸، الاعراف: ८)

ترجمہ कजزل इमान : तो ज़रूर हम उन को
बता देंगे अपने इल्म से ।

﴿13﴾

بَلْ هُوَ آيَتٌ بَيِّنَةٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ ط (پ ۱، العنکبوت: ۴۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इल्म दिया गया ।

﴿14﴾

خَلَقَ الْإِنْسَانَ ۚ عَلَيْهِ الْبَيَانُ ۝
(پ ۲، الرحمن: ۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : इन्सानियत की जान मुहम्मद को पैदा किया وما يكون का बयान उन्हें सिखाया ।

इल्म की फज़ीलत पर मुश्तमिल 28 फ़रामीने मुश्तफ़ा :

﴿1﴾.....**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ बूझ और हिदायत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है ।⁽¹⁾

﴿2﴾.....उ-लमा अम्बिया के वारिष हैं ।⁽²⁾

इस से पता चला कि जिस तरह नबुव्वत से बढ़ कर कोई मर्तबा नहीं इसी तरह नबुव्वत की विराषत (या'नी इल्म) से बढ़ कर कोई अज़मत नहीं ।

﴿3﴾.....ज़मीन व आस्मान की तमाम मख़्लूक अ़ालिम के लिये इस्तिग़फ़ार करती है ।⁽³⁾

लिहाज़ा उस से बड़ा मर्तबा किस का होगा जिस के लिये ज़मीन व आस्मान के फ़िरिश्ते मग़फ़िरत की दुआ करते हों । येह अपनी ज़ात में मशगूल है और फ़िरिश्ते इस के लिये इस्तिग़फ़ार में मशगूल हैं ।

﴿4﴾.....बेशक हिक़मत ज़ीमर्तबा के मर्तबे को बढ़ाती और गुलाम को इतनी बुलन्दी अता करती है कि वोह बादशाहों के मक़ाम को पा लेता है ।⁽⁴⁾

इस हदीषे पाक में इल्म के दुन्यवी फ़वाइद बयान किये गए हैं और येह बात यकीनी है कि आख़िरत बहुत बेहतर और बाकी रहने वाली है ।

①.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب النهی عن المسألة، الحدیث: ۱۰۳۷، ص ۵۱۶۔

الزهد للامام احمد بن حنبل، فی فضل ابی هريرة، الحدیث: ۸۸۵، ص ۱۸۲۔

②.....سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل العلم والحث.....الخ، الحدیث: ۲۲۳، ج ۱، ص ۱۲۶۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب السنة، باب فضل العلم والحث.....الخ، الحدیث: ۲۲۳، ج ۱، ص ۱۲۶۔

④.....المجروحین لابن حبان، الرقم: ۴۸۸، صالح بن بشیر المرّی، ج ۱، ص ۴۷۲۔

جامع بیان العلم وفضله، باب قوله: لا حسد الا فی اثین، الحدیث: ۶۳، ص ۳۰، بتغییر۔

﴿5﴾.....दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो किसी मुनाफ़िक़ में नहीं होतीं : हुस्ने अख़्लाक़ और दीन की समझ बूझ ।⁽¹⁾

(हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं :) मौजूदा ज़माने के बा'ज़ फ़ुक़हा के निफ़ाक़ की वजह से इस हदीष में हरगिज़ शक न करना क्यूंकि इस हदीष में फ़िक़ह से मुराद वोह नहीं जो तुम समझते हो, अंन क़रीब हम फ़िक़ह का मा'ना बयान करेंगे और फ़कीह का कम से कम दर्जा येह है कि वोह इस बात का यकीन रखे कि आख़िरत दुन्या से बेहतर है और अगर उस पर इस बात की मा'रिफ़त सच्ची और ग़ालिब होगी तो इस की बरकत से वोह निफ़ाक़ और रिया से पाक हो जाएगा ।

﴿6﴾.....लोगों में सब से अफ़ज़ल वोह मोमिने अ़लीम है कि जब उस की ज़रूरत पड़े तो नफ़अ दे और अगर उस से बे परवाही की जाए तो वोह अपने आप को बे नियाज़ रखे ।⁽²⁾

﴿7﴾.....ईमान बे लिबास है, इस का लिबास परहेज़गारी, ज़ीनत, शर्मों हया और षमरा इल्म है ।⁽³⁾

﴿8﴾.....लोगों में से उ-लमा व मुजाहिदीन दर्जए नबुव्वत के सब से ज़ियादा क़रीब हैं । उ-लमा तो रसूलों की लाई हुई बातों की तरफ़ लोगो की राहनुमाई करते हैं और मुजाहिदीन रसूलों की लाई हुई शरीअत (की हिफ़ाज़त) के लिये तलवारों से जिहाद करते हैं ।⁽⁴⁾

﴿9﴾.....एक क़बीले की मौत एक अ़लिम की मौत से आसान है ।⁽⁵⁾

﴿10﴾.....लोग सोने चांदी की कानों की तरह मुख़्तलिफ़ कानें हैं इन में से जो ज़मानए जाहिलिय्यत में आ'ला थे वोह इस्लाम में भी आ'ला हैं जब कि दीन की समझ बूझ रखते हों ।⁽⁶⁾

1.....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادۃ، الحدیث: ۲۶۹۳، ج ۲، ص ۳۱۳۔

2.....تاریخ دمشق لابن عساکر، عمر بن علی بن ابی طالب، الحدیث: ۹۸۸۶، ج ۴۵، ص ۳۰۳۔

مشکاۃ المصابیح، کتاب العلم، الحدیث: ۲۵۱، ج ۱، ص ۶۷، بتغییر۔

3.....الفقیه والمحقق، ذکر احادیث و اخبار شتی..... الخ، الحدیث: ۱۲۹، ج ۱، ص ۱۴۶۔

4.....المرجع السابق، الحدیث: ۱۳۲، ص ۱۴۸۔

5.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی طلب العلم فحصل فی فضل العلم وشرف مقداره، الحدیث: ۱۶۹۹، ج ۲، ص ۲۶۴۔

6.....صحیح مسلم، کتاب البر والصلة والآداب، باب الارواح جنود مجنّدة، الحدیث: ۲۶۳۸، ص ۱۴۱۸۔

﴿11﴾.....क़ियामत के दिन इ-लमा की सियाही शहीदों के खून से तोली जाएगी।⁽¹⁾

﴿12﴾.....जिस ने मेरी उम्मत के लिये अहकाम की 40 हदीषें याद कीं और उन तक पहुंचा दीं मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ और गवाह होऊंगा।⁽²⁾

﴿13﴾.....मेरा जो उम्मती 40 हदीषें याद करेगा वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से अलम और फ़कीह हो कर मिलेगा।⁽³⁾

﴿14﴾.....जो इल्मे दीन हासिल करेगा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस की मुश्किलात को आसान फ़रमा देगा और उसे वहां से रिज़क अता फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा।⁽⁴⁾

﴿15﴾.....**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** की तरफ़ वह्य फ़रमाई कि ऐ इब्राहीम ! मैं अलीम हूं और हर साहिबे इल्म को पसन्द करता हूं।⁽⁵⁾

﴿16﴾.....अलम ज़मीन में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का अमीन होता है।⁽⁶⁾

﴿17﴾.....अगर मेरी उम्मत के दो गुरौह उमरा और इ-लमा ठीक हो जाएं तो सब लोग ठीक हो जाएंगे और अगर वोह बिगड़ जाएं तो सब लोग बिगड़ जाएंगे।⁽⁷⁾

﴿18﴾.....जिस दिन मैं ऐसे इल्म में इज़ाफ़ा न कर सकूं जो मुझे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के करीब कर दे उस दिन के रोशन होने में मेरे लिये कोई बरकत नहीं।⁽⁸⁾

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلماء على الشهداء، الحديث: ۱۳۹، ص ۳۸۔

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب قوله صلى الله عليه وسلم: من حفظ على امتي..... الخ، الحديث: ۱۸۸، ص ۶۳۔

③.....جامع بيان العلم وفضله، الحديث: ۱۸۴، ص ۶۲۔

④.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع في فضل العلم، الحديث: ۱۹۸، ص ۶۶۔

⑤.....جامع بيان العلم وفضله، الحديث: ۲۱۳، ص ۷۰۔

⑥.....جامع بيان العلم وفضله، الحديث: ۲۲۵، ص ۷۲۔

⑦.....جامع البيان العلم وفضله، باب ذم العالم على مداخله السلطان الظالم، الحديث: ۷۱۰، ص ۲۳۱۔

حلیۃ الاولیاء، میمون بن مهران، الحديث: ۳۸۹۸، ج ۳، ص ۱۰۱۔

⑧.....المعجم الاوسط، الحديث: ۶۲۳۶، ج ۵، ص ۷۹۔

﴿19﴾.....ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इल्म को इबादत और शहादत से अफ़ज़ल करार देते हुए इरशाद फ़रमाया : अल्लिम की फ़ज़ीलत अ़बिद पर ऐसी है जैसे मेरी फ़ज़ीलत मेरे अदना सहाबी पर ।⁽¹⁾

(प्यारे इस्लामी भाइयो !) ग़ौर कीजिये ! मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने किस तरह इल्म को दर्जए नबुव्वत के साथ मिला दिया और कैसे इल्म से ख़ाली अमल के मर्तबे को घटा दिया अगर्चे अ़बिद जिस इबादत पर मुवाज़बत इख़्तियार किये होता है वोह इल्म से ख़ाली नहीं होती वरना वोह इबादत ही नहीं जो इल्म से ख़ाली हो ।

﴿20﴾.....अल्लिम की फ़ज़ीलत अ़बिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं के चांद की तमाम सितारों पर ।⁽²⁾

﴿21﴾.....क़ियामत के दिन तीन क़िस्म के लोग शफ़ाअत करेंगे : अम्बिया, उ-लमा और शुहदा ।⁽³⁾

लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि ज़ियादा अज़मत वाला मर्तबा वोह है जिस का ज़िक्र मर्तबए नबुव्वत के साथ मिला हुवा है और येह मर्तबए शहादत से बढ़ कर है अगर्चे शहादत की फ़ज़ीलत में भी कषीर अहदादीष मरवी हैं ।

﴿22﴾.....**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की कोई इबादत ऐसी नहीं की गई जो दीन की समझ बूझ हासिल करने से अफ़ज़ल हो और एक फ़कीह शैतान पर हजार अ़बिदों से ज़ियादा भारी है । हर चीज़ का एक सुतून होता है और इस दीन का सुतून फ़िक़ह है ।⁽⁴⁾

﴿23﴾.....तुम्हारे दीन का अफ़ज़ल अमल वोह है जो आसान तरीन हो और दीन सीखना सब से अफ़ज़ल इबादत है ।⁽⁵⁾

﴿24﴾.....मोमिने अल्लिम मोमिने अ़बिद पर 70 दर्जे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है ।⁽⁶⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقه علی العبادۃ، الحدیث: ۲۶۹۴، ج ۴، ص ۳۱۴، بتغییر۔

②.....سنن ابی داود، کتاب العلم، باب الحث علی طلب العلم، الحدیث: ۳۶۲۱، ج ۳، ص ۴۴۴۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر الشفاعة، الحدیث: ۴۳۱۳، ج ۴، ص ۵۲۶۔

④.....المعجم الاوسط، الحدیث: ۶۱۶۶، ج ۴، ص ۳۳۷۔

جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلم علی العبادۃ، الحدیث: ۱۱۶، ص ۴۲۔

⑤.....جامع بیان العلم وفضله، باب تفضیل العلم علی العبادۃ، الحدیث: ۸۰، ص ۳۴۔

⑥.....جامع بیان العلم وفضله، الحدیث: ۸۴، ص ۳۶۔

﴿25﴾.....बेशक तुम ऐसे ज़माने में हो जिस में उ-लमा ज़ियादा, कुरा और खुतबा थोड़े हैं। देने वाले ज़ियादा और मांगने वाले कम हैं। अन् करीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा जिस में उ-लमा कम और खुतबा ज़ियादा होंगे। देने वाले कम और भिकारी ज़ियादा होंगे। उस ज़माने में इल्म अमल से अफ़ज़ल होगा।⁽¹⁾

﴿26﴾.....आलिम और आबिद के दरमियान 100 दर्जे हैं और हर दो दर्जों के दरमियान इतना फ़ासिला है जितनी मसाफ़त सधाय़ा हुवा उमदा घोड़ा 70 साल तक दौड़ कर तै करता है।⁽²⁾

﴿27﴾.....बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : या رسولل्लाह صلى الله تعالى عليك وسلم अफ़ज़ल अमल कौन सा है ? प्यारे मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و اله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : اَلْعِلْمُ بِاللّٰهِ अर्ज़ की गई : या رسولल्लाह صلى الله تعالى عليك وسلم आप कौन सा इल्म मुराद लेते हैं ? इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُ** की ज़ात का इल्म। अर्ज़ की गई : हमारा सुवाल अमल के मुतअल्लिक है जब कि आप इल्म का इरशाद फ़रमा रहे हैं ? इरशाद फ़रमाया : येह (या'नी ज़ाते बारी तअला का) इल्म हो तो, थोड़ा अमल भी फ़ाइदा देता है और अगर येह न हो तो, ज़ियादा अमल भी फ़ाइदे से ख़ाली होता है।⁽³⁾

﴿28﴾.....**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन इबादत गुज़ारों को उठाएगा फिर उ-लमा को उठाएगा और उन से फ़रमाएगा : ऐ उ-लमा के गुरौह ! मैं तुम्हें जानता हूँ इसी लिये तुम्हें अपनी तरफ़ से इल्म अता किया था और तुम्हें इस लिये इल्म नहीं दिया था कि तुम्हें अज़ाब में मुब्तला करूंगा। जाओ ! मैं ने तुम्हें बख़्श दिया।⁽⁴⁾

हम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने ख़ातिमा की दुआ करते हैं।

①.....المعجم الكبير، الحديث: 3111، ج 3، ص 194-

جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الحديث: 92، ص 38-

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الحديث: 118، ص 43-

③.....جامع بيان العلم وفضله، الحديث: 194، ص 65، بتغير-

④.....جامع بيان العلم وفضله، الحديث: 211، ص 69-

الكامل في ضعفاء الرجال لابن عدى، طلحة بن يزيد الرقى، ج 5، ص 144-

इल्म की फज़ीलत पर मुश्तमिल 20 अक्वाले बुजुर्गाने दीन :

﴿1﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम़ लल्लह त़ाली व ज़हहे क़र्रिम ने हज़रते सय्यिदुना कमील बिन ज़ियाद नखई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلٰی से फ़रमाया : ऐ कमील ! इल्म माल से बेहतर है कि इल्म तेरी हिफ़ज़त करता है जब कि माल की तुझे हिफ़ज़त करनी पड़ती है। इल्म हाकिम है और माल महकूम। माल खर्च करने से घटता है जब कि इल्म खर्च करने से बढ़ता है।⁽¹⁾

मज़ीद फ़रमाया : रात भर इबादत करने वाले दिन भर रोज़ा रखने वाले मुजाहिद से अ़लिम अफ़ज़ल है और अ़लिम की मौत से इस्लाम में ऐसा रखना (शिगाफ़) पड़ता है जिसे उस के नाइब के सिवा कोई नहीं भर सकता।⁽²⁾

आप ऱज़ी लल्लह त़ाली عَنْهُ ने कुछ अशआर पढ़े जिन का मफ़हूम येह है : फ़ख़र उ-लमा ही को लाइक़ है क्यूंकि वोह खुद हिदायत पर हैं और हिदायत के त़लबगारों के लिये राहनुमा हैं। हर शख़्स उसी चीज़ की क़द्र करता है जो उसे अच्छी लगती है और जाहिल उ-लमा के दुश्मन हैं। इल्म के ज़रीए कामयाबी हासिल करो हमेशा की ज़िन्दगी पाओगे। लोग मर जाते हैं जब कि उ-लमा ज़िन्दा रहते हैं।⁽³⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू अस्वद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصّमद ने फ़रमाया : इल्म से बढ़ कर इज़ज़त वाली शै कोई नहीं। बादशाह लोगों पर हुकूमत करते हैं जब कि उ-लमा बादशाहों पर हुकूमत करते हैं।⁽⁴⁾

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास ऱज़ी लल्लह त़ाली عَنْهُمَا ने फ़रमाया : हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصّلوة وَالسّलَام को इल्म, माल और बादशाहत में इख़्तियार दिया गया तो उन्होंने ने इल्म को इख़्तियार किया लिहाज़ा इल्म के साथ उन्हें माल और हुकूमत भी अ़ता कर दी गई।⁽⁵⁾

①.....الفقيه والمتفقه، ذکر تقسیم علی بن ابی طالب احوال الناس.....الخ، الحديث: ١٤٦، ج ١، ص ١٨٢۔

عیون الاخبار للدينوري، كتاب العلم والبيان، ج ٢، ص ١٣٥، ١٣٦۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٤۔

الفقيه والمتفقه، باب تعظيم المتفقه الفقيه، الحديث: ٨٥٦، ج ٢، ص ١٩٨، بالفاظٍ مختلفة۔

③.....الفقيه والمتفقه، الحديث: ٤٦٩، ج ٢، ص ١٥٠۔

④.....الحث علی طلب العلم لابی هلال العسكري، ص ٥٣۔

جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، الحديث: ٢٥٣، ص ٨٢۔

⑤.....تاريخ دمشق لابن عساكر، سليمان بن داود، الحديث: ٩٣٠، ج ٢٢، ص ٢٤٥۔

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ تَعَالَى سے पूछा गया कि इन्सान कौन हैं ? फ़रमाया : उ-लमा । फिर पूछा गया : बादशाह कौन हैं ? फ़रमाया : परहेज़गार । फिर पूछा गया : घटया लोग कौन हैं ? फ़रमाया : जो दीन के बदले दुन्या हासिल करते हैं ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ تَعَالَى ने ग़ैरे आलिम को इन्सानों में शुमार न किया क्योंकि इल्म ही वोह खुसूसियत है जिस की वजह से इन्सान तमाम जानवरों से मुमताज़ होते हैं । पस इन्सान उस वस्फ़ के ज़रीए इन्सान है जिस के बाइष उसे इज़्ज़त हासिल होती है । वोह जिस्मानी कुव्वत की वजह से इन्सान नहीं वरना ऊंट इस से ज़ियादा ताक़तवर है । न जसामत की वजह से इन्सान है वरना हाथी का जिस्म इस से कहीं ज़ियादा बड़ा है । न बहादुरी के सबब वरना दरिन्दे इस से बढ़ कर बहादुर हैं । न इस लिये कि वोह ज़ियादा खाता है क्योंकि बेल का पेट इस से ज़ियादा बड़ा होता है और न इस वजह से कि वोह जिमाअ करता है क्योंकि इस मुआमले में छोटी सी चिड़या इस से बढ़ कर ताक़तवर है बल्कि इन्सान इल्म ही के लिये पैदा किया गया है ।

﴿5﴾....एक आलिम का कौल है कि काश ! मुझे मा'लूम हो जाए कि जिसे इल्म नहीं मिला उसे क्या मिला और जिसे इल्म मिला उसे क्या नहीं मिला । मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जिसे कुरआन दिया गया और उस ने येह खयाल किया कि किसी को उस से बेहतर दिया गया है तो उस ने उस चीज़ को हकीर समझा जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने अज़ीम किया ।⁽²⁾

﴿6﴾....हज़रते सय्यिदुना फ़ह्रे मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : अगर मरीज़ को खाने, पीने और दवा से रोक दिया जाए तो क्या वोह मर नहीं जाएगा ? लोगों ने कहा : क्यों नहीं । फ़रमाया : दिल का भी येही मुआमला है कि अगर तीन दिन तक इस से इल्मो हिक्मत को दूर रखा जाए तो वोह मुर्दा हो जाता है ।⁽³⁾

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने बिल्कुल सच फ़रमाया क्योंकि जिस तरह खाना बदन की ग़िज़ा है इसी तरह इल्मो हिक्मत दिल की ग़िज़ा है जिन की बदौलत वोह ज़िन्दा रहता है और जिस के पास इल्म नहीं उस का दिल बीमार और उस की मौत लाज़िमी है लेकिन उसे इस बात की

①.....المجالسة وجواهر العلم للدينوري، الجزء الثاني، الرقم: ٣٠٠، ج ١، ص ١٦٠ -

شعب الايمان للبيهقي، باب في نشر العلم، الرقم ١٨٣٤، ج ٢، ص ٢٩٨ -

②.....الزهد لابن المبارك، باب ماجاء في ذنب التنعم في الدنيا، الحدى ث: ٤٩٩، ص ٢٤٥، بتغير -

③.....التذكرة في الوعظ لابن الجوزي، المجلس الثالث: فضل العلم والعلماء، ص ٥٦ -

ख़बर नहीं होती क्यूंकि दुन्या की महबूबत और इस में मशगूलियत इस के एहसास को ख़त्म कर देती है जैसा कि ख़ौफ़ के ग़लबे के वक़्त ज़ख़्म की तकलीफ़ का एहसास नहीं रहता अगर्चे तकलीफ़ मौजूद होती है। फिर जब मौत उस से दुन्या के बोझ उतारती है तब वोह अपनी हलाकत महसूस कर के बहुत पछताता है लेकिन फिर येह उस के हक़ में बेसूद होता है। येह ऐसे है जैसे मदहोश को नशे और ख़ौफ़ की हालत में लगे ज़ख़्मों का एहसास उस वक़्त होता है जब उसे ख़ौफ़ और नशे से नजात मिलती है। हम पर्दे खुलने के दिन से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं। बेशक लोग सोए हुए हैं जब मरेंगे तो उन की आंखें खुल जाएंगी।

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : उ-लमा की सियाही का शुहदा के खून से वज़्न किया जाएगा तो उ-लमा की सियाही शुहदा के खून से भारी होगी।⁽¹⁾

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : इल्म सीखो इस से पहले कि उठा लिया जाए।⁽²⁾ और इल्म का उठाया जाना येह है कि उ-लमा वफ़ात पा जाएंगे। उस ज़ात की क़सम जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! राहे खुदा में मारे जाने वाले शुहदा जब उ-लमा का मक़ाम देखेंगे तो तमन्ना करेंगे कि काश ! उन्हें भी अलिम उठाया जाता। कोई भी अलिम पैदा नहीं होता इल्म सीखने से ही आता है।⁽³⁾

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : रात में कुछ देर इल्म की तकरार करना मुझे सारी रात शब बेदारी से ज़ियादा महबूब है।⁽⁴⁾ इसी तरह हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ और हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل से भी मन्कूल है।

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي इस इरशादे बारी तआला :

رَبِّاَ اَتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ (البقرة: २०१)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : ऐ रब हमारे हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

①.....العلل المنهاية لابن الجوزي، كتاب العلم، باب وزن حبر العلماء.....الخ، الحدیث : ۸۵، ج ۱، ص ۸۱۔

②.....سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلماء والحث.....الخ، الحدیث : ۲۲۸، ج ۱، ص ۱۵۰، عن ابی امامة۔

③.....الزهدي للإمام احمد بن حنبل، في فضل ابی هريرة، الحديث : ۸۹۹، ص ۱۸۳۔

④.....جامع معمر بن راشد مع مصنف عبدالرزاق، باب العلم، الحديث : ۲۰۲۳۶، ج ۱۰، ص ۲۳۸۔

की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : दुन्या में **حَسَنَةً** से मुराद इल्म और इबादत है जब कि आख़िरत में इस से मुराद जन्नत है ।⁽¹⁾

﴿11﴾.....किसी दाना से पूछा गया कि कौन सी चीज़ें ज़ख़ीरा करनी चाहिये ? जवाब दिया : वोह चीज़ें कि जब तुम्हारी कशती डूब जाए तो वोह तुम्हारे साथ तैरने लगें या'नी इल्म ।⁽²⁾

बा'ज ने कहा : कशती के गर्क होने से मुराद मौत के ज़रीए बदन का हलाक होना है ।

﴿12﴾.....कहा गया है कि जो हिक्मत को लगाम बना लेता है लोग उसे इमाम बना लेते हैं और जो हिक्मत को समझ लेता है लोग उसे इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं ।⁽³⁾

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** ने फ़रमाया : इल्म की अज़मत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जिस की तरफ़ येह मन्सूब हो ख़्वाह छोटी सी बात में, तो वोह खुश होता है और जिस से इसे उठा लिया जाता है वोह रंजीदा होता है ।⁽⁴⁾

﴿14﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : ऐ लोगो ! तुम पर इल्म हासिल करना लाज़िम है । बेशक **اللَّهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** की एक चादरे महब्बत है और जो इल्म का एक बाब हासिल कर लेता है **اللَّهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** उसे वोह चादर पहना देता है । फिर अगर उस से कोई गुनाह हो जाए तो उसे अपनी रिज़ा वाले कामों में लगा देता है ताकि चादरे महब्बत उस से सल्ब न करे अगरचे येह सिलसिला इतना त़वील हो कि उसे मौत आ जाए ।⁽⁵⁾

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** का कौल है कि जल्द ही उ-लमा मालिक बन जाएंगे और हर उस इज़्ज़त का अन्जामे कार ज़िल्लत होता है जिसे इल्म से मज़बूत न किया जाए ।⁽⁶⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی عقد التسبیح بالید، الحدیث : ۳۴۹۹، ج ۵، ص ۲۹۵ -

②.....البحث علی طلب العلم لابی هلال العسکری، ص ۶۷ -

جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث : ۲۴۶، ص ۸۰ -

③.....جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، الحدیث : ۲۴۶، ص ۸۰ -

④.....المرجع السابق، الحدیث : ۲۴۷، ص ۸۳، بتغییر -

⑤.....المرجع السابق، الحدیث : ۲۵۱ -

⑥.....عیون الاخبار للدينوري، کتاب العلم والبيان، ج ۲، ص ۱۳۷ -

﴿16﴾.....हज़रते सय्यिदुना सालिम बिन अबू जअद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَحَد बयान करते हैं कि मुझे मेरे आका ने 300 दिरहम में खरीद कर आज़ाद कर दिया तो मैं ने सोचा कि अब कौन सा पेशा इख़्तियार करूं ? बिल आख़िर हुसूले इल्म में मशगूल हो गया । अभी साल भी नहीं गुज़रा था कि शहर का हाकिम मुझ से मिलने के लिये आया लेकिन मैं ने उसे इजाज़त न दी ।⁽¹⁾

﴿17﴾.....हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन अबू बक्र رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं इराक़ में था, मेरे वालिद ने मुझे पैग़ाम भेजा कि इल्म को लाज़िम कर लो ! अगर ग़रीब हो तो येह तुम्हारा माल है और अगर ग़नी हो तो तुम्हारा ज़माल है ।⁽²⁾

﴿18﴾.....मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना लुक़मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने बेटे को जो वसिय्यतें फ़रमाईं इन में एक वसिय्यत येह भी थी कि बेटा उ-लमा की सोहबत में बैठा करो, अपने ज़ानू उन के ज़ानू से मिला दो क्यूंकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ नूरे हिक़मत से दिलों को ऐसे ज़िन्दा करता है जैसे ज़मीन को मुसलसल बारिश से ।⁽³⁾

﴿19﴾.....किसी दाना का कौल है कि अलमि की वफ़ात पर पानी में मछलियां और हवा में परन्दे रोते हैं । अलमि का चेहरा ओझल हो जाता है लेकिन उस की यादें बाक़ी रहती हैं ।⁽⁴⁾

﴿20﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : इल्म नर है और आदमियों में मर्द ही इस से महबूब करते हैं ।⁽⁵⁾

﴿.....صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....فیض القدیر، حرف الحاء، فصل فی المحلی بأل.....الخ، تحت الحدیث: ۳۸۲، ج ۳، ص ۵۵۲۔

②.....حدیث ابی نعیم الاصبهانی، الحدیث: ۶، ص ۷۔

③.....الموطا لامام مالک، کتاب العلم، باب ماجاء فی طلب العلم، الحدیث: ۱۹۴، ج ۲، ص ۷۸۔

④.....فردوس الاخبار، باب العین، الحدیث: ۴۰۴، ج ۲، ص ۸۴، باختصار۔

⑤.....حلیة الاولیاء، الزهري، الرقم: ۴۲۸، ج ۳، ص ۲۱۸۔

दूसरी फ़स्ल : इल्म हासिल करने की फज़ीलत हुसूले इल्म की फज़ीलत पर मुश्तमिल 2 फ़रामैने बारी तझ़ाला

﴿1﴾

فَلَوْلَا تَفَرُّمٌ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ
لَيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ (پ ۱۰، التوبة: ۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्यूं न हुवा कि उन के
हर गुरौह में से एक जमाअत निकले कि दीन की
समझ हासिल करें ।

﴿2﴾

فَسَأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ
(پ ۱۴، النحل: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो ऐ लोगो ! इल्म वालों
से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं ।

हुसूले इल्म की फज़ीलत पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....जो इल्म की त़लब में किसी रास्ते पर चलेगा **अल्लाह** उसे जन्नत के रास्ते पर
चला देगा ।⁽¹⁾

﴿2﴾.....बेशक मलाइका त़ालिबे इल्म के काम से राज़ी हो कर उस के लिये अपने पर बिछा
देते हैं ।⁽²⁾

﴿3﴾.....तुम सुब्ह के वक़्त जाओ और इल्म का एक बाब हासिल करो तो येह तुम्हारे लिये सो
रकअतें पढ़ने से अफ़ज़ल है ।⁽³⁾

﴿4﴾.....इल्म का एक बाब जिसे आदमी सीखता है उस के लिये दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या
और जो कुछ इस में है) से बेहतर है ।⁽⁴⁾

﴿5﴾.....इल्म की जुस्तजू करो अगर्चे चीन जाना पड़े ।⁽⁵⁾

﴿6﴾.....इल्म की त़लब हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है ।⁽⁶⁾

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي الدرداء، الحديث: ۲۱۷۷۴، ج ۸، ص ۱۶۷۔

②.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في طلب العلم/فصل في فضل العلم وشرف مقداره، الحديث: ۱۶۹۶، ج ۲، ص ۲۶۲۔

③.....جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الحديث: ۱۰۳، ص ۴۰۔

سنن ابن ماجه، المقدمة، باب في فضل من تعلم القرآن وعلمه، الحديث: ۲۱۹، ج ۱، ص ۱۴۲۔

④.....روضة العقلاء ونزهة الفضلاء لابن حبان، ذكر البحث على لزوم العلم والمداومة على طلبه، ص ۴۰، مفهوماً۔

⑤.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في طلب العلم، الحديث: ۱۶۶۳، ج ۲، ص ۲۵۴۔

⑥.....سنن ابن ماجه، كتاب السنة، باب فضل العلماء والبحث.....الخ، الحديث: ۲۲۴، ج ۱، ص ۱۴۶۔

﴿7﴾.....इल्म ख़ज़ाना है और इस की चाबियां सुवाल करना है। ख़बरदार ! तुम सुवाल किया करो क्यूंकि इस में चार को अज़्र दिया जाएगा : (1) सुवाल करने वाले को (2) अ़लिम को (3) ग़ौर से सुनने वाले को और (4) इन से महब्बत करने वाले को ।⁽¹⁾

﴿8﴾.....जाहिल अपनी जहालत पर और अ़लिम अपने इल्म पर ख़ामोश न रहे ।⁽²⁾

﴿9﴾.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अ़लिम की मजलिस में हाज़िर होना हज़ार रक्अत (नफ़ल) पढ़ने, हज़ार मरीज़ों की इयादत करने और हज़ार नमाज़े जनाज़ा में शिर्कत करने से अफ़ज़ल है। अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليك وسلم और कुरआन की तिलावत से (भी अफ़ज़ल है) ? इरशाद फ़रमाया : कुरआन भी तो इल्म के साथ ही नफ़अ देता है ।⁽³⁾

﴿10﴾.....जिसे इस हालत में मौत आई कि इस्लाम को बाकी रखने के लिये इल्म हासिल कर रहा था तो जन्नत में उस के और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दरमियान एक दर्जे का फ़र्क होगा ।⁽⁴⁾

हुथूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक्वाले बुजुर्गानि दीन :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया : इल्म त़लब करते वक़्त मेरी इतनी इज़्ज़त नहीं थी लेकिन जब इल्म सिखाने लगा तो लोगों में इज़्ज़त होने लगी ।⁽⁵⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी मुलैका رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا जैसा कोई नहीं देखा । मैं जब उन की ज़ियारत करता हूं तो सब से ज़ियादा हसीन नज़र आते हैं, गुफ़्तगू करते हैं तो सब से ज़ियादा फ़सीह और फ़तवा देते हैं तो सब से ज़ियादा साहिबे इल्म होते हैं ।⁽⁶⁾

①.....حلیۃ الاولیاء، محمد بن علی الباقر، الحدیث: ۳۷۸، ج ۳، ص ۲۲۴، بتغییر۔

②.....المعجم الاوسط، الحدیث: ۵۳۶۵، ج ۶، ص ۱۰۶۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۵۷۔

④.....سنن الدارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعالم، الحدیث: ۳۵۴، ج ۱، ص ۱۱۲۔

⑤.....عیون الاخبار للدينوري، کتاب العلم والبيان، ج ۲، ص ۱۳۷۔

⑥.....العقد الفريد للاحمد بن محمد الاندلسي، کتاب المجنبۃ فی الاجوبۃ، جواب ابن عباس، ج ۶، ص ۹۴۔

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : मुझे उस शख्स पर हैरत होती है जो इल्म हासिल नहीं करता, वोह इज़्ज़त की ख़्वाहिश कैसे करता है ?⁽¹⁾

﴿3﴾.....किसी दाना का कौल है कि मुझे दो शख्सों पर जितना रहूम आता है इतना किसी पर नहीं आता एक वोह जो इल्म हासिल करता है मगर समझता नहीं और दूसरा वोह जो समझ सकता है लेकिन इल्म हासिल नहीं करता।⁽²⁾

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : एक मस्अला सीखना मुझे रात भर की इबादत से ज़ियादा महबूब है।⁽³⁾

﴿5﴾.....इन्हीं से मन्कूल है कि अ़ालिम और इल्म सीखने वाला दोनों भलाई में बराबर के शरीक हैं और इन के इलावा तमाम लोग बे वुकूफ़ हैं इन में कोई ख़ैर नहीं।⁽⁴⁾

﴿6﴾.....नीज़ येह भी इरशाद फ़रमाया कि अ़ालिम बन या इल्म हासिल करने वाला या इल्म की बातें सुनने वाला और इन के इलावा चौथा न बनना वरना हलाक हो जाएगा।⁽⁵⁾

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अ़ता رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : इल्म की एक मजलिस गुफ़लत की 70 मजलिसों का कफ़ारा है।⁽⁶⁾

﴿8﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : रातों को इबादत करने वाले और दिन में रोज़ा रखने वाले एक हज़ार इबादत गुज़ारों की मौत एक अ़ालिम की मौत से आसान है जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हलाल और हराम कर्दा उमूर का इल्म रखता है।⁽⁷⁾

①.....المجالسة وجواهر العلم، الحديث: ٣٠٤، الجزء الثاني، ج ١، ص ١٦٣ -

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فى الحال التى يسأل بها العلم، الحديث: ٢٦١، ص ١٢٢ -

③.....الفتية والمتفقه، فضل التفقه على كثير من العبادات، الحديث: ٥٥، ج ١، ص ١٠٣ -

④.....الزهد لابن المبارك، باب هوان الدنيا على الله، الجزء الرابع، الحديث: ٥٢٣، ص ١٩٢ -

⑤.....سنن الدارمى، باب فى ذهاب العلم، الحديث: ٢٢٨، ج ١، ص ٩١ -

صفة الصفة، ابوالدرداء، ج ١، ص ٣١٩، "كن"، بدله "اعذ"، عن عبد الله بن مسعود -

⑥.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين العلماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٥٤، بتغير -

⑦.....جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الرقم: ١١٥، ص ٢٢، بتغير -

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : इल्म की तलब नफ़ल नमाज़ से अफ़ज़ल है ।⁽¹⁾

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्दुल हक़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى बयान करते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق के पास इल्म हासिल कर रहा था, जोहर का वक़्त हुवा तो मैं किताबें समेटने लगा ताकि नमाज़ पढ़ूं । आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : अगर निय्यत सहीह हो तो जिस की तरफ़ तुम जा रहे हो (या'नी नमाज़) वोह इस से अफ़ज़ल नहीं जिस (इल्म) में तुम मसरूफ़ थे ।⁽²⁾

﴿11﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो येह समझे कि सुब्ह के वक़्त इल्म की तलब में जाना जिहाद नहीं उस की राए और अक्ल नाकिस है ।⁽³⁾

.....फ़ज़ाइले कुरआने करीम.....

फ़रमाने मुस्तफ़ा :

“येह कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ इस की ज़ियाफ़त क़बूल करो । बेशक़ येह कुरआन मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़अ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अमल करे उस के लिये नजात है । येह हक़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े । इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और क़षरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी हालत पर काइम रहता है) । तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर हर्फ़ की तिलावत पर 10 नेकियां अता फ़रमाएगा । मैं नहीं कहता कि “الم” एक हर्फ़ है बल्कि “ا” एक हर्फ़ “ل” एक हर्फ़ और “م” एक हर्फ़ है ।”

(المستدرک، الحديث: ٢٠٨٢، ج ٢، ص ٢٥٦)

①.....مسند الشافعي، كتاب الصداق والايلاء، ص ٢٢٩۔

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الحديث: ١٠٥، ص ٣٠۔

③.....جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلماء على الشهداء، الحديث: ١٢٣، ص ٣٩۔

तीसरी फ़स्ल : इल्म सिखाने की फज़ीलत

इल्म सिखाने की फज़ीलत पर मुश्तमिल 6 फ़रामीने बारी तअ़ाला :

﴿1﴾

وَلِيُذِّنُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ
لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾ (پ ۱، التوبة: ۱۲۲)

इस आयते मुबारका में क़ौम को डराने से मुराद उन्हें इल्म सिखाना और उन की राहनुमाई करना है।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वापस आ कर अपनी
क़ौम को डर सुनाएं इस उम्मीद पर कि वोह बचें।

﴿2﴾

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ
(پ ۴، آل عمران: ۱۸۴)

इस आयते मुबारका से इल्म सिखाने का वुजूब षाबित होता है।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब
अल्लाह ने अ़हद लिया उन से जिन्हें किताब
अता हुई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना
और न छुपाना।

﴿3﴾

وَإِنْ فَرِيقًا مِنْهُمْ لِيَكْتُمُونَ الْحَقَّ
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٢٦﴾ (پ २، البقرة: १२६)

इस आयते मुबारका से पता चला कि इल्म छुपाना ह़राम है। जैसा कि शहादत के बारे में इरशादे बारी तअ़ाला है :

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक इन में एक
गुरौह जान बूझ कर ह़क़ छुपाते हैं।

وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ
(پ ३، البقرة: २८३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो गवाही छुपाएगा
तो अन्दर से उस का दिल गुनहगार है।

﴿4﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ
صَالِحًا (پ २، حم السجدة: ३३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा
किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की तरफ़
बुलाए और नेकी करे।

﴿5﴾

ادْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالنُّعْظَةِ
الْحَسَنَةِ (پ ۱۲، النحل: ۱۲۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अपने रब्ब की राह की
तर्फ बुलाओ पक्की तदवीर और अच्छी नसीहत से।

﴿6﴾

وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ (پ ۱، البقرة: ۱۲۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन्हें तेरी किताब
और पुख्ता इल्म सिखाए।

इल्म सिखाने की फज़ीलत पर मुश्तमिल 17 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....**اللَّهُ** ने जिसे भी इल्म अता फ़रमाया उस से वोह अहद लिया जो अम्बियाए
किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से लिया कि वोह इसे लोगों से बयान करे और न छुपाए।⁽¹⁾

﴿2﴾.....मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना मुअज़
को यमन भेजा तो इरशाद फ़रमाया : **اللَّهُ** غَزَوْجَلَّ तेरे ज़रीए किसी एक को हिदायत दे दे तो
येह तेरे लिये दुनिया व माफ़ीहा (या'नी दुनिया और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।⁽²⁾

﴿3﴾.....जिस ने इल्म का एक बाब इस लिये सीखा कि लोगों को सिखाएगा तो उसे 70 सिद्दीक़ीन
का षवाब दिया जाएगा।⁽³⁾

हज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से मन्कूल है कि जिस ने इल्म हासिल किया, इस
पर अलम किया और दूसरों को सिखाया तो आस्मानों की सल्तनत में उसे अज़ीम कहा जाता है।⁽⁴⁾

﴿4﴾.....जब कियामत के दिन **اللَّهُ** غَزَوْجَلَّ आबिदों और मुजाहिदों से फ़रमाएगा कि जन्नत
में दाख़िल हो जाओ तो उ-लमा अर्ज करेंगे : हमारे इल्म के तुफ़ैल वोह आबिद और मुजाहिद
बने (वोह जन्नत में गए और हम रह गए) ? **اللَّهُ** غَزَوْجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : तुम मेरे नज़दीक

1.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج 1، ص 229-

الفردوس الاخبار، باب الميم، الحديث: 219، ج 2، ص 332-

2.....الزهد لابن المبارك، باب فضل ذكر الله، الجزء العاشر، استعنت بالله، الحديث: 1345، ص 382-

3.....الترغيب والترهيب، كتاب العلم، الترغيب فى العلم.....الخ، الحديث: 119، ج 1، ص 28-

4.....الزهد للامام احمد بن حنبل، مواعظ عيسى عليه السلام، الحديث: 330، ص 94-

मेरे बा'ज फ़िरिश्तों की तरह हो, तुम शफ़ाअत करो, तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल होगी। चुनान्वे, वोह शफ़ाअत करेंगे फिर वोह जन्नत में दाख़िल होंगे।⁽¹⁾

येह उस इल्म की बदौलत होगा जो दूसरों को सिखाया होगा, उस के बदले नहीं जो दूसरों तक नहीं पहुंचाया।

﴿5﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लोगों को इल्म अता करने के बा'द वापस नहीं लेगा बल्कि उ-लमा के उठ जाने से इल्म जाता रहेगा। पस जब कभी कोई अलिम दुन्या से जाएगा उस के साथ उस का इल्म भी चला जाएगा यहां तक कि सिर्फ़ जाहिल सरदार रह जाएंगे। अगर उन से मसाइल पूछे जाएं तो बिगैर इल्म के फ़तवा देंगे, खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे।⁽²⁾

﴿6﴾.....जिस ने इल्म सीख कर छुपाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे बरोजे क़ियामत आग की लगाम डालेगा।⁽³⁾

﴿7﴾.....इल्मो हिकमत की बात बेहतरीन हदिय्या व तोहफ़ा है जिसे सुन कर तू याद कर ले फिर अपने मुसलमान भाई को सिखाए तो येह एक साल की इबादत के बराबर है।⁽⁴⁾

﴿8﴾.....दुन्या और जो कुछ इस में है सब मलऊन है सिवाए ज़िक्रे इलाही के और उस के जो कुर्बे इलाही का सबब बने और इल्म सीखने वाले और सिखाने वाले के।⁽⁵⁾

﴿9﴾.....बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के फ़िरिश्ते और आस्मान व ज़मीन की मख़्लूक हत्ता कि च्यूंटियां अपने बिलों में और मछलियां समुन्दर में लोगों को भलाई (या'नी इल्मे दीन) सिखाने वाले पर दुरूद भेजते हैं।⁽⁶⁾

①.....اتحاف السادة المتقين، كتاب العلم، الباب الاول، ج ١، ص ١٢٢ -

②.....صحيح مسلم، كتاب العلم، باب رفع العلم.....الخ، الحديث: ٢٦٤٣، ص ١٣٣٦ -

المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمرو، الحديث: ٦٩١٣، ج ٢، ص ٢٣٨ -

③.....سنن ابن ماجه، المقدمة، باب من سئل عن علم فكتمه، الحديث: ٢٦٢١/ ٢٦٢٥، ج ١، ص ١٤٢ -

④.....الزهد لابن المبارك، باب فضل ذكر الله، الجزء العاشر، الحديث: ١٣٨٦، ص ٢٨٤ -

جامع بيان العلم وفضله، باب تفضيل العلم على العبادة، الحديث: ٨٤، ص ٣٦ -

⑤.....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب مثل الدنيا، الحديث: ٢١١٢، ج ٢، ص ٢٢٨ -

شرح السنة، كتاب الرقاق، باب هوان الدنيا على الله، الحديث: ٣٩٢٣، ج ٤، ص ٢٨٠ -

⑥.....سنن الترمذی، كتاب العلم، باب ماجاء في فضل الفقه على العبادة، الحديث: ٢٦٩٢، ج ٢، ص ٣١٢ -

المعجم الكبير، الحديث: ٩١٢، ج ٨، ص ٢٣٢ -

﴿10﴾.....मुसलमान अपने भाई को इस से ज़ियादा अफ़ज़ल फ़ाइदा नहीं दे सकता कि उसे कोई अच्छी बात पहुंचे तो वोह अपने भाई को पहुंचा दे।⁽¹⁾

﴿11﴾.....नेकी की बात जिसे मुसलमान सुने फिर दूसरों को सिखाए और इस पर अमल करे उस के लिये साल भर की इबादत से बेहतर है।⁽²⁾

﴿12﴾.....एक दिन हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ लाए। देखा कि दो हल्के हैं। एक हल्के के लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ मांग रहे हैं और उस की तरफ़ मुतवज्जेह हैं जब कि दूसरे हल्के वाले लोगों को इल्म सिखा रहे हैं तो इरशाद फ़रमाया : येह लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मांग रहे हैं, वोह चाहे तो उन्हें अता करे और चाहे तो न करे और येह लोगों को इल्म सिखा रहे हैं और मुझे मुअल्लिम बना कर भेजा गया है।⁽³⁾ फिर उन की तरफ़ चल दिये और उन के साथ तशरीफ़ फ़रमा हो गए।

﴿13﴾.....जिस हिदायत व इल्म के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे मबऊष फ़रमाया इस की मिषाल उस बारिश की तरह है जो ज़मीन पर बरसी तो एक हिस्से ने उसे जब्ब कर के घास और बहुत सा चारा उगाया, एक हिस्से ने उसे जम्अ कर लिया और लोगों ने उस से फ़ाइदा उठाया कि इस में से पिया, पिलाया और खेतों को सैराब किया जब कि एक हिस्सा चटियल मैदान था कि जिस में न तो पानी जम्अ होता है और न ही घास उगता है।⁽⁴⁾

पहली मिषाल नफ़अ उठाने वाले शख्स की है, दूसरी जिस ने दूसरों को नफ़अ पहुंचाया और तीसरी मिषाल उस शख्स की है जो दोनों से महरूम रहा (या'नी खुद नफ़अ उठाया न दूसरों को पहुंचाया)।

①.....جامع بیان العلم وفضله، باب دعاء رسول اللہ لمستمع العلم وحافظه ومبلغه، الحدیث: ۱۸۵، ص ۶۲۔

②.....الزهد لابن المبارک، باب فضل ذکر اللہ، الحدیث: ۱۳۸۶، ص ۴۸۷۔

③.....سنن ابن ماجہ، المقدمة، باب فضل العلماء والحث.....الخ، الحدیث: ۲۲۹، ج ۱، ص ۱۵۰۔

سنن الدارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعالم، الحدیث: ۳۴۹، ج ۱، ص ۱۱۱۔

④.....صحیح البخاری، کتاب العلم، باب فضل من علم وعلم، الحدیث: ۷۹، ج ۱، ص ۴۶۔

جامع بیان العلم وفضله، باب طلب العلم فريضة، الحدیث: ۳۴، ص ۲۳۔

﴿14﴾....जब आदमी मर जाता है तो इस के अमल का सिलसिला मुक्त अ हो जाता है सिवाए तीन चीजों के (इन में से एक) इल्मे नाफ़े अ है ।⁽¹⁾

﴿15﴾.....भलाई की तरफ़ राहनुमाई करने वाला भलाई करने वाले की तरह है ।⁽²⁾

﴿16﴾.....दो के इलावा किसी पर रश्क जाइज़ नहीं एक वोह शख्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पुख्ता इल्म से नवाज़ा वोह इस से फैसले करता और लोगों को सिखाता है और दूसरा वोह शख्स जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने माल दिया फिर नेकी के कामों में खर्च करने की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाई ।⁽³⁾

﴿17﴾.....हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दुआ फ़रमाई कि मेरे नाइबों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो । किसी ने अर्ज़ की : आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नाइबीन कौन लोग हैं ? इरशाद फ़रमाया : वोह जो मेरी सुन्नत से महब्बत करते और इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों को सिखाते हैं ।⁽⁴⁾

इल्म सिखाने की फज़ीलत पर मुश्तमिल 12 अक्वाले बुजुर्गानि दीन :

﴿1﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : जिस ने हदीष बयान की फिर इस पर अमल किया गया तो उस बयान करने वाले को अमल करने वालों के बराबर षवाब मिलेगा ।⁽⁵⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : लोगों को इल्मे दीन सिखाने वाले के लिये हर चीज़ हत्ता कि समुन्दर में मछलियां भी इस्तिग़फ़ार करती हैं ।⁽⁶⁾

①.....صحيح مسلم، كتاب الوصية، باب ما يلحق الانسان.....الخ، الحديث: ١٢٣، ص ٨٨٦۔

②.....موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب العيال، باب صلاح الولد، الحديث: ٢٣٠، ج ٨، ص ١٠٠۔

③.....سنن الترمذی، كتاب العلم، باب ماجاء فى ان الدال على.....الخ، الحديث: ٢٦٤٩، ج ٢، ص ٣٠٥۔

④.....صحيح البخارى، كتاب العلم، باب الاغتباط فى العلم والحكمة، الحديث: ٤٣، ج ١، ص ٢٣۔

⑤.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٦٥، ج ٢، ص ٢٩۔

⑥.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فى فضل العلم، الحديث: ٢٠١، ص ٦٦۔

⑦.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فى فضل العلم، الحديث: ٢٢٩، ص ٤٥۔

⑧.....سنن الدارمی، المقدمة، باب فى فضل العلم والعالم، الحديث: ٣٢٣، ج ١، ص ١١١۔

﴿3﴾.....बा'ज उ-लमाने फरमाया : अल्लिम **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ और उस की मख्लूक के दरमियान वासिता होता है तो उसे गौर करना चाहिये कि वासिता कैसा होना चाहिये ।⁽¹⁾

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी **رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى عَلَيْهِ** अस्कलान तशरीफ़ लाए और कुछ अर्सा ठहरे रहे लेकिन किसी ने भी आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** से कोई मस्अला दरयाफ़्त नहीं किया तो आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फरमाया : मुझे किराया दो ताकि मैं इस शहर से चला जाऊं क्योंकि यहां इल्म मर चूका है ।⁽²⁾ यह इस लिये फरमाया कि आप **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** इल्म सिखाने की फज़ीलत हासिल करने और इस के ज़रीए बकाए इल्म की हिर्स रखते थे ।

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना अता **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फरमाया : मैं हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** के पास गया तो वोह रो रहे थे । मैं ने रोने का सबब पूछा तो फरमाया : कोई मुझ से मस्अला दरयाफ़्त नहीं करता ।⁽³⁾

﴿6﴾.....मन्कूल है कि उ-लमा ज़मानों के चराग़ हैं और हर अल्लिम अपने ज़माने का चराग़ है जिस से इस के अहले ज़माना (इल्म की) रोशनी हासिल करते हैं ।⁽⁴⁾

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى عَلَيْهِ** ने फरमाया : अगर उ-लमा न होते तो लोग चोपायों की मिश्ल होते ।⁽⁵⁾ मतलब यह कि उ-लमा लोगों को इल्म सिखा कर हैवानिय्यत से निकाल कर इन्सानिय्यत में दाखिल करते हैं ।

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना इकरमा **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फरमाया : बेशक इस इल्म की कीमत है । पूछा गया : इस की कीमत क्या है ? फरमाया : यह कि तुम इसे उस शख्स तक पहुंचाओ जो इसे अच्छी तरह याद रखे और जाएअ न करे ।⁽⁶⁾

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुअज़ **رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फरमाया : उ-लमा इस उम्मत पर मां बाप से ज़ियादा मेहरबान हैं । पूछा गया : वोह कैसे ? फरमाया : इस लिये कि मां बाप दुन्या की आग से मुहफूज़ रखते हैं जब कि उ-लमा इन्हें आखिरत की आग से बचाते हैं ।

①.....الفقيه والمتفقه، باب الزجر عن التسرع الى الفتوى مخافة الزلل، الحدى: ١٠٨٨، ج ٢، ص ٣٥٣-

حلية الاولياء، محمد بن المنكدر، الحديث: ٣٦١٨، ج ٣، ص ١٤٩-

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماروى فى قبض العلم وذهاب العلماء، الحديث: ٦٤٠، ص ٢١٨-

③.....المستطرف فى كل فن مستطرف، الباب الرابع فى العلم والأدب.....الخ، ج ١، ص ٢١-

④.....التذكرة فى الوعظ، فضل العلم والعلماء، ص ٥٦-

⑤.....جامع بيان العلم وفضله، باب آفة العلم وغائلته.....الخ، الحديث: ٢٨٨، ص ١٥٢-

⑥.....الكامل فى صفعاء الرجال لابن عدی، عكرمة مولى ابن عباس: ١٢١، ج ٦، ص ٣٤٦-

﴿10﴾.....मन्कूल है कि इल्म का पहला दर्जा खामोशी है, फिर गौर से सुनना, फिर याद करना, फिर अमल करना और फिर इसे फैलाना।⁽¹⁾

﴿11﴾.....मन्कूल है कि अपना इल्म उसे सिखाओ जिसे इल्म नहीं और खुद उस से सीखो जो उन बातों को जानता हो जिन्हें तुम नहीं जानते। इस तरह तुम जो नहीं जानते उसे जान लोगे और जो जानते हो उसे याद कर लोगे।⁽²⁾

﴿12﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुअज़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरफूअन रिवायत है कि इल्म सीखो ! क्योंकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इल्म सीखना ख़शिyyत, इस की जुस्तजू इबादत, उस की तकरार तस्बीह, इस के मुतअल्लिक़ बहूष करना जिहाद, जो नहीं जानता उसे इल्म सिखाना सद्का और इसे इस के अहल पर खर्च करना नेकी है। इल्म तन्हाई में मूनिस, ख़ल्वत में रफ़ीक़, दीन पर राहनुमा, खुशी व तंगी में सब्र देने वाला, दोस्तों के हां नाइब, अजनबियों के पास रिश्तेदार और राहे जन्नत का रोशन मीनार है। इल्म के ज़रीए **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ कौमों को बुलन्दी अता फ़रमा कर उन्हें नेकी में मुक़तदा व पेशवा और राहनुमा बना देता है। उन की पैरवी की जाती है। उन्हें नेकी की राह दिखाने वाला बना दिया जाता है। उन के नक्शे क़दम पर चला जाता है। उन के अफ़अल को बग़ौर देखा जाता है। फ़िरिश्ते उन की दोस्ती में रग़बत रखते और अपने परो से उन्हें छूते हैं। हर खुशको तर हत्ता कि समुन्दर की मछलियां, कीड़े मकोड़े, खुशकी के दरिन्दे, जानवर, आस्मान और इस के सितारे इल्म सीखने वाले के लिये मग़फ़िरत का सुवाल करते हैं। क्योंकि इल्म दिलों को अन्धेपन से जिला बख़्शता है। आंखों से अन्धेरे दूर कर के इन्हें रोशनी देता है। बदनों की कमज़ोरी दूर कर के इन्हें ताक़तवर बनाता है। इस के ज़रीए बन्दा नेक लोगों की मनाज़िल और बुलन्द दर्जात तक पहुंच जाता है। इस में ग़ौरो फ़िक़र करना रोज़ों के बराबर और इस की तकरार रात की इबादत के बराबर है। इसी के ज़रीए **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इताअत व इबादत की जाती है। इसी से ख़ौफ़े खुदा मिलता है। इसी से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की बुजुर्गी और वहदानिय्यत का शुऊर हासिल होता है। इसी से परहेज़गारी मिलती है। इसी से सिलए रहूमी का ज़ब्बा मिलता है। येही हलाल व हराम की पहचान का ज़रीआ है। इल्म इमाम है और अमल इस के ताबेअ। इल्म खुश नसीबों को अता होता है जब कि बद बख़्त इस से महरूम रहते हैं।⁽³⁾

हम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से हुस्ने तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।

①.....حلیۃ الاولیاء، سفیان الثوری، الرق م: ۹۱۰۰، ج ۶، ص ۲۰۱۔

②.....عیون الاخبار للدينوری، کتاب العلم والبيان، العلم، ج ۲، ص ۱۳۹۔

③.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع فی فضل العلم، الحديث: ۲۴۰، ص ۷۷۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضيله، ذکر فضل علم المعرفة..... الخ، ج ۱، ص ۲۳۳۔

चौथी फ़स्ल :

इल्म की फ़ज़ीलत पर अक्ली दुलाइल

याद रहे ! इस बाब का मक्सूद येह है कि इल्म की फ़ज़ीलत और उमदगी मा'लूम हो और दर हकीकत फ़ज़ीलत का मफ़हूम और मुराद जाने बिगैर येह मा'लूम नहीं किया जा सकता कि फ़ज़ीलत का होना इल्म के लिये या किसी और ख़स्लत के लिये वस्फ़ है। पस वोह शख़्स ज़रूर बहक जाता है जो येह जानना चाहता है कि ज़ैद हकीम है या नहीं लेकिन वोह अभी तक हिक्मत के मा'ना और इस की हकीकत से ना बलद है (इस लिये हम पहले फ़ज़ीलत का मा'ना और मुराद बयान करते हैं।) चुनान्चे,

फ़ज़ीलत का लुग़वी और इश्तिहाही मा'ना :

फ़ज़ीलत फ़ज़ल से माखूज है और फ़ज़ल ज़ियादती को कहते हैं। जब दो चीज़ें किसी बात में मुश्तरक हों और उन में एक किसी इज़ाफ़ी बात से ख़ास हो तो कहा जाता है कि येह उस से अफ़ज़ल है और इसे उस पर फ़ज़ीलत हासिल है जब कि वोह इज़ाफ़ी बात इस में मौजूद हो जो इस के लिये कमाल की बात हो। जैसा कि कहा जाता है : घोड़ा गधे से अफ़ज़ल है। क्यूंकि बोझ उठाने की कुव्वत में तो धोड़ा गधे का शरीक है लेकिन हम्ला करने, दौड़ने, सख़्त हम्ला आवर होने की कुव्वत और हुस्ने सूरत की खूबियां घोड़े में इज़ाफ़ी हैं। अब अगर बिल फ़र्ज गधे को इज़ाफ़ी सामान के साथ ख़ास किया जाए तो येह नहीं कहा जा सकता कि वोह घोड़े से अफ़ज़ल हो गया क्यूंकि येह जिस्मानी इज़ाफ़ा है जब कि हकीकत में कमी जो कि कोई कमाल की बात नहीं, इस लिये कि हैवान में जिस्म नहीं बल्कि मा'नविय्यत (या'नी अस्लिय्यत) और उस की सिफ़ात मक्सूद होती हैं।

इल्म की अक्ली फ़ज़ीलत :

येह समझने के बा'द तुम पर पोशीदा न रहा कि इल्म की निस्बत अगर दूसरे औसाफ़ की तरफ़ की जाए तो उस की एक फ़ज़ीलत है जिस तरह दीगर तमाम हैवानों की ब निस्बत घोड़े की एक फ़ज़ीलत है, बल्कि सख़्त हम्ला आवर होना घोड़े की (इज़ाफ़ी) फ़ज़ीलत है मुतलक़ फ़ज़ीलत नहीं जब कि इल्म को अपनी ज़ात के ए'तिबार किसी की तरफ़ इज़ाफ़त किये बिगैर मुतलक़न फ़ज़ीलत हासिल है क्यूंकि येह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का वस्फ़ कमाल, अम्बियाए किराम और मलाइकए उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का शरफ़ है बल्कि सधाया हुवा घोड़ा बे सधाए घोड़े से अच्छा है। लिहाज़ा इल्म को बिगैर किसी इज़ाफ़त के मुतलक़न फ़ज़ीलत हासिल है।

मरतूब अश्या की अक्शाम और इन की मिषालें :

जान लीजिये ! उम्दा और नफ़ीस चीज़ जिस में रग़बत की जाती है इस की तीन किस्में हैं (1)....जिस की तलब का सबब कोई अग्रे ग़ैर हो (2)....जिस की तलब का सबब खुद उस की ज़ात हो और (3).....जिस की तलब खुद उस की ज़ात की वजह से भी हो और किसी दूसरे सबब की वजह से भी । दूसरा पहले से अफ़ज़ल व अशरफ़ है । **पहले की मिषाल :** दिरहमो दीनार हैं कि येह दर हकीक़त दो बे फ़ाइदा पथ़र हैं अगर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इन के ज़रीए हाज़ात की तक्मील को आसान न फ़रमाता तो येह दोनों पथ़र और कंकर बराबर होते । **दूसरे की मिषाल :** उख़रवी सअ़दत और दीदारे इलाही की लज़ज़त है । **तीसरे की मिषाल :** बदन की सलामती है । मषलन पाउं की सलामती इस लिये मतलूब होती है कि बदन तक्लीफ़ से बचे और इस लिये भी कि इस के ज़रीए चल कर ज़रूरियात तक रसाई हो ।

अब इस ए'तिबार से इल्म को देखो तो वोह फ़ी नफ़सीही (या'नी अपनी ज़ात के ए'तिबार से) लज़ीज़ है लिहाज़ा वोह दूसरी किस्म में शामिल है (जो पहली से अफ़ज़ल है) नीज़ वोह आख़िरत और इस की सअ़दत का वसीला और कुर्बे इलाही का ज़रीआ है कि बिग़ैर इस के कुर्बे इलाही हासिल नहीं होता । आदमी के हक़ में सअ़दते अबदी का मर्तबा सब से बुलन्द है और इस का वसीला सब चीज़ों से अफ़ज़ल है और सअ़दते अबदी बिग़ैर इल्मो अमल के हासिल नहीं हो सकती और अमल की कैफ़ियत का इल्म न हो तो अमल तक रसाई नहीं होती । पता चला कि दुन्या व आख़िरत की अस्ल सअ़दत इल्म है इसी लिये येह सब से अफ़ज़ल है ।

इल्म का उख़रवी फ़ाइदा :

इल्म इस वजह से भी अफ़ज़ल है कि तुम जानते हो किसी चीज़ का नतीजा जितनी अज़मत व शान वाला होगा वोह शै भी उतनी ही फ़ज़ीलत वाली होगी और तुम जान चुके हो कि इल्म का उख़रवी फ़ाइदा रब्बुल अलमीन **عَزَّوَجَلَّ** का कुर्ब और फ़िरिश्तों और मलाए आ'ला (या'नी आस्मानी मख़लूक) से मिल जाना है जब कि दुन्या में इस का फ़ाइदा येह है कि इज़ज़त व वक़ार में इज़ाफ़ा, बादशाहों पर हुक्म का नफ़ाज़ और तबीअतों में ज़रूरी तौर पर एहतिराम करना पाया जाता है हत्ता कि तुर्की के कुन्द ज़ेहन और अरबों के सख़्त मिज़ाज लोग भी तबीअतों के हाथों अपने बड़ों की इज़ज़त व तौकीर करने पर मजबूर हैं इस लिये कि वोह तजरिबे से हासिल होने वाले ज़ियादा इल्म के साथ ख़ास होते हैं बल्कि जानवर भी तबई तकाज़ों की वजह से इन्सान की इज़ज़त करते हैं क्यूंकि इन्हें इस बात का शुऊर है कि इन्सान कमाल की वजह से इन से ज़ियादा दर्जे का हामिल है ।

येह मुतलक इल्म की फ़ज़ीलत है। फिर उलूम मुख़्तलिफ़ हैं जैसा कि अ़न क़रीब आएगा। लिहाज़ा ज़रूरी है कि इन के फ़ज़ाइल भी मुख़्तलिफ़ हों। इल्म सिखाने और सीखने की (मन्कूली) फ़ज़ीलत तो इस से ज़ाहिर है जो हम बयान कर आए। (और अ़क्ली फ़ज़ीलत येह है कि) जब इल्म अफ़ज़ल उमूर में से है तो इसे हासिल करना अफ़ज़ल काम की जुस्तजू करना और सिखाना अफ़ज़ल काम का फ़ाइदा पहुंचाना ठहरा।

बाश्गाहे इलाही तक रशाई का ज़रीआ :

मख़्लूक को दीनी व दुन्यावी दोनों तरह की हाजात दरपेश होती हैं। दुन्या का निज़ाम चले बिग़ैर दीन का निज़ाम नहीं चल सकता क्यूंकि दुन्या आख़िरत की खेती है। जो इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचाने का ज़रीआ और अपनी मन्ज़िल क़रार दे येह उसी के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने का ज़रीआ है न कि उस के लिये जो इसे अपना मुस्तक़िल ठिकाना और वतन बना ले। दुन्या का इन्तिज़ाम इन्सानों के आ'माल से ही चलता है और इन्सानों के आ'माल, पेशे और सनअतों की तीन किस्में हैं :

﴿1﴾.....उसूल जिन के बिग़ैर दुन्या का निज़ाम नहीं चल सकता। येह चार हैं :

- (1).....ज़िराअत : खाने के लिये (2).....कपड़ा बुनाई : पहनने के लिये है।
 - (3).....ता'मीर : रिहाइश के लिये और (4).....हिक्मते अमली व तदबीर : बाहमी उल्फ़त, इत्तिहाद और अस्बाबे मईशत की मजबूती पर एक दूसरे के साथ तआवुन के लिये बुन्याद है।
- ﴿2﴾.....वोह उमूर जो इन तमाम सनअतों की तय्यारी के काम आते और इन के लिये ख़ादिम की हैषियत रखते हैं : जैसे आहन गरी (या'नी लोहार का पेशा) ज़िराअत बल्कि दीगर सनअतों के भी काम आता है कि खेती बाड़ी करने के औज़ार इसी से तय्यार होते हैं और जैसे रूई धुनकना और धागे बनाना येह दोनों कपड़ा बुनने की सनअत में काम आते हैं कि इस के लिये अश्या तय्यार करते (या'नी सूत वगैरा मुहय्या करते) हैं।

﴿3﴾.....वोह उमूर जो उसूल को पूरा करते और इन की आराइश व जैबाइश करते हैं : जैसे आटा और रोटी ज़िराअत के लिये और कपड़ों की सफ़ेदकारी और सिलाई का पेशा कपड़े बुनाई के लिये।

इन्सान की आ'जा की अक्शाम :

मज़कूरा तीन उमूर की निस्बत दुन्या के ज़रूरी इन्तिज़ाम की तरफ़ ऐसी है जैसी इन्सान के आ'जा की इस के पूरे बदन की तरफ़ । क्यूँकि आ'जाए इन्सानी भी तीन तरह के हैं :

(1)....उसूल : जैसे दिल, जिगर, दिमाग़ (2).....जो उसूल के ख़ादिम हैं : जैसे मे'दा, रंगें, शिरयानें, पठ्ठे और गर्दन की रंगें (3).....इन्हें मुकम्मल करने वाले और इन की जीनत का बाइष बनने वाले : जैसे नाखुन, उंगलियां और अब्रू ।

इन तीनों में अफ़ज़ल सनअत उसूल (बुन्याद) हैं और उसूल में अफ़ज़ल हिक्मते अमली और तदबीर है जिस से लोगों में उन्स व महब्वत पैदा हो और उन की इस्लाह हो । इसी लिये जैसा कमाल इस सनअत वाले के लिये दरकार होता है दूसरी सनअत वालों में मतलूब नहीं होता निज़ इस सनअत का मालिक दूसरी सनअत वालों से ख़िदमत लेता है ।

हिक्मते अमली के मरातिब :

मख़लूक की इस्लाह चाहने और दुन्या व आख़िरत में नजात देने वाले सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ राहनुमाई करने वाली हिक्मते अमली के चार मरातिब हैं :

﴿1﴾.....अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की हिक्मते अमली और तदबीर : येह सब से बुलन्द है । इन का हुक्म हर ख़ासो अ़ाम के ज़ाहिरो बातिन पर चलता है ।

﴿2﴾.....ख़ुलफ़ा और बादशाहों की हिक्मते अमली : इन का हुक्म भी हर अ़ाम व ख़ास पर जारी होता है लेकिन सिर्फ़ ज़ाहिर पर न कि बातिन पर ।

﴿3﴾.....जाते बारी तअ़ाला और दीने इस्लाम का इल्म रखने वाले वारिषीने अम्बिया की हिक्मते अमली : इन का हुक्म सिर्फ़ ख़ास लोगों के बातिन पर ही चलता है । अ़ाम लोगों की समझ इन से इस्तिफ़ादा करने तक रसाई नहीं पाती और न ही इन्हें लोगों के ज़ाहिर पर कोई हुक्म नाफ़िज़ करने या किसी चीज़ से मन्अ करने या कोई हुक्म जारी करने की कुव्वत हासिल है ।

﴿4﴾.....वाइज़ीन की हिक्मते अमली : इन का हुक्म सिर्फ़ अ़वाम के बातिन पर चलता है ।

नबुव्वत के बा'द सब से अफ़ज़ल अमल :

इन चारों में से नबुव्वत के बा'द सब से अफ़ज़ल अमल, इल्म का फ़ाइदा पहुंचाना, लोगों के दिलों को हलाक कर देने वाली बुरी आदतों से पाक करना, अच्छी और बाइषे सआदत ख़स्लतों की तरफ़ इन की राहनुमाई करना है । इल्म सिखाने से येही मुराद है । हम ने इसे तमाम सनअतों और पेशों से अफ़ज़ल इस लिये कहा क्यूँकि किसी भी सनअत व हिरफ़त की अज़मत तीन बातों से पहचानी जाती है : (1).....या तो इस ख़स्लत व फ़ितरत को देखा जाता है जिस

के ज़रीए इस फ़न की मा'रिफ़त हासिल होती है : जैसे उलूमे अक़लिया उलूमे लुग़विया से इस लिये अफ़ज़ल हैं कि हिक्मत के हुसूल का ज़रीआ अक़ल है जब कि लुग़त समाई चीज़ है (या'नी इस का तअल्लुक़ कुव्वते हिसया [एहसास की ताक़त] से है) और अक़ल समाअत से अफ़ज़ल है। (2).....या नफ़अ को देखा जाता है कि किस का नफ़अ ज़ियादा है : जैसे ज़िराअत ज़रगरी (सुनार के पेशे) की बनिस्बत ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती है। (3).....या उस जगह व महल को देखा जाता है जिस में तसरूफ़ होता है : जैसे ज़रगरी चमड़ा रंगने के पेशे से अफ़ज़ल है क्योंकि ज़रगरी का महल सोना है जब कि चमड़ा रंगने का महल मुर्दार की खाल है। नीज़ येह बात ज़ाहिर है कि उलूमे दीनिया जो तरीके आख़िरत को समझने का नाम हैं इन का हुसूल कमाले अक़ल और ज़ेहन की सफ़ाई के ज़रीए होता है और अक़ले इन्सानी सिफ़ात में से सब से अफ़ज़ल है जैसा कि इस का बयान आगे आएगा और इस की वजह येह है कि इसी के ज़रीए **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की अमानत को क़बूल किया जाता और इसी से कुर्बे इलाही तक रसाई होती है। जहां तक नफ़अ आम होने का तअल्लुक़ है तो इस में कोई शक नहीं कि इल्म का नफ़अ कषीर है क्योंकि इस का नफ़अ और नतीजा आख़िरत की सआदत है और रहा इस के महल का मुअज़्ज़ज होना तो येह बात किस तरह पोशीदा रह सकती है ? क्योंकि मुअल्लिम (या'नी इल्म सिखाने वाला उस्ताज़) इन्सानों के दिलों और नुफूस में तसरूफ़ करता है नीज़ ज़मीन पर मौजूद हर चीज़ से ज़ियादा शरफ़ इन्सान को हासिल है और इस के आ'ज़ा में से सब से अफ़ज़ल इस का दिल है और मुअल्लिम इस की तक्मील करने, इसे रोशनी पहुंचाने, (गुनाहों की ग़लाज़त से) पाको साफ़ करने और कुर्बे खुदावन्दी तक पहुंचाने में मशगूल रहता है।

इबादते इलाही और ख़िलाफ़ते इलाही :

इल्म सिखाना एक हैषिय्यत से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इबादत और एक ए'तिबार से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ख़िलाफ़त है। बल्कि येह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बहुत बड़ी ख़िलाफ़त है क्योंकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अल्लिम के दिल पर अपनी सब से ख़ास सिफ़त (या'नी इल्म) खोल देता है। वोह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के उम्दा ख़ज़ानों का ख़ाज़िन (ख़ज़ानची) है और उसे ख़ज़ानाए इल्म को हर मोहताजे इल्म पर सर्फ़ करने का हुक्म दिया गया है लिहाज़ा इस से बढ़ कर क्या रुतबा हो सकता है कि बन्दा अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** और उस की मख़्लूक के दरमियान वासिता बन कर बन्दों को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के करीब कर दे और जन्नत की तरफ़ ले जाए।

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़लो करम से हमें भी इन में से कर दे और हर नेक बन्दे पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत हो। (आमीन)

बाब नम्बर : 2

महमूद व मनमूम इलूम और इन की अक्शाम व अहकाम

इस बाब में येह बयान किया जाएगा कि कौन सा इल्म फ़र्जे ऐन है और कौन सा फ़र्जे किफ़ायत ? इल्मे कलाम और इल्मे फ़िक्ह के इल्मे दीन होने की क्या हद है ? नीज़ इल्मे आख़िरत की क्या फ़ज़ीलत है ?

पहली फ़स्ल : **फ़र्जे ऐन इल्म का बयान**

मुअल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ” या’नी इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज है ।⁽¹⁾

एक रिवायत में है : “أَطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصَّيْنِ” या’नी इल्म की जुस्तजू करो अगर्चे चीन जाना पड़े ।”⁽²⁾

कौन सा इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज है ?

इस बात में उ-लमा का इख़िलाफ़ है कि वोह कौन सा इल्म है जिस का हुसूल हर मुसलमान पर फ़र्ज है । इस में 20 गुरौह हैं । हम तफ़सील नक्ल कर के किताब को तवील नहीं करना चाहते, अलबत्ता खुलासा येह है कि हर गुरौह ने उसी इल्म को फ़र्ज कहा जिस पर वोह खुद कारबन्द है । चुनान्चे,

मुतकल्लिमीन ने कहा : वोह इल्मे कलाम है, क्यूंकि इस के ज़रीए **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की वहदानियत व यक्ताई का इदराक होता और उस की ज़ात व सिफ़ात की मा’रिफ़त हासिल होती है ।

फ़ुक्हा ने कहा : वोह इल्मे फ़िक्ह है, क्यूंकि इस के ज़रीए इबादात, हलाल व हराम और जाइज़ व नाजाइज़ मुआमलात की पहचान होती है और इस से उन की मुराद वोह मसाइल हैं जिन की ज़रूरत हर एक को पेश आती है न की नौपैद शाज़ोनादर मसाइल ।

मुफ़स्सिरीन व मुहद्दिषीन ने कहा : इस से कुरआनो सुन्नत का इल्म मुराद है, क्यूंकि इन्हीं के ज़रीए तमाम उलूम तक रसाई होती है ।

①.....سنن ابن ماجه، المقدمة، باب فضل العلماء والحث.....الخ، الحديث: २२२، ج १، ص १२१ -

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب في طلب العلم، الحديث: १२३، ج २، ص २५३ -

सूफ़िया ने कहा : इस से मुराद इल्मे तसव्वुफ़ है। फिर इन में से बा 'ज़ ने कहा : वोह इल्म येह है कि बन्दा अपने हाल को जाने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां अपना मक़ाम व मर्तबा मा'लूम करे।

किसी ने कहा : वोह इख़्लास, नफ़्स की आफ़ात और फिरिश्ते के इल्हाम और शैतान के वसवसे के दरमियान फ़र्क करने का इल्म है। बा 'ज़ ने लफ़्ज़ को इस के उमूम से फैरते हुए कहा कि वोह इल्मे बातिन है और ख़ास किस्म के लोगों पर फ़र्ज़ है जो उस के अहल हैं।

हज़रते सय्यिदुना अबू त़ालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : इस से मुराद उन चीज़ों का इल्म है जिन्हें वोह हदीष शामिल है जिस में इस्लाम की बुन्यादों का ज़िक्र है और वोह येह फ़रमाने मुस्तफ़ा है कि "इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है। इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं (मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ क़ाइम करना, ज़कात देना, हज़ करना और रमज़ान के रोज़े रखना)।" (1)

चूँकि येह पांचों फ़र्ज़ हैं इस लिये इन पर अमल की कैफ़ियत और फ़र्जियत का इल्म भी फ़र्ज़ है।

जिस इल्म के बारे में इल्म हासिल करने वाले पर वाजिब है कि इस में यकीन रखे और शक न करे येह वोह है जिसे हम अब बयान करेंगे। जैसा कि हम ने इब्तिदाइया में भी बयान किया कि इस इल्म की दो किस्में हैं : (1)....इल्मे मुआमला और (2).....इल्मे मुकाशफ़ा : इस से इल्मे मुआमला ही मुराद है। नीज़ अक़िल बालिग़ को जिस मुआमले पर अमल का पाबन्द बनाया गया है वोह तीन हैं : (1) ए'तिकाद (2) फ़े'ल (या'नी करना) और (3) तर्क (या'नी न करना)। लिहाज़ा अक़ल मन्द शख़्स अगर चाश्त के वक़्त एहतिलांम होने या (बुलूग़त की) उम्र पूरी होने के सबब बालिग़ हुवा (2) तो इस पर सब से पहले येह वाजिब होगा कि वोह

①.....صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب الايمان.....الخ، الحديث: ٨، ج ١، ص ١٢ -

②....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक़तबतुल मदीना की मतबूआ 397 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब पर्दे के बारे में सुवाल जवाब के सफ़हा 71-72 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरى رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ नक्ल फ़रमाते हैं :

सुवाल : लड़का कब बालिग़ होता है ? **जवाब :** हिजरी सिन के हिसाब से 12 और 15 साल की उम्र के दौरान जब भी (जिमाअ या मुश्तज़नी वग़ैरा के ज़रीए) इन्ज़ाल हो या सोते में एहतिलांम हुवा या उस के जिमाअ से औरत हामिला हो गई तो उसी वक़्त बालिग़ हो गया और उस पर गुस्ल फ़र्ज़ हो गया। अगर ऐसा न हुवा तो हिजरी सिन के मुताबिक़ 15 बरस का होते ही बालिग़ हो गया। **सुवाल :** लड़की कब बालिग़ा होती है ? **जवाब :** हिजरी सिन के हिसाब से 9 और 15 साल की उम्र के दौरान एहतिलांम हो या हज़ आ जाए या हम्ल ठहर जाए तो बालिग़ा हो गई वरना हिजरी सिन के मुताबिक़ 15 साल की होते ही बालिग़ा है।

(دُرْمُخْتَار، ج ٩، ص ٢٥٩، ملخصاً)

कलिमए शहादत **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ** सीखे और इस के मा'ना समझे जो येह है : (**अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उस के रसूल हैं) इस पर येह वाजिब नहीं कि इस में गौरो फ़िक्क, बहूष और दलाइल लिख कर वज़ाहत चाहे बल्कि इतना काफी है कि इस की तस्दीक करे, इस का ए'तिकाद रखे और इस के बारे में किसी किस्म का शको शुबा न करे और येह बात बिगैर बहूष व दलाइल के महज़ तकलीद व समाअ से हासिल हो जाती है इस लिये कि प्यारे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने अरब के कुन्द जेहनों से तस्दीक और इक़रार करवाने पर इकतिफ़ा किया दलील नहीं सिखाई।⁽¹⁾

लिहाज़ा जब उस ने कलिमए शहादत सीख कर इस के मा'ना समझ लिये तो उस ने इस वक़्त के वाजिब को अदा कर दिया क्यूंकि इस वक़्त उस पर सिर्फ़ दो कलिमों को सीखना और समझना फ़र्जे ऐन है कुछ और फ़र्ज नहीं। इस दलील की बिना पर कि अगर वोह इस की अदाएगी के बा'द मर गया तो **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** का मुतीअ व फ़रमांबरदार हो कर मरेगा न कि नाफ़रमान हो कर। कोई दूसरा अम्र उस वक़्त फ़र्ज होगा जब अवारिज़ (किसी काम के करने या न करने का बाइष बनने वाले उमूर) पाए जाएं और येह हर शख़्स के हक़ में ज़रूरी नहीं बल्कि मुमकिन है कि बा'ज में येह अवारिज़ न पाए जाएं।

अवारिज़ की अक़शाम और मिषालें :

अवारिज़ की तीन किस्में हैं : (1) या तो फ़े'लिया होंगे (या'नी इन के करने का हुक्म दिया गया होगा) (2) या तर्किया होंगे (या'नी इन से बचने का हुक्म दिया गया होगा) (3) या ए'तिकादिया होंगे (कि इन पर यकीन रखना ज़रूरी होगा)।

पहले की मिषाल : (वक़ते चाश्त बालिग़ होने वाला) चाश्त से वक़ते ज़ोहर तक ज़िन्दा रहा तो वक़ते ज़ोहर दाख़िल होने से उस पर त़हारत और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल सीखना फ़र्ज हो जाएंगे फिर अगर वोह तन्दुरुस्त है और ज़वाल के वक़्त तक कुछ न सीखेगा तो वक़्त में सीख कर अमल करना मुमकिन नहीं रहेगा बल्कि सीखने में ही वक़्त जाता रहेगा तो येह कहा जा सकता है कि उस का ज़िन्दा रहना ज़ाहिर है इस लिये उस पर फ़र्ज है कि (ज़ोहर का) वक़्त शुरू होने से पहले ही उस के ज़रूरी मसाइल सीख ले यूं भी कहा जा सकता है कि इल्म जो अमल की शर्त है अमल के फ़र्ज होने के बा'द ही फ़र्ज होगा इस लिये (त़हारत और नमाज़ के ज़रूरी मसाइल) ज़वाले आफ़ताब से पेशतर सीखना फ़र्ज नहीं। इसी तरह बक़िया नमाज़ों में भी होगा।

①.....صحیح البخاری، کتاب العلم، باب ماجاء فی العلم.....الخ، الحدیث: ۶۳، ج ۱، ص ۳۹۔

फिर अगर वोह माहे रमज़ान तक जिन्दा रहा तो सबब पाए जाने की वजह से रोज़े के ज़रूरी मसाइल सीखना फ़र्ज़ हो जाएंगे और वोह येह कि रोज़े का वक़्त सुबहे सादिक़ से गुरुबे आफ़ताब तक है। इस वक़्त में बनिय्यते रोज़ा खाने पीने और जिमाअ से बाज़ रहना फ़र्ज़ है और इस की मुद्दत ईद का चांद देखने या दो गवाहों की गवाही तक है।

फिर अगर उसे माल हासिल हो या बुलूग़त के वक़्त उस के पास माल था तो येह जानना फ़र्ज़ है कि इस माल पर कितनी ज़कात फ़र्ज़ है लेकिन येह उसी वक़्त फ़र्ज़ नहीं बल्कि इस्लाम लाने के वक़्त से साल पूरा होने पर फ़र्ज़ होगा। अगर वोह सिर्फ़ ऊंटों का मालिक है तो उन्हीं की ज़कात का जानना फ़र्ज़ होगा। इसी तरह माल की दीगर अक़साम में भी।

फिर हज़ के महीने शुरूअ होने पर फ़ौरी इस का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ नहीं होगा क्यूंकि हज़ की अदाएगी अलत्तराख़ी (या'नी ताख़ीर से) फ़र्ज़ है⁽¹⁾ लेकिन उ-लमा को चाहिये कि वोह उसे इस बात से आगाह कर दें कि हज़ हर उस शख़्स पर अलत्तराख़ी फ़र्ज़ है जो जादे राह और सुवारी का मालिक हो और इस पर कादिर भी हो क्यूंकि बसा अवकात कोई जल्दी करने की मोहतात राए रखता है। बहर हाल जब वोह हज़ का पुख़्ता इरादा कर लेगा तो उस पर हज़ के फ़राइज़ व वाजिबात का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ हो जाएगा जब कि नवाफ़िल का इल्म हासिल करना ज़रूरी नहीं। अगर हज़ नफ़ली हो तो उस का इल्म भी नफ़ली होगा उस वक़्त उसे सीखना फ़र्ज़ ऐन नहीं होगा और येह कहना कि “अस्ले हज़ फ़ौरन वाजिब है पर आगाह न करना हराम है” इस में नज़र (या'नी ग़ौरो फ़िक्क की ज़रूरत) है जिस का तअल्लुक़ इल्मे फ़िक्कह से है। दीगर तमाम फ़र्ज़ अफ़अाल में भी येही तरीक़ाए कार होगा।

दूसरे की मिषाल : हालात की तब्दीली के मुताबिक़ तुरूक (या'नी जिन बातों से बचने का हुक्म है इन) का इल्म सीखना फ़र्ज़ है और येह हर शख़्स की हालत के पेशे नज़र मुख़्तलिफ़ है। चुनान्चे, गूंगे पर हराम बातों का इल्म सीखना फ़र्ज़ नहीं और अन्धे पर येह सीखना फ़र्ज़ नहीं कि किन चीज़ों को देखना हराम है। जंगल में रहने वाले पर येह सीखना फ़र्ज़ नहीं कि किन मजलिसों में बैठना हराम है क्यूंकि तुरूक का इल्म भी हस्बे हाल ही फ़र्ज़ होता है।

①.....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूअ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल, सफ़हा 1036 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका, हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِیٰ नक़ल फ़रमाते हैं : “जब हज़ के लिये जाने पर कादिर हो हज़ फ़ौरन फ़र्ज़ हो गया या'नी उसी साल में और अब ताख़ीर गुनाह है और चन्द साल तक न किया तो फ़ासिक़ है और उस की गवाही मरदुद मगर जब करेगा अदा ही है क़ज़ा नहीं।”

अल ग़रज़ जो चीज़ें ज़रूरियाते दीन से नहीं इन का इल्म सीखना फ़र्ज़ नहीं और जिन के बारे में मा'लूम हो कि बिगैर इस के चारा नहीं इस की आगही हासिल करना फ़र्ज़ है। जैसा कि इस्लाम लाते वक़्त किसी ने रेशम पहन रखा था ग़सब शुदा ज़मीन पर बैठा था या ग़ैर मह़रम को देख रहा था तो इस्लाम लाते ही उस पर फ़र्ज़ हो जाएगा कि वोह इन का इल्म हासिल करे और जिन की इसे अभी ज़रूरत नहीं लेकिन अ़न क़रीब ज़रूरत पड़ेगी जैसे खाना पीना तो इन के बारे में भी सीखना फ़र्ज़ होगा। यहां तक कि अगर वोह किसी ऐसे शहर में हो जहां शराब पीने और ख़िन्ज़ीर खाने का रवाज हो तो उस पर (हस्बे इस्तिताअत) फ़र्ज़ है कि लोगों को इस के बारे में बताए और तमबीह करे। बहर हाल हर वोह काम जिस का सिखाना फ़र्ज़ है उस का सीखना भी फ़र्ज़ है।

तीसरे की मिषाल : ऐ'तिकादात और आ'माले क़ल्ब का इल्म भी क़ल्बी ख़यालात के मुताबिक़ फ़र्ज़ होगा। लिहाज़ा अगर किसी के दिल में इन मअानी के बारे में शक वाक़ेअ हो जिन पर शहादत के कलिमे दलालत करते हैं तो उस पर उन बातों का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ होगा जिन के ज़रीए शक ज़ाइल हो। अगर किसी को इस बात में शक नहीं हुवा और वोह इस का ऐ'तिकाद रखे बिगैर वफ़ात पा गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम क़दीम है, उसे देखा जा सकता है, वोह हवादिष (या'नी तग़य्युर पज़ीर उमूर) का महूल नहीं वग़ैरा जिन्हें अ़काइद के बाब में ज़िक्र किया जाएगा तो बेशक बिल इत्तिफ़ाक़ उस की मौत इस्लाम पर हुई। ऐ'तिकादात के लिये ज़रूरी क़ल्बी ख़यालात बा'ज़ ऐसे हैं जो तबीअत की वजह से पैदा होते हैं और बा'ज़ शहर के लोगों से सुन कर। अगर कोई ऐसे शहर में हो जहां इल्मे कलाम अ़म हो और लोग बिदअतों के बारे में गुफ़्तगू करते हों तो बालिग़ होते ही सब से पहले उसे हक़ की तल्कीन कर के (बुरी) बिदअतों⁽¹⁾ से बचाना चाहिये क्यूंकि अगर उस के सामने बातिल को पेश कर दिया गया तो उस

①.....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत के सफ़हा 1109 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ बिदअत के हवाले से चन्द अहादीषे मुबारका नक़ल करने के बा'द लिखते हैं कि “ऐसी नई बात जो सुन्नत से दूर कर के गुमराह करने वाली हो, जिस की अस्ल दीन में न हो वोह बिदअते सय्यिया या'नी बुरी बिदअत है जब कि दीन में ऐसी नई बात जो सुन्नत पर अमल करने में मदद करने वाली हो और जिस की अस्ल दीन से षाबित हो वोह बिदअते हसना या'नी अच्छी बिदअत है।” (नीज़) हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिषे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوْی हदीषे पाक “وَكُلُّ ضَلَاةٍ فِي النَّارِ” के तहत फ़रमाते हैं : जो बिदअत के उसूल और क़वाइद सुन्नत के मुवाफ़िक़ और उस के मुताबिक़ क़ियास की हुई है (या'नी शरीअत व सुन्नत से नहीं टकराती) उस को बिदअते हसना कहते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ है वोह बिदअते ज़लालत या'नी गुमराही वाली बिदअत कहलाती है। (اشِعَّةُ اللَّمَعَاتِ، ج اول، ص 135)।

नोट : मज़ीद मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत सफ़हा 1104 ता 1113 का मुतालआ कीजिये !

के दिल से इसे ज़ाइल करना फ़र्ज़ हो जाएगा और बा'ज़ अवकात येह बहुत मुश्किल हो जाता है। जैसा कि अगर येह मुसलमान ताजिर है और शहर में सूद का मुआमला बहुत ज़ियादा है तो उस पर सूद से बचने का इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है और फ़र्ज़ ऐन इल्म में येही हक़ है और इस का मतलब फ़र्ज़ अमल के तरीके को जानना है लिहाज़ा जिस ने फ़र्ज़ अमल का इल्म और इस का वक़्ते फ़र्ज़ियत जान लिया तो बेशक उस ने फ़र्ज़ ऐन इल्म हासिल कर लिया।

नीज़ सूफ़िया का येह कौल कि “शैतान के वस्वसों और फ़िरिश्तों के इलहाम को समझना भी ज़रूरी है” येह भी हक़ है लेकिन येह उस शख़्स के बारे में है जो सूफ़िया के तरीके पर हो।

आम तौर पर इन्सान शर के दवाई (या'नी बुराई की तरफ़ ले जाने वाले उमूर), रिया, हसद वगैरा से बच नहीं पाता इस लिये उस पर फ़र्ज़ है कि मोहलिकात (या'नी हलाकत में डालने वाली चीज़ों) में से जिस की वोह ज़रूरत महसूस करे उस का इल्म हासिल करे और येह क्यूंकर फ़र्ज़ न होगा।

हलाकत में डालने वाले उमूर :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि “³ चीज़ें हलाकत का बाइष हैं : ऐसा बुख़्ल जिस की इताअत की जाए, ऐसी ख़्वाहिश जिस की पैरवी की जाए और इन्सान का खुद पसन्दी में मुब्तला होना।”⁽¹⁾

इन से कोई इन्सान बच नहीं सकता। हम अज़न करीब दिल के बाकी मज़मूम अहवाल (बुरी हालतें) बयान करेंगे जैसे तकब्बुर, उज़ब और इस की मिष्ल दूसरे अहवाल जो इन तीन मोहलिकात के ताबेअ हैं जिन का इज़ाला फ़र्ज़ ऐन है और इन की ता'रीफ़ात, अस्बाब, अलामात और इलाज जाने बिगैर इन का इज़ाला नहीं किया जा सकता क्यूंकि जो बुराई को नहीं पहचानता वोह इस में मुब्तला हो ही जाता है। इलाज येह है कि हर सबब का इस की ज़िद से मुक़ाबला किया जाए और येह सबब और मुसब्बब की पहचान के बिगैर नहीं हो सकता। हम ने मोहलिकात के बयान में अक़षर फ़र्ज़ ऐन उलूम नक़ल किये हैं जब कि कई लोगों ने “ला” या'नी उमूर में मशगूल हो कर इन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया है।

①.....مسندالبرار، مسند عبدالله بن ابی اوفی، الحديث: ۳۳۶۶، ج ۸، ص ۲۹۵۔

المعجم الاوسط، الحديث: ۵۷۵۴، ج ۴، ص ۲۱۳۔

वोह शख्स कि जो एक दीन से दूसरे दीन में दाखिल न हुवा हो (बल्कि कुफ़र से इस्लाम में आया हो) तो उसे जन्नत, दोज़ख़, हशरो नशर पर ईमान लाने के बारे में ता'लीम देने में जल्दी करनी चाहिये ताकि वोह इन पर ईमान ले आए और इन की तस्दीक़ करे। येह शहादत के दो कलिमों की तक्मील है। क्यूंकि हुज़ूर सय्यिदे अलाम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रसूल मान लेने के बा'द रिसालत के मफ़हूम को समझना ज़रूरी है और वोह येह है कि जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इताअत की उस के लिये जन्नत है और जिस ने उन की नाफ़रमानी की उस का ठिकाना जहन्म है। जब ब तदरीज तुम्हें इन बातों पर आगही हासिल हो गई तो जान लो कि येही मजहबे हक़ है और येह साबित हो जाएगा कि दिन और रात के अहवाल में कोई भी शख्स इबादात और मुआमलात में नए मसाइल से ख़ाली नहीं तो उस पर लाज़िम है कि जो मस्अला वाक़ेअ़ हो उस के बारे में सुवाल करे और अज़ करीब वाक़ेअ़ होने वाले मसाइल का इल्म हासिल करने में भी जल्दी करे।

मजकूरा तमाम बहूष से येह बात वाजेह हो गई कि रसूले खुदा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने अलीशान : ⁽¹⁾ "طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ" में الْعِلْم से उस अमल का इल्म मुराद है जिस के बारे में मशहूर है कि वोह मुसलमानों पर फ़र्ज़ है न कि कुछ और, नीज़ वजहे तदरीज और वक्ते वुजूब भी ख़ूब रोशन हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानने वाला है।

❦ ता'रीफ़ और सआदत ❦

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي (मुतवफ़फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि "जो शख्स **अल्लाह** और उस के रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमा बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआदत मन्दी से सरफ़राज़ होगा।"

(تفسير الميضاوی، پ ۲، الاحزاب، تحت الآية ۱: ۷۴، ج ۱، ص ۳۸۸)

दूसरी फ़स्ल : फ़र्जे किफ़ाय़ा इल्म का बयान

जान लो ! उलूम की अक़साम जिफ़्र किये बिगैर फ़र्ज़ उलूम को इन के गैर से मुमताज़ नहीं किया जा सकता और इल्म की निस्बत फ़र्ज़ की तरफ़ की जाए तो इस की दो किस्में बनती हैं : (1) उलूमे शरइय्या और (2) उलूमे गैर शरइय्या, शरइय्या से मुराद वोह उलूम हैं जो हज़रते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से हासिल किये गए हैं अक्ल उन की तरफ़ राहनुमाई नहीं करती जैसा कि हिसाब और न तजरिबा इस की जानिब राहनुमाई करता है जैसे तिब्ब और न ही वोह समाअ से हासिल होते हैं जैसे लुग़त ।

गैर शरई उलूम की अक़साम :

इस की तीन किस्में हैं : महमूद, मजमूम और मुबाह ।

﴿1﴾.....महमूद उलूम : वोह हैं जिन से दुन्यवी कामों की मस्लिहतें वाबस्ता हैं मषलन तिब्ब और हिसाब । इस की भी दो किस्में हैं : फ़र्जे किफ़ाय़ा और मुस्तहब ।

(1) फ़र्जे किफ़ाय़ा : वोह इल्म जिस के बिगैर दुन्या के कामों का इन्तिज़ाम न हो सके जैसा कि तिब्ब क्यूंकि येह बदनो की बका के लिये ज़रूरी है और हिसाब क्यूंकि येह मुआमलात, वसिय्यतों और तर्के वगैरा की तक्सीम में ज़रूरी है । येह वोह उलूम हैं कि अगर पूरे शहर में से किसी एक ने भी इन्हें हासिल न किया तो पूरे शहर वाले गुनहगार होंगे और अगर किसी एक ने सीख लिया तो काफ़ी है दूसरों से फ़र्ज़ साक़ित हो जाएगा और हमारे इस कौल से किसी को तअज्जुब नहीं होना चाहिये कि “तिब्ब और हिसाब फ़र्जे किफ़ाय़ा हैं ।” क्यूंकि सनअतों के उसूल भी फ़र्जे किफ़ाय़ा उलूम में से हैं जैसा कि काश्तकारी, कपड़ा बुनाई और हिक्मते अमली व तदबीर बल्कि पछने लगाना और कपड़ा सिलाई भी । क्यूंकि अगर सारे शहर में कोई भी पछने लगाने वाला नहीं होगा तो हलाकत उन की तरफ़ जल्दी करेगी और वोह अपनी जानों को हलाकत में डालने की वजह से गुनहगार होंगे क्यूंकि जिस ने बीमारी नाज़िल की है उस ने इस की दवा भी उतारी है और इसे इस्ति'माल करने की राहनुमाई भी फ़रमाई है और इसे हासिल करने के अस्बाब भी मुहय्या किये हैं इस लिये इन्हें छोड़ कर हलाकत सर लेना जाइज़ नहीं ।

(2) मुस्तहब : हिसाब की बारीकियों और तिब्ब की हकीकतों में गौताज़नी करना (या'नी गहराई में जाना) है और इन के इलावा वोह चीज़ें जिन की हाज़त तो नहीं लेकिन जितनी मिक्दार की हाज़त है उस में इज़ाफ़ी कुव्वत के लिये मुफ़ीद हैं उन के बारे में जानना भी मुस्तहब है ।

﴿2﴾.....मजमूम उलूम : जैसे जादू, करिश्मात, शो'बदाबाज़ी और तलबीसात का इल्म ।

﴿3﴾.....मुबाह उलूम : जैसे उन अशआर का इल्म जो बे हुदा न हों और तवारीख़ वगैरा का इल्म ।

उलूमे शरइय्या की अक़शाम :

जहां तक उलूमे शरइय्या का तअल्लुक है और येही हमारे बयान का मक्सूद हैं येह तमाम के तमाम महमूद हैं लेकिन कभी इन में शुबा हो जाता है, लगता है कि वोह उलूमे शरइय्या हैं हालांकि वोह मजमूम होते हैं। चुनान्चे, इस की भी दो किस्में हैं :

(1)....महमूदा (2)....मजमूमा। उलूमे शरइय्या महमूदा के कुछ उसूल (बुन्याद), फुरूअ (जुज़्इयात), मुक़द्मात (या'नी आलात के काइम मक़ाम अश्या) और मुतम्मिमात हैं (या'नी वोह उलूम जो मुकम्मल करने वाले हैं) यूं इस की चार किस्में हुई :

पहली किस्म उसूल : येह चार हैं : (1) किताबुल्लाह (2) सुन्नते रसूल (3) इजमाए उम्मत और (4) आषारे सहाबा।

इजमाअ इस ए'तिबार से अस्ल है कि वोह सुन्नत पर दलालत करता है और वोह तीसरे दर्जे का अस्ल है इसी तरह अषर कि वोह भी सुन्नत पर दलालत करता है। क्यूंकि सहाबाए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ने वहुय व तन्जील के मुशाहिदे किये और अहवाल के क़राइन से उन बातों को जान लिया जो इन के इलावा दूसरों की आंखों से पोशीदा हैं। कभी इबारात उन बातों का इहाता करने से क़ासिर रहती हैं जो क़राइन से मा'लूम की जा सकती हैं। इसी लिये उ-लमा की राए येह है कि इन की इक़तिदा की जाए और इन के आधार को मजबूती से थामा जाए और जिन्हों ने इन्हें देखा उन के नज़दीक येह ख़ास शर्त के साथ ख़ास सूरत पर हैं लेकिन इस का बयान इस फ़न के लाइक नहीं।

दूसरी किस्म फुरूअ : इस से मुराद वोह हैं जो बयान कर्दा उसूलों से समझे जाएं। उसूलों के अल्फ़ाज़ के तकाज़े की वजह से नहीं बल्कि इन मअानी की वजह से जिन पर अक्लें आगाह हुई तो उस के सबब मफ़हूम वसीअ हो गया यहां तक कि बोले गए लफ़ज़ से वोह बातें भी मा'लूम हो गईं जिन के लिये लफ़ज़ को नहीं लाया गया जैसा कि इस फ़रमाने मुस्तफ़ा कि “काज़ी गुस्से की हालत में फ़ैसला न करे।”⁽¹⁾ से समझा गया है कि वोह ख़ौफ़ ज़दा होने या भूका होने या किसी मरज़ में मुब्तला होने की हालत में फ़ैसला न करे। इस की दो किस्में हैं : एक का तअल्लुक दुन्यवी मनाफ़ेअ से है। कुतुबे फ़िक़ह इस पर मुश्तमिल और फुक़हा इस के जिम्मेदार हैं और वोह उ-लमाए दुन्या हैं। दूसरी का तअल्लुक आख़िरत के मनाफ़ेअ से है और

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الاحكام، باب لا يحكم الحاكم وهو غضبان، الحديث: ٢٣١٦، ج ٣، ص ٩٣۔

येह कल्बी अहवाल, अच्छे बुरे अख़लाक़ और **अव्वाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक़ पसन्दीदा और ना पसन्दीदा उमूर का इल्म। “इह्याउल उलूमिद्दीन” का निस्फ़े अख़ीर इसी पर मुश्तमिल है जब कि निस्फ़े अव्वल उन उमूर के इल्म पर मुश्तमिल है जो इबादात और अ़ादात में दिल से आ'ज़ा पर ज़ाहिर होते हैं।

तीसरी किस्म मुक़द्दमात : येह वोह हैं जो आलात के काइम मक़ाम होते हैं। जैसा कि इल्मे लुग़त व नहूव कि ये दोनों किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल के इल्म के लिये आला हैं। लुग़त और नहूव बज़ाते खुद शरई उलूम में से नहीं, अलबत्ता इन में ग़ौरो ख़ौज़ सबबे शरई की वजह से लाज़िम है क्यूंकि शरीअत लुग़ते अरब पर उतरी है और कोई भी शरीअत लुग़त के बिग़ैर ज़ाहिर नहीं होती इस लिये लुग़त को सीखना आला बन गया। लिखने का इल्म भी आलात की किस्म में से है मगर इस का सीखना ज़रूरी नहीं क्यूंकि रसूले खुदा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उम्मी थे (या'नी आप ने दुन्या में किसी से पढ़ा, लिखा नहीं येह आप का अज़ीम मो'जिज़ा है)⁽¹⁾ और अगर मुस्तक़िल तौर पर जो सुना जाए उसे ज़बानी याद कर लेना मुमकिन होता तो लिखने की हाज़त न पड़ती लेकिन बिदाहतन ग़ालिब अक़षरिय्यत इस से अज़िज़ है।

चौथी किस्म मुतम्मिमात : येह इल्मे कुरआन से मुतअल्लिक़ है। इस की तीन किस्में हैं :

(1).....वोह जिस का तअल्लुक़ अल्फ़ज़ से है जैसा कि क़िराअतें और मख़ारिजे हुरूफ़ सीखना।

(2).....वोह जिस का तअल्लुक़ मआनी से है जैसा कि तफ़सीर। इस में भी नक़ल ही पर ए'तिमाद किया जाता है क्यूंकि महूज़ लुग़त तफ़सीर बताने में मुस्तक़िल नहीं।

(3).....वोह जिस का तअल्लुक़ अहक़ामे कुरआन से है जैसा कि नासिख़ व मन्सूख़, आ़म व ख़ास और नस्स व ज़ाहिर की पहचान नीज़ इन में से बा'ज़ को बा'ज़ के साथ इस्ति'माल करने का तरीक़ा। येही वोह इल्म है जिसे उसूले फ़िक्ह कहा जाता है और येह सुन्नत को भी शामिल है।

आषार व अख़बार में मुतम्मिमात इल्मे रिजाल है या'नी रावियों के बारे में जानना, इन के नाम, इन के नसब, सहाबाए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ के नाम, इन का तआरूफ़, रावियों में अ़दालत और इन के अहवाल का इल्म ताकि ज़ईफ़ को क़वी से मुमताज़ किया जा सके, इन की उम्रों का इल्म ताकि मुरसल व मुसनद में फ़र्क़ किया जा सके और इसी तरह वोह उलूम जिन का तअल्लुक़ इस के साथ है। येह उलूमे शरइय्या हैं और तमाम के तमाम महमूद हैं बल्कि सब के सब फ़र्जे किफ़ाया उलूम में से हैं।

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب الصلاة على النبی بعد التشهد، الحديث: ٩٨١، ج ١، ص ٣٦٩۔

المستند للإمام احمد بن حنبل، مستند عبد اللّٰه بن عمرو، الحديث: ٢٦١٤، ج ٢، ص ٥٨١۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि तुम ने फ़िक़ह को इल्मे दुन्या और फ़ुक़हा को उ-लमाए दुन्या के साथ क्यूं मिला दिया ? तो जान लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को मिट्टी से पैदा फ़रमाया और आप की अवलाद को चुनी हुई मिट्टी और उछलते पानी से निकाला फिर पुश्तों (बापों की पीठों) से (माओं के) रहमों में, रहमों से दुन्या में, दुन्या से क़ब्र में, क़ब्र से मेहशर में फिर मेहशर से जन्नत या दोज़ख़ की तरफ़ भेजेगा । येह है उन की इब्तिदा व इन्तिहा और मन्ज़िलें । दुन्या को आख़िरत की तय्यारी के लिये पैदा फ़रमाया ताकि दुन्या से वोह लिया जाए जो सफ़रे आख़िरत के लिये जादे राह बन सके । लिहाज़ा अगर लोग अदलो इन्साफ़ के साथ दुन्या से लेते तो न झगड़ो की नौबत आती और न ही फ़ुक़हा की ज़रूरत पेश आती लेकिन इन्हों ने ख़्वाहिशात के मुताबिक़ लिया जिस से झगड़ों ने जनम लिया तो बादशाह की ज़रूरत पड़ी जो इन के मुआमलात संभाले और बादशाह को क़ानून की ज़रूरत पड़ी जिस के मुताबिक़ वोह लोगों का इन्तिज़ाम करे पस फ़कीह क़ानूने सियासत का आलिम और लोगों के दरमियान वासिता है । जब लोगों में ख़्वाहिशात की वजह से झगड़े हो जाते हैं तो फ़कीह बादशाह को लोगों के मुआमलात को संभालने और कन्ट्रोल करने के तरीके बताता है ताकि वोह उन के दुन्यवी मुआमलात का सहीह इन्तिज़ाम कर सके ।

मेरी ज़िन्दगी की कसम ! इस का तअल्लुक़ भी दीन से है लेकिन फ़ी नफ़्सिही (या'नी अपनी ज़ात के ए'तिबार से) नहीं बल्कि दुन्या के वासिते से । क्यूंकि दुन्या आख़िरत की खेती है और दीन दुन्या ही से मुकम्मल होता है, सल्तनत और दीन एक ही हैं । दीन अस्ल है और बादशाह निगहबान । जिस की अस्ल न हो वोह गिर जाता है और जिस का कोई मुहाफ़िज़ न हो वोह ज़ाएअ हो जाता है । नीज़ मुल्क और इस का इन्तिज़ाम सुल्तान के बिगैर नहीं चल सकता और झगड़ों के फैसलों में कन्ट्रोल का तरीका फ़िक़ह से आता है । जिस तरह सल्तनत के ज़रीए लोगों की इस्लाह व बेहतरी के तरीके जानने का हुक्म है जो पहले दर्जे का इल्मे दीन नहीं बल्कि येह इस पर मुईन व मददगार है जिस के बिगैर दीन मुकम्मल नहीं होता इसी तरह सियासत के तरीके जानने का हुक्म है ।

इल्मे फ़िक़ह का हासिल :

चूँकि येह बात मा'लूम है कि अगर रास्ते में अरब के (राहज़नों से बचाव के लिये) मुहाफ़िज़ीन न हों तो हज़ मुकम्मल नहीं हो सकता लेकिन हज़ और शै है और इस के लिये रास्ता तै करना दूसरी शै और जिन हिफ़ाज़ती इक़दामात के बिगैर हज़ मुकम्मल नहीं होता

इन का क़ियाम तीसरी शै है और हिफ़ाज़त के तरीकों, तबदीरों और क़वानीन का जानना चौथी शै है। तो फ़न्ने फ़िक्ह का हासिल येह है कि सियासत और हिफ़ाज़त के तरीके जाने जाएं। इस पर वोह हदीष दलालत करती है जो मुस्नदन मरवी है कि लोगों को फ़तवे नहीं देते मगर तीन तरह के लोग : अमीर, मामूर या मुतकल्लिफ़।⁽¹⁾

अमीर से मुराद हाकिम है और येही फ़तवा देते थे और मामूर से मुराद उस का नाइब है और मुतकल्लिफ़ इन दोनों के इलावा है और येह वोह है जो बिला ज़रूरत इस ओहदे की ख़्वाहिश करता है हांलाकि सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ फ़तवा देने से बचते थे यहां तक कि इन में से हर एक अपने साथ वाले की तरफ़ फैर देता और जब इन से राहे आख़िरत या इल्मे कुरआन के बारे में पूछा जाता तो एहतिराज़ नहीं करते थे। एक रिवायत में अल मुतकल्लिफ़ के बजाए अल मराई (या'नी रियाकार) है क्यूंकि जो फ़तवे के ख़तरे को सर लेता है जब कि वोह इस के लिये ख़ास भी नहीं तो ला महाला फ़तवा देने से इस का मक्सूद हुब्बे जाह व माल ही है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम येह कहो कि तुम्हारी येह तक़रीर ज़ख़्मों, हुदूद और तावान के अहक़ाम और झगड़ों के फैसलों में तो दुरुस्त हो सकती है लेकिन इबादात या'नी नमाज़, रोज़े और आदात व मुआमलात या'नी हलाल व हराम के अहक़ाम के बयान में दुरुस्त नहीं। तो जान लो ! फ़कीह जिन आ'माल के बारे में कलाम करता है इन में आ'माले आख़िरत के सब से ज़ियादा क़रीब तीन आ'माल हैं। (1) इस्लाम (2) नमाज़ व ज़कात और (3) हलाल व हराम। जब तुम इन आ'माल में फ़कीह की इन्तिहाई नज़र को मुलाहज़ा करोगे तो येह बात जान लोगे कि फ़कीह दुन्या की हुदूद से आख़िरत की तरफ़ नहीं बढ़ता और जब तुम ने इन तीन आ'माल में इस बात को जान लिया तो इन के इलावा आ'माल में तो येह ज़ियादा ज़ाहिर है।

इस्लाम में फ़कीह सिर्फ़ इस बारे में कलाम करता है कि किस का इस्लाम दुरुस्त है और किस का नहीं ? और इस्लाम की शर्त क्या हैं और इस में वोह सिर्फ़ ज़बान की तरफ़ मुतवज्जेह होता है दिल तो उस के इख़्तियार में नहीं क्यूंकि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तलवार और सल्तनत वालों को इस से अलग कर दिया है जैसा कि जब जंग के दौरान एक शख्स ने कलिमा पढ़ा तो सहाबी ने इस बिना पर उसे क़त्ल कर डाला कि उस ने येह कलिमा तलवार

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث عوف بن مالك، الحديث: ٢٢٠٢٤، ج ٩، ص ٢٥٣۔

قوت القلوب، الفصل الحادي والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ١، ص ٢٢٨۔

के खौफ से पढ़ा है। जब दरबारे रिसालत में येह बात पहुंची तो इरशाद फ़रमाया : **هَلَّا شَقَّقْتُ عَنْ قَلْبِهِ** : या'नी क्या तूने उस का दिल चीर कर देखा था ?⁽¹⁾ बल्कि फ़कीह तलवारों के साए में भी इस्लाम के सहीह होने का हुक्म देगा हालांकि वोह जानता है कि तलवार न तो उस की निय्यत को ज़ाहिर करती है और न ही उस के दिल से ज़हालत व तरद्दुद का पर्दा हटाती है। अलबत्ता वोह तलवार वाले को इशारा देता है क्योंकि तलवार उस की गर्दन की तरफ़ और हाथ उस के माल की तरफ़ बढ़े होते हैं और ज़बान से येह कलिमा कह देना उस की गर्दन और माल को बचा लेता है जब तक उस की गर्दन और माल रहते हैं और येह सिर्फ़ दुन्या में है। इसी लिये हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : मुझे हुक्म दिया गया है कि लोगों से उस वक़्त तक क़िताल करूं जब तक वोह **لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ** न कहें। जब वोह कलिमा कह लेंगे तो मुझ से अपने खून और अम्वाल बचा लेंगे।⁽²⁾ लिहाज़ा आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इस का अषर खून और माल में रखा जब कि आख़िरत में अमवाल नहीं बल्कि दिलों के अनवारो अस्सार और इख़लास नफ़अ देंगे और इन चीज़ो का तअल्लुक़ फ़िक़ह से नहीं। अगर फ़कीह इस में ग़ौरो फ़िक़र करेगा तो ऐसा होगा जैसे वोह इल्मे कलाम और तिब्ब में ग़ौरो ख़ौज़ करता है और अपने फ़न से निकल जाएगा।

नमाज़ के मुआमले में भी फ़कीह सहीह होने का हुक्म देगा जब तक नमाज़ पढ़ने वाला उसे ज़ाहिरी शराइत के साथ आ'माल की सूरत में अदा करेगा अगर्चे तकबीरे तहरीमा के इलावा अज़ अव्वल ता आख़िर पूरी नमाज़ में ग़ाफ़िल रहे और बाज़ार के मुआमलात में ग़ौरो फ़िक़र करता रहे। हालांकि आख़िरत में ऐसी नमाज़ का कोई फ़ाइदा नहीं होगा जैसा कि इस्लाम में सिर्फ़ ज़बानी कौल नफ़अ नहीं देता। अलबत्ता फ़कीह सहीह होने का ही हुक्म देगा या'नी जो अमल उस ने किया उस से हुक्म पर अमल हो गया और उस से क़त्ल और ता'ज़ीर का हुक्म साक़ित हो जाएगा। रहा खुशूअ व खुजूअ का मुआमला तो येह उख़रवी अमल है। ज़ाहिरी अमल का फ़ाइदा इसी के साथ होता है, फ़कीह को इस से ग़रज़ नहीं होती और अगर वोह इस के दरपे होगा तो अपने फ़न से निकलने वाला कहलाएगा।

यूँही ज़कात के मुआमले में फ़कीह येह देखेगा कि उस शख़्स से हाकिम का मुतालबा कैसे ख़त्म होगा यहां तक कि अगर किसी ने ज़कात अदा न की और हाकिम ने ज़बरदस्ती ज़कात वसूल कर ली तो फ़कीह उसे ज़कात से बरियुज़्जिम्मा होने का हुक्म देगा।

①..... السنن الكبرى للنسائي، كتاب السير، باب قول المشرک لا اله الا الله، الحديث: ٨٥٩٣، ج ٥، ص ١٤٦ -

صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب تحريم قتل الكافر بعد قوله لا اله الا الله، الحديث: ٩٦، ص ٦٣ -

②..... سنن النسائي، كتاب تحريم الدم، الحديث: ٣٩٤٤، ص ٢٥٠ -

तक्वा के मशतिब :

और जहां तक हलाल व हराम की बात है तो हराम से बच कर तक्वा इख्तियार करना दीन से है लेकिन इस वरअ व तक्वा के 4 दर्जे हैं :

﴿1﴾.....जहिरी हराम से बचना : यह वोह तक्वा है जो अदालत व शहादत में शर्त है इसे तर्क करने के सबब इन्सान कज़ा व शहादत और विलायत की अहलियत से निकल जाता है ।

﴿2﴾.....सालेहीन का तक्वा : यह उन शुबहात से बचने का नाम है जिन में एहतिमालात होते हैं । जैसा कि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो तुम्हें शक में डाले उसे छोड़ कर जो शक में न डाले उसे इख्तियार करो ।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है : “गुनाह दिलों में खटकता है ।”⁽²⁾

﴿3﴾.....परहेज़गारों का तक्वा : यह ख़ालिस हलाल को तर्क कर देने का नाम है जिस के बारे में ख़ौफ़ हो कि वोह हराम की तरफ़ ले जाएगा । जैसा कि हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “आदमी उस वक़्त तक परहेज़गारों में शामिल नहीं हो सकता जब तक उस चीज़ को न छोड़ दे जिस में कोई हरज नहीं इस ख़ौफ़ से कि कहीं उस में मुब्तला न हो जाए जिस में हरज है ।”⁽³⁾

इस की मिषाल : लोगों के अहवाल के बारे में इस लिये गुफ़्तगू करने से गुरैज़ करे कि कहीं इस की वजह से ग़ीबत में न पड़ जाए और ख़्वाहिशात के मुताबिक़ खाने से इस ख़ौफ़ से बाज़ रहे कि कहीं तबीअत में तकब्बुर व नशात न आ जाए और वोह ममनूअत में न जा पड़े ।

﴿4﴾.....सिद्दीकीन का तक्वा : यह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से कनारा कश हो जाने का नाम है इस ख़ौफ़ से कि कहीं ज़िन्दगी का कोई लम्हा ऐसा न गुज़रे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब में इज़ाफ़े का फ़ाइदा न दे । अगर्चे वोह जानता है कि येह उसे हराम की तरफ़ नहीं ले जाएगा ।

①.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، الحديث: ۲۵۲۶، ج ۲، ص ۲۳۲۔

②.....المعجم الكبير، الحديث: ۸۷۴۸، ج ۹، ص ۱۴۹۔

شعب الايمان للبيهقي، باب في تحريم الفروج، الحديث: ۵۴۳۴، ج ۲، ص ۳۶۷۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب الورع والتقوى، الحديث: ۴۲۱۵، ج ۲، ص ۴۷۵۔

पहले दर्जे के इलावा बक़िया तीनों फ़कीह की नज़रो फ़िक़्र से ख़ारिज होते हैं। पहला दर्जा वोह है जो शहादत व क़ज़ा का तक्वा है जो अदालत और इस के क़ियाम में ऐब है। येह आख़िरत में गुनाह होने के मनाफ़ी नहीं।

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना वाबसा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “अपने दिल से फ़तवा त़लब करो अगर्चे लोग तुम्हें (कुछ) फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें (कुछ) फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें (कुछ) फ़तवा दें।”⁽¹⁾

और फ़कीह ख़तराते क़ल्ब और इन पर अमल की कैफ़ियत के बारे में गुफ़्तगू नहीं करता बल्कि फ़क़त उस चीज़ के बारे में कलाम करता है जो अदालत में ऐब हो। मुख़्तसर येह कि फ़कीह की नज़र दुन्या के मुआमलात से वाबस्ता होती है जिस से राहे आख़िरत बेहतर हो और अगर वोह दिल की सिफ़ात और अहकामे आख़िरत में कुछ कलाम करे तो येह ज़िम्नन उस के कलाम में दाख़िल होगा जिस तरह उस की गुफ़्तगू में त़िब्ब, हिसाब, नुजूम और इल्मे कलाम दाख़िल हो जाते हैं और जिस तरह नहूव शे’र में हिक़मत दाख़िल हो जाती है।

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान शौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : इल्मे हदीष⁽²⁾ की त़लब ज़ादे आख़िरत से नहीं।”⁽³⁾

और येह हो भी कैसे सकता है जब कि तमाम उ-लमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि फ़ज़ीलत उसी इल्म की है जिस पर अमल किया जाए तो फिर क्यूं कर येह गुमान किया जाता है कि वोह ज़िहार, लिआन, सलम, इजारा, और सर्फ़ का इल्म है और जिस ने इन उमूर को इस निय्यत से सीखा कि इन के ज़रीए **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का कुर्ब हासिल कर लेगा तो वोह पागल है। इबादात में अमल का तअल्लुक़ तो सिर्फ़ दिल और आ’ज़ा से ही है और फ़ज़ीलत भी इन्ही आ’माल की है।

①.....المستند للإمام أحمد بن حنبل، حديث وابصة بن معبد، الحديث: ١٨٠٢٨، ج ٢، ص ٢٩٣ -

②...क्यूंकि ऐसे शख्स के दिल पर अस्नाद की महबबत और कषरते रिवायत ग़ालिब आ जाती है हत्ता कि वोह

जईफ़ और ग़ैर मुस्तनद रावियों से भी रिवायत करता है। (اتحاف السادة المتقين، كتاب العلم، الباب الثاني، ج ١، ص ٢٥١)

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى الثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ١، ص ٢٣٣ -

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम येह कहो कि फ़िक्ह और तिब्ब को बराबर क्यूं कर दिया जब कि तिब्ब का तअल्लुक भी दुन्या से है और इस से आदमी के बदन की तन्दुरुस्ती है और बदन की तन्दुरुस्ती से भी दीन की बेहतरी का तअल्लुक है और येह बराबरी मुसलमानों के इजमाअ के खिलाफ़ है ? तो इस का जवाब येह है कि इन में बराबरी लाज़िम नहीं आती बल्कि इन के दरमियान फ़र्क है ।

फ़िक्ह की तिब्ब पर फ़ज़ीलत :

फ़िक्ह तीन वजह से तिब्ब से अफ़ज़ल है :

﴿1﴾.....फ़िक्ह इल्मे शरई है क्यूंकि येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से हासिल होता है जब कि तिब्ब इल्मे शरई नहीं ।

﴿2﴾.....राहे आख़िरत के सालिकीन में से कोई भी इल्मे फ़िक्ह से बे नियाज़ नहीं हो सकता न मरीज़ और न ही तन्दुरुस्त जब कि इल्मे तिब्ब की हाज़त सिर्फ़ बीमारों को होती है और वोह बहुत थोड़े होते हैं ।

﴿3﴾.....इल्मे फ़िक्ह इल्मे तरीके आख़िरत के मुशाबेह है क्यूंकि इस में आ'ज़ा से सादिर होने वाले आ'माल में ग़ौरो फ़िक्क किया जाता है और आ'ज़ा से सादिर होने वाले आ'माल की बुन्याद और मक्सद सिफ़ाते क़ल्ब हैं । लिहाज़ा उम्दा आ'माल वोह हैं जो आख़िरत में नजात दिलाने वाली अच्छी सिफ़ात से सादिर हों और बुरे वोह जो बुरी सिफ़ात से सादिर हों और येह बात मख़फ़ी नहीं है कि आ'ज़ा का तअल्लुक दिल के साथ होता है । बहर हाल तन्दुरुस्ती और बीमारी का मन्शा तबीअत का निखार और ख़ल्त-मल्त हो जाना है और येह बदन के औसाफ़ हैं न कि दिल के । लिहाज़ा जब फ़िक्ह की निस्बत तिब्ब की तरफ़ की जाए तो फ़िक्ह की फ़ज़ीलत इयां होती है और जब इल्मे तरीके आख़िरत की निस्बत फ़िक्ह की तरफ़ की जाए तो इल्मे तरीके आख़िरत की फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो जाती ।

अब अगर तुम कहो कि इल्मे तरीके आख़िरत की ऐसी तफ़्सील बयान कर दीजिये कि इस के उन्वानात की तरफ़ इशारा हो जाए अगर्चे इस की मुकम्मल तफ़्सील बयान नहीं की जा सकती ।

तो जान लो कि इल्मे तरीके आख़िरत की दो किस्में हैं :

(1).....इल्मे मुकाशफ़ा (2).....इल्मे मुआमला

तीसरी फ़स्ल : इल्मे बरीके आखिरत की अक़साम

पहली किस्म : इल्मे मुकाशफ़ा है और येह इल्मे बातिन है जो तमाम उलूम की इन्तिहा है। चुनान्चे, एक अरिफ़ बिल्लाह का कौल है कि “जिसे इस इल्म से हिस्सा नहीं मिला मुझे उस के बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ है और इस का कम से कम हिस्सा येह है कि इसे सच्चा जाने और इस के अहल को तस्लीम करे।”⁽¹⁾

एक और अरिफ़ का कौल है कि “जिस में दो (बुरी) ख़स्लतें बिदअत और तकब्बुर होंगी उसे इस इल्म से कुछ हासिल नहीं होगा।”⁽²⁾

मन्कूल है कि जो दुन्या से महब्बत या ख़्वाहिश पर इसरार करेगा वोह इस इल्म की हकीकत नहीं पा सकेगा⁽³⁾ अगर्चे बाकी तमाम उलूम में महारत हासिल कर ले और इस का इन्कार करने वाले की कम से कम सज़ा येह होगी कि वोह इस में से कुछ न चख पाएगा। इसी पर येह शे'र कहा गया है :

وَأَرْضٍ لِّمَنْ غَابَ عَنْكَ غَيْبَتُهُ فَذَاكَ ذَنْبٌ عِقَابُهُ فِيهِ

तर्जमा : जो तुझ से पोशीदा है उस के पोशीदा रहने पर राज़ी रह तो येह एक ऐसा गुनाह है जिस की सज़ा उसी में है।

इल्मे मुकाशफ़ा का नूर जब दिल में ज़ाहिर होता है तो !

इल्मे मुकाशफ़ा सिद्दीकीन और मुक़र्रबीन का इल्म है जो उस नूर का नाम है जो दिल में उस वक़्त ज़ाहिर होता है जब उसे तमाम बुरी सिफ़ात से पाक व साफ़ कर लिया जाए और इस से कपीर उमूर ज़ाहिर होते हैं कि वोह पहले उन के नाम सुना करता था फिर उन के लिये ग़ैर वाजेह और मुख़्तसर मअानी का तसव्वुर काइम करता था और (इस नूर के दिल में ज़ाहिर होने के बा'द) उसे **अल्लाह** سبحانه تعالیٰ इस की बाकी रहने वाली कामिल सिफ़ात, इस के अफ़अल की मा'रिफ़त हासिल होती और दुन्या व आखिरत को पैदा करने में उस की हिक्मत मा'लूम होती है। नीज़ येह भी मा'लूम होता है कि ख़ालिके काइनात ने आखिरत को दुन्या पर क्यूं मुरत्तब किया है। नबुव्वत और नबी, वहुय और शैतान, लफ़्जे मलाइका और शयातीन के मअानी मा'लूम होते हैं। शयातीन इन्सानों से किस तरह दुश्मनी करते हैं। फ़िरिश्ते नबियों के सामने कैसे ज़ाहिर होते हैं। अम्बिया पर वहुय कैसे नाज़िल होती है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٩٢۔

②.....المرجع السابق۔ ③.....المرجع السابق۔

आस्मानों और ज़मीन के अज़ाब, दिल की मा'रिफ़त, फ़िरिश्तों के लश्कर और शैतानों के गुरौह दिल के मुआमले में कैसे झगड़ते हैं। फ़िरिश्ते के इल्हाम और शैतान के वस्वसे में क्या फ़र्क है। आख़िरत, जन्नत व दोज़ख़, अज़ाबे क़ब्र, पुल सिरात, मीज़ान और हिसाब की मा'रिफ़त हासिल होती है और **अल्लाह** रब्बुल अलमीन के इन इरशादात का मफ़हूम वाज़ेह हो जाता है। (चुनान्वे, इरशादे बारी तअ़ाला है :)

اقْرَأْ كِتَابَكَ ۖ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝١٤
(प १५, नबी اسرائیل १३)

इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝٢٤
(प २१, العنक़ुबुत: २३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फ़रमाया जाएगा कि अपना नामा (आ'माल) पढ़ आज तू खुद ही अपना हिसाब करने को बहुत है।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते।

और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात, दीदारे इलाही, उस का कुर्ब पाने और उस के ज़वारे रहमत में आने, मुक़र्रब फ़िरिश्तों की रफ़ाक़त और अम्बिया व मलाइका से मुलाक़ात की सआदत मिलने और जन्नतियों के दर्जात में तफ़ावत का मफ़हूम वाज़ेह हो जाता है यहां तक कि बा'ज जन्नती बा'ज को ऐसे देखेंगे जैसे आस्मान के बीच में चमकता सितारा दिखाई देता है इन के इलावा और बे शुमार मा'लूमात जिन की बड़ी तफ़्सील है क्यूंकि इन उमूर के उसूल की तस्दीक़ के बा'द इन्हें समझने में लोगों की हालतें मुख़लिफ़ हैं। चुनान्वे, बा'ज का ख़याल है कि “येह तमाम मिषालें हैं और जो इन्आमात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने नेक बन्दों के लिये तय्यार फ़रमाए हैं उन्हें न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी इन्सान के दिल पर इन का ख़याल गुज़रा। मख़्लूक के लिये सिवाए सिफ़ात और नामों के जन्नत में से कुछ नहीं है।” बा'ज का ए'तिकाद है कि “इन में से कुछ तो मिषालें हैं और कुछ अल्फ़ज़ से समझे जाने वाले हक़ाइक़ के मुवाफ़िक् हैं।” बा'ज का येह गुमान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त की हद येह है कि “उस की मा'रिफ़त से अज़िज़ होने का इक़रार कर लिया जाए।” बा'ज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त में बड़ी बड़ी बातों का दा'वा करते हैं। बा'ज ने कहा कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त की इन्तिहा वोह है जहां तमाम अ़वाम के ए'तिकाद की इन्तिहा हो जाती है और वोह येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मौजूद है। अ़लिम है। क़ादिर है। सुनता, देखता और कलाम फ़रमाता है।”^(१)

इल्मे मुक्काशफ़ा से मक्शूद :

इल्मे मुक्काशफ़ा से हमारी मुराद यह है कि पर्दा उठ जाए और इन उमूर में हक़ खुल कर ऐसा वाज़ेह हो जाए गोया आंखों से देख रहे हैं और किसी शक व शुबा की गुन्जाइश बाकी न रहे और अगर आईनए दिल दुन्या की गन्दगियों के हुजूम से नापाक और जंग आलूद न हो तो येह चीज़ इन्सान के जोहर (या'नी ज़ात) में मुमकिन है और इल्मे तरीक़े आख़िरत से हमारी मुराद येही है कि ऐसा तरीक़ा जाना जाए जिस से दिल का आईना इन तमाम ख़बाषतों से पाक व साफ़ हो कर चमक उठे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात और अफ़़ाल की मा'रिफ़त में हिजाब हैं।

आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ :

आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ येह है कि बन्दा ख़्वाहिशात से रुक जाए और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के तमाम अहवाल में उन की पैरवी करे। जिस क़दर दिल की सफ़ाई होती जाएगी और इस में हक़ का हिस्सा आता जाएगा उसी क़दर इस में हक़ाइक़ चमक उठेंगे और येह उस रियाज़त के बिग़ैर नहीं हो सकता जिस की तफ़्सील अपने मक़ाम पर आएगी। इल्मो ता'लीम भी इस का ज़रीआ हैं। येह उलूम किताबों में नहीं लिखे जाते और जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन उलूम में से कुछ इन्आम फ़रमाया हो वोह उन्ही लोगों को बयान करता है जो इस के अहल होते हैं और वोह गुफ़्तगू के ज़रीए और राज़दार बन कर इस में शरीक होता है और येही वोह मख़्ज़ी इल्म है जो सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल अलमीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस फ़रमान से मुराद है कि “बेशक कुछ उलूम छुपे ख़ज़ानों की तरह हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त रखने वालों के सिवा कोई नहीं जानता और जब वोह इन उलूम की बातें करते हैं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से धोके में रहने वाले ही इस का इन्कार करते हैं। लिहाज़ा तुम ऐसे किसी अ़ालिम को हक़ीर न जानो जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन उलूम में से कुछ अ़ता फ़रमाया हो क्यूंकि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह इल्म अ़ता फ़रमाता है उसे हक़ीर नहीं रहने देता।”⁽¹⁾

बुरे अफ़़ाल की बुन्यादेँ और नेक अ़ामाल का सर चश्मा :

(इल्मे तरीक़े आख़िरत की) दूसरी क़िस्म : इल्मे मुआमला है और येह दिल के अहवाल का इल्म है। इन अहवाल में जो अच्छे हैं : जैसे सब्र, शुक्र, ख़ौफ़, रजा, रिज़ा, जोहद, तक्वा,

कनाअत, सखावत, हर हाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एहसानात को पहचानना, एहसान, हुस्ने ज़न, हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने मुआशरत, सच्चाई, इख़्लास, उन अहवाल की हकीक़तों की मा'रिफ़त, ता'रीफ़ात और जिन अस्बाब से येह हासिल होते हैं, इन का नतीजा, अलामत, इन में जो कमज़ोर हो उस का इलाज कि जिस से वोह क़वी हो जाए और जो ख़त्म हो चुके वोह हासिल हो जाएं इन तमाम बातों की मा'रिफ़त इल्मे आख़िरत में से है। उन अहवाल में जो बुरे हैं : गुर्बत का डर, जो मुक़द्दर में है उस पर ना खुश होना, कीना, बुर्ज़, हसद, धोका, बुलन्दी की ख़्वाहिश, ता'रीफ़ चाहना, दुन्या से लुत्फ़ अन्दोज़ होने के लिये ज़ियादा अर्सा ज़िन्दा रहने की ख़्वाहिश, तकब्बुर, रिया, गुस्सा, नफ़रत, अदावत, दुश्मनी, लालच, बुख़्ल, ख़्वाहिश, इतराना, इन्तिहाई शरीर होना, सुस्त होना, मालदारों की ता'ज़ीम करना, गरीबों को हकीर जानना, फ़ख़्र करना, खुद पसन्दी, आगे बढ़ने की ख़्वाहिश, हुस्नो जमाल में मुक़ाबला करना, इनाद व तकब्बुर की वजह से हक़ को न मानना, फुज़ूलियात में ग़ौरो ख़ौज़ करना, ज़ियादा बातें पसन्द करना, शैख़ी मारना, लोगों के लिये ज़ीनत इख़्तियार करना, चापलूसी करना, गुरूर करना, लोगों के ऐबों के पीछे पड़ना और अपने एबों को भूल जाना, दिल से रंजो ग़म मिट जाना और ख़ौफ़े खुदा निकल जाना, नफ़्स को जब ज़िल्लत पहुंचे तो उस के लिये शिद्दत से मुक़ाबला करना और हक़ की मदद में कमज़ोर रहना, बज़ाहिर दोस्त बना कर दिल में दुश्मनी रखना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से इस बारे में बे ख़ौफ़ रहना कि जो उस ने अता फ़रमाया वोह सल्ब न कर ले, इबादत में सुस्ती करना, फ़रैब, ख़ियानत, धोके बाज़ी और लम्बी उम्मीदें, दिल की सख़्ती, भूँडापन, दुन्या मिलने पर खुश होना और छिन जाने पर अफ़सोस करना, लोगों के साथ रहने से मानूस होना और इन के जुदा होने से वहशत व घबराहट महसूस करना, बद खुल्क़ व तुन्द मिज़ाज होना, गुस्सा, जल्द बाज़ी, बे शर्मी व बे हयाई और संगदिली व बे रहूमी। येह और इस तरह की दीगर मज़मूम क़लबी सिफ़ात बे हयाइयों और हराम व ममनूअ़ अफ़अाल की बुन्यादे हैं और इन के मुक़ाबिल जो अच्छे अख़्लाक़ हैं वोह ताअतों और नेकियों का सरचश्मा हैं। इन उमूर की ता'रीफ़ात, हकीक़तों, अस्बाब, नताइज और इलाज का इल्म इल्मे आख़िरत है और उ-लमाए आख़िरत के फ़तवे के मुताबिक़ फ़र्जे ऐन है। इन से ए'राज़ करने वाला आख़िरत में क़हरे इलाही से हलाक़ होगा जैसा कि उ-लमाए दुन्या के फ़तवे के मुताबिक़ ज़ाहिरी आ'माल से ए'राज़ करने वाला दुन्यवी बादशाहों की तलवारों से हलाक़ होता है।

फ़र्जे ऐन में फ़ुक्हा की नज़र दुन्यवी मफ़ाद की निस्बत से होती है जब कि येह इल्मे आख़िरत की बेहतरी के लिये है। अगर किसी फ़कीह से इन सिफ़ात में से किसी का मा'ना पूछा जाए हत्ता कि अगर मिषाल के तौर पर इख़्लास या तवक्कुल या रियाकारी से बचने की सूरत ही के मुतअल्लिक पूछ लिया जाए तो वोह बताने में ज़रूर तवक्कुफ़ करेगा हालांकि येह उस पर फ़र्जे ऐन है और इस से ग़फ़लत बरतने में आख़िरत में उस की हलाकत व बरबादी है। अगर इस से लिआन, जिहार, घोड़ दौड़ और तीर अन्दाज़ी के बारे में पूछा जाए तो वोह इस की बारीक व दक्कीक़ कई जुज़इय्यात बयान कर दे कि कई ज़माने गुज़र जाएं मगर इन की ज़रूरत न पड़े और अगर ज़रूरत पड़े भी तो शहर इन के जानने वालों से ख़ाली न होगा और वोह इसे मशक्क़त से बचा लेगा तो येह इन जुज़इय्यात में रात दिन मशक्क़त उठाता रहेगा और इन्हें याद करने और पढ़ने में मशगूल हो कर उस से ग़ाफ़िल हो जाएगा जो दीन के मुआमले में उस के लिये अहम है। अगर इस बारे में इस से रुजूअ किया जाए तो कहेगा कि मैं इस में इस लिये मशगूल हुवा हूं कि येह इल्मे दीन और फ़र्जे किफ़ाया है। इस तरह येह खुद को और दूसरों को इस के सीखने में धोका देता है। हालांकि अक़िल जानता है कि अगर इस से उस का मक़सद फ़र्जे किफ़ाया में अपना हक़ अदा करना होता तो वोह ज़रूर फ़र्जे ऐन को इस पर मुक़दम करता। बल्कि वोह तो कई फ़र्जे किफ़ाया पर इसे मुक़दम किये हुए होता है कि कितने ही शहर ऐसे हैं कि जिन में जिम्मी कुफ़फ़ार के सिवा कोई मुस्लिम तबीब नहीं हालांकि अतिब्बा के मुतअल्लिक जो फ़िक़ही अहक़ाम हैं इन में कुफ़फ़ार की गवाही क़बूल नहीं फिर भी हम देखते हैं कि कोई भी इसे सीखने में मशगूल नहीं होता और इल्मे फ़िक़ह बिलख़ुसूस इख़ितालाफ़ी और निज़ाई मसाइल में बड़ी दिलचस्पी लेते हैं हालांकि शहर ऐसे फ़ुक्हा से भरे पड़े हैं जो फ़तवा देने और नौपैद मसाइल का हल बताने में मसरूफ़ हैं। काश ! मैं जान लूं कि उ-लमाए दीन इस फ़र्जे किफ़ाया को सीखने की कैसे इजाज़त देते हैं जिसे एक गुरौह काइम रखे हुए है और उसे छोड़ने की कैसे रुख़्सत देते हैं जिसे काइम करने वाला कोई एक भी नहीं ? इस का सबब इस के सिवा कोई नहीं कि तिब्ब के ज़रीए अवकाफ़ व वसिय्यतों का मुतवल्ली होना, यतीमों के माल का मुहाफ़िज़ बनना, काज़ी व हाकिम बनना और इस के ज़रीए अपने हम ज़माना लोगों से आगे बढ़ना और दुश्मनों पर ग़लबा पाना मुयस्सर नहीं।

हाए अफ़सोस ! उ-लमाए सू (या'नी बुरे उ-लमा) के धोके की वजह से इल्मे दीन नापैद हो गया। हम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद त़लब करते हैं और उसी से इल्तिजा करते हैं कि हमें उस धोके से पनाह में रखे जिस में रहमान عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और शैतान की खुशी है।

मुत्तकीन उ-लमाए ज़ाहिरे की अज़िजी :

उ-लमाए ज़ाहिर में से अहले तक्वा उ-लमाए बातिन और दिल वालों की फ़ज़ीलत के मो'तरिफ़ थे। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي शैबान राई के सामने इस तरह बैठते जिस तरह तालिबे इल्म मक्तब में बैठता है और पूछते कि “इस इस मुआमले का हुक्म क्या है?” किसी ने आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से अर्ज की : “हुज़ूर ! आप जैसा अज़ीम शख़्स इस बदवी से पूछता है?” फ़रमाया : “बेशक इसे उस चीज़ की तौफ़ीक़ मिली है जिस से हम गाफ़िल हैं।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل और हज़रते सय्यिदुना यहया बिन मईन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي हज़रते सय्यिदुना मा'रुफ़ करख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُسِين के पास आते जाते और उन से मसाइल पूछते थे हालांकि वोह इल्मे ज़ाहिर में इन दोनों के हम मर्तबा नहीं थे और ऐसा क्यूंकर न हो कि जब आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में अर्ज की गई कि अगर हमें कोई ऐसा मुआमला दरपेश हो जिस का हुक्म किताब व सुन्नत में न पाएं तो क्या करें?” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “नेक लोगों से पूछ लिया करो और उन से मश्वरा किया करो।”⁽²⁾

इसी वजह से कहा गया है कि उ-लमाए ज़ाहिर ज़मीन और मुल्क की ज़ीनत हैं जब कि उ-लमाए बातिन आस्मानों और मलकूत की ज़ीनत हैं।⁽³⁾

इल्मे हदीष के बा'द इल्मे तशव्वुफ़ हासिल करो :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : एक दिन मुझ से मेरे शैख़ हज़रते सय्यिदुना सीरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने इस्तिफ़सार फ़रमाया कि “जब तुम मेरे पास से जाते हो तो किस की मजलिस इख़्तियार करते हो?” मैं ने अर्ज की : “मुहासिबी की।” फ़रमाया : “ठीक है, उन से इल्मो अदब सीखना और वोह इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन का जो रद करें उसे छोड़ देना। जब मैं लौटने लगा तो इन्हें फ़रमाते सुना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤٠-

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب اجتهد الرأى على الاصول، الحديث: ٩١٦، ص ٣٢١-

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤١-

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤٠-

हदीष वाला सूफी बनाए और ऐसा सूफी न बनाए जो (बा'द में इल्म) हदीष हासिल करे।⁽¹⁾

इस में इस बात की तरफ इशारा है कि जो हदीष और इल्म हासिल करने के बा'द सूफी बना वोह कामयाब है और जो इल्म हासिल करने से पहले ही सूफी बन बैठा उस ने अपने आप को खतरे में डाल दिया।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि इल्मे कलाम और फ़लसफ़ा को उलूम की अक्साम में क्यों बयान नहीं किया और इस बात की वज़ाहत क्यों नहीं की, कि येह दोनों अच्छे हैं या बुरे ? तो इस का जवाब येह है कि इल्मे कलाम जिन मुफ़ीद दलाइल पर मुश्तमिल होता है उन का हासिल कुरआने पाक और अहदीषे मुबारका में मौजूद होता है और जो इन दोनों से ख़ारिज है वोह या तो बुरा झगड़ा है और वोह बिदअतें हैं जिन्हें अज़ क़रीब बयान किया जाएगा या मुख़्तलिफ़ फ़िर्की के इख़िलाफ़ात से मुतअल्लिक़ लड़ाई झगड़े की बातें हैं और इन मक़ालात को नक़ल करना (बिला वज़ह) किताब को तूल देना है कि येह अक़षर उन लगवियात और बेहूदा बातों पर मुश्तमिल होते हैं जिन्हें तबीअतें हक़ीर समझती और कान इन से बेज़ार हैं। बा'ज़ इन में से वोह हैं कि जिन में ग़ौरो ख़ौज़ करने का दीन से कोई वासिता नहीं और न ही वोह सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ के ज़माने में थीं नीज़ इन में ग़ौरो ख़ौज़ करना मुकम्मल तौर पर बिदअत था लेकिन अब इन का हुक्म बदल चुका है क्योंकि कुरआन व हदीष के तकाज़ो से फैरने वाली बिदअतें पैदा हो चुकी हैं और एक गु़रौह ऐसा ज़ाहिर हुवा है कि जिस ने बिदअत में झूट घड़ लिये और इस में कलाम मुरत्तब कर लिये जिस की वज़ह से इस ममनूअ काम की ज़रूरत की बिना पर इजाज़त दी गई बल्कि येह फ़र्जे किफ़ाया है लेकिन इतनी मिक्दार में कि जब बिदअती बिदअत की तरफ़ माइल करे तो उस का मुक़ाबला किया जा सके और इस की एक ख़ास हद है जिसे اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ हम आयन्दा बाब में बयान करेंगे।

फ़लसफ़ा और इस की अक्साम :

जहां तक फ़लसफ़े का मुआमला है तो येह मुस्तक़िल इल्म नहीं बल्कि इस के चार हिस्से हैं :

❦.....हिन्दसा और हिसाब : येह दोनों जाइज़ हैं जैसा कि गुज़र चुका है, इन से सिर्फ़ उसी

❶.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤١-

تاريخ دمشق لابن عساکر، علی بن ابراهیم بن یوسف: ٢٨٠٣، ج ٢، ص ٢٥٢-

को रोका जाएगा जिस के बारे में डर हो कि वोह इन से बुरे उलूम की तरफ चला जाएगा क्योंकि इन में महारत रखने वाले अक़्बर लोग इन से निकल कर बिदअतों की तरफ चले गए, इस लिये जो कमज़ोर (ईमान वाला) है उसे हिन्दसा और हिसाब से रोका जाएगा इस लिये नहीं कि येह उलूम बुरे हैं बल्कि जिस तरह बच्चे को नहर में गिर जाने के ख़ौफ़ से नहर के कनारे खड़ा होने से रोका जाता है और नौ मुस्लिम को कुफ़ार की सोहबत से महज़ डर की वजह से रोका जाता है और जो मज़बूत (ईमान वाला) है वोह खुद ही इन से मिलना अच्छा नहीं समझता ।

﴿2﴾.....**मन्तिक** : इस में दलील व ता'रीफ़ और इन की शराइत से बहूष की जाती है और येह दोनों बातें इल्मे कलाम में दाख़िल हैं ।

﴿3﴾.....**इलाहियात** : इस में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात के मुतअल्लिक़ बहूष की जाती है और येह भी इल्मे कलाम में दाख़िल है । फ़लासफ़ा ने इस के लिये इल्म की अलाहिदा किस्म नहीं बनाई बल्कि इन के मज़हब अलग अलग हैं इन में से कुछ तो अहले कुफ़र हैं और कुछ बिदअती । जिस तरह ए'तिज़ाल एक मुस्तक़िल इल्म नहीं बल्कि मो'तज़लीन व मुतकल्लिमीन ही का एक गुरौह है और बहूष व नज़र वालों ने अलग बातिल मज़ाहिब बना लिये हैं इसी तरह फ़लासफ़ा का मुआमला है ।

﴿4﴾.....**तबइय्यात** : इस की बा'ज़ किस्में शरीअत और दीने हक़ के ख़िलाफ़ हैं जिस की वजह से वोह इल्म नहीं बल्कि जहालत है । लिहाज़ा उन्हें उलूम की अक्साम में बयान नहीं किया जा सकता । तबइय्यात की बा'ज़ अक्साम में जिस्मों की सिफ़ात, इन के ख़वास और इन के तग़य्युर व तबदुल की कैफ़ियत के बारे में बहूष होती है और येह ऐसी है जैसे अतिब्बा ग़ौरो फ़िक़र करते हैं मगर येह की तबीब ख़ास बदने इन्सानि को बीमारी व सिहहत की जहत से देखता है जब कि तबइय्यात वाले तमाम अजसाम को इन के तग़य्युर व तबदुल के ए'तिबार से देखते हैं । लेकिन इल्मे तिब्ब तबइय्यात से अफ़ज़ल है क्योंकि इस की ज़रूरत पड़ती है जब कि तबइय्यात के उलूम की ज़रूरत नहीं होती ।

इल्मे कलाम की हैषियत :

इस तमाम गुफ़्तगू से पता चला कि इल्मे कलाम उन पेशों में से है जो फ़र्जे किफ़ाया हैं ताकि अ़वाम के दिलों को बिदअतियों के तख़य्युलात से महफूज़ रखा जा सके और येह इल्म बिदअतों के जुहूर की वजह से ज़ाहिर हुवा जैसा कि राहे हज़ में अहले अ़रब के जुल्म व ज़ियादती

और लूट मार की वजह से मुहाफ़िज़ को किराए पर लेने की ज़रूरत पड़ी और अगर अरब जुल्म व ज़ियादती छोड़ दें तो राहे हज़ में मुहाफ़िज़ को किराए पर लेना शर्त न रहेगा। इसी तरह अगर बिदअती अपनी बकवास तर्क कर दे तो इस से ज़ियादा इल्म की ज़रूरत न रहेगी जितना सहाबए किराम رَضَوْنَ اللّٰهَ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ के ज़माने में था। लिहाज़ा इल्मे कलाम वाले को जान लेना चाहिये कि इस इल्म के दीन होने की येही हद है और इस की हैषियत वोही है जो राहे हज़ में मुहाफ़िज़ की है तो जिस तरह मुहाफ़िज़ महज़ हिफ़ाज़त कर के हाजी नहीं बन जाएगा इसी तरह इल्मे कलाम वाला अगर सिर्फ़ मुनाज़िरे और लोगों का बचाव ही करता रहा, न राहे आखिरत तै किया और न ही दिल की हिफ़ाज़त व इस्लाह की तो हरगिज़ वोह अ़ालिमे दीन नहीं बन सकेगा। दीन में से उस के पास सिर्फ़ अक़ीदा ही है जो अ़ाम लोगों के पास भी है येह तो दिल और ज़बान के ज़ाहिरी आ'माल में से है। इस में और अ़ाम लोगों में फ़र्क सिर्फ़ येही है कि येह हिफ़ाज़त कर सकता और मुख़ालिफ़ से बहूषो मुबाहूषा कर सकता है और रहा मुआमला **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात और अफ़अल की मा'रिफ़त और उन तमाम बातों का जिन्हें हम ने इल्मे मुकाशफ़ा में बयान किया तो येह इल्मे कलाम से हासिल नहीं होतीं बल्कि येह इस में हिजाब और रूकावट का बाइष बन सकती हैं इन तक रसाई तो मुजाहदे के ज़रीए हो सकती है जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत के लिये पेश ख़ैमा करार दिया है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ صُبُلَنَا
وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾
(پ ۲۱، العنکبوت: ۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **اَللّٰهُ** नेकों के साथ है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि तुम ने मुतकल्लिम की ता'रीफ़ येह की, कि मुतकल्लिम वोह होता है जो अ़वाम के अक़ीदे को बिदअतियों के उलझाव से बचाता है जिस तरह मुहाफ़िज़ की ता'रीफ़ येह है कि वोह हुज्जाज की सफ़र व हज़र की ज़रूरियात को अरब की लूट मार से बचाता है और फ़कीह की ता'रीफ़ येह की, कि फ़कीह वोह होता है जो उस क़ानून का हाफ़िज़ होता है जिस के ज़रीए बादशाह लोगों से ज़ालिमों के जुल्म को रोकता है और येह दोनों मर्तबे इल्मे दीन के मर्तबे से कम हैं जब कि उम्मत के उ-लमा जो फ़ज़ीलत में मशहूर हैं वोह फुक़हा और मुतकल्लिमीन ही हैं और वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां लोगों में सब से अफ़ज़ल हैं फिर इन का मर्तबा इल्मे दीन

के मुक़ाबले में क्यूँकर कम हो सकता है? इस का जवाब येह है कि जो हक़ की पहचान बन्दों के ज़रीए करता है वोह गुमराही के जंगलों में भटकता है। इस लिये अगर तू राहे हक़ का मुसाफ़िर है तो हक़ को पहचान, अहले हक़ को भी पहचान जाएगा और अगर तू तकलीद व पैरवी पर क़नाअत करता और लोगों के दरमियान फ़ज़ीलत के मशहूर दर्जात को देखता है तो हज़रते सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم के बुलन्द मरातिब से बे ख़बर न रह। जिन लोगों (या'नी फुक़हा व मुतकल्लिमिन) का तुम ने ज़िक्र किया है वोह सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रते सहाबए किराम रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم का मक़ाम व मर्तबा सब से बढ़ कर है और दीन में कोई इन के मर्तबे को तो क्या इन की गर्दे राह को भी नहीं पा सकता।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अफ़ज़लियत का एक सबब :

सहाबए किराम رَضَوُا اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ को बुलन्द मक़ाम व मर्तबा इल्मे कलाम या इल्मे फ़िक़ह की वजह से नहीं बल्कि इल्मे आख़िरत और तरीके आख़िरत पर चलने की वजह से हासिल हुवा है। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तमाम लोगों पर न तो कषरते सोमो सलात या कषरते रिवायत की वजह से अफ़ज़ल हुए और न ही फ़तवा देने या इल्मे कलाम की वजह से बल्कि उस चीज़ की वजह से अफ़ज़ल हैं जो उन के सीने में रासिख़ थी जैसा कि खुद सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस बात की शहादत दी।⁽¹⁾

लिहाज़ा तुम्हें उस राज़ की तलाश व जुस्तजू में हरीस होना चाहिये क्यूँकि वोह उम्दा जौहर और छुपा हुवा मोती है और उस चीज़ को खुद से दूर कर दो जिसे अकषर लोग मुत्तफ़िका तौर पर कुछ ऐसे अस्बाब और वुजूहात की बिना पर अफ़ज़ल व अज़ीम समझते हैं जिन की लम्बी तफ़सील है। बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त हज़ारों सहाबए किराम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ थे जो तमाम के तमाम ज़ाते बारी तअ़ाला की मा'रिफ़त रखने वाले थे। इन में से कोई एक भी इल्मे कलाम का माहिर न था और न ही सिवाए दस से कुछ ज़ाइद सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के किसी ने अपने आप को फ़तवा देने के लिये मुक़र्रर कर रखा था यहां तक कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से जब कोई मस्अला पूछा जाता तो फ़रमाते : “फुलां हाकिम के पास जाओ जिस ने लोगों के मुआमलात का ज़िम्मा ले रखा है। येह बोझ उसी की गर्दन पर डालो।”⁽²⁾ इस में इस बात की तरफ़ इशारा है कि क़ज़ा या और अहक़ाम में फ़तवा देना उमूरे सल़्त्नत और उमूरे हाकिमिय्यत में से है।

①.....المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث: ٩٤٠، ص ٣٤٦، باختصار۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، باب ذكر فضل علم المعرفة، ج ١، ص ٢٢٨۔

इल्म के दस हिस्सों में से नव हिस्से उठ गए :

जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का विसाल हुवा तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “इल्म के दस हिस्सों में से नव हिस्से उठ गए।” किसी ने अर्ज की : “हुज़ूर ! येह आप क्या फ़रमा रहे हैं। हमारे दरमियान जलीलुल क़द्र सहाबा मौजूद हैं ?” तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं फ़तवा और अहक़ाम के इल्म की बात नहीं कर रहा बल्कि मेरी मुराद मा'रिफ़ते इलाही है।”⁽¹⁾

तुम्हारा क्या ख़याल है कि क्या इन्होंने ने इल्मे कलाम व जदल मुराद लिया था ? (नहीं) तो फिर तुम्हें क्या हुवा कि तुम उस इल्म को जानने के हरीस क्यूं नहीं बनते जिस के दस में से नव हिस्से विसाले उमर के साथ रुख़्सत हो गए और अमीरुल मोअमिनीन रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने तो इल्मे कलाम व जदल का दरवाज़ा बन्द कर दिया था और जब हज़रते ज़बीअ ने आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कुरआने पाक की दो आयतों में तआरुज़ के बारे में सुवाल किया तो आप ने उन्हें कोड़े से मारा और उन से कलाम करना बन्द कर दिया बल्कि लोगों को भी इस का हुक्म दिया।

बहर हाल तुम्हारा येह कहना कि उ-लमाए उम्मत में से मशहूर फ़क़हा और मुतकल्लिमीन हैं तो येह बात याद रखो कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में अफ़ज़ल होना और बात है और लोगों के दरमियान मशहूर होना और बात।

शौख़ैने करीमैन रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शोहरत व फ़ज़ीलत :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मशहूर तो ख़िलाफ़त की वजह से हुए लेकिन अफ़ज़ल उस राज़ की वजह से हुए जो इन के दिल में रासिख़ था और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की शोहरत तो हुक्मत की वजह से है मगर फ़ज़ीलत उस इल्म की वजह से है जिस के दस में से नव हिस्से इन की वफ़ात के साथ उठ गए। नीज़ हुक्मत और लोगों पर अद्ल व शफ़क़त करने से आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मक़सूद कुर्बे इलाही का हुसूल था और येह एक बातिनी मुआमला है जो आप के दिल में था। इस वस्फ़ के इलावा आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के बाकी अफ़आल इज़्ज़त व नाम और शोहरत चाहने वालों से भी सादिर हो सकते हैं।

शोहरत और फज़ीलत में फर्क :

शोहरत उस में होती है जो हलाकत व बरबादी का सबब होता है और फज़ीलत उस की वजह से होती है जो एक राज़ होता है जिस की किसी को ख़बर नहीं होती ।

फुक्कहा और मुतकल्लिमीन की अक़शाम :

फुक्कहा और मुतकल्लिमीन बादशाहों, काज़ियों और उ-लमा की मिष्ल हैं और इन की कई अक़शाम हैं । बा'ज का अपने इल्म व फ़तवे से मक़सूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व खुश्नूदी हासिल करना और हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत की हिफ़ाज़त करना होता है वोह न रियाकारी करते हैं और न ही शोहरत की ख़्वाहिश रखते हैं । इन्हीं से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ राज़ी होता है और येह बारगाहे इलाही में इस वजह से मक़बूल होते हैं कि अपने इल्म के मुताबिक़ अमल करते हैं और फ़तवा व दलील से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा खुश्नूदी चाहते हैं ।

अमल का दारोमदार निय्यत पर है :

हर इल्म अमल है क्यूंकि इल्म एक फ़ै'ल है जिसे हासिल किया जाता है लेकिन हर अमल इल्म नहीं । तबीब अगर रिज़ाए इलाही की ख़ातिर काम करे तो अपने इल्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल कर सकता है और इस पर उसे षवाब भी मिलेगा । बादशाह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक के दरमियान वासिता होता है वोह भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का पसन्दीदा बन्दा बन सकता और उस की बारगाह से अज़्रो षवाब हासिल कर सकता है इस वजह से नहीं कि वोह इल्मे दीन का ज़िम्मेदार है बल्कि इस वजह से कि वोह अपने इल्म के मुताबिक़ ऐसा अमल करे जिस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब मक़सूद हो ।

जिन आ'माल से कुर्बे इलाही हासिल होता है :

जिन आ'माल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल होता है वोह तीन किस्म के हैं :
 (1)....महज़ इल्म : और येह इल्मे मुकाशफ़ा है (2).....महज़ अमल : इस की मिषाल बादशाह का अद्ल व इन्साफ़ के साथ लोगों के मुआमलात का इन्तिज़ाम करना है । (3).....इल्मो अमल का मुक्कब : इस से मुराद इल्मे तरीक़े आख़िरत है क्यूंकि ऐसा शख्स अलिम भी होता है और अमिल भी । अब तुम अपने बारे में गौर कर लो कि तुम क़ियामत के दिन महज़ उ-लमा के गुरौह में शामिल होना चाहते हो या अमिलीन के गुरौह में या दोनों के । पस तुम इन में से हर एक के साथ अपना हिस्सा तक्सीम कर लो येह तुम्हारे लिये महज़ शोहरत के लिये पैरवी करने से ज़ियादा अहम है ।

जैसा कि किसी ने क्या खूब कहा है :

خُذْ مَا تَرَاهُ وَدَعْ شَيْئًا سَمِعْتَ بِهِ فِي طُلُعَةِ الشَّمْسِ مَا يُغْنِيكَ عَنْ رَحُلٍ

तर्जमा : जिसे तुम देखते हो उसे इख्तियार करो और जो सुनते हो उसे छोड़ दो सूरज तुलूअ है तो जुहल (सय्यारे) की क्या हाजत है ।

अब मैं फुक़हाए सलफ़ की सीरत के चन्द वोह गोशे बयान करूंगा जिन से तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि जिन लोगों ने खुद को उन के मज़हब की तरफ़ ग़लत मन्सूब कर रखा है उन्होंने ने इन पर जुल्म किया है और बरोज़े क़ियामत येह उन के सख़्त मुख़ालिफ़ होंगे क्यूंकि इल्म से इन का मक्सूद महज़ रिज़ाए इलाही का हुसूल था और इन के जो अहवाल मा'लूम हुए हैं वोह हैं जो उ-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से हैं जैसा कि उ-लमाए आख़िरत की अ़लामत के बाब में बयान होगा । उन्होंने ने अपने आप को महज़ इल्मे फ़िक्ह में नहीं लगा रखा था बल्कि वोह इल्मे कुलूब में भी मशगूल थे और इन की निगरानी करते थे लेकिन इन्हें इस इल्म की तदरीस व तस्नीफ़ से उस चीज़ ने रोक रखा था जिस ने सहाबए किराम رَضَوُا۟نَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمُ اَجْمَعِيْنَ को फ़िक्हा से बाज़ रखा था हालांकि वोह इल्मे फ़तवा में कामिल फुक़हा थे । मवानेअ व बवाइष यकीनन होते हैं उन्हें बयान करने की ज़रूरत नहीं ।

अब मैं फुक़हाए इस्लाम के वोह अहवाल बयान करूंगा जिन से तुम्हें मा'लूम होगा कि हमारा बयान कर्दा कलाम इन पर नहीं बल्कि उन लोगों पर ता'न है जिन्होंने ने अपने आप को इन की पैरवी में मशहूर कर रखा और इन के मज़हब व मस्लक की तरफ़ मनसूब कर रखा है हालांकि वोह आ'माल व सीरत में इन से यकसर मुख़ालिफ़ नज़र आते हैं ।

मुक़तदा व पेशवा फुक़हा :

वोह फुक़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام जो फ़िक्ह के इमाम और मख़लूक के मुक़तदा व पेशवा हैं या'नी जिन के मज़ाहिब के पैरूकार कषीर हैं, पांच हैं : (1) हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई (2) हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक (3) हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल (4) हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा और (5) हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी (رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمُ اَجْمَعِيْنَ)

इन में से हर एक अबिदो ज़ाहिद, उलूमे आखिरत का अलिम, लोगों के दुन्यवी मनाफ़ेअ का फ़कीह और अपनी फ़िक़ह से रिज़ाए इलाही चाहने वाला था और मौजूदा ज़माने के फ़ुक़हा ने इन पांच ख़स्लतों में से सिर्फ़ एक ख़स्लत या'नी फ़िक़ह की जुज़इय्यात में मेहनत व मुबालगा में इन की पैरवी की है। क्यूंकि बाकी चार ख़स्लतें सिर्फ़ आखिरत के लिये नफ़अ मन्द हैं और येह एक ख़स्लत आखिरत के साथ साथ दुन्या के लिये भी नफ़अ मन्द है। अगर इस से आखिरत की निय्यत की जाए तो दुन्यवी नफ़अ कम हो जाता है। मौजूदा ज़माने के फ़ुक़हा ने इस ख़स्लत के लिये ख़ूब कोशिश की और इस के सबब उन अइम्माए दीन के मुशाबेह होने का दा'वा किया। हाए अफ़सोस ! मलाइका को लोहारों पर क़ियास किया गया। अब मज़कूरा पांचों फ़ुक़हा के वोह अहवाल बयान किये जाते हैं जो चार ख़स्लतों पर दलालत करते और फ़िक़ह में इन का मक़ाम व मर्तबा सब को मा'लूम है।

सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के फ़ज़ाइल व मनाक़िब

❦.....इबादत व शियाज़त :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने रात को तीन हिस्सों में तक्सीम कर रखा था : एक तिहाई इल्म के लिये, एक तिहाई इबादत के लिये और एक तिहाई आराम के लिये।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना रबीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَدِيع फ़रमाते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي माहे रमज़ान में 60 कुरआने पाक ख़त्म करते थे और सब नमाज़ में ख़त्म करते।⁽²⁾

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के एक शागिर्द बुवैती माहे रमज़ान में हर दिन एक कुरआने पाक पढ़ा करते थे।⁽³⁾

तमाम मुसलमानों के लिये रहमत व नजात की दुआ :

हज़रते सय्यिदुना हसन कराबीसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के साथ कई रातें गुज़ारी हैं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى तक्रीबन एक तिहाई रात नमाज़ पढ़ते थे और मैं ने इन्हें 50 से ज़ियादा आयात पढ़ते नहीं देखा, अगर ज़ियादा पढ़ते तो 100 पढ़ लेते और किसी भी आयते रहमत पर पहुंचते तो बारगाहे इलाही

❶.....حلية الاولياء، الامام الشافعي، الحديث: 13231، ج 9، ص 123-

❷.....حلية الاولياء، الامام الشافعي، الحديث: 13226، ج 9، ص 122-

❸.....تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن ادريس الشافعي: 2061، ج 51، ص 93-

में अपने लिये और तमाम मुसलमानों के लिये रहमत की दुआ मांगते और जब भी कोई अज़ाब (के तज़क़िरे) वाली आयत पढ़ते तो इस से पनाह मांगते फिर अपने और तमाम मुसलमानों के लिये इस से नजात मांगते थे⁽¹⁾ गोया इन के लिये ख़ौफ़ व रजा को इक़ठा कर दिया गया था। पस तुम देखो कि 50 आयात पर इक़तिसार करना हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के कुरआने अज़ीम के असरार पर गहरी नज़र और इस में ग़ौरो फ़ि़क़र करने पर दलील है।

शिकम सैरी की आफ़ात :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “मैं ने 16 साल से सैर हो कर खाना नहीं खाया क्यूंकि शिकम सैरी बदन को भारी और दिल को सख़्त कर देती, अक्ल को ज़ा़इल करती, नींद लाती और इबादत में कमज़ोरी का बाइष है।⁽²⁾ ⁽³⁾

तुम ग़ौर करो कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कैसी हिक्मत के साथ शिकम सैरी की आफ़ात बयान फ़रमाई। फिर इबादत में इन की कोशिश को देखो कि इबादत की वजह से शिकम सैरी से कनारा कश हो गए क्यूंकि इबादत की बुन्याद कम खाने पर है।

अज़मते इलाही :

मज़ीद फ़रमाते हैं कि “मैं ने कभी भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम नहीं खाई, न सच्ची न झूटी।”⁽⁴⁾

येह कौल आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हद दरजा ता’ज़ीम व तौकीर बजालाने पर दलालत करता है। नीज़ इस बात पर दलील है कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अज़मते इलाही का इल्म रखते थे।

①.....معرفة السنن والآثار، مقدمة المؤلف، باب ما يستدل به على اجتهاده في طاعة ربه، ج ١، ص ١٥١ -

تاريخ بغداد، محمد بن ادریس الشافعی: ٢٥٢، ج ٢، ص ٢١ -

②.....حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحديث: ١٣٣٨٢، ج ٩، ص ١٣٥ -

تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادریس الشافعی: ٢٠٤١، ج ٥١، ص ٣٩٢ -

③.....शिकम सैरी की आफ़ात और भूक के फ़ज़ा़इल की तफ़सीली मा’लूमात के लिये दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “फ़ैज़ाने सुन्नत” जिल्द अव्वल के बाब “पेट का कुप्ले मदीना” का मुतालआ कीजिये।

④.....حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحديث: ١٣٣٩١، ج ٩، ص ١٣٦ -

ज़बान की हिफ़ाज़त :

एक बार हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से कुछ पूछा गया तो ख़ामोश रहे। किसी ने अर्ज़ की : “हुज़ूर ! **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहम फ़रमाए ! आप ज़वाब क्यों नहीं देते ?” फ़रमाया : “पहले मैं यह जान लूं कि मेरे ज़वाब देने में फ़ज़ीलत है या ख़ामोश रहने में।”⁽¹⁾

देखो ! आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ज़बान की कैसी निगहबानी फ़रमाते थे। हालांकि फुक्हा पर ज़बान का तसल्लुत तमाम आ'ज़ा से ज़ियादा होता है और ये सब से ज़ियादा बे क़ाबू और नाफ़रमान होती है। इस से ये भी वाज़ेह हुवा कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़ज़्लो षवाब के हुसूल के लिये ही कलाम करते थे।

कानों और ज़बान का कुफ़ले मदीना : (2)

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन यहया बिन वज़ीर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَدِيرُ बयान करते हैं कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي किन्दीलों के बाज़ार से गुज़रे, हम भी पीछे हो लिये, अचानक देखा कि एक शख्स किसी अ़लिम से बेहूदा बातें कर रहा है, आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “जिस तरह अपनी ज़बानों को फ़ोहश गोई से बचाते हो इसी तरह कानों को भी फ़ोहश बातें सुनने से बचाओ क्योंकि सुनने वाला कहने वाले के साथ शरीक होता है। बे वुकूफ़ जब अपने बरतन में कोई बदतरीन चीज़ देखता है तो उसे तुम्हारे बरतनों में डालना चाहता है, अगर उस की बात को लौटा दिया जाए तो लौटाने वाला खुश बख़्त है जैसे वोह बात कहने वाला बद बख़्त है।”⁽³⁾

①.....حاشية اعانة الطالبين، خطبة المؤلف، ج ١، ص ٢٨۔

②.....“कुफ़ले मदीना” दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में बोली जाने वाली एक इस्तिलाह है किसी भी उज़्व को गुनाहों और फुज़ूलियात से बचाने को कुफ़ले मदीना लगाना कहते हैं। मषलन फुज़ूल गोई से जो परहेज़ करता है और ख़ामोशी की आदत डालने के लिये हस्बे ज़रूरत इशारों से या लिख कर गुफ़्तगू करता है उस के बारे में कहा जाएगा कि उस ने ज़बान का कुफ़ले मदीना लगाया है।

दोज़ख़ की कहां ताब है कमज़ोर बदन में हर उज़्व का अ़तार लगा कुफ़ले मदीना

③.....حلية الاولياء، الامام الشافعي، الحديث: ١٣٣٦٣، ج ٩، ص ١٣٠۔

تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن ابراهيم بن احمد بن اسحاق: ٢٥: ٢٠٥، ج ٥١، ص ١٨٣۔

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक दाना (अक़ल मन्द) ने किसी दाना को लिखा कि तुम्हें इल्म दिया गया है तो अपने इल्म को गुनाहों की जुल्मत से आलूदा न करना वरना तुम उस दिन अन्धेरे में खड़े रहोगे जिस दिन साहिबे इल्म अपने इल्म के नूर में चलते होंगे।⁽¹⁾

﴿2﴾.....**जोहदो तक्वा :**

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “जो येह दा’वा करे कि इस ने अपने दिल में दुन्या और ख़ालिके दुन्या की महब्बत को जम्अ कर लिया है बेशक वोह झूटा है।”⁽²⁾

आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की सखावत :

हज़रते सय्यिदुना हमीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي बा’ज हुक्काम के साथ यमन तशरीफ़ ले गए फिर वहां से 10 हज़ार दिरहम लिये मक्का की तरफ़ रवाना हुए, मक्कए मुकर्रमा سے बाहर ही एक मक्काम पर उन के लिये एक ख़ैमा लगा दिया गया। लोग मुलाक़ात के लिये आने लगे। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ उस वक़्त तक अपनी जगह से न हटे जब तक वोह तमाम दराहिम तक्सीम न कर दिये।⁽³⁾ एक मरतबा हम्माम से निकले तो उस के मालिक को कषीर माल अ़ता फ़रमाया।⁽⁴⁾ एक बार आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का कोड़ा गिर गया, एक शख्स ने उठा कर दिया तो उसे इस के बदले में 50 दीनार अ़ता फ़रमा दिये।⁽⁵⁾

जोहद की हकीकत व बुन्याद :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सखावत बहुत मशहूर है बयान करने की हाज़त नहीं और जोहद की बुन्याद सखावत है इस लिये कि जो जिस चीज़ से महब्बत रखता है उसे रोक लेता है और माल को वोही जुदा करता है जिस की नज़र में दुन्या की कोई अहम्मियत न हो। येही जोहद की हकीकत है।

①.....حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۴۹۲، ج ۹، ص ۱۵۵۔

②.....فیض القدیر، حرف الدال، فصل فی المحلی بأل.....الخ، تحت الحدیث: ۲۲۶۹، ج ۳، ص ۷۷۔

③.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی الجود والسخاء، الحدیث: ۱۰۹۶۰، ج ۷، ص ۳۵۲۔

حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۴۰۶، ج ۹، ص ۱۳۸۔

④.....تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ۶۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۰۱۔

⑤.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی الجود والسخاء، الرقم: ۱۰۹۶۱، ج ۷، ص ۳۵۲، بتغییر ”تسعة دنانیر او سبعة“۔

تاریخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ۶۰۷۱، ج ۵۱، ص ۳۹۹۔

जमाने का अफ़ज़ल शख़्स :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जोहद में कितने मज़बूत थे, **اَبُو** عَزَّوَجَلَّ का किस क़दर ख़ौफ़ रखते थे और आख़िरत की तय्यारी में किस तरह मशगूल रहते थे इस का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने रिक्कते क़ल्बी के मुतअल्लिक एक हदीष बयान की तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बेहोश हो गए। किसी ने कहा : “वफ़ात पा गए हैं।” तो हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “अगर वफ़ात पा गए हैं तो इस ज़माने के अफ़ज़ल शख़्स का विसाल हो गया।”⁽¹⁾

कामिलुल ईमान होने की अ़लामत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बेलवी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं और उमर बिन नबाता अबिदीन व ज़ाहिदीन का तज़क़िरा कर रहे थे कि उमर ने कहा : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से बड़ा फ़सीह और परहेज़गार शख़्स नहीं देखा क्योंकि एक बार मैं, हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي और हारिष बिन लुबैद सफ़ा (पहाड़ी) की तरफ़ गए। हारिष सालेह मुरी के शागिर्द थे। खुश कुन आवाज़ के मालिक थे। इन्होंने ने कुरआने पाक की तिलावत शुरू की जब येह आयाते मुबारका तिलावत कीं :

هَذَا يَوْمٌ لَا يُطْفِقُونَ ۖ وَلَا يُؤَذِّنُ لَهُمْ
فَيَعْتَذِرُونَ ۖ (پ ۲۹، المرسل: ۳۶، ۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह दिन है कि वोह बोल न सकेंगे, और न उन्हें इजाज़त मिले कि उज़्र करें।

तो मैं ने देखा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का रंग तब्दील हो गया, बदन कांपने लगा, शदीद बे क़रार हो गए और बेहोश हो कर गिर गए। होश आने पर दुआ फ़रमाने लगे कि “ऐ **اَبُو** عَزَّوَجَلَّ मैं झूटों के मक़ाम और ग़ाफ़िलों के ऐ’राज़ से तेरी पनाह मांगता हूं। ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अहले मा’रिफ़त के दिल तेरी बारगाह में झुक गए, तेरे आगे त़ालिबीन की गर्दन ख़म हो गई। ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे अपना जूदो करम अता फ़रमा, अपनी शाने सत्तारी

①.....معرفة السنن والآثار، مقدمة المؤلف، باب شهادة الائمة للشافعي، ج ۱، ص ۱۱۶۔

حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الرقم: ۱۳۲۲۲، ج ۹، ص ۱۰۲۔

से मुझे अज़मत अता फ़रमा और अपने करम से मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा ।”⁽¹⁾

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ ले गए और हम भी चले गए । जब मैं बग़दाद आया उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इराक़ में थे । मैं एक मरतबा दरिया के कनारे बैठा वुजू कर रहा था कि करीब से गुज़रते हुए एक शख्स ने कहा : “बेटा ! वुजू अच्छे तरीक़े से करो ! **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ दुनिया व आख़िरत में तुम्हारे साथ अच्छा मुआमला फ़रमाएगा ।” मैं ने उस तरफ़ तवज्जोह की तो वोह एक बा रो’ब शख्स था जिस के पीछे कई लोग थे । मैं जल्दी से वुजू कर के उन के पीछे चल दिया । उन्होंने ने मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “क्या तुम्हें कोई काम है ?” मैं ने कहा : जी हां ! **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ आप को सिखाया है इस में से मुझे भी कुछ सिखा दीजिये । तो उन्होंने ने फ़रमाया : “जो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की तस्दीक़ करेगा वोह नजात पा जाएगा, जो अपने दीन के मुआमले में ख़ौफ़ ज़दा रहेगा हलाक़त व बरबादी से महफूज़ रहेगा और जो दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार करेगा कल बरोजे क़ियामत उस की आंखें **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मिलने वाले अज़्रो षवाब को देख कर ठंडी होंगी ।” फिर फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें मज़ीद न बताऊं ?” मैं ने कहा : “जी हां बताइये !” फ़रमाया : “जिस में तीन ख़स्लतें पाई गई उस ने अपना ईमान मुकम्मल कर लिया : (1).....नेकी का हुक्म देना और इस पर अमल करना (2).....बुराई से मन्अ करना और खुद भी बाज़ रहना और (3).....**اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की हुदूद की मुहाफ़ज़त करना ।” फिर फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें मज़ीद कुछ बताऊं ?” मैं ने कहा : “क्यों नहीं ।” फ़रमाया : “दुनिया से बे रग़बती इख़्तियार करो, आख़िरत में रग़बत रखो और हर हाल में **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ को सच्चा जानो, नजात पाने वालों में हो जाओगे ।” येह कह कर वोह तशरीफ़ ले गए । मैं ने पूछा : “येह कौन थे ?” तो लोगों ने बताया कि “येह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي थे ।”⁽²⁾ तुम इन के बेहोश हो कर गिरने पर गौर करो फिर इन के वा’ज के बारे में सोचो कि किस तरह येह चीज़ इन के जोहद और ख़ौफ़े खुदा रखने पर दलालत करती है । ख़ौफ़े खुदा और जोहद मा’रिफ़ते इलाही के बिगैर हासिल नहीं होते । क्यूंकि कुरआने पाक में इरशादे रब्बुल इबाद है ।

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ط

(प २२, फातर: २८)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : **اللَّهُ** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं ।

①.....तारिख़ دمشق लाइन عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: १/ २०६، ج १، ص ३३५

②.....تهذيب الاسماء واللغات، الامام الشافعی، ج १، ص ६५-६६، باختصار

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने येह ख़ौफ़े खुदा और ज़ोहदो तक्वा, बीअ, सलम और इजारा के मसाइल या इस के सिवा दूसरे अब्बाबे फ़िक्ह के मसाइल से हासिल नहीं किया था बल्कि येह सब कुछ उलूमे आख़िरत से हासिल किया था और उलूमे आख़िरत कुरआनो सुन्नत से मुस्तफ़ाद होते हैं क्यूंकि तमाम अगलों पिछलों की हिक्मतें कुरआनो सुन्नत में मौजूद हैं।

﴿3﴾.....असारे क़ल्ब और उलूमे आख़िरत के अ़लिम :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के हिक्मत भरे इरशादात व मल्फूज़ात से वाज़ेह होता है कि आप असारे क़ल्ब और उलूमे आख़िरत के कैसे ज़बरदस्त अ़लिम थे। चुनान्वे, मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से रिया के बारे में पूछा गया तो बिला तवक्कुफ़ जवाब दिया कि “रिया एक फ़ितना है जिसे ख़्वाहिशे नफ़्स ने उ-लमा के दिलों की आंखों के सामने बांध दिया उन्होंने ने बुराई पसन्द नफ़्स के साथ इस में दिलचस्पी ली तो उन के आ'माल अकारत हो गए।”⁽¹⁾

ख़ुद पसन्दी में मुब्तला को नशीहत :

मज़ीद फ़रमाते हैं कि “जब तुझे अपने अमल में खुद पसन्दी का ख़ौफ़ हो तो इस बात को पेशे नज़र रख कि तू किस की रिज़ा का त़ालिब है, किस षवाब की ख़्वाहिश रखता है, किस सज़ा व अज़ाब से डरता है, किस ने'मत पर शुक्र करता है और कौन सी मुसीबत को याद करता है। जब तू इन में से किसी एक ख़स्लत में ग़ौरो फ़िक्क करेगा तो तुझे अपना अमल छोटा लगेगा।”⁽²⁾

ग़ौर करो कि आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने किस अन्दाज़ से रिया की हकीकत और खुद पसन्दी के इलाज को आशकार किया और येह दोनों दिल की बहुत बड़ी आफ़तें हैं।

इल्म किसे नफ़अ नहीं देता ?

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं कि “जो अपने नफ़्स की निगहबानी नहीं करता उस का इल्म उसे नफ़अ नहीं देता।”⁽³⁾ जो इल्म के मुताबिक़ **اَبْلَاهُ**

①.....تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی، ج ۵۱، ص ۳۳۲۔

②.....تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ۶۰۷، ج ۵۱، ص ۳۱۳۔

③.....الفقيه والمتفقه، ذکر احاديث و اخبار شتى.....الخ، الجزء الاول، الرقم: ۱۳۹، ج ۱، ص ۱۵۱۔

की इताअत करेगा उस का पोशीदा इल्म उसे नफ़ा देगा । हर एक का कोई न कोई दोस्त और दुश्मन होता है और जब मुआमला ऐसा हो तो फिर तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़रमां बरदारों के साथ रहो ।” (1)

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल काहिर बिन अब्दुल अजीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز और परहेज़गार शख्स थे । हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से तक्वा के बारे में मसाइल पूछा करते थे और आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى भी इन की परहेज़गारी की वजह से उन पर खास तवज्जोह फ़रमाते थे । एक दिन इन्होंने ने पूछा कि “इमतिहान, सब्र और तमकीन (मर्तबा व इज़्ज़त) में से क्या अफ़ज़ल है ?” तो हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने जवाब दिया कि “तमकीन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का दर्जा है लेकिन तमकीन से पहले इमतिहान होता है, इमतिहान पर सब्र हो तो फिर तमकीन का दर्जा हासिल होता है । तुम ने देखा नहीं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने पहले हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम, हज़रते सय्यिदुना मूसा और हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का इमतिहान लिया फिर इन्हें तमकीन से नवाज़ा, हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का इमतिहान लिया फिर इन्हें तमकीन अता फ़रमाई और सल्तनत से नवाज़ा ।” (2)

तमकीन तमाम दर्जों में अफ़ज़ल दर्जा है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ

(پ ۱۳، یوسف: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और यूँही हम ने यूसुफ़ को इस मुल्क पर कुदरत बख़शी ।

और हज़रते सय्यिदुना अय्यूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को बड़े इमतिहान के बा'द तमकीन (मर्तबा व इज़्ज़त) से नवाज़ा । चुनान्वे, **अल्लाह** रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

وَأَتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ

(پ ۱، الانبیاء: ۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उसे उस के घर वाले और उन के साथ इतने ही और अता किये ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का येह कलाम इस बात पर दलालत करता है कि कुरआने पाक के अस्सर में आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की गहरी नज़र थी और आप عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने वाले अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और औलियाए उज़्ज़ाम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام के मक़ामात व मरातिब का इल्म था । इन सब बातों का तअल्लुक इल्मे आख़िरत से है ।

①.....حلیة الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۳۳۲، ج ۹، ص ۱۲۳۔

②.....ذمّ الهوی لابن الجوزی، الباب التاسع والاربعون فی ذکر ادویة العشق، الرقم: ۱۲۶۱، ص ۴۳۳، باختصار۔

आदमी अलम कब बनता है ?

हजरते सय्यिदुना इमाम शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से पूछा गया कि आदमी अलम कब बनता है ? फरमाया : जब वोह इल्मे दीन अच्छे तरीके से हासिल कर के दूसरों को सिखाए फिर दूसरे उलूम की तरफ़ मुतवज्जेह हो और जो इल्म उस के पास नहीं उस में गौरो फ़िक्र करे तब वोह अलम होगा । हकीम जालीनूस⁽¹⁾ से किसी ने पूछा कि “तुम एक बीमारी के लिये ज़ियादा दवाएं क्यूं तजवीज़ करते हो ?” तो हकीम साहिब ने जवाब दिया : “इन में से मक्सूद एक ही है लेकिन इस एक के साथ दूसरी दवाएं इस की ह़रारत को ख़त्म करने के लिये होती हैं क्यूंकि अगर एक ही दवाई दे दी जाए तो वोह हलाक कर देगी ।”

येह और इस तरह के बे शुमार हिक्मत भरे अक्वाल इस बात पर दलील हैं कि उलूमे आख़िरत और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त में हजरते सय्यिदुना इमाम शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का मक़ाम व मर्तबा बहुत बुलन्द था ।

﴿4﴾.....इल्मे फ़िक़ह से मक्सूद :

हजरते सय्यिदुना इमामे शाफेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़िक़ह और मुनाज़िरे में रिज़ाए इलाही के ही तालिब थे । इस पर कई रिवायात दलालत करती हैं । चुनान्चे, मरवी है कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “मैं चाहता हूं कि लोग इस इल्म से नफ़अ उठाएं लेकिन इस में से मेरी तरफ़ कुछ मन्सूब न करें ।”⁽²⁾

पस तुम गौर करो कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को इल्म और इल्म के सबब नामवरी की आफ़त पर कैसी आगाही थी । इन का दिल इस तरफ़ तवज्जोह करने से कैसा पाक था । महज़ रिज़ाए इलाही इन के पेशे नज़र होती थी ।

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “मैं ने जब भी किसी से मुनाज़िरा किया तो येह पसन्द नहीं किया कि वोह ग़लती करे⁽³⁾ बल्कि जब भी किसी से कलाम किया तो येह पसन्द

①...जालीनूस का अस्ली नाम ग्लोडीसिन गेलन था । येह हमारे प्यारे आका की बइषत से भी पहले गुज़रा है । सि. 313 ई में पैदा हुवा । सि.201 ई में फ़ौत हुवा । कदीम यूनान का निहायत ही माहिर तबीब था और फ़न्ने तिब्ब में तमाम अतिब्बाए यूनान को इस ने पीछे छोड़ दिया । यूनान की त़बाबत शोहरए आफ़ाक़ है । येह शख़्स इतना माहिर त़बीब माना जाता था कि आज अठ्ठारह सो साल के बा'द भी इस का दुन्या में नाम है । (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि.1 स. 582)

②.....حلیۃ الاولیاء، الامام الشافعی، الحدیث: ۱۳۳۲، ج ۹، ص ۱۲۶۔

تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ۶۰۷، ج ۵۱، ص ۳۶۵۔

③.....صحیح ابن حبان، کتاب الصلاة، باب فرض متابعة الامام، تحت الحدیث: ۲۱۲۲، ج ۳، ص ۲۸۴۔

किया कि उसे समझने की तौफ़ीक़ मिले और सीधे रास्ते पर रहने के लिये इस की मदद हो। नीज़ मैं ने कभी भी किसी से गुफ़्तगू करते वक़्त इस बात की परवाह नहीं की, कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरी ज़बान से हक़ ज़ाहिर करे या उस की ज़बान से।⁽¹⁾ जब मैं किसी के सामने दलील के साथ हक़ बयान करता हूँ और वोह क़बूल कर लेता है तो मैं उस से खुश होता और उस से महबूबत करता हूँ और जो मेरे सामने हक़ से इन्कार कर दे और दलील को न माने तो वोह मेरी नज़रों से गिर जाता है और मैं उसे छोड़ देता हूँ।⁽²⁾

येह अलामात इस बात को वाज़ेह करती हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** फ़िक़ह और मुनाज़िरा मे रिज़ाए इलाही के तालिब थे। अब तुम देखो कि इन पांच ख़स्लतों में से लोग सिर्फ़ इस एक ख़स्लत में इन की मताबेअत व पैरवी के दा'वेदार हैं फिर इस में भी वोह इन से कितने मुख़्तलिफ़ हैं। इसी लिये हज़रते सय्यिदुना अबू घौर **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने कहा कि “मैं ने और देखने वालों ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** की मिस्ल किसी को नहीं देखा।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل** ने फ़रमाया कि “40 साल से मैं ने जो भी नमाज़ पढ़ी उस में हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** के लिये ज़रूर दुआ की।”⁽⁴⁾

पस तुम दुआ करने वाले के इन्साफ़ और हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي** के दर्जे को मुलाहज़ा करो फिर इस ज़माने के उलमा को देखो कि इन में किस तरह बुग़ज़ व इऩाद पाया जाता है ताकि तुम जान जाओ कि येह लोग उन बुजुर्गों की इक्तदा व पैरवी करने के दा'वे में झूटे हैं।

①.....الفقيه والمتفقه، باب ادب الجدل، الجزء السابع، الرقم: ٦٤١، ج ٢، ص ٢٩۔

②.....حلية الاولياء، الامام الشافعي، الرقم: ١٣٣٤، ج ٩، ص ١٢٥۔

تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن ادريس الشافعي: ٦٠٤١، ج ٥١، ص ٣٨٣۔

③.....تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن ادريس الشافعي: ٦٠٤١، ج ٥١، ص ٣٣٣۔

④.....تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن ادريس الشافعي: ٦٠٤١، ج ٥١، ص ٣٢٦۔

दुनिया के लिये आफ़ताब और लोगों के लिये आफ़ियत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل के साहिबज़ादे ने इन से पूछा : “येह शाफ़ेई कौन हैं जिन के लिये आप इतनी ज़ियादा दुआएं मांगते हैं ?” तो इन्होंने ने फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटे ! हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي दुनिया के लिये आफ़ताब की मानिन्द और लोगों के लिये आफ़ियत हैं । पस तुम देखो कि कौन इन दो बातों में इन का नाइब है ।⁽¹⁾”

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل फ़रमाया करते थे कि “जिस ने भी दवात को हाथ लगाया उस पर हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का एहसान है ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना यहया बिन सईद कत्तान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं कि “40 साल से मैं ने जो भी नमाज़ पढ़ी उस में हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के लिये ज़रूर दुआ मांगी क्यूंकि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन पर इल्म के दरवाज़े खोल दिये थे और उन्हें इल्म में पुख़्तगी की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाई थी ।”⁽³⁾

हम हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के इन्हीं अहवाल को बयान करने पर इक्तिफ़ा करते हैं वरना आप के अहवाल तो बेशुमार हैं । यहां ज़िक्र कर्दा बेशतर मनाक़िब व फ़ज़ाइल हम ने हज़रते सय्यिदुना शैख़ नसर बिन इब्राहीम मक्दसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي की किताब से नक़ल किये हैं जो इन्होंने ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के फ़ज़ाइल व मनाक़िब में तस्नीफ़ फ़रमाई है ।

....इल्म सीखने से आता है....

फ़रमाने मुस्तफ़ा : “इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़ह ग़ौरो फ़िक़्र से हासिल होती है और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अता फ़रमाता है और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं ।”

(المعجم الكبير، الحديث ٤٣١، ج ١٩، ص ٥١١)

①.....تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ٦٠٤١، ج ٥١، ص ٣٢٨۔

②.....تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ٦٠٤١، ج ٥١، ص ٣٣٩۔

③.....تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن ادريس الشافعی: ٦٠٤١، ج ٥١، ص ٣٢٥۔

सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق के फ़नाइल व मनाफ़िब

हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق भी इन पांच अवसाफ़ से मुत्तसिफ़ थे। चुनान्चे, किसी ने इन से अर्ज़ की : “ऐ मालिक ! आप तलबे इल्म के बारे में क्या कहते हैं ?” फ़रमाया : “येह बड़ी अच्छी बात है लेकिन तुम उस पर ग़ौर करो जो सुब्ह से शाम तक तुम्हारे लिये ज़रूरी है और उसे लाज़िम पकड़ लो।”⁽¹⁾

हदीषे रसूल की ता'जीम :

आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इल्मे दीन की बहुत ज़ियादा ता'जीम किया करते थे यहां तक कि जब हदीष बयान करने का इरादा करते तो पहले वुजू करते, चटाई बिछाते, अपनी दाढ़ी संवारते, खुशबू लगाते फिर इज़्ज़त व वक़ार के साथ बैठ कर हदीष बयान करते।⁽²⁾ किसी ने इस की वजह पूछी तो इरशाद फ़रमाया : “मैं पसन्द करता हूं कि हदीषे रसूल की ता'जीम करूं।”⁽³⁾ आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का कौल है कि “इल्म ज़ियादा रिवायतें बयान करने का नाम नहीं बल्कि इल्म तो नूर है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहता है अता फ़रमाता है।”⁽⁴⁾

हदीषे रसूल का येह अदबो एहतिराम इस बात पर दलालत करता है कि आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के जलाल की मा'रिफ़त में कितने मज़बूत थे।

हुसूले इल्मे दीन से मक्सूद :

इल्मे दीन हासिल करने से हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق का मक्सद महज़ रिज़ाए इलाही हुवा करता था। इस पर इन का येह फ़रमान दलालत करता है कि “दीन में झगड़ा कोई हैषियत नहीं रखता।”⁽⁵⁾

①.....حلية الاولياء، مالک بن انس، الحديث: ٨٨٤٠، ج ٦، ص ٣٢٩۔

②.....حلية الاولياء، مالک بن انس، الحديث: ٨٨٥٨، ج ٦، ص ٣٢٤۔

جامع الاصول فى احاديث الرسول لابن اثير، الباب الرابع فى ذكر الائمة، الامام مالک، ج ١، ص ١٢٠۔

③.....حلية الاولياء، مالک بن انس، الحديث: ٨٨٥٨، ج ٦، ص ٣٢٤۔

④.....حلية الاولياء، مالک بن انس، الحديث: ٨٨٦٤، ج ٦، ص ٣٢٨۔

⑤.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى حسن الخلق، فصل فى الحلم والتؤدة، الحديث: ٨٢٨٠، ج ٦، ص ٣٥٢۔

अ़लम की शान :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का येह फ़रमान भी इस पर दलालत करता है कि मेरी मौजूदगी में हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق से 48 मसाइल पूछे गए जिन में से 32 के बारे में आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “मैं नहीं जानता।”⁽¹⁾ और इल्म से जिस का मक़सद रिज़ाए इलाही के इलावा कुछ और हो तो उस का नफ़्स उसे इजाज़त नहीं देता कि वोह अपने बारे में इस बात का इक़रार करे कि वोह नहीं जानता।

चमकते सितारे :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي जब उ-लमा का तज़क़िरा करते तो फ़रमाते : “हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق ख़ूब चमकते सितारे हैं और मुझ पर इन से ज़ियादा किसी का एहसान नहीं।”⁽²⁾

कोड़े खा कर भी हदीष बयान की :

मन्कूल है कि अबू जा'फ़र मन्सूर ने हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق को मकरह (या'नी मजबूर किये जाने वाले) की त़लाक़ के बारे में हदीष बयान करने से मन्अ किया फिर खुफ़या तौर पर किसी को भेजा कि इन से येही सुवाल करे तो आप ने लोगों के मजमअ में बयान कर दिया कि जिसे मजबूर किया जाए उस की त़लाक़ वाक़ेअ नहीं होती⁽³⁾ तो अबू जा'फ़र मन्सूर ने आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को कोड़े लगवाए लेकिन आप ने हदीष बयान करना न छोड़ी।⁽⁴⁾

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “जो शख्स भी हदीष बयान करने में सच्चा होगा और झूट नहीं बोलेगा उस की अक़ल सलामत रहेगी कि बुढ़ापे में न तो उसे कोई आफ़त पहुंचेगी और न ही उस की अक़ल में किसी किस्म का फुतूर आएगा।”⁽⁵⁾

①.....سير اعلام النبلاء للذهبي، مالک الامام: ۱۱۸۰، ج ۷، ص ۴۰۱۔

②.....جامع الاصول في احاديث الرسول لابن اثير، الباب الرابع في ذكر الائمة، الامام مالک، ج ۱، ص ۱۲۱۔

③....अहनाफ़ के नज़दीक त़लाक़ वाक़ेअ हो जाएगी। (माख़ूज अज़ : बहारे शरीअत, जि. 3 स. 194)

④.....جامع الاصول في احاديث الرسول لابن اثير، الباب الرابع في ذكر الائمة، الامام مالک، ج ۱، ص ۱۲۱۔

⑤.....طبقات المحدثين لابن الشيخ الاصبهاني، الطبقة التاسعة، بقية الطبقة التاسعة، الرقم: ۴۰، ج ۳، ص ۵۱۔

الجامع لاخلق الراوى وآداب السامع، باب تحرى المحدث الصدق في مقابله، الرقم: ۱۰۱۵، ج ۳، ص ۱۷۱۔

जोहदो तक्वा :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के जोहद पर येह रिवायत दलालत करती है कि खलीफा महदी ने आप से पूछा : “क्या आप का कोई घर है ?” फ़रमाया : “नहीं, लेकिन मैं तुम्हें एक हदीष बयान करता हूँ कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना रबीआ बिन अबी अब्दुर्रहमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को फ़रमाते सुना कि आदमी का नसब ही उस का घर है ।”

मैं छौड कर मदीना नहीं जाता, नहीं जाता :

खलीफा हारूरशीद ने आप से पूछा : “क्या आप का कोई घर है ?” फ़रमाया : नहीं । तो उस ने आप की खिदमत में 3 हज़ार दीनार पेश करते हुए कहा कि “इन से घर ख़रीद लीजिये !” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने दीनार ले कर रख लिये और उन्हें खर्च न किया । जब खलीफा हारूरशीद मदीना मुनव्वरा رَاَدَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا से जाने लगा तो उस ने आप की खिदमत में अर्ज की, कि “आप को हमारे साथ चलना होगा क्योंकि मैं ने अज़्म किया है कि लोगों को मुअत्ता पर जम्अ करूँ जिस तरह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़फ़ान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लोगों को एक कुरआन पर जम्अ किया था ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : लोगों को सिर्फ़ मुअत्ता पर इकठ्ठा करने का तो कोई जवाज़ नहीं क्योंकि **अल्लाह** के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के विसाले ज़ाहिरी के बा’द सहाबए किराम رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ मुख़लिफ़ शहरों में चले गए वहां उन्होंने ने अहादीष बयान फ़रमाई जिस की वजह से अब मिस्र के हर शख्स के पास अहादीष का इल्म है और मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी इरशाद फ़रमाया है कि “मेरी उम्मत का इख़िलाफ़ रहमत है ।”(1) और रहा (मदीना छोड़ कर) तुम्हारे साथ जाना तो इस की भी कोई सूरत नहीं क्योंकि फ़रमाने मुस्तफ़ा है कि “मदीना उन के लिये बेहतर है अगर वोह समझें ।”(2) एक रिवायत में है : “मदीना (गुनाहों के) मेल को ऐसे छुड़ाता है जैसे भट्टी लोहे का जंग दूर करती है ।”(3) फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने खलीफा हारूरशीद से फ़रमाया : “येह रहे तुम्हारे दीनार चाहो तो इन्हें ले

①.....جامع الاصول فى احاديث الرسول لابن اثير، الباب الرابع فى ذكر الائمة، الامام مالك، ج ١، ص ١٢١ -

②.....صحيح مسلم، كتاب الحج، باب فضل المدينة، الحديث: ١٣٢٣، ص ٤١٠ -

③.....صحيح مسلم، كتاب الحج، باب المدينة تففى شرارها، الحديث: ١٣٨١، ص ٤١٦ -

حلية الاولياء، مالك بن انس، الحديث: ٨٩٣٢، ج ٦، ص ٣٦١ -

लो और चाहो तो छोड़ दो ।” या’नी तुम मुझे इसी वजह से मदीना छोड़ने पर पाबन्द करते हो कि तुम ने मेरे साथ अच्छा सुलूक किया है तो (सुनो !) मैं मदीना मुनव्वरा رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا पर दुनिया को तरजीह नहीं देता ।

येह थी हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق की दुनिया से बे रग़बती । जब आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इल्म और शागिर्दों के दूर दराज़ अलाकों में फैल जाने की वजह से मुख़्तलिफ़ शहरों से आप के पास क़बीर माल आने लगा तो आप उसे नेकी के मुख़्तलिफ़ कामों में खर्च कर देते । येह चीज़ आप के जोहद और दुनिया से महबूबत न होने की दलील है । माल न होने को जोहद नहीं कहते बल्कि जोहद येह है कि दिल में माल की रग़बत न हो ।

मदीने की मिट्टी का अदबो एहतिराम :

हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी बादशाहत में ज़ाहिद थे । हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق दुनिया को कितना हक़ीर समझते थे इसे इस रिवायत से समझिये कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَاف़ी फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق के दरवाज़े पर खुरासान और एक कौल के मुताबिक़ मिस्र के उम्दा घोड़े देखे, इन से ख़ूब सूरत घोड़े मैं ने कभी नहीं देखे थे तो मैं ने अर्ज़ की : “येह कितने उम्दा हैं ।” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “ऐ अबू अब्दुल्लाह !” येह मेरी तरफ़ से आप को हदिय्या हैं । मैं ने अर्ज़ की : “इन में से कोई आप अपनी सुवारी के लिये भी रख लें ।” आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “मुझे अब्बाह غَزَوَجَل से हया आती है कि मैं उस ज़मीन को जानवर के पाऊं से रौंदू जिस में अब्बाह غَزَوَجَل के महबूब صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ फ़रमा हैं ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق की सखावत देखो कि एक ही बार में सारा माल हिबा कर दिया और मदीने की मिट्टी का कितना अदबो एहतिराम करते थे !

प्यासा कुंवें के पास जाता है न कि कुंवां :

आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى इल्म से महज़ अब्बाह غَزَوَجَل की रिज़ा व खुश्नूदी के तालिब थे और दुनिया को हक़ीर जानते थे । इस पर येह रिवायत दलालत करती है, आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى

①.....الشفاء، الباب الثالث، ج ٢، ص ٥٤-

फ़रमाते हैं कि मैं ख़लीफ़ा हारूनुरशीद के पास गया तो उस ने मुझे कहा : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप हमारे पास आया करें ताकि हमारे बच्चे आप से मुवत्ता पढ़ें ।” मैं ने कहा : “**اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ अमीर को इज़्ज़त दे ! येह इल्म आप लोगों से निकला है । अगर आप इसे इज़्ज़त देंगे तो अज़ीज़ होगा और रुस्वा करेंगे तो ज़लील होगा और (हां) इल्म किसी के पास नहीं आता बल्कि इल्म हासिल करने जाते हैं ।” ख़लीफ़ा ने कहा : “आप ने सच फ़रमाया :” फिर अपने बच्चों से कहा कि “मस्जिद में जा कर दीगर लोगों के साथ बैठ कर मुवत्ता सुना करो ।”⁽¹⁾

सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** के फ़ज़ाइली मनाफ़िब

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** भी आबिदो ज़ाहिद, आरिफ़ बिल्लाह, ख़ौफ़े खुदा रखने वाले और अपने इल्म से रिज़ाए इलाही चाहने वाले थे । आप की इबादत व रियाज़त का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाया जा सकता है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** साहिबे मुरव्वत और कषरत से इबादत करने वाले थे ।”⁽²⁾

सारी रात इबादत :

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन अबू सुलैमान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْحَنَّان** से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** सारी रात इबादत किया करते थे ।

मरवी है कि आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** पहले आधी रात इबादत किया करते थे । एक दिन रास्ते से गुज़र रहे थे कि किसी को येह कहते सुना कि येह सारी रात इबादत में गुज़ारते हैं । पस इस के बा'द से पूरी रात इबादत करने लगे और फ़रमाते : “मुझे **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ से हया आती है कि मेरे बारे में उस की इबादत के मुतअल्लिक़ ऐसी बात कही जाए जो मुझ में न हो ।”⁽³⁾

①.....آداب العلماء والمتعلمين، آداب العالم في علمه، ص ۱-

مرقاة المفاتيح، شرح مقدمة المشكاة، ج ۱، ص ۶۲-

②.....تاريخ بغداد، النعمان بن ثابت: ۷۲۹، ج ۱، ص ۳۵۲-

③.....تاريخ بغداد، النعمان بن ثابت: ۷۲۹، ج ۱، ص ۳۵۳، ۳۵۴-

जोह्दो तक्वा :

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन आसिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ बयान करते हैं कि “मुझे यज़ीद बिन उमर बिन हुबैरा ने हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ को बुलाने के लिये भेजा तो मैं उन्हें बुला लाया, उस ने आप को बैतुल माल का हाकिम बनाना चाहा । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इन्कार पर उस ने आप को 20 कोड़े लगवाए ।”⁽¹⁾

पस तुम गौर करो कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَरِيمِ ने अज़िय्यत तो बरदाश्त कर ली लेकिन ओहदा क़बूल न किया ।

आखिरत की सज़ा पर दुन्यावी सज़ा को तरज़ीह :

हक़म बिन हिश्शाम षक़फ़ी का बयान है कि मुझे मुल्के शाम में हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बारे में बताया गया कि आप लोगों में सब से बड़े अमानतदार थे । हाकिमे वक़्त ने चाहा कि आप उस के ख़ज़ानों की कुंजियों के ज़िम्मेदार बन जाएं वरना आप को कोड़े लगवाए जाएंगे लेकिन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अज़ाबे इलाही के मुक़ाबले में दुन्यावी सज़ा को इख़्तियार कर लिया ।⁽²⁾

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के पास हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ का तज़क़िरा हुवा तो उन्होंने ने फ़रमाया : “तुम ऐसे शख्स का तज़क़िरा करते हो जिस पर दुन्या तमाम माल व अस्बाब के साथ पेश की गई लेकिन उस ने फिर भी इसे क़बूल न किया ।”⁽³⁾

10 हजार दिरहम क़बूल न किये :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन शजाअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के एक शागिर्द ने बताया कि किसी ने उस्ताज़ साहिब से कहा : “ख़लीफ़ा अबू जा'फ़र मन्सूर ने आप के लिये 10 हजार दिरहम का हुक्म दिया है ।”

①.....तاريخ بغداد، النعمان بن ثابت: ٢٩٤، ج ١٣، ص ٣٢٨-

الانتقاء في فضائل الثلاثة الائمة الفقهاء لابن عبد البر، ص ١٤٠-

②.....تاريخ بغداد، النعمان بن ثابت: ٢٩٤، ج ١٣، ص ٣٥٠-

③.....مرفاة المفاتيح، شرح مقدمة المشكاة: ترجمة الامام ابى حنيفة ومناقبه، ج ١، ص ٤٤-

रावी का बयान है कि इस पर आप ने नापसन्दीदगी का इज़हार फ़रमाया । फिर जब वोह दिन आया जिस में माल दिया जाना था तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने नमाज़े फ़ज़्र अदा की फिर कपड़े से मुंह छुपा लिया और कोई बात न की । हसन बिन क़हतबा का क़ासिद माल ले कर हाज़िर हुवा तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस से भी कोई बात न की । हाज़िरीन में से किसी ने कहा : “येह हम से भी ऐसे ही बात करते हैं या’नी येह इन की आदत है ।” फिर आप ने माल लाने वाले से फ़रमाया : “माल की थैली घर के एक कोने में रख दो ।” इस के बा’द आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने घर के सामान की वसियत फ़रमाई और बेटे से फ़रमाया : “जब मेरा इन्तिक़ाल हो जाए और मुझे दफ़न कर चुको तो येह थैली हसन बिन क़हतबा को दे आना और कहना कि येह तुम्हारी अमानत है जो तुम ने अबू हनीफ़ा के पास रखी थी ।” आप के साहिबज़ादे बयान करते हैं कि “मैं ने ऐसा ही किया ।” हसन बिन क़हतबा ने कहा : “तुम्हारे वालिद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो, बेशक वोह अपने दीन के मुआमले में बड़े हरीस थे ।”(1)

मन्सब व ओहदा क़बूल न किया :

मन्कूल है कि जब आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को ओहदाए क़ज़ा की ज़िम्मेदारी सोंपी गई तो फ़रमाया : “मैं इस के लाइक़ नहीं ।” वजह पूछी गई तो फ़रमाया : “अगर मैं सच्चा हूं तो वाक़ेई इस ओहदे के लाइक़ नहीं और अगर झूटा हूं तो झूटा शख़्स काज़ी बनने के वैसे ही लाइक़ नहीं होता ।”(2)

तरीक़े आख़िरत के आलिम :

हज़रते सय्यिदुना इमामे आ’ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم तरीक़े आख़िरत और उमूरे दीन का इल्म भी रखते थे । मा’रिफ़ते इलाही भी हासिल थी । इस पर आप का ख़ौफ़े ख़ुदा और दुन्या से बे रग़बती दलालत करते हैं । चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना इब्ने ज़ुरैज عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है कि “मुझे हज़रते सय्यिदुना इमामे आ’ज़म عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के बारे में येह बात पहुंची है कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का बहुत ज़ियादा ख़ौफ़ रखते हैं ।”(3)

①.....الانتقاء فى فضائل الثلاثة الائمة الفقهاء لابن عبد البر، ذكر طرف من فطنة ابى حنيفة، ص ۱۶۹ -

②.....السنن الكبرى للبيهقى، كتاب آداب القاضى، باب كراهية الامارة.....الخ، الرقم: ۲۰۲۳۷، ج ۱۰، ص ۱۶۸ -

③.....الانتقاء فى فضائل الثلاثة الائمة الفقهاء لابن عبد البر، قول الشافعى فيه، ص ۱۳۵ -

हमेशा फिक्रे आखिरत में मगन :

हज़रते सय्यिदुना शरीक नखई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي बयान करते हैं कि “हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم अकषर ख़ामोश रहते, हमेशा फ़िक्रे आखिरत में मगन रहते और लोगों से बात चीत कम करते थे।”⁽¹⁾

येह आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इल्मे बातिन और दीन के अहम उमूर में मशगूल रहने पर वाज़ेह दलाइल हैं क्यूंकि जिसे ख़ामोशी और ज़ोहद अता किया गया बेशक उसे सारा इल्म अता कर दिया गया। तीनों अइम्मा के येह मुख़्तसर अहवाल हैं।

मनाकिबे इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम शौरी :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल और हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान शौरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا के मुत्तबेईन मज़कूरा तीनों अइम्मा के मुक़ल्लिदीन से बहुत कम हैं और हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान शौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के मुक़ल्लिदीन हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل के मुक़ल्लिदीन से भी कम हैं लेकिन इन दोनों का ज़ोहदो तक्वा मशहूर है और येह किताब इन्हीं के अक़वाल व अफ़अाल की हिकायात से मुज़य्यन है, मज़ीद तफ़सील की हाज़त नहीं। अब आप इन तीनों अइम्माए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام की सीरतों में ग़ौर कीजिये और सोचिये कि क्या दुन्या से कनारा कशी करने के येह अहवाल, अक़वाल, अफ़अाल और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हर चीज़ से बेगाना हो जाना फ़िक़ह की जुज़्ज़्यात या'नी बैए सलम, इजारा, ज़िहार, ईला और लिअन का जानने से हासिल होते हैं या येह किसी और इल्म का नतीजा हैं जो इस से अफ़ज़ल व आ'ला है। फिर उन्हें देखो जो इन की इक्तिदा व पैरवी का दा'वा करते हैं वोह अपने दा'वे में सच्चे हैं या झूटे ?



1.....الانتقاء فى فضائل الثلاثة الفقهاء لابن عبد البر، يحيى بن سعيد القطان، ص ۱۳۱۔

बाब नम्बर 3 :

उन मजमूम उलूम का बयान जिन्हें लोग अच्छा समझते हैं

इस बाब में बयान होगा कि बा'ज उलूम बुरे क्यों हैं? और येह कि बा'ज उलूम मफलन फ़िक्ह, इल्म, तौहीद, तजकीर और हिक्मत के नाम तब्दील हो गए हैं और उलूमे शरइय्या किस क़दर अच्छे हैं और किस क़दर बुरे?

पहली फ़स्ल : **बा'ज उलूम के मजमूम होने का सबब**

शायद तुम कहो कि इल्म किसी चीज़ को इस तरह जान लेने का नाम है जैसी वोह है और इल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात में से भी है फिर येह क्यों कर हो सकता है कि एक चीज़ इल्म भी हो और बुरी भी? याद रखो इल्म को इल्म होने की वजह से बुरा नहीं कहा जाता बल्कि बन्दों के हक़ में तीन में से एक वजह से बुरा होता है।

पहली वजह : येह है कि इल्म जिस के पास होता है वोह इस के लिये या इस के सिवा किसी दूसरे के लिये नुक्सान देह होता है जैसा कि जादू और तिलिस्मात की बुराई बयान की जाती है हालांकि येह हक़ है क्योंकि कुरआने हकीम ने इस की गवाही दी है और येह मियां बीबी में जुदाई डालने का ज़रीअ है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर भी जादू किया गया था जिस के सबब आप बीमार हो गए थे यहां तक कि हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने इस की ख़बर दी तो कुंवें में पथ्थर के नीचे से जादूई अश्या को निकाला गया।⁽¹⁾

जादू के बुरा होने का सबब :

जादू इल्म ही की एक किस्म है जो जवाहिर के ख़वास और सितारों के तुलूअ होने की जगहों में हिसाबी उमूर से हासिल होता है। इन जवाहिर से उस शख्स की शक्लो सूरत पर उस का पुतला बनाया जाता है जिस पर जादू करना होता है फिर सितारों के तुलूअ के ख़ास वक़्त का इन्तिज़ार किया जाता है और वक़्त आने पर इस पुतले पर कुफ़्रिय्यात और ख़िलाफ़े शरअ बे हयाई के कलिमात पढ़े जाते हैं और इस के ज़रीए शैतानों से मदद मांगी जाती है। येह सब करने के बा'द **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़दते जारिया के हुक्म से जिस शख्स पर जादू किया जाए उस पर

①.....صحیح البخاری، کتاب الطب، باب السحر، الحدیث: ۵۷۶۲، ج ۴، ص ۴۰۔

अजीबो ग़रीब अहवाल ज़ाहिर होते हैं। इन अस्बाब को जानना ब हैषियत इल्म होने के बुरा नहीं लेकिन चूंकि येह इल्म लोगों को नुक्सान देने और बुराई पहुंचाने ही का ज़रीआ है और बुराई तक पहुंचाने वाली शै खुद बुरी होती है। लिहाज़ा येह जादू के बुरा इल्म होने का सबब है।

झूट बोलना कैसा ? :⁽¹⁾

यूंही जो शख्स किसी वली को शहीद करने के दरपै हो और वली किसी जगह छुप जाए फिर ज़ालिम किसी से इस के मुतअल्लिक पूछे तो उसे इस के बारे में न बताना जाइज़ है बल्कि इस मौक़अ पर ख़िलाफ़े वाक़ेअ बात बोलना वाजिब है हालांकि उस जगह का बता देना राह दिखाना और किसी चीज़ का पता बताना है लेकिन चूंकि येह नुक्सान का ज़रीआ है इस लिये बुरा है।

दूसरी वजह : बा'ज़ अवकात इल्म अपने साहिब को अक़्शर नुक्सान देता है जैसा कि इल्मे नुजूम, फ़ी नफ़्सही (या'नी अपनी ज़ात की वजह से) बुरा नहीं क्योंकि इस की दो किस्में हैं :

❶.....**हि़साब :** इसे कुरआने पाक ने भी बयान किया है कि सूरज चांद का चलना हि़साब से है। चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

الشّمس والقمر يحسبان ❶ (प २, الرحمن: ५)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : सूरज और चांद हि़साब से हैं।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

والقمر قدّم له منازل حتّى عاد كالعرجون
القديم ❷ (प २३, يس: ३९)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़रर कीं यहां तक कि फिर हो गया जैसे ख़जूर की पुरानी डाल (टहनी)।

❶..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द 3 सफ़हा 517 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَوِي फ़रमाते हैं कि “तीन सूरतों में झूट बोलना जाइज़ है या'नी इस में गुनाह नहीं। **एक जंग की सूरत में** कि यहां अपने मुक़ाबिल को धोका देना जाइज़ है, जब ज़ालिम जुल्म करना चाहता हो उस के जुल्म से बचने के लिये भी (झूट बोलना) जाइज़ है। **दूसरी सूरत** येह है कि दो मुसलमानों में इख़िलाफ़ है और येह इन दोनों में सुल्ह कराना चाहता है, मषलन एक के सामने येह कह दे कि वोह तुम्हें अच्छा जानता है, तुम्हारी ता'रीफ़ करता था या उस ने तुम्हें सलाम कहला भेजा है और दूसरे के पास भी इसी किस्म की बातें करे ताकि दोनों में अदावत कम हो जाए और सुल्ह हो जाए। **तीसरी सूरत** येह है कि बीबी (बीवी) को खुश करने के लिये कोई बात ख़िलाफ़े वाक़ेअ कह दे।

﴿2﴾.....अहकाम : इल्मे नुजूम का हासिल, अस्बाब को देख कर वाकिआत का अन्दाज़ा लगाना है और येह ऐसे ही है जैसे तबीब नब्ज़ देख कर अन क़रीब पैदा होने वाले मरज़ के बारे में अन्दाज़ा लगाता है और येह इस बात की मा'रिफ़त हासिल करने का ज़रीआ है कि मख़्लूक के बारे में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की आदत और सुन्ते जारिया क्या है लेकिन इस के बा वुजूद शरीअत ने इस की मज़्मत बयान की। चुनान्वे, सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तकदीर की बात हो तो ख़ामोश हो जाओ और जब सितारों का ज़िक्र हो तो ख़ामोश रहो और जब मेरे सहाबा के बारे में गुफ़्तगू हो तब भी चुप रहो।” (1)

एक रिवायत में है कि “मुझे अपने बा'द उम्मत पर तीन चीज़ों का ख़ौफ़ है : (1) अइम्मा के जुल्म (2) सितारों पर ईमान लाने और (3) तकदीर के झुटलाए जाने का।” (2)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “सितारों का सिर्फ़ इतना इल्म हासिल करो जिस से खुशकी और तरी में राह पा सको।” (3)

इल्मे नुजूम से मुमानअत की वुजूहात :

इल्मे नुजूम से मन्अ करने की तीन वुजूहात हैं :

﴿1﴾.....येह अकषर लोगों के लिये नुक्सान देह होता है यूं कि जब उन्हें बताया जाता है कि सितारों की गर्दिश के नतीजे में येह हालात पैदा होते हैं तो उन के दिलों में येह बात बैठ जाती है कि सितारे ही मुअषर हैं येही मा'बूद हैं जो काइनात का निज़ाम चलाते हैं क्यूंकि येह मुअज़्ज़ज़ आस्मानी जवाहिर हैं, इन की ता'ज़ीम दिल में बैठ जाती है फिर दिल इन्ही की तरफ़ मुतवज्जेह रहता और ख़ैरो शर के आने या न आने को इन्ही की जानिब से तसव्वुर करता है। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र दिल से मिट जाता है क्यूंकि कमज़ोर ईमान वाले की नज़र अस्बाब व वसाइल पर ही होती है जब कि मज़बूत ईमान वाला आलिम जानता है कि सूरज, चांद और सितारे हुक्मे

1.....المعجم الكبير، الحديث: ١٢٢٤، ج ٢، ص ٩٦-

جامع بيان العلم وفضله، باب العبارة عن حدود علم الديانات، الحديث: ٨٣٣، ص ٢٩٤-

2.....جامع بيان العلم وفضله، باب العبادة عن حدود علم الديانات، الحديث: ٨٣٣، ص ٢٩٨-

معرفة الصحابة لابی نعيم الاصبهاني، الحديث: ٢٠٥٤، ج ٥، ص ٣٢-

3.....جامع بيان العلم وفضله، باب العبارة عن حدود علم الديانات، الحديث: ٨٢٨، ص ٢٩٦-

المصنف لابن ابی شعبة، كتاب الادب، في تعليم النجوم ما قالوا فيها، الحديث: ٣، ج ٦، ص ١٢٩-

इलाही ही के ताबेअ हैं। कमजोर ईमान वाले की मिषाल कि तुलूए आफ़ताब के वक़्त जिस की नज़र रोशनी का हुसूल हो च्यूटी की मानिन्द है कि अगर उसे अक्ल दी जाए और वोह सफ़हे पर हो और इस पर मुरत्तब होने वाली ख़त की सियाही को देख रही हो तो वोह येह ए'तिक़ाद रखेगी कि येह क़लम का फ़े'ल है, उस की नज़र उंगलियों को नहीं देख सकेगी फिर उंगलियों से हाथ फिर उस से हाथ को हरकत देने के इरादे फिर इरादे से कुदरत व इरादे के मालिक कातिब फिर कातिब से हाथ, कुदरत और इरादे को पैदा करने वाले की तरफ़ भी नहीं पहुंचेगी क्यूंकि अक़षर लोगों की नज़र क़रीबी और नीचे के अस्बाब पर ठहर जाती है और मुसब्बिबुल अस्बाब तक रसाई नहीं पाती। येह इल्मे नुजूम से मन्अ करने का एक सबब है।

﴿२﴾.....इल्मे नुजूम के अहक़ाम महज़ तख़मीनी (या'नी क़ियास पर मन्नी) होते हैं। किसी ख़ास शख़्स के बारे में न यकीनी हुक्म मा'लूम होता है न ज़न्नी। लिहाज़ा इस की वजह से हुक्म लगाना जहालत से हुक्म लगाना है। इस सूरत में इल्मे नुजूम की मज़म्मत व बुराई जहालत होने के ए'तिबार से है न कि इस ए'तिबार से कि वोह इल्म है। हालांकि येह हज़रते सय्यिदुना इदरीस عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلوةُ وَالسَّلَام का मो'जिज़ा है जैसा कि मन्कूल है। लेकिन अब येह इल्म मिट गया और ना पैद हो गया है। नुजूमी की बात अगर कभी दुरुस्त होती भी है तो वोह नादर और इत्तिफ़ाकी है क्यूंकि नुजूम बसा अवक़ात एक सबब पर मुत्तलअ होता है लेकिन इस सबब के बा'द मुसब्बब नहीं पाया जाता जब तक क़षीर शराइत् न पाई जाएं और वोह शराइत् ऐसी हैं कि जिन की हकीक़तों से आग़ही इन्सानी ताक़त से बाहिर है। लिहाज़ा अगर इत्तिफ़ाक़न **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** कादिरे मुत्तलक़ दूसरे अस्बाब को भी मुक़द्दर फ़रमा दे तो नुजूमी की बात दुरुस्त होती है और अगर मुक़द्दर न फ़रमाए तो ग़लत और येह ऐसा ही है जैसे इन्सान जब देखता है कि बादल इकठ्ठे हो रहे और पहाड़ों से उठ रहे हैं तो वोह अन्दाज़ा लगा कर कहता है कि आज बारिश होगी लेकिन अक़षर सूरज निकल आता है और बादल गा़इब हो जाते हैं और कभी इस के बर अक्स भी हो जाता है। अल ग़रज़ ! सिर्फ़ बादलों का होना बारिश बरसने के लिये काफ़ी नहीं जब तक दूसरे अस्बाब मा'लूम न हों। इसी तरह मल्लाह (किशती बान) हवाओं के मुतअल्लिक़ अन्दाज़ा लगा कर बतौरे आदत कह देता है कि किशती सलामत रहेगी हालांकि इन हवाओं के कुछ मख़फ़ी अस्बाब भी हैं जिन की उसे ख़बर नहीं जिस की वजह से कभी उस का अन्दाज़ा ठीक होता है और कभी ग़लत। इसी वजह से मज़बूत और क़वी (ईमान वाले) शख़्स को भी इल्मे नुजूम सीखने से रोका गया है।

﴿3﴾.....इल्मे नुजूम का कोई फ़ाइदा नहीं, इस की कम अज़ कम हालत येह है कि येह एक फुज़ूल और बे मक्सद बात में ग़ौरो ख़ौज़ करना है और इन्सान के सब से कीमती सरमाये या'नी उम्र को एक ऐसे काम में जाँएअ करना है जिस में कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि सरासर नुक़सान है।

बे फ़ाइदा इल्म :

अब्बाह عَلِيٌّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक ऐसे शख्स के पास से गुज़रे जिस के आस पास लोग जम्अ थे। इस्तिफ़सार फ़रमाया : “येह क्या ?” लोगों ने बताया : “बहुत बड़ा अलमि है।” इरशाद फ़रमाया : “किस चीज़ का ?” अर्ज़ की : “शे'र और अरबों के नसब का।” इरशाद फ़रमाया : “येह ऐसा इल्म है जिस का फ़ाइदा नहीं और ऐसी जहालत है जिस का नुक़सान नहीं।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “इल्म तो पुख़्ता आयत, सुन्नते काइमा या अदलो इन्साफ़ पर मबनी फ़रीजा है।”⁽²⁾

लिहाज़ा पता चला कि इल्मे नुजूम और इस जैसे दीगर उलूम में ग़ौरो ख़ौज़ करना ख़तरा मौल लेना और बे फ़ाइदा जहालत में ग़ौरो फ़िक्क करना है क्यूंकि जो तक्दीर में लिखा है वोह हो कर रहेगा इस से बचना मुमकिन नहीं। लेकिन इल्मे तिब्ब का मुआमला इस के बर अक्स है इस लिये कि इस की ज़रूरत पड़ती है और इस के अकषर दलाइल पर इत्तिलाअ मिल जाती है। इसी तरह ता'बीर का मुआमला भी इल्मे नुजूम के बर अक्स है। अगर्चे येह भी तख़मीनी (क़ियासी) है लेकिन येह नबुव्वत का छियालीसवां हिस्सा है। लिहाज़ा इस में कोई ख़तरा नहीं।

तीसरी वजह : ऐसे इल्म में ग़ौरो ख़ौज़ करना जिस में ग़ौरो ख़ौज़ करने वाले को कोई इल्मी फ़ाइदा हासिल न हो, येह उसी के हक़ में बुरा है। जैसे उलूम की वाजेह और आम फ़हम बातें सीखने से पहले इस की बारीकियों और पोशीदा बातों को सीखना और अस्सारे इलाहिया में बहूष करना क्यूंकि फ़लासिफ़ा और इल्मे कलाम वालों ने इन को जानने की कोशिश की मगर वोह इन तक रसाई नहीं पा सके और अम्बियाए किराम व औलियाए उज़्ज़ाम के सिवा कोई भी इन तक रसाई नहीं पा सकता और न इन के बा'ज़ तरीकों को जान सकता है। इस लिये लोगों पर वाजिब है कि लोग इन के बारे में बहूषो मुबाहिषा करने से बाज़ रहें और जो शरीअत ने बयान

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب معرفة اصول العلم وحقائقه، الحديث: ٤٤٤، ص ٢٤٤۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الفرائض، باب ما جاء فی تعلیم الفرائض، الحديث: ٢٨٨٥، ج ٣، ص ١٢٣۔

किया उस की तरफ़ रुजूअ करें। तौफ़ीक़ याफ़्ता के लिये इतना ही काफी है। कितने लोगों ने उलूम में ग़ौरो ख़ौज़ किया मगर उन्हें नुक़सान हुआ, अगर वोह इन में ग़ौरो फ़िक्र न करते तो दीन में इस से अच्छी हालत पर होते। नीज़ इस बात का इन्कार भी नहीं किया जा सकता कि इल्म बा'ज़ लोगों के लिये नुक़सान देह होता है जिस तरह परन्दे का गोश्त और खुशगवार हल्वे की बा'ज़ अक़साम दूध पीते बच्चे को नुक़सान देती हैं। बल्कि कुछ लोगों का बा'ज़ बातों से जाहिल रहना ही उन के लिये फ़ाइदा मन्द होता है।

हिक्कायत : मोटापे का नुक़सान :

चुनान्वे, मन्कूल है कि एक शख़्स ने किसी हकीम को शिकायत की, कि उस की बीवी बांझ है अवलाद नहीं होती। हकीम ने औरत की नब्ज़ देख कर कहा : “तुझे अब बच्चा पैदा करने के लिये दवा की ज़रूरत नहीं क्यूंकि नब्ज़ देखने से पता चला है कि तू 40 दिन के अन्दर मर जाएगी।” वोह औरत बहुत ख़ौफ़ज़दा हुई, उस की ज़िन्दगी तलख़ हो गई, उस ने अपने अमवाल निकाल कर तक्सीम कर दिये, वसिय्यत की और खाना पीना भी छोड़ दिया यहां तक कि 40 रोज़ की मुद्दत गुज़र गई लेकिन उसे मौत न आई, उस का शोहर हकीम के पास गया और कहा : “वोह मरी नहीं।” हकीम ने कहा : “मुझे पता है, अब तुम उस से जिमाअ करो वोह बच्चा जनेगी।” उस ने पूछा : “वोह कैसे ?” हकीम ने कहा : “मैं ने देखा कि वोह मोटी थी और उस के रहम (बच्चा दानी) के मुंह पर चर्बी चढ़ गई थी (जो विलादत से मानेअ थी) तो मैं ने जाना कि येह सिर्फ़ मौत के ख़ौफ़ से कमज़ोर हो सकती है।” इस लिये मैं ने उसे मौत से डराया यहां तक कि अब वोह कमज़ोर हो चुकी है और विलादत की रुकावट ख़त्म हो गई है। इस हिक्कायत से मा'लूम हो गया कि बा'ज़ उलूम हासिल करने में ख़तरा होता है नीज़ इस फ़रमाने मुस्तफ़ा का मा'ना भी समझ में आ गया कि “हम ऐसे इल्म से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं जो नफ़अ न दे।”

इत्तिबाए सुन्नत में सलामती है :

इस हिक्कायत से इब्रत हासिल करो और उन उलूम के मुतअल्लिक़ बहूष न करो जिन्हें शरीअत ने मजमूम करार दिया और उन से मन्अ किया है। सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ की पैरवी को लाज़िम पकड़ लो और इत्तिबाए सुन्नत पर इक्तिफ़ा करो क्यूंकि इत्तिबाअ में सलामती है जब कि अश्या के बारे में बहूष व तहकीक़ करने में ख़तरा है। अपनी राय, अक्ल, दलील और बुरहान के ज़रीए ज़ियादा झगड़ा न करो और तुम्हारा येह गुमान कि मैं अश्या की माहि्यत व हकीक़त जानने के लिये इन के मुतअल्लिक़ बहूष करता हूं तो इल्म में ग़ौरो तफ़क्कुर का क्या नुक़सान है ? तो सुनो ! इस का जो नुक़सान तुम्हें पहुंचेगा वोह बहुत ज़ियादा है और

कितनी चीजें ऐसी हैं कि जिन पर मुत्तलअ होना तुम्हें ऐसा नुक्सान पहुंचाएगा जो तुम्हें आखिरत में तबाहो बरबाद कर डालेगा मगर यह कि **اَبْوَاثُ عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें अपनी रहमत से नवाज दे और जान लो ! जिस तरह माहिर तबीब मुआलजात के अस्सार पर मुत्तलअ होता है और जो इन अस्सार से बे ख़बर हो वोह इन्हें बर्इद समझता है इसी तरह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام दिलों के तबीब और हयाते उख़रविया के अस्बाब से बा ख़बर हैं इस लिये तुम अपनी अक्ल को इन के तरीकों पर तरजीह न दो वरना हलाक हो जाओगे ।

कितने लोग ऐसे हैं कि जब उन की उंगली में कोई अरिज़ा लाहिक होता है तो उन की अक्ल फैसला करती है कि उंगली पर लेप कर दिया जाए जब कि तबीबे हाज़िक उन्हें बताता है कि इस का इलाज यह है कि उंगली की दूसरी जानिब लेप किया जाए तो वोह इसे बहुत ज़ियादा बर्इद समझते हैं क्योंकि वोह पुठों के फूटने और निकलने की कैफ़ियत और इन के बदन पर फैलने की सूरत से नावाक़िफ़ होते हैं । इसी तरह तरीके आखिरत, शरीअत के तरीकों और आदाब की बारीकियों का मुआमला है और जो अक़ीदे लोगों के लिये मुकर्रर हैं इन में ऐसे अस्सार और बारीकियां हैं कि इन का इहाता अक्ले इन्सान की कुव्वत व वुस्अत से बाहर है । जैसा कि पथ्थरों के ख़वास में बा'ज ऐसी अजीब बातें होती हैं जो अहले फ़न को भी मा'लूम नहीं होतीं । यहां तक कि कोई येह नहीं जान सका कि मिक्नातीस लोहे को क्यूं खींचता है ।

अक़ाइद व आ'माल के अजाइब व ग़राइब और फ़वाइद दवाओं और जड़ी बूटियों के फ़वाइद से ज़ियादा और अजीम हैं । येह दिलों की सफ़ाई, पाकीज़गी और तह़ारत व तज़किया का फ़ाइदा देते हैं । इन्हें संवारने से कुर्बे खुदावन्दी में तरक्की होती और फ़ज़ले इलाही की खुशबूएं हासिल होती हैं । जिस तरह अक्लें अदवियात के फ़वाइद का इदराक नहीं कर सकतीं हालांकि इन का तजरिबा भी हो सकता है तो फिर उन अक़ाइदो आ'माल का इदराक करने से भी कासिर हैं जो उख़रवी जिन्दगी में नफ़अ देंगे जब कि इन का तजरिबा भी नहीं किया जा सकता और इन का तजरिबा महज़ यूं हो सकता है कि कोई मुर्दा हमारे पास आ कर हमें बता दे की येह आ'माल मक्बूल, नफ़अ मन्द और कुर्बे इलाही का ज़रीआ हैं और येह आ'माल रहमते इलाही से दूरी का बाइष हैं । इसी तरह अक़ाइद के बारे में भी बता दे लेकिन इस की उम्मीद नहीं की जा सकती इस लिये तुम्हें अक्ल का इतना फ़ाइदा काफ़ी है कि वोह तुम्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सच्चा जानने की हिदायत दे और उन के इशारों के मक़ासिद समझाए । बस इस के बा'द अक्ल का अमल तर्क कर दो और इत्तिबाअ को लाज़िम कर लो । इसी इत्तिबाअ और तस्लीम करने में तुम्हारी सलामती है । इसी लिये मदीने के ताजदार, बिइज़ने परवर दगार, दो आलम के मालिको

मुख्तार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “बा’ज इल्म जहालत होते हैं और बा’ज बाते थकावट (का बाइष) होती हैं।”⁽¹⁾

ज़ाहिर है कि इल्म जहालत नहीं होता लेकिन नुक़सान देने में वोह जहालत जैसा अघर करता है। नीज़ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह भी इरशाद फरमाया कि “थोड़ी तौफ़ीक़ ज़ियादा इल्म से बेहतर है।”⁽²⁾

उलूम दरख़्तो और फलों की मानिन्द हैं :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फरमाया : “दरख़्त कितने ज़ियादा हैं लेकिन सब फल नहीं देते और न ही सब फल उम्दा होते हैं इसी तरह उलूम कितने ज़ियादा हैं लेकिन सब नफ़अ नहीं देते।”⁽³⁾

दूसरी फ़स्ल : अल्फ़ाजे उलूम में तब्दीली का बयान

जान लो ! बुरे उलूम उलूमे शरइय्या के साथ इस लिये मिल गए हैं कि लोगों ने अग़राजे फ़ासिदा की वजह से अच्छे नामों में तहरीफ़ कर के इन्हें बदल दिया और सलफ़े सालिहीन व करने अव्वल वाले इन के जो मअानी मुराद लेते थे उन्हें इन के इलावा दूसरे मअानी की तरफ़ मुन्तक़िल कर लिया। ऐसे पांच अल्फ़ाज कि जिन्हें लोगों ने बुरे मअानी की तरफ़ फैर लिया : (1) फ़िक़ह (2) इल्म (3) तौहीद (4) तज़कीर (वा’जो नसीहत) और (5) हिक़मत। येह नाम अच्छे हैं और इन से मुत्सिफ़ लोगों का दीन में बड़ा मक़ाम है लेकिन अब इन्हें बुरे मअानी में मुन्तक़िल कर लिया गया है और चूँकि येह नाम उन लोगों पर बोले जाते थे इस लिये अब जो लोग उन से मुत्सिफ़ हैं इन की मज़म्मत से दिल नफ़रत करते हैं।

तफ़शील :

﴿.....﴾...फ़िक़ह : इसे दूसरे मा’ना की तरफ़ मुन्तक़िल करने की तहरीफ़ तो नहीं की लेकिन इसे उस के साथ ख़ास कर लिया जो फ़तवा की नादिर जुज़इयात को जाने, इन की इल्लतों की बारीकियों पर मुत्तलअ हो, इस में बहुत ज़ियादा कलाम करता और इस के मुत्अल्लिक़ मक़ाले याद करता हो। जो इन में बहुत ज़ियादा ग़ौरो फ़िक़र करता और ज़ियादा मशगूल रहता है उसे बड़ा फ़कीह कहा जाता है। हालांकि पहले ज़माने में मुत्तलक़न इल्मे तरीके आख़िरत, आफ़ाते नफ़्स

①.....سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی الشعر، الحدیث: ۵۰۱۲، ج ۴، ص ۳۹۴۔

②.....كشف الخفاء، حرف القاف، الحدیث: ۱۸۸۰، ج ۲، ص ۹۱۔

③.....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، حواریو عیسی ابن مریم علیه السلام: ۸۹۹۶، ج ۲، ص ۶۶۔

ربیع الابرار، باب العلم والحکمة.....الخ، ص ۳۱۔

की बारीकियों की मा'रिफ़त, मुफ़सिदाते आ'माल, दुन्या की ह़कारत का पूरा इहाता करने, आख़िरत की ने'मतों के अच्छी तरह वाक़िफ़ होने और दिल पर ख़ौफ़ के ग़ालिब रहने का नाम फ़िक्ह था। इस की दलील **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह इरशाद है :

لِيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ
إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ

(پ ۱۱، التوبة: ۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि दीन की समझ
हासिल करें और वापस आ कर अपनी क़ौम को
डर सुनाएं।

लिहाज़ा जिस फ़िक्ह से डराना और ख़ौफ़ दिलाना हासिल होता है वोह येही है न कि
तलाक़, इताक़, लिआन, सलम और इज़ारा के मसाइल क्यूंकि इन से डराना और ख़ौफ़ दिलाना
हासिल नहीं होता बल्कि हमेशा इसी में लगे रहने से दिल सख़्त होता और दिल से ख़ौफ़े खुदा
निकल जाता है। जैसा कि अब हम उन लोगों का हाल देखते हैं जो सिर्फ़ इसी के हो कर रह गए
और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا

(پ ۹، الاعراف: ۱۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह दिल रखते हैं जिन
में समझ नहीं।

इस में ईमान के मअानी न समझना मुराद है, फ़तावा को न समझना मुराद नहीं। मेरी
ज़िन्दगी की क़सम ! लुग़त में फ़िक्ह और फ़हम दोनों एक ही मा'ना में इस्ति'माल होते हैं और
पहले और अब भी अ़दतन इन का इस्ति'माल इसी मा'ना में होता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَا أَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ
مِّنَ اللَّهِ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ

(پ ۲۸، الحشر: ۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक उन के दिलों में
अल्लाह से ज़ियादा तुम्हारा डर है येह इस लिये
कि वोह ना समझ लोग हैं।

इस आयत में उन के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कम डरने और लोगों के दब दबे को ज़ियादा
जानने की वजह इन की क़िल्लते फ़िक्ह बताया। लिहाज़ा तुम ग़ौर करो कि येह फ़तवा की
तफ़रीआत याद न करने का नतीजा है या जो उलूम हम ने बयान किये इन के न होने का। सरकारे
मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में जो लोग वफ़्द की सूरत में हाज़िर
होते थे उन के लिये इरशाद फ़रमाया : “येह अहले इल्म, दाना और समझदार हैं।”^(۱)

①.....الفقيه والمتفقه، ذکر تقسیم امیر المؤمنین علی بن ابی طالب.....الخ، الرقم: ۱۷۸/۱۷۹، ج ۱، ص ۱۸۵۔

سنن دارمی، المقدمة، باب فی فضل العلم والعالم، الرقم: ۳۲۹/۳۳۰، ج ۱، ص ۱۰۷۔

सब से बड़ा फ़कीह :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन इब्राहीम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ से पूछा गया कि “अहले मदीना में बड़ा फ़कीह कौन है ?” फ़रमाया : “वोह जो इन में से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से ज़ियादा डरता है ।”⁽¹⁾

इस में गोया फ़िक्ह के नतीजे की तरफ़ इशारा है और तक्वा इल्मे बातिन का षमरा है न कि फ़तवा और क़ज़ाया का । चुनान्वे, रसूलों के सालार, महबूबे परवर दगार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें कामिल फ़कीह के बारे में न बताऊं ?” अर्ज़ की गई : “क्यों नहीं ।” इरशाद फ़रमाया : “वोह जो लोगों को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रहमत से मायूस न करे, **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की खुफ़्या तदबीर से बे ख़ौफ़ न करे, **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के फ़ैज़ाने रहमत से ना उम्मीद न करे और कुरआने पाक से किसी और चीज़ की तरफ़ रग़बत न करे ।”⁽²⁾

गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्दीदा अमल :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे अम्बिया, महबूबे किब्रिया صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने वालों के साथ सुब्ह से तुलूआफ़ तक बैठना मुझे चार गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्द है ।”⁽³⁾

रावी फ़रमाते हैं : येह हदीष बयान करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने यज़ीद रक्काशी और ज़ियाद नमीरी की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “उस वक़्त ज़िक्र की महाफ़िल तुम्हारी महफ़िलों जैसी न थीं । तुम्हारी महाफ़िल तो ऐसी हैं कि तुम में से कोई एक अपने रुफ़का को वा'ज़ करता है और बहुत तेज़ बोलता है जब कि हम अपनी महफ़िलों में बैठ कर ईमान का तज़क़िरा करते, कुरआने हकीम में ग़ौरो फ़िक्र करते, दीन समझते और दीन की समझ के लिये खुद पर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ने'मतों को शुमार करते थे ।”⁽⁴⁾

①.....سنن الدارمی، المقدمة، باب من قال: العلم، الخشية، وتقوى الله، الرقم: ۲۹۵، ج ۱، ص ۱۰۱۔

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب من يستحق أن يسمى فقيها أو عالما، الحديث: ۸۵۸، ص ۳۰۴۔

③.....سنن ابی داود، کتاب العلم، باب فی القصص، الحديث: ۳۶۶۷، ج ۳، ص ۴۵۲۔

کتاب الدعاء للطبرانی، باب فضل ذکر الله من صلاة الصبح الى.....الخ، الحديث: ۱۸۷۸، ص ۵۲۴۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۵۹۔

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कुरआने पाक में गौरो फ़िक्र करने और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें शुमार करने को फ़िक़ह का नाम दिया ।

सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
“बन्दा उस वक़्त तक कामिल फ़कीह नहीं बन सकता जब तक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की खातिर लोगों को नाराज़ न कर ले और कुरआने पाक के लिये कई वुजूह का ए'तिक़ाद न रखे ।”(1)

येह हदीषे पाक हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से भी मौकूफ़न मरवी है और इस में इतना ज़ाइद है कि “फिर अपने नफ़्स की तरफ़ मुतवज्जेह हो तो इस से बहुत ज़ियादा नाराज़ हो ।”(2)

कामिल फ़कीह की अ़लामत :

हज़रते सय्यिदुना फ़रक़द सनजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى ने हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى से किसी चीज़ के बारे में पूछा, आप ने इस का जवाब दिया तो उन्होंने ने अर्ज़ की :
“फ़ुक़हा तो इस के बारे में येह फ़रमाते हैं ।” तो हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى ने फ़रमाया : “ऐ फ़ुरैक़द ! (येह फ़रक़द की तसगीर है) तुझे तेरी मां रोए ! क्या तू ने अपनी आंखों से किसी फ़कीह को देखा है ?” फ़कीह तो वोह होता है जो दुन्या से बे रग़बती और आख़िरत में रग़बत रखता हो, अपने दीन की समझ रखता हो, परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की इबादत पर हमेशगी इख़्तियार करता हो, परहेज़गार हो, मुसलमानों की इज़्ज़तों के दरपै होने से खुद को बचाता हो, उन के मालों पर नज़र न रखे और अ़ाम मुसलमानों का ख़ैर ख़्वाह हो ।”(3)

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने येह नहीं फ़रमाया कि फ़तवा की फ़रोअत का हाफ़िज़ हो, मैं नहीं कहता कि लफ़्ज़े फ़िक़ह ज़ाहिरी अहक़ाम के फ़तवा को शामिल नहीं बल्कि ब तरीक़े उ़मूम व शुमूल और बित्तबअ इन्हें भी शामिल है लेकिन अस्लाफ़ इस का इत्लाफ़ अक़षर इल्मे आख़िरत पर करते थे । इस तख़्सीस से उन लोगों का फ़रैब ज़ाहिर हो गया जो दिल के अहक़ाम और इल्मे आख़िरत से गाफ़िल हो कर महज़ इसी के हो कर रह गए और उन्होंने ने इस पर सिर्फ़ तबीअत

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب من يستحق ان يسمى فقيها او عالماً، الحديث: ٨٥٩، ص ٣٠٥-

②.....جامع معمر بن راشد مع مصنف عبدالرزاق، باب العلم، الرقم: ٢٠٦٢٠، ج ١٠، ص ٢٣٩-

تاريخ دمشق لابن عساكر، عويمر بن زيد ابو الدرداء: ٥٢٦٢، ج ٢، ص ٤٣١-

③.....سنن الدارمی، المقدمة، باب من قال: العلم، خشية وتقوى الله، الرقم: ٢٩٢، ج ١، ص ١٠١-

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٣-

को मुआविन पाया क्योंकि इल्मे बातिन गहरा, इस पर अमल करना मुश्किल और इस के ज़रीए हुकूमत, ओहदए कज़ा और इज़्ज़त व माल का हुसूल दुश्वार होता है। इस वजह से शैतान ने इस (या'नी ज़ाहिरी फ़िक़ह) को लोगों के दिलों में उमदा बनाने का मौक़अ पाया वोह यूं कि फ़िक़ह जो शरअ में एक पसन्दीदा नाम है इसे ख़ास कर दिया।

﴿2﴾....इल्म : येह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, उस की निशानियों और बन्दों के बारे में उस के अफ़अल (की ह़िक्मतों) को जानने पर बोला जाता था यहां तक कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के विसाले पुर मलाल पर हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “इल्म के दस में से नव हिस्से चले गए।”⁽¹⁾ इन्होंने ने लफ़्ज़े इल्म को अलिफ़ लाम के साथ मा'रुफ़ा ज़िक़्र किया फिर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के इल्म के साथ इस की वज़ाहत की। लोगों ने तसररुफ़ कर के इस में भी तख़्सीस कर दी वोह यूं कि उन्होंने ने इस लफ़्ज़ को उस के साथ मशहूर कर दिया है जो फ़िक़ही मसाइल में मद्दे मुक़ाबिल से मुनाज़िरा करने में मशगूल हो। चुनान्वे, (मुनाज़िर के बारे में) कहा जाता है कि ह़कीक़त में अ़ालिम तो वोह है। वोह इल्म में मर्द है और इस के बर अक्स जो इस फ़न में महारत नहीं रखता और न इस में मशगूल होता है उसे कमजोरों में शुमार किया जाता है, अहले इल्म के जुमरे में शुमार नहीं किया जाता। येह भी तख़्सीस के ज़रीए तसररुफ़ है लेकिन इल्म और उ-लमा के मुतअल्लिक़ मरवी फ़ज़ाइल अकषर उन के बारे में हैं जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, उस के अहक़ाम व अफ़अल और सिफ़ात का इल्म रखते हैं। लेकिन अब मुतलक़न इस का इतलाक़ उन पर किया जाता है जिन्हें शरई उलूम में से किसी में भी महारत हासिल न हो बल्कि सिर्फ़ इख़्तिलाफ़ी मसाइल में झगड़ने के तरीक़े जानता हो, उस का शुमार बड़े बड़े उ-लमा में किया जाता है हालांकि वोह तफ़्सीर, अह़ादीष और इल्मे मज़हब वगैरा से जाहिल होता है और कषीर तलबए इल्म की हलाक़त व बरबादी का सबब येही चीज़ है।

﴿3﴾....तौहीद : अब हालत येह है कि इल्मे कलाम और मुनाज़िरा करने के तरीक़ों को जानने, मुख़ालिफ़ के ए'तिराज़ात तोड़ने के तरीक़ों का इहाता करने, कषरते सुवाल के लिये ब तकल्लुफ़ फ़साहत का इज़हार करने, शुबहात डालने और इलज़ाम तराशी करने का नाम तौहीद रख दिया गया। ह़त्ता कि बा'ज़ गुरौहों ने अपना लक़ब अहले अद्ल और अहले तौहीद रख लिया है और मुतकल्लिमीन को उ-लमाए तौहीद कहा जाने लगा है हालांकि पहले ज़माने में इल्मे कलाम की

खास बातों में से किसी चीज़ को नहीं पहचाना जाता था बल्कि वोह लोग इख़िलाफ़ात और झगड़ों का दरवाज़ा खोलने वाले को सख़्त नापसन्द करते थे। बहर हाल जिन जाहिरी दलाइल पर कुरआने पाक मुश्तमिल है और पहली समाअत पर ही जिन्हें क़बूल करने में ज़ेहन जल्दी करते हैं, वोह सब को मा'लूम थे और कुरआने पाक का इल्म ही तमाम इल्म था। उन के नज़दीक तौहीद किसी और चीज़ का नाम था जिसे अक़षर इल्मे कलाम वाले नहीं समझते और अगर समझें तो इस से मुत्तसिफ़ नहीं होते।

हकीकी तौहीद :

तमाम उमूर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से होने का ऐसा ए'तिकाद रखा जाए कि अस्बाब व वसाइल की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह न रहे। हर ख़ैरो शर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से जाना जाए। येह एक मुअज़्ज़ज़ मक़ाम व मर्तबा है। इस के नताइज व फ़वाइद में से एक तवक्कुल भी है जिस का बयान “**کتاب التَّوَكُّلِ**” में आएगा।

तौहीद के फ़वाइद व षमरात :

तौहीद के षमरात में से एक येह भी है कि मख़्लूक की शिकायत न की जाए, उन पर गुस्सा न किया जाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म और फैसले को तस्लीम करते हुए इस पर रिज़ामन्दी का इज़हार किया जाए, इसी के षमरात में से अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का येह क़ौल है कि जब बीमारी में आप से अर्ज़ की गई : “क्या हम आप के लिये तबीब को ले आएँ?” तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “तबीब ही ने तो मुझे बीमार किया है।”⁽¹⁾ नीज़ येह भी मन्कूल है कि जब आप बीमार हुए और पूछा गया कि “तबीब ने आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के मरज़ के बारे में क्या कहा है?” तो फ़रमाया : “तबीब ने कहा है कि मैं जो चाहता हूँ करता हूँ।”⁽²⁾

अन क़रीब “**کتاب التَّوَكُّلِ**” और “**کتاب التَّوَحُّدِ**” में इस के दलाइल बयान होंगे।

तौहीद एक नफ़ीस जौहर है और उस के दो पोस्त (छिलके) हैं एक दूसरे की ब निस्बत मरज़ से ज़ियादा दूर है। लोगों ने लफ़्ज़े तौहीद को पोस्त (छिलके) और इस की हिफ़ाज़त के काम के साथ खास कर दिया है और मरज़ को (जो कि ख़ालिस तौहीद है इसे) बिल्कुल छोड़ दिया है।

①.....الزهد للإمام احمد بن حنبل، زهد ابی بكر الصديق، الرقم: ٥٨٤، ص ١٢٢۔

②.....المصنف لابن ابی شيبه، كتاب الزهد، كلام ابی بكر الصديق، الحديث: ١٠، ج ٨، ص ١٢٦۔

तौहीद का पहला पोस्त तो यह है कि तू अपनी ज़बान से कहे : **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** या'नी **अल्लाह** के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं। इस तौहीद को तषलीष (या'नी खुदा तीन हैं बाप, बेटा और रूहुल कुदुस। **نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ ذَلِكَ**) के खिलाफ़ तौहीद कहा जाता है जिस के नसारा क़ाइल हैं लेकिन कभी उस मुनाफ़िक़ से भी इस तौहीद का सुदुर हो जाता है जिस का बातिन उस के ज़ाहिर के खिलाफ़ होता है। **तौहीद का दूसरा पोस्त** यह है कि दिल में इस कौल की मुख़ालफ़त और इस का इन्कार न हो बल्कि ज़ाहिर दिल भी इस के ए'तिक़ाद और तस्दीक़ को शामिल हो और यह अ़ाम लोगों की तौहीद है। इल्मे कलाम वाले इसी पोस्त को अहले बिदअत की गड़ बड़ से बचाते हैं जैसा कि पीछे गुज़रा। **तीसरी चीज़** मज़े तौहीद है और वोह यह है कि तमाम उमूर के **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से होने का ऐसा ए'तिक़ाद रखा जाए कि अस्बाब व वसाइल की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह न रहे। सिर्फ़ एक खुदा की इबादत की जाए, उस के ग़ैर की इबादत न की जाए।

हकीकी तौहीद से ख़ारिज उमूर :

(1) इस तौहीद से ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी ख़ारिज है और हर वोह शख़्स जिस ने ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी की उस ने ख़्वाहिशे नफ़्स को अपना मा'बूद बना लिया। **अल्लाह** रब्बुल इबाद **عَزَّوَجَلَّ** का इरशादे हकीक़त बुन्याद है।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ

(پ ۲۵، الجاثية: ۲۳)

तर्जमए कज़ुल ईमान : भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश को अपना खुदा ठहरा लिया।

ताजदारे अम्बिया, महबूबे किब्रिया **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** के नज़दीक सब से ज़ियादा नापसन्दीदा मा'बूद ज़मीन पर जिस की परस्तिश की जाए वोह ख़्वाहिशे नफ़्स है।⁽¹⁾

मिषाल : तहकीक़ यह है कि जो ग़ौर करेगा वोह जान लेगा कि बुत की पूजा करने वाला दर हकीक़त बुत को नहीं बल्कि अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स को पूजता है क्यूंकि उस का नफ़्स उस के आबा व अजदाद के दीन की तरफ़ माइल होता है और वोह इस मैलान की इत्तिबाअ करता है और नफ़्स का अपनी पसन्दीदा बातों की तरफ़ माइल होना उन्ही मअानी में से एक है जिन्हें ख़्वाहिशाते नफ़्सानिया से ता'बीर किया जाता है।

①.....المعجم الكبير، الحديث: ۴۵۰۲، ج ۸، ص ۱۰۳۔

الكامل في ضعفاء الرجال لابن عدى، خُصِّيب بن جَحْدَر البصري: ۶۱۸، ج ۳، ص ۵۲۲۔

(2) लोगों से नाराज़ होना और उन की तरफ़ मुतवज्जेह होना भी इस तौहीद से ख़ारिज है क्यूंकि जो तमाम उमूर को मिन जानिबिल्लाह जानेगा वोह किसी से नाराज़ क्यूं होगा। हकीकी तौहीद इसी मक़ाम का नाम है और येह सिद्दीकीन का मक़ाम है।

पस तुम ग़ौर करो कि इसे किस मा'ना की तरफ़ बदल दिया गया और इस के किस पोस्त पर क़नाअत कर ली गई। किस तरह लोगों ने अपनी ता'रीफ़ और फ़ख़्र में उस नाम से इस्तिदलाल किया जो महमूद है लेकिन उस मा'ना से ख़ाली है जिस की वजह से हकीकी ता'रीफ़ का इस्तिहकाक है। येह उस इफ़लास (गुर्बत) की तरह है कि कोई सुब्ह सवेरे उठे और क़िब्ला की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर कहे :

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ حَنِيفًا (پ، الانعام: ٧٩)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ने अपना मुंह उस की तरफ़ किया जिस ने आस्मान और ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर। (1)

अब अगर उस का दिल ख़ास **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं तो वोह हर दिन का आगाज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से झूट बोल कर करता है। क्यूंकि अगर मुंह से उस की मुराद ज़ाहिरी चेहरा है तो वोह तो का'बा शरीफ़ की तरफ़ है कि उसे इस ने बाकी तमाम जहत्तों से फैर दिया लेकिन का'बा उस की जहत नहीं जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए कि उस की सप्त तवज्जोह करने से वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह होने वाला कहलाए, वोह तो इस से पाक और बुलन्द है कि सप्तों और कनारों से उस का तअय्युन किया जाए और अगर उस की मुराद क़ल्बी तवज्जोह है जो इबादत में अस्ल मतलूब है तो फिर इस हालत में उस के क़ौल की तस्दीक कैसे की जा सकती है जब कि उस का दिल दुन्यवी अग़राज़ व हाजात में लगा हो और मालो जाह और कषरते अस्बाब को जम्अ करने के हिलों की तलाश में मसरूफ़ हो और मुकम्मल तौर पर उन्हीं की तरफ़ मुतवज्जेह हो तो फिर कब उस ने अपनी तवज्जोह इस की तरफ़ की जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए। येह आयत तौहीद की हकीक़त का बयान है।

तौहीद का मर्कज़ व सर चश्मा :

पस मवहिहद वोह है जिस की नज़र सिर्फ़ एक खुदाए बुजुर्ग व बरतर की तरफ़ हो और वोह अपनी तवज्जोह उसी की जानिब लगाए रखे और येह इस इरशादे बारी तअाला की ता'मील है :

قُلِ اللَّهُ لَا شَئَ دَرَهُمْ فِي خَوْضِهِمْ
يَعْبُونَ (پ، الانعام: ٩١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहूदगी में खेलता।

इस से मुराद महज ज़बान से कह देना नहीं क्योंकि ज़बान तो दिल की तर्जमान होती है कभी सच बोलती है तो कभी झूट और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नज़र का मक़ाम तो वोह है जिस की तर्जमानी ज़बान करती है और वोह दिल है और येही तौहीद का मर्कज़ और सर चश्मा है ।

﴿4﴾.....ज़िक्रो तज़कीर : **अल्लाह** रब्बुल इबाद عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

وَذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرَ يَتَذَكَّرُ الْمُؤْمِنِينَ ۝
(پ ۲، الذّٰر: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और समझाओ कि समझाना मुसलमानों को फ़ाइदा देता है ।

महाफ़िले ज़िक्र की फ़ज़ीलत :

ज़िक्र की महाफ़िल की फ़ज़ीलत में कषीर अह्दादीष मरवी हैं । चुनान्वे, हुज़ूर नबिये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम जन्नत की क्यारियों से गुज़रो तो कुछ न कुछ चुन लिया करो ।” अर्ज़ की गई : “जन्नत की क्यारियां क्या हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “ज़िक्र के हल्के ।”⁽¹⁾

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मख़्लूक के फ़िरिशतों के इलावा भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिशते हैं जो दुनिया में सय्याहत (सेर) करते हैं, जब वोह ज़िक्र की महाफ़िलें देखते हैं तो उन में से बा'ज़, बा'ज़ को पुकारते हैं और कहते हैं : आओ ! अपने मक्सूद की तरफ़ । वोह वहां आते हैं, ज़िक्र करने वालों को घेर लेते हैं और ग़ौर से सुनते हैं । सुनो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र किया करो और अपने आप को नसीहत किया करो ।⁽²⁾

इस लफ़ज़ को इस के हकीकी मा'ना से बदल दिया गया है कि अब इस का इतलाक़ उस पर किया जाता है जिसे अकषर वाइज़ीन हमेशा बयान करते हैं और वोह किस्से, अश्आर, शतह और तामात हैं (मुअख़िबुरुज़्ज़िक्र दोनों की वज़ाहत आगे आ रही है) । किस्से बिदअत हैं और अस्लाफ़ ने किस्सा गो के पास बैठने से मन्अ़ फ़रमाया है । इस लिये कि किस्से न तो ज़मानए रिसालत में थे और न ही शैख़ैन या'नी अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) के ज़माने में यहां तक कि फ़ितना पैदा हुवा और किस्सा गो ज़ाहिर हुए ।⁽³⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب: ۸۷، الحدیث: ۳۵۲۱، ج ۵، ص ۳۰۴۔

②.....سنن الترمذی، باب ماجاء ان اللّٰه ملائکة سیاحین فی الارض، الحدیث: ۳۶۱۱، ج ۵، ص ۳۴۴۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب القصص، الحدیث: ۳۷۵۴، ج ۴، ص ۲۲۷۔

المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الادب، من کره القصص وضرب فیہ، الحدیث: ۱، ج ۶، ص ۱۹۶۔

किस्सा गो वाइजीन की मजूमत :

मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا (अचानक) मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : “मैं किस्सा गो की वजह से बाहर निकला हूं, अगर वोह न होता तो मैं बाहर न आता ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना ज़मरा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से पूछा : “क्या हम किस्सा गो की तरफ़ मुंह कर सकते हैं ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “बिदअतियों से अपनी पीठें फैर लो ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने औन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बयान करते हैं कि मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सिरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُسِين की खिदमत में हाज़िर हुवा तो उन्होंने ने पूछा : “आज की क्या ख़बर है ?” मैं ने अर्ज की : “हाकिम ने किस्सा गो लोगों को किस्से बयान करने से रोक दिया है ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “हाकिम को दुरुस्त बात की तौफीक़ नसीब हुई है ।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बसरा की जामेअ मस्जिद में दाख़िल हुए तो एक किस्सा गो को किस्सा बयान करते हुए देखा वोह कह रहा था कि “हमें हज़रते सय्यिदुना इमाम आ'मश रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बयान किया ।” आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हल्के के बीच में जा बैठे और बग़ल के बाल उखेड़ने लगे । किस्सागो ने कहा : “ऐ शैख़ ! क्या तुम्हें हया नहीं आती ?” फ़रमाया : “किस वजह से, मैं तो सुन्नत पर अमल कर रहा हूं जब कि तुम झूट बोल रहे हो, मैं आ'मश हूं और मैं ने तो तुम से कोई हदीष बयान नहीं की ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل ने फ़रमाया : “लोगों में सब से ज़ियादा झूट बोलने वाले किस्सा गो और भिकारी हैं ।”⁽⁴⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने बसरा की जामेअ मस्जिद से किस्सा गो लोगों को निकाल दिया । जब हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى का कलाम सुना तो उन्हें न निकाला क्यूंकि आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى इल्मे आख़िरत,

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٠-

②.....المرجع السابق- ③.....المرجع السابق، بدون: وفق اللصواب-

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٠-

मौत को याद दिलाने, नफ़्स के ऐबों पर आगाह करने, आ'माल की आफ़ात, शैतानी वस्वसों और इन से बचने के तरीके बयान कर रहे थे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों को याद दिलाने और उस का शुक्र करने में बन्दे के कोताह होने के बारे में कलाम कर रहे थे। दुन्या की हक़ारत, इस के उयूब, इस की हलाकतों और इस के बे वफ़ा होने की पहचान करवा रहे थे। आख़िरत के ख़तरात और इस की होलनाकियां बयान कर रहे थे। येह अन्दाज़े नसीहत शरीअत को पसन्द है और हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी हदीष में इस की तरगीब भी मौजूद है। चुनान्वे,

ज़िक्र की महफ़िल में हाज़िर होने की फ़ज़ीलत :

मरवी है कि ज़िक्र की मजलिस में हाज़िर होना हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है और इल्म की मजलिस में हाज़िर होना हज़ार मरीज़ों की इयादत करने और हज़ार जनाज़ों में शिर्कत करने से अफ़ज़ल है। अर्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कुरआने पाक की तिलावत से भी अफ़ज़ल है ?” इरशाद फ़रमाया : “क्या तिलावते कुरआन इल्म के बिगैर नफ़अ मन्द है ?” (1)

हज़रते सय्यिदुना अता رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ ने फ़रमाया : “ज़िक्र की मजलिस ग़फ़लत की 70 मजलिसों का कफ़ारा है।” (2)

चिकनी चुपड़ी बातें करने वालों ने इन अह्दादीष को अपने नफ़्सों की पाकीज़गी व सफ़ाई पर हुज्जत बना लिया और लफ़्ज़े तज़कीर को अपनी खुराफ़ात की तरफ़ फ़ैर लिया और शरअन पसन्दीदा ज़िक्र के रास्ते से हट कर उन क़िस्सों में मशगूल हो गए जिन में इख़िलाफ़ात और कमी बेशी है। कुरआने मजीद में बयान कर्दा वाक़िअत इन क़िस्सों से ख़ारिज और जाइद हैं क्यूंकि बा'ज क़िस्से सुनने से फ़ाइदा होता है और बा'ज का सुनना नुक़सान का बाइष है अगर्चे वोह सच्चे ही क्यूं न हों। जो खुद पर येह दरवाज़ा खोलता है उस पर सच और झूट, नफ़अ बख़्श और नुक़सान देह ख़लत्-मलत् हो जाता है। इसी वजह से इस से मन्अ किया गया है और येही सबब है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهُ الْاَوَّل ने फ़रमाया : “लोगों को सच्चे वाक़िअत बयान करने वाले की कितनी ज़रूरत है।” (3)

अगर क़िस्सा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दीनी उमूर से मुतअल्लिक़ हो और क़िस्सा बयान करने वाला भी सच्चा और सहीह रावी हो तो मैं उसे बयान करने में कोई मुज़ाइका

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنيا.....الخ، ج 1، ص 254-

②.....المرجع السابق- ③.....المرجع السابق، ص 260-

नहीं समझता। उसे चाहिये कि झूट से बचे और उन अहवाल को बयान न करे जिन में लगज़िशों या सुस्तियों की तरफ़ इशारा हो या अ़वाम जिन के मतालब न समझ सकें या येह न समझ सकें कि वोह लगज़िश नादिर थी और इस के बा'द इस के कफ़ारे में कई नेकियों के ज़रीए इसे ढांप दिया गया क्यूंकि अ़म शख़्स अपनी लगज़िशों और सुस्तियों में इस का सहारा लेगा और इस में अपने लिये बहाने तलाश करेगा और इस से दलील पकड़ेगा कि बयान किया गया है कि बा'ज़ बुजुर्गाने दीन और बा'ज़ अकाबिरीन से फुलां फुलां ख़ताएं हुई हैं, हम सब गुनाहों की राह पर हैं इस लिये अगर मुझ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी हो गई है तो क्या तअज़्जुब है जब कि जो मुझ से बड़े हैं उन से भी नाफ़रमानियां हुई हैं और येह चीज़ ग़ैर शऊरी तौर पर उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर दिलैर कर देगी अगर इन दो ममनूअ बातों से बचा जाए तो इस में कोई मुज़ाइका नहीं और उस वक़्त येह अच्छे वाकिआत और कुरआने पाक और अहादीषे मुबारका की सहीह कुतुब में बयान कर्दा किस्सों की तरफ़ मराजिअत करेगा। बा'ज़ लोगों ने ताआत की रग़बत दिलाने वाली हिकायात वज़अ करने (घड़ने) की इजाज़त दी है। उन का गुमान है कि ऐसी हिकायात वज़अ करने का मक़सद लोगों को हक़ की तरफ़ बुलाना है, लेकिन येह शैतानी वस्वसों में से है क्यूंकि सच में झूट से बचने की बहुत गुनजाइश है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नसीहत के लिये जो बयान फ़रमा दिया वोही काफी है, वज़अ करने और घड़ने की कोई हाज़त नहीं। नीज़ इस की इजाज़त क्यूंकर हो सकती है जब कि मुक़फ़ा व मुसज्जअ कलाम करने का तकल्लुफ़ भी नापसन्दीदा है और इसे तसन्नुअ (बनावट) शुमार किया गया है। चुनान्वे,

तकल्लुफ़ से कलाम करने की मुमानअत :

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने बेटे उमर को मुसज्जअ कलाम करते सुना तो फ़रमाया : “इसी चीज़ ने तुझे मेरी नज़र में नापसन्दीदा बना दिया है, मैं उस वक़्त तक हरगिज़ तेरी कोई हाज़त पूरी नहीं करूंगा जब तक तू इस से तौबा न कर ले।” हालांकि उस वक़्त वोह आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के पास किसी काम से आए थे।

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन रवाहा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से तीन मुसज्जअ कलिमात सुने तो फ़रमाया : “ऐ इब्ने रवाहा मुसज्जअ कलाम से बचो।”⁽¹⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۸۶۔

مسندابی یعلیٰ الموصلی، مسند عائشہ، الحدیث: ۴۴۵۸، ج ۴، ص ۸۸۔

सजअ (काफ़ियादार) वोह मन्अ है जिस में तकल्लुफ़ हो और वोह कलाम दो कलिमों से ज़ियादा पर मन्नी हो। इसी वजह से जब किसी शख्स ने जनीन (या'नी पेट के बच्चे) की दैत के बारे में (मुसज्जअ कलाम करते हुए) कहा : **”كَيْفَ نَدَى مَنْ لَشَرِّبَ وَلَا أَكَلَ وَلَا صَاَحَ وَلَا اسْتَهَلَ وَمِثْلُ ذَلِكَ يَطُلُ”** या'नी : हम इस की दैत क्यूं अदा करें जिस ने खाया न पिया, चीखा न बोला, और इस जैसे का खून तो मुआफ़ होता है। तो प्यारे मुस्तफ़ **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّم** ने उस से इरशाद फ़रमाया : **“देहातियों की तरह मुसज्जअ कलाम करता है।”⁽¹⁾**

जहां तक अशआर का तअल्लुक है तो वा'ज व नसीहत में इन की कषरत मज़मूम है। इरशादे बारी तआला है :

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ ۚ أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ ۚ
(الشُّعْرَاءُ: २२, २३, २४) (प: १९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और शाइरों की पैरवी गुमराह करते हैं क्या तुम ने न देखा कि वोह हर नाले में सर गर्दी फिरते हैं।

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشُّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۖ
(يس: २३, २४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने उन को शे'र कहना न सिखाया और न वोह उन की शान के लाइक है।

वाइज़ीन को अकषर वोह अशआर ज़ियादा पढ़ने की आदत है जिन में इश्क़, मा'शूक के हुस्नो जमाल, विसाले यार की राहत और फ़िराक़ की तकलीफ़ का बयान होता है और मजलिस जाहिल अ़वाम से भरी होती है। उन के बातिन ख़्वाहिशात से लबरेज़ होते हैं। उन के दिल ख़ूबसूरत चेहरों की तरफ़ मुतवज्जेह हुए बिगैर नहीं रह सकते और इस तरह के अशआर उन में छुपी शहवत को भड़काते हैं। उन में ख़्वाहिशात की आग जल उठती है फिर वोह चीखते और वज्द में आ जाते हैं। इन में अकषर या तमाम शे'र फ़साद पर मबनी होते हैं। इस लिये दलील पकड़ने या लोगों की बोरियत का ख़ातिमा करने के लिये हिक्मत या नसीहत पर मुश्तमिल शे'र ही इस्ति'माल किया जाए। (इसी वजह से) **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब ने इरशाद फ़रमाया : **“बा'ज शे'र ज़रूर हिक्मत हैं।”⁽²⁾**

①.....صحیح مسلم، کتاب القسامة والمحاربين.....الخ، باب دية الجنين، الحديث: १२८२، ص १२२۔

②.....صحیح البخاری، کتاب الادب، باب مايجوز من الشعر.....الخ، الحديث: ११२५، ج २، ص १३९۔

अगर मजलिस में खास लोग हों जिन के बारे में मा'लूम हो कि उन के दिल **अल्लाह** की महबूबत में मुसतगरक हैं, उन के साथ उन के इलावा कोई दूसरा न हो तो ऐसे लोगों की मौजूदगी में वोह शे'र कहना नुक्सान देह नहीं जिस के ज़ाहिर में मख्लूक की तरफ़ इशारा है क्योंकि सुनने वाला जो कुछ सुनता है इसे उस मफहूम पर ढाल लेता है जो उस के दिल पर ग़ालिब हो। जैसा कि इस की तहकीक़ “**کتابُ السَّمَاءِ**” में आएगी।

मेरे रुफ़का तो खास लोग हैं :

हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي** दस से कुछ ज़ाइद लोगों के सामने वा'ज़ फ़रमाते, अगर इस से ज़ियादा हो जाते तो वा'ज़ न करते। आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** की मजलिस में कभी बीस शख्स पूरे न हुए। एक बार इब्ने सालिम के घर के दरवाज़े पर एक जमाअत हाज़िर हुई, किसी ने अर्ज की : “हुज़ूर ! आप के रुफ़का हाज़िर हैं उन्हें वा'ज़ फ़रमाइये।” फ़रमाया : “नहीं, येह मेरे रुफ़का नहीं येह तो मजलिस वाले हैं। मेरे रुफ़का तो खास लोग हैं।”

शतह से क्या मुराद है ?

शतह से मुराद दो किस्म का कलाम है जो बा'ज़ सूफ़िया की ईजाद है : (1).....**अल्लाह** की महबूबत और विसाल के लम्बे चोड़े दा'वे, जिस की वजह से उन्हें ज़ाहिरी आ'माल की हाज़त नहीं रहती यहां तक कि बा'ज़ लोगों ने तो इत्तिहाद का दा'वा कर दिया और कहा कि हिजाब उठ गया, वोह अपनी आंखों से रब्ब **عَزَّ وَجَلَّ** को देखते हैं और उन्हें बराहे रास्त ख़िताब होता है। वोह कहते हैं हमें येह कहा गया है और हम ने यूं कहा। वोह इस में हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق** की मुशाबहत इख़्तियार करते हैं जिन्हें इस किस्म के कलिमात कहने की वजह से सूली चढ़ाया गया और उन के कौल⁽¹⁾ **أَنَا الْحَقُّ** से दलील पकड़ते

①....अवाम में मशहूर है कि हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق** ने **أَنَا الْحَقُّ** (या'नी मैं हक़ हूँ) कहा था इस का रद्द करते हुए आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ** फ़तावा रज़विख्या शरीफ़ में तहरीर फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदी हुसैन बिन मन्सूर हल्लाज **قَدِيسٌ سَرُهُ** जिन को अवाम मन्सूर कहते हैं, मन्सूर इन के वालिद का नाम था, और इन का इस्मे गिरामी हुसैन। (आप) अकाबिरे अहले हाल से थे, इन की एक बहन इन से बदरजहा मर्तबए विलायत व मा'रिफ़त में ज़ाइद थीं। वोह आख़िर शब को जंगल तशरीफ़ ले जातीं और यादे इलाही में मसरूफ़ होतीं। एक दिन इन की आंख खुली, बहन को न पाया, घर में हर जगह तलाश किया, पता न चला, इन को वस्वसा गुज़रा, दूसरी शब में क़स्दन सोते में जान डाल कर जागते रहे। वोह अपने वक़्त पर उठ कर चलीं, येह आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो लिये, देखते रहे। आस्मान से सोने की ज़न्जीर में याकूत का जाम उतरा और उन के दहन मुबारक (या'नी मुंह शरीफ़) के बराबर आ लगा, उन्होंने ने पीना शुरू किया, इन से सब्र न हो सका कि येह जन्नत की ने'मत न मिले। बे इख़्तियार कह उठे कि बहन ! तुम्हें **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की क़सम कि थोड़ा....

हैं और इसे दलील बनाते हैं जो अबू यज़ीद बिस्तामी قُدَسَ سِرُّهُ الْوَرَانِ के बारे में मन्कूल है कि इन्होंने ⁽¹⁾ سُبْحَانِي سُبْحَانِي कहा था। इल्मे कलाम के इस फ़न से अ़वाम को बहुत नुक़सान पहुंचा यहां तक कि किसानों की एक जमाअत ने काश्तकारी छोड़ कर इस तरह के दा'वे करने शुरूअ़ कर

.....मेरे लिये छोड़ दो, उन्होंने ने एक ज़ुरआ (या'नी एक घूंट) छोड़ दिया, इन्होंने ने पीया, इस के पीते ही हर जड़ी बूटी, हर दरो दीवार से इन को येह आवाज़ आने लगी कि कौन इस का ज़ियादा मुस्तहिक़ है कि हमारी राह में क़त्ल किया जाए। इन्होंने ने कहना शुरूअ़ किया "اِنَّآ لَاحِقٌ" बेशक मैं सब से ज़ियादा इस का सज़ावार (या'नी हकदार) हूं। लोगों के सुनने में आया اِنَّآ لَاحِقٌ (या'नी मैं हक हूं।) वोह (लोग) दा'वए खुदाई समझे और येह (या'नी खुदाई का दा'वा) कुफ़्र है और मुसलमान हो कर जो कुफ़्र करे मुर्तद है और मुर्तद की सज़ा क़त्ल है।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रसूलुल्लाह (पर है कि) (صحيح البخارى، كتاب استتابة المرتدين والمعاندين وقتالهم، ج 4، ص 348، حديث: 2922) फ़रमाते हैं : **तर्जमा :** जो अपना दीन बदल दे उसे क़त्ल करो। (फ़तावा रज़विyya, जि. 26, स. 400)

①....मुजहिदे आ'ज़म, सय्यिदुना आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن (मुतवफ़्फ़ा सि. 1340 हि) इस के मुतअल्लिक़ एक सुवाल के ज़वाब में इरश़ाद फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना बायज़ीद बिस्तामी और इन के इमषाल व नज़ाइर (या'नी उन जैसे दीगर औलिया) رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ वक़्त ब विर्दे तजल्लिये ख़ास (या'नी ख़ास तजल्ली वारिद होने के वक़्त) शज़रए मूसा होते हैं। सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمُ को दरख़्त में से सुनाई दिया : يُؤْمَلِيْ اِنِّ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (या'नी) ऐ मूसा ! बेशक मैं **अल्लाह** हूं रब्ब सारे जहां का। क्या येह हर पेड़ (या'नी दरख़्त) ने कहा था **حَاشَ اللّٰهُ** (या'नी हरगिज़ नहीं) बल्कि वाहिदे क़हहार (**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ) ने जिस दरख़्त पर तजल्ली फ़रमाई और वोह बात दरख़्त से सुनने में आई। क्या रब्बुल इज़ज़त एक दरख़्त पर तजल्ली फ़रमा सकता है और अपने महबूब बायज़ीद पर नहीं ? नहीं नहीं ! वोह ज़रूर तजल्लिये रब्बानी थी कलाम बायज़ीद की ज़बान से सुना जाता था जैसे दरख़्त से सुना गया और मुतकल्लिम (या'नी कलाम फ़रमाने वाला) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ था, उसी ने वहां फ़रमाया : يُؤْمَلِيْ اِنِّ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (तर्जमा : ऐ मूसा ! मैं **अल्लाह** हूं रब्ब सारे जहां का) उसी ने यहां भी फ़रमाया سُبْحَانِي مَا عَظُمَ شَأْنِي (तर्जमा : मैं पाक हूं और मेरी शान बुलन्द है)

सय्यिदी आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ मजीद इरश़ाद फ़रमाते हैं : हज़रते मौलवी قُدَسَ سِرُّهُ الْمَعْنَوٰى ने मषनवी शरीफ़ में इस मक़ाम की ख़ूब तफ़सील फ़रमाई है और तसल्लुते जिन्न से इस की तौज़ीह की है कि इन्सान पर एक जिन्न मुसल्लत हो कर इस की ज़बान से कलाम करे और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ इस पर क़ादिर नहीं कि अपने बन्दे पर तजल्ली फ़रमा कर कलाम फ़रमाए जो उस की ज़बान से सुनने में आए, बिलाशुबा **अल्लाह** क़ादिर है और मो'तरिज़ का ए'तिराज़ बाति़ल। इस का फैसला खुद हज़रते बायज़ीद बिस्तामी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ज़माने में हो चुका ज़ाहिर बीनों बेख़बरो' ने इन से शिकायत की, कि आप سُبْحَانِي مَا عَظُمَ شَأْنِي कहा करते हैं। फ़रमाया : **حَاشَا** (या'नी हरगिज़) मैं नहीं कहता। कहा : आप ज़रूर कहते हैं हम सब सुनते हैं। फ़रमाया : जो ऐसा कहे वाजिबुल क़त्ल (या'नी उसे क़त्ल करना वाजिब) है। मैं बख़ूशी तुम्हें इजाज़त देता हूं जब मुझे ऐसा कहते सुनो बे दैरैग़ ख़न्जर मार दो। वोह सब ख़न्जर ले कर मुन्तज़िरे वक़्त रहे। यहां तक कि हज़रत पर तजल्ली वारिद हुई और वोही सुनने में आया : سُبْحَانِي مَا عَظُمَ شَأْنِي (या'नी) मुझे सब ऐबों से पाकी है मेरी शान क्या ही बड़ी है। वोह लोग चार तरफ़ से ख़न्जर ले कर दौड़े और हज़रत पर वार किये जिस ने जिस जगह ख़न्जर मारा था खुद उस के उसी जगह लगा और हज़रत पर ख़त् (या'नी ख़राश) भी न आया। जब इफ़ाका हुवा देखा लोग ज़ख़मी पड़े हैं। फ़रमाया : मैं न कहता था कि मैं नहीं कहता, वोह फ़रमाता है जिसे फ़रमाना बजा। **وَاللّٰهُ اَعْلَمُ** (फ़तावा रज़विyya, जि. 14 स. 665-666)

दिये। क्यूँकि इस किस्म के कलाम से तबीअतें लुत्फ अन्दोज होती हैं कि इस में मकामात और अहवाल के हुसूल के लिये आ'माल और तजकियए नफ्स की हाजत नहीं होती। तो फिर गैबी लोग अपने लिये इस का दा'वा करने से क्यूँ बाज रहें और मनघड़त व मोहमल बातें क्यूँ न कहें और जब उन पर कोई ए'तिराज करे तो फौरन कह देते हैं कि इस ए'तिराज का सबब इल्म और मुनाजिरा है। इल्म तो हिजाब है और मुनाजिरा नफ्स का अमल है और ये बातें तो नूरे हक के मुशाहदे के साथ बातिन से उठती हैं। पस येह और इस किस्म की बातों का शर शहरों में आम हो गया इस से अवाम को बहुत नुकसान पहुंचा यहां तक कि जो इस किस्म की कोई बात कहे तो दीने इस्लाम में उसे क़त्ल कर देना दस को ज़िन्दा रखने से अफ़ज़ल है और हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद बिस्तामी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के बारे में जो मन्कूल है वोह सहीह नहीं और अगर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से ये बात सुनी भी गई है तो वोह गोया आप अपने दिल में जो कलाम बार बार कहते उस की हिकायत करते हुए आप ने कहा है जैसा कि कोई आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को येह कहते हुए सुने :

إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي

(प १२, पृष्ठ १३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक मैं ही हूँ **अल्लाह**

कि मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं तो मेरी बन्दगी कर।

तो ज़रूरी है कि इसे बतौर हिकायत ही समझा जाए।

﴿2﴾.....शतह की दूसरी किस्म वोह अल्फ़ाज़ हैं जो समझ में न आएँ, इन के ज़ाहिर तो अच्छे हों लेकिन इन के मअानी होलनाक हों और इन में कोई फ़ाइदा न हो नीज़ वोह कलिमात ऐसे ना क़ाबिले फ़हम हों, कि या तो इन के कहने वाले को समझ में न आते हों बल्कि अक्ल की ख़राबी और ख़याल की परेशानी के बाइष उस से सादिर होते हों, येह इस वजह से होता है कि जो कलाम उस की समाअत से टकराता है वोह उस के मा'ना का इहाता नहीं करता और येह बहुत ज़ियादा होता है। या फिर वोह अल्फ़ाज़ ऐसे हों कि खुद कहने वाले को तो समझ में आएँ लेकिन दूसरों को समझा न पाए और مَا فِي الصَّبِيرِ बयान करने के लिये कोई इबारत न ला पाए। इस की वजह येह होती है कि उसे इल्म से शग़फ़ नहीं होता और न उस ने मअानी को उम्दा अल्फ़ाज़ से ता'बीर करने का तरीक़ा सीखा होता है। इस तरह के कलाम का कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि ऐसा कलाम दिलों को परेशान और अक्लों और ज़ेहनों को हैरान कर देता है। या ऐसे कलाम का मोहमल येह होता है कि इस से वोह मअानी समझ लिये जाएँ जो मक्सूद नहीं और हर एक अपनी ख़्वाहिश और तबीअत के मुताबिक़ समझ ले।

लोگوں के लिये फितना :

मरवी है कि मक्की मदनी सरकार, बिइजने परवर दगार, दो आलम के मालिको मुख्तार
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “तुम में से कोई लोगों के सामने ऐसी बात बयान करे
 जिसे वोह समझ न पाएं तो वोह उन के लिये फितना है ।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “लोगों से वोही बातें बयान करो जिन्हें वोह मान लें और वोह बातें
 बयान न करो जिन का वोह इन्कार करें । क्या तुम चाहते हो कि **اَبَواهُ** عَزَّوَجَلَّ और रसूल
 صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तकजीब हो ?”⁽²⁾

येह इरशाद उन बातों के बारे में है जिन्हें खुद कहने वाला समझता हो मगर सुनने वाले
 की अक्ल की वहां तक रसाई न हो तो फिर उन बातों को बयान करने का क्या हाल होगा जिन्हें
 खुद कहने वाला ही न समझे । अगर कहने वाला समझता हो और सुनने वाला न समझे तो ऐसी
 बात बयान करना जाइज नहीं ।

जाहिल और जालिम :

हजरते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “किसी ना
 अहल को हिक्मत सिखाना जुल्म और अहल से इसे रोके रखना भी जुल्म है । तुम उस तबीब
 की तरह बन जाओ जो बीमारी के मुताबिक दवा तजवीज करता है ।”⁽³⁾

एक रिवायत में है कि “जो किसी ना अहल को हिक्मत सिखाए वोह जाहिल है और
 जो अहल से इसे रोके वोह जालिम है । बेशक हिक्मत का एक हक है और कुछ लोग इस के अहल
 हैं लिहाजा हर हकदार को इस का हक दो ।”⁽⁴⁾

तामात क्या हैं ?

तामात में वोह सब बातें दाखिल हैं जो हम ने शतह के बयान में जिक्र कीं और मजीद
 इस में खास बात येह है कि शरई अल्फाज को इन के जाहिरी मफहूम से बातिनी उमूर की तरफ

①.....صحيح مسلم، المقدمة، باب النهي عن الحديث بكل ماسمع، الحديث: ٥، ص ٩۔

كتاب الضعفاء للعقيلي، الرقم: ١٢٠٢، عثمان بن داود، ج ٣، ص ٩٣٤۔

②.....صحيح البخاري، كتاب العلم، باب من خص بالعلم قوما دون قوم كراهية ان لا يفهموا، ج ١، ص ٦٤۔

الجامع لاختلاف الراوي و آداب السامع، ذكر ما يستحب في الاملاء.....الخ، الحديث: ١٨، ج ٢، ص ١٠٨۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادي والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٤۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادي والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٤۔

फैर देना जिन का कोई फ़ाइदा समझ में नहीं आता जैसे फ़िर्क़ए बातिनिय्या⁽¹⁾ की आदत है कि वोह तावीलें करते हैं, येह भी हराम है और इस का नुक़सान बहुत ज़ियादा है। क्यूंकि जब अल्फ़ाज़ को किसी नक्ली शरई दलील और ज़रूरत के बिगैर इन के ज़ाहिरी मअानी से फैर दिया जाएगा तो इस की वजह से अल्फ़ाज़ से ए'तिमाद जाता रहेगा और **अल्लाह** व रसूल ﷺ के कलाम का नफ़अ ख़त्म हो जाएगा इस लिये कि ज़ाहिर से जो समझ में आया इस का ए'तिमाद न रहा और बातिन सब का यक्सां नहीं बल्कि इस में ख़यालात एक दूसरे से मुख़लिफ़ होते हैं और मुख़लिफ़ सूरतों पर अल्फ़ाज़ को ढाला जा सकता है। येह भी अम बिदअतों में से एक है जिस का नुक़सान बहुत ज़ियादा है और तामात वालों का मक्सद अजीबो ग़रीब बातें हैं क्यूंकि नफ़्स इन की तरफ़ माइल होते और इन से लज़ज़त पाते हैं इस तरीक़े से फ़िर्क़ए बातिनिय्या अल्फ़ाज़ के ज़ाहिरी मफ़ाहीम में तावीलात कर के अपनी राए के मुताबिक़ इन के मफ़ाहीम बना कर सारी शरीअत को ख़त्म करने के दरपै है। जैसा कि हम ने बातिनिय्या के रद्द में जो किताब **المستظهری** तस्नीफ़ की इस में इन के मज़ाहिब बयान किये हैं।

अहले तामात की तावीलात की मिषालें :

बा'ज़ इस आयत में तावील करते हैं :

إِذْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ (پ ۳۰، التّوْحَت: ۱۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिरऔन के पास जा उस ने सर उठाया।

कहते हैं : “इस में दिल की तरफ़ इशारा है और फिरऔन से दिल मुराद है, वोही हर इन्सान पर सरकशी करता है।”

इस आयत में भी तावील करते हैं :

وَأَنْتَ أَتَقَعَصَاكَ (پ ۲۰، القصص: ۳۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि डाल दे अपना असा।

कहते हैं : “इस में असा से मुराद **अल्लाह** ﷻ के सिवा हर वोह चीज़ है जिस पर बन्दा ए'तिमाद करता और उस का सहारा लेता है उसे चाहिये कि ऐसी चीज़ों को छोड़ दे।”

①.....अहले तशीअ का एक फ़िर्का जिस का लीडर हसन बिन सबाह था, उस के ए'तिकाद में हर शरई उमूर के एक ज़ाहिरी मा'ना होते हैं और दूसरे बातिनी। येह लोग अपने मुख़ालिफ़ीन को फ़रैब से क़त्ल कर दिया करते थे और इन को हशीशीन भी कहा जाता है क्यूंकि येह भंग पिया करते थे।

इस फ़रमाने मुस्तफ़ा “تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بَرَكَهً” या’नी सहरी खाया करो क्यूंकि सहरी में बरकत है।⁽¹⁾ में भी तावील करते हैं। कहते हैं: “इस में تَسَحَّرُوا से सहरी के अवकात में इस्तिग़फ़ार करना मुराद है।”

इस तरह की और भी मिषालें हैं यहां तक कि इन्होंने शुरूअ से आखिर तक पूरे कुरआने मजीद को इस के ज़ाहिरी मअानी से फैर दिया है और उस तफ़सीर से भी फैर दिया जो हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا और दीगर उ-लमा से मन्कूल है।

मजकूरा तावीलों का बुतलान :

इन में से बा’ज तावीलों का बातिल होना तो क़तई तौर पर मा’लूम है जैसा कि फ़िरऔन से दिल मुराद लेना क्यूंकि फ़िरऔन एक महसूस शख्स है। उस के मौजूद होने और हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के उस को दा’वत देने की ख़बरें तवातिर से हम तक पहुंची हैं। जैसा कि अबू जहल और अबू लहब वगैरा कुफ़फ़ार की अख़बार। नीज़ येह शयातीन या मलाइका की जिन्स से नहीं कि इन्हें महसूस न किया जा सके हत्ता कि इन अल्फ़ाज़ में तावील की ज़रूरत पेश आए। इसी तरह सहरी को इस्तिग़फ़ार पर महमूल करना भी बातिल है क्यूंकि आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खाना तनावुल फ़रमाते थे और फ़रमाया करते थे: “सहरी खाओ और इस मुबारक खाने की तरफ़ आओ।”⁽²⁾

येह वोह तावीलात हैं कि ख़बर मुतवातिर और हिस्स से इन का बातिल होना वाजेह है और बा’ज वोह हैं कि जिन का बुतलान ज़न्ने ग़ालिब के तौर पर मा’लूम है और येह तावीलात उन उमूर में होती हैं जिन को महसूस नहीं किया जा सकता। अलग़रज़ सब की सब ह़राम, गुमराही और लोगों के सामने दीन को बिगाड़ना है। इन में से कोई बात सहाबए किराम और ताबेईने उज़्ज़ाम رَضُوا اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से मन्कूल नहीं और न ही हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ लोगों को वा’ज व नसीहत करने के बड़े हरीस थे। इस फ़रमाने मुस्तफ़ा कि “जिस ने अपनी राए से कुरआने पाक की तफ़सीर की वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।”⁽³⁾ का मा’ना व मफ़हूम येही है। वोह यूं कि इस का मक्सद और राए किसी चीज़ को षाबित करना हो और इस पर कुरआन से दलील

①..... صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب بركة السحور من غير ايجاب، الحديث: ١٩٢٣، ج ١، ص ٢٣٣-

②..... المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث العرباض بن سارية، الحديث: ١٤١٥٢، ج ٢، ص ٨٥-

③..... سنن الترمذی، كتاب تفسير القرآن، باب ماجاء فى الذى يفسر القرآن برأيه، الحديث: ٢٩٦٠، ج ٢، ص ٢٣٩-

लाए और इसे उस चीज़ पर महमूल करे हालांकि इस मा'ना पर महमूल करने की लफ़्ज़ी या'नी लुग़वी या नक्ली दलील न हो। इस हदीष से येह न समझा जाए कि कुरआने पाक की तफ़्सीर इजतिहाद और ग़ौरो फ़िक्र से न करना वाजिब है क्यूंकि सहाबए किराम और मुफ़स्सरीने उज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ से बा'ज आयात के पांच पांच, छे छे और सात सात मअानी मन्कूल हैं और येह बात मा'लूम है कि वोह तमाम मअानी इन्हों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नहीं सुने क्यूंकि बा'ज अवकात वोह मअानी एक दूसरे से टकराते हैं और इन में ततबीक नहीं हो सकती। लिहाज़ा येह उम्दा फ़हम और तवील ग़ौरो फ़िक्र से अख़ज़ किये गए हैं। इसी लिये हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के लिये दुआ फ़रमाई कि “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इब्ने अब्बास को दीन की समझ और तावील का इल्म अता फ़रमा।”⁽¹⁾

अहले तामात में से जो इस तरह की तावीलात को येह जानते हुए भी जाइज़ करार देता है कि वोह अल्फ़ाज़ की मुराद नहीं और येह गुमान करता है कि उस का मक्सद लोगों को **अल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ बुलाना है तो वोह उस शख्स की तरह है जो अस्दकुस्सादिकीन की तरफ़ झूट और मनघड़त बात मन्सूब करने को जाइज़ करार देता है हालांकि वोह बात फ़ी नफ़्सही दुरुस्त होती है लेकिन शरअ ने उसे बयान नहीं किया, जैसे वोह शख्स जो हर मस्अले में जिसे वोह हक़ जानता है, रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कि तरफ़ मन्सूब कर के हदीष घड़ता है तो येह जुल्म, गुमराही और उस वर्ईद में दाख़िल है जो इस फ़रमाने अली से मफ़हूम होती है कि “जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूट बांधा वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।”⁽²⁾

बल्कि इन अल्फ़ाज़ की तावील का शर उस से भी ज़ियादा है क्यूंकि इस से अल्फ़ाज़ पर ए'तिमाद उठ जाता और कुरआने हकीम समझने और इस से फ़ाइदा हासिल करने का रास्ता बिल्कुल ही कट जाता है। अब तुम ने जान लिया कि शैतान ने किस तरह लोगों के इरादों को अच्छे उलूम से बुरे उलूम की तरफ़ फ़ैर दिया। येह सब उ-लमाए सू (बुरे उ-लमा) की तरफ़ से नामों के बदलने की वहज से हुवा और अगर तुम मशहूर नाम पर ए'तिमाद करते हुए उन लोगों के पीछे चलोगे और पहले ज़माने में जो मा'रूफ़ था उस की तरफ़ तवज्जोह नहीं करोगे तो तुम उस की तरह होंगे जो हिकमत के शरफ़ को उस की पैरवी में तलाश करता है जिसे हकीम कहा जाता है क्यूंकि इस ज़माने में हकीम का इतलाक़ तबीब, शाइर और नुजुमी पर होता है और येह अल्फ़ाज़ की तब्दीली से ग़फ़लत का नतीजा है।

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن العباس، الحديث: ٣٠٣٣، ج ١، ص ٤٠٣۔

②.....صحيح البخاری، کتاب العلم، باب اثم من كذب على النبي، الحديث: ١١٠، ج ١، ص ٥٤۔

﴿5﴾.....**हिक्मत** : पांचवां लफ्ज़ हिक्मत है। चुनान्वे, हकीम का नाम अब तबीब, शाइर, नुजुमी यहां तक कि उस शख्स पर भी बोला जाता है जो रास्तों में बैठ कर लोगों के हाथों पर कुरआ डालता है हालांकि हिक्मत तो वोह है जिस की ता'रीफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाई है। चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۗ (پ ۳، البقرة: ۲۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हिक्मत देता है जिसे चाहे और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली ।

हदीषे मुबारका में है कि “हिक्मत की बात जिसे आदमी सीखे वोह उस के लिये दुन्या और जो कुछ इस में है इस से बेहतर है।”⁽¹⁾

पस तुम गौर करो कि हिक्मत किस चीज़ का नाम था और अब इसे किस मा'ना में मुन्तक़िल कर लिया गया है। इसी पर दूसरे अल्फ़ाज़ को क़ियास कर लो और उ-लमाए सू के धोके व फ़रैब से बचो क्यूंकि दीन के मुआमले में उन का शर शयातीन के शर से बढ़ कर है इस लिये कि शयतान इन्ही के वासिते से आहिस्ता आहिस्ता लोगों के दिलों से ईमान निकालता है।

बदतरीन मख़्लूक :

जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बद तरीन मख़्लूक के बारे में पूछा गया तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई और येह दुआ फ़रमाई कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बख़्शा दे। जब बार बार पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : “बद तरीन मख़्लूक बुरे उ-लमा हैं।”⁽²⁾

जब तुम अच्छे बुरे इल्म को जान चुके और उन के गड़मड़ होने की वजह भी मा'लूम कर चुके तो अब तुम्हें इख़्तियार है कि अपने नफ़्स का लिहाज़ करते हुए अस्लाफ़ की पैरवी करो या पिछले लोगों की तरह धोके की रस्सी से लटके रहो। अस्लाफ़ के पसन्दीदा तमाम उलूम मिट गए और लोग जिन उलूम में मशगूल हैं उन में से अक़षर बिदअत और नौपैद हैं।

①.....الزهد للإمام أحمد بن حنبل، اخبار الحسن بن ابی الحسن، الرقم: ۱۴۶۷، ص ۲۷۱، عن الحسن بن ابی الحسن۔

المدخل، فصل فی العالم وکیفیه نیته.....الخ، ج ۱، ص ۵۱۔

②.....مسند البزار، مسند معاذ بن جبل، الحدیث: ۲۶۴۹، ج ۷، ص ۹۳۔

गुरबा कौन हैं ?

अल्लाह के महबूब, दानाए गुयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने मुकर्रम है कि “इस्लाम ग़रीबुल वतनी में शुरूअ हुवा और जैसे शुरूअ हुवा वैसे ही (ग़रीबुल वतनी की हालत में) लौट जाएगा तो गुरबा के लिये खुशख़बरी है।” किसी ने अर्ज़ की : “गुरबा कौन हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह लोग जो मेरी सुन्नत की इस्लाह करेंगे जब लोग इसे बिगाड़ देंगे और वोह जो मेरी फ़ौत शुदा सुन्नत को ज़िन्दा करेंगे।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “गुरबा वोह है जो उस चीज़ को मज़बूती से थामेंगे जिस पर आज तुम लोग काइम हो।”⁽²⁾

एक मुक़ाम पर फ़रमाया : “गुरबा कषीर लोगों में क़लील सालेह लोग हैं। उन से नफ़रत करने वाले उन के चाहने वालों से ज़ियादा होंगे।”⁽³⁾

हक्कीक्की अ़ालिम की एक अ़लामत :

येह उलूम ग़रीब हो गए यूं कि जो इन्हें याद करता है लोग उस के दुश्मन हो जाते हैं। इसी वजह से हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَرَى** ने फ़रमाया : “जब तुम देखो कि किसी अ़ालिम के दोस्त ज़ियादा हैं तो जान लो कि वोह हक़ को बातिल के साथ मिलाता है क्यूंकि अगर वोह ख़ालिसतन हक़ ही बयान करता तो लोग उस के दुश्मन बन जाते।”⁽⁴⁾

﴿.....صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ.....﴾

- ①.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ان الاسلام بدا غریبا.....الخ، الحدیث: ۱۴۵، ص ۸۸۔
- سنن الترمذی، کتاب الایمان، باب ماجاء ان الاسلام بدا غریبا.....الخ، الحدیث: ۲۶۳۹، ج ۴، ص ۲۸۶۔
- قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۴۸۔
- ②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۴۸۔
- ③.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبداللّٰه بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۴۰۹۴، ج ۲، ص ۶۸۸۔
- ④.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۴۸۔

तीसरी फ़स्ल : अच्छे उलूम की क़ाबिले बा'रीफ़ मिफ़दा का बयान

जान लो ! इस ए'तिबार से इल्म की तीन किस्में हैं : (1)....वोह इल्म जो बुरा है कम हो या ज़ियादा (2).... वोह इल्म जो क़लील हो या क़पीर अच्छा है और जब भी वोह ज़ियादा होता है बेहतर व अफ़ज़ल होता है और (3)....वोह इल्म जो ब क़दरे क़िफ़ायत अच्छा है और ज़रूरत से ज़ाईद अच्छा नहीं नीज़ इस में बहूष व तहक़ीक़ करना भी अच्छा नहीं और येह बदन के अहवाल की तरह है। इन में बा'ज़ क़लील हों या क़पीर अच्छे हैं जैसे तन्दुरुस्ती और ख़ूब सूरती और बा'ज़ वोह हैं कि कम हों या ज़ियादा बुरे हैं जैसे बद सूरती और बद अख़्लाकी और बा'ज़ अहवाल में मियाना रवी अच्छी है जैसे माल ख़र्च करना कि इस में ज़ियादा ख़र्च करना अच्छा नहीं हालांकि वोह भी ख़र्च ही है और जैसा कि शुजाअत कि इस में हलाक कर देना अच्छा नहीं अग़चे हलाक करना भी शुजाअत ही से है। इसी तरह इल्म का मुआमला है।

मज़मूम इल्म : वोह इल्म जो बुरा है ख़्वाह कम हो या ज़ियादा, येह वोह है जिस का न तो कोई दुन्यवी फ़ाईदा है और न ही दीनी क्यूंकि इस का ज़रर इस के नफ़ए पर ग़ालिब है जैसे जादू, तिलिस्मात और इल्मे नुजूम कि इन में से किसी का तो बिल्कुल ही फ़ाईदा नहीं और इस के लिये उम्र सर्फ़ करना इन्सान का अपने सब से कीमती सरमाए को ज़ाएअ करना है और कीमती चीज़ को ज़ाएअ करना बुरा है और बा'ज़ वोह हैं कि इन का ज़रर दुन्या में किसी मक्सद के पूरा होने की उम्मीद से बढ़ कर है। पस इन से हासिल होने वाले ज़रर की ब निस्बत येह फ़ाईदा क़ाबिले शुमार नहीं।

महमूद इल्म : जो इल्म सारे का सारा अच्छा है, वोह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ज़ात व सिफ़ात, अफ़अल, मख़लूक के बारे में उस की आदते जारिया और आख़िरत को दुन्या पर मुरत्तब करने की हिक़मत का इल्म है। येह इल्म अपनी ज़ात की वजह से भी मतलूब है और इस वजह से भी कि येह उख़रवी सआदत का ज़रीआ है। इस के हुसूल में जितनी भी कोशिश कर ली जाए हद्दे वाजिब से कम है क्यूंकि येह एक ऐसा समन्दर है जिस की गहराई तक रसाई नहीं और घूमने वाले इस के साहिलों और कनारों पर ही ब क़दरे सहूलत घूमते हैं। इस में अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** औलियाए उज़्ज़ाम **رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** और मज़बूत उ-लमा ही ग़ौता लगाते हैं। अलबत्ता इन के दर्जात इन की कुव्वतों के इख़िलाफ़ के ए'तिबार से और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने इन के हक़ में जो मुक़द्दर फ़रमा दिया इस के तफ़ावत के ए'तिबार से मुख़लिफ़ हैं। येही वोह पोशीदा

इल्म है जो किताबों में नहीं लिखा जाता। इस पर आगही हासिल करने के लिये इल्म सीखना और उ-लमाए आखिरत के अहवाल का मुशाहदा करना मुफ़ीद है जैसा कि अ-न क़रीब उ-लमाए आखिरत की अलामात बयान की जाएंगी। येह इब्तिदा में है और आखिर में मुजाहिदा व रियाज़त, तसफ़ीए क़ल्ब और अलाइके दुन्या से दिल को फ़ारिग़ करना और इस में अम्बियाए किराम और औलियाए उज़्ज़ाम से मुशाबहत इख़्तियार करना इस इल्म के हुसूल के लिये मुफ़ीद है। इस तरह जो भी इस इल्म को पाने की कोशिश करेगा वोह जितनी कोशिश करेगा उतना नहीं बल्कि अपने नसीब के मुताबिक़ इसे पा लेगा। अलबत्ता उस के लिये मुजाहिदा ज़रूरी है क्यूंकि मुजाहिदा ही हिदायत की चाबी है, इस के सिवा हिदायत की कोई चाबी नहीं।

मख़सूस मिक्दार में महमूद उलूम : जो उलूम एक ख़ास मिक्दार में अच्छे हैं वोह हैं जिन को हम ने फ़र्जे किफ़ाया उलूम में नक़ल किया है।

इल्म के दर्जात :

हर इल्म के तीन दर्जे हैं: (1)....बक़दरे ज़रूरत। येह अदना दर्जा है (2)....मियाना रवी। येह दरमियाना दर्जा है और (3)....दरमियानी मिक्दार से ज़ियादा आ'ला दर्जा येह है कि आखिर उम्र तक हासिल किया जाए तो तुम दो शख़्सों में से एक बनो या अपनी इस्लाह में मशगूल रहो या अपनी इस्लाह से फ़राग़त पा कर दूसरों की इस्लाह करो लेकिन अपनी इस्लाह से क़ब्ल दूसरों की इस्लाह में मशगूल मत होना। अगर तुम अपनी इस्लाह में मशगूल हो तो सिर्फ़ उसी इल्म को सीखो जो तुम्हारे हाल के मुताबिक़ तुम पर फ़र्ज़ है और ज़ाहिरी आ'माल से मुतअल्लिक़ा उलूम में से नमाज़, त़हारत, रोज़े के मसाइल सीखो और सब से अहम दिल की सिफ़ात का इल्म है जिसे सब ने छोड़ दिया है और येह कि दिल की कौन सी सिफ़ात अच्छी हैं और कौन सी बुरी? क्यूंकि बुरी सिफ़ात हर इन्सान में होती हैं जैसे हिर्स, हसद, रिया, तकब्बुर और खुद पसन्दी वगैरा येह सब हलाक कर देने वाली सिफ़ात हैं, इन से बचना वाजिबात में से है और इस के साथ ज़ाहिरी आ'माल में मशगूल होना ऐसा है जैसे ख़ारिश और फ़ोड़ों की तक्लीफ़ में ज़ाहिरी बदन पर लेप करना मगर पंछे या सींगी के ज़रीए फ़ासिद मवाद बदन से निकालने में गुफ़लत बरतना।

नाम निहाद उ-लमा और उ-लमाए आखिरत :

जैसे रास्तों में बैठे त़बीब ज़ाहिरी बदन को लेप करने का कहते हैं ऐसे ही नाम निहाद उ-लमा ज़ाहिरी आ'माल का मश्वरा देते हैं जब कि उ-लमाए आखिरत बातिन की सफ़ाई का मश्वरा देते और फ़ासिद मवाद को निकाल कर दिल से ख़राबियों को जड़ से उखाड़ देने का हुक्म देते हैं।

बातिनी के बजाए ज़ाहिरी आ'माल इख्तियार करने की वजह :

अकषर लोग दिलों की सफ़ाई करने के बजाए ज़ाहिरी आ'माल की तरफ़ इस लिये भागते हैं कि ज़ाहिरी आ'माल आसान हैं और दिल के आ'माल मुश्किल जैसे कड़वी दवाई पीने से घबराने वाला ज़ाहिरी लेप को इख्तियार करता है, वोह लेप करने में थकता रहता और मवाद बढ़ता रहता है जिस की वजह से बीमारियां दुगनी हो जाती हैं। लिहाज़ा अगर तुम आखिरत के तालिब और नजात के ख़्वाहिश मन्द हो और हमेशा की बरबादी से बचना चाहते हो तो बातिनी बीमारियों और इन के इलाज का इल्म सीखने में मशगूल हो जाओ। हम ने मुहलिकात के बाब में इन्हें तफ़्सील से बयान किया है। येह इल्म ज़रूर तुम्हें उन पसन्दीदा मक़ामात तक ले जाएगा जो मुनजियात के बाब में ज़िक्र किये गए हैं क्योंकि जब दिल बुरी सिफ़ात से ख़ाली होगा तो अच्छी सिफ़ात से भर जाएगा जैसा कि ज़मीन को जब घास से साफ़ किया जाए तो इस में तरह तरह की फ़स्लें और फूल उगते हैं और अगर साफ़ न किया जाए तो येह चीज़ें पैदा नहीं होतीं।

सब से बड़ा अहमक :

तुम फ़र्जे किफ़ाया उलूम को सीखने में मशगूल न हो बिलखुसूस इन्हें क़ाइम करने वाला लोगों में कोई मौजूद हो क्योंकि दूसरे की इस्लाह करने में खुद को हलाक करने वाला बे वुकूफ़ है। इस से बड़ा अहमक कौन होगा कि जिस के कपड़ों में सांप और बिच्छू घुस गए हों और इसे मार डालने के दरपै हों मगर वोह पंखा ढूंडने में मसरूफ़ हो ताकि इस के ज़रीए दूसरों से मखिखयां दूर करे जब कि जिस्म से चिपके हुए सांप बिच्छू इस के दरपै हों और वोह लोग इस के काम आएंगे न इसे इन से बचाएं। अगर तुम अपने नफ़्स को पाक करने से फ़राग़त पाओ और ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों को तर्क करने पर क़ादिर हो जाओ, येह तुम्हारी दाइमी आदत बन जाए, तुम्हारे लिये ऐसा करना आसान हो जाए और येह बात कुछ बर्इद भी नहीं तो फिर तुम फ़र्जे किफ़ाया उलूम के हुसूल में मशगूल हो जाओ लेकिन इस में दर्जाबन्दी का लिहाज़ रखो। किताबुल्लाह से शुरू करो फिर हदीषे नबवी फिर इल्मे तफ़्सीर और बाक़ी कुरआने पाक के उलूम जैसे नासिख़ व मन्सूख़, मुफ़स्सल व मौसूल, महकुम व मुतशाबेह का इल्म सीखो। इसी तरह हदीष में भी येही तरतीब है। इस के बा'द फुरूअ सीखो या'नी इल्मे फ़िक़ह से मज़ाहिब

का इल्म, न कि इख़िलाफ़ी मसाइल का इल्म फिर उसूले फ़िक़ह सीखो। इसी तरह बक़िय्या उलूम हासिल करते रहो जहां तक उम्र में गुन्जाइश हो और वक़्त साथ दे, मगर किसी एक फ़न में महारत हासिल करने के लिये सारी उम्र मत लगाओ क्यूंकि उलूम ज़ियादा हैं और उम्र कम और येह उलूम आलातो मुक़दमात हैं, अपनी ज़ात की वजह से नहीं बल्कि ग़ैर की वजह से मतलूब हैं और हर वोह चीज़ जो ग़ैर की वजह से मतलूब हो इस में अस्ल मक़सूद को भूल जाना और आलात की कषरत करना मुनासिब नहीं। लिहाज़ा मुरव्वजा इल्मे लुग़त से इतना सीख लो कि अरबी समझ और बोल सको और लुग़ते नादिरा में से सिर्फ़ कुरआने हकीम और अहादीष के ग़रीब अल्फ़ाज़ जान लो फिर उस की ज़ियादा गहराई में मत जाओ। इल्मे नहूव से बस इतना सीखो जितने का तअल्लुक़ कुरआनो हदीष से है। याद रखो ! हर इल्म के तीन दर्जे हैं : बक़दरे ज़रूरत, मुतवस्सित और दर्जए कमाल। हम हदीष व तफ़सीर, फ़िक़ह और कलाम में इन तीनों दर्जों को बयान कर देते हैं ताकि दूसरे उलूम को तुम इसी पर क़ियास कर लो। चुनान्वे,

तफ़सीर में ब क़दरे क़िफ़ायत, मुतवस्सित और आ'ला :

तफ़सीर में ब क़दरे क़िफ़ायत मिक्दार येह है कि कुरआने पाक से दुगनी हो जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अली वाहिदी नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की तस्नीफ़ "الوجيز" मुतवस्सित दर्जा येह है कि इस से तीन गुना हो जैसा कि तफ़सीर "الوسيط" और दर्जए कमाल इस से ज़ाइद है। इस की हाज़त नहीं और न ही सारी उम्र इस की कोई हद होगी।

हदीष में ब क़दरे क़िफ़ायत, मुतवस्सित और आ'ला :

हदीष में ब क़दरे क़िफ़ायत येह है कि सहीहैन (या'नी बुख़ारी व मुस्लिम) के मज़ामीन मतने हदीष से बा ख़बर शख़्स से नुस्खे की तस्हीह के साथ पढ़ लो। रावियों के नाम याद करने की ज़रूरत नहीं क्यूंकि येह काम तुम से पहले लोग कर चुके हैं तुम्हें इन की कुतुब पर ए'तिमाद करना चाहिये, बुख़ारी व मुस्लिम का मतन ज़बानी याद करना भी ज़रूरी नहीं बल्कि इन के मुतवन इतने सीख लो की हाज़त पड़े तो ज़रूरत की बात इन से तलाश कर सको। मुतवस्सित दर्जा येह है कि सहीहैन के इलावा दीगर कुतुबे हदीष में मौजूद सहीह अहादीष को भी सीखो और दर्जए कमाल येह है कि हर ज़ईफ़, क़वी, सहीह और मुअल्लल हदीष को सीखो, नक़ले हदीष के तर्क कषीरा (या'नी कई असनाद), रावियों के हालात, इन के नाम और अवसाफ़ की पहचान हासिल करो।

फ़िक्ह में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित और आ'ला :

फ़िक्ह में ब क़दरे किफ़ायत इतनी है जिस पर “مختصر مزني” मुश्तमिल है और इसे हम ने खुलासतुल मुख़्तसर में मुरत्तब किया है। मुतवस्सित दर्जा यह है कि इस किताब से तीन गुना ज़ाईद हो या'नी इतनी मिक्दार जितनी हम ने “الوسيط” में लिखी है और दर्ज़ए कमाल वोह है जिसे हम ने “البيسط” में लिखा है और इस के इलावा बड़ी बड़ी किताबें।

इल्मे कलाम का मक्सूद :

इल्मे कलाम का मक्सद सिर्फ़ सलफ़े सालेहीन से मन्कूल अक़ाइदे अहले सुन्नत की हिफ़ाज़त है इस के इलावा कुछ नहीं और इस के इलावा जो कुछ है वोह उमूर के हक़ाइक़ का कश्फ़ है लेकिन येह तरीक़ा कश्फ़ के बिग़ैर है। सुन्नत की हिफ़ाज़त ब तरीक़े इख़्तिसार अक़ाइद की मुख़्तसर सी किताब से हो सकती है और येह मिक्दार वोह है जिसे हम ने इसी किताब में “قواعد العقائد” के तहत बयान किया है। मुतवस्सित दर्जा 100 वरक़ की मिक्दार है, इसे हम ने अपनी किताब “الاقتصاد في الاعتقاد” में बयान किया है। इस इल्म की हाज़त इस लिये है कि बिदअती से मुनाज़रा किया जाए और ऐसी बातों से इस की बिदअत का मुक़ाबला किया जाए जो बिदअत को तोड़ दें और आम आदमी के दिल से इसे निकाल दें येह बात सिर्फ़ अ़वाम को नफ़अ बख़्श है जब कि वोह तअस्सुब में शिद्दत को न पहुंचे हों और बिदअती जब मुनाज़रा सीख लेता है अगर्चे कम हो तो उसे इल्मे कलाम बहुत कम नफ़अ देता है, अगर तुम इसे साकित व लाजवाब भी कर दो फिर भी वोह अपना मज़हब नहीं छोड़ेगा क्यूंकि वोह इसे अपना कुसूर ठेहराएगा और फ़र्ज़ करेगा कि किसी दूसरे के पास इस का जवाब है जिस से वोह अ़ाजिज़ आ गया है और तुम ने कुव्वते मुनाज़रा से उस को मुग़ालता मे डाल दिया है। जब कि आम आदमी को अगर इस तरह के मुनाज़रे के ज़रीए हक़ से फैर दिया जाए तो उसी की मिष्ल मुनाज़रे से इसे वापस लाया जा सकता है जब तक कि वोह तअस्सुब में मुतशद्दिद न हो और अगर उन का तअस्सुब हद से बढ़ जाए तो फिर उन से नाउम्मीदी हो जाती है क्यूंकि तअस्सुब की वजह से अक़ाइद दिलों में पुख़्ता हो जाते हैं और येह बुरे उ-लमा की आफ़ात में से है क्यूंकि वोह हक़ के लिये सख़्त तअस्सुब से काम लेते और मुख़ालिफ़ीन को हक़ारत की निगाह से देखते हैं जिस की वजह से इन में मुक़ाबले और जवाबी कार रवाई का ज़ब्बा जोश मारता है और वोह बातिल की मदद करने पर ज़ियादा आमादा हो जाते हैं और उन की तरफ़ जो मन्सूब किया जाता है वोह उस पर काइम रहने में ज़ियादा मज़बूत हो जाते हैं।

उ-लमा ने तअस्सुब को आदत व आलाकार बना लिया :

अगर उ-लमा तअस्सुब से बाला तर हो कर हकारत की नज़र फैर कर तन्हाई में प्यार व महबूबत और खैर ख़्वाही करते हुए उन्हें समझाते तो ज़रूर कामयाबी पाते । लेकिन चूंकि लोगों की पैरवी के बिगैर मक़ाम व मर्तबा नहीं मिलता और जब तक मुख़ालिफ़ पर ला'न ता'न न की जाए, उसे बुरा भला न कहा जाए तब तक लोग पैरवी करने पर आमादा नहीं होते इस लिये उन्होंने ने तअस्सुब को अपनी आदत और आलाकार बना लिया और इस का नाम दीन की हिफ़ाज़त और मुसलमानों की हिमायत रख दिया हालांकि दर हकीक़त येह लोगों की बरबादी और दिलों में बिदअत की मज़बूती का ज़रीआ है । बहर हाल जो इख़िलाफ़ात इन आख़िरी ज़मानों में पैदा हो गए हैं और उन में ऐसी तहरीरात, तस्नीफ़ात और मुनाज़रे निकले हैं जिन की मिषाल अस्लाफ़ में नहीं मिलती तुम उन के गिर्द घूमने से बचो और उन से ऐसे बचो जैसे ज़हरे कातिल से बचते हैं क्योंकि येह ला इलाज मरज़ है और इसी ने फ़िक्ह को एक दूसरे से मुकाबला करने और बाहम फ़ख़्र करने पर लगा दिया है जैसा कि अज़ क़रीब इस की हलाक़तों और आफ़तों का बयान आएगा । अल मुख़्तसर येह कि दानिश मन्दों के नज़दीक पसन्दीदा बात येह है कि तुम समझो दुन्या में तुम्हारा नफ़्स सिर्फ़ **اَبْلَاه** عَزَّوَجَلَّ के लिये है । तुम्हारे सामने मौत, रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में हाज़िरी, हिसाब व किताब और जन्नत व दोज़ख़ हैं फिर गौर करो और सोचो कि तुम्हारे सामने जो चीज़ें हैं इन में से कौन सी तुम्हारे लिये मददगार है, इस के इलावा सब छोड़ दो तो तुम सलामती पर हो ।

सिर्फ़ दो रक्अत ने फ़ाइदा दिया :

किसी बुजुर्ग ने एक आलिम को ख़्वाब में देख कर पूछा : “जिन उलूम में तुम झगड़े और मुनाज़रे करते थे उन का क्या हुवा ?” उन्होंने ने अपना हाथ फैलाया, उस पर फूंक मारी और कहा : “सब कुछ खाक हो कर उड़ गया और मुझे सिर्फ़ उन दो रक्अतों से फ़ाइदा हुवा जो मैं ने रात की तन्हाई में पढ़ी थीं ।”⁽¹⁾

हदीषे मुबारका में है : “कोई भी क़ौम हिदायत के बा'द गुमराह नहीं होती मगर झगड़ने वाले ।”⁽²⁾

फिर येह आयाते मुक़द्दसा तिलावत कीं :

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ۱، ص ۲۲۹۔

②.....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة الزخرف، الحديث: ۳۲۶۴، ج ۵، ص ۱۷۰۔

مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ
خَسُوفُونَ ﴿٥٨﴾ (پ ۵۸، الزخرف: ۵۸)

تर्जमए कन्जुल ईमान : उन्होंने ने तुम से येह न
कही मगर नाहक झगड़े को बल्कि वोह हैं ही
झगड़ा लू लोग ।

इरशादे बारी तअाला है :

فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ
الاية (پ ۳، آل عمران: ۷۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह जिन के दिलों में
कजी है ।

हदीषे मुबारका में है कि मजकूरा आयत में मुनाजरा बाजों (या'नी झगड़ने वालों) का जिक्र है ।
उन के मुतअल्लिक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने फरमाया : (پ ۲۸، المنفوقون: ۴) **فَاَحْذَرُہُمْ** तो इन से बचते रहो ।⁽¹⁾

बाज बुजुर्गों ने फरमाया : “आखिरी जमाने में ऐसे लोग होंगे जिन पर अमल का दरवाजा
बन्द हो जाएगा और झगड़े का दरवाजा खुल जाएगा ।”⁽²⁾

बा'ज रिवायतों में है : “बेशक तुम उस जमाने में हो कि जिस में तुम्हें अमल का
शौक नसीब हुवा अन करीब ऐसे लोग आएंगे जिन के दिलों में झगड़े का शौक डाल दिया
जाएगा ।”⁽³⁾

मशहूर हदीष में है कि “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नजदीक लोगों में सब से ज़ियादा नापसन्दीदा
वोह शख्स है जो बहुत झगड़ा लू है ।”⁽⁴⁾

येह भी हदीषे मुबारका है कि “जिस क़ौम को बोलने की कुव्वत दी गई वोह अमल से
रोक दी गई ।”⁽⁵⁾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ



①.....صحیح البخاری، کتاب التفسیر، سورة آل عمران، الحديث: ۴۵۴۷، ج ۳، ص ۱۸۹۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر بیان تفضیل علوم الصمت.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر بیان تفضیل علوم الصمت.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر بیان تفضیل علوم الصمت.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

④.....صحیح مسلم، کتاب العلم، باب فی الألد الخصم، الحديث: ۲۶۶۸، ص ۱۴۳۳۔

⑤.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر بیان تفضیل علوم الصمت.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

बाब नम्बर 4 :

लोगों के इख़िलाफ़ में पड़ने की वजह, मुबानर्रे की आफ़ात की तफ़्सील और इस के नवान की शराइत

मुक़द्दमा : लोग इख़िलाफ़ात की तरफ़ क्यों माइल हुए ?

जान लीजिये ! हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहूतशम ﷺ के बा'द ख़िलाफ़ात का सहारा खुलफ़ाए राशिदीन महदिय्यीन के सर सजा । येह हज़रात عَلِمَ بِاللّٰهِ थे । अहकामाते इलाहिय्या को समझते थे । मुक़द्दमात के फैसलों में फ़तवा के माहिर थे । फुक़हा से कम ही मदद लेते थे सिवाए इन वाकिआत के जिन में मश्वरे के बिगैर चारा न होता । इस लिये उ-लमा इल्मे आख़िरत के लिये फ़ारिग़ होते और महज़ इस में मशगूल रहते थे । येह हज़रात फ़तावा और लोगों के दुन्यवी अहकाम को दूसरों की तरफ़ टाल देते और मुकम्मल तौर पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ मुतवज्जेह रहते जैसा कि इन की सीरतों में मन्कूल है । फिर इन के बा'द जब हुकूमत ना अहल लोगों के हाथों में आई जो फ़तवा और अहकाम में गैर मुस्तक़िल थे तो वोह फुक़हा से मदद लेने और अहकामात जारी करने में उन से फ़तवे लेने के लिये हर वक़्त इन को अपने साथ रखने पर मजबूर हो गए । उस वक़्त कुछ ताबेई उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام मौजूद थे जो पहले के तौर तरीक़ों पर कारबन्द थे, ख़ालिस दीन से वाबस्ता थे, हमेशा उ-लमाए सलफ़ के नक़्शे क़दम पर चलते थे । जब उन्हें त़लब किया जाता तो भाग जाते और रुख़ फ़ैर लेते जिस की वजह से हुक़्मरानों की मजबूरी बन गई कि वोह उन्हें त़लब करें और क़ज़ा व दीगर हुकूमती ओहदों के लिये इस्सार करें । जब उस ज़माने के लोगों ने देखा कि उ-लमा का इस क़दर मक़ाम व मर्तबा है और हुक़्मरानों का त़बक़ा उन की तरफ़ मुतवज्जेह है हालांकि वोह उन से ए'तिराज़ करते हैं तो वोह हुक़्मरानों की तरफ़ से इज़्ज़त और मक़ाम व मर्तबा पाने के लिये त़लबे इल्म में मशगूल हो गए । इल्मे फ़तवा में मुनहमिक हो गए और अपने आप को हुक़्मरानों के सामने पेश कर के उन्हें अपना तअरुफ़ करवाया और उन से इन्आमात और ओहदों के मुतालबात किये । चुनान्चे,

तालिब मतलूब और मुअज्जज जलील हो गए :

इन में से कई तो महरूम रहे और कई कामयाब हो गए लेकिन जो कामयाब हुए वोह भी मांगने और तुफैली होने की जिल्लत व रुस्वाई से दामन न बचा सके। बस फिर फुकहा जो पहले मतलूब थे, अब तालिब बन गए। पहले हुक्मरानों से मुंह मोड़ कर मुअज्जज थे अब इन की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर जलील हो गए। मगर येह कि हर ज़माने में ऐसे उ-लमाए दीन हुए हैं जिन्हें **अल्लाह** عزّوجلّ ने बचने की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाई है।

इख़िलाफी मसाइल व मुनाज़रों में मशगूल होने की वजह :

अल गरज इस ज़माने में लोगों की ज़ियादा तर तवज्जोह फ़तावा और मुक़द्मात के फ़ैसलों के इल्म की तरफ़ रही क्यूंकि हुक्मरानों को इस की सख़्त हाज़त थी फिर इन के बा'द कुछ उमरा और रईस ऐसे ज़ाहिर हुए जो अक़ाइद के क़वाइद में लोगों की गुफ़्तगू सुनते। उन के दिल अक़ाइद के दलाइल सुनने की तरफ़ माइल हुए और इल्मे कलाम में मुनाज़रा व मुजादला की तरफ़ उन की रग़बत ग़ालिब हो गई तो लोग इल्मे कलाम में मुनहमिक हो गए। इस में कषीर किताबें लिख डालीं, मुनाज़रे के तरीक़े मुरत्तब कर दिये और गुफ़्तगू में मुख़ालिफ़ की बात तोड़ने के गुर निकाले और गुमान येह किया कि उन का मक़सद **अल्लाह** عزّوجلّ के दीन की हिमायत, सुन्नत की हिफ़ाज़त और बिदअत की बैख़कनी है जैसा कि इन से पहलों का गुमान था कि हमारा फ़तवा में मशगूल होने और अहक़ामे मुस्लिमीन का कफ़ील होने का मक़सद लोगों की ख़ैर ख़्वाही करना और उन पर शफ़क़त करना है। फिर इन के बा'द वोह लोग ज़ाहिर हुए जिन्होंने इल्मे कलाम में गौरो ख़ौज करने और इस में मुनाज़रे का दरवाज़ा खोलने को दुरुस्त न समझा क्यूंकि इस के सबब लोगों में सख़्त तअस्सुब और झगड़ों की फ़जा क़ाइम हो गई थी और नौबत खू रेज़ी और शहरों की बरबादी तक पहुंची थी, इस लिये उन के दिल फ़िक़ह में मुनाज़रा करने और ख़ास तौर पर फ़िक़हे शाफ़ेई व फ़िक़हे हनफ़ी में किस की बात औला है, उसे बयान करने की तरफ़ माइल हो गए तो लोग इल्मे कलाम और फुनूने इल्म को छोड़ कर बिल खुसूस हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई और हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا** के माबैन इख़िलाफी मसाइल पर तवज्जोह देने लगे और हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक, हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** वग़ैरा अइम्मा के दरमियान इख़िलाफी मसाइल को नज़र अन्दाज़ कर दिया और दा'वा येह किया कि इन का मक़सद शरीअत की बारीकियों का इस्तिम्बात, मज़हब की इल्लतों को षाबित करना और फ़तावा के उसूल तय्यार

करना है। इस सिलसिले में इन्होंने कभी किताबें लिखीं, इजतिहादत किये और मुनाज़रे की अक्साम व तसानीफ़ को मुरतब किया, वोह अब (या'नी इमाम गज़ाली رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي के दौर) तक इसी हालत पर हैं और हमें नहीं मालूम कि हमारे बा'द के ज़मानों में क्या हालात होंगे। इख़िलाफ़ी मसाइल और मुनाज़रों में लोगों के मशगूल होने की येही वजह है इस के सिवा कोई नहीं और अगर दुन्यादारों के दिल किसी दूसरे इमाम के साथ इख़िलाफ़ या किसी दूसरे इल्म की तरफ़ माइल होते हैं तो लोग भी इन के साथ इसी की तरफ़ माइल हो जाते हैं और येह बहाना करने से बाज़ नहीं आते कि जिस में वोह मशगूल हैं वोह इल्मे दीन है और उन का मक्सद सिर्फ़ **अल्लाह** रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल करना है।

पहली फ़स्ल : **मुनाज़रों की सहाबा के मशवरों और**

अस्लाफ़ के मुनाज़रों से मुशबहत देना धोका है

जान लो ! येह लोग अ़वाम को रफ़्ता रफ़्ता इस तरफ़ ले जाना चाहते हैं कि मुनाज़रों से हमारा मक्सद हक़ के बारे में बहूष व मुबाह़षा करना है ताकि वोह वाज़ेह हो क्यूंकि हक़ मतलूब है और इल्म में ग़ौरो फ़ि़क़र करने पर एक दूसरे की मदद करना नीज़ कईआरा का मुत्तफ़ि़क़ हो जाना मुफ़ीद है। मशवरों में सहाबए किराम رَضَوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की आदत भी येही थी जैसा कि दादा की मौजूदगी में भाइयों के (विराषत से) महरूम होने, शराब पीने की हद, हाकिम अगर ख़ता करे तो उस पर तावान वाजिब होने, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ख़ौफ़ से एक औरत का हम्ल ज़ाएअ हो जाने और विराषत के मसाइल में सहाबा के बाहम मश्वरे मन्कूल हैं। नीज़ जिस तरह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल, हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन हसन, हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक और हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ वग़ैरा उलमा से मन्कूल है।

तलबे हक़ के लिये मुनाज़रे की शराइत व अलामात :

जो मैं बयान करूंगा उस से तुम्हें इस धोके की ख़बर हो जाएगी और वोह येह है कि तलबे हक़ पर तआवुन करना दीनी काम है मगर इस की आठ शराइत व अलामात हैं :

﴿1﴾.....मुनाज़रा चूँकि फ़र्जे किफ़ाय़ा है इस लिये जो फ़र्जे ऐन उलूम को हासिल न कर चुका हो वोह इस में मशगूल न हो और जिस के ज़िम्मे फ़र्जे ऐन हों और वोह फ़र्जे किफ़ाय़ा में मशगूल हो जाए और येह दा'वा करे कि उस का मक़सद तलबे हक़ है तो वोह बड़ा झूटा है। इस की मिषाल उस शख़्स की सी है जो खुद नमाज़ को तर्क कर के कपड़ों को हासिल करने और बुनने में लगा हो और कहे कि मेरा मक़सद येह है कि मैं उस शख़्स के सतर को ढांपूं जिस के पास लिबास नहीं और वोह बरहना नमाज़ पढ़ता है क्यूँकि कभी ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो जाता है और इस का वुकूअ मुमकिन है जैसा कि फ़कीह समझता है कि उन नवादिरात का वुकूअ मुमकिन है जिन के इख़्तिलाफ़ में वोह बहूष करता है। मुनाज़रे में मशगूल होने वाले उन उमूर को छोड़ देते हैं जो बिल इत्तिफ़ाक़ फ़र्जे ऐन हैं और जिस शख़्स पर फ़ौरन अमानत लौटाना वाजिब हो और वोह नमाज़ शुरूअ करदे जो उम्दा इबादात में से है तो उस ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी की। लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि आदमी के मुतीअ व फ़रमांबरदार होने के लिये येह काफ़ी नहीं कि जो अमल वोह करे वोह इबादत व ताअत हो जब तक कि वोह उस में वक़्त, शराइत और तरतीब का लिहाज़ न करे।

﴿2﴾.....उस के सामने मुनाज़रे से अहम कोई दूसरा फ़र्जे किफ़ाय़ा न हो क्यूँकि जो अहम काम के होते हुए इस के इलावा कोई काम करेगा वोह अपने इस अमल में गुनहगार होगा। इस की मिषाल उस शख़्स की तरह है जो प्यासे लोगों का एक गुरौह देखे कि प्यास की वजह से मरने के करीब हैं और लोगों ने उन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया है जब कि येह उन्हें पानी पिला कर उन की ज़िन्दगी बचाने पर कादिर है मगर पछने लगाने का तरीक़ा सीखने में मशगूल हो जाए और कहे कि येह फ़र्जे किफ़ाय़ा में से है अगर शहर में कोई भी पछने लगाने वाला नहीं होगा तो लोग हलाक हो जाएंगे और अगर इस से कहा जाए कि शहर में पछने लगाने वालों का एक गुरौह मौजूद है और वोह काफ़ी हैं तो वोह कहे कि इस बात से इस फ़ैल का फ़र्जे किफ़ाय़ा होना ख़त्म तो नहीं हो गया।

अल ग़रज़ जो इस काम को करे और मुसलमानों के प्यासे गुरौह को पानी पिलाने जैसे अहम काम को छोड़ दे तो उस का हाल उस शख़्स की तरह है जो मुनाज़रे में मशगूल होता है हालांकि शहर में कई फ़र्जे किफ़ाय़ा ऐसे हैं जिन्हें छोड़ दिया गया है और इन्हें कोई काइम करने वाला नहीं। मिषाल के तौर पर फ़तवा जिसे एक जमाअत काइम किये हुए है और शहर में कई ऐसे फ़र्जे किफ़ाय़ा हैं जिन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया गया है लेकिन फ़ुक़हा उन की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होते। इन में से ज़ियादा करीब तिब्ब है कि अक़षर शहरों में मुसलमान तबीब मौजूद नहीं कि तिब्बी उमूर में जिन की गवाही शरअन मक़बूल हो और कोई भी फ़कीह इस में मशगूल होने

इहयाउल उलूम

[illegible]

❦.....मुनाज़िर मुजतहिद हो जो अपनी राए से फ़तवा दे मज़हबे शाफ़ेई या मज़हबे हनफी वगैरा फ़तवा न दे हत्ता कि अगर उसे हक़ मज़हबे हनफी में मा'लूम हो तो मज़हबे शाफ़ेई के मुवाफ़िक़ राए को तर्क कर दे और जो उस पर ज़ाहिर हो उस के मुताबिक़ फ़तवा दे जिस तरह सहाबए किराम और अइम्माए दीन رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ किया करते थे ।

4.....मुनाज़रा उसी मस्अले में करे जो वाक़ेअ़ हो चुका हो या ग़ालिब गुमान हो कि अ़न क़रीब वाक़ेअ़ होगा क्यूंकि सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهَ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ नए मसाइल ही में मश्वरा करते थे या उन में जो अकषर वाक़ेअ़ होते जैसे विराषत के मसाइल और आप देखोगे कि अब मुनाज़िरीन इन मसाइल में तहक़ीक़ का एहतिमाम नहीं करते जिन में अ़वाम मुब्तला हो और फ़तवे की हाज़त हो बल्कि ऐसे मसाइल ढूँडते हैं जिन में किसी तरह बहूष मुबाह़षे की गुन्जाइश ज़ियादा हो और बा'ज़ अवका़त ब कषरत वाक़ेअ़ होने वाले मसाइल को छोड़ देते हैं और कहते हैं कि इस मस्अले का तअल्लुक़ हदीष से है या कहते हैं कि येह मस्अला मुत्तफ़ि़का है, इख़्तिलाफ़ी मसाइल में से नहीं तो कितने तअज़्जुब की बात है कि मक्सूद त़लबे हक़ है तो वोह मस्अले को येह कह कर क्यूं छोड़ देते हैं कि येह हदीष से मुतअल्लिक़ है हालांकि हक़ अहादीष ही से हासिल होता है या इस लिये छोड़ देते हैं कि येह मस्अला इख़्तिलाफ़ी नहीं कि हम इस में त़वील कलाम करें हालांकि त़लबे हक़ में मक्सूद येह होता है कि मुख़्तसर कलाम कर के जल्द मक्सद को पहुंचा जाए, लम्बा कलाम न किया जाए ।

﴿5﴾.....वोह तन्हाई में मुनाज़रा करने को, महफ़िल में, उमरा और बादशाहों के सामने मुनाज़रा करने से ज़ियादा पसन्द और अहम जाने क्यूंकि तन्हाई में ज़ेहन मुज्त्तमअ होता, ज़ेहन व फ़िक्र की सफ़ाई जल्द हो जाती और हक़ को जल्द पाया जा सकता है जब कि मजमअ में रियाकारी के अस्बाब मुतहर्रिक होते हैं और हर एक अपनी बरतरी का हरीस होता है हक़ पर हो चाहे बातिल पर और आप जानते हैं कि महफ़िलों और मजमओं में उन की ख़्वाहिश रिज़ाए इलाही नहीं होती और येह कि उन में से कोई एक तवील मुद्त तक अपने रफ़ीक़ के साथ तन्हा होता है मगर इस से बात नहीं करता। कभी उस से सुवाल किया जाता है तो जवाब नहीं देता। जब किसी ओहदे दार के सामने हो या लोगों का इजतिमाअ हो तो वोह तक्ररीर में अपनी इनफ़िरादिय्यत मनवाने में ज़रा कोताही नहीं करता।

﴿6﴾.....तलबे हक़ में मुनाज़िर का हाल उस शख्स की तरह हो जो गुमशुदा चीज़ को तलाश कर रहा हो, वोह इस में फ़र्क़ नहीं करता कि गुमशुदा चीज़ बराहे रास्त उसे मिले या उस के मुआविन व मददगार के ज़रीए मिले। वोह अपने रफ़ीक़ (या'नी मदे मुक़बिल) को मददगार समझता है मुख़ालिफ़ नहीं और अगर उस का रफ़ीक़ उसे उस की ग़लती बताए और उस के सामने हक़ को वाज़ेह करे तो वोह उस का शुक्रिया अदा करता है जैसा कि अगर वोह अपनी गुमशुदा चीज़ की तलाश में एक रास्ते को इख़्तियार करे तो उस का रफ़ीक़ उसे बताए कि उस की गुमशुदा चीज़ दूसरे रास्ते में है तो वोह उस का शुक्रिया अदा करता है, उस की बुराई नहीं करता बल्कि उस की इज़्ज़त करता और उस से खुश होता है। सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ की मुशावरतें ऐसी ही थी जैसा कि, **तालिबे हक़ ऐसा होता है :**

एक मरतबा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ लोगों के मजमअ में खुतबा दे रहे थे कि एक औरत ने आप की किसी बात का इन्कार किया और हक़ बात पर आगाह किया तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “औरत ने दुरुस्त कहा और मर्द से ख़ता हो गई।”⁽¹⁾

एक शख्स ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़रम اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْکَرِیْم से सुवाल किया, आप ने जवाब दिया तो उस ने अर्ज़ की : “या अमीरल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ यूँ नहीं बल्कि इस तरह है। तो आप रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया :

①.....جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، فصل فی الانصاف فی العلم، الحديث: ۵۸۸، ص ۷۹ -

“तुम ने ठीक कहा और मैं ने ग़लती की और हर इल्म वाले से ऊपर एक इल्म वाला है।”⁽¹⁾
 हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा अशअरी
 رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को वोह बात बताई जो उन से रह गई थी तो उन्होंने ने फ़रमाया : “जब तुम में येह
 बड़े अलिम मौजूद हों तो मुझ से न पूछा करो।”⁽²⁾

वाक़िआ यूं है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना मूसा अशअरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से उस
 शख्स के बारे में पूछा गया जो राहे खुदा में जिहाद करते हुए मारा जाए तो आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ
 ने जवाब दिया : “वोह जन्नती है।” उस वक़्त आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कूफ़ा के अमीर थे। हज़रते
 सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने खड़े हो कर फ़रमाया : “दोबारा पूछो,
 शायद मेरा सुवाल नहीं समझे।” लोगों ने दोबारा पूछा मगर अमीरे कूफ़ा ने वोही जवाब दिया
 तो हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कहा : “मैं कहता हूं, अगर वोह मारा गया
 और हक़ को पहुंचा तो जन्नती है।” अमीरे कूफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी
 रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “हक़ वोह है जो इन्हों ने कहा।”⁽³⁾

त़ालिबे हक़ का इन्साफ़ ऐसा होता है। अगर इस ज़माने में किसी अदना फ़कीह को भी
 इस तरह कहा जाए तो वोह इस का इन्कार करेगा और इसे बर्इद समझेगा और कहेगा कि “येह
 कहने की हाज़त नहीं कि अगर वोह हक़ को पहुंचा” क्यूंकि येह तो सब को मा'लूम है। पस तुम
 आज कल के मुनाज़िरीन का हाल देखो कि अगर हक़ किसी मुख़ालिफ़ की ज़बान से ज़ाहिर हो
 जाए तो किस तरह उस का चेहरा सियाह हो जाता और कैसे वोह इस की वजह से शर्मिन्दा होता
 है। वोह इस का इन्कार करने की मुकम्मल कोशिश करता है और त़वील अर्से तक इस की बुराई
 करता है फिर हक़ पर ग़ौरो फ़ि़र करने पर मदद करने में अपने आप को सहाबए किराम
 رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اٰجْمَعِيْنَ के साथ तशबी देने में हया भी नहीं करता।

﴿7﴾.....वोह मुनाज़रे में शरीक दूसरे शख्स को एक दलील से दूसरी दलील और एक ए'तिराज़
 से दूसरे ए'तिराज़ की तरफ़ जाने से मन्अ न करे। अस्लाफ़ के मुनाज़रे ऐसे ही होते थे। अपनी
 गुफ़्तगू से झगड़े की तमाम नई बारीकियों को ख़ारिज कर दे ख़्वाह वोह उस के हक़ में हों या उस
 के ख़िलाफ़। मषलन उस का येह कहना कि “इसे बयान करना मुझ पर लाज़िम नहीं, येह बात

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع في آداب العالم والمتعلم، الحديث: ٥٨٩، ص ١٤٩۔

②.....الموطأ للإمام مالك، كتاب الرضاع، باب ماجاء في الرضاعة بعد الكبر، الحديث: ١٣٢٦، ج ٢، ص ١٢٤۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٥٥ تا ٢٥٦۔

तुम्हारी पहली बात के खिलाफ है लिहाजा क़बूल नहीं की जाएगी” क्योंकि हक़ की तरफ़ रुजूअ करना बातिल को तोड़ देता है और उसे क़बूल करना वाजिब है जब कि आप देखते हैं कि तमाम मजलिसें झगड़ों और एक दूसरे का रद्द करने में ख़त्म हो जाती हैं यहां तक कि जब कोई दलील देने वाला किसी अस्ल की एक इल्लत ठहरा कर कलाम करता है तो उस से कहा जाता है कि “तुम्हारे पास इस की क्या दलील है कि इस हुक्म की अस्ल में इल्लत येही है ?” वोह कहता है : “मुझे तो येही मा’लूम हुई है अगर तुम्हें इस से ज़ियादा वाजेह और बेहतर इल्लत मा’लूम है तो वोह बयान करो ताकि मैं इस में ग़ौरो फ़िक्र करूं।” तो मो’तरिज़ मुसिर रहता है और कहता है कि “जो तुम ने बयान किया इस के इलावा इस के कई मअानी हैं जो मैं जानता हूं लेकिन मैं वोह बयान नहीं करूंगा क्योंकि मुझ पर उन्हें बयान करना लाज़िम नहीं।” दलील देने वाला कहता है : “इस के इलावा जिस इल्लत का तुम दा’वा करते हो उसे बयान करो।” लेकिन फिर भी वोह अपने मौक़िफ़ पर बज़िद रहता है और कहता है कि “मुझ पर बयान करना लाज़िम नहीं।” इस तरह के सुवालात से मुनाज़रे की मजालिस शोर शराबे की नज़्म हो जाती हैं और येह बेचारा नहीं जानता कि इस का येह कहना कि “मैं जानता हूं मगर बयान नहीं करूंगा क्योंकि मुझ पर लाज़िम नहीं।” शरीअत पर झूट है कि अगर वोह इस के मअानी नहीं जानता और महज़ मुख़ालिफ़ को अज़िज़ करने के लिये कहता है तो वोह फ़ासिक्, कज़़ाब है, उस ने **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी की और ऐसी बात का दा’वा कर के जो उसे मा’लूम नहीं **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की नाराज़ी को दा’वत दी और अगर सच्चा है तो शरीअत की बात जिसे वोह जानता है छुपाने की वजह से फ़ासिक् हो गया जब कि उस के मुसलमान भाई ने उस से पूछा ताकि वोह उसे समझे और उस में ग़ौरो फ़िक्र करे, अगर वोह क़वी है तो उस की तरफ़ रुजूअ करे और अगर ज़ईफ़ है तो उस के सामने उस का जो’फ़ बयान कर के उसे जहालत के अन्धेरे से निकाल कर इल्म की रौशनी दे।”

इस में कोई इख़िलाफ़ नहीं कि दीन की जो बात वोह जानता है जब उस से पूछी जाए तो उस पर बताना वाजिब है तो फिर उस की इस बात कि “मुझ पर लाज़िम नहीं” का मतलब येह हुवा कि झगड़े की शरीअत, जिसे हम ने ख़्वाहिशात और हीला साज़ी और कलाम के ज़रीए नीचा दिखाने के तरीक़ों में रग़बत की वजह से निकाला है इस के मुताबिक़ लाज़िम नहीं वरना शरई तौर पर येह लाज़िम है क्योंकि इसे बयान करने से रुकने के सबब वोह काज़िब है या फ़ासिक्। पस तुम सहाबए किराम **رَضَوُاَنِ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ** की मुशावरतों और अस्लाफ़ के मुजाक़रों के

मुतअल्लिक तहकीक कर लो क्या वोह ऐसे थे ? क्या उन में से किसी ने एक दलील से दूसरी दलील की तरफ, कियास से अषर की तरफ या हदीष से आयत की तरफ जाने से मन्अ किया ? (नहीं) बल्कि उन के तमाम मुनाजरे इसी किस्म के थे कि जो कुछ उन के दिल में आता वोह सब कुछ जिक्र कर देते और सब उस में गौरो फिर करते ।

﴿8﴾.....मुनाजरा उस शख्स से किया जाए जो इल्म सीखने में मशगूल हो और उस से फ़ाइदा हासिल होने की उम्मीद हो लेकिन अब मुनाजिरीन ग़ालिबन बड़े बड़े उ-लमा के साथ मुनाजरा करने से इजतिनाब करते हैं इस डर से कि उन की ज़बानों पर हक़ जारी हो जाएगा और उन से मुनाजरा करना पसन्द करते हैं जो इल्म में कमतर हों ताकि उन पर बातिल को रवाज दें ।

शैतान का खिलौना :

इन के इलावा भी बहुत सी बारीक शराइत हैं लेकिन इन आठ शराइत में जो बयान हुवा इस से तुम्हें मा'लूम हो जाएगा कि कौन रिज़ाए इलाही के लिये मुनाजरा करता है और कौन इस के सिवा किसी और मक्सद के लिये । मुख़्तसर येह कि याद रखो जो शैतान से मुनाजरा नहीं करता हालांकि वोह उस के दिल पर मुसल्लत और उस का सब से बड़ा दुश्मन और उसे हलाकत की तरफ़ बुलाता रहता है, वोह इस के इलावा लोगों से उन मसाइल में मुनाजरा करता है जिन में मुज्ताहिद राहे रास्त पर होता है या अज़्रो षवाब में दुरुस्त राह पाने वाले के साथ शरीक होता है । ऐसा शख्स शैतान के लिये खिलौना और मुख़्लिस लोगों के लिये इब्रत है । इसी लिये शैतान उस पर खुश होता है कि इस ने उसे उन आफ़ात के अन्धेरों में ग़ौता दे रखा है जिन्हें हम जिक्र करेंगे और इन की तफ़्सील बयान करेंगे । हम **अल्लाह** से अच्छी मदद व तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं ।

.....हलाकत में डालने वाले आ'माल.....

फ़रमाने मुस्तफ़ा :

“हलाकत में डालने वाले सात गुनाहों से बचते रहो, वोह येह है :

- (1) **अल्लाह** عزّوجلّ का शरीक ठहराना (2) जादू करना (3) **अल्लाह** عزّوجلّ की ह़राम कर्दा जान को ना हक़ क़त्ल करना (4) यतीम का माल खाना (5) सूद खाना (6) मैदाने जिहाद से फ़रार होना और (7) सीधी सादी, पाक दामन, मोमिना औरतों पर जिना की तोहमत लगाना ।” (صحیح البخاری، الحدیث २५१، ص २२२)

दूसरी फ़स्ल : मुनाज़रे की आफ़ात और इस से नज़म लेने वाली हलाकत ख़ैर आदात

जान लीजिये और यकीन कर लीजिये कि जो मुनाज़रा ग़ालिब आने, सामने वाले को ख़ामोश व लाजवाब करने, अपनी फ़ज़ीलत व इज़्ज़त ज़ाहिर करने, लोगों के सामने मुंह खोल कर बातें करने, फ़ख़्र व गुरूर, हुज्जत बाज़ी और लोगों की तवज्जोह हासिल करने की निय्यत से हो वोह उन तमाम मज़मूम सिफ़ात की बुन्याद है जो **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक बुरी और दुश्मने खुदा “इब्लीस” को अच्छी लगती हैं। इस की निस्बत तकब्बुर, खुद पसन्दी, हसद, बुग़ज़, पाक बाज़ बनने और हुब्बे जाह वग़ैरा बातिनी बुराइयों की तरफ़ ऐसी है जैसे शराब पीने की निस्बत ज़ाहिरी बुराइयों या’नी ज़िना, तोहमत, क़त्ल और चोरी की तरफ़ और जैसे वोह शख्स कि जिसे शराब पीने और दूसरी बुराइयों के दरमियान इख़्तियार दिया जाए तो वोह शराब को मा’मूली समझ कर पी बैठे फिर शराब के नशे में बक़िया गुनाहों का भी इर्तिकाब कर बैठे। इस तरह जिस पर दूसरों को ख़ामोश व लाजवाब करने, मुनाज़रे में ग़लबा पाने, हुब्बे जाह, फ़ख़्र व गुरूर की ख़्वाहिश ग़ालिब हो तो येह चीज़ उसे दिल की तमाम बातिनी बुराइयों की तरफ़ ले जाएगी और उस के नफ़्स में तमाम बुरी सिफ़ात की ख़्वाहिश जोश मारेगी। मोहलिकात के बयान में कुरआनो हदीष से उन सिफ़ात की बुराई के दलाइल आएंगे लेकिन फ़िलहाल हम उन तमाम बुरी सिफ़ात की तरफ़ इशारा करेंगे जो मुनाज़रे के सबब वजूद में आती हैं। चुनान्चे,

मुनाज़रे के बाइष पैदा होने वाली बुरी सिफ़ात :

﴿1﴾.....हसद : सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हसद नेकियों को इस तरह खा जाता है जिस तरह आग लकड़ियों को खा जाती है।” (1)

मुनाज़िर हसद से नहीं बच सकता क्यूंकि कभी वोह ग़ालिब आता है और कभी मग़लूब हो जाता है। कभी उस के कलाम की ता’रीफ़ की जाती है और कभी दूसरे के कलाम को अच्छा कहा जाता है। पस जब तक दुन्या में एक शख्स भी ऐसा ज़िन्दा रहेगा जिस के कुव्वते इल्म और कुव्वते इजतिहाद का ज़िक्र किया जाएगा या उस के ख़याल में उस का कलाम अच्छा और फ़िक्र मजबूत होगी तो वोह ज़रूर उस से हसद करेगा और उस से ज़वाले ने’मत की तमन्ना करेगा और

पसन्द करेगा कि लोगों के दिल उस की तरफ़ से फिर कर मेरी तरफ़ माइल हो जाएं। हसद एक जलाने वाली आग है पस जो इस में मुब्तला हुवा वोह दुन्या में भी अज़ाब में गिरिफ़्तार हुवा और आखिरत का अज़ाब तो ज़ियादा सख़्त और बड़ा है। इसी लिये हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : “इल्म को जहां पाओ ले लो लेकिन फुक़हा के वोह अक़वाल क़बूल न करो जो एक दूसरे के ख़िलाफ़ हों क्यूंकि वोह एक दूसरे के ऐसे ही दुश्मन हैं जैसे बाड़े में बकरे एक दूसरे के दुश्मन होते हैं।”⁽¹⁾

﴿2﴾.....तकब्बुर और खुद को लोगों से बुलन्द समझना : सरदारो मक्कए मुकर्मा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो तकब्बुर करता है **اَللّٰهُ** उसे पस्त कर देता है और जो अज़िज़ी व इन्किसारी अपनाता है **اَللّٰهُ** उसे बुलन्दी अता फ़रमाता है।”⁽²⁾

नीज़ हदीषे कुदसी है कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “अज़मत मेरा इज़ार है और किब्रियाई मेरी चादर तो जो इन में मुझ से झगड़ेगा मैं उसे तबाहो बरबाद कर दूंगा।”⁽³⁾

मुनाज़िर अपने हम अस्त्रों और हम मिष्ल लोगों पर तकब्बुर करने और अपनी हैषियत से बढ़ कर मर्तबा चाहने से नहीं बच सकता हत्ता कि वोह मजालिस में बैठने की जगह पर झगड़ते हैं, बुलन्द व पस्त जगह, मक़ामे सदरत से कुर्बो दूरी और रास्ते तंग होने की सूरत में पहले दाख़िल होने पर मुक़ाबला करते हैं। कभी इन में से ग़बी, मक्कार, धोकेबाज़ बहाना करता है कि वोह तो इल्म की हिफ़ाज़त चाहता है और “मोमिन को अपने नफ़्स की तज़लील से मन्अ किया गया है।”⁽⁴⁾

पस वोह तवाज़ोअ जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने क़ाबिले ता'रीफ़ क़रार दिया उसे ज़िल्लत से ता'बीर करता है और तकब्बुर जो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के नज़दीक बुरा है उसे दीन की इज़ज़त बताता है। नामों में तहरीफ़ करता है ताकि इस के ज़रीए लोगों को गुमराह करे जिस तरह हिकमत और इल्म वगैरा नामों में तहरीफ़ की गई।

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب حکم قول العلماء بعضهم في بعض، الحديث: ١١٨٣، ص ٢٣٥۔

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب البراءة من الكبر والتواضع، الحديث: ٢١٤٦، ج ٢، ص ٢٥٨۔

موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب التواضع والخمول، الحديث: ٤٤، ج ٣، ص ٥٥٢۔

③.....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب البراءة من الكبر والتواضع، الحديث: ٢١٤٣، ج ٢، ص ٢٥٨۔

المستدرک، کتاب الايمان، باب اهل الجنة، المغلوبون الضعفاء.....الخ، الحديث: ٢٠٩، ج ١، ص ٢٣٥۔

④.....سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ٦٤، الحديث: ٢٢٦١، ج ٢، ص ١١٢۔

﴿3﴾.....कीना : मुनाज़िर इस से भी महफूज़ नहीं रह सकता हालांकि मक्की मदनी सरकार, महबूबे परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुसलमान कीना परवर नहीं होता।”⁽¹⁾

कीने की मजम्मत व बुराई में जो कुछ मरवी है वोह किसी पर मख़्फ़ी नहीं और तुम किसी मुनाज़िर को इस पर कादिर न देखोगे कि वोह उस शख्स से कीने को छुपाए जो उस के मुख़ालिफ़ का कलाम सुन कर सर हिलाता है और उस का कलाम सुन कर न सर हिलाता है और न अच्छे तरीके से सुनता है बल्कि जब मुनाज़िर उसे देखेगा तो कीने को छुपाने और दिल ही दिल में इसे बढ़ाने पर मजबूर हो जाएगा और ज़ियादा से ज़ियादा येह कर सकेगा कि निफ़ाक़ के तौर पर कीने को छुपा लेगा लेकिन अ़म तौर पर वोह ज़ाहिर हो ही जाता है।

नीज़ मुनाज़िर कीने से क्यूंकर बच सकता है जब कि तमाम सुनने वालों का मुत्तफ़ि़का तौर पर उस के कलाम को तरजीह देना मुतसव्विर नहीं और न येह मुमकिन है कि हर हालत में वोह उस के ए'तिराज़ात व जवाबात को अच्छा बताएं बल्कि उस के मुख़ालिफ़ से अगर कोई छोटी सी बात भी ऐसी सादिर हो गई जिस से उस के कलाम की तरफ़ तवज्जोह कम हो गई तो ज़िन्दगी भर उस के दिल में मुख़ालिफ़ का कीना जम जाएगा।

﴿4﴾.....गीबत : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने गीबत को मुर्दार खाने से तशबीह दी है। मुनाज़िर हमेशा मुर्दार खाता रहता है क्यूंकि वोह मुख़ालिफ़ का कलाम नक़ल करने और उस की मजम्मत करने से बाज़ नहीं रह सकता। वोह ज़ियादा से ज़ियादा येह एहतियात कर लेगा कि मुख़ालिफ़ की जो बात नक़ल करेगा उस में सच बोलेगा, झूट से काम नहीं लेगा, अलबत्ता ऐसी बातें ज़रूर नक़ल करेगा जो उस के कलाम के ऐब, इज़्ज़ और उस की फ़ज़ीलत की कमी पर दलालत करें और येही गीबत है, अगर उस के बारे में झूट नक़ल करेगा तो बोहतान होगा। इसी तरह मुनाज़िर उस शख्स की इज़्ज़त के दरपै होने से भी अपनी ज़बान को काबू में नहीं रख सकता जो उस के कलाम से ए'राज़ करे और उस के मुख़ालिफ़ का कलाम तवज्जोह से सुने हत्ता कि वोह ऐसे शख्स को जाहिल, अहमक़, नासमझ और बे वुकूफ़ बताएगा।

﴿5﴾.....ख़ुद पसन्दी का शिकार होना : मुनाज़िरे से जनम लेने वाली बुराइयों में से एक अपने नफ़्स की ता'रीफ़ करना भी है। इरशादे बारी तअ़ला है :

①.....الزّواجر عن اقتراف الكبائر، الباب الاول، الكبيرة الثالثة، ج ١، ص ٢٣ -

المعجم الاوسط، الحديث: ٢٦٥٣، ج ٣، ص ٣٠١ -

فَلَا تَزْكُوا أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَا
اتَّقَى ۖ (پ ۲، النجم: ۳۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ वोह खूब जानता है जो परहेजगार हैं।

किसी दाना से पूछा गया : “बुरा सच क्या है?” जवाब दिया : “आदमी का अपने मुंह मियां मिठू बनना।”

मुनाज़िर कुव्वत व ग़लबा और हम अस्सों पर फ़ौक़ियत के साथ अपनी ता'रीफ़ करने से नहीं रह सकता और मुनाज़रे के दौरान येह भी ज़रूर कहता है कि मैं उन लोगों में से नहीं जिन पर इस जैसी बातें पोशीदा होती हैं। मैं मुख़्तलिफ़ उलूम का माहिर, उसूल व अह़ादीष याद करने में मुन्फ़रिद हूं। इस के इलावा वोह बातें जिन से अपनी ता'रीफ़ की जाती है कभी तो शैख़ी मारने के तौर पर कहता है और कभी ज़रूरत की वजह से ताकि इस का कलाम मशहूर हो। येह बात मा'लूम है कि शैख़ी मारना और खुद पसन्दी का शिकार होना दोनों शरई तौर पर भी बुरे हैं और अक़ली तौर पर भी।

﴿6﴾.....तजस्सुस और लोगों के छुपे उयूब तलाश करना :

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने अज़ीम है :

وَلَا تَجَسَّسُوا (پ ۲، الحجرات: ۱۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और ऐब न ढूढो।

मुनाज़िर अपने हम अस्सों की ख़ताएं और मुख़्तलिफ़ के उयूब तलाश करने से बाज़ नहीं रह सकता यहां तक कि अगर उसे ख़बर मिले कि उस के शहर में कोई मुनाज़िर आ रहा है तो वोह ऐसे शख़्स को तलाश करता है जो उस के पोशीदा हालात उसे बताए। सुवाल कर कर के उस की बुराइयां निकालता और ज़रूरत के वक़्त उसे ज़लील व रुस्वा और शर्मिन्दा करने के लिये ज़ख़ीरा करता है। उस के बचपन के हालात और बदन के उयूब तक पूछता है कि शायद उस की कोई लगज़िश या उस का कोई ऐब मषलन गंजा होना वगैरा मा'लूम हो जाए। फिर जब उस का मा'मूली ग़लबा महसूस करे तो अगर वोह सन्जीदा हो तो किनायतन उस का ऐब बयान करता है और इस बात को अच्छा समझा जाता और नुक्ता व बारीक बीनी शुमार किया जाता है और अगर वोह बे हयाई और मज़ाक़ मस्ख़री से खुश होता हो तो उस की बुराई खुल कर बयान करता है। जैसा कि मो'तबर मुनाज़िरीन के बारे में मन्कूल है जो बड़े पाए के मुनाज़िर शुमार किये जाते हैं।

﴿7﴾.....लोगों की बुराइयों पर खुश होना और खुशी पर रन्जीदा होना : जो अपने भाई के लिये वोह चीज़ पसन्द नहीं करता जो अपने लिये पसन्द करता है तो वोह मुसलमानों के अख़्लाक़ से दूर है। पस हर वोह शख़्स जो अपनी फ़ज़ीलत ज़ाहिर कर के फ़ख़र करना चाहता

है उसे वोह बात ज़रूर खुश करती है जो उस के हम अस्त्रों और फ़ज़ीलत में उस के हम पल्ला लोगों को तकलीफ़ पहुंचाती है। इन में ऐसी दुश्मनी होती है जैसी सोंकनों में होती है। जिस तरह एक सोकन जब दूसरी को दूर से देखती है तो घबरा कर लरज़ जाती और उस का रंग पीला पड़ जाता है इसी तरह तुम मुनाज़िर को देखोगे कि जब वोह किसी दूसरे मुनाज़िर को देख लेता है तो इस का रंग बदल जाता और वोह घबरा जाता है जैसे उस ने कोई सरकश जिन्न या शिकारी दरन्दा देख लिया हो। तो कहां है वोह महब्बत व प्यार जो उ-लमा के दरमियान बाहम मुलाक़ात के वक़्त होता है और कहां है वोह जो उ-लमा के बारे में भाईचारा, एक दूसरे की मदद करना और खुशी ग़मी में एक दूसरे के साथ शरीक होना मन्कूल है।

मरबूत रिश्ता :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : “इल्म अहले फ़ज़ल व अक़ल के दरमियान मरबूत रिश्ता है।”

लिहाज़ा जिन लोगों के दरमियान क़तई दुश्मनी है वोह हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के मज़हब की इक़्तिदा का दा'वा कैसे करते हैं? ग़लबा व फ़ख़ की ख़्वाहिश होते हुए इन में महब्बत की फ़ज़ा हरगिज़ हरगिज़ क़ाइम नहीं हो सकती। तुम्हें मुनाज़रे की इतनी बुराई काफ़ी है कि मुनाफ़िक्कीन के अख़्लाक़ तुम्हारी आदात बन जाएं और तुम मोअमिनीन व मुत्तक्कीन के अख़्लाक़ से महरूम हो जाओ।

﴿8﴾.....मुनाफ़क़त : इस की मज़म्मत में दलाइल देने की हाज़त नहीं, मुनाज़िरीन इस पर मजबूर होते हैं, क्यूंकि वोह अपने मुख़ालिफ़ीन और उन के मुहिब्बीन व मुत्तबेईन से मिलते हैं तो ज़बान से इन की महब्बत और इन के मक़ाम व मर्तबे के शौक़ का इज़हार करने के सिवा उन्हें कोई चारा नहीं होता हालांकि मुत्तकल्लिम व मुख़ातब और तमाम सुनने वाले जानते हैं कि येह झूट, मुनाफ़क़त और फुजूर है क्यूंकि वोह ज़बान से तो महब्बत का इज़हार करते हैं लेकिन दिलों में एक दूसरे से नफ़रत रखते हैं। हम उन से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगते हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से मरवी है कि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब लोग इल्म सीखें और अमल छोड़ दें, ज़बानों से इज़हारे महब्बत करें और दिलों में बुग़ज़ व अ़दावत रखें और रिश्ते काटें उस वक़्त इन पर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ला'नत होगी और वोह इन्हें अन्धा और बहरा कर देगा।”⁽¹⁾ इस रिवायत की सिहहत इस हालत के मुशाहदे से षाबित है।

①.....الزهد للإمام أحمد بن حنبل، فضل أبي هريرة، الحديث: ٨٣٦، ص ٤٦١۔

العقوبات لابن أبي الدنيا، اسباب العقوبات وانواعها، الحديث: ١٠، ص ٢٢۔

﴿9﴾.....हक़ से तकब्बुर करना, इसे बुरा जानना और इस में झगड़ने को पसन्द करना :

मुनाज़रे से जनम लेने वाली बुराइयों में से एक बुराई हक़ से तकब्बुर करना, इसे बुरा जानना और इस में झगड़ने को पसन्द करना भी है। यहां तक कि मुनाज़िर के लिये येह बात सब से ज़ियादा क़ाबिले नफ़रत होती है कि उस के मुख़ालिफ़ की ज़बान पर हक़ ज़ाहिर हो। अगर ज़ाहिर हो जाए तो इस का इन्कार करने की भरपूर कोशिश करता है और इसे रद करने के लिये धोका, मक्र व फ़रैब और हीला करने की हर मुमकिन कोशिश करता है। हत्ता कि उस में झगड़ा करने की तबई अ़दत बन जाती है। फिर वोह जो भी कलाम सुनता है उस की तबीअत इस पर ए'तिराज़ करने की तरफ़ राग़िब होती है और मुआमला यहां तक पहुंच जाता है कि कुरआने हकीम के दलाइल और शरीअत के अल्फ़ाज़ के बारे में भी ए'तिराज़ की अ़दत उस के दिल पर ग़ालिब आ जाती है। फिर वोह बा'ज अल्फ़ाज़ को बा'ज के मुक़ाबले में लाता है हालांकि बातिल के मुक़ाबले में भी झगड़ा करना ममनूअ है क्यूं कि हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ ने हक़ के साथ बातिल के ख़िलाफ़ झगड़ा तर्क करने की तरगीब दिलाई है। चुनान्वे,

ताजदारे दो अ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो बातिल पर हो और झगड़ा छोड़ दे **अल्लाह** عزّوجلّ उस के लिये जन्नत के एक कोने में घर बनाएगा और जो हक़ पर हो और झगड़ा न करे तो **अल्लाह** عزّوجلّ उस के लिये जन्नत के ऊपर वाले दर्जे में घर बनाएगा।”⁽¹⁾

नीज़ **अल्लाह** عزّوجلّ ने हक़ को झुटलाने और ज़ाते इलाही पर झूट बांधने वालों को यक्सां क़रार दिया है। चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ^ط (پ ۲۱، العنکبوت: ۲۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे या हक़ को झुटलाए जब वोह उस के पास आए।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ
بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ^ط (پ ۲۳، الزمر: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन जो **अल्लाह** पर झूट बांधे या हक़ को झुटलाए जब वोह उस के पास आए।

①.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء فی المراء، الحدیث: ۲۰۰۰، ج ۳، ص ۴۰۰۔

سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی حسن الخلق، الحدیث: ۴۸۰۰، ج ۴، ص ۳۳۲، بتغییر۔

﴿10﴾.....रियाकारी और लोगों पर निगाह रखना : रियाकारी, लोगों पर निगाह रखना, उन के दिलों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने और उन के चेहरों को अपनी तरफ़ फैरने की कोशिश करना भी मुनाज़रे की बुराइयों में से एक बुराई है। रियाकारी एक लाइलाज बीमारी है, जो बड़े बड़े गुनाहों की तरफ़ ले जाती है। जैसा कि “**كتاب الريا**” में आया। मुनाज़िर का मक्सद येही होता है कि वोह लोगों के सामने ज़ाहिर हो और लोग उस की ता’रीफ़ करें।

मज़कूर 10 बुराइयां बड़ी बड़ी बातिनी बुराइयों में से हैं और वोह अ़दात जो ग़ैर सन्जीदा मुनाज़िरीन में पाई जाती हैं इन के इलावा हैं जैसे ऐसा झगड़ा जिस में मार धाड़, थप्पड़ रसीद करना, चेहरे पर मारना, कपड़े फाड़ना, दाढ़ी पकड़ना, वालिदैन को गालियां देना, असातिज़ा को बुरा भला कहना और खुल्लम खुल्ला तोहमत लगाना और इलज़ाम तराशी करना है। बिला शुबा ऐसे लोगों का शुमार समझदार लोगों में नहीं होता। इन में से जो अकाबिर और अहले अक्ल होते हैं वोह भी इन 10 ख़स्लतों में मुब्तला होते ही हैं। अलबत्ता कुछ लोग, बा’ज ख़स्लतों से महफूज़ रहते हैं जब कि मदे मुकाबिल मुनाज़िर इस से कम मर्तबा हो या ज़ियादा मर्तबे वाला हो या इस के शहर और अस्बाबे मईशत से दूर का हो और अगर दोनों हम पल्ला हों तो फिर इन ख़स्लतों से नहीं बच सकते। फिर इन 10 ख़स्लतों में से हर एक ख़स्लत से मज़ीद 10 बेहूदा हरकात जनम लेती हैं हम इन में से हर एक की तफ़सील बयान कर के, गुफ़्तगू तवील नहीं करेंगे, जैसा कि नाक चढ़ाना, गुस्सा करना, दुश्मनी रखना, लालच करना, ग़लबा पाने और फ़ख़र करने की कुदरत हासिल करने के लिये तलबे माल व इज़्ज़त की महब्वत, गुरूर, इतराना, मालदारों और बादशाहों की ता’ज़ीम करना, इन के दरबारों में आना जाना, इन के हराम माल हासिल करना, घोड़ों, सुवारियों और ममनूअ कपड़ों से ज़ीनत इख़्तियार करना, फ़ख़र व गुरूर में मुब्तला हो कर लोगों को हकीर समझना, फुज़ूल कामों में ग़ौरो ख़ौज़ करना, ज़ियादा बातें करना, दिल से ख़ौफ़ो ख़शियत और नर्मी निकल जाना, दिल पर ग़फ़लत तारी हो जाना कि इन में से जब कोई नमाज़ पढ़े तो उसे येह मा’लूम न हो कि उस ने कौन सी नमाज़ पढ़ी ? कहां से क़िरात की ? और किस की बारगाह में मुनाजात कर रहा है ? मुनाज़रे में मददगार उलूम में तमाम उम्र मशगूल रहने के बा वुजूद वोह अपने दिल में खुशूअ महसूस नहीं करता और येह उलूम या’नी उम्दा गुफ़्तगू, **مَقْفِي وَمُسَجَّع** अल्फ़ाज़ और नादिर व नायाब बातों को याद कर लेना और इन के इलावा बेशुमार उमूर हैं जो आख़िरत में नफ़अ भी नहीं देंगे। जब कि मुनाज़िरीन अपने दर्जात के मुताबिक़ इन में मुख़्तलिफ़ हैं। इन के मुख़्तलिफ़ दर्जात हैं जो इन में से दीन में बड़ा और अक्ल व दानाई में ज़ियादा हो वोह भी इन ख़साइल से नहीं बच सकता। बहुत ज़ियादा कोशिश कर के इतना कर

लेगा कि अपने नफ्स पर काबू पा कर इन्हें छुपा लेगा। याद रखो ! येह घटिया अख़्लाक़ उस में भी ज़रूर पाए जाते हैं जो वा'ज़ व नसीहत में मशगूल हो जब कि उस का मक्सद लोगों में मक़बूलियत पाना, अपना मर्तबा काइम करना और माल व इज़्ज़त हासिल करना हो। उस में भी ज़रूर पाए जाते हैं जो इल्मे मज़हब व फ़तावा में मशगूल हो जब कि उस का मक्सद काज़ी बनना, अवकाफ़ का मुतवल्ली बनना और अपने हम अस्ों से आगे बढ़ना हो।

हमेशा की हलाक़त व बरबादी या हयाते जाविदानी :

मुख़्तसर येह कि येह बुरी ख़स्लतें हर उस शख़्स में लाज़िमी पाई जाती हैं जो आख़िरत में **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह से हुसूले षवाब के इलावा मक्सद के लिये इल्म हासिल करता है, क्यूंकि इल्म आलिम को ऐसे नहीं छोड़ता बल्कि उसे हमेशा की हलाक़त व बरबादी का निशाना बना देता या हयाते जाविदानी बख़्श देता है इसी लिये सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बरोजे क़ियामत लोगों में सब से सख़्त अज़ाब उस आलिम को होगा जिसे उस के इल्म ने नफ़अ न दिया होगा।”⁽¹⁾

बेशक यहां इल्म ने नुक़सान दिया नफ़अ नहीं दिया। काश ! वोह बराबर बराबर ही नजात पा लेता। ख़बरदार ! ख़बरदार ! इल्म का ख़तरा बहुत बड़ा है और इस का तालिब दाइमी बादशाही और हमेशा की ने'मतों का तालिब होता है। पस वोह बादशाह बन कर या हलाक हो कर ही रहता है। वोह दुन्यवी बादशाही के तालिब की तरह है कि अगर वोह माल हासिल करने में कामयाब न हो तो ज़िल्लत से बचने की उम्मीद भी नहीं होती बल्कि उस के लिये सख़्त रुस्वा कुन हालात ज़रूरी हो जाते हैं।

एक शुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि मुनाज़रे की इजाज़त देने में फ़ाइदा है कि इस से लोगों को तलबे इल्म की तरगीब मिलती है, अगर हुकूमत की महब्वत न हो तो उलूम मिट जाएंगे ? तो इस का जवाब येह है कि जो तुम ने कहा एक ए'तिबार से सच है, लेकिन इस का फ़ाइदा नहीं क्यूंकि अगर बच्चे को गेंद बल्ले, और चिड़ियों से खेलने की लालच न दी जाए तो वोह मद्रसे में दिलचस्पी नहीं लेता लेकिन इस का येह मतलब नहीं कि खेल कूद का शौक अच्छा है। इसी तरह अगर हुकूमत की महब्वत न हो तो उलूम मिट जाएंगे। लेकिन इस से येह षाबित नहीं होता कि हुकूमत का

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى نشر العلم، الحديث: ١٤٤٨، ج ٢، ص ٢٨٥ -

المجالسة وجواهر العلم للدينورى، الحديث: ٩١، ج ١، ص ٥٤ -

तालिब नजात पाएगा बल्कि वोह उन लोगों में से है जिन के बारे में हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इस दीन की मदद उन लोगों से भी लेता है जिन का दीन में कोई हिस्सा नहीं।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “बेशक **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख्स से भी इस दीन की मदद ले लेता है।”⁽²⁾

आग और शम्अ की मिष्ल :

पस तालिबे हुकूमत खुद हलाक हो रहा होता है। अलबत्ता उस के सबब कभी दूसरों की इस्लाह हो जाती है जब कि वोह तर्क दुन्या की तरफ़ बुलाए और येह उस शख्स में होता है जिस का ज़ाहिरी हाल उ-लमाए सलफ़ के ज़ाहिर जैसा हो। अगर वोह दिल में मक़ाम व मर्तबे की ख़्वाहिश छुपाए हुए हो तो उस की मिषाल उस शम्अ जैसी है जो खुद तो जलती है मगर दूसरे इस से रोशनी हासिल करते हैं। उस की हलाकत में दूसरों की इस्लाह है और अगर वोह तलबे दुन्या की तरफ़ बुलाए तो उस की मिषाल आग जैसी है जो खुद भी जलती है और दूसरों को भी जलाती है।

उ-लमा की अक्शाम :

उ-लमा की 3 किस्में हैं : (1) जो खुद को भी और दूसरों को भी हलाक करने वाले हैं और येह वोह हैं जो अलानिय्या दुन्या की तरगीब दिलाते और इस की तरफ़ मुतवज्जेह रहते हैं। (2) जो खुद भी सआदत मन्द होते हैं और दूसरों की भी खुश बख़्ती का ज़रीआ बनते हैं और येह वोह हैं जो ज़ाहिर व बातिन में लोगों को **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ बुलाते हैं। (3) जो खुद हलाक होते हैं मगर दूसरों की सआदत मन्दी का ज़रीआ बनते हैं और येह वोह हैं जो आख़िरत की तरफ़ बुलाते हैं। येह ब ज़ाहिर तो दुन्या छोड़ चुके होते हैं लेकिन दिल में लोगों में मक्बूलिय्यत और जाहो हशमत की तमन्ना रखते हैं। पस तुम गौर करो कि तुम किस किस्म में दाख़िल हो और किस की तय्यारी में मगन हो ? और हरगिज़ येह न समझना कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ऐसे इल्मो अमल को कबूल फ़रमा लेगा जो ख़ालिसतन उस की रिज़ा के लिये नहीं। अन् करीब “**کتاب الریاء**” बल्कि तमाम मोहलिकात में ऐसी गुफ़्तगू आएगी जो तुम्हारे शक व शुबा को ख़त्म कर देगी। **اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ**



①.....السنن الكبرى للنسائي، كتاب السير، باب الاستعانة بالفجار في الحرب، الحديث: ٨٨٨٥، ج ٥، ص ٢٤٩۔

②.....صحيح البخارى، كتاب الجهاد والسير، باب ان الله يؤيد.....الخ، الحديث: ٣٠٦٢، ج ٢، ص ٣٢٩۔

बाब नम्बर 5 :

शागिर्द और उस्ताज के आदाब

पहली फ़स्ल :

तालिबे इल्म के आदाब

शागिर्द के ज़ाहिरी आदाब तो बहुत ज़ियादा हैं लेकिन इन्हें 10 जुम्लों की लड़ी में पिरो दिया गया है।

﴿1﴾..... दिल को बुरे अख़्लाक़ और बुरी सिफ़ात से पाक करना : सब से पहले तालिबे इल्म अपने दिल को बुरे अख़्लाक़ और बुरी सिफ़ात से पाक करे क्योंकि इल्म दिल की इबादत, राज़ की नमाज़ और बातिन में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के कुर्ब का नाम है। जिस तरह वोह नमाज़ जो ज़ाहिरी आ'ज़ा का अमल है, बदन को नजासतों और नापाकियों से पाक किये बिग़ैर दुरुस्त नहीं होती इसी तरह बातिन की इबादत और इल्म से दिल की आबादकारी इसे गन्दे अख़्लाक़ और नापाक अवसाफ़ से पाक किये बिग़ैर दुरुस्त नहीं हो सकती। चुनान्वे, खल्क़ के रहबर, शफीए मेहशर, महबूबे दावर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : **يَا بُنَيَّ الدِّينُ عَلَى النَّظَافَةِ** या'नी दीन की बुन्याद पाकी पर है।⁽¹⁾

पाकी ज़ाहिरी भी होती है और बातिनी भी। चुनान्वे, इरशादे बारी तअ़ाला है :

(پ ۱۰، التوبة: ۲۸) **اِنَّ الْمَشْرِكَوْنَ نَجَسٌ**

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुशरिक निरे (बिल्कुल)

नापाक हैं।

इस में अक्ल वालों को तम्बीह है कि तह़ारत व नजासत सिर्फ़ ज़ाहिर के साथ ख़ास नहीं। देखो ! मुशरिक ने कभी साफ़ सुथरे कपड़े पहने होते और गुस्ल भी किया होता है इस के बा वुजूद वोह अस्लन नापाक है या'नी उस का बातिन नापाकियों से आलूदा है। नजासत उस चीज़ का नाम है जिस से इजतिनाब किया जाए और दूरी इख़्तियार की जाए और बातिनी नापाक सिफ़ात से बचना ज़ियादा ज़रूरी है क्योंकि वोह फ़िलहाल नापाक और बिल आख़िर हलाक़ करने वाली हैं। इसी लिये सय्यिदुल मुबल्लिगीन, रहमतुल्लिल अलमीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “जिस घर में कुत्ता हो उस में फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते।”⁽²⁾

①.....جمع الجوامع، حرف التاء، التاء مع النون، الحديث: ۱۰۶۲۳، ج ۴، ص ۱۱۵۔

②.....صحيح البخارى، كتاب اللباس، باب التصاوير، الحديث: ۵۹۴۹، ج ۲، ص ۸۷۔

भौंकने वाले कुत्ते :

दिल घर है, जाए नुज़ूले मलाइका, इन के अषरात और इन के ठहरने की जगह है और घटया आदात मषलन गुस्सा, शहवत, बुज़ व कीना, हसद, तकब्बुर, खुद पसन्दी वगैरा भौंकने वाले कुत्ते हैं तो फिरिश्ते उस दिल में कैसे दाखिल होंगे जो इन कुत्तों से भरा हो। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इल्म का नूर फिरिश्तों के ज़रीए ही दिलों में दाखिल फ़रमाता है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا
أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا
فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ^ط (प २५, الشوری: ५१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और किसी आदमी को नहीं पहुंचता कि **اَللّٰهُ** उस से कलाम फ़रमाए मगर वह्य के तौर पर या यूं कि वोह बशर पर्दे अज़मत के उधर हो या कोई फिरिश्ता भेजे कि वोह उस के हुक्म से वह्य करे जो वोह चाहे।

इसी तरह दिलों में भेजी जाने वाली उलूम की रहमत इस पर मुकर्रर फिरिश्तों के ज़रीए ही आती है और वोह फिरिश्ते पाक हैं। बुरी सिफ़ात से महफूज़ हैं। इस लिये वोह पाक ही को देखते हैं और उन के पास जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहमत के खज़ाने हैं वोह उन से पाक लोगों को ही मा'मूर फ़रमाते हैं।

एक शुबे का इज़ाला :

मैं येह नहीं कहता कि लफ़्जे बैत (या'नी घर) से मुराद दिल और कल्ब (या'नी कुत्ते) से मुराद गुस्सा और दीगर बुरी सिफ़ात हैं बल्कि मैं कहता हूं कि येह इस बात पर आगाह करना और ज़ाहिरी मा'ना को बर करार रखते हुए ज़ाहिर से बातिनी मा'ना मुराद लेना है। पस इसी क़ज़िये से हमारे और फ़िर्कए बातिनिया वालों के दरमियान फ़र्क हो गया। येही इब्रत हासिल करने का तरीका और अइम्माए अबरार (नेक अइम्मा) का मस्लक है और इब्रत हासिल करने का मा'ना येह है कि उस से नसीहत पकड़ो जो किसी दूसरे के लिये बयान किया जाए और उसे उस के साथ खास न समझो। जैसा कि अक्ल मन्द शख्स किसी को मुसीबत में मुब्तला देखता है तो वोह इस से इब्रत पकड़ता है कि येह मुसीबत उसे भी लाहिक हो सकती है क्यूंकि दुन्या तो जाए इन्क़िलाब है। पस उस का दूसरे के हालात से खुद इब्रत पकड़ना और अपनी हालत से दुन्या की हकीकत पर इब्रत पकड़ना अच्छा है। इस लिये तुम भी लोगों के बनाए हुए घर से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के बनाए हुए घर या'नी दिल का अन्दाज़ा लगाओ और वोह कुत्ता जिस की बुराई उस की बुरी ख़स्लत की वजह से की जाती है न की सूरत की वजह से, वोह उस में मौजूद नापाकी और दरन्दगी है इस से रूह का अन्दाज़ा लगाओ जिस में दरन्दगी पाई जाती है।

शिकारी कुत्ता, ज़ालिम भेड़िया, चीता और शेर :

याद रखो ! जो दिल गुस्से और दुन्या की हिंस से लबरेज़ हो, इस पर लड़ता हो और लोगों की इज़्ज़तों को पामाल करने का हरीस हो वोह मा'नवी तौर पर कुत्ता है। अलबत्ता ! सूरत में दिल है पस नूरे बसीरत मआनी को देखता है सूरतों को नहीं, दुन्या में सूरतें मआनी पर ग़ालिब हैं और मआनी इन में पोशीदा हैं। जब कि आखिरत में सूरतें मआनी के पीछे चलेंगी और मआनी ग़ालिब होंगे। इसी वजह से हर शख्स को उस की मा'नवी सूरत पर उठाया जाएगा। लिहाज़ा लोगों की इज़्ज़तों को पाश पाश करने वाला शिकारी कुत्ते की शकल में ⁽¹⁾ लोगों के अम्वाल का हरीस ज़ालिम भेड़िये की शकल में, तकब्बुर करने वाला चीते की सूरत में और हुकूमत का तालिब शेर की शकल में उठाया जाएगा। इस मज़मून की अहादीष वारिद हैं और अहले बसीरत व अहले बिसारत के नज़दीक इब्रत इस पर गवाह है।

एक शुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि कितने घटिया अख़लाक के तलबा ऐसे हैं जिन्होंने उलूम हासिल कर लिये (तो इस का जवाब येह है कि) अफ़सोस ! वोह हक़ीकी इल्म से कितने महरूम हैं जो आखिरत में नफ़अ बख़्श और सआदत व खुश बख़्ती का ज़रीआ है क्योंकि इल्म के आगाज़ में से येह बात है कि तालिबे इल्म पर ज़ाहिर हो जाए कि गुनाह ज़हरे कातिल हैं और क्या तुम ने कभी ऐसा शख्स देखा है जो येह जानते हुए ज़हर खाए कि येह बाइषे हलाकत है ? और जो तुम ने रस्मी लोगों से सुना है वोह तो एक बात है जैसे वोह एक बार अपनी ज़बानों से बना संवार कर कहते हैं और दूसरी बार उन के दिल इस बात का रद्द कर देते हैं, इस का इल्म से कोई तअल्लुक नहीं।

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : इल्म कषरते रिवायत का नाम नहीं बल्कि इल्म तो एक नूर है जो दिल में रखा जाता है।

बा'ज उ-लमा ने फ़रमाया : इल्म ख़शियते इलाही (का नाम) है। क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ط
(प २२, फातर: २८)

तर्जमए कज़्ज़ुल इमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

गोया इस में इल्म के नताइज की त़रफ़ इशारा है इसी वजह से बा'ज मुहक्किनीन ने उ-लमा के इस कौल “हम ने इल्म को ग़ैरे खुदा के लिये हासिल किया तो इल्म ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी के लिये हासिल होने से इन्कार कर दिया” का मफ़हूम येह बयान

किया कि इल्म ने इन्कार कर दिया और हम से कनारा कशी इख्तियार कर ली पस हम पर इल्म की हकीकत आशकार न हुई हमें सिर्फ इस के अल्फाज़ हासिल हुए ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि मैं ने मुहक्किनीन उ-लमा व फुक़हा की एक जमाअत देखी जिन्हों ने फुरूअ व उसूल में नुमायां मक़ाम हासिल किया और वोह अकाबिरीन में शुमार किये जाते हैं हालांकि वोह बुरे अख़लाक़ के हामिल हैं, इतने इल्म से भी वोह पाक न हो सके ? तो इस का जवाब येह है कि जब तुम मरातिबे इल्म और इल्मे आख़िरत को पहचान जाओगे तो तुम पर येह बात वाजेह हो जाएगी कि जिस चीज़ में वोह मशगूल हैं उस का इल्म होने की हैषियत से फ़ाइदा कम है बल्कि उस का फ़ाइदा तो रिज़ाए इलाही के लिये अमल होने के ए'तिबार से है जब कि इस से मक्सूद कुर्बे इलाही का हुसूल हो । इस की तरफ़ पहले इशारा गुज़र चुका है और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** अन करीब इस की मज़ीद वज़ाहत आएगी ।

﴿2﴾.....दुन्यवी मशगूलियात से हत्तल मक़दूर बचने की कोशिश करना : त़ालिबे इल्म अपनी दुन्यवी मशगूलियात को कम करे, अपने घर वालों और वतन से दूर रहे क्यूंकि येह तअल्लुकात उसे मशगूल रखते और त़लबे इल्म से फ़ैर देते हैं ।
इरशादे बारी तअ़ाला है :

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ

(प १, अ: २, अ: २)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे ।

और जब ख़यालात मुन्तशिर हो जाएं तो हक़ाइक़ जानने में कमी आ जाती है इसी लिये कहा गया है कि इल्म तुम्हें अपना बा'ज़ उस वक़्त तक न देगा जब तक तुम इसे अपना सब कुछ न दे दोगे और जब तुम अपना सब कुछ इसे दे दोगे तो तुम्हें इस का बा'ज़ मिल जाएगा लेकिन इस में भी ख़तरा होगा (कि वोह मुफ़ीद है या नुक़सान देह) और मुख़्तलिफ़ कामों में बटी हुई सोच उस नाले की तरह है जिस का पानी बिखर जाए, फिर इस में से कुछ ज़मीन खुशक कर दे, कुछ हवा में मिल जाए और इतना न बचे जो जम्अ हो कर खेत तक पहुंचे ।

﴿3﴾.....इल्म पर तकब्बुर न करना : त़ालिबे इल्म, इल्म पर तकब्बुर न करे, उस्ताज़ पर हुक़म न चलाए बल्कि अपने तमाम मुअ़ामलात की लगाम मुकम्मल तौर पर उस्ताज़ के हाथ में दे दे और उस की नसीहत को ऐसे क़बूल करे जैसे जाहिल बीमार, शफ़ीक़ व माहिर त़बीब की नसीहत को मानता है और उसे चाहिये कि अपने उस्ताज़ से अज़िज़ी व इन्क़िसारी के साथ पेश आए और उस की ख़िदमत कर के षवाब व फ़ज़ीलत का त़ालिब हो ।

उ-लमा व अकाबिरीन और अहले बैत का मक़ाम व मर्तबा :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शअबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي बयान करते हैं कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना जैद बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक शख्स की नमाज़े जनाज़ा से फ़ारिग़ हुए और उन का ख़च्चर क़रीब लाया गया ताकि उस पर सुवार हों, इतने में हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तशरीफ़ लाए और ख़च्चर की रिकाब थाम ली। हज़रते सय्यिदुना जैद बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा : “ऐ रसूलुल्लाह وَ إِلَه وَسَلَّم صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَ آٰلِہٖ وَسَلَّم के चचाज़ाद भाई ! आप ज़हमत न फ़रमाइये !” हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “हमें उ-लमा व अकाबिरीन के साथ ऐसा ही करने का हुक्म दिया गया है।” फिर हज़रते सय्यिदुना जैद बिन षाबित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप के हाथों को बोसा दिया और कहा : “हमें अहले बैते रसूल के साथ इसी तरह पेश आने का हुक्म दिया गया है।”⁽¹⁾

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَ آٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ख़ुशामद मुसलमान की सिफ़ात में से नहीं मगर त़लबे इल्म में।”⁽²⁾

त़ालिबे इल्म को उस्ताज़ के सामने तकब्बुर नहीं करना चाहिये और येह भी तकब्बुर है कि वोह मशहूर व मा'रूफ़ उ-लमा के इलावा से इल्म हासिल करने को नापसन्द करे और येह ऐन हमाक़त है क्यूंकि इल्म नजात और सआदत का ज़रीआ है और जो शख्स चीर फाड़ देने वाले दरन्दे से भागना चाहता है वोह इस में फ़र्क़ नहीं करेगा कि भागने की राह कोई मशहूर शख्स बताए या गुमनाम और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से बे ख़बर लोगों के लिये आग की दरन्दगी का नुक़सान तमाम दरन्दों के नुक़सान से ज़ियादा है। हिक्मत मोमिन की गुमशुदा चीज़ है जहां पाए ग़नीमत जाने और जिस ने इस की त़रफ़ राहनुमाई की उस का एहसान माने वोह जो भी हो, इसी लिये कहा गया है।

اَلْعِلْمُ حَرْبٌ لِّلْفِتَنِ الْمُتَعَالِي كَالسَّيْلِ حَرْبٌ لِّلْمَكَانِ الْعَالِي

तर्जमा : इल्म को मुतकब्बिर शख्स से अ़दावत होती है जैसे सैलाब को बुलन्द जगह से अ़दावत होती है।

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع في آداب العالم والمتعلم، الحديث: ٥٤٦، ص ١٤٣۔

عيون الاخبار للدينوري، كتاب السؤدد، التواضع، ج ١، ص ٣٨٠ تا ٣٨١۔

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع في آداب العالم والمتعلم، الحديث: ٥٨٤، ص ١٤٨۔

पस इल्म तवाजोअ और तवज्जोह के साथ सुने बिगैर हासिल नहीं होता ।
इरशादे बारी तअाला है :

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرًا لِّمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ
الَّتَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾ (प. २१, ३८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक इस में नसीहत है
उस के लिये जो दिल रखता हो या कान लगाए और
मुतवज्जेह हो ।

दिल रखने वाले से मुराद येह है कि वोह इल्म को समझ सकता हो फिर समझने की
कुदरत उसे फ़ाइदा न देगी जब तक कि वोह तवज्जोह के साथ कान लगा कर न सुनेगा ताकि जो
कुछ उसे बताया जाए अच्छी तवज्जोह, इन्किसारी, शुक्रिया, खुशी और एहसान मानने के साथ
इसे क़बूल कर ले । शागिर्द को उस्ताज़ के सामने नर्म ज़मीन की तरह होना चाहिये जो मुस्ला
धार बारिश को ज़ब्ब कर के उसे मुकम्मल तौर पर क़बूल कर लेती है और जब उस्ताज़ उसे इल्म
सीखने का कोई तरीका बताए तो उसे चाहिये कि अपनी राए को छोड़ कर उस्ताज़ के बताए हुए
तरीके को इख़्तियार करे क्यूंकि उस के राहनुमा की ख़ता उस के लिये अपनी दुरुस्ती से ज़ियादा
मुफ़ीद है । इस लिये कि तजरीबा ऐसी बारीकियों पर मुत्तलअ करता है जिन को सुनने से
तअज्जुब होता है हालांकि इन का नफ़अ बहुत ज़ियादा होता है । कितने गर्म मीज़ाज मरीज़ ऐसे
हैं कि तबीब उन का इलाज गर्म दवाओं के साथ करता है ताकि उन की हज़रत इस हद तक ज़ियादा
हो जाए कि वोह इलाज का सदमा बर्दाश्त कर सके, इस से उस शख्स को तअज्जुब होता है जो
फ़न्ने तिब्ब से नाबलद होता है । **अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ख़िज़र और हज़रते
सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वाकिए में इस पर तम्बीह फ़रमाई है, जब
हज़रते सय्यिदुना ख़िज़र عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कहा :

إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧﴾ وَكَيْفَ
تَصْبِرُ عَلَى مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ﴿٨﴾
(प. १५, १६, १७)

तर्जमए कन्जुल ईमान : आप मेरे साथ हरगिज़
न ठहर सकेंगे, और इस बात पर क्यूंकर सब्र करेंगे
जिसे आप का इल्म मुहीत नहीं ।

फिर उन्होंने ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर चुप चाप मान लेने की
पाबन्दी लगा दी और कहा :

فَإِنِ اشْتَدَّتْكَ فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّى
أُحَدِّثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾ (प. १५, १६, १७)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो अगर आप मेरे साथ
रहते हैं तो मुझ से किसी बात को न पूछना जब तक
मैं खुद उस का ज़िक्र न करूं ।

फिर हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सब्र न कर सके और बार बार उन्हें टोकते रहे यहां तक कि येह बात उन के दरमियान जुदाई का सबब बन गई। मुख्तसर येह कि जो शागिर्द उस्ताज़ के सामने अपनी राए को तरजीह देता है उस पर महरूमि और ख़सारे का फैसला कर दिया जाता है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का इरशाद है :

فَسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (پ ۱۴، النحل: ۴۳) **तर्जमए कन्जुल ईमान :** तो ऐ लोगो ! इल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इल्म नहीं।

यहां तो सुवाल करने का हुक्म है ! याद रखो कि बात ऐसी ही है लेकिन उस चीज़ के बारे में सुवाल करे जिस के मुतअल्लिक सुवाल करने की उस्ताज़ इजाज़त दे क्योंकि जो चीज़ तुम्हारी समझ में न आ सके उस के बारे में पूछना मजमूम है। इसी लिये हज़रते सय्यिदुना ख़िज़र عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को पूछने से मन्अ कर दिया था या'नी उस के वक़्त से पहले मत पूछो। उस्ताज़ ज़ियादा जानता है कि तुम किस के अहल हो और उस बात को ज़ाहिर करने का कौन सा वक़्त है ? और बुलन्द दर्जात में से हर दर्जे में जिस चीज़ को बयान करने का वक़्त नहीं आया उस के बारे में पूछने का वक़्त भी नहीं आया।

अल्लिम के हुक्क :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم ने फ़रमाया : “अल्लिम के हुक्क में से है कि तुम उस से ज़ियादा सुवाल न करो, जवाब में उस पर सख़्ती न करो, वोह थक जाए तो इसरार न करो, जब वोह उठने लगे तो उस के कपड़े न पकड़ो, उस के भेद न खोलो, उस के सामने किसी की ग़ीबत न करो, उस के ऐब न ढूडो, अगर लगज़िश करे तो उस का इज़्र क़बूल करो, जब तक वोह दीन की हिफ़ाज़त करे तब तक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये तुम पर उस की ता'ज़ीम व तौकीर वाजिब है, उस के आगे न बैठो और जब उसे कोई हाज़त हो तो सब से पहले उस की ख़िदमत करो।”⁽¹⁾

﴿4﴾.....इबतिदाउन लोगों के इख़िलाफ़ात पर ध्यान न देना : तालिबे इल्म इब्तिदा में लोगों के इख़िलाफ़ात पर ध्यान न दे ख़्वाह वोह दुन्यवी उलूम हों या उख़वी, क्यूंकि येह बात उस की अक्ल को परेशान, जेहून को हैरान, उस की राए को सुस्त और मसाइल को जानने समझने से मायूस कर देगी बल्कि उसे चाहिये कि पहले एक अच्छे और मुनफ़रिद तरीके का यकीन करे जो उस के उस्ताज़ को भी पसन्द हो फिर इस के बा'द दूसरे मज़ाहिब और शुबहात की तरफ़ तवज्जोह दे। अगर उस्ताज़ एक राए को इख़्तियार करने में पुख़्ता न हो बल्कि उस की आदत हो कि वोह महज़ मज़ाहिब और इन की अबहाष को नक्ल करता हो तो इस से बचे क्यूंकि इस की गुमराही राहनुमाई से ज़ियादा होगी कि अन्धा अन्धों की क़ियादत व राहनुमाई नहीं कर सकता। जिस शख्स की येह हालत हो वोह खुद जहालत व हैरत के जंगल में भटकता रहता है। इब्तिदाई तालिबे इल्म को शुब्हात से रोकना ऐसा है जैसे नौमुस्लिम को कुफ़्फ़ार के साथ मेल जोल से मन्अ करना और क़वी को इख़िलाफ़ात में नज़र करने की तरगीब दिलाना ऐसा है जैसे क़वी को कुफ़्फ़ार से मेल जोल की रग़बत दिलाना। इसी वजह से बुज़दिल को लश्करे कुफ़्फ़ार पर हम्ला करने से मन्अ किया जाता है और बहादुर को इस की रग़बत दिलाई जाती है। बा'ज़ ज़ईफ़ लोगों ने इस बारीक नुक्ते से ग़ाफ़िल होने की वजह से येह गुमान किया कि ताक़तवर लोगों से जो कमज़ोरियां मन्कूल हैं इन में उन की पैरवी जाइज़ है और येह न जाना कि उन के मुआमलात कमज़ोर लोगों के मुआमलात से जुदागाना हैं। इसी के बारे में बा'ज़ बुजुर्गों ने फ़रमाया : “जिस ने मुझे इब्तिदा में देखा वोह सिद्दीक़ हो गया और जिस ने मुझे इन्तिहा में देखा वोह ज़िन्दीक़ हो गया।” क्यूंकि इन्तिहा में आ'माले बात़िन की तरफ़ लौट जाते हैं और ज़ाहिरी आ'ज़ा फ़राइज़ के इलावा आ'माल से रुक जाते हैं तो देखने वाले समझते हैं कि येह सुस्ती और बेकारी है हालांकि ऐसा नहीं बल्कि येह तो ऐन हुजूरी में दिल की निगरानी और हमेशा ज़िक़्र को इख़्तियार करना है जो सब आ'माल से अफ़ज़ल है।

समन्दर में जो खाशियत है वोह कूज़े में नहीं :

ताक़त वर के ज़ाहिर हाल को देख कर इसे लगज़िश समझने वाला कमज़ोर शख्स उस शख्स की तरह उज़्र पेश करता है जो पानी के कूज़े में मा'मूली सी नजासत डालता है और कहता है कि इस नजासत से कई गुना ज़ियादा समन्दर में डाली जाती है और समन्दर कूज़े से बहुत बड़ा है पस जो समन्दर के लिये जाइज़ है वोह कूज़े के लिये बदरजए औला जाइज़ होगा। वोह बेचारा येह नहीं जानता कि समन्दर अपनी कुव्वत व ताक़त से नजासत को पानी में तब्दील कर देता है तो नजासत का ऐन पानी के ग़लबे की वजह से उस की सिफ़त से बदल जाता है और क़लील

नजासत कूजे पर ग़ालिब आ जाती है और इस में मौजूद पानी को अपनी सिफ़त पर ले आती है इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम ﷺ के लिये वोह बातें जाइज़ थीं जो दूसरों के लिये जाइज़ न थीं यहां तक कि आप ﷺ को (बयक वक़्त) नौ अज़वाज (बीवियां) रखने की इजाज़त थी।⁽¹⁾ क्योंकि आप ﷺ को ऐसी कुव्वत हासिल थी जिस से औरतों में अदलो इन्साफ़ फ़रमाते अगरचें वोह बहुत सारी हों जब कि कोई दूसरा कुछ अदल पर कादिर नहीं बल्कि औरतों के दरमियान का नुक़सान उसे पहुंच जाता है यहां तक कि वोह औरतों की रिज़ा जोई में **अल्लाह** عزّوجلّ की नाफ़रमानी में मुब्तला हो जाता है। लिहाज़ा फ़िरिश्तों को लोहारों पर क़ियास करने वाला कैसे फ़लाह पा सकता है।

﴿5﴾..... उम्दा इल्म के हर फ़न और हर क़िस्म को जानने की कोशिश करना : तालिबे इल्म अच्छे उलूम का कोई फ़न और इस की कोई क़िस्म न छोड़े, इस में इस क़दर ग़ौरो फ़िक्क करे कि इस की ग़रज़ व ग़ायत मा'लूम हो जाए फिर अगर ज़िन्दगी वफ़ा करे तो इस में महारत हासिल करे वरना इस से ज़ियादा अहम में मशगूल हो कर इसे पूरा करे और बक़िया उलूम में से थोड़ा थोड़ा हासिल कर ले क्योंकि उलूम एक दूसरे के मददगार और एक दूसरे से मरबूत (जुड़े हुए) हैं। फ़िलहाल इल्म से अलाहिदगी इख़्तियार करने वाला जहालत के बाइष इस इल्म से अदावत रखता है, क्योंकि लोग जिस से जाहिल होते हैं उस के दुश्मन होते हैं। **अल्लाह** عزّوجلّ इरशाद फ़रमाता है :

وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا
إِفْكٌ قَدِيمٌ ﴿١١﴾ (پ ۲۶، الاحقاف: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन्हें इस की हिदायत न हुई तो अब कहेंगे कि यह पुराना बोहतान है।

शाइर कहता है :

وَمَنْ يَكْ ذَا فَمٍ مَرِيضٍ يَجِدُ مُرَابٍ الْمَاءِ الزَّلَالَا

तर्जमा : कड़वे मुंह वाला मरीज़ मीठे पानी को भी कड़वा समझता है।

उलूम के मुख़लिफ़ दर्जात हैं या तो वोह बन्दे को **अल्लाह** عزّوجلّ की तरफ़ ले जाते हैं या इस में किसी न किसी क़िस्म की इआनत करते हैं और मक्सूद से क़रीबी व दूरी में हर इल्म का एक मुक़रर मक़ाम है। इन उलूम को काइम करने वाले इन के मुहाफ़िज़ हैं जिस तरह जिहाद

①.....صحیح البخاری، کتاب النکاح، باب کثرة النساء، الحدیث: ۵۰۶۸، ج ۳، ص ۳۲۳۔

में इस्लामी सरहदों के मुहाफ़िज़ होते हैं और हर एक के लिये एक मर्तबा है और इसी मर्तबे के ए'तिबार से आख़िरत में उस के लिये अज़्र है जब कि इस से मक़सूद रिज़ाए इलाही हो ।

﴿6﴾.....तरतीबे उलूम का लिहाज़ रखना और सब से पहले अहम को शुरूअ करना : तालिबे इल्म दफ़अतन इल्म के फुनून में से किसी फ़न में मशगूल न हो बल्कि तरतीब का लिहाज़ रखे और सब से पहले अहम को शुरूअ करे क्यूंकि आम तौर पर ज़िन्दगी तमाम उलूम सीखने का मौक़अ नहीं देती । लिहाज़ा एहतिyात येही है कि हर फ़न में से उम्दा को हासिल कर ले और इस में से थोड़े पर इक्तिफ़ा करे और इस से हासिल होने वाली तमाम कुव्वत उस इल्म की तक्मील में सर्फ़ करे जो सब से अफ़ज़ल है और वोह इल्मे आख़िरत या'नी इस की दोनों अक़साम : इल्मे मुआमला और इल्मे मुकाशफ़ा है । इल्मे मुआमला की इन्तिहा मुकाशफ़ा है और इल्मे मुकाशफ़ा की इन्तिहा मा'रिफ़ते इलाही है । इस से मेरी मुराद वोह ए'तिक़ाद नहीं जिसे अ़वाम बाप दादाओं से सुनते आए हों या ज़बानी याद कर लिया हो और न ही तहरीरे कलाम का तरीक़ा और मुजादला मुराद है जिस के ज़रीए वोह अपने कलाम को मुख़ालिफ़ की धोका बाज़ियों से बचाता है जैसा कि इल्मे कलाम वाले की येह ग़रज़ होती है बल्कि मुकाशफ़ा तो यक़ीन की एक किस्म है जो उस नूर का षमरा है जिसे **अव्वाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे के दिल में डालता है जो मुजाहदे के ज़रीए बातिन को ख़बाषतों से पाक कर लेता है यहां तक कि वोह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ईमान के मर्तबे को पहुंच जाता है । वोह ईमान कि अगर सारी काइनात के ईमान से तोला जाए तो भी वज़नी रहे । जैसा कि ताजदारे रिसालत, माहे नबुव्वत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस बात की गावाही दी है ।⁽¹⁾

और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तमाम सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ से इस राज़ की वजह से अफ़ज़ल हैं जो उन के सीने में रासिख़ था । लिहाज़ा तुम उस राज़ की मा'रिफ़त के हरीस बन जाओ जो फुक़हा और मुतकल्लिमीन की हिम्मत से ख़ारिज है और उसे तलाश करने की तुम्हारी हिर्स ही इस की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगी । बहर हाल तमाम उलूम से अफ़ज़ल और तमाम उलूम की ग़रज़ व ग़ायत **अव्वाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त है और मा'रिफ़ते इलाही ऐसा समन्दर है जिस की गहराई तक नहीं पहुंचा जा सकता इस में बन्दों के दर्जात में सब से अफ़ज़ल दर्जा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का है फिर औलियाए उज़्ज़ाम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का फिर इन से मुत्तसिल लोगों का ।

पुर हिक्मत तहरीर :

मन्कूल है कि पहले के दानाओं में से दो की तस्वीर इन की इबादत गाह में देखी गई, इन में से एक के हाथ में मौजूद वरक़ पर लिखा था कि अगर तुम हर चीज़ को अच्छे तरीके से सीख लो तो येह न समझो कि तुम ने किसी चीज़ को अच्छे तरीके से जान लिया है जब तक कि तुम **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मा'रिफ़त हासिल न कर लो और येह यकीन न कर लो कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** और तमाम चीज़ों का मूजिद है और दूसरे दाना के हाथ में मौजूद वरक़ पर लिखा था कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मा'रिफ़त हासिल करने से पहले मैं पानी पीने के बा वुजूद प्यासा रहता था और मा'रिफ़त के हुसूल के बा'द मैं बिगैर पिये सैराब रहता हूं।

﴿7﴾.....एक फ़न की तक्मील के बा'द दूसरे फ़न की तरफ़ मुतवज्जेह होना : तालिबे इल्म उस वक़्त तक दूसरे फ़न में मशगूल न हो जब तक पहले को मुकम्मल न कर ले क्यूंकि उल्म तरतीबे ज़रूरी पर मुरत्तब हैं और इन में से बा'ज बा'ज का ज़रीआ हैं और तौफ़ीक़ याफ़ता वोह है जो इस तरतीब और दर्जाबन्दी की रिआयत करे। **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का इरशाद है :

الَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَتْلُوهُ حَقَّ
تِلَاوَتِهِ ^(پ ۱، البقرة: ۱۲۱)

तर्जमए कज़ुल ईमान : जिन्हें हम ने किताब दी है वोह जैसी चाहिये इस की तिलावत करते हैं।

या'नी वोह एक फ़न से उस वक़्त तक आगे नहीं बढ़ते जब तक इल्मो अमल के लिहाज़ से इसे पुख़्ता न कर लें। तालिबे इल्म को चाहिये कि वोह जिस इल्म के हुसूल का इरादा करे इस से उस का मक्सद इस से आ'ला इल्म की तरफ़ तरक्की करना हो और किसी इल्म के बारे में इस इल्म के जानने वालों में इख़्तिलाफ़ वाक़ेअ होने या इस में किसी एक या चन्द एक से ग़लती हो जाने या लोगों के अपने इल्म के मुताबिक़ अमल न करने की वजह से इस इल्म के फ़साद का हुक्म न लगाए। तुम देखते हो कि एक जमाअत ने अक़लियात व फ़िक्हियात में ग़ौरो फ़िक्क़ करना छोड़ दिया और वजह येह बताते हैं कि अगर इन की कोई अस्ल होती तो इन के जानने वाले इसे ज़रूर पाते। इस ए'तिराज़ का जवाब मे'यारुल इल्म के बयान में गुज़र चुका है और तुम देखते हो कि एक ग़ुरौह तबीब की ग़लती को देख कर तिब्ब के बातिल होने का ए'तिकाद रखता है और एक ग़ुरौह किसी नुजूम की इत्तिफ़ाक़िया दुरुस्त बात को देख कर इल्मे नुजूम को सहीह गरदानता है और कोई ग़ुरौह किसी दूसरे नुजूम की इत्तिफ़ाक़ी ग़लती की वजह से उसे बातिल बताता है हालांकि येह सब ग़लती है बल्कि चाहिये तो येह कि फ़ी नफ़िसही शै को जाना जाए क्यूंकि हर शख़्स हर इल्म का माहिर नहीं होता इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन

हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हक़ को अफ़राद से न पहचानो बल्कि फ़ी नफ़िसही हक़ की पहचान हासिल करो अफ़राद को खुद ही पहचान जाओगे।”⁽¹⁾

﴿8﴾....अफ़ज़ल इल्म तक पहुंचाने वाले सबब की मा'रिफ़त हासिल करना : त़ालिबे इल्म उस सबब को पहचाने जिस के ज़रीए वोह तमाम उलूम से अफ़ज़ल इल्म को हासिल कर सके और किसी इल्म का शरफ़ दो चीज़ों से होता है : (1).....अन्जाम की फ़ज़ीलत (2)....दलील की मज़बूती व कुव्वत से। इस की मिषाल इल्मे दीन और इल्मे त़िब्ब है कि इन में से एक का नतीजा हयाते सरमदी और दूसरे का हयाते फ़ानी है। लिहाज़ा इल्मे दीन अफ़ज़ल हुवा (कि इस का नतीजा हयाते सरमदी है)। एक मिषाल इल्मे हिसाब और इल्मे नुजूम की है कि इल्मे हिसाब दलाइल की मज़बूती और कुव्वत की वजह से अफ़ज़ल है, अगर हिसाब की निस्बत त़िब्ब की तरफ़ की जाए तो नतीजे के ए'तिबार से त़िब्ब अफ़ज़ल है जब कि दलाइल के ए'तिबार से हिसाब अफ़ज़ल है लेकिन नतीजे का ए'तिबार करना ज़ियादा बेहतर है इस लिये त़िब्ब अफ़ज़ल है अगरचें इस का अक़षर हिस्सा ज़न्नी है। इस से वाज़ेह हुवा कि तमाम उलूम में अफ़ज़ल इल्म **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ज़ात, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों और उस के रसूलों का इल्म और उन उलूम तक पहुंचाने वाले रास्ते का इल्म है। इस लिये तुम्हें इसी में दिलचस्पी लेनी चाहिये और इसी का हरीस होना चाहिये।

﴿9﴾....बातिन की सफ़ाई : त़ालिबे इल्म का मक़सूद येह हो कि वोह पहले अपने बातिन की सफ़ाई करेगा और इसे फ़ज़ीलत से आरास्ता करेगा और आख़िरत में **اَللّٰهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى** का कुर्ब हासिल करेगा और मलाइका व मुक़र्रबीन की बारगाह के कुर्ब तक रसाई पाएगा। येह निय्यत न करे कि इल्म से हुकूमत, मालो दौलत, मक़ाम व मर्तबा, बेवुकूफ़ों से झगड़ा और हम अस्त्रों पर फ़ख़्र करेगा। अगर अच्छी निय्यत से इल्म हासिल किया तो अपने मक़सूद से क़रीब तर या'नी इल्मे आख़िरत को ज़रूर त़लब करेगा लेकिन इस के बा वुजूद वोह बाक़ी उलूम को ब नज़रे हक़ारत न देखे या'नी इल्मे फ़तावा, इल्मे नुजूम व इल्मे लुग़त जो कुरआनो हदीष से मुतअल्लिक़ हो और इस के इलावा दीगर फ़र्जे किफ़ाया उलूम जिन्हें हम ने मुक़द्मात और मुतम्ममात में बयान किया है।

इल्मे आख़िरत के मुक़ाबले में दीग़र उलूम की हैषियत :

इल्मे आख़िरत की ता'रीफ़ में हमारे मुबालगा करने से तुम येह हरगिज़ न समझना कि बाक़ी उलूम मज़मूम हैं। इन उलूम के हामिल सरहदों की हिफ़ाज़त करने और राहे खुदा में जिहाद करने वाले ग़ाज़ियों की तरह हैं। इन में से कुछ लड़ते हैं तो कुछ हम्लों को रोकते हैं। बा'ज

मुजाहिदीन को पानी पिलाते हैं तो बा'ज इन की सुवारियों की हिफाजत करते और इन की देख बाल करते हैं। इन में से कोई भी अज्रो षवाब से महरूम न होगा बशर्तेकि उस की निय्यत ए'लाए कलिमए हक की हो न की गुनीमतें इकठ्ठी करने की। उ-लमा के भी मुख्तलिफ दर्जात हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है :

يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
أَتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ط (प २८, المجادلة: ११)

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और इन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फरमाएगा।

एक जगह इरशाद फरमाया :

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ط (प ४, अल عمران: १५३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह **अल्लाह** के यहाँ दर्जे दर्जे हैं।

फज्जीलत एक इजाफी चीज है। हमारा सराफों को बादशाहों की निस्बत कम तर समझना येह षाबित नहीं करता कि वोह भंगियों की ब निस्बत भी हकीर हैं इस लिये तुम येह गुमान न करो कि जो सब से बुलन्द मर्तबे से कम दर्जा है उस का कोई मर्तबा नहीं बल्कि सब से बुलन्द मर्तबा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का है फिर औलियाए उज्जाम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام का फिर पुख्ता इल्म वाले उ-लमा का फिर सालेहीन का इन के दर्जात के ए'तिबार से है। मुख्तसर येह कि,

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ
وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ
(प ३०, الزلزال: ८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जो एक ज़रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

और जो शख्स इल्म से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफत हासिल करने का क़स्द करेगा वोह इल्म ख्वाह कोई सा भी हो उसे ज़रूर नफ़अ मिलेगा और बुलन्दी नसीब होगी।

❦10❦.....**मक्सद की जानिब इल्म की निस्बत को जानने की कोशिश करना :** तालिबे इल्म इल्म की तरफ मक्सद की जो निस्बत है उसे जाने ताकि क़रीब और आ'ला को बईद और अदना पर और अहम (या'नी मक्सूद बिज्जात) को ग़ैरे मक्सूद पर तरजीह दे सके। यहां **मुहिम्म** (अहम) से मुराद वोह है “जो तुझे फ़िक्क मन्द करे” और तुझे सिर्फ़ दुनिया व आख़िरत का मुआमला ही फ़िक्क मन्द करता है और जब दुनिया की लज़्ज़तों और आख़िरत की ने'मतों को इकठ्ठा करना मुमकिन नहीं जैसा कि कुरआने हकीम ने इस बात को बयान किया और नूरे बसीरत जो मुशाहदे के काइम मक़ाम है वोह भी इस पर गवाह है तो हकीकत में अहम वोह है जिस का नफ़अ हमेशा बाकी रहे।

मन्ज़िल, सुवारी और मक्सदे हकीकी :

दुन्या गोया एक मन्ज़िल है (जहां कुछ देर क़ियाम किया जाता है) और येह बदन एक सुवारी है (जिस पर सुवार हो कर मुराद तक पहुंचा जाता है) और इस से सादिर होने वाले आ'माल मक्सद की तरफ़ दौड़ है और मक्सदे हकीकी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मुलाक़ात है इसी में तमाम ने'मतें हैं अगर्चे दुन्या में बहुत थोड़े लोग इस इल्म की क़द्र जानते हैं ।

मशातिबे इल्म मिषाल के आईने में :

लिकाए इलाही और बिला हिजाब दीदारे इलाही की सआदत की तरफ़ निस्बत के ए'तिबार से इल्म के तीन दर्जे हैं । दीदार से मुराद वोह है जिस के तालिब अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** और वोह इसे समझते हैं । वोह दीदार मुराद नहीं जिस की तरफ़ अ़वाम और मुतकल्लिमीन का ज़ेहन जाता है । इन तीन दर्जात को इस मिषाल से समझा जा सकता है कि किसी गुलाम को कहा जाए कि अगर तुम मुकम्मल हज़ कर लो तो तुम्हें गुलामी से आज़ादी का परवाना भी मिलेगा और बादशाही भी अ़ता की जाएगी और अगर हज़ के रास्ते पर चलना शुरूअ कर दिया और वहां तक पहुंचने की कोशिश भी की मगर कोई सख़्त रुकावट आड़े आ गई और हज़ न कर सका तो सिर्फ़ गुलामी की शकावत से रिहाई मिलेगी, बादशाही की सआदत नसीब न होगी तो इस पर तीन किस्म के काम लाज़िम होंगे । पहला येह कि अस्बाब तय्यार करे मषलन ऊंटनी ख़रीदे, मशक सिये, ज़ादे राह और कजावा तय्यार करे । दूसरा येह कि वतन को छोड़ कर का'बा शरीफ़ की तरफ़ मन्ज़िल ब मन्ज़िल चले । तीसरा येह कि अफ़अले हज़ में मशगूल हो कर एक एक रुक्न अदा करे फिर अरकाने हज़ की अदाएगी से फ़राग़त के बा'द और हालते एहराम और तवाफ़े वदाअ से निकलने के बा'द वोह (गुलामी से रिहाई और) बादशाही का मुस्तहिक़ हो जाएगा । उस के लिये इन मक़ामात में से हर मक़ाम पर मन्ज़िलें हैं । अस्बाब की तय्यारी के शुरूअ से ले कर इस के आख़िर तक । जंगलों का सफ़र शुरूअ करने से ख़त्म करने तक । अरकाने हज़ के शुरूअ से आख़िर तक और अरकाने हज़ शुरूअ करने वाला शख़्स सआदत के जितना क़रीब है उतना क़रीब वोह नहीं जो अभी ज़ादे राह और कजावा की तय्यारी में मशगूल है और न ही वोह जिस ने सफ़र शुरूअ कर दिया बल्कि अरकाने हज़ शुरूअ करने वाला इन दोनों से ज़ियादा सआदत के क़रीब है ।

इसी तरह उलूम की भी तीन अक्साम हैं : **एक किस्म** : ज़ादे राह जम्अ करने, कजावा तय्यार करने और ऊंटनी ख़रीदने के काइम मक़ाम है और वोह इल्मे तिब्ब, इल्मे फ़िक़ह और दुन्या में मुसालेह बदन से मुतअल्लिक़ उलूम हैं । **दूसरी किस्म** : जंगलों में चलने और घाटियां

तै करने की तरह है और वोह येह है कि बातिन को बुरी सिफ़ात से पाको साफ़ करना और उन ऊंची घाटियों पर चढ़ना जिन पर चढ़ने से तौफीक़ याफ़ता लोगों के इलावा तमाम अव्वलीन व आख़िरीन अज़िज़ हैं। इस रास्ते पर चलना और इस का इल्म हासिल करना ऐसे है जैसे रास्ते की सम्तों और उस की मन्ज़िलों का इल्म हासिल करना और जिस तरह मन्ज़िलों और जंगली रास्तों का इल्म उस वक़्त तक नफ़अ मन्द नहीं जब तक उन पर चला न जाए इसी तरह अच्छे अख़्लाक़ का इल्म इन्हें अपनाए बिगैर मुफ़ीद नहीं लेकिन उम्दा अख़्लाक़ से खुद को आरास्ता करना इन का इल्म हासिल किये बिगैर मुमकिन नहीं। तीसरी किस्म नफ़्स, हज़ और इस के अरकान के काइम मक़ाम है और येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात व सिफ़ात, उस के फ़िरिश्तों और उस के अफ़आल नीज़ उन तमाम बातों का इल्म है जो हम ने इल्मे मुकाशफ़ा के ज़िम्न में बयान कीं। येह इल्म हलाक़त से नजात और सआदत के हुसूल में कामयाबी का ज़रीआ है और नजात हर सालिक को हासिल होती है जब कि उस का मक्सद हक़ हो और सआदत के हुसूल में कामयाबी सिर्फ़ अहले मा'रिफ़त को नसीब होती है। येह वोह लोग हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब बन्दे हैं उस के हुजूर रूह व रैहान और जन्नती ने'मतों से सरफ़राज़ होते हैं और वोह लोग जो दर्जए कमाल तक नहीं पहुंच पाते उन्हें अज़ाब से नजात और सलामती ही हासिल होती है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलिशान है :

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۖ فَرَوْحٌ وَ
رَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ۚ وَأَمَّا إِنْ كَانَ
مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۖ فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ
أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۚ (٩١) (٢٤) الواقعة: ٨٨ تا ٩١

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : फिर वोह मरने वाला अगर मुक़र्रबों से है, तो राहत है और फूल और चैन के बाग़, और अगर दहनी तरफ़ वालों से हो, तो ऐ महबूब तुम पर सलाम दहनी तरफ़ वालों से।

और हर वोह शख्स जो मक्सद की तरफ़ तवज्जोह न करे, उसे पाने की कोशिश न करे या उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो लेकिन हुक्मे इलाही की बजा आवरी और इबादत की निय्यत से नहीं बल्कि किसी दुन्यवी ग़रज़ से तो वोह बाएं तरफ़ वालों और गुमराहों में से है। खोलते पानी से उस की मेहमानी होगी और उसे जहन्नम की आग में धंसा दिया जाएगा।

पस सआदत इल्मे मुकाशफ़ा के बा'द हासिल होती है और इल्मे मुकाशफ़ा इल्मे मुआमला के बा'द हासिल होता है और इल्मे मुआमला राहे आख़िरत पर चलने का नाम है। सिफ़ात की घाटियों को पार करना और बुरे अख़्लाक़ के ख़ातिमे की राह पर चलना सिफ़ात का

इल्म सीखने के बा'द होता है। तरीक़ए इलाज और इसे इख़्तियार करने की कैफ़ियत का इल्म बदन की सलामती के इल्म और अस्बाबे तन्दुरुस्ती की तय्यारी के बा'द हासिल होता है और बदन की सलामती इकठ्ठे रहने और एक दूसरे के साथ तआवुन करने से हासिल होती है और बाहमी तआवुन के ज़रीए अश्याए ख़ुर्दो नोश, कपड़े और रिहाइश के इन्तिज़ामात होते हैं और इस काम का तअल्लुक बादशाह के साथ है और अदल व हिक्मत के साथ लोगों को मुन्ज़बत रखने का क़ानून फ़कीह से मुतअल्लिक है और रहे अस्बाबे सिह्हत तो वोह तबीब की ज़िम्मेदारी है और जिस ने कहा कि इल्म दो हैं : **इल्मुल अबदान** और इल्मुल अदयान और इस से फ़िक़ह की तरफ़ इशारा किया तो उस ने इस से मुरव्वजा ज़ाहिरी उलूम मुराद लिये बातिनी नादिर उलूम मुराद नहीं लिये।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम येह कहो कि इल्मे तिब्ब और इल्मे फ़िक़ह को ज़ादे राह और कुजावा की तय्यारी के साथ क्यूं तशबीह दी तो इस का जवाब येह है कि मा'रिफ़ते इलाही के लिये दिल कोशिश करता है ताकि उस का कुर्ब हासिल हो बक़िया बदन इस की कोशिश नहीं करता और दिल से मेरी मुराद महसूस होने वाला गोश्त नहीं बल्कि वोह तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के राजों में से एक राज़ है जिस का इदराक़ करने से हिस्स क़ासिर है और उस के लताइफ़ में से एक लतीफ़ा है जिसे कभी रूह से और कभी नफ़से मुतमइन्ना से ता'बीर किया जाता है जब कि शरीअत में इसे दिल से ता'बीर किया जाता है।

हासिले कलाम :

हर वोह इल्म जिस का मक्सद बदन की मस्लेहत हो वोह सुवारी के मसालेह में से है और ज़ाहिर है कि तिब्ब का भी येही मुआमला है क्यूंकि सिह्हते बदन की हिफ़ाज़त के लिये इस की ज़रूरत पड़ती है और अगर बिलफ़र्ज एक ही इन्सान होता तो उसे भी इस की ज़रूर हाज़त होती जब कि फ़िक़ह का मुआमला इस से जुदा है कि अगर बिलफ़र्ज सिर्फ़ एक इन्सान होता तो कभी उसे फ़िक़ह की ज़रूरत न भी होती। लेकिन इन्सान की पेदाईश इस अन्दाज़ पर की गई है कि वोह अकेला ज़िन्दगी नहीं गुज़ार सकता क्यूंकि खेती बाड़ी करने, रोटी पकाने, आटा गूंधने, लिबास और रिहाइश हासिल करने और इस के तमाम आलात तय्यार करने के लिये तन्हा इन्सान नाकाफ़ी है वोह मिल कर रहने और तआवुन हासिल करने पर मजबूर है और जब लोग इकठ्ठे

रहते और उन की ख्वाहिशात जोश मारती हैं तो वोह अपनी ख्वाहिशात व अस्बाब को एक दूसरे से खींचते हैं, लड़ते झगड़ते हैं और इस वजह से हलाक हो जाते हैं। येह हलाकत का ज़ाहिरी सबब है जिस तरह बातिनी अख़लात् के इख़िलाफ़ की वजह से वोह हलाक होते हैं। तिब्ब के ज़रीए एक दूसरे की मुख़ालिफ़ इन बातिनी अख़लात् में ए'तेदाल पैदा किया जाता है जब कि हिक्मते अमली और अदलो इन्साफ़ के ज़रीए ख़ारिजी झगड़ों में ए'तिदाल की फ़जा काइम की जाती है। लिहाज़ा अन्दरूनी अख़लात् में ए'तिदाल का तरीक़ा जानना इल्मे तिब्ब और मुआमलात व अफ़आल में लोगों को राहे ए'तिदाल पर रखने का इल्म इल्मे फ़िक़ह कहलाता है। येह दोनों उलूम बदन की हिफ़ाज़त करते हैं जो सुवारी है।

पस जो इल्मे फ़िक़ह और इल्मे तिब्ब के हुसूल ही में कोशां रहता है, मुजाहदा कर के अपने नफ़्स की इस्लाह नहीं करता वोह उस शख़्स की तरह है जो ऊंटनी ख़रीदता है, इस के लिये घास ख़रीदता है और मशकीज़ा ख़रीद कर तय्यार करता है लेकिन हज़ के रास्ते पर नहीं चलता और फ़िक़ही झगड़ों में जारी होने वाले दक्कीक़ कलिमात के सीखने में ज़िन्दगी बसर करने वाला उस शख़्स की तरह है जो ज़िन्दगी भर उन अस्बाब की तय्यारी में मसरूफ़ रहता है जिन के ज़रीए सफ़रे हज़ में ले जाने वाले मशकीज़े को सीने के लिये धागा मज़बूत किया जाता है।

इन फुक़हाए किराम को उन लोगों से जो इस्लाहे क़ल्ब के उस रास्ते के राही हैं जिस की मन्ज़िल इल्मे मुकाशफ़ा है वोह निस्बत है जो मशकीज़ा दुरुस्त करने वालों को हज़ के रास्ते पर चलने वालों या इस के अरक़ान की अदाएगी करने वालों से है। तो पहले इस बात पर गौर करो और उस शख़्स की तरफ़ से मुफ़्त नसीहत क़बूल करो जो इस काम में अक़षर वक़्त गुज़ार चुका और सख़्त मेहनत के बा'द इस तक पहुंचा है और उस ने आ़म व ख़ास लोगों में इम्तियाज़ के लिये बड़ी ज़ुरअत से काम लिया और उन की तकलीद से गुरेज़ करते हुए अपनी ख़्वाहिश को कुचल दिया। मुतअल्लिम (तालिबे इल्म) के आदाब के सिलसिले में इतनी ही बात काफ़ी है।

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهُ.....﴾

﴿.....صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

दूसरी फ़स्ल :

शाहनुमा उश्शान के फ़ाइज़

याद रखो ! जिस तरह माल हासिल करने और जम्अ करने के ए'तिबार से इन्सान की चार हालतें हैं इसी तरह इल्म के ए'तिबार से भी इन्सान की चार हालतें हैं । चुनान्वे,

माल के ए'तिबार से इन्सान की हालतें :

माल के ए'तिबार से इन्सान की चार हालतें हैं : (1)....**कमाने की हालत** : इस हालत में वोह मुक्तसिब होता है । (2)....**कमाया हुवा माल जम्अ करने की हालत** : इस हालत में वोह मांगने से बे नियाज़ हो जाता है । (3).....**खुद पर खर्च करने की हालत** : इस में वोह मुन्तफ़ेअ (फ़ाइदा उठाने वाला) कहलाता है । (4).....**अपना माल दूसरों पर खर्च करने की हालत** : ऐसी सूरत में वोह सखी फ़ज़ीलत वाला शुमार होता है और येह सब से अफ़ज़ल हालत है ।

इल्म के ए'तिबार से इन्सान की हालतें :

जिस तरह माल जम्अ किया जाता है उसी तरह इल्म भी हासिल किया जाता है । लिहाज़ा इल्म के ए'तिबार से भी इन्सान की चार हालतें हैं : (1)....**तलबे इल्म और हुसूले इल्म की हालत** । (2).....**दूसरों से बे परवाह होने की हालत** : यूं कि इल्म हासिल कर लेने के बा'द उसे दूसरों से पूछने की ज़रूरत नहीं रहती । (3).....**ग़ौरो फ़िक्र की हालत** : यूं कि हासिल किये हुए इल्म में ग़ौरो फ़िक्र करना और इस से फ़ाइदा उठाना । (4).....**दूसरों तक इल्म पहुंचाने की हालत** : और येह तमाम हालतों से अफ़ज़ल है ।

इल्म पर अमल करने और न करने वाले की मिषाल :

लिहाज़ा जिस ने इल्म हासिल किया, इस पर अमल किया और दूसरों तक पहुंचाया तो वोह शख्स आस्मानों में अज़ीम शुमार किया जाता है । बेशक वोह आप़ताब की मानिन्द है जो खुद भी रोशन होता है और दूसरों को भी रोशनी पहुंचाता है और कस्तूरी की तरह है जो खुद मुअत्तर होती और दूसरों को भी मुअत्तर करती है और वोह शख्स जो इल्म सीखता है मगर इस पर अमल नहीं करता वोह उस रजिस्टर की मिषल है जो दूसरों को फ़ाइदा देता है मगर खुद इल्म से ख़ाली होता है । उस सान (या'नी धारदार आले) की मानिन्द है जो दूसरे औज़ारों को तो तेज़ करता है मगर खुद नहीं काटता । उस सूई की तरह है जो दूसरों के लिये लिबास तय्यार करती है मगर खुद बरहना रहती है और चराग़ की बत्ती की मिषल है जो खुद जल कर औरों को रोशनी मुहय्या करती है । जैसा कि (बे अमल आलिम के बारे में) कहा गया है :

مَا هُوَ إِلَّا ذِبَالَةٌ وَقَدَتْ تُضْيِئُ لِلنَّاسِ وَهِيَ تَحْتَرِقُ

तर्जमा : वोह तो महज एक बत्ती है जो लोगों को रोशनी देती और खुद जलती है ।

जब वोह इल्म सिखाने में मशगूल होता है तो बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी अपने सर लेता है । इस लिये चाहिये कि इस के आदाब और ज़िम्मेदारियों का लिहाज़ रखे ।

उस्ताज़ के आदाब

﴿1﴾.....उस्ताज़ शागिर्दों पर शफ़क़त करे और उन्हें अपने बेटों जैसा समझे । हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम्हारे लिये ऐसा हूँ जैसे वालिद अपनी अवलाद के लिये होता है ।”⁽¹⁾

उस्ताज़ का मक्सूद येह हो कि वोह शागिर्दों को आख़िरत के अज़ाब से बचाएगा । येह मक्सद वालिदैन् के अपनी अवलाद को दुन्या की आग से बचाने से ज़ियादा अहम है । इसी वजह से उस्ताज़ का हक़ मां-बाप के हक़ से ज़ियादा है । क्यूंकि वालिद इस के मौजूदा वुजूद और फ़ानी ज़िन्दगी का ज़रीअ़ा होता है जब कि उस्ताज़ बाक़ी रहने वाली ज़िन्दगी का सबब होता है । अगर उस्ताज़ न हो तो बाप के ज़रीए़ हासिल होने वाली चीज़ उसे दाइमी हलाक़त की तरफ़ ले जाए । जो उस्ताज़ आख़िरत की दाइमी ज़िन्दगी के लिये मुफ़ीद है, इस से वोह उस्ताज़ मुराद है जो उलूमे आख़िरत सिखाता है या वोह मुराद है जो उलूमे दुन्या आख़िरत की निन्यत से सिखाता है न की दुन्यावी मक्सद से क्यूंकि जहां तक दुन्या की निन्यत से इल्म सिखाने का मुआमला है तो इस में खुद भी हलाक़ होना है और दूसरों को भी हलाक़त में मुब्तला करना है । हम इस से **अल्लाह** की पनाह मांगते हैं । जिस तरह एक बाप की अवलाद का फ़र्ज़ बनता है कि बाहम एक दूसरे से महबबत करें और तमाम मक़ासिद में एक दूसरे से तआवुन करें ऐसे ही एक उस्ताज़ के शागिर्दों का हक़ बनता है कि आपस में प्यार व महबबत काइम रखें और येह इसी सूरत में हो सकता है जब कि इन का मक्सद आख़िरत हो, अगर इन का मक्सद दुन्या का हुसूल होगा तो इन्हें आपस में बुज़ व हसद के सिवा कुछ हासिल न होगा । क्यूंकि उ-लमा और आख़िरत के तलबगार दुन्या के रास्ते से गुज़रते हुए बारगाहे इलाही की तरफ़ सफ़र पर गामज़न हैं और दुन्या के साल और महीने इस रास्ते की मनाज़िल हैं । जब आम शहरों की तरफ़ जाने वाले मुसाफ़ि़रों के दरमियान

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة وسننها، باب الاستنجاء بالحجارة.....الخ، الحديث: ۳۱۳، ج ۱، ص ۹۹۔

नमी एक दूसरे से महबूबत व दोस्ती का ज़रीआ है तो फिर फिरदौसे आ'ला की तरफ़ सफ़र और इस के रास्ते में कैसी नमी होनी चाहिये, सआदते आखिरत तंग नहीं इसी लिये इस के तलबगारों में झगड़ा नहीं होता और दुन्या की कामयाबियों में वुस्अत नहीं जिस की वजह से दुन्यादार हुजूम की तंगी से महफूज़ नहीं रह सकते । जो लोग उलूम के ज़रीए हुकूमत के तालिब होते हैं वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस इरशाद के मिस्दाक़ नहीं बन सकते :

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ (प २, الحجرات: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मुसलमान मुसलमान भाई हैं।

बल्कि वोह इस फ़रमान के मिस्दाक़ होंगे :

أَلَا خَلَاءٌ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
أَلَا السَّكَتَيْنِ (प २५, الزخرف: ५६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : गहरे दोस्त उस दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे मगर परहेज़गार ।

उस्ताज़ का मक्सूद सिर्फ़ रिज़ाए इलाही हो :

﴿2﴾.....उस्ताज़ हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पैरवी करे और इल्म पर उजरत तलब न करे न इस से किसी सिले या ता'रीफ़ व शुक्रिया का क़स्द करे बल्कि ख़ालिसतन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा व खुशनूदी और उस का कुर्ब हासिल करने के लिये इल्म सिखाए, शागिर्दों पर अपना कोई एहसान न समझे अगर्चे उन पर इस का एहसान ज़रूर है बल्कि उन की फ़ज़ीलत व एहसान तसव्वुर करे कि उन्होंने ने अपने दिलों को तय्यार किया ताकि इन में उलूम के बीज बो कर इन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करीब किया जाए जैसे कोई शख्स तुम्हें अपनी ज़मीन उधार दे ताकि तुम इस में अपने लिये खेती बाड़ी करो तो तुम्हारा नफ़अ मालिके ज़मीन से ज़ियादा होगा । तो शागिर्द पर कैसे एहसान क़रार दिया जा सकता है जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां तुम्हारा षवाब इस से ज़ियादा है । अगर तालिबे इल्म न होता तो तुम इस षवाब को न पा सकते थे । लिहाज़ा सिर्फ़ खुदा عَزَّوَجَلَّ से अपना अज़्र तलब करो । जैसा कि इरशाद होता है :

وَيَقُومُوا لَكُمْ عَلَيْهِمَا لَا إِنْ أَجَرِي
إِلَّا عَلَى اللَّهِ (प १२, हुद: २९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ क़ौम ! मैं तुम से कुछ इस पर माल नहीं मांगता मेरा अज़्र तो **अल्लाह** ही पर है ।

मालो दौलत खादिम जब कि इल्म मख्दूम है :

माल और जो कुछ दुनिया में है वोह सब बदन के खादिम हैं और बदन नफ्स की सुवारी है जब कि मख्दूम इल्म है कि इसी की बदौलत नफ्स को फ़ज़ीलत हासिल होती है तो जिस ने इल्म के ज़रीए माल त़लब किया वोह उस शख्स की तरह है जो अपने जूते के तल्वे को चेहरे से साफ़ करता है तो उस ने मख्दूम (चेहरे) को खादिम और खादिम (जूते) को मख्दूम बना दिया और येह कामिल दर्जे की तब्दीली है। लिहाज़ा ऐसा शख्स क़ियामत के दिन उन मुजरिमों (या'नी कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन) के साथ खड़ा होगा जो अपने रब्ब के पास (अपने अफ़आल व किरदार से नादिम व शर्मसार हो कर) सर नीचे किये होंगे।

बहर हाल फ़ज़ीलत व एहसान उस्ताज़ के लिये है। पस तुम देखो कि दीन का मुआमला किस तरह उन लोगों के पास चला गया जिन्हें इल्मे फ़िक़ह, इल्मे कलाम या इन के इलावा दूसरे उलूम की तदरीस हासिल है और वोह समझते हैं कि इस से उन का मक्सूद कुर्बे इलाही का हुसूल है हालांकि वोह जागीरें हासिल करने के लिये बादशाहों की ख़िदमत में माल और इज़्ज़त खर्च कर के तरह तरह की ज़िल्लते उठाते हैं। अगर वोह येह छोड़ दें तो उन्हें नज़र अन्दाज़ कर दिया जाए और कोई भी उन के पास न जाए। फिर उस्ताज़ शागिर्द से तवक्कोअ रखता है कि वोह हर मुसीबत में उस के काम आए, उस के दोस्त की मदद करे और दुश्मन से अ़दावत रखे, उस की ज़रूरियात को पूरा करने के लिये तय्यार रहे और उस के मक़ासिद में उस के ताबेअ रहे। अगर शागिर्द इस में कोताही करे तो उस्ताज़ उस के ख़िलाफ़ हो जाता और उस का दुश्मन बन जाता है, तो ऐसा आलिम कितना कमीना है जो अपने लिये इस मक़ाम को पसन्द करता है फिर इस पर खुश होता है और येह कहते हुए उसे हया नहीं आती कि तदरीस से मेरा मक्सद **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का कुर्ब हासिल करने के लिये इल्म को फैलाना और उस के दीन की मदद करना है। पस तुम उन निशानियों को देख लो ताकि तरह तरह की धोके बाज़ियों पर तुम्हारी नज़र रहे।

﴿3﴾.....उस्ताज़ त़ालिबे इल्म को नसीहत करने में कोई कसर न छोड़े, यूं कि किसी मर्तबे के इस्तिहकाक़ से क़ब्ल उसे हासिल करने की ख़्वाहिश से मन्अ करे और ज़ाहिरी उलूम से फ़रागत से पहले पोशीदा उलूम में मशगूल होने से रोके। फिर उसे तम्बीह करे कि उलूम हासिल करने का मक्सद **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का कुर्ब है हुकूमत, फ़ख़्र और झगड़े करना नहीं और जिस क़दर मुमकिन हो पहले ही उस के दिल में उस चीज़ की ख़राबी का तसव्वुर पुख़्ता कर दे क्यूंकि बद

अमल अलिम का फ़साद उस की इस्लाह से ज़ियादा होता है। फिर अगर उस्ताज़ को तालिबे इल्म की बातिनी हालत मा'मूल हो जाए कि वोह दुन्या के लिये इल्म हासिल कर रहा है तो उस इल्म को देखे जिसे वोह हासिल कर रहा है अगर वोह फ़िक्ही इख़ितालाफ़ात, इल्मे कलाम के झगड़ों या मुक़द्मात में फैसलों और फ़तवों का इल्म हो तो उसे इन उलूम के हासिल करने से रोक दे क्यूंकि येह उलूम, उलूमे आख़िरत में से नहीं और न ही उन उलूम में से हैं जिन के बारे में कहा गया है कि “हम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इलावा के लिये इल्म सीखना चाहा मगर उस ने रिज़ाए इलाही के इलावा किसी और मक़सद के लिये हासिल होने से इन्कार कर दिया” बल्कि येह तो इल्मे तफ़्सीर, इल्मे हदीष और इल्मे आख़िरत है जिस में अस्लाफ़ मशगूल होते थे नीज़ येह नफ़्स के अख़्लाक और इन को अपनाने के तरीक़े की मा'रिफ़त का इल्म है।

लिहाज़ा अगर तालिबे इल्म दुन्यवी मक़सद के लिये इल्म हासिल करे तो उस्ताज़ को चाहिये कि उसे छोड़ दे क्यूंकि उस से वा'ज और लोगों की पैरवी की ख़्वाहिश जनम लेती है। अलबत्ता कभी ऐसा होता है कि तहसीले इल्म के दौरान या आख़िर में वोह ख़बरदार हो जाता है क्यूंकि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़ौफ़ पैदा करने, दुन्या की हक़ारत बताने और आख़िरत की अज़मत बयान करने वाले उलूम भी हैं इस लिये मुमकिन है कि वोह आख़िरे कार राहे रास्त पर आ जाए और दूसरों को जो वा'ज करता है उस से खुद भी नसीहत हासिल करे। लोगों में मक़बूलियत और मक़ाम व मन्ज़िलत की ख़्वाहिश उस दाने की तरह है जिसे जाल के इर्द गिर्द फेंका जाता है ताकि इस के ज़रीए परन्दे का शिकार किया जाए। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भी बन्दों के साथ ऐसा ही मुआमला फ़रमाया कि शहवत को पैदा फ़रमाया ताकि इस के ज़रीए इन्सानों की नस्ल बाक़ी रहे और हुब्बे जाह की तख़लीक़ फ़रमाई ताकि उलूम की ज़िन्दगी का सबब बने और येह बात उन उलूम में मुतवक्क़ेअ है। अलबत्ता महज़ इख़ितालाफ़ी मसाइल, इल्मे कलाम के झगड़े और नादर फ़िरोई मसाइल को जानने में मशगूल रहने और दीगर उलूम की तरफ़ तवज्जोह न देने से दिल सख़्त होता, बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ग़ाफ़िल हो जाता, गुमराही में बढ जाता और मक़ाम व मर्तबे का तालिब बन जाता है मगर वोह कि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रहमत से बचा ले या वोह जो इस के साथ दूसरे दीनी उलूम को मिला ले। इस पर तजरिबे और मुशाहिदे जैसी कोई दलील नहीं पस तुम देखो और इब्रत हासिल करो और निगाहे बसीरत से बन्दों और शहरों में इस की तहक़ीक़ मा'लूम करो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही से मदद मांगी जाती है।

हमें लोगों ने तिजारत गाह बना लिया :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي को ग़मगीन देख कर किसी ने वजह पूछी तो फ़रमाया : “हम दुनिया दारों के लिये तिजारत गाह बन गए कोई दुनियादार हमारे पास आता है यहां तक कि जब वोह इल्म सीख लेता है तो क़ाज़ी, गवर्नर या मुन्शी बना दिया जाता है।”⁽¹⁾

﴿4﴾.....उस्ताज़ की येह ज़िम्मेदारी फ़न्ने ता'लीम की बारीकियों में से है और वोह येह कि जिस क़दर मुमकिन हो इशारों किनायों में शागिर्द को बुरे अख़्लाक से मन्अ करे, सराहतन न रोके, प्यार व महबूबत से मन्अ करे, झिड़क कर मलामत करते हुए न रोके। क्यूंकि वाज़ेह लफ़्ज़ों में किसी को मलामत करने से हैबत का पर्दा चाक हो जाता और मुख़ालफ़्त की ज़ुरअत पैदा होती है और वोह मन्अ कर्दा बात पर इस्सर करने का हरीस बन जाता है। हर मुअल्लिम के रहबर व रहनुमा हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर लोगों को मेंगनी तोड़ने से रोका जाए तो वोह इसे तोड़ेंगे और कहेंगे कि हमें इस से मन्अ किया गया ज़रूर इस में कोई बात है।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह और हज़रते सय्यिदुना हव्वा عَلَيْهِمَا الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का वाक़िआ और जिस से इन्हें रोका गया था तुम्हें इस पर ख़बरदार करता है। मैं ने तुम से इस वाक़िए का तज़क़िरा कहानी की ग़रज़ से नहीं किया बल्कि इस लिये कि तुम इस के ज़रीए इब्रत हासिल करते हुए आगाह हो जाओ और इशारों कनायों में समझाने से उम्दा नुफूस और ज़हीन व फ़तीन अज़हान इस के मअानी के इस्तिम्बात की तरफ़ माइल होते हैं और मुख़लिफ़ मअानी निकालने की खुशी इन के इल्म में राग़िब होने का ज़रीआ बनती है ताकि मा'लूम हो कि येह उन बातों से है जो इस की समझ से पोशीदा नहीं।

असातिजा की बुरी आदत :

﴿5﴾किसी इल्म के ज़िम्मेदार उस्ताज़ को चाहिये कि वोह तालिबे इल्म के दिल में इस के इलावा दीगर उलूम की बुराई न डाले जैसा कि लुग़त के उस्ताज़ की आदत होती है कि वोह इल्मे फ़िक्ह की बुराई करता है और फ़िक्ह पढ़ाने वाला इल्मे हदीष और इल्मे तफ़सीर को बुरा कहता है कि येह तो महज़ नक़ली और समाई बातें हैं और येह बुढ़ी औरतों का काम है, इस में अक्ल को कोई दख़ल नहीं। इल्मे कलाम का उस्ताज़ फ़िक्ह से नफ़रत दिलाते हुए कहता है कि येह फ़ुरई मसाइल हैं, औरतों के हैज़ की बातें हैं इस को इल्मे कलाम से क्या निस्बत ? इल्मे कलाम में तो

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة، ج ١، ص ٢٣١۔

②.....عيون الاخبار للدينورى، كتاب الطبائع والاخلاق المذمومة، ج ٢، ص ٢۔

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात का बयान होता है। येह असातिज़ा की बुरी आदात हैं, उन्हें इन से इजतिनाब करना चाहिये बल्कि किसी इल्म के जिम्मेदार उस्ताज़ को चाहिये कि वोह तालिबे इल्म पर दूसरे इल्म सीखने के रास्ते खोले और अगर उस के पास कई उलूम की जिम्मेदारी है तो इस बात का लिहाज़ करे कि तालिबे इल्म बित्तदरीज (आहिस्ता आहिस्ता) एक दर्जे से दूसरे दर्जे की तरफ़ बढ़ता चला जाए।

﴿6﴾.....**उस्ताज़** तालिबे इल्म को वोही बातें बताए जिन्हें वोह समझ सके, जो बात उस की समझ व अक्ल से बाला तर हो वोह न बताए वरना उसे इल्म के मशग़ले से नफ़रत हो जाएगी या वोह परेशान हो जाएगा। इस सिलसिले में उस्ताज़, मुअल्लिम काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक्तिदा व पैरवी करे।

लोगों की अक्लों के मुताबिक़ कलाम करो :

आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : “हम गुरौहे अम्बिया को हुक्म है कि लोगों को उन के मरातिब पर रखें और उन से उन की अक्लों के मुताबिक़ कलाम करें।”⁽¹⁾

पस उस्ताज़ भी तालिबे इल्म के सामने कोई हकीक़त उस वक़्त जाहिर करे जब जानता हो कि वोह इसे समझ लेगा। आकाए दो आलम, नूरे मजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “कोई शख्स लोगों से ऐसी बात करता है जो उन की अक्लों में नहीं आती तो वोह इन में से बा'ज़ के लिये फ़ितने का बाइष होती है।”⁽²⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम लल्लु त़ाली व ज़हहे क़र्रिम ने अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : “यहां बहुत से उलूम हैं अगर कोई इन्हें समझने वाला हो।”⁽³⁾

नीज़ आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने सच फ़रमाया कि “**قُلُوبُ الْأَبْرَارِ قُبُورُ الْأَسْرَارِ**” या 'नी नेकूकारों के दिल भेदों के दफ़ीने होते हैं।

①..... کتاب الضعفاء للعقيلي، يحيى بن مالك بن انس: ٢٠٥٤، ج ٣، ص ١٥٣٣ - ١

صحيح مسلم، المقدمة، ص ٥ -

سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی تنزيل الناس منازلهم، الحديث: ٣٨٣٢، ج ٣، ص ٣٣٣ -

②..... صحيح مسلم، المقدمة، باب النهی عن الحديث بكل ماسمع، الحديث: ٥، ص ٩ -

کتاب الضعفاء للعقيلي، الرقم: ١٢٠٢، عثمان بن داود، ج ٣، ص ٩٣٤ -

③..... قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضيله، ذکر بیان تفضيل علوم الصمت..... الخ، ج ١، ص ٢٣٢ -

लिहाज़ा उस्ताज़ को चाहिये कि जो वोह जानता है हर एक को न बताए। येह उस वक़्त है जब कि तालिबे इल्म इसे समझता तो हो मगर इस से नफ़अ उठाने का अहल न हो तो फिर उन बातों का क्या होगा जिन्हें वोह समझता ही न हो।

ख़िन्जीर के गले में मोतियों का हार :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “मोतियों के हार ख़िन्जीरों के गले में न डालो क्यूंकि इल्म मोती से बेहतर है और जो इल्म को नापसन्द करे वोह ख़िन्जीरों से बदतर है।”⁽¹⁾

इसी लिये किसी ने कहा : “हर शख्स को उस की अक्ल के मे'यार पर नापो और उस की समझ के मीज़ान में तोलो ताकि तुम उस से महफूज़ रहो और वोह तुम से नफ़अ हासिल कर सके वरना मे'यार के मुख़्तलिफ़ होने की वजह से वोह इन्कार कर देगा।”⁽²⁾

एक आलिम से किसी ने कोई बात पूछी तो उन्होंने ने जवाब न दिया। साइल ने कहा : क्या आप ने रसूलुल्लाह ﷺ का येह फ़रमान नहीं सुना कि “जिस ने इल्मे नाफ़ेअ को छुपाया वोह बरोज़े क़ियामत इस हाल में आएगा कि उसे आग की लगाम डाली गई होगी।”⁽³⁾ आलिम साहिब ने कहा : “लगाम छोड़ो और जाओ ! अगर मेरे पास कोई समझदार आए और मैं उस से इल्म को छुपाऊं तो मुझे लगाम डाली जाएगी।” इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الْمِيراثَةَ لِيُتَمَرَّوْا بِهَا وَيَصْنَعُوا فِيهَا مَآلًا ۚ وَكَذَٰلِكَ يُضَلَّوْنَ
तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बे अक्लों को उन के माल न दो।

मज़कूरा आयते मुबारका में इस बात पर तम्बीह है कि जो इल्म नुक़सान पहुंचाए इस से इल्म को बचाना ज़ियादा बेहतर है। ना अहल को इल्म सिखाने का जुल्म, इल्म को उस के अहल से रोकने के जुल्म से कम नहीं।

शाइर कहता है :

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٤-

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٤-

③.....المعجم الاوسط، من اسمه عبدالصمد، الحديث: ٢٨١٥، ج ٣، ص ٣٥٠-

أَنْتَرِدُّرَآيِّنَ سَارِحَةِ النَّعَمِ فَاصْبَحَ مَخْزُونًا بِرَاعِيَةِ الْغَنَمِ
لَآئَهُمْ أَمْسُوأُ بِجَهْلِ لِقَدْرِهِ فَلَا أَنَا أَضْحَىٰ أَنْ أَطَوَّقَهُ الْبُهِمِ
فَإِنْ لَطَفَ اللَّهُ اللَّطِيفُ بِلُطْفِهِ وَصَادَفَ أَهْلًا لِلْعُلُومِ وَلِلْحِكْمِ
نَشَرْتُ مُفِيدًا اسْتَفَدْتُ مُودَةً وَإِلَّا فَمَخْزُونٌ لَدَيَّ وَمُكْتَمِ
فَمَنْ مَنَعَ الْجُهَّالَ عِلْمًا أَضَاعَهُ وَمَنْ مَنَعَ الْمُسْتَوْجِبِينَ فَقَدْ ظَلَمَ

तर्जमा : (1) क्या मैं जानवर चराने वाले के आगे मोती फैला दूँ कि बकरियाँ चराने वाले के पास इस का खज़ाना जम्अ हो जाए !

(2) क्योंकि वोह इल्म की कद्रो कीमत से बे ख़बर होने की वजह से अन्धेरे में चले गए तो मैं जानवरों को इस (इल्म) का हार पहना कर रोशन नहीं कर सकता ।

(3) अगर **اَللّٰهُ** عزّوجلّ मुझ पर अपना लुत्फ़ो करम फ़रमाए और मुझे इल्म व हिकमत के अहल लोगों से मिला दे ।

(4) तो मैं इल्म को आम करूंगा और लोगों की महबबत हासिल करूंगा वरना वोह इल्म की दौलत मेरे पास जम्अ रहेगी और छुपी रहेगी ।

(5) लिहाज़ा जिस ने जाहिलों (या'नी ना अहलों) को इल्म दिया उस ने इसे ज़ाएअ कर दिया और जिस ने हक़दारों (या'नी अहलों) से इसे रोके रखा उस ने जुल्म किया ।

﴿7﴾.....अगर तालिबे इल्म कोताह फ़हम हो तो उस्ताज़ उसे वाजेह बात बताए जिसे वोह आसानी से समझ सके और येह न बताए कि इस के इलावा बारीक बातें भी हैं जो उस से रोक रखी हैं । क्योंकि इस तरह वाजेह बातों में भी उस की रग़बत कम होगी, उस का दिल तशवीश में मुब्तला हो जाएगा और इसे येह वहम लाहिक़ होगा कि उस्ताज़ ने उसे सिखाने में बुख़ल से काम लिया है, इस लिये कि हर एक येही समझता है कि वोह हर बारीक इल्म का अहल है । हर एक **اَللّٰهُ** عزّوجلّ से इस बात पर राज़ी है कि उस ने उसे कामिल अक्ल अता फ़रमाई है और जो लोगों में ज़ियादा बे वुकूफ़ और ज़ियादा कमज़ोर अक्ल वाला होता है वोह भी अपनी अक्ल को कामिल समझ कर ज़ियादा खुश होता है ।

इस से मा'लूम हुवा कि अ़वाम में से जो शख्स शरीअत का पाबन्द हो और उस के दिल में अस्लाफ़ से मन्कूल अ़काइद बिगैर किसी तशबीह व तावील के रासिख हों, साथ साथ उस की सीरत भी अच्छी हो और उस की अ़क़ल उस से ज़ियादा की मुतहम्मिल न हो सकती हो तो ऐसे शख्स को उस के ए'तिक़ाद के बारे में तशवीश में न डाला जाए बल्कि उसे उस के काम में मशगूल छोड़ दिया जाए क्यूंकि अगर उसे ज़ाहिरी तावीलें बताई जाएंगी तो वोह अ़वाम के जुमरे से निकल जाएगा और इस के लिये ख़वास में शामिल होना आसान न होगा जिस की वजह से उस के और गुनाहों के दरमियान हाइल दीवार हट जाएगी और वोह सरकश शैतान बन कर खुद को भी हलाक करेगा और दूसरों को भी। बल्कि अ़वाम के साथ बारीक इलूम के ह़काइक़ के बारे में गुफ़्तगू नहीं करनी चाहिये, उन्हें सिर्फ़ इबादात सिखानी चाहियें और जिन मुआमलात में वोह मशगूल हों उन में अमानत दारी की ता'लीम देनी चाहिये, जन्नत की रग़बत और दोज़ख़ की हैबत से इन के दिलों को भर देना चाहिये जैसा कि कुरआने ह़कीम ने बयान किया है और उन के सामने किसी शुबे को हरकत न दी जाए, क्यूंकि कभी वोह शुबा अ़म आदमी के दिल को पकड़ लेता है फिर उस का हल उसे दुश्वार होता है नतीजतन वोह बद बख़्त व हलाक हो जाता है।

मुख़्तसर येह कि अ़वाम के सामने बहूष व मुबाह़षा का दरवाज़ा न खोला जाए वरना इन के वोह मुआमलात मुअ़तल हो कर रह जाएंगे जिन से लोगों के निज़ाम और ख़वास की ज़िन्दगी की बका है।

उस्ताज़ और शागिर्दों की मिषाल :

﴿8﴾.....उस्ताज़ अपने इल्म पर अ़मल करता हो ताकि उस के क़ौल व फे'ल में यक्सानिय्यत हो, इस लिये कि इल्म बातिनी निगाहों से जब कि अ़मल ज़ाहिरी आंखों से देखा जाता है और ज़ाहिरी आंख वालों की कषरत है लिहाज़ा अगर उस का अ़मल इल्म के ख़िलाफ़ होगा तो हिदायत में रुकावट आएगी और हर वोह शख्स जो कोई चीज़ खा कर लोगों से कहता है कि इसे मत खाना येह ज़ेहरे क़ातिल है, तो लोग उस का मज़ाक़ उड़ाते और उस पर तोहमत लगाते हैं और जिस चीज़ से लोगों को मन्अ किया जाए उस की हिर्स उन्हें ज़ियादा हो जाती है और वोह कहते हैं कि अगर येह चीज़ अच्छी और लज़ीज़ न होती तो वोह खुद उसे इख़्तियार न करता। हिदायत देने वाले उस्ताज़ और शागिर्दों की मिषाल ऐसी है जैसे नक़्श और मिट्टी, लकड़ी और साए की, कि उस चीज़ से मिट्टी में कैसे नक़्श बनेगा कि जिस में खुद नक़्श नहीं और जब लकड़ी ही टेढ़ी होगी तो उस का साया क्यूं कर सीधा होगा।

इसी मुज़मून को शे'र में यूं बयान किया गया है :

لَا تَنْهَ عَنْ خُلُقٍ وَتَأْتِي مِثْلَهُ عَارٌ عَلَيْكَ إِذْ فَعَلْتَ عَظِيمٌ

तर्जमा : लोगों को ऐसी बात से मन्अ न कर जिसे तू खुद करता है अगर तू ऐसा करे तो येह तेरे लिये बड़ी शर्म की बात है ।

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ

(ب ۱، البقرة: १७८)

तर्जमा कन्ज़ुल ईमान : क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ।

इसी वजह से अल्लिम के गुनाहों का बोझ जाहिल के गुनाहों के बोझ से ज़ियादा होता है क्यूंकि अल्लिम के फिसलने से खल्के कषीर फिसल जाती है और लोग उस की पैरवी करते हैं ।

हदीषे मुबारका में है कि “जिस ने कोई बुरा तरीका जारी किया तो उस पर उस बुरे तरीके का गुनाह भी है और उस पर अमल करने वालों का गुनाह भी ।”

अल्लिम और जाहिल का धोका :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अल्लियुल मुर्तज़ा क़र्रमैल्लै त़ैअली वज़्हेल्लै क़र्रिम ने फ़रमाया : “दो शख्सों ने मेरी कमर तोड़ डाली है एक बे इज़ज़त अल्लिम और दूसरा जाहिल इबादत गुज़ार । पस जाहिल इबादत गुज़ार बन कर लोगों को धोका देता है और अल्लिम अपनी रुस्वाई से लोगों को धोके में मुब्तला करता है ।”^(१) وَاللّٰهُ اَعْلَمُ



.....**मदनी काफ़िलों और फ़िक्रे मदीना की बरक़्ते.....**

“दा'वते इस्लामी” के सुन्नतों की तर्बियत के “मदनी काफ़िलों” में सफ़र और रोज़ाना “फ़िक्रे मदीना” के ज़रीए “मदनी इन्आमात” का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये । इस की बरक़त से “पाबन्दे सुन्नत” बनने, गुनाहों से नफ़रत” करने और “ईमान की हिफ़ाज़त” के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा ।

बाब नम्बर 6 : इल्म की आफ़ात, उलमाए आख़िरत और उ-लमाए सू की अलामात का बयान

पहली फ़स्ल : उ-लमाए सू की निशानियां

इल्म और उ-लमा के जो फ़ज़ाइल मरवी हैं हम उन्हें बयान कर चुके हैं। अब येह बयान करेंगे कि उ-लमाए सूअ के बारे में बहुत सख़्त सज़ाएं मरवी हैं जिन से वाजेह होता है कि बरोजे क़ियामत लोगों में सब से सख़्त अज़ाब बुरे उ-लमा को होगा। इस लिये उ-लमाए दुन्या और उ-लमाए आख़िरत के दरमियान फ़र्क करने वाली अलामात की पहचान अहम उमूर में से है। उ-लमाए दुन्या से मुराद बुरे उ-लमा हैं जिन का मक्सद इल्म से दुन्या की ने'मतों और दुन्यादारों की नज़र में मक़ाम व मर्तबा हासिल करना है।

आफ़ाते इल्म के मुतअल्लिक आठ फ़रामीने मुस्तफ़

- ﴿1﴾.....बेशक बरोजे क़ियामत लोगों में से ज़ियादा सख़्त अज़ाब उस आलिम को होगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के इल्म से नफ़अ न दिया।⁽¹⁾
- ﴿2﴾.....आदमी उस वक़्त तक आलिम नहीं हो सकता जब तक अपने इल्म पर अमल न करे।⁽²⁾
- ﴿3﴾.....इल्म दो हैं : एक वोह जो ज़बान पर होता है, येह मख़्लूक के ख़िलाफ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हुज्जत है और दूसरा वोह जो दिल में होता है, येह इल्म नफ़अबख़्श है।⁽³⁾
- ﴿4﴾.....आख़िरी ज़माने में जाहिल आबिद और फ़ासिक उ-लमा होंगे।⁽⁴⁾
- ﴿5﴾.....इल्म इस लिये हासिल न करो कि इस के ज़रीए उ-लमा पर फ़ख़्र करोगे, जाहिलों से झगड़ा करोगे और लोगों को अपनी तरफ़ माइल करोगे, जो ऐसा करेगा वोह आग में जाएगा।⁽⁵⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في نشر العلم، الحديث: ٤٤٨، ج ٢، ص ٢٨٥-

②.....فيض القدير للمناوي، حرف العين، تحت الحديث: ٥٦٥٩، ج ٢، ص ٢٨٩-

③.....تاريخ بغداد، احمد بن الفضل: ٢٢٩٥، ج ٥، ص ١٠٨-

④.....المستدرک، کتاب الرقاق، باب اربع اذا کان فيک.....الخ، الحديث: ٤٩٥٣، ج ٥، ص ٢٢٩-

⑤.....سنن ابن ماجه، المقدمة، باب الانتفاع بالعلم والعمل به، الحديث: ٢٥٣-٢٥٢، ج ١، ص ١٦٥-

﴿6﴾.....जो इल्म को छुपाएगा **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे आग की लगाम डालेगा ।⁽¹⁾

﴿7﴾.....प्यारे मुस्लिम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे तुम पर दज्जाल से ज़ियादा दूसरी चीज़ का ख़ौफ़ है ।” अर्ज़ की गई : “वोह क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “गुमराह कुन अइम्मा ।”⁽²⁾

﴿8﴾.....जिस के इल्म में तो इज़ाफ़ा होता है लेकिन हिदायत नहीं बढ़ती उस की **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से दूरी ही बढ़ती है ।⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “कब तक तुम रात में चलने वालों के लिये रास्ते साफ़ करते रहोगे और खुद हैरत ज़दा लोगों के साथ खड़े रहोगे ।”⁽⁴⁾

मज़क़ूरा अह्दादीष से षाबित होता है कि इल्म का ख़तरा बहुत ज़ियादा है, क्योंकि अलिम या तो दाइमी हलाकत में मुब्तला हो जाता है या दाइमी सअदत पा जाता है और इल्म में ग़ौरो ख़ौज़ करने से अगर वोह सअदत न पाए तो सलामत भी नहीं रहता ।

आफ़ते इल्म के मुतअल्लिक नव अक़वाले बुजुर्गाने दीन

﴿1﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने फ़रमाया : “मुझे इस उम्मत पर सब से ज़ियादा ख़ौफ़ साहिबे इल्म मुनाफ़िक़ का है ।” लोगों ने अर्ज़ की : “साहिबे इल्म मुनाफ़िक़ कैसे हो सकता है ?” फ़रमाया : “ज़बान का अलिम होगा जब कि दिल और अमल का जाहिल ।”⁽⁵⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَوْى** ने फ़रमाया : “उन लोगों में से न होना जिन्होंने ने उ-लमा से इल्म और हुकमा से नर्म इशारों वाली गुफ़्तगू को तो हासिल कर लिया मगर अमल में जाहिलों की तरह रहे ।”

①.....سنن ابن ماجه، المقدمة، باب من سئل عن علم فكتمه، الحديث: ٢٦٥، ج ١، ص ١٤٢ -

العلل المتناهية لابن الجوزي، كتاب العلم، باب اثم من سئل عن علم، الحديث: ١٢٠، ج ١، ص ١٠٢ -

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابى ذر الغفارى، الحديث: ٢١٣٥٤-٢١٣٥٥، ج ٨، ص ٦٤ -

③.....المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث: ١٠٤٨، ص ٢٠٤ -

المجالسة وجواهر العلم، الجزء العاشر، الحديث: ١٢٨٤، ج ٢، ص ٢٦ -

④.....صفة الصفوة، محمد بن صبيح بن السماك: ٢٥٥، ج ٣، ص ١١٥ -

⑤.....الاحاديث المختارة، ابو عثمان عبدالرحمن عن عمر رضى الله عنه، الحديث: ٢٣٦، ج ١، ص ٣٢٢ -

المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عمر بن الخطاب، الحديث: ٣١٠، ج ١، ص ١٠١ -

﴿3﴾.....एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खिदमत में अर्ज़ की : “मैं इल्म हासिल करना चाहता हूँ लेकिन डरता हूँ कि इसे ज़ाएअ कर बैठूंगा।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “इल्म को ज़ाएअ करने के लिये इसे छोड़ देना ही काफी है।”⁽¹⁾

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन उतबा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से किसी ने पूछा : “लोगों में सब से ज़ियादा नदामत व शर्मिन्दगी किसे होगी ?” फ़रमाया : “दुनिया में उसे जो किसी नाशुक्रे से भलाई करता है और मौत के वक़्त गुनहगार अ़लिम को।”⁽²⁾

﴿5﴾.....नहूव और लुग़त के इमाम हज़रते सय्यिदुना इमाम ख़लील बिन अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الصَّمَد ने फ़रमाया : “आदमी चार किस्म के होते हैं :

- (1)....जो इल्म रखता है और जानता है कि उसे इल्म है, वोह अ़लिम है उस की इत्तिबाअ करो।
- (2)....जो इल्म रखता है मगर येह नहीं जानता कि उसे इल्म है ऐसा शख्स सो रहा है उसे जगा दो।
- (3)....जिसे इल्म नहीं और वोह जानता है कि उस के पास इल्म नहीं, ऐसा शख्स हिदायत का तालिब है उसे हिदायत दो।
- (4)....वोह शख्स जिस के पास इल्म नहीं और उसे मा'लूम भी नहीं कि उस के पास इल्म नहीं, ऐसा शख्स जाहिल है उसे छोड़ दो।”⁽³⁾

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान शौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : “इल्म अमल को पुकारता है वोह सुन ले तो ठीक वरना इल्म चला जाता है।”⁽⁴⁾

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “बन्दा उस वक़्त तक अ़लिम रहता है जब तक इल्म हासिल करता है और जब येह समझ ले कि वोह अ़लिम बन चुका है तो वोह जाहिल होता है।”⁽⁵⁾

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अ़याज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “मुझे तीन तरह के लोगों पर रहम आता है :

①.....تاریخ مدینة دمشق لابن عساکر، ابوهريرة الدوسی ۸۸۹ھ، ج ۶، ص ۳۶۸۔

②.....المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب الرابع فی العلم والادب.....الخ، ج ۱، ص ۴۱۔

③.....عیون الاخبار للدينوري، کتاب العلم والبيان، ج ۲، ص ۱۴۳۔

④.....جامع بیان العلم وفضله، باب جامع القول فی العمل بالعلم، ص ۲۵۸۔

⑤.....المجالسة وجواهر العلم، الجزء الثاني، الحديث: ۳۰۷، ج ۱، ص ۱۶۳۔

(1)....किसी कौम का मुअज्जज शख्स जो ज़लील हो जाए ।

(2)....किसी कौम का मालदार शख्स जो मोहताज हो ।

(3)....उस अलम पर जिस के साथ दुन्या खेलती है ।”(1)

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “उ-लमा की सज़ा दिल का मुर्दा हो जाना है और दिल का मुर्दा होना येह है कि आखिरत के अमल के बदले दुन्या तलब की जाए ।”(2)

फिर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने येह अशआर पढ़े :

عَجِبْتُ لِمُبْتَاعِ الضَّلَالَةِ بِالْهُدَى وَمَنْ يَشْتَرِي دُنْيَاهُ بِالْإِيمَانِ أَعْجَبُ
وَأَعْجَبُ مِنْ هَذَيْنِ مَنْ بَاعَ دِينَهُ بِدُنْيَا سِوَاهُ فَهُوَ مِنْ ذَيْنِ أَعْجَبُ

तर्जमा : (1) मुझे तअज्जुब है उस शख्स पर जो हिदायत के बदले गुमराही खरीदता है और जो दीन के बदले दुन्या खरीदता है वोह उस से भी ज़ियादा अजीब है ।

(2) और उन दोनों से ज़ियादा तअज्जुब उस पर है जो किसी और की दुन्या संवारने के लिये अपना दीन बेचता है, वोह इन दोनों से ज़ियादा अजीब है ।

बे अमल अलम का अन्जाम :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रउफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अलम को सख़्त अज़ाब दिया जाएगा, इस के अज़ाब की शिद्दत को बड़ा समझते हुए जहन्नमी इस के पास आएंगे ।”(3)

इस से बद अमल अलम मुराद है ।

हज़रते सय्यिदुना उसामा बिन जैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि मैं ने हुज़ूर सय्यिदे अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना कि क़ियामत के दिन अलम को लाया जाएगा और उसे आग में डाला जाएगा जिस से उस की आंतें बाहर आ जाएंगी वोह इन के गिर्द ऐसे चक्कर लगाएगा जैसे गधा चक्की के गिर्द चक्कर लगाता है, जहन्नमी उस

①.....المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، الحديث: ٨٩، ص ٤٠

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى نشر العلم، الحديث: ١٨٣٤، ج ٢، ص ٢٩٦

③.....صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، باب عقوبة من يأمر بالمعروف.....الخ، الحديث: ٢٩٨٩، ص ١٥٩٥

के पास आएंगे और पूछेंगे : “तुझे क्या हुवा ?” वोह कहेगा : “मैं नेकी का हुक्म देता था मगर खुद अमल नहीं करता था, बुराई से मन्अ करता था मगर खुद इस का इत्तिकाब करता था।”⁽¹⁾

अल्लिम की नाफरमानी पर उसे दुगना अज़ाब महज़ इस वजह से दिया जाएगा कि वोह इल्म होने के बा वुजूद मा'सिय्यत में मुब्तला हुवा। इसी वजह से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फरमाया :

إِنَّ السُّفْهَىٰ فِي الدَّرَكِ الْأَسْفَلِ مِنَ
النَّارِ ۚ (پ ۵، النساء: ۱۳۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सब से नीचे तबके में हैं।

इस लिये कि इन्होंने ने जानने के बा'द इन्कार किया और यहूदियों को ईसाइयों से बद तर करार दिया हालांकि (अकषर) यहूद ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये अवलाद षाबित नहीं की और न उन्होंने ने येह कहा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तीन खुदाओं में से तीसरा है लेकिन इन को बदतरीन करार देने की वजह सिर्फ़ येह है कि वोह जानने के बा'द मुन्किर हुए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फरमाता है :

يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ ۚ
(پ ۲، البقرة: ۱۲۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह इस नबी को ऐसा पहचानते हैं जैसे आदमी अपने बेटों को पहचानता है।

एक मक़ाम पर फरमाया :

فَلَبَّاجَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ
اللّٰهِ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝ (پ ۱، البقرة: ۸۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो **अल्लाह** की ला'नत मुन्किरों पर।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बलअम बिन बाऊरा का वाकिअ बयान करते हुए इरशाद फरमाया :

وَأْتَلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا
فَأَسْلَمَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ
مِنَ الْغَوِينَ ۝ (پ ۹، الاعراف: ۱۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और ऐ महबूब ! उन्हें उस का अहवाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह इन से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया।

यहां तक कि फ़रमाया :

فَسَلِّهِ كَسَلِ الْكَلْبِ إِنَّ تَحِيلَ عَلَيْهِ
يَلْهَثُ أَوْ تَشْرُكُهُ يَلْهَثُ^ط (پ ۹، الاعراف: ۷۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो उस का हाल कुत्ते की तरह है तू उस पर हम्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले ।

येही हाल बद अमल अलमि का है । बलअम को किताबुल्लाह का इल्म दिया गया तो वोह ख़्वाहिशात की तरफ़ माइल हो गया । चुनान्वे, उसे कुत्ते से तशबीह दी गई या'नी उसे हिक्मत मिले या न मिले वोह ख़्वाहिशात की तरफ़ हांपता है ।

बुरे उ-लमा की मिषाल :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “बुरे उ-लमा की मिषाल उस चट्टान की तरह है जो नहर के कनारे वाकेअ हो न खुद पानी पिये और न पानी को खेती तक जाने दे । बुरे उ-लमा की मिषाल बैतुल ख़ला की उस नाली की तरह है जिस के ज़ाहिर पर तो चूना किया हुवा हो जब कि बातिन गन्दा और नापाक हो और बुरे उ-लमा की मिषाल क़ब्रों की तरह है जिन का ज़ाहिर तो पुख़्ता हो मगर अन्दर मुर्दे की हड्डियां हों ।”^(१)

इन अह्दादीष और आषार से येह बात वाजेह होती है कि क़ियामत के दिन दुन्यादार अलमि का हाल दूसरे लोगों से घटिया होगा और उसे जाहिल से भी सख़्त अज़ाब होगा जब कि कामयाब व मुक़र्रब लोग उ-लमाए आख़िरत हैं । इन की कुछ निशानियां हैं जो दर्जे ज़ेल हैं ।

❦.....अहले बैत से हुस्ने सुलूक.....❦

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रमَ اللّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم صَلَّی اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक ने इरशाद फ़रमाया : “जो मेरे अहले बैत में से किसी के साथ अच्छा सुलूक करेगा मैं रोज़े क़ियामत इस का सिला उसे अ़ता फ़रमाऊंगा ।” (الجامع الصغير للسيوطی، الحديث: ۸۸۲، ص ۵۳۳)

❶.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۴۴۔

فیض القدير للمناوی، حرف الشین، تحت الحديث: ۲۸۶۴، ج ۲، ص ۲۰۶۔

दूसरी फ़स्ल :

उ-लमाउ आखिरत की 12 निशानियां

﴿1﴾.....उ-लमाए आखिरत की निशानियों में से एक यह है कि अलिम अपने इल्म से दुन्या तलब न करे क्यूंकि अलिम का सब से कम दर्जा यह है कि वोह दुन्या को हकीर, घटिया, गदला और नापाएदार होने को जाने नीज़ आखिरत के अज़ीम होने, हमेशा रहने, इस की ने'मतों के ख़ालिस होने और आखिरत की सलतनत के बड़ा होने का इल्म रखता हो और येह जानता हो कि दुन्या और आखिरत एक दूसरे की ज़िद हैं।

दुन्या व आखिरत की मिषाल :

येह दोनों दो सोकनों की तरह हैं अगर एक को राजी रखोगे तो दूसरी को नाराज़ कर बैठोगे। तराज़ू के दो पलड़ों की मानिन्द हैं, एक पलड़ा भारी होगा तो दूसरा हलका होगा। मशरिफ़ व मगरिब की मिषल हैं एक से जितना करीब होंगे दूसरी से उतना दूर हो जाओगे। दो प्यालों की तरह है जिन में से एक भरा हुवा है और दूसरा ख़ाली, भरे हुए प्याले से जिस क़दर दूसरे में डालते जाओगे इसी क़दर भरा हुवा ख़ाली होता जाएगा यहां तक कि जब ख़ाली प्याला भर जाएगा तो भरा हुवा ख़ाली हो जाएगा।

पस जो शख्स दुन्या के हकीर होने, गदला होने और इस की लज़्ज़तों के इस की तक्लीफ़ों के साथ मिले होने को न जाने और उसे येह मा'लूम न हो कि दुन्या की ख़ालिस ने'मतें जल्द ख़त्म हो जाती हैं तो उस की अक्ल ख़राब है क्यूंकि मुशाहदा और तजरिबा उस की तरफ़ रहनुमाई करता है। लिहाज़ा वोह शख्स उ-लमा में कैसे शुमार हो सकता है जिसे अक्ल नहीं? और जो आखिरत के मुआमले की अज़मत और इस के दवाम का इल्म नहीं रखता वोह तो काफ़िर है। उस का ईमान छीन लिया गया है। लिहाज़ा जिस के पास ईमान ही नहीं वोह उ-लमा में से कैसे हो सकता है? और जो शख्स येह नहीं जानता कि दुन्या आखिरत की ज़िद है इन्हें जम्अ करना एक ऐसी लालच है जिस का कोई फ़ाइदा नहीं वोह तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की शरीअतों से नावाक़िफ़ है बल्कि वोह तो पूरे कुरआन का मुन्किर है। उस का शुमार गुरौहे उ-लमा में कैसे हो सकता है? और जो येह सब कुछ जानते हुए आखिरत को दुन्या पर तरजीह न दे वोह शैतान का कैदी है। उस की ख़्वाहिश ने उसे बरबाद कर दिया और उस पर उस की बद बख़्ती ग़ालिब आ गई। लिहाज़ा इस दर्जे का आदमी उ-लमा के जुमरे में कैसे आ सकता है?

दुन्यादार अलम की कम से कम सजा :

हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वाकिअत में है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अलम मेरी महबूत पर अपनी ख़्वाहिश को तरजीह देता है मैं उसे कम से कम सजा यह देता हूँ कि उसे अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से महरूम कर देता हूँ। ऐ दावूद ! मेरे मुतअल्लिक किसी ऐसे अलम से न पूछना जिसे दुन्या ने नशे में डाल दिया हो, वोह तुम्हें मेरी महबूत के रास्ते से रोक देगा, येह लोग मेरे बन्दों का रास्ता काटने वाले हैं। ऐ दावूद ! जब तुम मेरे किसी तालिब को देखो तो उस के ख़ादिम बन जाओ। ऐ दावूद ! जो किसी भागे हुए को मेरी बारगाह में ले कर आता है मैं उसे बा ख़बर लिख देता हूँ और जिसे मैं बा ख़बर लिख दूँ उसे कभी अज़ाब न दूँगा।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْى ने फ़रमाया : “उ-लमा की सजा दिल का मुर्दा हो जाना है और दिल का मुर्दा होना येह है कि आख़िरत के अमल के बदले दुन्या तलब की जाए।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुअज़ राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي ने फ़रमाया : इल्मो हिक्मत का नूर उसी वक़्त रुख़्सत होता है जब इन्हें तलबे दुन्या का ज़रीआ बनाया जाए।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى ने फ़रमाया : “जब तुम किसी अलम को मालदारों के पास आता जाता देखो तो जान लो कि वोह चोर है।”⁽⁴⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जब तुम किसी अलम को दुन्या से महबूत करने वाला पाओ तो उसे अपने दीन के मुआमले में मश्कूक जानो क्यूंकि हर महबूत करने वाला उस चीज़ में ग़ौरो फ़िक्र करता है जिस से वोह महबूत करता है।”⁽⁵⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٢-

②.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى نشر العلم، الحديث: ١٨٣٤، ج ٢، ص ٢٩٦-

③.....موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب ذم الدنيا، الحديث: ٢٤٦، ج ٥، ص ١٩٣-

④.....مختصر منهاج القاصدين، الربع الاول، ج ١، ص ٦١-

⑤.....جامع بيان العلم وفضله، باب ذم الفاجر من العلماء.....الخ، ص ٢٢٢-

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار ने फ़रमाया : मैं ने एक साबिका किताब में पढ़ा कि **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “जो अलिम दुन्या से महब्वत करता है मैं उसे सब से कम सज़ा येह देता हूँ कि उस के दिल से अपनी मुनाजात की लज़्ज़त निकाल देता हूँ।”⁽¹⁾

इल्म नूर और गुनाह तारीकी है :

एक शख्स ने अपने भाई को लिखा कि “बेशक तुम्हें **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से इल्म अता किया गया है। लिहाज़ा गुनाहों की तारीकी से इल्म के नूर को बुझा न देना कि उस दिन अन्धेरे में रह जाओ जिस दिन इल्म वाले अपने इल्म के नूर में दौड़ेंगे।”⁽²⁾

ऐ अस्हाबे इल्म ! शरीअते मुहम्मदिया कहाँ है ?

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुआज़ राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي उ-लमाए दुन्या से फ़रमाया करते थे : “ऐ अस्हाबे इल्म ! तुम्हारे महल्लाते कैसरा (या'नी शाहे रूम कैसर के महल्लात की तरह) हैं। तुम्हारे घर कस्रा (या'नी शाहे ईरान) के घरों जैसे हैं, तुम्हारे कपड़े ताहिरी (या'नी अब्दुल्लाह बिन ताहिर वज़ीर के कपड़ों की मिष्ल) हैं, तुम्हारे मोजे जालूती (या'नी जाबिर बादशाह जालूत के मोजों की मानिन्द), सुवारियां कारूनी (या'नी कारून की सुवारियों जैसी) और बरतन फिरऔनी (या'नी फिरऔन के बरतनों जैसे) हैं, तुम्हारे गुनाह दौरे जाहिलियत के अफ़आल जैसे और तुम्हारे मज़ाहिब शैतानी हैं तो फिर शरीअते मुहम्मदिया कहाँ है ?”⁽³⁾

किसी शाइर ने क्या ख़ूब कहा :

وَرَأَى الشَّاةَ يَحْمِي الذُّبَّ عَنْهَا فَكَيْفَ إِذَا الرُّعَاةُ لَهَا ذُنَابُ

तर्जमा : बकरियों का चरवाहा भैड़िये से बकरियों की हिफ़ाज़त करता है तो उस वक़्त क्या हाल होगा जब चरवाहे खुद ही भैड़िये बन जाएंगे।

एक दूसरे शाइर ने कहा :

يَا مَعْشَرَ الْعُلَمَاءِ! يَا مِلَّةَ الْبِلْدَا! مَا يَصْلُحُ الْمِلَّةُ إِذَا الْوِلْدُ فَسَدَ

तर्जमा : ऐ उ-लमा के गुरौह ! ऐ शहरों के नमक ! जब नमक खुद ही ख़राब हो जाएगा तो वोह किसी को कैसे ठीक करेगा।

①.....مرقاة المفاتيح، كتاب الدعوات، تحت الحديث: ٢٢٨٨، ج ٥، ص ٨٤۔

②.....فيض القدير، حرف الهمزة، تحت الحديث: ١١٣، ج ١، ص ١٥٥۔

③.....حياة الحيوان الكبرى، باب الذال العجمة، الذئب، ج ١، ص ٥٠٣، بتغير۔

मा'रिफ़ते इलाही से महश्मी का सबब :

एक अरिफ़ से पूछा गया कि “जिस की आखों की ठन्डक गुनाह हों क्या वोह मा'रिफ़ते इलाही हासिल नहीं कर सकता ?” फ़रमाया : “मुझे इस बात में कोई शक नहीं है कि जो दुनिया को आखिरत पर तरजीह देता है वोह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त नहीं रखता जब कि येह उस शख्स से (कि जिस की आखों की ठन्डक गुनाह हों) बहुत कम है।”

येह मत समझना कि उ-लमाए आखिरत के साथ मिलने के लिये सिर्फ़ तर्के माल काफी है बल्कि मक़ामो मर्तबा माल से ज़ियादा नुक़सान देह है। येही वजह है कि हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने फ़रमाया : हद्दषना दुन्या के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है। लिहाज़ा जब तुम किसी शख्स को हद्दषना कहते सुनो तो जान लो कि वोह कहता है : “मुझे जगह दो।”(1)

हज़रते सय्यिदुना बिशर हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي ने 10 से ज़ियादा किताबों के बस्ते और टोकरे दफ़न कर दिये थे और फ़रमाते थे : “मुझे ख़्वाहिश है कि मैं हदीष बयान करूँ और जब मुझे हदीष बयान करने की ख़्वाहिश न रहेगी तो मैं ज़रूर हदीष बयान करूँगा।”(2)

आप और आप के इलावा दूसरे बुजुर्गों का फ़रमान है कि “जब तुझे हदीष बयान करने की ख़्वाहिश हो तो ख़ामोश रह और जब ख़्वाहिश न रहे तब हदीष बयान कर।”(3)

येह इस लिये कि फ़ाइदा पहुंचाने और ता'लीम के मन्सब की लज़ज़त दुन्या की हर लज़ज़त से बढ़ कर है तो जिस ने इस मुआमले में अपनी ख़्वाहिश को पूरा किया वोह दुन्या के तलबगारों में से है। इसी लिये हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “हदीष बयान करने का फ़ितना माल और बाल बच्चों के फ़ितने से सख़्त तर है।”(4)

और इस फ़ितने का ख़ौफ़ क्यूँ न किया जाए जब कि सय्यिदुल मुरसलीन, ख़ातमुन्नबिय्यीन, रहमतुल्लिल आलमीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाया गया :

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج 1، ص 233-

②.....المرجع السابق، ص 268- ③.....المرجع السابق، بتغير-

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج 1، ص 268، بتغير-

حلیة الاولیاء، عبدالرحمن بن مہدی، الحدیث: 2854، ج 9، ص 6، قول عبدالرحمن بن مہدی، بتغير-

وَلَوْلَا أَنْ شَبَّتَكَ لَقَدْ كُنْتَ تَرَكَنْ
إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ﴿٤٧﴾ (پ ۵، بنی اسرائیل: ۷۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और अगर हम तुम्हें
षाबित क़दम न रखते तो क़रीब था कि तुम उन की
तरफ़ कुछ थोड़ा सा झुकते ।

इल्म दुन्या और अमल आखिरत है :

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَّى ने फ़रमाया : “इल्म सारे
का सारा दुन्या है और इस पर अमल आखिरत है और इख़लास के बिग़ैर तमाम आ'माल बेकार
हैं ।” (1)

नीज़ येह भी फ़रमाया कि “तमाम लोग मुर्दा हैं सिवाए इ-लमा के और इ-लमा सब
नशे में हैं सिवाए अमल करने वालों के और अमल करने वाले सब धोके में हैं सिवाए इख़लास
वालों के और जो मुख़्लिस हैं उन्हें ख़ौफ़ लाहि़क़ है कि न मा'लूम उन का ख़ातिमा कैसा होगा ।” (2)

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ التُّورَان ने फ़रमाया : “जब आदमी हदीष
त़लब करता है या शादी करता है या त़लबे मुआश के लिये सफ़र करता है तो वोह दुन्या की तरफ़
माइल हो जाता है ।” (3)

इस से आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की मुराद अ़ली सनदेन हैं या वोह हदीष त़लब करना जिस
की त़लब आखिरत में ज़रूरत नहीं ।

वोह अ़लिम नहीं :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने इरशाद फ़रमाया : “वोह
शख़्स अहले इल्म में से कैसे हो सकता है जिस का सफ़र आखिरत की तरफ़ हो जब कि वोह
दुन्या के रास्तों की तरफ़ मुतवज्जेह हो और उस का शुमार इ-लमा में कैसे हो सकता है जो
इस लिये इल्म नहीं सीखता कि इस पर अमल करे बल्कि दूसरों को बताने के लिये इल्म
हासिल करता है ।” (4)

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۷۱، بتغییر قلیل۔

②.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى اخلاص العمل.....الخ، الحديث: ۶۸۶۸، ج ۵، ص ۳۴۵۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۶۹، بتغییر۔

④.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى نشر العلم، الحديث: ۱۹۱۷، ج ۲، ص ۳۱۳، بتغییر قلیل۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر بيان تفضيل علوم.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۹۔

हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन कैसान बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मैं ऐसे कई मशाइख़े किराम اللَّهُ السَّلَام से मिला जो बदकार अलिमे हदीष से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की पनाह मांगते थे ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सरदार मक्काए मुकरमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो उस इल्म को हासिल करे जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा तलाश की जाती है और उस का मक्सद दुन्या का माल हासिल करना हो तो वोह क़ियामत के दिन जन्नत की खुशबू नहीं पाएगा ।”⁽²⁾

उ-लमाए दुन्या और उ-लमाए आखिरत के अवसाफ़

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने बुरे उ-लमा का येह वस्फ़ बयान किया कि वोह इल्म के बदले दुन्या कमाते हैं जब कि उ-लमाए आखिरत को वस्फ़े खुशूअ व जोहद से मुत्तसिफ़ फ़रमाया । चुनान्वे, उ-लमाए दुन्या के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَإِذَا أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ط (प ३, अल عمران: ७५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो जब **अल्लाह** ने अहद लिया उन से जिन्हें किताब अता फ़रमाई कि तुम ज़रूर इसे लोगों से बयान कर देना और न छुपाना तो उन्होंने ने इसे अपनी पीठ के पीछे फैंक दिया और इस के बदले ज़लील दाम हासिल किये ।

उ-लमाए आखिरत के बारे में इरशाद फ़रमाया :

وَأَنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَنْ يُوْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خُشْعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ط أُولَئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط (प ३, अल عمران: ९९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक कुछ किताबी ऐसे हैं कि **अल्लाह** पर ईमान लाते हैं और उस पर जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो उन की तरफ़ उतरा उन के दिल **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए **अल्लाह** की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते येह वोह हैं, जिन का षवाब उन के रब्ब के पास है ।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج १، ص २२३-

②.....سنن ابى داود، كتاب العلم، باب فى طلب العلم لغير الله، الحديث: ३६१३، ج ३، ص ५१، بتغير-

बा'ज बुजुर्गों ने फ़रमाया : उ-लमा (बरोजे क़ियामत) अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के गुरौह में उठाए जाएंगे और काज़ी बादशाहों के जुमरे में।⁽¹⁾ और हर वोह फ़कीह काज़ी के मा'ना में शामिल है जो अपने इल्म से तलबे दुन्या का इरादा करता है।

दुन्या की ख़ातिर इल्मे दीन सीखने वालों का अन्जाम :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने एक नबी की तरफ़ वह्य फ़रमाई कि जो लोग दीन के इलावा (किसी और मक्सद) के लिये फ़िक़ह सीखते हैं, अमल के इलावा के लिये इल्म हासिल करते हैं, अमले आख़िरत के बदले दुन्या तलब करते हैं, लोगों को दिखाने के लिये ऊनी लिबास पहनते हैं, उन के दिल भेड़ियों के दिलों जैसे हैं, उन की ज़बानें शहद से ज़ियादा मिठी और दिल ऐलवे से ज़ियादा कड़वे हैं, वोह मुझे धोका देना चाहते और मुझ से इस्तिहज़ा करते हैं, उन से फ़रमा दो कि मैं ज़रूर उन्हें ऐसे फ़ितने में डालूंगा जो बुर्दबार को भी परेशान कर छोड़े।⁽²⁾

आलिम दो तरह के हैं :

हज़रते सय्यिदुना ज़ह़ाक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : इस उम्मत के उ-लमा दो किस्म के हैं एक वोह जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इल्म अता किया तो उस ने इसे लोगों पर खर्च किया और इस पर कोई उजरत ली न ही इस के बदले कोई कीमत ली, येही वोह खुश नसीब है जिस के लिये आस्मान के परन्दे, पानी की मछलियां, ज़मीन के चौपाए और लिखने वाले मुअज़्ज़ज फ़िरिश्ते दुआए रहमत करते हैं, वोह क़ियामत के दिन बारगाहे इलाही में एक मुअज़्ज़ज सरदार हो कर आएगा यहां तक कि मुरसलीन की रफ़ाक़त इख़्तियार करेगा और दूसरा वोह है कि जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दुन्या में इल्म से नवाज़ा तो उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों के सामने इस इल्म को बयान करने में बुख़ल से काम लिया, इस पर लालच की और इस के बदले कीमत वुसूल

①.....كشف الخفاء، حرف الياء التحتانية، الحديث: ٣٢٢٨، ج ٢، ص ٣٦٠-

②.....المدخل، فصل في العالم وكيفية نيته.....الخ، ج ١، ص ٥٠، "لافتح" بدله "لاتيح"۔

الفقيه والمتفقه، ماجاء في ورع المفتي وتحفظه، الحديث: ١٠٦٨، ج ٢، ص ٣٢٢، بتغير قليل۔

की, यह शख्स क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि इसे आग की लगाम डाली गई होगी। फिर सारी मख़्लूक के सामने एक पुकारने वाला पुकारेगा : “येह फुलां इब्ने फुलां है। इसे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने दुनिया में इल्म अता फ़रमाया था लेकिन इस ने बन्दों पर उस इल्म को बयान करने में बुख़ल किया, उस पर लालच की और उस के बदले कीमत वसूल की।” फिर उसे अज़ाब दिया जाएगा यहां तक कि सब लोगों का हिसाब ख़त्म हो जाए।⁽¹⁾

दीन के बदले दुनिया तलब करने का अन्जाम :

इस से ज़ियादा सख़्त यह रिवायत है कि एक शख्स हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत किया करता था उस ने यह कहना शुरू कर दिया कि मुझे हज़रते सय्यिदुना मूसा सफ़िय्युल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बयान किया। मुझे हज़रते सय्यिदुना मूसा नजिय्युल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बताया। मुझे हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ख़बर दी। यहां तक कि वोह मालदार हो गया और उस के पास काफ़ी माल आ गया। जब हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उसे न पाया तो उस के बारे में पूछने लगे लेकिन उस की कोई ख़बर न मिली हत्ता कि एक दिन आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत में एक शख्स हज़िर हुवा उस के हाथ में एक खिन्ज़ीर था जिस के गले में सियाह रस्सी थी। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने उस से दरयाफ़्त फ़रमाया : “क्या तुम फुलां को जानते हो?” उस ने कहा : “जी हां ! येह खिन्ज़ीर वोही शख्स है।” आप **عَلَيْهِ السَّلَام** ने **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में अर्ज़ की “इसे इस की साबिका हालत पर लौटा दे ताकि मैं इस से इस हालत का सबब पूछूं।” **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने आप **عَلَيْهِ السَّلَام** की तरफ़ वहूय फ़रमाई कि “अगर तुम मुझ से उन कलिमात के साथ दुआ करो जिन के साथ आदम और दूसरे अम्बिया ने की थी जब भी क़बूल न करूंगा लेकिन येह बता देता हूं कि इस के साथ येह मुआमला क्यूं किया ? इस लिये कि येह दीन के बदले दुनिया कमाता था।”⁽²⁾

उ-लमा और जहन्नम के तबक़ात :

इस से भी ज़ियादा सख़्त यह रिवायत है जो हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मौकूफ़न और मरफूअन दोनों तरह मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “अलिम के फ़ितने में से

①.....المعجم الاوسط، من اسمه محمد، الحديث: ٤١٨٤، ج ٥، ص ٢٣٤، بتغير۔

②.....المدخل، فصل في العالم وكيفية نيته.....الخ، ج ١، ص ٦٢۔

है कि उसे तक्ररीर सुनने से तक्ररीर करना ज़ियादा पसन्द हो हालांकि तक्ररीर करने में बनावट और मुबालगा हो जाता है और तक्ररीर करने वाला ग़लती से महफूज़ नहीं जब कि ख़ामोशी में सलामती और इल्म है। बा'ज़ उ-लमा अपने इल्म को जम्अ रखते हैं वोह नहीं चाहते कि इल्म दूसरों के पास पाया जाए ऐसे लोग जहन्नम के पहले तबके में होंगे। बा'ज़ उ-लमा वोह हैं जो अपने इल्म में बादशाह की तरह हैं कि अगर उन के इल्म में से किसी चीज़ के मुतअल्लिक उन पर ए'तिराज़ किया जाए या उन के हक़ में कमी की जाए तो वोह गुस्से में आ जाते हैं ऐसे उ-लमा जहन्नम के दूसरे तबके में होंगे। कुछ आलिम ऐसे होते हैं जो अपना इल्म और उम्दा गुफ़्तगू मुअज़्ज़ज़ और मालदार लोगों को ही पेश करते हैं और ज़रूरत मन्दों को इस का अहल नहीं समझते ऐसे उ-लमा जहन्नम के तीसरे तबके में होंगे। बा'ज़ उ-लमा अपने आप को फ़तवा देने के लिये मुक़र्रर कर लेते हैं और ग़लत फ़तवा देते हैं, **अल्लाह** तकल्लुफ़ करने वालों को नापसन्द फ़रमाता है ऐसे उ-लमा जहन्नम के चौथे तबके में होंगे बा'ज़ उ-लमा दूसरों के सामने यहूदो नसारा का कलाम बयान करते हैं ताकि इस वजह से उन के इल्म की क़द्र हो ऐसे उ-लमा जहन्नम के पांचवें तबके में होंगे। कुछ उ-लमा अपने इल्म को लोगों में शोहरत, फ़ज़ीलत और मुरुव्वत का ज़रीआ बनाते हैं वोह जहन्नम के छठे तबके में जाएंगे और बा'ज़ उ-लमा ऐसे हैं कि जिन पर खुद पसन्दी और तकब्बुर की कैफ़ियत त़ारी रहती है, अगर वा'ज़ करें तो सख़्ती करते हैं मगर जब उन्हें नसीहत की जाए तो नाक चढ़ाते हैं, वोह जहन्नम के सातवें तबके में होंगे। लिहाज़ा ऐ भाई ! ख़ामोशी को लाज़िम कर लो इस के ज़रीए शैतान पर ग़ालिब आ जाओगे, बिगैर तअज्जुब के मत हंसो और बिगैर ज़रूरत के मत चलो।” (1)

एक रिवायत में है कि “किसी बन्दे की ता'रीफ़ इतनी अ़ाम होती है कि मशरिक़ व मग़रिब के दरमियान को भर देती है जब कि **अल्लाह** के हां उस की हैषियत मच्छर के पर बराबर भी नहीं होती।” (2)

मरवी है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي मजलिस (वा'ज) से फ़ारिग़ हुए तो एक ख़ुरासानी शख़्स ने एक थैला आप की ख़िदमत में पेश किया जिस

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع في آداب العلم والمتعلم، فصل في فضل الصمت وحمده، الحديث: ٢٠٦، ص ١٩١۔

تنزيه الشريعة، كتاب العلم، الفصل الثاني، الحديث: ٥٠، ج ١، ص ٢٦٩۔

اللاّلى المصنوعة، كتاب العلم، ج ١، ص ٢٠٣، [قال فيه: باطل مسنداً وموقفاً]۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٩۔

تذكرة الموضوعات، باب الاخلاق المحمود.....الخ، ص ١٨٩، [قال فيه: لم يوجد لآكن في الصحيحين معناه]۔

में 5 हजार दिरहम और 10 बारीक कपड़े थे और अर्ज की : “ऐ अबू सईद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيدُ येह दिरहम खर्च के लिये और कपड़े पहनने के लिये हैं।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे अफ़ियत दे ! येह उठा लो और अपने पास रखो हमे इन की हाज़त नहीं और जो मेरी इस मजलिस जैसी मजलिस काइम करेगा फिर लोगों से इस तरह का नज़राना लेगा वोह क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि उस का (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं होगा।”⁽¹⁾

किस अलम की शोहबत इश्तियाज़ की जाए ?

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मौकूफ़न और मरफूअन मरवी है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हर अलम के पास न बैठो सिर्फ़ उसी अलम के पास बैठो जो तुम्हें पांच ख़स्तों से पांच की तरफ़ बुलाए : (1) शक से यकीन की तरफ़ (2) रियाकारी से इख़्लास की तरफ़ (3) दुन्या की रग़बत से बे रग़बती की तरफ़ (4) तकब्बुर से अजिज़ी की तरफ़ और (5) अदावत से खैरख़्वाही की तरफ़।”⁽²⁾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَيْلَتْ لَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ ۖ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ۝^(٧٠)
قَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا

(پ ۲۰، القصص: ۷۹، ۸۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराइश में बोले वोह जो दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा कारून को मिला बेशक उस का बड़ा नसीब है और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी **अल्लाह** का षवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।

पस अहले इल्म ने जान लिया कि आख़िरत को दुन्या पर तरजीह देनी चाहिये।

﴿2﴾.....उ-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक निशानी येह है कि अलम का फ़ैल उस के क़ौल की मुख़ालफ़त न करे बल्कि वोह उस वक़्त तक किसी चीज़ का हुक्म न दे जब तक पहले खुद इस पर अमल न कर ले।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۲۹، بتغير۔

②.....حلیة الاولیاء، شقیق البلیخی: ۳۹۵، الحدیث: ۱۱۴۱۷، ج ۸، ص ۷۵۔

चन्द फ़रामीने बारी तअ़ला मुलाहज़ा हों :

﴿1﴾

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ

(پ ۱، البقرة: ۴۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो ।

﴿2﴾

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا

تَفْعَلُونَ ﴿۲﴾ (پ ۲۸، الصف: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कितनी सख़्त नापसन्द है **अल्लाह** को वोह बात कि वोह कहे जो न करो ।

﴿3﴾

हज़रते सय्यिदुना शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام का किस्सा बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया :

وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفُكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَكُمْ

عَنْهُ ط (پ ۲، هود: ۸۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मैं नहीं चाहता हूँ कि जिस बात से तुम्हें मन्ज़ करता हूँ आप उस का ख़िलाफ़ करने लगों ।

﴿4﴾

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيَعْلَمَ اللَّهُ

(پ ۳، البقرة: ۲۸۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है ।

﴿5﴾

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا

(پ ۲، البقرة: ۱۹۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो ।

﴿6﴾

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْعَوْا

(پ ۷، المائدة: ۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो और हुक्म सुनो ।

अल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام रूहुल्लाह ईसा रूहुल्लाह ने हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَزَّوَجَلَّ को इरशाद फ़रमाया : “ऐ इब्ने मरयम ! पहले अपने नफ़्स को नसीहत करो अगर वोह मान जाए तो फिर दूसरों को नसीहत करो वरना मुझ से हया करो ।”⁽¹⁾

अल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब ने इरशाद फ़रमाया : मे’राज की रात मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुवा जिन के होंट आग की कैचियों से काटे जा रहे थे । मैं ने उन से पूछा “तुम कौन हो ?” उन्होंने ने जवाब दिया : “हम नेकी का

हुक्म देते थे लेकिन खुद इस पर अमल नहीं करते थे। बुराई से रोकते थे लेकिन खुद इस का इर्तिक़ाब करते थे।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “मेरी उम्मत की हलाकत बदकार अलिम और जाहिल अबिद की वजह से होगी, बद तरीन लोग बुरे उ-लमा और बेहतरीन लोग अच्छे उ-लमा हैं।”⁽²⁾

क़ब्रों की शिकायत :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى बयान करते हैं कि क़ब्रों ने बारगाहे इलाही में कुफ़र के मुर्दा अजसाम की बदबू की शिकायत की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें फ़रमाया कि “बुरे उ-लमा के बातिन तुम्हारे अन्दर मौजूद बदबू से ज़ियादा बदबूदार हैं।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मुझे ये बात पहुंची है कि क़ियामत के दिन फ़ासिक उ-लमा का हिसाब बुत परस्तों से भी पहले होगा।”⁽⁴⁾

सात बार हलाकत :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जो इल्म नहीं रखता उस के लिये एक बार हलाकत है और जो इल्म रखता है मगर अमल नहीं करता उस के लिये सात बार हलाकत है।”⁽⁵⁾

तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गई :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन कुछ जन्नती बा'ज जहन्नमियों को देख कर पूछेंगे : “तुम्हें किस चीज़ ने जहन्नम में डाला हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें तुम्हारे ही अदब सिखाने और ता'लीम देने के तुफ़ैल जन्नत में दाख़िल किया है।” वोह कहेंगे : “हम नेकी का हुक्म करते थे लेकिन खुद अमल नहीं करते थे। बुराई से रोकते थे लेकिन खुद इस का इर्तिक़ाब करते थे।”⁽⁶⁾

①.....الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، ذكر وصف الخطباء الذين.....الخ، الحديث: ٥٣، ج ١، ص ١٣٥، مفهوماً۔

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب ذمّ الفاجر من العلماء.....الخ، الحديث: ٤٢٢، ص ٢٢١۔

③.....المرجع السابق۔ ④.....المرجع السابق، بتغير۔

⑤.....حلية الاولياء، ابوالدرداء، الحديث: ٦٨٣، ج ١، ص ٢٤٠، بتغير قليل۔

⑥.....الزهد لابن المبارك، باب من طلب العلم لعرض في الدنيا، الحديث: ٦٣، ص ٢١، باختصار۔

हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने फ़रमाया : “क़ियामत के दिन सब से ज़ियादा हसरत उस शख्स को होगी जिस ने लोगों को इल्म सिखाया और लोगों ने उस के इल्म पर अलम किया लेकिन उस ने खुद इस पर अमल न किया, लोग तो अमल के सबब नजात पा गए लेकिन वोह हलाक हो गया।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار ने फ़रमाया : “जब आलिम अपने इल्म पर अमल न करे तो उस की नसीहत लोगों के दिलों से ऐसे फिसलती है जैसे साफ़ पथर से पानी का क़तरा फिसल जाता है।”⁽²⁾

शाइर कहता है :

يَا وَاعْظِ النَّاسَ قَدْ أَصْبَحَتْ مَتَهُمَ إِذْ عُبِتَ مِنْهُمْ أُمُورًا أَنْتَ تَأْتِيهَا
أَصْبَحَتْ تَنْصَحُهُمْ بِالْوَعْظِ مُجْتَهِدًا فَلَمْ يُبْقَاتْ لِعَمْرِي أَنْتَ جَانِيهَا
تَعِيبُ دُنْيَا وَنَاسًا رَاغِبِينَ لَهَا وَأَنْتَ أَكْثَرُ مِنْهُمْ رَغْبَةً فِيهَا

तर्जमा : (1) ऐ लोगों को वा'ज़ करने वाले ! तुम तोहमत ज़दा हो क्यूंकि जिन बातों को उन में ऐब बताते हो उन्हें खुद करते हो ।

(2) तुम उन्हें वा'ज़ व नसीहत करने में बड़ी कोशिश करते हो और मुझे मेरी ज़िन्दगी की क़सम ! हलाक करने वाली चीज़ें तुम्हारी तरफ़ आ रही हैं ।

(3) तुम दुनिया और इस में रग़बत रखने वालों को ऐब लगाते हो हालांकि खुद इन से ज़ियादा दुनिया में रग़बत रखते हो ।

एक और शाइर कहता है :

لَا تَنْهَ عَنْ خُلُقٍ وَتَأْتِي مِثْلَهُ عَارٌ عَلَيْكَ إِذْ فَعَلْتَ عَظِيمٌ

तर्जमा : लोगों को ऐसी बात से मन्अ न कर जिसे तू खुद करता है अगर तू ऐसा करे तो येह तेरे लिये बड़ी शर्म की बात है ।

नसीहत आमोज़ इबारात :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم बयान करते हैं कि मक्काए मुक़र्रमा में मेरा गुज़र एक पथर के क़रीब से हुवा उस पर लिखा था : “मुझे पलट कर देखो और इब्रत हासिल करो ।” मैं ने उसे पलट कर देखा तो उस पर लिखा था कि “जिस का तुझे इल्म

①.....تحفة الحبيب على شرح الخطيب، مبحث امّابعد، ج ١، ص ٤١-

②.....الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد محمد بن سيرين، الحديث: ١٨٨٣، ص ٣٢٥-

है उस पर तू अमल नहीं करता फिर जिस का इल्म नहीं उसे जानने की तलब क्यों करता है।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने सम्माक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق ने फ़रमाया : “दूसरों को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की याद दिलाने वाले कितने ही लोग ऐसे हैं जो खुद उसे भूल जाते हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ से डराने वाले कितने ही ऐसे हैं जो खुद उस पर जुरअत करते हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के करीब करने वाले कितने ही ऐसे हैं जो खुद उस से दूर हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की तरफ़ बुलाने वाले कितने ही ऐसे हैं जो खुद उस से भागते हैं और कुरआने पाक की तिलावत करने वाले कितने ही लोग ऐसे हैं जो उस की आयात से अलग रहते हैं।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने फ़रमाया : “हम ने अपनी गुफ़्तगू को फ़सीह किया तो इस में ग़लती न की और अपने आ’माल में ग़लती की तो इन्हें दुरुस्त न किया।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अवजार्इ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “जब फ़साहत व बलाग़त आ जाती है तो खुशूअ व खुजूअ रुख़्सत हो जाता है।”⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन ग़नम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى बयान करते हैं कि मुझे दस सहाबए किराम رَضَوْنَ اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने ख़बर दी कि हम मस्जिदे कुबा में इल्म हासिल करने में मशगूल थे कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे पास तशरीफ़ लाए और इरशाद फ़रमाया : “जो सीखना चाहते हो सीख लो लेकिन येह याद रखो कि जब तक अमल नहीं करोगे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हें अज़्र नहीं देगा।”⁽⁵⁾

इल्म पर अमल न करने वाले की मिषाल :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रुहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “जो इल्म सीखता है और इस पर अमल नहीं करता उस की मिषाल उस औरत की तरह है जो छुप कर

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع القول في العمل بالعلم، ص ۲۵۳۔

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في نشر العلم، الحديث: ۱۹۱۶، ج ۲، ص ۳۱۳-۳۱۴، مختصراً۔

التفسير الكبير للرازي، سورة البقرة، تحت الآية: ۳۱، ج ۱، ص ۴۰۲۔

③.....المجالسة وجواهر العلم، الجزء السادس، الحديث: ۸۵۱، ج ۱، ص ۳۳۳۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادي والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۸۲، بتغير الفاظ۔

⑤.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع القول في العمل بالعلم، الحديث: ۷۲۳، ص ۳۵۳۔

जिना करती है और हामिला हो जाती है फिर उस का हम्ल ज़ाहिर होता है तो वोह ज़लील व रुस्वा होती है येही हाल उस का होगा जो अपने इल्म पर अमल नहीं करता, **अल्लाह** जब्बार व क़ह्हार **عَزَّوَجَلَّ** उसे क़ियामत के दिन सब लोगों के सामने रुस्वा करेगा ।”(1)

आलिम की लगज़िश बाइषे हलाक़्त है :

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : “आलिम की लगज़िश से डरो क्यूंकि लोगों में उस की बड़ी क़द्र होती है जिस की वजह से वोह लगज़िश में भी उस की पैरवी करते हैं ।”(2)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : “जब आलिम फिसलता है तो उस के फिसलने से एक ज़हान फिसल जाता है ।”(3)

इन्ही का फ़रमान है कि अहले ज़माना तीन बातों की वजह से हलाक़ होते हैं इन में से एक आलिम की लगज़िश है ।(4)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : “अन क़रीब लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि दिलों की शीरीनी ख़ारी हो जाएगी तो उस वक़्त न आलिम के इल्म से कुछ फ़ाइदा होगा और न तालिबे इल्म को कुछ नफ़ा होगा । उन के उ-लमा के दिल उस बन्जर ज़मीन की तरह हो जाएंगे जिस पर बारीश बरसती है लेकिन फिर भी उस में मिठास नहीं पाई जाती ।” और येह उस वक़्त होगा जब उ-लमा के दिल दुन्या की महब्बत और इसे आख़िरत पर तरजीह देने की तरफ़ माइल हो जाएंगे । उस वक़्त **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उन के दिलों से हिक़मत के चश्मे निकाल लेगा और हिदायत के चराग़ बुझा देगा । जब तुम उन के किसी आलिम से मिलोगे तो वोह ज़बान से तुम्हें कहेगा कि मैं **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से डरता हूं मगर उस के आ'माल में बदकारी ज़ाहिर होगी । उस वक़्त ज़बानें बड़ी शीरीं होंगी मगर दिल खुश्क होंगे । **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम जिस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं ! येह इस लिये होगा कि असातिज़ा ने ग़ैरे खुदा के लिये इल्म सिखाया और शागिर्दों ने ग़ैरे खुदा के लिये इल्म

①.....فیض القدير للمناوى، حرف الهمزة، تحت الحديث: ٢٢٢٦، ج ٢، ص ٥٢٩۔

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع بيان مايلزم الناظر، الحديث: ٩٦٥، ص ٣٥٢، باختصار۔

③.....الزهد لابن المبارك، الحديث: ١٢٤٣، ص ٥٢٠، (قول عيسى عليه السلام)۔

④.....الزهد لابن المبارك، الحديث: ١٢٤٥، ص ٥٢٠، مفهوماً۔

सीखा होगा। तौरात और इन्जिल में लिखा है कि “जब तक अपने इल्म पर अमल न कर लो उस वक्त तक उस इल्म को तलब न करो जो तुम्हें हासिल नहीं।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “तुम ऐसे ज़माने में हो कि इस में जिस ने अपने इल्म के दसवें हिस्से पर अमल करना छोड़ दिया वोह हलाक हो गया और अज़ क़रीब एक ऐसा ज़माना आएगा कि उस में जिस ने अपने इल्म के दसवें हिस्से पर अमल कर लिया वोह नजात पा लेगा और येह झूटों की क़षरत की वजह से होगा।”⁽²⁾

आलिम और काज़ी :

याद रखो ! आलिम की मिषाल काज़ी जैसी है और मुस्तफ़ा जाने रहूमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “काज़ी तीन किस्म के हैं एक वोह जो इल्म रखता और हक़ फ़ैसला करता है वोह जन्नती है। दूसरा वोह जो नाहक़ फ़ैसला करता है वोह जहन्नम में जाएगा चाहे उसे इल्म हो या न हो और तीसरा वोह जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के ख़िलाफ़ फ़ैसला करता है वोह भी जहन्नम में जाएगा।”⁽³⁾

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन :

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار बयान करते हैं कि आख़िरी ज़माने में ऐसे उ-लमा होंगे जो लोगों को दुन्या से बे रग़बती का कहेंगे लेकिन खुद इस में रग़बत रखेंगे। लोगों को ख़ौफ़ दिलाएंगे लेकिन खुद नहीं डरेंगे। उन्हें हुक्मरानों के पास जाने से रोकेंगे लेकिन खुद उन के पास जाएंगे। दुन्या को आख़िरत पर तरजीह देंगे लेकिन अपनी ज़बानों की कमाई खाएंगे। मालदारों के क़रीब रहेंगे लेकिन ग़रीबों से दूर। इल्म पर ऐसे झगड़ेंगे जिस तरह औरतें मर्दों पर झगड़ती हैं। इन का कोई हम नशीन अगर दूसरे की मजलिस में बैठेगा तो उस से नाराज़ हो जाएंगे। येह लोग मुतकब्बिरीन और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन होंगे।⁽⁴⁾

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع القول في العمل بالعلم، ص ۲۵۱۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ج ۱، ص ۲۳۸، بتغییر۔

سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب مَا جَاءَ فِي النَّهْيِ عَنْ سَبِّ الرَّيَّاحِ، الحديث: ۲۲۴۴، ج ۴، ص ۱۱۸، مفهوماً۔

③.....سنن الترمذی، کتاب الاحکام، باب ماجاء عن رسول اللّٰه.....الخ، الحديث: ۱۳۲۷، ج ۳، ص ۶۰، مفهوماً۔

④.....المجاسة وجواهر العلم، الجزء الثاني والعشرون، الحديث: ۳۰۹۱، ج ۳، ص ۱۲۷، باختصار۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، ج ۱، ص ۲۴۳، دون قوله: اولئك الجبارون اعداء الرحمن۔

सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “शैतान अकषर तुम्हें इल्म के ज़रीए सुस्त बना देता है।” किसी ने अर्ज़ की : “वोह कैसे ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह कहता है इल्म हासिल कर और जब तक इल्म मुकम्मल न कर ले अमल मत करना फिर वोह इल्म तलब करने का कहता रहता है और अमल में सुस्ती दिलाता रहता है यहां तक कि इल्म पर अमल किये बिगैर उस की मौत वाक़ेअ हो जाती है।”⁽¹⁾

इल्म की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा कीमिया :

हज़रते सय्यिदुना सिरी सक्ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : एक शख्स जिस को ज़ाहिरी उलूम हासिल करने का बड़ा शौक था अचानक उस ने इबादत के लिये लोगों से अलाहिदगी इख़्तियार कर ली। मैं ने इस की वजह पूछी तो उस ने बताया कि मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई मुझे कह रहा है : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें बरबाद करे तुम कब तक इल्म को ज़ाएअ करते रहोगे !” तो मैं ने कहा : “मैं तो इल्म को महफूज़ कर रहा हूँ।” उस ने कहा : “इल्म की हिफ़ाज़त उस पर अमल करने से होती है।” बस फिर मैं तलबे इल्म को छोड़ कर अमल करने की तरफ़ मुतवज्जेह हो गया।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “इल्म कषरते रिवायत का नहीं बल्कि ख़शियते इलाही का नाम है।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “जितना चाहो इल्म हासिल कर लो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! जब तक अमल नहीं करोगे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तुम्हें अज़्र नहीं देगा। बे वुकूफ़ों का मक्सद इल्म की रिवायत है जब कि उलमा का मक्सद इल्म की हिफ़ाज़त।”⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “इल्म तलब करना और इसे फैलाना अच्छा अमल है जब कि निय्यत दुरुस्त हो लेकिन देखा करो कि जो चीज़ सुबह से शाम तक तुम्हारे साथ रहती है उस पर किसी दूसरी चीज़ को तरजीह न दो।”⁽⁵⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، كتاب العلم وتفضيله، ج ١، ص ٢٢٨، بتغير۔

②.....فيض القدير للمناوى، حرف الهمزة، تحت الحديث: ٣٠١، ج ٣، ص ٢٠٩، بتغير الفاظ۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ج ١، ص ٢٣٠، بتغير الفاظ۔

③.....الزهد للإمام احمد بن حنبل، فى فضل ابى هريرة، الحديث: ٨٦٤، ص ١٨٠۔

④.....جامع بيان العلم وفضله، باب جامع القول فى العمل بالعلم، الحديث: ٤٢٥، ص ٢٥٣۔ (قول انس بن مالك)

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ١، ص ٢٣٠۔

⑤.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ١، ص ٢٣٣۔

नुजुले कुरआन का मक्सद :

हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फरमाया : “कुरआने हकीम इस लिये नाज़िल हुवा है कि इस पर अमल किया जाए, तुम ने इस के पढ़ने पढ़ाने को भी अमल बना लिया, अन् क़रीब ऐसे लोग आएंगे जो इस को नेजे की तरह सीधा करेंगे वोह तुम में बेहतर लोग नहीं होंगे और जो अल्लिम अमल नहीं करता उस मरीज़ की तरह है जो दवाई की ता'रीफ़ करता है और उस भूके की तरह है जो लज़ीज़ खानों की ता'रीफ़ करता है लेकिन इन को पाता नहीं।”⁽¹⁾

इस जैसे शख्स के बारे में इरशादे खुदावन्दी है :

وَلَكُمْ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُونَ⁽¹⁸⁾

(پ ۱۷، الانبیاء: ۸۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारी ख़राबी है उन बातों से जो बनाते हो ।

नीज़ हदीषे मुबारका में है कि “मुझे अपनी उम्मत पर अल्लिम की लगज़िश और मुनाफ़िक के कुरआन में झगड़ने का डर है।”⁽²⁾

﴿3﴾.....उ-लमाए आखिरत की अलामतों में से एक अलामत येह है कि ऐसे अल्लिम का मक्सद आखिरत में नफ़अ देने वाले और इताअत में रग़बत दिलाने वाले इल्म का हुसूल हो, उन उलूम से बचे जिन का नफ़अ कम, झगड़ा और बहूषो मुबाह़षा ज़ियादा हो पस उस शख्स की मिषाल जो आ'माल के इल्म से गाफ़िल हो कर जिदाल (झगड़ों वगैरा) में मशगूल हो जाए उस मरीज़ की सी है जो कई बीमारियों में मुब्तला हो वोह किसी माहिर तबीब को तंग वक़्त में मिले कि उस के चले जाने का खौफ़ हो लेकिन वोह जड़ी बूटियों और अदवियात की खुसूसिय्यात और तिब्ब की अजीबो ग़रीब बातें पूछना शुरूअ कर दे और उस अहम बात के बारे में न पूछे जिस में वोह मुब्तला है, वोह निरा बे वुकूफ़ है ।

मरवी है कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “मुझे इल्म की अजीबो ग़रीब बातें बताइयें !” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से पूछा : “तुम ने बुन्यादी इल्म के बारे में क्या सीखा ?” उस ने अर्ज़ की : “बुन्यादी इल्म क्या है ?” फ़रमाया : “क्या तुम ने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को पहचाना ?” उस ने अर्ज़ की : “जी हां !” इरशाद फ़रमाया : “तुम ने उस के

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۵۰۔

②.....المعجم الكبير، الحديث: ۲۸۲، ج ۲۰، ص ۱۳۹، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۹۵۔

हक़ की अदाएगी में क्या अमल किया ?” अर्ज़ की : “जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा ।” इरशाद फ़रमाया : “क्या तुम ने मौत को जाना ?” अर्ज़ की : “जी हां !” इरशाद फ़रमाया : “उस के लिये क्या तय्यारी की ?” अर्ज़ की : “जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने चाहा ।” इरशाद फ़रमाया : “जाओ ! पहले इस में पुख़्ता हो जाओ फिर हमारे पास आना हम तुम्हें इल्म के ग़राइब में से कुछ सिखा देंगे ।”(1)

8 अनमोल हीरे :

एक तालिबे इल्म को ऐसा होना चाहिये जैसा हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने उन के शागिर्दे रशीद हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم के बारे में मन्कूल है कि उन के उस्ताज़ हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने उन से पूछा : “तुम कितने अर्से से मेरी सोहबत में हो ?” अर्ज़ की : “33 साल से ।” पूछा : “इस मुदत में मुझ से क्या सीखा ?” अर्ज़ की : “आठ बातें ।”

हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने अफ़सोस करते हुए येह आयते मुबारका पढ़ी : **تَرْجَمَہ کَنْزُہُ اِیْمَان : ہم اَللّٰہ کے مال ہیں اور ہم کو اُسی کی ترَف فیرنا ।**

और कहा : “मेरी ज़िन्दगी का एक अर्सा तुम्हारे साथ गुज़र गया और तुम ने सिर्फ़ आठ बातें सीखी हैं ?” हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم ने अर्ज़ की : “उस्ताज़े मुहतरम ! मैं ने इन के इलावा कुछ नहीं सीखा और मुझे झूट बोलना पसन्द नहीं ।” उस्ताज़ साहिब ने फ़रमाया : “वोह आठ बातें बयान करो कि मैं सुनूं ।”

﴿1﴾....अर्ज़ की : मैं ने लोगों की तरफ़ नज़र की तो देखा कि हर शख़्स एक महबूब से महबूबत करता है और (महबूब के मरने पर) उस के साथ क़ब्र तक जाता है फिर उस से जुदा हो जाता है तो मैं ने अच्छे आ'माल को अपना महबूब बना लिया कि जब मैं क़ब्र में दाख़िल होऊं तो मेरा महबूब भी मेरे साथ दाख़िल हो ।

हज़रते सय्यिदुना शक़ीक़ बल्ख़ी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی ने फ़रमाया : “ऐ हातिम ! बहुत अच्छा ।”

﴿2﴾....अर्ज़ कि : मैं ने इस फ़रमाने बारी तअ़ाला में ग़ौरो फ़िक़र किया :

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ
عَنِ الْهَوَىٰ ۖ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۖ
(پ ۳۰، الفرقان: ۴۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह जो अपने रब्ब के हुजूर खड़े होने से डरा और नफ्स को ख्वाहिश से रोका । तो बेशक जन्नत ही ठिकाना है ।

तो मैं ने जान लिया कि **अल्लाह** तबारक व तआला का फ़रमान हक़ है फिर मैं ख्वाहिश को दूर करने के लिये अपने नफ्स को तय्यार करता रहा यहां तक कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी पर पुख़्ता हो गया ।

﴿3﴾.....अर्ज की : मैं ने लोगों को ग़ौर से देखा तो पता चला कि हर वोह शख्स जिस के पास कोई क़द्रो कीमत वाली चीज़ है वोह उसे बुलन्द करता और उस की हिफ़ाज़त करता है फिर मैं ने इस फ़रमाने इलाही में ग़ौर किया :

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۖ
(پ ۱, النحل: १६)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जो तुम्हारे पास है वो चुकेगा और जो **अल्लाह** के पास है हमेशा रहने वाला है ।

अब जब भी मेरे पास कोई क़द्रो कीमत वाली चीज़ आती है तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ फैर देता हूं ताकि महफूज़ रहे ।

﴿4﴾.....अर्ज की : लोगों की तरफ़ नज़र की तो देखा कि हर एक की तवज्जोह माल, हसब व नसब और शरफ़ की तरफ़ है । मैं ने इन चीज़ों के बारे में ग़ौर किया तो इन की कोई हैषियत मा'लूम न हुई फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में ग़ौर किया :

إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَىٰ ۖ
(پ २, الحجرات: १३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** के यहां तुम में ज़ियादा इज़्ज़त वाला वोह जो तुम में ज़ियादा परहेज़गार है ।

तो मैं ने तक्वा इख़्तियार करने की कोशिश की ताकि बारगाहे इलाही में इज़्ज़त वाला हो जाऊं ।

﴿5﴾.....अर्ज की : मैं ने हसद के सबब लोगों को एक दूसरे को ला'न ता'न करते देखा फिर इस आयते मुक़द्दसा में ग़ौरो ख़ौज़ किया :

نَحْنُ قَسَبًا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتُهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا
(پ २, الزخرف: ३२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हम ने उन में उन की ज़ीस्त (ज़िन्दगी गुज़ारने) का सामान दुनिया की ज़िन्दगी में बांटा ।

तो मैं हसद को तर्क कर के मख़लूक से अलग हो गया और मैं ने जान लिया कि तक्सीम तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है इस लिये मैं ने लोगों से अ़दावत तर्क कर दी ।

﴿6﴾.....अर्ज की : मैं ने लोगों को एक दूसरे पर ज़ियादती और आपस में लड़ते झगड़ते देखा फिर इस फ़रमाने बारी तआला की तरफ़ नज़र की :

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ط

(फ़ाटर: २: २८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी इसे दुश्मन समझो ।

तो मैं ने सिर्फ़ शैतान से दुश्मनी की और उस से बचने की कोशिश की क्योंकि **अल्लाह** ने गवाही दी है कि वोह मेरा दुश्मन है इस लिये मैं ने उस के इलावा किसी से दुश्मनी नहीं की ।

﴿7﴾.....अर्ज की : मैं ने लोगों को देखा कि इन में से हर एक रोटि के टुकड़े की तलब में अपने नफ़्स को ज़लील करता और उस चीज़ में मशगूल होता है जिस में मशगूल होना उस के लिये जाइज़ नहीं फिर मैं ने इस आयते मुबारका में गौर किया :

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رَاغِبَةٌ ط

(होद: १: २८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़क **अल्लाह** के ज़िम्माए करम पर न हो ।

तो इस नतीजे पर पहुंचा कि मैं भी उन चलने वालों में से एक हूं जिन का रिज़क **अल्लाह** के ज़िम्माए करम पर है, फिर मैं उस काम में मशगूल हो गया जो **अल्लाह** ने **अल्लाह** की तरफ़ से मुझ पर लाज़िम है और उसे छोड़ दिया जो मेरे लिये **अल्लाह** के पास है ।

﴿8﴾.....अर्ज की : मैं ने लोगों को देखा सब मख़्लूक पर भरोसा किये हुए हैं, कोई अपनी ज़मीन पर, कोई अपने कारोबार पर, कोई अपने फ़न पर, कोई अपनी सिद्दहत पर अल गरज़ हर मख़्लूक अपनी मिष्ल मख़्लूक पर तवक्कुल किये हुए है तो मैं ने **अल्लाह** के इस फ़रमान की तरफ़ तवज्जोह की :

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط

(अल्लाह: २: २८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफी है ।

लिहाज़ा मैं ने **अल्लाह** पर तवक्कुल कर लिया और वोही मुझे काफी है ।” हज़रते सय्यिदुना शकीक बल्खी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “ऐ हातिम ! **अल्लाह** तुम्हें तौफीक दे ! बेशक मैं ने तोरैत, इन्जिल, ज़बूर और कुरआने हकीम में ग़ौरो फ़िक्र किया तो भलाई और दियानत की तमाम अक्सांम को इस तरह पाया कि वोह तमाम इन्ही आठ बातों के गिर्द घूमती हैं । जो इन पर अमल कर लेगा वोह चारों (आस्मानी) किताबों पर अमिल हो जाएगा ।”

अल गुरज ! उ-लमाए आखिरत ही इस तरह का इल्म हासिल करने और इसे समझने का एहतिमाम करते हैं जब कि उ-लमाए दुनिया तो उस चीज में मशगूल होते हैं जिस से माल व जाह का हुसूल आसान हो और उन जैसे उलूम को छोड़ देते हैं जिन के जरीए **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने तमाम अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام** को मबउष फरमाया । हज़रते सय्यिदुना ज़ह्राक बिन मुज़ाहिम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَاكِم** बयान करते हैं कि “मैं ने सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ اَجْمَعِينَ** का ज़माना पाया है वोह एक दूसरे से तक्वा के इलावा कुछ नहीं सीखते थे और अब लोग इल्मे कलाम के सिवा कुछ नहीं सीखते ।”⁽¹⁾

﴿4﴾.....उ-लमाए आखिरत की एक अलामत येह है कि ऐसा अलमि खाने पीने की अश्या में आसूदगी, लिबास में जैबाइश, घरेलू सामान और रिहाइश के मकान में ख़ूब सूरती की तरफ़ माइल न हो बल्कि इन तमाम चीजों में मियाना रवी अपनाए, इस में सलफ़े सालेहीन की मुशाबहत इख़्तियार करे और कम से कम पर क़नाअत का ज़ेहन रखे । पस जब उस की तवज्जोह कमी की जानिब बढ़ेगी तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ उस का कुर्ब भी ज़ियादा होगा और उ-लमाए आखिरत में उस का मक़ाम बुलन्द होगा ।

सय्यिदुना हातिम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْحَاكِم का अन्दाजे नशीहत :**

हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم** के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह ख़वास **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الرَّزّاق** से मन्कूल येह हिकायत इस की गवाह है । फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم** के साथ (खुरासान के बड़े शहर) रै की तरफ़ गया । हमारे साथ 320 आदमी थे । हम हज़ का इरादा रखते थे । सब ने ऊनी कम्बल ओढ़े हुए थे । किसी के पास भी तौशादान और खाना नहीं था । “रै” मक़ाम पर पहुंच कर हम एक ताजिर के पास गए जो तंगदस्त था लेकिन मिस्कीनों को दोस्त रखता था । उस रात उस ने हमारी ज़ियाफ़त की । अगले दिन उस ने हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم** से कहा कि “अगर आप को कोई हाज़त हो तो फ़रमाइये क्यूंकि एक फ़कीह बीमार हैं मैं ने उन की इयादत को जाना है ।” आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** ने फ़रमाया : “मरीज़ की इयादत तो षवाब का काम है और फ़कीह की ज़ियारत करना भी इबादत है । चलो, मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूं ।” वोह बीमार फ़कीह रै का काज़ी मुहम्मद बिन मक़ातिल राज़ी था । जब हम उस के दरवाजे पर पहुंचे तो बुलन्द और ख़ूब सूरत महल देख कर हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم** मुतअज्जिब हो कर फ़रमाने लगे : “अलमि का

दरवाज़ा और इस तरह का ?” इजाज़त मिली, अन्दर गए तो देखा कि एक वसीअ व अरीज़ और उम्दा व ख़ूब सूरत घर है। उस में पर्दे लटक रहे हैं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ सोच में पड़ गए। फिर काज़ी की मजलिस में पहुंचे तो देखा कि काज़ी एक नर्म बिछौने पर आराम फ़रमा है और सर की जानिब एक गुलाम हाथ में पंखा लिये मौजूद है। ज़ियारत की गरज़ से आने वाले ताजिर ने सर के पास बैठ कर हालत दरयाफ़्त की जब कि हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने खड़े रहे। इब्ने मक़ातिल ने आप को बैठने का इशारा किया लेकिन आप न बैठे। उस ने कहा : “शायद आप को कोई हाज़त है ?” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “हां !” पूछा : “क्या हाज़त है ?” फ़रमाया : “एक मस्अला पूछना चाहता हूं।” कहा : “पूछिये।” फ़रमाया : “पहले सीधे हो कर बैठ जाएं फिर पूछूंगा।”

चुनान्चे, काज़ी सीधा हो कर बैठ गया। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने पूछा : “तुम ने इल्म किस से हासिल किया है ?” जवाब दिया : “मो’तबर उ-लमा से।” पूछा : “उन्होंने ने किस से सीखा ?” जवाब दिया : सहाबए किराम عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से।” पूछा : “उन्होंने ने किस से सिखा ?” कहा : रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से।” पूछा : “हुज़ूर नबिय्ये पाक عَلَيْهِ السَّلَام ने किस से ?” जवाब दिया : “हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के वासिते से खुदाए बुजुर्ग व बरतर से।” हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने फ़रमाया : “जो इल्म हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ालिके काइनात عَزَّوَجَلَّ से ले कर मुअल्लिमे काइनात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तक पहुंचाया, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने सहाबा को अता फ़रमाया, सहाबए किराम عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने मो’तबर उ-लमा को बताया और मो’तबर उ-लमा ने तुम्हें सिखाया क्या तुम ने उस में येह सुना है कि जिस के घर की बुलन्दी और वुस्अत ज़ियादा होगी **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां उस का मर्तबा ज़ियादा होगा ?” उस ने कहा : “नहीं, मैं ने ऐसा नहीं सुना।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “फिर कैसा सुना है ?” जवाब दिया : “मैं ने सुना है कि जो दुन्या से बे रग़बती और आखिरत में रग़बत रखते हुए मिस्कीनों से महब्बत और आखिरत की तय्यारी करेगा **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां उस का मर्तबा बुलन्द होगा।” हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने पूछा : “फिर तुम ने किस की पैरवी की, महबूबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और सहाबए किराम عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की या फ़िरऔन और नमरूद की जिन्होंने ने सब से पहले चूने और ईंट से पक्का मकान बनाया। ऐ उ-लमाए सू ! तुम जैसों को देख कर दुन्या से रग़बत रखने वाला जाहिल हरीस कहता है कि जब अ़लिम

की येह हालत है तो मैं इस से बुरा क्यूं न बनूं।” येह कह कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ वहां से तशरीफ ले गए और इब्ने मक़ातिल का मरज़ और बढ़ गया। वहां के लोगों को इन के दरमियान होने वाली गुफ़्तगू का पता चला तो उन्होंने ने हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم से अर्ज़ की : “क़ज़वीन में तनाफ़िसी इन से बड़ा मालदार है।”

नसीहत का अनोखा अन्दाज़ :

हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم क़स्दन वहां चले गए। तनाफ़िसी के पास पहुंचे तो कहा : “**اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहम फ़रमाए ! मैं एक अज़मी शख्स हूं, चाहता हूं कि तुम मुझे मेरे दीन की इब्तिदा और नमाज़ की चाबी सिखाओ या'नी मैं नमाज़ के लिये वुजू किस तरह करूं?” तनाफ़िसी ने कहा : “अच्छा, बहुत बेहतर।” फिर गुलाम से बरतन में पानी लाने को कहा, पानी पेश किया गया तो तनाफ़िसी ने बैठ कर वुजू किया और तीन तीन मरतबा आ'जा धोए फिर कहा : “इस तरह वुजू किया करो। हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने कहा : “तुम अपनी जगह ठहरो ताकि मैं तुम्हारे सामने वुजू करूं और मेरा मक्सद पूरा हो जाए।” वोह ठहर गया। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बैठ कर वुजू शुरू किया और अपने बाजूओं को चार-चार मरतबा धोया। तनाफ़िसी ने कहा : “ऐ शख्स ! तुम ने इसराफ़ किया है।” पूछा : “किस चीज़ में ?” कहा : “तुम ने अपने बाजू चार मरतबा धोए हैं।” हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने कहा : “سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيم ! मैं पानी के एक चुल्लू में इसराफ़ का मुर्तकिब हो गया और तुम ने येह जो इतना कुछ जम्अ कर रखा है, येह इसराफ़ नहीं ?” तनाफ़िसी समझ गया कि इन का मक्सद सीखना नहीं बल्कि येही बताना था। फिर वोह अपने घर में दाख़िल हो गया और 40 दिन तक लोगों के सामने न आया।

तीन ख़स्लतें :

जब हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم बग़दाद तशरीफ़ लाए तो वहां के लोग आप के पास जम्अ हो कर कहने लगे : “ऐ अबू अब्दुर्रहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ आप एक अज़मी शख्स है और रुक रुक कर बात करते हैं लेकिन इस के बा वुजूद जिस से भी बात करते हैं उसे ला जवाब कर देते हैं।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “मेरी तीन ख़स्लतें हैं जिन्हें मैं अपने मुक़ाबले पर ज़ाहिर करता हूं : (1).....जब मेरा मुक़ाबिल दुरुस्त हो तो मैं खुश होता हूं। (2).....ग़लती करे तो ग़मगीन होता हूं (3).....अपने आप को उस से महफूज़ रखता हूं कि उसे अपनी जहालत दिखाऊं।”

दुन्या से बचने का तरीका :

जब येह बात हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل को पहुंची तो उन्होंने ने फ़रमाया : “वाह ! कितने समझदार हैं। हमें भी उन के पास ले चलो।” उन के हां पहुंच कर पूछ : “ऐ अब्दुरहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ दुन्या से कैसे बचा जा सकता है ?” हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने जवाब दिया : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! तुम्हें चार ख़स्तलें हासिल हो जाएं तो तुम दुन्या से महफूज़ रह सकते हो : (1)....लोगों की जहालत को मुआफ़ कर दो (2).....अपनी जहालत को उन से रोक लो (3).....अपनी चीज़ उन पर खर्च करो और (4).....उन की चीज़ों से मायूस हो जाओ। जब ऐसे हो जाओगे, तो दुन्या से बच जाओगे।”

येह तो फिरऔन का शहर है :

फिर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى सूए मदीना चल दिये। वहां पहुंचे तो अहले मदीना ने पुर जोश इस्तिक्बाल किया। आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने पूछा : “ऐ लोगो ! येह कौन सा शहर है ?” लोगों ने अर्ज़ की : “येह मदीनतुरसूल है।” पूछा : “तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का महल कहां है, ताकि मैं उस में नमाज़ पढ़ूं ?” लोगों ने अर्ज़ की : “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का महल नहीं था बल्कि एक घर था जो ज़मीन से मिला हुआ था।” फिर फ़रमाया : “तो सहाबए किराम رَضَوَانِ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के महल्लात कहां हैं ?” अर्ज़ की : “उन के महल्लात नहीं थे वोह तो ज़मीन से मिले हुए घरों में रहते थे।” हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने फ़रमाया : “येह तो फिरऔन का शहर है !” लोगों ने आप को पकड़ कर हाकिमे वक़्त के सामने पेश कर दिया और कहा कि “येह अज़मी शख़्स कहता है कि येह फिरऔन का शहर है।” हाकिम ने आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى से वजह पूछी तो आप ने जवाब दिया : “मुझ पर जल्दी न करो, मैं एक अज़मी मुसाफ़िर शख़्स हूं, शहर में दाख़िल हुआ तो मैं ने पूछा : येह कौन सा शहर है।” तो लोगों ने कहा : येह “मदीनतुरसूल है।” फिर पूछा : “इन का महल कहा है।” यूं आख़िर तक पूरा वाकिआ बयान कर के कहा : **اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

(प १, २, الاحزاب : २१)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है।

लिहाजा बताओ ! तुम ने किस की पैरवी की, रसूलुल्लाह ﷺ की या फिरऔन की जिस ने सब से पहले चूने और ईंट का पक्का घर बनाया । फिर लोग आप ﷺ को तन्हा छोड़ कर चले गए ।

येह हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم की हिकायत है । नीज़ ख़स्ता हाली और ज़ैबो ज़ीनत को तर्क करने पर मुश्तमिल अस्लाफ़ की मुबारक ज़िन्दगियों के कुछ गोशों का बयान उन के मक़ाम पर आएगा जो उ-लमाए आख़िरत की इस निशानी की ताईद करता है ।

इस में तहकीक़ येह है कि मुबाह चीज़ों के साथ ज़ीनत इख़्तियार करना हराम नहीं लेकिन इस में ज़ियादा दिलचस्पी इस से मानूस होने का सबब है जिस की वजह से इसे छोड़ना दुश्वार हो जाता है । फिर येह कि मुसलसल ज़ीनत इख़्तियार किये रहने के लिये अस्बाब का हुसूल ज़रूरी है और अ़म तौर पर इन के हुसूल के लिये कई गुनाहों का इर्तिकाब करना पड़ता है । मषलन चापलूसी, जाइज़ व ना जाइज़ हर काम में लोगों की रिआयत, दिखलावा और दीगर कई ममनूअ काम करने पड़ते हैं इस लिये एह्तियात इसी में है कि ज़ैबो ज़ीनत से इजतिनाब किया जाए क्यूं कि जो दुन्या में मशगूल हो जाता है वोह इस से बिल्कुल महफूज़ नहीं रह सकता और अगर इस में ज़ियादा मशगूलियत के बा वुजूद भी इस से बचना मुमकिन होता तो **अल्लाह** ﷺ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब ﷺ तर्के दुन्या में इतना मुबालगा न फ़रमाते हत्ता कि आप ﷺ ने नक्शो निगार वाली क़मीस उतार दी नीज़ दौराने खुतबा सोने की अंगूठी उतार दी इस क़िस्म के और भी वाक़िआत हैं जिन का बयान आगे आएगा ।

सय्यिदुना यहया बिन यज़ीद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد का ख़त :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना यहया बिन यज़ीद नौफ़िली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى को ख़त लिखा (मज़मून कुछ यूं था) :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى رَسُولِهِ مُحَمَّدٍ فِي الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ،

यहया बिन यज़ीद बिन अब्दुल मलिक की तरफ़ से मालिक बिन अनस के नाम ख़त

मुझे ख़बर पहुंची है कि आप ﷺ बारीक कपड़े पहनते, चपाती खाते, नर्म निशस्त पर बैठते और अपने दरवाज़े पर दरबान बिठाते हैं हालांकि आप इल्म की मजलिस काइम करते हैं । लोग सफ़र कर के आप के पास आते हैं । आप को अपना पेशवा मानते और आप की बात को पसन्द करते हैं । लिहाजा ऐ मालिक ! **अल्लाह** ﷺ से डरें और अ़जिज़ी इख़्तियार करें । मैं ने आप की तरफ़ नसीहत भरा ख़त लिखा है जिस का इल्म **अल्लाह** ﷺ के सिवा किसी को नहीं ।

सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِقِ का जवाब :

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जवाब में लिखा :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ

मालिक बिन अनस की तरफ से यह्या बिन यजीद को السَّلَامُ عَلَيْكُمْ

आप का ख़त मौसूल हुवा, इस में मेरे लिये नसीहत, शफ़क़त और अदब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को तक्वा पर इस्तिफ़ामत अता फ़रमाए और इस नसीहत का बेहतरीन सिला दे। मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौफ़ीक़ का सुवाल करता हूं कि नेकी करने की कुव्वत और गुनाहों से बचने की ताक़त, अज़मत व बुलन्दी वाले परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ही की मदद से है। आप ने मेरी जिन बातों का तज़क़िरा किया कि मैं बारीक कपड़े पहनता, चपाती खाता, दरबान बिठाता और नर्म निशस्त पर बैठता हूं ये सब मैं करता हूं और मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआफ़ी मांगता हूं। बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया है :

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ
وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ط (پ ۸، الاعراف: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ ! किस ने ह़राम की **अल्लाह** की वोह ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिये निकाली और पाक रिज़क़।

बेशक मैं जानता हूं कि इसे तर्क करना इख़्तियार करने से बेहतर है। आप हमें ख़त लिखना न छोड़ियेगा हम भी आप को ख़त लिखते रहेंगे। وَالسَّلَام

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِقِ का इन्साफ़ तो देखिये कि इस बात का ए'तिराफ़ भी किया कि इसे तर्क करना इख़्तियार करने से बेहतर है और इस के जवाज़ का फ़तवा भी दिया। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ दोनों बातों में सच्चे थे। ऐसे अज़ीमुल मन्सब शख्स ने इस तरह नसीहत क़बूल करने और ए'तिराफ़ करने में इन्साफ़ से काम लिया और अपने नफ़्स को जाइज़ कामों की हुदूद जानने पर भी पक्का कर लिया ताकि वोह उन्हें चापलूसी, दिखलावे और दूसरी नापसन्दीदा बातों की तरफ़ तजावुज़ की राह पर न ले जाए जब कि कोई दूसरा इस तरह नहीं कर सकता। पस मुबाह चीज़ों से लुत्फ़ अन्दोज़ होने की तरफ़ माइल होने में बड़ा ख़तरा है और ये चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ व ख़शियत से दूर है जब कि रब्बानी उ-लमा की ख़ासियत ख़शियते इलाही है और ख़शियत की ख़ासियत है कि ख़तरे व अन्देशे वाली जगहों से दूर रहा जाए।

﴿5﴾.....उ-लमाए आख़िरत की एक अलामत येह है कि अलामि हुक्मरानों से दूर रहे, जब तक उन से भागने की राह मिले हरगिज़ उन के पास न जाए, बल्कि उन की मुलाक़ात से भी एहतियाज़ करे अगर्चे वोह इस के पास आएँ क्यूंकि दुन्या मिठी और तरो ताज़ा है और इस की लगाम हुक्मरानों के

हाथ में है। उन से मिलने वाला उन की रिज़ा व खुशनूदी पाने और उन के दिल अपनी तरफ़ माइल करने के लिये तकल्लुफ़ात से नहीं बच सकता बा वुजूद येह कि वोह ज़ालिम होते हैं। हर दीनदार के लिये ज़रूरी है कि उन पर ए'तिराज़ करे, उन के मज़ालिम और बुरे अफ़़ाल ज़ाहिर कर के उन के दिल तंग करे क्योंकि उन के पास जाने वाला या तो उन की ज़ैबो जीनत को देख कर खुद पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के एहसानात को हकीर समझता है या उन पर ए'तिराज़ करने से ख़ामोश रह कर मुनाफ़क़त इख़्तियार करता है या उन की खुशनूदी की ख़ातिर अपनी गुफ़्तगू में तकल्लुफ़ करता और इन की हालत को अच्छा बताता है हालांकि येह खुला झूट है या उन की दुन्या से कुछ मिल जाने की तम्अ करता है और येह हराम है। हलाल व हराम के बयान में इस बात का ज़िक्र आएगा कि हुक्मरानों के अम्वाल से कौन कौन से अतिय्यात व इन्आमात लेना जाइज़ हैं और कौन से नाजाइज़? मुख़्तसर येह कि उन से मैल जोल कई बुराइयों की चाबी है और उ-लमाए आख़िरत का रास्ता एहतियात है।

आकाए दो जहां, महबूबे रहमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरश़ाद फ़रमाया : “जो बनबासी हुवा (देहात में रिहाइश इख़्तियार की) वोह सख़्त दिल हो गया। जो शिकार के पीछे रहा वोह गाफ़िल हो गया और जो बादशाह के पास पहुंचा वोह फ़ितने में पड़ा।” (1)(2)

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٩٢٨٩، ج ٣، ص ٢٢٣۔

②....मफ़़्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान ميرआतुल मनाजीह, जि. 5 स. 360 पर इस के तहूत फ़रमाते हैं : “देहात के बाशिन्दे अकषर सख़्त दिल होते हैं रब्ब तआला फ़रमाता है : **الْأَعْرَابُ أَشَدُّ لُغْوَاً وَنِفَاقاً وَأَجْدَرُ أَنْ لَا يُعَامَرُوا** (प 11, التوبة: 9) क्यूँकि इन्हें इल्म की रोशनी उ-लमा की सोहबत नहीं नसीब होती, लिहाज़ा खुद आलिमे दीन जो देहात में रहें और वोह देहात वाले जो उ-लमा से तअल्लुक रखें और शहर में आते जाते रहें वोह इस हुक्म से ख़ारिज हैं (और) जो शिकार का शग़ल अपना वतीरा बना ले कि महज़ शोकियां शिकार खेलता रहे वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र नमाज़ व जमाअते जुमुआ, रिक्कते क़ल्ब से महरूम रहता है हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी शिकार न किया (अश्चे) बा'ज़ सहाबा ने शिकार किया है मगर शिकार करना और है और शिकार का मशग़ला वोह भी महज़ शोकिया कुछ और। शिकार का ज़िक्र तो कुरआने करीम में है यहां मशग़ले शोकिया का ज़िक्र है लिहाज़ा येह हदीष हुक्मे कुरआन के ख़िलाफ़ नहीं (और) जो इज़ज़त व दौलत कमाने के लिये ज़ालिम बादशाह का दरबारी और हाज़िर बाश बना वोह अपना दीन या दुन्या तबाह कर लेगा क्यूँकि अगर वोह उस के जुल्म की हिमायत करेगा तो अपना दीन बरबाद कर लेगा, और अगर उस की मुख़ालफ़त करेगा तो अपनी दुन्या बरबाद कर लेगा, लिहाज़ा जो कोई अदिल बादशाह का मुसाहिब बने उस के अद्ल की हिमायत करने तक में दीन का रवाज देने को और उसे अच्छे मश्वरे दे तो वोह आ'ला दर्जे का मुजाहिद है, यूं ही ज़ालिम बादशाह की इस्लाह के लिये उस के साथ रहे तो वोह गाज़ी है मगर ऐसा बहुत मुश्किल है लिहाज़ा (अमीरुल मोअमिनीन) हज़रते अली (क़ुर्म الله تعالى وجهه الكريم) को खुलफ़ाए राशिदीन का मुसाहिब बनना और हज़रते इमाम अबू यूसुफ़ (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) का सुल्तान हारून रशीद का काज़ियुल कुज़्ज़ा बनना गुनाह न था षवाब था, इमाम अबू यूसुफ़ की येह क़ज़ा हनफी मज़हब की इशाअत का ज़रीआ बनी।”

एक रिवायत में है कि “अन करीब तुम पर ऐसे हुक्मरान होंगे जिन में अच्छी बातें भी होंगी और बुरी भी। पस जिस ने (उन का) इन्कार किया वोह बरी हो गया और जिस ने नापसन्द किया वोह भी बच गया लेकिन जो (उन से) राजी रहा और पैरवी की उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी रहमत से दूर कर देगा।” अर्ज की गई : “क्या हम उन से लड़ाई न करें ?” इरशाद फरमाया : “नहीं, जब तक वोह नमाज पढ़ते रहें।”(1)

हजरते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फरमाया : जहन्नम में एक वादी है जिस में सिर्फ वोह उ-लमा रहेंगे जो बादशाहों की मुलाकात को जाते हैं।(2)

फित्नों की जगहें :

हजरते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फरमाया : “फित्ने की जगहों से बचो।” किसी ने पूछा : “वोह कौन सी जगहें हैं ?” फरमाया : “हुक्मरानों के दरवाजे, तुम में से कोई शख्स हकिम के पास जाता है तो उस के झूट को सच बताता है और उस की शान में वोह बातें कहता है जो उस में नहीं होतीं।”(3)

उ-लमा बन्दों पर रसूलों के अमीन हैं :

हजरते सय्यिदुना अनस रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबियों के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “उ-लमा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दों पर रसूलों के अमीन होते हैं जब तक वोह हुक्मरानों से मैल जोल न रखें और जब वोह ऐसा करेंगे तो वोह रसूलों के साथ ख़ियानत के मुर्तकिब होंगे। पस तुम उन (के शर) से डरो और उन से अलाहिदा रहो।”(4)

①..... سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ۷۸، الحديث: ۲۲۷۲، ج ۴، ص ۱۷۱، دون قوله: ابعد الله-

جامع بيان العلم وفضله، باب ذم العالم على مداحلة السلطان الظالم، الحديث: ۷۰۲، ص ۲۲۶-

②..... تفسير النسفی، سورة هود، تحت الآية: ۱۱۳، ص ۵۱۵-

③..... المصنف لعبد الرزاق، کتاب الجامع، باب ابواب السلطان، الحديث: ۲۰۸۰۹، ج ۱۰، ص ۲۸۰-

④..... جمع الجوامع، قسم الاقوال، حرف العين، الحديث: ۱۲۵۲۹، ج ۵، ص ۲۰۱-

تفسير روح البيان، سورة هود، تحت الآية: ۱۱۳، ج ۴، ص ۱۹۶-

किसी ने हज़रते सय्यिदुना आ'मश रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज की : “हुज़ूर ! आप ने अपने कपीर शागिर्दों के ज़रीए इल्म को ज़िन्दा कर दिया है।” फ़रमाया : “जल्दी न करो, इन में से एक तिहाई तो इल्म के फ़वाइद हासिल होने से पहले ही मर जाते हैं, एक तिहाई हुक्मरानों के दरवाज़ों से चिमट जाते हैं, वोह लोगों में बद तरीन हैं और बाक़ी एक तिहाई में से कम ही हैं जो फ़लाह पाते हैं।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “जब तुम अ़लिम को उमरा के पास आते जाते देखो तो उस से एहतिराज़ करो क्यूंकि वोह चोर है।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस अ़लिम से ज़ियादा नापसन्द कोई चीज़ नहीं जो हुक्काम के किसी कारन्दे से मुलाक़ात करता है।”⁽³⁾

बद तरीन उ-लमा और बेहतरीन उमरा :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बदतरीन उ-लमा वोह हैं जो उमरा के पास जाते हैं और बेहतरीन उमरा वोह हैं जो उ-लमा के पास जाते हैं।”⁽⁴⁾

आग के समन्दर में ग़ौते लगाने वाला :

हज़रते सय्यिदुना मकहूल दिमिशक़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “जिस ने कुरआन सीखा और दीन का इल्म हासिल किया फिर ह़किम का मुसाहिब बन गया, उस की खुशामद की, उस के माल की तम्अ रखी तो वोह अपने गुनाहों की ता'दाद के बराबर जहन्नम की आग के समन्दर में ग़ौते लगाएगा।”⁽⁵⁾

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب ذم العالم على مداخله السلطان الظالم، ص ۲۳۲۔

②.....الاداب الشرعية الكبرى للمقدسى، فصل انقباض العلماء المتقين.....الخ، ج ۴، ص ۱۷۴۔

فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، الحديث: ۱۰۸۳، ج ۱، ص ۱۶۳، بتغییر، عن ابی هريرة۔

③.....تفسير النسفی، سورة هود، تحت الاية: ۱۱۳، ص ۵۱۵۔

الکامل فی ضعفاء الرجال، الرقم: ۲۷۶ بکیر بن شهاب، ج ۲، ص ۲۰۴، عن ابی هريرة قال قال رسول اللّٰه۔

④.....طبقات الشافیه الکبری، الطبقة الخامسة، من اصحاب الامام المطلبی، ج ۶، ص ۲۹۰۔

⑤.....فردوس الاخبار للدیلمی، باب الالف، الحديث ۱۱۴۱، ج ۱، ص ۱۷۱، بتغییر، عن عباد بن جبيل۔

उ-लमाउ बनी इस्राईल से ज़ियादा बुरे :

हज़रते सय्यिदुना समनून رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “वोह अलिम कितना बुरा है कि उस के पास कोई जाए तो उसे न पाए और जब उस के बारे में पूछा जाए तो बताया जाए कि वोह हाकिम के पास है ।”⁽¹⁾

मज़ीद फ़रमाते हैं : “मैं येह कहते हुए सुना करता था कि जब तुम ऐसे अलिम को देखो जो दुन्या से महबूबत करता है तो उसे अपने दीन के मुआमले में मशकूक जानो हत्ता कि मुझे इस का तजरिबा हो गया कि मैं जब कभी भी हाकिम के पास गया और वहां से निकलने के बा'द अपने नफ़्स का मुहासबा किया तो मैं ने इस में बहुत दूरी पाई हालांकि मैं जिस सख़्ती और दुरुस्ती से उस के साथ पेश आता हूं और उस की ख़्वाहिश की मुख़ालफ़त करता हूं वोह तुम्हारे सामने है और मैं पसन्द करता हूं कि हाकिम के पास जाने से बच जाऊं हालांकि न मैं उस से कोई चीज़ लेता हूं और न पानी का कोई घूंट पीता हूं ।”

फिर फ़रमाया : “हमारे ज़माने के उ-लमा बनी इस्राईल के उ-लमा से ज़ियादा बुरे हैं कि हाकिम को रुख़्सतीं और वोह बातें बताते हैं जो उन की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हों और अगर वोह उन्हें ऐसी बातें बताएं जो उन के ख़िलाफ़ हों और इन में उन की नजात हो तो हुक्मरान उन्हें बोझ जानें और उन का अपने पास आना नापसन्द करें हालांकि येह बात उन के रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हां उन के लिये नजात का ज़रीआ है ।”

हुक्मरानों की शोहबत मुनाफ़क़त का बाइष है :

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى ने फ़रमाया : तुम से पहले लोगों में एक साहिब थे जो इस्लाम में सबक़त रखते थे और सहाबिये रसूल थे । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इस से हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक्कास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मुराद हैं । फ़रमाया : वोह हुक्मरानों के पास नहीं जाते थे और उन से दूर रहते थे । उन के बेटों ने उन से अज़र्ज की : “येह लोग जो सहाबिय्यत और इस्लाम में मुक़द्दम होने के ए'तिबार से आप की मिष्ल नहीं हैं वोह हुक्मरानों के पास जाते हैं अगर आप भी जाएं तो क्या हरज है ?” उन्होंने ने फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटो ! क्या मैं उस मुर्दार दुन्या के पास जाऊं जिसे लोगों ने घेर रखा है । **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की किसम ! अगर मुझ से हो सका तो मैं इस में उन के साथ

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب ذم العالم على مداخله السلطان الظالم، تحت الحديث: ١٢ / ٤، ص ٢٣٣-

शरीक नहीं होऊंगा।” बेटों ने अर्ज की : “अब्बा जान ! इस तरह तो हम फ़क्रो इफ़्लास की हालत में हलाक हो जाएंगे।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटो ! मैं ईमान की हालत में ग़रीब व कमज़ोर हो कर मर जाऊं येह मुझे हालते मुनाफ़क़त में मोटा हो कर मरने से ज़ियादा पसन्द है।” हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “**اَبْلَاهُ** की क़सम ! वोह अपने बेटों पर ग़ालिब आ गए क्यूंकि उन्होंने ने जान लिया कि क़ब्र की मिट्टी गोश्त और मोटापे को तो फ़ना कर देती है मगर ईमान महफूज़ रहता है।”⁽¹⁾

इस में उस बात की तरफ़ इशारा है कि हाकिम के पास जाने वाला निफ़ाक़ से हरगिज़ नहीं बच सकता और निफ़ाक़ ईमान की ज़िद है।

हज़रते सय्यिदुना जुन्दब बिन जुनादा अबू ज़र ग़िफ़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي ने हज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अम्र बिन अक्वअ अस्लमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया : “ऐ सलमा ! बादशाहों के दरवाज़ो पर न जाया करो क्यूंकि तुम उन की दुन्या से उस वक़्त तक कुछ नहीं ले सकते जब तक वोह तुम्हारे दीन में से इस से अफ़ज़ल न ले लें।”⁽²⁾

येह उ-लमा के लिये बहुत बड़ा फ़िल्ता और शैतान के लिये उन पर ग़ालिब आने का ज़बरदस्त ज़रीआ है बिल खुसूस जिन का अन्दाज़ मक्बूल और कलाम शीरीं हो क्यूंकि शैतान उन के दिल में येह बात डालता रहता है कि तुम्हारे उन के पास जाने और उन्हें वा'ज़ करने से वोह जुल्म से बा'ज़ रहेंगे और इस्लामी अहक़ाम जारी करेंगे हत्ता कि वोह समझता है कि उन के पास जाना भी दीनी काम है फिर जब वोह उन के पास जाता है तो जल्द ही उस के कलाम में नमी आ जाती है, वोह चापलूसी करता और बादशाह की ता'रीफ़ में मशगूल हो कर इस में मुबालगा करता है, इस में दीन की बरबादी है।

कहा जाता था कि “उ-लमा जब इल्म हासिल करते हैं तो अमल में लग जाते हैं, जब अमल करते हैं तो मसरूफ़ हो जाते हैं, जब मसरूफ़ होते हैं तो गुमनाम हो जाते हैं, गुमनाम होते हैं तो उन्हें त़लब किया जाता है और जब उन्हें त़लब किया जाए तो भाग जाते हैं।”⁽³⁾

①.....موسوعة الامام ابن ابي الدنيا، كتاب العزلة والانفراد، الحديث: ٢٠٢، ج ٦، ص ٥٢٢۔

②.....المصنف لابن ابي شيبة، كتاب الفتن، ماذكر في عثمان، الحديث: ٤٩، ج ٨، ص ٦٩٨۔

③.....المجالسة وجواهر العلم، الحديث: ٣٥٣، ج ١، ص ١٨١۔

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز ने हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي को लिखा : मुझे उन लोगों के बारे में बताओ जिन से मैं **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ के दीन पर मदद हासिल करूं। हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने जवाब में लिखा कि दीनदार तो आप के पास आना पसन्द नहीं करेंगे और दुन्यादारों को आप पसन्द नहीं करेंगे। अलबत्ता आप मुअज़्ज़ज़ लोगों को अपने साथ रखें क्योंकि वोह अपनी इज़्ज़त व शराफ़त को ख़यानत के साथ मैला होने से बचाते हैं।”(1)

येह है अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز की सीरत जो अपने ज़माने के सब से बड़े ज़ाहिद थे। जब दीनदारों के लिये इन से भी दूर रहना शर्त है तो फिर इन के अलावा किसी और की त़लब और उस के साथ रहना क्यूंकर दुरुस्त हो सकता है। अस्लाफ़े उ-लमाए किराम मषलन हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी, हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक, हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अयाज़, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम, हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ अहले मक्का व शाम वगैरा के उ-लमाए दुन्या को इस लिये ऐब लगाते हैं कि वोह दुन्या की तरफ़ माइल होते या हुक्मरानों से मैल जोल रखते थे।

﴿6﴾.....उ-लमाए आख़िरत की एक निशानी येह है कि ऐसा अ़ालिम फ़तवा देने में जल्दी न करे बल्कि तवक्कुफ़ करे और जब तक हो सके अपने आप को फ़तवा देने से बचाए। नीज़ अगर उस से ऐसी चीज़ के बारे में पूछा जाए जिसे वोह नस्से कुरआनी या नस्से हदीष या इजमाअ या क़ियासे जली की दलील से यकीनी तौर पर जानता है तो उस के बारे में फ़तवा दे और अगर ऐसी बात पूछी जाए जिस में उसे शक है तो कह दे कि मैं नहीं जानता। अगर ऐसा मस्अला दरयाफ़्त किया जाए जिसे वोह इजतिहाद व अन्दाजे से समझ सकता है तो भी एहतिyयात करे, अपने आप को बचाए और अगर कोई दूसरा बताने वाला हो तो उस की तरफ़ फैर दे, इसी में बचत है क्यूंकि इजतिहाद का ख़तरा सर लेना बड़ी बात है।

हदीषे मुबारका में है कि इल्म तीन हैं : “कुरआने पाक, सुन्ते काइमा और ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता)।”(2)

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج 1، ص 233-

②.....المعجم الاوسط، الحديث: 1001، ج 1، ص 284-

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، كتاب العلم وتفضيله، المقام الثالث من اليقين، ج 1، ص 236-

आधा इल्म :

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى ने फ़रमाया : ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता), आधा इल्म है और मा'लूम न होने की सूरत में जवाब न देने वाला अज़्रो षवाब में जवाब देने वाले से कम नहीं क्योंकि ला इल्मी का ए'तिराफ़ नफ़्स पर बहुत गिरा है।⁽¹⁾ नीज़ सहाबए किराम और अस्लाफ़े किराम رَضُوا اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की येही आदत थी। चुनान्वे,

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से जब किसी मुआमले का शर्ई हुक्म पूछा जाता तो वोह फ़रमाते : “उस हाकिम के पास जाओ जिस ने लोगों के मुआमलात का ज़िम्मा उठा रखा है, इसे भी उस की गर्दन में डालो।”⁽²⁾

आलिम की ढाल :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : जो लोगों के हर सुवाल का जवाब देता है वोह मजनूँ है।⁽³⁾ और ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता) आलिम की ढाल है। क्योंकि अगर उस ने ग़लत मस्अला बता दिया तो हलाकत में मुब्तला होगा।⁽⁴⁾

आलिम की ख़ामोशी शैतान की बेहोशी :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने फ़रमाया : शैतान पर उस आलिम से सख़्त कोई चीज़ नहीं जो बा'ज़ इल्म बयान करता है और बा'ज़ में ख़ामोश रहता है। वोह कहता है : इस की तरफ़ देखो ! इस की ख़ामोशी मुझ पर इस के बोलने से ज़ियादा सख़्त है।⁽⁵⁾

①.....سنن الدارمی، المقدمة، باب فی الذی یفتی الناس فی کل ما یستفتی، الحدیث: ۱۸۰، ج ۱، ص ۷۴۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب اعلم وتفضیله، المقام الثالث من الیقین، ج ۱، ص ۲۳۶، باختصار۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ۱، ص ۲۲۸۔

③.....سنن الدارمی، المقدمة، باب فی الذی یفتی الناس فی کل ما یستفتی، الحدیث: ۱۷۱، ج ۱، ص ۷۳۔

المعجم الکبیر، الحدیث: ۸۹۲۳، ج ۹، ص ۱۸۸۔

④.....الأمالی فی آثار الصحابة لعبد الرزاق الصنعانی، الحدیث: ۱۶۲، ص ۱۰۴۔

تاریخ دمشق لابن عساکر، الرقم: ۷۰۴ اسماعیل بن ابان، ج ۸، ص ۳۶۳، عن مالک بن انس۔

⑤.....جامع بیان العلم وفضله، باب جامع فی آداب العالم والمتعلم، الحدیث: ۵۶۳، ص ۱۷۱، بتغر۔

قوت القلوب، الفصل السابع والعشرون، کتاب اساس المریدین، ج ۱، ص ۱۷۲۔

बा'ज उ-लमा ने अबदाल का ता'रुफ़ करवाते हुए कहा : उन का खाना फ़ाका (के वक्त), उन की नींद ग़लबा (के वक्त) और उन का कलाम ज़रूरत (के वक्त) होता है।⁽¹⁾ या'नी जब तक उन से पूछा न जाए वोह ख़ामोश रहते हैं और जब पूछा जाए और उन्हें कोई दूसरा जवाब देने वाला मिल जाए तो भी बात नहीं करते और जब मजबूर हों तब जवाब देते हैं और वोह सुवाल से पहले बोलना शुरू कर देने को कलाम की खुफ़्या शहवत शुमार करते हैं।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا एक शख्स के पास से गुज़रे जो लोगों को वा'ज कर रहा था। दोनों ने फ़रमाया : “येह कहता है मुझे पहचानो।”⁽²⁾

बा'ज बुजुर्गों ने फ़रमाया : “अलिम तो वोह है कि जब उस से कोई मस्अला पूछा जाए तो उसे ऐसा लगे जैसे उस की दाढ़ निकाली जा रही है।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाया करते थे : “तुम लोग हमें पुल बना कर इस से गुज़र कर जहन्नम की तरफ़ जाना चाहते हो।”⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू हफ़्स नैशापूरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “अलिम वोही है कि जब उस से सुवाल किया जाए तो वोह ख़ौफ़ज़दा हो कि बरोजे क़ियामत उस से कहा जाएगा कि तुम ने कहां से जवाब दिया।”⁽⁵⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तमीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنِي से जब कोई मस्अला पूछा जाता तो रौने लगते और फ़रमाते : “तुम्हें मेरे इलावा कोई और नहीं मिला जो तुम्हें मेरी ज़रूरत पड़ गई।”

हज़रते सय्यिदुना अबू अलिय्या रियाही, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम और हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान घौरी (رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى) दो तीन या चन्द लोगों के सामने गुफ़्तगू करते थे और जब लोग ज़ियादा हो जाते तो वापस चले जाते थे।

जमीन का बेह तरीन और बढ तरीन हिस्सा :

मुअल्लिमे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे नहीं मा'लूम कि उज़ैर नबी थे या नहीं ? मैं (अपने इल्म से) नहीं जानता कि तब्अ ला'नती

①.....قوت القلوب، الفصل الرابع عشر، في ذكر تقسيم قيام الليل.....الخ، ج ١، ص ٤٣-

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٦٦-

③.....المرجع السابق- ④.....المرجع السابق- ⑤.....المرجع السابق-

है या नहीं ? और मैं (अपने इल्म से) नहीं जानता कि जुलकरनैन नबी थे या नहीं ?”⁽¹⁾ और जब आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से ज़मीन के सब से बेहतर और बदतर हिस्से के बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : “मैं (अपने इल्म से) नहीं जानता ।” यहां तक कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन से पूछा उन्होंने ने अर्ज की : मैं नहीं जानता : यहां तक कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ख़बर दी कि ज़मीन का बेह तरीन हिस्सा मसाजिद और बद तरीन हिस्सा बाज़ार हैं ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से दस मसाइल पूछे जाते तो आप एक का जवाब देते और नव के बारे में ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाते ।⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا नव का जवाब देते और एक के बारे में सुकूत फ़रमाते ।⁽⁴⁾

नीज़ ऐसे फुक़हा भी हैं जो अदरी (या'नी मैं जानता हूं) से ज़ियादा ला अदरी (या'नी मैं नहीं जानता) कहा करते थे ।

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान घौरी, हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल, हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन अयाज़ और हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ भी इन्ही में से हैं ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहमान बिन अबी लैला رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहते हैं : “मैं ने इस मस्जिद में 120 सहाबए किराम رَضُوا اللَّه تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ को पाया जब इन में से कोई किसी से हदीष या मस्अला पूछता तो वोह पसन्द करते कि उन का भाई इस में किफ़ायत करे ।”⁽⁵⁾ दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ यूं हैं कि “जब इन में से किसी के सामने कोई मस्अला पेश किया जाता तो वोह इसे दूसरे की तरफ़ भेज देते, वोह आगे दूसरे की तरफ़ यहां तक कि वोह फिर पहले के पास आ जाता ।”⁽⁶⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب السنة، باب فی التخییر بین الانبیاء، الحدیث: ۴۶۷۴، ج ۴، ص ۲۸۸۔

جامع بیان العلم وفضله، باب ما یلزم العالم اذا سئل عما لا یدریه من وجوه العلم، الحدیث: ۸۸۵-۸۸۴، ص ۳۱۱۔

②.....جامع بیان العلم وفضله، باب ما یلزم العالم اذا سئل عما لا یدریه من وجوه العلم، الحدیث: ۸۸۴، ص ۳۱۰۔

المستدرک، کتاب العلم، باب خیر البقاع المساجد وشر البقاع الاسواق، الحدیث: ۳۱۳، ج ۱، ص ۲۷۹۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ۱، ص ۲۲۸۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضیله، ذکر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ۱، ص ۲۲۸۔

⑥.....المرجع السابق۔

⑤.....المرجع السابق۔

ईषारे सहाबा :

मरवी है कि “अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से किसी को भुना हुवा सर पेश किया गया तो सख़्त फ़ाका से होने के बावुजूद दूसरे को हदिय्या कर दिया और उन्होंने ने आगे हदिय्या कर दिया यूं वोह उन के दरमियान घूमता रहा यहां तक कि फिर पहले के पास आ गया ।”

लिहाज़ा तुम देखो कि अब उ-लमा का मुआमला कैसे उलट हो गया है कि जिस से भागना चाहिये उसे तलब किया जाता है और जिसे तलब करना चाहिये उस से भागा जाता है । फ़तवा देने से एहतिराज़ करना अच्छा है इस पर येह मुस्नद रिवायत शाहिद है । चुनान्वे,

हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तीन किस्म के लोग ही फ़तवा देते हैं (1)....हाकिम (2)....या उस का नाइब (3).....या तकल्लुफ़ करने वाला ।”⁽¹⁾

सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ चार चीजों से बचा करते थे : “(1)....हुक्मरानी से (2).....वसी बनने से (3)....अमानत रखने से और (4).....फ़तवा देने से ।”⁽²⁾

बा'ज अकाबिरीन ने कहा कि “वोह शख्स फ़तवा देने में ज़ियादा जल्दी करता है जिस के पास इल्म कम होता है और इस से बचने की ज़ियादा कोशिश वोह करता है जो ज़ियादा परहेज़गार होता है ।”⁽³⁾

सहाबउ किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पशन्दीदा काम :

सहाबए किराम व ताबेईने उज़्ज़ाम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ पांच चीजों में मशगूल रहते थे : “(1)....तिलावते कुरआन (2).....मसाजिद की आबादकारी (3)....ज़िक्रुल्लाह (4)....नेकी की दा'वत देना और (5).....बुराई से मन्अ करना ।”⁽⁴⁾ और इस की वजह येह थी कि इन्होंने ने फ़रमाने मुस्तफ़ा सुन रखा था कि “इब्ने आदम का हर कलाम उस के लिये नुक्सान देह होता है सिवाए तीन के (1)....नेकी की दा'वत देना (2).....बुराई से मन्अ करना और (3)....ज़िक्रुल्लाह करना ।”⁽⁵⁾

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ١، ص ٢٢٨-

②.....المرجع السابق، ص ٢٢٩، بتغيرٍ- ③.....المرجع السابق، ص ٢٢٩- ④.....المرجع السابق، ص ٢٢٩-

⑤.....سنن الترمذی، کتاب الزهد، باب ماجاء فی حفظ اللسان، الحديث: ٢٢٢٠، ج ٢، ص ١٨٥-

قوت القلوب، الفصل الحادى، والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ١، ص ٢٢٩-

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نُّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنَ أَمَرَ
بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۗ
(پ ۵، النساء: ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के अकषर मश्वरों
में कुछ भलाई नहीं मगर जो हुक्म दे खैरात या
अच्छी बात या लोगों में सुल्ह करने का ।

एक आलिम साहिब ने कूफ़ा के एक मुजतहिद को ख़्वाब में देख कर पूछा : “तुम
जो फ़तवा देते और राए से काम लेते थे इस के बारे में क्या देखा ?” उन्होंने ने नापसन्दीदगी
का इज़हार करते हुए रुख़ फैर लिया और बताया कि “हम ने इसे कुछ भी नहीं पाया और
इस का अन्जाम अच्छा नहीं पाया ।”(1)

हज़रते सय्यिदुना अबू हसीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मौजूदा उ-लमा में से कोई
ऐसे मस्अले के बारे में फ़तवा देता है कि अगर वोह मस्अला अमीरुल मोअमिनीन हज़रते
सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की बारगाह में पेश किया जाता तो आप उस
के लिये तमाम अहले बद्र को जम्अ फ़रमाते ।”(2)

बहर हाल बिगैर ज़रूरत के न बोलना हमेशा से उ-लमा की आदत रही है और हदीषे
पाक में है कि “जब तुम किसी को देखो कि उसे ख़ामोशी और दुन्या से बे रग़बती अता हुई
है तो उस के करीब जाओ क्यूंकि उसे हिक्मत सिखाई गई है ।”(3)

आम व खास आलिम में फर्क :

मन्कूल है कि आलिम या तो आम आलिम होता है और येह मुफ़्ती है येह लोग
हुक्मरानों के मुसाहिब होते हैं या फिर वोह खास आलिम होता है येह वोह है जो आ'माले
क़ल्ब और तौहीद का आलिम होता है येह लोगों से अलग थलग और तन्हा रहते हैं ।(4)

दरयाए दिजला और मीठे कुंवें की मानिन्द :

कहा जाता था कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَوَّل की

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ۱، ص ۲۲۹ -

②.....المرجع السابق، ص ۲۳۰ - تاريخ دمشق لابن عساكر، الرقم: ۴۶۰، عثمان بن عاصم بن حصين، ج ۳۸، ص ۴۱۱ -

③.....سنن ابن ماجه، كتاب الزهد، باب الزهد فى الدنيا، الحديث: ۴۱۰۱، ج ۴، ص ۴۲۲ -

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۱ -

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۳۵ -

मिषाल दरियाए दिजला जैसी है जिस से हर एक चुल्लू भर लेता है।⁽¹⁾ और हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की मिषाल मीठे कुंवें जैसी है जो ढका हुआ हो लोग उस की तरफ़ एक एक कर के जाते हैं।⁽²⁾

लोग कहा करते थे कि फुलां आलिम है, फुलां मुतकल्लिम है, फुलां ज़ियादा कलाम करता है और फुलां ज़ियादा इल्म वाला है।⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ कहते हैं कि मा'रिफ़त कलाम से ज़ियादा सुकूत के करीब है।⁽⁴⁾

मन्कूल है कि जब इल्म ज़ियादा होता है तो गुफ़्तगू कम हो जाती है और जब गुफ़्तगू ज़ियादा होती है तो इल्म कम हो जाता है।⁽⁵⁾

सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को नशीहत :

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़त लिखा और येह दोनों उन में से हैं जिन के दरमियान हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भाई चारा काइम फ़रमाया था।⁽⁶⁾ (ख़त का मज़मून कुछ इस तरह है :) ऐ मेरे भाई ! मैं ने सुना है कि आप तबीब बन कर मरीज़ों का इलाज करते हैं, ग़ौर कर लें अगर आप वाक़ेई तबीब हैं तो इस के मुतअल्लिक कलाम करें, आप के कलाम में शिफ़ा होगी और अगर ब तकल्लुफ़ तबीब बने हैं तो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से डरें कि कहीं किसी मुसलमान की जान न ले लें।⁽⁷⁾ इस के बा'द हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से कुछ पूछा जाता तो तवक्कुफ़ फ़रमाते।

फुलां से पूछो :

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से कुछ पूछा जाता तो फ़रमाते : “हमारे आज़ाद कर्दा गुलाम हसन बसरी से पूछो।”⁽⁸⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٥۔

②.....المرجع السابق۔ ③.....المرجع السابق۔ ④.....المرجع السابق۔ ⑤.....المرجع السابق، مختصراً۔

قوت القلوب، الفصل السابع والعشرون، كتاب اساس المريدين، ج ١، ص ١٤٢، ”العلم“ بدله ”العقل“۔

⑥.....صحيح البخارى، كتاب الادب، باب صنع الطعام والتكلف للضيف، الحديث: ٦١٣٩، ج ١، ص ١٣٤۔

⑦.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٥٢۔

⑧.....المصنف لابن ابى شيبه، كتاب الزهد، باب ما قالوا فى البكاء من خشية الله، الحديث: ٤٢، ج ٨، ص ٣٠٦۔

الطبقات الكبرى لابن سعد، الرقم: ٣٠٥٥ الحسن بن ابى الحسن، ج ٤، ص ١٣٠۔

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से कुछ पूछा जाता तो फ़रमाते : “हारिषा बिन जैद से पूछो ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से कुछ पूछा जाता तो फ़रमाते : सईद बिन मुसय्यब से पूछो ।⁽²⁾

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى की मौजूदगी में एक सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने 20 अहादीष बयान फ़रमाई । उन से इस की शर्ह पूछी गई तो फ़रमाया : “मेरे पास वोही था जो मैं ने बयान कर दिया है ।” फिर हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى ने एक एक हदीष की शर्ह बयान की तो लोग इन की उम्दा शर्ह और इन के हाफ़िज़े से हैरान हो गए । तो सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुठ्ठी में कंकरिया ले कर लोगों को मारीं और फ़रमाया : “तुम मुझ से इल्म के बारे में पूछते हो हालांकि तुम्हारे दरमियान येह बड़े अ़लिम मौजूद हैं ।”⁽³⁾

﴿7﴾.....उ-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से एक अ़लामत येह है कि ऐसा अ़लिम इल्मे बातिन, दिल की निगरानी, राहे आख़िरत और इस पर चलने की कैफ़ियत को जानने की ज़ियादा कोशिश करे । मुजाहदा व मुराक़बा के ज़रीए इस के इन्किशाफ़ की सच्ची उम्मीद रखे क्यूंकि मुजाहदे के ज़रीए मुशाहदा नसीब होता है और उलूमे क़ल्ब की बारीकियों से दिल से हिक्मत के चश्मे फूटते हैं । किताबें और ता’लीम इस में काम नहीं आतीं बल्कि हिक्मत तो शुमार से बाहर है जो महज़ मुजाहदे और मुराक़बे, ज़ाहिरी व बातिनी आ’माल बजा लाने और तन्हाई में हुज़ूरे क़ल्ब और साफ़ फ़िक़्रो सोच के साथ मासिवल्लाह से बे तअल्लुक़ हो कर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर हाज़िर होने से हासिल होती है । येह इल्हाम की चाबी और क़श्फ़ का मम्बअ है । कितने ही तालिबे इल्म ऐसे हैं जो अर्सए दराज़ तक इल्म सीखते रहे मगर सुने हुए एक कलिमे से आगे बढ़ने की कुदरत नहीं रखते और कितने ऐसे हैं कि इल्म सीखने में कोताह हैं लेकिन इल्म और मुराक़बा बहुत ज़ियादा करते हैं जिस की वजह से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उन के लिये हिक्मत के ऐसे असरार खोल देता है कि अक्लमन्दों की अक्लें हैरान रह जाती हैं । इसी लिये सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने इल्म पर अमल करता है **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) उसे वोह इल्म भी अता फ़रमा देता है जो उसे हासिल न हो ।”⁽⁴⁾

1.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، ج ١، ص ٢٥٢، “حارثة بن زيد” بدله “جابر بن زيد”-

2.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٥٢-

3.....المرجع السابق، ص ٢٥٢-٢٥٥-

4.....حلية الاولياء، احمد بن ابى الحوارى، الحديث: ٢٣٢، ج ١، ص ١٣-

इल्म तो तुम्हारे दिलों में है :

बा'ज साबिका कुतुब में लिखा है कि “ऐ बनी इसराईल ! येह न कहो कि इल्म आस्मान पर है इसे कौन ज़मीन पर उतारेगा, न येह कहो कि इल्म ज़मीन की तह में है इसे ऊपर कौन लाएगा, न येह कहो कि समुन्दर के उस पार है समुन्दर उबूर कर के इसे कौन लाएगा बल्कि इल्म तुम्हारे दिलों में रखा गया है । मेरे सामने रूहानी आदाब सीखो और सालेहीन के अख़्लाक अपनाओ मैं तुम्हारे दिलों में इतना इल्म डाल दूंगा जो तुम्हें ढांप लेगा ।”(1)

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : उ-लमा, अबिदीन और ज़हिदीन दुन्या से चले गए और उन के दिलों पर ताले पड़े हैं, सिर्फ़ सिद्दीकीन और शुहदा के दिल खुले हैं ।(2)

फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَعِنْدَهُ مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ
(پ، ۷، الانعام: ۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उसी के पास हैं कुन्जियां ग़ैब की इन्हें वोही जानता है ।

और अगर अहले कुलूब के दिलों का इदराक बातिनी नूर के साथ इल्मे ज़ाहिर पर हाकिम न होता तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ येह न फ़रमाते कि “अपने दिल से फ़तवा लो अगर्चे लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुम्हें कुछ भी फ़तवा दें ।”(3)

कुर्बे इलाही के जल्वे :

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है कि “बन्दा नवाफ़िल के ज़रीए मेरा कुर्ब हासिल करता रहता है यहां तक कि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूं और जब मैं उसे महबूब बना लेता हूं तो उस के कान बन जाता हूं जिन से वोह सुनता है उस की आंखें बन जाता हूं जिन से वोह देखता है उस के हाथ बन जाता

①..... قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ج ۱، ص ۲۳۸، بتغير قليل۔

②..... قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا..... الخ، ج ۱، ص ۲۶۲۔

③..... المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث وابصة بن معبد، الحديث: ۱۸۰۲۸، ج ۲، ص ۲۹۳۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا..... الخ، ج ۱، ص ۲۶۲۔

हूं जिन से वोह पकड़ता है उस के पाउं बन जाता हूं जिन से वोह चलता है। अगर वोह मुझ से मांगे तो मैं उसे ज़रूर देता हूं अगर वोह मुझ से पनाह तलब करे तो मैं उसे पनाह देता हूं और मुझे किसी काम में तरहुद नहीं होता जिसे मैं करता हूं। मैं किसी काम के करने में कभी इस तरह तरहुद नहीं करता जिस तरह जाने मोमिन कब्ज़ करते वक़्त तरहुद करता हूं कि वोह मौत को नापसन्द करता है और मैं उस के मकरूह समझने को बुरा जानता हूं।^{(1) (2)}

①.....صحیح البخاری، کتاب الرقاق، باب التواضع، الحديث: ۶۵۰۲، ج ۲، ص ۲۲۸۔

②....वलियुल्लाह वोह बन्दा है जिस का **अब्लाह** तअ़ाला वारिष हो गया कि उसे एक आन के लिये भी उस के नफ़्स के हवाले नहीं करता बल्कि खुद उस से नेक काम लेता है, रब्ब तअ़ाला फ़रमाता है: **وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ** (प ९: الاعراف: १९) और वोह बन्दा है जो खुद रब्ब तअ़ाला की इबादत का मुतवल्ली हो जाए, पहली किस्म के वली का नाम मजज़ूब या मुराद है और दूसरे का नाम सालिक या मुरीद है वहां हर मुराद मुरीद है और हर मुरीद मुराद। फ़र्क सिर्फ़ इब्तिदा में है येह मक़ाम काल से वरा है हाल से मा'लूम हो सकता है। जो मेरे एक वली का दुश्मन है वोह मुझ से जंग करने को तय्यार हो जाए। खुदा की पनाह, येह कलिमा इन्तिहाई ग़ज़ब का है सिर्फ़ दो गुनाहों पर बन्दे को रब्ब तअ़ाला की तरफ़ से ए'लाने जंग दिया गया है, एक सूद ख़ोर, दूसरे दुश्मने औलिया, रब्ब तअ़ाला फ़रमाता है: **وَلَمَّا فَرَمَاتے هُنَّ كِي वली का दुश्मन काफ़िर है और उस के कुफ़्र पर मरने का अन्देशा है। (मिरकात) ख़याल रहे कि एक है वलियुल्लाह से इस लिये अदावत व इनाद कि वलियुल्लाह है येह तो कुफ़्र है इसी का यहां ज़िक्र है और एक है किसी वली से इख़िलाफ़े राए येह न कुफ़्र है न फ़िस्क लिहाज़ा इस हदीष की बिना पर यूसुफ़ **عَلَيْهِ السَّلَام** के भाई और वोह सहाबा जिन की आपस में लड़ाइयां रहीं उन को बुरा नहीं कहा जा सकता कि वहां इख़िलाफ़े राए था इनाद न था, इनाद व इख़िलाफ़ में बड़ा फ़र्क़ है, इस के लिये हमारी किताब अमीरे मुआविय्या देखिये हत्ता कि हज़रते सारा को इस बिना पर बुरा नहीं कहा जा सकता कि इन्होंने ने हज़रते हाजिरा व इस्माईल **عليهما السلام** की मुख़ालिफ़त की, इस लिये यहां **عادی** फ़रमाया **خالف** न फ़रमाया और **وليا** फ़रमाया **ولي الله** न फ़रमाया। मुझ तक पहुंचने के बहुत ज़रीए हैं, मगर उन तमाम ज़राएअ से ज़ियादा महबूब ज़रीआ अदाए फ़राइज़ है इसी लिये सूफ़िया फ़रमाते हैं कि फ़राइज़ के बिग़ैर नवाफ़िल कबूल नहीं होते उन की माखुज़ येह हदीष है। अफ़सोस उन लोगों पर जो फ़र्ज़ इबादात में सुस्ती करें और नवाफ़िल पर ज़ोर दें और हज़ार अफ़सोस उन पर जो भंग, चरस, हराम गाने बजाने को खुदारसी का ज़रीआ समझें, नमाज़ रोज़े के क़रीब न जाएं। बन्दा मुसलमान फ़र्ज़ इबादात के साथ नवाफ़िल भी अदा करता रहता है हत्ता कि वोह मेरा प्यारा हो जाता है क्यूंकि वोह फ़राइज़ व नवाफ़िल का जामेअ होता है (मिरकात) इस का मतलब येह नहीं कि फ़राइज़ छोड़ कर नवाफ़िल अदा करे, महबूबत से मुराद कामिल महबूबत है। इस इबादत का येह मतलब नहीं कि खुदा तअ़ाला वली में हुलूल कर जाता है जैसे कोइले में आग या फूल में रंग व बू, कि खुदा तअ़ाला हुलूल से पाक है और येह अक़ीदा कुफ़्र है बल्कि इस के चन्द मतलब हैं एक येह कि वलियुल्लाह के येह आ'ज़ा गुनाह के लाइक़ नहीं रहते हमेशा इन से नेक काम ही सरज़द होते हैं इस पर इबादात आसान होती हैं गोया सारी इबादतें उस से मैं करा रहा हूं या येह कि फिर वोह बन्दा इन आ'ज़ा को दुन्या के लिये इस्ति'माल नहीं करता, सिर्फ़ मेरे लिये इस्ति'माल करता है हर चीज़.....**

कुरआने हकीम के असरार में से कितने ही दक्कीक़ मअानी ऐसे हैं जो उन लोगों के दिलों पर ज़ाहिर होते हैं जो ज़िक्रो फ़िक्र के लिये अपने आप को अलाहिदा कर लेते हैं, कुतुबे तफ़सीर इन मअानी से ख़ाली हैं और बड़े दर्जे के मुफ़स्सरीन भी इन पर मुत्तलअ नहीं होते। जब किसी मुराक़बा करने वाले सालिक पर येह मअानी मुन्कशिफ़ हुए और येह मअानी उस ने मुफ़स्सरीन को पेश किये तो उन्होंने ने इस की तहसीन की और जान लिया कि येह पाकीज़ा दिल वालों और बुलन्द हिम्मत लोगों पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का लुत्फ़ो करम है जो इस की तरफ़ मुतव्वजेह है। इसी तरह उलूमे मुकाशफ़ा, उलूमे मुआमला के असरार और दिलों पर गुज़रने वाले ख़तरात की बारीकियों का मुआमला है। क्यूँकि इन उलूम में से हर इल्म एक समन्दर है जिस की गहराई को

..... में मुझे देखता है हर आवाज़ में मेरी आवाज़ सुनता है, या येह कि वोह बन्दा फ़नाफ़िल्लाह हो जाता है जिस से खुदाई ताक़तें उस के आ'ज़ा में काम करती हैं और वोह वैसे काम कर लेता है जो अक्ल से रवा हैं हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने किनआन में बैठे हुए मिस्र से चली हुई क़मीसे यूसुफ़ी की खुशबू सूँघ ली, हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने तीन मील के फ़ासिले से च्यूटी की आवाज़ सुन ली हज़रते आसिफ़ बरख़िया ने पलक झपकने से पहले यमन से तख़्ते बिल्कीस ला कर शाम में हाज़िर कर दिया। हज़रते उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने मदीनए मुनव्वरा से खुत्बा पढ़ते हुए नहावन्द तक अपनी आवाज़ पहुंचा दी। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने क़ियामत तक के वाक़िआत ब चश्म मुलाहज़ा फ़रमा लिये। येह सब इसी ताक़त के करिश्मे हैं। आज नार की ताक़त से रेडियो तार, वायरलेस टेलीवीज़न अज़ीब करिश्मे दिखा रहे हैं तो नूर की ताक़त का क्या पूछना। इस हदीष से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो ताक़ते औलिया के मुन्किर हैं, बा'ज सूफ़िया जोश में سَيِّئَاتِي مَا أَظْهَرَنِي कह गए। वोह बन्दा मक्बूलहुआ बन जाता है कि मुझ से ख़ैर मांगे या शर से पनाह, मैं उस की ज़रूर सुनता हूँ। मा'लूम हुवा कि औलिया रब्ब तआला की पनाह में रहते हैं तो जो शख़्स इन से दुआ कराए उस की कबूल होगी और जो इन की पनाह में आए वोह रब्ब की पनाह में आ जाएगा। سُبْحٰنَ اللّٰهِ क्या नाज़ो अन्दाज़ वाला कलाम है या'नी मैं रब्ब हूँ और अपने किसी फ़ैसले में कभी न तवक्कुफ़ करता हूँ न तअम्मुल, जो चाहूँ हुक्म करूँ, मगर एक मौक़अ पर हम तवक्कुफ़ व तअम्मुल फ़रमाते हैं वोह येह कि किसी वली का वक्ते मौत आ जाए और वोह वली अभी मरना न चाहे तो हम उसे फ़ौरेन नहीं मार देते बल्कि उसे अव्वलन मौत की तरफ़ माइल कर देते हैं जन्नत और वहां की ने'मते उसे दिखा देते हैं और बीमारियां परेशानियां उस पर नाज़िल कर देते हैं जिस से उस का दिल दुन्या से मुतनफ़िफ़ हो जाता है और आख़िरत का मुश्ताक़ फिर वोह खुद आना चाहता है और खुश खुश हंसता हुवा हमारे पास आता है, यहां तरदुद के मा'ने हैरानी परेशानी नहीं कि वोह बे इल्मी से होती है रब्ब तआला इस से पाक है बल्कि मतलब वोह है जो फ़कीर ने अर्ज़ किया मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात का वाक़िआ इस हदीष की तफ़सीर है। हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि अम्बियाए किराम को मौत व ज़िन्दगी का इख़्तियार दिया जाता है वोह हज़रात अपने इख़्तियार से खुशी खुशी मौत कबूल करते हैं और यारे ख़न्दां रवद बजानिबे यार का जुहूर होता है। गरज़ येह कि हमारी मौत तो छूटने का दिन है और औलिया अम्बिया की वफ़ात प्यारों से मिलने का दिन इसी लिये इन की मौत के दिन को उर्स या'नी शादी का दिन कहा जाता है इस हदीष से मा'लूम हुवा कि **اَللّٰهُ** तआला के इरादे मशिय्यत, रिज़ा कराहत में बहुत फ़र्क़ है बा'ज चीज़ें रब्ब तआला को ना पसन्द हैं मगर उन का इरादा है बा'ज चीज़ें पसन्द हैं मगर उन का इरादा नहीं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 308 ता 31, मुलख़बसन)

नहीं पहुंचा जा सकता। इस में हर तालिब इतना ही गौता ज़न होता है जितना उस के मुक़दर में होता और जिस क़दर उसे हुस्ने अमल की तौफ़ीक़ होती है।

उ-लमा जिन्दा रहते हैं :

उ-लमा के बारे में अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** ने एक तवील हदीषे पाक में फ़रमाया कि “दिल बरतनों की मानिन्द हैं और उन में बेहतरीन वोह हैं जिन में ज़ियादा भलाई जम्अ है। लोग तीन किस्म के हैं : (1) आलिमे रब्बानी (2) राहे नजात पर चलने वाला तालिबे इल्म और (3) बे वुकूफ़ और मा'मूली दर्जे के लोग जो हर पुकारने वाले के पीछे चल पड़ते हैं, हवा के हर झोंके के साथ झुक जाते हैं, नूरे इल्म से रोशनी हासिल नहीं करते और न ही मज़बूत सहारा लेते हैं। इल्म माल से बेहतर है क्योंकि इल्म तुम्हारी हिफ़ाज़त करता है जब कि माल की तुम हिफ़ाज़त करते हो। इल्म खर्च करने से बढ़ता है जब कि माल खर्च करने से घटता है। इल्म, दीन है इसे इख़्तियार किया जाता है। इस के ज़रीए ज़िन्दगी में इताअत की जाती और बा'दे विसाल येह ज़िक्रे खैर का ज़रीआ है। इल्म हाकिम है जब कि माल महकूम। माल ख़त्म होने से इस की मन्फ़अत भी ख़त्म हो जाती है। माल जम्अ करने वाले मर जाते हैं जब कि उ-लमा का ज़िक्र ज़िन्दा रहता है जब तक ज़माना बाक़ी है।” (1)

फिर आप **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने लम्बा सांस लिया और सीने की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया : “यहां बहुत इल्म है। काश ! मुझे कोई ऐसा मिल जाता जो इसे उठा सकता, मैं ऐसा तालिब पाता हूं जो बा ए'तिमाद नहीं, वोह दीन को दुन्या कमाने का ज़रीआ बनाता है, वोह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ने'मतों की वजह से उस के औलिया पर ज़बाने ता'न दराज़ करता और उस की मख़्लूक पर हुज्जत बाज़ी कर के ग़ालिब आता है या अहले हक़ पर तन्कीद करता है लेकिन उस के दिल में पहला शुबा वारिद होते ही शक़ जम जाता है। उसे कोई बसीरत हासिल नहीं होती न येह न वोह या वोह लज़्ज़ात का गुलाम और ख़्वाहिशात की कैद में बन्द है। या अम्वाल जम्अ करने और ज़ख़ीरा करने से धोका खाने वाला और अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करने वाला है और इन दोनों कामों में वोह चरने वाले जानवरों के मुशाबेह है। इसी तरह जब इल्म के मुहाफ़िज़ फ़ौत हो जाते हैं तो क्या यूंही इल्म फ़ौत हो जाता है, नहीं बल्कि ज़मीन ऐसे लोगों से ख़ाली नहीं होती जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये हुज्जत काइम करें बल्कि या तो वोह ज़ाहिर मशहूर होते हैं या पोशीदा और छुपे हुए ताकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की हुज्जतें और दलाइल बातिल न हों। वोह लोग कितने

हैं और कहाँ हैं ? वोह ता'दाद के ए'तिबार से कम हैं लेकिन उन का मक़ाम बहुत बुलन्द है वोह ज़ाहिरी तौर पर मफ़ूद होते हैं मगर इन की मिषालें दिलों में मौजूद होती हैं। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इन के ज़रीए अपने दलाइल की हिफ़ाज़त फ़रमाता है ताकि वोह इन दलाइल को अपने बा'द वालों के हवाले करें और उन के दिलों में इन्हें महफूज़ और पुख़्ता करें। इल्म ने इन्हें मुआमले की हकीकत तक पहुँचा दिया तो येह यकीन की रूह से जा मिले और इन्होंने उन उमूर को नर्म पाया जिन्हें खुश हाल लोग सख़्त पाते और गाफ़िल लोग वहूशत खाते हैं। येह इस से मानूस हो गए और उन हस्तियों की अरवाह के साथ मिल कर दुन्या की मुसाहबत इख़्तियार की जो कि आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ हैं। मख़्लूक में से येही लोग **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के औलिया हैं, उस के अमीन, ज़मीन में उस के आ'माल और उस के दीन की तरफ़ दा'वत देने वाले हैं।" येह फ़रमाने के बा'द आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ रोने लगे फिर फ़रमाया : "इन लोगों को देखने का कितना शौक है।"⁽¹⁾

आख़िर में ज़िक्र की गई निशानी उ-लमाए आख़िरत की अलामत है और येह वोही इल्म है जिस का अकषर अमल और मुजाहदा पर हमेशगी इख़्तियार करने से हासिल होता है।

यकीन की अहमियत व फ़ज़ीलत :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "यकीन मुकम्मल ईमान है।"⁽²⁾

लिहाज़ा इल्मे यकीन की इब्तिदाई बातों का सीखना ज़रूरी है फिर दिल के लिये इस का रास्ता खुल जाएगा।

इसी वजह से प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "تَعَلَّمُوا الْيَقِيْنَ يا'नी इल्मे यकीन हासिल करो।"⁽³⁾

इस हदीषे पाक से मुराद येह है कि यकीन वालों के पास बैठो और उन से इल्मे यकीन की समाअत और उन की इक्तिदा पर हमेशगी इख़्तियार करो ताकि तुम्हारा यकीन भी इसी तरह क़वी हो जाए जिस तरह उन का यकीन क़वी है और थोड़ा यकीन ज़ियादा अमल से बेहतर है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون: كتاب العلم وتفضيله، ذكر فضل علم المعرفة، ج ١، ص ٢٣٢-

حلية الاولياء، على بن ابى طالب، الرقم: ٢٣٣، ج ١، ص ١٢١، بتغير قليل-

②.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى الصبر على المصائب، الحديث: ٩٤١٦، ج ٤، ص ١٢٣-

③.....حلية الاولياء، ثوربن يزيد، الحديث: ٩٥٥، ج ٦، ص ٩٩-

موسوعة الامام ابن ابى الدنيا، كتاب اليقين، الحديث: ٤، ج ١، ص ٢٢-

येही वजह है कि जब हुजूर नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की खिदमत में अर्ज की गई कि “एक शख्स का यकीन अच्छा है मगर वोह गुनाह ब कषरत करता है और एक शख्स इबादत में कोशिश बहुत करता है लेकिन उस का यकीन थोड़ा है।” तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “(अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के इलावा) हर शख्स के कुछ गुनाह होते हैं।”⁽¹⁾

लेकिन अक़ल जिस की कुव्वत और आदत जिस का यकीन हो उसे गुनाह नुक्सान नहीं पहुंचाते क्यूंकि जब कभी उस से कोई गुनाह सरजद हो जाता है तो वोह तौबा व इस्तिग़फ़ार करता और शर्मिन्दा होता है जिस की वजह से उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं और तौबा व इस्तिग़फ़ार से उस का कुछ हिस्सा बच जाता है जिस के बदले उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

इसी लिये सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो कुछ तुम्हें दिया गया है उस का क़लील तरीन यकीन और सब्र पर पुख़्तगी है और जिसे इन दोनों में से कुछ हिस्सा मिला उसे रात के क़ियाम और दिन के रोज़ों के फ़ौत होने की कोई परवाह नहीं।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना लुक्मान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपने बेटे को वसियत करते हुए फ़रमाया : “ऐ बेटे ! अमल की इस्तिताअत यकीन से हासिल होती है और आदमी अपने यकीन के मुताबिक़ ही अमल करता है और अमल में कमी उस वक़्त करता है जब उस का यकीन नाक़िस हो जाता है।”⁽³⁾

नूरे तौहीद और शिर्क की आग :

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुआज़ राजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي फ़रमाते हैं : “बेशक तौहीद के लिये एक नूर और शिर्क के लिये एक आग है। नूरे तौहीद मोअमिनीन के गुनाहों को उस से ज़ियादा जलाता है जितना शिर्क की आग मुशरिकीन की नेकियों को जलाती है।”⁽⁴⁾

नूरे तौहीद से आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ की मुराद यकीन है। **اَللّٰهُ** ने कुरआने मजीद में अहले यकीन का ज़िक़ क़पीर मक़ामात पर फ़रमाया है जो इस बात की दलील है कि यकीन भलाइयों और सआदतों के दरमियान राबिता है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون: کتاب العلم وتفضيله، المقام الثالث من اليقين، ج ١، ص ٢٣٥۔

④.....المرجع السابق۔

③.....المرجع السابق، يتغير۔

②.....المرجع السابق۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि यकीन और इस के क़वी व ज़ईफ़ होने का मतलब क्या है तो इस का जवाब येह है कि याद रखो पहले यकीन को समझना फिर इसे त़लब करना और सीखना ज़रूरी है क्यूंकि जिस चीज़ का पता न हो उसे त़लब करना मुमकिन नहीं। लिहाज़ा जान लो कि यकीन एक लफ़्ज़े मुश्तरक है जिसे दोनों फ़रीक़ (या'नी फ़ुक़हा व मुतकल्लिमीन) दो मुख़्तलिफ़ मअ़ानी के लिये बोलते हैं।

यकीन के मुतअल्लिक़ मुतकल्लिमीन की इश्ति़लाह :

मुनाज़िरीन और मुतकल्लिमीन यकीन को अ़दमे शक़ से ता'बीर करते हैं इस लिये किसी शै की तस्दीक़ की तरफ़ नफ़्स के मैलान के चार अहवाल हैं :

﴿1﴾.....तस्दीक़ और तक्ज़ीब का बराबर होना है। इस हालत को शक़ से ता'बीर किया जाता है। **मिषाल :** जब तुम से किसी शख़्से मुअय्यन के बारे में सुवाल किया जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख़्स को अ़जाब देगा या नहीं और तुम्हें उस का हाल मा'लूम न हो तो तुम्हारा नफ़्स उस के बारे में इषबात या नफ़ी का हुक्म लगाने की तरफ़ माइल न होगा बल्कि तुम्हारे नज़दीक़ दोनों बातों का इम्कान बराबर होगा इसी का नाम **शक़** है।

﴿2﴾.....तुम्हारा नफ़्स दो बातों में से एक की तरफ़ माइल हो हालांकि उस की नक़ीज़ (ख़िलाफ़) के मुमकिन होने का शुज़र रखता हो लेकिन येह इम्कान पहली बात के इम्कान की तरजीह को मानेअ़ न हो। **मिषाल :** तुम से ऐसे शख़्स के बारे में पूछा जाए जिस की नेक़ नामी और परहेज़गारी तुम ख़ास तौर पर जानते हो कि अगर वोह इसी हालत पर मर जाए तो क्या उसे अ़जाब होगा तो तुम्हारा नफ़्स उसे अ़जाब होने से ज़ियादा इस बात की तरफ़ माइल होगा कि उसे अ़जाब नहीं होगा और येह अ़लामाते नेकी के ज़ाहिर होने की वजह से है। इस के बावुजूद तुम इस बात को मुमकिन मानते हो कि हो सकता है इस का कोई बात़िनी मुआमला ऐसा हो जिस की वजह से उसे अ़जाब में गिरिफ़्तार होना पड़े। येह इम्कान नफ़्स के इस मैलान के मसावी है ताहम पहले इम्कान की तरफ़ रुजहान को दफ़अ़ नहीं करता। इसी हालत का नाम **ज़न** रखा जाता है।

﴿3﴾.....तुम्हारा नफ़्स किसी शै की तस्दीक़ की तरफ़ इस तरह माइल हो कि वोह नफ़्स पर ग़ालिब आ जाए और दिल में उस के ग़ैर का ख़याल तक न गुज़रे और अगर ख़याल आए भी तो नफ़्स उसे क़बूल करने से इन्कार कर दे लेकिन येह तस्दीक़ मा'रिफ़ते हक़ीक़ी के साथ नहीं

होती क्योंकि अगर इस हालत से दो चार शख्स अच्छी तरह गौरो फ़िक्र करे और तश्कीक व तजवीज़ (शक व जवाज़) की तरफ़ तवज्जोह करे तो उस के नफ़्स में तजवीज़ (जवाज़) की गुन्जाइश निकल आएगी। इस हालत को यकीन के करीब ए'तिक़ाद का नाम दिया जाता है और येह अ़वाम का तमाम शरई मसाइल में ए'तिक़ाद है क्योंकि येह ए'तिक़ाद उन के दिलों में महज़ सुनने से ही रासिख़ हो गया यहां तक कि हर फ़िक़्रा अपने मज़हब के सहीह होने, अपने इमाम और मतबूअ (पेशवा) के दुरुस्त होने पर वुषूक (यकीन) रखता है और अगर इन में से किसी के पास उस के इमाम की ग़लती का इमकान ज़िक्र किया जाए तो वोह इसे तस्लीम नहीं करता।

﴿4﴾.....मा'रिफ़ते हकीक़िय्या जो ऐसी दलील से हासिल हो जिस में कोई शक बल्कि शक का तसव्वुर भी न हो और जब शक का पाया जाना और उस का इमकान मुमतिनअ हो तो मुतकल्लिमीन उसे यकीन का नाम देते हैं। **मिषाल :** जब किसी अक्ल मन्द से पूछा जाए कि क्या कोई ऐसी चीज़ पाई जाती है जो क़दीम हो ? तो उस के लिये फ़ौरी तौर पर उस की तस्दीक़ करना मुमकिन नहीं इस लिये कि क़दीम को महसूस नहीं किया जा सकता कि वोह चांद सूरज की तरह नहीं क्योंकि इन दोनों के पाए जाने की तस्दीक़ हिस्स के ज़रीए होती है। किसी क़दीम शै के वुजूद का इल्म अज़ली और बदीही नहीं जैसे इस बात का इल्म कि दो एक से ज़ियादा है और उस इल्म की तरह भी नहीं कि किसी हादिष का बिग़ैर सबब के पैदा होना मुहाल है कि येह भी बद येही है। लिहाज़ा अक्ले सलीम का तकाज़ा है कि वोह क़दीम के वुजूद की तस्दीक़ को गौरो फ़िक्र के तरीक़े पर मौकूफ़ करे। फिर लोगों में कोई वोह है जो इस बात को सुनता है और सुन कर तस्दीक़ कर देता और इसी पर काइम रहता है येह ए'तिक़ाद है और येह तमाम अ़वाम का हाल है। कोई वोह है जो उस की दलील के साथ तस्दीक़ करता है और वोह येह कि उस से कहा जाए कि अगर वुजूद में कोई क़दीम नहीं तो तमाम मौजूदात हादिष होंगी और अगर तमाम मौजूदात हादिष हैं तो फिर वोह तमाम या उन में से बा'ज़ बिग़ैर किसी सबब के हादिष हैं, येह मुहाल है और मुहाल तक पहुंचाने वाला भी मुहाल होता है। पस अक्ली तौर पर ज़रूरतन किसी क़दीम शै के वुजूद की तस्दीक़ लाज़िम हुई इस लिये कि मौजूदात की तीन किस्में हैं : (1)....तमाम मौजूदात क़दीम हैं (2)....तमाम हादिष (3)....कुछ क़दीम और कुछ हादिष हैं। अगर तमाम मौजूदात क़दीम हों तो मतलूब हासिल हो जाएगा इस लिये कि इस तरह क़दीम का वुजूद षाबित होगा और अगर तमाम हादिष हों तो येह मुहाल है क्योंकि येह बिग़ैर सबब के हुदूष की तरफ़ ले जाता है। लिहाज़ा तीसरी या पहली किस्म षाबित होगी और वोह तमाम उलूम जो इस तरह हासिल हों उन्हें मुतकल्लिमीन यकीन का नाम देते हैं ख़्वाह वोह नज़र व फ़िक्र से हासिल हों जैसा कि हम इस के मुतअल्लिक़ ज़िक्र कर आए या हिस्स से हासिल हों या अक्ले सलीम से जैसा कि इस बात का इल्म कि हादिष का बिग़ैर किसी सबब

के होना मुहाल है या तवातुर के ज़रीए हासिल हो जैसे शहरे मक्काए मुकर्रमा के वुजूद का इल्म या तजरिबे से हासिल हो जैसा कि इस बात का इल्म कि पका हुवा सक्मूनिया दस्त आवर है या दलील से हासिल हो जैसा कि हम ज़िक्र कर चुके हैं।

खुलासा : मुतकल्लिमीन के नज़दीक लफ़्ज़े यकीन का इतलाक़ अदमे शक के वक़्त होता है। लिहाज़ा हर वोह इल्म जिस में शक न हो मुतकल्लिमीन के नज़दीक वोह यकीन है इस बुन्याद पर यकीन ज़ईफ़ के साथ मुत्तसिफ़ नहीं होता क्यूंकि शक की नफ़ी में तफ़ावुत नहीं।

यकीन के मुतअल्लिक़ फ़ुक़हा व सूफ़िया की इस्तिलाह :

फ़ुक़हाए किराम, सूफ़ियाए इज़्ज़ाम और अक़षर इ-लमाए दीन رَحْمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ की मुराद येह है कि यकीन में तजवीज़ और शक के ए'तिबार करने की तरफ़ बिल्कुल तवज्जोह न दी जाए बल्कि अक्ल पर इन के इस्तिलाह और ग़लबे की तरफ़ ध्यान दिया जाए यहां तक कि कहा जाता है कि “फुलां शख्स का मौत पर यकीन कम्ज़ोर है हालांकि इस में कोई शक नहीं।” नीज़ कहा जाता है कि “फुलां शख्स को रिज़्क मिलने पर बड़ा यकीन है हालांकि इस बात का भी इमकान है कि कभी उसे रिज़्क न मिले।”

खुलासा : तो जब कभी दिल किसी शै की तस्दीक़ की तरफ़ माइल हो और येह मैलान इस के दिल पर इतना ग़ालिब आ जाए और दिल को इतना घेर ले कि येह नफ़्स में किसी चीज़ के इम्कान व मन्अ (या'नी होने या न होने) का हुक्म लगाने वाला और तसर्रुफ़ करने वाला हो जाए तो इसे यकीन का नाम दिया जाता है। इस में कोई शक नहीं कि सब लोग मौत के यकीनी होने और इस में शक के न होने में बराबर हैं इस के बा वुजूद उन में ऐसे भी होते हैं जो इस की तरफ़ ध्यान नहीं देते और न मौत की तय्यारी करते हैं गोया उन्हें मौत का यकीन नहीं है और कुछ ऐसे हैं कि जिन के दिल पर मौत की फ़िक्र काबिज़ होती है यहां तक कि उन की सारी हिम्मत मौत की तय्यारी ही में सर्फ़ होती है और मौत की तय्यारी में वोह अपने ग़ैर के लिये कुछ गुन्जाइश नहीं छोड़ते। इस हालत को कुव्वते यकीन से ता'बीर किया जाता है इसी वजह से बा'ज़ ने कहा कि “जिस यकीन में तू शक को न पाए वोह उस शक की मिष्ल है जिस में यकीन न हो जैसे मौत।”⁽¹⁾

इस इस्तिलाह की बुन्याद पर यकीन जो'फ़ और कुव्वत से मुत्तसिफ़ हो सकता है और हमारे इस कौल कि “इ-लमाए आख़िरत की शान येह है कि वोह अपनी कुव्वत, यकीन पुख़्ता करने में सर्फ़ करते हैं।” से दोनों मा'ना मुराद हैं और वोह येह कि शक की नफ़ी फिर

①.....موسوعة الامام ابن ابي الدنيا، كتاب اليقين، الحديث: ٢٢، ج ١، ص ٢٠-

حلية الاولياء، سلمة بن دينار، الرقم: ٣٩٢١، ج ٣، ص ٢٦٩، بتغير قليل-

यकीन को नफ्स पर मुसल्लत करना यहां तक कि वोह उस पर ग़ालिब आ जाए और नफ्स पर हुक्म लगाने वाला और इस में तसरुफ़ करने वाला हो जाए ।

यकीन की अक्शाम :

अगर तुम येह समझ गए हो तो फिर येह भी जान गए होंगे कि हमारे क़ौल का मतलब येह है कि यकीन तीन किस्मों की तरफ़ मुन्क़सिम होता है :

(1)....कुव्वत व जो'फ़ (2)....जुहूर व ख़फ़ा और (3)....कषरत व क़िल्लत ।

कुव्वत व जो'फ़ के ए'तिबार से इस की तक्सीम इस्तिलाहे षानी (फ़ुक़हा की इस्तिलाह) के मुताबिक़ है और इस्तिलाहे षानी दिल पर ग़ालिब आने के ए'तिबार से है और कुव्वत व जो'फ़ में यकीन के मअ़ानी के दर्जात बे इन्तिहा हैं । इन मअ़ानी के ए'तिबार से यकीन के तफ़ावुत के मुताबिक़ मख़्लूक़ मौत की तय्यारी में भी मुख़्तलिफ़ है । **जुहूर व ख़फ़ा** के ए'तिबार से यकीन में तफ़ावुत पहली (या'नी मुतक़ल्लिमीन की) इस्तिलाह के मुताबिक़ है । यकीन का **क़लील और कषीर** होना इस के मुतअल्लिक्कात के कषीर होने की वजह से है । जैसे कहा जाता है कि फुलां शख़्स फुलां से ज़ियादा अ़लिम है या'नी इस की मा'लूमात उस से ज़ियादा है । इसी वजह से कोई अ़लिम तमाम शरई मसाइल में क़वी यकीन वाला होता है और कोई बा'ज़ मसाइल में क़वी यकीन रखता है ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि मैं यकीन, इस के क़वी व ज़ईफ़, कषीर व क़लील, ज़ाहिर व ख़फ़ी होने को शक़ की नफ़ी या दिल पर इस के ग़लबा पाने के मा'ना से समझ गया हूं अब मुझे येह बताएं कि यकीन के मुतअल्लिक्कात और इस के जारी होने का मा'ना क्या है और किस में यकीन मतलूब है ? क्यूंकि मैं इस बात को जाने बिगैर कि यकीन किन बातों में मतलूब है, इसे तलब करने पर क़ादिर नहीं हो सकता । तो इस का जवाब येह है कि जान लो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जो भी अहक़ाम ले कर तशरीफ़ लाए इन तमाम पर यकीन रखना ज़रूरी है इस लिये कि यकीन ख़ास मा'रिफ़त का नाम है जो इन मा'लूमात से मुतअल्लिक्क है जो शरीअत में वारिद हुई हैं, इन्हें शुमार नहीं किया जा सकता ताहम मैं इन में से बा'ज़ की तरफ़ इशारा करूंगा जो इन तमाम की अस्ल हैं ।

(1)....**तौहीद** : और वोह येह है कि सब चीज़ें मुसबिबल अस्बाब (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) की तरफ़ से जानी जाएं और अस्बाब की तरफ़ ध्यान न दिया जाए बल्कि अस्बाब के बारे में येह नज़रिया रखा जाए कि वोह तो खुद मुसख़्ख़र हैं, उन का अपना कोई हुक्म नहीं । पस इस बात

की तस्दीक करने वाला साहिबे यकीन है। जब येह बात षाबित शुदा है कि सूरज, चांद, सितारे, जमादात, नबातात, हैवानात और सारी मख्लूक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के इस तरह ताबेअ है जिस तरह कलम कातिब के हाथ में और येह कि कुदरते अजलिया ही तमाम मख्लूक के सादिर होने का ज़रीआ है तो उस के दिल पर तवक्कुल, रिज़ा और तस्लीम का ग़लबा होगा और वोह ऐसा यकीन वाला होगा जो ग़ज़ब, बुग़ज़ व कीना, हसद और बुरे अख़्लाक से बरी होगा। येह यकीन के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है।

(2).....रिज़क का ज़ामिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है : इस पर यकीन हो कि सब के रिज़क का ज़ामिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है। चुनान्वे, इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا
(پ ۱۲، هود: ۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन पर चलने वाला कोई ऐसा नहीं जिस का रिज़क **अल्लाह** के ज़िम्माए करम पर न हो।

और इस बात का यकीन कि उस का रिज़क उसे मिल कर ही रहेगा और जो कुछ उस के मुक़द्दर में है वोह उस तक ज़रूर पहुंचाया जाएगा। जब येह यकीन उस के दिल पर ग़ालिब आ जाएगा तो वोह तलब में शिद्दत नहीं करेगा, न तो उस की हिर्स व ख़्वाहिश बढ़ेगी और न ही रिज़क के फ़ौत होने पर उसे अफ़सोस होगा। इस यकीन के नतीजे में तमाम नेकियां और उम्दा अख़्लाक हासिल होते हैं।

(3)....इस बात का यकीन रखना कि जो ज़र्रा भर भलाई करेगा उसे देखेगा और ज़र्रा भर बुराई करेगा उसे देखेगा : इस से षवाब व अज़ाब का यकीन मुराद है हत्ता कि वोह षवाब की तरफ़ ताअ़ात की ऐसी ही निस्बत जाने जैसे रोटी की निस्बत शिकम सैरी की तरफ़ है और गुनाहों की निस्बत अज़ाब की तरफ़ ऐसे ख़याल करे जैसे ज़हर और सांपों की निस्बत हलाकत की तरफ़ है। चुनान्वे, जिस तरह वोह शिकम सैरी के लिये रोटी हासिल करने पर हरीस है और इस की कमी व ज़ियादती का ख़याल रखता है इसी तरह तमाम नेकियों पर भी हरीस हो थोड़ी हों या ज़ियादा और जिस तरह ज़हर से इजतिनाब करता है थोड़ा हो या ज़ियादा इसी तरह गुनाहों से भी इजतिनाब करे चाहे कम हो या ज़ियादा, छोटे हों या बड़े। यकीन पहले मा'ना के ए'तिबार से अ़ाम ईमान वालों में भी पाया जाता है और दूसरे मा'ना के ए'तिबार से मुक़रबीन के साथ ख़ास है। इस यकीन का फ़ाइदा येह होता है कि इन्सान अपनी हरकात व सकनात और ख़तरात को

अच्छी तरह देखता रहता है, तक्वा में मुबालगा करता और हर किस्म की बुराई से बचता है। जब यकीन गाबिल हो जाता है तो वोह गुनाहों से बहुत ज़ियादा बचता और हर वक्त फ़रमां बरदारी के लिये तय्यार रहता है।

(4).....**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हर हाल में मुत्तलअ है : इस बात का यकीन कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** हर हाल में तुझ पर मुत्तलअ है, तेरे दिल के वसवसों, पोशीदा ख़तरों और फ़िक्रों को देख रहा है और मा'नए अव्वल जो कि “अदमे शक है” के ए'तिबार से हर मोमिन इस बात का यकीन रखता है। बहर हाल मा'नए षानी जो कि मक्सूद भी है और क़लील भी येह सिर्फ़ सिद्दीकीन के साथ खास है और इस का हासिल येह है कि इन्सान तन्हाई में भी अपने तमाम मुआमलात में अदब को उस शख्स की तरह मलहूजे खातिर रखे जो बहुत बड़े बादशाह के सामने बैठा हो और बादशाह उसे देख रहा हो तो वोह गरदन झुकाए अपने तमाम मुआमलात में बा अदब रहता और ख़िलाफ़े अदब हर बात से बचता है। इसी तरह जब वोह यकीन कर ले कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अलीमो ख़बीर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस की खुफ़्या बातों पर इस तरह मुत्तलअ है जैसे मख़्लूक उस की ज़ाहिरी बातों पर तो वोह अपने बातिनी मुआमलात में भी इस तरह फ़िक्र मन्द होगा जिस तरह अपने ज़ाहिरी मुआमलात में फ़िक्र मन्द होता है बल्कि बातिन को संवारने, इसे पाकीजा रखने और मुजय्यन करने में इस से ज़ियादा मुबालगा करेगा जितना अपने ज़ाहिर को लोगों के लिये मुजय्यन करने में मुबालगा करता है। इस मर्तबे का यकीन हुया, ख़ौफ़, इन्किसारी, अजिजी, मसकनत, खुजूअ और तमाम अच्छे अख़्लाक पैदा करता है जो बुलन्द तरीन ताअतों का सबब हैं। लिहाजा यकीन उन तमाम उमूर में से हर अम्र में एक दरख़्त की मिष्ल है और येह अख़्लाक दिल में उन शाख़ों की मिष्ल हैं जो यकीन के दरख़्त से निकली हों और अख़्लाक से सादिर होने वाले आ'माल और ताआत उन फूलों और शिगूफ़ों की तरह हैं जो टहनियों से निकलते हैं। पस यकीन अस्ल और बुन्याद है इस के जारी होने के कई अबवाब हैं जो हमारी ज़िक्र कर्दा तफ़सील से बहुत ज़ियादा है। अन करीब इन का ज़िक्र **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मुन्जियात (या'नी नजात देने वाले उमूर) के बयान में आएगा। इस वक्त यकीन के बारे में इतनी तफ़सील ही काफ़ी है।

(9)....उ-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक येह है कि ऐसा अ़ालिम गुमगीन हो कर इन्किसारी से सर झुकाए ख़ामोश रहे और ख़शियत का अषर उस की सीरत व सूरत, लिबास, हरकात व सकनात, बोलने और ख़ामोश रहने से ज़ाहिर हो, देखने वाला जब उसे देखे तो उसे **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** याद आ जाए, उस की सूरत उस के अमल पर दलील हो और उस का ज़ाहिर उस के बातिन का आईना हो। नीज़ उ-लमाए आख़िरत सुकून, अजिजी और तवाज़ोअ में

अपनी पेशानियों से पहचाने जाते हैं। मन्कूल है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ बन्दे को वकार के साथ अजिजी से ज़ियादा खूबसूरत लिबास नहीं पहनाता और येही अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का लिबास है और सालेहीन व सादिकीन को भी इस लिबास से ख़ास किया जाता है।”⁽¹⁾ जब कि ज़ियादा गुफ्तगू करना, हर वक़्त हंसी मज़ाक़ करना, हरकत व गुफ्तगू में तेज़ी दिखाना, येह तमाम तकब्बुर की अलामात हैं। बे ख़ौफ़ी और गुफ़लत **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाबो में से एक बड़ा अज़ाब और उस की सख़्त नाराज़ी का बाईष है। येह मा’रिफ़ते इलाही रखने वालों का तरीक़ा नहीं बल्कि दुन्यादारों का तरीक़ा है जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से गुफ़िल होते हैं।

उ-लमा की अक्शाम :

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि उ-लमा की तीन अक्शाम हैं :

(1)....वोह उ-लमा जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के अवामिर से वाक़िफ़ हैं लेकिन इस के अय्याम को नहीं जानते। येह हलाल व हराम का फ़तवा देने वाले मुफ़्ती हैं और येह ऐसा इल्म है जिस से ख़ौफ़े खुदा पैदा नहीं होता।

(2)....वोह उ-लमा जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान तो रखते हैं मगर न तो उस के अवामिर को जानते हैं और न ही अय्याम से वाक़िफ़ होते हैं, येह आम मोअमिनीन हैं।

(3)....वोह उ-लमा जो **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाने के साथ साथ उस के अवामिर और अय्याम का इल्म भी रखते हैं। येह सिद्दीकीन हैं, इन पर ख़शिyyत व खुशूअ का ग़लबा रहता है।⁽²⁾

اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के अय्याम से मुराद उस की पोशीदा सज़ाएं और बातिनी ने’मतें हैं जो **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने गुज़रे हुए लोगों पर उतारीं। लिहाज़ा जिस शख़्स का इल्म इस का इहाता कर लेगा इस के ख़ौफ़े खुदा में इज़ाफ़ा और खुशूअ व खुजूअ ज़ाहिर होगा।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “इल्म सीखो और इल्म के लिये सकीना, वकार और हिल्म सीखो, जिस से इल्म सीखते हो उस के सामने अजिजी इख़्तियार करो और जो तुम से इल्म सीखे वोह तुम्हारे सामने अजिजी और तवाज़ोअ इख़्तियार करे। तकब्बुर करने वाले उ-लमा में से न होना ताकि तुम्हारा इल्म तुम्हारी जहालत की तरह न हो जाए।”⁽³⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، ج ١، ص ٢٢٢ - ②.....المرجع السابق -

③.....الزهد للإمام أحمد بن حنبل، زهد عمر بن الخطاب، الحديث: ٦٣٠، ص ١٢٨ -

شعب الايمان للبيهقي، باب فى نشر العلم، الحديث: ١٤٨٩، ج ٢، ص ٢٨٤ -

मुत्तकीन का इमाम :

मन्कूल है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जिस बन्दे को इल्म अता फ़रमाता है उसे हिल्म, अज़िज़ी, अच्छे अख़लाक और नमी भी अता फ़रमाता है और येही इल्मे नाफ़ेअ है।” एक रिवायत में है कि “जिस बन्दे को **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इल्म, ज़ोहद, अज़िज़ी और अच्छे अख़लाक अता फ़रमाए वोह मुत्तकीन का इमाम है।”⁽¹⁾

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मेरी उम्मत के बेहतरीन लोगों में से कुछ ऐसे हैं जो ब ज़ाहिर रहूँते इलाही की वुस्अत के सबब खुश होते हैं लेकिन बातिनी तौर पर अज़ाबे इलाही के ख़ौफ़ से गिर्या कुनां रहते हैं। उन के बदन तो ज़मीन पर होते हैं लेकिन दिल आस्मान पर, उन की रूहें दुन्या में मगर अक्लें आख़िरत में (नजात के हुसूल में मगन) होती हैं। इतमीनान और पुर सुकून अन्दाज़ से चलते और वसीले के ज़रीए कुर्ब हासिल करते हैं।”⁽²⁾

इल्म का वज़ीर, बाप और लिबास :

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “हिल्म इल्म का वज़ीर, नमी उस का बाप और तवाज़ोअ उस का लिबास है।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “जिस ने इल्म के ज़रीए सरदारी चाही वोह बारगाहे इलाही में ऐसे हाज़िर होगा कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस से नाराज़ होगा और वोह ज़मीन व आस्मान में मबगूज़ होगा।”⁽⁴⁾

जिस अमल में रिज़ाए इलाही मक्शूद न हो वोह मर्दूद है :

इसराईली मरविख्यात में है कि एक हकीम ने हिक्मत पर 360 किताबें लिखीं यहां तक कि हकीम के नाम से मशहूर हो गया। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उस क़ौम के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वह्य कि “फुलां शख़्स से कह दो तूने ज़मीन को कषरते कलाम से भर दिया लेकिन इस से मेरी

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٢۔

②.....المستدرک، کتاب الهجرة، باب وصف اهل الصفة مفصلاً، الحديث: ٢٣٥٠، ج ٣، ص ٥٥٢۔

حلیة الاولیاء، مقدمة المصنف، الحديث: ٢٨، ج ١، ص ٢٨۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٢۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٥۔

रिज़ा का इरादा नहीं किया, मैं तेरे कपीर कलाम में से कुछ भी क़बूल नहीं करूंगा।” फिर उस शख़्स ने शर्मिन्दा हो कर येह काम छोड़ दिया और आम लोगों के साथ मिल जुल कर बाज़ारों में चलना फिरना शुरू कर दिया, बनी इसराईल के साथ खाना पीना इख़्तियार कर लिया और अज़िज़ी व इन्किसारी का पैकर बन गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस दौर के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई कि “उस से कह दो अब तुझे मेरी रिज़ा की तौफ़ीक़ हासिल हुई है।”⁽¹⁾

सिपाही से ज़ियादा बुरे :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अवज़ाई رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى के हवाले से बयान करते हैं वोह फ़रमाया करते थे कि “तुम में से कोई सिपाही को देखता है तो उस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह मांगता है और उ-लमाए दुन्या को देखता है जो मख़्लूक और हुकूमत के शौक में बनावट इख़्तियार किये होते हैं तो उन को बुरा नहीं समझता हालांकि वोह उस सिपाही से ज़ियादा बुरे समझे जाने के हक़दार हैं।”⁽²⁾

सब से बुरे लोग :

मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अफ़ज़ल अमल कौन सा है ?” इरशाद फ़रमाया : “महरमात से बचना और हर वक़्त ज़िक्रुल्लाह से अपनी ज़बान को तर रखना।” फिर अर्ज़ की गई : “अच्छा दोस्त कौन है ?” इरशाद फ़रमाया : “ऐसा दोस्त कि अगर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो वोह तेरी मदद करे और अगर तू अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र को भूल जाए तो वोह तुझे याद दिलाए।” फिर अर्ज़ की गई : “बुरा दोस्त कौन है ?” इरशाद फ़रमाया : “बुरा दोस्त वोह है कि अगर तू अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ को भूल जाए तो वोह तुझे याद न दिलाए और अगर तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो वोह तेरी मदद न करे। फिर अर्ज़ की गई : “लोगों में बड़ा अज़लिम कौन है ?” इरशाद फ़रमाया : “लोगों में से सब से ज़ियादा ख़ौफ़े खुदा रखने वाला। अर्ज़ की गई : “हमें हमारे अच्छे लोगों के बारे में ख़बर दीजिये ताकि हम उन के साथ बैठा करें। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिन्हें देखने से खुदा याद आ जाए।” अर्ज़ की गई : “लोगों में से बुरे कौन हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मग़फ़िरत फ़रमा।” लोगों ने फिर अर्ज़ की :

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٢٦۔

②.....المرجع السابق، ص ٢٢٥۔

“या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليك وسلم हमें उन के बारे में ख़बर दीजिये !” इरशाद फ़रमाया :
 “उ-लमा, जब फ़साद बरपा करें।”⁽¹⁾

अब्बाह عز وجل के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 “बरोज़े क़ियामत लोगों में से सब से ज़ियादा अम्न में वोह लोग होंगे जो दुन्या में सब से ज़ियादा फ़क्र में रहे होंगे, आख़िरत में लोगों में से सब से ज़ियादा वोह लोग हंसेगे जो दुन्या में सब से ज़ियादा रोए होंगे और आख़िरत में लोगों में से सब से ज़ियादा खुश वोह लोग होंगे जो दुन्या में बहुत ज़ियादा गुमगीन रहे होंगे।”

सब से बड़ा जाहिल :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम ने अपने एक खुतबे में इरशाद फ़रमाया : “मेरा ज़िम्मा रहन है और मैं इस का ज़ामिन हूं कि तक्वा पर किसी क़ौम की खेती नहीं सूखेगी (या'नी जो रिज़ाए इलाही के लिये अमल करेगा उस का अमल बातिल नहीं होगा) और हिदायत पर होते हुए उस की जड़ को प्यास नहीं लगेगी। लोगों में से सब से बड़ा जाहिल वोह शख्स है जो अपनी क़द्र नहीं पहचानता और **अब्बाह** عز وجل की बारगाह में मख़्लूक में से सब से ज़ियादा नापसन्दीदा वोह है जो इल्म जम्अ करता और इस के ज़रीए फ़ितने के अंधेरों में ग़ौते खाता है, उस जैसे और ज़लील तरीन लोग उसे आलिम कहते हैं हालांकि वोह पूरा एक दिन भी इल्म में नहीं गुज़ारता, सुब्ह सवेरे उस चीज़ की कषरत करता है जिस का थोड़ा उस के ज़ियादा से बेहतर है हत्ता कि जब वोह बदबूदार पानी से सैराब होता और बेकार कामों में ज़ियादती करता है तो लोगों का उस्ताज़ बन बैठता है ताकि उन कामों से ख़लासी दिलाए जो दूसरों पर मुश्तबा हो गए हैं और मुबहिमात में से कोई चीज़ उस के सामने पेश हो तो उस के लिये अपनी राए से ग़लत क़ियास काइम कर लेता है। वोह शख्स शुब्हात को ख़त्म करने में मकड़ी के जाले की मिष्ल है। वोह नहीं जानता कि वोह राहे रास्त पर है या ग़लती पर। बहुत सी जहालतों का पलन्दा और बिगैर सूझ बूझ के बेढंगी बातें करने वाला है। जिस बात का इल्म नहीं उस के बताने से उज़्र नहीं करता कि बच जाए और न ही इल्म पर मज़बूती हासिल करता है कि ग़नीमत पाए। उस की वजह से खून बहते हैं। उस के फैसलों से ज़िना हलाल होते हैं। जो सुवाल उस से किया जाए उस का जवाब नहीं दे सकता और जो उस के हवाले किया जाए उस की अहलिय्यत नहीं रखता। येही वोह लोग हैं जो सज़ाओं के हक़दार हैं। इन पर उम्र भर रोना और नौहा करना चाहिये।”⁽²⁾

.....المرجع السابق، ص ۲۴۶، بتغير قليل۔

.....قوت القلوب، ص ۲۴۶۔

मजीद फ़रमाते हैं कि “जब इल्म की बात सुनों तो ख़ामोश रहो और इसे बेहूदा बातों से न मिलाओ वरना दिल इस की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।”⁽¹⁾

बा'ज अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने फ़रमाया : “अलिम जब एक मरतबा हंसता है तो इल्म का एक लुक़्मा निकाल फैंकता है।”⁽²⁾

उस्ताज़ व शागिर्द की तीन उम्दा ख़स्लतें :

मन्कूल है कि “अगर उस्ताज़ में तीन बातें हों तो इस के सबब शागिर्द पर ने'मते मुकम्मल हो जाती है : (1)....सब्र (2)....अज़िज़ी और (3)....अच्छे अख़्लाक़ और अगर शागिर्द में तीन बातें हों तो इस के सबब उस्ताज़ पर ने'मत कामिल हो जाती है : (1)....अक्ल (2)....अदब और (3)....अच्छी समझ।”⁽³⁾

अल मुख़्तसर उ-लमाए आख़िरत कुरआने हकीम में बयान कर्दा अख़्लाक़ से कभी भी जुदा नहीं होते इस लिये कि वोह अमल के लिये कुरआने मजीद सीखते हैं न कि हुकूमत के हुसूल के लिये।

कुरआन से पहले ईमान :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “हम ने एक ज़माना गुज़ारा है कि हम में से हर एक को ईमान कुरआन से पहले दिया गया जब कोई सूरत नाज़िल होती तो वोह उस के हलाल व हराम, अवामिर व नवाही को सीख लेता और जहां तवक्कुफ़ करना मुनासिब होता वहां तवक्कुफ़ करता और मैं ने ऐसे लोगों को भी देखा जिन में से किसी को ईमान से पहले कुरआन दिया गया वोह सूरए फ़ातिहा से ले कर आख़िर तक सारा कुरआने पाक पढ़ लेता है लेकिन उस के अवामिर व नवाही को नहीं जानता और न येह जानता है कि कहां तवक्कुफ़ करना मुनासिब है। वोह उसे रद्दी खज़ूरो की तरह बिखेरता चला जाता है।”⁽⁴⁾

एक रिवायत में इस तरह मफ़हूम है कि “हमें (या'नी सहाबए किराम को) कुरआन से पहले ईमान अता हुवा और अज़ क़रीब ऐसे लोग आएंगे जिन्हें ईमान से पहले कुरआन मिलेगा। वोह इस के हुरूफ़ को तो दुरुस्त करेंगे लेकिन इस की हुदूद और इस के हुकूक़ ज़ाएअ करेंगे। वोह कहेंगे कि हम ने कुरआने पाक पढ़ा है हम से बड़ा क़ारी कौन है ? हम ने सीखा है, हम से बड़ा अलिम कौन है ? पस इन का हिस्सा येही है।”

①.....قوت القلوب، ص २५०.....②.....المرجع السابق، ص २५१.....③.....المرجع السابق، ص २५१.....

④.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب البيان انه انما قيل.....الخ، الحديث: ५२९०، ج ३، ص १८१.....

एक रिवायत में इतना ज़ाइद है कि “वोह इस उम्मत के बुरे लोग हैं।”⁽¹⁾

पांच अच्छे अख़लाक :

मन्कूल है कि “किताबुल्लाह की पांच आयात में, से जो पांच अख़लाक समझे गए हैं वोही उ-लमाए आख़िरत की अलामात हैं : (1) खौफ़ (2) खुशूअ (3) अजिजी (4) हुस्ने अख़लाक और (5) आख़िरत को दुन्या पर तरजीह देना या'नी जोहद इख़्तियार करना।”

ख़शियत : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान से षाबित है :

إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ^ط
(प २२, फातर: २८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

खुशूअ : इस आयते मुबारका से षाबित है :

خَشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا^ط (प ३, अल عمران: १९९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन के दिल अल्लाह के हुज़ूर झुके हुए, अल्लाह की आयतों के बदले ज़लील दाम नहीं लेते।

तवाज्जोअ : का ज़िक्र इस आयते मुक़द्दसा में है :

وَاحْزَنْ جَانِحًا لِلْمُؤْمِنِينَ[Ⓜ] (प १३, الحجر: ८८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मुसलमानों को अपनी रहमत के परो में ले लो।

हुस्ने अख़लाक : का षुबूत इस फ़रमाने बारी तअ़ला से है :

فَبَارِحْهُ مِنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ^ج
(प ३, अल عمران: १५९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी कुछ अल्लाह की मेहरबानी है कि ऐ महबूब ! तुम उन के लिये नर्म दिल हुए।

जोहद : का बयान इस आयते तय्यिबा में है :

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ أَمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا^ع
(प २०, القصص: ८०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बोले वोह जिन्हें इल्म दिया गया ख़राबी हो तुम्हारी अल्लाह का षवाब बेहतर है उस के लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج १، ص २५०-२५१

“يُشْرَحُ صَدْرُهُ” से मुराद :

आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जब येह आयते मुबारका तिलावत फरमाई :

فَمَنْ يَرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحُ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ (پ ۸، الانعام: ۱۲۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जिसे **अल्लाह** राह दिखाना चाहे उस का सीना इस्लाम के लिये खोल देता है।

तो अर्ज की गई : “شرح” से क्या मुराद है ? आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “जब नूर दिल में डाला जाता है तो इस के लिये सीना खुल जाता और कुशादा हो जाता है।” फिर अर्ज की गई : “क्या इस की कोई अलामत भी है ? इरशाद फरमाया : “हां ! धोके के घर (या’नी दुन्या) से दूर रहना और दाइमी घर (या’नी आखिरत) की तरफ रुजूअ करना और मौत से पहले उस के लिये तय्यार रहना।” (1)

﴿11﴾.....उ-लमाए आखिरत की अलामात में से येह है कि उन की गुफ्तगू अकषर आ’माल के इल्म और उन उमूर के मुतअल्लिक होती है जो फ़सादे आ’माल का बाइष बनते, दिलों को तश्वीश में मुब्तला करते, वस्वसे पैदा करते और शर को फैलाते हैं। क्यूंकि दीन की अस्ल, बुराई से बचना है। इसी लिये किसी ने क्या खूब कहा है :

عَرَفْتُ الشَّرَّ لَا لِلشَّرِّ لَكِنْ لِتَوْفِيهِ وَمَنْ لَا يَعْرِفِ الشَّرَّ مِنَ النَّاسِ يَقَعُ فِيهِ

तर्जमा : मैं शर को सिर्फ शर होने की वजह से नहीं पहचानता बल्कि इस से बचने के लिये भी पहचानता हूं। लोगों में से जो भी शर को नहीं पहचानता वोह इस में पड़ ही जाता है।

और इस की वजह येह भी है कि जो आ’माल फे’ली (या’नी ज़ाहिरी आ’जा से किये जाते) हैं वोह आसान हैं और इन से भी बुलन्द तर और अज़ीम अमल ज़बान और दिल से हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जिक्र करते रहना है और शान तो उन चीज़ों के जानने में है जो फ़सादे आ’माल और दिली तश्वीश का बाइष बनती हैं। इस के शो’बाजात बहुत ज़ियादा और तफ़रीआत बहुत लम्बी हैं। राहे आखिरत पर चलने के लिये इन तमाम की हाजत पड़ती है जब कि आम लोग इस में मुब्तला हैं।

जहां तक उ-लमाए दुन्या की बात है तो वोह हुकूमत और फैस्लों में नादिर तफ़रीआत की पैरवी करते हैं और ऐसी सूरतें वज़अ करते नहीं थकते जो ज़मानों तक कभी वाक़ेअ न हो

और अगर कभी वाक़ेअ हों भी तो उन का वुकूअ किसी ख़ास ज़माने में किसी और के लिये हो नीज़ जब उन का वुकूअ हो तो उन के बताने वाले कई लोग मौजूद हों और जिस चीज़ से हर वक़्त उन का वासिता पड़ता है और रात दिन उन के दिलों, वस्वसों और आ'माल में उस की तकरार होती है उसे छोड़े बैठे हैं।

वाजेह नुक़्शान :

वोह शख़्स सआदत मन्दी से कितना दूर है जो अपने लिये ज़रूरी चीज़ को किसी नादिर ज़रूरत के बदले फ़रोख़्त कर देता और इस तरह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के कुर्ब के बदले मख़्लूक के कुर्ब और क़बूलिय्यत को इख़्तियार कर लेता है और उस का शर इस में है कि दुन्या के बातिल परस्त लोग इसे फ़ाज़िल, मुहक्क़क़, उलूमे अक्लिyyा और पेचीदा इबारात व मसाइल का अ़ालिम जानें। **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से उस बन्दे की जज़ा येह है कि उसे दुन्या में लोगों में मक्बूलिय्यत हासिल नहीं होती बल्कि उस पर ज़माने के मसाइब उंडेल दिये जाते हैं फिर वोह क़ियामत के दिन मुफ़्लसी की हालत में आएगा और अमल करने वालों का नफ़अ और मुक़रबीन की कामयाबी देख कर हसरत करेगा और येही वाजेह (खुला) नुक़्शान है।

कलामे अम्बिया के मुशाबेह कलाम :

बेशक हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** का कलाम अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के कलाम के ज़ियादा मुशाबेह था और ब ए'तिबारे हिदायत लोगों में सब से ज़ियादा आप **رَضَوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** सहाबए किराम के करीब थे। उन के हक़ में इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है।

नीज़ उन का अकषर कलाम दिलों के ख़तरात, आ'माल के फ़साद, नफ़्स और दिल के वस्वसों और नफ़्स की पोशीदा ख़्वाहिशात के बारे में होता था। एक बार उन से पूछा गया : “ऐ अबू सईद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَجِيد** आप ऐसा कलाम फ़रमाते हैं जो आप के सिवा हम किसी से नहीं सुनते। आप इसे कहां से हासिल करते हैं ?” फ़रमाया : “हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ख़िदमत में अर्ज़ की गई : “हम आप को इस हाल में देखते हैं कि आप ऐसा कलाम करते हैं जो दीगर सहाबए

1.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج 1، ص 258، بتغير۔

किराम رَضَوَانِ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ से नहीं सुना जाता । आप ने इसे कहां से हासिल किया ?” आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे इस कलाम से खास फ़रमाया कि लोग आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़ैर के बारे में पूछते थे जब कि मैं शर के बारे में सुवाल करता था इस ख़ौफ़ से कि कहीं बुराई में मुब्तला न हो जाऊं और मैं ये बात जानता था कि भलाई का इल्म मुझ से आगे नहीं बढ़ सकता ।” एक मरतबा यूँ फ़रमाया : “मैं जानता था कि जो बुराई को नहीं जानता वोह भलाई को भी नहीं जानता ।”

एक रिवायत में इस तरह है कि सहाबए किराम رَضَوَانِ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ अर्ज किया करते : “या रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْكَ وَسَلَّمَ जो कोई फुलां फुलां नेक काम करे उस का अज़्र क्या है ?” वोह आ’माल के फ़ज़ाइल के मुतअल्लिक़ पूछते थे जब कि मैं अर्ज करता : “या रसूलुल्लाह صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْكَ وَسَلَّمَ फुलां फुलां अमल के फ़साद का बाइष कौन सी चीज़ है ? जब आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने देखा कि मैं आ’माल की आफ़ात के बारे में सुवाल करता हूँ तो मुझे इस इल्म के साथ खास फ़रमाया ।”⁽¹⁾

राजद्वार सहाबी :

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को मुनाफ़िक्कीन के बारे में खुसूसी इल्म था । इल्मे निफ़ाक़, इस के अस्बाब और फ़ितनों की पेचीदगियों की मा’रिफ़त में आप को इनफ़िरादी हैषियत हासिल थी । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी और बड़े बड़े सहाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से आ़म व खास फ़ितनों और मुनाफ़िक्कीन के बारे में पूछ करते तो आप उन्हें जवाब देते कि इतने मुनाफ़िक्कीन बाकी रह गए हैं लेकिन उन के नाम न बताते । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जब अपने बारे में पूछते कि क्या मुझ में भी निफ़ाक़ पाया जाता है तो आप उन्हें इस से बरी करार देते । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को जब किसी का जनाज़ा पढ़ाने के लिये कहा जाता तो देखते अगर हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ मौजूद होते तो पढ़ाते वरना नहीं । हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को साहिबे सिर (या’नी राज़दान) कहा जाता था ।⁽²⁾

①.....صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب علامات النبوة فی الاسلام، الحدیث: ۳۶۰۶، ج ۲، ص ۵۰۲۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۵۸۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۵۸۔

उ-लमाए आखिरत के तरीकों में से एक तरीका दिल के मकामात और इस के अहवाल पर नज़र रखना भी है। क्योंकि दिल ही तो है जो **अल्लाह** عز وجل के कुर्ब की तरफ सअय करता है लेकिन अब ये फन नादिर हो गया है और जब कोई आलिम इस में से किसी चीज़ को हासिल करने की कोशिश करता है तो लोग उस पर तअज्जुब करते और उसे बईद जानते हैं और कहा जाता है कि येह तो वाइजीन का अपने कलाम को मुजय्यन करना है तहकीक कहां है और तहकीक को महज झगड़ा खयाल करते हैं। किसी ने सच कहा है :

الطَّرِيقُ شَتَّى وَطَرِيقُ الْحَقِّ مُفْرَدَةٌ وَالسَّالِكُونَ طَرِيقَ الْحَقِّ أَفْرَادُ
لَا يَعْرِفُونَ وَلَا تُدْرَى مَقَاصِدُهُمْ فَهُمْ عَلَى مَهْلٍ يَمْشُونَ قُصَادُ
وَالنَّاسُ فِي غَفْلَةٍ عَمَّا يُرَادُ بِهِمْ فَجُلُّهُمْ عَنْ سَبِيلِ الْحَقِّ رُقَادُ

तर्जमा : (1) रास्ते तो मुख्तलिफ हैं मगर हक़ का रास्ता एक ही है और हक़ के रास्ते पर चलने वाले भी मुन्फरिद होते हैं।

(2) न उन्हें कोई पहचानता है और न उन के मक़सिद मा'लूम होते हैं पस वोह राहे हक़ का इरादा कर के चलते हैं।

(3) और लोग उन के मक़सिद से ग़ाफ़िल हैं क्यूंकि कषीर लोग हक़ के रास्ते से ग़ाफ़िल हैं।

इल्मे यकीन, अहवाले कल्ब और बातिनी सिफ़ात के आलिम :

खुलासा : येह कि अकषर लोग आसान और तबीअत के मुवाफ़िक चीज़ की तरफ़ माइल होते हैं इस लिये कि हक़ कड़वा है इस पर काइम रहना मुश्किल, इसे हासिल करना दुश्वार और इस का रास्ता पेचीदा है। खुसूसन दिल की सिफ़ात को जानना और इसे मजमूम अख़्लाक से पाक करना इस लिये कि येह हमेशा जांकनी की हालत होती है और ऐसा शख्स दवा पीने वाले की तरह होता है जो शिफ़ा की उम्मीद रखते हुए दवा की कड़वाहट पर सब्र करता है और उस शख्स की तरह होता है जो तमाम उम्र रोज़ों में गुज़ारता और मसाइब को बरदाश्त करता है ताकि मौत के वक़्त उस की ईद हो, ऐसे तरीके में रग़बत की कषरत कैसे हो सकती है। इसी वजह से कहा गया है कि शहरे बसरा में 120 हज़रात वा'ज़ व नसीहत करते थे लेकिन सिवाए तीन के इल्मे यकीन, दिलों के अहवाल और बातिन की सिफ़ात के बारे में कलाम करने वाला कोई नहीं था इन में एक हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी, दूसरे हज़रते सय्यिदुना सबीही और तीसरे हज़रते सय्यिदुना अब्दुरहीम رَحِمَهُمُ اللهُ السُّبَيْنِي थे। दूसरों की सोहबत में कषीर लोग बैठते थे जिन का शुमार नहीं जब कि इन के पास बहुत कम लोग होते थे कभी कभार 10 से ज़ियादा

हो जाते थे और इस की वजह यह है कि नफ़ीस और उम्दा के क़ाबिल खास लोग ही होते हैं जब कि अ़वाम के पास जो कुछ होता है वोह आसान होता है ।

﴿11﴾....उ-लमाए आख़िरत की निशानियों में से एक निशानी यह है कि वोह दिल की सफ़ाई के साथ साथ अपने उलूम में बसीरत और इस के इदराक पर ए'तिमाद करते हैं, न कि किताबों पर और न उस चीज़ की तक़लीद पर जो किसी ग़ैर से सुनी हो और बिलाशुबा तक़लीद सिर्फ़ साहिबे शरीअत की है ⁽¹⁾ हर उस चीज़ में जिस का आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुक्म या उस के बारे में कुछ इरशाद फ़रमाया हो और सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की तक़लीद भी इस हैषियत से की जाए कि यकीनन इन के अफ़़ाल रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुनने पर दलालत करते हैं ।

फिर जब वोह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अक्वाल व अफ़़ाल को क़बूल कर के आप की तक़लीद कर ले तो चाहिये कि अब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के असरार को समझने पर हरीस हो जाए क्यूंकि तक़लीद करने वाला येह काम इस लिये करता है कि साहिबे शरीअत ने ऐसा किया और इन के ऐसा करने में ज़रूर कोई राज़ होगा । लिहाज़ा आ'माल और अक्वाल के असरार ख़ूब तलाश कर ले इस लिये कि अगर वोह सुनी हुई बात को याद करने पर ही इक्तिफ़ा करेगा तो गोया वोह इल्म का एक बरतन हो कर ही रह जाएगा अ़लिम नहीं होगा ।

वोह इल्म का बरतन है न कि अ़लिम :

कहा जाता था कि फुलां शख़्स इल्म के बरतनों में से एक बरतन है उसे अ़लिम नहीं कहा जाता था क्यूंकि वोह हिक्मतों और राज़ों पर मुत्तलअ़ हुए बिग़ैर सिर्फ़ हाफ़िज़ हो कर रह जाता था और जो शख़्स अपने दिल से पर्दों को दूर करता और हिदायत के नूर से रोशन हो जाता है उस की पैरवी और तक़लीद की जाती है उस वक़्त उसे किसी दूसरे की तक़लीद नहीं करनी चाहिये इसी वजह से हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : “रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सिवा हर एक के इल्म से कुछ लिया जाता और कुछ छोड़ दिया जाता है ।” ⁽²⁾

①यहां तक़लीद से इत्तिबाअ़ मुराद है न कि वोह जो फ़िक्ह में अइम्माए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السّلام की होती है । तक़लीद के बारे में तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيهِ رَحْمَةُ الْمَنّان की माया नाज़ तस्नीफ़ “जाअल हक़” हिस्सा अव्वल (मतबूआ कादिरी पब्लिशर्ज़ लाहोर) सफ़्हा 20 ता 38 का मुतालअ़ा कीजिये । इल्मिय्या

②.....المعجم الكبير، الحديث: 11941، ج 1، ص 299، بتغير-

सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के उस्ताज़ :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़िक़ह में हज़रते ज़ैद बिन षाबित रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के और क़िराअत में हज़रते सय्यिदुना अबी बिन का'ब रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के शागिर्द थे। फिर फ़िक़ह और क़िराअत में इन दोनों से इख़्तिलाफ़ भी किया।⁽¹⁾

बा'ज बुजुर्गों ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जानिब से हमारे पास जो कुछ आया हम ने उस तमाम को सर और आंखों से क़बूल किया और सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की तरफ़ से जो कुछ आया उस में से हम ने कुछ ले लिया और कुछ छोड़ दिया और ताबेईन की जानिब से जो कुछ मिला तो वोह भी इन्सान थे और हम भी इन्सान हैं।⁽²⁾

सहाबए किराम रِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ को फ़ज़ीलत देने की वजह :

सहाबए किराम रِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ को इस लिये फ़ज़ीलत दी गई कि उन्होंने ने प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अहवाले मुबारका के क़राइन का मुशाहदा किया, उन के दिल उन उमूर से मुतअल्लिक़ थे जो क़राइन से मा'लूम हुए और येही बात उन की दुरुस्ती की वजह है क्यूंकि रिवायत और इबारत में मुशाहदे का दख़ल नहीं होता उन पर नूरे नबुव्वत का इतना फ़ैज़ान था कि वोह अकषर ख़ता से महफूज़ रहते थे। लिहाज़ा जब किसी से सुनी सुनाई बात पर भी ए'तिमाद करना एक नापसन्दीदा तक्लीद है तो फिर किताबों पर ए'तिमाद करना तो इस से भी बर्इद है।

तस्नीफ़ व तालीफ़ की इब्तिदा कब से हुई :

किताबें बा'द में लिखी गई हैं ज़मानए सहाबा व ताबेईन के इब्तिदाई दौर में इन का वुजूद तक नहीं था येह हिजरत के 120 बरस बा'द तमाम सहाबए किराम और ताबेईने उज़्ज़ाम मषलन हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब, हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी और दीगर अकाबिर ताबेईने उज़्ज़ाम रِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के विसाल के बा'द तालीफ़ हुई। बल्कि सहाबए किराम और ताबेईने उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तो अहादीष लिखना और किताबें तस्नीफ़ करना नापसन्द जानते थे इस वजह से कि कहीं लोग अहादीष को ज़बानी याद करने, कुरआने पाक में तदब्बुर करने और इस के समझने से गाफ़िल हो कर इन किताबों ही में मशगूल न हो जाएं। येह हज़रात फ़रमाया करते थे कि जिस तरह हम याद करते थे तुम भी इस तरह याद करो।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج 1، ص 242.

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج 1، ص 242.

कुरआने पाक किताबी सूरत में :

येही वजह थी कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक्बर और दीगर सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ की एक जमाअत ने कुरआने पाक को मुस्हफ़ में जम्अ करने को नापसन्द जाना और फ़रमाया कि हम वोह काम क्यूं करें जो हमारे प्यारे आका मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नहीं किया और इस बात से डरते थे कि कहीं लोग मुस्हफ़ ही पर ए'तिमाद न कर बैठें इस लिये उन्होंने ने फ़रमाया : “हम कुरआने पाक को इस तरह रहने देते हैं कि लोग एक दूसरे को पढ़ाएं सिखाएं ताकि उन का शग़ल और मक्सूद येही रहे ।” यहां तक कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ और बा'ज दीगर सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने इस अन्देशे के बाइष कुरआने पाक की किताबत का मश्वरा दिया कि कहीं लोग सुस्ती का शिकार हो कर इसे छोड़ न बैठें और इस ख़ौफ़ से कि कहीं ऐसा न हो कि इस में झगड़ा हो और कोई अस्ल नुस्खा न मिले जिस की मदद से किसी मुतशाबेह कलिमे या क़िराअत में दुरुस्ती की जा सके फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का सीना भी खुल गया । चुनान्वे, आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने कुरआने पाक को मुस्हफ़ में जम्अ फ़रमा दिया ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّلُ मुवत्ता इमामे मालिक की तस्नीफ़ के बारे में हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِقِ पर ए'तिराज़ करते और फ़रमाते कि “इन्होंने ने वोह काम किया जो सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने नहीं किया ।”

इस्लाम में तस्नीफ़ की जाने वाली इब्तिदाई कुतुब :

मन्कूल है कि इस्लाम में सब से पहले इब्ने जुरैज की किताब तस्नीफ़ हुई जिस में आषार और हज़रते अता, मुजाहिद और इब्ने अब्बास के दीगर शागिर्दों से मन्कूल तफ़ासीर हैं येह किताब मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में तस्नीफ़ हुई । फिर यमन में हज़रते सय्यिदुना मा'मर बिन राशिद सनअनी قُدَّاسِ سِرَّةِ النُّوَرَانِ की किताब तस्नीफ़ हुई जिस में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मरवी अहदादीष हैं । फिर मदीनए तय्यिबा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْخَالِقِ की “मुवत्ता” । फिर हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की किताब “जामेअ” तस्नीफ़ हुई । फिर चौथी सदी में इल्मे कलाम में किताबें लिखी गई और जंगो जदल और मक़ालात को बातिल करने में ग़ौरो ख़ौज़ होने लगा । इस के बा'द

लोग इस की तरफ़ (किस्सा गोई और वा'ज की तरफ़) माइल हुए। उस ज़माने में इल्मे यकीन मिटने लगा, इस के बा'द इल्मे कुलूब, सिफ़ाते नफ़्स और शैतान के मक्रो फ़रैब के बारे में दरयाफ़्त करना एक अजीब बात हो गई सिवाए चन्द लोगों के बाकी सब ने इस से मुंह फ़ैर लिया और झगड़ा करने वाला मुतकल्लिम अल्लिम कहलाने लगा, मुसज्जअ इबारत से अपना कलाम मुजय्यन करने वाला किस्सा गो भी अल्लिम शुमार होने लगा क्यूंकि उन्हें अ़वाम ही सुनते हैं जिन्हें हकीकते इल्म और इस के ग़ैर में फ़र्क़ मा'लूम नहीं होता और न ही सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ के अहवाल उन के पैशे नज़र होते कि वोह फ़र्क़ मा'लूम करते। पस ऐसे लोगों को उ-लमा का नाम दिया जाने लगा और पहलों से बा'द वालों तक येह नाम चलता आया। इल्मे आख़िरत लपैट दिया गया। इल्म और कलाम के दरमियान फ़र्क़ चन्द मख़सूस लोगों के सिवा सब के नज़दीक मख़फ़ी हो कर रह गया जब उन से पूछा जाता कि “फुलां के पास ज़ियादा इल्म है या फुलां के पास?” तो वोह कहते : “फुलां के पास इल्म ज़ियादा है और फुलां कलाम में इस पर फ़ाइक़ है।” ख़वास इल्म और कलाम पर कुदरत के दरमियान फ़र्क़ जानते थे। पिछली सदियों में दीन इतना कमज़ोर हो गया था तो इस ज़माने के बारे में तुम्हारा क्या ख़याल है? अब तो मुअमला यहां तक पहुंच गया है कि कलाम वग़ैरा का इन्कार करने वाले को पागल कहा जाता है। इस लिये बेहतर येही है कि इन्सान अपनी इस्लाह में मशगूल हो जाए और ख़ामोश रहे।

﴿12﴾....उ-लमाए आख़िरत की अलामात में से एक येह है कि ऐसा अल्लिम बिदअतों से बहुत ज़ियादा बचे अगर्चे सब लोग इन में मुलव्विष हों। सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ के बा'द पैदा होने वाली बिदअतों⁽¹⁾ (या'नी ख़िलाफ़े शरअ कामों) पर लोगों के मुतफ़िक् होने से

①....मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلٰٓئِکَ मिरआतुल मनाजीह, जि 1, स. 146 पर एक हदीष शरीफ़ के इस जुज़ “और बद तरीन चीज़ दीन की बिदअतें हैं और हर बिदअत गुमराही है” के तहत फ़रमाते हैं : **مُحَدَّث** के मा'ने हैं जदीद और नोपैद चीज़, यहां वोह अक़ाइद या बुरे आ'माल मुराद हैं जो हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की वफ़ात के बा'द दीन में पैदा किये जाएं, बिदअत के लुग़वी मा'ना हैं नई चीज़, रब्ब عَزَّ وَجَلَّ फ़रमाता है : **تَرْجَمَةُ كَنْزُ الْمَنَانِ** : नया पैदा करने वाला आस्मानों और ज़मीन का) इस्तिलाह में इस के तीन मा'ना हैं (1) नए अक़ीदे इसे बिदअते ए'तिकादी कहते हैं। (2) वोह नए आ'माल जो कुरआनो हदीष के ख़िलाफ़ हों और हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हों (3) हर नया अमल जो हुज़ूर के बा'द ईजाद हुवा। पहले दो मा'ना से हर बिदअत बुरी है कोई अच्छी नहीं, तीसरे मा'ना के लिहाज़ से बा'ज बिदअतें अच्छी हैं बा'ज बुरी, यहां बिदअत के पहले मा'ना मुराद हैं या'नी बुरे अक़ीदे क्यूंकि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसे ज़लालत या'नी गुमराही फ़रमाया। गुमराही अक़ीदे से होती है अमल से नहीं, बे नमाज़ गुनाहगार है गुमराह नहीं और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ को झूटा या हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी मिष्ल बशर समझना बद अक़ीदगी और....

धोके में न पड़े बल्कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के अहवाल व आ'माल और उन की सीरत को दरयाफ्त करने में हरीस हो और येह जाने कि वोह किन उमूर में ज़ियादा कोशिश करते थे। क्या वोह तदरीस, तस्नीफ़, मुनाज़िरा, क़ज़ा, हुक्मरानी, अवकाफ़ और वसिय्यतों की तौलिय्यत (या'नी निगरानी करने), यतीमों के अम्वाल (नाहक़) खाने और हुक्मरानों से मैल जोल रखने में मसरूफ़ रहते थे या ख़ौफ़े खुदा, ग़म, तफ़क्कुर, मुजाहदा व रियाज़त, ज़ाहिर व बातिन की निगरानी, सगीरा और कबीरा गुनाहों से इजतिनाब, नफ़्स की खुफ़्या ख़्वाहिशात और शैतान के मक्रो फ़रैब की जांच वगैरा उलूमे बातिन में मसरूफ़ रहते थे।

हक़ के ज़ियादा करीब कौन ?

इस बात का यकीन कर लो कि इस ज़माने में जो शख़्स सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمُ اَجْمَعِينَ के ज़ियादा मुशाबेह और अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام के रास्ते से ज़ियादा वाकिफ़ है वोही ज़ियादा इल्म वाला और हक़ के ज़ियादा करीब है क्यूंकि दीन इन्ही लोगों से लिया गया है। येही वजह है कि जब अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيم से अर्ज़ की गई कि आप ने फुलां की मुख़ालफ़त की है तो उन्होंने ने फ़रमाया : “हम में बेहतर वोह है जो इस दीन की ज़ियादा पैरवी करता है।” गरज़ येह कि तुम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुवाफ़क़त में मौजूदा ज़माने के लोगों की मुख़ालफ़त की परवाह न करो क्यूंकि लोगों ने

..... गुमराही है, और अगर दूसरे मा'ना मुराद हों तब भी येह हदीष अपने इत्लाक़ पर है किसी क़ैद लगाने की ज़रूरत नहीं और अगर तीसरे मा'ना मुराद हों या'नी नया काम तो येह हदीष आम मख़सूस अल बा'ज है क्यूंकि येह बिदअत दो किस्म की है बिदअते हसना और सय्यिया। यहां बिदअते सय्यिया मुराद है बिदअते हसना के लिये किताबुल इल्म की वोह हदीष है जो आगे आ रही है : (مَنْ سَنَّ فِي الْإِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً) (الحديث) : या'नी जो इस्लाम में अच्छा तरीका ईजाद करे वोह बड़े षवाब का मुस्तहिक् है। बिदअते हसना कभी जाइज़ कभी वाजिब कभी फ़र्ज़ होती है इस की निहायत नफ़ीस तहकीक़ इसी जगह मिरकात और अशअतुल लमआत में देखो नीज़ शामी और हमारी किताब जाअल हक़ में भी मुलाहज़ा करो, बा'ज लोग इस के मा'ना येह करते हैं कि जो काम हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हो वोह बिदअत है, और हर बिदअत गुमराही, मगर येह मा'ना बिल्कुल फ़ासिद हैं क्यूंकि तमाम दीनी चीज़ें छे कलिमे, कुरआन शरीफ़ के 30 पारे, इल्मे हदीष और हदीष की अक्साम और कुतुब, शरीअत व तरीक़त के चार सिलसिले (ह्नफ़ी, शाफ़ेई या क़ादिरि चिश्ती वगैरा) ज़बान से नमाज़ की निय्यत, हवाई जहाज़ के ज़रीए हज़ का सफ़र और जदीद साइन्सी हथयारों से जिहाद वगैरा और दुन्या की तमाम चीज़ें पुलाव, ज़र्दे, डाक खाने, रेल्वे वगैरा सब बिदअतें हैं जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ईजाद हुई हुराम होनी चाहिये हालांकि इन्हें कोई हुराम नहीं कहता।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुआमलात के बारे में अपनी तबीअतों के मैलान के मुताबिक एक राए काइम कर रखी है और उन का नफ़्स येह तस्लीम करने को तय्यार नहीं कि येह तरीका जन्नत से महरूमि का बाइष है। वोह दा'वा करते हैं कि इस के सिवा जन्नत का कोई दूसरा रास्ता नहीं।

बुरी राए वाला और दुन्या का पुजारी :

इसी लिये हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “इस्लाम में दो नए आदमी पैदा होंगे एक बुरी राए का मालिक होगा जो येह ख़याल करेगा कि जन्नत उसी को नसीब होगी जिस की राए इस के मुवाफ़िक होगी और दूसरा वोह मालदार होगा जो दुन्या का पुजारी होगा, दुन्या ही की वजह से गुस्सा करेगा, इसी के लिये राज़ी होगा और इसी को तलब करेगा, इन दोनों को जहन्नम की तरफ़ छोड़ दो। एक आदमी इस दुन्या में दो ऐसे आदमियों के दरमियान होगा कि इन में से एक मालदार होगा जो उसे अपनी दुन्या की तरफ़ बुलाएगा और दूसरा ख़्वाहिश का पुजारी होगा जो उसे अपनी ख़्वाहिश की तरफ़ राग़िब करेगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इन दोनों से महफूज़ रखेगा। वोह अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام का मुश्ताक़ होगा। इन के अफ़अल के बारे में पूछता, इन की पैरवी करता और अज़्रे अज़ीम का तलबगार होगा। लिहाज़ा तुम भी ऐसे बनो।”⁽¹⁾

कलाम और सीरत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “दो ही चीज़ें हैं कलाम और सीरत। बेहतरीन कलाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का है और बेहतरीन सीरत रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की है। ख़बरदार ! बिदअतों (या'नी ख़िलाफ़े शरअ कामों) से दूर रहो कि बद तरीन उमूर बिदआत हैं। हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत (जो शरीअत के ख़िलाफ़ हो) गुमराही है। ख़बरदार ! लम्बी उम्र का ख़याल दिल में मत आने देना वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे। ख़बरदार ! जो वक़्त आने वाला है वोह क़रीब है और दूर वोह है जो आने वाला नहीं।”⁽²⁾

खुश बरक़त कौन ?

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के खुतबए मुबारका में है : “उस के लिये खुश ख़बरी है जिसे उस के ऐबों ने दूसरों के ऐब तलाश करने से रोक दिया, अपने

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤٥۔

②.....سنن ابن ماجه، المقدمة، الحديث: ٣٦، ج ١، ص ٣٣۔

पाकीज़ा माल में से राहे खुदा में खर्च किया, उ-लमा की सोहबत में बैठता रहा, ख़ता कारों और नाफ़रमानों की सोहबत से दूर रहा। खुश ख़बरी है उस के लिये जो अज़िज़ी इख़्तियार करता, उस के अख़्लाक अच्छे, बातिन सालेह और वोह लोगों को अपने शर से बचाता है। खुश ख़बरी है उस के लिये जिस ने अपने इल्म पर अमल किया, ज़रूरत से ज़ाइद माल (राहे खुदा में) खर्च किया और फुज़ूल बातों से बचा, सुन्नत ने उसे अपने दामन में ले कर बिदअत तक जाने से रोक दिया।⁽¹⁾

अच्छे शख्स की पहचान :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि “आखिरी ज़माने में अच्छा किरदार आ’माल की कषरत से बेहतर होगा। तुम जिस ज़माने में हो उस में तुम में से अच्छा वोह है जो आ’माले सालेहा में जल्दी करता है। अज़ क़रीब ऐसा ज़माना आएगा कि लोगों में से अच्छा आदमी कषरते शुब्हात की वजह से तवक्कुफ़ करेगा।”⁽²⁾

बेशक आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सच फ़रमाया क्यूंकि इस ज़माने में तवक्कुफ़ न करने वाला, आम लोगों की मुवाफ़क़त करने वाला और इन उमूर में मशगूल होने वाला जिन में वोह मशगूल हैं इसी तरह हलाक व बरबाद होगा जिस तरह वोह तबाह व बरबाद होंगे।

आज के दौर की नेकी गुज़श्ता ज़माने की बुराई :

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इरशाद फ़रमाया : “इस बात पर ज़ियादा तअज्जुब है कि तुम्हारे दौर की नेकी गुज़श्ता ज़माने की बुराई थी और तुम्हारे ज़माने की बुराई आने वाले ज़माने में नेकी बन जाएगी, जब तक तुम हक़ की पहचान रखोगे भलाई पर रहोगे और तुम्हारे दौर का अलमि हक़ नहीं छुपाता।”⁽³⁾

आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सच फ़रमाया बेशक इस ज़माने की अकषर नेकियां सहाबए किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के ज़माने में बुराइयां समझी जाती थीं। हमारे ज़माने में मसाजिद को सजाना, इन्हें आरास्ता करना और इमारतों की बारीकियों में बहुत ज़ियादा माल खर्च करना और इन में कीमती बिछौने (मषलन कारपेट, क़ालीन वगैरा) बिछाना नेकी समझा जाता है हालांकि सहाबए किराम رَضُواْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के ज़माने में मस्जिद में चटाई बिछाना भी बिदअत शुमार होता था।

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الزهد وقصر الامل، الحديث: ١٠٥٦٣، ج ٤، ص ٣٥٥، بتغير قليل۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤٦۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٤٦۔

मसाजिद में चटाई बिछाना किस की ईजाद ?

मन्कूल है कि मसाजिद में चटाई बिछाना हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी की बिदआत में से है। पहले के लोग अपने और मिट्टी के दरमियान बहुत कम रुकावट डालते थे। इसी तरह दक्कीक़ मसाइल पर झगड़ना और मुनाज़िरे करना इस ज़माने के बड़े बड़े उलूम में शुमार होता है और इन लोगों का ख़याल है कि येह कुर्बे खुदावन्दी का बहुत बड़ा ज़रीआ और अज़ीम इबादत है हालांकि पहले ज़माने में येह मुन्किरात में शुमार होता था। तिलावते कुरआन और अज़ान में लह्न करना भी इन्ही बिदआत से है। पाकीज़गी में मुबालगा और तहारत में वस्वसे भी बिदअत है। कपड़ों की नजासत के बारे में अस्बाबे बर्इदा फ़र्ज किये जाते हैं जब कि ख़ूराक के हलाल व हराम होने के सिलसिले में तसाहिल बरता जाता है। इस किस्म की और भी कई मिषालें हैं।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसरूद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बिल्कुल सच फ़रमाया कि “तुम इस ज़माने में हो जिस में ख़्वाहिश, इल्म के ताबेअ है और अ़न क़रीब वोह दौर आएगा कि इल्म, ख़्वाहिश के ताबेअ हो जाएगा।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل फ़रमाया करते थे : “लोग इल्म तर्क कर के नादिर व अज़ीब बातों में मशगूल हो गए हैं। उन का इल्म कितना कम है। **اَللّٰهُ** ही मददगार है।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “गुज़स्ता ज़माने के लोग इन उमूर के बारे में ऐसे नहीं पूछते थे जैसा कि आज कल लोग पूछते हैं और उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام भी येह नहीं कहते थे कि येह हराम है, येह हलाल है। बल्कि मैं ने उन्हें यूं कहते सुना कि येह मुस्तहब है येह मकरूह है।”⁽³⁾

मतलब येह कि वोह कराहत और इस्तिहबाब की बारीकियों को देखते थे क्यूंकि हराम की बुराई तो वाज़ेह है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٨٣۔

②.....المرجع السابق، ص ٢٨٣، بتغيرٍ قليل۔ ③.....المرجع السابق، ص ٢٨٣۔

लोगों से बिदअत के बारे में न पूछो !

हज़रते सय्यिदुना हाशिम बिन उरवा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे : “आज के दौर में लोगों से उन की ईजाद कर्दा बिदअत के बारे में न पूछो क्योंकि उन्होंने ने इस का जवाब तय्यार कर रखा है उन से सुन्नत के बारे में पूछो इस लिये कि येह इसे जानते ही नहीं ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي फ़रमाया करते थे : “जिस के दिल में कोई अच्छी बात डाली गई वोह इस पर उस वक़्त तक अमल न करे जब तक कि इस के बारे में कोई हदीष न सुन ले । फिर अगर वोह हदीष इस के दिल में पैदा होने वाली बात के मुवाफ़िक़ हो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा करे ।”⁽²⁾

येह बात आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस लिये फ़रमाई कि जो नई आरा आती हैं वोह कानों को खट-खटाती और दिलों से मुअल्लक़ हो जाती हैं और बा'ज अवकात दिल की सफ़ाई मश्कूक होती है जिस की वजह से वोह बातिल को हक़ समझने लगता है । लिहाज़ा एहतियात का तकाज़ा येही है कि रिवायत की शहादत से इसे ज़ाहिर किया जाए ।

मिम्बर रखना बिदअत नहीं :

जब मरवान ने नमाज़े ईद के मौक़अ पर ईदगाह में मिम्बर रखा तो हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने खड़े हो कर फ़रमाया : “ऐ मरवान ! ये क्या बिदअत है ?” उस ने कहा : “येह बिदअत नहीं बल्कि येह तुम्हारी मा'लूमात के मुकाबले में बेहतर है क्योंकि लोग ज़ियादा हो गए हैं और मैं चाहता हूं कि उन सब तक आवाज़ पहुंचे ।” हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! मेरे इल्म के मुताबिक़ तुम कभी भी अच्छा काम नहीं करोगे । ब खुदा ! मैं तुम्हारे पीछे नमाज़ नहीं पढ़ूंगा ।”

आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह ए'तिराज़ इस लिये किया क्योंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ईद और नमाज़े इस्तिस्का के ख़ुत्बे में कमान या लाठी पर टेक लगाते थे न कि मिम्बर पर ।⁽³⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٨٥۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ١، ص ٢٨٥۔

③.....المعجم الصغير، من اسمه يحيى، الحديث: ١٤١، ج ٢، ص ٢٣، بتغير۔ قوت القلوب، ج ١، ص ٢٨٦۔

हर नया काम जो दीन से न हो मर्दूद है :

मशहूर हदीष में है कि सय्यिदे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने हमारे दीन में ऐसा काम जारी किया जो दीन से नहीं तो वोह काम मर्दूद है।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “जिस ने मेरी उम्मत से धोका किया उस पर **अल्लाह** غَرْ وَجَلَّ, फ़िरिश्तों और तमाम लोगों की ला'नत।” अर्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْكَ وَسَلَّمَ आप की उम्मत के साथ धोका क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “कोई बिदअत जारी कर के लोगों को इस की तरगीब देना।”⁽²⁾

शफ़ाअत से महश्मी का सबब :

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** غَرْ وَجَلَّ का एक फ़िरिश्ता हर रोज़ पुकारता है : “जिस ने **अल्लाह** غَرْ وَجَلَّ के रसूल की सुन्नत की मुख़ालफ़त की उसे हुज़ूर की शफ़ाअत से हिस्सा नहीं मिलेगा।”⁽³⁾

ख़िलाफ़े शुन्नत बिदअत जारी करने वाले की मिषाल :

दीन में सुन्नत की मुख़ालिफ़ बिदअत जारी करने वाला शख्स, गुनाह करने वाले के मुक़ाबले में इस तरह है जैसे किसी बादशाह की हुकूमत को बदलने में उस की नाफ़रमानी करने वाले के मुक़ाबले में वोह शख्स जो किसी मुक़र्ररा ख़िदमत में उस की नाफ़रमानी करता है। क्योंकि उस (या'नी मुक़र्ररा ख़िदमत में नाफ़रमानी करने वाले) की मुआफ़ी हो सकती है लेकिन हुकूमत बदलने की कोशिश करने वाले के लिये मुआफ़ी नहीं।

बा'ज़ उ-लमा फ़रमाते हैं : “जिस मस्अले में अस्लाफ़ ने गुफ़्तगू की है उस में ख़ामोशी इख़्तियार करना जुल्म है और जिस में इन्हों ने ख़ामोशी इख़्तियार की उस में गुफ़्तगू करना तकल्लुफ़ है।”⁽⁴⁾

एक आलिम साहिब का कौल है : “हक़ बात गुरौह है जिस ने इस से तजावुज़ किया वोह ज़ालिम है, जिस ने इस में कोताही की वोह अज़िज़ है और जिस ने इस पर तवक्कुफ़ किया वोह किफ़ायत करने वाला है।”⁽⁵⁾

①.....صحیح البخاری، کتاب الصلح، باب اذا اصطلحو اعلی صلح.....الخ، الحدیث: ۲۶۹۷، ج ۲، ص ۲۱۱۔

②.....جامع الاحادیث، حرف المیم، الحدیث: ۲۲۴۹۸، ج ۷، ص ۲۸۷۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادی والثلاثون، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا.....الخ، ج ۱، ص ۲۹۵۔

④.....المرجع السابق، ص ۲۹۶۔ ⑤.....المرجع السابق، ص ۲۹۶۔

हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
“इस दरमियाने रास्ते को लाज़िम पकड़ो जिस की तरफ़ बुलन्दी पर जाने वाला लौट आए और
पीछे रहने वाला इस की तरफ़ बुलन्दी इख़्तियार करे ।”(1)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : गुमराह लोग अपने दिलों में
गुमराही की हलावत महसूस करते हैं । **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَذُرِّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا
(پ ۷۰، الانعام: ۷۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और छोड़ दे उन को
जिन्होंने ने अपना दीन हंसी खेल बना लिया ।

इरशादे खुदावन्दी है :

أَفَسَنْ يُدِينُ لَهُ سَوْءُ عَمَلِهِ فَرَاةً حَسَنًا
(پ ۲۲، فاطر: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह जिस की
निगाह में उस का बुरा काम आरास्ता किया गया
कि उस ने इसे भला समझा ।

लिहाज़ा हर वोह ज़रूरत से ज़ाईद काम जो सहाबए किराम رَضَوُا اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के
बा'द शुरू हुवा वोह लहवो ला'ब है ।(2)

शैतान का लश्कर और गुरौहे सहाबा व ताबेईन :

इब्लीसे लईन के बारे में हिकायत है कि सहाबए किराम رَضَوُا اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के ज़माने
में उस ने अपने लश्कर को इधर उधर फैलाया जब वोह परेशान हाल थके मान्दे वापस आए तो
उस ने पूछा : “तुम्हें क्या हुवा ?” उन्होंने ने कहा : “हम ने किसी को इन (या'नी सहाबा) की तरह
नहीं देखा हमें इन से सिवाए थकावट के कुछ भी हासिल नहीं होगा ।” उस ने कहा : “तुम इन
पर काबू नहीं पा सकते, इन्होंने ने अपने नबी की सोहबत इख़्तियार की है और अपने रब्ब की तरफ़
से नुज़ूल (वह्य) का मुशाहदा किया है । अलबत्ता इन के बा'द कुछ लोग आएंगे जिन से तुम्हारी
हाज़त पूरी होगी ।” जब ताबेईन का ज़माना आया तो उस ने अपने लश्कर को इधर उधर भेजा
वोह शिकस्ता हाल वापस आए और कहा कि हम ने इन से ज़ियादा तअज्जुब खेज़ लोग नहीं
देखे ताहम इन के गुनाहों के सबब हम कुछ न कुछ हिस्सा ज़रूर हासिल कर लेंगे । जब शाम का
वक़्त हुवा तो ताबेईन ने मुआफ़ी त़लब करना शुरू कर दी तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने उन की
बुराइयां नेकियों से बदल दीं । शैतान ने कहा : “तुम इन से भी कुछ हासिल नहीं कर सकते क्यूंकि
इन का अक्कीदए तौहीद सहीह है और येह अपने नबी की सुन्नत पर अमल पैरा हैं । अलबत्ता

①.....تفسير القرطبي، سورة البقرة تحت الآية: ۱۲۳، ج ۲، ص ۱۱۷، موقوفاً عن علي رضي الله عنه۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادي والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۹۷، باختصار۔

इन के बा'द कुछ लोग आएंगे उन से तुम्हारी आंखों को ठंडक हासिल होगी तुम उन के साथ जैसे चाहे खेलना, उन की ख्वाहिशात की लगाम पकड़ कर जहां चाहो ले जाना वोह बख़्शिश त़लब करेंगे तो उन की बख़्शिश न होगी और वोह तौबा भी नहीं करेंगे कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उन की बुराइयों को नेकियों में बदल दे।”

रावी फ़रमाते हैं : “पहली सदी के बा'द एक क़ौम आई तो शैतान ने उन में ख्वाहिशात फैला दीं और बिदआत को उन के लिये मुज़य्यन कर दिया। चुनान्वे, उन्होंने ने इन्हें हलाल समझा और दीन बना लिया न तो वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करते हैं और न ही तौबा करते हैं। लिहाज़ा उन पर दुश्मन (या'नी शैतान) ग़ालिब हो गए अब वोह जहां चाहते हैं उन्हें ले जाते हैं।”

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि इस क़ाइल को कहां से मा'लूम हुवा कि इब्लीस ने येह बात कही है हालांकि इस ने न तो इब्लीस को देखा है और न ही इस से गुफ़्तगू की ? तो जान लो कि अहले दिल पर मलकूत (या'नी आलमे मलाइका) के राज़ मुन्कशिफ़ होते रहते हैं कभी ब तौरै इल्हाम इन के दिल में डाले जाते हैं और इन्हें मा'लूम तक नहीं होता, कभी सच्चे ख़्वाब के ज़रीए और कभी बेदारी में इन के मा'नी मिषालों के मुशाहदे के ज़रीए वाजेह किये जाते हैं जैसा कि ख़्वाब में होता है और येह सब से आ'ला दर्जा है और येह नबुव्वत का बुलन्द दर्जा है जैसे सच्चा ख़्वाब नबुव्वत का छियालीसवां हिस्सा है तो तुम्हें इस इल्म के इन्कार से बचना चाहिये जो तुम्हारी नाक़िस अक्ल की हृद से पार हो गया इस सिलसिले में महारत का दा'वा करने वाले उ-लमा भी हलाक हो गए जिन का ख़याल था कि उन्होंने ने अक्ली उलूम का इहाता कर लिया है। इस अक्ल से जहालत बेहतर है जो औलियाए किराम **رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام** के बारे में ऐसे उलूम का इन्कार करे और जो शख्स औलियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** के बारे में ऐसी बातों का इन्कार करता है उस पर अम्बियाए किराम का इन्कार लाज़िम आता है और वोह दीन से मुकम्मल तौर पर निकल जाता है।

बा'ज अरिफ़ीन ने फ़रमाया : “अब्दाल, लोगों से क़तए तअल्लुकी कर के ज़मीन के मुख़लिफ़ कोनों में जा बसे हैं और वोह जमहूर की आंखों से ओझल हो चुके हैं। क्यूंकि उन में आज के दौर के उ-लमा को देखने की हिम्मत नहीं है इस लिये कि उन के नज़दीक येह उ-लमा असरारे इलाहिय्या से वाक़िफ़ नहीं मगर येह लोग खुद को अलिम समझते हैं और जाहिल भी इन्हें ऐसा ही समझते हैं। पस येह (झूटे उ-लमा और इन्हें उ-लमा समझने वाले) सब लोग जाहिल हैं।” (1)

सब से बड़ी मा'सिय्यत :

हज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِيِّ ने इरशाद फ़रमाया : “सब से बड़ी मा'सिय्यत जहालत से नावाकिफ़ होना, अ़ाम लोगों की तरफ़ देखना और गाफ़िल लोगों का कलाम सुनना है। जो अ़ालिम दुन्या में मशगूल रहता है उस की बात सुनना मुनासिब नहीं बल्कि उस की हर बात पर उसे तोहमत ज़दा जानना चाहिये क्यूंकि हर शख्स अपनी पसन्दीदा चीज़ में मशगूल रहता है और जो कुछ उस के महबूब के मुवाफ़िक़ न हो उसे रद्द कर देता है।”⁽¹⁾

इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَلَا تُطِيعُ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ
هُوَ وَكَانَ أَمْرُهُ فُرْطًا ۝ (پ ۵، الکھف: ۲۸)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और उस का कहा न मानों जिस का दिल हम ने अपनी याद से गाफ़िल कर दिया और वोह अपनी ख़्वाहिश के पीछे चला और उस का काम हृद से गुज़र गया।

अ़ाम गुनहगार उन लोगों से ज़ियादा खुश बख़्त है जो दीन के रास्ते से बे ख़बर हैं हालांकि उन का दा'वा है कि वोह उ-लमा में शुमार होते हैं क्यूंकि अ़ाम गुनहगार शख्स अपनी कोताही का इक़रार कर के बख़्शिश त़लब करता और तौबा करता है जब कि जाहिल इल्म का मुद्ई है और येह उन उलूम में मशगूल है जो तरीक़े दीन के बजाए हुसूले दुन्या का वसीला हैं लिहाज़ा न तो येह तौबा करता है और न ही मग़फ़िरत त़लब करता है बल्कि मरते दम तक इसी हालत पर रहता है। लिहाज़ा जिन्हें **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने महफूज़ फ़रमाया उन के इलावा जब येह बात अक़षर लोगों पर ग़ालिब है और इन की इस्लाह की कोई उम्मीद भी नहीं रही तो दीनदार मोहतात शख्स के लिये सलामती इसी में है कि वोह इन से अलग थलग रहे जैसा कि “**كِتَابُ الْعَزْلَةِ**” (या'नी गोशा नशीनी के बयान) में आएगा। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ

लोगों से ज़ियादा मैल जोल बाइये हलाक़्त है :

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा मरअशी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِيِّ को ख़त लिख कर दरयाफ़्त किया कि “आप की उस शख्स के बारे में क्या राए है जिसे गुनहगार के इलावा कोई ऐसा शख्स नहीं मिलता जो उस के साथ मिल कर **اَللّٰهُ** का ज़िक्र करे या फिर कोई ऐसा शख्स तो मिल जाता है मगर उस के साथ ज़िक्र करना गुनाह

1.....قوت القلوب، الفصل الحادى والثلاثون، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج ۱، ص ۲۹۸، باختصار۔

का ज़रीआ बनता है।" यह बात आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इस लिये दरयाफ़्त फ़रमाई कि आप किसी को इस का अहल नहीं पाते थे। वाक़ेई आप ने सच फ़रमाया क्यूंकि लोगों से मैल जोल रखना ग़ीबत करने, सुनने या बुराई पर ख़ामोश रहने से ख़ाली नहीं होता।

इन्सान की बेहतरीन हालत :

इन्सान की बेहतरीन हालत यह है कि वोह इल्म से दूसरों को फ़ाइदा पहुंचाए या खुद फ़ाइदा हासिल करे। अगर येह मिस्कीन ग़ौर करता और इस बात को जानता कि इस का फ़ाइदा पहुंचाना रियाकारी के शाइबे, मालो दौलत और रियासत हासिल करने की त़लब से ख़ाली नहीं तो इसे मा'लूम हो जाता कि फ़ाइदा हासिल करने वाला भी इसे त़लबे दुन्या के लिये आला और बुराई के लिये वसीला बना रहा है। लिहाज़ा इस मुआमले में वोह इस का मददगार है और इस के लिये अस्बाब मुहय्या करता और डाकूओं को तल्वार बेचने वाले की त़रह है। इल्म तल्वार की मानिन्द है भलाई के लिये इसे बेहतर बनाना ऐसे है जैसे जिहाद के लिये तल्वार को दुरुस्त करना इसी लिये किसी ऐसे शख़्स को तल्वार बेचना जाइज़ नहीं जिस के बारे में अ़लामात व क़राइन से मा'लूम हो कि वोह डाकूओं की मदद करना चाहता है।

उ-लमाए आख़िरत की अ़लामात में से येह 12 अ़लामतें हैं। इन में से हर एक अस्लाफ़ उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام के अख़्लाक़ को जामेअ है। पस तुम दो शख़्सों में से एक हो जाओ या'नी या तो इन सिफ़ात को अपना लो या अपनी कोताही तस्लीम कर लो, तीसरे न बनना वरना तुम पर मुआमला मुश्तबा हो जाएगा और तुम दुन्या के आला को दीन समझने लगोगे और झूटों की आदात को उ-लमाए रासिख़ीन की सीरत ख़याल करोगे और यूं अपनी जहालत और इन्कार की वजह से तबाहो बरबाद और मायूस लोगों के गुरौह में शामिल हो जाओगे।

दुआ :

हम शैताने लईन के मक्रो फ़रैब से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं कि इस की वजह से कई लोग हलाक़ हुए। हम **اَللّٰهُ** मुजीबुद्दा'वात से इल्तिजा करते हैं कि वोह हमें उन खुश नसीबों में से बना दे जिन्हें दुन्यवी जिन्दगी धोका नहीं देती और न ही शैतान उन्हें

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ के हिल्म पर धोका देता है।



बाब नम्बर : 7

अक्ल, इस की अज़मत, हकीकत और अक्लाम का बयान

पहली फ़स्ल :

अक्ल की अज़मत

याद रखिये ! अक्ल की अज़मत को बयान करने में तकल्लुफ़ की ज़रूरत नहीं बिलखुसूस जब कि इल्म की फ़ज़ीलत अक्ल की वजह से ज़ाहिर है और अक्ल इल्म का मम्बअ, मतलअ और बुन्याद है। इल्म की निस्बत अक्ल से ऐसी है जैसे फल की दरख़्त से, रोशनी की सूरज से और देखने की आंख से तो वोह चीज़ अज़मत वाली क्यूं न हो जो दुन्या व आख़िरत में सआदत का ज़रीआ है। नीज़ इस में कैसे शक किया जा सकता है जब कि जानवर अपने सूझ बूझ की कमी के सबब अक्ल से शर्माता है यहां तक कि सब से बड़े जिस्म वाला, सब से ज़ियादा नुक़सान देने वाला और सब से ज़ियादा ख़ौफ़नाक जानवर भी जब इन्सान को देख लेता है तो घबरा कर भाग जाता है क्यूंकि वोह जानता है कि इन्सान उस पर ग़लबा पा लेगा और इस की वजह येह है कि इन्सान की ख़ासिय्यत है कि वोह हीलों को जानता है।

बुढ़े शख़्स को फ़ज़ीलत क्यूं हासिल है ?

हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बुढ़ा शख़्स अपनी क़ौम में ऐसे होता है जैसे नबी अपनी उम्मत में।”⁽¹⁾

और येह इस वजह से नहीं कि उस के पास माल की कषरत होती है। वोह उम्र रसीदा होता है या इस को कुव्वत ज़ियादा हासिल होती है बल्कि इस लिये कि उस का तज़रिबा ज़ियादा होता है जो अक्ल का नतीजा है। इसी लिये तुम देखते हो कि तुर्की, कुर्दी और अरब के बेवुकूफ़ बल्कि तमाम वोह लोग भी जो जानवर समझे जाते हैं फ़ितरी तौर पर बुद्धों की इज़्ज़त करते हैं। येही वजह है कि कई दुश्मन, रसूले खुदा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को शहीद करने के इरादे से आए लेकिन जब चेहरए नूर बार का दीदार किया तो ता'ज़ीम व तकरीम बजा लाए और मुबारक पेशानी पर नूरे नबुव्वत दरख़्शां देखा अगर्चे वोह हुज़ूर सरापा नूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के दिल में पोशीदा था जैसे अक्ल पोशीदा होती है। अल ग़रज़ ! अक्ल की अज़मत व फ़ज़ीलत एक बदीही चीज़ है और हम महूज़ इस की फ़ज़ीलत व अज़मत में वारिद शुदा आयात व अहादीष को ज़िक्र करना चाहते हैं।

अक्ल की फज़ीलत व अज़मत में वारिद 4 फ़रामीने बारी तआला

अल्लाह रब्बुल आलमीन **عَزَّوَجَلَّ** ने अक्ल का नाम नूर रखा है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

﴿١﴾ **اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مِثْلُ نُورٍ كَاشِكُوتٍ فِيهَا مَصْبَاحٌ** ^{ط (प: १८, النور: ३५)}

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** नूर है ज़मीनो आस्मान का उस के नूर की मिषाल ऐसी जैसे एक ताक़।

इल्म जो अक्ल से हासिल होता है इसे **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने रूह, वह्य और हयात करार दिया। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

﴿٢﴾ **وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا** ^{ط (प: २५, الشورى: ५२)}

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और यूँही हम ने तुम्हें वह्य भेजी एक जांफ़िज़ा चीज़ अपने हुक्म से।

एक जगह फ़रमाया :

﴿٣﴾ **أَوْ مَن كَانَ مَيِّتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَّشْهَىٰ فِي النَّاسِ** ^{ط (प: ८, الانعام: १२२)}

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और क्या वोह कि मुर्दा था हम ने उसे ज़िन्दा किया और उस के लिये एक नूर कर दिया जिस से लोगों में चलता है।

नूर व जुल्मत के ज़िक्र से मुराद इल्म और जहालत है। जैसा कि फ़रमाने इलाही है :

﴿٤﴾ **يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ** ^{ط (प: ३, البقرة: २५८)}

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें अन्धेरियों से नूर की तरफ़ निकालता है।

अक्ल की फज़ीलत व अज़मत में वारिद 14 फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿١﴾....अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के अहकामात को समझो और एक दूसरे को समझने की तल्फ़ीन करो यूं जिन के करने का हुक्म दिया गया और जिन से मन्अ किया गया उन्हें जान जाओगे। याद रखो ! अक्ल तुम्हारे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के नज़दीक तुम्हारे दर्जात बुलन्द करती है और जान लो ! अक्ल मन्द वोह है जो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की इताअत करे अगर्चे सूरत में अच्छा न हो, कमतर हो, उस की कोई क़द्रो मन्ज़िलत न हो और परागन्दा हाल हो जब कि जाहिल वोह है जो रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** की नाफ़रमानी करे अगर्चे ख़ूब सूरत हो, बड़ी शानो शौकत का मालिक हो, अच्छी हालत और क़द्रो मन्ज़िलत रखता और फ़सीह गुफ़्तगू करता हो। पस **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नज़दीक बन्दर और खिन्ज़ीर उस के नाफ़रमान से ज़ियादा अक्ल मन्द हैं, इस बात से धोका न खाना कि दुन्यादार

उस की ता'जीम करते हैं क्यूंकि वोह तो खुद ख़सारा पाने वालों में से हैं।⁽¹⁾

﴿2﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले अक्ल को पैदा फ़रमाया फिर उस से फ़रमाया : “आगे आ” तो वोह आगे हो गई। फिर फ़रमाया : “पीछे जा” तो वोह पीछे चली गई। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं ने कोई मख़्लूक़ ऐसी पैदा नहीं की जो मेरे नज़दीक़ तुझ से ज़ियादा मुअज़्ज़ज हो, मैं तेरे ही सबब से पकड करूंगा और तेरे ही सबब अता करूंगा, तेरी ही वजह से षवाब दूंगा और तेरे ही सबब अज़ाब दूंगा।”⁽²⁾

एक शुवाल और इस का जवाब :

अगर अक्ल अर्ज है तो उसी अजसाम से पहले कैसे पैदा किया गया और अगर जोहर है तो फिर येह कैसे हो सकता है कि जोहर काईम ब नफ़्सही हो और किसी जगह को घेरे हुए न हो ? इस का जवाब येह है कि इस बात का तअल्लुक़ इल्मे मुकाशफ़ा से है और इल्मे मुआमला में इसे ज़िक्र करना मुनासिब नहीं और इस वक़्त हमारा मक़सद इल्मे मुआमला को बयान करना है।

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : कुछ लोगों ने बारगाहे रिसालत में एक शख़्स की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पूछा : “उस की अक्ल कैसी है ?” लोगों ने अर्ज की : “हम आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने इबादत में उस की कोशिश और उस की मुख़लिफ़ नेकियों का तज़क़िरा कर रहे हैं और आप हम से उस की अक्ल के बारे में इस्तिफ़सार फ़रमा रहे हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “बेवकूफ़ अपनी जहालत की वजह से बदकार से ज़ियादा बुराई कर लेता है और कल बरोजे क़ियामत बारगाहे रब्बुल इला में कुर्ब के दर्जात पर लोग अपनी अक्लों के मुताबिक़ फ़ाइज़ होंगे।”⁽³⁾

﴿4﴾....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक़ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बन्दा अक्ल की फ़ज़ीलत की मिष्ल नहीं कमाता, अक्ल साहिबे अक्ल को हिदायत देती और हलाकत से बचाती

①.....المطالب العالیه، کتاب العقل لداود بن المحبر، الحديث: ٢٤٩٠، ج ٤، ص ٣١١۔

②.....اللائى المصنوعة فى الاحاديث الموضوعه، كتاب المبتدأ، ج ١، ص ١٢٠، بتغير قليل۔

فردوس الاخبار، باب الالف، الحديث: ٣، ج ١، ص ٢٩۔

③.....المطالب العالیه، من كتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ٢٨٠٥، ج ٤، ص ٣١٩۔

है। जब तक आदमी की अक्ल कामिल न हो तब तक न तो उस का ईमान कामिल होता है और न ही उस का दीन दुरुस्त होता है।”⁽¹⁾

﴿5﴾.....इन्सान अपने अच्छे अख़लाक़ की वजह से रात में क़ियाम करने वाले और दिन में रोज़ा रखने वाले के दर्जे को पा लेता है और किसी भी आदमी के अच्छे अख़लाक़ उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होते जब तक उस की अक्ल कामिल न हो और जब उस की अक्ल कामिल हो जाती है तो उस का ईमान कामिल हो जाता है। फिर अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इताअत करता और अपने दुश्मन शैतान की नाफ़रमानी करता है।⁽²⁾

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : हर चीज़ का एक सुतून होता है और मुसलमान का सुतून उस की अक्ल है। इस की इबादत इस की अक्ल के मुताबिक़ ही होती है। क्या तुम ने नहीं सुना कि फुस्साक़ व फुज्जार जहन्नम में कहेंगे :

لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِي أَصْحَابِ

السَّعِيرِ ① (پ ۲۹، الملك: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर हम सुनते या

समझते तो दोज़ख़ वालों में से न होते।⁽³⁾

﴿7﴾....मन्कूल है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना तमीम दारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “तुम में सरदारी किस की है?” अर्ज़ की : “अक्ल की।” तो अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “तुम ने सच कहा, मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से भी पूछा था जैसे तुम से पूछा तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वोही फ़रमाया जो तुम ने जवाब दिया और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया था कि मैं ने हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से पूछा : “सरदारी किस की है?” तो उन्होंने ने भी येही जवाब दिया : “अक्ल की।”⁽⁴⁾

①.....المطالب العالیة، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۸۰، ج ۴، ص ۳۲۲۔

②.....المطالب العالیة، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۸۵، ج ۴، ص ۳۰۹۔

مسند الحارث، باب ماجاء فی العقل، الحديث: ۸۲۳، ج ۳، ص ۳۲۱۔

المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة، الحديث: ۲۵۵۹۴، ج ۹، ص ۵۵۵، باختصار۔

③.....المطالب العالیة، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۹۶، ج ۴، ص ۳۱۴۔

④.....المطالب العالیة، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۹۵، ج ۴، ص ۳۱۴۔

﴿8﴾....हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि एक दिन हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कषीर सुवालात किये गए तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! हर चीज़ की एक सुवारी होती है और आदमी की सुवारी अक्ल है और तुम में से रहनुमाई और हुज्जत की पहचान में सब से उम्दा वोह है जो ब ए’तिबारे अक्ल तुम में सब से अफ़ज़ल है ।”⁽¹⁾

﴿9﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि जब रसूले अन्वर, शाफ़ेए मेहशर ग़ज़वए उहुद से वापस तशरीफ़ लाए तो लोगों को कहते सुना कि फुलां फुलां से ज़ियादा बहादुर है और फुलां ज़ियादा तजरिबाकार है जब तक फुलां तजरिबाकार न हो जाए तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम्हें इस बात का इल्म नहीं ।” लोगों ने अर्ज़ की : “तो फिर कैसा है ?” इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उन के लिये जो अक्ल मुक़दर फ़रमाई उन्होंने ने इस के मुताबिक़ जिहाद किया, उन की मदद व नुस्सत और उन की निय्यत उन की अक्लों के मुताबिक़ थी, इन में से बा’ज को मुख़्तलिफ़ मर्तबे हासिल हुए । बरोजे क़ियामत वोह अपनी निय्यतों और अक्लों के मुताबिक़ मरातिब पाएंगे ।”⁽²⁾

﴿10﴾....हज़रते सय्यिदुना बरा बिन अज़िब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “फ़िरिश्तों ने अक्ल के मुताबिक़ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इताअत में जिद्दो जहद की और बनी आदम में मुसलमानों ने अपनी अक्लों के मुताबिक़ कोशिश की तो इन में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का ज़ियादा मुतीअ व फ़रमां बरदार वोह होगा जो इन में ज़ियादा अक्ल वाला होगा ।”⁽³⁾

﴿11﴾....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अइशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि मैं ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليك وسلم दुन्या में लोग एक दूसरे से किस वजह से अफ़ज़ल होते हैं ?” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अक्ल की वजह से ।” मैं ने अर्ज़ की : “और आख़िरत में ?” इरशाद फ़रमाया : “अक्ल के सबब ।” मैं ने अर्ज़ की : “क्या इन्हें इन के आ’माल ही का बदला नहीं दिया जाएगा ?” इरशाद फ़रमाया : ऐ अइशा ! लोग उस अक्ल के मुताबिक़ ही तो अमल करते हैं जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ

①.....المطالب العالیه، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۸۰۳، ج ۷، ص ۳۱۸، بتغییر قلیل۔

②.....المطالب العالیه، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۸۰۴، ج ۷، ص ۳۱۸۔

③.....المطالب العالیه، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ۲۷۹۲، ج ۷، ص ۳۱۲۔

ने इन्हें अता फ़रमाई तो इन के आ'माल इन की अक़लों के मुताबिक़ ही होते हैं और इन्हें इन के आ'माल ही का बदला दिया जाएगा।”(1)

﴿12﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि आकाए दो जहां, महबूबे रहूमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “हर चीज़ का एक आला होता है और मोमिन का आला अक़ल है। हर चीज़ की एक सुवारी होती है और आदमी की सुवारी अक़ल है। हर चीज़ का एक सुतून होता है और दीन का सुतून अक़ल है। हर क़ौम की एक ग़ायत होती है और आबिदों की ग़ायत अक़ल है। हर क़ौम का एक दाई होता है और इबादत गुज़ारों का दाई अक़ल है। हर ताजिर का एक सरमाया होता है और मुज्ताहिदीन का सरमाया अक़ल है। तमाम घर वालों का एक मुन्तज़िम होता है और सिद्दीकीन के घर की मुन्तज़िम अक़ल है। हर वीरानी की आबादी होती है और आख़िरत की आबादी अक़ल है। हर शख़्स का एक जानशीन होता है जिस की तरफ़ उस की निस्बत की जाती और इस की वजह से उसे याद किया जाता है और सिद्दीकीन की जानशीन अक़ल है जिस की तरफ़ उन की निस्बत की जाती और इसी की वजह से उन्हें याद किया जाता है और हर सफ़र का एक ख़ैमा होता है और मुसलमानों का ख़ैमा अक़ल है।”(2)

﴿13﴾....मुसलमानों में से **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ को सब से ज़ियादा महबूब वोह है जो **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की इताअत के लिये तय्यार रहे, उस के बन्दों की ख़ैर ख़्वाही करे, उस की अक़ल कामिल हो, अपने नफ़्स को नसीहत करे, उस की निगरानी करे और वोह अक़ल के ज़रीए अपनी ज़िन्दगी में अमल कर के फ़लाह व कामयाबी पाता है।(3)

﴿14﴾.....तुम में से अक़ल के ए'तिबार से सब से ज़ियादा कामिल वोह है जो सब से ज़ियादा **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ से डरता और अवामिर व नवाही को सब से ज़ियादा जानता हो अगर्चे नवाफ़िल में तुम में सब से कमतर हो।(4)

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....المطالب العالیه، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ٢٤٨٤، ج ٤، ص ٣١٠.

②.....المطالب العالیه، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ٢٤٨٨، ج ٤، ص ٣١٠، بتغییر قلیل.

③.....تنزیه الشریعة المرفوعة، کتاب المبتدأ، الحديث: ١٢٨، ج ١، ص ٢٢١، باختصار.

④.....المطالب العالیه، من کتاب العقل لداود بن المحبر.....الخ، الحديث: ٢٤٩٣، ج ٤، ص ٣١٣.

दूसरी फ़स्ल : अक्ल की हकीकत और इस की अक़साम

याद रखो ! अक्ल की ता'रीफ़ और इस की हकीकत में लोगों का इख़िलाफ़ है और अक़षर लोग इस बात से बे ख़बर हैं कि अक्ल का नाम मुख़लिफ़ मअ़नी पर बोला जाता है। येही बात उन के इख़िलाफ़ का सबब बनी और इस में ख़फ़ा को ज़ाइल करने वाली हक़ बात येह है कि अक्ल का इतलाफ़ मुश्तरका तौर पर चार मअ़नी पर होता है जिस तरह लफ़्ज़ ऐन चन्द मअ़नी पर बोला जाता है और वोह अलफ़ाज़ जो इस की मिष्ल हैं इस लिये येह मुनासिब नहीं कि इस की तमाम अक़साम के लिये एक ता'रीफ़ तलाश की जाए बल्कि हर किस्म की अलग अलग वज़ाहत की जाएगी। चुनान्चे,

अक्ल के चार मअ़नी :

﴿I﴾....“अक्ल एक ऐसा वस्फ़ है जिस के ज़रीए इन्सान तमाम जानवरों से मुमताज़ होता है।” इसी के ज़रीए उस में उलूमे नज़रिय्या क़बूल करने और छुपी हुई फ़िक्री सन्अतों की तदबीर करने की सलाहियत पैदा होती है। हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन असद मुहासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي ने अक्ल की जो ता'रीफ़ बयान की है इस से उन की मुराद येही है। उन्होंने ने अक्ल की ता'रीफ़ इस तरह बयान फ़रमाई : “येह एक फ़ितरी कुव्वत है जिस के ज़रीए उलूमे नज़रिय्या का इदराक़ किया जाता है गोया येह एक नूर है जो दिल में डाला जाता है जिस की वजह से वोह अश्या के इदराक़ के लिये तय्यार होता है।”⁽¹⁾ जो इस बात का इन्कार करता और अक्ल को सिर्फ़ ज़रूरी और बदीही उलूम की तरफ़ फैरता है वोह इन्साफ़ नहीं करता क्यूंकि उलूम से ग़ाफ़िल और सोए हुए शख्स को चूंकि येह कुव्वत हासिल होती है इसी लिये इसे अक्लमन्द कहा जाता है हालांकि उलूमे ज़रूरिया इस वक़्त मौजूद नहीं होते। जिस तरह ज़िन्दगी एक कुव्वत है जिस के ज़रीए जिस्म इख़्तियारी हरकात और हिस्सी इदराकात के लिये तय्यार होता है इसी तरह अक्ल भी एक फ़ितरी कुव्वत है जिस के ज़रीए बा'ज़ हैवानात नज़री उलूम के काबिल हो जाते हैं। अगर इस फ़ितरी कुव्वत और हिस्सी इदराकात में इन्सान और गधे के दरमियान मसावात (बराबरी) मान कर कहा जाए कि “इन दोनों के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं सिर्फ़ येह कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अपनी आदते मुबारका के मुताबिक़ इन्सान में उलूम को पैदा करता है जब कि गधे और दूसरे जानवरों में पैदा नहीं करता।” तो येह कहना भी जाइज़ होगा कि “गधे और जमादात (पथ्थर वगैरा) की ज़िन्दगी बराबर है।” और येह भी कहा जाएगा कि “इन के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं अलबत्ता

येह कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अपनी आदते मुबारका के मुताबिक़ गधे में मख्सूस हरकात पैदा करता है।" अगर गधे को बे जान पथ्थर तसव्वुर किया जाए तो येह कहना लाज़िमी होगा कि "इस से जो हरकत नज़र आती है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे नज़र आने वाली तरतीब से पैदा करने पर कादिर है।" तो जैसे येह कहना ज़रूरी है कि गधे का हरकात में जमादात से मुमताज़ होना इस खास कुव्वत की बुन्याद पर है जिस का नाम ज़िन्दगी है तो उसी तरह इन्सान भी उलूमे नज़रिय्या में हैवानात से एक खास कुव्वत के ज़रीए मुमताज़ होता है और वोह अक्ल है। येह उस शीशे की मानिन्द है जो सूरतों और रंगों को दिखाने में एक खास सिफ़त के ज़रीए दूसरे अजसाम से जुदा है और वोह सिफ़त उस का साफ़ शफ़फ़ाफ़ और रोशन होना है। इसी तरह आंख अपनी सिफ़त और शक़ल के ए'तिबार से जो उसे देखने के काबिल करती हैं पेशानी से मुमताज़ है। लिहाज़ा इस कुव्वत (या'नी अक्ल) की उलूम की तरफ़ निस्बत ऐसे ही है जैसे आंख की देखने की तरफ़ और उलूम की वज़ाहत के सिलसिले में कुरआन व शरीअत की इस कुव्वत की तरफ़ निस्बत इस तरह है जैसे सूरज की रोशनी को आंखों के नूर से। लिहाज़ा इस कुव्वत को इसी तरह समझना चाहिये।

﴿2﴾....अक्ल से मुराद वोह उलूम हैं जो समझदार बच्चे की ज़ात में पाए जाते हैं कि वोह जाइज़ चीज़ों को जाइज़ और मुहाल चीज़ों को मुहाल समझता है। मषलन वोह जानता है दो एक से ज़ियादा होते हैं और एक शख्स एक ही वक़्त दो जगहों में नहीं हो सकता। बा'ज़ मुतकल्लिमीन ने अक्ल की ता'रीफ़ करते हुए जो मुन्दरजए ज़ैल बात कही है इस से उन का मतलब भी वोही है। वोह फ़रमाते हैं : अक्ल बा'ज़ बदीही उलूम हैं जैसे जाइज़ चीज़ों के जवाज़ और मुहाल अश्या के मुहाल होने का इल्म।⁽¹⁾ येह भी फ़ी नफ़िसही सहीह ता'रीफ़ है क्यूंकि येह उलूम मौजूद हैं और उन्हें अक्ल कहना भी ज़ाहिर है अलबत्ता इस कुव्वत का इन्कार करना और यूं कहना कि सिर्फ़ उलूमे बदीही मौजूद हैं, फ़ासिद ख़याल है।

﴿3﴾....वोह उलूम जो हालात की तब्दीली से तजरिबे की बुन्याद पर हासिल हों। क्यूंकि जिस शख्स को तजरिबात समझदार और मज़ाहिबे मुहज़ज़ब बना दें उस के बारे में कहा जाता है कि वोह आदत में अक्ल मन्द है और जो इस से मौसूफ़ न हो उस के बारे में कहा जाता है कि येह शख्स कुन्द ज़ेहन, ना तजरिबाकार और जाहिल है तो येह उलूम की एक और किस्म है जिसे अक्ल कहा जाता है।

﴿4﴾...."येह कुव्वत इस हद तक पहुंच जाए कि मुआमलात के अन्जाम की पहचान हासिल हो जाए और लज़ज़त की तरफ़ बुलाने वाली शहवत को नेस्तो नाबूद कर दे।" जब किसी को येह

कुव्वत हासिल हो जाए तो उसे अक्ल मन्द कहा जाता है क्योंकि उस का किसी चीज़ की तरफ बढ़ना और इस से रुकना अन्जाम पर नज़र के मुताबिक होता है फ़ौरी शहवत की वजह से नहीं। येह भी इन्सान के उन ख़्वास में से है जिन की वजह से वोह तमाम हैवानात से मुमताज़ होता है।

पहला मा'ना बुन्याद और मम्बअ है, दूसरा मा'ना इस की फुरुअ है जो इस के ज़ियादा करीब है, तीसरा मा'ना पहले और दूसरे की फुरुअ है क्योंकि फ़ितरी कुव्वत और उलूमे ज़रूरिया की बुन्याद पर तजरिबाती उलूम हासिल होते हैं और चौथा मा'ना आख़िरी नतीजा है और येही मक्सूद है। पहले दो फ़ितरी और तबई तौर पर हासिल होते हैं जब कि दूसरे दो अमल और इक्तिसाब से हासिल होते हैं इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा क़र्रम अल्लह त़ैअली व ज़हे अल क़र्रिम ने फ़रमाया :

رَأَيْتُ الْعُقْلَ عَقْلَيْنِ فَمَطْبُوءٌ وَمَسْمُوءٌ
وَلَا يَنْفَعُ مَسْمُوءٌ إِذَا لَمْ يَكُ مَطْبُوءٌ
كَمَا لَا تَنْفَعُ الشَّمْسُ وَضَوْءُ الْعَيْنِ مَمْنُوءٌ

तर्जमा : (1) मैं ने अक्ल को दो सूरतों में देखा एक फ़ितरी और दूसरी सुनी हुई।

(2) और सुनी हुई उस वक़्त तक फ़ाइदा नहीं देती जब तक फ़ितरी अक्ल मौजूद न हो।

(3) जैसे सूरज की रोशनी उस वक़्त तक फ़ाइदा नहीं देती जब तक आंखों की रोशनी न हो।

नबियों के सुल्तान, रहमते अलमिय्यान صَلَّی اللّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस इरशादे गिरामी कि “**اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने कोई ऐसी मख़्लूक पैदा नहीं फ़रमाई जो उस के नज़दीक अक्ल से ज़ियादा मुअज़्ज़ हो।”⁽¹⁾ से अक्ल की पहली किस्म मुराद है।

और इस इरशादे गिरामी कि “जब लोग मुख़लिफ़ किस्म की नेकियों और आ'माले सालेहा के ज़रीए कुर्बे इलाही हासिल करें तो तुम अपनी अक्ल के ज़रीए कुर्ब हासिल करो।”⁽²⁾ से आख़िरी किस्म मुराद है।

अक्ल मन्द की पहचान :

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّهُ تَعَالَى عَنْهُ से जो कुछ फ़रमाया इस से भी येही मुराद है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू दरदा ! अपनी

①.....مفردات الفاظ القرآن للراغب، کتاب العين، ص ۵۷۸۔

②.....حلیة الاولیاء، مقدمة المصنف، الحديث: ۳۲، ج ۱، ص ۵۰، بتغییر قلیل۔

अक्ल में इजाफ़ा करो **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां ज़ियादा मुक़रब बन जाओगे।” उन्होंने ने अर्ज़ की : “आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर मेरे मां बाप कुरबान ! मैं ऐसा किस तरह कर सकता हूं?” इरशाद फ़रमाया : “**اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के ह़राम कर्दा कामों से इजतिनाब और फ़राइज़ को पाबन्दी से अदा करते रहो अक्ल मन्द हो जाओगे। अच्छे आ'माल इख़्तियार करो दुन्या में तुम्हें बुलन्द रुत्बा मिलेगा और इज़्ज़त में इजाफ़ा होगा जब कि आख़िरत में रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** का कुर्ब नसीब होगा और इज़्ज़त हासिल होगी।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ** बयान करते हैं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़, हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब और हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा (رضی اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ) बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुए : “या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْكَ وَسَلَّم** लोगों में से ज़ियादा इल्म वाला कौन है ?” आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “जो अक्ल मन्द है।” अर्ज़ की : “ज़ियादा इबादत गुज़ार कौन है?” इरशाद फ़रमाया : “जो अक्ल मन्द है।” अर्ज़ की : “सब से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाला कौन है?” इरशाद फ़रमाया : “जो अक्ल मन्द है।” अर्ज़ की : “क्या अक्ल मन्द वोह है जिस की बातिनी सिफ़ात मुकम्मल हों, फ़साहत ज़ाहिर, हाथ सखी और मक़ामे अज़ीम का मालिक हो ?” तो हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “येह जो कुछ है जीती दुन्या ही के अस्बाब हैं और आख़िरत तुम्हारे रब्ब के पास परहेज़गारों के लिये है।” फिर फ़रमाया : “अक्लमन्द वोह है जो मुत्तकी है अगर्चे दुन्या में बज़ाहिर ज़लीलो रुस्वा हो।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “बेशक अक्ल मन्द वोह है जो **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ पर ईमान लाया, उस के रसूलों की तस्दीक़ और उस की फ़रमांवरदारी की।”⁽³⁾

ख़ुलासा : मुनासिब येह है कि इस कुव्वत का अस्ल नाम लुग़त और इस्ति'माल के ए'तिबार से हो और उलूम पर इस का इतलाक़ इस वजह से हो कि वोह उस के षमरात व नताइज हैं जैसे किसी चीज़ की पहचान इस के (नतीजे और) षमरे से होती है। कहा जाता है इल्म ख़शिय्यते इलाही का नाम है और आलिम वोह है जो **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से डरता है क्यूंकि ख़शिय्यत इल्म का नतीजा है तो इस (अक्ली) कुव्वत के ग़ैर पर अक्ल का इतलाक़ मजाज़न होगा लेकिन लुग़त से बहूष करना मक़सूद नहीं बल्कि मक़सूद येह है कि येह चारों अक्लाम मौजूद हैं और येह नाम (या'नी अक्ल) इन सब पर बोला जाता है। पहली किस्म के इलावा किसी के

①.....اتحاف الخيرة المهرة، باب ماجاء فی العقل، الحديث: ٤٠٤٠، ج٢، ص ٣٤٥-

②.....المرجع السابق، الحديث: ٤٠٣٦، ص ٣٦٥- ③.....المرجع السابق، الحديث: ٤٠٥٨، ص ٣٤١-

वुजूद में कोई इख़िलाफ़ नहीं और सहीह येह है कि तमाम अक्साम पाई जाती हैं और येही अस्ल है। जब कि येह उलूम गोया फ़ितरतन इस कुव्वते अक़लिय्या में ज़िम्नन पाए जाते हैं लेकिन वुजूद में उस वक़्त पाए जाते हैं जब कोई ऐसा सबब जारी हो जो इन्हें वुजूद का जामा पहनाए। येह उलूम कोई ऐसी चीज़ नहीं जो बाहर से वारिद हुई है गोया वोह इस कुव्वते अक़लिय्या में मौजूद थे अब ज़ाहिर हो गए। इस की मिषाल ज़मीन में पानी का मौजूद होना है जो कुंवां खोदने से ज़ाहिर और जम्अ होता और कुव्वते हिस्स्या के ज़रीए मुमताज़ हो जाता है येह बात नहीं कि इस की तरफ़ किसी नई चीज़ को लाया गया है। इसी तरह बादाम में रोगन और गुलाब में अर्क होता है। इसी सिलसिले में इरशादे खुदावन्दी है :

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْ بُنَيِّ آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ
(پ ۹، الاعراف: ۱۷۲)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और ऐ महबूब ! याद करो जब तुम्हारे रब्ब ने अवलादे आदम की पुश्त से उन की नस्ल निकाली और उन्हें खुद उन पर गवाह किया, क्या मैं तुम्हारा रब्ब नहीं ? सब बोले क्यों नहीं।

फ़ाइदा : इस से मुराद इन के नुफूस का इक़रार है न कि ज़बानों का क्यूंकि ज़बानों के इक़रार के ए'तिबार से इक़रार करने वाले और मुन्किरीन में इन की तक्सीम उस वक़्त हुई जब इन की ज़बानों और अश्खास को पैदा किया गया। येही वजह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ
(پ ۲۵، الزخرف: ۸۷)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और अगर तुम उन से पूछो कि इन्हें किस ने पैदा किया तो ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने।

इस का मतलब येह है कि अगर इन के अहवाल का ए'तिबार किया जाए तो इन पर इन के नुफूस और बातिन गवाही देंगे।

इरशादे खुदावन्दी है :

فَطَرَتِ اللَّهُ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا
(پ ۲۱، الروم: ۳۰)

तर्जमए कज़ुल ईमान : **अल्लाह** की डाली हुई बिना जिस पर लोगों को पैदा किया।

फ़ाइदा : या'नी हर शख्स को ईमान बिल्लाह पर पैदा किया गया है बल्कि हर चीज़ को माहिyyत की मा'रिफ़त पर पैदा किया गया है। मतलब येह है कि गोया इस के अन्दर येह मा'रिफ़त रखी गई है क्यूंकि इस की इस्ति'दाद इदराक के करीब है। फिर जब फ़ितरतन नुफूस में ईमान को रखा गया है तो इस ए'तिबार से लोगों की दो अक्साम हैं :

(1)....वोह जिस ने मुंह फैरा और (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को) भुला दिया वोह काफ़िर है। (2)....वोह जिस ने अपने खयाल को दौड़ाया तो याद आ गया। येह उस शख्स की तरह है जो गवाह बना फिर गफ़लत की वजह से भूल गया लेकिन बा'द में उसे याद आ गया। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢١﴾ (پ २, البقرة: २१)

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٢﴾ (پ २३, ص: २९)

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَادْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ
الَّذِي أَثَقَّمْتُمْ بِهِ ۖ (پ २, المائدة: ५)

इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَكِّرٍ ﴿١٧﴾ (پ २, القمر: १)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि कहीं वोह नसीहत मानें।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अक्ल मन्द नसीहत मानें।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और याद करो **अल्लाह** का एहसान अपने ऊपर और वोह अहद जो उस ने तुम से लिया।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने कुरआन याद करने के लिये आसान फ़रमा दिया तो है कोई याद करने वाला।

और इस तरीके को तज़क्कुर (या'नी याद करना) कहना कोई तअज़्जुब खेज़ बात नहीं। गोया याद आने की दो सूरतें हैं :

(1)....वोह उस सूरत को याद करे जिस का वुजूद उस के दिल में हाज़िर था लेकिन पाए जाने के बा'द ग़ाइब हो गया और

(2)....वोह उस सूरत को याद करे जो फ़ितरत के ज़िम्न में वहां पाई जाती है और येह हक़ाइक़ देखने वाले को नूरे बसीरत से नज़र आते हैं लेकिन उस शख्स पर भारी होते हैं जिस का तकिया तकलीद और समाअत हो, कश्फ़ और मुशाहदा करना न हो इसी लिये तुम देखोगे कि वोह इस किस्म की आयात में दीवाना पन इख़्तियार करता है और तज़क्कुर और नुफ़ूस के इकरार के सिलसिले में दूर अज़कार तावीलात निकालता है नीज़ अह़ादीष और आयात के सिलसिले में इस के ज़ेहन में इस तरह के खयालात पैदा होते हैं कि येह एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं बल्कि बा'ज़ अवक़ात येह बात उस पर ग़ालिब आ जाती है तो वोह उन की तरफ़ हक़ारत की नज़र से देखता और उन में तज़ाद समझता है। इस की मिषाल : नाबीना शख्स जैसी है।

दिल का अन्धापन ज़ियादा नुक्सान देह है :

नाबीना शख्स जब घर में दाखिल होता और घर में तरतीब से रखे हुए बरतनों की वजह से गिर जाता है तो कहता है क्या वजह है कि “बरतनों को तरतीब से एक जगह क्यों नहीं रखा जाता।” तो उसे कहा जाता है : “येह अपनी जगह पर हैं ख़राबी तो तुम्हारी आंखों में है।” बसीरत की ख़राबी भी इस की तरह होती है बल्कि इस से ज़ियादा बड़ी होती है क्योंकि नफ़्स सुवारी की तरह और जिस्म सुवारी की मानिन्द है और सुवार का अन्धा होना सुवारी के अन्धे पन से ज़ियादा नुक्सान देह है इस वजह से कि बातिनी बसीरत ज़ाहिरी बसीरत के मुशाबेह है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَى ۖ (پ ۴، النجم: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : दिल ने झूट न कहा जो देखा।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَكَذَلِكَ نُرِىٰ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوتَ السَّمٰوٰتِ

وَالْاَرْضِ (پ ۷، الانعام: ۷۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इसी तरह हम इब्राहीम को दिखाते हैं सारी बादशाही आस्मानों और ज़मीन की।

और इस की ज़िद को अन्धापन करार दिया। चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया :

فَاِنَّهَا لَا تَعْمٰى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ تَعْمٰى

الْقُلُوبَ الَّتِي فِي الصُّدُورِ (پ ۴، الحج: ۴۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो येह कि आंखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि वोह दिल अन्धे होते हैं जो सीनों में हैं।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهِۦ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ

اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا (پ ۵، بنی اسرائیل: ۷۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस ज़िन्दगी में अन्धा हो वोह आख़िरत में अन्धा है और और भी ज़ियादा गुमराह।

येह उमूर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के लिये वाज़ेह किये गए। इन में से बा'ज का तअल्लुक ज़ाहिरी बसीरत से और बा'ज का बातिनी बसीरत से है और इन सब को रुविय्यत (देखना) कहा गया है।

ख़ुलासए कलाम येह है कि जिस शख्स की बातिनी निगाह कामिल न हो उसे दीन से सिर्फ़ छिलके और मिषालें हासिल होती हैं दीन का मरज़ और हक़ाइक़ हासिल नहीं होतीं। येह वोह अक्साम हैं जिन पर लफ़्ज़े अक्ल का इतलाक़ किया जाता है।

तीसरी फ़स्ल : अक्ल के ए'तिबार से इल्मानी तफ़ावत में तफ़ावत

अक्ल में फ़र्क के बारे में भी लोगों की आरा मुख़लिफ़ हैं लेकिन कम इल्मों का कलाम नक्ल करने का क्या फ़ाइदा बल्कि सब से बेहतर और अहम बात वाज़ेह हक़ की तरफ़ जल्दी करना है इस सिलसिले में वाज़ेह हक़ यह है कि दूसरी किस्म “जो जाइज़ चीज़ों के जवाज़ और मुहालात के मुहाल होने से तअल्लुक ज़रूरी इल्म है” के इलावा अक्ल की तमाम अक्साम में फ़र्क है क्योंकि जो यह जानता है कि दो एक से ज़ियादा होते हैं यकीनन यह बात भी उस के इल्म में है कि एक जिस्म एक ही वक़्त में दो जगहों पर मौजूद नहीं हो सकता इसी तरह यह भी नहीं हो सकता कि एक ही चीज़ क़दीम भी हो और हादिष भी । इस तरह दीगर मिषालें और वोह उमूर भी हैं जिन का इदराक किसी शक के बिगैर ठीक ठीक होता है लेकिन तीन अक्साम में फ़र्क पाया जाता है ।

चौथी किस्म जो यह है कि “ख़्वाहिशात को ख़त्म करने के लिये कुव्वत का हासिल होना” इस में लोगों के दरमियान तफ़ावत पोशीदा नहीं बल्कि इस में एक शख्स की मुख़लिफ़ हालतों में भी फ़र्क होता है और यह फ़र्क कभी ख़्वाहिश में फ़र्क के बाइष होता है क्योंकि अक्ल मन्द शख्स बा'ज ख़्वाहिशात को छोड़ने पर क़ादिर होता है और बा'ज को नहीं लेकिन इन का छोड़ना मुश्किल नहीं होता । नौजवान कभी ज़िना को छोड़ने से अज़िज़ होता है लेकिन जब बड़ा हो जाता और उस की अक्ल कामिल हो जाती है तो वोह इस पर क़ादिर हो जाता है जब कि रियाकारी और इक़तिदार की ख़्वाहिश बुढ़ापे की वजह से कम नहीं होती बल्कि बढ़ जाती है । कभी इस का सबब उस इल्म का तफ़ावत होता है जो शहवत की ख़राबी से रूशनास कराता है ।

अक्ल का लश्कर और सामाने जिहाद :

इसी लिये तबीब बा'ज नुक्सान देह खानों से बचने पर क़ादिर होता है लेकिन बा'ज अवकात ग़ैरे तबीब अक्ल में इस तबीब के बराबर होने के बा वुजूद इस पर क़ादिर नहीं होता अगर्चे वोह यकीन रखता है कि येह नुक्सान देह है लेकिन चूंकि तबीब ब ए'तिबार इल्म ज़ियादा कामिल होता है इस लिये उस का ख़ौफ़ भी ज़ियादा होता है । लिहाज़ा ख़ौफ़ ख़्वाहिशात का क़ल्अ क़म्अ करने के लिये अक्ल का लश्कर और सामाने जिहाद है । यूंही आलिम गुनाहों को छोड़ने पर जाहिल से ज़ियादा क़ादिर होता है क्योंकि वोह गुनाहों के नुक्सानात का ज़ियादा इल्म रखता है इस से मुराद हकीकी अलिम है । उ-लमाए दुन्या और बेहूदा गुफ़्तगू करने वाले मुराद नहीं और अगर ख़्वाहिश के ए'तिबार से तफ़ावत हो तो वोह अक्ल का तफ़ावत नहीं और अगर वोह

इल्म की वजह से है तो हम ने इस किस्म के इल्म का नाम अक्ल भी रखा है क्योंकि वोह कुव्वते अक्लिय्या को मजबूत करता है। फर्क उस चीज़ में होता है जिस की तरफ़ येह नाम लौटता है और बा'ज अवकात सिर्फ़ कुव्वते अक्लिय्या में फर्क की वजह से तफ़ावुत होता है जब येह कुव्वत मजबूत होगी तो यकीनन शहवत को ज़ियादा ख़त्म करने वाली होगी।

तीसरी किस्म जो तजरिबाती इल्म से मुतअल्लिक है इस में लोगों का मुख़्तलिफ़ होना नाक़ाबिले इन्कार है क्योंकि वोह बात तक ज़ियादा पहुंचने और इसे जल्द अज़ जल्द पाने के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ हैं और इस का सबब या तो अक्ली कुव्वत में फर्क होता है या तजरिबे में फर्क इस का बाइष बनता है।

पहली किस्म या'नी कुव्वते अक्लिय्या और येही अस्ल है। इस ए'तिबार से भी इन्सानों में तफ़ावुत का इन्कार नहीं हो सकता क्योंकि वोह एक नूर की मिष्ल है जो नफ़्स पर चमकता है और इस की सुब्ह तुलूअ होती है और इस के चमकने का आगाज़ उस वक़्त होता है जब वोह (या'नी बच्चा अश्या में) तमीज़ करने की उम्र को पहुंच जाता है फिर वोह मुसलसल परवरिश पाता और इस की नश्व व नुमा में इज़ाफ़ा होता रहता है और वोह खुफ़्या तौर पर तदरीजन बढ़ता है यहां तक कि येह (नूर) 40 साल की उम्र के करीब कामिल हो जाता है और येह सुब्ह की रोशनी की मानिन्द होता है क्योंकि वोह शुरूअ में इस क़दर मख़्फ़ी होती है कि इस का इदराक मुश्किल होता है फिर तदरीजन बढ़ती है यहां तक कि सूरज की टिकिया के तुलूअ होने के साथ मुकम्मल हो जाती है।

नूरे बसीरत में फर्क आंखों की रोशनी में फर्क की तरह है कमज़ोर बीनाई और तेज़ बीनाई वाले के दरमियान फर्क महसूस होता है और **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक को तदरीजन पैदा करने का तरीका जारी फ़रमाया है हत्ता की शहवानी कुव्वत बच्चे के बालिग़ होते ही उस में अचानक और यकदम ज़ाहिर नहीं होती बल्कि तदरीजन थोड़ी थोड़ी ज़ाहिर होती है इसी तरह तमाम कुव्वतें और सिफ़ात तदरीजन ज़ाहिर होती हैं और जो शख्स इस कुव्वत में लोगों के दरमियान तफ़ावुत का इन्कार करता है गोया वोह अक्ली कुव्वत से ख़ाली है और जो येह ख़याल करे कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अक्ल मुबारक किसी देहाती और जंगलों में रहने वाले गंवारों की अक्ल की तरह है तो वो तो किसी देहाती से भी ज़ियादा ख़सीस है वोह कुव्वते अक्लिय्या में तफ़ावुत का कैसे इन्कार कर सकता है क्योंकि अगर येह फर्क न होता तो इल्म के समझने में लोगों के मुख़्तलिफ़ दर्जात न होते और कुन्द ज़ेहन, ज़हीन और कामिल में इन की तक्सीम न होती।

कुन्द ज़ेहन : वोह होता है जो समझाने से भी नहीं समझता हत्ता कि असातेज़ा को उस पर बहुत ज़ियादा मेहनत करनी पड़ती है।

ज़हीन : वोह होता है जो अदना इशारे से समझता है ।

कामिल : वोह होता है कि ता'लीम दिये बिगैर भी उस से ह्काइके उमूर का जुहूर हो जाता है । जैसे **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

يَكَادِرُ يَتَهَا يُضَيِّعُ وَلَوْلَمْ تَسْسُهُ نَارُ ط
نُورًا عَلَى نُورٍ ط (پ ۸، النور: ۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : करीब है कि उस का तेल भड़क उठे अगर्चे उसे आग न छूए, नूर पर नूर है ।

और येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सिफ़त है क्यूंकि सीखने और सुनने के बिगैर भी उन के बातिन में निहायत बारीक और पोशीदा उमूर रोशन हो जाते हैं और इसे इल्हाम कहा जाता है ।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने इस इरशादे गिरामी में येही बात बयान फ़रमाई कि हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने मेरे दिल में येह बात डाली कि “जिस से महब्बत करना चाहते हैं महब्बत करें बेशक आप इस से जुदा होने वाले हैं और जब तक चाहते हैं ज़िन्दा रहें बिल आख़िर आप इन्तिक़ाल फ़रमाने वाले हैं और जो चाहें अमल करें आप को इसी का बदला दिया जाएगा ।”⁽¹⁾

और फ़िरिश्तों की तरफ़ से नबियों को इस तरह की ख़बर देना वहूये सरीह के ख़िलाफ़ है जो कान के ज़रीए सुनी जाती और आंखों से फ़िरिश्ते को देखा जाता है इसी लिये आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इसे दिल में डालने (इल्हाम) से ता'बीर फ़रमाया । वहूय के दर्जात बहुत ज़ियादा हैं और इन में बहूष करना इल्मे मुअ़ामला के लाइक नहीं बल्कि इस का तअल्लुक इल्मे मुकाशफ़ा से है और तुम्हें येह ख़याल नहीं करना चाहिये कि वहूय के दर्जात, मन्सबे वहूय को दा'वत देते हैं क्यूंकि मुमकिन है कि तबीब बीमार को सिद्दहत के दर्जात सिखा दे और आलिम किसी फ़ासिक को अदालत के दर्जात की ता'लीम दे अगर्चे फ़ासिक इन दर्जात से नावाक़िफ़ हो । लिहाज़ा इल्म कुछ और चीज़ है और किसी मा'लूम चीज़ का वुजूद कुछ और । पस हर वोह शख्स जो नबुव्वत और विलायत की पहचान रखता हो नबी या वली नहीं हो सकता और न ही तक्वा व परहेज़गारी और इन की बारीकियों को जानने वाला मुत्तकी हो सकता है ।

ख़ुलासा : लोगों की तक्सीम यूं है कि एक वोह शख्स है जो ज़ाती तौर पर आगाह होता और समझता है । दूसरा वोह है कि जो किसी के आगाह करने और सिखाने के बिगैर नहीं समझता और तीसरा वोह है कि जिसे ता'लीमो तम्बीह भी फ़ाइदा नहीं देती जिस तरह ज़मीन की मुख़्तलिफ़ सूरतें

है कि बा'ज जगह पानी जम्अ होता और इस क़दर ताक़तवर होता है कि खुद बख़ुद चश्मों की सूरत में फूट निकलता है, बा'ज मक़ामात पर कुंवां खोदने की ज़रूरत पेश आती है ताकि वोह नालियों की तरफ़ निकले जब कि बा'ज जगहें ऐसी हैं कि जहां खुदाई का भी कुछ फ़ाइदा नहीं होता और वोह खुश्क जगह होती है और येह इस लिये है कि सिफ़ात के ए'तिबार से ज़मीन के जवाहिर मुख़लिफ़ हैं। इसी तरह कुव्वते अक़लिय्या के ए'तिबार से इन्सानी नुफ़ूस भी मुख़लिफ़ हैं नक्ली दलाइल के ए'तिबार से अक़ल के मुख़लिफ़ होने पर येह हदीष दलालत करती है। चुनान्वे, **अर्श से बढ कर अज़मत वाली चीज़ :**

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन सलाम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से तवील हदीष मरवी है। इस के आख़िर में अर्श की अज़मत इन अल्फ़ाज़ में बयान की गई है कि फ़िरिशतों ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की : “ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ क्या तूने अर्श से बड़ी चीज़ भी कोई पैदा की है ?” तो **अल्लाह** ने इरशाद फ़रमाया : “हां ! वोह अक़ल है।” उन्होंने ने अर्ज़ की : “इस की कद्रो मन्ज़िलत क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “रहने दो, इस के इल्म का इहाता नहीं किया जा सकता, क्या तुम्हें रैत (के ज़रात) की ता'दाद का इल्म है ?” उन्होंने ने अर्ज़ की : “नहीं।” **अल्लाह** ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने रैत (के ज़रात) की ता'दाद की मिष्ल अक़ल को मुख़लिफ़ किस्मों में पैदा किया है। बा'ज लोगों को एक ज़रा दिया गया, बा'ज को दो, बा'ज को तीन और चार, बा'ज को एक फ़र्क (एक पैमाना जिस में आठ सैर ग़ल्ला आता है), बा'ज को वस्क (60 साअ ग़ल्ला) और बा'ज को इस से भी ज़ियादा दिया गया।”⁽¹⁾

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम पूछो कि उन लोगों का क्या हाल है जो सूफी बने बैठे और अक़ल व मा'कूल की बुराई बयान करते हैं ? तो याद रखिये ! इस की वजह येह है कि लोगों ने मुजादला व मुनाज़रा करते हुए एक दूसरे पर ए'तिराज़ात और इल्ज़ामात लगाने का नाम अक़ल रख लिया है और येह फ़न कलाम के सबब है और लोग इस पर कादिर नहीं कि इन्हें बताएं कि तुम ने नाम रखने में ख़ता की है क्योंकि येह नाम इन की ज़बानों पर जारी और दिलों में यूं रासिख़ हो गया कि अब इन के दिलों से निकल नहीं सकता लिहाज़ा इन्होंने ने अक़ल व मा'कूल की बुराई बयान करना शुरू कर दी और इन के नज़दीक येही अक़ल है।

1.....اتحاف الخيرة المهرة، باب ماجاء في العقل، الحديث: ٤٠٦٤، ج ٤، ص ٣٤٣، بتغير قليل-

रहा नूरे बसीरत कि जिस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त और उस के रसूलों की सदाक़त नसीब होती है तो इस की बुराई व मज़म्मत का तसव्वुर कैसे मुमकिन है हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की ता'रीफ़ फ़रमाई है अगर इस की मज़म्मत की जाए तो फिर किस चीज़ की ता'रीफ़ की जाएगी ? जब शरीअत क़ाबिले ता'रीफ़ है तो शरीअत की सिद्दहत का इल्म कैसे हासिल होगा ? अगर शरीअत की सिद्दहत का इल्म अक्ल के ज़रीए हो जो खुद मज़मूम है और इस पर यकीन नहीं है तो शरीअत भी मज़मूम होगी । नीज़ जो कहता है कि इस (या'नी शरीअत) का इदराक़ यकीन की आंख और नूरे ईमान से होता है न कि अक्ल के ज़रीए तो उस की तरफ़ तवज्जोह न की जाए क्यूंकि हमारे नज़दीक़ भी अक्ल, ऐनुल यकीन और नूरे ईमान की मुराद एक ही है और वोह बातिनी सिफ़त है जिस के ज़रीए इन्सान जानवरों से मुमताज़ होता है यहां तक कि इस के ज़रीए वोह हर चीज़ की हकीक़त को पा लेता है ।

इस किस्म के अक़षर मुग़ालते उन लोगों की जहालत की वजह से पैदा होते हैं जो हकाइक़ को अल्फ़ाज़ से तलाश करते हैं जिस के नतीजे में वोह मुग़ालते में पड़ते जाते हैं क्यूंकि अल्फ़ाज़ में लोगों की इस्तिलाहात मुग़ालतों का शिकार हैं । अक्ल के बयान में इतना ही काफ़ी है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़ूब जातना है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द और उस के फ़ज़ल से इल्म का बयान मुकम्मल हुवा । हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और ज़मीनो आस्मान के हर मुन्तख़ब बन्दे पर रहमत हो ।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهُ أَوَّلًا وَآخِرًا

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهُ.....﴾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْ مُحَمَّدٍ.....﴾

अक़ाइद का बयान

क़्वाइदे अक़ाइद का बयान चार फ़स्लों पर मुश्तमिल है :

पहली फ़स्ल : **पहले इस्लामी रुक्न कलिमए शहादत**
के मुतअल्लिक अक़ीदए अहले सुन्नत की वज़ाहत

इस फ़स्ल में अक़ाइदे अहले सुन्नत में से इस अक़ीदे या'नी कलिमए शहादत के मुतअल्लिक वज़ाहत की गई है कि जिस का इक़रार व तस्दीक़ पहला इस्लामी रुक्न है ।

अव्बाह عَزَّوَجَلَّ की अता कर्दा तौफीक़ से मैं कहता हूँ कि सब ख़ूबियां **अव्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो पैदा करने वाला, दोबारा ज़िन्दा करने वाला, जो चाहे करने वाला, अर्श का मालिक इज्जत वाला, सख़्त गिरिफ़्त फ़रमाने वाला, अपने पसन्दीदा बन्दों को सिराते मुस्तकीम और दुरुस्त तर्जे अमल की तरफ़ हिदायत देने वाला, शक़ व तरद्दुद की अन्धेरियों से अपने अक़ाइद को बचा कर इक़रारे तौहीद पर जम जाने वालों पर इन्आम फ़रमाने वाला, अपने फ़ज़्लो करम से अपने पसन्दीदा बन्दों को मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत और मुअज़्जज व मुशरफ़ सहाबए किराम رَضَوْنَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफीक़ बख़्शने वाला है । अपने पसन्दीदा बन्दों पर अपनी ज़ात व अफ़अाल को इन उम्दा अवसाफ़ के ज़रीए रौशन फ़रमाता है कि जिन का इदराक़ वोही कर सकता है जो उस की तरफ़ मुतवज्जेह होता और बारगाह में हाज़िर रहता है और वोह उन्हें अपनी ज़ात की मा'रिफ़त भी अता फ़रमाता है कि वोह एक है उस का कोई शरीक नहीं, यक्ता है उस की कोई नज़ीर नहीं, बे नियाज़ है कोई उस के जोड़ का नहीं, तन्हा है कोई उस का हम रुत्बा नहीं, वाहिद व क़दीम है कि उस से पहले किसी चीज़ का वुजूद न था, हमेशा से है और हमेशा रहेगा न उस की इब्तिदा है और न ही इन्तिहा, बज़ाते खुद काइम और औरों का काइम रखने वाला है । उस का कोई इख़िताम नहीं, वोह बाक़ी और ग़ैरे फ़ानी है । उस के लिये अन्जाम व ज़वाल नहीं । उस की ज़ात बुजुर्गी पर दलालत करने वाली सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है । ज़माने गुज़रते और दिन रात ख़त्म होते जाएंगे लेकिन उस की ज़ात न ख़त्म होने वाली है, न टूटने वाली बल्कि उस की शान येह है :

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ

بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ① (प २, الحدید: ३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोही अव्वल वोही आख़िर वोही ज़ाहिर वोही बातिन और वोही सब कुछ जानता है ।

**कलिमाए शहादत के पहले गुण अकीदए बौहीद की वजाहत
हर ऐब व नुक़स से पाक जात :**

अल्लाह سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى جِسْم व जिस्मानियत से पाक है। वोह मुतनाही और किस्मत के ताबेए जोहर नहीं। वोह जिस्म की मिष्ल नहीं क्यूंकि अज्जाम तो एक हृद में महदूद और काबिले तक्सीम होते हैं। न तो वोह जोहर है न अर्ज⁽¹⁾ और न ही जवाहिर व अवारिज उस में हुलूल किये हुए हैं। न तो वोह किसी मौजूद के मुशाबेह है और न ही कोई मौजूद उस के मुशाबेह। (बल्कि कुरआने मजीद में है :)

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ (پ ۲۵، الشوری: ۱۱)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : उस जैसा कोई नहीं।

और न ही वोह किसी जैसा है। वोह मिक्दारों में शुमार होने और कनारों व सप्तों में इहाता किये जाने से यूं पाक है कि ज़मीन व अस्मान भी उस का इहाता नहीं कर सकते। वोह अपनी शायाने शान और अपने फ़रमान व इरादे के मुताबिक़ अर्शे अज़ीम पर इस्तिवा फ़रमाए हुए है। उस का इस्तिवा छूने, जाए गीर होने, जाए पज़ीर होने, किसी चीज़ में हुलूल करने और मुन्तक़िल होने से मुनज़्ज़ाह है। अर्श उसे नहीं उठाता बल्कि अर्श व हामिलीने अर्श का क़ियाम उस की कुदरत व लुत्फ़ का मोहताज और इन सब का निज़ाम उस के कब्ज़ए कुदरत में है। वोह तहतुष़रा की गहराइयों, आस्मान की वुस्अतों और अर्श की बुलन्दियों से बुलन्द तर है। उस की इस बुलन्दी का येह मतलब नहीं कि वो ज़मीन व तहतुष़रा से दूर और उन की निस्बत अर्श व आस्मान से क़रीब है बल्कि वोह ज़मीन व तहतुष़रा से जिस तरह बुलन्द व अज़मत वाला है इसी तरह अर्श व आस्मान से भी अज़ीम तर है। लेकिन इन तमाम तर बुलन्दियों और अज़मतों के बा वुजूद वोह हर मौजूद शै के क़रीब और इन्सान की शह रग से भी ज़ियादा क़रीब है।

وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ (پ ۲۲، السّبا: ۴)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और वोह हर चीज़ पर गवाह है।

जिस तरह उस की ज़ात अज्जाम की मानिन्द नहीं, इसी तरह उस का कुर्ब भी आम तौर पर एक जिस्म के दूसरे जिस्म के क़रीब होने की तरह नहीं। न वोह किसी शै में हुलूल⁽²⁾ किये हुए है और न ही कोई शै उस में हुलूल किये हुए है। जिस तरह कोई ज़माना उसे नहीं घेर सकता

①....अहले सुन्नत के नज़दीक : जोहर से मुराद वोह जुज़ है जो तक्सीम न हो सके और अर्ज वोह है जो बज़ाते खुद काइम न रह सकता हो बल्कि किसी महल का मोहताज हो। (الحديقة الندية، ج ۱، ص ۲۴)

②....हुलूल या'नी एक चीज़ का दूसरी चीज़ में इस तरह दाख़िल हो जाना कि दोनों में तमीज़ न हो सके।

(कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 131)

इसी तरह वोह किसी मकान में भी नहीं समा सकता बल्कि वोह मकान व ज़मान की तख़लीक़ से भी पहले का मौजूद है और अब भी पहले की तरह ही है। अपनी जमीअ सिफ़ात समेत मख़्लूक़ से मुमताज़ है। न तो उस की ज़ात में कोई दूसरा है और न ही वोह किसी दूसरे की ज़ात में है। वोह बदलने, मुन्तक़िल होने और हवादिष व अवारिज़ के लाहिक़ होने से मुनज़्ज़ाह व मुबर्रा है। वोह अपनी बुजुर्ग व बरतर सिफ़ात के साथ दाइमी तौर पर मुत्तसिफ़ और फ़ना से पाक है। उस की सिफ़ाते कमालिया मज़ीद कमाल पाने से मुस्तग़नी हैं। ज़ाते बारी तआला का वुजूद अक़ल से भी जाना जा सकता है। नेक लोग उस के फ़ज़लो करम से जन्नत में उस के दीदार से मुशरफ़ होंगे और दीदारे इलाही से ही उस की अता कर्दा ने'मते पायए तक्मील को पहुंचेंगी।

शिफ़ाते बारी तआला

हयात व कुदरत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिन्दा क़ादिर मुतलक़, ग़ालिब और अज़मत वाला है। कोताही व अज़िज़ी से वरा है। उसे न ऊँघ आए न नींद। उस के लिये फ़ना है न मौत। मलकूतो मुल्क और इज़्ज़त व अज़मत का मालिक है। हकीकी बादशाहत व इक़्तदार वाला है। पैदा करना और हुक्म देना सब उसी के इख़्तियार में है। तमाम आस्मान और जमीअ मख़्लूक़ उसी के तहूते कुदरत है। वोह तख़लीक़ व ईजाद और बे मिश्ल अश्या पैदा करने में यक्ता व ला शरीक है। मख़्लूक़, इस के आ'माल की तख़लीक़ और इन के लिये रिज़्क़ व मौत की तअय्युन फ़रमाने वाला है। किसी भी शै का वुजूद और मुआमलात में तसरूफ़ात उस के इख़्तियार से बाहर नहीं नीज़ उस के तहूते कुदरत अश्या का शुमार और उन की मा'लूमात का इहाता नहीं किया जा सकता।

इल्मे इलाही :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तमाम मा'लूमात का अल्लिम है। ज़मीन की गहराइयों से ले कर आस्मान की बुलन्दियों तक होने वाले तमाम मुआमलात उस के इहाते में हैं। वोह ऐसा अल्लिम है कि ज़मीन व आस्मान की ज़र्रा भर चीज़ भी उस से पिन्हां नहीं बल्कि अन्धेरी रात में साफ़ चट्टान पर सियाह च्यूंटी के चलने की आवाज़ और फ़ज़ा में बिखरे ज़र्रात की हरकात को भी जानता है। उसे ज़ाहिर व पोशीदा हर चीज़ का इल्म है। अपनी क़दीम अज़ली और हमेशा से हमेशा रहने वाली सिफ़ते इल्म से दिल में उभरने वाले ख़तरों, वस्वसों और पोशीदा बातों से बाख़बर है। उस का इल्म ऐसा नहीं कि उस की ज़ात में हुलूल व इन्तिक़ाल से नौपैद हो।

इरादए खुदावन्दी :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ही तख़लीके काइनात का इरादा फ़रमाने वाला और नौपैद चीज़ों की तदबीर फ़रमाने वाला है। आलमे बाला हो या आलमे दुन्या उस का हर थोड़ा और ज़ियादा, छोटा व बड़ा, अच्छा व बुरा, नफ़अ व नुक़सान, कुफ़्र व ईमान, इल्म व जहालत, कामयाबी व नाकामी, कमी व বেশी और ताअत व मा'सिय्यत ज़ाते बारी तआला ही की क़ज़ा व कुदरत और हिक़मत व मशिय्यत से है। उस ने जो चाहा वोह हुवा जो न चाहा न हुवा। हत्ता कि पलक की झपक और दिल की खटक तक मशिय्यते इलाही से ख़ारिज नहीं बल्कि वोही नए सिरे से पैदा करने वाला, दोबारा ज़िन्दा करने वाला और जब जो चाहे करने वाला है। कोई भी ऐसा नहीं जो उस के अम्र में रुकावट बने या उस के फैसले को टाल सके। बन्दे का उस की नाफ़रमानी से बचना या उस की इबादत पर कमरबस्ता होना उस की तौफ़ीक़ व रहमत और उस के इरादे व मशिय्यत से ही मुमकिन है। अगर तमाम ज़िन्न व इन्स और मलाइका व शयातीन मिल कर मशिय्यते खुदावन्दी के बिगैर काइनात के महज़ एक ज़र्रे को ही हरकत देना या ठहराना चाहें तो ऐसा नहीं कर सकते। उस का इरादा तमाम सिफ़ात समेत उस की ज़ात से काइम और हमेशा से इन औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिन अश्या को जिन अवक़ात में पैदा करने का अज़ल में इरादा फ़रमाया, वोह सब चीज़ें अज़ली इरादए खुदावन्दी के ऐन मुताबिक़ बिगैर किसी तक्दीम व ताख़ीर और बिला किसी तग़य्युर व तबद्दुल के अपने मुक़र्ररा वक़्त व हालात में वुजूद में आ गई। उस के कामों की तदबीर सोच बिचार और वक़्त का इन्तिज़ार करने से मुनज़्ज़ा है येही वजह है कि एक काम उसे दूसरे काम से गाफ़िल नहीं करता।

समीअ व बसीर :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ समीअ व बसीर है। वोह सुनता देखता है। कोई भी सुनी जाने वाली चीज़ कैसी ही मख़फ़ी हो और कोई भी चीज़ ख़्वाह कितनी ही बारीक हो उस की समाअत व बसारत से गाइब व मख़फ़ी नहीं हो सकती। दूरी व तारीकी उस की समाअत व बसारत में ख़लल नहीं डाल सकती। जिस तरह वोह इल्म के लिये दिल का, गिरिफ़्त के लिये उज़्व का और तख़लीक़ के लिये आलाजात का मोहताज नहीं बिल्कुल इसी तरह देखने और सुनने के लिये आंखों और कानों का मोहताज नहीं क्यूंकि जिस तरह उस की ज़ात मख़लूक़ के मुशाबेह नहीं इसी तरह उस की सिफ़ात भी मख़लूक़ की सिफ़ात की मिश्ल नहीं।

कलामे इलाही :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कलाम फ़रमाने वाला, हुक्म देने वाला, मन्अ करने वाला और वा'दा व वईद फ़रमाने वाला है। कलाम, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ काइम अज़ली व क़दीम सिफ़ात में से एक सिफ़ात है। उस का कलाम, मख़्लूक के कलाम के मुशाबेह नहीं। उस का कलाम हवा के अन्दर से या अज्जाम की रगड़ से पैदा होने वाली आवाज़ नहीं नीज़ उस का कलाम करना होंटों के मिलने और ज़बान के हरकत करने का भी मोहताज़ नहीं। कुरआन, तोरैत, ज़बूर और इन्जील उस के रसूलों पर नाज़िल होने वाली उस की किताबें हैं। कुरआने पाक ज़बानों से पढ़ा जाता, अवराक़ पर लिखा जाता और दिलों में महफूज़ किया जाता है। इस के बा वुजूद येह कलामे पाक क़दीम और ज़ाते इलाही के साथ काइम है। उसे अवराक़ पर लिखने या दिलों में महफूज़ करने से ऐसा नहीं कि येह ज़ाते इलाही से जुदा या अलग हो गया। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलिमुल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने **अल्लाह** का कलाम बिगैर आवाज़ और हुरूफ़ के समाअत फ़रमाया। यूं ही नेकूकारों को जन्नत में **अल्लाह** तबारक व तआला का दीदार भी इस तरह होगा कि वोह न जोहर होगा न अर्ज़।

वोह इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ है तो महज़ ज़ात की वजह से नहीं बल्कि हयात, कुदरत, इल्म, इरादा, समाअत, बसारत और कलाम की वजह से जिन्दा, अल्लिम, क़ादिर, इरादा करने वाला, सुनने और देखने वाला और कलाम फ़रमाने वाला है।

अफ़अले इलाहिय्या :

सिवाए ज़ाते बारी तआला के हर शै का वुजूद उसी के फ़ै'ल और उसी के फ़ैजाने अद्ल से है। वोह सब चीज़ों का वुकूअ निहायत अच्छे, कामिल, मुकम्मल और मुनासिब तरीक़े पर फ़रमाता है। उस के तमाम अफ़अल व अहक़ाम हिक्मत व अद्ल पर मुश्तमिल होते हैं। उस के अद्लो इन्साफ़ को बन्दों के अद्लो इन्साफ़ पर क्रियास नहीं किया जाएगा क्यूंकि बन्दे से जुल्म हो सकता है इस तरह कि जब वोह ग़ैर की मिल्क में तसरूफ़ करेगा तो ज़ालिम कहलाएगा जब कि मालिके दो जहां عَزَّوَجَلَّ से जुल्म होना मुतसव्वर ही नहीं क्यूंकि उस के सिवा किसी की मिल्क है ही नहीं चे जाइका उस में तसरूफ़ या जुल्म किया जाए। सिवाए उस की ज़ात के जो भी है जिन्न व इन्सान, फ़िरिश्ते व शैतान, ज़मीन व आस्मान, हैवान व बे जान, सब्ज़ा, जोहर व अर्ज़, समझी और महसूस की जाने वाली तमाम की तमाम मा'दूम अश्या को उस ने अपनी कुदरते कामिला से वुजूद बख़्शा और नेस्त (या'नी ग़ैर मौजूद) को हस्त (या'नी मौजूद) फ़रमाया। वोह

अज़ल में मौजूद था उस के साथ कोई भी न था। फिर उस ने अपने इरादे को षाबित करने और अपनी कुदरत को ज़ाहिर करने के लिये काइनात की तख़्तिक़ फ़रमाई इस वजह से कि वोह अज़ल में उस की तख़्तिक़ का इरादा फ़रमा चुका था, येह वजह नहीं कि उसे इस की कोई ज़रूरत व हाज़त थी।

वोह मख़्लूक को पैदा करे, बनाए और इन्हें मुक़ल्लफ़ ठहराए तो येह महज़ उस का फ़ज़ल है, उस पर ज़रूरी व लाज़िम नहीं। इसी तरह वोह अपनी मख़्लूक को इन्आमात से नवाज़े और इन की इस्लाह करे तो येह उस की मेहरबानी है, उस पर लाज़िम नहीं। वोही फ़ज़ल व एहसान और इन्आम व इकराम फ़रमाने वाला है। वोह बन्दों को तरह तरह के अज़ाबात में मुब्तला करने और इन्हें मुख़्तलिफ़ मसाइब व आलाम से दो चार करने पर कादिर है। अगर वोह ऐसा करे भी तो येह उस की तरफ़ से बुराई या जुल्म नहीं बल्कि अद्ल ही अद्ल है। अपने मोमिन बन्दों को नेकियों का अच्छा सिला देना महज़ उस के करम व वा'दे के मुताबिक़ है वरना न तो बन्दे उस के मुस्तहिक् हैं और न ही उस पर ऐसा करना लाज़िम है क्यूंकि किसी की वजह से कोई फ़े'ल करना उस पर वाजिब नहीं और किसी का उस पर कुछ हक़ भी नहीं और जुल्म की निस्बत तो उस की तरफ़ कर ही नहीं सकते।

उस ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वासिते से बन्दों पर अपना हक़ बसूरते ताअत लाज़िम किया। महज़ अक्ल की वजह से नहीं बल्कि अपने रसूलों को मबरूष फ़रमाया फिर इन में सिद्क़ को ज़ाहिर व बाहिर मो'जिज़ात के ज़रीए षाबित किया और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने रब्बुल अनाम के अहक़ाम, उस की मन्अ कर्दा चीज़ों और उस के वा'दा व वईद का पैग़ाम ख़ल्क तक पहुंचाया। अब बन्दों पर लाज़िम है कि वोह इन नुफ़ूसे कुदसिय्या के लाए हुए पैग़ाम को सच्चा जानें।

क़लिमाए शहादत के दूसरे गुण की बग़ाहत

इस का मतलब येह है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रिसालत की गवाही देना और येह ए'तिक्दा रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ैब की ख़बरे देने वाले, किसी आदमी से न पढ़ने वाले और क़बीलए कुरैश से तअल्लुक़ रखने वाले हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अरबो अजम के तमाम अलाकाजात और जिन व इन्स में से हर एक की जानिब पैग़ामे रिसालत दे कर मबरूष फ़रमाया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सिवाए उन बातों के जिन्हें बाकी रखना मक्सूद था साबिक़ा तमाम शरई अहक़ाम शरीअते मुहम्मदी ला कर मन्सूख़ फ़रमा दिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तमाम अम्बियाए

किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام पर फ़ज़ीलत दे कर बनी आदम का सरदार बनाया और لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ पर ए'तिकाद रखने को उस वक़्त तक क़बूल न फ़रमाया जब तक कि इस के साथ मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पर ईमान लाने को न मिलाया जाए। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मख़्लूक पर लाज़िम कर दिया कि वोह हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उमूरे दुन्या व आख़िरत के मुतअल्लिक दी हुई ख़बरों को सच्चा जानें नीज़ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मौत के बा'द पेश आने वाले अहवाल की जो ख़बरें दीं जब तक बन्दा उन पर ईमान न लाएगा मोमिन नहीं कहलाएगा।

मुन्कर नकीर के सुवालात :

इन अहवाल में से एक मुन्कर नकीर का सुवाल करना है।⁽¹⁾ येह दोनों डरावनी और हैबत नाक इन्सानी शक़ल में तशरीफ़ लाते और बन्दे को क़ब्र में सीधा बिठा देते हैं। उस वक़्त बन्दा जिस्म व रूह दोनों के साथ होता है। फिर वोह बन्दे से तौहीद व रिसालत के बारे में सुवाल करते हैं और पूछते हैं कि तेरा रब्ब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और तेरा नबी कौन है ? येह दोनों फ़िरिश्ते क़ब्र की आजमाइश हैं⁽²⁾ और बन्दे के लिये बा'दे मौत पहली आजमाइश मुन्कर नकीर के सुवालात का सामना करना है। बन्दे पर लाज़िम है कि वोह अज़ाबे क़ब्र को हक़ जाने और इस पर यकीन रखे⁽³⁾ और जिस्म व रूह दोनों पर **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त का अपनी मशिय्यत के मुताबिक़ नाफ़िज़ करना अद्ल पर मब्नी है।

मीज़ाने अमल :

बन्दे पर यकीन रखना ज़रूरी है कि मीज़ान हक़ है। “इस के दो पलड़े और एक ज़बान है।”⁽⁴⁾ इस के एक पलड़े की वुस्अत ज़मीन व आस्मान के तबकात जितनी है। इस में कुदरते इलाही से लोगों के आ'माल तोले जाएंगे। उस दिन राई के दानों और ज़रों तक को बाट बना कर कमाले अद्ल व इन्साफ़ का मुज़ाहरा किया जाएगा। नेक आ'माल को अच्छी सूरत अता कर के मीज़ान के नूरानी पलड़े में रखा जाएगा और वोह पलड़ा ब फ़ज़ले इलाही इन आ'माल पर मुक़रर कर्दा दर्जों के मुताबिक़ भारी हो जाएगा और बुरे आ'माल क़बीह सूरत में मीज़ान के काले पलड़े में फैक़े जाएंगे और वोह पलड़ा रब्बे लम यज़ल के अद्ल के सबब हलका पड़ जाएगा।

①.....سنن الترمذی، کتاب الجنائز، باب ماجاء فی عذاب القبر، الحدیث: ۱۰۷۳، ج ۲، ص ۳۳۔

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحدیث: ۶۶۱۴، ج ۲، ص ۵۸۱۔

③.....السنن الكبرى للنسائي، کتاب صفة الصلاة، الحدیث: ۱۲۳۱، ج ۱، ص ۳۸۹۔

④.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن العباس، الحدیث: ۲۹۲۷، ج ۱، ص ۶۸۳، باختصار۔

पुल सिरात :

पुल सिरात के हक होने का यकीन रखना भी जरूरी है ⁽¹⁾ जो जहन्नम की पुश्त पर बनाया गया है। बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ है। इसे पार करते हुए कुफ़ार के कदम ब हुक्मे खुदावन्दी फिसलेंगे और वोह जहन्नम में जा गिरेंगे जब कि मुसलमान रहमते खुदावन्दी के सबब इसे षाबित कदमी से पार कर के जन्नत में दाखिल हो जाएंगे।

हौजे कौषर :

इस हौज़ पर भी ईमान लाना जरूरी है जहां मुसलमान आएंगे। येह हौज़ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अता हुवा है। मुसलमानों को पुल सिरात पार करने के बा'द और दुखूले जन्नत से पहले इस हौज़ का मशरूब पीना नसीब होगा। जिसे इस का एक घूंट भी पीने को मिल गया वोह कभी प्यासा न होगा। इस हौज़ की चौड़ाई एक महीने की मसाफ़त है। इस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद और शहद से ज़ियादा मीठा है। इस के کنارों पर सितारों की ता'दाद से भी ज़ियादा कूजे रखे हुए हैं। जन्नती चश्मए कौषर से दो परनाले इस हौज़ में आते हैं ⁽²⁾

हिशाब व किताब :

हिशाबो किताब पर ईमान लाना और येह जानना भी जरूरी है कि मुख़्तलिफ़ लोगों से मुख़्तलिफ़ तरीके से हिशाबो किताब होगा, किसी का हिशाब सख़्ती से और किसी का नर्मी से होगा जब कि मुक़रबीने बारगाहे इलाही तो बिना हिशाबो किताब दाखिले जन्नत होंगे ⁽³⁾ **اَللّٰهُ** اَمْبियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में से जिस से चाहेगा फ़रीज़ए रिसालत सर अन्जाम देने के मुतअल्लिक और कुफ़ार में से जिस से चाहेगा रुसुले उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को झुटलाने की बाबत पूछगछ फ़रमाएगा ⁽⁴⁾ (ख़िलाफ़े शरअ काम करने वाले) बिदअती सुन्नत छोड़ने की वजह से जवाब देह होंगे ⁽⁵⁾ और मुसलमानों से उन्हीं के आ'माल के मुतअल्लिक पूछा जाएगा ⁽⁶⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب معرفة طریق الرؤية، الحديث: ۱۸۲، ص ۱۱۱۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات حوض نبینا.....الخ، الحديث: ۲۲۹۹، ۲۳۰۰، ۲۳۰۱، ص ۲۵۹، ۲۶۰، بتغییر۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب الدلیل علی دخول طوائف.....الخ، الحديث: ۲۱۸، ص ۱۳۶، باختصار۔

④.....صحیح البخاری، کتاب التفسیر، باب وكذلك جعلناکم امة وسطا.....الخ، الحديث: ۴۲۸۷، ج ۳، ص ۲۹۱۔

⑤.....سنن ابن ماجه، المقدمة، الحديث: ۸۴، ج ۱، ص ۲۵، بتغییر۔

⑥.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب قول النبی.....الخ، الحديث: ۸۲۴، ج ۱، ص ۳۲۹۔

मोमिन हमेशा जहन्नम में नहीं रहेगा :

इस बात पर ईमान लाना भी ज़रूरी है कि जहन्नम में दाखिल होने वाले मुसलमानों को उन के किये की सज़ा देने के बा'द वहां से निकाल लिया जाएगा क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ल से कोई भी साहिबे ईमान हमेशा जहन्नम में न रहेगा ।⁽¹⁾

अफ़ाअत शफ़ाअत :

शफ़ाअत पर ईमान रखना भी ज़रूरी है कि इस का इज़्ज सब से पहले अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को दिया जाएगा, फिर उ-लमा, फिर शुहदा और फिर आम मोअमिनीन को उन के मक़ाम व मर्तबे के ए'तिबार से इज़्जे शफ़ाअत हासिल होगा ।⁽²⁾ फिर वोह मोअमिनीन कि जिन्हें किसी की शफ़ाअत न मिली, उन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़लो करम से जहन्नम से निकालेगा बल्कि जिस के दिल में ज़रा भर भी ईमान होगा उसे भी दोज़ख़ से छुटकारा अता फ़रमा देगा इस लिये कि मोमिन हमेशा जहन्नम में न रहेगा ।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और उन का मक़ाम व मर्तबा :

हर बन्दे को सहाबए किराम رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ और इन की बित्तरतीब फ़ज़ीलत का भी ए'तिकाद रखना ज़रूरी है और येह कि हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द लोगों में से अफ़ज़ल तरीन अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक़, फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म, फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी, फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ हैं⁽³⁾ नीज़ तमाम सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बारे में हुस्ने ज़न रखना लाज़िम है और इन नुफूसे कुदसिया की ता'रीफ़ व तौसीफ़ उसी तरह बयान करे जिस तरह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन की ता'रीफ़ फ़रमाई है ।⁽⁴⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب معرفة طریق الرؤیة، الحدیث: ۱۸۲، ص ۱۱۱۔

②.....سنن ابن ماجه، کتاب الزهد، باب ذکر الشفاعة، الحدیث: ۴۳۱۳، ج ۴، ص ۵۲۶۔

صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب معرفة طریق الرؤیة، الحدیث: ۱۸۳، ص ۱۱۲۔

③.....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث: ۳۶۵۵، ج ۲، ص ۵۱۸۔

فتح الباری، کتاب فضائل اصحاب النبی، تحت الحدیث: ۳۶۵۵، ج ۸، ص ۱۲-۱۵۔

④.....صحیح البخاری، کتاب فضائل اصحاب النبی، الحدیث: ۳۶۴۳، ج ۲، ص ۵۲۲۔

अहले सुन्नत की पहचान :

ज़िक्र कर्दा तमाम अक़्ाइद अह़ादीषे मुबारका में बयान किये गए हैं और अक़्वाले सहाबा भी इन पर शाहिद हैं। लिहाज़ा जिस शख़्स का इन सब अक़्ाइद पर यकीनी ए'तिकाद है, वोह अहले हक़ व अहले सुन्नत में से है, गुमराहों और बिदअतियों से बे तअल्लुक़ है। हम बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अपनी ज़ात बल्कि हर मुसलमान के लिये मुल्तज़ी हैं कि वोह अपनी रहमते कामिला से हम सब को यकीने कामिल की दौलत और दीने इस्लाम पर षाबित क़दमी नसीब फ़रमाए। बेशक वोही सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाला है। हमारे आका व मौला मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और हर पसन्दीदा बन्दे पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमतें नाज़िल हों।

दूसरी फ़स्ल : मरहला वार रहनुमाई क़रने की वग़ह और ए'तिकाद के क़वाबि का बयान

जान लीजिये ! अक़्ीदे के बाब में ज़िक्र कर्दा बातें बच्चे को शुरूअ से ही सिखा दी जाएं ताकि वोह इन्हें अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर ले और बड़ा होने तक ब तदरीज इन के मअ़ानी व मत़ालिब पर मुत्तलअ होता रहे। क्यूंकि इन चीज़ों को अव्वलन याद करना और समझना होता है इस के बा'द इन पर यकीन करने, ईमान लाने और इन्हें सच जानने का मरहला आता है। बच्चे का अक़्ाइद को याद करने से सच जानने तक का इर्तिकाई (तरक्की पज़ीर) सफ़र बिला दलील व हुज्जत के तै हो जाता है और **अल्लाह** तबारक व तआला का येह बहुत बड़ा फ़ज़ल है कि वोह क़ल्बे इन्साऩी को तर्बिय्यत के इब्तिदाई मराहिल में बिगैर दलील व हुज्जत के क़बूले ईमान की तौफीक़ अता फ़रमाता है। नीज़ इस बात का इन्कार कैसे किया जा सकता है जब कि अ़वाम के तमाम अक़्ाइद की इब्तिदा महज़ तल्कीन व तक्लीद है। हां ! वोह ए'तिकादी मसाइल जिन का हुसूल महज़ तक्लीद से होता है, इब्तिदाअन इन में कुछ जौ'फ़ महसूस होता है वोह इस तरह कि अगर इस अक़्ीदे के ख़िलाफ़ कोई बात आ जाए तो ऐन मुमकिन है कि बन्दा अपने साबिक़्ा अक़्ीदे से दूर हो जाए, जब कि ज़रूरत इस बात की है कि नौ उम्र और अ़ाम अफ़राद का ज़ेहन अक़्ाइदे अहले सुन्नत के हवाले से इस तरह पुख़्ता और मज़बूत बना दिया जाए कि वोह फिर कभी भी न डगमगाए और बच्चे व अ़ाम आदमी के ज़ेहन में अक़्ाइद को पुख़्ता और षाबित करने के लिये फ़न्ने मुनाज़रा और इल्मे कलाम सीखना ज़रूरी नहीं बल्कि कुरआन, तफ़सीर, हदीष

शरूहात का मुतालआ और इबादात की पाबन्दी की ज़ियादा से ज़ियादा कोशिश करनी चाहिये ।
क्योंकि जब दलाइल व बराहीने कुरआनिय्या इस की समाअतों को छूएंगे, अहादीषे करीमा से अक़ाइदे अहले सुन्नत की ताईदात व षुबूत मिलेंगे और इस के साथ साथ इबादत पर हमेशगी का नूर अपने जल्वे दिखाएगा तो उस के क़ल्ब व ज़ेहन में अक़ाइदे अहले सुन्नत रासिख़ होते चले जाएंगे । इसी तरह नेक लोगों की ज़ियारत व सोहबत, उन के मल्फूज़ात और इन की लिल्लाहिय्यत पर मब्नी ज़ाहिरी व बातिनी यक्सां पाकीज़गी व अज़िज़ी की बरकत से भी अक़ाइदे अहले सुन्नत पर इस्तिक्ामत नसीब होती है । लिहाज़ा इब्तिदा में समझाना गोया सीने की खेती में अक़ीदे का बीज बोने और मज़कूरा अस्बाब (या'नी कुरआन व हदीष का मुतालआ और नेकी और नेकों से लगाव) इस खेती की सैराबी और देखभाल के मुतरादिफ़ हैं । हत्ता कि येह बीज नश्व व नूमा और तक्विय्यत पा कर एक ऐसे मज़बूत, बुलन्द और पाकीज़ा दरख़्त की सी हैषिय्यत इख़्तियार कर जाता है जिस की जड़ें मज़बूत और शाखें आस्मान तक बुलन्द होती हैं ।

एक एहतियात :

यहां तक एहतियात की ज़रूरत का एहसास होता है कि बच्चे को इब्तिदाई तर्बिय्यत के मराहिल में मुनाज़राना गुफ़्तगू और इल्मे कलाम की पेचीदा अबहाष से बिल्कुल दूर रखा जाए क्योंकि नौ उम्र के लिये मुनाज़राना गुफ़्तगू में तर्बिय्यत व इस्लाह जैसे फ़वाइद कम और फ़साद व इज़तिराब जैसे नुक़सान के इमकानात ज़ियादा होते हैं । बल्कि बच्चे की तर्बिय्यत मुनाज़रे के ज़रीए करना ऐसा ही है जैसे दरख़्त को मज़बूत करने की उम्मीद पर लौहे के हथोड़े से कूटना, इस अमल के तसलसुल से दरख़्त मज़बूत तो क्या ? उलटा टूट फूट जाएगा । इस तरह के कामों का उमूमन येही नतीजा निकलता है । अब मज़ीद वज़ाहत व दलाइल की ज़रूरत महसूस नहीं होती येह उमूमन मुशाहदा ही बात समझने के लिये काफ़ी है ।

आम नेक लोगों के और मुनाज़िरीन व मुतकल्लिमीन के अक़ीदे में फ़र्क :

अगर आम नेक व मुत्तकी लोगों के अक़ीदे की पुख़्तगी का तकाबुल मुनाज़िरीन व मुतकल्लिमीन के अक़ीदे की पुख़्तगी से किया जाए तो अक़ीदे के ए'तिबार से आम आदमी बुलन्द व मज़बूत पहाड़ की मानिन्द मुस्तक़िल नज़र आएगा जैसे आफ़ात और बिजलियां अपनी जगह से नहीं हिला सकतें जब कि अक़ली दलाइल और मुनाज़रों के ज़रीए अपने अक़ीदे की हिफ़ाज़त करने वाले इल्मे कलाम के माहिर शख़्स का अक़ीदा फ़ज़ा में लटके हुए धागे की तरह होता है जिसे हवा के झोंके कभी इधर करते हैं कभी उधर । मगर इन से अक़ीदे की दलील सुनने

वाला दलील को तक्लीद के तौर पर इसी तरह मानता है जिस तरह नफ्स ए'तिकाद को क्यूंकि तक्लीद ख्वाह दलील सीखने में हो या मदलूल सीखने में, दोनों बराबर हैं। पस दलील बताना अलग चीज़ है और दलील से मसाइल षाबित करना दूसरी बात जो इस से बहुत दूर है।

फिर अगर बच्चा अक़ाइदे अहले सुन्नत पर कारबन्द रहते हुए ज़िन्दगी गुज़ारे और इस हवाले से मज़ीद कुछ सीखने के बजाए दुनियावी कामों में मशगूल हो जाए तो अगरचें कई बन्द अक़ाइदे उस पर नहीं खुले होंगे, लेकिन बरोज़े क़ियामत वोह इन अक़ाइदे हक्का की बरकत से सलामत रहेगा क्यूंकि शरीअते इस्लामिय्या ने अरब के कुन्द ज़ेहन लोगों को अक़ाइदे हक्का के ज़बानी इक़रार और क़ल्बी तस्दीक़ से ज़ियादा का मुकल्लफ़ नहीं बनाया। नीज़ उन्हें बहूष व तहक्कीक़ और दलाइल जम्अ करने का पाबन्द हरगिज़ नहीं बनाया गया।

हां ! येह बात ज़रूर है कि अगर कोई शख्स राहे आख़िरत इख़्तियार करना चाहे और रहमते इलाही भी उस के शामिले हाल हो और वोह ख्वाहिशाते नफ़्सानिय्या को तर्क करने के साथ साथ आ'माले सालेहा, तक्वा और रियाज़त व मुजाहदे की पाबन्दी करे तो इस मुजाहदे की बरकत से उस का दिल नूरे इलाही से मुनव्वर होगा जिस की रोशनी में अक़ाइदे अहले सुन्नत की हक्काइक़ इस पर वाज़ेह होते चले जाएंगे। क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वा'दा है :

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ
سُبُلَنَا وَإِنَّ اللَّهَ لَكَمُ الْحُسَيْنِ ﴿٢٩﴾
(پ ۲۱، العنکبوت: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते दिखा देंगे और बेशक **अल्लाह** नेकों के साथ है।

बुलन्द दर्जात के हुसूल का सबब :

येही नूर वोह नफीस जौहर है जो सिद्दीकीन व मुक़र्रबीन के ईमान की इन्तिहा है और येही वोह राज़ है कि जब येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीके अक़बर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के सीने में वदीअत किया गया जो आप अम्बिया के बा'द तमाम मख़्लूक से अफ़ज़ल हो गए। बेहतरीन मक़ाम के हामिल राज़ों बल्कि तमाम असरार के कई दर्जात हैं। मुजाहदात की जितनी ज़ियादा क़षरत होगी और दिल जिस क़दर ग़ैरे खुदा से ख़ाली और नूरे यकीन से मुनव्वर होगा बुलन्द मक़ाम भी इसी तफ़ावुत के ए'तिबार से कम या ज़ियादा हासिल होगा। इस मक़ाम में दर्जात का फ़र्क़ भी बिल्कुल इल्मे तिब्ब व फ़िक़ह और बक़िय्या दीगर उलूम में फ़र्क़ की तरह होता है। क्यूंकि लोगों में रियाज़त और ज़हानत व फ़तानत का एक फ़ित्री तफ़ावुत पाया जाता है और इल्मी दर्जात की तरह इन असरार के भी कई दर्जात हैं।

इल्मे कलाम सीखना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़न्ने मुनाज़रा और इल्मे कलाम का सीखना भी इल्मे नुजूम की तरह मज़मूम या मुबाह या मुस्तहब है ?

जवाब : इल्मे कलाम व फ़न्ने मुनाज़रा सीखने या न सीखने के हवाले से दो मौक़िफ़ हैं और दोनों सख़्त हैं :

﴿1﴾....मन्अ करने वाले इस पर बिदअत व हराम का हुक्म लगाते हैं और कहते हैं कि शिर्क के इलावा हर गुनाह से आलूदा हो कर बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर होने वाला शख्स इल्मे कलाम सीखने वाले से बेहतर है ।

﴿2﴾....जवाज़ का हुक्म देने वाले इसे वाजिब, फ़र्ज़ ऐन या फ़र्ज़ किफ़ायया मानते हैं । इन के नज़दीक येह अफ़ज़ल अमल और ज़ियादा षवाब का बाइष है क्यूंकि इस इल्म से इल्मे तौहीद का इषबात और दीने इस्लाम का दफ़आ किया जाता है ।

मन्अ व हुरमत के काइलीन में हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई, हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक, हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल, हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन षौरी और मुतक़द्दीमिन मुहद्दिषीने किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام शामिल हैं ।

इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उ-लमा की आश सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي का नज़रिया :

✽....हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना यूनुस बिन अब्दुल उला عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعَالِي का बयान है कि जिस दिन इल्मे कलाम जानने वाले मो'तज़िली हफ़्स फ़र्द नामी शख्स से हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي का मुनाज़रा हुवा तो मैं ने आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى को फ़रमाते सुना कि सिवाए शिर्क के हर गुनाह कर के दरबारे इलाही में हाज़िर होने वाला उस से बेहतर है जो इल्मे कलाम में से कुछ सीख कर बारगाहे खुदावन्दी में पेश हो । मैं ने हफ़्स से एक ऐसी बात भी सुनी है जिसे बयान करना मुझे गिरां महसूस होता है ।⁽¹⁾

✽....मुझे मुतकल्लिमीन की ऐसी ऐसी बातों का पता चला है जिन के बारे में, मैं कभी सोच भी नहीं सकता था । इल्मे कलाम की तरफ़ माइल होने वाला शिर्क के इलावा हर गुनाह में मुब्तला होने वाले से बुरा है ।⁽²⁾

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة.....الخ، الحديث: ٩٨٤، ص ٣٦٦۔

②.....المرجع السابق۔

❁....हज़रते सय्यिदुना हुसैन बिन अली कराबीसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي कहते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي से इल्मे कलाम का कोई मस्अला पूछा गया तो आप जलाल में आ गए और फ़रमाने लगे : “जाओ ! इस मस्अले का हल **हफ़्स फ़र्द** और उस के साथियों से पूछो । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें रुस्वा करे ।”⁽¹⁾

❁....जब हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي बीमार हुए तो **हफ़्स फ़र्द** इन के पास आ कर पूछने लगा कि “मेरे बारे में आप की क्या राय है ? फ़रमाया : “तू **हफ़्स फ़र्द** है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी हिफ़ाज़त करे न तुझे रिआयत दे, जब तक इस से तौबा न कर ले जिस में तू मुब्तला है ।”

❁....अगर लोग इल्मे कलाम की दरपर्दा बुराइयां जान लें तो इस से ऐसे ही भागें जैसे शेर से भागते हैं ।⁽²⁾

❁....जब तुम किसी शख्स को येह कहते सुनो कि इस्म ही मुसम्मा⁽³⁾ है या येह कि इस्म मुसम्मा का ग़ैर है तो जान लो कि ऐसी बातें करने वाला इल्मे कलाम में पड़ा हुवा और बे दीन है ।⁽⁴⁾

❁....हज़रते सय्यिदुना हसन बिन मुहम्मद ज़ा'फ़रानी قَدِّسَ سِرُّهُ النُّورَانِي बयान करते हैं कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “मैं चाहता हूं कि इल्मे कलाम वालों पर डंडे बरसाए जाएं, फिर उन्हें हर कबीले और ख़ानदान में फिरा कर ए'लान किया जाए कि जो कुरआन व हदीष छोड़ कर इल्मे कलाम सीखने में लग जाएं उन की सज़ा येह है ।”⁽⁵⁾

सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَوَّل का नज़रिय्या :

★....इल्मे कलाम सीखने वाला कभी कामयाब नहीं हो सकता और अच्छी तरह जान लो कि जो इल्मे कलाम की तरफ़ माइल होगा उस के दिल में ज़रूर फ़साद छुपा होगा ।⁽⁶⁾

★....हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَوَّل ने इल्मे कलाम की मज़म्मत में इस क़दर मुबालगा फ़रमाया कि हज़रते सय्यिदुना हारिष बिन अब्दुल्लाह मुहासिबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي

①.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة.....الخ، الحديث: ٩٨٤، ص ٣٦٤-

②.....المرجع السابق، ص ٣٦٤-

③.... मुसम्मा या'नी नामज़द चीज़ । जिस चीज़ पर दलालत करने के लिये इस्म वज़अ किया जाए ।

④.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة.....الخ، الحديث: ٩٨٤، ص ٣٦٤-

⑥.....المرجع السابق، ص ٣٦٤-

⑤.....المرجع السابق، ص ٣٦٤-

जैसे बहुत बड़े आबिदो ज़ाहिद से भी सिर्फ़ इस वजह से क़तए तअल्लुकी फ़रमा ली कि इन्हों ने बिदअतों के रद्द में एक किताब लिखी थी। किताब देख कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इन से फ़रमाया “जनाब ! क्या आप ने किताब लिखते हुए पहले बिदअतों की बिदआत तहरीर कर के इस का रद्द नहीं किया ? क्या आप ने इस अन्दाज़े तहरीर से अवामुन्नास को बिदअतों का मुतालआ करने और फिर शुक्क व शुब्हात में पड़ने का दा'वत नामा फ़राहम नहीं किया जिस की वजह से वोह दीनी व ए'तिक़ादी मसाइल में इज़तिराब व उलझाव का शिकार हों ?”

★....उ-लमाए मुतकल्लिमीन ज़िन्दीक़ हैं।⁽¹⁾

सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق का नज़रिया :

✽....अगर मुतकल्लिमीन का अपने से ज़ियादा इस फ़न के माहिर शख्स से वासिता पड़े तो वोह इस की सुन कर अपना ए'तिक़ाद बदल देगा और यूँ हर रोज़ वोह अपना दीन बदलता फ़िरेगा⁽²⁾ क्यूंकि मुजादला व मुनाज़रा करने वालों के अक्वाल व आरा मुख़लिफ़ होते हैं।

✽....बिदअतों और अहल हवा (ख़्वाहिशात के पैरूकार) की गवाही ना मक्बूल है।⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل के बा'ज़ शागिर्दों ने कहा कि “अहल हवा से इमाम साहिब की मुराद मुतकल्लिमीन हैं ख़्वाह किसी भी मज़हब के पैरूकार हों।”

सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का नज़रिया :

✽....जो इल्मे कलाम की त़लब में मशगूल हुवा वोह गुमराह हुवा।⁽⁴⁾

सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي का नज़रिया :

✽....न तो बिदअतियों से मुनाज़रा करो, न इन की महफ़िल में बैठो और न ही इन की कोई बात सुनो।⁽⁵⁾

①.....حياة الحيوان، باب الهمزة، ج ١، ص ٢٣-

②.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة.....الخ، ص ٣٦٤-

③.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة.....الخ، ص ٣٦٨-

④.....الكامل فى ضعفاء الرجال، الباب السادس والعشرون، ج ١، ص ١١١، بتغير-

⑤.....جامع بيان العلم وفضله، باب ماتكره فيه المناظرة.....الخ، ص ٣٦٩-

मुतअख़िबरीन मुहद्दिषीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْبَرِّين का नज़रिया :

मुतअख़िबरीन मुहद्दिषीन इल्मे कलाम के मज़मूम होने पर मुत्तफ़िक् हैं । इस की मज़म्मत में इन के सख़्त और बे शुमार अक्वाल मन्कूल हैं । चुनान्चे,

❁.....इस इल्म की तरफ़ सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ माइल नहीं हुए हालांकि येह हज़रात हकाइक की मा'रिफ़त और तरतीबे अल्फ़ाज़ में बा'द वाले लोगों से ज़ियादा फ़सीह थे । इसी वजह से सरकारे अली वफ़ार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तीन बार इरशाद फ़रमाया : “बाल की खाल उतारने वाले हलाक हो गए ।”⁽¹⁾ या'नी ला या'नी बहूष और बे फ़ाइदा तहकीक़ करने वाले (हलाक हो गए) ।

❁.....अपने मौक़िफ़ को मज़ीद पुख़्ता करते हुए फ़रमाते हैं कि इल्मे कलाम अगर कोई दीनी काम होता तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर इस का हुक्म देते, इसे हासिल करने का तरीक़ा इरशाद फ़रमाते, इस की और इसे हासिल करने वालों की ता'रीफ़ व तौसीफ़ फ़रमाते (लेकिन ऐसा नहीं हुवा) बल्कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ को इस्तिनजा करने का तरीक़ा बताया,⁽²⁾ इन्हें इल्मे मीराष सीखने की रग़बत दिलाई और इन की ता'रीफ़ फ़रमाई⁽³⁾ लेकिन क़ज़ा व क़दर में बहूष करने से अपने इस इरशाद के ज़रीए मन्ज़ु फ़रमा दिया कि “तक़दीर के मुआमले में ख़ामोश रहो ।”⁽⁴⁾ सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ इस हुक्म पर कारबन्द रहे । येह नुफ़ूसे कुदसिय्या हमारे उस्ताज़ व रहनुमा और हम इन के शागिर्द व पैरूकार हैं और शागिर्द की उस्ताज़ पर पेश क़दमी जुल्म और सरकशी कहलाती है ।

मुअव्वीदीन इल्मे कलाम के दलाइल :

❁.....इल्मे कलाम की मुख़ालफ़त अगर इस में इस्ति'माल होने वाले अल्फ़ाज़ की वजह से है जैसे जोहर, अर्ज़ और दौरे सहाबा में न बोली जाने वाली नई नई इस्तिलाहात तब तो मुआमला आसान है क्यूंकि हर इल्म की तफ़हीम व ता'लीम के लिये इस्तिलाहात वज़अ की गई मषलन

❶.....صحیح مسلم، کتاب العلم، باب هلک المتنطعون، الحدیث: ۲۶۷۰، ص ۱۴۳۴۔

❷.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب الاستطابة، الحدیث: ۲۶۲، ص ۱۵۵۔

❸.....سنن ابن ماجه، کتاب الفرائض، باب الحث على تعلیم الفرائض، الحدیث: ۲۷۱۹، ج ۳، ص ۳۱۶۔

❹.....المعجم الكبير، الحدیث: ۱۰۴۳۸، ج ۱۰، ص ۱۹۸۔

इल्मे हदीष, तफ़सीर, फ़िक़ह वगैरा, जैसे क़ियासी इस्तिलाहात नक़ज़, कस्स, तरकीब, ता'दिया और फ़सादे वज़अ अगर इन्हें सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ पर पेश किया जाता तो वोह इन्हें न समझते। लिहाज़ा किसी मक़सदे सहीह को बयान करने की खातिर नए नए अल्फ़ाज़ का चुनाव भी ऐसे ही दुरुस्त है जैसे जाइज़ इस्ति'माल के लिये नई तर्ज़ का बरतन बनाना।

❀....अगर मुख़ालफ़त किसी मा'नवी ख़राबी की वजह से की जाती है तो याद रखिये ! इस इल्म से हमारा मक़सूद सिर्फ़ येह होता है कि आलम के हादिष होने और **अल्लाह** तआला की वहदानिय्यत और सिफ़ात को शरीअत की रोशनी में दलाइल से जाना जाए। लिहाज़ा दलील के ज़रीए मा'रिफ़ते खुदावन्दी को ह़राम तो नहीं कहा जा सकता।

❀....अगर ममनूअ कहने की वजह येह है कि इस की बिना पर (बहूष व मुनाज़रा करते हुए आख़िरे कार) झगड़ा, अदावत और बुग़ज़ व कीना जैसे अमराज़ जनम लेते हैं तो येह चीज़ें वाक़ेई ह़राम और क़ाबिले इजतिनाब हैं बिल्कुल ऐसे ही कि अगर इल्मे हदीष, तफ़सीर और फ़िक़ह सीखने पर तकब्बुर, खुद पसन्दी और जाह त़लबी पैदा हो जाए तो येह चीज़ें ह़राम होंगी और इन से बचना भी ज़रूरी होगा। लेकिन इन अमराज़ को दलील बना कर मज़कूरा उलूम की ता'लीम से नहीं रोका जाएगा तो फिर इल्मे कलाम के ज़रीए दलील पेश करना, दलील का मुतालबा करना और इस में बहूष करना कैसे ममनूअ हो सकता है ? हालांकि इन सब उमूर का षुबूत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पाक कलाम में मौजूद है। चुनान्चे,

मुदल्लल और मुनाज़राना अन्दाजे शुफ़्तू के मुतअल्लिक क़ुश्आनी दलाइल :

❀1❀

قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ (پ، البقرة: ۱۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ लाओ अपनी दलील।

❀2❀

لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ
حَيَّ عَنْ بَيِّنَةٍ (پ، الانفال: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि जो हलाक हो दलील से हलाक हो और जो जिये दलील से जिये।

❀3❀

إِنْ عُنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا (پ، یونس: ۶۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे पास इस की कोई भी सनद नहीं।

इस आयत में सुल्तान से मुराद सनद व दलील है।

﴿4﴾

قُلْ لِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ (پ ۸، الانعام: ۱۴۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ तो **अल्लाह** ही की हुज्जत पूरी है।

﴿5﴾

الْحَتَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهٖ
أَنْ ائْتِهٖ اللَّهُ الْمُلْكُ ۖ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ
رَبِّیَ الَّذِیْ یُحِیْ وَیُمِیْتُ ۚ قَالَ اٰنَاۤ اُحِیْ
وَاُمِیْتُ ۚ قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ یَاْتِیْ
بِالشَّیْءِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاتَّ بِهَامِنَ الْمَغْرِبِ
فَبُهِتَ الَّذِیْ کَفَرَ ط (پ ۳، البقرة: ۲۵۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ महबूब ! क्या तुम ने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब्ब के बारे में इस पर कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब्ब वोह है कि जिलाता और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने फ़रमाया तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिक्) से तू उस को पच्छिम (मगरिब) से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर के।

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَی نَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दलील पेश करने, दलील त़लब करने, मुनाज़रा करने और इस तरीक़े पर मुख़ालिफ़ को ला जवाब कर देने की **अल्लाह** غَزَوَجَل ने ता'रीफ़ फ़रमाई।

﴿6﴾

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ط (پ ۷، الانعام: ۸۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और येह हमारी दलील है कि हम ने इब्राहीम को उस की क़ौम पर अ़ता फ़रमाई।

﴿7﴾

قَالُوا یٰأَيُّوْحَ قَدْ جَدَلْتَنَا فَاَکْثَرْتَ جِدَالَنَا
(پ ۱۲، هود: ۳۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बोले ऐ नूह ! तुम हम से झगड़े और बहुत ही झगड़े।

﴿8﴾

हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَی नَبِیِّنَا وَعَلِیْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और फ़िरा़ौन के मुक़ालमे को **अल्लाह** ने यूं बयान फ़रमाया :

مَا رَبُّ الْعَالَمِیْنَ ط قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَیْنَهُمَا ط اِنْ کُنْتُمْ مُّوَقِنِیْنَ ط
قَالَ لَیْسَ حَوْلَہٗ اِلَّا تَسْتَعْجُوْنَ ط قَالَ رَبُّکُمْ

तर्जमए कन्जुल ईमान : सारे जहान का रब्ब क्या है। मूसा ने फ़रमाया रब्ब आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें यक़ीन

وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾ قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ
الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَجُؤُنٌ ﴿٢٧﴾ قَالَ رَبُّ
الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا يَبْيَهُمَا ۚ إِنَّ كُنْتُمْ
تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾ قَالَ لَنْ اتَّخَذَتِ الْهَاجِرِيُّ
لَا جَعَلَنَّاكَ مِنَ السُّجُودِينَ ﴿٢٩﴾ قَالَ أَوَلَوْ
جُنْتُكَ بِشَىْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾ (پ ۹، الشعراء: ۲۳ تا ۳۰)

हो। अपने आस पास वालों से बोला क्या तुम गौर से सुनते नहीं। मूसा ने फ़रमाया रब्ब तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का बोला : तुम्हारे येह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं ज़रूर अक्ल नहीं रखते। मूसा ने फ़रमाया रब्ब पूरब (मशरिक) और पच्छिम (मगरिब) का और जो कुछ इन के दरमियान है अगर तुम्हें अक्ल हो। बोला अगर तुम ने मेरे सिवा किसी और को खुदा ठहराया तो मैं ज़रूर तुम्हें कैद कर दूंगा फ़रमाया क्या अगरचें मैं तेरे पास कोई रोशन चीज़ लाऊं।

अल गरज़ कुरआने पाक अज़ अव्वल ता आख़िर कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ दलाइल से मा'मूर है।

तौहीद, नबूव्वत और बिअ़षत के मुतअल्लिक़ कुरआनी दलाइल :

तौहीदे बारी तअ़ला के षुबूत पर मुतकल्लिमीन की बेहतरीन दलील येह आयते तय्यिबा है :

لَوْ كَانَ فِيهَا إِلَهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا ۚ
(پ ۱، الانبياء: ۲۲)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : अगर आस्मान व ज़मीन में **अल्लाह** के सिवा और खुदा होते तो ज़रूर वोह तबाह हो जाते।

नबुव्वत की दलील येह आयते मुक़द्दसा है :

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا
فَاتُوا سُورَةً مِّنْ مِّثْلِهِ ۖ (پ ۱، البقرة: ۲۳)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और अगर तुम्हें कुछ शक हो उस में जो हम ने अपने इन ख़ास बन्दे पर उतारा तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ।

मर कर दोबारा जी उठने पर येह आयते मुबारका दलील है :

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ
(پ ۲۳، يس: ۷۹)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ इन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने पहली बार इन्हें बनाया।

मज़क़ूरा उमूर की ताईद व तौषीक़ पर मज़ीद आयात व दलाइल भी मौजूद हैं और रुसुल

भी कुफ़्फ़ार को दलाइल देते और उन से मुनाज़राना तर्ज पर गुफ़्तगू फ़रमाते रहे।

फरमाने बारी तआला है :

وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ^(پ ۱۲، النحل ۱۲۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन से इस तरीके पर बहस करो जो सब से बेहतर हो ।

नीज सहाबए किराम رَضَوُا اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने भी ब वक्ते ज़रूरत मुनाकिरीन के खिलाफ़ दलाइल पेश किये और उन से मुनाज़रे किये अगर्चे उन्हें ऐसे मवाफ़ेअ बहुत कम पेश आए ।

सहाबा व ताबेईन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के मुनाज़रों की चन्द मिषालें :

﴿1﴾.....इज़हारे हक़ की खातिर मुनाज़रे की रीत सब से पहले अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم ने डाली कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को खारिजी फ़िर्के से मुनाज़रे के लिये भेजा । चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने खारिजियों से पूछा : “तुम्हें अपने खलीफ़ा अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की किस बात पर ए’तिराज़ है ?” कहा : “उन्होंने ने जंग⁽¹⁾ की, लेकिन माले ग़नीमत इकठ्ठा किया न कैदी बनाए ।” आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “इन सब चीज़ों के हुसूल का जवाज़ कुफ़ार से जंग करने पर होता है । तुम खुद ही बताओ अगर जंगे जमल⁽²⁾ में उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आइशा सिद्दीका वाला सुलूक करते ? हांलाकि आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ब नस्से कुरआनी (या’नी साफ़ व सरीह आयत के मुताबिक़) उम्मुल मोअमिनीन हैं ।” उन्होंने ने इस का जवाब नफ़ी में दिया⁽³⁾ और इस मुनाज़रे में ला जवाब हो कर दो हज़ार अफ़राद तौबा कर के हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की बैअत में आ गए ।

①येह वाकिआ जंगे सिफ़्फ़ीन (जो हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم और हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआविया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के माबैन सफ़र 37 हिजरी को हुई थी) से वापसी पर पेश आया । जब कुछ लोग हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से अलग हो कर खारिजी फ़िर्के से मन्सूब हुए और अहले हक़ से जंग व जिदाल और लूट मार में मसरूफ़ हो गए । येह वाकिआ 37 हिजरी में पेश आए । (مستفاد از تاریخ الخلفاء، ص ۱۱۲)

②जंगे जमल जमादिल आख़िर 36 हिजरी अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم के दौरै ख़िलाफ़त में लड़ी गई । इस में एक तरफ़ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْहَهُ الْكَرِیْم और दूसरी जानिब हज़रते सय्यिदुना जुबैर, हज़रते सय्यिदुना तलहा व उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आइशा सिद्दीका رَضَوُا اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ थे । वजहे नज़ाअ ख़ूने उषमान का मुतालबा था । (مستفاد از تاریخ الخلفاء، ص ۱۱۲)

③المستدرک، کتاب قتال اهل البغی، مناظرة ابن عباس مع الحرورية، الحديث: ۲۷۰۳، ج ۲، ص ۲۹۵-۲۹۶

﴿2﴾.....मशहूर ताबई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي का एक मुन्किरे तक्दीर से मुनाज़रा हुवा, बिल आखिर वोह अपनी बद मज़हबी से ताइब हो गया ।

﴿3﴾....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने भी एक मुन्किरे तक्दीर से मुनाज़रा किया ।

﴿4﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उमैरा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से ईमान के मुतअल्लिक मुनाज़रा हुवा । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का मौकिफ़ येह था कि अगर तुम कहो कि “मैं मोमिन हूं तो लाज़िमन येह भी कहो कि मैं जन्नती हूं।” इस के जवाब में हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन उमैरा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने कहा : “ऐ सहाबिये रसूल ! इस मस्अले में आप से सहव हुवा है । ईमान तो उस चीज़ का नाम है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ, उस के रसूलों, फ़िरिशतों और उस की किताबों को माना जाए, मरने के बा’द दोबारा उठने और मीज़ाने अमल काइम होने को तस्लीम किया जाए, नमाज़, रोज़ा और ज़कात जैसे अहकाम की ता’मील की जाए, हम गुनाहगार हैं अगर मा’लूम हो जाए कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमारे गुनाह बख़्श देगा तो हम जन्नती हैं । येही वजह है कि हम अपने आप को सिर्फ़ मोमिन कहते हैं, जन्नती नहीं ।” येह जवाब सुन कर हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! आप दुरुस्ती पर हैं, गुलत़ फ़हमी मुझे हुई थी ।”⁽¹⁾

मुनाज़राना अन्दाज़ में अस्लाफ़ का तर्जें अमल :

येह कहना दुरुस्त है कि सहाबए किराम رَضَوُا اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ मुनाज़रा व मुजादला की तरफ़ बहुत कम और मुख़्तसर वक़्त के लिये ज़रूरतन तवज्जोह देते, इस में ज़ियादा पढ़ना, इसे ज़ियादा वक़्त देना या इस के लिये बाकाइदा तस्नीफ़ व तदरीस का एहतिमाम करना और इसे मशग़ले के तौर पर लेना इन की आदत में शामिल नहीं था । कम तवज्जोह की वजह कम ज़रूरत थी कि उस दौर में बिदअतों का जुहूर नहीं हुवा था । बहूष में इख़्तिसार की वजह येह थी कि बहूष से अस्ल मक्सूद मद्दे मुक़ाबिल को ख़ामोश कराना, अपनी बात मनवाना, हक़ को वाजेह और शुक्क व शुब्हात को जाइल करना होता है । अगर मद्दे मुक़ाबिल का ए’तिराज़ या असरार तूल पकड़ता तो बिज़्ज़रूर इन हज़रात के कलाम व जवाब में भी तवालत होती । येह नुफूसे कुदसिय्या अपना कलाम शुरूअ फ़रमाने के बा’द इस की ज़रूरत का अन्दाज़ा किसी तराजू या पैमाने से नहीं लगाते थे और जहां तक येह बात है कि इन हज़रात ने इल्मे कलाम की तस्नीफ़ व तदरीस को लाइके तवज्जोह न जाना तो जवाबन अर्ज है कि इल्मे हदीष, तफ़सीर और फ़िक़ह की तस्नीफ़ व तदरीस की तरफ़ भी इन का मैलान नहीं था ।

मुजादला व मुनाज़रा के तरीके वज़अ करने का मक़सद :

अगर फ़िक़ह की तस्नीफ़ और क़लील अल वुकूअ नादिर जुज़्ज़्यात वज़अ करने का जवाज़ इस तौर पर हो कि जब कभी ऐसी सूरात का वुकूअ हो अगर्चे नादिर ही हो तो येह फ़िक़ही ज़ख़ीरा काम आए या फिर ज़कावते ज़ेहनी (ज़हानत व तेज़ फ़हमी) पेशे नज़र हो तो हमारा मुजादले के तरीके वज़अ करने से भी येही मक़सूद होता है कि जब शुक्क व शुब्हात सर उठाएं और बिदअती मुक़ाबिल आएँ या ज़कावते ज़ेहनी और दलाइल का ज़ख़ीरा जम्अ करना मक़सूद हो तो ऐसे मवाक़ेअ पर ग़ौरो फ़िक्क करने की ज़रूरत न पड़े बल्कि फ़ौरी जवाब पेश किया जा सके। येह सब ऐसा ही है जैसे कोई शख़्स जंग से पहले जंग के लिये कार आमद अस्लहा तय्यार रखे। येह वोह बातें हैं जो इल्मे कलाम की ताईद करने वालों और रद्द करने वालों की जानिब से हत्तल इमकान बयान कर दी गई।

एक शुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि इल्मे कलाम के मुतअल्लिक आप का क्या मौक़िफ़ है? तो इस का जवाब येह है कि इल्मे कलाम को न तो बिल्कुल ग़लत करार दिया जा सकता है और न ही बिल्कुल दुरुस्त बल्कि इस पर हुक्म लगाने में कुछ तफ़सील दरकार होगी। पहले येह बात जान लीजिये कि **बा'ज़ चीज़ों की हरमत ज़ाती होती है** : जैसे शराब और मुर्दार। यहां “ज़ाती” इस लिये कहा कि वजहे हरमत इन हराम चीज़ों की ज़ात में मौजूद है और वोह शराब का नशा आवर होना और मुर्दार का (बिग़ैर ज़ह्दे शरई के) मरना है। लिहाज़ा अगर कोई शख़्स शराब व मुर्दार का हुक्म मा'लूम करेगा तो मुतलक़न हराम का हुक्म दिया जाएगा और येह शर्की बयान नहीं की जाएंगी कि बहालते मजबूरी मुर्दार खाना जाइज़ है और अगर लुक़्मा हलक़ में फंसा हो और सिवाए शराब के कोई मशरूब न मिले तो उस वक़्त शराब का घूंट हलाल है। **बा'ज़ चीज़ें किसी ख़ारिजी अम्र की वजह से हराम होती हैं** : जैसे मुसलमान के सौदे पर अय्यामे ख़य्यार में सौदा करना, अज़ाने जुमुआ के वक़्त कारोबार करना और मिट्टी खाना। मिट्टी खाना इस लिये हराम है कि इस में इन्साऩी सिह्हत का नुक़सान है। इस की दो सूरातें हैं : (1)....मिट्टी खाना कम हो या ज़ियादा दोनों सूरातों में अगर नुक़सान देह हो तो मुतलक़न हराम कहा जाएगा जिस तरह ज़हर क़लील हो या कषीर, हलाक़त खेज़ है। (2)....अगर मिट्टी की कषीर मिक्दार ही फ़सादे सिह्हत का सबब बने तो ऐसी सूरात में मुतलक़न जवाज़ का क़ौल इख़्तियार किया जाएगा जैसे शहद (कि इस का खाना अगर्चे हलाल है) लेकिन इस की कषीर मिक्दार गर्म मिज़ाज अफ़राद के लिये बाइ़षे नुक़सान है, येही हुक्म मिट्टी ख़ोरी का है। लिहाज़ा मिट्टी ख़ोरी और शराब नोशी को मुतलक़न हराम कहना

और शहद को मुतलकन हलाल कहना अकषर हालात की बिना पर है। (इस क़दर तफ़्सील बयान करने से मक़सूद येह समझाना था) कि अगर किसी चीज़ में हालात मुख़ालिफ़ हों तो सब से बेहतर और शुकूक व शुब्हात से बाला तर येही है कि उसे बित्तफ़्सील बयान किया जाए। अब हम दोबारा अपनी गुफ़्तगू को इल्मे कलाम की तरफ़ लाते हुए अपना मौक़िफ़ वाज़ेह करते हैं।

इल्मे कलाम के मुतअल्लिक़ मुशन्निक़ का नज़रिय्या :

इस इल्म का फ़ाइदा भी है और नुक़सान भी। जब येह इल्म फ़वाइद का मूजिब बने तो इन फ़वाइद के पेशे नज़र और हालात के मुतअबिक़ इसे जाइज़ या मुस्तहब या वाजिब कहा जाएगा और जब नुक़सान रसां षाबित हो तो हराम का हुक्म दिया जाएगा।

इल्मे कलाम के नुक़सानात :

﴿1﴾....इस इल्म की वजह से शुकूक व शुब्हात जनम लेते हैं। यक़ीन और पुख़्तगी रुख़्सत और अक़ाइद मुतज़लज़िल हो जाते हैं और येह वोह नुक़सानात हैं जिन का सुदूर इस इल्म की इब्तिदा ही में हो जाता है और दलील पा कर दोबारा अक़ाइद की पुख़्तगी पा लेना भी यक़ीनी नहीं होता। नीज़ लोगों की हालत भी एक जैसी नहीं होती। लिहाज़ा इस इल्म का एक नुक़सान अक़ाइदे हक्का (या'नी दुरुस्त अक़ाइद) में ख़लल डालना है।

﴿2﴾....अहले बिदअत अपने बिदअती अक़ीदों पर जम जाते हैं और बिदअत इन के सीनों में यूं क़रार पकड़ लेती है कि वोह इसी के हो कर रह जाते और इसी पर मुसिर रहते हैं। लेकिन इल्मे कलाम की वजह से पेश आने वाला येह नुक़सान उस तअस्सुब का नतीजा होता है जो जदल व मुनाज़रा से पैदा होता है। येही वजह है कि एक अ़ाम बिदअती को उस की बद अक़ीदगी से तौबा कराना आसान और जल्द मुमकिन होता है। हां ! अगर उस की नश्व व नुमा जदल और तअस्सुब ज़दा अ़लाके में हो तो फिर ख़्वाह अगले पिछले सब लोग जम्अ हो कर उस के सीने को बिदअत से पाक करना चाहें तो न कर पाएं बल्कि ख़्वाहिशे नफ़्स, तअस्सुब और मुनाज़िरीन व मुख़ालिफ़ीन की मुख़ालिफ़त उस के दिल को अपने क़ब्जे में ले लेती और उसे क़बूले हक्क से रोक देती है। यहां तक कि अगर इस बिदअती के लिये येह भी मुमकिन हो जाए कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से उस की आंखों से पर्दे हटा कर उस पर हक्क वाज़ेह कर दिया जाए और उसे बता दिया जाए कि दूसरी जानिब वाले ही अहले हक्क हैं, तो फिर भी वोह ना खुश ही होगा क्यूंकि अब इसे येह डर रहेगा कि इस बात से उस का मुख़ालिफ़ खुश हो जाएगा। येह है फ़साद की एक क़िस्म और भयानक बीमारी जो मुतअस्सिब मुनाज़िरीन की वजह से शहरों और लोगों में फैलती जा रही है। येह भी इल्मे कलाम का एक नुक़सान है।

इल्मे कलाम के फ़वाइद :

﴿1﴾....(येह गुमान किया जाता है कि) इस के ज़रीए ह़काइक़ की वज़ाहत और माहिyyत की मा'रिफ़त हासिल होती है मगर अफ़सोस कि येह अज़ीम मक़सद इस से हासिल नहीं होता बल्कि वज़ाहत व मा'रिफ़त के बजाए दीवानगी व गुमराही में इज़ाफ़ा हो जाता है। इल्मे कलाम की मज़म्मत अगर कोई मुह़द्दिष करे या कोई बे इल्म शख़्स इस के ख़िलाफ़ बोले तो वस्वसा आ सकता है कि लोग जिस चीज़ का इल्म नहीं रखते उस के मुख़ालिफ़ हो जाते हैं। तो सुनिये ! येह मज़म्मत वोह शख़्स कर रहा है (इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي अपनी तरफ़ इशारा कर रहे हैं) जिस ने इल्मे कलाम और इस के मुतअल्लिकात को ख़ूब अच्छी तरह परखा और चोटी के माहिरीन इल्मे कलाम के दर्जों तक पहुंचा लेकिन नतीजा येही मा'लूम हुवा कि इस तरफ़ से आने वालों के लिये ह़काइक़ के दरवाज़े बन्द हैं।

﴿2﴾....मेरी उम्र की क़सम ! इल्मे कलाम का एक फ़ाइदा येह है कि इस के ज़रीए बा'ज उमूर मुन्कशिफ़, वाज़ेह और मा'रूफ़ हो जाते हैं लेकिन इस का वुकूअ बहुत कम और उन ज़ाहिरी उमूर तक महदूद है जिन की तौजीह इल्मे कलाम में ग़ौरो फ़िक्र के बिगैर भी मुमकिन है।

﴿3﴾....इस से अ़वाम के लिये हमारे बयान कर्दा अ़काइद की हिफ़ाज़त होती और बिदअतियों के मुनाज़रों से पैदा होने वाले शुक्क व शुब्हात से भी बचा जा सकता है। क्यूंकि एक आ़म आदमी कमज़ोर होता है और वोह बिदअती की मुनाज़राना गुफ़्तगू का महज़ ज़बानी कलामी जवाब देने के लिये पुर जोश होता है अगरचे येह फ़ासिद रविय्या है और फ़ासिद रविय्ये से ही फ़ासिद का मुक़ाबला इसे दूर कर सकता है। नीज़ आ़म लोग हमारे बयान कर्दा अ़काइद को ही अपनाते हैं इस लिये कि शरीअत ने इन्ही अ़काइद को बयान किया और सलफ़े सालेहीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْبَرِّين ने भी येही अ़काइद अपनाए क्यूंकि इन्ही अ़काइद में सब के दीनो दुन्या की भलाई है।

उ-लमाउ किराम की ज़िम्मेदारी :

जिस तरह हाकिमे वक़्त इस अम्र का ज़िम्मेदार है कि अपनी रिआया के अम्वाल पर ज़ालिमों और ग़ासिबों को हाथ न डालने दे इसी तरह उ-लमाए किराम की ज़िम्मेदारी है कि वोह आम्मतुल मुस्लिमीन को बिदअतों की फ़रैब कारियों से बचाएं।

इल्मे कलाम के इस्ति'माल के तरीक़े :

इल्मे कलाम के फ़वाइद व नुक़सानात से बा ख़बर होने के बा'द उ-लमाए किराम को चाहिये कि जिस तरह एक माहिर तबीब नुक़सान देह अदवियात को सिर्फ़ मक़ामे ज़रूरत पर तजवीज़ करता है, इसी तरह वोह भी इल्मे कलाम को बक़दरे ज़रूरत और ब वक़्ते हाज़त ही इस्ति'माल में लाएं।

﴿1﴾....दुन्यावी कामों और कारोबार में मसरूफ़ आ़म मुसलमानों के अ़काइद अगर मज़कूरा अ़काइदे अहले सुन्नत के मुताबिक़ हों तो ज़रूरी है कि इसी पर इक्तिफ़ा किया जाए। इस लिये कि अ़वाम के हक़ में इल्मे कलाम की ता'लीम बाइषे नुक्सान है। क्यूंकि वोह बा'ज़ अवकात शुकूक व शुब्हात में पड़ कर अपने अ़काइद की पुख़्तगी खो बैठते हैं और फिर उन की इस्लाह के आधार मा'दूम हो जाते हैं और बिदअती अ़काइद इख़्तियार करने वाले आ़म शख़्स को सख़्ती से नहीं बल्कि खुश अख़्लाकी और ऐसी नर्म गुफ़्तगू से राहे हक़ पर चलने की दा'वत दी जाए जो कुरआन व हदीष के दलाइल से मुज़य्यन और नसीहत व ख़ौफ़े खुदा के तअष्पुरात से भरपूर हो जिस की बिना पर नफ़्स मुतमइन हो और दिल खींच जाए। येह वोह तरीका है जो शराइते मुतकल्लिमीन के मुताबिक़ मुनाज़राना गुफ़्तगू से कहीं ज़ियादा बेहतर है। क्यूंकि एक आ़म आदमी से बहूषो मुबाह़षा के तनाज़ुर में गुफ़्तगू कर के उसे अगर ला जवाब भी कर दिया जाए तो वोह येही समझेगा कि येह महज़ मुनाज़राना अन्दाज़ से अपना हम अ़कीदा बनाने की कोशिश है और मेरा हम मज़हब मुनाज़रा भी इसे ला जवाब करने में कामयाब हो सकता है। लिहाज़ा बिदअती अ़काइद के हामिल और शुकूक व शुब्हात में गिरिफ़्तार आ़म आदमी से मुनाज़रा करना हराम है। बल्कि ज़रूरी है कि मुन्तशिरुज़्ज़ेहन (या'नी हैरान व परेशान) अफ़राद के शुब्हात का नर्मी, वा'ज़ व नसीहत और ऐसे दलाइल से इज़ाला किया जाए जो इल्मे कलाम की मुश्किल अब्हाष से पाक और मा'कूल व मक्बूल तर्ज़ पर हों।

﴿2﴾.....इल्मे कलाम के इन्तिहाई दर्जों को छूना एक सूरत में मुफ़ीद है वोह येह कि बिलफ़र्ज़ एक आ़म शख़्स किसी मुनाज़रे से मुतअष्पिर हो कर बिदअती अ़काइद इख़्तियार कर बैठा तो ऐसे शख़्स के सामने इसी तरह की मुनाज़राना गुफ़्तगू उसे वापस राहे रास्त पर ला सकती है। लेकिन येह भी उसी सूरत में है जब येह मा'लूम हो जाए कि शख़से मज़कूर मुनाज़रा ही चाहता है, वा'ज़ व नसीहत और डराने वाले उ़मूमी दलाइल पर इक्तिफ़ा नहीं करता। येह बद अ़कीदगी की वोह ख़राब हालत है जिस का इलाज़ मुनाज़रे की दवा से करने की इजाज़त है।

﴿3﴾....वोह अ़लाकाजात जहां बिदअती और मज़हबी इख़्तिलाफ़ात कम हैं, वहां मज़कूरा अ़काइद ही को बयान करने पर इक्तिफ़ा किया जाए और उस वक़्त तक दलाइल को न छेड़ा जाए जब तक शुब्हात सर न उठाएं। जब शुब्हात पड़ना शुरूअ हों तो बक़दरे हाज़त दलाइल बयान कर दिये जाएं। अगर बद मज़हबी का फ़ितना जोरों पर हो और येह अन्देशा हो कि बच्चे इस फ़ितने

की ज़द में आ सकते हैं तो इन्हें “رسالة قدسیه” में हमारे ज़िक्र कर्दा दलाइल सिखा दिये जाएं ताकि अगर बद मज़हब मुनाज़रों के रास्ते अपना तअप्पूर काइम करना चाहें तो येह दलाइल इसे बे अषर बना दें। येह दलाइल मुख़्तसर हैं इसी वजह से हम ने उन्हें इस रिसाले में ज़िक्र किया है।

﴿4﴾....अगर मुब्तदी (इब्तिदाई तालिबे इल्म) ज़हीन हो और ज़हानत की बिना पर मक़ामे सुवाल से बा ख़बर हो जाता हो या उस के दिल में शुबा पैदा हो जाए तो जान लेना चाहिये कि काबिले इजतिनाब इल्लत व बीमारी सामने आ चुकी। ऐसी सूरते हाल के हल के लिये उ-लमा इस क़दर आगे बढ़ सकते हैं जो हम ने 50 अवराक़ पर मुश्तमिल रिसाले **الْإِقْتِصَادِیُّ الْإِعْتِقَادِ** में बयान किया है। इस में उ-लमाए मुतकल्लिमीन की दीगर अबहाष से सफ़े नज़र करते हुए, सफ़े अक़ाइद के उसूल व क़वाइद बयान किये गये हैं। अगर इसी को काफ़ी समझे तो मज़ीद कुछ सिखाने बताने की ज़रूरत नहीं और अगर फिर भी मुतमइन न हो तो समझ लें कि बीमारी पुरानी हो गई और ग़ालिब आ चुकी है और मरज़ जिस्म में सरायत कर चुका है। पस तबीब ब क़दरे इम्क़ान इलाज करे और इन्तिज़ाम करे कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अपने हुक्म से उस के लिये वज़ाहते हक़ का कोई सबब पैदा फ़रमा दे या फिर जब तक उस के मुक़द्दर में है शुक्क व शुब्हात में पड़ा रहे। पस **“الْإِقْتِصَادِیُّ الْإِعْتِقَادِ”** जैसी किताबों में जो कुछ मज़कूर है इस से नफ़अ की उम्मीद की जा सकती है।

बे फ़ाइदा इल्मे कलाम की अक्शाम :

किताब “رسالة قدسیه” और **“الْإِقْتِصَادِیُّ الْإِعْتِقَادِ”** में मज़कूर इल्मे कलाम के इलावा जो है वोह ग़ैर मुफ़ीद है और इस की दो किस्में हैं :

﴿1﴾....फ़वाइदे अक़ाइद के इलावा उमूर को ज़ैरे बहूष लाना, मषलन ए’तिमादात (या’नी अस्बाब व इलल), मौजूदात और अश्या की नफ़ी व इषबात में बहूष करना और इस बात में ग़ौर करना कि क्या रुविय्यत (या’नी देखने) की ज़िद रुकावट कहलाएगी या नाबीनाई ? और दिखाई न देने वाली सब अश्या के लिये एक ही रुकावट है या काबिले रुविय्यत अश्या की ता’दाद के बराबर रुकावटें हैं ? वग़ैरा वग़ैरा जैसी बातिल व गुमराह कुन बातें।

﴿2﴾....बयान कर्दा क़वाइदे अक़ाइद के इलावा इन दलाइल को ज़ियादा बयान करना और बहुत ज़ियादा सुवाल व जवाब करना है। येह अमल भी एक ऐसी इन्तिहा है जो हमारे दलाइल से ग़ैर मुतमइन शख़्स की गुमराही और जहालत में इज़ाफ़े का बाइष बनती है। क्यूंकि कई कलाम ऐसे हैं जिन को तूल देना और लम्बी तक़रीर करना दिक्क़त व अबहाम (या’नी दुश्वारी व पोशीदगी) का सबब बनता है।

एक शुवाल और इस का जवाब :

अश्या की नफी व इषबात और अलल व अस्बाब की हिक्मतों से बहूष करना दिल की तेजी का सबब है और दिल दीन का आला है जैसे तलवार जिहाद का आला है। तो दिल की तेजी पैदा करने में क्या हरज है? **जवाब :** येह दलील तो ऐसी ही बे तुकी है जैसे कोई कहे कि शतरंज खेलने से दिल को तेजी मिलती है लिहाजा शतरंज खेलना भी एक दीनी काम हुवा। हालांकि येह ख्वाहिश परवरी के सिवा कुछ नहीं, क्यूंकि दिल तमाम उलूमे शरइय्या से तेज होता है जिन में कोई खतरे की बात भी नहीं होती। इल्मे कलाम कितनी मिक्दार में, किस वक्त और किस के लिये मुफीद व लाइके ता'रीफ है और किस के लिये नहीं येह सब बयान हो चुका।

इल्मे कलाम दवा और इल्मे फ़िक़ह ग़िज़ा की मिष्ल है :

चूंकि गुज़्शता सफ़हात में बद मजहबों की तरदीद के लिये इल्मे कलाम की ज़रूरत को आप तस्लीम कर चुके और अब जब कि लोगों में बद मजहबी फैलती जा रही है तो इल्मे कलाम की ज़रूरत मुतहक्क़ (षाबित) हो गई लिहाजा इस का हुसूल फ़र्जे किफ़ाया होना चाहिये। जिस तरह अम्वाल और दीगर हुकूक की हिफ़ाज़त के लिये क़ज़ा व विलायत वगैरा ज़रूरी हैं और जब तक उ-लमाए किराम इस इल्म को फैलाने, पढ़ाने और इस की तहक्कीक की ज़िम्मेदारी नहीं संभालेंगे उस वक्त तक इसे दवाम हासिल नहीं होगा। इस इल्म से बिल्कुल बे रुख़ी बरतना इसे मिटाने के मुतरादिफ़ है और इसे सीखे बिगैर महज़ तबई सलाहिय्यतों के बल बूते पर बद मजहबों की तरदीद करना एक मुश्किल अम्र है। लिहाजा इस इल्म की तदरीस व तहक्कीक को फ़र्जे किफ़ाया का दर्जा हासिल होना चाहिये और जहां तक ज़मानए सहाबा की बात है तो उस वक्त इस इल्म की ज़रूरत ही न थी।

जवाब : होना तो येही चाहिये कि हर शहर में इस इल्म का माहिर हो जो उस शहर में बद मजहबों के उठने वाले ए'तिराज़ात का जवाब दे और येह ता'लीम के ज़रीए ही मुमकिन है। लेकिन इस की तदरीस तफ़्सीर व फ़िक़ह की तदरीस की तरह आम न हो। इसे यूं समझिये कि इल्मे कलाम दवा की मिष्ल है और इल्मे फ़िक़ह ग़िज़ा की मिष्ल। ग़िज़ा के ज़रर का कोई डर नहीं लेकिन दवा के नुक़सान से ज़रूर बचना होगा और इस के नुक़सानात हम बयान कर चुके हैं।

इल्मे कलाम किसे सिखाया जाए ?

माहिरे इल्मे कलाम सिर्फ़ तीन अवसाफ़ के हामिल शख़्स को येह इल्म सिखाए :

﴿1﴾....इस इल्म का तालिब, इसी लिये वक्फ़ और इसी का ख़्वाहिश मन्द हो क्यूंकि दीगर मशाग़िल की तरफ़ तवज्जोह इस इल्म की तक्मील और वारिद होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबात देने की राह में रुकावट षाबित होगी ।

﴿2﴾....तालिबे इल्म ज़हीन व फ़तीन और फ़सीहुल्लिसान (या'नी बोलने का माहिर) हो क्यूंकि कुन्द ज़ेहन इस इल्म से फ़ाइदा न उठा सकेगा और कम फ़हम शख़्स के लिये भी इस के दलाइल फ़ाइदा मन्द षाबित न होंगे । लिहाज़ा ऐसे शख़्स के हक़ में इल्मे कलाम से नफ़अ की उम्मीद कम जब कि नुक़सान का ख़ौफ़ ज़ियादा है ।

﴿3﴾....तालिबे इल्म की तबीअत नफ़्सानी ख़्वाहिशात से दूर और इस्लाह, दियानत दारी और तक्वा व परहेज़गारी जैसी काबिले क़द्र ख़ूबियों से मा'मूर हो क्यूंकि फ़ासिक को छोटा सा शुबा भी दीन से दूर कर देता और इस के और ख़्वाहिशाते नफ़्सानिय्या के दरमियान पर्दे को उठा देता है । फिर वोह शख़्स शुबहात को दूर करने के बजाए इन्हें दीन और दीनी ज़िम्मेदारियों को छोड़ने के लिये बहाने के तौर पर इस्ति'माल करता है । लिहाज़ा ऐसे तालिबे इल्म से भी फ़वाइद के बजाए नुक़सानात की तवक्कोआत ज़ियादा हैं ।

जब आप इल्मे कलाम की तक्सीमात जान चुके तो मैं येह बात भी वाज़ेह करता चलूं कि इस इल्म में बेहतरीन दलील उसे तसव्वुर किया जाता है जो दलाइले कुरआनिय्या जैसी हो या'नी कलिमात नर्म, दिल नशीन और इतमीनान कुन हों । दरमियान में ऐसी अक्साम और दक्कीक़ अबहाष न लाई जाएं जो अकषर लोगों की समझ से बाला तर हों और अगर समझ भी लें तो येही तअष्पूर पैदा हो कि येह उस की शो'बदा बाज़ी और फ़न कारी है जिसे लोगों की धोका देही के लिये इस्ति'माल करता है इस फ़न में उस जैसा माहिर इस का मुकाबला कर सकता है ।

बा'ज़ अहक़ाम में तब्दीली का एक सबब :

आप जानते हैं कि इल्मे कलाम के बयान कर्दा नुक़सानात के पेशे नज़र हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي और दीगर कई बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْمُبِين ने इस इल्म के लिये वक्फ़ हो जाने और इस में बहुत ज़ियादा ग़ौरो ख़ौज़ करने से मन्अ फ़रमाया है । रही बात उस मुनाज़रे की जो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का ख़ारिजियों से और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم का मुन्किरे तक्दीर से हुवा और इस तरह के दीगर मुनाज़रे तो वोह वाज़ेह और ज़ाहिर कलाम के साथ ब वक्ते ज़रूरत मुनअकिद हुए थे । इस लिये इन्हें अच्छा ही जानें और मानेंगे । हां ! येह बात है कि किसी दौर में इस इल्म की ज़रूरत ज़ियादा महसूस होगी और किसी में कम तो इसी हिसाब से इस इल्म के हुक्म का बदलते रहना कुछ अजीब नहीं ।

इल्मी वुश्अतें पाने का नुस्खा :

इल्मे कलाम का मज़कूरा हुक्म, दिफ़अ और हिफ़ज़त का तरीक़ा कार उन अक़ाइद के लिये बयान किया गया है जिन्हें अमूमतुल मुस्लिमीन अपनाते हैं। इस के इलावा शुबहात दूर करने, हक़ाइक़ से बा ख़बर होने, अश्या का वुजूद जिस तौर पर है इसे पहचानने और बयान कर्दा अक़ाइद के लिये इस्ति'माल होने वाले ज़ाहिरी अलफ़ज़ के असरार और रुमूज़ को जानने के लिये जिस चीज़ की ज़रूरत है वोह ताआते इलाहिया बजा लाना। नफ़्सानी ख़्वाहिशात तर्क करना, बारगाहे इलाही की तरफ़ मुकम्मल मुतवज्जेह रहना और हमेशा अपने ज़ेहन को झगड़ों के मरज़ से पाक रखना है। येह तमाम उमूर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की रहमत हैं। तौफीके इलाही के शामिले हाल होते हुए जो शख्स इन उमूर की खुशबूएं पाने की जिस क़दर कोशिश करता और जितनी क़ल्बी सफ़ाई व सलाहियत रखता है इसी तनासुब से इन्हें पा लेता है। येह इतना वसीअ समन्दर है जिस की गहराइयों और कनारों तक पहुंचना किसी के बस की बात नहीं।

एक सुवाल और इस का जवाब :

मज़कूरा वज़ाहत से मा'लूम होता है कि इन उलूम की कुछ बातें ज़ाहिर हैं और कुछ पोशीदा, बा'ज़ इब्तिदाअन ही वाजेह हो जाती हैं और बा'ज़ मख़फ़ी रहती हैं जिन की वज़ाहत के लिये इबादत व रियाज़त, अन्थक कोशिश व सलाहियत, फ़िक़्री पाकीज़गी और तमाम ग़ैर ज़रूरी दुन्यावी अफ़कार से क़ल्बी सफ़ाई ज़रूरी है। जब कि येह बात ख़िलाफ़े शरअ मा'लूम होती है क्यूंकि शरीअत ज़ाहिर व बातिन और पोशीदा व अलानिय्या जैसी तक्सीमात में बटी हुई नहीं बल्कि इस में ज़ाहिर व बातिन और अलानिय्या व पोशीदा एक ही हैं

जवाब : उलूम दो किस्मों पर मुश्तमिल होते हैं : (1) ज़ाहिरी (2) बातिनी।

इस बात से अहले इल्म तो इन्कार नहीं करते बल्कि उन्हीं कम इल्मों को इन्कार होता है जो नौ उम्मी के ज़माने में जो कुछ सीखते हैं उसी पर जम जाते हैं। इल्मी तरक्की और दर्जाते औलिया उ-लमा की तरफ़ पेश क़दमी उन के नसीब में नहीं होती। वगर्ना उलूम की मज़कूरा तक्सीम पर दलाइले शरइय्या मौजूद हैं।

उलूम की तक्सीम पर दलाइले शरइय्या :

﴿1﴾....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का फ़रमाने मा'रिफ़त निशान है :

”إِنَّ لِلْقُرْآنِ ظَاهِرًا وَبَاطِنًا وَحَدًّا وَمَظَلًّا“

या'नी बेशक कुरआन का ज़ाहिर भी है और बातिन भी, इस की एक हद है और एक मतलब।” (1)

﴿2﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम़ुल्लै त़ैअली व ज़ह़ै क़र्रिम़ ने अपने सीनए मुबारका की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया : “यहां बहुत से उलूम मौजूद हैं। काश ! मुझे इन्हें हासिल करने वाला कोई मिल जाए।” (2)

﴿3﴾.....हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा कमाल है : “हम गुरौहे अम्बिया को हुक्म है कि अ़वाम से उन की अ़क्लों के मुताबिक़ कलाम करें।” (3)

﴿4﴾.....सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है कि “लोगों की अ़क्लों से मावरा गुफ़्तगू करने वाला उन के लिये फ़ितने का बाइष है।” (4)

﴿5﴾.....**अल्लाह** तबारक व तअ़ाला का फ़रमाने अ़लीशान है :

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ وَمَا
يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعُلَمَاءُ ﴿٤٣﴾ (پ ۲۰، العنکبوت: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह मिषालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं और इन्हें नहीं समझते मगर इल्म वाले ।

﴿6﴾.....सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इरशादे नूरबार है कि “बा'ज उलूम पोशीदा ख़ज़ानों की तरह मख़फ़ी हैं जिन्हें मा'रिफ़ते खुदावन्दी रखने वाले ही जानते हैं।” (5)

﴿7﴾.....हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़लीशान है कि “अगर तुम वोह जानते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते और ज़ियादा रोते।” (6)

गौर फ़रमाइये कि अगर येह ऐसा राज़ न होता जिसे अ़वाम की समझ से बाला तर होने या किसी और वजह की बिना पर ज़ाहिर करने से मन्अ़ फ़रमा दिया गया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ أَجْمَعِينَ पर क्यूं ज़ाहिर न फ़रमाया ? हालांकि इस बात में तो कोई शक नहीं कि अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह राज़ सहाबए किराम रِضْوَانُ के सामने बयान फ़रमाते तो वोह ज़रूर इस की तस्दीक़ करते ।

①..... الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، ذكر العلة التي من اجلها..... الخ، الحديث: ٤٥، ج ١، ص ١٢٦، باختصار۔

②..... التذكرة الحمدونية، الباب الاول، ج ١، ص ١٠۔

③..... المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، الحديث: ١٨٠، ص ١٠٢-١٠٣۔

④..... صحيح مسلم، المقدمة، الحديث: ٥، ص ٩، بتغير قليل۔

⑤..... فردوس الاخبار، باب الالف، الحديث: ٤٩٩، ج ١، ص ١٢٦۔

⑥..... صحيح مسلم، كتاب صلاة الاستسقاء، الحديث: ٩٠١، ص ٣٨۔

﴿8﴾.....हबिरुल उम्माह हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इस आयते तय्यिबा :

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَوَاتٍ وَمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ

(۲۸، الطلاق: ۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** है जिस ने सात आस्मान बनाए और इन्हीं के बराबर ज़मीनें, हुक्म इन के दरमियान उतरता है।

के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया कि “अगर मैं इस की तफ़सीर बयान करता तो तुम मुझे संगसार (या’नी पथ्थर मार कर हलाक) कर देते।” एक रिवायत में है कि “अगर मैं इस की तफ़सीर बयान करता तो तुम मुझे काफ़िर क़रार देते।”⁽¹⁾

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “बारगाहे रिसालत से मुझे दो तरह के इल्म अता हुए एक को तो मैं ने ज़ाहिर कर दिया अगर दूसरा भी ज़ाहिर कर दूँ तो मेरी गर्दन काट दी जाए।”⁽²⁾

﴿10﴾....हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अबू बक्र सिद्दीक़ की तुम पर फ़ज़ीलत की वजह नमाज़ व रोज़े की क़षरत नहीं बल्कि वोह राज़ है जो इन के सीने में वदीअत किया गया है।”⁽³⁾

बिला शुबा वोह राज़ दीनी उसूलों के मुतअल्लिक़ ही था इस से ख़ारिज न था और दीनी उसूलों के मुतअल्लिक़ उमूर अपने ज़ाहिरी मा’ना के ए’तिबार से दीगर सहाबए किराम رَضُواْ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ पर मख़फ़ी न थे।

﴿11﴾....हज़रते सय्यिदुना सहल तुस्तरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि “हकीकी अ़लिम को तीन किस्म के उलूम नसीब होते हैं : (1)....इल्मे ज़ाहिर जिसे वोह सिर्फ़ अहले ज़ाहिर पर ज़ाहिर करता है। (2)....इल्मे बातिन जिसे वोह सिर्फ़ अहले बातिन पर ज़ाहिर करता है। (3)....वोह इल्म जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस अ़लिम के दरमियान राज़ है, जिसे न तो वोह अहले ज़ाहिर पर ज़ाहिर करता है और न ही अहले बातिन को इस पर आगाह करता है।”⁽⁴⁾

﴿12﴾....बा’ज अ़रिफ़ीन का कौल है कि रबूबिय्यत के राज़ों को ज़ाहिर करना कुफ़्र है।

①.....قوت القلوب، الفصل الثانی والثلاثون فيه شرح مقامات اليقين، ج ۱، ص ۲۲۱۔

②.....صحيح البخارى، كتاب العلم، باب حفظ العلم، الحديث: ۱۲۰، ج ۱، ص ۶۳۔

③.....المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث: ۹۷۰، ص ۳۷۶۔

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۴۸۔

﴿13﴾...एक अरिफ़ फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक राज़ ऐसा भी है कि अगर ज़ाहिर हो जाए तो नबुव्वत ही बातिल हो जाए और नबुव्वत का एक राज़ ऐसा है कि अगर वोह खुल जाए तो इल्म बातिल हो जाए और उ-लमाए रब्बानिय्यीन का एक राज़ ऐसा है कि अगर वोह इसे ज़ाहिर कर दें तो अहकामे शरीअ बातिल हो जाएं।”⁽¹⁾

मोमिने कामिल :

इस कौल के काइल बुजुर्ग की अगर येह मुराद न हो कि कमज़ोर लोग अक्ल व फ़हम की कमी के सबब नबुव्वत के अहल नहीं होते तो जो कुछ उन्होंने ने ज़िक्र किया वोह सहीह नहीं बल्कि सहीह येह है कि इस में तनाकुज़ नहीं कि मोमिने कामिल वोह है जिस की मा'रिफ़त का नूर, उस की परहेज़गारी के नूर को न बुझाए और परहेज़गारी की अस्ल नबुव्वत है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

मज़कूरा आयात व अहादीष में तावील होगी। लिहाज़ा हमारे सामने वाज़ेह करो कि उलूम के ज़ाहिर व बातिन के इख़िलाफ़ से क्या मुराद है ? अगर येह हो कि बातिन ज़ाहिर के मुख़ालिफ़ है तो येह शरीअत को बातिल करने और उन लोगों की ताईद करने के मुतरादिफ़ है जो कहते हैं कि हकीक़त शरीअत के ख़िलाफ़ है। हालांकि येह कौल कुफ़्र है क्यूंकि ज़ाहिरी अहकाम को शरीअत और बातिनी अहकाम को हकीक़त कहते हैं और अगर येह कहा जाए कि बातिन ज़ाहिर के मुख़ालिफ़ व मुतज़ाद नहीं तो फिर उलूम का ज़ाहिर व बातिन एक ही हुवा और इस की ज़ाहिरी व बातिनी तक्सीम बे मा'ना हो जाएगी। नीज़ शरीअत का कोई राज़ ऐसा न रहेगा जिसे ज़ाहिर न किया जा सके बल्कि पोशीदा और ज़ाहिर एक ही होगा।

येह सुवाल एक बड़े अम्र को हरकत देने, इल्मे मुकाशफ़ा की तरफ़ ले जाने और अस्ल मक्सूद या'नी इल्मे मुआमला से हटाने वाला है जिसे इस किताब में बयान करने का इरादा है। हमारे ज़िक्र कर्दा अक़ाइद का तअल्लुक़ दिल के आ'माल से है जिन्हें कबूल करना और सच्चे दिल से इन की तस्दीक़ करना हम पर लाज़िम है। येह लाज़िम नहीं कि इन की हकीक़तों तक रसाई पाएं क्यूंकि अ़वामुन्नास को इस अम्र का मुकल्लफ़ नहीं बनाया गया। अगर अक़ाइद का तअल्लुक़ आ'माल से न होता तो इन्हें इस किताब में बयान न किया जाता और अगर इन का तअल्लुक़

ज़ाहिर दिल से न होता बल्कि बातिन से होता तो इन्हें इस किताब के पहले हिस्से में ज़िक्र न किया जाता। क्योंकि हकीकत का खुल जाना तो दिल और इस के बातिन के राज़ की सिफ़त है। लेकिन जब कलाम से ये शब्दा पैदा हुवा कि ज़ाहिर बातिन के ख़िलाफ़ है तो इस शब्दे के इज़ाले के लिये मुख़्तसर वज़ाहत की ज़रूरत पेश आई। लिहाज़ा जो कहे कि हकीकत शरीअत के ख़िलाफ़ या ज़ाहिर बातिन के मुतज़ाद है तो वोह शख़्स ईमान की ब निस्बत कुफ़्र के ज़ियादा करीब है।

ख़्वास के असरार की अक्सांम :

जिन असरार का इदराक सिर्फ़ मुकर्रबीन के लिये ख़ास है, दीगर उ-लमा इन के साथ शरीक नहीं और इन्हें इन राज़ों को फ़ाश करने की भी इजाज़त नहीं। ऐसे असरार की पांच अक्सांम हैं :

﴿.....कोई शै ज़ाती तौर पर बहुत बारीक और अ़वाम की समझ से बाला तर हो, जिसे सिर्फ़ ख़्वास ही समझ सकते हैं और इन ख़्वास पर भी लाज़िम आता है कि ना अहल पर इस शै के राज़ को फ़ाश न करें। वरना वोह कम अक्ली और ना समझी की बिना पर फ़ितने में मुब्तला हो सकते हैं। इसी तरह “रूह के राज़ को भी छुपाया जाएगा जिसे ज़ाहिर करना रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को भी मन्अ था।”⁽¹⁾ क्योंकि हकीकते रूह के इदराक व तसव्वुर तक अ़वाम की समझ और ख़याल को रसाई नहीं। किसी को वस्वसा न आए कि हुज़ूर नबिय्ये ग़ैब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हकीकते रूह का इल्म न था (बल्कि ब अताए रब्बुल इज़ज़त आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हकीकते रूह का भी इल्म रखते हैं) क्योंकि जिसे हकीकते रूह का इल्म नहीं उसे अपने नफ़्स की मा'रिफ़त भी हासिल नहीं और जिसे अपने नफ़्स की मा'रिफ़त नहीं वोह मा'रिफ़ते रब्ब कैसे पा सकता है? और ये भी हो सकता है कि इन असरार से बा'ज़ औलिया व उ-लमा को भी हिस्सा मिल जाए अगर्चे वोह नबी नहीं होते लेकिन आदाबे शरीअत का पास रखते हैं और जिस मस्अले में शरीअत ख़ामोश है वोह भी इस में ख़ामोश रहते हैं। बल्कि सिफ़ाते बारी तआला में कुछ बातें मख़फ़ी हैं जहां अकषर लोगों की अक्ल नहीं पहुंच सकती। प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन सिफ़ात मषलन **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ का इल्म व कुदरत वगैरा के सिर्फ़ ज़ाहिरी मा'ना बयान फ़रमाए। जिसे लोगों ने एक मुनासिब तरीके पर समझा और खुद को हासिल इल्म व कुदरत जैसी सिफ़ात के मुशाबेह जाना क्योंकि मख़लूक को भी कुछ सिफ़ात की अता है जिन्हें इल्म व कुदरत का नाम दिया जाता है। इस पर क़ियास कर के इल्म व कुदरते इलाही को ख़याल किया।

①.....صحیح مسلم، کتاب صفة القيامة.....الخ، باب سوال اليهود النبی.....الخ، الحديث: ۲۷۹۴، ص ۱۵۰۱۔

अगर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ऐसी सिफ़ाते इलाहिया को बयान फ़रमाते जिन के मुशाबेह सिफ़ात मख़्लूक के पास न होतीं तो वोह सिफ़ाते बारी तअ़ाला को न समझ पाते। मिषाल के तौर पर किसी बच्चे या इन्नीन के सामने जिमाअ की लज़ज़त बयान की जाए तो वोह इस की हकीकत से ना बलद रहेगा और इसे किसी खाने के जाइके की तरह समझेगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और मख़्लूक के इल्म में फ़र्क :

याद रहे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इल्मे कुदरत और मख़्लूक के इल्म व कुदरत के दरमियान फ़र्क, खाने और जिमाअ की लज़ज़त के दरमियान फ़र्क से कहीं ज़ियादा है। बहर हाल ! इन्सान अव्वलन अपनी ज़ात और अपनी मौजूदा या साबिका सिफ़ात को समझता है फिर इस पर कियास कर के मज़ीद अश्या की जान पहचान हासिल करता है फिर इस बात की तस्दीक़ करता है कि सिफ़ाते रब्ब और सिफ़ाते अब्द में शफ़ों कमाल के ए'तिबार से बहुत फ़र्क़ है। बशरी ताक़त सिर्फ़ इतनी है कि वोह अपनी ज़ात में षाबित शुदा फ़ै'ल और इल्म व कुदरत वग़ैरा जैसी सिफ़ात को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये इस फ़र्क़ व यकीन के साथ षाबित माने कि वोह इन सिफ़ात में बुजुर्ग़ व बरतर और अक्मल तरीन है जब कि इन्सान की इन्तिहाई रसाई अपनी ज़ात तक ही महदूद होती है, रब्ब तअ़ाला के लिये मुख़्तस बुजुर्गी तक रसाई बन्दे को हासिल नहीं। इसी वजह से सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 “لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ” या'नी (या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) मैं तेरी ऐसी हम्दो षना नहीं कर सकता जैसी हम्दो षना तू अपने लिये करता है।⁽¹⁾

इस रिवायत का येह मतलब नहीं कि जो कुछ मैं जानता हूं इसे बयान नहीं कर सकता बल्कि येह कि जलालत व अज़मते इलाही को कामिल तौर पर न जानने का मो'तरिफ़ हूं। इसी बिना पर बा'ज़ अरिफ़ीन कहते हैं कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हकीकत को वोह खुद ही जानता है और कोई नहीं जानता।”⁽²⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “तमाम ता'रीफ़ें उस खुदा के लिये हैं जिस ने अपनी मा'रिफ़त की तरफ़ मख़्लूक को राह नहीं दी बल्कि उन्हें इस से अज़िज़ रखा।”⁽³⁾

अब हम अपनी गुफ़्तगू को मक्सूद की तरफ़ लाते हैं कि असरार व रुमूज़ की एक किस्म वोह है जिस का इदराक़ अवामुन्नास के बस से बाहर है। रूह और सिफ़ाते बारी तअ़ाला के

①.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما یقال فی الركوع والسجود، الحدیث: ۳۸۶، ص ۲۵۲۔

②.....روح البیان، الجزء الخامس والعشرون، سورة الشوری، ج ۸، ص ۲۹۴۔

③.....الرسالة القشيرية، باب التوحید، ص ۳۳۲، ”سبحان“ بدله ”الحمد لله“۔

असरार इसी किस्म से मुतअल्लिक हैं और येह हदीषे पाक भी शायद इसी तरफ मुशीर (इशारा करती) है कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नूर के 70 हिजाबात हैं अगर वोह इन्हें हटा दे तो इस की तजल्लियात ताहदे निगाह सब कुछ जला दें।”⁽¹⁾

बे दीनी का बाइष :

﴿1﴾....(मुकर्रबीन के साथ खास असरार में से दूसरी किस्म) वोह पोशीदा उमूर जो बजाते खुद काबिले फहम हैं। अक्ल की उन तक रसाई है लेकिन अम्बिया व औलिया को इन उमूर के बयान की इजाजत नहीं होती क्योंकि अकषर लोग इन उमूर का बयान सुन कर नुक्सान उठाते हैं लेकिन अम्बिया व औलिया इस नुक्सान से महफूज रहते हैं जैसे मस्अलए तक्दीर का राज़, अहले इल्म हज़रात को इस राज़ का इफ़शा (जाहिर करना) मन्अ है। क्योंकि अम मुशाहदा है कि बा'ज हकीकतों का बयान बा'ज लोगों के लिये बाइषे नुक्सान है जैसे गोबर के कीड़े को गुलाब की खुशबू और चमगादड़ की आंखों को सूरज की रोशनी ज़र देती है। नीज़ येह कौल बिल्कुल हक़ है कि कुफ़्र, जिना गुनाह और दीगर तमाम बुराइयां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म, इरादा और मशिय्यत से हैं मगर इस से बा'ज लोग फ़ितने में पड़ेंगे और गुमान करेंगे कि येह बात ख़िलाफ़े हिकमत, बे वुकूफ़ी की अलामत और बुराई व जुल्म पर रिज़ामन्दी की निशानी है। इब्ने रावन्दी और दीगर ज़लील लोगों की बे दीनी का सबब इसी तरह की बातें बनीं।

इसी तरह राज़े तक्दीर का इफ़शा कई लोगों को इस शुबे में डाल सकता है कि **अल्लाह** तअला अज़िज़ है (مَعَادَالله) क्योंकि अ़वाम उन बातों को समझने से कासिर है जिन से इस शुबे का इज़ाला किया जा सके। क़ियामत के मुतअल्लिक अगर कोई शख्स कहे कि वोह एक हज़ार साल या इस से कुछ अर्से पहले या बा'द वाक़ेअ होगी तो इस की बात बिल्कुल मा'कूल है, लेकिन बन्दों की मस्लेहत और अन्देशए ज़र के पेशे नज़र इस मुद्दत को बयान नहीं किया गया क्योंकि क़ियामत आने में अगर ज़ियादा अर्सा बाकी होता तो लोग अज़ाब में ताख़ीर को दलील बना कर ग़फ़लत शिआर हो जाते और अगर इल्मे इलाही में क़ियामत का वुकूअ जल्दी होता और लोगों को येह बात बता दी जाती तो वोह ज़ियादा ख़ौफ़ में मुब्तला और आ'माल से रू गर्दा हो जाते और निज़ामे दुन्या ख़राब हो जाता। मज़क़ूरा बयान अगर सहीह और दुरुस्त सम्त पर हो तो दूसरी किस्म की मिषाल बन सकता है।

﴿3﴾.....(मुकर्रबीन के साथ खास असरार में से तीसरी किस्म) किसी चीज़ का सराहतन ज़िक्र अगर्वे अन्देशए ज़र से ख़ाली और काबिले फ़हम हो, इस के बा वुजूद उसे इशारों कनायों में

1.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب فی قوله علیه السلام.....الخ، الحديث: 19، ص 109، باختصار۔

बयान करना ताकि वोह चीज़ सामेअ के दिल में ज़ियादा अषर करे और येही मस्लेहत वाज़ेह भी हो। मषलन कोई कहे : “मैं ने फुलां शख्स को खिन्ज़ीरों के गले में मोतियों के हार डालते देखा” और इस कौल से येह बताना चाहे कि “फुलां शख्स इल्मो हिकमत के मोती ना अहलों को लुटा रहा है” येह कौल सुनने वाला आम शख्स इस का ज़ाहिरी मा'ना मुराद ले सकता है लेकिन ज़ीरक शख्स जब उस शख्स के मुतअल्लिक सुने और देखेगा कि उस के पास मोती हैं न खिन्ज़ीर तो वोह इस कौल के बातिनी मा'ना और राज़ को पा लेगा। ऐसे मअानी और असरार को समझने के सिलसिले में लोगों की हालत मुख़लिफ़ होती है।

दरज़ी और जुलाहा :

इसी मफ़हूम को शाइर ने यूं बयान किया है :

رَجُلَانِ خَيَّاطٌ وَآخَرُ حَائِكٌ مُتَقَابِلَانِ عَلَى السَّمَاءِ الْأَعَزَلِ
لَا زَالَ يَنْسُجُ ذَاكَ خِرْقَةً مُدِيرٍ وَيَخِيْطُ صَاحِبُهُ ثِيَابَ الْمُقْبِلِ

तर्जमा : दो आदमी जिन में से एक दरज़ी और दूसरा जुलाहा है दोनों आस्माने बाला पर एक दूसरे के मुक़ाबिल हैं। एक हमेशा बद बख़्तों के लिबास बुनता और दूसरा नेक़्कारों के लिबास सीता है।

शाइर ने सआदत व शक़ावत जैसे आस्मानी अस्बाब को दो कारीगरों से ता'बीर किया। येह है वोह किस्म जिस में बात को इस अन्दाज़ से बयान किया जाए कि इस में वोही मा'ना या उस जैसा मफ़हूम पाया जाए।

“मस्जिद सुकड़ती है” से मुराद :

ऐसा ही मफ़हूम इस हदीषे पाक में भी है : “إِنَّ الْمَسْجِدَ لَيَنْزَوِي مِنَ النَّخَامَةِ كَمَا تَنْزَوِي الْجِلْدَةُ عَلَى النَّارِ”⁽¹⁾ या'नी रींठ से मस्जिद ऐसे सुकड़ती है जैसे आग से चमड़ा।

हालांकि ज़ाहिर में ऐसा नहीं होता कि रींठ की वजह से सेहने मस्जिद सुकड़ता हो बल्कि इस फ़रमान का मफ़हूम येह है कि रूहे मस्जिद क़ाबिले ता'ज़ीम है, यहां रींठ डालना तौहीन और मा'नए मस्जिदियत के ख़िलाफ़ है जिस तरह आग चमड़े के अज्ज़ा के ख़िलाफ़ है।

गधे जैसा मुंह :

एक और हदीषे पाक में है : “क्या इमाम से पहले सर उठाने वाला इस बात से नहीं डरता कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उस के सर को गधे के सर जैसा बना दे।”⁽²⁾

①.....المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب صلاة التطوع والامامة، الحديث: ٩، ج ٢، ص ٢٦٠۔

②.....صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب اثم من رفع راسه قبل الامام، الحديث: ٢٩١، ج ١، ص ٢٢٩۔

(रुकूअ व सुजूद में इमाम से आगे बढ़ने वाले मुक्तदी के साथ) इस हदीष के ज़ाहिरी मा'ना के मुताबिक़ सूरते हाल कभी पेश न आई।⁽¹⁾

हां ! मा'नवी ए'तिबार से मुमकिन है या'नी उस आदमी का सर रंग व शक्ल के ए'तिबार से गधे के सर जैसा नहीं होता बल्कि ख़ासिय्यत या'नी बे वुकूफी व कम अक्ली में गधे जैसा हो जाता है। पस जो मुक्तदी (रुकूअ व सुजूद में) इमाम से पहले सर उठाए तो उस का सर बे वुकूफी और कम अक्ली में गधे के सर जैसा है। हदीष शरीफ़ की मुराद येही है हकीकतन गधे की सूरत मुराद नहीं जो अल्फ़ाज़ का ज़ाहिरी मा'ना है और दो मुतज़ाद चीज़ों को यक्ज़ा करना मुक्तदी की बहुत बड़ी बे वुकूफी है कि इक्तिदा भी करे और इमाम से आगे भी बढ़े।

मुशब्दी मा'ना की पहचान का तरीका :

असरार की इस किस्म में ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं इस की पहचान के दो तरीके हैं :

(1) दलीले अक्ली (2) दलीले शरई।

(1).....दलीले अक्ली : यूं कि उन अल्फ़ाज़ की ज़ाहिरी मुराद पर अमल ना मुमकिन हो। जैसा कि इस हदीषे मुबारका में है : “قُلُوبُ الْمُؤْمِنِينَ أَصْبَغُ مِنْ أَصْبَاحِ الرَّحْمَنِ” या'नी : मोमिन का दिल रहमान की उंगलियों में से दो उंगलियों के दरमियान है।⁽²⁾⁽³⁾ लिहाज़ा अगर क़ल्बे मोमिन को देखा जाए

①.....मुमकिन है कि हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي के ज़माने तक ऐसा कोई वाकिआ रूनुमा न हुवा हो इसी लिये आप ने येह फ़रमाया मगर इसे हकीकी मा'ना पर महमूल करना भी मुमकिन है चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अली बिन सुल्तान मुहम्मद अल कारी अल मा'रूफ़ मुल्ला अली कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي मज़कूरा हदीषे मुबारका के तहत फ़रमाते हैं : हकीकी मा'ना का एहतिमाल इस दलील की बिना पर है कि इस उम्मत में भी सूरतों का मस्ख़ होना मुमकिन है जैसा कि अलामाते क़ियामत के मुतअल्लिक़ मरवी रिवायात में मज़कूर है। नीज़ ऐसा षाबित भी है कि सर गधे के सर की तरह हो गया। चुनान्चे, मन्कूल है कि “एक मुहद्दिष हदीष लेने के लिये एक बड़े मशहूर शख्स के पास दिमशक़ में गए और उन के पास बहुत कुछ पढ़ा, मगर वोह पर्दा डाल कर पढ़ाते, मुहत्तों तक उन के पास बहुत कुछ पढ़ा, मगर उन का मुंह न देखा, जब ज़मानए दराज़ गुज़रा और उन्होंने ने देखा कि इन को हदीष की बहुत ख़्वाहिश है तो एक रोज़ पर्दा हटा दिया, देखते क्या हैं कि उन का मुंह गधे का सा है, उन्होंने ने कहा : “साहिब ज़ादे ! इमाम पर सब्कत करने से डरो कि येह हदीष जब मुझ को पहुंची मैं ने इसे मुस्तबअद (या'नी बा'ज़ रावियों की अदमे सिहहत के बाइष दर अज़ क़ियास) जाना और मैं ने इमाम पर क़स्दन सब्कत की, तो मेरा मूंह ऐसा हो गया जो तुम देख रहे हो।”

(مرقاة المفاتيح، كتاب الصلوة، تحت الحديث: ۱۱۴۱، ج ۳، ص ۲۲۱)

②.....صحيح مسلم، كتاب القدر، باب تصريف الله تعالى القلوب.....الخ، الحديث: ۲۶۵۲، ص ۱۲۲.

③....मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَانِ मिरआतुल मनाजीह, जि 1, स. 99 पर इस के तहत फ़रमाते हैं कि “येह इबारत मुतशाबिहात में से है क्यूंकि रब्ब तआला उंगलियों हाथों वगैरा आ'ज़ा से पाक है, मक्सद येह है कि तमाम के दिल **अब्बाह** के कब्जे में हैं कि निहायत आसानी से फेर देता है, जैसे कहा जाता है तुम्हारा काम मेरी उंगलियों में है या मैं सुवालात का जवाब चुटकियों से दे सकता हूं।”

तो वहां उंगलियां नहीं मिलेंगी, जिस से मा'लूम हुवा कि उंगलियों से इशारतन कुदरत मुराद है। येह कुदरत उंगलियों का राज और इन की मख्फ़ी रूह है। उंगलियों से कुदरत क्यूं मुराद ली ? इस लिये कि इस अन्दाज़ से इक्तिदारे आ'ला ब ख़ूबी समझाया जा सकता है।⁽¹⁾ इसी तरह इस आयते मुकद्दसा में भी कुदरते इलाहिय्या को इशारतन बयान किया गया है। चुनान्चे, फ़रमाने बारी तआला है :

إِنَّمَا قَوْلُنَا شَيْءٌ إِذَا أَرَادْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ﴿١٣٠﴾ النحل: ٣٠

तर्जमए कन्जुल ईमान : जो चीज़ हम चाहें इस से हमारा फ़रमाना येही होता है कि हम कहें होजा वोह फ़ौरन हो जाती है।

इस आयत से ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेना ना मुमकिन है क्यूंकि अगर किसी शै को वुजूद से पहले लफ़्जे “कुन” से मुखातब किया जाए तो येह मुहाल है कि मा'दूम शै ख़िताब कैसे समझेगी ? और अगर येह ख़िताब मौजूद को है तो इसे वुजूद में लाने का क्या मतलब ? मगर इस तरह का किनाया चूंकि इन्तिहाई दर्जे की कुदरत समझाने की सलाहिय्यत रखता है लिहाज़ा इसे इस्ति'माल में लाया गया।

(2).....**दलीले शरई :** किसी राज के अगर्चे ज़ाहिरी मा'ना मुराद मुमकिन हो लेकिन रिवायात बताती हों कि यहां ज़ाहिरी मा'ना मुराद नहीं।

जैसा कि इस फ़रमाने इलाही की तफ़सीर में है :

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ
بِقَدَرِهَا ﴿١٣١﴾ الرعد: ١٣١

तर्जमए कन्जुल ईमान : उस ने आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक बह निकले।

इस आयते मुबारका में पानी से मुराद कुरआने पाक और वादियों से मुराद दिल हैं। बा'ज दिल कुरआन का फैज़ान ज़ियादा पाते हैं, बा'ज कम और बा'ज बिल्कुल ही नहीं। झाग⁽²⁾

①.....मषलन चुटकियों में काम करना, उंगलियों पर नचाना जैसे मुहावरों का इस्ति'माल।

②...यहां से मज़कूरा आयते मुबारका के अगले कुछ हिस्से की तफ़सीर बयान की जा रही है। मुकम्मल आयते तय्यिबा येह है :

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَابِيًا ۚ وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حُلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلَهُ ۚ كَذَلِكَ يَصْرِبُ اللَّهُ الْخُبْرَ وَالْبَاطِلَ ۖ فَمَا الزَّبَدُ يَذْوِيهِمْ جَفَاءً ۖ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَبْقَىٰ فِي الْأَرْضِ ۚ كَذَلِكَ يَصْرِبُ اللَّهُ الْآلَ ۚ مَثَالٌ ﴿١٣٢﴾ الرعد: ١٣٢

तर्जमए कन्जुल ईमान : उस ने आस्मान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक बह निकले तो पानी की रो (धार) इस पर उभरे हुए झाग उठा लाई और जिस पर आग दहकाते हैं गहना (जेवर) या और अस्बाब बनाने को इस से भी वैसे ही झाग उठते हैं **अल्लाह** बताता है कि हक व बातिल की येही मिषाल है तो झाग तो फुक कर दूर हो जाता है और वोह जो लोगों के काम आए ज़मीन में रहता है **अल्लाह** यूं ही मिषालें बयान फ़रमाता है।

से मुराद कुफ़्रो निफ़ाक़ है, क्यूँकि येह अगर्चे सतहे आब पर उभरा होता है लेकिन बाकी नहीं रह पाता जब कि हिदायत लोगों के लिये मुफ़ीद भी है और इसे बका भी हासिल है।

असरार की इस तीसरी किस्म में बा'ज लोगों ने मुआमलाते आख़िरत जैसे मीज़ाने अमल और पुल सिरात वग़ैरा में तावीलात बयान कीं, जो कि बिदअत हैं क्यूँकि इन तावीलात का न तो रिवायात से शुबूत मिलता है और न ही इन मुआमलात के ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेना नामुमकिन है, लिहाज़ा इन्हें ज़ाहिरी मा'ना पर ही महमूल किया जाएगा।

﴿4﴾.....(मुकर्रबीन के साथ खास असरार में से चौथी किस्म) इब्तिदाअन आदमी किसी चीज़ को इजमालन (मुख़्तसरन) जाने फिर दलील व तजरीबे से इस की तफ़्सीलात हासिल करे हत्ता कि वोह चीज़ उस का हाल बन जाए और इसे लाज़िम हो जाए। इन दोनों तरीकों (या'नी मुख़्तसर और तफ़्सीली) में फ़र्क़ होगा। पहला छिलके की मिष्ल है दूसरा मज़ की तरह। पहला ज़ाहिर की मानिन्द है दूसरा बातिन की मिष्ल। मिषाल के तौर पर कोई शख़्स अन्धेरे में या दूर से किसी को देखे तो उसे एक तरह का इल्म हासिल हो जाता है, जब दूरी या अन्धेरा ख़त्म होता है तो पहले और दूसरे इल्म में फ़र्क़ पाता है। लेकिन येह दूसरा इल्म पहले से मुतज़ाद नहीं बल्कि इसे मुकम्मल करने वाला है। इल्म, ईमान और तस्दीक़ भी इसी तरह हैं। यूँ ही इश्क़, बीमारी और मौत में मुब्तला होने से पहले भी इन्सान इन की हकीक़त पर यकीन रखता है मगर जब इन में मुब्तला होता है तो इस यकीन में पहले से ज़ियादा पुख़्तगी आ जाती है। बल्कि इन्सान को अपने तमाम अहवाल ब शुमूल शहवत व इश्क़ की तीन मुख़्तलिफ़ हालतों और तीन जुदा जुदा फ़हमों से वासिता पड़ता है। इस हालत के वाक़ेअ होने से पहले, वाक़ेअ होते वक़्त और वाक़ेअ होने के बा'द इस की तस्दीक़ करना। जैसे भूक का फ़हम भूक ख़त्म होने के बा'द वैसा नहीं होता जैसा भूक की हालत में था। इसी तरह उलूमे दीनिय्या में से कोई इल्म हासिल किया जाए तो वोह मुकम्मल हो कर पहले की ब निस्बत बातिन की तरह हो जाता है। इसी तरह सिद्दहत के मुतअल्लिक़ जो फ़हम व इदराक़ मरीज़ को होता है वोह तन्दुरुस्त को नहीं होता।

असरार की इन चार अक़्साम में लोगों की समझ बूझ की कुव्वत आपस में मुख़्तलिफ़ होती है। लेकिन इन में कोई ऐसा बातिन नहीं जो ज़ाहिर के ख़िलाफ़ हो बल्कि वोह ज़ाहिर को इसी तरह पूरा और मुकम्मल करता है जिस तरह गुदा छिलके को। इन बातों के मानने वालों को सलाम।

जबाने हाल और जबाने काल में फर्क और इन की मिषालें :

﴿5﴾.....(मुकर्रबीन के साथ खास असरार में से पांचवीं किस्म) जब जबाने हाल को जबाने काल से बयान किया जाता है ⁽¹⁾ तो कम अक्ल शख्स इस बात के सिर्फ़ ज़ाहिर पर वाकिफ़ियत पाता और इसे ज़ाहिरी जबान से बोलना ख़याल करता है जब कि हकीकत से आशना बात की तह तक पहुंच जाता है। मषलन कोई बयान करे कि दीवार ने मीख़ से कहा : तू मुझे क्यूं चीरती है ? जवाब दिया : मुझ से नहीं उस से पूछ जिस ने मुझे भी नहीं छोड़ा और मुझे भी कूट रहा है और इस पथ्थर को भी देख जो मेरे पीछे है। येह है जबाने हाल को जबाने काल से ता'बीर करना। कुरआने पाक में भी इस की मिषाल मौजूद है। चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾ (حم السجدة: ١١)

तर्जमए कन्जुल ईमान : फिर आस्मान की तरफ़ क़स्द फ़रमाया और वोह धूवां था तो उस से और ज़मीन से फ़रमाया कि दोनों हाज़िर हो खुशी से चाहे ना खुशी से दोनों ने अर्ज की, कि हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए।

कम अक्ल शख्स मजकूरा आयते मुबारका से येह समझेगा कि ज़मीन व आस्मान जिन्दगी पाते, अक्ल रखते और आवाज़ व अल्फ़ाज़ के मजमूए पर मुश्तमिल बात को सुनते और समझते हैं और आवाज़ व अल्फ़ाज़ के साथ ही यूं जवाब देते हैं :

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿١١﴾ (حم السجدة: ١١)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हम रग़बत के साथ हाज़िर हुए।

जब कि साहिबे बसीरत जान लेगा कि यहां जबाने हाल का इस्ति'माल है और इस बात से बा ख़बर किया जा रहा है कि ज़मीन व आस्मान लाज़िमन मुसख़्ख़र और मजबूर हैं। कुरआने पाक से इसी किस्म की एक और मिषाल मुलाहज़ा हो :

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يَسْبِغُ بِحُضْرَةِ (پ ١٥، بنی اسرائیل: ٢٢)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और कोई चीज़ नहीं जो उसे सराहती (ता'रीफ़ करती) हुई उस की पाकी न बोले।

इस आयत से कम फ़हम शख्स येह समझेगा कि जामद अश्या (पथ्थर वगैरा) जिन्दा, अक़िल और आवाज़ व अल्फ़ाज़ के साथ बोलने पर क़ादिर हैं और तस्बीह पढ़ने के लिये **سُبْحَنَ اللَّهِ** कहती हैं। जब कि अक्ल मन्द जान लेगा कि यहां (बयाने तस्बीह के लिये) जबान से

①.....या'नी बे कहे हालत से ज़ाहिर होने वाले अम्र को जबान से कह कर बयान करना।

बोलना मुराद नहीं है बल्कि यह अश्या अपने वुजूद और ज़बाने हाल से तस्बीह करती, अपनी ज़ात से रब्ब तआला की पाकी बोलती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वहदानिय्यत की गवाही देती हैं। जैसा कि कहा जाता है :

وَفِي كُلِّ شَيْءٍ لَّآيَةٌ تَذُلُّ عَلَىٰ أَنَّهُ الْوَاحِدُ

तर्जमा : हर चीज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की निशानी है जो उस की वहदानिय्यत पर दलालत करती है।

इस तरह भी कहा जाता है कि “येह कारीगरी अपने बनाने वाले के हुस्ने तदबीर और कमाले इल्म की गवाही देती है।” मुराद येह नहीं कि वोह चीज़ अपनी ज़बान से गवाही देती है बल्कि इस का वुजूद और हालत गवाह बनते हैं। इसी तरह हर चीज़ ज़ाती तौर पर ऐसी हस्ती की मोहताज है जो उसे बनाए, फिर उसे और उस के अवसाफ़ को बाकी रखे और उसे मुख़लिफ़ हालतों से गुज़ारे तो वोह चीज़ें अपनी हाज़त के तहूत अपने ख़ालिफ़ की पाकी बयान करती हैं जिसे सिर्फ़ अहले बसीरत समझ सकते हैं, न कि ज़ाहिर बीनी पर अड़े हुए लोग। इसी लिये

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ

(प ५, यनी اسراءیل: २३)

तर्जमा कच्ज़ुल ईमान : हां ! तुम इन की तस्बीह नहीं समझते।

ज़ाहिरबीन और अहले बसीरत के इल्मी मक़ाम में फ़र्क :

बहर हाल कम अक़ल बिल्कुल समझ ही नहीं सकते, जब कि मुक़र्रबीने बारगाह और जय्यद उ-लमा अपनी अपनी अक़ल व बसीरत के मुताबिक़ जान सकते हैं, पूरी गहराई तक इन की भी रसाई नहीं क्युंकि हर चीज़ में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तक्दीस व तस्बीह पर बहुत सी शहादतें हैं जिन की ता'दाद इल्मे मुआमला बयान नहीं कर सकता। अल गरज़ ! येह फ़न भी उन फुनून में से है जिन में ज़ाहिर बीन और अहले बसीरत के इल्मी मक़ाम में फ़र्क पाया जाता है और इस से वाजेह होता है कि ज़ाहिर व बातिन दो जुदा जुदा चीज़ें हैं। इस मक़ाम पर अहले इल्म के लिये हद से बढ़ने का रास्ता भी है और मियानारवी इख़्तियार करने का भी।

हद से बढ़ने वालों के दो गुरौह हैं :

(1)....बा'ज़ ने तावीलात करने में गुलू किया (2)....बा'ज़ ने ख़त्म करने में गुलू किया

हद से बढ़ने वाले :

पहला गुरौह : येह तो इस क़दर हद से बढ़ गए कि इन्हों ने तमाम या अक़षर ज़ाहिरी अल्फ़ाज़ और दलाइल में तावीलात कर दीं हत्ता कि इन आयाते कुरआनिय्या में भी :

﴿1﴾

وَكُنَّا أَيْدِيَهُمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾ (پ ۲۳، یس: ۲۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उन के हाथ हम से बात
करेंगे और उन के पाउं उन के किये की गवाही देंगे ।

﴿2﴾

وَقَالُوا الْجُلُودُ هُمْ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا
قَالُوا أَنْطَقَنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
(پ ۲۴، حط السجد: ۲۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह अपनी खालो से
कहेंगे तुम ने हम पर क्यूं गवाही दी वोह कहेंगी हमें
अल्लाह ने बुलवाया जिस ने हर चीज़ को गोयाई
बख़्शी ।

इसी तरह मुन्कर नकीर के सुवालात मीजाने अमल पुल सिरात और हिसाबो किताब और
अहले बिहिश्त व अहले नार के दरमियान होने वाली दर्जे जैल गुफ्तगू में ज़बाने हाल मुराद ली :

أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ
اللَّهُ (پ ۸، الاعراف: ۵۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : (दोज़खी बहिश्तियों से
कहेंगे) हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो या उस खाने
का जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया ।

दूसरा गुरौह : जिन हज़रात ने तावीलात न करने में गुलु किया इन में से एक हज़रते
सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل भी हैं । येह इस आयते कुरआनी में भी
तावील नहीं करते :

كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤١﴾ (پ ۱३، النحل: ४०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : हो जा वोह फ़ौरन हो जाती है ।

इन का खयाल है कि येह ख़िताब हर लम्हा हुरूफ़ और आवाज़ के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ
की तरफ़ से अश्या की ता'दाद के मुताबिक़ होता रहता है हत्ता कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद
बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل के बा'ज़ शागिर्दों से येह भी सुना गया है कि तावील सिर्फ़ अहादीषे
मुबारका के इन तीन जुम्लों में होगी :

(1) الْحَجَرُ الْأَسْوَدُ يَمِينُ اللَّهِ فِي أَرْضِهِ.... (1)
हाथ है ।

①.....الكامل في ضعفاء الرجال، اسحاق بن بشر: ۱۷۲، ج ۱، ص ۵۵۷۔

المصنف لعبد الرزاق، باب الركن من الجنة، الحديث: ۸۹۵، ج ۵، ص ۲۸، بدون لفظ "الاسود"۔

یا'نی : موٲین کا دل رھمان کی ٲنگلیوں ۾ سے دو ٲنگلیوں کے درمیان ہے ^(۱)۔

(۲) یا'نی ۾झे یمن سے ٲوٲبٲو رھمان آتی ہے ^(۲)۔

إسی ترھ اسھابہ ٲواھیر ۾ی تاویلات کے ھک ۾ن ۾ہیں ۔

تاویل کرنے سے روکنے کی وجھ :

ھٲرتے سٲیٲدنا إمام اھمد بن ھمبل عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْاَوَّل کے ۾ٲاٲللیک ھمارا ھوئے ٲن ھے کی ٲوھ إس ٲاٲ کو اٲٲھی ترھ ٲانٲے ٲے کی إستٲا سے ۾ٲراد کرار ٲکڈنا اور ۾ٲول سے ۾ٲراد ٲیسمانی ٲور ٲر ٲٲرنا ۾ہیں ھے ۔ آٲ نے ۾ٲلٲک کی إسلاھ اور تاویلات کے درٲاٲے کو ٲند کرنے کے لیٲے تاویل سے ۾نٲ ٲرماٲا ٲیٲونکی अगर تاویلات کی ٲولی ٲٲٹ ٲے ٲی آٲ ٲو ۾ٲاملا ٲھرا ھو آٲگا، ھاٲ سے ۾یکل آٲگا اور ھٲ سے ٲٲ آٲگا ٲیٲونکی ٲو ۾ٲاملا ھٲے ا'ٲیٲال سے ۾یکل آٲ ٲسے سٲٲالنا ۾ٲشیکل ھو آٲا ھے ۔ لیھاٲا آٲ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ کے إس ٲرٲے اٲل ۾ن کوئی ۾ٲاٲکا ۾ہیں، إس ٲر ٲیٲر اسلاٲے کیرام رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام کی ھیماٲٲ ۾ی ھاسیل ھے ۔ ٲوھ ٲرماٲے ٲے کی لٲٲوں کو إسی ترھ رھنے ٲو ٲیس ترھ ٲوھ ٲارید ھٲ ھیں ۔

لٲٲے “إستٲا” کے ۾ٲاٲللیک اٲکیٲا :

ھٲرتے سٲیٲدنا إمام ۾الیک عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق سے کسی نے “إستٲا” ^(۳) کا ۾ٲھٲم ٲرٲاٲٲ کیا ٲو ٲرماٲا : لٲٲے إستٲا کا ۾ا'نا ۾ا'لٲم ھے، لےکین ٲےھ إستٲا کیس ترھ کا ھے ؟ إس کی ھ۾ن ٲٲر ۾ہیں، ٲھر ھال إس ٲر إٲمان لانا ٲرری ھے اور إس کے ۾ٲاٲللیک ٲٲٲنا ٲیدٲٲ ھے ^(۴)۔

①.....صحيح مسلم، كتاب القدر، باب تصريف الله تعالى القلوب.....الخ، الحديث: ٢١٥٢، ص ١٢٢٤۔

②.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ١٠٩٤٨، ج ٣، ص ٢٢٩، بتغير الفاظ۔

③..... ٲٲاٲللیک “إستٲا” ۾ن ٲارید لٲٲ اَلرَّحْمٰنُ عَلٰی الْعَرْشِ اسْتَوٰی (ٲاٲ: ٥) اور لَّمْ اسْتَوٰی عَلٰی الْعَرْشِ (ٲاٲ: ٨، الاعراف: ٥٢) ③

کے ۾ٲاٲللیک سٲال ٲا ۔

④.....تذكرة الحفاظ للذهبي، الطبقة الخامسة، ج ١، ص ١٥٥۔

मियाना २वी इख़्तियार करने वाला गुरौह :

अशाइरा : ने राहे ए'तिदाल इख़्तियार की यूं कि इन्हों ने सिफ़ाते खुदावन्दी से मुतअल्लिक हर अम्र में तावीलात को रवा (जाइज़) जाना और उमूरे आख़िरत के मुतअल्लिकात को इन के ज़ाहिरी मा'ना पर रखा और इन में तावील करने से मन्अ किया ।

तावीलात के मुतअल्लिक मो'तज़िला और फ़लासिफ़ा का नज़रिय्या :

मो'तज़िला : मज़कूरा सब गुरौहों से आगे बढ़ गए, उन्होंने ने सिफ़ाते इलाहिyyा में से रुबिय्यत और उस के समीअ बसीर होने में तावील की, वोह मे'राजे रसूल में भी तावील करते हैं और कहते हैं : मे'राज जिस्मानी नहीं थी । अज़ाबे क़ब्र, मीज़ाने अमल, पुल सिरात और तमाम उख़रवी उमूर में तावील करते हैं । हां ! इस बात का इक़रार करते हैं कि मरने के बा'द उठना है और जन्नत एक हकीक़त है, जहां खाना पीना, निकाह करना और लुत्फ़ उठाना है । वोह जहन्नम की हकीक़त को भी तस्लीम करते और मानते हैं कि इस का एक महसूस वुजूद है जिस में खालों को जलाने और चरबियों को पिघलाने की सलाहिyyत मौजूद है ।

फ़लासिफ़ा तो **मो'तज़िला** से भी आगे निकल गए । उन्होंने ने हर उस बात में तावील की जिस का तअल्लुक़ रोज़े आख़िरत से है । उन का अक़ीदा है कि तकालीफ़ व लज़ात महज़ अक़ली और रूहानी हैं । वोह मरने के बा'द दोबारा ज़िन्दा होने के मुन्किर हैं । उन का नज़रिय्या है कि नफ़्स बाक़ी रहेंगे और इन्हें मिलने वाली जज़ा या सज़ा आ'ज़ा को महसूस न होगी ।

कौले फैसल :

बहर हाल येह सब फ़िर्के हृद से बढ़े हुए हैं । इन फ़िर्कों के हृद से बढ़ने और हनाबिला के तावील को बिल्कुल छोड़ देने के बीच एक मो'तदल और मख़फ़ी रास्ता है जिस पर सिर्फ़ वोही मुत्तलअ हो सकते हैं जिन्हें महज़ सुन कर नहीं बल्कि नूरे इलाही से उमूर के इदराक़ की तौफ़ीक़ हासिल होती है । इन हज़रात पर जब उमूर के असरार की हकीक़त मुनक़शिफ़ होती है तो वोह सुनी हुई बातों और इस बारे में वारिद होने वाले अल्फ़ाज़ की तरफ़ तवज्जोह करते हैं । पस जो इन हज़रात के मुशाहदे किये हुए नूरे यकीन के मुवाफ़िक़ हो उसे बर क़रार रखते हैं और जो इस के ख़िलाफ़ हो उस में तावील करते हैं और जो हज़रात इन उमूर पर महज़ सुनने के वासिते से मुत्तलअ होते हैं वोह न तो षाबित क़दम होते हैं और न अपने मौक़िफ़ से मुतमइन । महज़ सुनने पर इक्तिफ़ा करने वाले हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَوَّل के मक़ाम के लाइक़ हैं ।

मजकूरा तमाम बहूष का मक्सूद :

अब चूँकि इन उमूर में हद्दे ए'तिदाल की मज्जीद वजाहत इल्मे मुकाशफ़ा में दाख़िल और तवील कलाम की मोहताज है। लिहाज़ा हम इस की गहराई में नहीं जाते। हमारा मक्सूद सिर्फ़ ये षाबित करना था कि ज़ाहिर व बातिन आपस में मुताबक़त रखते हैं मुख़ालफ़त नहीं। तो मजकूरा (मुक़रबीन के साथ ख़ास, असरार की) पांच अक्साम के बयान ने बहुत से उमूर मुन्कशिफ़ कर दिये। अक़ाइद का जिस क़दर बयान हम तहरीर कर चुके, हमारे ख़याल में अ़वाम के लिये इतना काफ़ी है कि अव्वलन इस से ज़ियादा का हुक्म नहीं दिया जाता। हां ! जब बद मजहबियत फैलने का अन्देशा हो तो फिर अक़ाइद के अगले दर्जे की तरफ़ बढ़ने की ज़रूरत होगी जिस में मुख़्तसर और रोशन दलीलें हों, ज़ियादा गहराई न हो।

हम इस किताब में वोह रोशन दलाइल लिखते और सिर्फ़ इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं जो हम ने अहले कुद्स के लिये अपने रिसाले “الرِّسَالَةُ الْقُدْسِيَّةُ فِي قَوَاعِدِ الْعَقَائِدِ” में लिखा है। येह रिसाला इस किताब की तीसरी फ़स्ल में मजकूर है।

﴿....दो दिन और दो रातें....﴾

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 84 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी” सफ़हा 76 पर है : हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : “क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिष्ल मख़्लूक ने नहीं सुनी : (1)....एक दिन वोह है कि जब **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही का मुज्दा ले कर आएगा या उस की नाराज़ी का पैग़ाम। (2).....दूसरा दिन वोह है कि जब तू अपना नामए आ'माल लेने के लिये बारगाहे इलाही में हाज़िर होगा और वोह नामए आ'माल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में। (और दो रातों में से) : (1)....एक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़ारेगी और इस से पहले इस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी। (2).....दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह को क़ियामत का दिन होगा और फिर उस के बा'द कोई रात नहीं आएगी।”

﴿3﴾....अफ़आले इलाहिय्या की मा'रिफ़त : येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है, या'नी इस बात का ए'तिकाद रखना कि (1) बन्दों के अफ़आल का ख़ालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है (2) बन्दे महज़ कोशिश करते हैं (3) येह अफ़आल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मरज़ी से ही सर अन्जाम पाते हैं (4) वोही पैदा करने और बनाने की फ़ज़ीलत से मुत्तसिफ़ है (5) उसे जाइज़ है कि वोह किसी पर नाक़ाबिले बरदाश्त बोझ डाले और (6) बे गुनाह को सज़ा दे (7) नेकूकारों को रिआयत देना उस पर वाजिब नहीं (8) हम पर वाजिब उमूर का सबब शरीअत है न अक्ल (9) उस का अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को मबऊष फ़रमाना हक़ है और (10) हमारे प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नबुव्वत बिल्कुल षाबित है जिसे मो'जिज़ात की ताईद हासिल है।

﴿4﴾.....मन्कूल रिवायात को हक़ व सच जानना : येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है (1) मर कर दोबारा उठने (2) क़ियामत काइम होने (3) मुन्कर नकीर के सुवालात (4) अज़ाबे क़ब्र (5) मीज़ाने अमल और (6) पुल सिरात को हक़ जानना (7) इस बात पर ईमान लाना कि जन्नत व दोज़ख़ की तख़लीक़ हो चुकी है (8) इमामत व ख़िलाफ़त के अहक़ाम (9) इन की शराइत मानना और (10) दर्जों के मुताबिक़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की फ़ज़ीलत तस्लीम करना।

पहले रुकन की तफ़सील

अरकाने ईमान में से पहला रुकन ज़ाते बारी तआला की मा'रिफ़त हासिल करना और उस की वहदानिय्यत को तस्लीम करना है। इस रुकन के दस उसूल हैं।

﴿1﴾.....वुजूदे बारी तआला की मा'रिफ़त : पहली चीज़ जिस के ज़रीए अन्वार की रोशनी और मो'तबर रास्ते की हिदायत नसीब होती है वोह कुरआने पाक की राहनुमाई है क्यूंकि खुदा तआला के कलाम से बढ़ कर किसी का कलाम नहीं।

वुजूदे बारी तआला पर कुरआनी दलाइल :

﴿1﴾

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا ۚ وَالْجِبَالَ
أَوْتَادًا ۚ وَخَلَقْنَاهُ أَزْوَاجًا ۚ وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ
سُبَاتًا ۚ وَجَعَلْنَا النَّيْلَ لَبَاسًا ۚ وَجَعَلْنَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या हम ने ज़मीन को बिछौना न किया और पहाड़ों को मैखें और तुम्हें जोड़े बनाया और तुम्हारी नींद को आराम किया और रात को पर्दा पोश किया और दिन को रोज़गार

النَّهَارَ مَعَاشًا ۝۱۱ وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا
شِدَادًا ۝۱۲ وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝۱۳ وَأَنْزَلْنَا
مِنَ الْمُحْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝۱۴ لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا
وْنَبَاتًا ۝۱۵ وَجَنَّتٍ أَلْفَافًا ۝۱۶ (پ ۳۰، النبا: ۶ تا ۱)

﴿2﴾

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ
بَيَافِقِ النَّاسِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ
مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَاهِ الْإَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ
فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ
وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لَا يَتَّبِعُ الْقَوْمَ يَعْقِلُونَ ۝۱۶۴ (پ ۲، البقرة: ۱۶۴)

﴿3﴾

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمُوتٍ
طَبَاقًا ۝۱۵ وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ
الشَّمْسَ سِرَاجًا ۝۱۶ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَكْمُلُ مِنَ
الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝۱۷ ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَ
يُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ۝۱۸ (پ ۲۹، نوح: ۱۵ تا ۱۸)

﴿4﴾

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَشْتُونَ ۝۱۹ أَنْتُمْ تَخْلُقُونَ
أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ۝۲۰ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ

के लिये बनाया और तुम्हारे ऊपर सात मजबूत
चुनाइयां चुनीं (ता'मीर कीं) और उन में एक निहायत
चमकता चराग़ रखा और भरी बदलियों से जोर का
पानी उतारा कि इस से पैदा फ़रमाएं अनाज और
सब्ज़ा और घने बाग़ ।

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : बेशक आस्मानों और
ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते
आना और किशती कि दरया में लोगों के फ़ाइदे ले
कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान
से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला
दिया और ज़मीन में हर किस्म के जानवर फैलाए
और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान
व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में
अक्लमन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं ।

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : क्या तुम नहीं देखते
अल्लाह ने क्यूंकर सात आस्मान बनाए एक पर
एक और उन में चांद को रोशनी किया और सूरज
को चराग़ और **अल्लाह** ने तुम्हें सब्ज़े की तरह
ज़मीन से उगाया । फिर तुम्हें इसी में ले जाएगा और
दोबारा निकालेगा ।

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : तो भला देखो तो वोह
मनी जो गिराते हो । क्या तुम इस का आदमी बनाते
हो या हम बनाने वाले हैं । हम ने तुम में मरना

الْبُوتَ وَمَا نَحْنُ بِسَبُوقِينَ ۖ عَلَىٰ أَن
تُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ۖ^(٦١)
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ ۖ^(٦٢)
أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ۖ^(٦٣) ءَأَنْتُمْ تَرْعَوْنَ
أَمْ نَحْنُ الرَّعُونَ ۖ^(٦٤) لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا
فَقُلْتُمْ تَفْكُهُونَ ۖ^(٦٥) إِنْآ لَمَعْرُمُونَ ۖ^(٦٦) بَلْ
نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۖ^(٦٧) أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي
تَشْرَبُونَ ۖ^(٦٨) ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ
نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۖ^(٦٩) لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا
فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ۖ^(٧٠) أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي
تُورُونَ ۖ^(٧١) ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ
نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ۖ^(٧٢) نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَ
مَتَاعًا لِلْبُقُورِ ۖ^(٧٣)

(پ ۲، الواقعة: ۵۸ تا ۷۳)

ठहराया, और हम इस से हारे नहीं। कि तुम जैसे
और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस
की तुम्हें ख़बर नहीं और बेशक तुम जान चुके हो
पहली उठान फिर क्यों नहीं सोचते। तो भला
बताओ तो जो बोते हो। क्या तुम इस की खेती
बनाते हो या हम बनाने वाले हैं। हम चाहें तो इसे
रोन्दन कर दें फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि
हम पर चट्टी (तावान) पड़ी। बल्कि हम बे
नसीब रहे। तो भला बताओ तो वोह पानी जो
पीते हो। क्या तुम ने इसे बादल से उतारा या हम
हैं उतारने वाले। हम चाहें तो इसे खारी कर दें
फिर क्यों नहीं शुक्र करते। तो भला बताओ तो
वोह आग जो तुम रोशन करते हो। क्या तुम ने
इस का पेड़ पैदा किया या हम हैं पैदा करने
वाले। हम ने इसे जहन्नम की यादगार बनाया
और जंगल में मुसाफ़ि़रों का फ़ाइदा।

ज़रा सी अक्ल रखने वाला शख्स भी अगर इन आयात के मज़ामीन में थोड़ा सा गौर
करे और ज़मीन व आस्मान की रंगा रंग मख़्लूक और हैवानात व नबातात की अनोखी पैदाइश
की तरफ़ नज़र करे, तो येह बात उस पर मख़फ़ी न रहेगी कि इस तअज्जुब खेज़ मुआमले और
मजबूत तरकीब का ज़रूर कोई बनाने वाला है जो इन्हें मुनज्जिम रखता है और लाज़िमन कोई ऐसा
है जो इन्हें मजबूत करता और इन का मुक़द्दर बनाता है। बल्कि ऐन मुमकिन है कि मख़्लूक की
अस्ल व पैदाइश इस बात की गवाही दे कि येह तमाम अश्या उस ज़ात के ताबेअ रहने पर मजबूर
और उस की मशिय्यत के मुताबिक़ बदलती हैं।

वुजूदे बारी तअ़ाला पर अक्ली दलाइल :

इत्सानी फ़ितरत और कुरआनी दलाइल बयान करने के बा'द मज़ीद दलाइल की ज़रूरत
तो बाक़ी नहीं रहती मगर अपने मौक़िफ़ को मज़ीद मुदल्लल करने और मुनाज़िर उ-लमा की
पैरवी करने की कोशिश में कुछ अक्ली दलाइल पेश किये जाते हैं। चुनान्चे, येह बात अक्लन

बिल्कुल ज़ाहिर व बाहिर है कि कोई भी हृदिष चीज़ पैदा होने के लिये किसी पैदा करने वाले सबब से बे नियाज़ नहीं और आलमे हृदिष है तो लाज़िम्न येह भी अपने वुजूद के लिये किसी सबब का मोहताज़ है। लिहाज़ा हमारा कौल कि “हृदिष अपनी पैदाइश के लिये किसी सबब से बे नियाज़ नहीं” वाजेह है। क्यूंकि हर हृदिष के लिये एक खास वक़्त है और अक्ल इस बात को मुमकिन जानती है कि हृदिष शै अपने मख़सूस वक़्त से पहले या बा’द में जुहूर पज़ीर हो तो उस का एक मुअय्यन वक़्त में होना इस से पहले या बा’द में न होना वक़्त की तख़सीस करने वाले के वुजूद का तकाज़ा करता है और हमारे कौल “आलमे हृदिष है” की दलील येह है कि अज्जसाम हरकत व सुकून की हालत से बाहर नहीं हो सकते और येह दोनों हालतें हृदिष हैं और जिस चीज़ को हृवादिष लाहिक़ होते हैं वोह भी हृदिष होती है।

﴿2﴾....इस बात पर ईमान लाना कि **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ क़दीम, अज़ली और हमेशा से है। हर ज़िन्दा व बे जान चीज़ से पहले उस ज़ात का वुजूद है उस से पहले कुछ भी नहीं।

﴿3﴾.....इस बात पर यकीन रखना कि **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अज़ली व अबदी है (या’नी हमेशा से है और हमेशा रहेगा), वोही अव्वल, वोही आख़िर, वोही ज़ाहिर, वोही बातिन। उस के वुजूद का कोई इख़िताम व अन्जाम नहीं क्यूंकि क़दीम मा’दूम नहीं हो सकता।

﴿4﴾....इस पर ईमान लाना कि **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जोहर भी नहीं और उस की ज़ात किसी जगह में समाई हुई भी नहीं बल्कि वोह मकान की निस्बतों से बुलन्द व बरतर है। इस पर दलील येह है कि हर जोहर किसी जगह में घिरा हुआ और उस जगह के साथ खास होता है जिस की दो सूरतें बनती हैं : (1)....उसी जगह साकिन होगा या (2)....वहां से हरकत करता होगा। या’नी वोह इन दोनों हालतों में से किसी एक में होगा और येह दोनों हृदिष हैं और जिस ज़ात को हृवादिष लाहिक़ हों वोह भी हृदिष होती है।

﴿5﴾.....येह अक़ीदा रखना कि **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये कोई जिस्म नहीं जो जवाहिर से मुक्कब हो इस लिये कि जवाहिर से मुक्कब चीज़ का नाम जिस्म है और जब उस ज़ात का किसी मकान में समाया हुआ जोहर होना मुहाल है तो उस का जिस्म होना भी बातिल है क्यूंकि हर जिस्म किसी मकान के साथ मुख़्तस और जोहर से मुक्कब होता है और जोहर का सुकून व हरकत, शक़ल व मिक्दार और जुदा व जम्अ होने जैसी अलामाते हुदूष से ख़ाली होना मुहाल है।

﴿6﴾....येह ए’तिकाद रखना कि **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात अर्ज़ नहीं जो किसी जिस्म के साथ काइम या किसी जगह में दाख़िल हो क्यूंकि अर्ज़ वोह होता है जो किसी जिस्म के साथ काइम

हो और हर जिस्म यकीनन ह़ादिष है और इस का ख़ालिक् इस जिस्म से पहले मौजूद था । तो येह कैसे मुमकिन है कि ख़ालिके बारी तआला किसी जिस्म में आ जाए ? हालांकि अज़ल में सिर्फ़ वोही था, इस के इलावा कुछ भी न था । अजसाम व आ'राज़ सब उस ने बा'द में पैदा फ़रमाए ।

इन मज़कूरा छे उसूलों की रोशनी में वाजेह़ हो गया कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मौजूद और बज़ाते खुद काइम है । वोह जोहर व अर्ज़ और जिस्म नहीं इस के इलावा तमाम का तमाम आलम जोहर, अर्ज़ और जिस्म है । इस का नतीजा येह निकला कि न वोह किसी के मुशाबेह है और न कोई उस के मुशाबेह । वोह ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाला है । कोई शै उस की मिष्ल नहीं और ऐसा क्यूंकर हो सकता है कि मख़्लूक़ ख़ालिक् के, मातहूत ह़ाकिम के और तस्वीर मुसव्विर के मुशाबेह हो । अजसाम व आ'राज़ सब के सब उसी की तख़लीक़ व ईजाद है । लिहाज़ा इन चीज़ों का उस ज़ात के मुशाबेह व मुमाषिल होना क़तअन ना मुमकिन है ।

﴿7﴾....इस बात पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सम्त व जिहत की तख़सीस से पाक है । (इस पर तीन दलीलें :) (1)....सम्त ऊपर, नीचे, दाएं, बाएं, आगे पीछे को कहते हैं, इन सब सम्तों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ख़ल्क़ते इन्सानि के वासिते से पैदा फ़रमाया । (2).....बिल फ़र्ज़ इस के लिये कोई सम्त हो तो वोह जवाहिर की तरह किसी मकान में समाया होगा या अर्ज़ की तरह जोहर के साथ ख़ास होगा, जब उस का जोहर व अर्ज़ होना मुहाल़ षाबित किया जा चुका तो उस का किसी सम्त के साथ मुख़्तस होना भी मुहाल़ है । (3)....अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आलम के ऊपर होता तो उस के महाज़ी या'नी मुकाबिल भी होता और किसी जिस्म की महाज़ी चीज़ उस की मिष्ल होगी या छोटी बड़ी । येह तीनों सूरेतें मिक्दार की मोहताज़ हैं ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

फिर दुआ मांगते हुए आस्मान की तरफ़ हाथ क्यूं उठाए जाते हैं ? जवाब, दुआ का क़िब्ला आस्मान है और इस में उस बात की तरफ़ इशारा है कि दुआओं को सुनने वाला आली सिफ़ात का मालिक और बुजुर्ग व बरतर है चूंकि ऊपर वाली जहत बुलन्दी पर दलालत करती है और वोह ज़ात कुव्वत व ग़लबे में सब से बुलन्द है ।

﴿8﴾.....इस बात पर ईमान रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी शायाने शान अर्श पर इसी तरह इस्तवा फ़रमाए हुए है जो इस्तवा से उस ने मुराद लिया है । (मुतशाबेह आयात में) अहले ह़क़ तावील करने पर मजबूर हुए जैसा कि अहले बातिल इस आयत में तावील करने पर मजबूर हुए ।

चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط (پ ۲، الحديد: ۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह (अल्लाह) तुम्हारे साथ है, तुम कहीं हो ।

इस आयते मुबारका में बिल इत्तिफाक मईय्यत से इहाता और इल्म (या'नी हर चीज को घेरे में लेना और सब को जानना) मुराद लिया गया है ।

नीज इन फ़ामीने मुस्तफ़ा (में भी तावील की गई) है : (۱) قَلْبُ الْمُؤْمِنِينَ أَصْبَحَ مِنَ أَصَابِعِ الرَّحْمَنِ : इस में उंगलियों से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कुदरत व ग़लबा मुराद लिया गया है और इस में दाएं हाथ से इज़्जत व बुजुर्गी मुराद ली गई है । अगर येह तावीलात न की जातीं तो मुहाल लाज़िम आता । इसी तरह इस्तवा के ज़ाहिरी मा'ना ठहरना और क़रार पकड़ना मुराद लिये जाते तो येह भी मानना पड़ता कि ठहरने और क़रार पकड़ने वाला एक जिस्म है जो अर्श से मस हो रहा है और येह भी कि वोह जिस्म अर्श के बराबर है या इस से छोटा बड़ा हालांकि येह सब चीज़ें मुहाल हैं और मुहाल की तरफ़ ले जाने वाली चीज़ भी मुहाल होती है ।

.....येह ए'तिकाद रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ शक़ल व मिक्दार और जिहात व अतराफ़ से पाक है लेकिन जन्नती जन्नत में सर की आंखों से उस का दीदार करेंगे । जैसा कि कुरआने पाक में है :

وَجُودَ يَوْمَئِذٍ نَاصِرَةٌ ۝۱۲۱ اِلٰى رَیِّهَا نَاطِرَةٌ ۝۱۲۲ (پ ۲, ۲, القيامة: ۲۳, ۲۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : कुछ मुंह उस दिन तरोताज़ा होंगे । अपने रब्ब को देखते ।

हां ! दुन्या में (बहालते बेदारी) उस का दीदार मुमकिन नहीं । इस की तस्दीक़ इस आयते कुरआनिय्या से होती है :

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ ۖ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ۖ وَهُوَ شَدِيدُ النَّظَرِ (پ ۴, الانعام: ۱۰۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : आंखें उसे इहाता नहीं करतीं और सब आंखें उस के इहाते में हैं ।

....येह अक़ीदा रखना कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ एक है । उस का कोई शरीक नहीं । वोह यक्ता है । कोई उस की मिष्ल नहीं । वोह तख़लीक़ करने और अदम को वुजूद देने में मुन्फ़रिद और ईजादात और अजाइब व ग़राइब पैदा करने में खुद मुख़्तार है । उस का कोई मिष्ल नहीं जो उस का हमसर बन सके और न कोई मुक़ाबिल है जो उस से मुनाज़ात व अदावत करे । इस की

①.....صحیح مسلم، کتاب القدر، باب تصریف اللہ تعالیٰ القلوب.....الخ، الحدیث: ۲۶۵۲، ص ۱۲۲۔

②.....الکامل فی ضعفاء الرجال، اسحاق بن بشر: ۱، ج ۱، ص ۵۵۔

المصنف لعبد الرزاق، باب الرکن من الجنة، الحدیث: ۸۹۵، ج ۵، ص ۲۸۔

दलील येह आयते कुरआनी है :

لَوْ كَانَ فِيهَا إِلَهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا

(پ ۱، الانبیاء: ۲۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अगर आस्मान व ज़मीन में **अल्लाह** के सिवा और खुदा होते तो ज़रूर वोह तबाह हो जाते ।

दूसरे रुकन की तफ़सील

ईमान के बुन्यादी अरकान में से दूसरा रुकन सिफ़ाते बारी तअ़ाला के मुतअल्लिक़ मा'लूमात हासिल करना है इस के भी दस उसूल हैं ।

﴿1﴾.....येह ए'तिकाद रखना कि ख़ालिके अलम क़ादिर मुतलक़ है और उस का येह फ़रमान बरहक़ है :

وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (پ ۲۹، الملك: ۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है ।

क्योंकि अलम अपनी बनावट व पैदाइश के ए'तिबार से मज़बूत व मुनज़्ज़म है । अगर कोई शख़्स सन्अत में उम्दा और नक़्शो निगार से ख़ूब आरास्ता रेशमी कपड़ा देख कर कहे कि येह किसी बे कुव्वत मुर्दे या बे इख़्तियार इन्सान की कारीगरी है, तो ऐसा कहने वाला वोही होगा जो अक़ल से पैदल और जुमरए जोहला में शामिल हो ।

﴿2﴾....येह अक़ीदा रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तमाम मौजूदात का इल्म रखने वाला और तमाम मख़्लूक़ात पर हावी है । चुनान्चे, फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي

الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ (پ ۱۱، یونس: ۶۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम्हारे रब्ब से ज़रा भर कोई चीज़ गा़इब नहीं ज़मीन में न आस्मान में ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान भी बिल्कुल हक़ और सच है :

وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (پ ۲۹، البقرة: ۲۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह सब कुछ जानता है ।

﴿3﴾....इस बात पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिन्दा है क्योंकि जिस ज़ात के लिये इल्म व कुदरत षाबित हो उस के लिये यकीनन हयात भी षाबित होगी ।

﴿4﴾.....इस बात का यकीन रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने कामों का इरादा फ़रमाने वाला है । हर मौजूद का वुजूद उस की मशिय्यत से और हर चीज़ का सुदूर उस के इरादे से है । किसी भी चीज़ को पहली दफ़अ तख़लीक़ करने वाला और दूसरी दफ़अ वुजूद देने वाला वोही है । जो चाहता है करता है ।

﴿5﴾....येह ए'तिकाद रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ समीअ व बसीर (या'नी सुनता देखता) है। पोशीदा खयालात और मख्फी वसाविस व अफ़कार कुछ भी उस से पोशीदा नहीं है। अन्धेरी रात में साफ़ चट्टान पर चलने वाली सियाह च्यूटी के चलने की आवाज़ भी उस की समाअत से बाहर नहीं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सुनने देखने वाला क्यूं न हो? कि समाअत व बसारत यकीनन कमाल है नक्स नहीं, तो येह कैसे हो सकता है कि मख्लूक ख़ालिक से कमाल में ज़ियादा और अपने बनाने वाले से अरफ़अ व आ'ला हो?

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْهِ السَّلَام ने अपने बुत परस्त चचा आज़र को इन अल्फ़ाज़ से दलील दी :

إِذْ قَالَ لِأَيِّهِ يَا بَتِّ لِمَ تَعْبُدُمَا لَا يَسْمَعُ
وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ۝
(यै ११, अमरिम: ३२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब अपने बाप से बोला^(१) ऐ मेरे बाप ! क्यूं ऐसे को पूजता है जो न सुने न देखे और न कुछ तेरे काम आए।

﴿6﴾....उस पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सिफ़ते कलाम के साथ मुत्तसिफ़ है। उस का येह वस्फ़ उस की ज़ात के साथ काइम और हुरूफ़ व आवाज़ से मुनज़्ज़ा (पाक) है। बल्कि जिस तरह उस का वुजूद किसी दूसरे के वुजूद के मुशाबेह नहीं, इसी तरह उस का कलाम भी किसी और के कलाम की मिश्ल नहीं और दर हकीक़त कलाम, कलामे नफ़सी है। आवाज़ तो महज़ बयाने मक्सूद के लिये अदाएगिये हुरूफ़ का काम देती है।

﴿7﴾.....येह अकीदा रखना कि सिफ़ते कलाम ज़ाते खुदा के साथ काइम और क़दीम है बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तमाम सिफ़ात क़दीम हैं। क्यूंकि उस की ज़ात को हवादिष का लाहिक़ होना मुहाल है कि हवादिष तो बदलते रहते हैं। इसी तरह उस की सिफ़ात का भी क़दीम होना ज़रूरी है, ताकि उस पर न तग़य्युरात त़ारी हों और न ही हवादिष लाहिक़ हो। वोह उम्दा सिफ़ात के साथ अज़ल से मुत्तसिफ़ है और अबद तक मुत्तसिफ़ रहेगा। वोह हालात के तग़य्युर से पाक है।

①....मफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَنِ अपनी तफ़्सीर “नूरुल इरफ़ान” में इस आयत के तहत फ़रमाते हैं : “यहां बाप से मुराद चचा आज़र है न की हकीक़ी वालिद या'नी तारुख़ और चचा को उर्फ़ में बाप कहा जाता है क्यूंकि हज़रते आदम (عَلَيْهِ السَّلَام) से ले कर हज़रते अब्दुल्लाह (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) तक हुज़ूर के आबा व उम्माहत में कोई मुशरिक नहीं हुवा। रब्ब عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : (الشعراء: १९, २०) وَتَقَلَّبَكَ فِي السُّجُودِ (प १९, الشعراء: २०) हम आप के नूर की गर्दिश को पाक पुश्तों और पाक शिकमों में देख रहे हैं।”

﴿8﴾.....इस बात का यकीन रखना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इल्म क़दीम है वोह अज़ल से अपनी ज़ात व सिफ़ात और मख़्लूक में पेश आने वाले अहवाल को जानता है। मख़्लूक में से जब भी किसी को वुजूद मिलता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को उस वुजूद का उस वक़्त कोई नया इल्म हासिल नहीं होता बल्कि ये सब कुछ वोह अपने इल्मे अज़ली से जानता है।

﴿9﴾.....उस पर ईमान लाना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का इरादा क़दीम है और हवादिषात को उन के मख़सूस और मुनासिब वक़्त में वुजूद में लाने के लिये इल्मे अज़ली के मुताबिक़, अज़ल से ही उन के मुतअल्लिक़ हो गया है।

﴿10﴾.....**अल्लाह** तआला सिफ़ते इल्म के साथ आलिम, हयात के साथ ज़िन्दा, कुदरत के साथ क़ादिर, इरादे के साथ मुरीद (या'नी इरादा करने वाला), कलाम के साथ मुतकल्लिम (या'नी कलाम करने वाला), समाअत के साथ सुनने वाला और बसारत के साथ देखने वाला है। उस की येह सिफ़ात भी सिफ़ाते क़दीमा हैं।

बीसरे रुक़ब की तफ़सील

अफ़आले इलाहिय्या की मा'रिफ़त हासिल करना येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है।

﴿1﴾.....येह अक़ीदा रखना कि आलम में होने वाला हर वाकिआ उसी का फ़ै'ल, उसी की तख़लीक़ और उसी की ईजाद है। इन सब चीज़ों का ख़ालिक़ व मूजिद सिर्फ़ वोही है। उस ने मख़्लूक़ और इन के रिज़क़ को पैदा फ़रमाया और इन के लिये कुदरत व हरकत ईजाद फ़रमाई। बन्दों के तमाम अफ़आल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक़ और उस के ज़ेरे कुदरत हैं। इस पर दर्जे ज़ैल कुरआनी आयात शाहिद हैं। चुनान्वे, फ़रमाने बारी तआला है :

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ (پ ۲۳، الزمر: ۶۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** हर चीज़ का पैदा करने वाला है।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ (پ ۲۳، الصفّت: ۹۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे आ'माल को।

﴿2﴾.....बन्दों की हरकात का ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही है लेकिन इस का येह मतलब नहीं कि बन्दा जब कोशिश करे तो हरकात पर इस का कोई इख़्तियार ही न हो। बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दे के लिये ताक़त भी पैदा फ़रमाई और तक्दीर भी। इख़्तियार भी पैदा किया और मुख़्तार

भी बनाया। बहर हाल इख्तियार बन्दे का वस्फ़ और रब्ब की मख़्लूक़ है, इस का कसब नहीं। जब कि हरकत रब्ब तआला की मख़्लूक़, बन्दे का वस्फ़ और उस का कसब है। हरकत पर बन्दे को कुदरत अता की गई जो उस का वस्फ़ है और हरकत को दूसरी सिफ़त की तरफ़ मन्सूब किया जाता है जिसे कुदरत कहते हैं और इस निस्बत के ए'तिबार से हरकत को कसब का नाम दिया जाता है। हरकत बन्दे के लिये महज़ जब्र नहीं हो सकती, क्यूंकि बन्दा इख्तियार व इज़तिरार में ज़रूर फ़र्क़ कर सकता है।

﴿3﴾....बन्दे का फ़ैल उस का कसब होने के बा वुजूद मशिय्यते इलाही से बाहर नहीं हो सकता। ज़मीन व आस्मान में पलक की झपक, क़ल्बी मैलान और आंख की तवज्जोह ये सब कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़ज़ा व कुदरत और उस के इरादे व मशिय्यत से ही होता है। नीज़ अच्छा बुरा, नफ़अ नुक़सान, कुफ़्र व ईमान, इन्कार व मा'रिफ़त, कामयाबी व नाकामी, हिदायत व गुमराही, इताअत व नाफ़रमानी, शिर्क व तौहीद उसी की तरफ़ से है, उस के फ़ैस्लों को रद्द करने वाला और उस के अहक़ाम को टालने वाला कोई नहीं। जिसे चाहे गुमराह कर दे और जिसे चाहे हिदायत अता फ़रमा दे। खुद इरशाद फ़रमाता है :

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿٣﴾
(پ ۱، الانبیاء: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और इन सब से सुवाल होगा।

मशिय्यते इलाही का पुबूत नक्ली दलाइल से :

उम्मेते मुस्लिमा के इस मुत्तफ़िका क़ौल से भी इस बात पर दलालत होती है :
يَا'نِي : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो चाहा वोह हुवा जो न चाहा नहीं हुवा।
﴿4﴾.....तख़लीक़ व ईजाद और बन्दों को शरीअत का पाबन्द बनाना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़ज़्ल व एहसान है उस पर लाज़िम नहीं।

मो'तज़िला का अक़ीदा : ये सब उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर लाज़िम है कि इस में बन्दों की बेहतरी है।

जवाब : मो'तज़िला का ये क़ौल बातिल है। क्यूंकि वाजिब करना, हुक्म देना और मन्अ करना तो उस की शान है, खुद उस पर कोई अम्र लाज़िम व वाजिब कैसे हो सकता है ?

﴿5﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जाइज़ है कि बन्दों पर उस काम को लाज़िम कर दे जिस की वोह ताक़त न रखते हों। इस मौक़िफ़ में भी मो'तज़िला, हम अहले सुन्नत से इख़िलाफ़ रखते हैं। हमारी दलील येह है कि अगर येह अम्र मुमकिन न होता तो उस से पनाह मांगने का सुवाल मुहाल होता। हालांकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से येह सुवाल किया जाता है, जैसा कि कुरआने पाक में है :

رَبَّنَا وَلَا تُحِثْ عَلَيْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ

(پ ۳، البقرة: ۲۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ रब्ब हमारे ! और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (ताकत) न हो ।

﴿6﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मख्लूक को इन के किसी साबिका जुर्म और षवाबे आयन्दा के बिगैर भी अज़ाब व तकलीफ़ में मुब्तला कर सकता है । जब कि मो'तज़िला इस मस्अले में मुख़्तलिफ़ हैं । हम अहले सुन्नत की दलील येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी मिल्क में तसरुफ़ करता है और उस के मुतअल्लिक येह तसव्वुर ग़लत है कि उस का तसरुफ़ उस की मिल्क से बढ़ सकता है और मालिक की इजाज़त के बिगैर उस की मिल्क में तसरुफ़ को जुल्म कहते हैं जो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुहाल है क्यूंकि इस के इलावा वोह किसी की मिल्क है ही नहीं कि उस में तसरुफ़ जुल्म करार पाए । हमारे मौकिफ़ की दलील येह अमल भी है कि जानवरों को ज़ब्ह किया जाता है, उन्हें तकलीफ़ दी जाती है और आदमी उन्हें तरह तरह की सख़्तियों में मुब्तला करता है । जानवरों के साथ येह सुलूक उन के किसी साबिका जुर्म की बिना पर तो नहीं होता !

﴿7﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दों के साथ जो चाहे सुलूक करे । बन्दों के लिये बेहतरी की रिआयत उस पर वाजिब नहीं है । जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि उस पर कुछ भी वाजिब नहीं है बल्कि अक्ल भी इस से इन्कारी है कि इस पर कोई चीज़ वाजिब हो । खुद इरशाद फ़रमाता है :

لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُونَ ﴿۱۳﴾

(प १, الانبياء: २३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उस से नहीं पूछा जाता जो वोह करे और इन सब से सुवाल होगा ।

मो'तज़िला ने जो कौल इख़्तियार किया कि बन्दों के लिये बेहतरी की रिआयत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब है तो वोह इस का जवाब दें ।

सुवाल : फ़र्ज करें दो ऐसे मुसलमान जिन में से एक बालिग़ हो कर और दूसरा ना बालिगी में फ़ौत हुवा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोजे मेहशर बालिग़ को ना बालिग़ पर फ़ज़ीलत देता और उसे ज़ियादा दर्जात अता फ़रमाता है क्यूंकि उस ने बा'दे बुलूग़ ईमान व इताअत की मशक्कत बरदाश्त की है और मो'तज़िला के अक्कीदे के मुताबिक़ इस तरह करना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब है । अगर ना बालिग़ बारगाहे इलाहा में येह गुज़ारिश करे कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बालिग़ का दर्जा मुझ से ज़ियादा क्यूं ? तो जवाब अता हो : इस लिये कि वोह बालिग़ हुवा और ताअत पर कोशिश की । बच्चा फिर अर्ज करे : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तूने मुझे कम उम्र में मौत दी, तुझ

पर वाजिब था कि मुझे लम्बी उम्र देता ताकि बालिग़ हो कर ताअत बजा लाता, लेकिन तू ने सिर्फ़ इसे लम्बी उम्र दी और अब इसे ज़ियादा फ़ज़ीलत अता की येह इन्साफ़ तो न हुवा ।

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाए : तुझे नाबालिगी में मौत देने की वजह येह थी कि मैं जानता था कि तू बड़ा हो कर सरकश या मुशरिक हो जाएगा । तो तेरे लिये बचपन की मौत बेहतर थी । **अल्लाह** तव्वाब عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मो'तज़िला येह जवाब बयान करते हैं लेकिन उन के इस जवाब पर भी ए'तिराज़ है ।

मो'तज़िला पर ए'तिराज़ : इस जवाब पर अगर जहन्नम की गहराइयों से कुफ़्फ़ार इस तरह अर्ज गुज़ार हों कि या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू जानता था कि हम बड़े हो कर कुफ़्र व शिर्क में मुब्तला होंगे तो तू ने हमें बचपन में ही मौत क्यों न दे दी ? हम तो इस मुसलमान बच्चे को मिलने वाले मक़ाम से भी कमतर पर राज़ी हो जाते ।

जी ! अब क्या जवाब देंगे मो'तज़िला ? ऐसी सूरत में येही कहा जाएगा कि उमूरे इलाहिय्या की शान व जलालत ऐसी नहीं कि मो'तज़िला इसे अपने तराजू में तोलते फिरें ।

﴿8﴾....**अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त व ताअत उस के और शरीअत के वाजिब करने की वजह से वाजिब है, अक्ल की वजह से नहीं । इस में भी मो'तज़िला का इख़्तिलाफ़ है । नीज़ किसी चीज़ के वाजिब होने का मतलब येह है कि उस फ़ै'ल के तर्क पर नुक्सान हो और शरीअत के वुजूब का मतलब है कि वोह मुतवक्क़ेअ नुक्सान की पहचान कराती है । क्योंकि अक्ल तो इस बात से कासिर है कि वोह इस नुक्सान की पहचान कराए जो मौत के बा'द शहवात की पैरवी के बाइष पेश आ सकता है । येह है शरअन व अक्लन वुजूब का मा'ना और वुजूब में इन के मुअषिर होने का मफ़हूम । अगर अहकामे शरअ के तर्क पर ख़ौफ़े अज़ाब न होता तो वाजिब भी षाबित न होता क्योंकि वाजिब उसी चीज़ को कहते हैं जिस का तर्क नुक्साने आख़िरत का बाइष बने ।

बिअषते अम्बिया :

﴿9﴾.....बिअषते अम्बिया मुहाल नहीं है । बर ख़िलाफ़ फ़िर्क़ए बराहिमा⁽¹⁾ के । वोह कहते हैं कि “बिअषते अम्बिया बे फ़ाइदा है और दलील येह देते हैं कि अक्ल की मौजूदगी में इस की कोई ज़रूरत नहीं रहती ।” हम कहते हैं कि “अक्ल जिस तरह सिहूहत के लिये मुफीद

①....अपने आप को दीने इब्राहीमी का पैरुकार समझने वाला हिन्द के हकीमों का एक गुरौह । (اتحاف السادة المتقين، ج ۳، ص ۳۱)

अदविय्यात की पहचान कराने से कासिर है इसी तरह बरोजे कियामत मगफिरत का सबब बनने वाले उमूर तक रहनुमाई करने से भी कासिर है। लिहाजा मख्लूक को तबीब की तरह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की भी जरूरत है। लेकिन तबीब का सिद्क तजरीबे से और नबी का सिद्क मो'जिजे से मा'लूम होता है।"

खातमुन्नबिय्यीन :

﴿10﴾.....बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुहम्मद मुस्तफा صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم को आखिरी नबी और मा कब्ल यहूदो नसारा की शरीअतों को मन्सूख और मजहबे मजूस को खत्म करने वाला बना कर भेजा। चांद के शक होने, कंकरियों के तस्बीह पढ़ने, जानवरों के कलाम करने, उंगलियों से चश्मे फूटने⁽¹⁾ जैसे रोशन मो'जिजात और वाजेह अलामात के जरीए आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم की ताईद फरमाई। कुरआने पाक आप के बुलन्द तरीन मो'जिजात में से एक है। जिस के जरीए पूरे अरब को चेलेन्ज किया गया। नीज वोह बा वुजूद फसीह व बलीग होने के आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم को कैद करने, लूटने, जान से मारने और शहर बदर करने जैसे मजालिम ढाने पर तो उतर आए लेकिन कुरआने पाक की नजीर पेश करने का चेलेन्ज कबूल न कर सके जैसा की आयाते कुरआनिय्या से षाबित होता है। क्यूंकि कुरआने मजीद जैसी खुश बयानी और हुस्ने तरतीब ताकते बशरी से बाहर है। इलावा अजीं इस में उममे साबिका की खबरें भी हैं। हालांकि आप صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم न किसी मख्लूक से पढ़े और न ही कुतुब का मुतालाआ किया फिर भी गैब की खबरें दीं जो मुस्तक़बल में सच षाबित हुई।

जैसा कि फरामीने बारी तआला इस पर शाहिद हैं। चुनान्चे, इरशाद होता है :

لَنَذْحُلَّنَّ الْمُسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
أَمِنِينَ لَا مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ^۲

(प २६, الفتح: २५)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक तुम जरूर मस्जिदे हुराम में दाखिल होंगे अगर **अल्लाह** चाहे अमन व अमान से अपने सरो के बाल मुन्डाते या तरश्वाते।

①.....صحیح البخاری، کتاب المناقب، باب سوال المشرکین ان یریہم النبی.....الخ، الحدیث: ۳۶۳۶، ج ۲، ص ۵۱۱۔

دلائل النبوة للبيهقي، باب ماجاء في تسبيح الحصباء.....الخ، ج ۶، ص ۶۲-۶۵۔

دلائل النبوة للبيهقي، باب ذكر البعير الذي سجد للنبي.....الخ، ج ۶، ص ۲۸-۳۰۔

صحیح البخاری، کتاب المغازی، باب غزوة الحديبية، الحدیث: ۴۱۵۲، ج ۳، ص ۶۹۔

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

الْمَوْتُ غَلَبَتِ الرُّومَ ۖ فِي أَدْنَى الْأَرْضِ
وَهُمْ مِمَّنْ بَعْدَ عَلَيْهِمْ سَيِّغُلُونَ ۖ فِي
بَضْعِ سَنَيْنَ ۖ (پ ۲، الروم: ۴ تا ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : रूमी मग़लूब हुए पास
की ज़मीन में और अपनी मग़लूबी के बा'द
अन क़रीब ग़ालिब होंगे, चन्द बरस में ।

और मो'जिज़ा तस्दीके रिसालत पर इस लिये दलालत करता है कि हर वोह काम जो
इन्सान के बस से बाहर हो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का होता है । तो जब भी हुजूर नबिय्ये करीम,
रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे फ़े'ल को अपनी सदाक़त पर वाज़ेह दलील बनाएं तो इस
का मतलब येह होगा कि गोया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमा रहा है : “मेरे रसूल ने सच कहा ।” इस
की मिषाल यूं समझिये ! जैसे कोई आदमी बादशाह के सामने उस की रिआया की मौजूदगी में
दा'वा करे कि मैं तुम्हारे लिये उस बादशाह का क़ासिद हूं । फिर वोह शख़्स बादशाह से अर्ज़ गुज़ार
हो कि अगर मैं अपने दा'वे में सच्चा हूं तो आप अपनी मसनद पर ख़िलाफ़े मा'मूल तीन बार
उठिये बैठिये, अगर बादशाह इसी तरह कर दे तो रिआया को यक़ीन हो जाएगा कि बादशाह ने
क़ासिद का दा'वा सच्च षाबित कर दिया ।

दोथे रुक्न की तफ़्सील

येह रुक्न सुनी सुनाई बातों और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्कूल रिवायात
को सच जानने के मुतअल्लिक़ है । येह भी दस उसूलों पर मुश्तमिल है ।

﴿१﴾.....ह़शर व नशर : के मुतअल्लिक़ शरीअते इस्लामिय्या ने जो कुछ बयान किया वोह बरहक़
है और इस पर ईमान लाना वाजिब है । क्यूंकि ऐसा होना अक्लन मुमकिन है और ह़शर व नशर का
मतलब है मौत के बा'द दोबारा जी उठना । इस अम्र पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ादिर है जिस तरह
वोह अदम को वुजूद देने पर क़ादिर है । जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

قَالَ مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۖ
قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ
(پ २३, یس: ۷۸, ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोला ऐसा कौन है कि
हड्डियों को ज़िन्दा करे जब वोह बिल्कुल गल गई ?
तुम फ़रमाओ ! इन्हें वोह ज़िन्दा करेगा जिस ने
पहली बार इन्हें बनाया ।

﴿२﴾.....मुन्कर नकीर : सुवालाते मुन्कर नकीर की तस्दीक़ करना भी वाजिब है क्यूंकि इस बारे
में अह़ादीष मरवी हैं । नकीरैन का सुवालात करना मुमकिन है । इस मुआमले का तकाज़ा सिवाए
इस के और कुछ नहीं कि ज़िन्दगी को किसी ऐसी जुज़ की तरफ़ लौटा दिया जाए जिस के ज़रीए
ख़िताब को समझा जाता है और ऐसा होना फ़ी नफ़्सीही मुमकिन है ।

एक सुवाल और इस के दो जवाब :

मय्यित के अजजा तो हालते सुकून में होते हैं और सुवालाते नकीरैन भी (हम जिन्दों को) सुनाई नहीं देते (तो फिर नकीरैन का सुवाल करना और मय्यित का जवाब देना कैसे षाबित हुवा) ? इस के दो जवाब हैं : (1)....मह्वे ख्वाब शख्स भी बजाहिर हर सुकून में नजर आता है, लेकिन इसे बातिनी तौर पर दुख सुख का एहसास हो रहा होता है जिस का अषर बेदारी के बा'द भी रहता है। (2)....बारगाहे रिसालत में हजरते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام जब हाजिर होते तो “आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन्हें मुलाहजा भी फरमा रहे होते और उन का कलाम भी सुन रहे होते जब कि शुरकाए बारगाहे रिसालत हजरते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को न देख रहे होते और न सुन रहे होते और इन्हें सिर्फ इसी क़दर इल्म हासिल होता जितना **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ चाहता।” (1) चूंकि (दुन्यावी हयात में) अवामुन्नास को फिरिश्तों की ज़ियारत और उन के कलाम की समाअत पर कुदरत नहीं दी गई इस लिये वोह हजरते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को नहीं देख सकते थे।

﴿3﴾....अज़ाबे क़ब्र : शरीअते मुतहहरा में इस के मुतअल्लिक भी रिवायात मन्कूल हैं।

اَللّٰہُ रब्बुल इज्जत عَزَّوَجَلَّ का फरमाने इब्रत निशान है :

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٢٤﴾ (المؤمن: ٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आग जिस पर सुब्हो शाम पेश किये जाते हैं और जिस दिन क़ियामत काइम होगी हुक्म होगा फिरअौन वालों को सख़्त तर अज़ाब में दाखिल करो।

नौज आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और बुजुगाने दीन رَحِمَهُمُ اللہُ النُّبِیِّين का अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगना मन्कूल है। (2) अक्लन भी इस का वुकूअ मुमकिन है। लिहाजा इस पर ईमान लाना वाजिब है।

एक सुवाल और इस का जवाब :

जिसे मुख़लिफ़ दरिन्दों ने खा लिया हो या मुख़लिफ़ परन्दों ने नौच लिया हो। उस पर अज़ाबे क़ब्र कैसे होगा ? जवाब : अज्जाए मय्यित का दरिन्दों के पेटों या परन्दों के पोटों में मुतफ़रिफ़ होना अज़ाबे क़ब्र को मानने में रुकावट नहीं बन सकता, क्योंकि अज़ाब की तक्लीफ़ का एहसास हैवान के मख़सूस अज्जा को होता है और **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ इस पर कादिर है कि वोह इन अज्जा को फिर से काबिले एहसास बना दे।

①.....صحیح البخاری، کتاب بدء الخلق، باب ذکر الملائكة، الحديث: ٣٢١٤، ج ٢، ص ٣٨٣۔

②.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب ما يستعاذ منه في الصلاة، الحديث: ٥٨٨، ص ٢٩٢۔

﴿4﴾....मीज़ाने अमल : के हक होने पर ईमान लाना भी जरूरी है । चुनान्वे,
फरमाने बारी तआला है :

وَنَصَّ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ

(پ ۱، الانبیاء: ۴۷)

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ

الْبَاطِلُونَ ۝ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ

الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا

يَظْلُمُونَ ۝ (پ ۸، الاعراف: ۹, ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम अद्ल की तराजूएं
रखेंगे क़ियामत के दिन ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिन के पल्ले भारी हुए
वोही मुराद को पहुंचे और जिन के पल्ले हलके हुए
वोही हैं जिन्होंने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों
का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे ।

मीज़ाने अमल काइम होने की वजह यह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आ'माल के सहीफों में,
आ'माल के उन दर्जों के मुताबिक जो उस के हां हैं वज़न पैदा फ़रमा देगा ताकि बन्दों को अपने
आ'माल की मिक्दार मा'लूम हो जाए और अज़ाब की सूरत में अद्ले इलाही और षवाब के
इज़ाफ़े व अफ़व की सूरत में फ़ज़ले इलाही वाज़ेह हो जाए ।

﴿5﴾....पुल सिरात : येह जहन्नम की पुश्त पर बनाया गया है । बाल से ज़ियादा बारीक और
तल्वार से ज़ियादा तेज़ है ।

इरशादे बारी तआला है :

فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ۝ وَقَفَّوْهُمْ

إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ۝ (پ ۲३، الصّٰفّٰت: २३, २४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन सब को हांको राहे
दोज़ख़ की तरफ़ और उन्हें ठहराओ उन से पूछना है ।

इस पुल का होना भी मुमकिन है । लिहाज़ा इस पर ईमान लाना भी वाजिब है । नीज़
जो जाते बारी तआला परन्दे को हवा में उड़ाने पर कादिर है, उसे इन्सान को पुल सिरात पर चलाने
की भी कुदरत है ।

﴿6﴾....जन्नत व जहन्नम : तख़लीक़ हो चुकी है । चुनान्वे, **अल्लाह** तबारक व तआला का
फरमाने आलीशान है :

وَسَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ
عَرْضُهَا السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ لَا أَعَدَّتْ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾ (آل عمران: ١٣٣)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और दौड़ो अपने रब्ब की बख्शिश और ऐसी जन्नत की तरफ जिस की चौड़ाई में सब आस्मान व ज़मीन आ जाएं परहेज़गारों के लिये तय्यार रखी है ।

मज़कूरा आयत में लफ़्ज़ (أَعَدَّتْ) ब मा'ना तय्यार रखना) इस बात पर दलालत करता है कि जन्नत व जहन्नम पैदा की जा चुकीं हैं । इन अल्फ़ाज़ के ज़ाहिरी मा'ना मुराद लेने में कोई मुहाल लाज़िम नहीं आता, लिहाज़ा इस के ज़ाहिर पर अमल करना वाजिब है ।

﴿7﴾....ख़िलाफ़त का बयान : ख़िलाफ़त पर किसी को फ़ाइज़ करने के मुतअल्लिक़ मुस्तफ़ा जाने रहमत ﷺ से कोई वाज़ेह और यकीनी रिवायत मन्कूल नहीं, वरना मुआमलए ख़िलाफ़त आप ﷺ के मुख़लिफ़ शहरों और लश्करों पर मुक़रर कर्दा गवर्नर व उमरा के मुआमलात जो किसी पर पोशीदा नहीं हैं, से भी ज़ियादा वाज़ेह होता, लिहाज़ा इस का मख़फ़ी रहना कैसे मुमकिन हुवा ? और अगर मस्अलए ख़िलाफ़त ज़ाहिर था तो छुपा कैसे कि हमें मा'लूम तक न हो सका ।

जहां तक अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक़बर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के ख़लीफ़ा बनने का मुआमला है तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ सहाबए किराम اَجْمَعِينَ के इन्तिखाब और बैअत से इस मसनद पर फ़ाइज़ हुए । अगर कोई जरी किसी और सहाबी के इन्तिखाब और बैअत से इस मसनद पर फ़ाइज़ हुआ तो वोह इजमाए सहाबा का मुख़लिफ़ और इन तमाम (इन्तिखाब व बैअत करने वाले) सहाबए किराम الرّضَوَان عَلَيْهِمُ الرّضَوَان पर शाहे ख़ैरुल अनाम ﷺ की मुख़ालफ़त का इल्ज़ाम लगाने वाला है और ऐसी ज़ुरअते बद रवाफ़िज़ के इलावा और कोई नहीं कर सकता ।

अहले सुन्नत का अक़ीदा है कि तमाम सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ اَجْمَعِينَ मक़ामे तक्वा की बुलन्दियों पर फ़ाइज़ और उस ता'रीफ़ के मुस्तहिक् हैं जो खुदा और रसूल ﷺ ने उन के हक् में बयान फ़रमाई ।

﴿8﴾....फ़ज़ीलते सहाबा, ब तरतीबे ख़िलाफ़त : इन नुफ़ूसे कुदसिय्या की फ़ज़ीलत और इस में भी तरतीब की बारिकियां वोही हज़रात जानते थे जिन्हों ने वहूय और नुज़ूले कुरआन का मुशाहदा किया और अहवाल की मुनासबत से फ़ज़ीलत की बारीकियों को पा लिया । अगर येह हज़रात इस तरतीब व फ़ज़ीलत की समझ न पाते तो कभी भी हक्के ख़िलाफ़त की मज़कूरा तरतीब काइम न करते क्यूंकि इन नुफ़ूसे कुदसिय्या को उमूरे दीनिय्या में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह नहीं होती और न ही इन्हें कोई राहे हक् से हटा सकता है ।

﴿9﴾....हक्के ख़िलाफ़त की पांच शराइत : मुसलमान और मुकल्लफ़ (अक़िल, बालिग़, आज़ाद) होने के बा'द हक्के ख़िलाफ़त की पांच शराइत हैं : (1) मर्द होना (2) मुत्तकी होना (3) अलमि होना (4) उमूरे ख़िलाफ़त सर अन्जाम देने की अहलियत रखना और (5) कुरैशी होना (1) जैसा कि सुल्ताने मक्काए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **أَكْمَنُ مِنْ قُرَيْشٍ** : खुलफ़ा कुरैश से होंगे। (2) अगर इन सिफ़ात से मुत्तसिफ़ लोग एक से ज़ियादा हों तो फिर ख़िलाफ़त का मुस्तहिक् वोह होगा जिस की बैअत ज़ियादा लोग करें।

﴿10﴾.....फ़ासिक व फ़ाजिर शख्स को ख़लीफ़ा तस्लीम करना : तक्वा और इल्म की शराइत से ख़ाली शख्स अगर मसनदे ख़िलाफ़त पर कब्ज़ा रखना चाहता है और उसे हटाने में नाक़ाबिले बरदाश्त फ़ितना पैदा होने का अन्देशा है, तो उसी को ख़लीफ़ा तस्लीम करने का हुक्म दिया जाएगा।

येह हैं चालीस उसूलों पर मुश्तमिल चार अरकान जो अक़ाइद के क़वाइद हैं। इन के मुताबिक़ अक़ीदा रखने वाला अहले सुन्नत व जमाअत में शामिल और बद मज़हबों से दूर है।

हुआ :

अब्लाह तअाला हमें सीधे रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपने बुलन्द पाया फज़लो करम और जूदो अता के सदके हमें राहे हक़ की सच्चाई षाबित करने और इस पर अमल पैरा रहने की सआदत नसीब फ़रमाए। **अब्लाह** रब्बुल इज़ज़त की रहमतें हों हमारे सरदार हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और उन की आल और हर बरगुज़ीदा बन्दे पर।

①...अहनाफ़ के नज़दीक़ इमाम व खलीफ़ा की शराइत व तफ़सील। इमामत दो किस्म है : (1)....सुग़रा (2)....कुब्रा।

इमामते सुग़रा इमामते नमाज़ है। **इमामते कुब्रा** नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नियाबते मुतलफ़ा, कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नियाबत से मुसलमानों के तमाम उमूरे दीनी व दुन्यावी में हस्बे शरअ तसरुफ़ि आम का इख़्तियार रखे और ग़ैरे मा'सियत में इस की इताअत, तमाम जहान के मुसलमानों पर फ़र्ज़ हो इस इमाम के लिये मुसलमान, आज़ाद, अक़िल, बालिग़, कादिर, कुरैशी होना शर्त है। हाशमी, अलवी, मा'सूम होना इस की शर्त नहीं। इन का शर्त करना रवाफ़िज़ का मज़हब है, जिस से उन का येह मक्सद है कि बरहक़ उमराए मोअमिनीन खुलफ़ाए षलाषा अबू बक्र सिद्दीक़ व उमरे फ़ारूक़ व उषमाने ग़नी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) को ख़िलाफ़त से जुदा करें, हालांकि इन की ख़िलाफ़तों पर तमाम सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ का इजमाअ है। मौला अली क़र्रमُ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने हज़रते हसनैन रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने इन की ख़िलाफ़तें तस्लीम कीं और अलवियत की शर्त ने तो मौला अली को भी ख़लीफ़ा होने से ख़ारिज कर दिया, मौला अली, अलवी कैसे हो सकते हैं ! रही इस्मत, येह अम्बिया व मलाइका का ख़ास्सा है, जिस को हम पहले बयान कर आए, इमाम का मा'सूम होना रवाफ़िज़ का मज़हब है। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 237)

②.....السنن الكبرى للنسائي، كتاب الق-ماء، الأئمة من قريش، الحديث: 5922، ج 3، ص 262-

चौथी फ़स्ल :

ईमान और इस्लाम के मابैन इतिहाल व इत्तिफ़ाअल,

इन के घटने बढ़ने और अस्लाफ़ का इस में

(إِنْ شَاءَ اللَّهُ) के साथ) इस्तिफ़ाना करने की वजह का बयान

मसअला 1 : इमान व इस्लाम दो चीज़ें हैं या एक ?

इस में इख़िलाफ़ पाया जाता है कि इस्लाम ही ईमान है या इस से जुदा है ? और अगर जुदा है तो क्या ईमान के बिगैर भी इस का वुजूद मुमकिन है या इस के साथ वाबस्ता व लाज़िम है ? इस के जवाब में कई अक्वाल हैं :

﴿1﴾....इस्लाम व ईमान एक ही चीज़ के दो नाम हैं ।

﴿2﴾....येह दो अलग अलग और जुदा जुदा चीज़ें हैं ।

﴿3﴾....येह दो अलग अलग चीज़ें हैं लेकिन आपस में एक दूसरे से वाबस्ता हैं ।

मुसन्निफ़ का मौकिफ़ :

शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने इस मसअले पर बहुत गन्जलक और तवील कलाम फ़रमाया है । लेकिन हम ला हासिल गुफ़्तू से सिर्फ़ नज़र करते हुए अम्रे हक़ को वज़ाहत व सराहत के साथ बयान करेंगे । हमारे इख़्तियार कर्दा मौकिफ़ के मुताबिक़ इस मसअले की तीन अब्हास हैं :

(1)....इन दोनों का लुग़वी मा'ना क्या है ।

(2).....शरई तौर पर इन से क्या मुराद है ।

(3).....इन का दुन्यवी व उख़रवी हुक्म क्या है ? पहली बहूष को लुग़वी, दूसरी को तफ़्सीरी और तीसरी को फ़िक़ही शरई कहेंगे ।

पहली बहूष : **लुग़वी मा'ना का बयान**

ईमान दर अस्ल, तस्दीक़ का नाम है । जैसा कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

(پ ۲، یوسف: ۱۰۷) وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आप किसी तरह हमारा यकीन न करेंगे ।

इस आयते मुबारका में मोमिन ब मा'ना मुसद्दिक् (या'नी तस्दीक़ करने वाला) इस्ति'माल हुवा है ।

और इस्लाम का मा'ना है : मानना और दिल से क़बूल व इताअत पर सरे तस्लीम ख़म करना । नीज़ सरकशी, इन्कार और मुख़ालफ़त को तर्क करना । तस्दीक़ का मक़ाम दिल से है और ज़बान इस की तर्जमान । जब कि मानना अ़म है दिल, ज़बान और दीगर आ'ज़ा सब के साथ होता है । हर तस्दीक़े क़ल्बी, मानना और इन्कार व सरकशी को तर्क करना है, इसी तरह ज़बान से इक़रार करना और दीगर आ'ज़ा से ताअत व फ़रमां बरदारी करना भी । लिहाज़ा लुग़वी ए'तिबार से इस्लाम अ़म और ईमान ख़ास हुवा और इस्लाम के अज्ज़ा में से बेहतरीन जुज़ का नाम ईमान है । इस से मा'लूम हुवा कि हर तस्दीक़, तस्लीम तो है लेकिन हर तस्लीम, तस्दीक़ नहीं ।

दूसरी बहष : मा'नए शरई का बयान

दर हकीक़त शरीअत में येह अल्फ़ाज़ (या'नी ईमान व इस्लाम) तीन तरह इस्ति'माल हुए हैं : (1)....दोनों हम मा'ना (2).....अलग अलग मा'ना में और (3)....एक के मा'ना में दूसरे का मा'ना शामिल है ।

दोनों के हम मा'ना होने की मिषालें :

﴿1﴾ فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٤﴾
فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٢٥﴾
(پ ۲۴، الدّیت: ۳۵، ۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो हम ने उस शहर में जो ईमान वाले थे निकाल लिये तो हम ने वहां एक ही घर मुसलमान पाया ।

और येह बात बिल इत्तिफ़ाक़ षाबित है कि वहां (मोअमिनीन व मुस्लिमीन का) एक ही घर था ।

﴿2﴾ يَقُومُوا إِن كُنْتُمْ أَمْتُمْ بِاللّٰهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا ﴿٨٢﴾
إِن كُنْتُمْ مُّسْلِمِينَ ﴿٨٣﴾ (پ ۱، یونس: ۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरी क़ौम ! अगर तुम **ALLAH** पर ईमान लाए तो उसी पर भरोसा करो अगर इस्लाम रखते हो ।

﴿3﴾.....फ़रमाने मुस्तफ़ा है : “يُئِيّ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ” या'नी इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है ।” (1)(2)

① قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُئِيّ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْحَجَّ وَصَوْمَ رَمَضَانَ
या'नी : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर उमर رضي الله تعالى عنهم से रिवायत है कि मुबल्लिगे आ'ज़म, ताजदारे उमम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मुअज़्ज़म है : पांच चीज़ें इस्लाम की बुन्याद हैं : इस बात की गवाही देना कि **ALLAH** के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद **ALLAH** के रसूल हैं, नमाज़ काइम करना, ज़कात अदा करना, हज़ करना और रमज़ान के रोज़े रखना । (ص ۸، ج ۱، ص ۲۱)

②.....صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان اركان الاسلام.....الخ، الحديث: ۱۶، ص ۲۷

एक दफ़ा हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ से ईमान के मुतअल्लिक सुवाल किया गया तो इस के जवाब में भी येही पांच चीज़ें इरशाद फ़रमाई ।” (1) (2)

दोनों के जुदा जुदा मा'ना में इश्ति'माल होने की मिषालें :

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اِمَّا قُلْ لَمْ تُؤْمَرُوا
لَكِنْ تَقُولُوا اَسْلَبْنَا

(الحجرات: १३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : गंवार बोले हम ईमान लाए तुम फ़रमाओ तुम ईमान तो न लाए । हां ! यूँ कहो कि हम मुतीअ हुए ।

या'नी यूँ कहो कि हम ज़ाहिरन दीने इस्लाम की ताअत क़बूल करते हैं । मज़कूरा आयते करीमा में ईमान से फ़क़त तस्दीके क़ल्बी मुराद है और इस्लाम से मुराद ज़ाहिरी तौर पर ज़बान और दीगर आ'जा से ताअत क़बूल करना है ।

﴿2﴾...हदीषे जिब्रील : जब हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने ईमान के बारे में सुवाल किया तो रहमते आलमिय्यान, सरवरे कौनो मकान ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

“اَنْ تُؤْمِنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهِ وَكِتٰبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَتُبْعَثَ بَعْدَ الْمَوْتِ وَبِالْحِسَابِ وَبِالْقَدْرِ خَيْرٌ وَشَرٌّ”

या'नी : ईमान येह है कि तू **अल्लाह** तआला, उस के फ़िरिश्तों, उस की किताबों, उस के रसूलों, यौमे आख़िरत, मरने के बा'द दोबारा जी उठने, हि़साब व किताब और इस बात पर ईमान लाए कि अच्छी बुरी तक्दीर उसी (या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ) की तरफ़ से है ।” (3)

फिर इन्हों ने इस्लाम के मुतअल्लिक पूछा तो आप ﷺ ने पांच चीज़ों का ज़िक्र फ़रमाया और ज़ाहिरी कौल व अमल के साथ मानने को इस्लाम का नाम दिया ।

﴿3﴾...हज़रते सय्यिदुना सा'द رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि एक बार महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मख़्ज़ने जूदो सखावत ﷺ ने एक शख्स को कोई चीज़ इनायत फ़रमाई और दूसरे

قَالَ عَبْدُ اللَّهِ ابْنُ عُمَرَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا إِنَّ الْإِيمَانَ بَيْنِي عَلَى عَشْرٍ: تَعْبُدُ اللَّهَ، وَتُقِيمُ الصَّلَاةَ، وَتُؤْتِي الزَّكَاةَ، وَتَحَجُّجَ، وَتَصُومَ رَمَضَانَ - كَذَلِكَ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ .. ①

या'नी : (हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं :) बिना शुबा ईमान की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : **अल्लाह** की इबादत करना, नमाज़ काइम करना, ज़कात अदा करना, हज़ करना और रमज़ान के रोज़े रखना । इसी तरह रसूलुल्लाह ﷺ ने हमें इरशाद फ़रमाया :

(مصنّف ابن ابی شیبہ، کتاب الجہاد، باب ما قالوا فی الغزو واجب هو: الحدیث: ۸، ج ۳، ص ۶۰۰)

②.....السنن الکبری للبیہقی، کتاب الصیام، باب فرض صوم شهر رمضان، الحدیث: ۸۹۳، ج ۴، ص ۳۳۵

③.....صحیح مسلم، کتاب الايمان، باب بیان الايمان والاسلام.....الخ، الحدیث: ۸، ص ۲۲

المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن العباس.....الخ، الحدیث: ۲۹۲، ج ۱، ص ۶۸۳

को अता न फरमाई तो मैं ने अर्ज की : या रसूलल्लाह ﷺ आप ने फुलां शख्स को छोड़ दिया उसे न दिया हालांकि वोह भी मोमिन है ?” तो आप ﷺ ने इरशाद फरमाया : “या मुसलमान ।” मैं ने दोबारा येही अर्ज की और आप ﷺ ने फिर वोही इरशाद फरमाया : “या मुसलमान ।” (1) (2)

दोनों के एक दूसरे के मा'ना को शामिल होने की मिषालें :

बारगाहे रिसालत में अर्ज की गई कि “कौन सा अमल अफ़ज़ल है ?” तो आप ﷺ ने इरशाद फरमाया : “इस्लाम ।” फिर अर्ज की गई : “कौन सा इस्लाम अफ़ज़ल है ?” इरशाद फरमाया : “ईमान ।” (3)

मज़कूरा रिवायत से षाबित हुवा कि इस्लाम व ईमान मा'ना में मुख़्तलिफ़ भी हैं और एक दूसरे में शामिल भी और येह इस्ति'माल लुग़त के ए'तिबार से बहुत अच्छा है । क्यूंकि ईमान एक अमल बल्कि अफ़ज़ल अमल है और इस्लाम तस्लीम करने का नाम है ख़्वाह दिल से हो या ज़बान से या दीगर आ'जा से और इस तस्लीम में से बेहतर दिल की तस्लीम है जिसे तस्दीक़ और ईमान का नाम दिया जाता है ।

तीसरी बहूष :

हुक्म शरई का बयान

इस्लाम और ईमान के दो हुक्म हैं : (1)....उख़रवी (2).....दुन्यवी ।

उख़रवी हुक्म : जहन्नम से निकालना और इस में हमेशा रहने से बचाना । जैसा कि फ़रमाने मुस्तफ़ा है : “जहन्नम से हर उस शख्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो ।” (4)

①....मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن मिरआतुल मनाजीह, जि. 5 स. 600 पर फ़रमाते हैं : “इस फ़रमाने आली में इन साहिब के ईमान की नफ़ी नहीं बल्कि हज़रते सा'द को ता'लीम है कि किसी के मुतअल्लिक़ उस के ईमान की गवाही क़तई न दो कि ईमान दिली तस्दीक़ का नाम है जिस पर **अल्लाह** तआला ही ख़बरदार है । इस्लाम जाहिर का नाम है, तुम उस की गवाही दे सकते हो ख़याल रहे कि कभी ईमान व इस्लाम हम मा'ना आते हैं और कभी इन में फ़र्क़ किया जाता है कि दिली अक़ीदों का नाम ईमान होता है और जाहरी इताअत का नाम इस्लाम यहां दूसरे मा'ना मुराद हैं ।

②.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب تألف قلب من یخاف.....الخ، الحدیث: ۱۵۰، ص ۸۹۔

③.....المستندللامام احمد بن حنبل، مسند الشاميين، حدیث زید بن خالد الجهنی، الحدیث: ۱۷۰۲۳، ج ۶، ص ۵۸، باختصار۔

④.....صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادة الایمان ونقصانه، الحدیث: ۴۴، ج ۱، ص ۲۸۔

हां ! इस बारे में इख़िलाफ़ है कि मज़क़ूरा हुक्मे उख़रवी किस पर मुरतब होगा या'नी इस ईमान की क्या ता'रीफ़ है ? (जो जहन्नम से निकालने और इस में हमेशा रहने से बचाने का काम देगा)

﴿1﴾....किसी ने कहा : ईमान महज़ तस्दीके क़ल्बी का नाम है ।

﴿2﴾....किसी ने कहा : दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करने का नाम है ।

﴿3﴾....किसी ने तीसरी चीज़ या'नी आ'ज़ा के साथ अमल करने का भी इज़ाफ़ा किया ।

पहला दर्जा : हम अस्ल बात को वाज़ेह करते हुए कहते हैं कि जो शख्स इन तीनों बातों (तस्दीक़, इक़रार और आ'माले सालेहा) पर कारबन्द हो, वोह बिना इख़िलाफ़ जन्नती है । येह एक दर्जा हुवा ।

दूसरा दर्जा : दो बातें मौजूद हों और तीसरी का कुछ हिस्सा हो या'नी तस्दीक़ व इक़रार और कुछ आ'माले सालेहा हों और उस शख्स से एक या एक से ज़ियादा कबीरा गुनाह भी सरज़द हुए हों तो उस के बारे में मो'तज़िला कहते हैं कि येह शख्स फ़ासिक़, दाइराए इस्लाम से ख़ारिज और हमेशा का जहन्नमी है लेकिन काफ़िर नहीं । इस का एक तीसरा मक़ाम है (या'नी न मोमिन है न काफ़िर) मो'तज़िला का येह क़ौल बातिल है, हम अज़ क़रीब इस की वज़ाहत करेंगे ।

तीसरा दर्जा : तस्दीके क़ल्बी और शहादते लिसानी पाई जाए लेकिन आ'ज़ा से आ'माल का वुजूद न हो तो ऐसे शख्स के हुक्म में इख़िलाफ़ है ।

आ'माले सालेहा जुज़्वे ईमान नहीं :

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْی़ फ़रमाते हैं कि “आ'माले सालेहा जुज़्वे ईमान हैं, इन के बिग़ैर ईमान मुकम्मल नहीं होता ।” आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने अपने इस मौक़िफ़ पर इजमाअ का दा'वा किया है और ऐसे दलाइल पेश किये हैं जो इन्ही के मौक़िफ़ के ख़िलाफ़ जाते हैं । जैसे इन का इस दलीले कुरआनी को पेश करना :

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ (پ البقرة: ۸۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो ईमान लाए

और अच्छे काम किये वोह जन्नत वाले हैं ।

इस आयत से तो येह पता चलता है कि आ'माले सालेहा का दर्जा ईमान के बा'द है, वोह नफ़से ईमान में शामिल नहीं, वर्गना आ'माल का दोबारा से ज़िक़्र तकरार के हुक्म में होगा और हैरत है कि शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْفَوْی़ अपने मौक़िफ़ को इजमाई भी क़रार देते हैं

और येह हदीषे पाक भी ज़िक्र करते हैं : “ لَا يَكْفُرُ أَحَدٌ إِلَّا بَعْدَ جُحُودِهِ لِمَا أَقْرَبَهُ ” (1) और येह वक़्त तक काफ़िर नहीं होगा जब तक वोह इक़रार की हुई चीज़ का इन्कार न करे ।”

शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मो'तज़िला के इस अक़ीदे “कबीरा गुनाहों का मुर्तकिब हमेशा जहन्नम में रहेगा” का रद्द करते हैं हालांकि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के मौक़िफ़ का काइल मज़हबे मो'तज़िला का काइल है । क्यूंकि अगर आप के मज़हब के काइल से पूछा जाए कि “जो शख़्स दिल से तस्दीक़ और ज़बान से इक़रार करते ही (बिग़ैर कोई अमल किये) फ़ौत हो जाए तो क्या वोह जन्नती है ?” तो इस का जवाब लाज़ि़मन इषबात में होगा । इस से षाबित हो गया कि ईमान बिग़ैर अमल के पाया जाता है ।

हम अपने सुवाल को तूल देते हुए कहते हैं कि उस शख़्स को इस क़दर मज़ीद ज़िन्दगी मिल जाए कि वोह एक नमाज़ का वक़्त पा ले लेकिन क़ज़ा कर दे, या ज़िना का मुर्तकिब हो और फिर मर जाए तो क्या वोह हमेशा जहन्नम में रहेगा ? अगर इस का जवाब “हां” में है तो मो'तज़िला का भी येही अक़ीदा है और “ना” की सूत में षाबित हो गया कि आ'माले सालेहा नफ़्से ईमान के लिये न रुक्न हैं न इस के वुजूद के लिये शर्त और न ही जन्नत का इस्तिहकाक़ इन पर मौक़ूफ़ । अगर जवाब देने वाला कहे कि मेरी मुराद येह है कि अगर वोह शख़्स तबील मुदत तक ज़िन्दा रहे, न नमाज़ पढ़े और न दीगर शरई अहक़ाम की पैरवी करे (तब उस पर हमेशा के लिये जहन्नमी होने का हुक्म लगेगा) तो इस के जवाब में हम कहते हैं कि वोह मुदत कितनी होगी ? कितनी मिक्दार में ताअ़ात का तर्क और किस क़दर कबीरा गुनाहों का इर्तिकाब ईमान को बातिल कर देता है ? येह ता'दाद न मुतअय्यन हो सकती है और न ही इस की तरफ़ किसी ने रुजूअ किया ।

चौथा दर्जा : किसी शख़्स ने दिल से तस्दीक़ की लेकिन ज़बानी शहादत अदा करने और आ'माले सालेहा बजा लाने से पहले ही उसे मौत आ गई तो क्या वोह बारगाहे खुदावन्दी में मोमिन शुमार होगा ? इस में इख़्तिलाफ़ है । ज़बानी इक़रार को तकमीले ईमान के लिये शर्त क़रार देने वाले हज़रात कहते हैं : “उस शख़्स को ईमान से पहले मौत आई है ।” लेकिन उन का येह क़ौल ग़लत है क्यूंकि नबियों के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो ।” (2) उस शख़्स का दिल तो ईमान से लबरैज़ है तो फिर वोह अबदी जहन्नमी कैसे ?

①.....المعجم الاوسط، من اسمه عبد الله، الحديث: ٢٢٣٣، ج ٣، ص ٢٣٢

②.....صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب زيادة الايمان ونقصانه، الحديث: ٢٢٣، ج ١، ص ٢٨

नीज हदीषे जिब्रील में ईमान के लिये **اَللّٰهُمَّ** غَرْ وَجَلْ, उस के फ़िरिश्तों, किताबों और रोज़े आख़िरत की तस्दीक़ के सिवा कोई शर्त नहीं रखी गई। जैसा कि पहले बयान किया जा चुका।

पांचवां दर्जा : किसी शख्स ने दिल से तस्दीक़ की, फिर उसे ज़बान से कलिमाते शहादत अदा करने का मौक़अ भी मिला और उसे इस के वुजूब का भी इल्म था लेकिन अदा न किया। तो मुमकिन है उस ने इस की अदाएगी से उसी तरह ग़फ़लत बरती हो जिस तरह नमाज़ से ग़फ़लत बरतता है। लिहाज़ा हम उसे मोमिन और जहन्नम में हमेशा न रहने वाला कहेंगे। क्यूँकि ईमान महज़ तस्दीक़े क़ल्बी का नाम है, जब कि ज़बान ईमान की तर्जमान है। इस बिना पर लाज़िम है कि ईमान ज़बान की अदाएगी से क़ब्ल ही ताम माना जाए ताकि ज़बान इस की तर्जमानी कर सके। येही मौक़िफ़ सब से ज़ियादा ज़ाहिर है। क्यूँकि हमारे पास अल्फ़ाज़े हदीष के मअानी की इत्तिबाअ के सिवा हुक्म बयान करने की कोई सनद नहीं। लुग़वी ए'तिबार से भी ईमान तस्दीक़े क़ल्बी का नाम है और हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया :
 “जहन्नम से हर उस शख्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो।”⁽¹⁾

जिस तरह दीगर वाजिबात के तर्क से ईमान ख़त्म नहीं होता इसी तरह ईमान के बारे में ज़बानी शहादत का वुजूब तर्क कर देने से दिल ईमान से ख़ाली नहीं हो जाता। बा'ज़ ने कहा : ज़बान से इक़रार करना ईमान का रुक्न है क्यूँकि कलिमाते शहादत दिल की ख़बर नहीं देते, बल्कि वोह दूसरे मुआमले की इन्शा और शहादत व इल्तिज़ाम की इब्तिदा हैं। लेकिन पहला कौल (या'नी हमारा मौक़िफ़) ही सब से ज़ियादा वाजेह है।

इस मस्अले में मरजिआ फ़िर्के ने तो हर्दे ही पार कर दीं और येह मौक़िफ़ इख़्तियार किया कि येह शख्स जहन्नम में जा ही नहीं सकता। वोह कहते हैं : मोमिन चाहे गुनाहगार ही क्यूं न हो, जहन्नम में नहीं जाएगा। हम अज़ क़रीब इन के मौक़िफ़ का रद्द पेश करेंगे।

छटा दर्जा : कोई शख्स ज़बान से तो **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ** कहे लेकिन दिल से इस की तस्दीक़ न करे तो ऐसा शख्स उख़रवी हुक्म के ए'तिबार से बिला शको शुबा काफ़िर और हमेशा के लिये जहन्नमी है। इस में भी कोई शक नहीं कि येह शख्स उमरा व खुलफ़ा से तअल्लुक़ रखने वाले दुन्यावी अहक़ाम में मुसलमान ही समझा जाएगा। क्यूँकि उस की क़ल्बी कैफ़ियत पर आगाह नहीं हुवा जा सकता। लिहाज़ा हमारे लिये येही हुक्म है कि हम उस की क़ल्बी हालत को भी वैसा ही जानें जैसा वोह अपनी ज़बान से इक़रार कर रहा है।

गौर तलब मसाइल :

तीसरे अम्र में हमें शक है या'नी वोह दुन्यवी हुक्म जो उस बन्दे और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के दरमियान है जैसे इसी हालत (या'नी सिर्फ़ ज़बानी कबूले इस्लाम है क़ल्बी नहीं) में इस का कोई क़रीबी मुसलमान रिश्तेदार फ़ौत हो जाए, फिर वोह दिल से ईमान ले आए और अपने बारे में फ़तवा लेते हुए कहे कि “मैं अपने रिश्तेदार की फ़ौतगी के वक़्त दिल से मोमिन नहीं था और अब विराषत मेरे क़ब्जे में है, तो क्या इन्दल्लाह येह विरषा मेरे लिये हलाल है?” या वोह शख़्स किसी मुसलमान औरत से निकाह करने के बा'द दिल से मोमिन होता है तो क्या उस निकाह का इअ़दा करना होगा ? येह मसाइल गौर तलब हैं। मुमकिन है इन मसाइल का जवाब यूँ दिया जाए : दुन्यावी अहक़ाम के ज़ाहिर व बातिन का दारोमदार ज़ाहिर पर है। या येह जवाब दिया जाए कि ज़ाहिर का हुक्म दूसरों के लिये है क्यूँकि वोह उस की क़ल्बी कैफ़ियत पर मुत्तलअ नहीं हो सकते और खुद उस के लिये और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये उस का बातिन, ज़ाहिर है। हकीकी इल्म तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के पास है और हमारे नज़दीक ज़ाहिर येही है कि येह माले विराषत उस शख़्स के लिये हलाल नहीं और उस पर निकाह का इअ़दा लाज़िम है। इसी बिना पर हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ मुनाफ़िक्कीन का जनाज़ा नहीं पढ़ते थे और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी इस चीज़ का ख़याल रखते और जिस जनाज़े में हज़रते हुजैफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ शिर्कत न करते आप भी न जाते और नमाज़ दुन्या में एक ज़ाहिरी अमल है अगर्चे इबादात में से है और हराम से इजतिनाब भी उन उमूर में से है जो नमाज़ की तरह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के वाजिब कर्दा हैं। जैसा कि,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :
 “طَلَبُ الْحَلَالِ فَرِيضَةٌ بَعْدَ الْفَرِيضَةِ” या'नी रिज़्के हलाल की तलाश एक फ़र्ज़ के बा'द दूसरा फ़र्ज़ है।⁽¹⁾

और हमारा येह कहना इस कौल के ख़िलाफ़ नहीं है कि विराषत इस्लाम का हुक्म है और इस्लाम, तस्लीम का नाम है। बल्कि मुकम्मल तस्लीम तो वोह है जो ज़ाहिर व बातिन दोनों को शामिल हो। येह अबहाष फ़िक्ही और ज़न्नी होती हैं, इन का दारोमदार ज़ाहिरी अल्फ़ाज़, उमूमी अबहाष और क़ियासात पर होता है। लिहाज़ा कम इल्म इस ख़याल में न रहे कि यहा क़तई हुक्म तक रसाई मतलूब है जैसे इल्मे कलाम में क़तइय्यत तलब करने का रवाज है। तो जो शख़्स उलूम में रुसूम व अ़दात की तरफ़ नज़र करता है फ़लाह नहीं पाता।

सवाल : मो'तज़िला और मरजिआ फ़िर्को का शुबा क्या है? और उन का मौक़िफ़ बातिल होने की क्या दलील है? **जवाब :** येह फ़िर्के कुरआन के उम्मी हुक्म से शुबे में पड़ गए। जैसे **फ़िर्क़उ मरजिआ का शुबा और इन के दलाइल :**

कोई भी मोमिन जहन्नम में नहीं जाएगा, अगर्चे कितना ही गुनहगार क्यूं न हो।

﴿1﴾

فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَلَا رَهَقًا ۝ (پ ۲۹، الجن: ۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपने रब्ब पर ईमान लाए उसे न किसी कमी का खौफ़ न ज़ियादती का।

﴿2﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصّٰدِقُونَ ۝ (پ ۲, الحديد: ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो **अल्लाह** और उस के सब रसूलों पर ईमान लाए वोही हैं कामिल सच्चे।

﴿3﴾

كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ۝ قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ ۝ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ ۝ (پ ۲۹, الملك: ۸, ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब कभी कोई गुरौह इस में डाला जाएगा इस के दारोगा उन से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास कोई डर सुनाने वाला न आया था कहेंगे क्यूं नहीं बेशक हमारे पास डर सुनाने वाले तशरीफ़ लाए, फिर हम ने झुटलाया और कहा **अल्लाह** ने कुछ नहीं उतारा।

मज़क़ूरा आयते मुबारका में (كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا فَوْجٌ) के अल्फ़ाज़ में उम्मू है, इस से मा'लूम होता है कि जहन्नम में हर फैका जाने वाला शख्स वोही हो जो झुटलाता हो।

﴿4﴾

لَا يَصْلُهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝ (پ ३०, الليل: १, २)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : न जाएगा उस में मगर बड़ा बद बख़्त, जिस ने झुटलाया और मुंह फ़ैरा।

इस आयते मुक़द्दसा में ह़स्स्, इषबात और नफ़ी है।

﴿5﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَهُمْ مِّنْ
فَزَعٍ يَوْمَئِذٍ اٰمِنُونَ ﴿٨٩﴾ (پ ۲۰، النمل: ۸۹)

ईमान तो तमाम नेकियों की बुन्याद है और फ़रमाने बारी तआला है :

﴿6﴾

وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْبُحْسِنِينَ ﴿١٣٢﴾ (प २, آل عمران: १३२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नेक लोग **अल्लाह** के महबूब हैं ।

﴿7﴾

اِنَّا لَا نُضِيعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿٣٠﴾
(प १५, الکہف: ३०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम उन के नेग (अज्र) ज़ाएअ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों ।

मजकूरा दलाइल के जवाबात :

इन आयात से उन का मौकिफ़ साबित नहीं होता । क्यूंकि मजकूरा आयात में जहां ईमान का ज़िक्र है वहां (महज़ ईमान नहीं बल्कि) ईमान बमअ अमल मुराद है । जैसा कि हम वज़ाहत कर चुके हैं कि लफ्ज़े ईमान कभी इस्लाम के मा'ना में इस्ति'माल होता है और वोह दिल, ज़बान और आ'माल की मुवाफ़क़त का नाम है और इस तावील पर वोह बहुत सारी रिवायात दलील हैं जिन में गुनाहगारों का अन्जाम और अज़ाब की मिक्दार का बयान है । नीज़ येह हदीषे पाक कि “जहन्नम से हर उस शख्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो ।”^(१) अगर दाख़िल ही न हुवा तो निकाले जाने का क्या मतलब ?

﴿1﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا
دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَاءُ ﴿٥٨﴾ (پ ५, النساء: ५८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** उसे नहीं बख़्शता कि उस के साथ कुफ़ किया जाए और कुफ़ से नीचे जो कुछ है जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा देता है ।

कुरआने पाक के इन अल्फ़ाज़ “जिसे चाहे मुआफ़ फ़रमा दे” से मा'लूम होता है कि जिसे न चाहेगा न बख़्शेगा ।

﴿2﴾

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ﴿٢٣﴾
(پ ۲۹، الجن: ۲۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो **अल्लाह** और उस के रसूल का हुक्म न माने, तो बेशक उन के लिये जहन्नम की आग है जिस में हमेशा हमेशा रहें।

इस आयते मुबारका को कुफ़ार के साथ खास करना हटधर्मी है।

﴿3﴾

أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ﴿٢٥﴾
(प २५، الشورى: २५)

तर्जमए कन्जुल ईमान : सुनते हो ! बेशक ज़ालिम हमेशा के अज़ाब में हैं।

﴿4﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّبِيَّةِ فَكَبَّتْ وَجُوهُهُمْ فِي النَّارِ ﴿٢٠﴾
(प २०، النمل: २०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो बदी लाए तो उन के मुंह औंधाए गए आग में।

उमूमी हुक्म पर मुश्तमिल इन आयात में उन दलाइल के जवाबात हैं जिन से फ़िर्कए मरजिआ ने उमूम षाबित किया। इन दोनों तरफ़ के दलाइल में तावील व तख़सीस की ज़रूरत है। क्योंकि “रिवायात में गुनाहगारों के अज़ाब में मुब्तला होने की सराहत है।”⁽¹⁾ बल्कि **अल्लाह** का फ़रमाने इब्रत निशान है :

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا
(प १६, मريم: ८१)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम में कोई ऐसा नहीं जिस का गुज़र दोज़ख़ पर न हो।

मज़कूरा फ़रमाने बारी तआला में सराहत है कि येह हुक्म सब के लिये है क्योंकि (सिवाए खास लोगों के) कोई भी मोमिन तमाम गुनाहों से नहीं बच सकता।

फ़रमाने बारी तआला है :

لَا يَصْلُهَا إِلَّا الْأَشْقَى ﴿١٥﴾ الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّى ﴿١٦﴾
(प ३०, الليل: १५, १६)

तर्जमए कन्जुल ईमान : न जाएगा उस में मगर बड़ा बद बख़्त, जिस ने झुटलाया और मुंह फेरा।

इस आयते करीमा में मख़सूस गुरौह या एक मुअय्यन बद बख़्त शख़्स मुराद है।

①.....صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب ماجاء فی قول اللہ تعالیٰ ان رحمۃ اللہ.....الخ، الحدیث: ۴۵۰، ج ۴، ص ۵۵۹۔

كَلْبًا أَلْقَىٰ فِيهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا

(پ ۲۹، الملک: ۸)

ترجمہ کَنْزُْلِ اِْمَان : جب کبھی کوئی گورائہ
اس میں ڈالا जाएगा اس کے داروغا اس سے پوچھیں گے۔

یہاں فوج سے کُفّار کی فوج مراد ہے اور اِمام کو خِاس کرنا چاہی ہے۔ اس آیت سے
مُکدّسا کو دلیل بنا کر ہجرت سے سبّیہ دُنا اِمام اَبولِ ہسَن اَشْشَرِی عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْوَعْدِی اور
کُفّ مُتکَلِّمِیْن نے اَلْفَجْ کے اُموں کا اِنکار کر دیا اور کہا : “اِیسے اَلْفَج میں اُس
وَقْت تک تَوکُف اِخْتِیار کیا जाएगा جب تک اِن کے ما’نا پر دِلالت کرنے والا کوئی
کَرِیْنا نہ پایا जाएगा۔”

موتِ جِلّا کا شُبا اور اِن کے دِلال:

اِن کے نِجْدِی گُناہے کَبِیْرا کا مُرتکِب دِلرِے اِسلام سے اِخْراج اور اِهمِشا جِہَنّم
میں رِہےگا لَکِین کَافِر نہیں ہے۔ دِرْجِے جِیل آیت سے تَبّیباتِ بَتّیْے دِلّیل پِش کرتے ہیں :

﴿1﴾

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَن تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ

صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَى ﴿۸۲﴾ (پ ۱۶، طہ: ۸۲)

ترجمہ کَنْزُْلِ اِْمَان : اور بَشا ک میں بَہُت
بَرّانے والا ہوں اُسے جِس نے تَوّبا کی اور اِمان
لایا اور اَحْصا کام کیا فِر ہِدایت پر
رہا۔

﴿2﴾

وَالْعَصْرِ ﴿۱﴾ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿۲﴾ إِلَّا

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ﴿۳۰﴾ (پ ۳۰، العصر: ۳۰)

ترجمہ کَنْزُْلِ اِْمَان : اُس جِمانِے مَہْبُوب کی
کِسم بَشا آدِمی جَرُور نُکْسان میں ہے، مَگار جو
اِمان لایا اور اَحْصا کام کیے۔

﴿3﴾

وَإِنْ مِنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا كَانَ عَلَى رَبِّكَ

حَسْبًا مَّقْضِيًّا ﴿۷﴾ (پ ۱۶، مریم: ۷)

ترجمہ کَنْزُْلِ اِْمَان : اور اُس میں کوئی اِسا
نہیں جِس کا گُجر دَوْخ پر نہ ہو، اِتمْہارے رَعب
کے جِمْمے پر یِہ جَرُور اِہری ہُئی بات ہے۔

﴿4﴾

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِينَ اتَّقَوْا (پ ۱۶، مریم: ۷۲)

ترجمہ کَنْزُْلِ اِْمَان : فِر اِہم اِڑ والوں کو
بَشا لَےں گے۔

﴿5﴾

وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ

(پ ۲۹، الجن: ۲۳)

मज़कूरा आयाते बय्यिनात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ईमान के साथ अमले सालेह का भी जिक्र फ़रमाया ।

﴿6﴾

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا

(प ५, النساء: ९३)

मज़कूरा दलाइल के जवाबत :

मज़कूरा दलाइले कुरआनिय्या के उमूम में भी ज़ैल की आयात के सबब तख़सीस है ।

﴿1﴾

وَيَعْفُو مَا دُونِ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ

(प ५, النساء: ३८)

इस आयत की रू से कुफ़्र व शिर्क के इलावा गुनाहों की मग़फ़िरत मशिय्यते इलाही पर मुन्हसिर है ।

﴿2﴾

इसी तरह सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने आलीशान है :
“जहन्नम से हर उस शख्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो ।”⁽¹⁾

﴿3﴾

إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا

(प १, ५, الكهف: ३०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम उन के नेग (अज़्र) ज़ाएअ नहीं करते जिन के काम अच्छे हों ।

﴿4﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ

(प १, १, التوبة: १२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** नेकों का नेग (अज़्रो इन्आम) ज़ाएअ नहीं करता ।

अब बताइये ! एक गुनाह के सबब अस्ल ईमान और तमाम इबादात का अज़्र कैसे ज़ाएअ कर दिया जाएगा ? और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का फ़रमान है :

①.....صحیح البخاری، کتاب الایمان، باب زیادة الایمان ونقصانه، الحدیث: ۴۲، ج ۱، ص ۲۸۔

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا (پ ۵، النساء: ۹۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जो कोई मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे ।

(हमेशा के लिये जहन्नमी वोह क़ातिल होगा जो किसी मोमिन को) मोमिन होने के नाते क़त्ल करे । इस आयते मुबारका का शाने नुज़ूल भी येही है ।

एक शुवाल और इस का जवाब :

इस तमाम बहष से येह समझ में आता है कि ईमान में अमल का दख़ल नहीं, हालांकि अकाबिरीने मिल्लत से मन्कूल ईमान की येह ता'रीफ़ मशहूर है कि “ईमान तस्दीके क़ल्बी, इक़रारे लिसानी और आ'माले सालेहा का नाम है ।” फिर इस का क्या मतलब हुवा ? जवाब : आ'माले सालेहा को ईमान में शामिल किया जा सकता है क्यूंकि येह ईमान को मुकम्मल और तमाम करने वाले हैं । जैसे कहा जाता है : “सर और दोनों हाथ इन्सान से हैं ।” येह तो सब जानते हैं कि अगर सर नहीं तो इन्सान भी नहीं । लेकिन अगर हाथ न हों तो वोह इन्सान होने से ख़ारिज नहीं हो जाता । इसी तरह येह भी कहा जाता है कि “तक्बीराते इन्तिक़ालात और तस्बीहात नमाज़ से हैं अगर्चे इन का तर्क नमाज़ को बातिल नहीं करता ।” तस्दीक़ बिलक़ल्ब ईमान में इस तरह है जिस तरह वुजूदे इन्सानी के लिये सर कि अगर तस्दीक़ नहीं तो ईमान भी नहीं और बक़िय्या ताआत दीगर आ'जाए जिस्मानी की तरह हैं । जिन में से बा'ज को बा'ज पर फ़ज़ीलत है ।

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 (1) ”لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ“ या'नी : ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता ।

सहाबए किराम رَضُوا اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ मो'तज़िला की तरह ज़ानी को काफ़िर नहीं समझते थे । बल्कि इस हदीष का मतलब येह है कि वोह कामिल, पूरा और हक़ीक़ी मोमिन नहीं । जैसे कटे हुए आ'जा वाले मजबूर शख्स को कहा जाए : “येह इन्सान नहीं ।” या'नी हक़ीक़ते इन्सानिय्यत के बा'द इसे इन्सानी कमाल का दर्जा हासिल नहीं ।

मसअला 2 : ईमान घटता बढ़ता है या नहीं

सुवाल : अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام का येह मुत्तफ़िक् कौल है कि ईमान की कमी ज़ियादती होती है। इबादात से बढ़ता और गुनाहों से घटता है। जब तस्दीके क़ल्बी ही ईमान है तो फिर इस में कमी बेशी कैसी ?

जवाब : अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ सलाम आदिल और हमारे लिये दलीले राह हैं। इन के फ़रामीन हक़ पर मब्नी हैं। जिन से रू गर्दानी किसी भी मुसलमान को रवा नहीं। ज़रूरत इन की बात समझने की है। इन का फ़रमान इस बात पर दलील है कि अमल ईमान का जुज़ या इस का रुक्न नहीं बल्कि एक इज़ाफ़ी चीज़ है, जिस से ईमान बढ़ जाता है। ईमान में कमी बेशी करने वाले अफ़अल मौजूद हैं। याद रहे कि किसी भी चीज़ की ज़ात में इज़ाफ़ा नहीं होता। लिहाज़ा येह नहीं कहा जाएगा कि इन्सान सर से बढ़ता है बल्कि यूं कहा जाएगा कि इन्सान दाढ़ी और मोटापे में बढ़ता है। इसी तरह येह भी नहीं कहा जाएगा कि नमाज़ रुकूअ व सुजूद से बढ़ती है बल्कि कहा जाएगा कि इस में सुन्नतों और आदाब से इज़ाफ़ा होता है। लिहाज़ा अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ सलाम के कौल से इस बात की सराहत होती है कि ईमान का एक वुजूद है, फिर वुजूद के बा'द कमी बेशी से इस का हाल मुख़्तलिफ़ होता है।

सुवाल : ए'तिराज़ अभी भी बाक़ी है कि तस्दीके क़ल्बी एक ख़सलत है, इस में कमी बेशी का इम्कान कैसे ?

जवाब : अगर दोग़ले पन को छोड़ कर और फ़सादियों के शोरो शग़ब से बे परवाह हो कर हक़ीक़त से पर्दा उठाया जाए तो ए'तिराज़ दूर हो सकता है। सुनिये ! लफ़्ज़े इमान इस्मे मुश्तरक़ है (या'नी वोह इस्म जिस के कई मअानी हों), येह तीन मा'ना में इस्ति'माल होता है।

पहला मा'ना : उस तस्दीके क़ल्बी को ईमान कहा जाता है जो अक़ीदे और तक्लीद के तौर पर हो, इस में असरारो रुमूज़ पर मुत्तलअ होना और ईमान के मुतअल्लिक़ गहराई से जानना शामिल नहीं होता। ईमान का येह दर्जा अ़वाम बल्कि हर मख़्लूक़ को हासिल होता है। ख़वास इस से ऊपर हैं। इस दर्जे का ए'तिक्दाद दिल पर धागे की गिरह की तरह एक गिरह है जो कभी सख़्त व मज़बूत हो जाती है और कभी नर्म व कमज़ोर पड़ जाती है और ऐसा होना मुमकिन है। जैसे अपने अक़ाइद में मुतशद्दिद यहूदी, ईसाई या बद मज़हब की मिषाल ले लीजिये जिसे उस के मज़हब से हटाने के लिये कोई धमकी कारगर नहीं होती। वसाविस, तहक़ीक़ व दलील और वा'ज व नसीहत उस के लिये बे अषर होते हैं। लेकिन बा'ज ऐसे लोग भी होते हैं जो मुख़्तसर सी गुफ़्तगू से भी शक़ में पड़ जाते हैं। ज़रा सी धमकी या लचकदार कलाम के सबब वोह अपने

अक़ाइद को छोड़ने पर तय्यार हो जाते हैं। हालांकि उन्हें अपने अक़ाइद में शक नहीं होता जिस तरह पहली किस्म वाले लोगों को नहीं होता लेकिन इन दोनों किस्म के लोगों में अक़ीदे की पुख़्तगी का फ़र्क़ होता है। पुख़्तगी और शिद्दत का यह फ़र्क़ हमारे सच्चे अक़ीदे के हामिल लोगों में भी पाया जाता है। अक़ीदे की पुख़्तगी और बढ़ोतरी में अमल की वोही अहमिय्यत है जो दरख़्त की नश्व व नुमा में पानी की है। इसी लिये **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

(پ ۱۱، التوبه: ۱۲۴)

فَزَادْتُمْ اِيَّائَنَا

तर्जमए कन्जुल ईमान : इन के ईमान को उस ने तरक्की दी।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

(پ ۲۶، الفتح: ۴)

لِيَزِدَّادُ اِيَّائَنَا مَعِ اِيَّائِهِمْ ط

तर्जमए कन्जुल ईमान : ताकि इन्हें यकीन पर यकीन बढ़े।

बा'ज अहादीष में यह फ़रमान भी मौजूद है कि “اَلْاِيْمَانُ يَزِيْدُ وَيَنْقُصُ” या'नी : ईमान घटता बढ़ता है।”⁽¹⁾ और यह घटना बढ़ना दिल में इबादत की ताषीर के ए'तिबार से होता है।

ईमान घटने बढ़ने की कैफ़ियत जानने वाला :

इसे सिर्फ़ वोही शख्स मा'लूम कर सकता है जो हुजूरे क़ल्ब के साथ की जाने वाली इबादत के अवक़ात और इन के इलावा अवक़ात का आपस में मुवाज़ना करे, तो वोह जान लेगा कि वक़्ते इबादत ईमान इस क़दर मज़बूत होता है कि किसी वस्वसा डालने वाले का वस्वसा उस को अपनी गिरिफ़्त में नहीं ले सकता। इसी तरह यतीम पर शफ़क़त का ए'तिक़ाद रखने वाला शख्स अपने ए'तिक़ाद पर अमल करते हुए यतीम के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरे और उस के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आए तो वोह अपने इस अमल के सबब दिल में ए'तिक़ादे शफ़क़त को मज़ीद मज़बूत होता महसूस करेगा। यूँही अज़िज़ी का खूगर जब अज़िज़ी वाला अमल करेगा या दूसरे के सामने अज़िज़ी व इन्किसारी करेगा तो उसे अपने इस अमल की बिना पर दिल में अज़िज़ी की ज़ियादती महसूस होगी।

आलमे ज़ाहिरे और आलमे बैब :

येही हाल तमाम क़ल्बी सिफ़ात का है। इन सिफ़ात के ज़ेरे अषर आ'जा अमल करते हैं फिर आ'माल का अषर उन सिफ़ात पर पड़ता है जो उन्हें मज़बूत और ज़ियादा करता है। इस का मज़ीद बयान नजात देने वाले आ'माल और हलाक करने वाले आ'माल के बाब में आएका जहां बातिन के ज़ाहिरे के साथ और आ'माल के अक़ाइद व कुलूब के साथ वाबस्ता होने की वजह

भी बयान की जाएगी क्योंकि येह अलमे ज़ाहिर के अलमे ग़ैब के साथ तअल्लुक की जिन्स से हैं। मुल्क से मुराद अलमे ज़ाहिर है जिस का हवास से इल्म होता है और मलकूत से मुराद अलमे ग़ैब है जिसे नूरे बसीरत से जाना जा सकता है। **दिल अलमे ग़ैब से और आ'जा व आ'माल अलमे ज़ाहिर से हैं।** इन दोनों अलमों में इस क़दर लतीफ़ तअल्लुक है कि बा'ज ने इन दोनों को एक ही समझा और बा'ज ने कहा कि “अलमे ज़ाहिर जो अज्जामे महसूसा पर मुश्तमिल है” के इलावा और कोई अलम नहीं। जिस शख्स ने इन दोनों अलमों के वुजूद और इन के अलग अलग होने को जाना और आपस में इन की वाबस्तगी को समझा उस ने अपने ख़यालात का इज़हार इस तरह किया :

رَقَّ الزُّجَابُ وَرَقَّتِ الْخُمُرُ وَتَشَابَهَتْ فَتَشَاكَلُ الْأُمُرُ
فَكَانَ مَخْمَرٌ وَلَا قَدَحٌ وَكَانَ مَقْدَحٌ وَلَا خُمُرٌ

तर्जमा : रिक्कत के ए'तिबार से शीशा और शराब एक दूसरे के मुशाबेह हो गए, गोया शराब है प्याला नहीं या प्याला है शराब नहीं।

अब हम दोबारा अस्ल मक्सूद की तरफ़ आते हैं क्योंकि मज़कूरा बहूष का इल्मे मुआमला से कोई तअल्लुक नहीं लेकिन इन दोनों उलूमों (या'नी इल्मे मुआमला व इल्मे मुकाशफ़ा) के दरमियान भी तअल्लुक व वाबस्तगी है, इसी वजह से तुम्हें उलूमे मुकाशफ़ा हर दम उलूमे मुआमला की तरफ़ माइल होते नज़र आएंगे। हत्ता कि तकल्लुफ़ के साथ इन का इन्किशाफ़ भी हो जाता है। पस ईमान का येह वोह मा'ना है जिस की बिना पर ताअत को ज़ियादतिये ईमान का सबब जाना जा सकता है।

चमकता निशान और सियाह नुक्ता :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ इरशाद फ़रमाते हैं कि “ईमान एक चमकते निशान की तरह ज़ाहिर होता है। बन्दे के नेक आ'माल इस की चमक बढ़ाते और ज़ियादा कर देते हैं जिस से सारा दिल रोशन हो जाता है और मुनाफ़क़त एक सियाह नुक्ते की तरह ज़ाहिर होती है, बन्दा जब हुराम का मुर्तकिब होता है तो वोह नुक्ता बढ़ कर ज़ियादा हो जाता है, आख़िरे कार उस के पूरे दिल पर सियाही छा जाती है और उस पर मुहर लग जाती है। येही ख़त्म (या'नी मोहर) है।” फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह आयते तय्यिबा तिलावत फ़रमाई :

كَلَّا بَلْ رَانَ عَلَى قُلُوبِهِمْ (المطففين: १८)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : कोई नहीं, बल्कि उन के दिलों पर जंग चढ़ा दिया है।

दूसरा मा'ना : ईमान से तस्दीक़ और अमल दोनों मुराद लिये जाएं । जैसा कि रसूले करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : **“الْإِيمَانُ بَعْضُهُ وَسِعُوعٌ بَابًا”** या'नी : ईमान के 70 से ज़ाइद शो'बे हैं ।⁽¹⁾

एक रिवायत में है : **“لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ** या'नी ज़ानी ज़िना करते वक़्त मोमिन नहीं होता ।⁽²⁾

जब ईमान के मा'ना में अमल भी शामिल हो तो अमल की कमी बेशी का ख़ौफ़ नहीं होता । अस्ल ईमान या'नी तस्दीक़े क़ल्बी पर भी कमी बेशी का अषर होता है या नहीं ? येह ग़ौर तलब अम्र है और हम ने इशारा कर दिया कि येह भी इस अषर को क़बूल करता है ।

तीसरा मा'ना : ईमान से मुराद वोह यकीनी तस्दीक़ हो जो कश्फ़, शर्हें सद्र (सीने के खुलने) और नूरे बसीरत के साथ मुशाहदा करने से हासिल होती है । येह किस्म ज़ियादती क़बूल करने से दूर है । लेकिन मैं कहता हूं कि शको शुबा से ख़ाली यकीनी अम्र में भी इतमीनाने क़ल्ब एक जैसा नहीं होता जैसे दो एक से ज़ियादा होता है और आलम बनाया हुवा और हादिष है इन दोनों बातों में अगर्चे कोई शक़ नहीं लेकिन इन में यकीन की कैफ़ियत एक जैसी नहीं । तमाम यकीनी उमूर वज़ाहत और इतमीनाने क़ल्ब के दर्जात में मुख़लिफ़ होते हैं ।

ईमान के इन तीनों मअानी से षाबित हुवा कि अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का ईमान के मुतअल्लिक़ कमी बेशी का क़ौल करना बिल्कुल दुरुस्त है और क्यूं दुरुस्त न हो जब कि हदीषे पाक में भी आ चुका है कि **“जहन्नम से हर उस शख़्स को निकाल लिया जाएगा जिस के दिल में राई बराबर भी ईमान हो ।”**⁽³⁾

बा'ज़ रिवायात में **“दीनार बराबर”** के अल्फ़ाज़ भी वारिद हुए हैं ।⁽⁴⁾ अगर क़ब्ली तस्दीक़ में तफ़ावुत न हो तो इन मुख़लिफ़ मिक्दारों के बयान का क्या मतलब ?

①..... صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان عدد شعب الايمان..... الخ، الحديث: ٣٥، ص ٣٩، “شعبة” بدله “بَابًا”۔

②..... صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان نقصان الايمان..... الخ، الحديث: ٥٤، ص ٢٨۔

③..... صحيح البخارى، كتاب الايمان، باب زيادة الايمان ونقصانه، الحديث: ٢٢، ج ١، ص ٢٨۔

④..... صحيح البخارى، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالى وجوه يومئذ ناضرة..... الخ، الحديث: ٤٣٩، ج ٢، ص ٥٥٣۔

मसाला 3 : “إِنْ شَاءَ اللَّهُ” के साथ अपने मोमिन होने का इक्कार करना

सवाल : अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُ اللَّهِ السَّلَام के इस कौल का क्या मतलब है कि “मैं मोमिन हूं إِنْ شَاءَ اللَّهُ ?” हालांकि इस्तिषना शक होता है और ईमान में शक कुफ़र है। ये सब हज़रात अपने मोमिन होने का जवाब क़तइय्यत के साथ नहीं देते थे और इस से इजतिनाब करते थे। जैसे,

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं जो कहे : “मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां मोमिन हूं वोह बड़ा झूटा है।” और जो कहे : “मैं हकीक़ी मोमिन हूं वोह बिदअती है।” जो हकीक़त में अपने आप को मोमिन समझता है वोह झूटा कैसे और हकीक़त में अपने आप को मोमिन समझने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां भी मोमिन है। जैसे अगर कोई हकीक़त में लम्बा या सख़ी है और वोह इस बात को जानता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां भी ऐसा ही होगा। इसी तरह खुश या ग़मगीन या देखने सुनने वाला भी है। अगर किसी इन्सान से पूछा जाए “क्या तुम जानदार हो ?” तो वोह येह जवाब देना मुनासिब नहीं समझेगा कि “मैं जानदार हूं إِنْ شَاءَ اللَّهُ”(1)

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने जब येह बात कही तो उन से पूछा गया कि “हम क्या कहें ?” तो फ़रमाया : “तुम यूँ कहो ! हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा”(2)

येह कौल कि “हम ईमान लाए **अल्लाह** पर और उस पर जो हमारी तरफ़ उतरा” और “मैं मोमिन हूं” इन दोनों जुम्लों में क्या फ़र्क़ है ?

ऐ हसन ! तू झूटा है :

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से पूछा गया : “क्या आप मोमिन हैं ?” जवाब दिया : “إِنْ شَاءَ اللَّهُ” फिर कहा गया : “ऐ अबू सईद ! अपने ईमान का इक्कार إِنْ شَاءَ اللَّهُ के साथ करने की क्या वजह है ?” फ़रमाया : “मुझे डर है कि मैं “हां” कहूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाए : “ऐ हसन ! तूने झूट बोला” और मुझ पर कलिमए इलाही (या’नी अज़ाबे खुदावन्दी) लाज़िम हो जाए।”

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे : “मुझे इस बात का खटका लगा रहता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे कुछ नापसन्दीदा आ’माल देखे और मुझ से नाराज़ हो कर फ़रमा दे : “जा ! मैं तेरा कोई अमल क़बूल नहीं करता” और मैं बे फ़ाइदा अमल करता रहूं।”(3)

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٣٠۔

②.....المرجع السابق۔ ③.....المرجع السابق۔

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمُ फ़रमाते हैं : जब तुम से पूछा जाए कि क्या तुम मोमिन हो ? तो तुम जवाब दो : لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ) । एक रिवायत में है यूं कह दो : मुझे अपने ईमान में शक नहीं और तेरा मुझ से सुवाल करना बिदअत है ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अल्क़मा बिन कैस नख़्ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي से पूछा गया : “क्या आप मोमिन हैं ?” तो फ़रमाया إِنَّ شَاءَ اللَّهُ मुझे येही उम्मीद है ।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (अपना मोमिन होना यूं बयान) फ़रमाते हैं : “हम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ, उस के फ़िरिशतों उस की किताबों और उस के रसूलों पर ईमान लाए । हमें येह मा'लूम नहीं कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में हम क्या हैं ?”⁽³⁾ तो इस तरह इस्तिषना के साथ अपने ईमान को बयान करने का क्या मतलब है ?

जवाब : येह इस्तिषना बिल्कुल दुरुस्त है । इस की चार वुजूहात हैं । दो का तअल्लुक शक से है लेकिन यहां शक अस्ले ईमान में नहीं बल्कि ख़ातिमए ईमान और कमाले ईमान में है और दो का शक से कोई तअल्लुक नहीं ।

जिन दो का शक से तअल्लुक नहीं :

पहली वजह : जिस का शक से कोई तअल्लुक नहीं बल्कि इस ख़ौफ़ की बिना पर हतमी जवाब देने से इजतिनाब किया जाता है कि कहीं अपने नफ़्स की पाकीज़गी व बड़ाई खुद बयान करना लाज़िम न आए (कि येह मज़मूम है) ।

जैसा कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मुबारक इरशादात हैं :

﴿1﴾

فَلَا تُزَكُّوا أَنْفُسَكُمْ^ط (प २, النجم: ३२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो आप अपनी जानों को सुथरा न बताओ ।

﴿2﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْكُونَ أَنْفُسَهُمْ^ط (प ५, النساء: २९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या तुम ने उन्हें न देखा जो खुद अपनी सुथराई बयान करते हैं ।

﴿3﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ^ط (प ५, النساء: ५०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : देखो ! कैसा **अल्लाह** पर झूट बांध रहे हैं ।

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج २، ص २३० -

③.....المرجع السابق -

②.....المرجع السابق -

बुरा सच :

किसी दाना से पूछा गया : “किस सच्चाई में बुराई है ?” फ़रमाया : “आदमी का खुद पसन्दी में मुब्तला होना ।” ईमान तो बुजुर्ग सिफ़त में से एक अज़ीम सिफ़त है और इस सिफ़त का हतमी इक़रार मुतलक़न खुद सताई है और इस्तिषना (या'नी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ**) के अल्फ़ाज़ गोया अपनी बड़ाई बयान करने से बचने के लिये हैं । जैसे किसी शख्स से पूछा जाए कि “क्या आप हकीम हैं या मुफ़्ती या मुफ़स्सिर ?” वोह ज़वाब दे : “जी हां ! **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** !” इस तरह का ज़वाब शक पर मब्नी नहीं बल्कि अपनी ता'रीफ़ खुद करने से बचने का हीला है । जिस से नफ़से ख़बर में जौ'फ़ और तरहुद आ जाता है । इस का मतलब येह है कि ख़बर से लाज़िम आने वाली चीज़ को कमज़ोर करना मक्सूद है और वोह चीज़ खुद सताई है ।

इस तावील को मद्दे नज़र रखते हुए येह ज़ेह्न नशीन रहे कि अगर किसी से मज़मूम सिफ़त के मुतअल्लिक़ पूछा जाए तो उस के ज़वाब में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** नहीं कहा जाएगा ।⁽¹⁾

दूसीर वजह : इस कलिमे (**إِنْ شَاءَ اللَّهُ**) से मक्सूद हर हाल में यादे इलाही और हर मुआमला मशिय्यते खुदावन्दी के सिपुर्द करना है । जैसे रब्बे करीम **عَزَّ وَجَلَّ** ने अपने प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को ता'लीम फ़रमाई । चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَئٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۚ
إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ (پ ۵، الکہف: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हरगिज़ किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि **अल्लाह** चाहे ।

फिर इस बात को सिर्फ़ शक वाले कामों तक ही महदूद नहीं रखा बल्कि इरशाद फ़रमाया :

لَتَدْخُلَنَّ السُّجْدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
أَمْنَيْنِ ۖ مُحَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ ۚ
(پ ۲۶، الفتح: ۲۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अगर **अल्लाह** चाहे अमन व अमान से अपने सरों के बाल मुंडाते या तरशवाते ।

हालांकि **अल्लाह** तबारक व तआला को बखूबी मा'लूम था कि मुसलमान लाज़िमी तौर पर मक्का में दाख़िल होंगे, येही उस की मशिय्यत भी थी, लेकिन इस अन्दाज़े बयान से मक्सूद अपने प्यारे नबी **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को ता'लीम देना था ।

①.....जैसे पूछा जाए कि “क्या तुम चोर हो ?” तो इस का ज़वाब **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** से देना मन्अ है ।

क़ब्रिस्तान में सलाम करने का तरीका :

हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ का मा'मूल था कि जिस अम्र की भी ख़बर देना चाहते ख़्वाह वोह ज़न्नी होता या यकीनी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कहते। यहां तक कि जब क़ब्रिस्तान से गुज़र होता तो फ़रमाते : **يَا نَبِيَّ السَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ** : ऐ मोमिन क़ौम की जमाअत ! तुम पर सलाम हो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हम भी तुम से मिलने वाले हैं।⁽¹⁾

हालांकि मोमिनों के साथ मिलना (या'नी वफ़ात पाना) एक यकीनी अम्र है। लेकिन अदब का तकाज़ा येह है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र किया जाए और हर अम्र का तअल्लुक उस की मशिय्यत से जोड़ा जाए और येह अल्फ़ाज़ **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ)** इसी मा'ना को अदा करते हैं। हत्ता कि अ़वामुन्नास में इन अल्फ़ाज़ को शौक व तमन्ना के इज़हार के लिये भी इस्ति'माल किया जाता है। जैसा कि अगर आप को बताया जाए कि फुलां शख्स जल्द ही मरने वाला है और आप कहें : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** तो इस बात से येह अन्दाज़ा नहीं होगा कि आप को उस की मौत में शक है बल्कि येह कि आप को उस की मौत में रग़बत है और जब आप को बताया जाए कि फुलां शख्स अ़न क़रीब बीमारी से शिफ़ा पाने वाला है और आप कहें : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** तो इस का मतलब रग़बत लिया जाएगा। पस मुआमला ख़्वाह कोई भी हो इन अल्फ़ाज़ **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ)** को शक वाले मा'ना से रग़बत वाले मा'ना और ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ फैरा गया है।

जिन दो का शक से तअल्लुक है :

तीसरी वजह : जिस का तअल्लुक शक से है। इस का मतलब है मैं सच्चा मोमिन हूं **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** क्यूंकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने मख़सूस लोगों की शान में इरशाद फ़रमाया :

تَرْجُمَةُ كَنْزُ الْجَدِيدِ : يَهْدِي سَبِيلَ الْمُسْلِمَانِ هَئِهِ **أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا** (پ ۹، الانفال: ۴)

इस आयत से षाबित हुवा कि मोमिनों की दो अक्साम हैं (कामिल, ग़ैरे कामिल) चुनान्वे, शक कमाले ईमान में है न कि अस्ले ईमान में और कमाले ईमान में तो हर एक को शक हो सकता है, जो कि कुफ़्र नहीं। दो वजह से कमाले ईमान में शक दुरुस्त है : (1)....मुनाफ़क़त कमाले ईमान को दूर कर देती है और निफ़ाक़ एक मख़फ़ी अम्र है जिस से नजात यकीनी तौर पर मा'लूम नहीं होती। (2)....आ'माले सालेहा से ईमान कामिल होता है और आदमी कामिल तौर पर आ'माल के वुजूद का इल्म नहीं रखता।

अमल के मुतअल्लिक 5 फ़रामीने बारी तआला :

﴿1﴾

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّدِيقُونَ ﴿١٥﴾

(پ ۲۶، الحجرات: ۱۵)

शक उस सिद्क में होता है (जो कामिल मुसलमानों का वस्फ़ है, न कि अस्ले ईमान में) ।

﴿2﴾

وَلَكِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَالسَّيِّئَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ ۚ (پ २, البقرة: १८८)

इस आयते मुबारका में मुसलमानों के 20 औसाफ़ बयान किये गए हैं । जैसे वा'दा वफ़ाई और मसाइब पर सब्र करना । फिर इरशाद फ़रमाया :

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا ۚ (پ २, البقرة: १८८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ईमान वाले तो वोही हैं जो **अल्लाह** और उस के रसूल पर ईमान लाए फिर शक न किया और अपनी जान और माल से **अल्लाह** की राह में जिहाद किया वोही सच्चे हैं ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां ! अस्ली नेकी येह कि ईमान लाए **अल्लाह** और क़ियामत और फ़िरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येही हैं जिन्हों ने अपनी बात सच्ची की ।

﴿3﴾

يَرْفَعُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
أَوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجَاتٍ ۚ (پ २८, المجادلة: ११)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलन्द फ़रमाएगा ।

﴿4﴾

لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَ
قُتِلَ ۚ (پ २८, الحديد: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम में बराबर नहीं वोह जिन्हों ने फ़त्हे मक्का से क़ब्ल खर्च और जिहाद किया ।

﴿5﴾

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ ۚ (پ ३, آل عمران: १६३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह **अल्लाह** के यहाँ दर्जा दर्जा हैं ।

अमल के मुतअल्लिक 2 फरामैने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....الْإِيمَانُ عُرْبَانٌ وَكِسَاءُ التَّقْوَى يَا'नी ईमान बे लिबास है इस का लिबास तक्वा है ।⁽¹⁾

﴿2﴾.....الْإِيمَانُ بَضْعٌ وَسَعُوءٌ بَابًا أَدْنَاهَا إِمَاطَةُ الْأَذَى عَنِ الطَّرِيقِ.....(2) कमतर, रास्ते से तक्लीफ़ देह चीज़ दूर करना है ।

इन आयात व रिवायात से मा'लूम होता है कि कमाले ईमान आ'माले सालेहा के सबब हासिल होता है ।

(अब वोह रिवायात मुलाहज़ा फ़रमाइये, जिन से मा'लूम होता है कि) मुनाफ़क़त और शिके ख़फ़ी (या'नी रियाकारी) से दूरी, ईमान को कमाल बख़्शाती है । चुनान्वे,

निफ़ाक़ की मज़मूत में वारिद 19 रिवायात व अक्वाल

﴿1﴾.....أَرَبُّهُ مَنْ كُنَّ فِيهِ فَهُوَ مُنَافِقٌ خَالِصٌ وَإِنْ صَامَ وَصَلَّى وَزَعَمَ أَنَّهُ مُؤْمِنٌ مَنْ إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ وَإِذَا عَاهَدَ خَلَفَ وَإِذَا اتَّيَمَنَ خَانَ وَإِذَا خَاصَمَ فَجَرَ... (1) या'नी : जिस में येह चार ख़स्लतें हों वोह पक्का मुनाफ़िक़ है ख़्वाह वोह नमाज़ रोज़े का पाबन्द हो और खुद को मोमिन ख़याल करता हो :

(1)....जब बात करे तो झूट बोले (2)....जब वा'दा करे तो पूरा न करे (3)....जब उस के पास अमानत रखी जाए तो ख़ियानत करे और (4)....जब झगड़ा करे तो गालियां बके ।⁽³⁾

बा'ज़ रिवायत में “إِذَا عَاهَدَ غَدَرَ” या'नी जब वा'दा करे तो वफ़ा न करे ।” के अल्फ़ाज़ हैं ।⁽⁴⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “दिल चार किस्म के हैं : (1)....इन्तिहाई साफ़ जिस में चराग़ रोशन है येह मोमिन का दिल है । (2)....दो रुखा दिल,

जिस में ईमान भी है और मुनाफ़क़त भी । इस में ईमान की मिषाल सब्ज़ी की तरह है, जो मीठे पानी से नश्व व नुमा पाती है और मुनाफ़क़त की मिषाल उस नासूर की सी है जिसे पीप और गन्दा खून मज़ीद बढ़ाते हैं । तो इन दो में से जो ज़ियादा बढ़ा उसी का हुक्म लगेगा ।”⁽⁵⁾

(एक दिल वोह है जिस पर ग़िलाफ़ चढ़ा है और वोह अपने ग़िलाफ़ पर बन्धा है येह काफ़िर का दिल है । एक दिल वोह है जो औंधा पड़ा है येह मुनाफ़िक़ का दिल है ।)

①.....الفقيه والمتفقه، ذكر احاديث واخبار شتى، الحديث: ١٢٩، ج ١، ص ١٢٦ -

②.....صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان عدد شعب الايمان.....الخ، الحديث: ٣٥، ص ٣٩ - ٢٠ -

③.....المرجع السابق، الحديث: ٥٨، ٥٩، ٥٠، ٥١ - ④.....المرجع السابق، الحديث: ٥٨، ص ٥٠ -

⑤.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابى سعيد الخدرى، الحديث: ١١٢٩، ج ٢، ص ٣٦ -

एक रिवायत में है : **غُلِبْتُ عَلَيْهِ ذَهَبْتُ بِهِ** या'नी जो मादा ग़लिब आया वोह इसे ले जाएगा ।

﴿3﴾..... **أَكْثَرُ مُنَافِقِي هَذِهِ الْأُمَّةِ قُرَاؤُهَا** या'नी इस उम्मत के अकषर क़ारी मुनाफ़िक होंगे ।⁽¹⁾

﴿4﴾..... **الشِّرْكُ أَخْفَى فِي أُمَّتِي مِنْ دَيْبِ التَّمَلِّ عَلَى الصِّفَاءِ** या'नी मेरी उम्मत में शिर्क सख़्त पथ्थर पर रँगने वाली च्यूंटी से भी ज़ियादा मख़फ़ी है ।⁽²⁾

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं कि “ज़मानए रिसालत में कोई शख्स एक (ग़ैर मुनासिब) कलिमा कहता तो वोह ता वफ़ात मुनाफ़िक़ शुमार होता और अब मैं तुम से ऐसे कलिमात दिन में 10 बार सुनता हूँ ।”⁽³⁾

﴿6﴾.....बा'ज उ-लमा फ़रमाते हैं : “**أَقْرَبُ النَّاسِ مِنَ النِّفَاقِ مَنْ يَرَى أَنَّهُ بَرِيٌّ مِنَ النِّفَاقِ**” या'नी जो अपने आप को मुनाफ़क़त से दूर शुमार करे वोह मुनाफ़क़त के ज़ियादा क़रीब है ।”

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाया करते थे कि “ज़मानए रिसालत की ब निस्बत आज मुनाफ़िक़ीन की ता'दाद ज़ियादा है । उस दौर में वोह अपना निफ़ाक़ छुपाते थे और आज ज़ाहिर करते हैं ।”⁽⁴⁾

मुनाफ़क़त सच्चे और कामिल ईमान की ज़िद है । येह एक मख़फ़ी अम्र है । इस से ज़ियादा दूर वोही है जो इस से खाइफ़ रहता है और जो अपने आप को इस से नजात याफ़ता समझता है वोह इस के ज़ियादा क़रीब है ।

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي** के सामने बयान किया गया कि बा'ज लोग कहते हैं : “इस दौर में मुनाफ़क़त ख़त्म हो गई है ।” आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : “भाई ! अगर मुनाफ़िक़ हलाक़ हो जाएं तो (रास्तों में चलने वालों की कमी के बाइष)” तुम्हें रास्तों से वहशत होने लगे ।”

﴿9﴾.....इन्ही से या किसी और से मरवी है कि “अगर मुनाफ़िक़ीन की दुमें हों तो (इन की कषरत के बाइष) हमारा ज़मीन पर पाउं रखना मुश्किल हो जाए ।”

①.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الشاميين، حديث عقبة بن عامر الجهني، الحديث: ١٤٣٤٢، ج ٢، ص ١٣٣-

②.....فردوس الاخبار للديلمي، باب الشين، الحديث: ٣٢٩٠، ج ٢، ص ١٢-

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث حديفة بن اليمان، الحديث: ٢٣٣٣٤، ج ٩، ص ٨٠-

④.....صحيح البخاري، كتاب الفتن، باب اذا قال عند قوم شيئاً.....الخ، الحديث: ٤١١٢، ج ٢، ص ٢٢٤، بتغير قليل-

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की मौजूदगी में एक शख्स इशारों किनायों में हज्जाज बिन यूसुफ़ की बुराई करने लगा तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “क्या तुम उस की मौजूदगी में भी येह बात कर सकते हो ?” उस ने अर्ज़ की : “नहीं !” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “ज़मानए रिसालत में हम इस चीज़ को मुनाफ़क़त में शुमार करते थे ।” (1)

﴿11﴾.....सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : “مَنْ كَانَ ذَا لِسَانَيْنِ فِي الدُّنْيَا جَعَلَهُ اللّٰهُ ذَا لِسَانَيْنِ فِي الْآخِرَةِ” या’नी : जो दुनिया में दो ज़बानों वाला (या’नी दो रुखा) होगा **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ आख़िरत में भी उसे दो ज़बानों वाला बना देगा ।” (2)

﴿12﴾.....एक रिवायत में है : “شَرُّ النَّاسِ ذُو الْوَجْهَيْنِ الَّذِي يَأْتِي هَوْلًا بِوَجْهِهِ وَيَأْتِي هَوْلًا بِوَجْهِهِ” या’नी लोगों में से बदतरीन दो रुखा शख्स है जो इधर एक रुख़ के साथ आए और उधर दूसरे रुख़ के साथ ।” (3)

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی سے उन लोगों की बाबत पूछा गया जो कहते हैं कि हमें अपनी ज़ात पर मुनाफ़क़त का कोई ख़तरा नहीं तो आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَى عَلَیْهِ ने फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर मुझे अपना निफ़ाक़ से बरी होना मा’लूम हो जाए तो येह मेरे नज़दीक़ ज़मीन भर सोना मिलने से ज़ियादा पसन्दीदा है ।” (4)

﴿14﴾.....आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالَى عَلَیْهِ मज़ीद फ़रमाते हैं : “मुनाफ़क़त की पहचान येह है कि बन्दा दिल व ज़बान, ज़ाहिरो बातिन और अन्दरूनी व बैरूनी मुआमलात में मुख़्तलिफ़ हो ।” (5)

﴿15﴾.....एक शख्स हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अर्ज़ गुज़ार हुवा कि मुझे निफ़ाक़ से बहुत डर लगता है । आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “अगर तू मुनाफ़िक़ होता तो तू इस

1.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمر، الحديث: ٥٨٣٣، ج ٢، ص ٣٣٣، مفهوماً، ليس فيه ذكر الحجاج۔

قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩۔

2.....المعجم الاوسط، من اسمه مقدم، الحديث: ٨٨٨٥، ج ٤، ص ٣١٣۔

3.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩۔

صحيح مسلم، كتاب البر والصلة والآداب، باب ذم ذی الوجهین، الحديث: ٢٥٢٦، ص ١٢٠٣۔

4.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩۔

5.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩۔

से बे खौफ़ होता क्यूंकि मुनाफ़िक् मुनाफ़क़त से बे खौफ़ होता है।”⁽¹⁾

﴿16﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने 130, एक रिवायत के मुताबिक़ 150 सहाबए किराम رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ से मुलाक़ात की, येह तमाम नुफ़ूसे कुदसिय्या निफ़ाक़ से खौफ़ ज़दा रहते थे।”⁽²⁾

﴿17﴾.....एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के झुरमुट में तशरीफ़ फ़रमा थे, इस दौरान सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ने एक शख़्स का तज़क़िरा किया और उस की बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ की। इसी अषना में वोह शख़्स जूते हाथ में उठाए पहुंच गया, वुजू का अषर उस के चेहरे पर ज़ाहिर था पानी के क़तरे टपक रहे थे और पेशानी पर सजदों का निशान था। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ येही वोह शख़्स है जिस की हम ता'रीफ़ कर रहे थे।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे इस के चेहरे पर शैतानी कालक नज़र आ रही है।” उस शख़्स ने आ कर सलाम अर्ज़ किया और सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَانُ के साथ बैठ गया। रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से फ़रमाया : “तुझे **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! बता क्या जब तू यहां आया तो तेरे दिल में येह ख़याल पैदा नहीं हुवा कि इन में से कोई भी तुझ से बेहतर नहीं है ?” उस ने अर्ज़ की : “जी हां !”⁽³⁾

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन अल्फ़ाज़ के साथ दुआ मांगी : “اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَغْفِرُكَ لِمَا عَلِمْتُ وَلِمَا لَمْ أَعْلَمْ” या'नी : ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं उस चीज़ की जिसे मैं जानता हूं और उस की भी जिसे मैं नहीं जानता।” अर्ज़ की गई : “क्या आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ भी खौफ़ महसूस करते हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “मैं कैसे बे खौफ़ हो जाऊं, जब कि दिल रहमान عَزَّ وَجَلَّ की उंगलियों में से दो उंगलियों के दरमियान है जैसे चाहे बदल दे।”⁽⁴⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩۔

②.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٣٠۔

③.....مسند ابی یعلیٰ، مسند ابی بکر الصديق، الحديث: ٨٥، ج ١، ص ٥٩۔

④.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ٢، ص ٢٣٢۔

صحیح مسلم، کتاب القدر، باب تصرف اللہ تعالیٰ القلوب کیف شاء، الحديث: ٢٦٥٣، ص ١٢٢۔

﴿18﴾.....फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

وَبَدَأَ لَهُمْ مِّنَ اللَّهِ مَالٌ يَّكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٧﴾

(प २२, الزمر: ४७)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और उन्हें **अल्लाह** की तरफ़ से वोह बात ज़ाहिर हुई जो उन के ख़याल में न थी ।

इस आयत की तफ़सीर में बयान किया गया है कि “बा’ज आ’माल, लोग नेकियां समझ कर करते रहेंगे लेकिन बरोज़े क़ियामत वोह गुनाहों के पलड़े में होंगे ।”

﴿19﴾.....हज़रते सय्यिदुना सिरी सक़ती عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : अगर कोई शख़्स बाग़ में जाए जहां हर किस्म के दरख़्त हों, उन पर हर किस्म के परन्दे हों और हर परन्दा जुदा ज़बान में उस शख़्स से कलाम करे और कहे : “السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللَّهِ” या’नी : ऐ **अल्लाह** के वली ! तुम पर सलामती हो ।” येह सुन कर अगर उस का नफ़्स राहत महसूस करे तो वोह उन परन्दों का असीर (कैदी) है ।

फ़ारूकी व दाशनी तक्वा :

मज़क़ूर रिवायात व अक्वाल से मा’लूम होता है कि निफ़ाक़ की बारीकियों और शिकें ख़फ़ी की वजह से मुआमला ख़तरनाक है । इस से बे ख़ौफ़ नहीं रहा जा सकता । हत्ता कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से अपने बारे में पूछा करते थे कि “कहीं मेरा शुमार मुनाफ़िक्नीन में तो नहीं हुवा ?”

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِسَ سِرُّهُ الْغُورَانِي फ़रमाते हैं : “मैं ने बा’ज हुक्काम से कोई (ख़िलाफ़े शरअ) ” बात सुनी, तो उस का रद्द करने का इरादा किया (लेकिन ख़ामोश रहा) कि कहीं मेरे क़त्ल का हुक्म सादिर न कर दिया जाए और ऐसा मैं ने मौत के डर की वजह से नहीं बल्कि इस वजह से किया कि मौत के वक़्त कहीं मेरे दिल में मख़्लूक के सामने फ़ख़्र पैदा न हो जाए ।”

बहर हाल येह निफ़ाक़ अस्ले ईमान के नहीं बल्कि कामिल, हकीकी और ख़रे ईमान के ख़िलाफ़ होता है ।

निफ़ाक़ की अक़शाम :

निफ़ाक़ की दो किस्में हैं : (1)....वोह निफ़ाक़ जो दाइरए इस्लाम से ख़ारिज और मिल्लते कुफ़्फ़ार में दाख़िल कर दे और हमेशा हमेशा जहन्म में रहने वालों में शामिल कर दे ।

(2)....वोह निफ़ाक़ जो बन्दे को एक मख़सूस मुद्दत के लिये जहन्नमी बना दे, या बुलन्द दर्जात में कमी कर के सिद्दीकीन के मर्तबे से नीचे गिरा दे। इस किस्म में शक़ होता है इस लिये यहां **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कहना बेहतर है। मुनाफ़क़त की इस किस्म का सबब ज़ाहिर व बातिन का यक्सां न होना है। सिर्फ़ सिद्दीकीन ही **اَبْرَہٰمَ عَزَّوَجَلَّ** की खुफ़्या तदबीर से महफूज़ और खुद पसन्दी वग़ैरा जैसे उमूर से दूर होते हैं।

या एब्ब एَزَّوَجَلَّ वक्ते मौत सलामतिये ईमान नसीब फ़रमा !

चौथी वजह : जो शक़ की तरफ़ मन्सूब है। इस का तअल्लुक़ बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ के साथ होता है क्यूंकि बन्दा नहीं जानता कि मौत के वक्त उसे सलामतिये ईमान नसीब होगी या नहीं ? अगर ख़ातिमा कुफ़्र पर हुवा तो पूरी ज़िन्दगी के आ'माल ज़ाएअ हो जाएंगे कि आ'माल के अज्रो षवाब का दारोमदार ब वक्ते आख़िर सलामतिये ईमान पर मौकूफ़ है। मषलन किसी रोज़ादार से दोपहर के वक्त उस के रोज़े के सहीह होने के मुतअल्लिक़ पूछा जाए और वोह कहे : वाकेई ! मैं रोज़ादार हूं, इस के बाद दिन ही में वोह शख्स इफ़तार कर दे तो उस का झूट वाजेह हो जाएगा। क्यूंकि रोज़ा तभी सहीह माना जाएगा जब कि उसे पूरा दिन गुरूबे आफ़ताब तक काइम रखा जाए। पस जिस तरह रोज़े की सिहहत पूरे दिन पर मौकूफ़ है इसी तरह ईमान की सिहहत पूरी ज़िन्दगी पर मौकूफ़ है और इसे आख़िरी वक्त से क़व्ल साबिका हालत की बुन्याद पर सलामत कहा जाता है। जिस में शक़ और बुरे अन्जाम का ख़ौफ़ बाकी है। इसी वजह से ख़ौफ़े खुदा रखने वाले अक़षर बुजुर्ग़ गिर्या व ज़ारी करते हैं क्यूंकि हुस्ने ख़ातिमा गुज़श्ता का अन्जाम है और मशिय्यते अज़ली उसी वक्त ज़ाहिर होगी जब फैसला त़लब चीज़ का जुहूर होगा और इस का किसी भी बशर को इल्म नहीं होता और बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ अज़ली फैसले के जुहूर के ख़ौफ़ की तरह है। अक़षर अवकात ऐसा अज़ली फैसला मौजूदा हालत के ख़िलाफ़ होता है। तो कैसे मा'लूम कि वोह उन लोगों में से हो जिन के मुक़द्दर में भलाई लिख दी गई है ?

फ़रमाने बारी तआला है :

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ (پ ۲۶، ق: ۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आई मौत की सख़्ती हक़ के साथ

इस आयते मुक़द्दसा में “हक़” से मुराद फैसलए अज़ली है जिस का जुहूर मौत के वक्त होता है।

बा'ज बुजुर्ग़ानि दीन **رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْيُسَيْن** का फ़रमान है : “मीज़ाने अमल पर वोही अमल लाए जाएंगे जिन पर ख़ातिमा हुवा है।” (1)

1.....تفسير عبدالرزاق، سورة الانبياء، الحديث: ۱۸۶۷، ج ۲، ص ۳۸۷

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते थे कि “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जिसे अपने बुरे ख़ातिमे का ख़ौफ़ नहीं होता उस का ख़ातिमा बुरा होता है ।”⁽¹⁾

येह भी मन्कूल है कि “बा’ज़ गुनाहों की सज़ा बुरा ख़ातिमा है ।” हम इन से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की पनाह मांगते हैं ।

कहा जाता है कि “वोह गुनाह (जो बुरे ख़ातिमे का सबब बनते हैं)” विलायत व करामत का झूटा दा’वा करना है ।”

ईमान पर मिलने वाली मौत को शहादत पर तरजीह :

किसी अ़रिफ़ बिल्लाह का कौल है कि “अगर मुझे अपने कमरे ख़ास के दरवाज़े पर ईमान पर मौत मिल रही हो और शहादत इमारत के सद्र दरवाज़े (**MAIN ENTRANCE**) पर मुन्तज़िर हो तो (शहादत अगर्चे आ’ला दर्जे की सआदत है मगर) मैं कमरे के दरवाज़े पर मिलने वाली ईमान पर मौत को फ़ौरन क़बूल कर लूंगा कि क्या मा’लूम इमारत के सद्र दरवाज़े तक पहुंचते पहुंचते मेरा दिल बदल जाए ।”

एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं कि “अगर मैं किसी को 50 साल तक मुसलमान जानूं, फिर मेरे और उस के दरमियान एक सुतून हाइल हो जाए और इसी दौरान वोह मर जाए तो मैं हतमी तौर पर येह नहीं कहूंगा कि इसे देने इस्लाम पर मौत आई है ।”

हदीषे पाक में है : जो कहे : “मैं मोमिन हूं” वोह काफ़िर है और जो कहे : “मैं अ़ालिम हूं” वोह जाहिल है ।⁽²⁾

फ़रमाने बारी तअ़ाला है :

وَتَبَّتْ كَلْبَتُ رَبِّكَ صَدَقًا وَعَدًا ط

(پ۸، الانعام: ۱۱۵)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और पूरी है तेरे रब्ब की बात सच और इन्साफ़ में ।

इस आयते मुबारका की तफ़्सीर में कहा गया है कि जिस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा उस के लिये सिद्क़ और जिस का ख़ातिमा शिर्क़ पर हुवा उस के लिये अ़द्ल है ।

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس والثلاثون فيه ذكر اتصال الايمان.....الخ، ج ۲، ص ۲۲۸۔

②.....تفسير ابن كثير، سورة النساء: ۴۹، ج ۲، ص ۲۹۲۔

المعجم الاوسط، من اسمه محمد، الحديث: ۶۸۴۶، ج ۵، ص ۱۳۹۔

फ़रमाने बारी तआला :

وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤﴾ (پہلے، الحج: ٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही के लिये सब कामों का अन्जाम ।

लिहाज़ा जब (सलामतिये ईमान में) इस क़दर शक हो तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कहना ज़रूरी हुवा । क्यूंकि ईमान वोही है जिस के नतीजे में जन्नत मिले । जैसे रोज़ादार उसे ही कहेंगे जो बरियुज़्ज़िम्मा कर दे । जो रोज़ा गुरूबे आफ़ताब से पहले फ़ासिद हो जाए, वोह बरियुज़्ज़िम्मा नहीं करता लिहाज़ा जिस तरह वोह रोज़ा रोज़ा नहीं कहलाएगा इसी तरह ईमान का भी मुआमला है, बल्कि होना तो येह चाहिये कि अगर कोई आप से गुज़श्ता रखे हुए रोज़े के बारे में पूछे कि क्या कल आप रोज़े से थे ? तो जवाब में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कहना चाहिये क्यूंकि अस्ल रोज़ा तो वोही कहलाएगा जो बारगाहे खुदावन्दी में दर्जए क़बूलिय्यत पा ले और क़बूलिय्यत पोशीदा उमूर में से है जिस का इल्म सिर्फ़ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के पास है । इसी वजह से बेहतर है कि हर अमले ख़ैर के साथ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कहा जाए और येह क़बूले अमल में शक की बुन्याद पर कहा जाएगा । क्यूंकि अमले सालेह के सहीह होने की ज़ाहिरी शराइत पूरी करने के बा'द कुछ पोशीदा उमूर क़बूले अमल में रुकावट बन जाते हैं जिन का इल्म रब्बुल आलमीन **جَلَّ جَلَالُهُ** को ही होता है । लिहाज़ा उस शक को अच्छा क़रार दिया जाएगा ।

येह वोह वुजूहात हैं जिन की बिना पर अपने ईमान का इक़रार **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** के साथ किया जाता है । येह वोह आख़िरी बहूष है जिस पर हम अपने बाब “**قَوَاعِدُ الْعُقَاةِ**” को नुक्ताए इख़िताम की तरफ़ लाए हैं ।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ येह बाब इख़िताम को पहुंचा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की रहमतें हों हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर और हर बरगुज़ीदा बन्दे पर ।



﴿.....تَوَبُّوْا إِلَى اللَّهِ أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ.....﴾

﴿.....صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّيْ اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

तहारत का बयान

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने बन्दों पर लुत्फो करम फ़रमाते हुए उन्हें पाकीज़गी का हुक्म फ़रमाया और उन के बातिन को पाक करने के लिये उन पर मेहरबानियों का फ़ैज़ान जारी किया उन के ज़ाहिर को पाक करने के लिये रक़ीक़ और बहने वाला पानी बनाया और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो जिन का नूरे हिदायत काइनात के गोशे गोशे को मुहीत है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पाकीज़ा आल पर ऐसी रहमत हो जिस की बरकात महशर के दिन हमें नजात दिलाएं नीज़ हमारे और हर मुसीबत के दरमियान ढाल का काम दें।

तहारत के मुतअल्लिक़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चन्द फ़रामीन मुलाहज़ा फ़रमाइये :

तहारत के मुतअल्लिक़ तीन फ़रामीने मुख़फ़ा

﴿1﴾ يَا نَبِيَّ الدِّينِ عَلَى النِّظَافَةِ..... (1)

﴿2﴾ يَا نَبِيَّ نَمَاज़ की कुन्जी तहारत है। (2)

(पाकीज़गी हासिल करने वालों की फ़ज़ीलत में) इरशादे बारी तआला है :

فِيهِ رَجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿١٠٨﴾ (پ ۱۱، التوبة: ۱۰۸)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं।

﴿3﴾ يَا نَبِيَّ الْإِيمَانِ..... (3)

कुरआने पाक में इरशाद होता है :

مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ (پ ۶، المائدة: ۶)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** नहीं चाहता कि तुम पर कुछ तंगी रखे हां येह चाहता है कि तुम्हें ख़ूब सुथरा कर दे।

①.....الشفاء بتعريف حقوق المصطفى، الباب الثاني في تكميل محاسنه، فصل وأمانظافة جسمه.....الخ، ج ۱، ص ۶۱۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فرض الوضوء، الحديث: ۶۱، ج ۱، ص ۵۶۔

③.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۵۳۰، ج ۵، ص ۳۰۸۔

इन रिवायात के ज़ाहिर से अहले बसीरत ने जान लिया कि सब से ज़ियादा अहम्मियत बातिन की सफ़ाई की है क्योंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के इस फ़रमान कि “सफ़ाई निस्फ़ ईमान है” का येह मफ़हूम हरगिज़ नहीं हो सकता कि ज़ाहिर को तो पानी बहा कर पाक कर लिया जाए मगर बातिन को गन्दगियों से पाक न किया जाए।

तहारत के दर्जात :

तहारत के चार दर्जात हैं : (1) ज़ाहिर को नापाकियों, नजासतों और पाख़ाने वगैरा से पाक करना (2) आ'जा को जराइम और गुनाहों से पाक करना (3) दिल को बुरे अख़्लाक और नापसन्दीदा ख़स्लतों से पाक करना (4) बातिन को गैरुल्लाह से पाक करना।

आख़िरी दर्जे की तहारत अम्बिया व सिद्दीकीन की तहारत है। हर रुत्बे में तहारत उस अमल का निस्फ़ है जिस में वोह पाई जाती है। मषलन बातीनी अमल (या'नी चौथे दर्जे) में मक्सूद येह है कि इस के लिये **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की जलालत व अज़मत ज़ाहिर हो जाए और मा'रिफ़ते इलाही बातिन में उस वक़्त तक जागुर्ज़ी नहीं हो सकती जब तक कि गैरे खुदा का ख़याल दिल से न निकल जाए। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

قُلِ اللَّهُ لَا شَمَدٌ رَّحْمٌ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩١﴾
(پ ۱، الانعام: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहुदगी में खेलता।

क्योंकि येह दोनों चीज़ें एक दिल में जम्अ नहीं हो सकतीं (और किसी के दो दिल हो नहीं सकते)। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ۖ
(پ ۲، الاحزاب: ۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने किसी आदमी के अन्दर दो दिल न रखे।

और जहां तक दिल की पाकीज़गी (या'नी तीसरे दर्जे) का मुआमला है तो इस में अस्ल मक्सूद दिल की तहारत है और इस के दो दर्जे हैं : (1) दिल को अच्छे अख़्लाक और शरई अक़ाइद से आबाद करना और (2) बुरे अक़ाइद और नापसन्दीदा ख़स्लतों से पाक रखना इन में से एक दर्जा दूसरे के लिये शर्त है। इस मा'ना के ए'तिबार से पाकीज़गी निस्फ़ ईमान है। दिल की तरह आ'जा की तहारत के भी दो दर्जे हैं : (1) इन्हें ममनूअत से पाक रखना और (2) ताआत से मुजय्यन करना। इस में पहला दर्जा दूसरे के लिये शर्त है। येह ईमान के दर्जात हैं और हर दर्जे के लिये एक तबक़ा है। बन्दा उस वक़्त तक बुलन्द दर्जे तक रसाई नहीं पा सकता जब तक निचले दर्जे से ऊपर न चला जाए।

बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ होने से मानेअ़ अमल :

बन्दा उस वक़्त तक बातिन को मज़मूम सिफ़ात से पाक और अच्छी आदत से आबाद नहीं कर सकता जब तक कि दिल को बुरी आदत से पाक और अच्छे अख़लाक से मुज़य्यन न कर ले और जो शख्स आ'जा को ममनूआत (नापसन्दीदा उमूर) से पाक और इबादत से मा'मूर न कर ले वोह बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ नहीं हो सकता । पस जब मतलूब काबिले इज़्ज़ो शरफ़ हो तो उस का रास्ता दुश्वार और तवील होता है और घाटियां ज़ियादा होती हैं । लिहाज़ा येह खयाल न किया जाए कि येह चीज़ बा आसानी हासिल हो जाएगी । अलबत्ता ! जो शख्स इन दर्जात में फ़र्क़ को नहीं समझ सकता वोह त़हारत का आख़िरी दर्जा ही समझ सकता है (या'नी ज़ाहिर को गन्दगियों और नजासतों से पाक करना) जो कि मतलूबा मज़ के ए'तिबार से आख़िरी ज़ाहिरी छिलका है वोह इस में बहुत ग़ौरो ख़ौज़ करता और इस के तरीक़ों में मुबालगा करता है । नीज़ अपने तमाम अवक़ात इस्तिन्जा करने, कपड़े धोने, ज़ाहिर की सफ़ाई करने और बहने वाले वाफ़िर पानी की त़लब में गुज़ार देता है क्यूंकि वोह अपने वस्वसे और अक्ली गुमान में येही समझता है कि त़हारत जो मतलूब है वोह येही है । ऐसा शख्स अस्लाफ़ की सीरत से ना वाक़िफ़ है और नहीं जानता कि अस्लाफ़ तो ज़ाहिरी उमूर के मुक़ाबले में अपनी तमाम फ़िक्र व हिम्मत और कोशिश दिल की सफ़ाई में लगा देते थे । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और दीगर अहले सुफ़्फ़ा फ़रमाते हैं कि “हम भुना हुवा गोश्त खाते फिर नमाज़ का वक़्त हो जाता तो हम अपनी उंगलियां कंकरियों में डाल कर मिट्टी से पौछ लेते और तक्बीर कहते ।”⁽¹⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “ज़मानए रिसालत में हम अश्नान (एक किस्म की बोटी जो साबुन की मिष्ल सफ़ाई का काम देती है)” के मुतअल्लिक़ नहीं जानते थे । हमारे रूमाल हमारे पाउं के तल्वे ही होते थे । जब हम चिकनाई वाली चीज़ खाते तो हाथों को तल्वों ही से साफ़ कर लेते थे ।⁽²⁾

सब से पहली बिदअतें :

मन्कूल है कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द सब से पहले चार बिदअतें ज़ाहिर हुई : (1)....छलनी (2)....अश्नान (3)....टेबल और (4)....पेट भर कर खाना ।

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الاطعمة، باب الشواء، الحديث: ۳۳۱۱، ج ۴، ص ۳۱۔

②.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۳۹۔

जूते पहन कर नमाज़ पढ़ना कैसा ?⁽¹⁾

अल गरज़ अस्लाफ़े किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام की तमाम तर तवज्जोह बातिन की सफ़ाई की तरफ़ हुवा करती थी यहां तक कि बा'ज़ का कौल है कि “जूते पहन कर नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आकाए दो अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तवज्जोह दिलाई कि ना'लैन पाक में कुछ लग गया है तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जूते उतार दिये, सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने भी जूते उतार दिये तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुम ने जूते क्यूं उतारे ?”^{(2) (3)}

①.....मुफ़स्सरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 469 पर इस हदीषे पाक कि “यहूद की मुख़ालफ़त करो वोह न जूतों में नमाज़ पढ़ते हैं न मौज़ों में” के तहत फ़रमाते हैं : या'नी यहूद जूते या मौज़े में नमाज़ जाइज़ नहीं समझते तुम जाइज़ समझो, ख़याल रहे कि मौज़ों में नमाज़ अदा करना सुन्नत है लेकिन जूते अगर पाक हों और इतने नर्म कि सजदे में हरज वाक़ेअ न हो कि पाउं की उंगलियां ब ख़ूबी मुड़ कर क़िब्ला रू हो सकें तो इन में नमाज़ जाइज़ है हमारे मुल्क की जूतियां नमाज़ के काबिल नहीं नीज़ अब लोग सहाबए किराम (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) जैसे बा अदब नहीं, अगर इन्हें जूतों में नमाज़ की इजाज़त दी जाए, तो मुसल्ले और मस्जिदें गन्दगी से भर देंगे इस लिये अब जूते उतार कर ही मस्जिदों में आना और नमाज़ पढ़ना चाहिये (از مرقاة و شامی) इस से मा'लूम हुवा कि बे दीनों की मुख़ालफ़त के लिये जाइज़ काम ज़रूर करना चाहियें जैसे इस ज़माने में मीलाद शरीफ़ और ग़्यारहवीं, (साहिबे) मिरकात ने फ़रमाया कि चूंकि अब यहूद हमारे अलाक़े में रहे नहीं, इस लिये अब जूता पहने हुए नमाज़ पढ़ने की ज़रूरत नहीं। ख़याल रहे कि मस्जिद या नमाज़ के अदब के लिये जूता उतारना कुरआन शरीफ़ से षाबित है। रब्ब (عَزَّ وَجَلَّ) फ़रमाता है : اِنَّكَ بِالْاَوَادِ الْمُبْدَسِ طَوًى (ب ١٢: ١٣) ऐ मूसा तुम इज़्ज़त वाले जंगल में हो जूते उतार दो, बा'ज़ बा अदब मुरीद अपने शैख़ के शहर में जूते नहीं पहनते, इमाम मालिक ज़मीने मदीना में कभी घोड़े या किसी और सुवारी पर सुवार न हुए, इन के आदाब का माख़ज़ येह आयत है और येह हदीष इस आयत के ख़िलाफ़ नहीं।

②.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب الصلاة فی النعل، الحديث: ٢٥٠، ج ١، ص ٢٦١۔

③....मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 470 पर इस हदीषे मुबारका के तहत है : येह सब कुछ थोड़ी सी हरकत से हुवा, वरना अमले कधीर नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। हदीष के जुज़ “जब क़ौम ने येह देखा तो उन्होंने ने भी अपने जूते उतार दिये” के तहत फ़रमाते हैं : इस से दो मस्अले मा'लूम हुए एक येह कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) की पैरवी बहर हाल की जाए वजह समझ में आए या न आए देखो सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को ना'लैन उतारते देखा तो बिगैर वजह की तहक़ीक़ किये जूते उतार दिये और सरकार ने इस इत्तिबाअ पर ए'तिराज़ न फ़रमाया, दूसरा येह कि सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) नमाज़ में बजाए सजदागाह के अपने ईमानगाह या'नी हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखा करते थे वरना इन्हें आप के

हज़रते सय्यिदुना इमाम नख्ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي (नमाज़ में) जूते उतारने का रद्द करते हुए जूते उतारने वालों के मुतअल्लिक़ फ़रमाया करते थे : “मैं चाहता हूँ कि कोई हाज़त मन्द आए और इन के जूते ले कर चलता बने ।”

नीज़ अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام (ज़ाहिरी) उमूर में बहुत कम तवज्जोह देते थे बल्कि गली कूचों के कीचड़ से नंगे पाउं गुज़र जाते, इस पर बैठ जाते, मसाजिद में ज़मीन पर (कुछ बिछाए बिगैर) नमाज़ अदा कर लेते, गन्दुम और जव का आटा इस्ति'माल कर लेते हालांकि वोह जानवरों के ज़रीए गाहा जाता और वोह इस पर चलते हैं, वोह नजासत में लोट पोट होने वाले ऊंटों और घोड़ों के पसीने से नहीं बचते थे । अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام में से किसी के मुतअल्लिक़ मन्कूल नहीं कि उस ने नजासत की बारीकियों के मुतअल्लिक़ सुवाल किया हो, इस मुआमले में वोह इस हद तक बे तवज्जोह रहते थे ।

बुराई नेकी और नेकी बुराई बन गई :

अब मुआमला यहां तक पहुंच गया है कि एक गुरौह ने जहालत का नाम पाकीज़गी रख दिया है और इसे दीन की बुन्याद क़रार देते हैं । उन का ज़ियादा वक़्त ज़ाहिर को संवार ने में गुज़रता है जैसा दुल्हन कंधी से बालों को संवारती है । जब कि उन का बातिन ख़राब और गुरूर व तकब्बुर, खुदपसन्दी, जहालत, रिया और निफ़ाक़ से भरा हुवा है और हृद तो येह है कि वोह

.....इस फ़ैल शरीफ़ की ख़बर कैसे होती जैसे मस्जिदे हरम शरीफ़ का नमाज़ी नमाज़ में का'बा को देखे ऐसे ही हुज़ूरصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पीछे नमाज़ पढ़ने वाला नमाज़ में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को देखे । हदीष के जुज़ “इन में गन्दगी है” के तहत फ़रमाते हैं : थूक रींट वगैरा घिन की चीज़ न कि पलीदी और नजासत वरना नमाज़ का लौटाना वाजिब होता क्यूंकि अगर गन्दे कपड़े गन्दे जूते में नमाज़ शुरू कर दी जाए फिर पता लगे तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ती है वाकिआ येह था कि हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ख़याल फ़रमाया येह चीज़ें पाक हैं इन के साथ नमाज़ पढ़ने में मुज़ाइक़ा नहीं रब्ब (عَزَّ وَجَلَّ) ने जिब्रीले अमीन (عَلَيْهِ السَّلَام) को भेजा कि प्यारे ! तुम्हारी शान के येह भी ख़िलाफ़ है तुम्हारे लिबास पाक भी चाहिये सुथरे भी लिहाज़ा हदीष पर न तो येह ए'तिराज़ है कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नमाज़ लौटाई क्यूं नहीं और न येह ए'तिराज़ कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपने ना'लैन की भी ख़बर नहीं औरों कि क्या ख़बर होगी जो शहनशाह ज़मीन पर खड़े हो कर अन्दरूनी ज़मीन का अज़ाब देख ले और अज़ाबे क़ब्र की वजह जान ले और जो येह फ़रमाए कि नमाज़ सहीह पढ़ा करो मुझ पर तुम्हारे रकूअ सजदे दिल का खुशुअ खुजुअ पोशीदा नहीं उस पर अपने ना'लैन का हाल कैसे छुपेगा ? इस हदीष से मा'लूम हुवा कि रब्ब तआला अपने हबीब की हर अदा की निगरानी फ़रमाता है क्यूं न हो खुद फ़रमाता है । (طور: ٢٨) فَأَنْتَ يَا عِيسَى (عَلَيْهِمُ الرُّضْوَان) ऐन नमाज़ में हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की अदाएं देखते थे और हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नक़ल करते थे ।

इन बुराइयों को नापसन्द नहीं जानते और न ही इन पर तअज़्जुब करते हैं। अगर कोई शख्स सिर्फ पथ्थर से इस्तिन्जा करे या ज़मीन पर नंगे पाउं चले या ज़मीन पर नमाज़ पढ़े या मुसल्ला बिछाए बिगैर मस्जिद की चटाई पर नमाज़ पढ़े या चमड़े का मौज़ा पहने बिगैर नंगे पाउं चले या किसी बुढ़िया या बे परवाह शख्स के बरतन से वुजू करे तो उस पर क़ियामत ढा देते और ए'तिराज़ करते हैं। उसे नापाक ठहराते और अपने गुरौह से ख़ारिज कर देते हैं। उस के साथ खाना पीना और मैल जोल रखना पसन्द नहीं करते और वोह शिकस्ता हाली ईमान का हिस्सा है उसे नापाकी ठहराते और तकब्बुर को पाकीज़गी का नाम देते हैं। ग़ौर कीजिये कि कैसे बुराई नेकी और नेकी बुराई बन गई और दीन के रस्मो रवाज ऐसे मिटते चले गए जैसे उस की हकीक़त व इल्म मिट गया।

एक शुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि सूफ़िया ने अपनी शक़ल व सूरत और पाकीज़गी के मुआमले में जो आदात अपना रखी हैं क्या हम इन्हें ममनूआत व मुन्किरात कह सकते हैं ? तो मैं कहूंगा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं बिगैर तफ़्सील के मुतलक़ ऐसी बात कहूँ लेकिन मैं कहता हूँ कि येह हुसूले पाकीज़गी, तकल्लुफ़, बरतन व आलात तय्यार करना, जूते इस्ति'माल करना, गर्दों गुबार से बचने के लिये चादर ओढ़ना और इस के इलावा अस्बाब को अगर ज़ाती तौर पर देखा जाए कोई दूसरी चीज़ मल्हूज़ न हो तो येह चीज़ें मुबाह हैं। बा'ज़ अवकात इन के साथ कुछ अहवाल और निय्यतें मुलहिक् होती हैं जो इन्हें कभी अच्छे कामों से मिला देती हैं और कभी बुरे कामों से।

अश्या का मुबाह, मज़मूम और महमूद होना :

जहां तक इन मज़कूरा चीज़ों के ज़ाती तौर पर मुबाह होने का तअल्लुक़ है तो येह बात मख़फ़ी नहीं कि बन्दा इन के ज़रीए अपने माल, बदन और कपड़ों में तसरुफ़ करता और इन के साथ जो चाहे करता है जब तक कि इसराफ़ और माल का ज़ियाअ न हो।

इन चीज़ों के मज़मूम होने की दो सूरतें हैं : (1) या तो इन्हें इस फ़रमाने रसूल की तफ़्सीर क़रार दे कर दीन की अस्ल क़रार दिया जाए कि **يُنَى الدِّينُ عَلَى النَّظَافَةِ** या'नी : दीन की बुन्याद पाकीज़गी पर है।" (1) हत्ता कि अस्लाफ़ की तरह जो इस पर कम तवज्जोह दे उस का रद्द किया जाए। (2) या इन चीज़ों का मक़्सद मख़लूक़ के लिये ज़ाहिरी ज़ैबाइश और उन जगहों को

संवारना है जहां लोगों की नज़र पड़ती है और येह रिया है जो कि ममनूअ है। पस इन दोनों वजहों से येह चीज़ें मुन्कर यानी बुरी हैं।

जहां तक अश्या का मा'रूफ़ (महमूद व नेकी) होने का तअल्लुक है तो इस से भलाई मक्सूद हो न कि जैबो जीनत और इसे तर्क करने वाले का रद्द न किया जाए, न इस के सबब अव्वल वक़्त से नमाज़ को मुअख़्बर किया जाए और न ही इस में मशगूल हो कर इस से अफ़ज़ल अमल या इल्म वगैरा को तर्क किया जाए। लिहाज़ा मजकूरा अफ़आल में से कोई चीज़ इस के साथ मिली हुई न हो तो येह जाइज़ है बल्कि हो सकता है कि अच्छी निय्यत से इबादत बन जाए लेकिन येह चीज़ निकम्मे लोगों को हासिल है कि अगर वोह नमाज़ में वक़्त सर्फ़ न करें तो नीन्द या फुजूल बातों में मशगूल हो जाएंगे तो उन का इस में मशगूल होना बेहतर है। क्यूंकि पाकीज़गी के हुसूल में मशगूलियत से ज़िक्रे इलाही और इबादात की याद ताज़ा होती रहती है। लिहाज़ा जब येह बुराई या इसराफ़ की तरफ़ न ले जाए तो इस में कोई हरज नहीं।

अहले इल्मो अमल के अवक़ात कीमती जोहर हैं :

अहले इल्मो अमल को अपने अवक़ात इन (या'नी तह़ारत व पाकीज़गी के) कामों में बक़दरे हाज़त ही सर्फ़ करने चाहियें। इन के हक़ में ज़ियादा वक़्त सर्फ़ करना बुरा और उस अम्र को जाएअ करना है जो कीमती जोहर और इस से नफ़अ उठाने पर कादिर शख़्स के लिये इन्तिहाई अज़ीज़ है और इस पर तअज्जुब नहीं करना चाहिये (कि एक ही चीज़ बा'ज के हक़ में बुरी है और बा'ज के हक़ में अच्छी) क्यूंकि नेकों की नेकियां मुकर्रबीन के लिये बुराइयां होती हैं और निकम्मे लोगों को ऐसा नहीं करना चाहिये कि वोह पाकीज़गी का एहतिमाम न करें और सूफ़िया का रद्द करें और खुद को सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ की मुशाबहत करने वाला गुमान करें क्यूंकि इन के साथ मुशाबहत तो तब है कि इस से अहम काम के लिये फ़ारिग़ हों। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना दावूद ताई رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ से पूछा गया कि “आप दाढ़ी में कंघी क्यूं नहीं करते ?” तो फ़रमाया : “मेरे पास इस के लिये वक़्त कहां ?”

(हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی फ़रमाते हैं :) इसी वजह से मैं आलिम, मुतअल्लिम (तालिबे इल्म) और अमल करने वाले के लिये जाइज़ नहीं समझता कि वोह धोबी के धोए हुए कपड़ों से एहतिराज़ करें और येह गुमान करें कि उस ने धोने में कोताही

की होगी⁽¹⁾ और यूँ खुद कपड़े धोने में वक़्त ज़ाएअ करें। पहले ज़माने में लोग दबाग़त किये हुए चमड़े पर नमाज़ पढ़ लेते थे इन में से किसी के बारे में मा'लूम नहीं कि उस ने त़हारत व नजासत के मुआमले में धुले हुए और दबाग़त किये हुए कपड़ों में फ़र्क़ किया हो बल्कि जब वोह खुद नजासत देखते तो उस से इजतिनाब करते और दकीक़ (या'नी गहरे और मुश्किल) एहतिमालात की तलाश में नहीं रहते थे बल्कि रिया व जुल्म की बारीकियों के बारे में सोचते थे।

फुज़ूल ख़र्ची पर मददगार :

एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی के रफ़ीके सफ़र ने एक मकान के बुलन्द व बाला दरवाज़े की तरफ़ देखा तो आप ने फ़रमाया : “ऐसा न कर क्योंकि अगर लोग इस मकान की तरफ़ न देखते तो मकान वाला इस पर इतना इसराफ़ न करता।” पस इस की तरफ़ देखने वाला भी फुज़ूल ख़र्ची पर मददगार है।

अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام अपने ज़ेहनों को इस तरह की बारीकियों में इस्ति'माल करते थे, नजासत के एहतिमालात के मुतअल्लिक़ ग़ौरो फ़िक़र नहीं करते थे।

दुन्या व माफ़ीहा से अफ़ज़ल :

अगर किसी अ़लिम को कोई ऐसा अ़म शख़्स मिले जो एहतियातन उस के कपड़े धोए तो अफ़ज़ल है कि येह सुस्ती की ब निस्बत बेहतर है और वोह अ़म शख़्स इस धोने के सबब नफ़अ हासिल करता है क्योंकि वोह बुराइयों का हुक्म देने वाले नफ़्स को फ़ी नफ़्सही जाइज़ काम में मशगूल रखता है। लिहाज़ा इस हाल में वोह गुनाहों से रुका रहता है कि अगर नफ़्स किसी काम में मशगूल न हो तो वोह इन्सान को (गुनाहों में) मशगूल कर देता है और अगर उस अ़म शख़्स का मक्सद अ़लिम का कुर्ब हासिल करना हो तो येह उस के नज़दीक अफ़ज़ल इबादत है और अ़लिम का वक़्त इस तरह के कामों में इस्ति'माल होने से अफ़ज़ल है तो यूँ येह वक़्त महफूज़ रहेगा और अ़म शख़्स का अफ़ज़ल वक़्त वोह है जो इस तरह के कामों में सफ़ हो और उसे हर तरफ़ से वाफ़िर भलाई मिलेगी।

①.....फ़तावा अमजदिय्या, जिल्द अव्वल, जुज़, 1. स. 30 ता 31 पर सदरुशशरीआ बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی से सुवाल हुवा कि “धोबी को अगर नापाक कपड़ा दिया जाए तो पाक हो कर आता है या नहीं।” जवाब में आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “बेहतर तो येही है कि पाक कर के धोबी को कपड़े दिये जाएं और नापाक कपड़ा दिया तो धुल कर पाक हो जाएगा।”

इस मिषाल से इस किस्म के दूसरे आ'माल, उन के फ़ज़ाइल की तरतीब और बा'ज के बा'ज पर मुक़द्दम होने के मुतअल्लिक मा'लूम करना चाहिये। जिन्दगी के लमहात को अच्छे कामों में सर्फ़ करने के लिये इन का हिसाबो किताब करना उमूरे दुन्या और इस के तमाम मालो अस्बाब में ग़ौरो फ़िक्र करने से अफ़ज़ल है।

जब आप ने इब्तिदाई कलाम समझ लिया और आप को मा'लूम हो गया कि त़हारत के चार दर्जात हैं तो येह भी जान लीजिये कि हम इस किताब में सिर्फ़ चौथे दर्जे या'नी ज़ाहिरी त़हारत पर कलाम करेंगे इस लिये कि किताब के पहले हिस्से में हम सिर्फ़ ज़ाहिरी त़हारत की बहूष करेंगे। चुनान्चे,

ज़ाहिरी त़हारत की अक्शाम :

ज़ाहिरी त़हारत (पाकी हासिल करने) की तीन किस्में हैं : (1)....नजासत से त़हारत (2).....नजासते हुकमी से पाकी हासिल करना (3)....बदन के फुज़लात से त़हारत और येह नाख़ुन काटने, (ज़ेरे बग़ल व ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करने के लिये) उस्तरा या चूना इस्ति'माल करने और ख़त्ना से हासिल होती है।



...मज़ार पर हाज़िरी का तरीक़ा...

बुजुर्गों के पास क़दमों की तरफ़ से हाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़हमत होती है। लिहाज़ा मज़ारे औलिया पर भी पाइंती (क़दमों) की तरफ़ से हाज़िर हो कर क़िब्ले को पीठ और साहिबे मज़ार के चेहरे की तरफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (दो गज़) दूर खड़ा हो और इस तरह सलाम अर्ज़ करे :

السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيَّ اللَّهِ وَرَحْمَةُ اللَّهِ وَبَرَكَاتُهُ

एक बार सूरए फ़ातिहा और 11 बार सूरए इख़्लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर दुआ मांगे। “أَحْسَنُ الْوَعَاءِ” में है वली के कुर्ब में दुआ क़बूल होती है। (माख़ूज़ अज़ मदनी पंज सूरह, स. 413)

बाब नम्बर 1 : नजासत से बहारत हासिल करना

इस में तीन फ़स्लें हैं : (1)....येह मदे नज़र रखना कि किस चीज़ को दूर किया जा रहा है (2)....किस चीज़ से दूर किया जा रहा है और (3).....दूर करने का तरीका क्या है ।

पहली फ़स्ल : **नाइल की नाबे वाली नजासत का बयाान**

अश्या तीन किस्म की हैं :

(1).....जमादात (2).....हैवानात और (3).....हैवानात के अज्जा । शराब और हर झाग वाली नशा आवर चीज़ के सिवा तमाम जमादात पाक हैं । कुत्ते और खिन्ज़ीर और इन दोनों या किसी एक से पैदा होने वालों के सिवा तमाम हैवानात पाक हैं । लेकिन जब येह मर जाएं तो पांच के इलावा तमाम हैवानात नापाक हो जाते हैं : (1).....इन्सान (2).....मछली (3).....मकड़ी (4)....सेब का कीड़ा और (5).....खाई जाने वाली हर वोह चीज़ जो अपनी अस्ली हालत पर न रहे और हर हैवान जिस में बहने वाला खून न हो जैसे मख्खी, गुबरीला (येह एक कीड़ा है जो गोबर में होता है) वगैरा । लिहाज़ा इन में से किसी के पानी में गिरने से पानी नापाक नहीं होता ।

हैवानात⁽¹⁾ के अज्जा की अक्शाम और इन का हुक्म :

जहां तक हैवानात के अज्जा का मुआमला है तो इन की दो किस्में हैं : (1)....वोह जिन्हें काटा जाता है और उन का हुक्म वोही है जो मुर्दा का है । बाल काटने और (जानवर के) मरने से नजिस नहीं होते जब कि हड्डी नजिस हो जाती है । (2).....अन्दर से निकलने वाली रुतूबात : जो तब्दील नहीं होतीं और न ही इन का कोई ठिकाना है वोह पाक हैं जैसे आंसू, पसीना, थूक और रींठ और जिन का कोई ठिकाना है और वोह बदल जाती हैं तो नापाक हैं (जैसे खून, पेशाब

①.....जिन जानवरों का गोश्त नहीं खाया जाता ज़ब्दे शरई से उन का गोश्त और चर्बी और चमड़ा पाक हो जाता है मगर खिन्ज़ीर कि उस का हर जुज़ नजिस है और आदमी अगर चर्चा त़ाहिर है उस का इस्ति'माल नाजाइज़ है । (दुरे मुख़्तार) इन जानवरों की चर्बी वगैरा को अगर खाने के सिवा ख़ारिजी तौर पर इस्ति'माल करना चाहें तो ज़ब्द कर लें कि इस सूरत में इस के इस्ति'माल से बदन या कपड़ा नजिस नहीं होगा और नजासत के इस्ति'माल की क़बाहत से भी बचना होगा । (बहारे शरीअत, जि. 3. हिस्सा. 15, स. 327)

और गन्दगी वगैरा)। अलबत्ता, जो हैवान की अस्ल हो वोह पाक है जैसे मनी⁽¹⁾ और अन्डा कि पाक हैं और तमाम हैवानात की पीप, खून, गोबर और पेशाब नजिस हैं। इन नजासतों में से पांच के इलावा किसी में से कुछ भी मुआफ़ नहीं अगर्चे थोड़ा हो (वोह पांच येह हैं) :

﴿1﴾.....पथ्थरों से इस्तिन्जा करने के बा'द नजासत का अषर जब तक मख़रज से तजावुज़ न करे, मुआफ़ है।

﴿2﴾....रास्तों की कीचड़ और गोबर का गुबार मुआफ़ है अगर इतनी नजासत के लगे होने का यकीन हो जिस से बचना मुश्किल है और येह वोह मिक्दार है कि इस शख्स के बारे में येह न कहा जाए कि इस ने अपने आप को कीचड़ में लथेड़ा है या येह उस में गिरा है।

﴿3﴾....मौजे के पीछे लगी हुई वोह नजासत⁽²⁾ कि इस से रास्ता ख़ाली नहीं होता लिहाज़ा रगड़ने के बा'द कुछ रह जाए तो वोह ज़रूरत के तहत मुआफ़ है।

①.....अहनाफ़ के नज़दीक मनी नापाक है। (माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि.1 हिस्सा. 2 स. 390) मनी वोह गाढ़ा सफ़ेद पानी है जिस के निकलने की वजह से ज़कर की तुन्दी और इन्सान की शहवत ख़त्म हो जाती है। (تحفة الفقهاء، ج 1، ص 24)

②....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूअ 40 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “कपड़े पाक करने का तरीका मअ नजासतों का बयान” में शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि دامت برکاتہم العالیہ नक्ल फ़रमाते हैं : नजासत की दो किस्में हैं : (1) नजासते ग़लीज़ा (غلیظہ) (2) नजासते ख़फीफ़ा (خفیفہ)। इन्सान के बदन से जो ऐसी चीज़ निकले कि इस से गुस्ल या वुजू वाजिब हो नजासते ग़लीज़ा है जैसे पाख़ाना, पेशाब, बहता खून, पीप, मुंह भर कै, हैज़ व नफ़ास व इस्तिहाज़ा का खून, मनी, मज़ी, वदी। नजासते ग़लीज़ा का हुक्म येह है कि अगर कपड़े या बदन पर एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है, बिगैर पाक किये अगर नमाज़ पढ़ ली तो नमाज़ न होगी। और इस सूत में जान बूझ कर नमाज़ पढ़ना सख़्त गुनाह है, और अगर नमाज़ को हलका जानते हुए इस तरह नमाज़ पढ़ी तो कुफ़्र है। और जिन जानवरों का गोशत हलाल है (जैसे गाए, बेल, भेंस, बकरी, ऊंट वगैरहा) उन का पेशाब, नीज़ घोड़े का पेशाब और जिस परन्दे का गोशत हुराम है, ख़्वाह शिकारी हो या नहीं, (जैसे कव्वा, चील, शिकरा, बाज़) उस की बीट नजासते ख़फीफ़ा है। नजासते ख़फीफ़ा का हुक्म येह है कि कपड़े के जिस हिस्से या बदन के जिस उज़्ज में लगी है अगर इस की चौथाई से कम है तो मुआफ़ है, मषलन आस्तीन में नजासते ख़फीफ़ा लगी हुई है तो अगर आस्तीन की चौथाई से कम है या दामन में लगी है तो दामन की चौथाई से कम है या इसी तरह हाथ में लगी है तो हाथ की चौथाई से कम है तो मुआफ़ है या'नी इस सूत में पढ़ी गई नमाज़ हो जाएगी और अलबत्ता अगर पूरी चौथाई में लगी हो तो बिगैर पाक किये नमाज़ न होगी। मज़ीद फ़रमाते हैं : “और पेशाब की निहायत बारीक छींटें सूई की नोक बराबर की बदन या कपड़े पर पड़ जाएं, तो कपड़ा और बदन पाक रहेगा।” (माखूज़ अज़ : नजासत का बयान मअ कपड़े पाक करने का तरीका) मज़ीद मा'लूमात के लिये “नजासत का बयान मअ कपड़े पाक करने का तरीका” नामी रिसाले का मुतालआ फ़रमा लीजिये।

﴿4﴾.....पिस्सू का खून थोड़ा हो या ज़ियादा, मुआफ़ है। अलबत्ता येह कि आदत से बढ़ जाए ख्वाह वोह तुम्हारे कपड़े में लगे या किसी दूसरे के कपड़े में लगे और तुम उसे पहन लो।

﴿5﴾.....फुन्सियों का बहने वाला खून और पीप⁽¹⁾ वगैरा मुआफ़ है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के चेहरे पर फुंसी थी उस से खून निकल आया तो आप ने उसे धोए बिगैर नमाज़ पढ़ ली। वोह ज़ख़्म जो नासूर की हैषियत इख़्तियार कर लेते हैं उन से निकलने वाली रुतूबत और पंछने लगवाने से निकलने वाले खून का भी येही हुक्म है। मगर वोह फुन्सियां जो कभी कभी निकलती हैं उन का हुक्म इस्तिहाज़ा⁽²⁾ के खून जैसा है। येह उन फुन्सियों के हुक्म में नहीं होंगी जिन से इन्सान किसी हाल में पाक नहीं रह सकता।

मज़क़ूरा पांच किस्म की नजासतों में शरीअत की रिआयत से आप ने जान लिया कि त़हारत का मुआमला कितना आसान है और इस में पैदा होने वाले वस्वसों की कोई हकीकत नहीं।

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهُ.....﴾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 304 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعْدَى नक्ल फ़रमाते हैं कि “खून या पीप या ज़र्द पानी कहीं से निकल कर बहा और इस बहने में ऐसी जगह पहुंचने की सलाहियत थी जिस का वुजू या गुस्ल में धोना फ़र्ज़ है तो वुजू जाता रहेगा अगर सिर्फ़ चमका या उभरा और बहा नहीं जैसे सूई की नोक या चाकू का कनारा लग जाता है और खून उभर या चमक जाता है या ख़िलाल किया या मिस्वाक की या उंगली से दांत मांझे या दांत से कोई चीज़ काटी इस पर खून का अषर पाया या नाक में उंगली डाली इस पर खून की सुर्खी आ गई वोह खून बहने के काबिल न था तो वुजू नहीं टूटा।

(فتاوى هندية، كتاب الطهارة، الباب الاول في الوضوء، الفصل الخامس، ج 1، ص 10)

②....वोह खून जो औरत के आगे के मक़ाम से किसी बीमारी के सबब निकले तो उसे इस्तिहाज़ा कहते हैं।

(माखूज अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1 हिस्सा. 2 स. 371)

दूसरी फ़स्ल :

नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़

नजासत ज़ाइल करने वाली चीज़ की दो किस्में हैं : (1)....या तो वोह चीज़ ज़ामिद होगी (2)....या माएअ (बहने वाली) । ज़ामिद जैसे इस्तिन्जा के पथ्थर जो पाक भी करते हैं और खुश्क भी हैं बशर्तेकि वोह सख्त, पाक, खुश्क करने वाले हों और क़ाबिले एहतिराम न हों ।

माएअत में से सिर्फ़ पानी नजासत को ज़ाइल करता है और हर पानी नहीं बल्कि ऐसा पाक पानी जो किसी ग़ैर ज़रूरी चीज़ के मिलने से बदल न गया हो । अगर नजासत के मिलने से पानी के तीन औसाफ़ ज़ाइक़ा, रंग और बू में से कोई दो तब्दील हो जाएं तो पानी नापाक हो जाएगा ⁽¹⁾ (इस के बा'द मुसन्निफ़ عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ ने पानी की पाकी व नापाकी के बारे में एक दक्कीक़ व पेचीदा बहूष फ़रमाई है । अहले इल्म अस्ल किताब की तरफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं । इस बहूष के आख़िर में फ़रमाते हैं :) इस मस्अले में तहक्कीक़ येह है कि हर माएअ चीज़ की ख़ासिय्यत है कि अपने अन्दर गिरने वाली चीज़ को अपनी सिफ़त पर ले आती है और वोह चीज़ इस में मग़लूब हो जाती है जैसे तुम कुत्ते को देखते हो कि वोह नमक (की कान) में गिर कर नमक हो जाता है तो नमक बन जाने नीज़ कुत्ता होने का वस्फ़ ज़ाइल होने के सबब उसे पाक क़रार दिया जाता है । इसी तरह़ सिर्का और दूध पानी में मिल जाएं और कम मिक्दार में हों तो उन की सिफ़त बात़िल हो जाती है, पानी की सिफ़त का ही तसव्वुर होता है और इन में पानी की तब्बीअत आ जाती है । अलबत्ता ज़ियादा हो और ग़ालिब आ जाए तो अलग बात है और इस का ग़लबा इस के ज़ाइक़ा, रंग और बू के ग़लबे से मा'लूम होता है और येही मे'यार है । शरीअत ने क़वी (तेज़ जारी) पानी की नजासत को ज़ाइल करने के सिलसिले में इसी मे'यार की तरफ़ इशारा किया है और बेहतर येही है कि इसी पर ए'तिमाद किया जाए । पस इस से हरज दूर होता है और इसी से इस की सिफ़ते तहूर (या'नी पाक करने वाला होना) ज़ाहिर हो जाती है क्यूंकि जब येह इस पर ग़ालिब होता है तो इसे पाक कर देता है ।

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....येह हुक्म माए क़बीर का है जब कि माए क़लील या'नी थोड़ा पानी जो कि दह दर दह से कम है उस में कोई नजासत मिल जाए तो वोह पानी नजिस या'नी नापाक है । (माख़ुदाज़नुरालािय़ाह مع مراقی الفلاح، ص ३०) ।

तीसरी फ़स्ल : नजासत ज़ाइल करणे के तरीके

नजासत की दो किस्में हैं : (1).....हुक्मिया (2).....हकीकिया

नजासते हुक्मिया : वोह है कि जिस का महसूस जिस्म न हो इस में तमाम जगहों पर पानी बहाना काफी है और **नजासते हकीकिया :** वोह है कि जिस का महसूस जिस्म हो इस के ऐन को ज़ाइल करना ज़रूरी है और ज़ाइका का बाकी रहना ऐन के बाकी रहने पर दलालत करता है इसी तरह रंग का बाकी रहना भी । अलबत्ता जो नजासत जिस्म से मिल जाए तो खुरचने के बा'द (जो ज़ाइल न हो) मुआफ़ है । बू का बाकी रहना भी ऐन नजासत की बका पर दलालत करता है इस से सिर्फ़ इतना मुआफ़ है कि बू इतनी तेज़ हो कि उस का इज़ाला मुशकिल हो । पस रंग के मुआमले में कई बार मलना और हर बार निचोड़ना खुरचने के काइम मक़ाम होगा और वस्वसों को ख़त्म करने के लिये येह यकीन रखना ज़रूरी है कि अश्या को पाक पैदा किया गया है लिहाज़ा जिस चीज़ पर नजासत नज़र न आए और यकीनी तौर पर उस का नापाक होना भी मा'लूम न हो तो उस के साथ नमाज़ पढ़ना जाइज़ है और नजासतों की मिक्दार मुक़रर करने के लिये इस्तिम्बात न किये जाएं ।



«.....उम्मे सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये कुंवां.....»

हज़रते सय्यिदुना सा'द बिन उबादा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरी मां इन्तिक़ाल कर गई हैं (मैं उन की तरफ़ से सदका करना चाहता हूँ) कौन सा सदका अफ़ज़ल रहेगा ?” इरशाद फ़रमाया : “पानी ।” चुनान्वे, उन्होंने ने एक कुंवां खुदवाया और कहा : “येह उम्मे सा'द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के लिये है ।” (سنن ابی داؤد، الحديث: ۱۶۸۱، ج ۲، ص ۱۸۰)

बाब नम्बर 2 : बग़ाबते हुक्मी से पाकी हासिल करना

इस में वुजू, गुस्ल और तयम्मूम का बयान है। इन से पहले इस्तिन्जा का बयान है। हम इस की सुन्नतों और आदाब के साथ कैफ़ियत बयान करेंगे और अस्बाबे वुजू और क़ज़ाए हाज़त के आदाब से इब्तिदा करेंगे।

क़ज़ाए हाज़त के आदाब

क़ज़ाए हाज़त करने वाले को चाहिये कि इन आदाब को मद्दे नज़र रखे : (1)....क़ज़ाए हाज़त के लिये लोगों की नज़रों से दूर सहरा में जाए। (2).....कोई चीज़ पाए तो उस के साथ पर्दा कर ले। (3).....बैठने के बिल्कुल करीब होने से पहले शर्मगाह को न खोले। (4).....सूरज या चांद की तरफ़ रुख़ न करे। (5)....क़िब्ला की तरफ़ न मुंह करे न पीठ अलबत्ता अगर घर में हो तो हरज नहीं⁽¹⁾ लेकिन घर में भी ब वक़्ते क़ज़ाए हाज़त क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ न करना अफ़ज़ल है और अगर सहरा में अपनी सुवारी को पर्दा बना ले तो जाइज़ है इसी तरह़ दामन

①....अहनाफ़ के नज़दीक़ घर में हों या सहरा में कहीं भी क़ज़ाए हाज़त के वक़्त क़िब्ले की सम्त मुंह या पीठ न हो। चुनाच्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़्हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़्हा 408 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नक्ल फ़रमाते हैं : पाख़ाना या पेशाब फिरते वक़्त या त्हा़रत करने में न क़िब्ले की तरफ़ मुंह हो न पीठ और येह हुक्म आम है चाहे मकान के अन्दर हो, या मैदान में और अगर भूल कर क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पुश्त कर के बैठ गया, तो याद आते ही फ़ौरन रुख़ बदल दे इस में उम्मीद है कि फ़ौरन उस के लिये मग़फ़िरत फ़रमा दी जाए।

नीज़ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूआ 26 सफ़्हात पर मुश्तमिल रिसाले "गुस्ल का तरीका" सफ़्हा 11 पर शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरী دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ اَعَالِيهِ फ़रमाते हैं : अगर आप के हम्माम में फ़व्वारा (SHOWER) हो तो उसे अच्छी तरह़ देख लीजिये कि उस की तरफ़ मुंह कर के नंगे नहाने में मुंह या पीठ क़िब्ला शरीफ़ की तरफ़ तो नहीं हो रही। इस्तिन्जा खाने में भी इसी तरह़ एह़तियात् फ़रमाइये। क़िब्ले की तरफ़ मुंह या पीठ होने का मा'ना येह है कि 45° दर्जे के ज़ाविये के अन्दर अन्दर हो। लिहाज़ा येह एह़तियात् भी ज़रूरी है कि 45° डिग्री के ज़ाविये (एंगल-ANGLE) के बाहर हो। इस मस्अले से अक़षर लोग नावाक़िफ़ हैं। मेहरबानी फ़रमा कर अपने घर वगैरा के डबल्यू-सी (W.C) और फ़व्वारे का रुख़ अगर ग़लत हो तो उस की इस्लाह़ फ़रमा लीजिये। ज़ियादा एह़तियात् इस में है कि W.C क़िब्ले से 90° के दर्जे पर या'नी नमाज़ पढ़ने में सलाम फेरने के रुख़ कर दीजिये। मे'मार उमूमन ता'मीराती सहूलत और ख़ूब सूरती का लिहाज़ करते हैं। आदाबे क़िब्ला की परवाह नहीं करते। मुसलमानों को मकान की ग़ैर वाजिबी बेहतरी के बजाए आख़िरत की हकीकी बेहतरी पर नज़र रखनी चाहिये।

से भी पर्दा कर सकता है। (6).....ऐसी जगह इस्तिन्जा वगैरा न करे जहां बैठ कर लोग गुफ्तगू करते हों। (7)....ठहरे हुए पानी, (8)....फलदार दरख्त और (9).....सुराख में भी पेशाब न करे। (10).....सख्त जगह और (11)....हवा के रुख पर भी पेशाब न करे ताकि छींटों से बचे। (12)....दौराने इस्तिन्जा बाएं (उलटे) पाउं पर दबाऊ डाले। (13).....अगर इस्तिन्जा खाना किसी इमारत में हो तो दाखिल होते वक्त पहले बायां पाउं अन्दर रखे और निकालते वक्त पहले दायां पाउं निकाले। (14)....खड़ा हो कर पेशाब न करे (कि येह खिलाफे सुन्नत है)। जैसा कि उम्मुल मोअमिनीन हजरते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका तय्यिबा ताहिरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : “जो शख्स तुम से येह कहे कि हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم खड़े हो कर पेशाब करते थे तो उस की तस्दीक न करो।”⁽¹⁾

खड़े हो कर पेशाब न करो :

अमीरुल मोअमिनीन हजरते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे खड़े हो कर पेशाब करते देखा तो इरशाद फ़रमाया : “ऐ उमर ! खड़े हो कर पेशाब न किया करो।” आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “इस के बा'द मैं ने कभी खड़े हो कर पेशाब न किया।”⁽²⁾ (हां ब वक्ते ज़रूरत) खड़े हो कर पेशाब करने की रुख़सत है क्यूंकि हजरते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक कौम की कोड़ी पर तशरीफ़ लाए तो आप ने खड़े हो कर पेशाब किया,⁽³⁾ फिर मैं वुजू के लिये पानी लाया तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वुजू फ़रमाया और मौजों पर मसह किया।”⁽⁴⁾ (15).....गुस्ल खाने में पेशाब न करे।

①.....سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ماجاء فی النهی عن البول قائماً، الحدیث: ۱۲، ج ۱، ص ۹۰۔

②.....سنن ابن ماجه، کتاب الطهارة، باب فی البول قاعداً، الحدیث: ۳۰۸، ج ۱، ص ۱۹۶۔

③.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 270 पर इस हदीषे मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : या तो वहां बैठने की जगह न थी क्यूंकि कोड़ी पर हर जगह नजासत ही होती है या पाउं शरीफ़ में ज़ख़्म या पीठ में दर्द था जिस के लिये खड़े हो कर पेशाब करना मुफ़ीद था। अतिब्बा कहते हैं कि खड़े हो कर अंगारे पर पेशाब करना सत्तर बीमारियों का इलाज है। (مرقاة اشعة للمعات) ख़याल रहे कि इस मौक़अ पर सरकार ऊंची जगह खड़े हुए होंगे जिस से पेशाब के छींटों से महफूज़ रहे होंगे।

मजीद मा'लूमात के लिये फ़तावा रज़विय्या (मुखर्ज़ा) जि. 4 स. 585 का मुतालआ फ़रमा लीजिये।

④.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب المسح علی الخفین، الحدیث: ۲۴۳، ص ۱۵۸۔

वस्वसे पैदा होने का सबब :

हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “आम वस्वसे इसी (या’नी गुस्ल ख़ाने में पेशाब करने) से होते हैं।” (1) (2)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : गुस्ल ख़ाने में पेशाब करने की इजाज़त है बशर्तेकि इस पर से पानी बह जाए।

नीज़ प्यारे मुस्त्फ़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम में से कोई गुस्ल ख़ाने में हरगिज़ पेशाब न करे फिर इस में वुजू करेगा क्यूंकि आम वस्वसे इसी से होते हैं।” (3)

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जारी पानी में पेशाब करने में हरज नहीं।” (4)

(16)....इस्तिन्जा ख़ाने में ऐसी चीज़ साथ न ले जाए जिस पर **अब्बाह** غُرُوجِل या रसूले अकरम ﷺ का नाम मुबारक हो। (17)....इस्तिन्जा ख़ाने में नंगे सर न जाए।

बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ :

(18).....इस्तिन्जा ख़ाने में दाख़िल होने से पहले येह दुआ पढ़े :

” بِسْمِ اللَّهِ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الرَّجْسِ النَّجِسِ الْغَبِيْثِ الْمُغْبِثِ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ ”

या’नी **अब्बाह** غُرُوجِل के नाम से शुरू करता और मर्दूद पलीद ख़बीष शैतान से **अब्बाह** غُرُوجِل की पनाह चाहता हूँ।” (5)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान میرआतुल मनाज़ीह, जि. 1 स. 266 पर इस हदीसे मुबारक के तहत फ़रमाते हैं : अगर गुस्लख़ाने की ज़मीन पुख़्ता हो और उस में पानी ख़ारिज होने की नाली भी हो तो वहां पेशाब करने में हरज नहीं अगर्चे बेहतर है कि न करे, लेकिन अगर ज़मीन कच्ची हो और पानी निकलने का रास्ता भी न हो तो पेशाब करना सख़्त बुरा है कि ज़मीन नजिस हो जाएगी, और गुस्ल या वुजू में गन्दा पानी जिस्म पर पड़ेगा।

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب كراهية البول في المغتسل، الحديث: ٣٠٢، ج ١، ص ٩٢۔

③.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب كراهية البول في المغتسل، الحديث: ٣٠٢، ج ١، ص ٩٢۔

④.....जारी पानी में पेशाब, पाख़ाना करना मकरूह है। (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1 हिस्सए दुवुम, स. 409)

⑤.....المعجم الكبير، النضر بن انس عن زيد بن ارقم، الحديث: ٥٠٩٩، ج ٥، ص ٢٠٢، باختصار۔

المصنف لابن ابی شیبہ، كتاب الطهارات، مايقول الرجل اذا دخل الخلاء، الحديث: ٥، ج ١، ص ١٢

बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द की दुआ :

(19).....निकलने के बा'द येह दुआ पढ़े :

”الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنِّي مَا يُؤْذِينِي وَأَبْقَى عَلَيَّ مَا يَنْفَعُنِي“

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उस ने मुझ से अज़ियत को दूर किया और मुझे फ़ाइदा देने वाली चीज़ को बाकी रखा ।”(1)

(20).....इस्तिन्जा के लिये बैठने से पहले ढेलों को गिन ले । (21)....क़ज़ाए हाज़त की जगह पानी से इस्तिन्जा न करे । (22)....इस्तिन्जा करने के बा'द इस्तिब्रा कर ले (या'नी पेशाब करने के बा'द ऐसा काम करना कि अगर कोई क़तरा रुका हो तो गिर जाए और येह वाजिब है) इस के तीन तरीक़े हैं : खांसने, उज़्बे मख़सूस को तीन बार झाड़ने और उज़्बे मख़सूस के निचले हिस्से पर हाथ फैरने से । नीज़ इस मुआमले में ज़ियादा सोच बिचार न करे कि इस से वस्वसे पैदा होंगे और इस पर मुआमला दुश्वार हो जाएगा । लिहाज़ा इस्तिब्रा के बा'द जो तरी वग़ैरा महसूस करे उसे बाकी मांदा पानी ख़याल करे । अगर येह बात उसे अज़ियत देती हो कि वस्वसे फिर भी दूर न हों तो मियानी (पाजामे का वोह हिस्सा जो पेशाब गाह के क़रीब होता है उस) पर पानी के छींटे मारे ताकि उस के दिल में येह बात पुख़्ता हो जाए और वस्वसों की वजह से उस पर शैतान मुसल्लत न हो । हदीषे पाक में भी है कि “हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ऐसे ही किया या'नी (मियानी पर) पानी के छींटे मारे ।”(2)

पहले के लोगों में से जो शख़्स इस्तिन्जा से जल्दी फ़ारिग़ होता वोह उन में ज़ियादा फ़कीह होता था क्यूंकि इस्तिन्जा में वस्वसे फुकाहत की कमी पर दलालत करता है ।

हड्डी और गोबर से इस्तिन्जा करने की मुमानज़त :

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें हर चीज़ सिखाई हत्ता कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमें हुक्म फ़रमाया कि हम हड्डी और गोबर से इस्तिन्जा न करें और हमें क़िब्ला रू हो कर बोलो बराज़ करने से मन्अ फ़रमाया ।”(3)

①.....المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الطہارات، مايقول اذا خرج من المخرج، الحديث: ١، ج ١، ص ٦۔

②.....سنن ابن ماجه، کتاب الطہارة، باب ماجاء فی النضح بعد الوضوء، الحديث: ٢٦١، ج ١، ص ٢٦٩۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الطہارة، باب الاستطابة، الحديث: ٢٦٢، ص ٥٣۔

किसी सहाबी से एक आ'राबी का झगड़ा हो गया, कहने लगा : मेरा खयाल है कि तुम्हें पेशाब करने का तरीका भी अच्छी तरह नहीं आता तो सहाबी ने फ़रमाया : “मुझे इस में महारत हासिल है कि आबादी से दूर जाता हूं, ढेले गिन कर रखता हूं, घास इकट्ठी कर के सामने रखता हूं, हवा की तरफ़ पीठ करता हूं, हिरन की तरह (पंजों पर दबाव डाल कर) बैठता हूं, शुतर मुर्ग की तरह पिछले मक़ाम को ऊपर उठाता हूं।”

इन्सान को पर्दे का एहतियाम कर के किसी शख्स के क़रीब इस्तिन्जा वगैरा करना जाइज़ है कि “इन्तिहाई बा हया होने के बा वुजूद हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उम्मत की रहनुमाई के लिये ऐसा किया।”⁽¹⁾

इस्तिन्जा का तरीका :

तीन ढेलों से अपनी पेशाब गाह को साफ़ करे अगर इन से साफ़ हो जाए तो काफ़ी है वरना चौथा पथ्थर इस्ति'माल करे और सफ़ाई हासिल हो जाए तब भी पांचवां पथ्थर इस्ति'माल करे क्यूंकि साफ़ करना वाजिब है और ताक़ पथ्थरों का इस्ति'माल सुन्नत है कि सरकारे दो अ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **يَا مَنِ اسْتَجْمَرَ فَلْيُؤْتِرْ** या'नी जो शख्स पथ्थरों का इस्ति'माल करे तो वोह ताक़ अ़दद में पथ्थर इस्ति'माल करे।”⁽²⁾

पथ्थर इस्ति'माल करने का तरीका :

पथ्थर बाई (उलटे) हाथ में ले और पेशाब गाह के अगले हिस्से पर नजासत की जगह से पहले रखे और पोंछता हुवा पीछे की तरफ़ ले जाए। फिर दूसरा पथ्थर ले और इसी तरह पिछले हिस्से पर रख कर आगे की तरफ़ ले आए। फिर तीसरा पथ्थर ले कर उसे एक बार शर्मगाह के इर्द गिर्द फैरे अगर फैरना मुश्किल हो तो पोंछते हुए आगे से पीछली तरफ़ ले जाए तो भी काफ़ी है। फिर दाएं (सीधे) हाथ में बड़ा सा पथ्थर ले कर उज़्वे मख़सूस को बाएं हाथ से पकड़ कर इस पर पथ्थर को रगड़े और उज़्वे मख़सूस को हरकत दे और तीन दफ़अ़ एक ही पथ्थर से तीन जगहों से पोंछे या तीन पथ्थरों से पोंछे या दीवार की तीन जगहों के साथ साफ़ करे यहां तक कि पोंछने वाली जगह पर तरी नज़र न आए। दो मरतबा में सफ़ाई हासिल हो जाए तब भी तीन

①.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب المسح علی الخفین، الحدیث: ۲۷۳، ص ۱۵۸۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب الايتار فی الاستنثار.....الخ، الحدیث: ۲۳۷، ص ۱۴۶۔

बार करे अगर एक पथर पर इक्तिफ़ा करे तो (पथर की अलाहिदा अलाहिदा) तीन जगहों से साफ़ करना वाजिब है अगर चार पथरों से सफ़ाई हासिल हो जाए तो ताक़ पर अमल के लिये पांचवें पथर का इस्ति'माल मुस्तहब है। फिर उस जगह से दूसरी जगह चला जाए और पानी से सफ़ाई हासिल करे, यूँ कि दाएं (सीधे) हाथ से जाए नजासत (या'नी मक़ड़) पर पानी बहाए और बाएं हाथ से साफ़ करे यहां तक ऐसा अषर बाकी न रहे कि हथेली लगाने से उस का एहसास हो और इस मुआमले में ज़ियादा मुबालगा न करे कि येह वस्वसों की जगह है।

जान लीजिये कि बातिन से मुराद वोह जगह है जहां तक पानी नहीं पहुंचता और बातिनी फुज़लात जब तक ज़ाहिर न हों उन पर नजासत का हुक्म नहीं लगाया जाता, जो नजासत ज़ाहिर है और उस के लिये नजासत का हुक्म षाबित है तो उस के जुहूर की हद येह है कि पानी उस तक पहुंच कर उसे ख़त्म कर दे, वस्वसों की कोई ज़रूरत नहीं।

इस्तिन्जा से फ़रागत के बा'द की दुआ :

इस्तिन्जा से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ करे :

“اللَّهُمَّ طَهِّرْ قُلُوبِي مِنَ الْبِفَاقِ وَحَصِّنْ فَرْجِي مِنَ الْفَوَاحِشِ”

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल को निफ़ाक़ से पाक कर दे और मेरी शर्मगाह को बेहयाई के कामों से बचा।”

अहले कुबा की फ़ज़ीलत :

(इस्तिन्जा से फ़रागत के बा'द) अगर हाथ में बू बाकी हो तो हाथ को दीवार या ज़मीन से रगड़े (ताकि बू ख़त्म हो जाए)। पथरों और पानी दोनों से इस्तिन्जा करना मुस्तहब है। चुनान्वे, मरवी है कि जब येह आयते मुक़द्दसा नाज़िल हुई :

فِيهِ رَجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَّخِذُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ (پ ۱۱، التوبة: ۱۰۸)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : इस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं।

तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले कुबा से इरशाद फ़रमाया : “येह कौन सी त़हारत है जिस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुम्हारी ता'रीफ़ फ़रमाई है ?” उन्होंने ने अर्ज़ की : “हम पथरों और पानी से इस्तिन्जा करते हैं।”⁽¹⁾

बुजू का तरीका

इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द बुजू में मशगूल हो जाए कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आदते मुबारका थी कि जब भी क़ज़ाए हाज़त से फ़ारिग़ होते तो बुजू फ़रमाते और मिस्वाक से इब्तिदा करते ।

मिस्वाक के मुतअल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्तफ़ा

﴿1﴾.....बिला शुबा तुम्हारे मुंह कुरआने पाक के रास्ते हैं पस इन्हें मिस्वाक से साफ़ करो ।⁽¹⁾

निय्यत : मिस्वाक करते हुए ये निय्यत करनी चाहिये कि मैं नमाज़ में क़िराअते कुरआन और ज़िक्रुल्लाह के लिये मुंह साफ़ करता हूँ ।

﴿2﴾.....मिस्वाक (वाले बुजू) के बा'द नमाज़ बिग़ैर मिस्वाक वाली नमाज़ से पछत्तर दर्जे अफ़ज़ल है ।⁽²⁾

﴿3﴾.....अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक्क़त में पड़ने का ख़ौफ़ न होता तो उन्हें हर नमाज़ के साथ मिस्वाक का हुक्म देता ।⁽³⁾

﴿4﴾.....क्या वजह है कि मैं देखता हूँ तुम मेरे पास पीले दांतों के साथ आ जाते हो, मिस्वाक किया करो ।⁽⁴⁾

﴿5﴾.....हुजूर अन्वर, शाफ़ेए रोज़े महशर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात को बारबार मिस्वाक करते थे ।⁽⁵⁾

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमेशा हमें मिस्वाक का हुक्म देते रहे यहां तक कि हम ने गुमान किया कि अज़न क़रीब आप पर इस बारे में कुछ (हुक्म) नाज़िल होगा ।⁽⁶⁾

﴿7﴾.....तुम पर मिस्वाक लाज़िम है बेशक येह मुंह की पाकीज़गी और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा का ज़रीआ है ।⁽⁷⁾

①.....حلیة الاولیاء، سعید بن جبیر، الحدیث: ۵۷۳۶، ج ۴، ص ۳۲۶۔

سنن ابن ماجه، کتاب الطهارة، باب السواک، الحدیث: ۲۹۱، ج ۱، ص ۱۸۷، قول علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ۔

②.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسندالسيدة عائشة رضی اللہ تعالیٰ عنہا، الحدیث: ۲۶۴۰، ج ۱۰، ص ۱۴۱۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب السواک، الحدیث: ۲۵۲، ص ۱۵۲۔

④.....المسند للامام احمد بن حنبل، حدیث تمام بن العباس، الحدیث: ۱۸۳۵، ج ۱، ص ۴۵۹۔

⑤.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب السواک، الحدیث: ۲۵۶، ص ۱۵۲۔

⑥.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد اللہ بن عباس، الحدیث: ۳۱۵۲، ج ۱، ص ۷۷۔

⑦.....سنن النسائی، کتاب الطهارة، باب الترغیب فی السواک، الحدیث: ۵، ص ۱۰۔

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : “मिस्वाक हाफ़िज़े को तेज़ करती और बलग़म को दूर करती है ।”⁽¹⁾

सहाबए किराम رَضَوَانُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ सुबह इस हाल में निकलते कि मिस्वाक इन के कानों पर होती ।⁽²⁾

मिस्वाक का तरीका :

पीलू की लकड़ी या किसी दूसरे दरख़्त की सख़्त लकड़ी से मिस्वाक करे जो दांतों की ज़र्दी को दूर कर दे । मिस्वाक (दांतों की) चौड़ाई और लम्बाई में जिस तरह चाहे कर सकता है । अगर एक तरीके पर करे तो चौड़ाई में होनी चाहिये । हर नमाज़ और हर वुज़ू के साथ मिस्वाक करना मुस्तहब है अगरचे वुज़ू कर के नमाज़ न पढ़े । नींद की वजह से जब मुंह की बू बदल जाए तो भी मिस्वाक करे । ज़ियादा देर तक कुछ न खाने और ना पसन्दीदा बू वाली चीज़ खाने से जो बू पैदा होती है उसे ज़ाइल करने के लिये मिस्वाक करना मुस्तहब है ।

वुज़ू से पहले की दुआ :

मिस्वाक से फ़ारिग़ हो कर वुज़ू के लिये क़िब्ला रुख़ बैठे और بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़े कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने वुज़ू से क़ब्ल بِسْمِ اللَّهِ न पढ़ी उस का वुज़ू (कामिल) नहीं ।”⁽³⁾

फिर येह दुआ पढ़े : “أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ” या’नी मैं शयातीन के वस्वसों से तेरी पनाह चाहता हूं और ऐ मेरे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ इन के हाज़िर होने से तेरी पनाह मांगता हूं ।⁽⁴⁾

हाथ धोने से पहले की दुआ :

फिर हाथ बरतन में दाख़िल करने से क़ब्ल तीन मरतबा धोए और येह दुआ पढ़े :

“اَللّهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْیَمْنَ وَالْبَرَکَةَ وَاعُوْذُ بِكَ مِنَ الشُّوْمِ وَالْهَلَکَةِ”

①.....फ़रदुस الاخبارल्लदिलمی، باب الخاء، الحدیث: ۲۸۰۲، ج ۱، ص ۳۷۷۔

②.....سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ماجاء فی السواک، الحدیث: ۲۳، ج ۱، ص ۱۰۰۔

③.....سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ماجاء فی التسمیة، عند الوضوء، الحدیث: ۲۵، ج ۱، ص ۱۰۱۔

④.....المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاة، باب الاستعاذة فی الصلاة، الحدیث: ۲۵۸۰، ج ۲، ص ۵۴۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دُعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۱۔

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से बरकत का सुवाल करता हूं और बद बख्ती व हलाकत से तेरी पनाह मांगता हूं।⁽¹⁾

फिर हृदय दूर करने या जवाजे नमाज की नियत करने और चेहरा धोने तक नियत को काइम (या'नी याद) रखे अगर चेहरा धोते वक्त भूल गया तो येह नियत काफ़ी न होगी।⁽²⁾

फिर दाएं (सीधे) हाथ से एक चुल्लू पानी ले और तीन बार कुल्ली करे⁽³⁾ और गर गर करे यहां तक कि पानी हल्क तक पहुंच जाए और रोज़ादार हो तो पानी हल्क तक न पहुंचाए।

कुल्ली करते वक्त की दुआ :

फिर येह दुआ पढ़े : “اللَّهُمَّ اَعِنِّي عَلَى تِلَاوَةِ كِتَابِكَ وَكَثْرَةِ ذِكْرِكَ” या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपनी किताब की तिलावत और अपने जिक्र की कसरत पर मेरी मदद फ़रमा।⁽⁴⁾

फिर नाक के लिये एक चुल्लू पानी ले और तीन बार नाक में चढ़ाए⁽⁵⁾ सांस ले कर पानी नाक के नथनों तक खींचे और इस में मौजूद रीठ वगैरा अच्छी तरह साफ़ करे।

नाक में पानी पहुंचाते वक्त की दुआ :

नाक में पानी पहुंचाते हुए येह दुआ पढ़े : “اللَّهُمَّ اَوْجِدْ لِي رَائِحَةَ الْجَنَّةِ وَأَنْتَ عِنِّي رَاضٍ” या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये जन्नत की खुशबू बना दे इस हाल में कि तू मुझ से राजी हो।⁽⁶⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٢۔

②.....अहनाफ़ के नज़दीक वुजू के लिये नियत सुन्नत है न कि फ़र्ज़। (माखु़्द अज़हदिये، کتاب الطهارة، ج ١، ص ١٦)۔

③.....अहनाफ़ के नज़दीक तीन चुल्लू से तीन बार कुल्ली करे। चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 295 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي नक़ल फ़रमाते हैं : तीन चुल्लू पानी से तीन बार कुल्ली करे कि हर बार मुंह के हर पुर्जे पर पानी बह जाए और रोज़ादार न हो तो गरगरा करे।”

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٢۔

⑤.....अहनाफ़ के नज़दीक तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए। चुनान्वे, बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 295 पर है : “फिर तीन चुल्लू से तीन बार नाक में पानी चढ़ाए कि जहां तक नर्म गोश्त होता है हर बार इस पर पानी बह जाए और रोज़ादार न हो तो नाक की जड़ तक पानी पहुंचाए।”

⑥.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٢۔

नाक साफ करते वक्त की दुआ :

नाक साफ करते हुए येह दुआ पढ़े : **اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُكَ مِنْ رَوَائِحِ النَّارِ وَمِنْ سُوءِ الدَّارِ**

“(१) “या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं जहन्नम की बदबूओं और बुरे घर से तेरी पनाह चाहता हूं।”

फिर चेहरे के लिये एक चुल्लू पानी ले और लम्बाई में पेशानी की इब्तिदा से ठोड़ी के नीचे तक और चौड़ाई में एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक धोए और पेशानी के दोनों कनारों पर बाल झड़ने की जगह चेहरे में दाखिल नहीं बल्कि वोह सर का हिस्सा हैं। उस जगह तक भी पानी पहुंचाए जहां से औरतें बाल हटाती रहती हैं और येह वोह मिक्दार है कि अगर किसी धागे का एक सिरा कान के ऊपर रखें और दूसरा पेशानी के कनारे पर तो येह हिस्सा चेहरे की तरफ रहेगा (इस से मुराद कनपट्टी है)। इन जगहों पर भी पानी पहुंचाए : अब्रू, मूंछें, रुख़सारों के बाल और पलकें क्यूंकि अम तौर पर येह कम होते हैं। दाढ़ी घनी न हो तो बालों की जड़ों तक पानी पहुंचाना वाजिब है लेकिन घनी दाढ़ी में येह हुक्म नहीं। निचले होंट के नीचे के बाल हलके और घने होने में दाढ़ी के हुक्म में हैं। फिर तीन मरतबा इसी तरह चेहरे पर पानी बहाए और दाढ़ी के लटके हुए बालों के ज़ाहिरी हिस्से पर पानी बहाए (२) और आंखों के खानों और मेल और सुर्मा जम्अ होने की जगहों में उंगलियां दाखिल कर के अच्छी तरह साफ़ करे। मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इसी तरह किया।” (३) आंखें धोते वक्त येह उम्मीद रखे कि आंखों के गुनाह धुल रहे हैं और हर उज़्व धोते वक्त येही उम्मीद रखे कि इस उज़्व के गुनाह धुल रहे हैं।

चेहरा धोते वक्त की दुआ :

चेहरा धोते वक्त येह दुआ पढ़े :

“اللَّهُمَّ بَيِّضْ وَجْهِي بِوَرَكِ يَوْمِ تَبْيِضُ وَجُوهٌ أَوْلِيَاكَ وَلَا تَسْوُدْ وَجْهِي بِظُلَمَاتِكَ يَوْمَ تَسْوُدُ وَجُوهٌ أَعْدَاكَ”

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

②.....बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 289 पर है : दाढ़ी के बाल अगर घने न हों तो जिल्द का धोना फ़र्ज़ है और अगर घने हों तो गले की तरफ़ दबाने से जिस क़दर चेहरे के गिर्दे में आएँ इन का धोना फ़र्ज़ है और जड़ों का धोना फ़र्ज़ नहीं और जो हल्के से नीचे हों उन का धोना ज़रूर नहीं और अगर कुछ हिस्से में घने हों और कुछ छिदरे, तो जहां घने हों वहां बाल और जहां छिदरे हैं उस जगह जिल्द का धोना फ़र्ज़ है।

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابى امامة الباهلي، الحديث: ۲۲۲۸۶، ج ۸، ص ۲۸۸۔

या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जिस दिन तेरे औलिया के चेहरे रोशन होंगे उस दिन अपने नूर से मेरे चेहरे को भी रोशन फ़रमा देना और जिस दिन तेरे दुश्मनों के चेहरे सियाह होंगे उस दिन मेरा चेहरा सियाह न फ़रमाना ।”(1)

चेहरा धोते वक़्त घनी दाढ़ी का ख़िलाल करे कि येह मुस्तहब है । फिर हाथों को कोहनियों समेत तीन मरतबा धोए, अंगूठी को हरकत दे और आ'जा की चमक को ज़ियादा करते हुए कोहनियों से ऊपर तक पानी पहुंचाए “क्यूंकि आ'जाए वुजू बरोजे क़ियामत चमकते रोशन होंगे ।” मरवी है कि, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपनी चमक को ज़ियादा कर सकता हो वोह करे ।”(2)

एक रिवायत में है कि “बेशक (क़ियामत का) ज़ेवर वुजू की जगहों तक पहुंचेगा ।”(3)

दायां बाजू धोते वक़्त की दुआ :

बाजू धोने में सीधे हाथ से इब्तिदा करे और येह दुआ पढे :

“اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ كِتَابِيْ يَمِيْنِيْ وَحَاسِبِيْ حَسَابًا يَّسِيْرًا” या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरा नामए आ'माल दाहिने हाथ में देना और मुझ से आसान हिसाब करना ।”(4)

बायां बाजू धोते वक़्त की दुआ :

बाया बाजू धोते वक़्त येह दुआ पढे : “اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ تُعْطِيَنِيْ كِتَابِيْ بِشِمَالِيْ اَوْ مِنْ وَّرَءِ ظَهْرِيْ” या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तू मुझे मेरा नामए आ'माल बाएं हाथ में या पीठ के पीछे से दे ।”(5)

फिर पूरे सर का मस्ह करे यूं कि अपने हाथों को तर कर के दाएं हाथ की उंगलियों को बाएं हाथ की उंगलियों से मिलाए और इन्हें सर के अगले हिस्से पर रखे और गुद्दी की तरफ़ खींचे फिर सर के अगले हिस्से पर ले आए येह एक मस्ह है इसी तरह तीन मरतबा करे ।”(6)

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون، فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب استحباب اطالة الغرة.....الخ، الحديث: ۲۴۶، ص ۱۵۰۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب تبلغ الحلیة حیث یبلغ الوضوء، الحديث: ۲۵۰، ص ۱۵۱۔

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

⑤.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

⑥.....अहनाफ़ के नज़दीक : चौथाई सर का मस्ह फ़र्ज़ है । नीज़ पूरे सर का एक बार मस्ह करना सुन्नत है ।

(माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1 स. 291, 296)

सर का मस्ह करते वक्त की दुआ :

फिर येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ غَشِيْ بِرَحْمَتِكَ وَأَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ وَأَظْلِيْ تَحْتَ ظِلِّ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّكَ

“या’नी ऐ **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी रहमत से ढांप ले मुझ पर अपनी बरकतें नाजिल फ़रमा और मुझे उस दिन अर्श का साया अता फ़रमाना जिस दिन तेरे अर्श के साए के सिवा कोई साया न होगा।”⁽¹⁾

फिर नए पानी से दोनों कानों के ज़ाहिर व बातिन का मस्ह करे। इस का तरीका येह है कि शहादत की उंगलियों को कानों के सुराखों में दाखिल कर के अंगूठों को कानों के बाहर वाले हिस्से पर फ़ैरे एहतियातन हथेली दोनों कानों पर रखे और तीन बार कानों का मस्ह करे।

कानों का मस्ह करते वक्त की दुआ :

फिर येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنَ الَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ اللَّهُمَّ أَسْعِنِيْ مَنَادَى الْجَنَّةِ مِنَ الْأَبْرَارِ

“या’नी ऐ **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ मुझे उन में कर दे जो बात सुनते और अच्छी बात पर अमल करते हैं। ऐ **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ मुझे नेक लोगों के साथ जन्नत के मुनादी की आवाज़ सुना।”⁽²⁾

फिर नए पानी के साथ गर्दन का मस्ह करे⁽³⁾ कि सरकारे दो अलाम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “गर्दन का मस्ह बरोजे क़ियामत तौक से अमान देगा।”⁽⁴⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٢۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٢۔

③.....अहनाफ़ के नज़दीक सर, कानों और गर्दन का मस्ह एक ही बार सुन्नत है और हर बार नया पानी लेने की भी हाज़त नहीं। **सर के मस्ह का तरीका** : चुनान्वे, दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **नमाज़ के अहकाम** सफ़हा 11 पर है : सर का मस्ह इस तरह कीजिये कि दोनों अंगूठों और कलिमे की उंगलियों को छोड़ कर दोनों हाथ की तीन तीन उंगलियों के सिरे एक दूसरे से मिला लीजिये और पेशानी के बाल या खाल पर रख कर खींचते हुए गुद्दी तक इस तरह ले जाए कि हथेलियां सर से जुदा रहें, फिर गुद्दी से हथेलियां खींचते हुए पेशानी तक ले आइये, कलिमे की उंगलियां और अंगूठे इस दरमियान सर पर बिलकुल मस नहीं होने चाहियें, फिर कलिमे की उंगलियों से कानों की अन्दरूनी सतह का और अंगूठों से कानों की बाहरी सतह का मस्ह कीजिये और छुंगलियां (या’नी छोटी उंगलियां) कानों के सुराखों में दाखिल कीजिये और उंगलियों की पुश्त से गर्दन के पिछले हिस्से का मस्ह कीजिये, बा’ज लोग गले का और धुले हुए हाथों की कोहनियों और कलाईयों का मस्ह करते हैं येह सुन्नत नहीं है। **सर का मस्ह करने से क़ब्ल टूटी अच्छी तरह बन्द करने की आदत बना लीजिये** बिला वजह नल खुला छोड़ देना या अधूरा बन्द करना कि पानी टपकता रहे गुनाह है।

④.....تلخيص الحبير، كتاب الطهارة، ذكر الاحاديث الواردة في أن الأذنين من الرأس، ج ١، ص ٢٨٦۔

गर्दन का मस्ह करते वक्त की दुआ :

फिर यह दुआ पढ़े : “اللَّهُمَّ فَكِّ رَقَبَتِي مِنَ النَّارِ وَأَعُوذُكَ مِنَ السَّلَاسِلِ وَالْأَغْلَالِ”

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी गर्दन आग से आज़ाद फ़रमा और मैं जहन्नम के तौक और ज़न्जीरों से तेरी पनाह चाहता हूँ।” (1)

फिर तीन मरतबा दायां पाउं धोए और बाएं हाथ से दाएं पाउं की उंगलियों के नीचे से खिलाल करे और दाएं पाउं की छुंगलिया से इब्तिदा कर के बाएं पाउं की छुंगलिया पर ख़त्म करे।

दायां पाउं धोते वक्त की दुआ :

दायां पाउं धोते वक्त यह दुआ पढ़े : اللَّهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمِي عَلَى الصِّرَاطِ الْمُسْتَقِيمِ يَوْمَ تَزُلُّ الْأُقْدَامُ مِرْفَى النَّارِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा क़दम पुल सिरात पर षाबित क़दम रख जिस दिन कि इस पर क़दम जहन्नम की तरफ़ लगज़िश करेंगे।” (2)

बायां पाउं धोते वक्त की दुआ :

बायां पाउं धोते वक्त यह दुआ पढ़े : “أَعُوذُكَ أَنْ تَزُلَّ قَدَمِي عَنِ الصِّرَاطِ يَوْمَ تَزُلُّ فِيهِ الْأَقْدَامُ الْمُنَافِقِينَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस दिन पुल सिरात पर मुनाफ़िक़ीन के क़दम फिसल रहे होंगे उस दिन मैं अपने क़दम फिसलने से तेरी पनाह चाहता हूँ।” (3) पाउं धोते हुए पानी आधी पिन्डलियों तक पहुंचाए।

वुजू के बा'द की दुआ :

वुजू से फ़ारिग़ हो कर सर आस्मान की तरफ़ उठाए और यूं कहे :

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ عَمِلْتُ سُوءًا وَظَلَمْتُ نَفْسِي أَسْتَغْفِرُكَ اللَّهُمَّ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ فَاعْفُرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ التَّوَّابِينَ وَاجْعَلْنِي مِنَ الْمُتَطَهِّرِينَ وَاجْعَلْنِي مِنْ عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ وَاجْعَلْنِي عَبْدًا صَبُورًا شَكُورًا وَاجْعَلْنِي أَذْكُرَكَ كَثِيرًا وَأَسْئَلُكَ بَكْرَةً وَأَصِيلًا

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٢ -

②.....المرجع السابق - ③.....المرجع السابق -

या'नी मैं गवाही देता हूँ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये पाकी है और तेरी ही ता'रीफ़ है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं ने बुराई की और अपनी जान पर जुल्म किया। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं मग़फ़िरत चाहता हूँ और तेरी बारगाह में तौबा करता हूँ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और मेरी तौबा क़बूल फ़रमा। तू बहुत ज़ियादा तौबा क़बूल करने वाला, रहूम फ़रमाने वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे तौबा करने वालों, पाक लोगों में कर दे, मुझे अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा, मुझे साबिरो शाकिर बन्दा बना, मुझे ऐसा बना दे कि कषरत से तेरा ज़िक्र करूँ और सुब्ह शाम तेरी पाकी बयान करता रहूँ।”⁽¹⁾

मन्कूल है कि जिस ने वुजू के बा'द येह कलिमात कहे उस के वुजू पर मोहर लगा दी जाएगी और उसे अर्श के नीचे बुलन्द कर दिया जाएगा। वोह हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह व तक्दीस बयान करता रहेगा और उस का षवाब क़ियामत तक वुजू करने वाले के लिये लिखा जाता रहेगा।

वुजू के मकरूहात :

वुजू में दर्जे ज़ैल चीज़ें मकरूह हैं : (1).....किसी इज़व को तीन से ज़ियादा मरतबा धोना जिस ने ज़ियादा किया उस ने जुल्म किया। (2).....पानी (के इस्ति'माल) में इस्राफ़ करना। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (आ'जाए वुजू को) तीन बार धोया और इरशाद फ़रमाया : “जिस ने ज़ियादा किया उस ने जुल्म किया और बुरा किया।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “इस उम्मत में कुछ लोग होंगे जो दुआ और तहारत में हद से बढ़ेंगे।”⁽³⁾

मन्कूल है कि वुजू में पानी ज़ियादा इस्ति'माल करना आदमी के इल्म में कमी की अ़लामत है।⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَكْرَم फ़रमाते हैं : “मन्कूल है कि वस्वसों की इब्तिदा वुजू से होती है।”⁽⁵⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۲۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب الوضوء ثلاثا ثلاثا، الحديث: ۱۳۵، ج ۱، ص ۴۸-۴۹۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب الاسراف فی الماء، الحديث: ۹۶، ج ۱، ص ۶۸۔

④.....الطهور للقسام بن سلام، باب ما يستحب من الاقتصاد.....الخ، الحديث: ۱۰۹، ص ۱۲۲۔

⑤.....الجامع لاحکام القرآن، پ: ۳۰، سورة الناس: ۵، ج ۱۰، الجزء: ۲۰، ص ۱۹۳۔

वुजू में वस्वसे डालने वाला शैतान : (1)

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “एक शैतान वुजू में आदमी पर हंसता है उसे वल्हान कहते हैं।” (2)

(3).....हाथ झाड़ते हुए पानी को दूर करना (4).....दौराने वुजू गुफ्तगू करना (5).....चेहरे पर जोर जोर से पानी मारना। हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब और हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا ने आ'जाए वुजू को खुशक करना भी मकरूह कहा है। बतौर दलील फ़रमाते हैं कि “(बरोजे कियामत) आ'जाए वुजू की तरी का वज़्न किया जाएगा।” लेकिन हज़रते सय्यिदुना मुअज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने कपड़े के एक knारे से चेहरा पोंछा।” (3)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि “मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का एक तोलिया मुबारक था (जिस से बा'दे वुजू आ'जा साफ़ किया करते थे)” (4)

(6).....पीतल के बरतन से वुजू करना मकरूह है (7).....धूप में गर्म किये हुए पानी से वुजू करना भी मकरूह है (5) और येह कराहत तिब्ब के ए'तिबार से है। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) से पीतल के बरतन से वुजू करने की कराहत मरवी है। बा'ज हज़रात ने फ़रमाया कि हज़रते सय्यिदुना इमाम शअबा

رُجُوعَ إِلَى اللَّهِ (1) : (1)....वल्हान एक शैतान का नाम है जो वुजू में वस्वसे डालता है इस के वस्वसे से बचने की बेहतरीन तदाबीर येह है : (2).....سنن الکبری للبيهقی، کتاب الطهارة، باب الستر فی الغسل عند الناس، الحديث: ۹۵۰، ج ۱، ص ۳۰۴ (3) أَعُوذُ بِاللَّهِ (4) سُرْعَانِ (5) أَمَنْتُ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ (6) سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْخَلَّاقِ إِنَّ يَشَأْ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ (7) (8) वस्वसे का बिल्कुल खयाल न करना बल्कि उस के खिलाफ़ करना भी दाफ़े वस्वसा है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 303)

.....سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ما جاء فی المنديل بعد الوضوء، الحديث: ۵۴، ج ۱، ص ۱۲۰

.....سنن الترمذی، ابواب الطهارة، باب ما جاء فی المنديل بعد الوضوء، الحديث: ۵۴، ج ۱، ص ۱۱۹

.....سय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा रज़विय्या मुखर्रजा, जि. 2 स. 464 पर फ़रमाते हैं धूप का गर्म पानी मुतलकन मगर गर्म मुल्क गर्म मौसिम में जो पानी सोने चांदी के सिवा किसी और धात के बरतन में गर्म हो जाए वोह जब तक ठंडा न हो ले बदन को किसी तरह पहुंचाना न चाहिये वुजू से न गुस्ल से न पीने से यहां तक कि जो कपड़ा इस से भीगा हो जब तक सर्द (ठंडा) न हो जाए पहनना मुनासिब नहीं कि इस पानी के बदन को पहुंचने से مَعَاذَ اللَّهِ एहतिमाले बर्स है।

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के लिये पीतल के बरतन में पानी लाया गया तो उन्होंने ने इस से वुजू करने से इन्कार कर दिया और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से इस की कराहत नक्ल की ।

जब वुजू से फ़ारिग़ हो और नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो तो दिल में येह खयाल होना चाहिये कि मैं ने अपने ज़ाहिर को तो पाक कर लिया जिस पर मख़्लूक की नज़र पड़ती है । लिहाज़ा अब दिल को पाक किये बिगैर बारगाहे इलाही में मुनाजात करने से हया करना चाहिये कि उसे तो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ मुलाहज़ा फ़रमाता है और येह बात यकीनी है कि दिल की पाकीज़गी तौबा से हासिल होती है । नीज़ दिल का बुरे अख़्लाक से कनारा कश और अच्छे अख़्लाक से मुज़य्यन होना ज़रूरी है । जो सिर्फ़ ज़ाहिरी त़हारत पर इक्तिफ़ा करता है वोह उस शख़्स की तरह है जिस ने बादशाह को घर में आने की दा'वत देने का इरादा किया और अन्दरूनी हिस्से को गन्दगियों से आलूदा छोड़ कर बैरूनी हिस्से पर चूना करने में मशगूल हो गया तो ऐसा शख़्स बादशाह के ग़ैज़ो ग़ज़ब का किस क़दर हक़दार है । **اللَّهُ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى** बेहतर जानता है ।

वुजू के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुश्ताफ़ा

﴿1﴾.....जिस ने अच्छी तरह वुजू किया और दो रकअत नमाज़ पढ़ी और इन में कोई दुन्यावी बात दिल में न लाया तो वोह अपने गुनाहों से इस तरह निकल जाएगा जैसे उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना था ।

﴿2﴾.....एक रिवायत में है कि इन दो रकअतों में वोह न भूला तो उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।⁽¹⁾

﴿3﴾.....“क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ के बारे में न बताऊं जिस के ज़रीए **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ख़ताओं को मिटाता और दर्जात को बुलन्द फ़रमाता है : (सुनो ! वोह) दुश्वारी के वक़्त कामिल वुजू

①.....المعجم الكبير، الحديث: ٩١٥، ج ١، ص ٣٣١، باختصار۔

المعجم الاوسط، من اسمه القاسم، الحديث: ٢٩٤٢، ج ٣، ص ٢١٠، باختصار۔

سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب کراهية الوسوسة.....الخ، الحديث: ٩٠٥، ج ١، ص ٣٢٢، باختصار۔

करना, मसाजिद की तरफ़ चल कर जाना और एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना और येह जिहाद है। आखिरी जुम्ला तीन मरतबा इरशाद फ़रमाया।”(1)

﴿4﴾.....मरवी है कि सय्यिदे अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वुजू में एक एक बार आ'ज़ा को धोया और इरशाद फ़रमाया : इस वुजू के बिगैर **अल्लाह** غَرَّوَجَلْ नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता।” फिर वुजू में दो दो बार आ'ज़ा को धोया और इरशाद फ़रमाया : “जिस ने आ'ज़ाए वुजू को दो दो बार धोया **अल्लाह** غَرَّوَجَلْ उसे दो गुना अन्न अता फ़रमाएगा।” फिर आ'ज़ाए वुजू को तीन तीन बार धोया और इरशाद फ़रमाया : येह मेरा, मुझ से पहले अम्बियाए किराम और हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का वुजू है।”(2)

﴿5﴾.....जो वुजू के वक़्त **अल्लाह** غَرَّوَجَلْ का ज़िक्र करे **अल्लाह** उस का तमाम जिस्म पाक फ़रमाएगा और जो **अल्लाह** غَرَّوَجَلْ का ज़िक्र न करे तो उस का वोही हिस्सा पाक होगा जहां तक पानी पहुंचा।(3)

﴿6﴾.....जिस ने बा वुजू होने के बा वुजूद वुजू किया **अल्लाह** غَرَّوَجَلْ उस के लिये दस नेकियां लिख देता है।(4)

﴿7﴾.....वुजू पर वुजू, नूर पर नूर है।(5)

येह तमाम रिवायात नए वुजू की तरगीब देती हैं।

﴿8﴾.....जब मुसलमान वुजू करता और कुल्ली करता है तो उस के मुंह की ख़ताएं निकल जाती हैं। जब नाक साफ़ करता है तो उस के नाक की ख़ताएं निकल जाती हैं। जब चेहरा धोता है तो चेहरे की ख़ताएं निकल जाती हैं यहां तक कि उस की आंखों की पल्कों के नीचे की भी। जब सर का मस्ह करता है तो सर की ख़ताएं निकल जाती हैं हत्ता कि कानों के नीचे की भी। जब पाउं धोता है तो दोनों पाउं की ख़ताएं निकल जाती हैं हत्ता कि पाउं के नाखुनों के नीचे की भी। फिर उस का मस्जिद की तरफ़ जाना और नमाज़ पढ़ना मज़ीद षवाब का सबब होता है।(6)

①.....صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب فضل اسباغ الوضوء على المكاره، الحديث: ٢٥١، ص ١٥٢ -

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب ماجاء فى الوضوء.....الخ، الحديث: ٣١٩، ٣٢٠، ج ١، ص ٢٥٠-٢٥١ -

③.....الجامع الصغير، حرف الميم، الحديث: ٨١٤٥، ص ٥٢٦ -

④.....سنن ابى داود، كتاب الطهارة، باب الرجل يجدد الوضوء.....الخ، الحديث: ٦٢، ج ١، ص ٥٦ -

⑤.....الترغيب والترهيب، كتاب الطهارة، الترغيب فى المحافظة على الوضوء.....الخ، الحديث: ٣١٨، ج ١، ص ١٢٣ -

⑥.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب ثواب الطهور، الحديث: ٢٨٢، ج ١، ص ١٨٢ -

﴿9﴾.....(1) या'नी वुजू करने वाला रोज़ेदार जैसा है।

﴿10﴾.....जिस ने अच्छी तरह वुजू किया फिर अपनी निगाहें आस्मान की तरफ़ उठाईं और कलिमए शहादत : أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ पढ़ा उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं जिस से चाहे दाखिल हो।(2)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “अच्छा वुजू तुझ से शैतान को भगा देगा।”

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “जो शख्स इस्तिताअत रखता है कि बा वुजू, ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार के साथ रात गुज़ारे तो उसे ऐसा ही करना चाहिये क्यूंकि जिस अमल पर रूहें कब्ज़ की जाती हैं उसी पर उठाई जाएंगी।”(3)

गुस्ल का तरीक़ा

(गुस्ल करने वाला) पानी के बरतन को सीधी जानिब रखे फिर بِسْمِ اللَّهِ शरीफ़ कह कर तीन बार हाथ धोए फिर इस्तिन्जा करे जिस का तरीक़ा बयान हो चुका है। अगर जिस्म पर नजासत लगी हो तो उसे ज़ाइल करे फिर नमाज़ का सा वुजू करे मगर पाउं आखिर में धोए अगर पाउं पहले धो कर ज़मीन पर रखे तो येह पानी का ज़ियाअ होगा। फिर सर पर तीन मरतबा पानी बहाए फिर तीन मरतबा दाएं कंधे पर और तीन मरतबा बाएं कंधे पर पानी बहाए फिर जिस्म को आगे पीछे से मले और सर और दाढ़ी के बालों का ख़िलाल करे और घने या हलके बालों के उगने की जगह तक पानी पहुंचाए। औरत पर मेन्डियों (लटों) को खोलना लाज़िम नहीं। लेकिन जब मा'लूम हो कि बालों के दरमियान पानी नहीं पहुंचेगा तो खोलना ज़रूरी है और बदन की सलूटों का ख़ास ख़याल रखे। दौराने गुस्ल उज़्बे मख़्सूस को हाथ लगाने से बचे अगर ऐसा करे तो दोबारा वुजू करे।(4)

①.....येह हदीषे पाक مسند الفردوس में इस तरह है “الطَّاهِرُ النَّائِمُ كَالصَّائِمِ الْقَائِمِ” या'नी वुजू कर के सोने वाला रोज़ा रख कर रात भर कियाम करने वाले की तरह है।” (فردوس الاخبار للديلمي، باب الطاء، الحديث: ٣٤٩٣، ج ٢، ص ٥٢)

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة، باب مايقال بعد الوضوء، ج ١، ص ٢٤٣

③.....المصنف لابن ابي شيبه، كتاب الطهارات، من كان يقول نم.....الخ، الحديث: ٣، ج ١، ص ١٢٢

④.....अहनाफ़ के नज़दीक : सित्रे ग़लीज़ (उज़्बे मख़्सूस) को हाथ लगाने से वुजू नहीं टूटता हां दोबारा कर लेना मुस्तहब है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 302)

अगर गुस्ल से पहले वुजू कर लिया तो अब दोबारा वुजू करने की हाज़त नहीं। वुजू और गुस्ल की सुन्नतों में से वोह बातें हम ने ज़िक्र कर दी हैं जिन का जानना और अमल करना राहे आख़िरत पर चलने वाले के लिये ज़रूरी है। इस के इलावा मुख़लिफ़ अहवाल पेश आने से जिन मसाइल की ज़रूरत पड़ती है उन के लिये कुतुबे फ़िक़ह की तरफ़ रुजूअ करें।

गुस्ल के फ़राइज़ :

गुस्ल में दो फ़र्ज़ हैं : (1)....निय्यत (2)....पूरे बदन पर पानी बहाना ।⁽¹⁾

वुजू के फ़राइज़ :

वुजू के फ़राइज़ येह है : (1)....निय्यत (2)....चेहरे का धोना (3).....दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोना (4)....उतने हिस्से पर मस्ह करना जिस पर सर का इतलाक़ हो सके (5)....दोनों पाउं को टख़्नों समेत धोना (6) तरतीब काइम रखना। आ'ज़ा को पे दर पे धोना वाजिब नहीं ।⁽²⁾

गुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब :

गुस्ल फ़र्ज़ होने के चार अस्बाब हैं : (1)....मनी का (शहवत के साथ) निकलना (2)....(मर्द व औरत की) शर्मगाहों का बिग़ैर किसी रुकावट के मिलना (3)...हैज़ और (4)....नफ़ास का ख़त्म होना ।⁽³⁾

①.....अहनाफ़ के नज़दीक गुस्ल में तीन फ़र्ज़ है : (1)....कुल्ली करना (2)....नाक में पानी डालना (3)....तमाम ज़ाहिर बदन पर पानी बहाना । (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि.1, स. 316, 317)

②.....अहनाफ़ के नज़दीक वुजू में चार फ़र्ज़ हैं : (1)....मुंह धोना (2)....कोहनियों समेत हाथ धोना (3)....चौथाई सर का मस्ह (4).....पाउं को गिट्टों (टख़्नों) समेत एक दफ़आ धोना । (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि.1, स. 288 ता 291)

③.....अहनाफ़ के नज़दीक गुस्ल फ़र्ज़ होने के दर्जे ज़ैल अस्बाब हैं। चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अहकाम सफ़हा 107 पर शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक़ल फ़रमाते हैं : (1) मनी का अपनी जगह से शहवत के साथ जुदा हो कर उज़्ज से निकलना । (फ़तावा आलमगीरी, जि. 1 स. 4) (2) एहतिलाम या'नी सोते में मनी निकल जाना : (ख़ुलासतुल फ़तावा, जि.1 स. 13) (3) शर्मगाह में हश्फ़ा (सुपारी) दाख़िल हो जाना ख़्वाह शहवत हो या न हो, इन्ज़ाल हो या न हो दोनों पर गुस्ल फ़र्ज़ है । (मराफ़ी الفلاح معہ حاشیة الطحطاوی، ص 94) (4) हैज़ से फ़ारिग़ होना । (ऐज़न) (5) निफ़ास (या'नी बच्चा जनने पर जो ख़ून आता है उस) से फ़ारिग़ होना । (تبیین الحقائق، ج 1، ص 14)

इन मवाकेझ पर गुस्ल करना सुन्नत है :

ईदैन (या'नी ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा), जुमुआ, एहराम, अरफ़ा व मुजदलिफ़ा में ठहरने और मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने के लिये गुस्ल करना ।

जिन मवाकेझ पर गुस्ल करना मुस्तहब है :

तीन गुस्ल सुन्नत हैं : अय्यामे तशरीक के हर दिन । एक कौल के मुताबिक़ तवाफ़े वदाअ के लिये गुस्ल करना सुन्नत मगर दुरुस्त येह है कि सुन्नत नहीं बल्कि मुस्तहब है । काफ़िर जब ग़ैर जुनुबी हालत में इस्लाम लाए और मजनून जब इफ़ाका पाए और मय्यित को गुस्ल देने वाले के लिये भी गुस्ल करना मुस्तहब है ।

तयम्मूम का बयान

तयम्मूम के जवाज़ की सूरतें :

जिस के लिये पानी का इस्ति'माल मुश्किल हो तलाश के बावजूद न मिलने के सबब या कोई दरिन्दा वग़ैरा उस तक पहुंचने से रुकावट हो या प्यासा होने की वजह से उसे खुद मौजूद पानी की ज़रूरत हो या उस का रफ़ीक़ प्यासा हो या पानी किसी और की मिलकियत में हो और वोह राइज कीमत से ज़ियादा में बेचता हो या आ'जाए वुजू पर कहीं ज़ख़्म हो या बीमार हो या पानी के इस्ति'माल से किसी उज़्व के ख़राब होने या बहुत ज़ियादा कमजोरी का डर हो तो फ़र्ज नमाज़ का वक़्त दाख़िल होने तक सब्र करे ।

तयम्मूम का तरीक़ा :

फिर वोह ऐसी पाक मिट्टी का क़स्द करे जो नर्म हो जिस से गुबार उड़ता हो । अब अपनी उंगलियों को मिला कर उस पर दोनों हाथों को मारे और एक बार पूरे चेहरे का मस्ह करे और उस वक़्त जवाजे नमाज़ की निय्यत करे । बालों के नीचे गुबार पहुंचाने की मशक्कत न करे ख़्वाह बाल घने हों या हल्के । गुबार से पूरे चेहरे को घेरने की कोशिश करे और येह चीज़ एक बार मारने से हासिल हो जाती है क्यूंकि चेहरे की चोड़ाई हथेलियों की चोड़ाई से ज़ियादा नहीं और घेरने में ग़ालिब गुमान काफ़ी है । फिर अंगूठी उतारे और अपनी उंगलियों को कुशादा कर के दूसरी ज़र्ब मारे इस के बा'द दाएं हाथ की उंगलियों के ज़ाहिर को बाएं हाथ की उंगलियों के बातिन से इस

तरह मिलाए कि उंगलियों के पोरे दूसरी तरफ़ की शहादत की उंगली से बाहर न हों फिर बाएं हाथ को जिस तरह रखा था उसी तरह दाएं बाजू के ज़ाहिर पर फैरे फिर बाईं हथेली उलट कर दाएं बाजू के बातिन पर फैरे और कलाई तक ले आए फिर बाएं हाथ के अंगूठे के अन्दर वाले हिस्से को दाएं हाथ के अंगूठे के ज़ाहिर पर फैरे फिर बाएं बाजू के साथ भी इसी तरह करे फिर हथेलियों का मसह कर के उंगलियों के दरमियान खिलाल करे ।

इस तकलीफ़ का मक्सद येह है कि एक ही ज़र्ब में कोहनियों तक घेरना पाया जाए अगर एक ही ज़र्ब से ऐसा मुश्किल हो तो दो या इस से ज़ियादा ज़र्बों में भी कोई हरज नहीं । जब इस के साथ फ़र्ज पड़े तो उसे इख़्तियार है जैसे चाहे नफ़ल पड़े और अगर दो फ़र्जों को जम्अ करना चाहे तो दूसरी फ़र्ज नमाज़ के लिये दोबारा तयम्मुम करे । इसी तरह हर फ़र्ज नमाज़ के लिये अलाहिदा अलाहिदा तयम्मुम करे ।⁽¹⁾



.....ता'रीफ़ और सआदत.....

हज़रते सय्यिदुना इमाम अब्दुल्लाह बिन उमर बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي (मुतवफ़्फ़ा 685 हि.) इरशाद फ़रमाते हैं कि “जो शख्स **अब्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की फ़रमां बरदारी करता है दुन्या में उस की ता'रीफ़ें होती हैं और आख़िरत में सआदत मन्दी से सरफ़राज़ होगा ।”

(تفسير البيضاوي، ج ۲، الاحزاب، تحت الآية: ۷۱، ج ۴، ص ۳۸۸)

①अहनाफ़ के नज़दीक एक तयम्मुम से जिस क़दर चाहें फ़राइज़ व नवाफ़िल अदा किये जा सकते हैं क्यूंकि तयम्मुम वुजू के काइम मक़ाम है । हर फ़र्ज के लिये अलाहिदा तयम्मुम करना ज़रूरी नहीं ।

(ماخوذ از الهداية، كتاب الطهارة، ج ۱، ص ۲۹)

बाब नम्बर 3 : जाहिरी नजासतों से पाकी हासिल करना

जाहिरी नजासतों से पाकी हासिल करने की दो किस्में हैं :

(1)....मैल कुचेल दूर करना और (2).....अज्जाए जिस्म को साफ करना

पहली किस्म : मैल कुचेल और रुतूबात की आठ किस्में हैं :

(1)....सर के बालों में जो मैल और जूएं जम्अ होती हैं इन से पाकीजगी हासिल करना : धोने, कंघी करने और तेल लगाने के ज़रीए मुस्तहब है ताकि बाल उलझते न रहें कि प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कभी कभी सरे अन्वर में तेल डालना और कंघी करना भी मरवी है।⁽¹⁾ नीज़ इस का हुक्म भी फ़रमाते और इरशाद फ़रमाते : “कभी कभी तेल लगाया करो।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “जिस के बाल हों वोह इन की इज़्ज़त करे।”⁽³⁾ या’नी इन्हें मैल कुचेल से बचाए।

बारगाहे रिसालत में एक शख्स हाज़िर हुवा जिस के सर और दाढ़ी के बाल बिखरे हुए थे तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “क्या इस के पास तेल नहीं जिस के ज़रीए बालों को बिठा लेता।” फिर इरशाद फ़रमाया : “तुम में से कोई इस हालत में आता है गोया वोह शैतान (की तरह बाल बिखरे हुए) है।”⁽⁴⁾

(2).....कानों की सलूटों में जम्अ होने वाली मैल कुचेल : इस में से जो जाहिर हो वोह मस्ह से जाइल हो जाती है और जो कान के सूराख की गहराई में जम्अ हो जाती है गुस्ल खाने से निकलते वक़्त इसे नर्मी से साफ़ किया जाए क्योंकि बसा अवकात इस की कषरत समाअत को नुक्सान पहुंचाती है।

(3)....नाक में जम्अ होने वाली रुतूबतें जो अतराफ़ से मिली होती हैं : इन्हें नाक में पानी चढ़ा कर (उलटे हाथ की) छुंगलिया से साफ़ करे।

①.....الشمائل المحمدية للترمذی، باب ماجاء فی ترجل رسول اللّٰه، الحديث: ۳۳-۳۵، ص ۴۰-۴۲۔

②.....سنن الترمذی، کتاب اللباس، باب ماجاء فی النهی عن الترجل الا غیبا، الحديث: ۱۷۲۲، ج ۳، ص ۲۹۳۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الترجل، باب ماجاء فی استحباب الطیب، الحديث: ۳۱۶۳، ج ۴، ص ۱۰۳۔

④.....سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی غسل الثوب وفی الخلقان، الحديث: ۳۰۶۳، ج ۴، ص ۷۲۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۳۔

(4).....दांतों और ज़बान के کنارों पर जम्अ होने वाली रुतूबतें : इन्हें मिस्वाक और कुल्ली के ज़रीए ज़ाइल करे । हम इन दोनों का ज़िक्र माक़बल में कर चुके हैं ।

(5).....एहतिyात न करने की वजह से दाढ़ी में जम्अ होने वाली मैल कुचेल और जूएं : इन्हें धोने और कंघी के ज़रीए दूर करना मुस्तहब है । मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र व हज़र में कंघी, सर खुजाने की लकड़ी और आईना अपने पास रखते थे ।”⁽¹⁾ और येह अहले अरब का तरीका है ।

आका की दाढ़ी मुबारक :

मरवी है कि आकाए दो जहान, महबूबे रहमान, صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दिन में दो मरतबा दाढ़ी में कंघी करते थे⁽²⁾ और आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक घनी थी ।⁽³⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दाढ़ी मुबारक भी घनी थी । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की दाढ़ी मुबारक हलकी और लम्बी थी । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم की दाढ़ी मुबारक चौड़ी थी जो दोनों कंधों को भर लेती थी ।

अच्छी निय्यत से ज़ैबो जीनत इख़्तियार करना :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका त़य्यिबा त़ाहिरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं कि एक बार हुज़रए मुबारका के पास कुछ लोग जम्अ हुए तो उन की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाने से पहले प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मटके में मौजूद पानी में अपना अक्स देख कर सर और दाढ़ी को दुरुस्त फ़रमाया । मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم क्या आप भी ऐसा कर रहे हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने बन्दे को पसन्द फ़रमाता है कि जब वोह अपने (मुसलमान) भाइयों के पास जाए तो बन संवर कर जाए ।”⁽⁴⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۳۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۳۔

③.....سنن النسائی، کتاب الزينة، اتخاذ الجمّة، الحديث: ۵۲۴۲، ص ۸۳۲۔

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۳، باختصار۔

जाहिल शख्स येह खयाल करता है कि येह तो लोगों के लिये जैबो जीनत इख्तियार करना है वोह इसे दूसरों की आदत पर क़ियास करता है और फ़िरिशतें सिफ़त लोगों को लोहारों जैसे कम दर्जा लोगों से तशबीह देता है। अफ़सोस है ऐसे शख्स पर। हालांकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को तब्लीगे इस्लाम का हुक्म था और आप की ज़िम्मेदारी थी कि उन के दिलों में अपनी अज़मत को उजागर करें ताकि उन के दिलों में आप का मर्तबा कम न हो और उन की नज़रों में अपनी सूरत को उम्दा करें ताकि वोह आप को हक़ीर समझ कर आप से नफ़रत न करें। मुनाफ़िक्तीन इसी तरह (की बातों और अफ़आल के ज़रीए) लोगों के दिलों में आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये नफ़रत पैदा करने की कोशिश करते थे। लोगों को दा'वत देने वाले अ़ालिम पर भी येही तरीक़ा इख़्तियार करना ज़रूरी है और वोह ज़ाहिरी तौर पर उन चीज़ों का खयाल रखे जो लोगों के उस से मुतनफ़िफ़र होने का सबब न बनें। इस क़िस्म के उमूर में ए'तिमाद का दारोमदार निय्यत पर होता है और येह आ'माल ही हैं जो (हुस्ने निय्यत के सबब) मक्सूद का दर्जा हासिल कर लेते हैं। इस इरादे से जैबो जीनत इख़्तियार करना पसन्दीदा है और खुद को ज़ाहिद (या'नी दुन्या से कनाराकश) ज़ाहिर करने के लिये दाढ़ी को परागन्दा छोड़ देना ममनूअ है जब कि निय्यत येह हो कि लोग समझें येह ज़ाहिद है और नफ़्स की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं हैं। अलबत्ता इस से अहम काम में मशगूलिय्यत के सबब इसे छोड़ना अच्छा है। येह बन्दे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दरमियान पोशीदा अहवाल हैं और निगरानी करने वाला अच्छी तरह देखता है। लिहाज़ा मुनाफ़क़त किसी हाल में फ़ाइदे मन्द नहीं।

बुरी निय्यत से जैबो जीनत इख़्तियार करना :

कितने ही जाहिल लोग ऐसे हैं जो मख़्लूक की खातिर उन चीज़ों को इख़्तियार करते हैं ऐसा शख्स खुद भी ग़लत फ़हमी का शिकार है और दूसरों को भी ग़लत फ़हमी में डालता है और गुमान करता है कि उस का मक्सद अच्छा है। पस तुम उ-लमा के एक गुरौह को देखोगे कि वोह क़ीमती लिबास जैबे तन करते हैं और कहते हैं कि हमारा मक्सद बिदअतियों और झगड़ालू लोगों का मुक़ाबला करना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल करना है। येह बात उस दिन वाजेह हो जाएगी जिस दिन दिलों का इम्तिहान होगा और क़ब्रों से मुर्दों को उठाया जाएगा और जो कुछ सीनों में है ज़ाहिर हो जाएगा उस दिन ख़ालिस चांदी और खोट वाली चांदी में तमीज़ हो जाएगी। हम इस बड़ी पेशी के दिन की रुस्वाई से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहते हैं।

(6).....उंगलियों के बैरूनी हिस्से के जोड़ों पर जम्अ होने वाली मैल : अहले अरब अम तौर पर इसे धोते न थे क्यूंकि वोह खाने के बा'द हाथ नहीं धोते थे जिस की वजह से उंगलियों की सलूटों में मैल जम्अ हो जाती थी तो सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें जोड़ों के धोने का हुक्म इरशाद फ़रमाया ।⁽¹⁾

(7).....उंगलियों के पोरों की सफ़ाई : “मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अहले अरब को इन की सफ़ाई का हुक्म दिया⁽²⁾ और नाखुनों में जम्अ होने वाली मैल कुचेल को साफ़ करना क्यूंकि (नाखुन तराशने के लिये) हर वक़्त कैंची वगैरा मुयस्सर नहीं होती जिस की वजह से नाखुनों में मैल जम्अ हो जाता है। अगर्चे सरकारे दो अलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नाखुन तराशने, बग़लों के बाल उखेड़ने और जैरे नाफ़ बाल मुन्डने के लिये चालीस दिन मुक़र्रर फ़रमाए ।”⁽³⁾ मगर इन की सफ़ाई का ख़ास ख़याल रखने का हुक्म दिया ।⁽⁴⁾

मरवी है कि एक बार कुछ दिन वहुय न आई तो फिर जब सय्यिदुना हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो (आप के इस्तिफ़सार फ़रमाने पर) अर्ज की : “हम आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास कैसे आए जब कि आप (के उम्मत) न अपनी उंगलियों के जोड़ों को धोते हैं, न पोरों को साफ़ करते हैं और न ही मिस्वाक से दांत साफ़ करते हैं। लिहाज़ा अपनी उम्मत को इस का हुक्म दें ।”⁽⁵⁾

नाखुनों के मैल को “उफ़” और कानों के नीचे के मैल को “तुफ़” कहा जाता है। इरशादे खुदावन्दी है : فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أُفٍّ (5) (यू.एन. इराक़: 23) इस की तफ़सीर में कहा गया है कि वालिदैन् को नाखुनों के मैल कुचेल के ज़रीए तक्लीफ़ न दो। एक कौल येह है कि वालिदैन् को इतनी भी अज़िय्यत न दो जितनी तुम नाखुनों के मैल कुचेल से महसूस करते हो।

(8)....पसीना बहने और गर्दों गुबार पड़ने की वजह से तमाम बदन पर जम्अ हो जाने वाला मैल कुचेल : इसे गुस्ल से दूर किया जाता है। (इस के लिये) हम्माम में दाख़िल होने में कोई हरज नहीं कि बा'ज सहाबए किराम رَضَوُا اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ أَجْمَعِينَ शाम के हम्मामों में जाया करते थे।

①.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب السواک من الفطرة، الحديث: 53، ج 1، ص 53۔

②.....قوت القلوب الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج 2، ص 239۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث: 258، ص 53۔

④.....قوت القلوب الفصل الثالث والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج 2، ص 239۔

⑤.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد اللّٰه بن العباس، الحديث: 2181، ج 1، ص 523۔

सब से बेहतर और सब से बदतर घर :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा और हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से मरवी है कि “बेहतरीन घर हम्माम है कि येह बदन को पाक करता और आग की याद दिलाता है।”⁽¹⁾ जब कि बा'ज सहाबए किराम رَضُوا اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ से मन्कूल है कि “बदतरीन घर हम्माम है कि येह शर्मगाह को ज़ाहिर करता और हया को ख़त्म करता है।”⁽²⁾ येह दूसरा कौल हम्माम की आफ़त को ज़ाहिर करता है जब कि पहला कौल इस के फ़ाइदे को बयान करता है। लिहाज़ा आफ़त से बचते हुए फ़ाइदे को त़लब करने में कोई हरज नहीं। लेकिन हम्माम में दाख़िल होने वाले के लिये कुछ चीज़ें सुन्नतें और कुछ वाजिब हैं।

हम्माम में दाख़िल होने वाले पर वाजिब उमूर :

हम्माम में दाख़िल होने वाले पर दो चीज़ें अपनी शर्मगाह और दो दूसरे की शर्मगाह के हवाले से वाजिब हैं :

(1).....अपनी शर्मगाह के हवाले से उस पर वाजिब है कि उसे दूसरों के देखने और छूने से बचाए। उस की मैल अपने हाथों से दूर करे और मलने वाले को रानों और नाफ़ के नीचे से शर्मगाह तक के हिस्से को हाथ लगाने से मन्अ करे। मैल दूर करने के लिये शर्मगाह के इलावा दूसरी जगहों को हाथ लगाने में जवाज़ का एहतिमाल है लेकिन क़ियास येही है कि हराम हो क्यूंकि हुरमत के मुआमले में शर्मगाहों को छूने का वोही हुक्म है जो देखने का है। इसी तरह बाक़ी पर्दे की जगहों (या'नी रानों) का भी येही हुक्म होना चाहिये।

(2).....दूसरे की शर्मगाह के सिलसिले में उस पर वाजिब है कि अपनी निगाहें उस से बचाए और उसे पर्दे की जगह खोलने से मन्अ करे क्यूंकि बुराई से मन्अ करना वाजिब है। उस पर याद दिलाना वाजिब है अमल करवाना वाजिब नहीं और जब तक उसे किसी की तरफ़ से मारने या गाली गलोच करने या किसी दूसरे हराम काम का ख़ौफ़ न हो तब तक इस से येह (या'नी बुराई से मन्अ करने की) जिम्मेदारी साक़ित नहीं होगी। अगर इन में से कोई सूरत हो तो उस पर लाज़िम नहीं कि वोह किसी को एक हराम काम से रोक कर दूसरे हराम काम का मुर्तकिब बना

①.....مرقاة المفاتيح، كتاب اللباس، الفصل الثاني، تحت الحديث: ٢٢٤٦، ج ٨، ص ٢٥٥، بتغير قليل۔

المصنف لابن ابی شيبه، كتاب الطهارات، من رخص في دخول الحمام، الحديث: ١، ج ١، ص ١٣٣، بتغير قليل۔

②.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب القسم والنشوز، باب ماجاء في دخول الحمام، الحديث: ١٢٨٠٨، ج ٤، ص ٥٠٥۔

فردوس الاخبار للديلمي، باب الباء، الحديث: ١٩٤٢، ج ١، ص ٢٤٦۔

दे। अलबत्ता वोह उज़्र पेश करते हुए येह नहीं कह सकता कि मैं जानता हूं कि येह बात उसे फ़ाइदा न देगी और न ही वोह इस पर अमल करेगा बल्कि उस पर याद दिलाना लाज़िम है क्यूंकि दिल इन्कार सुनने के तअषुर से ख़ाली नहीं होता और गुनाहों के याद दिलाने से बचने के मवाक़ेअ होते हैं और येह बात इस काम को उस की निगाहों में क़बीह़ क़रार देती और उसे उस से नफ़रत दिलाती है। लिहाज़ा उसे (या'नी बुराई से मन्अ करने को) छोड़ना नहीं चाहिये। इसी बिना पर आज कल एहतियात के तौर पर हम्माम में जाना छोड़ दिया गया है क्यूंकि शर्मगाहों को नंगा करना ही पड़ता है खुसूसन नाफ़ के नीचे और शर्मगाह से ऊपर की जगह क्यूंकि लोग इसे काबिले सित्र नहीं समझते हालांकि शरीअत ने इसे सित्र में शुमार किया है और गोया इसे सित्र की हद क़रार दिया। इस लिये हम्माम में तन्हा जाना मुस्तहब है।

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “मैं उस शख्स को मलामत नहीं करता जिस के पास सिर्फ़ एक दिरहम हो और वोह हम्माम वाले को इस लिये दे दे कि वोह उस के लिये हम्माम ख़ाली कर दे।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को हम्माम में यूं देखा गया कि “आप का चेहरा दीवार की तरफ़ था और आंखों पर पट्टी बंधी हुई थी।”⁽²⁾

बा'ज उ-लमा ने फ़रमाया : “हम्माम में दाख़िल होने में कोई हरज नहीं लेकिन दो चादरें हों एक चादर सित्र पोशी के लिये और एक सर पर ओढ़ने के लिये ताकि शर्मगाह और आंखों की हिफ़ाज़त हो।”⁽³⁾

हम्माम में दाख़िल होने की दश सुन्नतें :

- (1)....निय्यत करे यूं कि नमाज़ के लिये जो ज़ीनत पसन्दीदा है उस के लिये पाकीज़गी हासिल करने की निय्यत करे, दुन्या के लिये या ख़्वाहिशात पर अमल करने की निय्यत न करे।
- (2).....दाख़िल होने से पहले हम्माम वाले को उजरत दे क्यूंकि जितना फ़ाइदा वोह उठाएगा वोह मजहूल है और हम्माम वाले को न जाने कितनी देर इन्तिज़ार करना पड़ेगा। अन्दर जाने से पहले उजरत देने से दोनों इवज़ों में से एक की जहालत ख़त्म हो जाएगी और दिल भी खुश हो जाएगा।
- (3)....दाख़िल होते वक़्त बायां पाउं अन्दर रखे।

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فى فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩-

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فى فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٩-

③.....فيض القدير، حرف الباء، تحت الحديث: ٣١٨١، ج ٣، ص ٢٤٨-

हम्माम में दाखिल होने से पहले की दुआ :

(4)....दाखिल होने से पहले येह दुआ पढ़े :

”بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الرَّجْسِ النَّجِسِ الْخَبِيثِ الْمُخْبِثِ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ“

या'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहूम वाला है सख्त नापाकी और निहायत शरीर पलीद शैतान मर्दूद से मैं **अल्लाह** की पनाह चाहता हूं ।

(5).....उस वक्त हम्माम में जाए जब कोई न हो या हम्माम को खाली कराए क्योंकि अगर हम्माम में सिर्फ दीनदार और मोहतात लोग हों तो नंगे बदनों की तरफ देखना हया की कमी पर दलालत करता है और येह चीज शर्मगाहों को देखने का खयाल लाती है फिर आ'जा को हरकत देने से इन्सान इस से नहीं बच सकता कि चादर का पल्लू हट जाए और शर्मगाह जाहिर हो जाए तो यूं लाशुऊरी तौर पर शर्मगाह पर नजर पड़ जाएगी । इसी वजह से हजरते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने अपनी दोनों आंखों पर पट्टी बांधी ।

(6)....हम्माम में दाखिल होने से पहले अपने दोनों पहलू धोए ।

(7)....गर्म हम्माम में दाखिल होने में जल्दी न करे जब तक कि पहले पसीना न आ जाए ।

(8)....पानी ज़ियादा इस्ति'माल न करे बल्कि ब क़दरे हाजत पर इक्तिफ़ा करे क्योंकि हालात व क़राइन के मुताबिक़ इसी की इजाज़त है । नीज़ ज़ियादा इस्ति'माल करने की सूरत में अगर हम्मामी को पता चल जाए तो वोह नापसन्द करेगा खुसूसन जब कि पानी गर्म हो क्योंकि इस पर खर्च करना पड़ता और थकावट भी होती है ।

(9).....हम्माम की गर्मी से जहन्नम की तपिश को याद करे और कुछ देर के लिये खुद को गर्म घर में कैद समझे और इसे जहन्नम पर क़ियास करे क्योंकि येह जहन्नम के एक घर के मुशाबेह है जिस के नीचे आग और ऊपर तारीकी है, हम इस से **अल्लाह** की पनाह चाहते हैं बल्कि अक्लमन्द एक लम्हे के लिये भी आखिरत की याद से ग़ाफ़िल नहीं होता क्योंकि उस ने उधर ही जाना है और वोही उस का ठिकाना है । पस अक्लमन्द पानी और आग वगैरा जो भी चीज़ देखे उसे इस से इब्रत और नसीहत ही हासिल करनी चाहिये । इस लिये कि इन्सान अपनी हिम्मत के मुताबिक़ ही देखता है ।

राहे आखिरत के मुसाफिर की पहचान :

मषलन कोई कपड़े का ताजिर, बढई, मे'मार और जुलाहा जब किसी आबाद मकान में जाएं कि जिस में क़ालीन बिछा हुआ हो और उन्हें ग़ौरो फ़िक्र में गुम पाए तो तू देखेगा कि कपड़े वाला क़ालीन देख कर इस की कीमत में ग़ौर कर रहा होगा, जोलाहा कपड़े की बनावट में ग़ौर कर रहा होगा, बढई छत बनने के तरीके पर ग़ौर कर रहा होगा और मे'मार उस की दीवारों को देख कर इन के मज़बूत और सीधे होने के मुतअल्लिक़ सोच रहा होगा। इसी तरह राहे आखिरत का मुसाफ़िर जब भी किसी चीज़ को देखता है तो वोह उस के लिये नसीहत और आखिरत की याद बन जाती है बल्कि वोह कोई भी चीज़ देखता है तो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस में उस के लिये इब्रत का रास्ता खोल देता है अगर वोह सियाही को देखता है तो उसे क़ब्र की तारीकी याद आती है, अगर सांप को देखता है तो उसे जहन्नम के सांप याद आते हैं, अगर किसी बद सूरत चीज़ को देखता है तो मुन्कर नकीर और ज़बानिय्या (फ़िरिशतों का एक गुरौह जो नाफ़रमानों को जहन्नम की तरफ़ धकेलने पर मा'मूर है) को याद करता है, अगर कोई ख़ौफ़नाक आवाज़ सुनता है तो सूर का फूंकना याद आ जाता है, अगर किसी अच्छी व ख़ूब सूरत चीज़ को देखता है तो जन्नत की ने'मतों को याद करता है, अगर किसी बाज़ार या घर से इन्कार या क़बूलिय्यत की कोई बात सुनता है तो अपने उख़रवी मुआमले में हिसाब किताब के बा'द अपने मक़बूल या मर्दूद होने को याद करता है। ज़ियादा मुनासिब है कि अक्लमन्द के दिल पर येह बात छाई रहे क्यूंकि दुन्या के काम ही उसे इन उमूर से रोकते हैं। लिहाज़ा जब भी वोह दुन्या में ठहरने की मुद्दत का आखिरत में ठहरने की मुद्दत से मुकाबला करेगा उसे हकीर जानेगा बशर्तेकि वोह उन लोगों में से न हो जिन के दिल गाफ़िल और बसीरत ख़त्म हो चुकी है।

(10)....हम्माम में दाख़िल होने वाले के लिये येह उमूर भी सुन्नत हैं कि दाख़िल होते वक़्त सलाम न करे अगर इसे कोई सलाम करे तो इस पर लफ़्जे सलाम के साथ जवाब देना वाजिब नहीं अगर कोई दूसरा शख्स जवाब दे दे तो ख़ामोश रहे और अगर बोलना चाहे तो यूं कहे :
 “عَفَاكَ اللَّهُ” या’नी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तुझे अफ़िय्यत अता फ़रमाए।” न हम्माम में ज़ियादा बातें करे और न ही बुलन्द आवाज़ से तिलावत करे।⁽¹⁾

①फ़तावा फ़कीहे मिल्लत जिल्द 1, सफ़हा. 69 पर हज़रते अल्लामा मौलाना जलालुद्दीन अहमद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस बारे में पूछे गए एक सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : गुस्ल करते वक़्त कलिमा व दुरूद शरीफ़ पढ़ना मन्ज़ और ख़िलाफ़े सुन्नत है कि उस वक़्त किसी किस्म का कलाम करने और दुआ पढ़ने की इजाज़त नहीं।

अलबत्ता जाहिरी अल्फाज के जरीए शैतान से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह तलब करने में हरज नहीं। गुरुबे आफताब के वक्त और मगरिब व इशा के दरमियान हम्माम में जाना मकरूह है क्योंकि येह वक्त शयातीन के मुत्तशिर होने का है। हम्माम में किसी दूसरे के जिस्म को मलने में हरज नहीं।

मन्कूल है कि हजरते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बातِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने वसिय्यत फ़रमाई कि मुझे फुलां शख्स गुस्ल दे वोह आप के मुसाहिबीन में से न था और फ़रमाया कि “उस शख्स ने एक मरतबा हम्माम में मेरे जिस्म को मला था लिहाजा मैं चाहता हूँ कि उसे इस का ऐसा बदला दूँ कि वोह खुश हो जाए और वोह इसी तरीके से खुश होगा।”

बा'ज सहाबए किरामِ رَضَوُاُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की रिवायात भी जिस्म मलने के जवाज पर दलालत करती हैं। चुनान्वे, मरवी है कि मदीने के ताजवर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक सफ़र में किसी मक़ाम पर पड़ाव किया और पेट के बल लैट गए, एक सियाह फ़ाम गुलाम आप की पीठ मुबारक दबाने लगा। (रावी कहते हैं :) मैं ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ येह क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “मुझे ऊंटनी ने गिरा दिया है।”⁽¹⁾

जैसे ही हम्माम से फ़ारिग हो तो इस ने'मत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे। कहा गया है कि “सर्दियों में गर्म पानी ने'मतों में से है जिस के मुतअल्लिक उस से पूछ गछ होगी। हजरते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि “हम्माम जदीद ने'मतों में से है।”⁽²⁾ येह हुक्म शरई ए'तिबार से है।

चन्द मुफ़ीद बातें :

अतिब्बा कहते हैं कि “चूने से (जेरे नाफ़ बाल साफ़ कर के) हम्माम में जाना कोढ़ के मरज से अमान है।” मन्कूल है कि “(जेरे नाफ़ बाल साफ़ करने के लिये) महीने में एक बार चूने का इस्ति'माल सफ़ुरा की गर्मी को ख़त्म करता, रंग को साफ़ करता और कुव्वते जिमाअ में इजाफ़ा करता है।” येह भी मन्कूल है कि “सर्दियों में हम्माम में खड़े हो कर पेशाब करना दवा से

①.....المعجم الاوسط، من اسمه موسى، الحديث: ٨٠٤٤، ج ٢، ص ٨١، مفهوماً۔

قوت القلوب الفصل، السادس والاربعون فيه كتب ذكر دخول الحمام، ج ٢، ص ٢٣٠۔

②.....قوت القلوب، الفصل السادس والاربعون فيه كتب ذكر دخول الحمام، ج ٢، ص ٢٢٩۔

ज़ियादा मुफ़ीद है।" नीज़ येह भी मन्कूल है कि "गर्मियों में हम्माम से निकलने के बा'द सो जाना दवा पीने के काइम मक़ाम है और हम्माम से निकलने के बा'द ठंडे पानी से पाउं धोना निक़रिस⁽¹⁾ (नामी बीमारी) से बचाता है।"⁽²⁾ हम्माम से निकलते वक़्त ठंडा पानी पीना या सर पर डालना मकरूह है। येह मर्दों के अहक़ाम बयान हुए।

जब कि औरतों के मुतअल्लिक़ हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "किसी मर्द के लिये जाइज़ नहीं कि वोह अपनी जौजा को हम्माम में ले जाए जब कि घर में गुस्ल ख़ाना मौजूद हो।"⁽³⁾ और मशहूर है कि "मर्दों पर तहबन्द के बिग़ैर हम्माम में दाख़िल होना हराम है इसी तरह नफ़ास वाली और बीमार औरतों के इलावा औरतों का हम्माम में दाख़िल होना हराम है।"⁽⁴⁾ उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका तय्यिबा त़ाहि़रा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا किसी बीमारी के सबब हम्माम तशरीफ़ ले गई थीं। लिहाज़ा अगर औरत किसी ज़रूरत के तहूत हम्माम में जाए तो एक बड़ी चादर ओढ़ कर जाए⁽⁵⁾ और मर्द के लिये मकरूह है कि औरत को हम्माम में जाने के लिये उजरत दे कि इस तरह वोह मकरूह काम में औरत का मददगार होगा।

दूसरी किस्म : अज्जाउ बदन की सफ़ाई, जिस्म के जाइद अज्जा आठ हैं :

(1).....सर के बाल : जो शख्स सफ़ाई का इरादा करे तो उसे सर के बाल मुन्डवाने में कोई हरज नहीं और जो तेल लगाए और कंघी करे उसे बाल रखने में भी हरज नहीं लेकिन छोटे बड़े रखना मन्अ है क्योंकि येह कमतर लोगों का तरीका है या मुअज़्ज़ज़ लोगों की तरह जुल्फ़ें रख ले कि अब येह उन की अलामत बन गई है और अगर ऐसा करने वाला शरीफ़ लोगों में से न हो तो येह धोका होगा।

(2).....मूंछों के बाल : हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "قُصُّوا الشَّارِبَ" या'नी मूंछों को पस्त करो।"⁽⁶⁾

①निक़रिस : वोह दर्द जो पाउं के अंगूठे में होता है। (फ़िरोज़ुल्लुगात, स. 1437)

②.....قوت القلوب، الفصل السادس والاربعون فيه كتب ذكر دخول الحمام، ج ۲، ص ۳۳۰-

③.....المرجع السابق، ص ۳۳۰-

④.....سنن النسائي، كتاب الغسل، باب الرخصة في دخول الحمام، الحديث: ۳۹۹، ص ۴۲-

سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب دخول الحمام، الحديث: ۳۴۸، ج ۲، ص ۲۲۴-

⑤.....قوت القلوب، الفصل السادس والاربعون فيه كتب ذكر دخول الحمام، ج ۲، ص ۳۳۰-

⑥.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ۴۱۳۵، ج ۳، ص ۵-

एक रिवायत में “حُفُّوا الشَّوَارِبَ وَالْعُقُوفَ اللَّحَى”^(१) के अल्फ़ाज़ हैं। एक रिवायत में है : “يَا’नी मूंछों को पस्त करो और दाढ़ियों को बढ़ाओ।”^(२)

बहर हाल जहां तक मुन्डने का तअल्लुक है तो इस सिलसिले में कोई रिवायत मरवी नहीं और इहफ़ा मुन्डने के ही मुतरादिफ़ होता है। सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से इसी तरह मन्कूल है।

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की याद ताज़ा हो गई :

ताबेईन में से किसी ने एक शख्स को देखा जिस ने अपनी मूंछें उखेड़ी हुई थीं तो फ़रमाया : “तू ने मुझे सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की याद दिला दी।” हज़रते सय्यिदुना मुगीरा बिन शअबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह ﷺ ने मेरी तरफ़ देखा कि मेरी मूंछें बढ़ी हुई थीं तो इरशाद फ़रमाया : “इधर आओ।” चुनान्चे, आप ﷺ ने मिस्वाक पर मेरी मूंछें तराश दीं।^(३)

मूंछों के कनारे वाले बालों को छोड़ने में हरज नहीं कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’जम और दीगर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने इस तरह किया है, इस लिये कि येह हिस्सा न तो मुंह को ढांपता है और न ही इस में खाने की चिकनाहट बाकी रहती है क्यूंकि वोह उस जगह तक नहीं पहुंचती। सरकार ﷺ के फ़रमान “أَعْفُوا اللَّحَى” का मतलब येह है कि दाढ़ियां बढ़ाओ।

यहूद की मुख़ालफ़त करो :

हदीषे पाक में है कि “यहूद मूंछें बढ़ाते और दाढ़ियां काटते हैं, लिहाज़ा तुम उन की मुख़ालफ़त करो।”^(४) बा’ज उ-लमा ने मूंछें मुन्डने को मकरूह समझा और इसे बिदअत क़रार दिया है।

①.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث: २६०، ص १५२۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث: २५९، ص १५२، بلفظ “احفوا”۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی ترک الوضوء ممّا مست النار، الحديث: १८८، ج १، ص ९६۔

④.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابی امامة الباهلي، الحديث: २३३२، ج ८، ص ३००۔

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج २، ص २३२۔

(3).....बगलों के बाल : 40 दिन के अन्दर अन्दर बगलों के बाल उखेड़ना मुस्तहब है। जो शरूअ इब्तिदा में ही उखेड़ने की आदत बना ले उस के लिये उखेड़ना आसान है लेकिन जो शरूअ से मूँडने की आदत बनाए उस के लिये मूँडने काफ़ी है क्योंकि उखेड़ने में अपने आप को अज़ाब और तक्लीफ़ में मुब्तला करना है और मक्सूद सफ़ाई का हुसूल और यह कि इस में मैल कुचेल जम्अ न हो यह चीज़ मूँडने से हासिल हो जाती है।

(4)....जेरे नाफ़ बाल : इन बालों को मूँडना या चूना लगा कर दूर करना मुस्तहब है और 40 दिन से ताख़ीर नहीं होनी चाहिये।

(5).....नाख़ून तराशना : यह मुस्तहब है क्योंकि बड़े हुए नाख़ून बुरे लगते हैं नीज़ इन में मैल जम्अ हो जाता है।

शैतान के बैठने की जगह :

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू हरैरा ! अपने नाख़ूनों को काटो क्योंकि बड़े हुए नाख़ूनों पर शैतान बैठता है।”⁽¹⁾

मस्अला : अगर नाख़ूनों में मैल हो तो यह वुजू के सहीह होने से मानेअ नहीं क्योंकि यह पानी पहुंचने को नहीं रोकती नीज़ इस वजह से कि इस में ग़फ़लत हो जाती है और ज़रूरत के तहत इस में नर्म की जाती है खुसूसन मर्द के नाख़ूनों के मुआमले में। इसी तरह अरबियों और देहातियों की उंगलियों के जोड़ों और हाथों और पाउं की पीठ पर जो मैल जम्अ हो जाता है वोह भी वुजू से मानेअ नहीं। कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नाख़ूनों के काटने का हुक्म फ़रमाते थे⁽²⁾ और इन के मैल को नापसन्द फ़रमाते लेकिन (इस हालत में पढ़ी गई) नमाज़ लौटाने का हुक्म न फ़रमाते, अगर कभी हुक्म दिया भी तो इस से मक्सूद डांट डपट और तम्बीह होती थी।

(इस मक़ाम पर हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِی ने हाथों के नाख़ून काटने के मुतअल्लिक एक नफीस व पेचीदा बहूष फ़रमाई है। अहले इल्म हज़रात अस्ल किताब की तरफ़ रुजूअ फ़रमाएं। खुलासा यह है)

नाख़ून काटने का मशनून तरीक़ा :

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मन्कूल है कि सीधे हाथ की शहादत की उंगली से शरूअ कर के तरतीब वार छुंगलिया समेत नाख़ून तराशें मगर अंगूठा छोड़ दें। अब

①.....فردوس الاخبار للديلمي، باب القاف، الحديث: ٣٦١٣، ج ٢، ص ١٥٣، بخطاب على رضى الله عنه۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث: ٢٥٤-٢٥٨، ص ٥٣۔

उलटे हाथ की छुंगलिया से शुरू कर के तरतीब वार अंगूठे समेत नाखुन तराश लें। अब आखिर में सीधे हाथ का अंगूठा जो बाकी था उस का नाखुन भी काट लें। इस तरह सीधे हाथ ही से शुरू हुवा और सीधे हाथ ही पर खत्म हुवा (हजरते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं :) मैंने किताबों में नाखुन काटने की तरतीब के मुतअल्लिक़ कोई रिवायत नहीं देखी अलबत्ता, मैं ने मशाइख़ से सुना है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दाएं हाथ की शहादत की उंगली से (नाखुन काटने) शुरू फ़रमाते और दाएं हाथ के अंगूठे पर ख़त्म फ़रमाते और बाएं हाथ की छुंगलिया से शुरू कर के अंगूठे पर ख़त्म फ़रमाते।

पाउं के नाखुन तराशने का अहसन तरीका :

जहां तक पाउं की उंगलियों का तअल्लुक़ है कि अगर इन के मुतअल्लिक़ कोई रिवायत न हो तो इस में मेरे नज़दीक बेहतर येह है कि दाएं पाउं की छोटी उंगली से शुरू करे और बाएं पाउं की छोटी उंगली पर ख़त्म करे जैसे इन का ख़िलाल किया जाता है।

सुर्मा लगाने का मसनून तरीका :

अफ़अल की तरतीब के सिलसिले में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सुर्मा लगाने को ही देख लीजिये कि नबियों के सुल्तान, रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दाई आंख में तीन और बाई आंख में दो सालइयां लगाते थे और दाई आंख की शराफ़त की वजह से इस से आगाज़ करते।⁽¹⁾

दोनों आंखों में सुर्मा डालते हुए फ़र्क़ इस लिये रखते थे ताकि मजमूआ ताक़ हो जाए कि ताक़ को जुफ़्त पर फ़ज़ीलत हासिल है क्यूंकि “اللَّهُسُّبْحَانَهُ وَتَعَالَى” वित्र (ताक़) है और ताक़ को पसन्द फ़रमाता है।⁽²⁾ लिहाज़ा ऐसा नहीं होना चाहिये कि बन्दे का कोई फे'ल **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ के औसाफ़ में से किसी वस्फ़ से मुनासबत न रखता हो। इसी लिये इस्तिन्जा करते हुए ताक़ पथ्थर इस्ति'माल करना मुस्तहब है और (सुर्मा लगाने में) तीन बार पर इक्तिफ़ा नहीं किया गया हालांकि येह ताक़ अदद है क्यूंकि इस तरह बाई आंख में सिर्फ़ एक बार सुर्मा लगाना पड़ता और ग़ालिब येह है कि एक बार सुर्मा लगाना पल्कों की जड़ों तक भी नहीं पहुंचता और (बाई के मुकाबले में) दाई आंख में तीन सलाइयां लगाने की वजह येह है कि फ़ज़ीलत ताक़ अदद में है और दाई आंख अफ़ज़ल होने के सबब इस का ज़ियादा हक़ रखती है।

①.....المعجم الكبير، الحديث: ١٣٣٥٣، ج ٢، ص ٢٤٩، بتغير قليل۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الذكرو الدعاء والتوبة.....الخ، باب في اسماء الله تعالى.....الخ، الحديث: ٢٦٤٤، ص ١٣٩۔

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर कहा जाए कि बाईं आंख में दो पर क्यूं इक्तिफा किया गया हालांकि येह जुफ्त है ? तो इस का जवाब येह है कि ऐसा ज़रूरत के तहत किया गया है क्यूंकि हर आंख में ताक़ अदद में लगाने से इस का मजमूआ जुफ्त हो जाता । क्यूंकि ताक़ और ताक़ मिल कर जुफ्त हो जाते हैं और फे'ल के मजमूए में ताक़ का खयाल रखना एक एक में ताक़ का खयाल रखने से बेहतर है इस की एक और सूरत भी है वोह येह कि वुजू पर क़ियास करते हुए “दोनों आंखों में तीन तीन सलाइयां लगाए”⁽¹⁾ और येही ज़ियादा बेहतर है ।

अल ग़रज़ अगर मैं उन तमाम बातों की बारीकियों की तलाश में लग जाऊं जिन का हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने अफ़आल में खयाल रखा है तो बात तवील हो जाएगी । लिहाज़ा जो कुछ तुम ने सुना इसी पर उसे भी क़ियास कर लो जो नहीं सुना ।

जान लीजिये कि कोई अ़लिम उस वक़्त तक हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वारिष नहीं बन सकता जब तक कि शरीअत के तमाम मअानी पर आगाह न हो जाए यहां तक कि उस के और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दरमियान सिर्फ़ एक दर्जा फ़र्क़ रह जाए और वोह दर्जए नबुव्वत है और येही दर्जा वारिष और मूरिष के दरमियान फ़र्क़ करने वाला है क्यूंकि मूरिष वोह होता है जिसे माल हासिल होता है और वोह इस के हुसूल में मशगूल होता है और वोह इस पर क़ादिर होता है जब कि वारिष वोह होता है जिसे माल हासिल नहीं होता और न ही वोह इस पर क़ादिर होता है लेकिन जब वोह माल मूरिष को हासिल होता है तो इस के बा'द वारिष की तरफ़ मुन्तक़िल होता है और येह उस से ले लेता है ।

येह ऐसी बातें हैं कि गहराई और पोशीदगी के ए'तिबार से बा वुजूद आसान होने के इब्तिदाअन इन का इदराक सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को ही होता है फिर उन की तरफ़ से आगाही के बा'द इस्तिम्बात के ज़रीए सिर्फ़ उ-लमा ही जान सकते हैं क्यूंकि वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वारिष हैं ।

(6-7)....नाफ़ और कुलफ़ा का बढ़ा हुवा हिस्सा : नाफ़ (का बढ़ा हुवा हिस्सा) तो विलादत के वक़्त काट दिया जाता है और ख़तना के ज़रीए तहारत हासिल करने में यहूदियों का तरीक़ा

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الطب، باب من اكتحل وتراء الحديث: ٣٣٩٩، ج ٢، ص ١١٦

येह है कि वोह विलादत के सातवें दिन ख़तना करते हैं लेकिन उन की मुखा़लफ़त करते हुए अगले दांत निकलने तक ताख़ीर करना पसन्दीदा और ख़तरों से दूर है।⁽¹⁾ मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ख़तना करना मर्दों के लिये सुन्नत और औरतों के लिये बाइषे इज़्ज़त है।”⁽²⁾ (3)

औरतों के ख़तना में मुबालगा नहीं करना चाहिये कि हज़रते सय्यिदतुना उम्मे अतिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बच्चों के ख़तना किया करती थीं, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन से इरशाद फ़रमाया : “ऐ उम्मे अतिय्या ! ज़रा सी बू सुंघा दो और ज़ियादा न काटो क्यूंकि इस से चेहरे की ताज़गी ज़ियादा होगी और ख़ावन्द लज़्ज़त ज़ियादा पाएगा।”⁽⁴⁾ या’नी चेहरे की रौनक और खून ज़ियादा होगा और जिमाअ में शोहर ज़ियादा लुत्फ़ अन्दोज़ होगा।

पस ग़ौर कीजिये कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने किस तरह किनायतन प्यारे अन्दाज़ में बयान फ़रमाया और नूरे नबुव्वत की चमक को देखें कि इस ने किस तरह उख़रवी मक़ासिद को दुन्यवी मक़ासिद तक पहुंचाया यहां तक कि आप पर येह बातें मुन्कशिफ़ हो गई हालांकि आप ने (मख़्लूक में) किसी से पढ़ा नहीं था। अगर येह बातें वाजेह न होतीं और आप से गफ़लत के बाइष सादिर होतीं तो इस के नुक़सान का ख़ौफ़ होता। पाक है वोह ज़ात जिस ने आप को तमाम ज़हानों के लिये रहमत बना कर भेजा ताकि आप की बिअ़षत की बरक़त से दीनो दुन्या की भलाइयां जम्अ हो जाएं।

①....दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूअ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द. 3 सफ़हा 589 पर है : ख़तना की मुद्दत सात साल से बारह साल की उम्र तक है और बा’ज़ उ-लमा ने येह फ़रमाया कि विलादत से सातवें दिन के बा’द ख़तना करना जाइज़ है।

②.....बहारे शरीअत जिल्द. 3 सफ़हा 589 पर मज़ीद फ़रमाते हैं : “ख़तना सुन्नत है और येह शिआरे इस्लाम है कि मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम में इस से इम्तियाज़ होता है इसी लिये उर्फ़े आ़म में इस को मुसलमानी भी कहते हैं।”

और लड़कियों के ख़तने के मुतअल्लिक़ आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं। “लड़कियों के ख़तना करने का ताकीदी हुक्म नहीं और यहां पाक व हिन्द में रवाज न होने के सबब अ़वाम इस पर हंसेंगे और येह उन के गुनाहे अज़ीम में पड़ने का सबब होगा और हिफ़जे दीने मुसलमानान वाजिब है। लिहाज़ा यहां (पाक व हिन्द में) इस का हुक्म नहीं।” (फ़तावा रजविय्या, जि. 22 स. 680)

③.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند البصريين، حديث أسامة الهذلي، الحديث: ٢٠٤٢٥، ج ٤، ص ٣٨١.

④.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الاشرية، باب السلطان يكره على الاختتان، الحديث: ٤٥٥٩، ج ٨، ص ٥٦٢.

(8).....दाढ़ी के बढ़े हुए बाल काटना : इसे हम ने आखिर में इस लिये ज़िक्र किया ताकि इस में जो बातें सुन्नत या मुस्तहब हैं उन्हें भी इस के साथ ही ज़िक्र कर दिया जाए क्योंकि यहां इन बातों का ज़िक्र ज़ियादा मुनासिब है ।

(एक मुठ्ठी से) ज़ाइद दाढ़ी (काटने) में इख़िलाफ़ है । मन्कूल है कि अगर आदमी अपनी दाढ़ी को मुठ्ठी में पकड़ कर ज़ाइद हिस्से को काट दे तो इस में कोई हरज नहीं । कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर और ताबेईन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के एक गुरौह ने ऐसा किया और हज़रते सय्यिदुना इमाम शअबी और हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا ने इसे अच्छा जाना जब कि हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी और हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا ने इसे मकरूह करार दिया और फ़रमाया : “इसे बढ़ा हुआ छोड़ना ज़ियादा पसन्दीदा है क्योंकि सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “اعْفُوا الرَّحِيَّةَ” या’नी दाढ़ीयां बढ़ाओ ।”(1)

अगर दाढ़ी काटने और कनारों से गोल करने की नौबत न आए तो (एक मुठ्ठी से) ज़ाइद दाढ़ी काटने में मुज़ाइका नहीं क्योंकि हृद से बढ़ी हुई दाढ़ी कभी सूरत को बिगाड़ देती और गीबत करने वालों की ज़बानें खोल देती है । लिहाज़ा इस निय्यत की बिना पर इस से बचने में हरज नहीं । हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि “मुझे तवील दाढ़ी वाले अक्लमन्द शख्स पर तअज्जुब होता है कि वोह अपनी बढ़ी हुई दाढ़ी क्यूं नहीं काटता और इसे दो दाढ़ियों के दरमियान क्यूं नहीं करता इस लिये कि हर चीज़ में ए’तिदाल अच्छा लगता है । इसी लिये कहा गया है कि जब दाढ़ी (ज़ियादा) बढ़ जाती है तो अक्ल रुख़सत हो जाती है ।”(2)

दाढ़ी के मकरूहात :

दस बातें दाढ़ी में मकरूह (नापसन्दीदा) हैं और बा’ज बा’ज से ज़ियादा नापसन्दीदा हैं :

(1).....सियाह ख़िज़ाब लगाना (2)....गन्धक से सफ़ेद करना (3)....(मुतलक़न दाढ़ी के बाल) उखेड़ना (4).....सफ़ेद बाल उखेड़ना (5)....दाढ़ी में कमी या ज़ियादती करना (6)....रियाकारी की निय्यत से कंधी करना (7)....जोहद दिखाने की निय्यत से कंधी के बिगैर बाल बिखरे छोड़ देना (8)....जवानी पर फ़ख़र करते हुए इस की सियाही पर खुद पसन्दी में मुब्तला होना (9)....बड़ी उम्र पर तकब्बुर करते हुए इस की सफ़ेदी पर खुश होना और (10)....सुख़ और पीला ख़िज़ाब लगाना जब कि सालेहीन के साथ मुशाबहत की निय्यत न हो ।

①.....صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب خصال الفطرة، الحديث: ٢٥٩، ص ١٥٢ -

②.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٢ -

सियाह ख़िज़ाब से मुमानज़त की रिवायात :

﴿١﴾.....सियाह ख़िज़ाब लगाना : मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस से मन्अ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : “तुम में से बेहतरीन नौजवान वोह हैं जो तुम्हारे बुढ़ों से मुशाबहत इख़्तियार करते हैं और तुम में से बुरे बुढ़ें वोह हैं जो तुम्हारे नौजवानों से मुशाबहत इख़्तियार करते हैं ।”⁽¹⁾

बुढ़ों से मुशाबहत इख़्तियार करने का मतलब वक़ार में मुशाबहत इख़्तियार करना है न कि बालों को सफ़ेद करने में । नीज़ सियाह ख़िज़ाब से मन्अ फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया : “هُوَ خِصَابُ أَهْلِ النَّارِ” या’नी येह जहन्नमियों का ख़िज़ाब है ।”⁽²⁾

एक रिवायत में येह अल्फ़ाज़ हैं : الْخِصَابُ بِالسَّوَادِ خِصَابُ الْكُفَّارِ या’नी सियाह ख़िज़ाब कुफ़्फ़ार का ख़िज़ाब है ।⁽³⁾

हिक्वायत :

धोके बाज़

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के ज़माने में एक शख्स ने निकाह किया वोह सियाह ख़िज़ाब लगाता था । जब ख़िज़ाब उतरा तो बुढ़ापा ज़ाहिर हो गया । औरत के घर वालों ने मुआमला अदालते फ़ारूकी में पेश किया तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस का निकाह फ़स्ख़ कर दिया और उसे ख़ूब मारा और फ़रमाया : “तू ने इन लोगों को जवानी के साथ धोका दिया और बुढ़ापे को छुपाया ।” मन्कूल है कि सियाह ख़िज़ाब सब से पहले फ़िरऔन मलऊन ने लगाया ।⁽⁴⁾

खुशबू जन्नत से महश्म लोग :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “आखिरी ज़माने में कुछ लोग होंगे जो कबूतरों के पोटों की तरह सियाह ख़िज़ाब लगाएंगे वोह जन्नत की खुशबू भी न सूंघ सकेंगे ।”⁽⁵⁾

①.....المعجم الكبير، الحديث: ٢٠٢، ج ٢٢، ص ٢٢.

②.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٢.

③.....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، الصفة خضاب المؤمن، الخ، الحديث: ٦٢٩٦، ج ٢، ص ٦٤٦.

④.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٢.

⑤.....سنن النسائي، کتاب الزينة، المنهى عن الخضاب بالسواد، الحديث: ٥٠٨٥، ص ٨١٢.

सुर्ख या जर्द रंग का खिजाब लगाने का हुक्म :

﴿2﴾.....सुर्ख और जर्द रंग का खिजाब लगाना : यह जिहाद में कुफ़ार पर जवानी ज़ाहिर करने के लिये जाइज़ है। अगर इस निय्यत से न हो बल्कि दीनदार लोगों से मुशाबहत के लिये हो तो मज़मूम (बुरा) है। चुनान्चे, मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जर्द खिजाब मुसलमानों का खिजाब है और सुर्ख खिजाब मोअमिनीन का खिजाब है।”⁽¹⁾ और सहाबए किराम और ताबेइने उज़्ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ सुर्खी के लिये मेहंदी और जर्दी के लिये खलूक⁽²⁾ और कतम⁽³⁾ लगाते थे नीज़ बा’ज उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने जिहाद के लिये सियाह खिजाब लगाया है और जब निय्यत सहीह हो और ख्वाहिशात का अमल दख़ल न हो तो इस के लगाने में कोई हरज नहीं।

फ़ज़ीलत का बाइष इल्म है न कि बड़ी उम्र :

﴿3﴾.....दाढ़ी को गन्धक से सफ़ेद करना : ताकि जल्दी जल्दी बड़ी उम्र ज़ाहिर हो, लोग इज़्ज़त करें, गवाही क़बूल की जाए, मशाइख़ से रिवायत करने पर तस्दीक़ हो जाए, जवानों पर फ़ौक़िय्यत हासिल हो, कषरते इल्म का इज़हार हो और यह ख़याल हो कि उम्र का ज़ियादा होना इस के लिये बाइषे फ़ज़ीलत होगा, लेकिन अफ़सोस ! उम्र की ज़ियादती से जाहिल की जहालत में ही इज़ाफ़ा होता है क्यूंकि इल्म तो अक़ल का नतीजा है और यह फ़ितरती चीज़ है इस में बुढ़ापा अषर अन्दाज़ नहीं होता और जिस की फ़ितरत में ही हमाक़त हो तो मुद्दत की त़वालत इस की हमाक़त को पुख़्ता करती है जब कि मशाइख़े किराम इल्म की बदौलत जवानों को तरजीह देते थे (न की उम्र की ज़ियादती के सबब)। चुनान्चे, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’जम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا को नौजवान होने के बावुजूद बड़ी उम्र वाले सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ से मुक़द्दम करते थे और उन्हीं से पूछते थे।

①.....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، الصفة خضاب المؤمن، الخ، الحديث: ٢٢٩٦، ج ٢، ص ٦٤٦۔

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٢۔

②.....खलूक : एक खुशबू जो अम्बर, मुश्क और काफूर की आमेज़िश (मिलावट) से बनती है। अज़ : इल्मिय्या

③.....कतम : एक क़िस्म की घास जिस को मेहंदी में मिला कर वस्मा और इस की जड़ पका कर सियाह रोशनाई बनाते हैं। अज़ : इल्मिय्या

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عزَّ وجلَّ अपने बन्दे को जवानी में ही इल्म अता फ़रमाता है और तमाम भलाई जवानी में है।⁽¹⁾ फिर येह तीन आयाते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

﴿1﴾

قَالُوا سِعْنًا فَإِنِّي نَذَرُهُمْ يُقَالُ لَهُ
إِبْرَاهِيمُ ۖ (پ ۱، الانبیاء: ۶۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन में के कुछ बोले हम ने एक जवान को उन्हें बुरा कहते सुना जिसे इब्राहीम कहते हैं।

﴿2﴾

إِنَّهُمْ فَتِيَّةٌ أَمْوَابٍ بِهِمْ وَزِدْهُمْ
هَدًى ۖ (پ ۱۵، الکہف: ۱۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह कुछ जवान थे कि अपने रब्ब पर ईमान लाए और हम ने उन को हिदायत बढ़ाई।

﴿3﴾

وَإِتَيْنَاهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۖ (پ ۱۶، مريم: ۱۲)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और हम ने उसे बचपन ही में नबुव्वत दी।

आका के सफ़ेद बाल :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “जब रसूलुल्लाह (20) صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने विसाल फ़रमाया तो आप के सरे अन्वर और दाढ़ी मुबारक में बीस सफ़ेद बाल थे।” हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा गया : “ऐ अबू हमज़ा ! प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्र मुबारक तो काफ़ी हो चुकी थी।” फ़रमाया : “**अल्लाह** عزَّ وجلَّ ने अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बुढ़ापे का ऐब न लगाया।” अर्ज़ की गई : “क्या येह ऐब है ?” फ़रमाया : “तुम में से हर एक इसे नापसन्द करता है।”⁽²⁾

कम उम्री में ओहदए कज़ा :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना यहूया अकषम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم को 21 साल की उम्र में ओहदए कज़ा सोंपा गया तो छोटी उम्र की वजह से एक शख्स ने रुस्वा करने का इरादा किया।

①.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۴۔

②.....صحيح البخارى، كتاب المناقب، باب صفة النبى، الحديث: ۳۵۴۸، ج ۲، ص ۸۷۔

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۴۔

चुनान्चे, एक बार मजलिस में उस ने पूछा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काजी साहिब की मदद फ़रमाए, इन की उम्र कितनी है ?” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “जब मुस्त्फ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इताब बिन उसैद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ को मक्काए मुअज़्ज़मा का वाली बनाया तो जितनी उम्र उन की थी (उतनी मेरी है)।” यूँ आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे ला जवाब कर दिया।⁽¹⁾

बकरे की भी दाढ़ी होती है :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं ने बा’ज किताबों में पढ़ा कि तुझे दाढ़ी धोका न दे इस लिये कि बकरे की भी दाढ़ी होती है।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू अम्र बिन इला رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जब तुम किसी ऐसे शख्स को देखो जिस का क़द लम्बा, सर छोटा और दाढ़ी चौड़ी हो तो उस पर अहमक होने का हुक्म लगाओ अगर्चे वोह उमय्या बिन अब्दे शम्स ही क्यूं न हो।”⁽³⁾

बुद्ध तालिबे इल्म :

हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्रियानी قُدِّسَ سِرُّهُ التَّوَرَانِ फ़रमाते हैं : “मैं ने 80 साला बुढ़े शख्स को एक नौजवान के पीछे चलते देखा वोह उस नौजवान से इल्म हासिल करता था।”⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना अली बिन हसन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जो इल्म में तुझ पर सब्कत ले गया वोह तेरा इमाम है, अगर्चे उम्र में तुझ से छोटा हो।”⁽⁵⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू अम्र बिन इला رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा गया : “क्या बुढ़े शख्स को जैब देता है कि वोह बच्चे से इल्म हासिल करे ?” फ़रमाया : “अगर जहालत बुरी चीज़ है तो इल्म हासिल करना अच्छी चीज़ है।”⁽⁶⁾

हुथूले इल्म की जुस्तजू :

हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मुईन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي को हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل को हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से पूछा : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी को बुलन्द मर्तबा होने के बा वुजूद उन की हदीष को छोड़ कर इस नौजवान के पीछे चल रहे और

①.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۳۔

②.....المرجع السابق۔ ③.....المرجع السابق۔ ④.....المرجع السابق۔

⑤.....المرجع السابق۔ ⑥.....المرجع السابق۔

इन से हदीष सुन रहे हैं?” फ़रमाया : “अगर तुम इन्हें पहचानते तो इन की दूसरी तरफ़ तुम चल रहे होते, अगर मुझे हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के बुलन्द मर्तबे की वजह से इन का इल्म न मिला तो नीचे आने से हासिल हो जाएगा और अगर मैं इस नौजवान की अक्ल से इस्तिफ़ादा न कर पाऊं तो बुलन्दी व पस्ती कहीं से भी इल्म हासिल न कर सकूंगा।”⁽¹⁾

मोमिन का नूर :

﴿4﴾.....नफ़रत के बाइष सफ़ेद बालों को उखेड़ना : हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक ^{هو نور المومنين} صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सफ़ेद बालों को उखेड़ने से मन्अ फ़रमाया और इरशाद फ़रमाया : “^{هو نور المومنين} या’नी येह मोमिन का नूर है।”⁽²⁾

सफ़ेद बाल उखेड़ना सियाह ख़िज़ाब के मा’ना में है और इस के मकरूह होने की इल्लत गुज़र चुकी है। नीज़ सफ़ेद बाल **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से नूर है और इन से मुंह फैरना नूरे इलाही से मुंह फैरना है।

﴿5﴾.....बे मक्सद और ख़्वाहिश के तहत दाढ़ी या इस के कुछ बाल उखेड़ना : येह मकरूह और सूरत को बिगाड़ना है और बुच्ची (या’नी निचले होंट के दरमियानी बालों) के दोनों अतराफ़ के बाल उखेड़ना बिदअत है।

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की ख़िदमत में एक शख़्स हज़िर हुवा वोह दाढ़ी के अतराफ़ के बाल उखेड़ता था आप ने उस की गवाही रद्द कर दी।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और मदीने के काज़ी हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबी लैला عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने दाढ़ी उखेड़ने वाले की गवाही क़बूल न की।

फ़िरिश्तों की क़सम का अन्दाज़ :

दाढ़ी उगने की इब्तिदा में अम्रदों से मुशाबहत इख़्तियार करते हुए दाढ़ी के बाल उखेड़ना कबीरा गुनाहों में से है क्यूंकि दाढ़ी मर्दों की ज़ीनत है। **اَبْلَاح** عَزَّوَجَلَّ के कुछ फ़िरिश्ते इन अल्फ़ाज़

①.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٣٢-٢٣٥۔

②.....سنن ابی داود، کتاب التّرجل، باب فی تنفّ الشّیب، الحدیث: ٢٢٠٢، ج ٢، ص ١١٥۔

में क़सम खाते हैं : “उस ज़ात की क़सम जिस ने मर्दों को दाढ़ियों से ज़ीनत बख़्शी ।”⁽¹⁾ नीज़ येह तकमीले तख़लीक़ का बाइष है । इसी से मर्द व औरत में तमीज़ होती है ।

ग़रीबुत्तावील में मन्कूल है कि **اللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमान : **يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ** ^{ط (پ ۲۲، فاطر: ۱)}

“**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे ।” से मुराद दाढ़ी है ।

हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन कैस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के शागिर्द फ़रमाया करते थे हम चाहते हैं कि “अह्नफ़ के लिये दाढ़ी ख़रीद लें अगर्चे 20 हज़ार की मिले ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना काज़ी शरीह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं चाहता हूं कि मेरी दाढ़ी हो, अगर्चे 10 हज़ार की हो ।”⁽³⁾ तुम कैसे दाढ़ी को ना पसन्द करते हो हालांकि इस में मर्द की ता’ज़ीम है, इस की तरफ़ इल्म और वक़ार की नज़र से देखा जाता है, मजालिस में बुलन्द मक़ाम दिया जाता है, लोग इस की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं, इसे जमाअत पर मुक़द्दम करते हैं, इस की इज़्ज़त महफूज़ रहती है क्यूंकि गाली देने वाला शख्स जिसे गाली दे रहा है अगर उस की दाढ़ी हो तो पहले उस का ज़िक्र करता है ।

बा-रीश जन्नती :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना हारून عَلَى الصَّلَاةِ وَالسَّلَام के इलावा तमाम जन्नती बिगैर दाढ़ी के होंगे और आप عَلَيْهِ السَّلَام की खुसूसियत व फ़ज़ीलत के बाइष आप की दाढ़ी नाफ़ तक होगी ।⁽⁴⁾

﴿6﴾.....इस ख़याल से दाढ़ी कतर के तेह ब तेह करना ताकि औरतों की नज़रों में ख़ूब सूरत हो ख़्वाह तकल्लुफ़ से ही क्यूं न हो : हज़रते सय्यिदुना का’बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे जो अपनी दाढ़ियों को कबूतर की दुम की तरह काटेंगे (या’नी गोल करेंगे) और जूतों से दरांतियों जैसी आवाज़े निकालेंगे उन का (आख़िरत में) कोई हिस्सा नहीं ।”⁽⁵⁾

﴿7﴾.....दाढ़ी बढ़ाना : या’नी कनपटियों के बालों को गालों के बाल शुमार करना, हालांकि वोह सर के बाल हैं यहां तक कि दाढ़ी बड़ी हो कर निस्फ़ रुख़सार तक पहुंच जाती है और येह नेक लोगों की हैअत के ख़िलाफ़ है ।

①.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۴۰۔

②.....المرجع السابق، ص ۲۴۲۔ ③.....المرجع السابق، ص ۲۴۲۔

④.....المرجع السابق، ص ۲۴۲، بتغير قليل۔ ⑤.....المرجع السابق، ص ۲۴۲۔

दो शिके खफ़ी :

﴿8﴾.....लोगों को दिखाने के लिये कंघी करना : हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : “दाढ़ी के मुआमले में दो शिके खफ़ी (रियाकारी) हैं :

(1)....रियाकारी की नियत से कंघी करना और

(2)....जोहदो तक्वा ज़ाहिर करने की नियत से बिखरी हुई छोड़ देना ।”⁽¹⁾

﴿9-10﴾.....दाढ़ी की सफ़ेदी और सियाही को खुद पसन्दी की निगाह से देखना : और येह जिस्म के तमाम अज्ज़ा में सब से ज़ियादा नापसन्दीदा है बल्कि तमाम अख़्लाक़ व अफ़़ाल में खुद पसन्दी बुरी सिफ़त है इस का बयान आगे आएगा ।

अहादीष से माख़ुज़ बारह सुन्नतें :

जीनत व पाकीज़गी की अक्साम के मुतअल्लिक़ हमारा इसी क़दर तफ़्सील ज़िक़्र करने का इरादा था । तीन अहादीषे मुबारका से जिस्म में बारह बातों का सुन्नत होना मा'लूम हुवा । पांच सुन्नतों का तअल्लुक़ सर से है : (1) सर के बालों के दरमियान मांग निकालना⁽²⁾ (2) कुल्ली करना (3) नाक में पानी चढ़ना⁽³⁾ (4) मूँछें काटना और (5) मिस्वाक करना । तीन का तअल्लुक़ हाथ और पाउं से है : (1) नाख़ुन काटना (2) उंगलियों की सलूटें धोना और (3) (उंगलियों के) अन्दरूनी जोड़ों की सफ़ाई करना ।⁽⁴⁾ चार का तअल्लुक़ जिस्म से है : (1) बग़लों के बाल उखेड़ना (2) ज़ेरे नाफ़ बाल साफ़ करना (3) ख़तना करना और (4) पानी से इस्तिन्जा करना ।

इन तमाम के बारे में अहादीषे मुक़द्दसा मरवी हैं और इस बाब में ज़ाहिरी त़हारत का बयान मक्सूद है न कि बातिनी त़हारत का । लिहाज़ा हम इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं और येह बात यकीनी है कि बातिनी नजासतें और गन्दगियां जिन से पाक होना ज़रूरी है, वोह शुमार से बाहर हैं इन की तफ़्सील मोहलिकात के बाब में आएगी वहीं इन के ज़ाइल करने और दिल को इन से पाक करने के तरीके बयान किये जाएंगे ।



①.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٢٢، عن سرى السقطي۔

②.....صحيح البخارى، كتاب اللباس، باب الفرق، الحديث: ٥٩١٤، ج ٢، ص ٤٩۔

③.....سنن ابى داود، كتاب الطهارة، باب السواك من الفطرة، الحديث: ٥٣، ج ١، ص ٥٣۔

④.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون في فضائل اهل السنة والطريقة.....الخ، ج ٢، ص ٢٣٩۔

बमान का बयान

सब खूबियां **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने लुत्फो करम से बन्दों को ढांपा, दीन और अहकामे दीन के अन्वार से उन के दिलों को आबाद फ़रमाया, वोह ज़ात कि अर्शे इलाही से आस्माने दुन्या की तरफ़ दर्जते रहमत में से उस की कोई न कोई मेहरबानी उतरती रहती है। वोह अपने जलाल व किब्रियाई में यक्ता होने के साथ साथ बादशाहों से यूं भी मुमताज़ है कि वोह मख़्लूक को सुवाल व दुआ की तरगीब देते हुए इरशाद फ़रमाता है : है कोई दुआ मांगने वाला कि मैं उस की दुआ क़बूल करूं ? है कोई मग़फ़िरत का त़ालिब कि उसे बख़्श दूं ? बादशाहों का उस से क्या मुक़ाबला ? उस ने तो दरवाज़ा खोल कर पर्दा उठा दिया और बन्दों को नमाज़ में मुनाजात करने की इजाज़त दे दी, न सिर्फ़ रुख़्सत पर इक्तिफ़ा किया बल्कि दा'वत व तरगीब के ज़रीए भी मेहरबानी फ़रमाई जब कि दीगर दुन्यवी कमज़ोर बादशाह तो किसी को तन्हाई में वक्त् भी नहीं देते जब तक इन्हें हदिय्या या रिश्वत न दी जाए। पाक है वोह ज़ात, उस की शान कितनी अज़ीम है। उस की बादशाहत कितनी क़वी है। उस का लुत्फो करम कितना कामिल है। उस का एहसान कितना आ़म है। दुरुद और ख़ूब सलाम हों उस के मुन्तख़ब नबी और पसन्दीदा दोस्त हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा अहमदे मुजतबा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप के आल व अस्हाब رِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ पर जो हिदायत की कुन्जियां और तारीकियों के चराग़ हैं।

बेशक नमाज़ दीन का सुतून, यकीन का वसीला, इबादत की अस्ल और ताआत की चमक है। हम ने फ़न्ने फ़िक्ह की कुतुब “وَجِيزُ الْمَذْهَبِ” और “بَسِیْطُ الْمَذْهَبِ، وَسِیْطُ الْمَذْهَبِ” में नमाज़ के उसूली व फ़रोई मसाइल को तफ़्सील से बयान किया है। नीज़ बहुत से नादिर व कम वुकूअ पज़ीर होने वाले मसाइल इन में दर्ज किये हैं ताकि येह मुफ़्ती के लिये ख़ज़ाना बन जाए और ब वक्ते ज़रूरत वोह इस की तरफ़ रुजूअ करे और इस से मदद हासिल करे। यहां इस बाब में हम सिर्फ़ उन आ'माले ज़ाहिरा और इसरारे बातिना को बयान करेंगे जिन का जानना राहे आख़िरत के मुसाफ़िर पर ज़रूरी है। नीज़ खुशूअ व खुजूअ, इख़्लास और निय्यत के वोह पोशीदा मआनी वाजेह करेंगे जिन्हें आ़म तौर पर फ़िक्ह में बयान नहीं किया जाता इसे हम सात अबवाब पर तक्सीम करते हैं : (1)...नमाज़ के फ़ज़ाइल (2)....नमाज़ के ज़ाहिरी आ'माल की तफ़्सील (3)....नमाज़ के बातिनी आ'माल की तफ़्सील (4)....इमामत व पेशवाई का बयान (5)....नमाज़े जुमुआ और इस के आदाब (6)....मुतफ़र्रिक़ मसाइल जो आ़म तौर पर पाए जाते हैं और सालिक को इन से आगाही की ज़रूरत होती है (7)....नवाफ़िल वगैरा का बयान।

बाब नम्बर 1 : नमान, सुनूद, नमाअन और अमान वगैरा के फर्माइल (येह सात फर्स्लों पर मुश्तमिल है)

पहली फर्स्ल : अज़ान की फर्जीलत

अज़ान की फर्जीलत पर मुश्तमिल चार फर्ामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....तीन तरह के लोग ऐसे हैं जो बरोजे क़ियामत सियाह कस्तूरी के टीलों पर होंगे उन्हें हिसाब का ख़ौफ़ होगा न कोई घबराहट यहां तक कि लोगों का हिसाब हो जाए :

(1)....जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये कुरआने पाक की तिलावत की और लोगों की इमामत की जब कि वोह उस से खुश हों (2)....जिस ने रिज़ाए इलाही के लिये मस्जिद में अज़ान दी और लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ बुलाया (3)....जिसे दुन्या में रिज़क के मुआमले में आजमाया गया मगर इस आजमाइश ने उसे उख़रवी आ'माल से गाफ़िल न किया ।⁽¹⁾

﴿2﴾.....जिन्न व इन्स और जो भी चीज़ मोअज़्ज़िन की निदा सुनती है वोह बरोजे क़ियामत इस की गवाही देगी ।⁽²⁾

﴿3﴾.....मोअज़्ज़िन के अज़ान से फ़ारिग़ होने तक रहमान عَزَّوَجَلَّ का दस्ते कुदरत उस के सर पर होता है ।⁽³⁾

नीज़ इस फ़रमाने बारी तअ़ाला :

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ
صَالِحًا (پ ۲۳، حم السجدة: ۳۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उस से ज़ियादा
किस की बात अच्छी जो **अल्लाह** की तरफ़
बुलाए और नेकी करे ।

की तफ़्सीर में एक कौल येह है कि “येह आयत मोअज़्ज़िनीन के बारे में नाज़िल हुई है ।”

﴿4﴾.....जब तुम अज़ान सुनो तो मोअज़्ज़िन की मिप्ल कहो ।⁽⁴⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في تعظيم القرآن، فصل في ايمان تلاوته، الحديث: ۲۰۰۲، ج ۲، ص ۳۳۸، بتغير۔

②.....صحيح البخاري، كتاب الاذان، باب رفع الصوت بالنداء، الحديث: ۲۰۹، ج ۱، ص ۲۲۲۔

③.....المعجم الاوسط، من اسمه احمد، الحديث: ۱۹۸۷، ج ۱، ص ۵۳۹۔

تاريخ بغداد، عصر بن حفص: ۵۹۰۱، ج ۱۱، ص ۱۹۳۔

④.....صحيح البخاري، كتاب الاذان، باب ما يقول اذا سمع المنادي، الحديث: ۲۱۱، ج ۱، ص ۲۲۳۔

“حَيَّ عَلَى الصَّلَاةِ” और “حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ” के इलावा कलिमात में मोअज़्ज़िन की मिष्ल कहना मुस्तहब है जब कि इन दोनों के जवाब में “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ” या’नी गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ही की तरफ़ से है⁽¹⁾ कहना और “قَدْ قَامَتِ الصَّلَاةُ” के जवाब में “وَأَقَامَهَا اللَّهُ وَأَدَامَهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ” कहना⁽²⁾ और तषवीब (या’नी अज़ाने फ़त्र में मोअज़्ज़िन के कौल **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के जवाब) में “صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ وَنَصَحْتَ” कहना मुस्तहब है।⁽³⁾

अज़ान के बा’द की दुआ :

अज़ान से फ़ारिग़ हो कर येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةُ التَّامَّةُ وَالصَّلَاةُ الْقَائِمَةُ اِنَّ مُحَمَّدًا اِنَّمَا الْوَسِيْلَةُ وَالْفُضَيْلَةُ وَالْدرَجَةُ الرَّفِيعَةُ وَاَبْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُودَ الَّذِي وَعَدْتَهُ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ
या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इस दा’वते ताम्मा और सलाते काइमा के मालिक तू मुहम्मद ﷺ को वसीला और फ़ज़ीलत और बहुत बुलन्द दर्जा अता फ़रमा और इन को मक़ामे महमूद में खड़ा कर जिस का तू ने इन से वा’दा किया है बेशक तू वा’दे के ख़िलाफ़ नहीं करता।⁽⁴⁾

फ़िरिश्ते मुक्तादी :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जो चटियल मैदान में नमाज़ अदा करता है उस की दाईं जानिब एक फ़िरिश्ता और बाईं जानिब एक फ़िरिश्ता नमाज़ अदा करता है अगर वोह अज़ान व इक़ामत कह कर नमाज़ अदा करे तो उस के पीछे पहाड़ों की मिष्ल (या’नी ता’दाद में) फ़िरिश्ते नमाज़ पढ़ते हैं।”⁽⁵⁾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....عمدة القارى، كتاب الاذان، باب مايقول اذا سمع المنادى، تحت الحديث: ٢١١، ج ٣، ص ١٢٣، باختصار۔

سنن ابى داود، كتاب الصلاة، باب مايقول اذا سمع المؤذن، الحديث: ٥٢٤، ج ١، ص ٢٢٢، باختصار۔

②.....سنن ابى داود، كتاب الصلاة، باب مايقول اذا سمع الاقامة، الحديث: ٥٢٨، ج ١، ص ٢٢٢۔

③.....تلخيص الحبير فى تخريج احاديث الراعى الكبير، كتاب الصلاة، الرقم: ٣١٠، ج ١، ص ٥١٩، دون ونصحت۔

④.....سنن ابى داود، كتاب الصلاة، باب ماجاء فى الدعاء عند الاذان، الحديث: ٥٢٩، ج ١، ص ٢٢٢-٢٢٣۔

تلخيص الجبير فى تخريج احاديث الراعى الكبير، كتاب الصلاة الرقم: ٣٠٩، ج ١، ص ٥١٨۔

⑤.....المصنف لعبد الرزاق، كتاب الصلاة، باب الرجل يصلى باقامة وحده، الحديث: ١٩٥٨، ج ١، ص ٣٤٩۔

दूसरी फ़स्ल :

फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद में इरशाद फ़रमाता है :

إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا

مُؤْتَوَاتًا ﴿١٧﴾ (پ: ۵، النساء: ۱۰۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक नमाज़ मुसलमानों

पर वक़्त बांधा हुवा फ़र्ज़ है ।

फ़र्ज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं जिस ने इन्हें अदा किया और इन के हक़ को मा'मूली जानते हुए इन में से किसी को ज़ाएअ न किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे करम पर उस के लिये वा'दा है कि वोह उसे जन्नत में दाख़िल कर दे और जिस ने इन्हें अदा न किया उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मे करम पर अहद नहीं, चाहे उसे अज़ाब दे चाहे जन्नत में दाख़िल फ़रमाए ।⁽¹⁾

﴿2﴾....पांच नमाज़ों की मिषाल नहर की तरह है जिस का पानी साफ़ सुथरा और गहरा हो जो तुम में से किसी के घर के सामने से गुज़रती हो और वोह इस में हर रोज़ पांच बार गुस्ल करता हो तो तुम क्या ख़याल करते हो कि उस के जिस्म पर कोई मैल बाकी छोड़ेगी ? सहाबए किराम **رَضَوْنَ** اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ ने अर्ज़ की : “नहीं ।” इरशाद फ़रमाया : “पांच नमाज़ें (सगीरा) गुनाहों को इस तरह ख़त्म कर देती हैं जैसे पानी मैल को ख़त्म कर देता है ।”⁽²⁾

﴿3﴾.....बेशक नमाज़ें गुनाहों का कफ़ारा हैं जब तक कबीरा गुनाहों से बचा जाए ।⁽³⁾

﴿4﴾....हमारे और मुनाफ़िक्कीन के दरमियान इशा और फ़त्र की (जमाअत में) हाज़िरी का फ़र्क़ है, मुनाफ़िक्कीन को इन दो नमाज़ों में हाज़िरी की ताक़त नहीं ।⁽⁴⁾

﴿5﴾....जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिला कि उस ने नमाज़ ज़ाएअ की हो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस की किसी नेकी की परवाह न करेगा ।⁽⁵⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فیمن لم یوتر، الحدیث: ۱۲۲۰، ج ۲، ص ۸۹۔

②.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب المشی الی الصلاة.....الخ، الحدیث: ۲۶۲۷، ۲۶۲۸، ص ۳۳۶۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب الصلاة الخمس.....الخ، الحدیث: ۲۳۳، ص ۱۲۲۔

④.....الموطأ للإمام مالک، کتاب صلاة الجاعة، باب ماجاء فی العتمة والصبح، الحدیث: ۲۹۸، ج ۱، ص ۱۳۳۔

⑤.....کتاب الكبائر، الكبيرة الرابعة فی ترک الصلاة، ص ۲۲۔

﴿6﴾....नमाज़ दीन का सुतून है तो जिस ने इसे छोड़ा उस ने दीन को गिराया ।⁽¹⁾

﴿7﴾.....बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : “कौन सा अमल अफ़ज़ल है ?” इरशाद फ़रमाया :
“वक्त पर नमाज़ अदा करना ।”⁽²⁾

﴿8﴾.....जिस ने मुकम्मल त़हारत और अवक़ात का ख़याल रखते हुए पांच नमाज़ों की मुहाफ़ज़त की तो वोह नमाज़ उस के लिये बरोज़े क़ियामत नूर और बुरहान होगी और जिस ने इन्हें ज़ाएअ किया उस का हशर फ़िरऔन और हामान के साथ होगा ।⁽³⁾

﴿9﴾....नमाज़ जन्नत की कुन्जी है ।⁽⁴⁾

﴿10﴾....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इक़रारे तौहीद के बा'द नमाज़ से ज़ियादा पसन्दीदा कोई चीज़ अपने बन्दों पर फ़र्ज़ नहीं की और अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को कोई और अमल इस से ज़ियादा महबूब होता तो उस के फ़िरिश्ते भी इसे अपनाते । फ़िरिश्तों में से बा'ज हालते रुकूअ में, बा'ज सुजूद में, बा'ज क़ियाम में और बा'ज का'दे में हैं ।⁽⁵⁾

﴿11﴾....जिस ने जान बूझ कर नमाज़ छोड़ी उस ने कुफ़्र किया ।⁽⁶⁾

वज़ाहत : या'नी क़रीब है कि दीन की रस्सी खुलने और उस का सुतून गिरने की वजह से उस शख़्स का ईमान रुख़्सत हो जाए और येह ऐसे ही है जैसा कि जब कोई शख़्स किसी शहर के क़रीब पहुंच जाए तो कहा जाता है कि येह शख़्स उस शहर में पहुंच गया और वहां दाख़िल हो गया ।

﴿12﴾....जिस ने जान बूझ कर नमाज़ तर्क की वोह मुहम्मद (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के ज़िम्मे से निकल गया ।⁽⁷⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى الصلوات، الحديث: ٢٨٠٤، ج ٣، ص ٣٩، بتغير۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان كون الايمان بالله.....الخ، الحديث: ٨٥، ص ٥٨۔

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٦٥٨٤، ج ٢، ص ٥٤٢۔

④.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند جابر بن عبد الله، الحديث: ١٢٦٦٨، ج ٥، ص ١٠٣۔

⑤.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فى ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٦٥۔

⑥.....المعجم الاوسط، من اسمه جعفر، الحديث: ٣٣٣٨، ج ٢، ص ٢٩٩۔

⑦.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث أم ايمن، الحديث: ٢٤٢٣٣، ج ١٠، ص ٣٨٦۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जिस ने अच्छी तरह वुजू किया फिर नमाज़ के इरादे से निकला तो जब तक इस इरादे पर रहेगा वोह नमाज़ में है। उस के लिये एक क़दम पर एक नेकी लिखी और दूसरे क़दम पर एक बुराई मिटाई जाएगी। जब तुम में से कोई इक़ामत सुनता है तो उस के लिये जाइज़ नहीं कि (नमाज़ में) ताख़ीर करे। बेशक तुम में सब से ज़ियादा अज़्र उसे मिलेगा जिस का घर ज़ियादा दूर होगा। लोगों ने अज़्र की : “ऐ अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ किस वजह से ?” फ़रमाया : “ज़ियादा क़दम चलने की वजह से।”⁽¹⁾

﴿13﴾.....क़ियामत के दिन बन्दे के आ'माल में से सब से पहले नमाज़ देखी जाएगी अगर वोह कामिल पाई गई तो वोह भी और उस के सारे आ'माल भी क़बूल होंगे और अगर इस में कमी हुई तो वोह भी और दीगर सब आ'माल भी मर्दूद हो जाएंगे।⁽²⁾

﴿14﴾.....हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू हुरैरा ! अपने घर वालों को नमाज़ का हुक्म दो, बेशक **اللّٰهُ** तुम्हें वहां से रोज़ी देगा जहां तुम्हारा गुमान न हो।”

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “नमाज़ी की मिषाल उस ताजिर की सी है जो उस वक़्त तक नफ़अ़ हासिल नहीं कर सकता जब तक पूरा माल खर्च न करे। यूंही नमाज़ी की नफ़ल नमाज़ उस वक़्त तक क़बूल नहीं होती जब तक वोह फ़र्ज़ अदा न कर ले।”⁽³⁾

जब नमाज़ का वक़्त होता तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाया करते : “उठो उस आग की तरफ़ जो तुम ने जला रखी है और उसे बुझा दो।”⁽⁴⁾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....الموطأ للإمام مالك، كتاب الطهارة، باب جامع الوضوء، الحديث: ٦٤، ج ١، ص ٥٢-

②.....الموطأ للإمام مالك، كتاب قصر الصلاة في السفر، باب جامع الصلاة، الحديث: ٢٢٨، ج ١، ص ١٢٩، بتغيير-

③.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الصلوات، فضل قيام شهر رمضان، الحديث: ٣٢٨٥، ج ٣، ص ١٨٢-

④.....كنز العمال، كتاب الصلاة، قسم الاقوال، الحديث: ١٩٠٢١، ج ٤، ص ١٢٨، عن انس-

तीसरी फ़स्ल : **अरक़ानों नमाज़ पूरा करने की फ़ज़ीलत**
छे फ़रामीने मुस्तफ़ :

﴿1﴾....फ़र्ज़ नमाज़ की मिषाल तराजू की सी है जिस ने इसे पूरा किया उसे पूरा अज़्र मिलेगा ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अब्बान रक्काशी हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि “رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नमाज़ बराबर होती थी गोया उस का वज़्न किया गया हो ।”⁽²⁾

﴿2﴾....मेरी उम्मत के दो शख्स नमाज़ के लिये खड़े होते हैं उन के रुकूअ व सुजूद एक जैसे होते हैं लेकिन उन दोनों की नमाज़ों में ज़मीनो आस्मान जितना फ़ासिला होता है ।⁽³⁾

इस से आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने खुशूअ व खुजूअ की तरफ़ इशारा फ़रमाया । (या'नी खुशूअ व खुजूअ के सबब एक की नमाज़ अफ़ज़ल हो जाती है)

﴿3﴾....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उस बन्दे की तरफ़ नज़र नहीं फ़रमाएगा जिस की पीठ रुकूअ व सुजूद के दरमियान सीधी नहीं होती ।⁽⁴⁾

﴿4﴾....जो शख्स नमाज़ में चेहरे को इधर उधर फैरता है क्या वोह इस से नहीं डरता कि कहीं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का चेहरा गधे के चेहरे से न बदल डाले ।⁽⁵⁾

﴿5﴾....जिस ने अच्छी तरह वुजू कर के वक़्त पर नमाज़ अदा की खुशूअ व खुजूअ के साथ रुकूअ व सुजूद को पूरा किया तो उस की नमाज़ सफ़ेद चमकती हुई बुलन्द होती है और कहती है : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी हिफ़ाज़त फ़रमाए जिस तरह तू ने मेरी हिफ़ाज़त की और जो शख्स कामिल वुजू के साथ वक़्त पर नमाज़ नहीं पढ़ता, रुकूअ व सुजूद खुशूअ व खुजूअ से अदा नहीं

①..... کتاب الزهد لابن المبارك، الجزء التاسع، الحديث: ١١٩٠، ص ٣١٩۔

②..... کتاب الزهد لابن المبارك، باب ماجاء فی فضل العبادة، الحديث: ١٠٣، ص ٣٣۔

③..... كشف الخفاء، خاتمة یختم بها الكتاب، ج ٢، ص ٣٤٦۔

④..... المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ١٠٨٠٣، ج ٣، ص ٦١٤۔

⑤..... صحيح مسلم، کتاب الصلاة، باب تحريم سبق الامام برکوع..... الخ، الحديث: ٢٢٤، ص ٢٢٨۔

करता तो वोह नमाज़ सियाह और तारीक हो कर बुलन्द होती है और कहती है : **अल्लाह** तुझे बरबाद करे जैसे तू ने मुझे ज़ाएअ किया यहां तक कि जब वहां जाती है जहां **अल्लाह** عز وجل चाहता है तो इस को बोसीदा कपड़े की तरह लपेट कर उस के मुंह पर मार दिया जाता है।⁽¹⁾

﴿6﴾.....लोगों में सब से बुरा चोर वोह है जो नमाज़ में चोरी करता है।^{(2) (3)}

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद और हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी (رضی اللہ تعالیٰ عنہما) से मरवी है कि “नमाज़ पैमाना है जिस ने इसे पूरा किया उसे पूरा बदला मिलेगा और जो इस में कमी करता है तो उसे मा'लूम है कि **अल्लाह** عز وجل ने कमी करने वालों के मुतअल्लिक क्या फ़रमाया है।”⁽⁴⁾

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ﴾

﴿.....اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ.....﴾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ﴾

﴿.....صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٣٠٩٥، ج ٢، ص ٢٢٤۔

②.....सहाबए किराम رضوان الله تعالى عليهم أجمعين ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم अपनी नमाज़ में चोरी कैसे करेगा।” इरशाद फ़रमाया : “रुकूअ और सज़ा पूरा न करे।”

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عليه رحمة المنان मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 78 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : वाह सُبْحَنَ اللّٰهُ क्या नफ़ीस तमषील है या'नी माल के चोर से नमाज़ का चोर बदतर है क्योंकि माल का चोर अगर सज़ा पाता है तो कुछ नफ़अ भी उठा लेता है मगर नमाज़ का चोर सज़ा पूरी पाएगा नफ़अ कुछ हासिल नहीं करता नीज़ माल का चोर बन्दे का हक़ मारता है मगर नमाज़ का चोर **अल्लाह** का हक़, नीज़ माल का चोर यहां सज़ा पा कर अज़ाबे आख़िरत से बच जाता है मगर नमाज़ के चोर में येह बात नहीं नीज़ बा'ज़ सूरतों में माल के चोर को मालिक मुआफ़ कर सकता है लेकिन नमाज़ के चोर की मुआफ़ी की कोई सूरत नहीं। ख़याल करो कि जब नमाज़ नाक़िस पढ़ने वालों का येह हाल है तो जो सिरे से पढ़ते ही नहीं उन का क्या हाल है। फिर जो कुल या बा'ज़ नमाज़ों के मुन्किर हो चुके जैसे भंगी पस्ती फ़कीर और चकड़ालवी वग़ैरा इन का क्या पूछना।

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث ابي قتادة الانصاري، الحديث: ٢٢٤٠٥، ج ٨، ص ٣٨٦۔

④.....کنز العمال، کتاب الصلاة، الحديث: ٢٢٥٣٨، ج ٨، ص ٩٥۔

चौथी फ़स्ल : नमाज़ों का जमाअत के फ़ज़ाइल फ़ज़ीलते जमाअत पर मुश्तमिल पांच फ़रामीने मुश्तफ़ा :

- ﴿1﴾....बा जमाअत नमाज़ तन्हा नमाज़ से 27 दर्जे अफ़ज़ल है।⁽¹⁾
- ﴿2﴾....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बा'ज नमाज़ों में कुछ लोगों को ग़ैर हाज़िर पाया तो इरशाद फ़रमाया : “मैं चाहता हूँ किसी शख्स को हुक्म दूँ कि वोह लोगों को नमाज़ पढ़ाए फिर मैं उन लोगों की तरफ़ जाऊँ जो नमाज़ (बाजमाअत) से पीछे रह जाते हैं⁽²⁾ और इन पर उन के घर जला दूँ।⁽³⁾
- ﴿3﴾....एक रिवायत में है कि फिर मैं जमाअत से पीछे रह जाने वालों कि तरफ़ जाऊँ और उन के मुतअल्लिक हुक्म दूँ कि इन पर उन के घरों को लकड़ियों के गट्टे से जला दिया जाए। अगर उन में से कोई जानता कि वोह चिकनी हड्डी या दो अच्छे खुर पाएगा तो इस नमाज़ (या'नी नमाज़े इशा) में ज़रूर हाज़िर होता।⁽⁴⁾
- ﴿4﴾....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि जो नमाज़े इशा जमाअत से पढ़े तो गोया वोह आधी रात इबादत में खड़ा रहा और जो फ़ज़्र जमाअत से पढ़े तो गोया वोह सारी रात इबादत में खड़ा रहा।⁽⁵⁾
- ﴿5﴾....जिस ने बा जमाअत नमाज़ पढ़ी बेशक उस ने अपने सीने को इबादत से भर दिया।
- हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “20 साल से मेरा येह मा'मूल है कि मुअज़्ज़िन के अज़ान देने से पहले ही मस्जिद में होता हूँ।”⁽⁶⁾

①.....صحيح البخارى، كتاب الأذان، باب فضل صلاة الجماعة، الحديث: ٦٢٥، ج ١، ص ٢٣٢۔

②.....मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 168 पर है : बिला उज़्र, लिहाज़ा इस से छोटे बच्चे, औरतें, मा'ज़ूर बीमार अलाहिदा हैं। यहां रुए सुखन मुनाफ़िकीन की तरफ़ है क्यूँकि कोई सहाबी बिला वजह जमाअत और मस्जिद की हाज़िरी नहीं छोड़ते थे। लिहाज़ा रवाफ़िज़ का येह कहना कि सहाबा फ़ासिक या तारिके जमाअत थे, ग़लत है, रब्ब ने उन के तक्वा और जन्नती होने की गवाही दी। अगर यहां सहाबा मुराद हों तो हदीष कुरआन के ख़िलाफ़ होगी।

③.....صحيح مسلم، كتاب المساجد.....الخ، باب كراهية تأخير الصلاة.....الخ، الحديث: ٢٥١-٢٥٢، ص ٣٢٤۔

④.....المرجع السابق، الحديث: ٢٥٢-المسند للام احمد بن حنبل، مسند ابى هريرة، الحديث: ٤٣٣٢، ج ٣، ص ٣٩۔

⑤.....صحيح مسلم، كتاب المساجد.....الخ، باب فضل صلاة العشاء.....الخ، الحديث: ٢٦٠، ص ٣٢٩۔

⑥.....المصنف لابن ابى شيبه، كتاب الصلاة، من كان يشهد الصلاة، الحديث: ٢، ج ١، ص ٣٨٦، فيه: “ثلاثين سنة”۔

तीन चीजों का शौक :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मुझे दुनिया में फ़क़त तीन चीज़ों का शौक है : (1) ऐसा भाई कि जब मैं टेढ़ा हो जाऊं तो वोह मुझे सीधा कर दे (2) इतना रिज़्क जो दूसरे के हक़ में ख़ाली हो और (3) बा जमाअत नमाज़ जिस में भूलना मुझे मुआफ़ कर दिया जाए और मेरे लिये इस की फ़ज़ीलत लिख दी जाए ।”⁽¹⁾

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू उबैदा बिन जर्राह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक मरतबा इमामत करवाई जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : “अभी शैतान मुसलसल मेरे साथ रहा यहां तक कि मैं ने समझा कि मैं दूसरे लोगों से अफ़ज़ल हूं, अब मैं कभी इमामत नहीं करूंगा ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि “ऐसे शख्स के पीछे नमाज़ न पढ़ो जो उ-लमा की सोहबत इख़्तियार नहीं करता ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जो शख्स बिग़ैर इल्म के इमामत करता है उस की मिषाल उस शख्स की सी है जो समन्दर में पानी को मापता है, उस की ज़ियादती या कमी को नहीं जानता ।”

हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “एक बार (किसी उज़्र के बाइष) मैं बा जमाअत नमाज़ के लिये हाज़िर न हो सका तो अकेले अबू इस्हाक़ बुख़ारी ने मुझ से ता’ज़ियत की और अगर मेरा बेटा फ़ौत हो जाता तो दस हज़ार से ज़ियादा लोग ता’ज़ियत करते क्यूंकि लोगों के नज़दीक दीन की मुसीबत दुनिया की मुसीबत से ज़ियादा आसान है ।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “जो मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुन कर जवाब न दे (या’नी बा जमाअत नमाज़ में हाज़िर न हो) तो न उस ने भलाई का इरादा किया और न उस के साथ भलाई का इरादा किया गया ।”⁽⁴⁾

1.....تاريخ دمشق لابن عساکر، محمد بن واسع، ج ۵۶، ص ۱۶۱، بتغیر الفاظ۔

2.....کتاب الزهد لابن المبارك، باب التواضع، الحديث: ۸۳۴، الجزء السادس، ص ۲۸۷۔

3.....الکبائر للذهبی، الكبيرة الرابعة، ص ۳۳۔

4.....المصنف لعبد الرزاق، کتاب الصلاة، باب من سمع النداء، الحديث: ۱۹۲۱، ج ۱، ص ۳۷۰، عن عائشة۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “अगर इब्ने आदम के कान को पिघले हुए सीसे से भर दिया जाए तो येह उस के लिये इस से बेहतर है कि वोह अज़ान सुने और जवाब न दे।”⁽¹⁾

इराक़ की बादशाहत से ज़ियादा महबूब :

हज़रते सय्यिदुना मैमून बिन मेहरान मस्जिद में हाज़िर हुए तो उन से अर्ज की गई : “लोग तो जा चुके हैं।” तो आप ने إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ (प २, البقرة: १५६) पढ़ा और फ़रमाया : “बा जमाअत नमाज़ पढ़ना मुझे इराक़ की बादशाहत से ज़ियादा पसन्द है।”

निफ़ाक़ और आग़ से आज़ादी का परवाना :

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने 40 दिन बा जमाअत नमाज़ इस तरह पढ़ी कि उस की तक्बीरे तहरीमा भी फ़ौत न हुई तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये दो परवाने लिखेगा एक परवाना निफ़ाक़ से आज़ादी का और दूसरा आग़ से आज़ादी का।”⁽²⁾

सूरज, चांद और सितारों की मानिन्द चमकते चेहरे :

मन्कूल है कि जब क़ियामत का दिन होगा तो कुछ लोगों को लाया जाएगा जिन के चेहरे सितारों की तरह चमकते दमकते होंगे फ़िरिश्ते उन से कहेंगे : “तुम क्या अमल करते थे ?” वोह कहेंगे : “हम अज़ान सुनते ही बुजू के लिये उठ खड़े होते थे कोई दूसरी चीज़ हमें मशगूल न करती थी।” फिर एक गुरौह को लाया जाएगा जिन के चेहरे चांद की मानिन्द रोशन होंगे (फ़िरिश्तों के) पूछने पर वोह कहेंगे : “हम (नमाज़ का) वक़्त शुरू होने से पहले ही बुजू कर लेते थे।” फिर एक गुरौह लाया जाएगा जिन के चेहरे सूरज की तरह रोशन होंगे (फ़िरिश्तों के पूछने पर) वोह कहेंगे : “हम अज़ान मस्जिद में सुनते थे।”⁽³⁾

मन्कूल है कि अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام में से किसी की तक्बीरे ऊला फ़ौत हो जाती तो तीन दीन अफ़सोस करते और अगर जमाअत फ़ौत हो जाती तो सात दिन अफ़सोस करते।

①.....المصنف لابن ابی شیبۃ، کتاب الصلوة، من قال اذا سمع المنادی فليجب، الحديث: ٣، ج ١، ص ٣٨٠۔

②.....سنن الترمذی، کتاب الصلوة، باب ماجاء فی فضل التکبیرة الاولى، الحديث: ٢٢١، ج ١، ص ٢٤٢۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٢٨، بتغییر۔

पांचवीं फ़स्ल :

फ़नाइने सनदा

सजदे की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿१﴾.....बन्दा एक पोशीदा सजदे से बढ़ कर किसी चीज़ से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब हासिल नहीं करता ।^(१)

﴿२﴾.....कोई मुसलमान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सजदा करता है तो इस के बदले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का एक दर्जा बुलन्द फ़रमाता और एक गुनाह मिटा देता है ।^(२)

﴿३﴾.....एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “(या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ कीजिये कि वोह मुझे आप की शफ़ाअत पाने वालों में से बना दे और जन्नत में मुझे आप की रफ़ाक़त अता फ़रमाए ।” आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “कषरते सुजूद से मेरी मदद करो ।”^{(३) (४)}

मन्कूल है कि बन्दा रब्ब عَزَّوَجَلَّ के सब से ज़ियादा क़रीब सजदे की हालत में होता है ।^(५)

दर्जे ज़ैल फ़रमाने बारी तअ़ाला का येही मा'ना है :

①..... کتاب الزهد لابن المبارك، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی الخشوع والخوف، الحديث: ١٥٢، ص ٥٠۔

②..... سنن ابن ماجه، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی كثرة السجود، الحديث: ١٢٢٢، ج ٢، ص ١٨٢۔

صحيح مسلم، کتاب الصلاة، باب فضل السجود والحث عليه، الحديث: ٢٨٨، ص ٢٥٢۔

③.....मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 84 पर इस के तहूत है : जन्नत में तुम्हें आ'ला मक़ाम पर पहुंचना मेरे करम से है न कि महज़ तुम्हारे सजदों से तुम अपने सजदों से मुझे इस काम में इमदाद दो । फ़रमा कर इशारतन फ़रमाया गया कि नफ़्स की मुख़ालफ़त जन्नत का ज़रीआ है (मिरकात) कषरते सुजूद से बताया गया कि फ़क़त नमाज़े पन्जगाना पर किफ़ायत न करो बल्कि नवाफ़िल कषरत से पढो ताकि मेरे कुर्ब के लाइक् हो जाओ । जैसे बादशाह कहे कि मेरे पास आना है तो अच्छा लिबास पहनो । हाज़िरी बादशाह के करम से है और अच्छा लिबास दरबार के आदाब में से ।

④..... صحيح مسلم، کتاب الصلاة، باب فضل السجود والحث عليه، الحديث: ٢٨٩، ص ٢٥٣۔

⑤..... صحيح مسلم، کتاب الصلاة، باب مايقال فی الركوع والسجود، الحديث: ٢٨٢، ص ٢٥٠۔

وَأَسْجُدْ وَاقْتَرِبْ^{١٩} (پ ٣٠، العلق: ١٩)

दूसरे मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

سَيَأْتِيهِمْ فِي وُجُوهِهِمْ مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ^{٢٠}
(پ ٢٩، الفتح: ٢٩)

इस आयत की तफ़सीर में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं :

- (1)....इस से मुराद हिस्सए ज़मीन है जो हालते सजदा में उन के चेहरों से मिला होता है ।
- (2)....इस से खुशूअ का नूर मुराद है क्यूंकि वोह बातिन से ज़ाहिर पर चमकता है और येही ज़ियादा सहीह है ।
- (3).....इस से मुराद वोह चमक है जो बरोजे क़ियामत वुजू के अषर से इन के चेहरों पर होगी ।
- ﴿4﴾.....जब इन्सान आयते सजदा पढ़ कर सजदा करता है तो शैतान एक तरफ़ हो कर रोते हुए कहता है : हाए अफ़सोस ! इन्सान को सजदे का हुक्म हुवा तो इस ने सजदा किया लिहाज़ा इस के लिये जन्नत है और मुझे सजदे का हुक्म हुवा तो मैं ने नाफ़रमानी की पस मेरे लिये जहन्नम है ।⁽²⁾

बहुत ज़ियादा सजदे करने वाले :

हज़रते सय्यिदुना अली बिन अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ के मुतअल्लिक़ मन्कूल है कि आप हर रोज़ एक हज़ार (1000) सजदे करते थे और लोग इन्हें “सज्जाद या’नी बहुत ज़ियादा सजदे करने वाला” कहते थे ।⁽³⁾

①...येह आयते सजदा है । बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 728 पर है : आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है । सजदा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़ज़ जिस में सजदे का माद्दा पाया जाता है और इस के क़ब्ल या बा’द का कोई लफ़ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है ।” और सफ़हा 730 पर है : “फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सजदा का तर्जमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि उसे ना मा’लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सजदा का तर्जमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को आयते सजदा होना बताया गया हो ।”

नोट : मज़ीद तफ़सील के लिये बहारे शरीअत के मज़कूर मक़ाम का सफ़हा 726 ता 739 का या दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना के मतबूअ 49 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले “तिलावत की फ़ज़ीलत” का मुतालआ कीजिये ।

②.....صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب بيان اطلاق اسم الكفر على من ترك الصلاة، الحديث: ٨١، ص ٥٦۔

③.....صفة الصفوة، على بن عبد الله بن عباس، ج ٢، ص ٤٦۔

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز मिट्टी पर ही सजदा किया करते थे ।

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बातِ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى (बुढ़ापे में) फ़रमाया करते थे :
“ऐ नौजवानों के गुरौह ! मरज़ से पहले सिह्दत में जल्दी करो । मैं सिर्फ़ उस शख्स पर रश्क करता हूं जो रुकूअ व सुजूद को पूरा करता है जब कि मेरे और सजदे के दरमियान रुकावट पैदा हो गई है ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मुझे सजदे के सिवा दुन्या की किसी चीज़ के छूटने पर अप्सोस नहीं होता ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना उक़बा बिन मुस्लिम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “बन्दे की कोई ख़स्लत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को इस से ज़ियादा पसन्द नहीं कि वोह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से मुलाक़ात को पसन्द करे और बन्दा **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की बारगाह में सजदा करने के इलावा किसी घड़ी में उस का ज़ियादा कुर्ब नहीं पाता ।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “बन्दा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से ज़ियादा करीब सजदा करते हुए होता है तो इस में दुआएं ज़ियादा मांगो ।”⁽⁴⁾

छटी फ़स्ल :

खुशूअ की फ़ज़ीलत

खुशूअ के मुतअल्लिक तीन फ़रामीने बारी तआला :

﴿1﴾ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ﴿١٣﴾ (प १६, ط १३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और मेरी याद के लिये नमाज़ काइम रख ।

﴿2﴾ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٢٠﴾ (प १९, الاعراف २०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और गाफ़िलों में न होना ।

﴿3﴾ لَا تَقْرُبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ ﴿٥٣﴾ (النساء: ५३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो ।

①.....المجالسة وجواهر العلم، الجزء الثالث، الحديث: ٣٣١، ج ١، ص ٤٣ -

②.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في الصلوات، الحديث: ٣١٤٨، ج ٣، ص ٥٣ -

③.....كتاب الزهد لابن المبارك، باب الذي يجزع من الموت.....الخ، الحديث: ٢٤٩، ص ٩٥ -

④.....سنن أبي داود، كتاب الصلوة، باب الدعاء في الركوع والسجود، الحديث ٨٤٥، ج ١، ص ٣٣٣ -

इस आयत में मज़कूर लफ़्ज़ "سُكْرَى" की तफ़सीर में मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं :

- (1) बन्दा ग़मों की कषरत के बाइष नशे में हो (2) दुन्या की महबूत की वजह से नशे में हो (3) हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इस से ज़ाहिर मुराद है ।

(मुसन्निफ़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ) इस में दुन्यवी नशे पर तम्बीह है क्यूंकि इस की इल्लत बयान करते हुए इरशाद फ़रमाया : “जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो और कितने ही नमाज़ी हैं जो शराब नोशी नहीं करते मगर इन्हें मा'लूम नहीं होता कि वोह नमाज़ में क्या कह रहे हैं !”

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने दो रक्अत नफ़ल अदा किये जिन में अपने दिल से कुछ बात न की तो उस के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे ।”(1)

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक नमाज़ सुकून, अज़िज़ी, गिड़गिड़ाने, ख़ौफ़ और नदामत का नाम है और येह कि तू हाथ बांध कर यूं कहे : “**ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! **ऐ अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ !” और जो ऐसा न करे तो उस की नमाज़ नाक़िस है ।”(2)

किस की नमाज़ मक़बूल है ?

कुतुबे साबिका में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “मैं हर नमाज़ी की नमाज़ क़बूल नहीं करता बल्कि मैं उस की नमाज़ क़बूल करता हूँ जो मेरी अज़मत के सामने अज़िज़ी करे और मेरे बन्दों पर बड़ाई न चाहे और मेरी रिज़ा के लिये फ़कीर को खाना खिलाए ।”(3)

मक्की मदनी सुल्तान, रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक नमाज़ की फ़र्जियत, हज़ व तवाफ़ का हुक्म और मनासिके हज़ की अदाएगी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र को काइम रखने के लिये है । तो जब तुम्हारे दिल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ही अज़मत व हैबत न हो जो कि मक़सूद व मतलूब है तो फिर तुम्हारे ज़िक्र की कीमत क्या रह जाएगी ।”(4)

①.....صحیح البخاری، کتاب الوضوء، باب الوضوء ثلاثاً ثلاثاً، الحدیث: ۱۵۹، ج ۱، ص ۷۸۔

②.....سنن الترمذی، ابواب الصلوة، باب ماجاء فی التخشع فی الصلوة، الحدیث: ۳۸۵، ج ۱، ص ۳۹۴، بتغییر۔

③.....کنز العمال، کتاب الصلوة، الحدیث: ۲۰۱۰۰، ج ۷، ص ۲۱۴، باختصار۔

④.....سنن ابی داود، کتاب المناسک، الحدیث: ۱۸۸۸، ج ۲، ص ۲۶۰، ولم يذكر "فرضت الصلوة" باختصار۔

मदीने के ताजदार, बिइज़ने परवर दगार दो अलम के मालिको मुख्तार صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक शख्स को वसियत करते हुए इरशाद फ़रमाया : “जब तुम नमाज़ पढ़ो तो रुख़्सत करने वाले की तरह नमाज़ पढ़ो ।”(1)

या'नी उस शख्स की तरह जो अपने नफ़्स, अपनी ख़्वाहिशात और अपनी उम्र को अल वदाअ कहता हुआ अपने मालिक की तरफ़ जाता है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا
فَمُتْلِقِيْہٖ ﴿٣٠﴾ (پ ۳۰، الانشقاق: ۶)

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَيَعْلَمُ اللَّهُ
(پ ۳, البقرة: ۲८२)

एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُّسْلِقُوْہٖ
(پ २, البقرة: २२३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ आदमी ! बेशक तुझे अपने रब की तरफ़ यकीनी दौड़ना है फिर उस से मिलना ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरो और **अल्लाह** तुम्हें सिखाता है ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** से डरते रहो और जान रखो कि तुम्हें उस से मिलना है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिसे उस की नमाज़ बे हयाई और बुरे कामों से न रोके उस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूरी में ही इज़ाफ़ा होगा ।”(2)

नमाज़ मुनाजात का नाम है तो फिर येह ग़फ़लत के साथ कैसे अदा होगी ?

बिगैर तर्जुमान के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी :

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَنِي फ़रमाते हैं : “ऐ इब्ने आदम ! जब तू बिगैर इजाज़त मौला की बारगाह में हाज़िर होना और बिगैर तर्जमान के उस से कलाम करना चाहे तो उस की बारगाह में हाज़िर हो जा ।” अर्ज़ की गई : “येह कैसे मुमकिन है ?” फ़रमाया : “कामिल वुजू कर के मेहराब में दाख़िल (हो कर नमाज़ में मशगूल) हो जा, पस

①.....کنز العمال، کتاب الصلوٰۃ، الحدیث: ۲۰۰۹۰، ج ۷، ص ۲۱۲۔

②.....کنز العمال، کتاب الصلوٰۃ، الحدیث: ۲۰۰۷۹، ج ۷، ص ۲۱۲۔

जब तू अपने मौला की बारगाह में बिगैर इजाज़त के दाख़िल हो जाएगा तो बिगैर तर्जमान के उस के साथ कलाम भी करेगा।”⁽¹⁾

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हम से और हम आप से गुफ़्तगू करते लेकिन जब नमाज़ का वक़्त होता तो अज़मत व जलालते किब्रियाई में इस क़दर मशगूल हो जाते गोया न आप हमें पहचानते और न हम आप को पहचानते।”⁽²⁾

अब्बाह के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ऐसी नमाज़ की तरफ़ नज़र नहीं फ़रमाता जिस में बन्दा अपने जिस्म के साथ दिल को हाज़िर न करे।”⁽³⁾

नमाज़ हो तो ऐसी :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो आप के दिल की धड़कन दो मील की मसाफ़त से सुनाई देती।⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना सईद तनोख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَنٰى जब नमाज़ पढ़ते तो (इस क़दर रोते कि) रुख़सार से दाढ़ी पर मुसलसल आंसू गिरते रहते।⁽⁵⁾

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख़्स को नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेलते देखा तो इरशाद फ़रमाया : “अगर इस के दिल में खुशूअ होता तो इस के आ’ज़ा में भी खुशूअ होता।”⁽⁶⁾

गाफ़िल ख़्वाहिश मन्द :

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰى ने एक शख़्स को कंकरियों से खेलते देखा, वोह कह रहा था : “ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ! हूरे ऐन से मेरी शादी करा दे।” आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى ने फ़रमाया : “तू बुरा पैग़ाम देने वाला है, हूरे ऐन से शादी का इरादा है और खेल कंकरियों से रहा है।”⁽⁷⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى الصلوات، الحديث: ٣٢٣، ج ٣، ص ٢٨١، نحوه۔

②.....المستطرف فى كل فن مستطرف، الباب الاول فى مباني الاسلام، الفصل الثانى، ج ١، ص ١٣۔

③.....كتاب الفقه على المذاهب الاربعة، كتاب الصلاة، حكمة مشروعتها، ج ١، ص ١٥٨۔

④.....الجامع لاحكام القرآن، پ ١، سورة براءة، تحت الآية: ١١٣، ج ٨، ص ١٥٩۔

⑤.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، سعيد بن عبدالعزيز التنوخي، ج ٢، ص ٢٠٣، بنحو۔

⑥.....نوادراصول، الاصل السابع والاربعون والمائتان، الحديث: ١٣١، ص ١٠٠٤۔

⑦.....تفسير غرائب القرآن...، پ ٨، سورة المؤمنون، تحت الآية: ٢، ج ٥، ص ١٠٩، دون قوله: تخطب الحور العين۔

हिक्वयत : सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَدُودِ का खौफ़े खुदा :

हज़रते सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَدُود से पूछा गया : “आप मख़बयों को दूर नहीं करते क्या येह नमाज़ में आप को तक्लीफ़ नहीं पहुंचातीं ?” फ़रमाया : “मैं अपने नफ़्स को ऐसी चीज़ का आदी नहीं बनाता जो मेरी नमाज़ फ़ासिद कर दे ।” पूछा गया : “आप इस पर सब्र कैसे कर लेते हैं ?” फ़रमाया : “मुझे येह बात पहुंची है कि फ़ासिको फ़ाजिर लोग बादशाहों के कोड़ों तले सब्र करते हैं तो कहा जाता है फुलां बहुत सब्र करने वाला है और वोह इस पर फ़ख़्र करते हैं । तो क्या मैं अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा हो कर मख़बी की वजह से हारकत करूं ?”⁽¹⁾

सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار और नमाज़ :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار जब नमाज़ का इरादा करते तो घर वालों से फ़रमाते : “तुम आपस में गुफ़्तगू करते रहो अब मैं तुम्हारी गुफ़्तगू नहीं सुनूंगा ।”⁽²⁾ एक दिन आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बसरा की जामेअ मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहे थे कि (आप की पिछली जानिब) मस्जिद का एक सुतून गिर गया इस की वजह से लोग जम्अ हो गए लेकिन आप को इस के बारे में इल्म न हुवा हत्ता की नमाज़ मुकम्मल कर ली ।⁽³⁾

नमाज़ अमानत है :

जब नमाज़ का वक़्त आता तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रमَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم पर कपकपी त़ारी हो जाती और चेहरे का रंग बदल जाता । अर्ज़ की जाती : “ऐ अमीरल मोअमिनीन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ! आप को क्या हुवा ?” फ़रमाते : “ऐसा वक़्त आया है जो अमानत है । इस अमानत को **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीनो आस्मान और पहाड़ों पर पेश किया तो उन्होंने इसे उठाने से इन्कार कर दिया और डर गए जब कि मैं (या'नी इब्ने आदम) ने इसे उठा लिया ।”⁽⁴⁾

①.....المستطرف في كل فن مستطرف، الباب الاول في مباني الاسلام، الفصل الثاني، ج ١، ص ١٥، نحوه۔

②.....حلية الاولياء، مسلم بن يسار: ١٩٢، الحديث: ٢٢٢٠، ج ٢، ص ٣٢٩، نحوه۔

③.....حلية الاولياء، مسلم بن يسار: ١٩٢، الحديث: ٢٢٢٢، ج ٢، ص ٣٣٠، نحوه۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٦٩، مفهوماً۔

④.....روح المعاني، الجزء الثاني والعشرون، سورة الاحزاب: ٤٣، ص ٣٤٣۔

सय्यिदुना इमाम जैनुल आबेदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِين और नमाज़ :

मन्कूल है कि इमाम जैनुल आबेदीन हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब वुजू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द पड़ जाता। अहले ख़ाना कहते : “वुजू करते वक़्त आप पर किस चीज़ का ख़ौफ़ तारी हो जाता है?” फ़रमाते : “क्या तुम जानते हो कि मैं किस की बारगाह में खड़े होने का इरादा कर रहा हूँ।”⁽¹⁾

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के घर में रहने वाला खुश नसीब :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अपनी दुआओं में यूँ अर्ज़ करते : “ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरे घर (या'नी जन्नत) में कौन रहेगा और तू किस की नमाज़ क़बूल फ़रमाता है?” **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने वहूय फ़रमाई : ऐ दावूद ! मेरे घर में वोही रहेगा और मैं उसी की नमाज़ क़बूल करता हूँ जो मेरी अज़मत के सामने अजिज़ी इख़्तियार करता, दिन मेरे ज़िक्र में गुज़ारता, अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोकता, मेरी रिज़ा के लिये भूकों को खाना खिलाता, मुसाफ़िर और मुसीबत ज़दा को पनाह देता है। येह वोह शख़्स है जिस का नूर आस्मानों में सूरज की तरह चमकता है। अगर वोह मुझे पुकारे तो मैं उसे जवाब देता हूँ। अगर मुझ से मांगे तो उसे अता करता हूँ। मैं उसे जहालत के वक़्त हिल्म अता करता, ग़फ़लत में ज़िक्र की तौफ़ीक़ बख़्शाता और तारीकियों में रोशनी अता करता हूँ। इस की मिषाल लोगों में ऐसी है जैसे तमाम जन्नतों में फ़िरदौसे आ'ला की, जिस की नहरें खुशक नहीं होतीं और उस के फ़ल ख़राब नहीं होते।”⁽²⁾

सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم और नमाज़ :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم से किसी ने इन की नमाज़ की कैफ़ियत के बारे में पूछा तो फ़रमाया : “जब नमाज़ का वक़्त क़रीब आता है तो मैं कामिल वुजू करता हूँ फिर जिस जगह नमाज़ पढ़ने का इरादा होता है वहां आ कर बैठ जाता हूँ यहां तक कि मेरे तमाम आ'जा जम्अ हो जाते हैं। फिर येह तसव्वुर बांध कर नमाज़ के लिये खड़ा होता हूँ कि का'बतुल्लाह मुशरफ़ा मेरे सामने, पुल सिरात पाउं तले, जन्नत मेरे दाई जानिब, जहन्नम

①.....الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عاصم بن هبيرة، الحديث: ٢١٣٨، ص ٣٦٣.

②.....الزهد للامام احمد بن حنبل، زهد عاصم بن هبيرة، الحديث: ٢١٣٨، ص ٣٦٣.

बाई तरफ़ और मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पीछे हैं और गुमान करता हूं कियेह मेरी आखिरी नमाज़ है। फिर उम्मीद व खौफ़ की दरमियानी हालत में होता हूं। फिर हकीकतन तक्बीरे तहरीमा कहता, ठहर ठहर कर क़िराअत करता, अजिजी के साथ रुकूअ और खुशूअ के साथ सजदा करता हूं। फिर दाएं पहलू पर क़ा'दा करता और बायां पाउं बिछा कर इस पर बैठ जाता हूं और दाएं पाउं को अंगूठे पर खड़ा करता हूं। फिर इख़्लास से काम लेता हूं। इस के बा'द मैं नहीं जानता कि मेरी नमाज़ क़बूल होती है या नहीं ?”(1)

पूरी रात इबादत से बेहतर अमल :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “ग़ौरो फ़िक्र के साथ दो रक्अत नफ़ल अदा करना, गाफ़िल दिल के साथ पूरी रात क़ियाम (या'नी इबादत) करने से बेहतर है ।”(2)

.....मुर्दों की ता'दाद के बराबर अज़्र.....

जो क़ब्रिस्तान में 11 बार सूरए इख़्लास पढ़ कर मुर्दों को इस का ईसाले षवाब करे तो मुर्दों की ता'दाद के बराबर ईसाले षवाब करने वाले को इस का अज़्र मिलेगा । (كشَفُ الْخَفَاءِ، الْحَدِيثُ ٢٦٢٩، ج ٢، ص ٢٥٢)

.....تُوبُوا إِلَى اللَّهِ..... اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ.....

.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ..... صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤١، بتغير۔

②.....الزهد لابن المبارك، باب الاعتبار والتفكير، الحديث: ٢٨٨، ص ٩٤۔

सातवीं फ़सल : **मस्जिद और नाज़ नमाज़ की फ़ज़ीलत**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اِنَّمَا يَعْزُّمُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ (پ ۱۰، التوبة: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** की मस्जिदें
वोही आबाद करते हैं जो **अल्लाह** और क़ियामत
पर ईमान लाते ।

मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल सात फ़रामीने मुश्तफ़ा :

- ﴿1﴾.....जिस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मस्जिद बनाई अगर्चे वोह तीतर (परन्दे) के
घोसले के बराबर हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक महल बनाएगा ।⁽¹⁾
- ﴿2﴾.....जो मस्जिद से महबूबत रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से महबूबत फ़रमाता है ।⁽²⁾
- ﴿3﴾.....जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ अदा कर ले ।⁽³⁾
- ﴿4﴾..... मस्जिद के पड़ोसी की, मस्जिद के इलावा (घर में या कहीं और) नमाज़ कामिल नहीं
होती ।⁽⁴⁾
- ﴿5﴾.....जब तक तुम में से कोई नमाज़ अदा कर के वहां बैठा रहता है तब तक फ़िरिश्ते उस के लिये
दुआए रहमत करते रहते हैं और कहते : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रहमत नाज़िल फ़रमा । ऐ
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! इस पर रहम फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस की मग़फ़िरत फ़रमा । उस वक़्त
तक दुआ करते रहते हैं जब तक कि बे वुजू न हो जाए या मस्जिद से चला न जाए ।⁽⁵⁾
- ﴿6﴾.....आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत के कुछ लोग होंगे जो गुरौह दर गुरौह मस्जिद में आ कर
बैठेंगे उन का ज़िक्र दुन्या और दुन्या की महबूबत होगी । तुम उन के साथ न बैठना कि **अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ को उन से कोई हाज़त नहीं ।⁽⁶⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الصلوات، فصل المشى الى المساجد، الحديث: ۲۹۴۲، ج ۳، ص ۸۱، بتغير۔

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ۶۳۸۳، ج ۶، ص ۲۰۰۔

③.....صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب اذا دخل المسجد.....الخ، الحديث: ۴۴۲، ج ۱، ص ۷۰۔

④.....سنن الدارقطنى، كتاب الصلاة، باب الحث لجار المسجد على الصلاة.....الخ، الحديث: ۱۵۳۸، ج ۱، ص ۵۵۴۔

⑤.....صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب الحدث في المسجد، الحديث: ۴۴۵، ج ۱، ص ۷۰۔

⑥.....المعجم الكبير، عبدالله بن مسعود، الحديث: ۱۰۴۵۲، ج ۱۰، ص ۱۹۸۔

التفسير الكبير للرازي، الجزء السادس عشر، سورة التوبة، ج ۶، ص ۱۱۔

बा'ज़ किताबों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान मौजूद है : “मेरी ज़मीन में मेरे घर मसाजिद हैं और इन में मेरी ज़ियारत करने वाले वोह हैं जो इन्हें आबाद करते हैं। पस उस बन्दे को मुबारक हो जो अपने घर में पाकीज़गी हासिल करे फिर मेरे घर में मेरी ज़ियारत करे और जिस की ज़ियारत की जाए उस पर हक़ है कि वोह ज़ियारत करने वाले की इज़्ज़त करे।”⁽¹⁾

﴿7﴾.....जब तुम किसी शख्स को मस्जिद में आता जाता देखो तो उस के ईमान की गवाही दो।⁽²⁾

मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल आठ अक्वाले बुजुर्गाने दीन :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “जो मस्जिद में बैठता है वोह अपने रब्ब के हुज़ूर बैठता है तो उसे अच्छी बात ही करनी चाहिये।”⁽³⁾

नीज़ मरवी है कि “मस्जिद में दुनिया की बातें करना नेकियों को यूँ खा जाता है जैसे चोपाए घास खा जाते हैं।”⁽⁴⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “अस्लाफ़े किराम اللّٰه السّلام फ़रमाते हैं : “तारीक रात में मस्जिद जाने को जन्नत में जाने का ज़रीआ समझते थे।”⁽⁵⁾

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जिस ने मस्जिद में चराग़ जलाया तो जब तक मस्जिद में रोशनी रहती है तब तक अ़ाम फ़िरिशते और अ़र्श उठाने वाले ख़ास फ़िरिशते उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करते रहते हैं।”⁽⁶⁾

﴿4﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم फ़रमाते हैं कि “जब बन्दा फ़ौत होता है तो ज़मीन में उस की जाए नमाज़ और आस्मान में उस के अमल

①.....التفسير الكبير للرازي، الجزء السادس عشر، سورة التوبة، ج ٦، ص ١١ -

②.....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة التوبة، الحديث: ٣١٠٢، ج ٥، ص ٢٣ -

③.....الزهد لابن المبارك، باب فضل المشی الى الصلاة.....الخ، الحديث: ٢١٦، ص ١٢٠ -

④.....التفسير الكبير للرازي، الجزء السادس عشر، سورة التوبة، ج ٦، ص ١١ -

⑤.....شرح السنة، کتاب الصلاة، باب فضل اتيان المساجد، الحديث: ٢٤٢، ج ٢، ص ١١٨، بتقديم وتأخر -

⑥.....التفسير الكبير للرازي، الجزء السادس عشر، سورة التوبة، ج ٦، ص ١١، عن النبي صلى الله عليه وسلم دون ذلك -

का ठिकाना उस पर रोते हैं।" फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا
تَرْجُمُهُ كَنْزُ الْجَمَانِ : तो उन पर आस्मान और
ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई।⁽¹⁾
كَانُوا مُنْتَظَرِينَ⁽²⁾ (प २५, الدخان: २९)

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “चालीस सुब्ह उस पर ज़मीन रोती रहती है।”⁽²⁾

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना अता खुरासानी قُدِّسَ سِرُّهُ التُّورَانِي फ़रमाते हैं : “जो शख्स ज़मीन के जिस हिस्से पर भी नमाज़ पढ़ता है तो वोह हिस्सा क़ियामत के दिन इस की गवाही देगा और जिस दिन येह मरता है वोह इस पर रोता है।”⁽³⁾

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “ज़मीन के जिस हिस्से पर नमाज़ या ज़िक्र के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को याद किया जाए वोह हिस्सा इर्द गिर्द की ज़मीन पर फ़ख्र करता है और सात ज़मीनों तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से खुश होता है और जब कोई बन्दा खड़े हो कर नमाज़ पढ़ता है तो उस के लिये ज़मीन को आरास्ता किया जाता है।”⁽⁴⁾

﴿8﴾.....मन्कूल है कि “(अषनाए सफ़र) जब कोई कौम किसी जगह ठहरती है तो वोह जगह उस के लिये दुआए रहमत करती या उस पर ला'नत भेजती है।”⁽⁵⁾

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ﴾ ﴿أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ.....﴾

﴿.....صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ﴾ ﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾



①.....الزهد لابن المبارك، باب فخر الارض بعضها على بعض، الحديث: ٣٣٦، ص ١١٢ -

②.....الزهد لابن المبارك، باب فخر الارض بعضها على بعض، الحديث: ٣٣٨، ص ١١٢، بتقديم و تاخير -

③.....الزهد لابن المبارك، باب فخر الارض بعضها على بعض، الحديث: ٣٣٠، ص ١١٥ -

④.....الزهد لابن المبارك، باب فخر الارض بعضها على بعض، الحديث: ٣٣٩، ص ١١٥ -

⑤.....الزهد لابن المبارك، باب فخر الارض بعضها على بعض، الحديث: ٣٣٣، ص ١١٣ -

बाब नम्बर 2 : ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़ियत व आदाब का बयान (इस में तीन फ़स्ले हैं)

**पहली फ़स्ल : नमाज़ में ज़ाहिरी आ'माल की कैफ़ियत और
तक्बीरे तहरीमा से इब्तिदा करना**

नमाज़ का तरीक़ा :⁽¹⁾

नमाज़ पढ़ने वाले को चाहिये कि जब बदन, मकान, लिबास, नाफ़ से घुंटनों के नीचे तक सित्रे औरत पर नापाकी वगैरा से पाकी हासिल कर ले और वुजू से फ़ारिग़ हो जाए तो किब्ला रुख़ हो कर खड़ा हो जाए।

पहला रुक़न क़ियाम :

दोनों क़दमों के दरमियान फ़ासिला रखे, इन्हें न मिलाए क्यूंकि येह उन चीज़ों में से है जिन से आदमी की समझ पर इस्तिदलाल किया जाता है।

नीज़ महबूबे रब्बे जुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने नमाज़ में एक पाउं उठाने या दोनों पाउं मिला कर रखने से मन्अ़ फ़रमाया है।⁽²⁾

येह उस के बारे में है जो खड़ा होते वक़्त अपने पाउं के मुआमले में इस बात का ख़याल रखता है, घुटनों और कमर को सीधा खड़ा करता है और जहां तक सर का मुआमला है तो अगर चाहे तो सर को सीधा रखे चाहे तो झुका दे बल्कि झुकाना खुशूअ के ज़ियादा क़रीब और आंखों को ज़ियादा पस्त करने वाला है। इस की निगाह सिर्फ़ जाए नमाज़ पर रहे जिस पर नमाज़ पढ़ रहा है। अगर जाए नमाज़ न हो तो दीवार के क़रीब खड़ा हो या कोई लकीर खींच दे इस से निगाह आगे नहीं बढ़ेगी और सोच में इन्तिशार पैदा नहीं होगा। आंखों को जाए नमाज़ के कनारों और

①..... फ़िक़हे अहनाफ़ के मुताबिक़ नमाज़ के फ़ज़ाइल व मसाइल व तरीक़े के मुताबिल्लिक़ तफ़सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअत** जिल्द अव्वल, हिस्सा 3 और 4 सफ़हा 433 ता 865 या शेख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि रज़वी دامت برکاتهم ائله की तहरीर कर्दा 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **नमाज़ के अहक़ाम** का मुतालआ कीजिये।

②..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج 2، ص 58۔

लकीर की हुदूद से तजावुज़ न करने दे। रूकूअ तक इस तरह खड़ा रहे और इधर उधर तवज्जोह न करे येह क़ियाम के आदाब हैं। जब इस तरह खड़ा हो जाए और क़िब्ला रू हो कर सर को झुका ले तो शैतान से बचने के लिये **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ से पनाह त़लब करते हुए सूरे नास या'नी : قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ की तिलावत करे। फिर इक़ामत कहे, अगर किसी मुक्तदी के आने की उम्मीद हो तो पहले अज़ान भी कहे।

निय्यते नमाज़ :

फिर निय्यत को हाज़िर करे मषलन ज़ोहर में येह निय्यत करे : “मैं **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ के लिये ज़ोहर की फ़र्ज़ नमाज़ अदा करता हूं।” ताकि लफ़्जे अदा के ज़रीए क़ज़ा से, फ़र्ज़ के ज़रीए नफ़ल से और ज़ोहर के ज़रीए अ़स्स से मुमताज़ हो जाए। इन अल्फ़ाज़ के मअ़ानी दिल में हाज़िर होने चाहियें क्यूंकि निय्यत दिल के इरादे का ही नाम है, अल्फ़ाज़ तो याद दिलाने वाले और इन मअ़ानी के जुहूर के अस्बाब हैं। फिर तक्बीरे तहरीमा के आख़िर तक निय्यत को बाक़ी रखने की कोशिश करे गाइब न होने दे।

हाथ उठाने के आदाब :

जब येह बात दिल में हाज़िर हो जाए तो लटके हुए हाथों को कंधों तक इस तरह उठाए कि हथेलियां कंधों के बराबर और दोनों अंगूठे कानों की लौं तक और उंगलियां कानों के सिरों के बराबर हो जाएं ताकि इस के मुतअल्लिक़ वारिद तमाम रिवायात पर अमल हो जाए। हथेलियों और अंगूठों को क़िब्ला रू और उंगलियों को कुशादा रखे, उन्हें बन्द न करे, हां उन्हें खोलते या मिलाते हुए तकल्लुफ़ से काम न ले बल्कि त़बई हालत पर छोड़ दे क्यूंकि रिवायत में खुला छोड़ना और मिलाना दोनों तरीके आए हैं। येह इन दोनों के दरमियान है और येही ज़ियादा बेहतर है।

दूसरा रुक्न तक्बीरे तहरीमा :

जब दोनों हाथ अपनी जगह पर पहुंच जाएं तो इन्हें छोड़ते हुए और निय्यत को हाज़िर रखते हुए तक्बीर कहे फिर दोनों हाथों को नाफ़ से ऊपर और सीने से नीचे बांध ले⁽¹⁾ और दाएं

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : निय्यत कर के اللهُ اكْبَرُ कहता हुवा हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे बांध ले।

हाथ की तकरीम के लिये इसे बाएं हाथ के ऊपर इस तरह रखे कि वोह उठा हुवा हो और दाएं हाथ की शहादत की उंगली और दरमियानी उंगली खुली रखते हुए बाजू की लम्बाई पर फैला दे जब कि अंगूठे, छोटी उंगली और साथ वाली उंगली के साथ बाएं हाथ की कलाई को पकड़ ले।⁽¹⁾

तक्बीर कब कही जाए :

(इस के मुतअल्लिक तीन रिवायतें हैं :) (1).....हाथों को उठाते वक्त तक्बीर कही जाए (2).....जब हाथ कंधों के बराबर हो जाएं तब कही जाए (3)....हाथ छोड़ते वक्त तक्बीर कही जाए।⁽²⁾

फैसलए गजाली :

इन सब तरीकों में हरज नहीं लेकिन हाथों को (कानों के साथ लगाने के बा'द) छोड़ते वक्त तक्बीर कहना ज़ियादा मुनासिब है। क्योंकि येह कलिमए अक़द है और एक हाथ को दूसरे हाथ पर रखना भी अक़द की सूरत में होता है जिस की इब्तिदा छोड़ना और इन्तिहा रखना है तक्बीर की इब्तिदा “۱” और आखिर “۲” पर होती है ताकि फे'ल और अक़द में मुताबक़त हो जाए और हाथों का उठाना इस इब्तिदा के लिये मुक़द्दमे की तरह है।

ऐसा भी न हो कि तक्बीर के वक्त हाथों को उठाते वक्त आगे या कन्धों के पीछे की तरफ़ ले जाए और तक्बीर के बा'द दाएं बाएं हाथ झाड़ना भी मुनासिब नहीं बल्कि इन्तिहाई आहिस्तगी के साथ छोड़ दे। हाथ छोड़ने के बा'द दायां हाथ बाएं हाथ पर रखे।

बा'ज़ रिवायात में है कि “आक़ाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब तक्बीर कहते तो अपने दोनों हाथों को छोड़ देते और जब क़िराअत का इरादा फ़रमाते तो दायां हाथ बाएं हाथ पर बांध लेते।”⁽³⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۴، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۸، دون القمر۔

سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء فی نشر الاصابع عند التكبير، الحديث: ۲۳۹، ج ۱، ص ۲۴۳، دون الضم۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب رفع الیدین فی الصلاة، الحديث: ۴۲۵، ج ۱، ص ۲۸۴۔

صحيح مسلم، کتاب الصلاة، باب استحباب رفع الیدین حذو المنکبین.....الخ، الحديث: ۳۹۰، ص ۲۰۶۔

سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب افتتاح الصلاة، الحديث: ۴۳۰، ج ۱، ص ۲۸۵۔

③.....المعجم الكبير، الحديث: ۱۳۹، ج ۲۰، ص ۴۴، مفهوماً۔

फ़ज़्र, मग़रिब और इशा में ज़हर (या'नी बुलन्द आवाज़) से क़िराअत करे अगर मुक़तदी हो तो क़िराअत न करे। (इख़ितामे फ़ातिहा पर) "أَمِينَ" बुलन्द आवाज़ से कहे।⁽¹⁾ फिर कोई सूरत पढ़े या कुरआने पाक की तीन आयात या इस से ज़ाईद तिलावत करे और सूरत को तक्बीरे रुकूअ के साथ न मिलाए बल्कि इन में एक बार "سُبْحَنَ اللّٰهُ" कहने की मिक्दार वक्फ़ा करे। फ़ज़्र की नमाज़ में तवाले मुफ़स्सल (या'नी सूरए हुजुरात से सूरए बुरूज तक), मग़रिब में क़षारे मुफ़स्सल (या'नी सूरए बय्यना से आख़िरे कुरआन तक), ज़ोहर, अ़स्र और इशा में अवसाते मुफ़स्सल (या'नी सूरए बुरूज से सूरए बय्यना तक) में से पढ़े।

सफ़र में फ़ज़्र की नमाज़ में (वक़्त कम हो तो) सूरए काफ़िरून और सूरए इख़्लास की क़िराअत करे। इसी तरह फ़ज़्र की सुन्नतों, तवाफ़ की नमाज़ और तहिय्यतुल मस्जिद और तहिय्यतुल वुजू में भी येही सूरतें पढ़े। इस तमाम वक़्त में वोह खड़ा रहे और हाथों को इस तरह बांधे जिस तरह हम ने नमाज़ के आगाज़ में ज़िक्र किया है।

चौथा रुकन रुकूअ और इस के मुतअल्लिक़ात :

फिर रुकूअ करे। इस में चन्द उमूर का लिहाज़ रखे, वोह येह हैं : रुकूअ की तक्बीर कहे, तक्बीरे रुकूअ के वक़्त रफ़अ यदैन्⁽²⁾ करे (या'नी तक्बीरे तहरीमा की तरह दोनों हाथ बुलन्द करे),

- ①.....अहनाफ़ के नज़दीक : "आमीन" आहिस्ता कहने का हुक़म है। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि.1 हि. 3, स. 504)
- ②.....अहनाफ़ के नज़दीक नमाज़ में तक्बीरे तहरीमा और तक्बीरे कुनूत के सिवा कहीं भी रफ़अ यदैन् जाइज़ नहीं। चुनान्वे, मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِكَةِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 16 पर हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी इस हदीषे पाक कि "नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब नमाज़ शुरूअ करते तो अपने दोनों हाथ कन्धों के मुक़ाबिल उठाते और जब रुकूअ की तक्बीर कहते और जब रुकूअ से सर उठाते तो भी यूंही हाथ उठाते और कहते سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ और सजदे में येह न करते" के तहूत फ़रमाते हैं : "(कन्धों के मुक़ाबिल हाथ उठाने से मुराद येह है) कि गट्टे कंधों तक रहते और अंगूठे कानों तक। (नीज़) इस हदीष से येह तो मा'लूम हुवा कि हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने रुकूअ में जाते आते रफ़अ यदैन् किया मगर येह ज़िक्र नहीं किया कि आख़िर वक़्त तक किया। हक़ येह है कि रफ़अ यदैन् मन्सूख़ है। चुनान्वे ऐनी शर्हें बुख़ारी में हैं कि सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने जुबैर ने एक शख़्स को रुकूअ में जाते आते रफ़अ यदैन् करते देखा तो फ़रमाया ऐसा न किया करो येह वोह काम है जिसे हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अव्वलन किया था फिर छोड़ दिया नीज़ सय्यिदुना इब्ने मसऊद, उमर इब्ने ख़त्ताब, अलियुल मुर्तज़ा, बरा इब्ने अज़िब, हज़रते अलक़मा वग़ैरा बहुत सहाबा से कि वोह रफ़अ यदैन् न करते थे और करने वालों को मन्अ करते थे नीज़ इब्ने अबी शैबा और तहावी ने हज़रते मुजाहिद से रिवायत की, कि मैं ने हज़रते इब्ने उमर के पीछे नमाज़ पढ़ी आप ने सिवा तक्बीरे ऊला के किसी वक़्त हाथ न उठाए

तक्बीर को रुकूअ में पहुंचने तक खींच कर कहे, रुकूअ में हथेलियां घुटनों पर यूं रखे कि उंगलियां खुली हों और पिन्डली की लम्बाई पर क़िब्ला रुख हों, घुटनों को खड़ा करे इन्हें न मोड़े, पीठ इस तरह सीधी बिछाए कि गर्दन और सर पीठ के बराबर हों जैसे एक सतह होती है। सर न तो ज़ियादा झुका हुआ हो और न ज़ियादा बुलन्द हो, (मर्द) कोहनियों को पहलूओं से जुदा रखे जब कि औरत कोहनियों को पहलूओं के साथ मिला कर रखे और तीन बार तस्बीहे रुकूअ या'नी : “سُبْحَنَ رَبِّيَ الْعَظِيمِ” कहे और सात या दस बार कहना अच्छा है जब कि येह इमाम न हो, फिर हस्बे साबिक रुकूअ से खड़ा होते रफ़अ यदैन् करे और तस्मीआ या'नी “سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ” رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلَّاءَ السَّمَوَاتِ وَمِلَّاءَ الْأَرْضِ وَمِلَّاءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدُ कहते हुए सीधा खड़ा हो जाए और “عَزَّ وَجَلَّ” या'नी ऐ हमारे रब्ब तमाम खूबियां तेरे लिये हैं जो आस्मानों और ज़मीन को भर दे और इस के बा'द जिस चीज़ को तू चाहे भर दे” कहे, रुकूअ से खड़े होने के बा'द (कौमा में) सलातुत्तस्बीह, नमाज़े कुसूफ़ और नमाज़े फ़ज्र के इलावा में ज़ियादा खड़ा न हो और नमाज़े फ़ज्र की दूसरी रक़अत में सजदों से पहले अहादीष में मन्कूल अल्फ़ाज़ के साथ दुआए कुनूत पढ़े।^{(1) (2)}

पांचवां रुकन सजदा :

फिर तक्बीर कहते हुए सजदे के लिये झुके और घुटने, पेशानी और नाक ज़मीन पर रखे और हथेलियां कुशादा रखे, सजदे में जाते और उठते हुए तक्बीर कहे और तक्बीरे रुकूअ के इलावा कहीं भी रफ़अ यदैन् न करे।

..... मा'लूम हुआ कि सय्यिदुना इब्ने उमर के नज़दीक भी रफ़अ यदैन् मन्सूख है नीज़ रिसाला आफ़ताबे मुहम्मदी में है कि हज़रते इब्ने उमर की हदीष चन्द रिवायतों से मन्कूल है जिस में से एक रिवायत में यूनुस है जो सख़्त ज़ईफ़ है दूसरी अस्नाद में अबू क़िलाबा है जो ख़ारिजियुल मज़हब था (देखो तहज़ीब) तीसरी अस्नाद में अब्दुल्लाह है। येह पक्का राफ़िज़ी था, चौथी अस्नाद में शोएब इब्ने इस्हाक़ है जो मरजिय्या मज़हब का था गरज़ की रफ़अ यदैन् की अहादीष की अक़षर अस्नादों में बद मज़हब खुसूसन रवाफ़िज़ बहुत शामिल हैं क्यूंकि येह उन का अमल है। हो सकता है कि रवाफ़िज़ के तक्विये की वजह से इमाम बुख़ारी को भी पता न लगा हो। लिहाज़ा मज़हबे हनफ़ी निहायत क़वी है कि नमाज़ों में सिवा तक्बीरे तहरीमा के और कहीं रफ़अ यदैन् न किया जाए।

नोट : रफ़अ यदैन् के मुतअल्लिक़ तफ़सीली मा'लूमात के लिये मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن की माया नाज़ तस्नीफ़ “जाअल हक़” (मतबूआ क़ादिरि पब्लिशर्ज़) हिस्सए दुवुम, छटा बाब, रफ़अ यदैन् न करो, स 407 ता 422 का मुतालआ मुफ़ीद रहेगा।

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में कुनूत न पढ़े। हां अगर हादिषए अज़ीमा वाक़ेअ हो तो फ़ज्र में भी पढ़ सकता है और जाहिर येह है कि रुकूअ से क़ब्ल कुनूत पढ़े। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 657)

②.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب دعاء القنوت، الحديث: ٣١٢٠، ج ٢، ص ٢٩٤

सजदे का मस्नून तरीका : सजदे में जाते हुए पहले घुटने, फिर दोनों हाथ, फिर चेहरा, पेशानी और नाक ज़मीन पर रखे, मर्द कोहनियां पहलूओं से जुदा रखे और दोनों पाउं के दरमियान फ़ासिला रखे, सजदे में पेट रानों से अलग रखे, दोनों घुटनों के दरमियान फ़ासिला रखे, ज़मीन पर दोनों हाथ कंधों के बराबर रखे और दोनों हाथों की उंगलियों के दरमियान फ़ासिला न रखे बल्कि इन्हें मिला कर रखे, अगर अंगूठा न मिलाए तो कोई हरज नहीं, कुत्ते की तरह बाजू बिछा कर सजदा न करे क्यूंकि इस से मन्अ किया गया है।⁽¹⁾ तीन बार तस्बीहे सजदा या'नी "سُبْحَنَ رَبِّيَ الْأَعْلَى" कहे। अगर तन्हा नमाज़ पढ़ रहा हो तो ज़ियादा बार कह ले तो अच्छा है। फिर सजदे से उठे और मुतमइन हो कर हालते ए'तिदाल में बैठे और तक्बीर कहते हुए सर उठाए, बायां पाउं बिछा कर इस पर बैठे और दायां खड़ा रखे, दोनों हाथ घुटनों पर यूं रखे कि उंगलियां फैली हुई अपनी (नोरमल) हालत में हों। दो सजदों के दरमियान जल्से में येह दुआ पढ़े :

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَارْحَمْنِيْ وَارْزُقْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَاجْبُرْنِيْ وَعَافِنِيْ وَاعْفُ عَنِّيْ या'नी ऐ मेरे रब्ब غَرْوَجَل मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रहूम फ़रमा, मुझे रिज़्क अता फ़रमा, मुझे हिदायत अता फ़रमा, मेरी परेशानी दूर फ़रमा और मुझे अफ़ियत और मुआफी अता फ़रमा।⁽²⁾ सलातुत्तस्बीह के इलावा जल्से को तवील न करे, इसी तरह दूसरा सजदा करे और सीधा बैठ जाए और हर ऐसी रकअत में इस्तिराहत के लिये थोड़ी देर बैठे जिस में तशहहुद नहीं। फिर हाथ ज़मीन पर रख कर खड़ा हो⁽³⁾ और उठते हुए दोनों पाउं में से एक को भी आगे न करे और तक्बीर को इतना खींचे कि बैठने की हालत से उठने और क़ियाम के दरमियान हो जाए या'नी बैठे हुए लफ़्जे **الله** की "ا", खड़ा होने के लिये हाथ के सहारे के वक़्त अक्बर का "ك" और उठते वक़्त दरमियान में पहुंचते हुए अक्बर की "ر" कहे। उठने के दरमियान तक्बीर शुरू करे ताकि क़ियाम की तरफ़ इन्तिकाल के दरमियान में तक्बीर वाक़ेअ हो। दोनों कनारे इस से ख़ाली न हों और येही सूरत उमूम

①.....صحیح مسلم کتاب الصلاة، باب الاعتدال فی السجود.....الخ، الحديث: ۴۹۳، ص ۵۴، مفهوماً۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۵۶، مختصراً۔

سنن الدارقطنی، کتاب الصلاة، باب ما یجزیه من الدعاء عند العجز.....الخ، ج ۱، ص ۴۲۲، دون "واعف عني"۔

③...अहनाफ़ के नज़दीक : का'दए ऊला के बा'द तीसरी रकअत के लिये उठे तो ज़मीन पर हाथ रख कर न उठे, बल्कि घुटनों पर जोर और हाथ रख कर उठे, येह सुन्नत है, हां कमजोरी वगैरा उज़्र के सबब अगर ज़मीन पर हाथ रख कर उठा जब भी हरज नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 530, 531 मुलतक़तन)

के ज़ियादा करीब है। अब दूसरी रकअत भी पहली की तरह पढ़े और इस में भी इब्तिदा में तअव्वुज़ “أَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ” पढ़े।⁽¹⁾

छटा रुकन का'दा :

फिर दूसरी रकअत (के बा'द का'दा) में तशह्हुद पढ़े, फिर हुजूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप की आल पर दुरूदे पाक भेजे।⁽²⁾ अपना दायां हाथ दाई रान पर रखे और दाएं हाथ की उंगलियों को बन्द कर के सिर्फ अंगुशते शहादत से इशारा करे, अंगूठे को खुला छोड़ने में भी हरज नहीं, “إِلَّا اللّٰهُ” पर इशारा करे “لَا إِلٰهَ” पर⁽³⁾ नहीं, तशह्हुद में इसी तरह बैठे जैसे दो सजदों के दरमियान बैठते हैं और आखिरी तशह्हुद में (या'नी का'दए अखीरा में बा'दे तशह्हुद) हुजूर नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ने के बा'द मस्नून दुआ पढ़े।⁽⁴⁾

का'दए अखीरा में वोही बातें सुन्नत हैं जो का'दए ऊला में हैं लेकिन इस में बाई सुरीन पर बैठे कि अब वोह उठने का इरादा नहीं करता बल्कि क़रार पकड़ने वाला है। बायां पाउं अपने नीचे से दूसरी तरफ़ निकाले और दाएं पाउं को खड़ा कर ले और अगर इसे तकलीफ़ न हो तो अंगूठे का सिरा क़िब्ला रुख़ कर ले।

सातवां रुकन सलाम :

फिर “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ” कहते हुए सलाम फैर दे। दाई तरफ़ इस तरह चेहरा फेरे कि

- ①.....अहनाफ़ के नज़दीक : तअव्वुज़ सिर्फ़ पहली रकअत में है और तस्मिय्या हर रकअत के अव्वल में मस्नून है फ़ातिहा के बा'द अगर अव्वल सूरत शुरू की तो सूरत पढ़ते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ पढ़ना मुस्तहसन है, क़िराअत ख़्वाह सिर्री हो या जहरी, मगर بِسْمِ اللّٰهِ बहर हाल आहिस्ता पढ़ी जाए। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 523)
- ②.....अहनाफ़ के नज़दीक : का'दए अखीरा के इलावा फ़र्ज़ नमाज़, सुनने मुअक्कदा में दुरूद शरीफ़ पढ़ना नहीं और नवाफ़िल, सुनने ग़ैर मुअक्कदा के का'दए ऊला में भी मस्नून है। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 534, 667 मुलख़बस)
- ③.....अहनाफ़ के नज़दीक : जब कलिमा ۞ के करीब पहुंचे, दहने हाथ की बीच की उंगली और अंगूठे का हल्का बनाए और छुंगलिया और इस के पास वाली को हथेली से मिला दे और लफ़्ज़े ۞ पर कलिमे की उंगली उठाए मगर इस को जुम्बीश न दे और कलिमा ۞ पर गिरा दे और सब उंगलियां फ़ौरन सीधी कर ले।

(बहारे शरीअत, जि.1 स. 505)

④.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الدعاء فی صلاة اللیل وقيامه، الحدیث: ۷۷۱، ص ۳۹۰۔

इस के पीछे दाई तरफ बैठा हुवा शख्स उस के रुख़सार को देख सके फिर इसी तरह बाई तरफ सलाम फेरे और दूसरे सलाम के साथ नमाज़ से निकलने की निय्यत करे, पहले सलाम में दाई और दूसरे में बाई जानिब के फ़िरिशतों और मुसलमानों को सलाम करने की निय्यत करे। सलाम में सुन्नत तरीका येह है कि तख़्फ़ीफ़ करे ज़ियादा न खींचे।⁽¹⁾ येह अकेले नमाज़ पढ़ने का तरीका है। तक्बीरें कहते हुए आवाज़ इतनी बुलन्द करे कि खुद सुन ले।

इमाम व मुक्तदी के लिये मुश्तहब उमूर :

इमाम इमामत की निय्यत करे ताकि फ़ज़ीलत को पा ले अगर इस ने इमामत की निय्यत न की और लोगों ने इक्तिदा की निय्यत कर ली तो उन की नमाज़ सहीह है और वोह जमाअत की फ़ज़ीलत को पा लेंगे। अकेले शख्स की तरह इमाम भी षना और तअव्वुज़ (व तस्मिया) आहिस्ता पढ़े और फ़ज़्र की दोनों रकअतों और मग़रिब व इशा की पहली दो रकअतों में सूरए फ़ातिहा और कोई दूसरी सूरत बुलन्द आवाज़ से पढ़े, तन्हा नमाज़ पढ़ने वाला भी इस तरह कर सकता है (लेकिन इस पर इन नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से क़िराअत वाजिब नहीं)। जहरी नमाज़ों (या'नी फ़ज़्र, मग़रिब व इशा) में इमाम व मुक्तदी दोनों बुलन्द आवाज़ से आमीन कहें।⁽²⁾ नीज़ मुक्तदी इमाम के साथ आमीन कहे। इमाम सूरए फ़ातिहा के बा'द कुछ सकता करे ताकि इस का सांस लौट आए और मुक्तदी जहरी नमाज़ों में इस सक्ते के दौरान सूरए फ़ातिहा पढ़े ताकि इमाम जब क़िराअत करे तो इस की क़िराअत सुने मुक्तदी जहरी नमाज़ों में क़िराअत न करे (या'नी कोई सूरत न पढ़े) लेकिन अगर उस तक इमाम की आवाज़ न पहुंच रही हो तो क़िराअत कर सकता है।⁽³⁾ इमाम व मुक्तदी रुकूअ से सर उठाते हुए “سَمِعَ اللَّهُ لَيْنٌ حَمْدَهُ” कहे।⁽⁴⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب حذف السلام، الحديث: ١٠٠٢، ج ١، ص ٣٤٥

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : आमीन आहिस्ता आवाज़ में कहने का हुक्म है। (माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि.1 स. 504)
 ③..... अहनाफ़ के नज़दीक : मुक्तदी को नमाज़ में क़िराअत जाइज़ नहीं, न सूरए फ़ातिहा, न आयत, न सिरी (या'नी आहिस्ता क़िराअत वाली) नमाज़ में न जहरी (या'नी बुलन्द आवाज़ से क़िराअत वाली) नमाज़ में। इमाम की क़िराअत मुक्तदी के लिये काफ़ी है। (مراقی الفلاح معه حاشية الطحطاوى، ص ٢٢٤)

④.....अहनाफ़ के नज़दीक : रुकूअ से उठने में इमाम के लिये “سَمِعَ اللَّهُ لَيْنٌ حَمْدَهُ” कहना और मुक्तदी के लिये “اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ” कहना और मुन्फ़रिद को दोनों कहना सुन्नत है। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 527)

इमाम रुकूअ व सुजूद में तीन से ज़ियादा तक्बीरात न कहे और पहले (का'दा में) तशह्हुद के बा'द “**اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ**” से ज़ियादा कुछ न पढ़े⁽¹⁾ और आखिरी दो रकअतों (के क़ियाम) में सूरए फ़ातिहा पर इक़तिफ़ा करे, लोगों को लम्बी नमाज़ न पढ़ाए और का'दए अख़ीरा के तशह्हुद और दुरूदे पाक की मिक्दार से ज़ियादा लम्बी दुआ न मांगे और सलाम फेरते वक़्त फ़िरिशतों और मुक़्तदियों को सलाम करने की निय्यत करे और मुक़्तदी अपने सलाम में इमाम के जवाब की भी निय्यत करें।

इमाम बा'दे सलाम कुछ देर तवक्कुफ़ करे ताकि लोग सलाम वगैरा कह कर फ़ारिग़ हो जाएं फिर इमाम अपना चेहरा लोगों की तरफ़ कर ले। अगर मर्दों के पीछे नमाज़ में औरतें भी शामिल हों तो इमाम का इतनी देर ठहरना औला है कि वोह चली जाएं। जब तक इमाम खड़ा न हो कोई मुक़्तदी खड़ा न हो और इमाम दाएं या बाएं जिस तरफ़ चाहे रुख़ फेर सकता है लेकिन दाई जानिब फिरना ज़ियादा बेहतर है।

इमाम फ़त्र की दुआए कुनूत में ख़ास अपने लिये दुआ न मांगे बल्कि यूं कहे : “**اللَّهُمَّ اهْدِنَا**” या'नी ऐ **اللَّهُ** हमें हिदायत अता फ़रमा।” इमाम बुलन्द आवाज़ से दुआए कुनूत पढ़े और लोग आमीन कहें और अपने हाथों को सीनों के बराबर उठाए रखें, दुआ के इख़िताम पर इन्हें चेहरे पर फैर लें इस वजह से कि इस के मुतअल्लिक़ हदीष मन्कूल है वरना क़ियास का तकाज़ा तो येह है कि तशह्हुद के बा'द वाली दुआ की तरह यहां भी हाथ न उठाए जाएं।

.....नूरानी लिबास.....

एक बुजुर्ग ने अपने मर्हूम भाई को ख़ाब में देख कर पूछा : “क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ तुम लोगों को पहुंचती है?” तो उन्होंने ने जवाब दिया : “हां! **اللَّهُ** **عَزَّوَجَلَّ** की क़सम ! वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं।”

(شرح الصدور، ص ५०३)

①अहनाफ़ के नज़दीक : फ़र्ज व वित्र व सुनने रवातिब (या'नी सुन्नते मुअक्कदा) में का'दए ऊला में तशह्हुद (या'नी अत्तहिय्यात) पर कुछ न बढ़ाना वाजिब है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 518) (नीज़ फ़र्ज व वित्र व सुनने रवातिब में भूले से) का'दए ऊला में तशह्हुद के बा'द इतना पढ़ा “**اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ**” तो सजदए सहव वाजिब है इस की वजह येह नहीं कि दुरूद शरीफ़ पढ़ा बल्कि इस की वजह येह है कि तीसरी रकअत के क़ियाम में ताख़ीर हुई। लिहाज़ा अगर इतनी देर तक ख़ामोश रहा जब भी सजदए सहव वाजिब है। (नमाज़ के अहक़ाम, स. 279)

दूसरी फ़स्ल :

ममनूआती नमान

आकाए दो जहां, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नमाज़ में दोनों पाउं मिला कर रखने और एक पाउं पर खड़ा होने से मन्अ फ़रमाया ।⁽¹⁾ नीज़ इन दस बातों से भी मन्अ फ़रमाया : (1).....इक़आ⁽²⁾ (2).....सदल⁽³⁾ (3).....कफ़⁽⁴⁾ (4).....इख़ितसार⁽⁵⁾ (5).....सुल्ब⁽⁶⁾ (6).....मुवासला⁽⁷⁾ (7).....सलातुल हाकिन⁽⁸⁾ (8).....हाकिब⁽⁹⁾ (9).....हाजिक़⁽¹⁰⁾ (10).....जाएअ, ग़ज़बान व मुतलषिम ।⁽¹¹⁾

मजकूरा उमूर की तफ़्सील :

﴿1﴾.....इक़आ : अहले लुग़त के नज़दीक़ इक़आ येह है कि कोई शख़्स अपनी सुरीन पर बैठे, घुटनों को खड़ा कर के हाथ ज़मीन पर रख दे जैसे कुत्ता बैठता है, जब कि मुहद्दिषीन के नज़दीक़ इक़आ येह है कि अपनी पिन्डलियों पर यूं बैठे कि ज़मीन पर सिर्फ़ पाउं की उंगलियों के सिरे और घुटने लगे हुए हों ।

﴿2﴾.....सदल : इस में मुहद्दिषीन का मौक़िफ़ येह है कि नमाज़ी कपड़ा लपेट कर हाथों को अन्दर दाख़िल करे और इसी तरह रुकूअ व सुजूद करे । यहूद इस तरह इबादत किया करते थे लिहाज़ा इन के साथ मुशाबहत की वजह से इस से मन्अ कर दिया गया । क़मीस भी इसी हुक्म में है, लिहाज़ा नमाज़ी के लिये मुनासिब नहीं कि दोनों हाथ क़मीस में डाले हुए रुकूअ व सुजूद

- 1.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٥٨، بتقديم وتأخر۔
 - 2.....سنن ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب الجلوس بين السجدين، الحديث: ٨٩٥، ٨٩٦، ج ١، ص ٢٨٢۔
 - 3.....سنن ابی داود، كتاب الصلاة، باب ماجاء في السدل في الصلاة، الحديث: ٦٢٣، ج ١، ص ٢٥٩۔
 - 4.....صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب اعضاء السجود.....الخ، الحديث: ٢٩٠، ص ٢٥٣۔
 - 5.....صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب كراهة الاختصار في الصلاة، الحديث: ٥٢٥، ص ٢٤٦۔
 - 6.....سنن ابی داود، كتاب الصلاة، باب في التخصير والاقعاء، الحديث: ٩٠٣، ج ١، ص ٣٢٢۔
 - 7.....صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب مايقال بين تكبيرة الاحرام.....الخ، الحديث: ٥٩٨، ص ٣٠٢۔
 - 8.....سنن ابن ماجه، كتاب الطهارة وسننها، باب ماجاء في النهی للحاقن ان یصلی، الحديث: ٦١٤، ج ١، ص ٣٢٢۔
 - 9.....صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب كراهة الصلاة بحضرة الطعام.....الخ، الحديث: ٥٢٠، ص ٢٨١۔
 - 10.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٦٠۔
 - 11.....صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب كراهة الصلاة بحضرة الطعام.....الخ، الحديث: ٥٥٤، ص ٢٨٠۔
- قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٦٠۔
- سنن ابی داود، كتاب الصلاة، باب ماجاء في السدل في الصلاة، الحديث: ٦٢٣، ج ١، ص ٢٥٩۔

करे। एक कौल के मुताबिक इस का मा'ना येह है कि नमाज़ी चादर का दरमियान वाला हिस्सा सर पर रखे और इस के दोनों कनारे दाएं बाएं लटका दे इन्हें अपने कन्धों पर न रखे।⁽¹⁾ पहला मा'ना ज़ियादा मुनासिब है।

﴿3﴾.....कफ़ : या'नी सजदे में जाते हुए आगे या पीछे से कपड़ा उठाना और कभी सर के बालों का जोड़ा बना लिया जाता है। लिहाज़ा मर्द को चाहिये कि सर के बालों को लपटे हुए नमाज़ न पढ़े। हदीषे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मुझे हुक्म दिया गया है कि सात आ'ज़ा पर सजदा करूं और बालों और कपड़ों को न लपेटूं।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَل ने नमाज़ में कमीस के ऊपर चादर बान्धने से मन्ज़ फ़रमाया और इसे कफ़ (या'नी लपेटना या समेटना) क़रार दिया।

﴿4﴾.....इख़्तिसार : नमाज़ी का अपने हाथों को कमर पर (या'नी दोनों पहलूओं के वस्त् में) रखना।⁽³⁾

﴿5﴾.....सुल्ब : हालते क़ियाम में दोनों हाथ कमर पर यूं रखना कि बाजू जिस्म से जुदा रहें।

﴿6﴾.....मुवासला : के पांच तरीके हैं :

दो का तअल्लुक़ इमाम के साथ है : (1).....इमाम क़िराअत को तक्बीरे तहरीमा से न मिलाए (2).....न ही रुकूअ को क़िराअत से मिलाए।

दो का तअल्लुक़ मुक्त्दी के साथ है : (1).....मुक्त्दी तक्बीरे तहरीमा को इमाम की तक्बीर के साथ न मिलाए (2).....न ही अपने सलाम को उस के सलाम के साथ मिलाए।

①.....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अहक़ाम सफ़हा 247 पर है : सदल या'नी कपड़ा लटकाना। मषलन सर या कन्धे पर इस तरह से चादर या रूमाल वगैरा डालना कि दोनों कनारे लटकते हों मकरूहे तेहरीमी है। हां ! अगर एक कनारा दूसरे कंधे पर डाल दिया और दूसरा लटक रहा है तो हरज नहीं। आज कल बा'ज़ लोग एक कंधे पर इस तरह रूमाल रखते हैं कि इस का एक सिरा पेट पर लटक रहा होता है और दूसरा पीठ पर इस तरह नमाज़ पढ़ना मकरूहे तेहरीमी है।

②.....صحیح مسلم، کتاب الصلوة، باب اعضاء السجود.....الخ، الحديث: २९०، ص २५३، بتقدم وتأخر۔

③.....नमाज़ के अहक़ाम सफ़हा 251 पर है : कमर पर हाथ रखना मकरूहे तेहरीमी है। नमाज़ के इलावा भी (बिला उज़्र) कमर पर (या'नी दोनों पहलूओं के वस्त् में) हाथ नहीं रखना चाहिये **اَبْلَاهُ** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : “कमर पर हाथ रखना जहन्नमियों की राहत है।” या'नी येह यहूदियों का फ़े'ल है कि वोह जहन्नमी हैं वरना जहन्नमियों के लिये जहन्नम में क्या राहत है !

एक का तअल्लुक दोनों के साथ है या'नी फ़र्ज नमाज़ में एक सलाम को दूसरे सलाम के साथ न मिलाया जाए बल्कि दोनों के दरमियान थोड़ा सा वक्फ़ा कर लिया जाए (ताकि दोनों में फ़र्क हो जाए) ।

﴿7﴾.....**हाकुन** : जिसे शिद्दत का पेशाब आ रहा हो ।

﴿8﴾.....**हाकिब** : जिसे पाख़ाने की शदीद हाजत हो ।⁽¹⁾

﴿9﴾.....**हाजिफ़** : तंग मौज़े पहन कर नमाज़ पढ़ने वाला । येह सब चीज़ें चूँकि खुशूअ में रुकावट बनती हैं (लिहाज़ा इन हालतों में नमाज़ पढ़ना भी ममनूअ है) ।

﴿10﴾.....**जाएअ और अत़शान** : भूक और प्यास की शिद्दत का भी येही हुक्म है (कि इस हालत में नमाज़ पढ़ना भी ममनूअ है) । भूक की शिद्दत में नमाज़ की मुमानअत हुज़ूर नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आलीशान से समझी गई है कि “जब खाना हाज़िर हो और नमाज़ खड़ी हो जाए तो पहले खाना खाओ मगर येह कि जब वक्त तंग हो या दिल मुतमइन हो (तो पहले नमाज़ पढ़ो) ।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “न तो तुम में से कोई हालते इज़तिराब में नमाज़ शुरूअ करे और न ही गुस्से की हालत में नमाज़ पढ़े ।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوٰى फ़रमाते हैं : “जो नमाज़ हुज़ूरे क़ल्ब के साथ न पढ़ी जाए उस की सज़ा जल्द मिलती है ।”⁽⁴⁾

①..... **दा'वते इस्लामी** के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब **नमाज़ के अहकाम** सफ़ह 248 पर है : पेशाब, पाख़ाना या रीढ़ की शिद्दत होना । अगर नमाज़ शुरूअ करने से पहले ही शिद्दत हो तो वक्त में वुसूअत होने की सूरत में नमाज़ शुरूअ करना ही गुनाह है । हां अगर ऐसा है कि फ़राग़त और वुजू के बा'द नमाज़ का वक्त ख़त्म हो जाएगा तो नमाज़ पढ़ लीजिये । और अगर दौराने नमाज़ येह हालत पैदा हुई तो अगर वक्त में गुन्जाइश हो तो नमाज़ तोड़ देना वाजिब है अगर इसी तरह पढ़ ली तो गुनहगार होंगे ।

②..... صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب كراهة الصلاة بحضرة الطعام..... الخ، الحديث: ٥٥٤، ص ٢٨٠-

③..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ٢، ص ١٦٠-

صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب كراهة الصلاة بحضرة الطعام..... الخ، الحديث: ٥٥٤، ص ٢٨٠-

④..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ٢، ص ١٦٠-

नमाज़ में सात चीज़ें शैतान की तरफ़ से हैं :

हदीषे मुबारका में है कि नमाज़ में सात चीज़ें शैतान की तरफ़ से हैं :

- (1)....नकसीर फूटना (2)....ऊँघ आना (3)....वस्वसा आना (4)....जमाही आना (5)....खुजाना (6)....इधर उधर तवज्जोह करना और (7)....किसी चीज़ से खेलना ।⁽¹⁾

बा'ज ने भूलने और शक में पड़ने का भी इज़ाफ़ा किया है ।⁽²⁾

नमाज़ में चार चीज़ें जुल्म से हैं :

बा'ज अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : “नमाज़ में चार चीज़ें जुल्म से हैं :

- (1)....इधर उधर मुतवज्जेह होना (2)....चेहरे पर हाथ फेरना (3)...कंकरियों का बराबर करना और (4)....रास्ते में ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना कि सामने से कोई गुज़र सकता हो ।”⁽³⁾ नीज़ उंगलियों में उंगलियां डालना,⁽⁴⁾ या उंगलियां चटखाना,⁽⁵⁾ (6) या चेहरा ढांपना,⁽⁷⁾ या रुकूअ

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٢٠۔

②.....المرجع السابق۔ ③.....المرجع السابق۔

④.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث كعب بن عجرة، الحديث: ١٨١٥٣، ج ٦، ص ٣٢٥۔

⑤.....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अहकाम सफ़हा 249 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ नक्ल फ़रमाते हैं : ख़ातमुल मुहविक़कीन अल्लामा इब्ने आबेदीन शामी رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : इब्ने माजा की रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “नमाज़ में अपनी उंगलियां न चटखाया करो ।” मुजतबा के हवाले से नक्ल किया, सुल्ताने दो जहां, शहनशाहे कौनो मकान, रहमते आलमिय्यान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने “इन्तिज़ारे नमाज़ के दौरान उंगलियां चटखाने से मन्अ फ़रमाया ।” मज़ीद एक रिवायत में है : “नमाज़ के लिये जाते हुए उंगलियां चटखाने से मन्अ फ़रमाया ।” इन अहदीषे मुबारका से येह तीन अहकाम षाबित हुए (الف) नमाज़ के दौरान और तवाबेअ नमाज़ में मषलन नमाज़ के लिये जाते हुए नमाज़ का इन्तिज़ार करते हुए उंगलियां चटखाना मकरूहे तहरीमी है (ب) ख़ारिजे नमाज़ (या'नी तवाबेअ नमाज़ में भी न हो) में बिगैर हाज़त के उंगलियां चटखाना मकरूहे तन्ज़ीही है (ج) ख़ारिजे नमाज़ में किसी हाज़त के सबब मषलन उंगलियों को आराम देने के लिये उंगलियां चटखाना मुबाह (या'नी बिला कराहत जाइज़) है ।

⑥.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب مايكره في الصلاة، الحديث: ٩٢٥، ج ١، ص ٥١٣۔

⑦.....سنن ابی داود، كتاب الصلاة، باب ماجاء في السدل في الصلاة، الحديث: ٢٢٣، ج ١، ص ٢٥٩۔

में एक हाथ को दूसरे हाथ पर रख कर रानों के दरमियान दाखिल करना भी मन्अ है⁽¹⁾ कि बा'ज सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : “हम इस तरह किया करते थे तो हमें इस से मन्अ कर दिया गया ।”⁽²⁾ यूंही सजदा करते हुए सफ़ाई की गरज से ज़मीन पर फूंकना और हाथ से कंकरियां बराबर करना भी मकरूह है क्योंकि येह ऐसे अफ़अल हैं कि जिन से दौराने नमाज़ बन्दा मुस्तग़नी है । इसी तरह एक पाउं उठा कर रान पर रखना भी मन्अ है । क़ियाम की हालत में दीवार या किसी और चीज़ से सहारा लेना भी मन्अ है । अगर किसी ऐसी चीज़ से सहारा लिया कि जिसे हटाने से नमाज़ी गिर जाए तो ज़ाहिर येह है कि नमाज़ बातिल हो जाएगी । وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

तीसरी फ़स्ल : फ़शइज़ व सुन्नत में फ़र्ज़

मज़कूरा कलाम फ़र्ज़ों, सुन्नतों, मुस्तहब्बात और आदाब पर मुश्तमिल है इन का लिहाज़ रखना राहे आख़िरत का इरादा करने वाले के लिये ज़रूरी है ।

नमाज़ के फ़शइज़ :

नमाज़ में बारह फ़र्ज़ हैं⁽³⁾: (1)....नियत (2)....तक्बीरे तहरीमा (3).....क़ियाम (4).....सूरए फ़ातिहा (5).....रुकूअ में इतना झुकना कि हथेलियां घुटनों तक पहुंच जाएं (6).....इतमीनान से रुकूअ करना (7).....रुकूअ से सीधा खड़ा होना (8).....इतमीनान से सजदा करना, हाथों का रखना ज़रूरी नहीं (9).....सजदे के बा'द इतमीनान से बैठ जाना (10).....का'दए अख़ीरा के लिये बैठना और तशह्हुद पढ़ना (11)..... हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरुदे पाक पढ़ना और (12).....पहला सलाम । नमाज़ से बाहर होने की नियत करना ज़रूरी नहीं ।

इन के इलावा उमूर वाजिब नहीं बल्कि या तो वोह सुन्नतें हैं या मुस्तहब्बात ।

①.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النّدب الى وضع الايدي.....الخ، الحديث: ۵۳۵، ص ۲۷۱۔

②.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النّدب الى وضع الايدي.....الخ، الحديث: ۵۳۵، ص ۲۷۲۔

③.....अहनाफ़ के नज़दीक : नमाज़ में सात फ़र्ज़ हैं । चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 507 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक्ल फ़रमाते हैं : सात चीजें नमाज़ में फ़र्ज़ है : (1).....तक्बीरे तहरीमा (2).....क़ियाम (3).....क़िराअत (4).....रुकूअ (5).....सजदा (6).....का'दए अख़ीरा (7).....खुरूजे बिसुन्द्ही ।

नमाज़ की सुन्नतें :

फ़े'ली सुन्नतें चार हैं : (1).....तक्बीरे तहरीमा में दोनों हाथ उठाना (2-3).....रुकूअ में जाते और रुकूअ से उठते हुए रफ़अ यदैन करना (इस पर हाशिया सफ़ह 481 पर गुज़र चुका है) और (4).....पहले तशह्हुद के लिये बैठना (या'नी का'दए ऊला)⁽¹⁾ बहर हाल तशह्हुद में उंगलियां फैलाने की कैफ़ियत और इन्हें उठाने की मिक्दार जो हम ने ज़िक्र की येह मुस्तहब और सुन्नत के ताबेअ है। पाउं फैलाना और सुरीन पर बैठना जल्से के ताबेअ और मुस्तहब है। सर झुकाना, इधर उधर मुतवज्जेह न होना क़ियाम के मुस्तहब्बात और इस की ख़ूबसूरती में से है। (पहली या तीसरी रक्अत में दूसरे सजदे के बा'द कुछ देर) इस्तिराहत के लिये बैठने को हम ने फ़े'ली सुन्नतों में शुमार नहीं किया क्यूंकि येह सजदे से क़ियाम की तरफ़ उठने की बेहतरी के लिये है नीज़ येह फ़ि नफ़िसही मक्सूद नहीं इसी लिये हम ने इसे अ़लाहिदा ज़िक्र नहीं किया।

अज़कार की सुन्नतें :

क़ौली सुन्नतें : दर्जे ज़ैल हैं : षना व तअव्वुज़ पढ़ना, आमीन कहना सुन्नते मुअक्कदा में से हैं। सूरत पढ़ना, तक्बीराते इन्तिक़ाल कहना, रुकूअ सुजूद में तस्बीहात पढ़ना नीज़ रुकूअ व सुजूद से उठ कर तस्बीह कहना (रुकूअ से उठ कर رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ और दो सजदों के दरमियान رَبِّ اغْفِرْ لِي पढ़ना), पहला का'दा करना, इस में हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक पढ़ना, आख़िरी तशह्हुद के आख़िर में दुआ पढ़ना और दूसरा सलाम फेरना। अगर्चे हम ने इन्हें सुन्नत के तहूत ज़िक्र कर दिया है लेकिन इन के मुतफ़रिक् दर्जे हैं क्यूंकि इन में से चार वोह हैं कि जिन का तदारुक सजदए सहव से किया जाता है (या'नी इन के रह जाने या इन में ताख़ीर हो जाने की वजह से सजदए सहव लाज़िम हो जाता है। वोह चार येह हैं :

(1) का'दए ऊला (2)....दुआए कुनूत (3) पहला तशह्हुद और (4) इस में दुरूदे पाक पढ़ना)

एक सुवाल और इस का जवाब :

सुन्नतों और फ़राइज़ में तो फ़र्क़ समझ में आता है कि फ़र्ज़ के छूटने से सिह्हते नमाज़ फ़ौत होती है जब कि सुन्नत के छूटने से (नमाज़ की सिह्हत पर) कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, नीज़ फ़र्ज़ छोड़ने पर अज़ाब की वईद है जब कि सुन्नत का मुअमला ऐसा नहीं। लेकिन सुन्नतों के माबैन

①....अहनाफ़ के नज़दीक : का'दए ऊला वाजिब है अगर्चे नमाज़े नफ़ल हो। (नमाज़ के अहक़ाम, स. 219)

फ़र्क़ समझ में नहीं आता क्योंकि तमाम सुन्नतों पर अमल का हुक्म इस्तिहबाबी है, नीज़ इन्हें छोड़ने पर अज़ाब नहीं, अलबत्ता इन पर अमल की सूरत में षवाब की बिशारत है, फिर इन में फ़र्क़ करने का क्या मा'ना ? जान लीजिये ! कि मुख़लिफ़ सुन्नतों का षवाब व अज़ाब और इस्तिहबाब में मुश्तरक होना इन के बाहमी फ़र्क़ को ख़त्म नहीं करता । इस की वज़ाहत के लिये हम एक मिषाल पेश करते हैं । **मिषाल :** इन्सान दो वजह से ही कामिल होता है : (1)....अम्मे बातिन (2)....आ'ज़ाए ज़ाहिर । बातिन से रूह व हयात और ज़ाहिर से आ'ज़ाए जिस्म मुराद हैं ।

आ'ज़ाए जिस्म के दर्जात :

आ'ज़ाए जिस्म के चार दर्जे हैं : (1)....बा'ज़ ऐसे हैं कि इन के न होने से इन्सान ख़त्म हो जाता है । जैसे दिल, जिगर, दिमाग़ कि इन में से हर एक उज़्व के ख़त्म होने से ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है । (2)....बा'ज़ वोह हैं कि जिन के ख़त्म होने से ज़िन्दगी तो ख़त्म नहीं होती मगर मक्सदे हयात फ़ौत हो जाता है । जैसे आंख, हाथ, पाउं, ज़बान । (3)...बा'ज़ वोह हैं कि जिन के न होने से न तो हयात ख़त्म होती है और न ही इस का मक्सद फ़ौत होता है मगर ज़ाहिरी हुस्न ख़त्म हो जाता है । जैसे अब्रू, दाढ़ी, पल्कें और हसीन रंगत । (4)....बा'ज़ वोह हैं कि जिन से हुस्नो जमाल ख़त्म तो नहीं होता लेकिन इस के कमाल में फ़र्क़ आ जाता है । जैसे अब्रूओं का टेढ़ा होना, पल्कों और दाढ़ी के बालों की सियाही का ख़त्म होना, आ'ज़ा की बनावट में फ़र्क़ आना और सफ़ेद रंग में सुख़ रंग का मिल जाना, येह मुख़लिफ़ दर्जात हैं ।

इसी तरह इबादत की शरीअत ने एक सूरत बनाई है जिस पर अमल कर के हम इसे पाने की कोशिश करते हैं । इबादत की रूह और बातिनी ज़िन्दगी खुशूअ व खुजूअ, निय्यत, यक्सूई, इख़लास वगैरा है जिस का बयान अंन क़रीब आएगा । अब हम (आ'ज़ाए जिस्म की तरह) इबादत के ज़ाहिरी अरकान बयान करेंगे ।

इबादत के ज़ाहिरी अरकान :

रुकूअ, सुजूद, क़ियाम और तमाम अरकान दिल, सर और जिगर के काइम मक़ाम हैं क्योंकि इन के फ़ौत होने से नमाज़ का वुजूद ही ख़त्म हो जाता है । रफ़अ यदैन् (या'नी हाथ उठाना), षना और पहला का'दा हाथ, आंख और पाउं के काइम मक़ाम हैं कि इन के फ़ौत होने से नमाज़ की सिद्दहत में फ़र्क़ नहीं आता जैसे इन आ'ज़ा के ख़त्म होने से ज़िन्दगी तो ख़त्म नहीं होती लेकिन इन्सान बद नुमा हो जाता है इस में रग़बत नहीं रहती, इसी तरह जो शख़्स नमाज़

में कम अज़ कम बात पर इक्तिफ़ा करे वोह उस की तरह है जो किसी बादशाह को ज़िन्दा गुलाम बतौरे तोहफ़ा पेश करे लेकिन उस के आ'ज़ा कटे हुए हों। जहां तक मुस्तहब्बात का मुआमला है तो वोह सुन्नतों के इलावा हैं। लिहाज़ा वोह अब्रू, दाढ़ी, पल्कों और खूब सूरती के काइम मक़ाम हैं और इन सुन्नतों में अज़कार हुस्ने नमाज़ की तक्मील के लिये हैं जैसे अब्रू और दाढ़ी की गोलाई। पस ऐ बन्दे ! नमाज़ तेरी इबादत और ऐसा तोहफ़ा है कि जिस के ज़रीए तुझे बादशाहों के बादशाह (या'नी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**) का कुर्ब हासिल होता है जैसा कि वोह शख्स जो बादशाह का कुर्ब हासिल करने के लिये उसे गुलाम तोहफ़े के तौर पर पेश करता है। येह (नमाज़ का) तोहफ़ा जो तू बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में पेश करता है, बड़ी पेशी (या'नी क़ियामत) के दिन तुझे लौटा दिया जाएगा अब तुझे इख़्तियार है कि इसे अच्छी सूरत में पेश कर या बुरी शक़ल में, अगर अच्छी सूरत में पेश करेगा तो तुझे ही फ़ाइदा होगा और अगर बुरी सूरत में पेश करेगा तो तेरा ही नुक़सान होगा। लिहाज़ा तेरे लिये मुनासिब नहीं कि तू फ़िक़ह से इतना ही हिस्सा पाए जो तेरे लिये फ़र्ज़ व सुन्नत में फ़र्क़ कर दे और तू सुन्नत के मुतअल्लिक़ इतनी ही बात समझे कि फुलां चीज़ का छोड़ना जाइज़ है और तू इसे छोड़ दे। येह तो तबीब के इस कौल के मुशाबेह होगा कि आंख फोड़ देने से इन्सान का वुजूद बातिल नहीं होता और वोह उस बात से क़तए नज़र कर लेता है कि अगर बादशाह की ख़िदमत में ऐसा तोहफ़ा पेश किया जाए तो वोह उसे क़बूल नहीं करेगा। पस सुन्नतों, मुस्तहब्बात और आदाब के दर्जात को यूंही समझना चाहिये।

नमाज़ी का सब से पहला दुश्मन :

जो नमाज़ी नमाज़ के रुकूअ व सुजूद को कामिल तौर पर अदा न करे तो (बरोज़े क़ियामत) उस का सब से पहला दुश्मन वोही नमाज़ होगी और कहेगी : “**اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तुझे ज़ाएअ करे जैसा तूने मुझे ज़ाएअ किया।”⁽¹⁾ नीज़ उन रिवायात का मुतालआ भी करो जो हम ने अरकाने नमाज़ की तक्मील के हवाले से पेश की हैं ताकि तुम्हारे सामने इन की अहम्मियत वाजेह हो जाए।



बाब नम्बर 3 :

आ'माले क़ल्ब की बाबिनी शराइव

येह बाब तीन फ़स्लों पर मुश्तमिल है। इस में अव्वलन हम नमाज़ को खुशूअ व खुजूअ और यक्सूई के साथ अदा करने के मुतअल्लिक़ ज़िक्र करेंगे। फिर बातिनी मअानी, इन की ता'रीफ़ात और अस्बाब व इलाज बयान करेंगे। फिर तफ़सीलन वोह उमूर ज़िक्र करेंगे जिन का नमाज़ के हर रुक़न में पाया जाना ज़रूरी है ताकि नमाज़ आख़िरत का सरमाया बन सके।

पहली फ़स्ल : खुशूअ, खुजूअ और हुनूरिये क़ल्ब की शराइव

जान लीजिये कि खुशूअ व खुजूअ से नमाज़ पढ़ने के कई दलाइल हैं।

खुशूअ व खुजूअ से नमाज़ पढ़ने से मुतअल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तअ़ाला :

﴿1﴾

أَقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي ﴿١٩﴾ (پ ۱۶، طه: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मेरी याद के लिये नमाज़ काइम रख ।

इस में सीगए “अम्र” है जो ज़ाहिर वुजूब पर दलालत करता है और ग़फ़लत ज़िक्र का मुतजाद है। लिहाज़ा जो पूरी नमाज़ में ग़ाफ़िल रहे वोह नमाज़ को जिक्रे इलाही के साथ काइम करने वाला कैसे हो सकता है ?

﴿2﴾

وَلَا تَكُنْ مِنَ الْخَافِلِينَ ﴿٢٠﴾ (پ ۹، الاعراف: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ग़ाफ़िलों में न होना ।

इस में सीगए “नही” है जो ज़ाहिर हुरमत पर दलालत करता है (या'नी जिक्रे इलाही से ग़फ़लत बरतना हराम है) ।

﴿3﴾

حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ (پ ۵، النساء: ۴۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब तक इतना होश न हो कि जो कहो उसे समझो ।

इस में हालते नशा में नमाज़ से मन्अ करने की इल्लत बयान की गई है। येह इल्लत उसे भी शामिल है जो ग़ाफ़िल और वस्वसों और दुन्या की फ़िक्रों में डूबा हुवा हो ।

खुशूअ व खुजूअ से नमाज़ पढ़ने से मुतअल्लिक़ चार फ़रामीने मुश्तफ़ :

﴿1﴾....नमाज़ सुकून और अज़िज़ी का नाम है ।⁽¹⁾

1.....سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء فی التخشع فی الصلاة، الحديث: ۳۸۵، ج ۱، ص ۳۹۴، بتقديم وتأخر-

इस में लफ्जे अस्सलात पर अलिफ लाम बयाने हसिर के लिये है और कलिमा **أَمَّا** तहकीक और ताकीद के लिये है और फुकहाए किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** ने इस फरमाने मुस्तफा कि “शफ़आ का हक़ ग़ैरे मुन्क़सिम (या'नी तक्सीम न होने वाली) जाईदाद में है।”⁽¹⁾ से हसिर, अषबात और नफी का मफ़हूम समझा है।

﴿2﴾.....जिसे उस की नमाज़ बे हयाई और बुराई से न रोके तो इस से उस की **أَبْلَاهُ** **عَزَّوَجَلَّ** से दूरी में ही इज़ाफ़ा होता है।⁽²⁾

और गाफ़िल की नमाज़ उसे बे हयाई और बुराई से नहीं रोकती।

﴿3﴾.....कितने ही कियाम करने वाले ऐसे हैं कि जिन्हें नमाज़ से सिवाए थकावट और मशक्कत के कुछ हासिल नहीं होता।⁽³⁾

इस से आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की मुराद गाफ़िल नमाज़ी हैं।

﴿4﴾....बन्दे के लिये नमाज़ में से वोही है जिसे वोह समझ कर अदा करे।⁽⁴⁾

इस में तहकीक येह है कि नमाज़ी अपने रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** से मुनाजात करने वाला है।⁽⁵⁾ जैसा कि हदीष में वारिद है और ग़फ़लत वाला कलाम क़तअन मुनाजात नहीं हो सकता। इस की वज़ाहत येह है कि मिषाल के तौर पर अगर इन्सान ज़कात से ग़फ़लत बरते जो कि बज़ाते खुद ख़्वाहिशात के मुख़ालिफ़ और नफ़्स पर गिरां है, इसी तरह रोज़ा आ'जा को कमज़ोर करने वाला और ख़्वाहिशात जो की शैतान का आला है कि बुलन्दियों को तोड़ने वाला है तो ग़फ़लत के बा वुजूद इन से मक्सद हासिल हो जाता है, इसी तरह हज़ के अफ़अल मशक्कत तलब और सख़्त हैं और इस में ऐसा मुजाहदा है जिस में तकलीफ़ होती है ख़्वाह इस के अफ़अल अदा करते हुए दिल हाज़िर हो या न हो ? जब कि नमाज़ में ज़िक़्र, तिलावत, रुकूअ, सुजूद, कियाम, कु़द की अदाएगी है।

①.....صحیح البخاری، کتاب الشفعة، باب الشفعة فیما لم یقسم.....الخ، الحدیث: ۲۲۵۷، ج ۲، ص ۶۱، مفهوماً۔

②.....کنز العمال، کتاب الصلاة، الحدیث: ۲۰۰۷۹، ج ۷، ص ۲۱۲۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب الصیام، باب ماجاء فی الغیبة والرفث للوائم، الحدیث: ۱۶۹۰، ج ۲، ص ۳۲۰۔

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۷۰۔

⑤.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النهی عن البصاق فی المسجد.....الخ، الحدیث: ۵۵۱، ص ۲۷۹۔

नमाज़ में क़िराअत व अज़कार से मक्सूद :

ज़िक्र जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से गुफ्तगू और दुआ का नाम है इस से मक्सूद या तो कलाम और गुफ्तगू करना है या हुरूफ़ और आवाज़ें हैं ताकि ज़बान की अमल के ज़रीए आजमाइश हो, जैसे रोज़े में मे'दे (को खाने पीने) और शर्मगाह को (नफ़सानी ख़्वाहिशात से) रोकने से इम्तिहान लिया जाता, हज़ की मशक्कतों से जिस्म का इम्तिहान लिया जाता, ज़कात निकालने और महबूब माल को जुदा करने से दिल का इम्तिहान लिया जाता है और इस में कोई शक नहीं कि नमाज़ में ऐसा तसव्वुर बातिल है कि ज़िक्र से हुरूफ़ व आवाज़ के ज़रीए ज़बान का इम्तिहान मक्सूद है क्योंकि बेहूदा गुफ्तगू के साथ ज़बान को हरकत देना ग़ाफ़िल आदमी पर बहुत आसान है, नीज़ इस में अमल के ए'तिबार से भी कोई इम्तिहान नहीं बल्कि अदाएगी के ए'तिबार से हुरूफ़ और बोलते वक़्त **مافی الضمير** जाहिर करना मक्सूद होता है और येह हुजूरे क़ल्ब के बिगैर मुमकिन नहीं। लिहाज़ा जब दिल ही ग़ाफ़िल होगा तो “ **إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ** (الفاتحة: ५) ” तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम को सीधा रास्ता चला। ” में क्या सुवाल करेगा ? और जब मक्सूद गिरया व ज़ारी करना और दुआ मांगना न हो तो इन्सान को गुफ़लत के साथ ज़बान को हरकत देने में कौन सी मशक्कत है ? खुसूसन जब कि वोह बोलने का आदी हो। येह अज़कार के मुतअल्लिक वज़ाहत है।

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي** वज़ाहत के तौर पर मज़ीद फ़रमाते हैं :) बल्कि मैं कहता हूँ कि अगर इन्सान क़सम उठाए और कहे : मैं फुलां का शुक्र अदा करूंगा, उस की ता'रीफ़ करूंगा और उस से हाज़त बयान करूंगा ? फिर नींद की हालत में उस की ज़बान पर इन मअानी पर दलालत करने वाले अल्फ़ाज़ जारी हो जाएं तो वोह अपनी क़सम से बरियुज्जिम्मा नहीं होगा। अगर उस की ज़बान पर तारीकी में येह कलिमात जारी हुए और दूसरा शख़्स भी मौजूद है मगर उसे उस की मौजूदगी का इल्म नहीं और न ही येह उसे देख रहा है तो भी क़सम से बरी न होगा क्योंकि जब तक वोह उस के दिल में हाज़िर न होगा उस का कलाम उस से ख़िताब और उस के साथ गुफ्तगू करार नहीं पाएगा। इसी तरह अगर वोह शख़्स उस की मौजूदगी में दिन की रोशनी में येह अल्फ़ाज़ अपनी ज़बान पर लाता है लेकिन उस का दिल हाज़िर नहीं बल्कि किसी सोच में गुम होने की वजह से ग़ाफ़िल है और बोलते वक़्त उस से गुफ्तगू करने का इरादा नहीं है तो फिर भी येह अपनी क़सम से बरियुज्जिम्मा नहीं होगा।

इस में कोई शक नहीं कि क़िराअत और अज़कार से मक्सूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो षना, उस की बारगाह में इज़्हारे आज़िजी और दुआ करना है, इस का मुखातब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ

है और इस का दिल गफ़लत में है तो येह उसे नहीं देख सकता बल्कि येह तो मुखातब जात से भी ग़ाफ़िल है, इस की ज़बान तो आदतन हरकत कर रही है और येह बात नमाज़ के मक्सूद से किस क़दर दूर है कि इस के फ़र्ज करने का मक्सूद ही दिल की सफ़ाई, ज़िक्रे इलाही की तजदीद और इस पर ईमान को मज़बूत करना है। येह क़िराअत और ज़िक्र का हुक्म है। खुलासए कलाम येह है कि बोलने में इस ख़ासिय्यत के इन्कार और इसे फ़े'ल से जुदा करने का कोई रास्ता नहीं।

रुकूअ व सुजूद से मक्सूद :

रुकूअ व सुजूद से यकीनन ता'जीम मक्सूद है और अगर येह बात मान ली जाए कि वोह अपने फ़े'ल से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'जीम कर रहा है मगर उस से ग़ाफ़िल है तो येह कहना बजा होगा कि वोह किसी बुत की ता'जीम कर रहा है जो उस के सामने है और वोह खुद उस से ग़ाफ़िल है। या वोह किसी दीवार की ता'जीम कर रहा है जो इस के सामने है और येह उस से ग़ाफ़िल है। जब येह अफ़अल ता'जीम से ख़ारिज हो गए तो येह महज़ पीठ और कमर की हरकत रह जाएगी और इस में कोई ऐसी मशक्कत भी नहीं कि इस से इम्तिहान लिया जाए और इसे दीन का सुतून और इस्लाम व कुफ़्र के दरमियान फ़र्क करने वाली क़रार दिया जाए। नीज़ इसे हज़ और तमाम इबादात पर मुक़द्दम किया जाए खुसूसन इसे छोड़ने पर क़त्ल वाजिब क़रार दिया जाए।

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं :) नमाज़ की येह तमाम अज़मत इस के ज़ाहिरी आ'माल के ए'तिबार से नहीं बल्कि येह अज़मत इस वजह से है कि मुनाजात का मक्सूद इस से मिला हुवा है क्यूंकि येह रोज़ा, ज़कात और हज़ वगैरा पर फ़ौकिय्यत रखती है बल्कि कुरबानियों पर भी फ़ौकिय्यत रखती है जो कि माल की कमी के ज़रीए नफ़्स का मुजाहदा है। चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَنْ يَنَالَ اللَّهَ لُحُومُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلَكِنْ
يَنَالُهُ التَّقْوَىٰ مِنْكُمْ

(پک ۱، الحج: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : **अल्लाह** को हरगिज़ न गोश्त पहुंचते हैं न इन के खून। हां ! तुम्हारी परहेज़गारी इस तक बारयाब होती है।

इस में तक्वा से मुराद वो सिफ़त है जो दिल पर ग़ालिब हो कर इसे मतलूबा अहकाम पर अमल करने पर बर अंगेख़ता करती है। लिहाज़ा नमाज़ में येह कैफ़िय्यत कैसे होगी जब कि इस में अफ़अल से तो कुछ ग़रज़ ही नहीं ? पस बा ए'तिबार मा'ना के येह कलाम हुज़ूरे क़ल्ब के शर्त होने पर दलालत करता है।

एक शुवाल और इस का जवाब :

अगर आप नमाज़ के बातिल होने का हुक्म लगाएं और हुजुरे क़ल्ब को इस के सही होने के लिये शर्त करार दें तो आप इजमाए फ़ुक़हा की ख़िलाफ़ वर्जी करने वाले होंगे क्यूंकि उन्होंने ने सिर्फ़ तकबीरे तहरीमा के वक़्त हुजुरे क़ल्ब को शर्त करार दिया है ? जान लीजिये ! किताबुल इल्म में गुज़र चुका है कि फ़ुक़हाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام बातिन में तसरूफ़ नहीं फ़रमाते और दिलों को चीर कर नहीं देखते और न ही राहे आख़िरत में तसरूफ़ करते हैं बल्कि आ'जा के ज़ाहिरी अहवाल के मुताबिक़ अहकामे दीन बयान करते हैं नीज़ क़त्ल और हाकिमे वक़्त की ता'ज़ीर के साक़ित होने के लिये ज़ाहिरी आ'माल काफ़ी हैं । रही येह बात कि क्या येह अमल आख़िरत में नफ़अ देगा (या नहीं) तो येह मुअमला फ़िक़ह की हुदूद से बाहर है और इजमाअ का दा'वा नहीं किया जा सकता (क्यूंकि इस मस्अले में फ़ुक़हा का इख़िलाफ़ मौजूद है) । चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي ने हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के हवाले से हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي का येह क़ौल नक़ल किया है कि “जो खुशूअ व खुजूअ से नमाज़ नहीं पढ़ता उस की नमाज़ फ़ासिद है ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “ जो नमाज़ हुजुरे क़ल्ब के साथ न पढ़ी जाए उस की सज़ा जल्द मिलती है ।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो हालते नमाज़ में दाएं बाएं वाले को क़स्दन पहचाने उस की कोई नमाज़ नहीं ।”⁽³⁾

हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बन्दा नमाज़ पढ़ता रहता है मगर उस के लिये उस का छटा या दसवां हिस्सा भी नहीं लिखा जाता । बेशक बन्दे के लिये उस की नमाज़ में से वोही लिखा जाता है जिसे वोह समझ कर अदा करे ।”⁽⁴⁾

और अगर येह बात किसी इमाम से मन्कूल होती तो इसे मज़हब ठहरा लिया जाता लेकिन अब इस से क्यूं दलील नहीं पकड़ी जाती ?

①..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ٢، ص ١٦١ -

②..... المرجع السابق، ص ١٤٠ - ③..... المرجع السابق، ص ١٦١ -

④..... سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب ماجاء فی نقصان الصلاة، الحديث: ٤٩٦، ج ١، ص ٣٠٦ -

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ٢، ص ١٦٩ - ١٤٠ -

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल वाहिद बिन जैद رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “उ-लमा का इस पर इजमाअ है कि बन्दे के लिये उस की नमाज़ में से वोही कुछ है जिसे वोह समझ कर अदा करे। उन्होंने ने हुजूरे क़ल्ब को इजमाअ करार दे दिया। नीज़ परहेज़गार फुक़हा और उ-लमाए आख़िरत رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى से इस किस्म की बातें इस क़दर मन्कूल हैं जो शुमार से बाहर हैं।

हक़ येह है कि इस (या'नी खुशूअ व हुजूरे क़ल्ब के) मुआमले में शरई दलाइल और अहादीष व आधार की तरफ़ रुजूअ किया जाए और इसे शर्त करार देने के मुताबिल्लिक़ वाजेह अहादीष मौजूद हैं (हां इतना ज़रूर है) कि ज़ाहिरी तक्लीफ़ में फ़तवा मक़ामे मख़्लूक़ के तसव्वुर के मुताबिक़ ठहरा लिया जाता है। लिहाज़ा लोगों पर पूरी नमाज़ में दिल को हाज़िर करने की शर्त लगाना मुमकिन नहीं क्यूंकि इस से सिवाए चन्द लोगों के हर इन्सान आज़िज़ है और जब ज़रूरत के तहत पूरी नमाज़ में हुज़ूरिये क़ल्ब को शर्त करार देना मुमकिन नहीं तो इस के सिवा कोई चारा नहीं कि इसे ऐसी शर्त करार दिया जाए जिस पर हुज़ूरिये क़ल्ब का नाम सादिक् आ जाए अगर्चे लम्हा भर के लिये हो और (इस में) सब से बेहतर तक्बीरे तहरीमा कहने का मरहला है। पस हम ने तक्बीरे तहरीमा के वक़्त हुजूरे क़ल्ब को लाज़िम करार दिया। नीज़ इस के साथ हम उम्मीद रखते हैं कि पूरी नमाज़ में ग़ाफ़िल रहने वाले का हाल बिल्कुल न पढ़ने वाले की मिष्ल नहीं क्यूंकि वोह ज़ाहिरन फ़ै'ल को अदा करने वाला और लम्हा भर दिल को हाज़िर करने वाला है और येह कैसे न होगा हालांकि जो शख्स भूले से बे वुजू नमाज़ पढ़ता है उस की नमाज़ **अबलाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक़ बातिल है लेकिन उसे अपने फ़ै'ल, कुसूर और उज़्र के मुताबिक़ अज़्र मिलेगा। नीज़ उसे उम्मीद के साथ साथ येह भी ख़ौफ़ है कि नमाज़ में सुस्ती करने वाले का हाल नमाज़ न पढ़ने वाले के हाल से भी बुरा हो और येह क्यूंकर न हो कि जो बारगाहे खुदावन्दी में हाज़िर हो कर सुस्ती करता, ग़ाफ़िल और हकीर समझने वालों जैसा कलाम करता है उस का हाल इस से भी बदतर है जो ख़िदमत में हाज़िर ही नहीं होता। पस जब ख़ौफ़ व रजा के अस्बाब मुताबिरिज़ हो गए और मुआमला फ़ी नफ़िसही ख़तरनाक हो गया तो अब तुम्हें सुस्ती बरतने या एहतिyात करने में इख़्तियार है। नीज़ फुक़हाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने ग़फ़लत में नमाज़ पढ़ने के जवाज़ का जो फ़तवा दिया इस की मुख़ालफ़त की कोई ज़रूरत नहीं क्यूंकि येह फ़तवे की ज़रूरत में से है जैसा कि इस पर तम्बीह गुज़र चुकी है। जिस ने नमाज़ के बातिन को जान लिया वोह येह बात भी जान लेगा कि ग़फ़लत उस की मुताजाद चीज़ है लेकिन “قَوَاعِدُ الْعُقَايِدِ” के बाब में इल्मे बातिन और ज़ाहिर के दरमियान फ़र्क़ के बयान में हम ज़िक़र कर चुके हैं कि शरीअत के जो असरार ज़ाहिर होते हैं इन में से हर एक की तसरीह से मानेअ (या'नी वज़ाहत में रुकावट बनने वाले)

अस्बाब में से एक सबब लोगों की समझ की कमी है। लिहाजा हम इसी क़दर बहूष पर इक्तिफ़ा करते हैं क्योंकि राहे आख़िरत के त़ालिब के लिये इतनी मिक्दार ही काफ़ी है जब कि झगड़ा व जिदाल करने वाले से हम गुफ़्तगू नहीं करना चाहते।

हाशिले कलाम :

दिल की हाज़िरी नमाज़ की रूह है और कम अज़ कम मिक्दार जिस से रूह बाक़ी रहे वोह तक्बीरे तहरीमा के वक़्त दिल का हाज़िर होना है और इस क़दर से भी कम हो तो हलाक़त है। इस से ज़ियादा जिस क़दर हुजूरे क़ल्ब होगा उसी क़दर रूह नमाज़ के अज्ज़ा में फैलेगी और कितने ही ज़िन्दा लोग हैं जो हरक़त नहीं कर सकते वोह मुर्दों के क़रीब हैं। पस तक्बीरे तहरीमा के इलावा गाफ़िल उस ज़िन्दा की मिष्ल है जिस में हरक़त नहीं। हम **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से अच्छी मदद के त़लबगार हैं।

दूसरी फ़स्ल : नमान मुकम्मल करने वाले बाबिनी उमूर

जान लीजिये कि इन खूबियों के लिये ज़ियादा इबारतों की ज़रूरत है लेकिन इन्हें छे जुम्लों में जम्अ किया जाता है और वोह येह हैं :

(1)....हुजूरे क़ल्ब (2)....फ़हम (3)....ता'ज़ीम (4).....हैबत (5).....रजा और (6)....हया। पहले हम इन की तफ़्सील ज़िक्र करेंगे, फिर इन के अस्बाब और इलाज बयान करेंगे।

इन उमूर की तफ़्सील :

﴿1﴾.....हुजूरे क़ल्ब : इस से मुराद येह है कि बन्दा जो काम कर रहा है या जो कुछ बोल रहा है इस के सिवा दूसरी चीज़ों से दिल फ़ारिग़ हो और दिल को क़ौल व फ़ै'ल दोनों का इल्म हो और दोनों के इलावा किसी चीज़ की फ़िक्र न हो। जिस काम में बन्दा मसरूफ़ है उस की फ़िक्र इस से दूसरी तरफ़ न जाए। जिस काम में वोह लगा हुवा है उस के दिल में उसी की याद हो और इस से मुतअल्लिका किसी चीज़ से गाफ़िल न हो तो हुजूरे क़ल्ब हासिल हो जाएगा।

﴿2﴾.....मा'निए कलाम को समझना : येह हुजूरे क़ल्म के इलावा दूसरा अम्र है कि बसा अवकात दिल लफ़्ज़ों के साथ तो हाज़िर होता है मगर इन के मा'नों के साथ हाज़िर नहीं होता। फ़हम से हमारी मुराद दिल में लफ़्ज़ के मा'नी का हाज़िर होना है और येह ऐसा मक़ाम है जिस में लोग मुख़्तलिफ़ हैं क्योंकि तस्बीहात व कुरआनी आयात के मअानी समझने के मुआमले में लोग एक जैसे नहीं। नीज़ कितने ही लतीफ़ मअानी ऐसे होते हैं जिन्हें नमाज़ी हालते नमाज़ में ही समझता है हालांकि वोह इस के दिल में पहले कभी नहीं गुज़रे होते। इसी वजह से नमाज़ बे हयाई और बुरी बातों से रोकती है क्योंकि इस से कई उमूर समझ में आते हैं और येह उमूर यकीनन बे हयाई से बचाते हैं।

﴿3﴾....ता'जीम : येह हुजुरे क़ल्ब और फ़हम के इलावा तीसरी चीज़ है क्यूँकि आदमी अपने गुलाम से कलाम कर रहा होता है, उस का दिल भी हाज़िर होता है और मा'नी भी समझ रहा होता है लेकिन वोह गुलाम की ता'जीम नहीं कर रहा होता पस ता'जीम मज़कूरा दोनों पर जाइद चीज़ है ।

﴿4﴾.....हैबत : येह ता'जीम से भी बढ़ कर है, बल्कि इस से मुराद ऐसा ख़ौफ़ है जो ता'जीम से पैदा होता है क्यूँकि जिसे ख़ौफ़ नहीं होता उसे ख़ौफ़ ज़दा नहीं कहा जाता । नीज़ बिच्छू गुलाम की बद खुल्की और इस जैसी अदना चीज़ों से डरने को हैबत नहीं कहा जाता बल्कि हैबत मुअज़्ज़म (बड़े) बादशाह से डरने को कहते हैं और हैबत ऐसा ख़ौफ़ है जो इजलाल व ता'जीम से पैदा होता है (कि जलालत व ता'जीमे इलाही दिल में हो तो उस का ख़ौफ़ भी होगा) ।

﴿5﴾.....रजा (उम्मीद) : इस में कोई शक नहीं कि येह मज़कूरा तमाम चीज़ों से एक जाइद अम्र है, क्यूँकि कितने ही लोग ऐसे हैं जो बादशाहों के रो'ब व दबदबे से डरते हुए उन की ता'जीम करते हैं लेकिन उन से किसी जज़ा की तवक्कोअ नहीं रखते । जब कि बन्दे को चाहिये कि वोह नमाज़ पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से षवाब मिलने की उम्मीद भी रखे जैसा कि वोह गुनाहों के मुआमले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब से डरता है ।

﴿6﴾.....हया : येह गुज़श्ता तमाम उमूर से बढ़ कर है क्यूँकि येह अपनी ख़ता पर वाकिफ़ होने और अपनी ग़लती का वहम गुज़रने से पैदा होती है । नीज़ ता'जीम, ख़ौफ़ और रजा हया के बिगैर भी हो सकते हैं यूँ कि तक्सीर (या'नी ख़ता) का वहम और इर्तिकाबे गुनाह का ख़याल न हो मगर हया नहीं हो सकती ।

मज़कूरा उमूर के अस्बाब :

﴿1﴾.....हुजुरे क़ल्ब : का सबब फ़िक्र है । क्यूँकि तेरा दिल तेरी फ़िक्र के ताबेअ है और तुझे जिस चीज़ की फ़िक्र होगी तेरा दिल भी उसी में मशगूल होगा । नीज़ तबई तौर पर दिल फ़िक्री उमूर में ख़्वाह मख़्वाह मशगूल रहता है और जब दिल नमाज़ में मशगूल न होगा तो फ़ारिग़ नहीं बल्कि दुन्यावी उमूर में से जिन उमूर की आदमी को फ़िक्र होगी उन्हीं में मशगूल होगा ।

दिल को नमाज़ में हाज़िर रखने का ह़ीला और इलाज येह है कि बन्दा अपनी सोच व फ़िक्र नमाज़ ही की जानिब मरकूज़ रखे और फ़िक्र नमाज़ की तरफ़ तभी फ़िरेगी जब येह ज़ाहिर हो जाए कि मक्सद व मतलूब इसी से मुतअल्लिक है या'नी इस बात का यकीन और तस्दीक करना कि आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है और नमाज़ उस तक पहुंचाने वाली है । पस जब इस बात की हकीकत इल्म की तरफ़ इजाफ़त की जाए नीज़ दुन्या और इस के उमूर को

हकारत की निगाह से देखा जाए तो इस के मजमूए से नमाज़ में हुजूरे क़ल्ब हासिल होगा। इसे इस मिषाल से समझो कि जब तुम ऐसे बादशाहों के पास जाते हो जो तुम्हारे नफ़अ व नुक़सान के मालिक नहीं तो तुम्हारा दिल हाज़िर होता है तो जब बादशाहों के बादशाह की बारगाह में मुनाजात करते हो जिस के क़ब्ज़ए कुदरत में मुल्को मलकूत (ज़मीन व आस्मान की बादशाहत) और नफ़अ व नुक़सान है तो उस वक़्त तुम्हारा दिल क्यूं हाज़िर नहीं होता इस का सबब ब जुज़ ईमान की कमजोरी के और क्या हो सकता है। लिहाज़ा तुम्हें अपना ईमान मज़बूत करने की पूरी कोशिश करनी चाहिये। इस का तरीका किसी और मक़ाम पर तफ़सील से बयान किया जाएगा।

﴿2﴾.....**फ़हम** का सबब हुजूरे क़ल्ब के बा'द फ़िक्र को दाइमी रखना और ज़ेहन को मआनी के इदराक की तरफ़ फैरना है। इस का **इलाज** वोही है जो दिल के हाज़िर करने का है। इस के साथ फ़िक्र पर मुतवज्जेह होना और वस्वसों को दूर करने के लिये मुस्तइद रहना चाहिये। नीज़ मशगूल करने वाले वस्वसों को दूर करने का **इलाज** यह है कि इन के वारिद होने के मक़ाम को ही ख़त्म कर दिया जाए या'नी इन अस्बाब को जड़ से उख़ैड़ दिया जाए जिन की तरफ़ ख़यालात मुतवज्जेह होते हैं और जब तक येह उमूर दूर न होगा वस्वसे न जाएंगे। क्यूंकि जो शख़्स जिसे चाहता है उस का ज़िक्र कषरत से करता है नीज़ महबूब चीज़ का ज़िक्र यकीनन बिगैर क़सदो इरादे के दिल में आ ही जाता है, इसी वजह से आप देखते हैं कि जो शख़्स गैरुल्लाह से महबूबत करता है उस की कोई नमाज़ वस्वसों से ख़ाली नहीं होती।

﴿3﴾.....ता'ज़ीम दिली कैफ़ियत का नाम है जो दो चीज़ों की मा'रिफ़त से हासिल होती है : (1).....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल व अज़मत की मा'रिफ़त और येह उसूले ईमान में से है क्यूंकि जिस का दिल अज़मते इलाही का मो'तकिद नहीं उस का नफ़्स उस की ता'ज़ीम तस्लीम नहीं करेगा। (2).....नफ़्स की हकारत व ख़सासत (या'नी कमीनगी) को पहचानना और इसे मुसख़्ख़र व ममलूक बन्दा समझना। इन दो चीज़ों की मा'रिफ़त से आज़िज़ी व इन्किसारी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये खुशूअ व खुजूअ पैदा होगा इसे ही ता'ज़ीम कहते हैं। नीज़ जब तक नफ़्स के हकीर होने की मा'रिफ़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल व अज़मत की मा'रिफ़त से न मिले तब तक ता'ज़ीम और खुशूअ की हालत मुन्तज़िम नहीं होती क्यूंकि जो शख़्स दूसरों से मुस्तग़नी और अपने नफ़्स से अम्न में हो तो हो सकता है कि वोह दूसरों की सिफ़ाते अज़मत को जान ले। लेकिन न तो उसे खुशूअ हासिल होगा और न ही ता'ज़ीम इस लिये कि दूसरा क़रीना या'नी नफ़्स की हकारत की पहचान और इस की हाज़त उस के साथ मिली हुई नहीं।

﴿4﴾.....हैबत व खौफ नफ़्स की हालत का नाम है जो इस बात की मा'रिफ़त से हासिल होती है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कादिर मुतलक़, ग़लबा व इक्तिदार का मालिक और उसी की मशिय्यत का निफ़ाज़ है, नीज़ उसे ज़रा भी परवाह नहीं क्योंकि अगर वोह अगलों पिछलों को हलाक कर दे तो उस के मुल्क में ज़रा बराबर कमी न आए। इस के साथ साथ अम्बियाए किराम व औलियाए उज़्ज़ाम के मसाइब और तरह तरह की आजमाइशों को भी पेशे नज़र रखे बा वुजूद येह कि वोह उन्हें दूर करने पर कादिर थे जब कि दुन्यावी बादशाहों का हाल इस के बर अक्स है। अल ग़रज़ ! जूं जूं मा'रिफ़ते इलाही में इज़ाफ़ा होगा खौफ़ व ख़शिय्यत में भी इज़ाफ़ा होता जाएगा। अन करीब किताबुल मुन्जियात (नजात देने वाली चीज़ों पर मुश्तमिल किताब के बाब) खौफ़ के बयान में इस के अस्बाब बयान किये जाएंगे।

﴿5﴾.....रजा का सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लुत्फ़ो करम, उस के वसीअ इन्आम और उस की तख़लीक़ की बारीक़ बीनियों को पहचाने और नमाज़ के बाइष जो उस ने जन्नत का वा'दा फ़रमाया है इसे सच्चा जानना है। लिहाज़ा जब वा'दए इलाही का यकीन और उस के लुत्फ़ो करम की मा'रिफ़त हासिल हो जाएगी तो दोनों के मजमूए से ला महाला रजा भी हासिल हो जाएगी।

﴿6﴾.....हया का सबब येह है कि (बन्दे को) इबादत में कोताही का शुऊर हो और इस बात का यकीन रखता हो कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अज़ीम हक़ को काइम रखने से अज़िज़ है और उसे अपने नफ़्स के उयूब, उस की आफ़ात की मा'रिफ़त, इख़्लास की कमी, बातिनी ख़बाषत और तमाम अफ़अाल में फ़ौरी दुन्यावी फ़ाइदे की तरफ़ ख़याल के मैलान से पुख़्तगी दे, इस के साथ साथ येह भी जाने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जलाल किस अज़मत का तकाज़ा करता है। इस बात का भी यकीन रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बातिन और दिल के ख़यालात पर मुत्तलअ है अगरचे वोह कितने ही बारीक़ और पोशीदा हों। जब यकीनी तौर पर इन चीज़ों की मा'रीफ़त हासिल होगी तो ज़रूर इस से वोह हालत पैदा होगी जिसे हया कहा जाता है। येही इन सिफ़ात के अस्बाब हैं।

हासिले कलाम :

जिसे हासिल करना मतलूब हो उस का इलाज येह है कि उस का सबब दरयाफ़्त किया जाए क्योंकि सबब की पहचान ही इलाज की पहचान है। इन तमाम अस्बाब का राबिता ईमान और यकीन हैं या'नी येही मा'रिफ़ते जिन्हें अभी हम ने तफ़सीलन ज़िक़र किया है और यकीनी मा'रिफ़त का मतलब येह है कि किसी किस्म का शक़ न रहे यूं कि वोह मअरिफ़ दिल पर ग़ालिब आ जाएं जैसा कि किताबुल इल्म में यकीन के बयान में येह बहूष गुज़र चुकी है। नीज़ यकीन जितना पुख़्ता होगा दिल में खुशूअ व खुजूअ भी इतना ही पैदा होगा।

इसी लिये उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मेरे सरताज, साहिबे मे’राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हम से और हम आप से गुफ्तगू कर रहे होते लेकिन जब नमाज़ का वक़्त होता तो गोया न आप हमें पहचानते और न हम आप को पहचानते ।”(1)

ज़िक़रे इलाही के वक़्त आ'जा की कैफ़ियत :

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई : “ऐ मूसा ! जब तुम मेरा ज़िक़र करो तो यूँ करो कि मेरे हैबत व जलाल की वजह से तुम्हारे आ'जा पर लर्ज़ा तारी हो । मेरे ज़िक़र के वक़्त खुशूअ और इतमीनान वाले हो । नीज़ मेरा ज़िक़र करते वक़्त अपनी ज़बान को दिल से लगा लो । जब मेरी बारगाह में खड़े हो तो अज़िज़ बन्दे की तरह खड़े हो और सच्ची ज़बान और ख़ाइफ़ दिल के साथ मुझ से मुनाजात करो ।”(2)

नाफ़रमान मेरा ज़िक़र न करें :

मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने आप عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ वहूय फ़रमाई कि “अपनी उम्मत के नाफ़रमानों से कह दीजिये कि मेरा ज़िक़र न करें क्यूँकि मैंने खुद पर क़सम याद फ़रमाई है कि जो मेरा ज़िक़र करेगा मैं उस का चरचा करूँगा । पस नाफ़रमान जब मुझे याद करेंगे तो मैं उन्हें ला'नत के साथ याद करूँगा ।”(3)

ज़िक़रे इलाही में ग़फ़लत न करने वाले नाफ़रमान के बारे में येह वईद है तो जब ग़फ़लत और इस्स्यान जम्अ हो जाएंगे तो फिर क्या हाल होगा ?

दिल के मुतअल्लिक़ ज़िक़र कर्दा मअ़ानी का इख़्तिलाफ़ और लोगों की अक्सात :

दिलों के मुतअल्लिक़ जो मअ़ानी हम ने ज़िक़र किये इन के इख़्तिलाफ़ के ए'तिबार से लोगों की मुख़्तलिफ़ अक्सात हैं । कुछ तो ऐसे ग़ाफ़िल हैं जो नमाज़ पूरी पढ़ते हैं मगर उन का दिल लम्हा भर भी हाज़िर नहीं होता । कुछ वोह हैं जो इस तरह पूरी नमाज़ पढ़ते हैं कि एक लम्हे के लिये भी दिल ग़ाइब नहीं होता बल्कि बा'ज़ अवक़ात इतनी फ़िक़र से नमाज़ पढ़ते हैं कि अपने सामने होने वाले वाक़िए का भी इल्म नहीं होता । जैसा कि,

①.....المستطرف في كل فن مستطرف، الباب الاول في مباني الاسلام، الفصل الثاني، ج ١، ص ١٦.

②.....الزهد للامام احمد بن حنبل، اخبار موسى عليه السلام، الحديث: ٣٣٨، ص ١٠٣.

③.....قوت القلوب، الفصل الثامن عشر فيه كتاب اذكر الوصف المكروه.....الخ، ج ١، ص ١٠٦.

हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار को मस्जिद का सुतून गिरने और लोगों के जम्अ होने का एहसास तक न हुवा ।

बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ الْبَرُّ एक मुहत्त जमाअत में हज़िर होते रहे लेकिन कभी न पहचाना कि दाई तरफ़ कौन है और बाई तरफ़ कौन ?

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के जोशे क़ल्ब की आवाज़ दो मील से सुनाई देती थी ।

बा'ज लोग ऐसे भी थे कि (हालते नमाज़ में) उन के चेहरे ख़ौफ़ से ज़र्द हो जाते और कंधे थर थराने लगते । येह तमाम बातें समझ से बाला तर नहीं क्यूंकि दुन्यावी बादशाहों के ख़ौफ़ से दुन्यादारों के इस से दुगना शौक़ का मुशाहदा किया जाता है हालांकि वोह आजिज़ और कमज़ोर हैं और इन से हासिल होने वाला फ़ाइदा भी हकीर है । यहां तक कि कोई शख्स बादशाह या वज़ीर के पास जाता, उस से अपना मक्सद बयान करता, फिर वहां से चला जाता है । अगर इस से बादशाह के लिबास या इस के इर्द गिर्द खड़े लोगों के मुतअल्लिक पूछा जाए तो वोह इस के मुतअल्लिक न बता पाएगा क्यूंकि इस की फ़िक्क ने इसे बादशाह के कपड़ों और दरबारियों की तरफ़ मुतवज्जेह होने से ग़ाफ़िल कर दिया ।

(इरशादे बारी तआला है :)

وَلِكُلِّ دَرَجَتٍ مِّمَّا عَمِلُوا ط (پ ۸، الانعام: ۱۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हर एक के लिये इन के कामों से दर्जे हैं ।

लिहाज़ा हर शख्स का नमाज़ में इस का हिस्सा खुशूअ-खुजूअ और ख़ौफ़ व ता'जीम के मुताबिक़ ही होता है क्यूंकि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ज़ाहिरी हरकात व सकनात को नहीं बल्कि दिलों को मुलाहज़ा फ़रमाता है । इसी वजह से बा'ज सहाबए किराम رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ ने फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत लोग नमाज़ वाली हैअत पर उठाए जाएंगे । या'नी नमाज़ में उन्हें जिस क़दर इतमीनान व सुकून और सुरूर हासिल होता है इसी के मुताबिक़ उन का हशर होगा ।⁽¹⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۶۱۔

बेशक इन्होंने ने सच फ़रमाया क्योंकि हर शख्स उसी हालत पर उठाया जाएगा जिस पर मरेगा और मौत उसी हालत पर होगी जिस पर ज़िन्दगी गुज़ारी होगी। इस में उस की शख्सियत नहीं बल्कि क़ल्बी हालत देखी जाएगी। नीज़ आख़िरत में दिलों की सिफ़ात ही को सूरतों में ढाला जाएगा और वोही नजात पाएगा जो क़ल्बे सलीम ले कर आया।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल करते हैं कि अपने लुत्फ़ो करम से हमें अच्छी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तीसरी फ़स्ल : **हुनूर क़ल्ब में नफ़अ बरखा ढवा**

जान लीजिये ! मोमिन के लिये ज़रूरी है कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'जीम करे, उस से ख़ौफ़ ज़दा रहे, उस से उम्मीद रखे और अपनी कोताहियों पर हया करे। ईमान के बा'द येह हालतें (इस से) जुदा नहीं होनी चाहियें अगर्चे इन की कुव्वत यकीन की कुव्वत के बराबर हो। नमाज़ में उन हालतों के जुदा होने का सबब फ़िक्र का मुन्तशिर होना, सोच का तक्सीम होना, मुनाजात से दिल का ग़ाइब होना और नमाज़ से ग़ाफ़िल होना है और वोही ख़यालात नमाज़ से तवज्जोह हटाते हैं जो दूसरी तरफ़ मशगूल करते हैं और दिल को हाज़िर करने का इलाज इन ख़यालात को दूर करना है और कोई चीज़ तभी दूर होती है जब इस के सबब को दूर किया जाए। लिहाज़ा तुम्हें इस का सबब जानना चाहिये।

दिली ख़यालात का सबब :

दिल के ख़यालात का सबब या तो ख़ारिजी अम्र होगा या ऐसा बातिनी अम्र होगा जो उस की ज़ात में पाया जाएगा।

❶....**ख़ारिजी सबब :** येह वोह है जो कानों से टकराता या आंखों के सामने ज़ाहिर होता है तो फ़िक्र को उचक लेता है हत्ता कि फ़िक्र इस के पीछे चली जाती और इस में तसरूफ़ करती है फिर वोह इन उमूर से दूसरे उमूर की तरफ़ जाती है और वोह मुसलसल आगे बढ़ती रहती है। सब से पहले नज़र इस सोच का सबब बनती है फिर बा'ज़ सोचें दूसरी बा'ज़ के लिये सबब बनती हैं। लिहाज़ा जिस की निय्यत पुख़्ता और हिम्मत बुलन्द हो उस के हवा़स पर जारी होने वाली कोई बात उसे ग़ाफ़िल नहीं कर सकती लेकिन कमज़ोर आदमी इधर उधर मुतवज्जेह हो जाता है।

इस का इलाज : येह है कि इन अस्बाब को ख़त्म कर दिया जाए और इस का तरीक़ा येह है कि (नमाज़ी) अपनी आंखें बन्द कर ले या तारीक़ कमरे में नमाज़ पढ़े या अपने सामने

कोई ऐसी चीज़ न रहने दे जो उस के हवास को मशगूल करे या दीवार के करीब नमाज़ पढ़े ताकि नज़र ज़ियादा दूर तक न जाए और रास्तों में नमाज़ पढ़ने से बचे इसी तरह नक्शो निगार वाली जगहों और रंग दार फ़र्श पर भी नमाज़ न पढ़े। इसी लिये इबादत गुज़ार लोग छोटे से तारीक कमरे में नमाज़ पढ़ते थे जिस में सिर्फ़ सजदा हो सकता था ताकि उन की सोचें वहीं जम्अ रहें। अलबत्ता ! इन में जो (ईमान के लिहाज़ से) मज़बूत थे वोह मस्जिद में हाज़िर होते थे और आंखों को बन्द रखते, नीज़ इन की नज़र सजदा गाह से आगे न बढ़ती थी। वोह इस बात को नमाज़ के कामिल होने का सबब जानते थे कि उन्हें दाएं बाएं वालों की भी पहचान न हो और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا नमाज़ की जगह से मुस्हफ़ शरीफ़ (या'नी कुरआने पाक) और तल्वार को भी हटा देते, अगर (दीवार में) कोई तहरीर लिखी होती तो उसे भी मिटा देते थे।

﴿२﴾.....**बातिनी सबब** : येह (ज़ाहिरी सबब) से भी सख़्त है क्यूंकि जिस शख्स की फ़िक्रें दुन्या की वादियों में बिखरी हुई हों उस की सोच एक फ़न में मुन्हसिर नहीं रहती बल्कि हमेशा एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ उड़ती रहती है, आंखों का बन्द रखना भी उसे कोई फ़ाइदा नहीं देता क्यूंकि जो चीज़ पहले ही दिल में मौजूद है वोह उसे मशगूल रखने के लिये काफ़ी है।

इस का इलाज : येह है कि (नमाज़ी) अपने नफ़्स को ज़बरदस्ती अपनी क़िराअत के समझने की तरफ़ मुतवज्जेह करे और इसे ग़ैर से फेर दे। अगर वोह तक्बीरे तहरीमा से पहले तय्यार हो जाए कि अपने नफ़्स को आखिरत की याद दिलाता और इसे मुनाजात के लिये खड़े होने के मक़ाम और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में हाज़िरी के ख़तरात से आगाह करता रहेगा तो इस तरह भी उसे दिल की हुज़ूरी में मदद मिलेगी। नमाज़ के लिये तक्बीरे तहरीमा कहने से पहले दिल को तमाम फ़िक्रों से ख़ाली कर देना चाहिये और नफ़्स के लिये ऐसी कोई चीज़ न छोड़ी जाए जिस की तरफ़ दिल मुतवज्जेह हो। चुनान्चे, सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अबी शैबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “मैं तुम से येह कहना भूल गया था कि घर में मौजूद हन्डिया को ढांप दो क्यूंकि मुनासिब नहीं कि घर में ऐसी चीज़ हो जो लोगों की तवज्जोह नमाज़ से फेर दे।”^(१)

येह फ़िक्रों को पुर सुकून करने का तरीका है। अगर इस सुकून पहुंचाने वाली दवा से फ़िक्रों का जोश ख़त्म न हो तो इस्हाल पैदा करने वाली दवा ही नजात देगी जो रगों के अन्दर से बीमारी का मादा ख़त्म कर देती है। वोह **मुस्हल दवा** येह है कि बन्दा नमाज़ में उन उमूर की

तरफ़ तवज्जोह दे जो हुजुरे क़ल्ब को फेरने वाले और दूसरे उमूर की तरफ़ मुतवज्जेह करने वाले हैं। इस में कोई शक नहीं कि येह उमूर उस की (दुन्यावी) फ़िक्रों की तरफ़ ही लौटेंगे और तमाम फ़िक्रें ख़्वाहिशात की बिना पर होती हैं। लिहाज़ा ख़्वाहिशात को ख़त्म करने और इन ख़राबियों को दूर करने के ज़रीए अपने नफ़्स को सज़ा दे और हर वोह चीज़ जो उसे नमाज़ से ग़ाफ़िल करती है वोह उस के दीन की ज़िद और उस के दुश्मन इब्लीस का लश्कर है। पस इस चीज़ को रोकना निकालने से ज़ियादा नुक़सान देह है। लिहाज़ा इसे निकाल कर इस से मुकम्मल छुटकारा हासिल करे।

आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़िज़ी व इन्क़िसारी :

मरवी है कि जब हुजुरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू जहम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की पेश कर्दा बेल बोटों वाली चादर में नमाज़ पढ़ी तो नमाज़ के बा'द उसे उतार दिया और इरशाद फ़रमाया : “येह चादर अबू जहम के पास ले जाओ क्यूंकि इस ने मुझे अभी नमाज़ से मशगूल रखा और अबू जहम की सादा चादर मुझे ला दो।” (1) (2)

नीज़ मरवी है कि हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने मुबारक ना'लैन में नए तस्मे लगाने का हुक्म दिया फिर नए होने के सबब नमाज़ में उन पर नज़र पड़ गई तो उन्हें निकालने और पुराने तस्मे लगाने का हुक्म फ़रमाया। (3)

मरवी है कि एक बार हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जूतों का नया जोड़ा पहना वोह आप को अच्छा लगा तो सजदए शुक्र किया और इरशाद फ़रमाया : “मैं ने अपने रब्ब के सामने अज़िज़ी व इन्क़िसारी की ताकि वोह मुझ पर ग़ज़ब नाक न हो।” फिर आप صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बाहर तशरीफ़ ले गए और सब से पहले मिलने वाले साइल को वोह जूता दे दिया। फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِیْم से इरशाद फ़रमाया : “मेरे लिये पुराने नर्म चमड़े का जूतों का जोड़ा ख़रीदो।” फिर उन्हें पहना। (4)

①मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنّٰن मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 466 पर इस के तहूत फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह सब अपनी उम्मत की ता'लीम के लिये है। क़ल्बे पाके मुस्तफ़ा की वारिदात मुख़ालिफ़ हैं, कभी कपड़े के बेल बोटे से खुजूअ खुशूअ कम होने का अन्देशा होता है और कभी मैदाने जिहाद में तलवारों के साए में नमाज़ पढ़ते हैं और खुशूअ में कोई फ़र्क़ नहीं आता कभी बशीरत का जुहूर है और कभी नूरानिय्यत की जल्वा गरी।

②صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب كراهة الصلاة.....الخ، الحديث: ۵۵۶، ص ۲۸۰، مفهوماً۔

③الزهد لابن المبارك، باب فی التواضع، الحديث: ۴۰۲، ص ۱۳۵-۱۳۶، مفهوماً۔

④قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۷۳۔

मरवी है कि सोना हराम होने से पहले मुस्तफा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हाथ में सोने की एक अंगूठी थी आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि अंगूठी उतार दी और इरशाद फ़रमाया : “इस ने मुझे मशगूल कर दिया मेरी एक नज़र इस की तरफ़ रही और एक नज़र तुम्हारी तरफ़ ।”⁽¹⁾

कफ़फ़ारे में बाग़ सदका कर दिया :

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने (अपने) एक बाग़ में नमाज़ पढ़ी, एक दरख़्त पर भूरे रंग का परन्दा देखा तो आप को अच्छा लगा, परन्दा उड़ कर निकलने का रास्ता तलाश करने लगा तो घड़ी भर के लिये आप ने उसे देखा फिर नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हुए तो याद न रहा कि कितनी रकअतें पढ़ी हैं। येह वाकिआ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से बयान करने के बा'द अर्ज की : “या रसूलल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अब वोह बाग़ सदका है, आप जहां चाहें इसे सर्फ़ फ़रमाएं ।”⁽²⁾

एक और शख्स के मुतअल्लिक भी ऐसा ही वाकिआ मन्कूल है कि उस ने अपने खजूरों के बाग़ में नमाज़ अदा की। खजूर के दरख़्त फलों (की कषरत की वजह) से झुके हुए थे, इन पर नज़र पड़ी तो उसे भले लगे और याद न रहा कि कितनी रकअतें पढ़ी हैं? उस ने येह वाकिआ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के गोश गुज़ार किया और अर्ज की : “अब वोह बाग़ सदका है उसे **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ की राह में खर्च कर दीजिये ।”⁽³⁾ चुनान्वे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे 50 हज़ार में बेच दिया।

अल ग़रज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़िक्र की जड़ को ख़त्म करने के लिये ऐसा करते थे और इसे नमाज़ की। कमी का कफ़ारा करार देते थे। येही वोह दवा है जो बीमारी को जड़ से उखेड़ने वाली है, इस के सिवा कोई चीज़ नाफ़ेअ नहीं।

बहर हाल जो हम ने बयान किया कि फ़िक्रों को नर्मी से ठंडा करे और ज़िक्र को समझने की कोशिश करे तो येह कमज़ोर ख़्वाहिशात और इन ख़यालात में मुफ़ीद है जो दिल के अतराफ़ को मशगूल रखते हैं। लेकिन इन के ज़रीए मज़बूत और ताक़तवर ख़्वाहिशात को ठन्डा नहीं किया जा सकता। बल्कि हमेशा तू उन्हें और वोह तुझे खींचती रहेंगी फिर वोह तुझ पर ग़ालिब आ जाएंगी और इसी खींचातानी में तेरी पूरी नमाज़ गुज़र जाएगी। इस की मिषाल येह है कि कोई

①.....سنن النسائي، كتاب الزينة، باب طرح الخاتم وترك لبسه، الحديث: ٥٢٩٨، ٥٢٩٩، ص ٨٣٨، مفهوماً۔

②.....الموطأ للإمام مالك، كتاب الصلاة، باب النظر في الصلاة الى مايشغلک عنها، الحديث: ٢٢٥، ج ١، ص ١٠٤۔

③.....حياة الحيوان الكبرى، باب الدال المهملة، الديسي، ج ١، ص ٢٥٤۔

शख्स दरख्त के नीचे है और अपनी फ़िक्र को साफ़ रखना चाहता है मगर चिड़ियों की आवाज़ उसे तश्वीश में डालती है तो वोह अपने हाथ में लकड़ी ले कर उन्हें उड़ा देता और अपनी फ़िक्र की तरफ़ लौटता है लेकिन चिड़ियां फिर लौट आती हैं वोह दोबारा लकड़ी ले कर उन्हें उड़ाता है तो उस से कहा जाएगा : “هَذَا سِيرُ السَّوَانِي يَا'नी येह आबपाशी के लिये रहट में चलने वाले ऊंट की चाल है जो कभी ख़त्म न होगी ।” अगर तुम इस से छुटकारा चाहते हो तो दरख्त को ही काट दो । येही हाल ख़्वाहिशात के दरख्त का है कि जब वोह फैल जाए और इस की शाखें इधर उधर बिखर जाएं तो वोह फ़िक्रों को अपनी तरफ़ खींचती हैं जैसे चिड़ियों को दरख्त की तरफ़ और मख़्खियों को गन्दगी की तरफ़ कशिश होती हैं क्यूंकि मख़्खी को जब भगाया जाए तो फिर आ जाती है इसी लिये इसे “**जूबाब**” (या'नी जिसे ज़ियादा भगाया जाए) कहा जाता है । दिल में खटकने वाले ख़यालात का भी येही हाल है । येह ख़्वाहिशात बहुत ज़ियादा हैं । इन्सान इन से बहुत कम ख़ाली होता है । इन सब की जड़ एक ही चीज़ है और वोह दुन्या की महब्बत है जो हर बुराई की जड़, हर नुक़सान की अस्ल और हर फ़साद की बुन्याद है । लिहाज़ा जिस का बातिन महब्बते दुन्या में लिपटा हुवा हो और इस में से किसी चीज़ की तरफ़ माइल हो मगर इस लिये नहीं कि इस से आख़िरत का ज़ादे राह ले या इस से आख़िरत पर मदद हासिल करे तो उसे इस बात का ख़्वाहिशमन्द नहीं होना चाहिये कि मुनाजात की ख़ालिस लज़्ज़त उसे हासिल होगी क्यूंकि जो दुन्या पर खुश हो वोह अपनी मुनाजात से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** को खुश नहीं कर सकता । नीज़ बन्दे की फ़िक्र उस चीज़ के साथ मुअल्लक़ होती जिस से उस की आंखों को ठंडक हासिल हो अगर उस की आंखों की ठंडक दुन्या में हो तो ला महाला उस का इरादा भी इसी की तरफ़ होगा । लेकिन इस के बा वुजूद उसे मुजाहदा नहीं छोड़ना चाहिये और दिल को नमाज़ की जानिब मुतवज्जेह रखने और उमूर में मशगूल करने वाले अस्बाब को कम करने की कोशिश करनी चाहिये । येह एक कड़वी दवा है । इसी कड़वाहट के सबब तबीअतें इसे बदमज़ा समझती हैं और मरज़ दाइमी और ला इलाज हो जाता है । यहां तक कि अकाबिरीन ने भी कोशिश की, कि दो रकअतें ऐसी पढ़ें कि इन में दुन्यवी उमूर के मुतअल्लिक़ कोई बात न हो लेकिन वोह भी इस से अज़िज़ रहे तो अब हम जैसे लोगों के लिये इस में क्या उम्मीद बाक़ी रही । काश ! हमें आधी या तीसरा हिस्सा ही वस्वसों से ख़ाली नमाज़ की तौफ़ीक़ मिल जाती ताकि हम उन लोगों में से हो जाते जिन्होंने ने अच्छे अमल को बुरे अमल से मिला दिया ।

ख़ुलासा : येह है कि दुन्या की हिम्मत और आख़िरत का इरादा दिल में उस पानी की मानिन्द है जो सिकें से भरे प्याले में डाला जाए तो बिल यकीन जिस क़दर पानी उस में डाला जाएगा उसी क़दर सिरका निकल जाएगा और येह दोनों जम्अ न होंगे ।

चौथी फ़स्ल : नमाज़ में हुजूरिये क़व्व की तपशील

यहां उन उमूरे क़ल्बिया को बयान किया जाएगा जिन का नमाज़ के हर रुक़न और शर्त में पाया जाना ज़रूरी है। हम कहते हैं कि अगर तुम आख़िरत का इरादा रखने वालों में से हो तो सब से पहले इन तम्बीहात से गाफ़िल न हो जो नमाज़ की शराइत और अरकान हैं।

नमाज़ की शराइत व फ़राइज़ :⁽¹⁾

नमाज़ से पहले जिन शराइत का पाया जाना ज़रूरी है वोह येह हैं :....अज़ान (वक्त)...तह़ारत....सित्रे औरत....इस्तिक़बाले क़िब्ला.....सीधा खड़ा होना.....निय्यत करना।

अज़ान :

जब तुम मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तो दिल में क़ियामत के दिन की पुकार को हाज़िर करो और अपने ज़ाहिर व बातिन को जवाबे अज़ान और नमाज़ की तरफ़ जल्दी करने के लिये तय्यार करो क्यूंकि इस निदा की तरफ़ जल्दी करने वाले बड़ी पेशी (या'नी क़ियामत) के दिन लुत्फ़ो करम से पुकारे जाएंगे। लिहाज़ा इस निदा पर अपने दिल को हाज़िर करो। अगर इसे खुशी और खुशख़बरी से भरपूर पाओ और देखो कि उस की तरफ़ जल्दी करने की दिलचस्पी पैदा हो रही है तो जान लो कि तुम्हें बरोज़े क़ियामत खुशख़बरी और कामयाबी के साथ पुकारा जाएगा इसी लिये सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ बिलाल ! हमें राहत पहुंचाओ।”⁽²⁾ या'नी नमाज़ और अज़ान से हमें राहत पहुंचाओ क्यूंकि नमाज़ आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों की ठंडक है।

तह़ारत :

जब तुम नमाज़ के लिये जगह को पाक करते हो जो (बदन और कपड़ों के ए'तिबार से) तुम से दूर है, फिर अपने जिस्म से मुत्तसिल कपड़ों को पाक करते हो जो तुम्हारे जिस्म से मुत्तसिल और ज़ियादा क़रीब हैं, फिर अपने जिस्म को पाक करते हो जो तुम्हारा चमड़ा और तुम्हारे बहुत क़रीब है तो अपने मग़ज़ या'नी ज़ात से गाफ़िल न रहो और वोह तुम्हारा दिल है। लिहाज़ा उसे अपनी कोताहियों पर तौबा और नदामत के साथ पाक करने की कोशिश करो और आयन्दा इन्हें छोड़ने का पुख़्ता इरादा कर लो नीज़ अपने बातिन (या'नी दिल) को भी पाक कर लो क्यूंकि वोह तुम्हारे मा'बूदे हकीकी के मुलाहज़ा फ़रमाने की जगह है।

①.....येह तमाम शराइत व फ़राइज़ शवाफ़ेअ के नज़दीक हैं : अहनाफ़ के मसाइल के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल में से हिस्सा सिवुम का मुतालआ करें।

②.....تاریخ بغداد، عبدالعزيز بن ابان، ۵۶۰۴، ج ۱، ص ۴۴۲۔

सिरे औरत :

इस का मा'ना है कि बदन के उन हिस्सों को लोगों से छुपाना जिन की तरफ नज़र करना बुरा है। पस जब ज़ाहिर बदन कि जो लोगों के नज़र पड़ने की जगह है उस के मुतअल्लिक़ येह हुक्म है तो बातिनी पर्दों और उन बुराइयों के मुतअल्लिक़ तेरा क्या ख़याल है जिन पर सिर्फ़ तेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुत्तलअ होता है। लिहाज़ा अपने दिल में इन ख़राबियों को हाज़िर कर के नफ़्स से इन के छुपाने का मुतालबा कर और येह बात साबित है कि **अल्लाह** की निगाह से कोई भी पर्दा नहीं छुपा सकता। येह नदामत, ख़ौफ़ और हया ही से मिट सकती हैं। दिल में इन बुराइयों के हाज़िर होने का फ़ाइदा येह होगा कि ख़ौफ़ व हया के लश्कर तेरे दिल में उठ खड़े होंगे और तेरा नफ़्स ज़लील होगा और नदामत के बाइष दिल दब जाएगा और तू रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में यूं खड़ा होगा जैसे भागा हुआ मुजरिम गुलाम खड़ा होता है जो नादिम हो कर ख़ौफ़ व हया से सर झुकाए अपने आका की तरफ़ लौट आता है।

इस्तिक्बाले किब्ला :

इस से मुराद येह है कि चेहरे के ज़ाहिर को तमाम अतराफ़ से फेर कर बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ करना। क्या तुम्हारा ख़याल है कि यहां दिल को तमाम उमूर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की तरफ़ फेरना मतलूब नहीं ! (चेहरे के ज़ाहिर को ही फेरना ही मतलूब है तो) ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि येही मतलूब व मक़सूद है और येह ज़ाहिरी उमूर बातिनी उमूर को हरकत देते, आ'ज़ा को कन्ट्रोल करते और उन्हें एक सम्त में रख कर साकिन करते हैं ताकि वोह दिल पर बगावत न करें क्यूंकि जब वोह अपनी हरकात और दीगर जहात की तरफ़ मुतवज्जेह होने की सूरत में बगावत व जुल्म करते हैं तो दिल उन के पीछे जाता है और यूं उस की तवज्जोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से हट जाती है। लिहाज़ा दिल की तवज्जोह बदन की तवज्जोह के साथ रहनी चाहिये। जान लीजिये कि जिस तरह चेहरा उस वक़्त तक किब्ला रुख़ नहीं हो सकता जब तक उसे तमाम अतराफ़ से फेर न दिया जाए इसी तरह दिल भी उस वक़्त तक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं हो सकता जब तक इसे ग़ैर (के ख़याल) से ख़ाली न कर लिया जाए।

हुज़ूरे क़ल्ब के साथ नमाज़ अदा करने की फ़ज़ीलत :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब बन्दा अपनी ख़्वाहिश, चेहरा और दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह कर के नमाज़ के लिये

खड़ा होता है तो अपने गुनाहों से यूँ पाक व साफ़ हो कर लौटता है जैसे उस दिन था कि जिस दिन उस की मां ने उसे जना था।”⁽¹⁾

सीधा खड़ा होना :

या'नी बदन और दिल के साथ बारगाहे खुदावन्दी में खड़ा होना यूँ कि जिस्म का सब से बुलन्द उज़्ज्व या'नी सर पस्त और झुका हुवा हो, इस का बुलन्द होने के बा वुजूद झुका हुवा होना इस बात पर तम्बीह है कि दिल में अजिज़ी व इन्किसारी पैदा करना और तकब्बुर व गुरूर से बचना लाज़िम है। नीज़ इस वक़्त पेशे नज़र वोह हौलनाक मक़ाम हो जब बारगाहे इलाही में सुवाल के लिये हाज़िर होंगे, फिर येह तसव्वुर क़ाइम करो कि तुम बारगाहे इलाही में खड़े हो और वोह तुम्हारे अहवाल पर मुत्तलअ है। अगर उस के जलाल की हक़ीक़त जानने से अजिज़ हो तो कम से कम यूँ खड़े हो जाओ जैसे किसी दुन्यवी बादशाह के सामने खड़े होते हो बल्कि नमाज़ में क़ियाम करते वक़्त येह तसव्वुर क़ाइम करो कि तुम्हारे घर का नेक शख्स तुम्हें देख रहा और खुली आंखों से तुम्हारी निगरानी कर रहा है या वोह जिसे तुम्हारी इस्लाह में रग़बत है, उस वक़्त तुम्हारा जिस्म साकिन हो जाता, आ'जा में खुशूअ और तमाम अजज़ाए बदन में सुकून आ जाता है क्यूं कि तुम्हें डर होता है कि कहीं येह अजिज़ शख्स तुम्हें खुशूअ की कमी का ता'ना न दे। लिहाज़ा जब एक अजिज़ शख्स के देखते हुए तुम येह बात महसूस करो तो अपने नफ़्स को झिड़कते हुए कहो कि तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त और उस की महबूबत का दा'वा करता है तो इस बात पर ज़ुरअत करते हुए तुझे हया नहीं आती ? उस के बन्दों में से एक बन्दे की ता'ज़ीम करता है या लोगों से डरता है मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से नहीं डरता हालांकि वोह इस का ज़ियादा हक़दार है कि उस से डरा जाए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे हया करें :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से कैसे हया करें ?” तो इरशाद फ़रमाया : “उस से यूँ हया करो जैसे अपनी कौम के नेक शख्स से हया करते हो।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “जैसे अपने घर के नेक शख्स से हया करते हो।”⁽³⁾

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٩٢٤، ج ٦، ص ٢٦- نحوه

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب الحياء، الحديث: ٤٤٣٨، ج ٦، ص ١٢٥-

③.....مسند البزار، مسند معاذ بن جبل، الحديث: ٢٦٣٢، ج ٤، ص ٨٩-

नियत :

येह कि बन्दा इस बात का पुख्ता अज़्म करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नमाज़ पढ़ने, इसे मुकम्मल करने, तोड़ने, फ़ासिद करने वाली चीज़ों से रुकने और इन सब अफ़आल में अपनी रिज़ा चाहने का जो हुक्म दिया है मैं उसे मानता हूँ। उस से षवाब की उम्मीद और उस के अज़ाब का ख़ौफ़ हो नीज़ उस का कुर्ब मतलूब हो। उस के एहसान को गले का हार बनाए कि उस ने मेरी बे अदबी और गुनाहों की कषरत के बा वुजूद मुझे अपनी बारगाह में मुनाजात करने की सआदत अता फ़रमाई। इस से मुनाजात की कद्रो मन्ज़िलत को दिल में अज़ीम जाने और गौर करे कि किस से, कैसे और किस कलाम के ज़रीए मुनाजात कर रहा है ? उस वक़्त उस की पेशानी नदामत से झुकी हो, कन्धे हैबत से थर थराने लगें और ख़ौफ़ से चेहरे का रंग ज़र्द हो जाए।

तक्बीरे तहरीमा :

जब तुम ज़बान से तक्बीर कहो तो तुम्हारा दिल उस की तक्ज़ीब न कर रहा हो अगर दिल में कोई चीज़ खुदा तआला से बड़ी जानते होगे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गवाह है कि तुम झूटे हो अगरचें तुम्हारा कलाम सच्चा हो जैसे मुनाफ़िक़ीन के बारे में (उन के झूटा होने की) गवाही दी, जब उन्होंने ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कहा कि आप **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं (तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया कि मुनाफ़िक़ आप को रसूल कहते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी गवाही देता है कि आप उस के रसूल हैं लेकिन मुनाफ़िक़ झूटे हैं) अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म के बजाए तुम्हारी ख़्वाहिशात तुम पर ग़ालिब हों तो तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नहीं बल्कि ख़्वाहिशात की ज़ियादा इताअत करने वाले हो गोया तुम ने इन को ही अपना मा'बूद बना रखा है और इन की बड़ाई बयान की तो क़रीब है कि तुम्हारा **अल्लाह** अक्बर कहना महज़ ज़बानी कलामी हो क्यूंकि दिल उस की मुताबक़त नहीं कर रहा। अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अफ़वो करम से अच्छा गुमान और तौबा व इस्तिग़फ़ार न हो तो इस में कितना बड़ा ख़तरा है।

हुआए आगाज़ :

नमाज़ की इब्तिदा में तुम येह कलिमात कहते हो : “إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ” तो इस कौल में चेहरे से मुराद ज़ाहिरी चेहरा नहीं क्यूंकि तुम्हारा ज़ाहिरी चेहरा तो क़िब्ला रुख़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस से पाक है कि कोई जिहत उस का इहाता कर सके हत्ता कि चेहरे के साथ तुम्हारा बदन भी उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो बल्कि इस से मुराद येह है कि तुम्हारा दिल

जमीनो आस्मान के पैदा करने वाले की तरफ़ मुतवज्जेह हो। लिहाज़ा तुम देखो कि तुम्हारा दिल ख़्वाहिशात की पैरवी करते हुए घर और बाज़ार के ख़यालात और अपनी ख़्वाहिशात की जानिब मुतवज्जेह है या ज़मीनो आस्मान के ख़ालिफ़ की तरफ़। इस से बचो कि मुनाजात की इब्तिदा ही झूट और बनावटी बातों पर हो। **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ उस वक़्त तक तवज्जोह नहीं हो सकती जब तक उस के ग़ैर से तवज्जोह न फेर ली जाए। लिहाज़ा उसी की तरफ़ मुतवज्जेह रहने की कोशिश करो। अगर सारी नमाज़ में येह न हो सके तो कम अज़ कम येह कलिमात कहते हुए तो इस का मिस्दाक़ बनो। जब तुम **“حَيِّقًا مُّسْلِمًا”** कहो तो तुम्हारे दिल में येह बात होनी चाहिये कि मुसलमान वोह है जिस की ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें। अगर तुम ऐसे नहीं तो तुम झूटे हो पस आयन्दा इस का अज़म करो और गुज़श्ता कोताहियों पर नादिम हो। जब **“وَمَا أَكْأَمِنَ الشُّرَكِيَّيْنَ”** कहो तो अपने दिल में शिके ख़फ़ी (या'नी रियाकारी) से डरो क्यूंकि येह फ़रमाने बारी तआला :

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا
صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا

(پ ۱۰، الکہف: ۱۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जिसे अपने रब्ब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिये कि नेक काम करे और अपने रब्ब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।

उस शख्स के मुतअल्लिक़ नाज़िल हुवा जो अपनी इबादत से रिज़ाए इलाही और लोगों से ता'रीफ़ चाहता है। तुम्हें उस शिक़ से बचना चाहिये और अगर तुम अपने बारे में कहते हो कि तुम मुशरिकों में से नहीं और इस शिक़ (ख़फ़ी) से भी नहीं बचते तो तुम्हें दिली तौर पर नादिम होना चाहिये क्यूंकि लफ़्जे शिक़ कम या ज़ियादा सब पर बोला जाता है। जब तुम **“وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ”** या'नी मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये है” कहो तो जान लो कि येह उस गुलाम की हालत है जो खुद को फ़रामोश कर के आका के सामने मौजूद हो और जब येह कलिमा ऐसे शख्स से सादिर हो जिस की रिज़ा व ग़ज़ब, खड़ा होना और बैठना, ज़िन्दगी में रग़बत और मौत की हैबत दुन्या के कामों के लिये हो तो येह कलिमा उस के हाल के मुनासिब नहीं। जब **“أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ”** कहो तो यकीन रखो कि शैतान तुम्हारा दुश्मन और तुम्हारे दिल को **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ से फ़ैरने के लिये ताक लगाए हुए है क्यूंकि वोह तुम्हारे मुनाजात और सजदा करने से हसद करता है कि उसे एक सजदा न करने और उस की तौफ़ीक़ न दिये जाने के सबब मलज़ुन ठहराया गया। तुम **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की पनाह में आना चाहते हो तो शैतान की महबूब चीज़ को तर्क कर दो और इस के बदले **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की महबूब चीज़ इख़्तियार करो, सिर्फ़ ज़बान से पनाह मांगना काफ़ी नहीं। क्यूंकि जिस शख्स को कोई दरिन्दा चीर फाड़

करने या दुश्मन क़त्ल करने का इरादा करे और वोह कहे कि मैं तुम से इस मज़बूत क़ल्ए की पनाह में आता हूँ लेकिन अपनी जगह पर खड़ा रहे तो येह कौल उसे कोई फ़ाइदा न देगा बल्कि उसे जगह तब्दील करने से ही पनाह मिलेगी। इसी तरह जो शख्स ख़्वाहिशात की पैरवी करता है जो शैतान को महबूब और रहमान عَزَّوَجَلَّ को नापसन्द हैं, तो उसे महज़ ज़बान से पनाह त़लब करना कोई फ़ाइदा न देगा बल्कि शैतान के शर से रहमान عَزَّوَجَلَّ के क़ल्ए में पनाह त़लब करने का पुख़्ता इरादा करे।

क़लआ इलाही :

क़लआ “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” है। जैसा कि हदीषे कुदसी में है कि “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ मेरा क़लआ है जो मेरे क़ल्ए में दाख़िल हो गया वोह मेरे अज़ाब से महफूज़ हो गया।”⁽¹⁾ इस क़ल्ए में वोही शख्स पनाह ले सकता है जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद न हो। लेकिन जिस ने ख़्वाहिशात को ही अपना मा'बूद बनाया वोह रहमान عَزَّوَجَلَّ के क़ल्ए में नहीं बल्कि शैतान के मैदान में है।

तुम्हें मा'लूम होना चाहिये कि शैतान का एक फ़रैब येह भी है कि वोह तुम्हें नमाज़ में आख़िरत की फ़िक्र और अच्छे कामों के सोचने में लगा देता है ताकि तुम जो कुछ पढ़ रहे हो उस के समझने से रोके। याद रखो जो चीज़ तुम्हें क़िराअत के मअानी समझने से रोके वोह वस्वसे हैं क्यूंकि क़िराअत से मक्सूद ज़बान को हरकत देना नहीं बल्कि इस के मअानी (समझना) हैं।

क़िराअत :

इस में तीन किस्म के लोग हैं :

- (1).....जिस की ज़बान हरकत करती लेकिन दिल ग़फ़लत का शिकार है।
- (2).....जिस की ज़बान हरकत करती है और दिल भी ज़बान की पैरवी करता है। वोह इसे यूँ समझता और सुनता है गोया किसी दूसरे से सुन रहा है और येह अस्हाबे यमीन (या'नी दाएं तरफ़ वालों) के दर्जात हैं।
- (3).....जिस का दिल पहले, मअानी को समझता है फिर ज़बान उस की ख़िदमत करती और दिल की तर्जुमान बनती है। ज़बान दिल की तर्जुमान बने या मुअल्लिम बने इस में बड़ा फ़र्क़ है। मुक़रबीन की ज़बान दिल की तर्जुमान होती है जो दिल के पीछे होती है, दिल उस के पीछे नहीं होता।

तिलावत के मअानी की तफ़सील :

जब तुम بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ो तो इस से कलामे इलाही की क़िराअत शुरू करने के लिये तबर्क़ की निय्यत करो और समझो इस का मा'ना येह है कि तमाम उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से हैं। यहां इस्म से मुराद मुसम्मा या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से मुराद उस की ज़ात है। जब तमाम उमूर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से हैं तो यकीनन **الْحَمْدُ لِلَّهِ** कहना सहीह है। इस

का मा'ना येह है : तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं क्यूंकि तमाम ने'मतें उसी की तरफ़ से हैं और जो शख्स किसी ने'मत को ग़ैरे खुदा की तरफ़ से जानता या शुक्र से ग़ैरे खुदा का इरादा करता है और इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मुसख़्ख़र नहीं जानता तो उस के بِسْمِ اللَّهِ और الْحَمْدُ لِلَّهِ कहने में इसी क़दर नुक़सान होगा जिस क़दर उस की तवज्जोह ग़ैरे खुदा की तरफ़ होगी।

जब तुम "الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ" कहो तो दिल में उस की हर तरह की मेहरबानी का तसव्वुर करो ताकि तुम्हारे लिये उस की रहमत वाजेह और तुम्हारी उम्मीद पूरी हो जाए। फिर "مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ" कहते वक़्त दिल में उस की ता'जीम व ख़ौफ़ को उधारो। अज़मत इस ए'तिबार से कि उस के सिवा किसी की बादशाही नहीं और ख़ौफ़ रोज़े जज़ा और हिसाब की हौलनाकी का हो जिस का वोह मालिक है। "إِيَّاكَ نَعْبُدُ" कह कर अपने इख़्लास की तजदीद करो और "وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ" कह कर अपने इज्ज, मोहताजी, ताक़त व कुव्वत से ख़ाली होने की तजदीद करो और येह यकीन रखो कि उस की मदद के बिग़ैर इबादत नहीं हो सकती। नीज़ उसी का एहसान है कि उस ने तुम्हें अपनी इताअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, तुम से अपनी इबादत कराई और तुम्हें अपनी बारगाह में मुनाजात का अहल बनाया कि अगर वोह तुम्हें अपनी तौफ़ीक़ से महरूम कर देता तो तुम शैताने लईन के साथ धुतकारे हुआं में से होते।

जब तुम "أَعُوذُ بِاللَّهِ", بِسْمِ اللَّهِ और الْحَمْدُ لِلَّهِ नीज़ उस की मदद की एहतियाज के इज़हार से फ़ारिग़ हो जाओ तो अपने सुवाल को मुअय्यन करो और अपनी अहम हाज़त का ही सुवाल करो और कहो "إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ" या'नी ऐसा रास्ता जो हमें तेरे क़रीब कर दे और तेरी रिज़ा तक पहुंचा दे। फिर इस की शर्ह व तफ़सील बयान करने, इसे मुअक्कद करने के लिये उन लोगों की मइय्यत हासिल करने के साथ मिला दो जिन्हें उस ने हिदायत की ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया और वोह अम्बिया, सिद्दीकीन, शुहदा और सालेहीन हैं, न कि वोह लोग जिन पर ग़ज़ब हुवा और वोह यहूदो नसारा और सितारा परस्त कुफ़्फ़ार हैं जो राहे हक़ से हटे हुए हैं। फिर क़बूलिय्यते दुआ की उम्मीद रखते हुए आमीन कहो (इस का मतलब है : ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ दुआ क़बूल फ़रमा)। जब इस तरह फ़ातिहा पढ़ लोगे तो तुम उन लोगों में से हो जाओगे जिन के मुतअल्लिक़ हदीषे कुदसी में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : "मैं ने नमाज़ को अपने और अपने बन्दे के दरमियान आधों आध बांट दिया है, निस्फ़ मेरे लिये है और निस्फ़ मेरे बन्दे के लिये, मेरे बन्दे के लिये वोही है जो वोह मांगे। बन्दा कहता है : الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "मेरे बन्दे ने मेरी हम्दो षना की।" (1)

नमाज़ी के कौल “سَمِعَ اللَّهُ لَكُمْ حَيْدَةً” या’नी **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ ने उस आदमी की बात सुनी जिस ने उस की ता’रीफ़ की” का भी येही मा’ना है। अगर तुम्हें नमाज़ से इतना ही हिस्सा मिल जाए कि **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ के जलाल व अज़मत का ही ज़िक्र कर लो तो येह भी तुम्हारे लिये ग़नीमत है तो जिस षवाब व फ़ज़ल की तुम उम्मीद रखते हो तो उस की क्या बात है? इसी तरह तुम जो सूरत पढ़ो उसे समझो जैसा कि अज़न क़रीब तिलावते कुरआन के बयान में आएगा। लिहाज़ा इस के अम्र व नही, वा’दा व वईद, वा’ज़ व नसीहत, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ख़बरें और उस के एहसान के ज़िक्र से गाफ़िल न होना। हर हुक्म का एक हक़ है, वा’दे का हक़ उम्मीद, वईद का हक़ ख़ौफ़, अम्र व नही का हक़ अमल करने या न करने का पुख़्ता अज़म, वा’ज़ का हक़ नसीहत हासिल करना, फ़ज़ल व एहसान के ज़िक्र का हक़ शुक्र अदा करना और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ख़बरों का हक़ इब्रत हासिल करना है।

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना ज़रारह बिन ऊफ़ी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ (तिलावत करते हुए) जब इस फ़रमाने बारी तआला :

فَإِذَا نَقَرْنَا فِي النَّاقُورِ ۝ (پ ۲۹، المدثر: ۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब सूर फूँका जाएगा।

तक पहुंचे तो गिर कर इन्तिक़ाल फ़रमा गए।

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नखई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَحِيدِ जब येह इरशादे रब्बानी :

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ۝ (پ ۳۰، الانشقاق: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब आस्मान शक़ हो।

सुनते तो बे चैन हो जाते यहां तक कि आप के जोड़ थर थराने लगते।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन वाकिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَحِيدِ फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को हमेशा ग़मज़दा हालत में नमाज़ पढ़ते देखा।”⁽¹⁾

बन्दे का हक़ है कि मौला तआला के वा’दे व वईद से उस का दिल फ़ना हो जाए क्यूंकि बन्दा जब्बार कहहार غَزَّوَجَلَّ के सामने अज़िज़ व गुनहगार और ज़लील है।

येह मअानी समझ बूझ के दर्जात के मुताबिक़ होते हैं और समझ बूझ उसी क़दर होती है जिस क़दर इल्म और दिल की सफ़ाई ज़ियादा होती है इन दर्जात की कोई ख़ास हद नहीं।

नमाज़ दिलों की चाबी है जिस से कलिमात के राज़ ज़ाहिर होते हैं और येह क़िराअत का हक़ है और अज़कार व तस्बीहात का भी येही हक़ है। नमाज़ी दौराने क़िराअत ख़ौफ़ की कैफ़ियत भी पैदा करे और तरतील से (या'नी मख़ारिज अदा कर के और ठहर ठहर कर) पढ़े जल्दी जल्दी न पढ़े क्यूंकि ग़ौरो फ़िक्र के लिये येही आसान तरीका है। नीज़ रहमत व अज़ाब, वा'दा व वईद, तहमीद व ता'ज़ीम और तमजीद की आयतों को अ़लाहिदा अ़लाहिदा लहजों में पढ़े। हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى जब इस मफ़हूम की आयाते मुबारका तिलावत करते (जैसे येह फ़रमाने बारी तअ़ला :)

مَا تَتَّخِذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ
الْوَلَدِ (پ ۱۸، المؤمنون: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : **अल्लाह** ने कोई बच्चा इख़्तियार न किया और न उस के साथ कोई दूसरा खुदा।

तो आवाज़ पस्त कर लेते। जैसे कोई ऐसी बात से हया करे जो ज़िक्र करने के लाइक़ नहीं।

नीज़ मरवी है कि कुरआन वाले से कहा जाएगा : “पढ़ और चढ़ और यूं ही आहिस्तगी से तिलावत कर जैसे दुन्या में करता था।”^(१)

नमाज़ में मुशलशल खड़े रहना :

येह इस बात पर तम्बीह है कि दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ हुजूरी की सिफ़त में एक ही हालत पर काइम रहे। हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो बन्दा नमाज़ में है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमते खास्सा उस की तरफ़ मुतवज्जेह रहती है जब तक इधर उधर न देखे, जब उस ने अपना मुंह फैरा उस की रहमत फिर जाती है।”^(२)

जैसे इधर उधर मुतवज्जेह होने से सर और आंखों को बचाना ज़रूरी है इसी तरह दिल को भी नमाज़ के इलावा की तरफ़ मुतवज्जेह होने से बचाना ज़रूरी है। जब वोह ग़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह होने लगे तो उसे याद दिलाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर आगाह है। जब मुनाजात करने वाला इस से ग़ाफ़िल हो जिस से मुनाजात कर रहा है तो दोबारा उस के पास जाना बहुत बुरा होता है। लिहाज़ा अपने दिल पर खुशूअ को लाज़िम कर लो क्यूंकि ज़ाहिरी व बातिनी तौर पर इधर उधर मुतवज्जेह होने से नजात खुशूअ ही के नतीजे में मिलती है। जब बातिन में खुशूअ पैदा होगा तो ज़ाहिर में भी पैदा हो जाएगा।

①.....سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحديث: ۲۹۲۳، ج ۴، ص ۴۱۹۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب الالتفات فی الصلاة، الحديث: ۹۰۹، ج ۱، ص ۳۴۴، مفهوماً۔

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक ﷺ ने एक शख्स को नमाज़ में अपनी दाढ़ी से खेलते देखा तो इरशाद फ़रमाया : “अगर इस के दिल में खुशूअ होता तो इस के आ’जा में भी खुशूअ होता ।”⁽¹⁾

दिल हाकिम और आ’जा रिआया हैं :

क्योंकि रिआया हुक्मरान के हुक्म के ताबेअ है इसी लिये दुआ में येह अल्फ़ाज़ आए हैं : “اللَّهُمَّ أَصْلِحِ الرَّأْيَ وَالرَّغْبَةَ” या’नी ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَل हाकिम और रिआया दोनों की इस्लाह फ़रमा ।”⁽²⁾ यहां हाकिम दिल और रिआया दीगर आ’जा हैं ।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ में मीख (खूँटे) की तरह और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ सुतून की तरह खड़े होते और बा’ज सहाबा रुकूअ में इतने पुर सुकून होते कि इन पर चिड़ियां बैठ जातीं गोया वोह जमादात में से हैं (जो हरकत नहीं करते) ।

येह तमाम वोह बातें हैं कि इन्सानी तबीअत दुन्यादारों के सामने इन के बजा लाने का तकाज़ा करती है तो बादशाहों के बादशाह की मा’रिफ़त रखने वाले शख्स से बादशाहे हकीकी की बारगाह में इन उमूर का तकाज़ा क्यूं न होगा ? और हर वोह शख्स जो ग़ैरे खुदा के सामने तो खाशेअ और मुतमइन मगर **अल्लाह** غَرْوَجَل के हुज़ूर बे चैन और फुज़ूल कामों में पड़ा होता है तो वोह जलाले खुदावन्दी की मा’रिफ़त से महरूम है और उसे मा’लूम नहीं कि **अल्लाह** غَرْوَجَل उस के ज़ाहिरो बातिन पर आगाह है ।

अल्लाह غَرْوَجَل इरशाद फ़रमाता है :

الَّذِي يَرَاكَ حِينَ تَقُومُ ۖ وَتَقْلِبُ فِي

السُّجُودِ ۚ (پ ۹، الشعراء ۲۱/۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जो तुम्हें देखता है जब तुम खड़े होते हो और नमाज़ियों में तुम्हारे दौरे को ।

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इस आयते मुबारका की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : इस से बन्दे का कियाम, रुकूअ, सुजूद और का’दा मुराद है ।

रुकूअ व सुजूद :

रुकूअ व सुजूद में **अल्लाह** غَرْوَجَل की किब्रियाई का दोबारा ज़िक्र करो और दोनों हाथ उठा कर नई निय्यत के साथ **अल्लाह** غَرْوَجَل के अज़ाब से उस के अफ़वो दरगुज़र की पनाह

①.....نوادراصول، الاصل السابع والاربعون والمائتان، الحديث: ۱۳۱۰، ص ۱۰۰۷۔

②.....كشف الخفاء، حرف الهمزة مع اللام، الحديث: ۵۴۳، ج ۱، ص ۱۶۵۔

तलब करो और सुन्नते नबवी की पैरवी करो। फिर रुकूअ के ज़रीए ज़िल्लत और अज़िज़ी व इन्किसारी का इज़हार करो और दिल में रिक्कत और खुशूअ पैदा करने की कोशिश करो, अपनी ज़िल्लत, अपने मौला की इज़ज़त और उस के मक़ाम की बुलन्दी को समझने की कोशिश करो, ज़बान की मदद से उसे दिल में पुख़्ता करो, अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह करो और उस की अज़मत की गवाही दो कि वोह हर अज़ीम से बर तर है और दिल में बार बार इस की तकरार करो ताकि येह पुख़्ता हो जाए। फिर रुकूअ से येह उम्मीद करते हुए उठो कि वोह तुम पर रहम फ़रमाने वाला है और “سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ” कह कर दिल में उम्मीद को पुख़्ता करो और इस का मतलब है कि जो उस का शुक्र अदा करता है वोह उस की बात क़बूल फ़रमाता है। फिर मज़ीद ने मत के हुसूल के लिये दोबारा शुक्र अदा करते हुए “رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ” कहो। नीज़ इन अल्फ़ाज़ के ज़रीए ब कषरत शुक्र अदा करो : “وَمِلْءُ السَّمَوَاتِ وَمِلْءُ الْأَرْضِ” या’नी ज़मीन व आस्मान शुक्र से भरे हुए हैं।” फिर सजदे के लिये झुक जाओ और येह इज़हारे अज़िज़ी का सब से आ’ला दर्जा है लिहाज़ा अपने सब से ज़ियादा इज़ज़त वाले हिस्सए बदन को, जो कि चेहरा है सब से हकीर व बे वुक्अत चीज़ या’नी मिट्टी पर रख दो और अगर हो सके तो ज़मीन पर यूँ सजदा करो कि पेशानी और ज़मीन के दरमियान कोई चीज़ हाइल न हो क्यूँकि येह खुशूअ को जल्द लाती और ज़िल्लत पर ज़ियादा दलालत करती है। जब तुम ने खुद को मक़ामे ज़िल्लत पर डाल दिया तो जान लो कि तुम ने अपने नफ़्स को उस की जगह पर रख दिया और फ़र्ज़ को अस्ल की तरफ़ लौटा दिया क्यूँकि तुम मिट्टी से पैदा किये गए हो और इसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। इस वक़्त अपने दिल में अज़मते इलाही की तजदीद करते हुए : “سُبْحَنَ رَبِّيَ الْأَعْلَى” या’नी मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ पाक है जो सब से आ’ला है।” कहो और इसे तकरार के साथ मुअक्कद करो क्यूँकि एक बार कहने का अषर कमज़ोर होता है। जब तुम्हारा दिल नर्म और ज़िल्लत वाजेह हो जाए तो रहमते इलाही की पुख़्ता उम्मीद रखो क्यूँकि उस की रहमत कमज़ोरी व ज़िल्लत ही की तरफ़ जल्द मुतवज्जेह होती है न कि तकब्बुर व गुरूर की तरफ़। फिर तक्बीर कहते हुए सर उठाओ और अपनी हाज़त तलब करते हुए यूँ कहो : “ऐ मेरे रब्ब عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और रहम फ़रमा और मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा जो कि तेरे इल्म में हैं।” या जो दुआ तुम करना चाहो वोह करो। फिर दोबारा इसी तरह सजदा करते हुए अज़िज़ी को पुख़्ता करो।

तशह्हुद :

जब तशह्हुद के लिये बैठो तो अदब से बैठो और इस बात की वज़ाहत करो कि जो उमूर कुर्बे इलाही का मूजिब हैं ख़्वाह नमाज़ें हों या अच्छे अख़्लाक़ सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से

हैं। इसी तरह मुल्क भी उसी का है और अत्तहिय्यात का येही मा'ना है। नीज़ दिल में ज़ाते पाके मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के मक़ाम व मर्तबे को हाज़िर कर के कहो : “عَزَّ وَجَلَّ **اَللّٰهُ** या'नी सलाम हो आप पर ऐ नबी और **اَللّٰهُ** की रहमतें और बरकतें।” और क़वी उम्मीद रखो कि येह सलाम आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पहुंचता है और आप इस से बेहतर जवाब मरहमत फ़रमाते हैं। फिर खुद पर और **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के तमाम नेक बन्दों पर सलाम भेजो। फिर येह उम्मीद रखो कि **اَللّٰهُ** (अपनी रहमत से) नेक बन्दों की ता'दाद के बराबर तुम पर सलामती नाज़िल फ़रमाएगा। फिर **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ से किये हुए अहद की तजदीद करते हुए कलिमए शहादत के साथ उस की वहदानिय्यत और उस के नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की गवाही दो और फिर से उस के कलिमे के क़ल्ए में महफूज हो जाओ। फिर नमाज़ के इख़िताम पर अज़िज़ी व इन्किसारी, गिड़ गिड़ाने और लजाजत के साथ क़बूलिय्यत की सच्ची उम्मीद रखते हुए मस्नून दुआ करो, दुआ में अपने वालिदैन् और तमाम मोअमिनीन् को शरीक करो और सलाम फेरते वक़्त फ़िरिश्तों और मौजूद लोगों को सलाम की निय्यत करो और इस के साथ ही नमाज़ ख़त्म करने की निय्यत करो। नीज़ इस इबादत को पायए तक्मील तक पहुंचाने की तौफ़ीक़ देने पर रब्ब عَزَّ وَجَلَّ का शुक्र अदा करो और येह गुमान करो कि येह तुम्हारी आख़िरी नमाज़ है, आयन्दा इस जैसी नमाज़ के लिये ज़िन्दा नहीं रहोगे। चुनान्वे,

आकाए दो आलम, नूरे मजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक शख्स को वसिय्यत करते हुए इरशाद फ़रमाया : “रुख़्सत होने वाले की तरह नमाज़ पढ़।” (1)

नीज़ नमाज़ में कोताही पर अपने दिल में हया और ख़ौफ़ महसूस करो और इस बात से डरो कि कहीं तुम्हारी नमाज़ क़बूल ही न हो या तुम किसी ज़ाहिरी या बातिनी गुनाह के सबब मर्दूद हो जाओ और तुम्हारी नमाज़ तुम्हारे मुंह पर मार दी जाए लेकिन इस के साथ साथ येह भी उम्मीद रखो कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ अपने फ़ज़लो करम से क़बूल फ़रमाएगा।

हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन वषाब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَهَّاب जब नमाज़ पढ़ते तो कुछ देर जिस क़दर **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ चाहता ठहरते। इन पर नमाज़ की थकावट महसूस होती और हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नमाज़ के बा'द घन्टा भर ठहरे रहते (और चेहरे के अषरात से ज़ाहिर होता) गोया आप मरीज़ हैं। येह ख़ाशिर्इन की नमाज़ की तफ़सील है, जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ते हैं, जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं, जो अपनी नमाज़ के

पाबन्द हैं और जो इबादत में अपनी इस्तिताअत के मुताबिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुनाजात करते हैं। लिहाजा इन्सान खुद को नमाज़ का आदी बनाए और इस में से जिस क़दर इसे मयस्सर हो उस पर खुशी मनाए, इस में से जो न पा सके उस पर हसरत करे और इस कमी को पूरा करने के लिये ख़ूब कोशिश करे। ग़ाफ़िलीन की नमाज़ें ख़तरे के मक़ाम में हैं मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें अपनी रहमत से ढांप ले और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत वसीअ और करम आम है।

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सुवाल करते हैं कि वोह हमें अपनी रहमत से ढांप ले और अपनी मग़फ़िरत से हमारी पर्दापोशी करे क्यूंकि हमारा कोई वसीला नहीं सिवाए उस के कि उस की इताअत से आजिज़ होने का ए'तिराफ़ करें।

नमाज़ को आफ़ात से महफूज़ रखने की फ़ज़ीलत :

जान लीजिये कि (बातिनी) आफ़ात से नमाज़ को बचा कर ख़ालिसतन रिज़ाए इलाही के लिये मज़कूरा बातिनी शराइत जैसे खुशूअ, ता'ज़ीम और हया का ख़याल रखते हुए अदा करना दिल में पाए जाने वाले इन अन्वार का सबब है जो उलूमे मुकाशफ़ा के लिये चाबियां हैं। औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام को असरारे इलाही और ज़मीन व आस्मान की बादशाही का जो कशफ़ होता है वोह उन्हें नमाज़ में खुसूसन हालते सजदा में होता है क्यूंकि बन्दा सजदे की हालत में रब्ब عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा क़रीब होता है। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ (سورة الحجّة 19) (پ ۳۰، العلق: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सजदा करो और हम से क़रीब हो जाओ। (1)

①....येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 728 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْفَى नक्ल फ़रमाते हैं : आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। सजदा वाजिब होने के लिये पूरी आयत पढ़ना ज़रूरी नहीं बल्कि वोह लफ़ज़ जिस में सजदे का माद्दा पाया जाता है और इस के क़ब्ल या बा'द का कोई लफ़ज़ मिला कर पढ़ना काफ़ी है।" और सफ़हा 730 पर फ़रमाते हैं : "फ़ारसी या किसी और ज़बान में आयत का तर्जमा पढ़ा तो पढ़ने वाले और सुनने वाले पर सजदा वाजिब हो गया, सुनने वाले ने येह समझा हो या नहीं कि आयते सजदा का तर्जमा है, अलबत्ता येह ज़रूर है कि इसे ना मा'लूम हो तो बता दिया गया हो कि येह आयते सजदा का तर्जमा था और आयत पढ़ी गई हो तो इस की ज़रूरत नहीं कि सुनने वाले को आयते सजदा होना बताया गया हो।"

नोट : मजीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअत के मज़कूरा मक़ाम का सफ़हा 726 ता 739 का या दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना का मतबूआ 49 सफ़हात पर मुश्तमिल रिसाले "तिलावत की फ़ज़ीलत" का मुतालआ कीजिये।

और हर नमाज़ी का मुकाशफ़ा दुन्या की कदूरतों से बातिन की सफ़ाई के मुताबिक़ होता है और यह ताक़त व कमज़ोरी, क़िल्लत व क़षरत और ज़िला व ख़फ़ा के ए'तिबार से मुख़्तलिफ़ होता है हत्ता कि बा'ज़ लोगों के सामने एक चीज़ अस्ल हालत में मुन्कशिफ़ होती है जब कि बा'ज़ के सामने वोही चीज़ अपनी मिषाल के साथ मुन्कशिफ़ होती है जैसा कि बा'ज़ को दुन्या मुरदार की मिषल और शैतान कुत्ते की सूरत में नज़र आता है जो उस पर छाती लगाए बैठ कर उस की तरफ़ बुला रहा होता है। इसी तरह मुकाशफ़ा का इख़्तिलाफ़ क़श्फ़ की चीज़ों में भी होता है बा'ज़ बुजुर्गों के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात मुन्कशिफ़ होती हैं, बा'ज़ को उस के अफ़़ाल मुन्कशिफ़ होते हैं और बा'ज़ को उलूमे मुआमला की बारीकियां मुन्कशिफ़ होती हैं। हर वक़्त इन मआनी की तइय्यीन के लिये बे शुमार पोशीदा अस्बाब हैं, इन में सब से सख़्त इस की तरफ़ क़ल्बी फ़िक़्र की मुनासबत है क्यूंकि जब किसी मुअय्यन चीज़ की तरफ़ तवज्जोह की जाए तो वोह इन्किशाफ़ के लिये बेहतर होती है।

अहले कुलूब के मुकाशफ़ा का इन्कार मुनासिब नहीं :

येह उमूर (जंग से) सीक़ल शुदा आईने में ही नज़र आते हैं और तमाम आईने जंग आलूद हैं इस लिये उन से हिदायत छुप जाती है। इस की वजह येह नहीं कि मुनइम (या'नी ने'मत बख़्शाने वाले) की तरफ़ से बुख़्त होता है बल्कि वजह येह है कि हिदायत के मक़ाम पर मैल की तह जम जाने के सबब ज़बानें इस क़िस्म की बातों का इन्कार करने में जल्दी करती हैं क्यूंकि तबीअत उस चीज़ का इन्कार कर देती है जो मौजूद न हो। अगर पेट में मौजूद बच्चे में अक़ल होती तो वोह हवा कि वुस्अतों में इन्सान की मौजूदगी के इमकान का इन्कार कर देता और अगर बच्चे को तमीज़ होती तो ज़मीन व आस्मान की बादशाहत में जिन चीज़ों के इदराक़ का उ-क़ला गुमान करते हैं उन का इन्कार कर देता। इसी तरह इन्सान हर हालत में इस से आ'ला हालत का इन्कार करता है और जो विलायत के हाल का मुन्किर हो उस पर नबुव्वत के हाल का इन्कार भी लाज़िम आएगा और मख़्लूक़ मुख़्तलिफ़ दर्जात पर पैदा की गई है। लिहाज़ा बन्दे को अपने से ऊपर वाले दर्जे का इन्कार नहीं करना चाहिये मगर चूंकि लोगों ने इस चीज़ को बहूष व मुबाह़षा के ज़रीए तलाश किया ग़ैरे खुदा से दिल को पाक करने के ज़रीए नहीं ढूंढा तो इसे न पा सकने के बाइष इन्कार कर दिया। जो अहले मुकाशफ़ा में से न हो तो कम अज़ कम उसे ग़ैब पर ईमान लाना और इस की तस्दीक़ करनी चाहिये यहां तक कि वोह तजरिबे से इस का मुशाहदा कर ले।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नमाज़ी बन्दे पर फ़ख्र फ़रमाता है :

हृदीषे पाक में है : “बन्दा जब नमाज़ में खड़ा होता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने और बन्दे के दरमियान से पर्दे उठा देता और उस की तरफ़ खुसूसी तवज्जोह फ़रमाता है, फ़िरिश्ते उस के कांधे से हवा तक खड़े हो जाते हैं, उस के साथ नमाज़ पढ़ते, उस की दुआ पर आमीन कहते हैं और आस्मान से नमाज़ी के सर की मांग तक एक नेकी उतरती है और एक मुनादी निदा करता है कि अगर येह मुनाजात करने वाला जान लेता कि वोह किस की बारगाह में मुनाजात कर रहा है तो इधर उधर मुतवज्जेह न होता । आस्मान के दरवाजे नमाज़ियों के लिये खोल दिये जाते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़िरिश्तों की मजलिस में अपने नमाज़ी बन्दे पर फ़ख्र फ़रमाता है ।”⁽¹⁾

(सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं :) आस्मान के दरवाजों का खुलना और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नमाज़ी की तरफ़ मुतवज्जेह होना हमारे ज़िक्र कर्दा कश्फ़ से किनाया है ।

तौरात में लिखा है कि “ऐ इब्ने आदम ! मेरे सामने नमाज़ पढ़ते और रोते हुए खड़ा होने से अज़िज़ न होना, मैं **अल्लाह** हूँ जो तेरे दिल से करीब है और तूने ग़ैब से मेरे नूर को देखा ।”⁽²⁾

रावी कहते हैं कि येह रिक्कत, रोना और वोह कुशादगी जिसे नमाज़ी अपने दिल में पाता है दिल में कुर्बे इलाही की बिना पर है और जब येह कुर्ब, मकानी कुर्ब नहीं तो इस का मा'ना हिदायत, रहमत और हिजाब का उठ जाना ही है ।

फ़िरिश्ते किस पर तअज्जुब करते हैं ?

मन्कूल है कि “बन्दा जब दो रकअतें पढ़ता है तो फ़िरिश्तों की दस सफ़ें उस पर तअज्जुब करती हैं इन में से हर सफ़ में दस हज़ार फ़िरिश्ते होते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक लाख फ़िरिश्तों के सामने उस पर फ़ख्र करता है ।”⁽³⁾

फ़िरिश्तों के तअज्जुब करने की वजह :

इस की वजह येह है कि बन्दे की नमाज़ में कियाम व कुऊद और रुकूअ व सुजूद जम्अ होते हैं जब कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन चार अरकान को 40 हज़ार मलाइका में तक्सीम किया है । कियाम करने वाले फ़िरिश्ते कियामत तक रुकूअ नहीं करेंगे । सजदा करने वाले ता कियामत

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون، في ذكر دعائم السلام.....الخ، ج ٢، ص ١٦٥ -

②.....المرجع السابق - ③.....المرجع السابق -

इस से सर नहीं उठाएंगे। इसी तरह रुकूअ और का'दा करने वालों का हाल है क्योंकि **अल्लाह** عز وجل ने फ़िरिश्तों को जो कुर्ब और रुतबा अता फ़रमाया है (इस के मुताबिक) इन पर हमेशा एक ही हालत पर रहना लाज़िम है इस में कमी बेशी नहीं हो सकती। **अल्लाह** عز وجل ने इन के मुतअल्लिक़ ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाया :

وَمِمَّنَّا إِلَّا لَهُ مَقَامٌ مَّعْلُومٌ ۝

(प २३, الصّफ़त: १२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और फ़िरिश्ते कहते हैं हम में हर एक का एक मक़ाम मा'लूम है।

बा ए' तिबार तरक्किये दर्जात इन्सान फ़िरिश्तों से मुख़्तलिफ़ है :

इन्सान एक दर्जे से दूसरे की तरफ़ तरक्की करने में फ़िरिश्तों से मुख़्तलिफ़ है क्योंकि येह हमेशा **अल्लाह** عز وجل के करीब होता रहता और उस का मज़ीद कुर्ब पाता है जब कि फ़िरिश्तों पर मज़ीद कुर्ब का दरवाज़ा बन्द है और हर फ़िरिश्ते का वोही रुतबा है जिस पर वोह खड़ा है और वोही इबादत है जिस में वोह मशगूल है। वोह न तो इस के ग़ैर की तरफ़ मुन्तक़िल होता और न ही इस में कोताही करता है। चुनान्वे,

अल्लाह عز وجل इरशाद फ़रमाता है :

لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُونَ ۝

يُسَبِّحُونَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْترُونَ ۝

(प १, الانبياء: १९, २०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और न थकें रात दिन उस की पाकी बोलते हैं और सुस्ती नहीं करते।

और ज़ियादतिये दर्जात की चाबी नमाज़ है। चुनान्वे,

अल्लाह عز وجل फ़रमाता है :

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۝ الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خُشْعُونَ ۝

(प १८, المؤمنون: १, २)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक मुराद को पहुंचे ईमान वाले, जो अपनी नमाज़ में गिड़ गिड़ाते हैं।

यहां **अल्लाह** عز وجل ने ईमान के बा'द मख्सूस नमाज़ के साथ ईमान वालों की ता'रीफ़ फ़रमाई जो खुशूअ के साथ मिली हुई है। फिर दुन्या व आख़िरत में कामयाबी पाने वालों की खूबियों का इख़िताम भी नमाज़ के ज़िक्र से किया। चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया :

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ۝

(प १८, المؤمنون: ९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह जो अपनी नमाज़ों की निगहबानी करते हैं।

फिर इन खूबियों के नतीजे में इरशाद फ़रमाया :

أُولَٰئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ۚ الَّذِينَ يَرِثُونَ
الْفِرْدَوْسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

(پ ۱۸، المؤمنون: ۱۰، ۱۱)

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : یہی لوگ وارث ہیں
کی فیردوس کی میراث پائیں گے، وہ اس میں ہمیشہ
رہیں گے ।

اَللّٰہ عَزَّوَجَلَّ نے پہلے انہیں فِلاہ (کامیابی) کے ساتھ فیر جننتول
فیردوس کی ویراثت کے ساتھ متتسیر فیرمایا ।

(سبیردنا ایمام گجالی اَللّٰہِ الْوَالِیٰی فرماتے ہیں :) میرے خیال میں گافیل دل کے ساتھ
مہج جبان کو جلدی جلدی چلانا اس درجے تک نہیں پہنچا سکتا । اسی وجہ سے **اَللّٰہ**
عَزَّوَجَلَّ نے ان (نمازیوں) کے مقابل جہنمییوں سے متتالیک یرشاد فرمایا :

مَا سَلَّكُمْ فِي سَقَرٍ ۝ قَالُوا الْمَرْكَ مِنْ
الْمَصَلِّينَ ۝ (پ ۲۹، المذثر: ۲۲، ۲۳)

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : تمہیں کیا بات دوجہ میں
لے گی وہ بولے ہم نماز نہ پڑتے تھے ।

لیہا جہ نمازی ہی جننتول فیردوس کے وارث ہیں اور وہی **اَللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ کے نور کا
مشاہدا کرنے والے اور اس کے کورب سے لطف اندوز ہونے والے ہیں ।

دُعا :

ہم **اَللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ کی بارگاہ میں سوال کرتے ہیں کی ہمیں ان (یا'نی مہکورا اوساف
سے متتسیر نمازیوں) میں سے بناے اور ہم ان لوگوں کی سجا سے پناہ تلہ کرتے ہیں جن
کی باتیں تو اچھی مگر کام برے ہیں । بے شک وہی کریم و اہسان فرمانے والا ہے । اس کا
اہسان قدیم ہے । نیج **اَللّٰہ** عَزَّوَجَلَّ کے ہر برگوجیدا بندے پر رھمت ہو ।

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهُ.....﴾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

पांचवीं फ़स्ल : खुशूअ, खुन्नूअ ये नमाज़ पढ़ने वालों की हिक़ायत

जान लीजिये कि खुशूअ ईमान का फ़ल और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल से हासिल होने वाले यकीन का नतीजा है। जिसे येह हासिल हो जाए वोह नमाज़ में और नमाज़ से बाहर बल्कि तन्हाई में और इस्तिन्जा खाने में भी क़ज़ाए हाज़त के वक़्त खुशूअ अपनाता है। क्यूंकि खुशूअ का मुजिब इस बात की पहचान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बन्दे पर मुत्तलअ है। नीज़ बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के जलाल और अपनी कोताही की मा'रिफ़त रखता है। इन्ही बातों की पहचान से खुशूअ हासिल होता है और येह नमाज़ के साथ ख़ास नहीं इसी लिये बा'ज़ बुजुर्गों के मुतअल्लिक़ मन्कूल है कि उन्होंने ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से हया करते और उस से डरते हुए 40 साल तक आस्मान की तरफ़ सर नहीं उठाया।

आंखों का कुपले मदीना :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुषैम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हमेशा सर और आंखें झुकाए रखते थे हत्ता कि बा'ज़ लोग आप को नाबीना समझते। आप 20 साल हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के घर हाज़िर होते रहे। जब हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की कनीज़ उन्हें (आते) देखती तो कहती : “आप के नाबीना दोस्त तशरीफ़ लाए हैं।” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ उस की बात सुन कर मुस्कुरा देते। आप रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जब दरवाज़ा बजाते, कनीज़ बाहर निकलती तो उन्हें सर और आंखें झुकाए देखती। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ जब हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुषैम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को देखते तो येह आयते मुक़द्दसा तिलावत करते :

وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِينَ ﴿٣٤﴾ (پ ١، الحج: ٣٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब ! खुशी सुना दो उन तवाज़ोअ वालों को।

और फ़रमाते : खुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! अगर हुज़रे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तुम्हें देखते तो तुम से खुश होते। एक रिवायत में है कि “आप को पसन्द फ़रमाते।” एक रिवायत में है कि “आप को देख कर मुस्कुरा देते।”

सय्यिदुना रबीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَرِّيم का ख़ौफ़े खुदा :

मन्कूल है कि एक दिन हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुषैम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ लोहारों के पास से गुज़रे जब आप ने भट्टियों के धोंकने और आग के शो'ले बुलन्द होने को देखा तो एक चीख़ मारी और बेहोश हो

कर गिर पड़े। हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ के वक़्त तक आप के सिरहाने बैठे रहे मगर होश में न आए। वोह आप को पीठ पर उठा कर घर ले आए। दूसरे दिन उस वक़्त तक आप बेहोश रहे जिस वक़्त चीख़ मारी थी, इस दौरान आप की पांच नमाज़ें क़ज़ा हो गईं और हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ उन के सिरहाने बैठे फ़रमा रहे थे : “خُودَا عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! ख़ौफ़े (ख़ुदा) इसे ही कहते हैं।” (1)

हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुषैम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते थे : “मैं जब भी नमाज़ पढ़ता मुझे येही फ़िक्र रहती कि मैं क्या कहता हूँ और मुझे क्या जवाब मिलेगा।” (2)

सय्यिदुना अमिर बिन अब्दुल्लाह रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का खुशूअ :

हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन अब्दुल्लाह रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ भी खुशूअ से नमाज़ पढ़ने वालों में से थे। जब आप नमाज़ पढ़ रहे होते तो अक़षर आप की बेटी दफ़ बजाती और घर में आने वाली औरतों से बातें करती लेकिन आप न उन की बातें सुनते और न ही समझ पाते। एक दिन आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा गया : “क्या आप नमाज़ में अपने नफ़्स से कोई बात करते हैं?” तो फ़रमाया : “हां ! येह बात कि मैं عَزَّوَجَلَّ के सामने खड़ा हूँ और मैं ने दो घरों में से एक घर में लौटना है।” अर्ज़ की गई : “क्या हमारी तरह आप भी नमाज़ में उमूरे दुन्या में से कुछ पाते हैं?” फ़रमाया : “मुझे नमाज़ में दुन्या के ख़यालात पैदा होने से येह बात ज़ियादा पसन्द है कि मुझ पर तीरों से हम्ला किया जाए।” आप रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाया करते थे : “अगर पर्दा उठा दिया जाए तो मेरे यक़ीन में कोई इज़ाफ़ा न हो।” (3)

हज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار भी क़षरते खुशूअ वालों में से थे। हम ज़िक्र कर चुके हैं कि आप नमाज़ में थे तो आप को मस्जिद में सुतून गिरने का पता भी न चला।

तक्लीफ़ का एहसास तक न हुवा :

मन्कूल है कि “एक बुजुर्ग के जिस्म का कोई हिस्सा गल गया और उसे काटने की ज़रूरत महसूस हुई लेकिन मुमकिन न था तो कहा गया कि कुछ भी हो जाए नमाज़ में इन्हें किसी चीज़ का एहसास नहीं होता। चुनान्चे, नमाज़ की हालत में उन के बदन का वोह हिस्सा काट दिया गया।”

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٦٩ -

②.....المرجع السابق - ③.....المرجع السابق -

मन्कूल है कि “नमाज़ आखिरत में से है। लिहाज़ा जब तू नमाज़ शुरू करे तो दुनिया से निकल जा।” (1)

किसी बुजुर्ग से पूछा गया : क्या दौराने नमाज़ आप अपने नफ़्स से कोई दुन्यवी बात करते हैं ? तो उन्होंने ने जवाब दिया : न नमाज़ में न नमाज़ से बाहर।

बा'ज बुजुर्गों से पूछा गया : क्या आप नमाज़ में कोई चीज़ याद करते हैं ?” जवाब मिला : “मुझे नमाज़ से ज़ियादा कौन सी चीज़ प्यारी है कि मैं नमाज़ में उसे याद करूं ?”

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते थे : “आदमी की समझदारी में से है कि नमाज़ शुरू करने से पहले अपना ज़रूरी काम निमटा ले ताकि नमाज़ शुरू करे तो उस का दिल फ़ारिग़ हो।” (2)

वस्वों के ख़ौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर पढ़ी :

बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ السُّبِّين वस्वों के ख़ौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर कर देते थे। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अम्मार बिन यासिर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक दिन नमाज़ मुख़्तसर कर के पढ़ी तो इन से अर्ज़ की गई : “ऐ अबू यक़ज़ान ! आप ने नमाज़ मुख़्तसर कर के पढ़ी है ?” तो आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “क्या तुम ने मुझे नमाज़ में कुछ कमी करते पाया ?” लोगों ने कहा “नहीं।” फ़रमाया : मैं ने शैतान के भुलाने के ख़ौफ़ से जल्दी की, बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बन्दा नमाज़ पढ़ता है लेकिन उस के लिये नमाज़ का निस्फ़, तीसरा, चौथा, पांचवां, छटा और दस्वां हिस्सा भी नहीं लिखा जाता।” (3)

नीज़ हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरशाद फ़रमाते : “बन्दे के लिये उस की नमाज़ में से वोही लिखा जाता है जिसे वोह समझ कर अदा करे।” (4)

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۶۹۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۶۹۔

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الکوفيين، حدیث عمار بن یاسر، الحدیث: ۱۸۹۱۶، ج ۶، ص ۲۸۳، مفهوماً۔

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۶۹-۱۷۰۔ بتقدم و تاخیر۔

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना तल्हा, हज़रते सय्यिदुना जुबैर और सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ أجمعين का एक गुरौह इन्तिहाई मुख्तसर नमाज़ पढ़ते और फ़रमाते : “हम शैतान के वस्वसों की वजह से जल्दी पढ़ते हैं।”⁽¹⁾

एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी :

मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बर सरे मिम्बर फ़रमाया : “बेशक हालते इस्लाम में इन्सान के रुख़्सारों पर सफ़ेदी आ जाती है (उस की दाढ़ी सफ़ेद हो जाती है) लेकिन उस ने रिज़ाए इलाही के लिये एक नमाज़ भी पूरी नहीं पढ़ी होती।”⁽²⁾ अर्ज़ की गई : “येह कैसे ?” फ़रमाया : “वोह खुशूअ व खुजूअ से **اَبْلَاهُ** की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।”⁽³⁾

आयते मुबारक की तफ़सीर :

हज़रते सय्यिदुना अबू अलिय्या رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ से इस फ़रमाने बारी तअ़ाला :

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : जो अपनी नमाज़ से भूले बैठे हैं।
(प ३०, الماعون: ५)

के मुतअल्लिक पूछा गया तो फ़रमाया : “इस से मुराद वोह शख़्स है जो नमाज़ में भूल जाता है और नहीं जानता कि कितनी रकअतों के बा'द फ़ारिग़ होगा जुफ़्त के बा'द या ताक़ के ?”⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी رَحِمَهُ اللَّهُ الْفَوّی फ़रमाते हैं : “इस से मुराद वोह है जो नमाज़ के वक़्त ग़ाफ़िल रहता है यहां तक कि नमाज़ का वक़्त निकल जाता है।”⁽⁵⁾

बा'ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السّलَام ने इस का मा'ना येह बयान फ़रमाया कि “येह वोह शख़्स है जो अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ने पर खुश नहीं होता और ताख़ीर करने पर ग़मज़दा नहीं होता और जल्दी पढ़ने को षवाब और ताख़ीर को गुनाह नहीं समझता।”⁽⁶⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤٠-

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤٠-

③.....المرجع السابق- ④.....المرجع السابق-

⑤.....المرجع السابق- ⑥.....المرجع السابق-

याद रखिये कि नमाज़ का कुछ हिस्सा शुमार होता और लिखा जाता है जब कि कुछ हिस्सा न शुमार किया जाता और न लिखा जाता है। जैसा कि इस पर रिवायात दलालत करती हैं अगर्चे फ़कीह के नज़दीक नमाज़ सहीह होने के ए'तिबार से तक्सीम नहीं होती लेकिन इस का एक और मा'ना भी है जो हम ने ज़िक्र किया और इस मा'ना पर अहदाीष दलालत करती हैं। चुनान्वे, मरवी है कि “फ़राइज़ की कमी नवाफ़िल के ज़रीए पूरी की जाएगी।”

बाइषे नजात और कुर्ब का ज़रीआ :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : **اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है : “फ़राइज़ के ज़रीए मेरा बन्दा मुझ (या'नी मेरे अज़ाब) से नजात पा लेता और नवाफ़िल के ज़रीए कुर्ब हासिल करता है।”⁽¹⁾

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना ﷺ ने फ़रमाया : **اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है : “मेरे फ़र्ज़ कर्दा अहकाम की बजा आवरी के बिगैर बन्दा मेरे अज़ाब से छुटकारा नहीं पा सकता।”⁽²⁾

दिल नमाज़ में हाज़िर नहीं :

मरवी है कि (एक बार) हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम ﷺ ने नमाज़ पढ़ी और क़िराअत से एक आयत रह गई। नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो इस्तिफ़सार फ़रमाया : “मैं ने क्या पढ़ा ?” सहाबए किराम رضوان الله تعالى عليهم أجمعين ख़ामोश रहे फिर आप ﷺ ने हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رضي الله تعالى عنه से पूछा तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “आप ने फुलां सूरत पढ़ी और फुलां आयत नहीं पढ़ी, मैं नहीं जानता कि वोह मन्सूख़ हो गई या उठा ली गई।” आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ उबय्य ! तुम ही इस के लिये हो (या'नी नमाज़ में कामिल तौर पर मुतवज्जेह रहना तुम्हारे ही लाइक़ है)।” फिर दीगर सहाबए किराम की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : उन लोगों का क्या हाल है जो नमाज़ में हाज़िर होते, सफ़ों को मुकम्मल करते और अपने नबी की इक्तिदा में होते हैं लेकिन वोह नहीं जानते कि उन के सामने किताबुल्लाह में से क्या पढ़ा जाता है। ख़बरदार ! बनी इसराईल ने इसी

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤٠۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤٠۔

तरह किया था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ वही फरमाई कि अपनी कौम से फरमा दीजिये : “तुम्हारे बदन मेरी बारगाह में हाज़िर होते हैं और अपने कलिमात तुम बारगाह तक पहुंचाते हो लेकिन तुम्हारे दिल मेरी तरफ मुतवज्जेह नहीं होते जिस तरफ तुम जा रहे हो वोह बातिल है।”⁽¹⁾ यह रिवायत इस बात पर दलालत करती है कि इमाम की क़िराअत सुनना और समझना खुद क़िराअत करने की तरह है।

बा'ज बुजुर्गों ने फरमाया : “कोई शख्स एक सजदा कर के समझता है कि उस ने इस के ज़रीए कुर्बे खुदावन्दी हासिल कर लिया है हालांकि उस के एक सजदे के गुनाह अहले मदीना पर तक्सीम कर दिये जाएं तो सब हलाक हो जाएं।” पूछा गया : “वोह कैसे ?” फरमाया : “वोह बज़ाहिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सजदा कर रहा होता है मगर उस का दिल ख़्वाहिशात की तरफ झुका होता और वोह बातिल का मुशाहदा कर रहा होता है जो उस पर ग़ालिब होता है।”⁽²⁾

(मज़कूरा कलाम जो कुछ ज़िक्र किया गया है) येह ख़ाशिईन की सिफ़त है। बयान कर्दा हिकायात व रिवायात इस बात पर दलालत करती हैं कि नमाज़ में अस्ल खुशूअ और हुजूरे क़ल्ब है जब कि ग़फ़लत के साथ महज़ ऊपर नीचे होना आख़िरत में बहुत कम नफ़अ देगा।

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अच्छी तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।



﴿.....تَوَبُّوْا اِلَى اللّٰهِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ.....﴾

﴿.....صَلُّوْا عَلَى الْحَبِیْب صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّدٍ.....﴾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۷۱، ۱۷۲۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۷۲۔

बाब नम्बर 4 :

इमामत का बयान

﴿येह चार फ़स्लों पर मुश्तमिल है﴾

पहली फ़स्ल : इमाम पर नमाज़ से पहले के, नीज़ किशअत, अरकान और अलाम के बा'द के लाज़िम उमूर

क़ब्ले नमाज़ इमाम पर छे बातें लाज़िम हैं :

﴿1﴾.....इमाम को चाहिये कि ऐसी क़ौम की इमामत न करे जो उसे ना पसन्द करती हो अगर लोगों में इख़िलाफ़ हो जाए तो अक़षरिय्यत की राए पर अमल किया जाए अगर कम ता'दाद वाले लोग दीनदार और नेक लोग हों तो उन को तरजीह दी जाए ।

किन्न की नमाज़ मक्बूल नहीं होती :

हदीषे मुबारका में है कि “तीन आदमियों की नमाज़ उन के सरों से तजावुज़ नहीं करती :

(1) भागा हुआ गुलाम (2) वोह औरत जिस का शोहर उस पर नाराज़ हो और (3) वोह शख़्स जो ऐसे लोगों की इमामत करे जो उसे नापसन्द करते हों ।”⁽¹⁾

नीज़ जिस तरह लोगों की नापसन्दीदगी की सूरत में किसी शख़्स का इन की इमामत करवाना मन्अ है इसी तरह अगर उस के पीछे उस से बड़ा अ़लिम मौजूद हो तब भी उस का इमामत करवाना मन्अ है । अलबत्ता अगर वोह बड़ा अ़लिम खुद रुक जाए तो वोह इमामत करवा सकता है । अगर मज़कूरा बातों में से कोई बात न हो तो जब उसे आगे किया जाए और वोह अपने अन्दर शराइते इमामत पाता हो तो आगे बढ़ जाए । इस वक़्त एक दूसरे को आगे करना या'नी इमामत को दूसरों पर डाल देना मकरूह है । मन्कूल है कि “एक क़ौम ने नमाज़ की इक़ामत के बा'द एक दूसरे को आगे करना शुरू किया तो उन्हें ज़मीन में धंसा दिया गया ।”

एक शुवाल और इस का जवाब :

फिर सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ को जब इमामत के लिये कहा जाता था तो दूसरों को आगे क्यूं बढ़ा देते थे ? इस का जवाब येह है कि वोह जिसे इमामत के ज़ियादा लाइक़ समझते उसे तरजीह देते या उन्हें भूलने और दूसरों की नमाज़ का ज़ामिन बनने से डर लगता था क्यूंकि अइम्मा (मुक़्तदियों की नमाज़ के) ज़ामिन होते हैं । नीज़ लोगों में से जो इमामत का आदी नहीं होता बा'ज अवक़ात मुक़्तदियों से हया करते हुए उस का दिल दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह

1.....الدر المنثور، الجزء الخامس، النساء، تحت الآية: 34، ج 2، ص 520، “رؤسهم” بدله “آذانهم”-

हो जाता है और नमाज़ में इख़्तास बाकी नहीं रहता। बिल खुसूस जहरी नमाज़ों में ऐसा हो जाता है इस लिये इस तरह के अस्बाब की वजह से सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने नमाज़ पढ़ाने से एहतिराज़ किया।

इमामत अफ़ज़ल है या मुअज़्ज़िनी :

﴿२﴾.....जब बन्दे को अज़ान और इमामत के दरमियान इख़्तियार दिया जाए तो उसे इमामत को इख़्तियार करना चाहिये। क्यूंकि इन में से हर एक में फ़ज़ीलत है लेकिन दोनों को जम्अ करना मकरूह है बल्कि इमाम, मुअज़्ज़िन के इलावा होना चाहिये।^(१) जब दोनों को जम्अ करना मुश्किल है तो इमामत बेहतर है। बा'ज़ उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि अज़ान अफ़ज़ल है जैसा कि हम ने इस की फ़ज़ीलत नक्ल की है और फ़रमाने मुस्तफ़ा है : اَلْاِمَامُ ضَامِنٌ وَالْمُوَدِّنُ مُوتِنٌ या'नी इमाम ज़ामिन है और मुअज़्ज़िन अमीन।"^(२) लिहाज़ा उन्होंने ने फ़रमाया कि इमामत में ज़मानत का ख़तरा है (इस लिये अज़ान अफ़ज़ल है)। एक रिवायत में है कि "इमाम अमीर है जब रुकूअ करे तो तुम भी रुकूअ करो और जब सजदा करे तो तुम भी सजदा करो।"^(३)

एक रिवायत में है : "अगर इमाम नमाज़ पूरी करे तो उस का भी फ़ाइदा है दूसरों का भी और अगर पूरी न करे तो इसी पर गुनाह है मुक्त्तदियों पर नहीं।"^(४) इसी लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ मांगी : اَللّٰهُمَّ ارْشِدِ الْاُئِمَّةَ وَاغْفِرْ لِلْمُؤَدِّنِ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इमामों की रहनुमाई फ़रमा और मुअज़्ज़िनों को बख़्श दे।"^(५) ^(६) और मांगने में मग़फ़िरत अफ़ज़ल है क्यूंकि मग़फ़िरत के लिये हिदायत का इरादा किया जाता है।

①....अहनाफ़ के नज़दीक : अगर मुअज़्ज़िन ही इमाम भी हो तो बेहतर है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 467)

②.....سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء أن الامام ضامن.....الخ، الحديث: ۲۰۷، ج ۱، ص ۲۵۰-

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون.....الخ، ج ۲، ص ۳۵۰، "امین" بدله "امیر"۔

صحيح ابن خزيمة، باب امر المأموم بالصلاة جالساً.....الخ، الحديث: ۱۶۱۳، ج ۳، ص ۵۲-

④.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب فی جماع الامامة وفضلها، الحديث: ۵۸۰، ج ۱، ص ۲۳۹، مفهوماً۔

⑤.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान میر آتول مनाجیہ، जि. 1 स. 415 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : इस से भी इमामत की अज़ान पर फ़ज़ीलत मा'लूम हो रही है क्यूंकि मग़फ़िरत से हिदायत आ'ला है या'नी या **अल्लाह** इमामों को नमाज़ के मसाइल सीखने और सहीह अदा करने की हिदायत दे कि इन की नमाज़ से बहुत सी नमाज़ें वाबस्ता हैं और मुअज़्ज़िन कभी वक़्त में धोका भी खा सकता है इसे बख़्श दे।

⑥.....سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء أن الامام ضامن.....الخ، الحديث: ۲۰۷، ج ۱، ص ۲۵۰-

बिला हिसाब जन्नत में दाखिला :

हदीषे पाक में है कि “जिस ने मस्जिद में सात साल (षवाब की निय्यत से) नमाज़ की इमामत कराई उस के लिये बिला हिसाब जन्नत वाजिब हो जाती है और जिस ने 40 साल (षवाब की निय्यत से) अज़ान दी वोह बिगैर हिसाब के जन्नत में दाखिल होगा।”⁽¹⁾ इसी लिये सहाबए किराम رَضَوُا اللّٰهَ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ के बारे में मरवी है कि वोह (ईषार की निय्यत से) इमामत में एक दूसरे को आगे करते थे।

सहीह येह है कि इमामत अफ़ज़ल है क्यूंकि सरकारे मक्काए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ व अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) और इन के बा’द अइम्मा दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّيِّئِينَ ने इस पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाई। इस में ज़मानत का ख़तरा है मगर फ़ज़ीलत भी ख़तरे के साथ है जैसा कि हुकूमत व ख़िलाफ़त का रुतबा अफ़ज़ल है।

70 साला इबादत से अफ़ज़ल :

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अलीशान है : “अदिल बादशाह का एक दिन 70 साल की इबादत से अफ़ज़ल है।”⁽²⁾ लेकिन चूंकि इमामत में ख़तरात हैं इस लिये अफ़ज़ल और ज़ियादा फ़कीह शख़्स को मुक़द्दम करना अफ़ज़ल है, कि हुज़ूर अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अलीशान है : “तुम्हारे अइम्मा तुम्हारे सिफ़ारिशी होंगे।”⁽³⁾ या फ़रमाया : वोह तुम्हारे नुमाइन्दे होंगे।⁽⁴⁾ अगर तुम चाहते हो कि अपनी नमाज़ों को पाक करो तो अच्छे लोगों को इमाम बनाओ।”

अम्बिया व उ-लमा عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा’द अफ़ज़ल :

बा’ज बुजुर्गों ने फ़रमाया : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के बा’द उ-लमाए उज्ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّيِّئِينَ से अफ़ज़ल कोई नहीं और उ-लमाए दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّيِّئِينَ के बा’द नमाज़ पढ़ाने वाले अइम्मा से अफ़ज़ल कोई नहीं क्यूंकि येह लोग **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के बन्दों के दरमियान

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فى حكم وصف الامام والمأموم، ج ۲، ص ۳۵۶۔

②.....المعجم الكبير، عكرمة عن ابن عباس، الحديث: ۱۱۹۳۲، ج ۱۱، ص ۲۶۷، بتصريح ستين سنة۔

③.....المعجم الكبير، ماسند مرثد بن ابى مرثد الغنوى، الحديث: ۷۷۷، ج ۲۰، ص ۳۲۸، مفهوماً۔

④.....کنز العمال، کتاب الصلاة، الترهيب عن الامامة، الحديث: ۲۰۳۸۶، ج ۷، ص ۲۴۰۔

खड़े होते हैं। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को येह ए'जाज नबुव्वत से, उ-लमाए उज्जाम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام को इल्म से और अइम्मा को नमाज से हासिल होता है जो दीन का सुतून है।⁽¹⁾

ख़िलाफ़ते सिद्दीकी पर एक दलील :

मजकूरा दलील की बिना पर सहाबए किराम رَضَوُا اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़िलाफ़त के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया। चुनान्वे, उन्होंने ने फ़रमाया : हम ने ग़ौरो फ़िक्र किया तो वाजेह हुवा कि नमाज दीन का सुतून है। लिहाज़ा हम ने अपने दुन्यावी मुआमलात के लिये उस शख्स को चुना जिसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमारे दीनी मुआमलात के लिये पसन्द फ़रमाया था।⁽²⁾ और मुअज़्ज़िने रसूल हज़रते सय्यिदुना बिलाल को सहाबए किराम رَضَوُا اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ इस लिये मुक़द्दम करते थे कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन्हें अज़ान के लिये पसन्द फ़रमाया था।

मुक़्तदी ही बन जाओ :

मरवी है कि एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज की : “या रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे ऐसा अमल बताइये जिस पर अमल कर के मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ।” इरशाद फ़रमाया : “मुअज़्ज़िन बन जा।” अर्ज की : “मुझे इस की इस्तिताअत नहीं।” इरशाद फ़रमाया : “इमाम बन जा।” अर्ज की : “मुझे इस की भी ताक़त नहीं।” इरशाद फ़रमाया : “मुक़्तदी बन जाओ।”⁽³⁾

शायद आप ने येह ख़याल फ़रमाया कि येह इमामत पर राज़ी न होगा क्यूंकि अज़ान तो उस के इख़्तियार में है मगर इमामत लोगों के इख़्तियार में है वोह उसे आगे करेंगे तो इमामत करवा सकेगा फिर ख़याल फ़रमाया कि शायद येह इमामत पर क़ादिर है (इस लिये इमामत का जिफ़्र बा'द में फ़रमाया)।

﴿3﴾.....इमाम को चाहिये कि अवकाते नमाज की रिआयत रखते हुए अव्वल वक़्त में नमाज पढ़ाए ताकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा को पा ले कि हदीषे पाक में है : “अव्वल वक़्त की नमाज को आख़िर वक़्त पर इस तरह फ़ज़ीलत है जिस तरह आख़िरत को दुन्या पर।”⁽⁴⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون في كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥٠-٣٥١.

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون في كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥١.

③.....مجمع الزوائد، كتاب الصلاة، باب فضل الاذان، الحديث: ١٨٢٢، ج ٢، ص ٨٢ “صل” بدله “قم”.

④.....الجامع الصغير، حرف الفاء، الحديث: ٥٨٦٤، ص ٣٦٣.

एक रिवायत में है कि “बन्दा आखिरी वक़्त में नमाज़ अदा करता है, अगरचें येह नमाज़ उस से फ़ौत नहीं हुई मगर अव्वल वक़्त फ़ौत हो गया जो उस के हक़ में दुन्या व माफ़ीहा (या’नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर था।”⁽¹⁾

कषरते जमाअत के लिये नमाज़ियों का इन्तिज़ार करना कैसा ?

इमाम जमाअत की कषरत के इन्तिज़ार में नमाज़ को मुस्तहब वक़्त से मुअख़्ख़र न करे बल्कि लोगों को चाहिये कि वोह अव्वल वक़्त की फ़ज़ीलत हासिल करने के लिये जल्दी करें कि येह कषरते जमाअत और लम्बी सूरतें पढ़ने से अफ़ज़ल है। नीज़ मन्कूल है कि “बुजुगानि दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْبُيِّنِينَ में से जब दो आदमी जमाअत के लिये हाज़िर हो जाते तो तीसरे का इन्तिज़ार न करते और नमाज़े जनाज़ा में जब चार आदमी हाज़िर हो जाते तो पांचवें का इन्तिज़ार न करते।”

नीज़ मरवी है कि एक बार हालते सफ़र में हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से तहारत के सबब नमाज़े फ़ज़्र में ताख़ीर हो गई तो इन्तिज़ार के बजाए हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इमामत के मुसल्ले पर खड़ा कर दिया गया। उन्होंने ने नमाज़ पढ़ाई यहां तक कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की एक रक्अत फ़ौत हो गई, आखिर में आप उसे अदा करने के लिये खड़े हो गए। रावी फ़रमाते हैं : इस पर हम खौफ़ज़दा हो गए। तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम ने अच्छा किया (कि अव्वल वक़्त में नमाज़ पढ़ी) इसी तरह किया करो।”⁽²⁾

एक बार आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को नमाज़े ज़ोहर में ताख़ीर हो गई तो सहाबए किराम रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इमामत के मुसल्ले पर खड़ा कर दिया हत्ता कि दौराने नमाज़ ही हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ ले आए और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के बराबर खड़े हो गए।⁽³⁾

①.....سنن الدارقطني، كتاب الصلاة، باب النهي عن الصلاة.....الخ، الحديث: ٩٦٤، ج ١، ص ٣٢١، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون في كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥١۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب تقديم الجماعة من يصلي.....الخ، الحديث: ١٠٥، ص ٢٢٦، مفهوماً۔

③.....صحيح البخاري، كتاب الأذان، باب من دخل ليوم الناس.....الخ، الحديث: ٦٨٣، ج ١، ص ٢٢٣، مفهوماً۔

इमाम पर मुअज़्ज़िन का इन्तिज़ार करना लाज़िम नहीं बल्कि मुअज़्ज़िन पर इक़ामत के लिये इमाम का इन्तिज़ार करना लाज़िम है। जब इमाम आ जाए तो वोह किसी दूसरे का इन्तिज़ार न करे।

﴿4﴾....इमाम ख़ालिसतन रिज़ाए इलाही के लिये इमामत कराए। नीज़ त़हारत और नमाज़ की तमाम शराइत में **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की अमानत को अदा करने वाला हो।

इख़्लास येह है कि इमामत पर उजरत न ले कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अबी आस षक़फ़ी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “एक मुअज़्ज़िन रखो जो बिग़ैर उजरत अज़ान दे।” (1)

अज़ान नमाज़ का ज़रीआ है जब इस पर उजरत न लेने का फ़रमाया तो इमामत पर बदरजए औला नहीं लेनी चाहिये। अगर मस्जिद की आमदनी इमाम के लिये वक्फ़ हो और वोह इस में से ले या बादशाह या मुक़्तदियों से कुछ ले तो इसे हराम नहीं कहा जाएगा अलबत्ता मकरूह है। फ़र्ज़ नमाज़ों पर उजरत लेना नमाज़े तरावीह पर उजरत लेने से ज़ियादा मकरूह है।

इमामत पर उजरत लेने का हीला :

अगर उजरत ले तो येह निय्यत हो कि हाज़िरी की पाबन्दी और जमाअत काइम करने के सिलसिले में मस्जिद के मुआमलात की निगरानी की ले रहा हूं न कि नफ़से नमाज़ की। (2)

जहां तक अमानत का तअल्लुक है तो वोह बातिनी तौर पर फ़िस्क़, गुनाहे कबीरा और सगीरा पर इसरार से पाक होना है। जो शख्स इमामत की ज़िम्मेदारी उठाना चाहता है वोह पूरी कोशिश के साथ इन कामों से बचे क्यूंकि वोह कौम के लिये सिफ़ारीशी और तर्जुमान की हैषियत

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب اخذالاجر على التأذنين، الحديث: ٥٣١، ج ١، ص ٢٢٣۔

②दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द सिवुम सफ़हा 146 पर है : “ता'लीमुल कुरआन व फ़िक़ह और अज़ान व इमामत पर इजारा जाइज़ है। अगर ऐसा न किया जाए तो कुरआन व फ़िक़ह के पढ़ाने वाले तलबे मईशत में मशगूल हो कर इस काम को छोड़ देंगे और लोग दीन की बातों से नावाक़िफ़ होते जाएंगे इसी तरह अगर मुअज़्ज़िन व इमाम को नोकर न रखा जाए तो बहुत सी मसाजिद में अज़ान व जमाअत का सिलसिला बन्द हो जाएगा और इस शिआरे इस्लामी में ज़बरदस्त कमी वाक़ेअ हो जाएगी इसी तरह बा'ज उ-लमा ने वा'ज पर इजारे को भी जाइज़ कहा है इस ज़माने में अक़षर मक़ामात ऐसे हैं जहां अहले इल्म नहीं हैं इधर उधर से कभी कोई अ़लिम पहुंच जाता है जो वा'ज तक्रीर के ज़रीए इन्हें दीन की ता'लीम दे देता है अगर इस इजारे को ना जाइज़ कर दिया जाए तो अ़वाम को जो इस ज़रीए से इल्म की बातें मा'लूम हो जाती हैं इस का इन्सिदाद हो जाएगा।”

रखता है, लिहाजा वोह कौम में से बेहतरीन शख्स होना चाहिये। इसी तरह ज़ाहिरी तौर पर हृदय और नजासत से भी पाक होना ज़रूरी है क्योंकि इस पर सिर्फ़ वोही आगाह हो सकता है। अगर नमाज़ के दौरान याद आए कि वोह बे वुजू था या उस की हवा ख़ारिज हुई तो शर्म नहीं करनी चाहिये बल्कि अपने करीबी शख्स को हाथ से पकड़ कर उसे नमाज़ में अपना ख़लीफ़ा बना दे। कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दौराने नमाज़ जनाबत याद आई तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने किसी को ख़लीफ़ा बना कर गुस्ल फ़रमाया फिर वापस तशरीफ़ ला कर नमाज़ में शामिल हो गए।⁽¹⁾

किन् की इक्तिदा में नमाज़ जाइज़ नहीं ?

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “हर नेक व बद के पीछे नमाज़ पढ़ लो मगर शराब के अ़दी, अ़लानिया गुनाह करने वाले, वालिदैन् के नाफ़रमान, बिदअती या भागे हुए गुलाम के पीछे न पढ़ो।⁽²⁾ (3)

﴿5﴾.....जब तक सफ़ें बराबर न हो जाएं तक्बीर (तहरीमा) न कहे बल्कि दाएं बाएं देख ले अगर कोई ख़लल पाए तो सफ़ें बराबर करने का हुक्म दे। अस्लाफ़े किराम के बारे में मन्कूल है कि वोह कन्धों को बराबर रखते और एड़ियों को मिलाते। जब तक मुअज़्ज़िन इक़ामत से फ़ारिग़ न हो इमाम तक्बीर न कहे।

अज़ान व इक़ामत के दरमियान कितना वक़फ़ हो ?

मुअज़्ज़िन अज़ान के इतनी देर बा'द इक़ामत कहे कि लोग नमाज़ की तय्यारी कर लें। क्योंकि हदीषे मुबारका में है कि “मुअज़्ज़िन अज़ान व इक़ामत के दरमियान इतनी देर ठहरे

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب فی الجنب یصلی.....الخ، الحدیث: ۲۳۳، ج ۱، ص ۱۱۱، مفهوماً۔

②.....बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़ह 562 पर है : वोह बद मज़हब जिस की बद मज़हबी हद्दे कुफ़्र को पहुंच गई हो, जैसे राफ़िज़ी अगर्चे सिर्फ़ सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की ख़िलाफ़त या सोहबत से इन्कार करता हो, या शैख़ैन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا की शाने अक्द्स में तबरा कहता हो। क़दरी, जहमी, मिशबा और वोह जो कुरआन को मख़्लूक बताता है और वोह जो शफ़ाअत या दीदारे इलाही या अज़ाबे क़ब्र या किरामन कातिबीन का इन्कार करता है, उन के पीछे नमाज़ नहीं हो सकती। (عالمگیری عَزَّوَجَلَّ) इस से सख़्त हुक्म वहाबियए ज़माना का है कि **अबलू** عَزَّوَجَلَّ व नबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तौहीन करते या तौहीन करने वालों को अपना पेशवा या कम अज़ कम मुसलमान ही जानते हैं। मज़ीद सफ़ह 568 पर नक्ल फ़रमाते हैं : बद मज़हब कि जिस की बद मज़हबी हद्दे कुफ़्र को न पहुंची हो और फ़ासिके मुअलिन जैसे शराबी, जूआरी, ज़िनाकार, सूद ख़ोर, चुग़ल ख़ोर, वग़ैरहुम जो कबीरा गुनाह बिल ए'लान करते हैं, उन को इमाम बनाना गुनाह और उन के पीछे नमाज़ मकरूहे तहरीमी वाजिबुल इअ़दा।

③.....تذکرة الحفاظ، الطبقة الخامسة، الجزء الاول، ج ۱، ص ۵۳، باختصار۔

कि खाना खाने वाला खाने से और इस्तिन्जा वगैरा करने वाला अपनी हाजत से फ़ारिग़ हो जाए।”⁽¹⁾ क्यूंकि हुजूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक ﷺ ने बोलो बराज (या’नी पेशाब पाखाना) की शिद्दत में नमाज़ से मन्अ़ फ़रमाया और रात का खाना इशा से पहले खाने का हुक्म फ़रमाया।⁽²⁾ ताकि दिल फ़ारिग़ हो (और खुशूअ़ व खुजूअ़ हासिल हो)।

﴿6﴾.....इमाम तक्बीरे तहरीमा और तमाम तक्बीरात बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक्त्तदी इतनी आवाज़ में कहे कि खुद सुन ले। नीज़ हुसूले षवाब के लिये इमाम इमामत की निय्यत करे, कि अगर उस ने इमामत की निय्यत न की तब भी उस की नमाज़ हो जाएगी और लोगों ने उस की इक्त्तदा की निय्यत की तो उन की नमाज़ भी हो जाएगी और वोह जमाअ़त की फ़ज़ीलत पा लेंगे मगर इमाम को इमामत की फ़ज़ीलत हासिल न होगी। मुक्त्तदी तक्बीर, इमाम के तक्बीर कह लेने के बा’द शुरूअ़ करे।

दूसरी फ़स्ल : **किराअत में इमाम की निम्नोदारी**

किराअत के सिलसिले में इमाम पर तीन बातें लाज़िम हैं :

﴿1﴾.....तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले की तरह षना और तअव्वुज़ (या’नी بِسْمِ اللَّهِ نِیْज़ِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ) आहिस्ता पढ़े और फ़ज़्र की पूरी नमाज़ में और मग़रिब व इशा की पहली दो रक्अ़तों में सूरए फ़ातिहा और इस के बा’द वाली सूरत बुलन्द आवाज़ से पढ़े। मुन्फ़रिद भी इसी तरह क़िराअत करे।⁽³⁾ नीज़ इमाम व मुक्त्तदी जहरी नमाज़ों में बुलन्द आवाज़ से आमीन कहे।⁽⁴⁾ मुक्त्तदी आमीन इमाम के साथ कहे इस के बा’द न कहे। بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में रिवायात मुख़लिफ़ हैं। हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی ने बुलन्द आवाज़ से पढ़ने को इख़्तियार फ़रमाया।⁽⁵⁾

①.....سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء فی الترسّل فی الاذان، الحديث: ۱۹۵، ج ۱، ص ۲۳۹، مفهوماً۔

②.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب کراهة الصلاة فی ثوب له اعلام، الحديث: ۶۴، ص ۲۸۰۔

③.....अहनाफ़ के नज़दीक : जहरी नमाज़ों में मुन्फ़रिद (तन्हा नमाज़ पढ़ने वाले) को इख़्तियार है (कि आहिस्ता पढ़े या बुलन्द आवाज़ से) और अफ़ज़ल जहर है जब कि अदा पढ़े और जब क़ज़ा है तो आहिस्ता पढ़ना वाजिब है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 545)

④.....अहनाफ़ के नज़दीक : तमाम नमाज़ों में इमाम व मुक्त्तदी और मुन्फ़रिद आमीन आहिस्ता कहेंगे।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 545)

⑤.....अहनाफ़ के नज़दीक : بِسْمِ اللَّهِ आहिस्ता पढ़ना सुन्नत है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1 स. 523)

﴿2﴾.....इमाम क़ियाम में तीन सक्ते करे हज़रते सय्यिदुना समूरा बिन जुन्दब और हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हसीन (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से इसी तरह रिवायत किया।⁽¹⁾

(1)....तकबीरे तहरीमा के वक़्त : येह सब से तवील सक्ता है और इतनी देर है कि मुक़्तदी सूरए फ़ातिहा पढ़ लें और येह घना पढ़ने का वक़्त है क्यूंकि अगर इमाम इस वक़्त सक्ता न करेगा तो मुक़्तदियों का सुनना फ़ौत हो जाएगा और उन की नमाज़ों में जो कमी रह जाएगी उस का वबाल इमाम पर आएगा। अगर इस सक्ते के दौरान मुक़्तदी फ़ातिहा न पढ़ें बल्कि किसी दूसरी तरफ़ मशगूल रहें तो येह उन की कोताही होगी न कि इमाम की।⁽²⁾

(2).....दूसरा सक्ता उस वक़्त करे जब सूरए फ़ातिहा की क़िराअत से फ़ारिग़ हो जाए ताकि जिस ने पहले सक्ते में सूरए फ़ातिहा नहीं पढ़ी वोह अब पढ़ ले और येह पहले सक्ते का निस्फ़ है।

(3).....तीसरा सक्ता सूरत की क़िराअत के बा'द रुकूअ़ से पहले करे, इस की मिक़दार सब से कम है और येह इतना ही है कि क़िराअत को तकबीर से जुदा कर दे क्यूंकि क़िराअत को तकबीरे रुकूअ़ के साथ मिलाने से मन्अ़ किया गया है। नीज़ मुक़्तदी इमाम के पीछे फ़ातिहा के इलावा कुछ न पढ़े।⁽³⁾ अगर इमाम सक्ता न करे तो मुक़्तदी उस के साथ ही सूरए फ़ातिहा पढ़ ले इस में कुसूरवार इमाम होगा। अगर मुक़्तदी जहरी नमाज़ में दूर होने की वजह से न सुन सके या सिरी नमाज़ पढ़ रहा हो तो मुक़्तदी के सूरत पढ़ने में कोई हरज नहीं।

﴿3﴾....नमाज़े फ़ज्र में इमाम 100 से कम आयात वाली दो सूरतें पढ़े क्यूंकि फ़ज्र की क़िराअत को लम्बा करना और इसे अंधेरे में पढ़ना सुन्नत है जब कि रोशनी में नमाज़ से फ़ारिग़ होने में कोई हरज नहीं, दूसरी रक़अ़त में सूरतों के आख़िर से 20-30 आयात पढ़ने में भी कोई हरज नहीं और येह आयात सूरतों के आख़िर से पढ़े क्यूंकि आख़िरी आयात (अवामुन्नास के) कानों में बारबार नहीं पड़ती, इस लिये वा'ज़ में ज़ियादा अषर रखती और ग़ौरो फ़िक़्र को ज़ियादा दा'वत

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث سمرة بن جندب، الحديث: ٢٠١٠٢، ج ٤، ص ٢٢٨، بتصريح "سكتان"۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون في كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥١۔

②अहनाफ़ के नज़दीक : चूंकि मुक़्तदी के लिये क़िराअत करना जाइज़ नहीं न फ़ातिहा न कोई और सूरत लिहाज़ा येह सक्ता न किया जाए।

③अहनाफ़ के नज़दीक : इमाम जब क़िराअत करे बुलन्द आवाज़ से हो ख़्वाह आहिस्ता, उस वक़्त मुक़्तदी का चुप रहना वाजिब है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 519)

देती हैं। बा'ज उ-लामए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने सूरतों के आगाज से कुछ पढ़ने और बाकी को छोड़ देने को मकरूह करार दिया है। हालांकि ऐसा नहीं है क्योंकि मरवी है कि “हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सूरए यूनुस का कुछ हिस्सा पढ़ा। जब हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और फ़िरऔन के ज़िक्र पर पहुंचे तो क़िराअत मुन्क़तेअ कर दी और रुकूअ में चले गए।⁽¹⁾ नीज़ येह भी मरवी है कि नमाज़े फ़त्र में सूरए बकरह की येह आयत :

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٠﴾ (البقرة: ١٣٠)

पढ़ी और दूसरी रकअत में सूरए आले इमरान की येह आयत पढ़ी :

”رَبَّنَا آمَنَّا بِأَنَّكَ أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾ (آل عمران: ५३)“⁽²⁾

नीज़ हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को सुना कि वोह कहीं कहीं से पढ़ते। उन से इस के मुतअल्लिक पूछा तो उन्होंने ने अर्ज की : “मैं तय्यिब को तय्यिब से मिलाता हूं।” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम ने अच्छा किया।”⁽³⁾

नमाज़े ज़ोहर में तवाले मुफ़स्सल (सूरए हुजुरात से सूरए बुरूज तक) में से तीस आयात की तिलावत करे। अस्स में इस का निस्फ़ (या'नी अवसाते मुफ़स्सल जो सूरए बुरूज से لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ तक है) पढ़े। मगरिब में क़सारे मुफ़स्सल (لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ से आख़िर तक) पढ़े।

सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आख़िरी नमाज़ :

रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आख़िरी नमाज़ मगरिब की पढ़ी, इस में आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने सूरए मुर्सलात की तिलावत की, इस के बा'द कोई नमाज़ न पढ़ी।⁽⁴⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون في كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥٢-

صحيح البخارى، كتاب الاذان، باب الجمع بين السورتين.....الخ، ج ١، ص ٢٤٣-

②.....سنن ابى داود، كتاب التطوع، باب فى تخفيفها، الحديث: ١٢٦٠، ج ٢، ص ٣١-

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون في كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥٢-

سنن ابى داود، كتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءة.....الخ، الحديث: ١٣٣٠، ج ٢، ص ٥٥، مفهوماً-

④.....صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب القراءة فى الصبح، الحديث: ٢٤٣، ج ١، ص ٢٢١-

खुलाशए कलाम :

नमाज़ मुख़्तसर पढ़ना बेहतर है खुसूसन जब लोग ज़ियादा हों। मुख़्तसर पढ़ने की दलील येह है कि सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम में से कोई लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो मुख़्तसर पढ़ाए क्यूंकि इन में कमज़ोर, बुढ़े और काम काज वाले भी होते हैं और जब खुद नमाज़ पढ़े तो जो जितनी चाहे लम्बी पढ़े।” (1)

हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने नमाज़े इशा पढ़ाते हुए सूरए बक़रह की तिलावत की तो एक शख्स ने अ़लाहिदा हो कर नमाज़ मुकम्मल की तो लोग कहने लगे कि येह मुनाफ़ि़क़ हो गया है। उस ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर शिकायत की तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना मुअज़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को तम्बीह करते हुए इरशाद फ़रमाया : “ऐ मुअज़ ! क्या लोगों को फ़ितने में डालना चाहते हो, سُورَةُ اَعْلٰی, وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا, और سُورَةُ طَارِق पढ़ा करो।” (2)

तीसरी फ़स्ल : **अरकानों नमान में इमाम व मुक़्तदी की ज़िम्मेदारियां**

नमाज़ के अरकान में इमाम व मुक़्तदी पर तीन ज़िम्मेदारियां आइद होती हैं :

﴿1﴾....इमाम को चाहिये कि रुकूअ व सुजूद मुख़्तसर करे कि तीन तस्बीहात से ज़ाइद न कहे। क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं कि “मैं ने सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नमाज़ से बढ़ कर किसी की नमाज़ को मुकम्मल और मुख़्तसर नहीं देखा।” (3)

येह भी मरवी है कि हज़रते अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अमीरे मदीना हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيزِ के पीछे नमाज़ पढ़ी तो फ़रमाया : “मैं ने सिवाए उस नौजवान के किसी शख्स के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी जिस की नमाज़ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की नमाज़ के ज़ियादा मुशाबेह हो।” (4)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से येह भी मरवी है कि हम उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيزِ के पीछे (रुकूअ व सुजूद में) दस दस बार तस्बीह पढ़ लेते थे।

1.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب امر الأئمة بتخفيف.....الخ، الحديث: 183-186، ص 242-

2.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب القراءة فی العشاء، الحديث: 188، ص 242، بتقدم وتأخر-

3.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب امر الأئمة بتخفيف الصلاة.....الخ، الحديث: 189، ص 242-

4.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مقدار الركوع والسجود، الحديث: 888، ج 1، ص 334، بتقدم وتأخر-

एक मुजमल रिवायत में है कि सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ फ़रमाते हैं : “हम हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ते तो रुकूअ व सुजूद में दस दस बार तस्बीह पढ़ लिया करते थे ।”⁽¹⁾

दस दस बार तस्बीहात पढ़ना अच्छा है लेकिन जब मजमअ कपीर हो तो तीन बार तस्बीह पढ़ना ज़ियादा बेहतर है । नीज़ जब मुक़्तदी ऐसे लोग हों जिन्होंने ने खुद को दीन के लिये वक्फ़ कर रखा है तो दस दस बार तस्बीहात पढ़ने में कोई हरज नहीं । येह मुख़्तलिफ़ रिवायात में ततबीक है । रुकूअ से सर उठाते हुए इमाम को “سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهُ” कहना चाहिये ।

﴿2﴾.....दूसरी ज़िम्मेदारी मुक़्तदी की है । उसे चाहिये कि रुकूअ व सुजूद में इमाम के बराबर खड़ा न हो बल्कि उस के पीछे खड़ा हो । मुक़्तदी सजदे के लिये उस वक़्त झुके जब इमाम की पेशानी जाए सजदा पर पहुंच जाए कि सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ हुजूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इक़्तिदा में इसी तरह नमाज़ पढ़ते थे ।⁽²⁾

नीज़ मुक़्तदी रुकूअ के लिये उस वक़्त झुके जब इमाम रुकूअ में बराबर हो जाए ।

बा ए'तिबारे षवाब लोगों की नमाज़ :

मन्कूल है कि लोग (बा ए'तिबारे षवाब) तीन अक़्साम में नमाज़ से फ़ारिग़ होते हैं :
(1).....एक गुरौह पच्चीस नमाज़ों के (षवाब के) साथ नमाज़ से निकलता है । येह वोह लोग हैं जो इमाम के बा'द रुकूअ व सुजूद करते हैं । (2).....एक गुरौह एक नमाज़ के साथ फ़ारिग़ होता है । येह वोह लोग हैं जो इमाम की बराबरी करते हैं । (3).....एक गुरौह बिग़ैर (कोई षवाब पाए) नमाज़ से निकलता है । येह वोह लोग हैं जो (रुकूअ व सुजूद वग़ैरा में) इमाम से सबक़्त ले जाते हैं ।

इमाम का किसी आने वाले के लिये रुकूअ को तुल देना :

किसी आने वाले के लिये इमाम का रुकूअ को लम्बा कर देना ताकि वोह जमाअत और तक्बीरे ऊला की फ़ज़ीलत को पा ले जाइज़ है या नहीं इस में इख़्तिलाफ़ है । बेहतर येही है कि इख़्लास के साथ ऐसा करने में कोई हरज नहीं जब कि मुक़्तदियों पर गिरां न गुज़रे क्यूंकि इन

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مقدار الركوع والسجود، الحديث: ٨٨٨، ج ١، ص ٣٣٤.

②.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب متابعة الامام.....الخ، الحديث: ١٩٤، ص ٢٢٦.

के हक की रियायत यह है कि नमाज़ को तवील न किया जाए।⁽¹⁾

﴿3﴾....तवालत से बचते हुए दुआए तशह्हुद के कलिमात में ज़ियादती न करे। नीज़ दुआ में खुद को ख़ास न करे बल्कि जम्अ के सीगे के साथ यूँ कहे : اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَنَا या'नी ऐ **اللّٰهُ** غُفْرًا हमारी मग़फ़िरत फ़रमा। यूँ न कहे : اغْفِرْ لِي या'नी मेरी मग़फ़िरत फ़रमा। इस की वजह यह है कि इمام का ख़ास अपने लिये दुआ करना मकरूह है। तशह्हुद में इन पांच मस्नून कलिमात को पढ़ने में हरज नहीं :

نَعُوْذُكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَنَعُوْذُكَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ
وَإِذَا أَرَدْتَ بِقَوْمٍ فِتْنَةً فَأَقْبِضْنَا إِلَيْكَ غَيْرَ مَفْتُونٍ فِيهِ

या'नी ऐ **اللّٰهُ** غُفْرًا हम अज़ाबे जहन्नम और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह चाहते हैं, ज़िन्दगी व मौत और मसीहे दज्जाल के फ़ितने से तेरी पनाह चाहते हैं और जब तू किसी कौम को आजमाइश में डालने का इरादा करे तो फ़ितने से महफूज़ रखते हुए हमें मौत दे देना।⁽²⁾

मन्कूल है कि दज्जाल को इस लिये मसीह कहते हैं कि वोह ज़मीन पर बहुत ज़ियादा फ़ासिला तै करेगा या इस की वजह यह है कि वोह काना होगा।

.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ..... اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ.....

.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....

①दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 630 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی नक्ल फ़रमाते हैं : इمام का किसी आने वाले की ख़ातिर नमाज़ को तूल देना मकरूहे तहरीमी है, अगर इस को पहचानता हो और इस की ख़ातिर मद्दे नज़र हो और अगर नमाज़ पर इस की इआनत के लिये बक़दरे एक या दो तस्बीह के तूल दिया तो कराहत नहीं।

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فی کتاب حکم الامام.....الخ، ج ۲، ص ۳۵۳، بالفاظ قریب۔

سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة ص، الحدیث: ۳۲۴۳، ج ۵، ص ۱۵۹۔

चौथी फ़स्ल : अलाम फेरने के बा'द इमाम की ज़िम्मेदारी

नमाज़ से ख़ारिज होते वक़्त इमाम पर तीन ज़िम्मेदारियां आइद होती हैं :

- ﴿1﴾....दोनों सलाम फेरते वक़्त मुक़्तदियों और फ़िरिश्तों को सलाम करने की निय्यत करे ।
- ﴿2﴾....सलाम फेरने के बा'द कुछ देर वहीं ठहरे कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ऐसा ही करते थे । फिर नफ़ल नमाज़ दूसरे मक़ाम पर पढ़े । अगर उस की इक्तीदा में औरतें भी हों तो उन के चले जाने के बा'द खड़ा हो । ﴿2﴾
- मशहूर हदीष में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सलाम फेरने के बा'द इस दुआ की मिक्दार ठहरते थे : **اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ** या'नी ऐ **अब्बाह** تُو सलामती अता फ़रमाने वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती है, ऐ इज्जत व जलाल वाले ! तू बरकत वाला है । ﴿3﴾
- ﴿3﴾....सलाम के बा'द जब फिरे तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह हो और इमाम के फिरने से पहले मुक़्तदी का उठना मकरूह है । हज़रते सय्यिदुना त़लहा और हज़रते सय्यिदुना जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के बारे में मरवी है कि उन्होंने ने एक इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ी । जब दोनों ने सलाम फेरा तो इमाम से कहा : “आप की नमाज़ कितनी अच्छी और मुकम्मल है मगर एक चीज़ की कमी है कि जब आप ने सलाम फेरा तो लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह न हुए ।” फिर लोगों से कहा : “तुम्हारी नमाज़ कितनी अच्छी है मगर तुम अपने इमाम के फिरने से पहले फिर गए ।” ﴿4﴾
- फिर इमाम दाएं बाएं जिधर चाहे फिर जाए । अलबत्ता दाईं तरफ़ फिरना ज़ियादा अच्छा है । येह तमाम नमाज़ों के अहम मसाइल हैं ।

①.....صحيح البخارى، كتاب الاذان، باب مكث الامام فى صلاة.....الخ، الحديث: ٨٢٩، ج ١، ص ٢٩٥۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فى كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥٨، مفهوماً۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فى كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥٨۔

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث والاربعون فى كتاب حكم الامام.....الخ، ج ٢، ص ٣٥٤۔

नमाजे फ़त्र में दुआए कुनूत

नमाजे फ़त्र में कुनूत का इजाफ़ा करे।⁽¹⁾ फिर इमाम यूं कहे : **اللَّهُمَّ اهْدِنَا يَا نِي** ऐ **اللَّهُمَّ اهْدِنَا** मुझे हिदायत अता फ़रमा। यूं न कहे : **اللَّهُمَّ اهْدِنِي** या'नी ऐ **اللَّهُمَّ اهْدِنِي** मुझे हिदायत अता फ़रमा। मुक्तदी आमीन कहे। जब इमाम येह कलिमात : **يَا نِي تَقْضِي وَلَا تُقْضَى عَلَيْكَ** या'नी बेशक तू फैसला करता है और तेरे ख़िलाफ़ कोई फैसला नहीं कर सकता" कहे तो मुक्तदी आमीन न कहे क्यूंकि येह षना है, लिहाज़ा इस के साथ या तो येही अल्फ़ाज़ कहे या यूं कहे : **يَا نِي هَذَا** या'नी हां ! और मैं इस पर गवाहों में से हूं। या कहे : **يَا نِي هَذَا** या'नी तू सच्चा और नेकूकार है। या इस जैसे दीगर अल्फ़ाज़ कहे। **कुनूत में हाथ उठाने के मुतअल्लिक़ हदीषे पाक मरवी है।⁽²⁾**

और जब हदीष सहीह हो तो हाथ उठाना मुस्तहब होगा अगर्चे येह तशहहद में मांगी जाने वाली दुआओं के ख़िलाफ़ है क्यूंकि तशहहद की दुआ के सबब हाथ नहीं उठाए जाते बल्कि इस में हाथ रखने पर ए'तिमाद है। इन दोनों सूरतों में फ़र्क़ है इस लिये कि तशहहद में हाथों को मख़सूस तरीक़े पर रानों पर रखना है और यहां इस के लिये कोई तरीक़ा मुकर्रर नहीं तो मुमकिन है कि कुनूत में हाथ उठाने का तरीक़ा मुकर्रर हो क्यूंकि येह दुआ के लाइक़ है।

मज़क़ूरा तमाम उमूर इमामत के आदाब से मुतअल्लिक़ हैं। **اللَّهُمَّ اهْدِنَا** ही तौफीक़ देने वाला है।



①अहनाफ़ के नज़दीक : वित्र के सिवा किसी और नमाज़ में कुनूत पढ़ने का हुक्म।

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 657 पर सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक्ल फ़रमाते हैं : वित्र के सिवा और किसी नमाज़ में कुनूत न पढ़े। हां अगर हादिषए अजीमा वाक़ेअ हो तो फ़त्र में भी पढ़ सकता है और ज़ाहिर येह है कि रुकूअ के कब्ल कुनूत पढ़े।

②.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب رفع اليدين في القنوت، الحديث: 3135، ج 2، ص 299۔

बाब नम्बर 5 : जुमुअतुल मुबारक का बयान (इस में चार फ़स्लें हैं)

जुमुआ के फज़ाइल, आदाब, सुन्नतें और शराइत

पहली फ़स्ल : जुमुआ की फज़ीलत

जान लीजिये कि येह अज़ीम दिन है। इस के ज़रीए **अल्लाह** عزّ وجلّ ने इस्लाम को इज्जत बख़्शी और इसे मुसलमानों के साथ खास किया। **अल्लाह** तआला कुरआने मजीद, फुरकाने हमीद में इरशाद फ़रमाता है :

إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ
(پ ۲۸، الجمعة: ۹)

तर्जमए कज़ुल ईमान : जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ के दिन तो **अल्लाह** के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ों और ख़रीदो फ़रोख़ छोड़ दो।

अल्लाह عزّ وجلّ ने दुन्यवी उमूर में मशगूल होने को और हर उस काम को ह़राम ठहराया जो जुमुआ की तरफ़ कोशिश से रोकता है।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عزّ وجلّ ने तुम पर इस दिन और इस मक़ाम पर जुमुआ फ़र्ज फ़रमाया।” (1)

बिला उज़्रे शरई जुमुआ न पढ़ने का वबाल :

एक रिवायत में है कि **अल्लाह** عزّ وجلّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने बिला उज़्रे (शरई) तीन जुमुए तर्क किये **अल्लाह** عزّ وجلّ उस के दिल पर मोहर लगा देता है।” (2)

एक रिवायत में है कि “ऐसे शख्स ने इस्लाम को पसे पुश्त डाल दिया।” (3)

एक शख्स हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللہ تعالیٰ عَنْهُمَا के पास किसी मरने वाले के मुतअल्लिक येह पूछने के लिये हाज़िर हुवा कि वोह नमाज़े जुमुआ और बा जमाअत नमाज़ नहीं पढ़ता था तो आप رَضِيَ اللہ تعالیٰ عَنْهُ ने फ़रमाया : “वोह जहन्नम में जाएगा।” वोह पूरा महीना आप के पास आ कर उस के मुतअल्लिक पूछता रहा और आप येही जवाब देते रहे कि वोह जहन्नम में जाएगा।

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة.....الخ، باب في فرض الجمعة، الحديث: ۱۰۸۱، ج ۲، ص ۵، بتقديم وتأخر۔

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند المكيين، حديث ابى الجعد الضمري، الحديث: ۱۵۲۹۸، ج ۵، ص ۲۸۰۔

③.....مجمع الزوائد، كتاب الصلاة، باب فيمن ترك الجمعة، الحديث: ۳۱۷۷، ج ۲، ص ۲۲۲۔

हदीषे पाक में है कि “बेशक तौरात व इन्जील वालों को जुमुआ का दिन अता किया गया तो उन्होंने ने इस में इख़िलाफ़ किया और इस से मुंह मोड़ लिया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उसे इस उम्मत के लिये मुअख़्ख़र किया और इसे इन के लिये ईद बनाया। पस येह उम्मत सब लोगों से सबक़त वाली है और तौरात व इन्जील वाली उम्मतें इस के ताबेअ हैं।”⁽¹⁾

यौमुल मज़ीद :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام हथेली में सफ़ेद आईना लिये मेरे पास हाज़िर हुए और कहा : “येह जुमुआ है जो आप पर आप के रबब ने फ़र्ज फ़रमाया है ताकि येह आप के लिये और आप के बा’द आप की उम्मत के लिये ईद बन जाए।” मैं ने पूछा : “इस में हमारे लिये क्या है ?” तो उन्होंने ने बताया कि इस में आप के लिये एक भलाई वाली घड़ी है⁽²⁾, जिस ने इस में ऐसी भलाई की दुआ की जो उस की क़िस्मत में थी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ वोह उसे अता फ़रमाएगा या उस की क़िस्मत में नहीं तो इस से बड़ी चीज़ उस के लिये जम्अ की जाएगी। या इस ने ऐसी बुराई से पनाह मांगी जो उस के लिये लिख दी गई है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे इस से बड़ी बुराई से पनाह अता फ़रमाएगा और येह हमारे नज़दीक तमाम दिनों का सरदार है, और आख़िरत में हम इसे यौमुल मज़ीद (या’नी ज़ियादा षवाब का दिन) के नाम से पुकारेंगे।” मैं ने पूछा : “इस की क्या वजह है ?” तो उन्होंने ने कहा : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में एक वादी बनाई है जो सफ़ेद मुश्क से ज़ियादा खुशबूदार है, जब जुमुआ का दिन होगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इल्लिय्यीन से अपनी शायाने शान कुर्सी पर नुज़ूल फ़रमाएगा और लोगों के लिये अपनी तजल्ली ज़ाहिर फ़रमाएगा यहां तक कि लोग उस के दीदार से मुशरफ़ होंगे।”⁽³⁾

①.....صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب فرض الجمعة، الحديث: ۸۷۶، ج ۲، ص ۳۰۳، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فيه کتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۱۷۔

②.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान میرआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 319 पर इस के तहूत फ़रमाते हैं : वोह साअत क़बूलिय्यते दुआ की है रात में रोज़ाना वोह साअत आती है मगर दिनों में सिर्फ़ जुमुआ के दिन, यकीनन नहीं मा’लूम कि वोह साअत कब है। ग़ालिब येह है कि दो ख़ुतबों के दरमियान या मग़रिब से कुछ पहले।

③ قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فيه کتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۱۷۔

मक्की मदनी सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेहतरीन दिन जिस पर सूरज तुलूअ होता है, जुमुआ का दिन है। इसी दिन हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को पैदा किया गया। इसी दिन इन्हें जन्नत में दाख़िल किया गया। इसी दिन इन्हें ज़मीन पर उतारा गया। इसी दिन इन की तौबा क़बूल की गई। इसी दिन इन का विसाल हुवा। इसी दिन क़ियामत का इम होगी⁽¹⁾ और यह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक यौमुल मज़ीद (या'नी ज़ियादा षवाब का दिन) है। आस्मान में फ़िरिश्ते इसे इसी नाम से पुकारते हैं और यह जन्नत में दीदारे खुदावन्दी का दिन है।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हर जुमुआ के दिन छे लाख लोगों को जहन्नम के अज़ाब से नजात अता फ़रमाता है।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जुमुआ का दिन सलामती से गुज़र जाए तो तमाम दिन सलामती से गुज़रते हैं।”⁽⁴⁾

एक रिवायत में है कि “बेशक हर रोज़ ज़वाल से पहले सूरज के आस्मान पर ठहरने के वक़्त जहन्नम को झोंका जाता है लिहाज़ा इस वक़्त नमाज़ न पढ़ो। हां ! जुमुआ के दिन पढ़ लो क्योंकि यह तमाम नमाज़ का वक़्त है और इस दिन जहन्नम को नहीं झोंका जाता।”⁽⁵⁾

①.....मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 2 स. 319 पर है : पहले भी बड़े बड़े वाक़िआत इस दिन में हुए और आयन्दा निहायत अहम और संगीन वाक़िआ वुकूए क़ियामत का इसी दिन होगा। इस लिये यह दिन बड़ी अज़मत वाला है। ख़याल रहे कि आदम عَلَيْهِ السَّلَام का जन्नत में जाना भी **अब्बाह** की रहमत थी और वहां से तशरीफ़ लाना भी क्यूंकि वहां सीखने गए थे यहां सिखाने और ख़िलाफ़त करने आए। इस से मा'लूम हुवा कि जिस दिन में दीनी अहम वाक़िआत हो चुके हों वोह दिन ता क़ियामत अफ़ज़ल हो जाता है और इस दिन में खुशियां मनाना इबादतें करना बेहतर होता है देखो माहे रमज़ान व शबे क़द्र इस लिये अफ़ज़ल हैं कि इन में कुरआन शरीफ़ नाज़िल हुवा। मुसलमानों का अक़ीदा है कि शबे विलादत शबे मे'राज वग़ैरा बहुत अफ़ज़ल रातें हैं इन में इबादत करना खुशियां मनाना बेहतर है इस का माख़ज़ येह हदीष है।

②.....صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب فضل يوم الجمعة، الحديث: 14، ص 225، باختصار۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج 1، ص 116، بتقدم وتأخر۔

③.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى الصلوات، فضل قراءة سورة الكهف.....الخ، الحديث: 114، ج 3، ص 114۔

④.....شعب الايمان للبيهقى، باب فى الصيام، فصل فى ليلة القدر، الحديث: 340، ج 3، ص 340۔

⑤.....سنن ابى داود، كتاب الصلاة، باب الصلاة يوم الجمعة قبل الزوال، الحديث: 1083، ج 1، ص 403، مفهوماً۔

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शहरों में मक्कए मुकर्रमा رَاحَهَا اللهُ شَرْفًاوَتَعْظِيمًا को, महीनों में माहे रमज़ानुल मुबारक को, दिनों में जुमुआ को और रातों में शबे क़द्र को फ़ज़ीलत बख़्शी ।”(1)

नीज़ मन्कूल है कि “जुमुआ के दिन परन्दे और कीड़े मकोड़े एक दूसरे से मिल कर कहते हैं : सलामती हो, सलामती हो येह उम्दा दिन है ।”(2)

जुमुआ के दिन मरने की फ़ज़ीलत :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस शख़्स का जुमुआ के दिन या जुमुआ की रात इन्तिक़ाल हो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये शहीद का अन्न लिखता और उसे अज़ाबे क़ब्र से महफूज़ रखता है ।”(3) (4)

.....ईशाले षवाब क़ इन्तिज़ार.....

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे मुश्कबार है : “मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ उस को पहुंचे और जब किसी की दुआ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या व माफ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मुतअल्लिक़ीन की तरफ़ से हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) किया हुवा षवाब पहाड़ों की मानिन्द अता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या मुर्दों के लिये दुआए मग़फ़िरत करना है ।” (شعب الایمان، الحديث: ٤٩٠٥، ج ١، ص ٢٠٣)

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١١٤، دون من الليالى ليلة القدر۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١١٤، دون كتب الله له اجر شهيد۔

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٢٦٥٤، ج ٢، ص ٥٩٠۔

شرح الصدور، باب من لايسئل فى القبر، ص ١٥١، دون ليلة الجمعة۔

④.....مिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 328 पर है : जुमुआ की शब या जुमुआ के दिन मरने वाले मोमिन से न हिसाबे क़ब्र हो न अज़ाबे क़ब्र । क्यूँकि इस दिन की मौत शहादत की मौत है और शहीद हिसाब व अज़ाब से महफूज़ है । जैसा कि दीगर रिवायात में है ।

दूसरी फ़स्ल :

जुमुआ की शराइव

जान लीजिये कि नमाज़े जुमुआ की वोही शराइत हैं जो दीगर तमाम नमाज़ों की हैं अलबत्ता येह छे शराइत में दीगर नमाज़ों से मुमताज़ है।

जुमुआ सहीह होने की शराइत :⁽¹⁾

❶.....वक़्त : अगर इमाम ने अ़स् के वक़्त में नमाज़े जुमुआ का सलाम फेरा तो नमाज़े जुमुआ फ़ौत हो गई और इस पर लाज़िम है कि ज़ोहर की चार रक़अतें (क़ज़ा) पढ़े और मस्बूक़ के आख़िरी रक़अत वक़्त के बा'द अदा करने में इख़्तिलाफ़ है।

❷.....मक़ान : सहराओं, मैदानों और ख़ैमों के दरमियान जुमुआ की नमाज़ सहीह नहीं होती बल्कि एक ज़ामेअ जगह का होना ज़रूरी है जहां की बस्ती ग़ैर मन्कूला हो और कम अज़ कम ऐसे 40 आदमियों पर मुश्तमिल हो जिन पर जुमुआ फ़र्ज़ होता हो और इस में देहात शहर की तरह है। बादशाह की मौजूदगी या उस की इजाज़त शर्त नहीं लेकिन उस से इजाज़त लेना पसन्दीदा है।

❸.....ता'दाद : 40 आदमियों से कम के साथ जुमुआ मुन्अकिद नहीं होता और इस के लिये शर्त है कि वोह सब मर्द, मुकल्लफ़, आज़ाद और मुक़ीम हों गर्मी, सर्दी में वहां से दूसरी जगह मुन्तक़िल न होते हों। अगर कम हों कि ख़ुतबा या नमाज़ में ता'दाद पूरी न हो तो जुमुआ की नमाज़ सहीह नहीं, अव्वल ता आख़िर पूरी ता'दाद होना ज़रूरी है।

❹.....जमाअत : अगर चालीस आदमियों ने एक गाउँ या शहर में अ़लाहिदा अ़लाहिदा जुमुआ अदा किया तो इन का जुमुआ सहीह नहीं। लेकिन मस्बूक़ ने जब एक रक़अत पाई तो उस के लिये इनफ़िरादी तौर पर दूसरी रक़अत पढ़ना जाइज़ है। अगर उस ने दूसरी रक़अत का रुकूअ न पाया तो इक्तिदा करे और ज़ोहर की निय्यत करे और जब इमाम सलाम फेर दे तो ज़ोहर की नमाज़ मुकम्मल करे।⁽²⁾

❶.....अह्नाफ़ के नज़दीक : जुमुआ पढ़ने के लिये छे शर्तें हैं कि इन में से एक शर्त भी मफ़कूद हो तो होगा ही नहीं।

(1).....मिस् (शहर) या फ़िनाए मिस् (2).....सुल्ताने इस्लाम या उस का नाइब जिसे जुमुआ काइम करने का हुक्म दिया (3).....वक़ते ज़ोहर (4).....ख़ुतबा (5).....जमाअत या'नी इमाम के इलावा कम से कम तीन मर्द (6).....इज़ने आम। (माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1 हिस्सा. 4, स. 762 ता 770)

नोट : मज़ीद तफ़सील के लिये बहारे शरीअत के मज़कूरा मक़ाम का मुतालआ कीजिये।

❷.....अह्नाफ़ के नज़दीक : जिस ने जुमुआ का का'दा पा लिया या सजदए सहव के बा'द शरीक हुवा उसे जुमुआ मिल गया। लिहाज़ा अपनी दो ही रक़अतें पूरी करे। (बहारे शरीअत, जि. 1 हिस्सा. 4, स.774)

﴿5﴾....उस शहर में किसी और जगह जुमुआ की नमाज़ न पढ़ी गई हो : अगर सब लोगों का एक जामेअ मस्जिद में जम्अ होना मुश्किल हो तो ज़रूरत के मुताबिक़ दो, तीन या चार मस्जिदों में नमाज़ जुमुआ पढ़ सकते हैं और अगर ज़रूरत न हो तो वोही जुमुआ दुरुस्त है जहां सब से पहले निय्यत की गई हो। ज़रूरत की सूरत में बेहतर येह है कि अफ़ज़ल इमाम के पीछे नमाज़ अदा करे। अगर दोनों बराबर हों तो ज़ियादा क़दीम मस्जिद में अदा करे। अगर दोनों मस्जिदें भी बराबर हों तो क़रीबी मस्जिद में पढ़े और लोगों की क़षरत की भी फ़ज़ीलत है इस का भी लिहाज़ रखे। (कि जहां ज़ियादा लोग हों वहां पढ़े)

﴿6﴾....दो ख़ुतबे : येह दोनों फ़र्ज़ हैं। इन में क़ियाम और दोनों के दरमियान बैठना फ़र्ज़ है। पहले ख़ुतबे में चार चीज़ें हैं : (1)....तहमीद इस की कम से कम मिक्दार **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** है। (2)....हुज़ूर नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर दुरूदो सलाम पढ़ना। (3)....**अल्लाह** से डरने की वसिय्यत करना। (4)....कुरआन की एक आयत का पढ़ना। इसी तरह दूसरे ख़ुतबे में भी चार चीज़ें ज़रूरी हैं मगर इस में क़िराअत की जगह दुआ करना है। चालीस आदमियों का ख़ुतबा सुनना वाजिब है।

जुमुआ की सुन्नतें :

जब सूरज ढल जाए, मुअज़्ज़िन अज़ान कह दे और इमाम मिम्बर पर बैठ जाए तो सिवाए तहिय्यतुल मस्जिद के कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकते।⁽¹⁾ ख़ुतबा शुरूअ होने तक कलाम मन्अ नहीं। ख़तीब जब लोगों की तरफ़ मुतवज्जेह हो तो उन्हें सलाम करे⁽²⁾ और लोग सलाम का जवाब दें। जब मुअज़्ज़िन अज़ान से फ़ारिग़ हो तो ख़तीब लोगों की तरफ़ रुख़ कर के खड़ा और दाएं बाएं मुतवज्जेह न हो। खड़े हो कर दोनों हाथ तलवार, असा या मिम्बर पर रखे ताकि कोई लगव काम न कर सके या एक हाथ को दूसरे पर रख ले। दो ख़ुतबे कहे इन के दरमियान मुख़्तसर जल्सा करे। ख़ुतबे में अजनबी अल्फ़ाज़ इस्ति'माल न करे। अल्फ़ाज़ को न ज़ियादा लम्बा करे और न ही गाने के अन्दाज़ में पढ़े। नीज़ ख़ुतबा मुख़्तसर फ़सीह व बलीग़ हो और

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : जब इमाम ख़ुतबे के लिये खड़ा हो उस वक़्त से ख़त्मे नमाज़ तक नमाज़ व अज़ाकर और हर किस्म का कलाम मन्अ है, अलबत्ता साहिबे तरतीब अपनी क़ज़ा नमाज़ पढ़ ले। यूंहीं जो शख्स सुन्नत या नफ़ल पढ़ रहा है जल्द जल्द पूरी कर ले। (बहारे शरीअत, जि. 1 हि. 4, स. 774)

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : ख़तीब के लिये सुन्नत येह है कि सलाम न करे।

दूसरे खुतबे में कोई आयत पढ़े कि मुस्तहब है। खतीब जब खुतबा दे रहा हो तो आने वाला सलाम न करे, अगर सलाम कर दे तो जवाब का मुस्तहिक् नहीं, अलबत्ता इशारे से जवाब देना मुस्तहसुन है और इसी तरह छींकने वाले के जवाब में **يَرْحَمُكَ اللَّهُ** भी न कहा जाए।⁽¹⁾ येह जुमुआ के सहीह होने की शराइत हैं।

जुमुआ वाजिब होने की शराइत :

नमाजे जुमुआ मर्द, अक़िल, बालिग, मुसलमान, आज़ाद और ऐसी बस्ती में मुक़ीम पर वाजिब है जिस में मजकूर सिफ़ात के हामिल 40 आदमी रहते हों या शहर के मुज़ाफ़ात की बस्ती हो जहां अज़ान की आवाज़ पहुंचती हो जब कि शोर न हो और मुअज़्ज़िन की आवाज़ बुलन्द हो। क्योंकि **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ का फ़रमाने आलीशान है :

إِذَا نَادَى لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ
(پ २८، الجمعة: ९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब नमाज़ की अज़ान हो जुमुआ के दिन तो **اللَّهُ** के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ो और ख़रीदो फ़रोख़्त छोड़ दो।

तर्क जुमुआ के पांच आ'ज़ार :

(1)....(तेज़) बारिश (2)....कीचड़ (3)....घबराहट (4)....मरज़ (5)....मरीज़ की इयादत के लिये जुमुआ छोड़ने की रुख़्सत है जब कि कोई और तीमार दारी करने वाला न हो। फिर इन उज़्र वालों के लिये मुस्तहब है कि ज़ोहर की नमाज़ मुअख़्ख़र करें यहां तक कि लोग नमाज़े जुमुआ से फ़ारिग हो जाएं। अगर जुमुआ की नमाज़ में बीमार, मुसाफ़िर, गुलाम या औरत आ जाएं तो इन की नमाज़े जुमुआ सहीह होगी और ज़ोहर के काइम मक़ाम हो जाएगी। **وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالصَّوَابِ**

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

①दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 774 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى नक्ल फ़रमाते हैं : जो चीज़ें नमाज़ में हाराम हैं मषलन खाना-पीना, सलाम व जवाबे सलाम वगैरा येह सब खुतबे की हालत में भी हाराम हैं यहां तक कि अम्र बिल मा'रूफ़, हां, खतीब अम्र बिल मा'रूफ़ कर सकता है, जब खुतबा पढ़े तो तमाम हाज़िरीन पर सुनना और चुप रहना फ़र्ज़ है, जो लोग इमाम से दूर हों कि खुतबे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना वाजिब है, अगर किसी को बुरी बात करते देखें तो हाथ के इशारे से मन्अ कर सकते हैं ज़बान से नाजाइज़ है।

तीसरी फ़स्ल : आदाब की बरतीब के मुताबिक़ आदाबे जुमुआ का बयान
(येह फ़स्ल दस उमूर पर मुश्तमिल है)

﴿1﴾....जुमा' रात से जुमुआ की तय्यारी करना :

(नमाज़े जुमुआ पढ़ने वाला) जुमुआ की तय्यारी के अज़म और इस की फ़ज़ीलत के इस्तिफ़ाल के तौर पर जुमा'रात को ही तय्यारी शुरू कर दे । जुमा'रात को नमाज़े अस्र के बा'द दुआ व इस्तिफ़ार और तस्बीह में मशगूल हो जाए । क्यूंकि येह जुमुआ के दिन की मक्बूल घड़ी के मुक़ाबिल का वक़्त है ।

बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْعَبِيدُ फ़रमाते हैं : “बन्दों की रोज़ी के इलावा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़ीद फ़ज़ल फ़रमाता है और येह फ़ज़ल वोह उसी को अता फ़रमाता है जो जुमा'रात की शाम और जुमुआ के दिन सुवाल करे ।”⁽¹⁾

इस दिन अपने कपड़े धोए, इन्हें पाक साफ़ करे, अगर खुशबू मौजूद न हो तो उसे हासिल करे, दिल को उन कामों में मशगूल होने से रोके जो जुमुआ के लिये जल्दी जाने से मानेअ हैं, शबे जुमुआ जुमुआ के दिन का रोज़ा रखने की निय्यत करे क्यूंकि इस की बड़ी फ़ज़ीलत है लेकिन सिर्फ़ जुमुआ का न रखे बल्कि इस के साथ जुमा'रात या हफ़्ता का रोज़ा मिला ले क्यूंकि सिर्फ़ जुमुआ का रोज़ा रखना मकरूह है । शबे जुमुआ इबादत में गुज़ारे क्यूंकि जुमुआ की रात बड़ी फ़ज़ीलत वाली है और इस पर जुमुआ के दिन की फ़ज़ीलत का इज़ाफ़ा सोने पे सुहागा है । शबे जुमुआ या रोज़े जुमुआ बीबी से हम बिस्तरी करे कि बा'ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने इसे मुस्तहब कहा है और इस फ़रमाने मुस्तफ़ा से येही मुराद लिया है । चुनान्वे,

इरशादे गिरामी है कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस शख्स पर रहम फ़रमाए जो (जुमुआ के लिये) पहले आए और जल्दी करे, गुस्ल कराए और खुद गुस्ल करे ।”⁽²⁾ गुस्ल कराने का मतलब येह है कि बीबी के लिये गुस्ल का सबब पैदा करे । (या'नी जिमाअ करे)

एक कौल येह है कि इस का मतलब कपड़े धोना है और येह “गुस्सल” के बजाए तख़फ़ीफ़ के साथ “गुसल” भी मरवी है और “इग़तसल” का मतलब है कि अपने जिस्म को धोए । इस के साथ इस्तिफ़ाले जुमुआ के आदाब मुकम्मल हो जाते हैं और बन्दा उन ग़ाफ़िल लोगों से निकल जाता है कि जब वोह सुब्ह करते हैं तो कहते हैं : “येह कौन सा दिन है ?”

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٠۔

②.....سنن ابى داود، كتاب الطهارة، باب فى الغسل يوم الجمعة، الحديث: ٣٢٥، ج ١، ص ١٥٨۔

बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّيِّئِينَ फ़रमाते हैं : “जुमुआ के दिन ज़ियादा मुकम्मल हिस्से वाला शख्स वोह है जो एक दिन पहले से ही इस का इन्तिज़ार करता और इस की रिआयत करता है और सब से कम हिस्से वाला शख्स वोह है जो सुब्ह के वक़्त कहता है कि येह कौन सा दिन है?” और बा'ज बुजुर्ग तो नमाज़े जुमुआ पाने के लिये जुमुआ की रात भी मस्जिद में गुज़ारते थे।⁽¹⁾

﴿2﴾....तुलूफ़ फ़त्र के बा'द गुस्ल करना :

अगर जल्दी मस्जिद में न जा सके तो इस के क़रीब क़रीब जाना बेहतर है ताकि पाकीज़गी हासिल करने का वक़्त जुमुआ के क़रीब हो। गुस्ल करना बहुत पसन्दीदा है और इस की ताकीद की गई है। बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने हदीष की बिना पर इसे वाजिब क़रार दिया है।

गुस्ले जुमुआ के मुतअल्लिक़ रिवायात :

اَبُوهُ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जुमुआ का गुस्ल हर बालिग़ पर वाजिब है।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत किया है कि “जो जुमुआ के लिये आए, उसे चाहिये कि गुस्ल करे।”⁽³⁾

नीज़ हदीषे मुबारका में है कि “जो मर्द व औरत जुमुआ के लिये हाज़िर हो उसे चाहिये कि गुस्ल करे।”⁽⁴⁾

अहले मदीना जब एक दूसरे को बुरा भला कहते तो उन में से एक दूसरे को कहता : “तुम उस शख्स से भी बुरे हो जो जुमुआ के दिन गुस्ल नहीं करता।”⁽⁵⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٤، مفهوماً۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب غسل الجمعة.....الخ، الحديث: ٨٢٦، ص ٢٢٢۔

③.....الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، ذكر الامر بغسل يوم الجمعة.....الخ، الحديث: ١٢٢١، ج ٢، ص ٢٦٢۔

④.....الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، ذكر الاستحباب للنساء.....الخ، الحديث: ١٢٢٣، ج ٢، ص ٢٦٢۔

⑤.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١١٨۔

रोजे जुमुआ गुस्ल न करने का जवाज़ :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ खुतबा दे रहे थे कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हाज़िर हुए तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “(ऐ उषमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ क्या येह (जुमुआ के लिये) आने का वक़्त है ?” तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अर्ज़ की : “मैं ने अज़ान सुनने के बा'द सिर्फ़ वुज़ू किया और चला आया ।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “सिर्फ़ वुज़ू ? हालांकि आप जानते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमें गुस्ल का हुक्म दिया करते थे ।”(1)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के वुज़ू करने से गुस्ल न करने का जवाज़ मा'लूम हो गया । नीज़ इस के मुतअल्लिक़ हदीषे पाक भी मरवी है । चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक़ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो जुमुआ के दिन वुज़ू करे तो ख़ैर और अच्छा किया और जो नहाए तो नहाना बहुत अच्छा है ।”(2)

एक ही निय्यत काफी है :

जुमुआ के दिन गुस्ले जनाबत करने वाला गुस्ले जुमुआ की निय्यत से अपने बदन पर दोबारा पानी बहाए, अगर एक ही गुस्ल पर इक्तिफ़ा किया तब भी काफी है और दोनों गुस्लों की निय्यत कर लेगा तो उसे फ़ज़ीलत हासिल हो जाएगी और गुस्ले जुमुआ गुस्ले जनाबत में दाख़िल हो जाएगा ।

हिक्कयत :- बेटे की तर्बिय्यत :

(जुमुआ के दिन) एक सहाबी अपने बेटे के पास तशरीफ़ लाए वोह गुस्ल किये हुए थे, पूछा : “(ऐ बेटे !) क्या येह जुमुआ का गुस्ल है ?” अर्ज़ की : “नहीं ! गुस्ले जनाबत है ।” तो उन्होंने ने बेटे से फ़रमाया दोबारा गुस्ल करो(3) और हर बालिग़ पर गुस्ले जुमुआ वाजिब होने के मुतअल्लिक़ हदीष बयान फ़रमाई ।(4)

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١١٨ -

صحيح البخارى، كتاب الجمعة، باب فضل الغسل يوم الجمعة.....الخ، الحديث: ٨٤٨، ج ١، ص ٣٠٢ -

②.....سنن ابى داود، كتاب الطهارة، باب فى الرخصة فى ترك الغسل.....الخ، الحديث: ٣٥٢، ج ١، ص ١٦١ -

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١١٩ -

④.....صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب طيب السواد يوم الجمعة، الحديث: ٨٢٦، ص ٢٢٢ -

दोबारा गुस्ल का हुक्म देने की तौजीह :

उन्होंने ने दोबारा गुस्ल का हुक्म इस लिये दिया था कि उन के बेटे ने गुस्ले जुमुआ की निय्यत नहीं की थी। येह कहना बर्इद नहीं कि मक्सूद पाकीज़गी है और वोह निय्यत के बिगैर भी हासिल हो गई थी लेकिन निय्यत न करना वुजू पर ए'तिराज़ का बाइष बनेगा क्यूंकि शरीअत ने निय्यत को षवाब का काम करार दिया है। लिहाज़ा इस की फ़ज़ीलत त़लब करना ज़रूरी है और जिस ने जुमुआ का गुस्ल किया फिर बे वुजू हो गया तो उस का गुस्ल बातिल नहीं होगा सिर्फ़ वोह वुजू कर ले लेकिन इस से बचना ज़ियादा बेहतर है (या'नी गुस्ल के बा'द हत्तल इमकान हदष से बचे)।

﴿3﴾....जीनत इख़्तियार करना :

जुमुआ के दिन जीनत इख़्तियार करना मुस्तहब है। नीज़ येह तीन चीज़ों में मौजूद होती है :

(1)....लिबास (2)....जिस्मानी सफ़ाई और (3)....ख़ुशबू लगाना।

मिस्वाक करना, बाल कटवाना, नाखुन तरशवाना, मूँछें पस्त करना जिस्मानी सफ़ाई में शामिल है। नीज़ किताबुत्तहारत में बयान कर्दा तमाम चीज़ें भी जिस्मानी सफ़ाई में शामिल हैं।

रोज़े जुमुआ नाख़ून तराशने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जो शख्स जुमुआ के दिन नाख़ून काटता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से बीमारी निकाल कर शिफ़ा दाख़िल कर देता है।”⁽¹⁾

अगर जुमा'रात या बुध को हम्माम में जाए तब भी मक्सूद हासिल हो जाता है। पस इस दिन अच्छी ख़ुशबू लगाए जो उस के पास हो ताकि वोह नापसन्दीदा बू पर ग़ालिब आ जाए और करीब बैठे हुए हाज़िरीन के दिमाग़ को भी ख़ुशबू और आराम पहुंचाए।

मर्दों और औरतों की पसन्दीदा ख़ुशबू :

मर्दों की पसन्दीदा ख़ुशबू वोह है जिस की बू ज़ाहिर और रंग पोशीदा हो और औरतों की पसन्दीदा ख़ुशबू वोह है जिस का रंग ज़ाहिर और बू पोशीदा हो। हदीष में इसी तरह मरवी है।⁽²⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج 1، ص 119

②.....سنن ابى داود، كتاب اللباس، باب من كرهه، الحديث: 4084، ج 4، ص 68، مفهوماً.

ग़म दूर और अक्ल में इज़ाफ़ा हो :

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي फ़रमाते हैं : “जो अपना लिबास साफ़ रखे उस के ग़म कम हो जाएंगे और जो खुशबू लगाए उस की अक्ल में इज़ाफ़ा होगा ।”

जहां तक कपड़ों का मुआमला है तो सफ़ेद कपड़े पसन्दीदा लिबास है क्योंकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को सफ़ेद कपड़े पसन्द हैं । लिबासे शोहरत न पहने और काले कपड़े पहनना सुन्नत नहीं और न ही इस में कोई फ़ज़ीलत है बल्कि उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام के एक गुरौह ने काले कपड़े पहनने वाले की तरफ़ देखना भी नापसन्द किया है क्योंकि येह हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बा'द नई ईजाद है । जुमुआ के दिन इमामा बांधना मुस्तहब है ।

जुमुआ के दिन इमामा बांधने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना वाषिला बिन अस्क़अ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ और उस के फ़िरिश्ते जुमुआ के दिन इमामा बांधने वालों पर दुरूद भेजते हैं ।” (1)

अगर गर्मी तंग करे तो (इमामा) नमाज़ से पहले और बा'द उतारने में कोई हरज नहीं लेकिन घर से जुमुआ के लिये जाते हुए, नमाज़ के वक़्त, इमाम के मिम्बर पर चढ़ते वक़्त और खुतबे के वक़्त न उतारे ।

﴿4﴾....जामेअ मस्जिद की तरफ़ जल्दी जाना :

मुस्तहब येह है कि ऐसी जामेअ मस्जिद में जाए जो दो या तीन फ़रसख़ (एक फ़रसख़ आठ किलो मीटर का होता है या'नी 24 किलो मीटर) दूर हो । नीज़ सुब्ह सवेरे या'नी सुब्हे सादिक़ के फ़ौरन बा'द जाए कि इस की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है । जुमुआ के लिये जाते हुए खुशूअ खुजूअ और अज़िज़ी अपनाए । नमाज़ के वक़्त तक मस्जिद में ए'तिकाफ़ की निय्यत से रहे और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से जुमुआ के लिये हाज़िरी की जो निदा आई है उस की तरफ़ और मग़फ़िरत व रिज़ाए इलाही की तरफ़ जल्दी करने का इरादा करे ।

जुमुआ के लिये जल्द आने की फज़ीलत :

सरकारे मदीना, सुलताने बा क़रीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरशादे रहमत बुन्याद है। “(नमाज़े जुमुआ के लिये) पहली साअत में आने वाला उस शख्स की तरह है जो **अब्लाह** की राह में एक ऊंट सदका करता है। दूसरी साअत में आने वाला उस शख्स की तरह है जो एक **गाए** सदका करता है। तीसरी साअत में आने वाला उस शख्स की मिष्ल है जो **मेंढा** सदका करता है। चौथी साअत में आने वाला उस की मिष्ल है जो **मुर्गी** सदका करता है। पांचवीं साअत में आने वाला उस की मिष्ल है जो **अन्डा** सदका करता है और जब इमाम (खुतबे के लिये) बैठ जाता है तो आ'माल नामे लपेट दिये जाते और क़लमें उठा ली जाती हैं और फिरिश्ते मिम्बर के पास जम्अ हो कर ज़िक्र सुनने में मशगूल हो जाते हैं। इस के बा'द जो आया वोह सिर्फ़ हक्के नमाज़ के लिये आया। उस के लिये मज़ीद कोई फ़ज़ीलत नहीं।”⁽¹⁾

पहली साअत तुलूए आफ़ताब तक है। दूसरी साअत सूरज बुलन्द होने तक। तीसरी साअत सूरज की रोशनी फैलने तक है जब पाउं जलने लगें। चौथी और पांचवीं साअत बड़ी चाशत के वक़्त से ज़वाल तक है। इन दोनों की फ़ज़ीलत (पहली तीन की ब निस्बत) कम है और ज़वाल का वक़्त नमाज़ के हक् का वक़्त है, इस में मज़ीद कोई फ़ज़ीलत नहीं।

तीन बेहतरीन अमल :

सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : तीन अमल ऐसे हैं अगर लोग जान लें कि इन में क्या अज़्र है तो इन्हें पाने के लिये ऊंटों पर सुवार हो जाएं : (1)....अज़ान (2)....सफ़े अव्वल और (3).....जुमुआ के लिये जल्दी जाना।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَوَّل फ़रमाते हैं : “इन (या'नी हदीष में मज़कूर तीन आ'माल) में से अफ़ज़ल जुमुआ के लिये जल्दी जाना है।”⁽²⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب الطیب والسواک يوم الجمعة، الحديث: ۸۵۰، ص ۲۲۳، باختصار۔

السنن الکبری للبیہقی، کتاب الجمعة، باب فضل التکبیر الی الجمعة، الحديث: ۵۸۶۴، ج ۳، ص ۳۲۱، مفہومًا۔

②.....فتح الباری لابن رجب، کتاب الجمعة، باب فضل الغسل يوم الجمعة.....الخ، ج ۵، ص ۳۵۷۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فیہ کتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۱۸۔

फिरिश्ते खुश नसीबों के नाम लिखते हैं :

सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना, फैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“जब जुमुआ का दिन आता है तो फिरिश्ते मस्जिदों के दरवाजों पर बैठ जाते हैं, उन के हाथों में चांदी के कागज़ और सोने के कलम होते हैं वोह लिखते हैं कि मर्तबे के ए’तिबार से लोगों में से कौन पहले आया और कौन बा’द में।”(1)

फिरिश्तों की दुआ :

एक रिवायत में है कि “जब कोई शख्स जुमुआ के दिन पीछे रह जाता है और फिरिश्ते उसे नहीं पाते तो एक दूसरे से पूछते हैं : फुलां के साथ क्या हुवा और किस वजह से वोह पीछे रह गया ? फिर दुआ करते हैं : ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ अगर वोह गरीबी की वजह से पीछे रहा तो उसे मालदार कर दे । अगर बीमारी की वजह से पीछे रहा तो उसे शिफ़ायाब फ़रमा । अगर किसी काम में मशगूलियत उस के पीछे रह जाने का सबब बनी तो उसे अपनी इबादत के लिये फुरसत अता फ़रमा । अगर खेल कूद की वजह से पीछे रहा तो उस के दिल को अपनी इताअत की तरफ़ फेर दे ।”(2)

पहली सदी में जुमुआ का जज़्बा :

पहली सदी में सहरी के वक़्त और फ़ज्र के बा’द रास्तों को लोगों से भरा हुवा देखा जाता था वोह चराग़ लिये हुए (नमाज़े जुमुआ के लिये) जामेअ मस्जिद की तरफ़ जाते गोया ईद का दिन हो, हत्ता कि येह सिलसिला ख़त्म हो गया । पस कहा गया कि इस्लाम में जो पहली बिदअत ज़ाहिर हुई वोह जामेअ मस्जिद की तरफ़ जल्दी जाने को छोड़ना है ।(3) अफ़सोस ! मुसलमानों को किसी तरह यहूदो नसारा से हया नहीं आती कि वोह लोग अपनी इबादत गाहों की तरफ़ हफ़्ते और इतवार के दिन सुब्ह सवेरे जाते हैं । नीज़ तलबगाराने दुन्या ख़रीदो फ़रोख़्त और हुसूले नफ़्ए दुन्यवी के लिये सवेरे सवेरे बाज़ारों की तरफ़ चल पड़ते हैं तो आख़िरत तलब करने वाले इन से मुकाबला क्यूं नहीं करते नीज़ मन्कूल है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार के वक़्त सब से ज़ियादा कुर्ब उन लोगों को हासिल होगा जो सवेरे सवेरे नमाज़े जुमुआ के लिये जाते हैं । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ (एक बार रोज़े जुमुआ) सुब्ह सवेरे जामेअ मस्जिद में

①.....روح البيان، الجزء الثامن والعشرون، سورة الجمعة، ج ٩، ص ٥٢٣-

②.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الجمعة، باب فضل التكبير الى الجمعة، الحديث: ٥٨٦٢، ج ٣، ص ٣٢١، مفهوماً-

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٤-

तशरीफ़ लाए तो तीन आदमियों को मौजूद पाया जो जल्दी करने में उन से सबक़त ले गए थे । आप ﷺ ग़मगीन हो गए और अपने नफ़्स को इताब करते हुए कहने लगे : “चार में से चौथा ।” हालांकि चौथा शख़्स जल्दी करने में पीछे रहने वाला नहीं ।

﴿5﴾.....मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब :

मस्जिद में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि लोगों की गर्दन में न फ़लांगे, न उन के सामने से गुज़रे और जल्दी जाना इस बात को आसान कर देगा (कि उसे गर्दन नहीं फ़लांगनी पड़ेगी) नीज़ गर्दन में फ़लांगने के मुतअल्लिक़ हदीषे मुबारका में शदीद वईद वारिद है कि “ऐसे शख़्स को बरोज़े क़ियामत (जहन्नम पर) पुल बनाया जाएगा जिसे लोग रेंदेंगे ।”⁽¹⁾

जुमुआ के दिन लोगों की गर्दन में फ़लांगने पर वईद :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने जुरैज رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, ररुफ़रहीम ﷺ ज़ुमुआ के दिन ख़ुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे कि एक शख़्स को लोगों की गर्दन में फ़लांगते देखा यहां तक कि वोह आगे आ कर बैठ गया । जब आप ﷺ ने नमाज़ मुकम्मल कर ली तो उस शख़्स को दीदार से नवाज़ा और मुलाक़ात का शरफ़ अता करने के बा'द इरशाद फ़रमाया : “ऐ फ़ुलां ! तुम्हें किस चीज़ ने आज हमारे साथ जम्अ होने (या'नी नमाज़े ज़ुमुआ अदा करने) से रोका ?” उस ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ मैं आप के साथ ही तो था । तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “क्या हम ने तुम्हें लोगों की गर्दन में फ़लांगते नहीं देखा ?”⁽²⁾

इस फ़रमान से आप ﷺ ने उस का अमल ज़ाएअ होने की तरफ़ इशारा फ़रमाया ।

एक रिवायत में है कि आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “तुझे हमारे साथ नमाज़ पढ़ने से किस चीज़ ने रोका ?” उस ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ﷺ क्या आप ने मुझे नहीं देखा ?” इरशाद फ़रमाया : “मैं ने देखा कि तुम देर से आए और लोगों को अज़िय्यत पहुंचाई ।”⁽³⁾ या'नी जल्दी आने से पीछे रह गए और हाज़िरीन को तक्लीफ़ दी ।

①.....سنن الترمذی، کتاب الجمعة، باب ماجاء فی کراهیة.....الخ، الحدیث: ۵۱۳، ج ۲، ص ۲۸۔

②.....المعجم الاوسط، باب السین، من اسمه سعید، الحدیث: ۳۶۰۷، ج ۲، ص ۳۸۷، مفهوماً۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب تخطی رقاب الناس يوم الجمعة، الحدیث: ۱۱۱۸، ج ۱، ص ۲۱۳۔

बा'ज अवकात पहली सफ़ ख़ाली होती है। इस सूत्र में बा'द में आने वाले के लिये लोगों की गर्दन फ़लांगना जाइज़ है क्यूंकि उन्होंने ने खुद अपना हक़ ज़ाएअ किया और फ़ज़ीलत की जगह को छोड़ दिया। चुनान्वे, हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “उन लोगों की गर्दन फ़लांगो जो जुमुआ के दिन जामेअ मसाजिद के दरवाज़ों पर बैठते हैं क्यूंकि इन की कोई हुर्मत नहीं।”⁽¹⁾

जब मस्जिद में सिर्फ़ नमाज़ पढ़ने वाले मौजूद हों तो सलाम नहीं करना चाहिये क्यूंकि येह ग़ैरे महल में जवाब का पाबन्द करना है।

﴿6﴾.....हज़िरीन का अ़दब :

लोगों के सामने से न गुज़रे, सुतून या दीवार के क़रीब बैठ जाए ताकि लोग भी उस के सामने से न गुज़रें। मक़सूद येह है कि नमाज़ी के सामने से लोग न गुज़रें। इस से नमाज़ तो नहीं टूटती लेकिन येह ममनूअ है।

नमाज़ी के आगे से गुज़रना गुनाह है :

हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “इन्सान के लिये 40 साल खड़े रहना नमाज़ी के आगे से गुज़रने से बेहतर है।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “इन्सान राख बन जाए जिसे हवाएं इधर उधर फैक दें येह उस से बेहतर है कि वोह नमाज़ी के सामने से गुज़रे।”⁽³⁾

नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाले और रास्ते में नमाज़ पढ़ने वाले या गुज़रने में कोताही करने वाले के मुतअल्लिक़ एक रिवायत में है कि “अगर नमाज़ी के आगे से गुज़रने वाला और इस मक़ाम पर नमाज़ पढ़ने वाला जानता कि इन दोनों पर क्या गुनाह है तो उस के लिये नमाज़ी के आगे से गुज़रने से 40 साल खड़े रहना बेहतर होता।”⁽⁴⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٢ -

②.....صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب اثم المارّين يدي المصلّى، الحديث: ٥١٠، ج ١، ص ١٩٠ -

قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٣، “عاما” بدله “سنة” -

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٣، “عاما” بدله “سنة” -

التمهيد لما فى الموطا من المعانى والمسانيد، ابوالنضر مولى عمر بن عبيد الله، ج ٨، ص ٢٤٨ -

④.....صحيح البخارى، كتاب الصلاة، باب اثم المارّين يدي المصلّى، الحديث: ٥١٠، ج ١، ص ١٩٠ -

قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٣، “دون” بدله “سنة” -

सुतून, दीवार, बिछी हुई जाए नमाज़ नमाज़ी की हृद है जो इस हृद के अन्दर से गुज़रे तो नमाज़ी के लिये जाइज़ है कि उसे रोक दे।⁽¹⁾ चुनान्चे,

आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “(कोई नमाज़ी के सामने से गुज़रना चाहे तो) नमाज़ी उसे दफ़अ करे⁽²⁾ अगर न माने तो फिर दफ़अ करे, फिर भी न माने तो उस से जंग करे कि वोह शैतान है।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ आगे से गुज़रने वाले को दफ़अ करते हत्ता कि उसे गिरा देते बल्कि कभी तो वोह शख्स आप से लिपट जाता और मरवान के पास आप की शिकायत करता तो आप बताते कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस का हुक्म दिया है।”⁽⁴⁾

अगर नमाज़ी कोई सुतून न पाए तो बतौर सुतरा अपने सामने कोई चीज़ खड़ी कर दे जिस की ऊंचाई एक हाथ हो ताकि येह उस की हृद की अ़लामत बन जाए।

①अहनाफ़ के नज़दीक : नमाज़ी के आगे से गुज़रने की हृद

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 615 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی नक्ल फ़रमाते हैं : मैदान और बड़ी मस्जिद में मुसल्ली (या'नी नमाज़ी) के क़दम से मौज़ए सुजूद तक गुज़रना नाजाइज़ है। मौज़ए सुजूद से मुराद येह है कि क़ियाम की हालत में सजदे की जगह की तरफ़ नज़र करे तो जितनी दूर तक निगाह फैले वोह मौज़ए सुजूद है इस के दरमियान से गुज़रना नाजाइज़ है, मकान और छोटी मस्जिद में क़दम से दीवारे क़िब्ला तक कहीं से गुज़रना जाइज़ नहीं अगर सुतरा न हो।

②मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 5 पर “उसे दफ़अ करे” के तहूत फ़रमाते हैं : अमले क़लील से हाथ के साथ उसे हटा दे गुज़रने न दे ज़ाहिर येह है कि अहदुन में बच्चा और दीवाना भी दाख़िल है इन को भी गुज़रने से रोका जाए यहां सामने से गुज़रने से मुराद है सुतरे और नमाज़ी के दरमियान गुज़रना कि येही ममनूअ है।

③.....صحیح البخاری کتاب الصلاة، باب یرد مصلی من مرین یدیہ، الحدیث: ۵۰۹، ج ۱، ص ۸۹، باختصار۔

④.....المرجع السابق، مفهوما

﴿7﴾.....पहली सफ़ की कोशिश करना :

पहली सफ़ पाने की कोशिश करे क्यूंकि इस की फ़ज़ीलत बहुत ज़ियादा है जैसा कि हम ने रिवायत ज़िक्र की। नीज़ हदीषे पाक में है कि “जिस ने गुस्ल कराया और गुस्ल किया, सुब्ह सवेरे उठा, इमाम के करीब हुवा और ग़ौर से सुना तो येह उस के लिये दो जुमुओं के माबैन और मज़ीद तीन अय्याम के गुनाहों का कफ़ारा है।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उसे दूसरे जुमुआ तक बख़्शा देता है।”
बा'ज़ रिवायात में येह कैद है कि “वोह लोगों की गर्दन में न फलांगे।”⁽²⁾

दूर बैठने में ही अफ़ियत है :

पहली सफ़ पाने के लिये तीन बातों से ग़फ़लत न बरती जाए :

(1)....अगर ख़तीब के करीब कोई बुराई देखे जिसे बदलने से अज़िज़ है मषलन इमाम या किसी और ने रेशम पहन रखा है या कोई शख्स बहुत ज़ियादा हथियार लिये नमाज़ पढ़ रहा है जो नमाज़ से तवज्जोह हटाने वाले हैं या सुनहरी हथियार वगैरा हों जिस पर ए'तिराज़ करना उस शख्स पर वाजिब है तो उस के लिये पीछे बैठना, सोच मुन्तशिर होने से बचने और ज़ियादा हिफ़ाज़त का बाइष है कि उ-लमाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام की एक जमाअत ने सलामती के लिये ऐसा किया।

दिलों का कुर्ब मतलूब है न कि अजशाम का :

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي से पूछा गया : “हम देखते हैं कि आप सुब्ह सवेरे आते हैं लेकिन आखिरी सफ़ में नमाज़ पढ़ते हैं।” तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “(करीब होने से) दिलों का कुर्ब मतलूब है जिस्मों का नहीं।” इस से उन्होंने ने इस तरफ़ इशारा फ़रमाया कि येह अमल दिल को ज़ियादा सलामत रखता है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۲۰۔

سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الغسل يوم الجمعة، الحديث: ۳۴۳، ج ۱، ص ۱۵۷، باختصار۔
المستدرک، کتاب الجمعة، من غسل يوم الجمعة.....الخ، الحديث: ۱۰۸۵، ج ۱، ص ۵۷۶، بتغیر الفاظ۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الغسل يوم الجمعة، الحديث: ۳۴۷، ج ۱، ص ۱۵۹۔

हिक्वायत :- किस हुक्मरान से दूरी इख्तियार की जाए :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْنِي ने हज़रते सय्यिदुना शोऐब बिन हर्ब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को मिम्बर के करीब देखा जो अबू जा'फ़र मन्सूर का खुतबा सुन रहे थे। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया : “तुम्हारे इस के करीब बैठने ने मेरे दिल को मशगूल कर दिया, क्या इस बात से बे ख़ौफ़ हो कि तुम ऐसी बात सुनो जिस का इन्कार करना तुम पर लाज़िम है लेकिन तुम इन्कार न कर सको।” फिर हुक्मरानों के सियाह कपड़े पहनने की बिदअत का ज़िक्र किया। हज़रते सय्यिदुना शोऐब बिन हर्ब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अर्ज़ की : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! क्या हदीष में नहीं है कि करीब हो कर ग़ौर से सुनो।” ⁽¹⁾ तो आप ने फ़रमाया : “तेरा बुरा हो येह तो हिदायत याफ़ता खुलफ़ाए राशिदीन के मुतअल्लिक़ है, रहे येह लोग तो तुम इन से जिस क़दर दूर होंगे और जितना इन की तरफ़ नज़र करने से बचोगे उतना ही **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का कुर्ब पाओगे।”

ईषार का अनोखा अन्दाज़ :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अमिर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِر फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ नमाज़ पढ़ी उन्होंने ने सफ़ों से पीछे हटना शुरू किया यहां तक कि आखिरी सफ़ में जा पहुंचे। नमाज़ के बा'द मैं ने उन से अर्ज़ की : “क्या येह नहीं कहा गया कि सब से बेहतर सफ़ पहली सफ़ है ?” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया “जी हां ! मगर येह उम्मत तमाम उम्मतों में से ज़ियादा रहूम की गई है। बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जब अपने किसी बन्दे को नमाज़ में देखता है तो उसे भी और उस के पीछे जितने लोग हों सब की बख़्शिश फ़रमा देता है, मैं इस उम्मीद पर पीछे हो गया कि इन लोगों में से किसी की तरफ़ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ नज़रे रहमत फ़रमाए तो मेरी भी बख़्शिश हो जाए।” एक रावी से मरवी है कि उन्होंने ने फ़रमाया : “येह बात मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से सुनी है।” ⁽²⁾

पस जो इस निय्यत से ईषार और हुस्ने ख़ल्क का इज़हार करते हुए पीछे रहे तो कोई हरज नहीं। ऐसे मौक़अ पर ही कहा जाता है कि “आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है।”

①..... سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الغسل يوم الجمعة، الحديث: ۳۴۵، ج ۱، ص ۱۵۸، “دوّن واستمع”۔

قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فيه کتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۲۵۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فيه کتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۲۵۔

मस्जिदों में नमाज़ के लिये जगह मख़सूस कर लेना कैसा ?

(2).....अगर ख़तीब के पास मस्जिद से अ़लाहिदा में बादशाहों के लिये मख़सूस जगह न हो तो पहली सफ़ पसन्दीदा है वरना इस मख़सूस जगह में दाख़िल होने को बा'ज़ उ-लमा ने मकरूह करार दिया है। चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी और हज़रते सय्यिदुना बक्र मुज़नी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا मख़सूस जगह में नमाज़ नहीं पढ़ते थे, इन का ख़याल था कि येह हुक्मरानों के लिये मख़सूस है और येह बिदअत है जो मसाजिद में ज़मानए रिसालत के बा'द शुरू हुई। मस्जिद मुतलक़न तमाम लोगों के लिये बराबर है लिहाज़ा कोई जगह अ़लाहिदा कर देना ख़िलाफ़े सुन्नत है और हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक और हज़रते सय्यिदुना इमरान बिन हसीन (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) (हुक्मरानों के लिये) मख़सूस जगह में नमाज़ पढ़ते थे और कुर्ब के सबब इसे मकरूह नहीं कहा। ग़ालिबन कराहियत कुछ लोगों के लिये मख़सूस करने और कुछ को मन्अ करने के सबब है वरना अ़म लोगों को मन्अ न किया जाए तो अ़लाहिदा जगह बनाने में कराहत का कोई सबब नहीं।

(3)....मिम्बर बा'ज़ सफ़ों को क़तअ करता हो तो पहली सफ़ वोही है जो मिम्बर से मुत्तसिल और इस के बा'द है और जो सफ़ें मिम्बर के दाएं बाएं हैं वोह ग़ैरे मुत्तसिल हैं (लिहाज़ा इन्हें पहली सफ़ नहीं कह सकते)। हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوَى फ़रमाते थे : “पहली सफ़ वोह है जो मिम्बर के सामने और उस के अगले हिस्से से अलग हो।”⁽¹⁾ येह बात दुरुस्त है क्यूंकि वोह मुत्तसिल है और इस लिये भी कि उस पर बैठने वाला ख़तीब के सामने होता और उसे सुनता है। नीज़ येह कहना भी बईद नहीं कि मिम्बर वाले मा'नी की रिआयत न की जाए और पहली सफ़ वोही करार दी जाए जो क़िब्ला के क़रीब हो।

बाज़ारों और मस्जिद से ख़ारिज खुले मैदानों में नमाज़ पढ़ना मकरूह है। नीज़ बा'ज़ सहाबए किराम رَضَوُاْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ इस पर लोगों को सज़ा देते और उन्हें खुले मैदानों से उठा दिया करते थे।

﴿8﴾.....ख़ुतबे के आदाब :

इमाम ख़ुतबे के लिये आए तो उस वक़्त नमाज़ पढ़ना और कलाम करना जाइज़ नहीं। अज़ान का जवाब दे⁽²⁾ और तवज्जोह से ख़ुतबा सुने। नमाज़ियों में से बा'ज़ की आदत है कि

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٥۔

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : मुक़तदियों को ख़ुतबे की अज़ान का जवाब देना मन्अ है। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक़तबतुल मदीना की मतबूआ 499 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब नमाज़ के अहक़ाम सफ़हा 151 पर है : “मुक़तदियों को ख़ुतबे की अज़ान का जवाब हरगिज़ न देना चाहिये येही (बक़िय्या हाशिय्या अगले सफ़हे पर)

जब मुअज़्ज़िन अज़ान के लिये खड़ा होता है उस वक्त सजदा करते हैं इस की कोई अस्ल नहीं, न ही किसी हदीष व रिवायत से षाबित है। अलबत्ता अगर इत्तिफ़ाक़न उस वक्त सजदा तिलावत आ जाए तो इस के करने में कोई हरज नहीं और इस वक्त दुआ भी कर सकता है क्योंकि येह इज़ाफ़ी वक्त है। नीज़ इस सजदे के हराम होने का हुक्म नहीं दिया जाएगा क्योंकि इस की हरमत का कोई सबब नहीं।

तवज्जोह से ख़ुतबा सुनने की फ़ज़ीलत :

मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) ने फ़रमाया : “जिस ने बग़ौर ख़ुतबा सुना और ख़ामोश रहा उस के लिये दो अज़्र हैं और जो ख़ामोश रहा लेकिन तवज्जोह से न सुना उस के लिये एक अज़्र है। जिस ने सुना लेकिन फुज़ूल कामों में मशग़ूल रहा उस पर दो गुनाह हैं और जिस ने ग़ौर से न सुना और फुज़ूल कामों में मुन्हमिक रहा उस पर एक गुनाह है।”

दौराने ख़ुतबा कलाम करने पर वर्इद :

हदीषे मुबारका में है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने इमाम के ख़ुतबे के दौरान अपने साथ वाले को कहा : ख़ामोश हो जा, ठहर जा बेशक उस ने लगव बात की और जिस ने दौराने ख़ुतबा लगव बात की उस का जुमुआ नहीं (या'नी जुमुआ का षवाब न पाएगा।)” (1)

दौराने ख़ुतबा इशारे से ख़ामोश करने का हुक्म :

इस फ़रमाने अलीशान से षाबित होता है कि दौराने ख़ुतबा ज़बान से किसी को ख़ामोश कराना जाइज़ नहीं अलबत्ता इशारे से या कंकरी मार कर ख़ामोश करना जाइज़ है। जैसा कि मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ख़ुतबा इरशाद फ़रमाने के दौरान हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “फुला सूरत कब नाज़िल हुई ?” तो उन्होंने ने इशारे से ख़ामोश रहने को कहा। जब

(बक़िय्या हाशिया) अहवत (या'नी इहतिyात से क़रीब) है। हां अगर येह जवाबे अज़ान या (दो ख़ुतबों के दरमियान) दुआ, अगर दिल से करें, ज़बान से तलफ़फ़ुज़ अस्लन न हो तो कोई हरज नहीं। और इमाम या'नी ख़तीब अगर ज़बान से भी जवाबे अज़ान दे या दुआ करे बिलाशुबा जाइज़ है।

①..... سنن النسائي، كتاب الجمعة، باب الانصات للخطبة يوم الجمعة، الحديث: 1398، ص 231، باختصار۔

سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب فضل الجمعة، الحديث: 1051، ج 1، ص 393، مفهوماً۔

आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ खुतबे से फ़ारिग होने के बा'द मिम्बर से उतरे तो हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहा : “जाओ, तुम्हारा जुमुआ नहीं हुवा ।” उन्होंने ने बारगाहे रिसालत में जब येह बात अर्ज की तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उबय्य बिन का'ब ने सच कहा ।”⁽¹⁾

अगर कोई ख़तीब से दूर हो तब भी इल्म वगैरा के मुतअल्लिक सुवाल न करे बल्कि ख़ामोश रहे क्यूंकि इस से पैदा होने वाली आवाज़ कान लगाने वालों तक पहुंचेगी । ऐसे लोगों के पास न बैठे जो बातों में मशगूल हों । पस जो दूर होने के सबब सुनने से अज़िज़ रहा उसे भी ख़ामोश रहना मुस्तहब है ।⁽²⁾ जब दौराने खुतबा नमाज़ पढ़ना मकरूह है तो कलाम बदर्जए औला मकरूह है ।

चार मकरूह अवक़ात :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : “चार अवक़ात ऐसे हैं जिन में नमाज़ पढ़ना मकरूह है : नमाज़े फ़न्न व अस्स के बा'द, ज़हूवए कुब्रा से ज़वाल तक और इमाम के खुतबे के दौरान ।”⁽³⁾

﴿9﴾.....नमाज़े जुमुआ के आदाब :

नमाज़े जुमुआ में ज़िक्र कर्दा शराइत की रिआयत करे, और जब इमाम की क़िराअत सुने तो फ़ातिहा के इलावा कुछ न पढ़े । (इन्दल अहनाफ़ इमाम के पीछे क़िराअत जाइज़ नहीं) ।

बा'द नमाज़े जुमुआ सूरए फ़ातिहा, इख़्लास और मुअव्वजतैन पढ़ने की फ़ज़ीलत :

जब जुमुआ से फ़ारिग हो तो बिगैर कलाम किये सूरए फ़ातिहा, सूरए इख़्लास और मुअव्वजतैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) सात सात बार पढ़े । बा'ज़ अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ماجاء فى الاستماع.....الخ، الحديث: ۱۱۱۱، ج ۲، ص ۲۱، بتغير الفاظ۔

السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الجمعة، باب الانصات للخطبة.....الخ، الحديث: ۵۸۳۲، ج ۳، ص ۳۱۱، مفهوماً۔

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : जो लोग इमाम (ख़तीब) से दूर हों कि खुतबे की आवाज़ उन तक नहीं पहुंचती उन्हें भी चुप रहना वाजिब है । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 774)

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ۱، ص ۱۲۳۔

से मन्कूल है कि “जिस ने ऐसा किया वोह एक जुमुआ से दूसरे जुमुआ तक महफूज रहा और येह उस के लिये शैतान से बचाव है।”⁽¹⁾

मख्लूक से बे नियाजी और हुसूले रिज़क की दुआ :

जुमुआ के बा'द येह कहना भी मुस्तहब है :

”اللَّهُمَّ يَا غَنِيَّ يَا مُبْدِيَّ يَا مُعِيدُ يَا رَجِيمُ يَا وَدُودُ اغْنِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَبِفَضْلِكَ عَنْ سُوءِ

या'नी ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ गनी ! ऐ हम्द वाले ! ऐ इब्तिदाअन पैदा करने वाले ! ऐ (रोजे क़ियामत) लौटाने वाले ! ऐ रहूम फ़रमाने वाले ! ऐ महब्बत करने वाले ! मुझे अपने हलाल के साथ हराम से और अपने फ़ज़ल के साथ मासिवा से बे नियाज़ कर दे।”⁽²⁾

मन्कूल है कि जो इस पर हमेशगी इख़्तियार करे **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मख़्लूक से बे नियाज़ कर देता और उसे वहां से रिज़क अता फ़रमाता है जहां से उसे गुमान भी नहीं होता।

जुमुआ के फ़र्ज अदा करने के बा'द छे रकअत नमाज़ पढ़े कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी रिवायत में है कि “हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जुमुआ के बा'द दो रकअत पढ़ा करते थे।”⁽³⁾

और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी रिवायत में है कि “चार रकअत पढ़ा करते थे।”⁽⁴⁾

जब कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से छे रकअतें पढ़ना भी मरवी है।”⁽⁵⁾

तमाम रिवायात सहीह हैं और ज़ियादा मुकम्मल करना (या'नी छे रकअते पढ़ना) अफ़ज़ल है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٦۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٦۔

③.....صحيح البخارى، كتاب الجمعة، باب الصلاة بعد الجمعة وقبلها، الحديث: ٩٣٤، ج ١، ص ٣٢٢، مفهوماً۔

④.....صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب الصلاة بعد الجمعة، الحديث: ٨٨١، ص ٢٣٦۔

⑤.....مجمع الزوائد، كتاب الصلاة، باب فى سنة الجمعة، الحديث: ٣١٩٣، ج ٢، ص ٢٢٦، دون “عبدالله بن عباس”۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٦۔

﴿10﴾.....मस्जिद में ठहरे रहना :

जुमुआ के बा'द नमाज़े अस्स पढ़ने तक मस्जिद में ठहरे रहना मुस्तहब है। अगर मग़रिब तक ठहरे तो अफ़ज़ल है। चुनान्वे, मन्कूल है कि जिस ने जामेअ मस्जिद में अस्स की नमाज़ पढ़ी उस के लिये हज़ का षवाब है और जिस ने वहां मग़रिब की नमाज़ पढ़ी उस के लिये एक हज़ और एक उमरे का षवाब है (या'नी जुमुआ अदा करने के बा'द अस्स व मग़रिब अदा करने के लिये मस्जिद में ठहरे रहने पर यह षवाब है) अगर बनावट के इज़हार या लोगों के इस के ए'तिकाफ़ को देख कर किसी आफ़त में मुब्तला होने या बे मक्सद बातों में मशगूल होने का ख़ौफ़ न हो तो ऐसा करे। नमाज़े जुमुआ अदा करने के बा'द अफ़ज़ल यह है कि **اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** का ज़िक्र करते, उस की ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करते, इस तौफ़ीक़ पर उस का शुक्र अदा करते और अपनी कोताहियों की वजह से डरते हुए घर की तरफ़ लौटे और गुरुबे आफ़ताब तक अपने दिल और ज़बान की निगरानी करे कि इस से फ़ज़ीलत वाली घड़ी फ़ौत न हो जाए।

मस्जिद में दुन्यवी बातें न करे कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि मसाजिद में दुन्या की बातें होंगी, तुम इन के साथ न बैठो कि खुदा को इन से कुछ काम नहीं।”⁽¹⁾

चौथी फ़स्ल : जुमुआ की सुन्नतों और आदाब

येह उन आदाब और सुन्नतों का बयान है जो साबिका तरतीब से ख़ारिज हैं येह तमाम दिन को शामिल हैं और येह सात उमूर हैं।

﴿1﴾....नमाज़ी सुब्ह सवेरे या नमाज़े अस्स या नमाज़े जुमुआ के बा'द इल्म की मजलिस में हाज़िर हो। किस्सा गोओं की मजालिस में शरीक न हो क्यूंकि उन के कलाम में कोई भलाई नहीं। नीज़ जुमुआ पढ़ने वाले को जुमुआ का पूरा दिन भलाई के कामों और दुआओं में गुज़ारना चाहिये ताकि जब फ़ज़ीलत वाली घड़ी आए तो अच्छे काम में मशगूल हो। नमाज़े जुमुआ से पहले लोगों के हल्कों में न जाए कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا** से मरवी है कि “हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने जुमुआ के दिन नमाज़ से पहले हल्के बनाने से मन्अ फ़रमाया।”⁽²⁾ अलबत्ता ! अगर कोई शख्स **اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ** की मा'रिफ़त

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى الصلوات، الحديث: ٢٩٢٢، ج ٣، ص ٨٤، بتقديم وتأخير۔

②.....سنن ابى داود، كتاب الصلاة، باب التحلق يوم الجمعة قبل الصلاة، الحديث: ١٠٤٩، ج ١، ص ٢٠٢، بتغيير۔

रखता हो, उस के इन्आमात और अज़ाबात के दिनों को याद करता, दीन की समझ रखता और सुब्ह के वक़्त जामेअ मस्जिद में दर्स देता हो तो उस के पास बैठे यूँ वोह जल्दी आने और ग़ौर से सुनने को जम्अ करने वाला होगा। नीज़ आखिरत में नफ़अ बख़्श इल्म को बग़ौर सुनना नवाफ़िल में मशगूल होने से अफ़ज़ल है।

इल्म की मजलिस में हाज़िर होने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “इल्म की मजलिस में हाज़िर होना हज़ार रकअत (नफ़ल) नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल है।”^(१)

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इस फ़रमाने बारी तआला :

”فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَبِهُوا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ“ (پ۲۸، الجمعة: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर जब नमाज़ हो चुके तो ज़मीन में फैल जाओ और **अल्लाह** عزّوجلّ का फज़ल तलाश करो और **अल्लाह** عزّوجلّ को बहुत याद करो इस उम्मीद पर कि फ़लाह पाओ।” के मुतअल्लिक़ फ़रमाया : “इस से मुराद दुन्या त़लब करना नहीं बल्कि मरीज़ की इयादत, जनाजे में शिर्कत, इल्म सीखना और रिज़ाए इलाही की खातिर मुसलमान भाई से मुलाक़ात के लिये जाना मुराद है। **अल्लाह** عزّوجلّ ने कई मक़ामात पर इल्म को फ़ज़ल का नाम दिया।” चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया :

وَعَلَيْكَ مَا لَمْ تُكُنْ تَعْلَمُ ۖ وَكَانَ فَضْلُ

اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا (پ۵، النساء: ۱۱۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम न जानते थे और **अल्लाह** का तुम पर बड़ा फ़ज़ल है।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ دَاوُدَ وَمُوسَىٰ صُلًّا (پ۲۲، سبأ: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़ज़ल दिया।

इन आयात में फ़ज़ल से मुराद इल्म है। लिहाज़ा जुमुआ के दिन इल्म सीखना और सिखाना अफ़ज़ल इबादात में से है और किस्सा गो वाइज़ीन की मजलिस से नमाज़ अफ़ज़ल है क्यूंकि बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ السُّبِّحِينَ इसे बिदअत समझते और ऐसे किस्सा गोओं को मस्जिद से निकाल देते थे।

किस्सा गोई बिदअत है :

एक बार हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا सुबह सवेरे मस्जिद में अपनी निशस्तगाह पर हाज़िर हुए तो उस जगह एक किस्सा गो किस्सा बयान कर रहा था आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे देख कर फ़रमाया : “मेरी जगह से उठ ।” उस ने कहा : “मैं नहीं उठूंगा क्योंकि मैं आप से पहले आ कर बैठा हूं ।” तो आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने सिपाहियों को बुला कर उसे उठवा दिया ।” अगर येह अमल (या’नी किस्से वगैरा बयान करना) सुन्नत होता तो उसे वहां से उठाना जाइज़ न होता कि सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम में से कोई अपने भाई को उस की जगह से उठा कर खुद वहां न बैठ जाए बल्कि येह कह दे कि जगह दो और जगह वसीअ करो ।”(1)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का तरीका येह था कि जब कोई शख्स अपनी जगह से उठता तो उस की जगह पर न बैठते यहां तक कि वोह लौट आता । एक रिवायत में है कि एक किस्सा गो उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका तय्यिबा ताहिरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के हुजरए मुबारका के बाहर वसीअ जगह पर बैठता था । आप ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को पैग़ाम भेजा कि इस ने अपनी किस्सा गोई से मुझे अज़ियत पहुंचाई और मुझे तस्बीह से रोक दिया । चुनान्वे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उसे इस क़दर मारा कि आप का असा टूट गया फिर आप ने (टूटा हुआ) असा फैंक दिया ।
 ﴿2﴾.....फ़ज़ीलत वाली घड़ी की अच्छी तरह निगरानी करे । हदीषे पाक में है कि “जुमुआ में एक ऐसी साअत है जो मुसलमान इसे पा ले और इस में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किसी चीज़ का सुवाल करे तो वोह उसे अता फ़रमाता है ।”(2) एक रिवायत में है कि “बन्दा नमाज़ पढ़ते हुए इसे पा ले (और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से किसी चीज़ का सुवाल करे तो वोह उसे अता फ़रमा देता है) ।”(3)

फ़ज़ीलत वाली घड़ी कौन सी है ?

फ़ज़ीलत वाली घड़ी के मुतअल्लिक़ मुख़्तलिफ़ अक़वाल हैं : (1)....वोह मुबारक साअत तुलूए आफ़ताब के वक़्त है । (2).....जवाल के वक़्त । (3).....अज़ान के वक़्त

①.....صحیح مسلم، کتاب السلام، باب تحریم اقامه الانسان.....الخ، الحديث: ۲۱۷۷، ص ۱۹۸، بتغییر الفاظ۔

صحیح البخاری، کتاب الجمعة، باب لا یقیم الرجل اخاه.....الخ، الحديث: ۹۱۱، ج ۱، ص ۳۱۴، باختصار۔

②.....سنن ابن ماجه، کتاب اقامه الصلاة والسنة فیها، باب ماجاء فی الساعة.....الخ، الحديث: ۱۱۳۷، ج ۲، ص ۳۱۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب الساعة التي فی يوم الجمعة، الحديث: ۸۵۲، ص ۲۲۴، بتغییر۔

(4)....जब इमाम मिम्बर पर चढ़ कर खुतबा शुरू कर दे। (5).....जब लोग नमाज़ के लिये खड़े हों। (6).....अस्र का आखिरी वक़्त है। (7).....सूरज गुरुब होने से पहले का वक़्त है कि शहज़ादिये कौनैन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا इस वक़्त का खयाल रखा करतीं और अपनी खादिमा को हुक्म देतीं कि वोह सूरज को देखे और इस के झुकने के बारे में आगाह करे। फिर आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا गुरुबे आफ़ताब तक दुआ व इस्तिग़फ़ार में मशगूल रहतीं और बतातीं कि येह वोह घड़ी है जिस का इन्तिज़ार किया जाता है और इसे प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करतीं।⁽¹⁾ (8).....येह साअत शबे क़द्र की तरह (जुमुआ के) पूरे दिन में मख़फ़ी है ताकि इस की हिफ़ाज़त की ज़ियादा से ज़ियादा कोशिश हो।⁽²⁾ (9).....शबे क़द्र की तरह जुमुआ के दिन में येह साअत तब्दील होती रहती है येह मा'ना ज़ियादा मुनासिब है। इस में एक राज़ है जिस का ज़िक्र इल्मे मुआमला के मुनासिब नहीं मगर जो कुछ हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया इस की तस्दीक़ करना ज़रूरी है। चुनान्वे, आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक ज़माने के दिनों में तुम्हारे रब्ब की तरफ़ से खुशबूदार झोंके हैं। सुनो ! इन्हें हासिल करो।”⁽³⁾ और जुमुआ का दिन भी इन्हीं अय्याम में से है। लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि जुमुआ का सारा दिन इस घड़ी के हुसूल के लिये दिल को हाज़िर रखे, ज़िक्र को लाज़िम पकड़े और दुन्या के वस्वसों से बचे तो क़रीब है कि वोह इन खुशबूदार झोंकों में से कुछ हिस्सा पा ले। (10).....हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “येह जुमुआ की आखिरी साअत है और येह गुरुबे आफ़ताब के वक़्त है।”⁽⁴⁾ हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “येह आखिरी घड़ी कैसे हो सकती है जब कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इरशाद फ़रमाते सुना कि वोह ऐसे बन्दे के मुवाफ़िक़ होती है जो नमाज़ पढ़ता है और येह नमाज़ का वक़्त नहीं।” तो हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : क्या मक्की मदनी सरकार, हबीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم येह इरशाद नहीं फ़रमाया कि “नमाज़ के इन्तिज़ार में बैठने वाला नमाज़ में है।”⁽⁵⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الصلوات، فضل الجمعة، الحديث: ٢٩٤٤، ج ٣، ص ٩٣، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٠۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٠-١٢١، مفهوماً۔

③.....المعجم الاوسط، الحديث: ٢٨٥٦، ج ٢، ص ١٥٥۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢١، باختصار۔

⑤.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب ماجاء في الساعة.....الخ، الحديث: ١١٣٤، ج ٢، ص ٣١۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जी हां ! येह तो फ़रमाया है । तो उन्हों ने फ़रमाया : “येह नमाज़ ही है ।” (येह सुन कर) हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ख़ामोश हो गए ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना का बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस तरफ़ माइल थे कि उस दिन का हक़ पूरा करने वालों के लिये येह एक रहमत है और इस के भेजने का वक़्त वोह है जब बन्दा अमल से मुकम्मल तौर पर फ़ारिग़ हो जाए ।

ख़ुलासए कलाम येह है कि येह और इस के साथ इमाम के मिम्बर पर बैठने का वक़्त बाइषे फ़ज़ीलत है । लिहाज़ा इन दो वक़्तों में ज़ियादा से ज़ियादा दुआ करनी चाहिये ।

﴿3﴾.....रोजे जुमुआ मोहसिने इन्सानिय्यत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ना मुस्तहब है ।

80 साल के गुनाह मुआफ़ :

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख़्स जुमुआ के दिन मुझ पर 200 बार दुरूदे पाक पढ़ेगा **اللّٰهُمَّ** उस के 80 साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा ।” अर्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप पर दुरूद कैसे भेजें ?” इरशाद फ़रमाया : “यू कहो : **اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُولِكَ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ** या'नी ऐ **اللّٰهُمَّ** अपने बन्दे, अपने रसूल और अपने उम्मी नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ **عَزَّ وَجَلَّ** पर रहमत नाज़िल फ़रमा ।”⁽²⁾

शफ़ाअत मुस्तफ़ा :

मन्कूल है कि जो शख़्स लगातार सात जुमुओं तक सात बार मज़कूरा दुरूदे पाक पढ़े तो उस के लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत वाजिब हो गई :

أَدَاءُ وَأَعْطَاهُ الْوَسِيلَةَ وَابْعَثَهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُودَ الَّذِي وَعَدْتَهُ
اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ صَلَاةً تَكُونُ لَكَ رِضًا وَلِحَقِّقَهُ
وَاجِزَةً عَنَّا مَا هُوَ أَهْلُهُ وَاجِزَةً أَفْضَلَ مَا جَازَيْتَ نَبِيًّا عَنْ أُمَّتِهِ وَصَلِّ عَلَيْهِ وَعَلَى جَمِيعِ إِخْوَانِهِ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصَّالِحِينَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢١ -

②.....سنن الترمذی، کتاب الجمعة، باب ماجاء فى الساعة.....الخ، الحديث: ٢٩١، ج ٢، ص ٣٣، مفهوماً

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप की आल पर ऐसा दुरूद भेज जो तेरे लिये बाइषे रिज़ा और इन के हक़ की अदाएंगी हो और उन्हें मक़ामे वसीला अता फ़रमा और उस मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस का तू ने इन से वा'दा फ़रमाया और हमारी जानिब से इन्हें ऐसा अज़्र अता फ़रमा जो इन की शायाने शान हो और इस से अफ़ज़ल जज़ा अता फ़रमा जो तूने किसी नबी को उस की उम्मत की तरफ़ से अता फ़रमाई। नीज़ आप صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सलिलहीने किराम الصَّلوة وَالسَّلَام عَلَیْہُمْ और आप के तमाम भाइयों या'नी अम्बियाए किराम الصَّلَام और सलिलहीने किराम الصَّلَام पर रहमत नाज़िल फ़रमा। ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले !”(1)

अगर मज़ीद पढ़ना चाहे तो येह मसनून दुरूदे पाक पढ़े :

اللَّهُمَّ اجْعَلْ فَضَائِلَ صَلَوَاتِكَ وَنَوَامِي بَرَكَاتِكَ وَشَرَائِفَ زَكَوَاتِكَ وَرَافِعَاتِكَ وَرَحِمَتِكَ وَتَحِيَّتِكَ عَلَى مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ وَإِمَامِ الْمُتَّقِينَ وَخَاتَمِ النَّبِيِّينَ وَرَسُولِ رَبِّ الْعَالَمِينَ قَائِدِ الْخَيْرِ وَقَاتِلِ الْبَرِّ وَنَبِيِّ الرَّحْمَةِ وَسَيِّدِ الْأُمَمِ اللَّهُمَّ ابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا تَرْفُفُ بِهِ قُرْبُهُ وَتَقَرُّ بِهِ عَيْنُهُ يَغِيْظُهُ بِهِ الْأَوَّلُونَ وَالْآخِرُونَ اللَّهُمَّ اعْطِهِ الْفَضْلَ وَالْفَضِيلَةَ وَالشَّرَفَ وَالْدَّرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَالْمَنْزِلَةَ الشَّامِخَةَ الْمُنِيفَةَ اللَّهُمَّ اعْطِ مُحَمَّدًا سُوْلَهُ وَبَلَّغْهُ مَأْمُوْلَهُ وَاجْعَلْهُ أَوَّلَ شَافِعٍ وَأَوَّلَ مُشَفِّعٍ اللَّهُمَّ عَظِّمْ بَرَاهِنَهُ وَثَقِّلْ مِيزَانَهُ وَأَبْلِغْ حُجَّتَهُ وَارْفَعْ فِي أَعْلَى الْمَقَرِّينَ دَرَجَتَهُ - اللَّهُمَّ احْشُرْنَا فِي زُمْرَتِهِ وَاجْعَلْنَا فِي أَهْلِ شَفَاعَتِهِ وَأَحْيِنَا عَلَى سُنَّتِهِ وَوَقِّفْنَا عَلَى مِلَّتِهِ وَأَوْرِدْنَا حَوْضَهُ وَأَسْقِنَا غَيْرَ خَزَائِيَا وَلَا نَارِمِينَ وَلَا شَاكِينَ وَلَا مُبْدِلِينَ وَلَا فَاتِنِينَ وَلَا مَفْتُونِينَ آمِينَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने मुबारक तरीन दुरूद, अपनी बेहतरीन ख़ूबी, अपनी बख़्शिश, अपनी नर्मी व रहमत और अपना सलाम अम्बिया के सरदार हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमा जो परहेज़गारों के इमाम, आखिरी नबी, तमाम ज़हानों के रब्ब के रसूल, भलाई की तरफ़ ले जाने वाले, नेकी के दरवाज़े खोलने वाले, नबिय्ये रहमत और सरदारे उम्मत हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ इन्हें मक़ामे महमूद पर फ़ाइज़ फ़रमा जिस के सबब इन के कुर्ब को मज़ीद कुर्ब नसीब हो इन की आंखें ठन्डी हों कि इन पर अगले और पिछले रश्क करें। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ सरकारे दो आलम صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़ज़ल, फ़ज़ीलत, बुजुर्गी, वसीला बुलन्द दर्जा और बुलन्द मक़ाम अता फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّय اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सुवाल को पूरा फ़रमा, इन की उम्मीद इन तक पहुंचा, इन्हें पहला शफ़ाअत करने वाला और मक्बूले शफ़ाअत बना दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ इन की दलील को बुजुर्गी अता फ़रमा, इन के तराजू को भारी

कर दे, इन की दलील को पहुंचने वाली बना दे, बुलन्द तर मुर्करबीन में इन का मर्तबा बुलन्द फ़रमा ।
ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इन के गुरौह में उठा, इन की शफ़ाअत के मुस्तहिक्कीन में से कर दे, इन की सुन्नत पर ज़िन्दा रख और इन की मिल्लत पर मौत दे, हमें इन के हौजे कौषर पर पहुंचा, इन के प्याले से सैराब फ़रमा कि हम न रुस्वा हो, न नादिम हों, न शक करने वाले, न तब्दीली करने वाले, न गुमराह करने वाले और न ही गुमराह किये गए हों, ऐ तमाम जहानों के रब्ब ! हमारी दुआ क़बूल फ़रमा ।⁽¹⁾

खुलासए कलाम :

दुरूदे पाक के जो भी अल्फ़ाज़ कहे ख़्वाह तशह्हुद में पढ़े जाने वाले मशहूर अल्फ़ाज़ कहे (या'नी दुरूदे इब्राहीमी पढ़े) तो वोह दुरूद पढ़ने वाला शुमार होगा और दुरूदे पाक के साथ इस्तिग़फ़ार भी मिला लेना चाहिये क्यूंकि रोज़े जुमुआ कषरत से इस्तिग़फ़ार करना मुस्तहब है ।

﴿4﴾.....जुमुआ के दिन कुरआने पाक की तिलावत कषरत से करनी चाहिये खुसूसन **सूरए कहफ़** की ।

शबे जुमुआ सूरए कहफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से मरवी है कि “जो शख्स शबे जुमुआ सूरए कहफ़ की तिलावत करे तो जिस जगह वोह पढ़ता है वहां से मक्का तक उसे नूर अता किया जाता है और दूसरे जुमुआ तक उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाते हैं बल्कि मज़ीद तीन दिन के गुनाह भी । नीज़ उस के लिये सुब्ह तक 70 हज़ार फ़िरिश्ते दुआए रहमत करते हैं और उसे बीमारी, पेट के फोड़े, पहलू के दर्द, बर्स, कोढ़ के मरज़ नीज़ दज्जाल के फ़ितने से महफूज़ रखा जाएगा ।”⁽²⁾

अगर हो सके तो जुमुआ के दिन और शबे जुमुआ ख़त्मे कुरआन करना चाहिये कि इस में ख़त्मे कुरआन मुस्तहब है । अगर रात को पढ़े तो फ़ज़्र की दो रक्अतों में कुरआन ख़त्म करे या मग़रिब की दो रक्अतों में या जुमुआ की अज़ान व इक़ामत के दरमियान ख़त्म करे कि बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत हासिल होगी । इबादत गुज़ार लोग जुमुआ के दिन हज़ार मरतबा सूरए इख़्लास

①.....سنن ابن ماجه كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، الحديث: ٩٠٦، ج ١، ص ٢٨٩، باختصار۔

قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢١-١٢٢، بتقديم وتأخر۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٢۔

पढ़ना पसन्द करते थे। नीज़ मन्कूल है कि जो शख्स दस या बीस रक्अत में हजार बार सूरए इख़्लास पढ़े तो येह पूरा कुरआने पाक ख़त्म करने से अफ़ज़ल है। नीज़ इबादत गुज़ार लोग दिन भर में हजार बार दुरूदे पाक का नज़राना पेश करते और हजार बार येह तस्बीह पढ़ते थे :
 سُبْحَنَ اللَّهُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ अगर रोज़े जुमुआ या शबे जुमुआ मुसब्बहात सूरतें⁽¹⁾ पढ़े तो बहुत अच्छा है।

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मुअय्यन सूरतें पढ़ना मरवी नहीं सिवाए रोज़े जुमुआ और शबे जुमुआ के कि जुमुआ की रात आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ नमाज़े मग़रिब में सूरए काफ़िरून व सूरए इख़्लास और नमाज़े इशा में सूरए जुमुअह व सूरए मुनाफ़िकून की तिलावत फ़रमाते थे।⁽²⁾

एक रिवायत में है कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जुमुआ की दो रक्अतों में येह सूरतें (सूरए जुमुअह व मुनाफ़िकून) पढ़ते थे, जब कि जुमुआ के दिन नमाज़े फ़ज़्र में सूरए सजदह, सूरए लुक़्मान और सूरए दहर की तिलावत फ़रमाते थे।⁽³⁾

मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख ले :

﴿5﴾.....जब जामेअ मस्जिद में दाख़िल हो तो इस तरह चार रक्अत नफ़ल पढ़ना मुस्तहब है कि हर रक्अत में 50 बार सूरए इख़्लास पढ़े ताकि मजमूआ 200 बार हो जाए। क्यूंकि मरवी है कि “जो शख्स ऐसा करेगा वोह मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख लेगा या उसे उस का ठिकाना दिखा दिया जाएगा।”⁽⁴⁾

दो रक्अत तहिय्यतुल मस्जिद ज़रूर पढ़े अगर्चे इमाम खुतबा दे रहा हो लेकिन मुख़्तसर पढ़े कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस के पढ़ने का हुक्म दिया है।⁽⁵⁾

①.....मुसब्बहात वोह सूरतें हैं जिन के शुरूअ में तस्बीह का ज़िक्र है, जैसे सूरए बनी इस्राईल, सूरए हदीद, सूरए जुमुआ, सूरए सफ़, सूरए तगाबुन और सूरए आ'ला।

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج 1، ص 123۔

③.....صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب ما يقرأ فى يوم الجمعة، الحديث: 849، ص 235۔

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج 1، ص 122۔

⑤.....صحيح مسلم، كتاب الجمعة، باب التحية والامام يخطب، الحديث: 845، ص 233۔

एक ग़ैर मशहूर रिवायत में है कि “दौराने खुतबा एक शख्स मस्जिद में दाखिल हुवा तो हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ खामोश हो गए हत्ता कि उस ने दो रकअतें पढ़ लीं।”^(१)

उ-लमाए कूफा का कौल है कि दौराने खुतबा अगर इमाम किसी के लिये खामोशी इख्तियार करे तो वोह दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ ले। रोजे जुमुआ और शबे जुमुआ चार रकअतें इस तरह पढ़ना मुस्तहब है कि इन में येह चार सूरतें पढ़े : सूरए अन्आम, सूरए कहफ़, सूरए ताहा, सूरए यासीन। अगर येह सूरतें अच्छी तरह याद न हों तो सूरए यासीन, सूरए सजदह, सूरए लुक्मान, सूरए दुख़्रान, सूरए मुल्क पढ़े। नीज शबे जुमुआ मजकूरा चार सूरतों की तिलावत पाबन्दी से करे कि इस की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है। जो पूरा कुरआन सहीह तौर पर न पढ़ सकता हो तो जिस क़दर सहीह पढ़ सके पढ़े कि वोही उस के लिये ख़त्मे कुरआन के काइम मक़ाम है और सूरए इख़्लास तो बक़रत पढ़े। नीज रोजे जुमुआ सलातुत्तस्बीह पढ़ना मुस्तहब है। इस का तरीक़ा नवाफ़िल के बाब में बयान किया जाएगा कि हुजूर पुरनूर, शाफ़ेए यौमुनुशूर ﷺ ने अपने चचा हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “इसे हर जुमुआ को पढ़ो।”^(२)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रोजे जुमुआ ज़वाल के बा'द इस नमाज़ को पाबन्दी से पढ़ा करते और बताते कि इस की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है।^(३)

जुमुआ के दिन वक़्त की तक्सीम :

बेहतर येह है कि रोजे जुमुआ ज़वाल तक का वक़्त नमाज़ के लिये, नमाज़े जुमुआ के बा'द से अस् तक का वक़्त इल्म सीखने सिखाने के लिये और अस् से मग़रिब तक का वक़्त तस्बीह व इस्तिग़फ़ार के लिये मुक़र्रर करे।

﴿६﴾....जुमुआ के दिन ख़ास तौर पर सदक़ा करना मुस्तहब है क्यूंकि इस दिन दुगना अन्न मिलता है बशर्ते कि साइल इमाम के खुतबे के दौरान सुवाल न करे, क्यूंकि इस वक़्त मांगने वाला खुतबे के दौराने गुफ़्तगू करने वाला होगा हालांकि इस वक़्त गुफ़्तगू करना मकरूह है।

हज़रते सय्यिदुना सालेह बिन अहमद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَصْلَة फ़रमाते हैं : “जुमुआ के दिन दौराने खुतबा मेरे वालिद के पास बैठे एक मिस्कीन ने सुवाल किया तो एक शख्स ने मेरे वालिद

①.....سنن الدارقطني، كتاب الجمعة، باب في الركعتين اذا جاء الرجل.....الخ، الحديث، ١٢٠٢، ج ٢، ص ١٨۔

②.....سنن ابی داود، كتاب التطوع، باب صلاة التسبیح، الحديث: ١٢٩٤، ج ٢، ص ٢٢۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادی والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ٢٣، “يوم الجمعة” بدله “کل يوم”۔

को टुकड़ा दिया ताकि वोह उसे दे दें तो वालिद साहिब ने वोह टुकड़ा न पकड़ा।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जब कोई शख्स मस्जिद में सुवाल करे तो वोह इसी का मुस्तहिक् है कि उसे न दिया जाए और जब कुरआन के नाम पर मांगे तो भी उसे न दो।”⁽²⁾

बा'ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने जामेअ मस्जिद में ऐसे साइलीन को सदका देने से मन्अ फ़रमाया है जो लोगों की गर्दनें फलांगते हैं। अलबत्ता ! अगर वोह गर्दनें फलांगे बिगैर अपनी जगह पर खड़े हो कर या बैठ कर सुवाल करे तो दे सकते हैं।⁽³⁾

उस का सुवाल पूरा कर दिया जाता है :

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जो जुमुआ में हाज़िर हो फिर लौट कर दो मुख्तलिफ़ चीज़ें सदका करे, फिर पलट कर रुकूअ व सुजूद की तक्मील और खुशूअ के साथ दो रकअतें पढ़े और येह दुआ मांगे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِاسْمِكَ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ الَّذِي لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ
या 'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से तेरे नाम के वासिते से सुवाल करता हूं, **अल्लाह** के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहमत वाला, और तेरे नाम से कि जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह ज़ात जो खुद ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाली है, जिसे न नौद आती है न ऊंघ। तो वोह जो कुछ मांगे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे अता फ़रमा देता है।”⁽⁴⁾

जो दुआ मांगे कबूल होगी :

बा'ज अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “जो शख्स जुमुआ के दिन किसी मिस्कीन को खाना खिलाए, सुब्ह सवेरे नमाज़े जुमुआ के लिये जाए, किसी को अज़ियत न पहुंचाए और इमाम के सलाम फेरते वक़्त येह कहे :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ الْحَيُّ الْقَيُّومُ أَسْأَلُكَ أَنْ تَغْفِرَ لِي وَلِتَرْحَمَنِي وَتُعَافِيَنِي مِنَ النَّارِ

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج ١، ص ١٢٥ -

②.....المرجع السابق، ص ١٢٥ -

③.....अहनाफ़ के नज़दीक : मस्जिद में सुवाल करना ह़राम है और उस साइल को देना भी मन्अ है।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 647)

④.....قوت القلوب، ص ١٢٥، بتقدم و تاخر -

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरू जो बहुत मेहरबान रहमत वाला खुद जिन्दा, दूसरों को काइम रखने वाला मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरी बख्शिश फ़रमा दे, मुझ पर रहम फ़रमा और मुझे जहन्नम से बचा। फिर जो दुआ मांगे क़बूल होगी।”⁽¹⁾

﴿7﴾.....जुमुआ का पूरा दिन आ'माले आख़िरत के लिये मुक़र्रर कर दे और दुन्यावी मशगूलिय्यात से रुक जाए, अवरादो वज़ाइफ़ की क़षरत करे और इस दिन सफ़र शुरू न करे, कि रिवायत में है : “जिस ने शबे जुमुआ सफ़र किया उस के दोनों फ़िरिश्ते उस के लिये बद दुआ करते हैं।”⁽²⁾ नीज़ (रोज़े जुमुआ) तुलूए फ़ज्र के बा'द सफ़र करना ह़राम है। अलबत्ता, अगर रुफ़काए सफ़र के चले जाने का अन्देशा हो तो सफ़र करना जाइज़ है।

बा'ज अकाबिरीन رَحْمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ फ़रमाते हैं : “सक़ा (पानी फ़राहम करने वाले) से मस्जिद में पीने के लिये या मुफ़्त पिलाने के लिये पानी ख़रीदना जाइज़ नहीं ह़त्ता कि मस्जिद में इस का बेचना भी जाइज़ नहीं क्यूंकि मस्जिद में ख़रीदो फ़रोख़्त मकरूह है।”

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “अगर क़ीमत मस्जिद से बाहर अदा कर दे और मस्जिद में ले कर पी ले या किसी को पिला दे तो कोई ह़रज नहीं।”

हाशिले क़लाम :

जुमुआ के दिन अवरादो वज़ाइफ़ और भलाई के कामों की क़षरत करनी चाहिये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब अपने किसी बन्दे से महबूबत करता है तो उसे फ़ज़ीलत वाले अवक़ात में नेक आ'माल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा देता है और जब किसी बन्दे से नाराज़ होता है तो वोह बन्दा फ़ज़ीलत वाले अवक़ात में बुरे आ'माल में मशगूल हो जाता है ताकि वक़्त की बरक़त से महरूम होने और इस की हुरमत को तोड़ने के सबब उस शख़्स के अज़ाब में ज़ियादती और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में इज़ाफ़ा हो। जुमुआ के दिन दुआएं मांगना मुस्तहब है। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** किताबुद्दा'वात (दुआओं के बाब) में इस का ज़िक्र आएगा।

हर चुने हुए बन्दे पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो।



①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والعشرون فيه كتاب الجمعة.....الخ، ج 1، ص 125-126.

②.....کنز العمال، کتاب السفر، الحديث: 14536، ج 6، ص 303.

बाब नम्बर : 6

मुतफरिक् मसाइल का बयान

इस बाब में वोह मुतफरिक् मसाइल बयान किये जाएंगे जिन में आम लोग मुब्तला हैं और राहे आखिरत का मुसाफिर इन्हें जानना चाहता है और जो मसाइल शाजोनादर पेश आते हैं वोह हम ने कुतुबे फिक्ह में बयान कर दिये हैं।

अमले कलील से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती :

मसअला 1 : अमले कलील से अगरचे नमाज़ नहीं टूटती मगर बिना ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है।

ज़रूरत की चन्द मिषालें : आगे से गुज़रने वाले को रोकना और खौफ़नाक बिच्छू को एक या दो ज़र्बों से मारना, तीन ज़र्बों से मारा तो अमले कषीर होगा और नमाज़ बातिल हो जाएगी। इसी तरह जूई और पिस्सू अगर अज़ियत देते हों तो उन्हें दूर करना भी जाइज़ है। यूं ही खुजाने की ज़रूरत पड़ती है क्यूंकि न खुजाने से खुशूअ में खलल वाक़ेअ होता है।

हालते नमाज़ में जूं और पिस्सू मारने का हुक्म :

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ नमाज़ में जूं और पिस्सू पकड़ लिया करते थे।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) नमाज़ में पिस्सू को मार डालते यहां तक कि उन के हाथ पर खून नज़र आता।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना इमाम नखई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى फ़रमाते हैं : “नमाज़ी इसे पकड़ कर सुस्त कर दे और अगर मार भी दे तो कोई हरज नहीं।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “इसे पकड़ ले और मसल कर फेंक दे।”⁽⁴⁾

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِد फ़रमाते हैं : “मुझे येह पसन्द है कि इसे छोड़ दे लेकिन अगर अज़ियत दे कर नमाज़ से ग़ाफ़िल करे तो इस क़दर मसल दे कि अज़ियत न दे सके फिर फेंक दे।”⁽⁵⁾

येह रुख़्सत है वरना कमाल तो येह है कि नमाज़ में अमले कलील से भी बचा जाए।

①.....المصنف لابن ابی شبة، کتاب صلاة التطوع والامامة، الرجل ياخذ اللقمة في الصلاة، الحديث: ١، ج ٢، ص ٢٦١۔

②.....المرجع السابق، الحديث: ١، ج ٢، ص ٢٦١۔ ③.....المرجع السابق، الحديث: ٥، ص ٢٦٢، باختصار۔

④.....المرجع السابق، الحديث: ٣، ص ٢٦١۔ ⑤.....المرجع السابق، الحديث: ٩، ص ٢٦٢، باختصار۔

इसी लिये बा'ज बुजुगनि दीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ الْبَرِّينَ नमाज़ में मख़बी को भी नहीं उड़ते थे और फ़रमाते : “मैं अपने नफ़्स को इस चीज़ का आदी नहीं बनाता वरना मेरी नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी । मैं ने सुना है कि फ़ासिक लोग बादशाहों के सामने सख़्त तकलीफ़ भी बरदाश्त करते हैं और हरकत तक नहीं करते ।”

जब जमाई आए तो मुंह पर हाथ रखने में कोई हरज नहीं और येह औला है । (नमाज़ में) छींक आए तो दिल में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हम्द करे, ज़बान को हरकत न दे, अगर डकार आए तो सर आस्मान की तरफ़ न उठाए, अगर चादर गिर जाए तो उसे उठा कर बराबर न करे इसी तरह इमामे के कनारों का हुक्म है । येह तमाम उमूर बिला ज़रूरत मकरूह हैं ।

मस्अला 2 : जूतों में नमाज़ पढ़ना जाइज़ है अगर्चे जूतों को उतारना आसान है और मौजे पहने नमाज़ पढ़ने की रुख़सत इस वजह से नहीं कि उन का उतारना मुश्किल बल्कि इस वजह से है कि इतनी नजासत मुआफ़ है और येही हुक्म पाइताबों का है ।

जूते पहने नमाज़ पढ़ने की दलील :

मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ना'लैन शरीफैन में नमाज़ पढ़ी फिर ना'लैन मुबारकैन उतारे तो सहाबए किराम رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने भी जूते उतार दिये । (नमाज़ के बा'द) आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुम ने जूते क्यूं उतारे ।” अर्ज़ की : “आप को जूते उतारते देख कर हम ने भी उतार दिये ।” इरशाद फ़रमाया : “बेशक हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام मेरे पास आए और मुझे बताया कि इन में कुछ लगा हुआ है (इस लिये मैं ने जूते उतार दिये) लिहाज़ा जब तुम में से कोई मस्जिद आने का इरादा करे तो अपने जूते पलट कर देख ले अगर इन में कोई नजासत लगी हो तो इन्हें ज़मीन से रगड़ दे फिर इन में नमाज़ पढ़ ले ।” (1) (2)

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “जूतों में नमाज़ पढ़ना अफ़ज़ल है क्यूंकि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : तुम ने जूते क्यूं उतारे ? और येह मुबालगा है क्यूंकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन से इस लिये पूछा ताकि उन के सामने जूते उतारने का सबब बयान करें क्यूंकि आप को इल्म था कि उन्होंने ने जूते आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की पैरवी में उतारे हैं ।”

①.....इस पर हाशिया सफ़हा 399 पर गुज़र चुका है ।

②.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي سعيد الخدري، الحديث: ٥٣، ١، ١، ج ٢، ص ٢١-

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन साइब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से मरवी है कि “हुज़ूर नबिये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने (नमाज़ से क़ब्ल) अपने जूते उतारे।”⁽¹⁾

गोया आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोनों तरह अमल किया (या'नी जूते पहने हुए भी नमाज़ पढ़ी और उतार कर भी)। पस जो जूते उतारे उसे चाहिये कि इन्हें अपने दाएं या बाएं न रखे वरना नमाज़ियों के लिये जगह तंग हो जाएगी और क़तए सफ़ भी होगी बल्कि अपने सामने रखे, अपने पीछे भी न रखे वरना दिल इन की तरफ़ मुतवज्जेह होगा। जिन उ-लमा ने जूते पहन कर नमाज़ पढ़ने का कौल किया है, हो सकता है उन्होंने ने इस मा'ना का लिहाज़ रखा हो या'नी दिल का जूतों की तरफ़ मुतवज्जेह होना।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम में से कोई नमाज़ पढ़े तो अपने जूते अपने पाउं के दरमियान रख ले।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक नमाज़ी से फ़रमाया : “जूते पाउं के दरमियान रख ले ताकि इन की वजह से किसी मुसलमान को अज़ियत न हो, रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इमामत के दौरान जूते अपने बाईं जानिब रखते।”⁽³⁾ इमाम ऐसा कर सकता है क्यूंकि उस के बाईं जानिब कोई नहीं होता। बेहतर येह है कि जूते क़दमों के दरमियान न रखे वरना (रुकूअ व सुजूद की हालत में) वोह उसे मशगूल रखेंगे बल्कि क़दमों के आगे रखे, शायद ! हदीष से येही मुराद है।”

हज़रते सय्यिदुना जुबैर बिन मुतइम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم फ़रमाते हैं : “नमाज़ी का अपने क़दमों के दरमियान जूते रखना बिदअत है।”⁽⁴⁾

मस्अला 3 : नमाज़ में थूकने से नमाज़ नहीं टूटती क्यूंकि येह अमले क़लील है। जब तक थूकने से आवाज़ पैदा न हो कलाम शुमार नहीं होता नीज़ थूकने से आवाज़ पैदा होती भी नहीं, अलबत्ता बिगैर ज़रूरत ऐसा करना मकरूह है, लिहाज़ा इस से बचना चाहिये और सिर्फ़ वोह तरीका इख़्तियार किया जाए जिस की सरकारे दो आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इजाज़त दी है। चुनान्वे,

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب الصلاة فی النعل، الحدیث: ۶۴۸، ج ۱، ص ۲۶۰، “خلع” بدلہ “وضع”۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب المصلی اذخل نعلیه.....الخ، الحدیث: ۶۵۵، ج ۱، ص ۲۶۲۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب الصلاة فی النعل، الحدیث: ۶۴۸، ج ۱، ص ۲۶۰، باختصار۔

④.....تفسیر قرطبی، سورۃ طہ، ج ۱، ص ۷۸۔

जानिबे किब्ला थूकना कैसा ?

बा'ज सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِينَ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने किब्ले की जानिब थूक देखा तो सख्त जलाल में आ गए और अपने हाथ में मौजूद टहनी से उसे खुरच दिया और इरशाद फ़रमाया : “खुशबू लाओ ।” चुनान्वे, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस पर जा'फ़रान लगा दी फिर हमारी तरफ़ मुतवज्जेह हो कर इरशाद फ़रमाया : “तुम में से कौन पसन्द करता है कि अपने चेहरे पर थूके ?” हम ने अर्ज की : “कोई भी पसन्द नहीं करता ।” इरशाद फ़रमाया : “जब तुम में से कोई नमाज़ शुरू करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के और किब्ला के दरमियान होता है ।” एक रिवायत में है कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के सामने होता है । लिहाज़ा तुम में से कोई अपने सामने या दाई तरफ़ न थूके बल्कि बाई जानिब या बाएं पाउं के नीचे थूके अगर जल्दी हो तो अपने कपड़ों में थूके और अमलन बताया कि इसे एक दूसरे के साथ रगड़ दे ।”(1)

मस्अला 4 : (इमाम के पीछे) मुक़्तदी के खड़ा होने के लिये सुन्नत भी है और फ़र्ज भी । **सुन्नत** येह है कि एक मुक़्तदी हो तो इमाम के थोड़ा पीछे उस के दाई तरफ़ खड़ा हो और एक औरत मुक़्तदी हो तो इमाम के पीछे खड़ी हो अगर इमाम के पहलू में खड़ी हो जाए तब भी नमाज़ हो जाएगी लेकिन ख़िलाफ़े सुन्नत है ।(2) अगर औरत के साथ एक मर्द भी मुक़्तदी हो तो मर्द इमाम की दाई जानिब और औरत मर्द के पीछे खड़ी हो । कोई शख्स पिछली सफ़ में अकेला खड़ा न हो बल्कि अगर जगह पाए तो अगली सफ़ में शामिल हो जाए या सफ़ में से किसी को खींच कर पीछे कर ले । अगर अकेला खड़ा हो गया तो नमाज़ हो जाएगी मगर मकरूह है ।

इत्तिशाले सफ़ूफ़ :

खड़ा होने में मुक़्तदी के लिये **फ़र्ज** येह है कि सफ़ में इत्तिशाल हो यूं कि इमाम व मुक़्तदी के दरमियान जामेअ राबिता हो या'नी दोनों जमाअत में हों अगर दोनों मस्जिद में हों तो

①..... صحيح مسلم، كتاب الزهد والرفائق، باب حديث جابر الطويل..... الخ، الحديث: ३००८، ص १२०३، باختصار۔

صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النهي عن البصاق..... الخ، الحديث: ५५१، ص २८८، باختصار۔

②.....**अहनाफ़ के नज़दीक :** औरत अगर मर्द के महाज़ी हो तो मर्द की नमाज़ जाती रहेगी । इस के लिये चन्द शर्तें हैं । इस के मुतअल्लिक तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 587** का मुतालआ कीजिये !

जामेअ होने के लिये यह काफी है क्योंकि मस्जिद इसी लिये बनाई जाती है। लिहाजा सफ़ के मुत्तसिल होने की हाजत नहीं बल्कि इमाम के अफ़अल का इल्म होना ज़रूरी है कि हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मस्जिद की छत पर इमाम की इक्तिदा में नमाज़ पढ़ी। अगर मुक्तादी मस्जिद से बाहर रास्ते या सहरा में हो कि दोनों के दरमियान कोई इमारत (हाइल) न हो तो तीर के निशाने की मिक्दार कुर्ब काफी है और (जामेअ होने के लिये) यह राबिता काफी है क्योंकि एक का फ़े'ल दूसरे के फ़े'ल से मिला हुवा है। अगर मुक्तादी मस्जिद की दाएं या बाएं जानिब वाले मकान के सहन में हो और उस का दरवाजा मस्जिद से मिला हुवा हो तो अब शर्त यह है कि मस्जिद की सफ़ उस की देहलीज़ से सहन तक बिगैर किसी इन्किताअ के मुत्तसिल हो। यूं जो लोग इस सफ़ में और इस से पिछली सफ़ में होंगे उन की नमाज़ सहीह होगी लेकिन जो आगे होंगे उन की नमाज़ सहीह न होगी (अगर्चे इमाम से पीछे हों) मुख़लिफ़ इमारतों का येही हुक्म है। बहर हाल एक इमारत या वसीअ मैदान का हुक्म वोही है जो सहरा का है।

मस्बूक के अहक़ाम :⁽¹⁾

मसअला 5 : मस्बूक इमाम की नमाज़ का आख़िरी हिस्सा पाए तो वोह नमाज़ के इब्तिदाई हिस्से की तरह है। लिहाजा इमाम की मुवाफ़क़त करे, बाकी नमाज़ को इसी पर मुकम्मल करे और फ़ज्र की नमाज़ के आख़िर में तन्हा कुनूत पढ़े अगर्चे इमाम के साथ कुनूत पढ़ चुका हो (इन्दश्शवाफ़ेअ)।

अगर इमाम के साथ क़ियाम का बा'ज हिस्सा पाए तो दुआ में मशगूल न हो (या'नी घना वगैरा न पढ़े) बल्कि जल्दी से इख़्तिसार के साथ सूरए फ़ातिहा पढ़े (इन्दश्शवाफ़ेअ), अगर उस के फ़ातिहा से फ़ारिग़ होने से पहले इमाम रुकूअ में चला जाए तो अगर फ़ातिहा पढ़ कर रुकूअ में शामिल हो सकता हो तो पढ़ ले वगरना इमाम के साथ रुकूअ में शामिल हो जाए और बा'ज फ़ातिहा कुल फ़ातिहा के हुक्म में है, लिहाजा येह उस से निकल जाने की वजह से साक़ित हो जाएगी।

मस्बूक अगर सूरत पढ़ रहा हो और इमाम रुकूअ में चला जाए तो उसे छोड़ दे।

अगर इमाम को सजदे या तशहहूद में पाए तो तकबीरे तहरीमा कह कर तकबीरे इन्तिक़ाल कहे बिगैर बैठ जाए⁽²⁾ लेकिन अगर इमाम को रुकूअ में पाए तो (तकबीरे तहरीमा के बा'द) रुकूअ

①.....मस्बूक वोह है कि इमाम की बा'ज रकअतें पढ़ने के बा'द शामिल हुवा और आख़िर तक शामिल रहा।

(बहारे शरीअत, जि.1 स.588)

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : तकबीर कहेगा जैसा कि बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 589 पर है कि मस्बूक ने इमाम को क़ा'दा में पाया, तो तकबीरे तहरीमा सीधे खड़े होने की हालत में करे, फिर दूसरी तकबीर कहता हुवा क़ा'दा में जाए।

में जाते हुए दोबारा तक्बीर कहे क्योंकि येह इन्तक़ाल उस के लिये शुमार होगा या'नी रक्अत मिल जाएगी। नमाज़ में अस्ली इन्तक़ालात के लिये तक्बीरें होती हैं न कि आरिज़ी के लिये।

(रुकूअ में शामिल होने वाला) रक्अत पाने वाला तब शुमार होगा जब इमाम के साथ इत्मीनान से रुकूअ कर ले, अगर इमाम हद्दे रुकूअ से निकल आए (फिर येह रुकूअ में जाए) तो इस की वोह रक्अत फ़ौत हो जाएगी।

क़ज़ा औऱ बा जमाअत नमाज़ के अहक़ाम :

मस्अला 6 : जिस की नमाज़े ज़ोहर फ़ौत हो गई और अस्स का वक़्त शुरूअ हो गया (और वोह साहिबे तरतीब हो तो बेहतर येह है कि) पहले ज़ोहर पढ़े फिर अस्स अदा करे। अगर पहले अस्स पढ़ी तो अदा हो जाएगी लेकिन ख़िलाफ़े औला है और वोह इख़िलाफ़ के शुबे में दाख़िल हो जाएगा। अगर इमाम को (अस्स की जमाअत में) पाए तो पहले अस्स की नमाज़ पढ़े फिर ज़ोहर पढ़े क्योंकि जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ना औला है।⁽¹⁾

अगर अब्बल वक़्त में अकेले नमाज़ पढ़ ली फिर जमाअत पाई तो जमाअत से नमाज़ पढ़े और वक़्ती नमाज़ की निय्यत करे, **اَبْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ जिसे चाहेगा शुमार फ़रमा लेगा, अगर फ़ौत शुदा या नफ़ल नमाज़ की निय्यत की तो भी जाइज़ है।⁽²⁾

अगर पहले जमाअत से नमाज़ पढ़ चुका था फिर दूसरी जमाअत पाई तो फ़ौत शुदा या नफ़ल नमाज़ की निय्यत करे, जमाअत से अदा की हुई नमाज़ का इआदा करने की ज़रूरत नहीं जब कि माक़बल सूरात में जमाअत की फ़ज़ीलत पाने का एहतिमाल था (इस लिये वहां वक़्ती नमाज़ की निय्यत का हुक्म है)।

दौशने नमाज़ या बा'दे नमाज़ कपड़ों पर नजासत नज़र आना :

मस्अला 7 : जिस ने नमाज़ पढ़ने के बा'द (क़दरे मानेअ) कपड़ों पर नजासत देखी तो नमाज़ दोबारा पढ़ना बेहतर है ज़रूरी नहीं।

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : अस्स की नमाज़ उस सूरात में जाइज़ होगी जब उसे ज़ोहर की नमाज़ याद न रही या वोह साहिबे तरतीब न हो या'नी उस वक़्त उस के ज़िम्मे पांच से ज़ियादा नमाज़ें हों वरना अस्स की नमाज़ न होगी।

(माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1 स. 705)

साहिबे तरतीब के तफ़सीली अहक़ाम जानने के लिये बहारे शरीअत, जिल्द अब्बल स. 703 ता 707 का मुतालआ कीजिये।

②..... अहनाफ़ के नज़दीक : फ़र्ज़ नमाज़ दोबारा पढ़ना जाइज़ नहीं, नफ़ल की निय्यत से पढ़ सकता है अगर फ़र्ज़ की निय्यत से पढ़ेगा तो वोह नफ़ल ही होगी। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 7 स. 397 मुलख़बसन)

अगर नमाज़ के दौरान नजासत देखे तो नजिस कपड़ा उतार दे और नमाज़ मुकम्मल कर ले, अलबत्ता नए सिरे से पढ़ना मुस्तहब है। इस की दलील सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ना'लैन शरीफैन उतारने वाला वाकिआ है कि जब हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़बर दी कि ना'लैन मुबारक पर कुछ लगा हुआ है तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नए सिरे से नमाज़ न पढ़ी।⁽¹⁾

सजदए सहव के अहकाम :

मस्अला 8 : जिस ने पहला तशह्हुद या दुआए कुनूत छोड़ दी या का'दए ऊला में (बा'दे तशह्हुद) दुरूदे पाक न पढ़ा⁽²⁾ या कोई ऐसा फ़े'ल भूल कर किया कि अगर उसे जान बूझ कर करता तो नमाज़ फ़ासिद हो जाती या शक हुआ कि तीन रक्अतें पढ़ी हैं या चार तो यकीन पर अमल करे और सलाम से पहले दो सजदे करे।⁽³⁾

अगर सजदए सहव करना भूल जाए तो सलाम फेरने के बा'द फ़ौरन याद आ जाए तो कर ले। अगर बा'दे सलाम सजदए सहव करने के बा'द बे वुजू हो गया तो नमाज़ बातिल हो गई क्योंकि जब (बा'दे सलाम) सजदए सहव किया तो गोया उस ने भूल कर ग़ैर महल में सलाम फ़ैर दिया लिहाज़ा इस सलाम के साथ वोह नमाज़ से बाहर नहीं हुआ बल्कि दोबारा नमाज़ में मशगूल हो गया इसी लिये सजदए सहव के बा'द वोह दोबारा सलाम फेरेंगा। अगर मस्जिद से निकलने या ज़ियादा देर बा'द सजदए सहव याद आया तो अब सजदए सहव फ़ौत हो गया।

नमाज़ की निय्यत करते वक्त वस्वसे आना :

मस्अला 9 : नमाज़ की निय्यत में वस्वसे अक्ल की ख़राबी या शरई अहकाम से ला इल्मी के सबब आते हैं क्योंकि निय्यत के मुआमले में हुक्मे इलाही को बजा लाना दूसरों के हुक्म को बजाने की तरह और इस की ता'ज़ीम दूसरों की ता'ज़ीम की तरह है। मफलन अगर किसी के पास कोई आलिमे दीन आए और वोह ता'ज़ीमन उस के लिये खड़ा हो जाए और उस के दाख़िल होते ही

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : मुसल्ली (या'नी नमाज़ी) के बदन का हृदये अक्बर व असगर और नजासते हकीक़िया क़दरे मानेअ से पाक होना नीज़ उस के कपड़े उस जगह का जिस पर नमाज़ पढ़े, नजासते हकीक़िया क़दरे मानेअ से पाक होना (शर्त है)। (बहारे शरीअत, जि.1 स.476) चुनान्वे, बक़दरे मानेअ नजासते हकीक़िया देखी तो नमाज़ शुरूअ ही न होगी नए सिरे से पाक कपड़ों में नमाज़ पढ़नी होगी। रहा आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नमाज़ न लौटाना तो इस की वजह यह है कि “ना'लैन मुबारक में नजासत न थी।” (माखुदाज़मराة المناجیح، ج 1، ص 40)

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : फ़र्ज़ व वित्र व सुनने खातिब में का'दए ऊला में तशह्हुद पर कुछ न बढ़ाना वाजिब है। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 518)

③.....अहनाफ़ के नज़दीक : सजदए सहव सलाम के बा'द है। (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1 स. 708)

कहे : “मैं जैद अलिम फ़ाजिल की आमद पर उस की ता'जीम के लिये खड़ा होने की निय्यत करता और उस की तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं।” तो ऐसा शख्स बे वुकूफ़ है। बल्कि जैसे ही वोह उसे देखे और उस की फ़ज़ीलत का इल्म हो, ता'जीम का सबब पाया जाए और उसे खड़ा कर दे तो वोह ता'जीम करने वाला होगा बशर्ते कि किसी दूसरे काम के लिये ग़फ़लत में खड़ा न हुवा हो। निय्यते नमाज़ में अग्रे इलाही की ता'मील के लिये ज़ोहर, अदा और फ़र्ज़ का होना इसी तरह शर्त है जैसे आने वाले अलिम दीन की ता'जीम के लिये उस के आते ही खड़ा होना, उस की तरफ़ मुतवज्जेह होना और उस का कोई दूसरा सबब न होना (शर्त है)। नीज़ ता'जीम उसी सूरत में होगी कि ता'जीम का इरादा भी हो क्योंकि अगर वोह उस से पीठ फेर कर खड़ा हो गया या कुछ देर ठहर कर खड़ा हुवा तो येह ता'जीम नहीं। फिर इन सिफ़ात का मा'लूम व मक्सूद होना भी ज़रूरी है और दिल में इन की मौजूदगी एक लम्हे से ज़ियादा नहीं होती। अलबत्ता ! इस पर दलालत करने वाले अल्फ़ाज़ की तरतीब में वक़्त लगता है तो वोह ज़बान से बोलता है या दिल में सोचता है। जो शख्स इस तरीक़े पर निय्यत का इल्म रखता हो गोया वोह निय्यत को समझा ही नहीं क्योंकि निय्यत येही है कि जब तुम्हें वक़्त पर नमाज़ की अदाएगी के लिये बुलाया जाए तो हुक्म की ता'मील के लिये फ़ौरन खड़े हो जाओ। अब वस्वसे महज़ जहालत है।

जिसे वस्वसे आते हैं वोह अपने दिल को इस बात का मुकल्लफ़ बनाता है कि दिल में ज़ोहर, अदा और फ़र्ज़ होने को एक ही हालत में तफ़्सीलन अदा करे और इसे मल्हूजे खातिर रखे हालांकि येह महाल है। अगर (इस तरीक़े पर) वोह खुद को अलिम की ता'जीम के लिये क़ियाम का पाबन्द करेगा तो येह उस पर दुश्वार होगा। अल गरज़ इस हालत के जान लेने से ही वस्वसे दूर हो जाएंगे कि निय्यत (के मुआमले) में हुक्मे इलाही की ता'मील ग़ैर के हुक्म की ता'मील की तरह है।

इक्तिदा के अहक़ाम :

मसअला 10 : मुक्तदी रुकूअ व सुजूद में आते जाते और तमाम अरकान में इमाम से न तो आगे बढ़े और न ही इमाम के बराबर हो बल्कि उस से पीछे रहे। येही इक्तिदा का मा'ना है। अगर जान बूझ कर इमाम के साथ साथ अरकान अदा किये तब भी उस की नमाज़ बातिल न होगी जैसा कि इमाम के पहलू में उस के बिल्कुल बराबर खड़ा होने में नमाज़ बातिल नहीं होती।

किसी रुकन की अदाएगी में इमाम से बढ़ जाने की सूरत में नमाज़ बातिल होने में इख़्तिलाफ़ है। येह बात बर्इद नहीं कि उसे इस पर क़ियास किया जाए कि जिस तरह इमाम से आगे खड़े होने की सूरत में नमाज़ बातिल हो जाती इसी तरह किसी रुकन की अदाएगी में इमाम

से बढ़ जाने की सूरत में भी नमाज़ बातिल हो बल्कि यहां बातिल होना ही ज़ियादा मुनासिब है (अहनाफ़ के नज़दीक बातिल नहीं होगी) क्योंकि जमाअत खड़े होने में नहीं बल्कि फे'ल में इक्तिदा का नाम है और फे'ल में इमाम की पैरवी करना ज़ियादा अहम है। नीज़ मुक्तदी के लिये इमाम से आगे खड़ा न होने की शर्त इस लिये लगाई है ताकि फे'ल में इत्तिबाअ आसान हो और इत्तिबाअ का तरीका मा'लूम हो जाए क्योंकि इमाम के शायाने शान येही है कि वोह आगे खड़ा हो। लिहाज़ा अमल में इस से आगे बढ़ने की कोई वजह नहीं। हां, भूल कर हो जाए तो अलग बात है। इसी लिये हुज़ूर नबिय्ये करीम, رُؤفुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सख़्ती से इस का इन्कार करते हुए इरशाद फ़रमाया : “क्या जो शख्स इमाम से पहले सर उठाता है इस से डरता नहीं कि **اللَّهُ** عزَّوَجَلَّ उस का सर गधे का सर कर दे।”⁽¹⁾

एक रुकन में इमाम से पीछे रहने की सूरत में नमाज़ बातिल नहीं होती मषलन मुक्तदी रुकूअ में नहीं गया कि इमाम रुकूअ से सीधा खड़ा हो गया (इस से नमाज़ तो बातिल नहीं होगी) लेकिन इस हद तक पीछे रहना मकरूह है।

अगर इमाम ने सजदे के लिये पेशानी ज़मीन पर रख दी और मुक्तदी अभी तक रुकूअ की हद तक नहीं झुका तो मुक्तदी की नमाज़ बातिल हो जाएगी। यूंही अगर इमाम ने दूसरे सजदे के लिये पेशानी ज़मीन पर रख दी और मुक्तदी ने अभी तक पहला सजदा भी नहीं किया तो भी इस की नमाज़ बातिल हो जाएगी (अहनाफ़ के नज़दीक मज़कूरा सूरत में नमाज़ बातिल नहीं होगी)।

सफ़ें दुरुस्त करना और दाईं जानिब की फज़ीलत :

मसअला 11 : नमाज़ के लिये हाज़िर होने वाले पर लाज़िम है कि अगर किसी को नमाज़ में ग़लती करता देखे तो उसे बता दे और दुरुस्त करवाए। अगर येह अमल किसी जाहिल से सादिर हो तो उसे नमी से समझाए। मषलन सफ़ों को बराबर करने के लिये कहना, सफ़ से अलाहिदा तन्हा खड़े होने वाले को रोकना, इमाम से पहले सर उठाने वाले को रोकना और इस के इलावा दीगर उमूर।

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जाहिल की वजह से उस आलिम के लिये हलाकत है जो जाहिल को सिखाता नहीं।”⁽²⁾

①..... صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب تحريم سبق الامام بر كوع..... الخ، الحديث: ٢٢٤، ص ٢٢٨۔

②..... كنز العمال، كتاب العلم، الحديث: ٢٩٠٣٣، ج ١٠، ص ٨٦، دون “حيث لا يعلمه”۔

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “जो नमाज़ में ग़लती करने वाले को देखे और मन्अ न करे तो वोह उस के गुनाह में शरीक है ।”

हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَخْد फ़रमाते हैं : “गुनाह जब पोशीदा हो तो सिर्फ़ गुनाह करने वाले को नुक़सान देता है लेकिन जब ज़ाहिर हो और उसे बदला न जाए तो इस का नुक़सान सब को होता है ।”⁽¹⁾

हदीषे पाक में है कि हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ टख़्नों पर दुरें मार कर सफ़ें दुरुस्त करवाते ।⁽²⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “नमाज़ में अपने भाइयों को न पाओं तो उन्हें तलाश करो । अगर बीमार हों तो उन की इयादत करो । अगर तुन्दुरुस्त हों तो उन्हें झिड़को ।”

झिड़कने से मुराद जमाअत छोड़ने पर तम्बीह करना है और इस में सुस्ती नहीं करनी चाहिये ।

हिक्वयत :- ओया वोह मुर्दा है :

अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام इस मुआमले में मुबालगा करते हत्ता कि बा'ज़ बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام जमाअत से पीछे रह जाने वालों की तरफ़ जनाज़ा (की चार पाई) उठा कर ले जाते, येह इस बात की तरफ़ इशारा होता कि मुर्दा जमाअत से पीछे रहता है न कि जिन्दा !

मस्जिद में दाख़िल होने वाले को चाहिये कि सफ़ की दाई जानिब बैठने का इरादा करे, कि ज़मानए रिसालत में (सफ़ के) दाई जानिब लोगों का हुजूम होता था हत्ता कि बारगाहे रिसालत में अज़र्ज की गई कि “बाई तरफ़ को छोड़ दिया गया ।” तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने बाई जानिब को आबाद किया उस के लिये दुगना अज़्र है ।”⁽³⁾

(नमाज़ में हाज़िर होने वाला) सफ़ में किसी ना समझ बच्चे को पाए और अपने खड़े होने की जगह न पाए तो बच्चे को पीछे कर के खुद सफ़ में खड़ा हो सकता है । नमाज़ के वोह मसाइल कि जिन में आम लोग मुब्तला हैं येह उन में से चन्द हैं जिन के बयान करने का हम ने इरादा किया है । नमाज़ के मुतफ़र्रिक अहक़ाम اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ किताबुल अवराद में आएंगे ।



①.....حلیة الاولیاء، بلال بن سعد، الحدیث: ۷۰۱۹، ج ۵، ص ۲۵۳۔

②.....طبقات الحنابلة، الطبقة الاولى، باب المیم، ج ۱، ص ۳۲۸۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب اقامه الصلاه والسنة فیها، باب فضل میمنة الصف، الحدیث: ۱۰۰۷، ج ۱، ص ۵۳۲، بتغیر۔

बाब नम्बर 7 :

नवाफिल का बयान

जान लीजिये ! फ़र्ज के इलावा दीगर नमाज़ों की तीन अक्साम हैं :

(1)....सुन्नत (2)....मुस्तहब और (3).....नफ़ल

﴿1﴾.....सुन्नत : से वोह नमाज़ें मुराद हैं जिन्हें रसूलुल्लाह ﷺ ने पाबन्दी से अदा फ़रमाया । जैसे नमाज़ों के बा'द की सुन्नतें, नमाज़े चाशत, वित्र और तहज्जुद वग़ैरा क्यूंकि सुन्नत उस रास्ते को कहते हैं जिस पर चला जाए ।

﴿2﴾....मुस्तहब : से वोह नमाज़ें मुराद हैं जिन की फ़ज़ीलत पर अहादीष वारिद हों लेकिन हुज़ूरे अन्वर ﷺ ने उन पर हमेशगी इख़्तियार न फ़रमाई हो । जैसा कि हम अ़न क़रीब हफ़्ता भर की दिन रात की नमाज़ों के बयान में नक़ल करेंगे । मषलन घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त की और इस जैसी दीगर नमाज़ें ।

﴿3﴾.....ततव्वुअ़ : से मुराद वोह नमाज़ें हैं जिन के मुतअल्लिक़ ख़ास तौर पर कोई हदीष वारिद न हुई हो लेकिन लोग खुद इन्हें पढ़ते हों क्यूंकि शरीअत में नमाज़ के ज़रीए **अल्लाह** عزّوجلّ से मुनाजात की तरगीब दी गई है । गोया लोग खुद इन्हें पढ़ते हैं क्यूंकि येह नमाज़ मुअय्यन तरीक़े पर मुस्तहब नहीं अगर्चे मुतलक़न मुस्तहब है और ततव्वुअ़, तबरुअ़ को कहते हैं ।

इन तीनों अक्साम को इस ए'तिबार से नवाफ़िल कहा जाता है कि नफ़ल का मा'ना जाइद है और येह तमाम अक्साम फ़राइज़ पर जाइद हैं । इन्ही मक़ासिद को बयान करने के लिये हम ने नफ़ल, सुन्नत, मुस्तहब और ततव्वुअ़ की इस्तिलाह क़ाइम कर ली है, अगर कोई इस इस्तिलाह को बदले तो कोई हरज नहीं क्यूंकि मक़ासिद को समझने के बा'द अल्फ़ाज़ की कोई पाबन्दी नहीं होती । इन में से हर क़िस्म के दर्जात फ़ज़ीलत के ए'तिबार से मुख़लिफ़ हैं । इस सिलसिले में अहादीष और अक्वाले सहाबा मरवी हैं या प्यारे मुस्तफ़ा ﷺ ने इन पर हमेशगी फ़रमाई या इस के मुतअल्लिक़ मरवी रिवायात सहीह और मशहूर हैं । इसी लिये कहा जाता है : जमाअत की सुन्नतें इनफ़िरादी सुन्नतों से अफ़ज़ल हैं । बा जमाअत सुन्नतों में से अफ़ज़ल ईदैन की नमाज़ है, फिर सूरज ग्रहन की, फिर नमाज़े इस्तिस्का । इनफ़िरादी सुन्नतों में अफ़ज़ल वित्र, फिर फ़ज़्र की दो रक़अतें, फिर इस के बा'द अपने अपने मर्तबे के मुताबिक़ बाक़ी सुनने मुअक्क़दा हैं ।

इज़ाफ़त के ए'तिबार से नवाफ़िल की तक्सीम :

जान लीजिये ! नवाफ़िल की अपने मुतअल्लिक़ात की तरफ़ इज़ाफ़त के ए'तिबार से दो क़िस्में हैं : (1).....जिन का तअल्लुक़ अस्बाब से होता है जैसे नमाज़े कुसूफ़ व इस्तिस्का ।

(2).....जिन का तअल्लुक अवकात से होता है और अवकात से मुतअल्लिका नवाफिल की भी कुछ अक्साम हैं : शबो रोज़ के नवाफिल, हफ़्तावार नवाफिल और सालाना नवाफिल ।

इन तमाम की चार अक्साम हैं ।

﴿1﴾....**वोह नमाज़ें जो हर दिन रात पढ़ी जाती हैं :**

येह आठ हैं । पांच इन में से सुन्नते मुअक्कदा हैं जो पांच नमाज़ों की सुन्नतें हैं । तीन इस के इलावा हैं और वोह नमाज़े चाश्त, मग़रिब व इशा के दरमियान (या'नी अव्वाबीन) के नवाफिल और नमाज़े तहज्जुद है ।

(1)....**फ़ज्र की सुन्नतें :**

येह दो रकअतें हैं, इन की फ़ज़ीलत के बारे में मरवी है कि आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “फ़ज्र की दो रकअतें दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर हैं ।”⁽¹⁾

इन का वक़्त सुब्हे सादिक के तुलूअ से शुरूअ होता है । सुब्हे सादिक कनारों में फैलने वाली रोशनी होती है न कि लम्बाई में । इब्तिदा में मुशाहदे के साथ इस का इदराक मुश्किल होता है मगर येह कि चांद की मनाज़िल का इल्म हो या येह कि फुलां सितारा तुलूअ होगा तो सुब्हे सादिक उस के साथ मुत्तसिल होगी पस इस तरह सितारों के ज़रीए इस पर रहनुमाई हासिल होती है । महीने की दो रातों में चांद के ज़रीए येह वक़्त मा'लूम होता है क्यूंकि छब्बीसवीं की रात चांद फ़ज्र के साथ तुलूअ होता है और महीने की बारहवीं रात चांद के गुरूब होने के साथ फ़ज्र तुलूअ होती है अकषर ऐसा ही होता है । बा'ज़ बुरजों में फ़र्क भी पड़ता है, इस की तशरीह तवील है । सालिक के लिये चांद की मनाज़िल का जानना अहम उमूर में से है ताकि वोह दिन रात के अवकात की मिक्दार पर मुत्तलअ हो सके ।

फ़ज्र की फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त फ़ौत हो जाने से फ़ज्र की सुन्नतें फ़ौत हो जाती हैं और वोह तुलूए आफ़ताब का वक़्त है । लेकिन सुन्नत येह है कि इन्हें फ़र्ज़ नमाज़ से पहले अदा किया जाए । अगर जमाअत खड़ी हो जाने के बा'द मस्जिद में दाख़िल हुवा तो फ़र्ज़ नमाज़ अदा करे क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब नमाज़ खड़ी हो जाए तो फ़र्ज़ नमाज़ के इलावा कोई नमाज़ जाइज़ नहीं ।”⁽²⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب ركعتی سنة الفجر، الحديث: ۷۲۵، ص ۳۶۶۔

②.....المرجع السابق، باب كراهة الشروع فی نافلة بعد شروع.....الخ، الحديث: ۷۱۰، ص ۳۵۸۔

जब फ़र्ज़ नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो उठ कर सुन्नतें अदा कर ले⁽¹⁾ और सहीह येह है कि येह सूरज तुलूअ होने से पहले अदा ही होगी क्यूंकि येह दोनों वक़्त में फ़र्ज़ के ताबेअ हैं। तक्दीम व ताख़ीर के ए'तिबार से इन में तरतीब उस वक़्त सुन्नत है जब जमाअत न हो रही हो और जमाअत हो रही हो तो तरतीब बदल जाएगी लेकिन अदाएंगी बाक़ी रहेगी।⁽²⁾

मुस्तहब येह है कि सुन्नतें घर में मुख़्तसर तौर पर अदा करे। फिर मस्जिद में दाख़िल हो और दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद अदा करे और बैठ जाए⁽³⁾ फिर फ़र्ज़ नमाज़ तक कोई नमाज़ न पढ़े। नमाज़े फ़ज़्र और तुलूए आप़ताब के दरमियानी वक़्त में ज़िक़्रो फ़िक़्र, फ़ज़्र की दो रकअतों और फ़र्ज़ नमाज़ पर इक्तिफ़ा करे।

(2).....जोहर की सुन्नतें :

येह छे रकअत हैं। दो फ़र्ज़ के बा'द हैं, वोह भी सुन्नते मुअक्क़दा हैं और चार फ़र्ज़ से पहले हैं, वोह भी सुन्नत हैं लेकिन फ़र्ज़ों के बा'द वाली दो रकअतों के मुक़ाबले में कम अहम हैं।

जोहर की चार सुन्नतों की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने ज़वाल के बा'द चार रकअतें पढ़ीं इन में अच्छी तरह क़िराअत की और रुकूअ व सुजूद किया उस के साथ 70 हज़ार फ़िरिशते नमाज़ पढ़ते और रात तक उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं।”⁽⁴⁾

①....दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 664 पर है : फ़ज़्र की सुन्नत क़ज़ा हो गई और फ़र्ज़ पढ़ लिये तो अब सुन्नतों की क़ज़ा नहीं अलबत्ता इमाम मुहम्मद رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि तुलूए आप़ताब के बा'द पढ़ ले तो बेहतर है। और तुलूअ से पेशतर (सूरज निकलने से पहले) बिल इत्तिफ़ाक़ ममनूअ है। आज कल अकषर अ़वाम बा'दे फ़र्ज़ फ़ौरन पढ़ लिया करते हैं येह ना जाइज़ है, पढ़ना हो तो आप़ताब बुलन्द होने के बा'द ज़वाल से पहले पढ़ें।

②.....बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 665 पर है : जमाअत काइम होने के बा'द किसी नफ़ल का शुरूअ करना जाइज़ नहीं सिवा सुन्नते फ़ज़्र के कि अगर येह जाने कि सुन्नत पढ़ने के बा'द जमाअत मिल जाएगी, अगर्चे का'दा ही में शामिल होगा तो सुन्नत पढ़ ले।

③.....बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 455 पर है : हदीषे मुबारका में है कि “जब फ़ज़्र तुलूअ कर आए तो कोई (नफ़ल) नमाज़ नहीं सिवा दो रकअत फ़ज़्र के।”

(المعجم الاوسط لطبرانی، الحديث: 819، ج 1، ص 238)

लिहाज़ा अहनाफ़ के नज़दीक : तुलूए फ़ज़्र से तुलूए आप़ताब तक के इस दरमियान में सिवा दो रकअत सुन्नते फ़ज़्र के कोई नफ़ल नमाज़ जाइज़ नहीं।

④.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فيه کتاب فضل الصلاة فی الايام.....الخ، ج 1، ص 52.

एक रिवायत में है कि हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ज़वाल के बा'द चार तवील रकअतें पढ़ना तर्क न करते और इरशाद फ़रमाते : “इस वक़्त आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं और मैं पसन्द करता हूँ कि इस घड़ी मेरा अमल बुलन्द हो।”⁽¹⁾

हर रोज़ बारह रकअत सुन्नत अदा करने की फज़ीलत :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि अब्बाह के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने हर रोज़ फ़र्ज नमाज़ों के इलावा 12 रकअतें अदा कीं उस के लिये जन्नत में एक घर बनाया जाएगा। दो रकअतें नमाज़े फ़ज़्र से पहले, चार ज़ोहर से पहले, दो ज़ोहर के बा'द, दो अ़स्र से पहले और दो मग़रिब के बा'द।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “मैं ने हुजूर नबिये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हर रोज़ की दस रकअतें याद कीं।” फिर इन्हों ने फ़ज़्र की दो रकअतों के इलावा वोह तमाम ज़िक्र कीं जो उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हबीबा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने बयान फ़रमाई। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि सुब्ह के वक़्त बारगाहे रिसालत में कोई नहीं जाता था मगर मेरी बहन उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना हफ़सा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने मुझे बताया कि “आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरे घर में दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमा कर बाहर तशरीफ़ ले जाते थे।”⁽³⁾

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने ज़ोहर से पहले दो रकअत सुन्नत और दो इशा के बा'द बयान कीं यूँ ज़ोहर से क़ब्ल दो रकअतें चार के मुक़ाबले में ज़ियादा मुअक्कद हो गई और ज़ोहर का वक़्त ज़वाल के बा'द शुरू होता है।

ज़वाल के वक़्त की पहचान :

ज़वाल की पहचान येह है कि कोई शख़्स सीधा खड़ा हो कर मशरिफ़ की तरफ़ झुके तो उस का साया ज़ियादा हो जाए। क्यूँकि तुलूअ के वक़्त साया मग़रिब की जानिब होता है और

①.....المرجع السابق-شرح معاني الآثار، كتاب الصلاة، باب التطوع بالليل والنهار، الحديث: ١٩٢٢، ج ١، ص ٣٣٦۔

②.....سنن النسائي، كتاب قيام الليل وتطوع النهار، باب ثواب من صلى في اليوم.....الخ، الحديث: ١٨٠٠، ص ٣٠٨۔

③.....صحيح البخاري، كتاب التهجد، باب الركعتان قبل الظهر، الحديث: ١٨٠-١٨١، ج ١، ص ٣٩٨، مفهوماً۔

लम्बा होता है जूँ जूँ सूरज बुलन्द होता जाता है साया कम होता और मगरिब की सप्त से बटता जाता है यहां तक कि सूरज अपनी इन्तिहाई बुलन्दी तक पहुंच जाता है और वोह निस्फुन्नहार की कोस है। यहां साया कम होना रुक जाता है जब सूरज इन्तिहाई बुलन्दी से ढलना शुरूअ हो जाता है तो साया बढ़ना शुरूअ हो जाता है, जब येह इजाफ़ा महसूस होने लगे तो जोहर का वक़्त शुरूअ हो जाता है।

इब्तिदाए वक़्ते अ़स्र :

जवाल के वक़्त साए के सिरे पर एक अ़लामत (मषलन कोई लकड़ी) रखी जाए जब साया उस लकड़ी की एक मिषल हो जाए तो (जोहर का वक़्त ख़त्म और) अ़स्र का वक़्त शुरूअ हो जाता है।⁽¹⁾

(3).....अ़स्र की सुन्नतें :

येह अ़स्र से पहले चार रकअत हैं। हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारो मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :
“**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बन्दे पर रहूम फ़रमाए जिस ने अ़स्र से पहले चार रकअतें पढ़ीं।”⁽²⁾

दुआए मुस्तफ़ा में शामिल होने की उम्मीद पर येह नमाज़ पढ़ना निहायत मुअक्कद मुस्तहब है क्यूंकि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुआ बिल यकीन क़बूल होती है। लेकिन जिस तरह पाबन्दी के साथ जोहर से पहले दो सुन्नतें पढ़ते अ़स्र से क़बूल की सुन्नतों पर इस तरह हमेशगी इख़्तियार नहीं फ़रमाई।

(4).....मगरिब की सुन्नतें :

येह फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द दो रकअतें हैं इन के मुतअल्लिक़ रिवायत में इख़्तिलाफ़ नहीं। अलबत्ता नमाज़े मगरिब से पहले या'नी अज़ान और इक़ामत के दरमियान दो रकअतें जल्दी जल्दी पढ़ने के बारे में सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اٰجْمَعِيْنَ की एक जमाअत जैसे हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब, हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित, हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र और हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ वगैरा से रिवायत मन्कूल है। चुनान्वे,

①...अहनाफ़ के नज़दीक : अ़स्र का वक़्त (किसी चीज़ के) सायए अस्ली के इलावा दो मिषल साया होने पर शुरूअ होता है। (مختصر القدوري، ص ३५، ३४)

②.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الصلاة قبل العصر، الحديث: १२८۱، ج ۲، ص ۳۵، عن ابن عمر۔

हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित या कोई और सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :

“जब मुअज़्ज़िन मग़रिब की अज़ान देता तो सहाबए किराम عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ दो सुतूनों की तरफ़ जल्दी जल्दी जाते और दो रकअत नमाज़ पढ़ते ।”(1)

बा'ज सहाबए किराम عَلَيْهِمُ أَجْمَعِينَ رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ फ़रमाते हैं : “हम मग़रिब से पहले दो रकअत नमाज़ अदा करते हूँ कि दाख़िल होने वाला समझता कि हम मग़रिब की नमाज़ पढ़ चुके हैं तो वोह पूछता क्या तुम मग़रिब की नमाज़ पढ़ चुके हो ?”(2)

येह इस आम फ़रमाने मुस्तफ़ा के तहत दाख़िल है कि “दो अज़ानों (या'नी अज़ान व इक़ामत) के दरमियान नमाज़ है जो चाहे पड़े ।”(3) (4)

हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَوَّل यह दो रकअतें पढ़ा करते थे । लोगों के ए'तिराज़ करने पर छोड़ दीं वजह पूछी गई तो फ़रमाया : “मैं ने देखा कि लोग नहीं पढ़ते इस लिये मैं ने भी तर्क कर दीं ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “अगर कोई शख़्स येह दो रकअतें घर में पड़े या ऐसी जगह पड़े जहां लोगों की नज़र न पड़े तो बेहतर है ।”(5)

इब्तिदाए वक़्ते मग़रिब :

ऐसी हमवार ज़मीनें जो पहाड़ों के पीछे नहीं छुपी होतीं उन में मग़रिब का वक़्त सूरज के निगाहों से गाइब होने के बा'द शुरू होता है अगर वोह मग़रिब की तरफ़ से पहाड़ों के पीछे छुपी हों तो तवक्कुफ़ किया जाए यहां तक कि मशरिक़ की जानिब से अंधेरा आता दिखाई दे कि **اَبْلَاهُ** غَرْوَجَل के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब रात उधर से आ जाए और दिन वहां से चला जाए तो रोज़ादार रोज़ा इफ़्तार कर ले ।”(6)

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب رکعتین.....الخ، الحديث : ۸۳۷، ص ۴۱۸، عن انس بن مالک

②.....المرجع السابق، الحديث ۸۳۷، ص ۴۱۸، مفهوماً۔

③.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب بین کل اذانین صلاة، الحديث : ۸۳۸، ص ۴۱۸۔

④.....अहनाफ़ के नज़दीक : गुरुबे आप़ताब से फ़र्जे मग़रिब तक नफ़ल नमाज़ पढ़ना मन्अ है ।

(फ़तावौ عالمگیری، ج ۱، ص ۵۳)

⑤.....قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۲۸۔

⑥.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب بیان وقت انقضاء الصوم وخروج النهار، الحديث : ۱۱۰۱، ۱۱۰۲، ص ۵۵۴۔

मग़रिब की नमाज़ खुसूसन जल्दी जल्दी पढ़ना पसन्दीदा है अगर इसे शफ़के अहमर (सुर्खी) गा़इब होने से पहले जल्दी जल्दी पढ़ ले तो अदा होगी लेकिन (इतनी ताख़ीर) मकरूह है⁽¹⁾ कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से एक बार मग़रिब की नमाज़ में इतनी ताख़ीर हो गई कि एक सितारा निकल आया तो आप ने एक गुलाम आज़ाद किया और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से इतनी ताख़ीर हो गई कि दो सितारे निकल आए तो उन्होंने ने दो गुलाम आज़ाद किये ।

(5).....इशा की सुन्नतें :

येह फ़र्ज नमाज़ के बा'द चार रकअतें हैं । उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना आइशा सिद्दीका तय्यिबा त़ाहिरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इशा की नमाज़ के बा'द चार रकअत पढ़ते फिर आराम फ़रमाते ।”⁽²⁾

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने (मज़क़ूरा) अह़दीष के मजमूए से फ़र्जों की ता'दाद के मुताबिक़ 17 सुन्नतों को इख़्तियार फ़रमाया : “दो रकअतें फ़त्र से पहले, चार ज़ोहर से पहले और दो बा'द, चार अ़स् से पहले, दो मग़रिब के बा'द और इशा के बा'द तीन वित्र ।”⁽³⁾

जब आप इस सिलसिले में वारिद रिवायात की पहचान हासिल कर चुके तो इन की ता'दाद मुअय्यन करने का क्या मा'ना हालांकि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “नमाज़ जो मुक़र्रर की गई इस में भलाई ही भलाई है तो जो चाहे ज़ियादा पढ़े और जो चाहे कम पढ़े ।”⁽⁴⁾ लिहाज़ा राहे आख़िरत का हर मुसाफ़िर नमाज़ों में से उसी क़दर इख़्तियार करता है जिस क़दर वोह भलाई में रग़बत रखता है । हमारी ज़िक् कर्दा तफ़्सील से वाज़ेह़ हुवा कि बा'ज नवाफ़िल की दीगर बा'ज से ज़ियादा ताकीद है और मुअक्कद अमल को

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : वक्ते मग़रिब गुरुबे आफ़ताब से गुरुबे शफ़क़ तक है । शफ़क़ हमारे मज़हब में उस सपेदी का नाम है, जो जानिबे मग़रिब में सुर्खी डूबने के बा'द जुनूबन शुमालन सुब्हे सादिक् की तरह फैली हुई रहती है । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 450-451)

②.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الصلاة بعد العشاء، الحديث: 1303، ج 2، ص 26، باختصار۔

③.....سنن النسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النهار، باب کیف الوتر بثلاث؟، الحديث: 1293، ص 293-294، مفهوماً۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة رضی اللّٰهُ عنها، الحديث: 2528، ج 9، ص 98، مفهوماً۔

④.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث ابی ذر الغفاری، الحديث: 21202، ج 8، ص 130، بتقدم وتاخر۔

तर्क करना नामुनासिब है खुसूसन इस सूरत में कि फ़राइज़ की तक्मील नवाफ़िल के ज़रीए होती है तो जो कषरत से नवाफ़िल न पढ़े तो क़रीब है कि उस के फ़राइज़ पूरे न हों और उन के नुक्सान के तदारुक की भी कोई सूरत न हो ।

(6)....नमाज़े वित्र :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मक्की मदनी सरकार سَيِّحِ اسْمُ رَيْكَ الْاَعْلَى” इशा के बा’द तीन रकअत वित्र पढ़ते । पहली रकअत में “قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ” और तीसरी में “قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ” की तिलावत फ़रमाते ।⁽¹⁾

हदीषे पाक में है कि “मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वित्र के बा’द दो रकअतें बैठ कर अदा करते और कुछ हिस्सा चार जानू पढ़ते थे ।”⁽²⁾

बा’ज अहदीषे मुबारका में है कि “जब बिस्तर पर तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमाते तो घुटनों के बल इस की तरफ़ बढ़ते और सोने से पहले इस पर दो रकअतें अदा फ़रमाते और इन में “سورة زلزال” और “سورة تكاثر” पढ़ते ।”⁽³⁾

एक रिवायत में है कि “سورة كافرين” की जगह “سورة تكاثر” पढ़ते ।⁽⁴⁾

वित्र मौसूलन या’नी एक सलाम के साथ और मफ़सूलन या’नी दो सलामों के साथ भी जाइज़ है ।⁽⁵⁾

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الصلاة، باب ماجاء فيما يقرأ فى الوتر، الحديث: ١٤٢٠، ج ٢، ص ٤٣، ملخصاً۔

②.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين، وقصرها، باب صلاة الليل.....الخ، الحديث: ٤٣٨، ص ٤٢۔

③.....حاشية اعانة الطالبين، فصل فى صلاة النفل، ج ١، ص ٢٣١۔

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فى فضائل اهل السنة.....الخ، ج ٢، ص ٢٤٢، دون “يقرء”۔

④.....السنن الكبرى للبيهقى، كتاب الصلاة، باب فى الركعتين بعد الوتر، ج ٣، ص ٢٨۔

حاشية اعانة الطالبين، فصل فى صلاة النفل، ج ١، ص ٢٣١۔

⑤....अहनाफ़ के नज़दीक : नमाज़े वित्र वाजिब है और नमाज़े वित्र तीन रकअत है और इस में का’दए ऊला वाजिब है और का’दए ऊला में सिर्फ़ अतहिय्यात पढ़ कर खड़ा हो जाए, न दुरुद पढ़े न सलाम फेरे जैसे (नमाज़े) मगरिब में करते हैं इसी तरह करे और अगर का’दए ऊला भूल कर खड़ा हो गया तो लौटने की इजाज़त नहीं बल्कि सजदए सहव करे । वित्र की तीनों रकअतों में मुतलकन क़िराअत फ़र्ज़ है और हर रकअत में बा’दे फ़ातिहा सूरत मिलाना वाजिब । (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1 स. 653-654)

नीज हुजूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक, तीन, पांच⁽¹⁾ और इसी तरह ग्यारह रकअत से वित्र बनाते थे।⁽²⁾ तेरह रकअतों वाली रिवायत में इज़तिराब है।⁽³⁾ एक गैर मा'रूफ़ रिवायत में 17 रकअत वित्र का जिक्र है।⁽⁴⁾

तमाम रकअतें जिन्हें हम ने वित्र का नाम दिया है येह हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शब की नमाज़ या'नी तहज्जुद थी और रात को तहज्जुद पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा है।

अन करीब किताबुल अवराद (या'नी वज़ाइफ़ के बयान) में इस का जिक्र आएगा।

वित्र कितनी रकअत पढ़ना अफ़ज़ल है ?

वित्र की फ़ज़ीलत में इख़िलाफ़ है :

(1)....एक रकअत वित्र पढ़ना अफ़ज़ल है क्यूंकि सहीह तौर पर षाबित है कि मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक रकअत वित्र पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते थे।

(2)....(वित्र तीन रकअत) मिला कर पढ़ना अफ़ज़ल है ताकि इख़िलाफ़ का शुबा न रहे खुसूसन जब इमाम पढ़ा रहा हो क्यूंकि बा'ज अवकात इस की इक्तिदा में ऐसा शख्स भी होता है जो एक रकअत नमाज़ का काइल नहीं होता (मषलन कोई हनफ़ी मुक्तदी हो)। अगर मिला कर पढ़े तो तमाम से वित्र की निय्यत करे। अगर इशा की दो सुन्नतों या फ़र्जों के बा'द एक रकअत वित्र की निय्यत से पढ़े तो येह भी दुरुस्त है। क्यूंकि नमाज़े वित्र में शर्त येह है कि वोह ताक़ हो और गैर को भी ताक़ बना दे जैसे पहले गुज़रा कि इस नमाज़ ने फ़र्ज नमाज़ को वित्र बना दिया।

इशा से कब्ल वित्र पढ़ना दुरुस्त नहीं या'नी वित्र की फ़ज़ीलत न पाएगा जो उस के लिये सुख़् ऊंटों से बेहतर है। जैसा कि हदीष में वारिद है।⁽⁵⁾ वरना जब भी एक रकअत पढ़े दुरुस्त है (इन्दश्शवाफ़ेअ)। इशा से पहले सहीह न होने की वजह येह है कि येह अमलन इजमाए उम्मत के ख़िलाफ़ है। नीज इस से पहले कोई नमाज़ नहीं जो इस के साथ वित्र बन सके।

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة اللیل.....الخ، الحدیث: ۴۳۶، ص ۳۷۱۔

سنن النسائی، کتاب قیام اللیل وتطوع النهار، باب کیف الوتر بثلاث؟، الحدیث: ۱۶۹۴، ص ۲۹۴۔

صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة اللیل.....الخ، الحدیث: ۴۳۷، ص ۳۷۱۔

②.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب جامع صلاة اللیل.....الخ، الحدیث: ۴۳۶، ص ۳۷۵۔

سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب فی صلاة اللیل، الحدیث: ۱۳۶۲، ج ۲، ص ۶۶۔

③.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب فی صلاة اللیل، الحدیث: ۱۳۶۲، ج ۲، ص ۶۶۔

④.....الزهد لابن المبارك، الجزء العاشر، الحدیث: ۱۲۷۳، ص ۲۵۱۔

⑤.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحباب الوتر، الحدیث: ۱۴۱۸، ج ۲، ص ۸۹۔

अगर तीन वित्रों को अ़लाहिदा अ़लाहिदा पढ़े तो दो रकअतों की नियत में तअम्मूल है क्योंकि अगर इस से वोह तहज्जुद या इशा की सुन्नतों की नियत करे तो वोह वित्र न होंगे और अगर वित्रों की नियत करे तो वोह ज़ाती तौर पर वित्र नहीं कि वित्र तो उस के बा'द हैं। ज़ियादा ज़ाहिर येह है कि वोह वित्र की नियत करे जैसा कि मुत्तसिलन तीन रकअत में वित्र की नियत करता है।

वित्र के मअानी :

वित्र के दो मअानी हैं : एक येह कि वोह फ़ी नफ़्सही वित्र हैं और दूसरा येह कि इसे बा'द वाली रकअत से मिला कर वित्र बना दिया जाए और तीन का मजमूआ वित्र बन जाए। तीन रकअतों में से दो रकअतों का वित्र होना तीसरी रकअत पर मौकूफ़ है। अगर इस का अज़्म हो कि तीसरी रकअत के साथ वित्र बना लेगा तो इन दोनों से वित्र की नियत करे कि तीसरी रकअत बि नफ़्सही वित्र है और ग़ैर को वित्र बनाने वाली है। दो रकअतें न तो बज़ाते खुद वित्र हैं और न ही किसी और को वित्र बनाती हैं लेकिन दूसरी नमाज़ के साथ वित्र बन जाती हैं। नमाज़े वित्र रात की नमाज़ के आख़िर में होनी चाहिये यूं येह तहज्जुद के बा'द वाक़ेअ होगी।

नमाज़े वित्र तहज्जुद के फ़ज़ाइल और इन दोनों के दरमियान तरतीब का तरीक़ए कार किताबे तरतीबुल अवराद (वज़ाइफ़ की तरतीब के बयान) में आएगा।

(7)....नमाज़े चाशत :

नमाज़े चाशत पर हमेशगी इख़्तियार करना अच्छा और बाइषे फ़ज़ीलत है। इस की ज़ियादा से ज़ियादा आठ रकअतें हैं। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रमैल्लैह त़ैअली एन्हा की बहन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हानी ऱज़ील्लैह त़ैअली एन्हा से मरवी है कि “हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चाशत की आठ रकअत पढ़ीं, इन्हें निहायत तबील और उम्दगी से पढ़ा।”⁽¹⁾ येह ता'दाद किसी और सहाबी ने नक्ल नहीं की बल्कि उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अ़इशा सिद्दीक़ा तय्यिबा त़ाहिरा ऱज़ील्लैह त़ैअली एन्हा फ़रमाती हैं कि ताजदारे अम्बिया, महबूबे क़िब्रिया صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चाशत की चार रकअत पढ़ते थे और मज़ीद जितनी **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता पढ़ते।⁽²⁾ ज़ियादती की कोई हद नहीं या'नी चार रकअत पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते थे इस से कम न पढ़ते, अलबत्ता कभी ज़ियादा (भी) पढ़ लेते थे।

①.....صحیح مسلم، کتاب الحيض، باب تسترالمغتسل بثوب ونحو، الحديث: ۳۳۶، ص ۱۸۶، دون “اطالعن وحسنهن”۔

قوت القلوب، الفصل السادس والثلاثون فی فضائل اهل السنة.....الخ، ج ۲، ص ۲۲۶۔

②.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب صلاة الضحی.....الخ، الحديث: ۷۱۹، ص ۳۶۲۔

एक रिवायत में है कि हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ चाशत की छे रकअतें अदा फरमाते थे ।⁽¹⁾

चाशत का वक्त :

जहां तक इस के वक्त का तअल्लुक है तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा क़र्रमَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से मरवी है कि हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दो वक्तों में चाशत की छे रकअतें पढ़ते थे : (1)....जब सूरज रोशन और बुलन्द हो जाता तो दो रकअतें पढ़ लेते । येह दिन के वज़ाइफ़ में से दूसरे वज़ीफ़े का पहला हिस्सा है जैसा कि अंन करीब आएगा । (2).....जब सूरज मशरिकी जानिब आस्मान के चौथे हिस्से में फैल जाता तो चार रकअत पढ़ते ।⁽²⁾

पहली (दो रकअत) उस वक्त पढ़ते जब सूरज निस्फ़ नेज़ा बुलन्द हो जाता और बाक़ी रकअत दिन का चौथाई हिस्सा गुज़र जाने पर पढ़ते जो नमाज़े अस्स का मुक़ाबिल वक्त होता क्यूंकि अस्स का वक्त वोह है कि जब दिन का चौथाई हिस्सा बाक़ी रहे । जोहर का वक्त निस्फ़ दिन से शुरूअ होता है । चाशत का वक्त तुलूअ आफ़ताब और ज़वाल के निस्फ़ में होता है जैसा कि अस्स का वक्त ज़वाल और ग़रुबे आफ़ताब के निस्फ़ में होता है । येह तमाम अवकात में अफ़ज़ल वक्त है । अल ग़रज़ सूरज बुलन्द होने से ज़वाल से पहले तक चाशत का वक्त है ।

(8).....सलातुल अव्वाबीन :

येह नमाज़ भी सुन्ते मुअक्कदा है (इन्दशशवाफ़ेअ) । इस की छे रकअत मन्कूल हैं ।⁽³⁾ इस नमाज़ की बहुत ज़ियादा फ़ज़ीलत है । फ़रमाने बारी तआला :

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

(प २१, السجدة: १५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें

जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से ।

मन्कूल है कि “इस फ़रमाने अलीशान से येही (या’नी सलातुल अव्वाबीन) मुराद है । नीज़ मरवी है कि हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

①.....المعجم الكبير، الحديث: १०५३، ج २، ص २३५-

②.....سنن النسائي، كتاب الامامة، باب الصلاة قبل العصر.....الخ، الحديث: ८८५، ص १५२، مفهوماً-

③.....المعجم الصغير، باب الميم، ج १، ص २८-

“जिस ने मग़रिब व इशा के दरमियान नमाज़ पढ़ी तो येह अव्वाबीन की नमाज़ है।”⁽¹⁾

सलातुल अव्वाबीन पढ़ने की फ़ज़ीलत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“जो शख्स खुद को मग़रिब व इशा के दरमियान मस्जिद में रोके रखे, नमाज़ व तिलावते कुरआन के सिवा कोई गुफ़्तगू न करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर है कि उस के लिये जन्नत में दो ऐसे महल बनाए कि हर महल की लम्बाई 100 साल की मसाफ़त होगी और उस के लिये इन दोनों के दरमियान ऐसा दरख़्त लगाए कि अगर तमाम अहले ज़मीन इस में घूमें तो सब के लिये काफ़ी हो।”⁽²⁾

बाक़ी फ़ज़ाइल إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ किताबुल अवराद के बयान में आएंगे।

﴿2﴾..... हफ़तावार शबो रोज़ के नवाफ़िल :

येह हफ़्ते के तमाम दिनों और रातों की नमाज़ें हैं। रही दिन की नमाज़ें तो हम हफ़्ते के दिन से शुरूअ करते हैं :

इतवार के नवाफ़िल

जन्नत में ख़ालिस कस्तूरी का शहर :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने इतवार के दिन चार रकअत नमाज़ पढ़ी यूँ कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा और सूरए बक़रह की आख़िरी आयात (امن الرسول से आख़िर तक)” पढ़ी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये तमाम नसरानी मर्दों और औरतों की ता’दाद के बराबर नेकियां लिखेगा। उसे एक नबी के षवाब के बराबर षवाब अता फ़रमाएगा। उस के लिये एक हज़ व उमरे का षवाब लिखेगा। हर रकअत के बदले हज़ार नमाज़ों का षवाब अता फ़रमाएगा और उसे हर हर्फ़ के बदले जन्नत में ख़ालिस कस्तूरी का शहर अता फ़रमाएगा।^{(3) (4)}

①.....الزهد لابن المبارك، الجزء العاشر، الحديث: ١٢٥٩، ص ٢٢٥

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فضل الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٨

③.....इस हदीष को उ-लमा ने मौजूअ क़रार दिया है लिहाज़ा इसे बयान न किया जाए।

④.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فضل الصلاة.....الخ

चार रकअत पढ़ने की फज़ीलत :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “इतवार के दिन क़षरते नमाज़ से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की वहदानिय्यत बयान करो। बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ यक्ता है। उस का कोई शरीक नहीं। पस जिस ने इतवार के दिन नमाज़े ज़ोहर के फ़र्ज़ व सुन्नतों के बा’द चार रकअत नमाज़ पढ़ी, पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा और तनज़ीलुस्सजदह पढ़ी और दूसरी में सूरए फ़ातिहा और सूरए मुल्क पढ़ी, फिर तशह्हुद पढ़ कर सलाम फेरा फिर आख़िरी दो रकअतें पढ़ने के लिये खड़ा हो गया और इन में सूरए फ़ातिहा और सूरए जुमुअह की तिलावत की और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से अपनी हाज़त त़लब की तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के ज़िम्माए करम पर है कि उस की हाज़त पूरी फ़रमा दे।”⁽¹⁾

पीर के नवाफ़िल

तमाम गुनाह मुआफ़ :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स बरोज़ पीर सूरज बुलन्द होते वक़्त दो रकअतें अदा करे हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, एक बार आयतुल कुरसी, एक बार सूरए इख़्लास और एक एक बार मुअव्वज़तैन (या’नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़े फिर सलाम फेर कर दस बार इस्तिग़फ़ार करे और दस बार मुज़ पर दुरूदे पाक पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा देगा।”⁽²⁾

फ़िरिशते इस्तिक्बाल करेंगे :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि सरकारे मक्काए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : जो शख्स बरोज़ पीर बारह रकअतें पढ़े, हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और आयतुल कुरसी पढ़े, सलाम फेरने के बा’द बारह बार सूरए इख़्लास पढ़े और बारह बार इस्तिग़फ़ार करे तो बरोज़े क़ियामत निदा

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فـ لـ الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٢-٥٣.

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فـ لـ الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٣.

दी जाएगी : “फुलां बिन फुलां कहां है ? वोह खड़ा हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपना षवाब ले ले ।” चुनान्चे, बतौरे षवाब उसे पहले हजार हुल्ले और ताज अता किये जाएंगे और कहा जाएगा : “जन्नत में दाखिल हो जा ।” पस एक लाख फिरिश्ते एक लाख तोहफों से उस का इस्तिक़बाल करेंगे और उसे तोहफे पेश करेंगे हत्ताकि वोह नूर से बने हुए हजार महल्लात पर जाएगा जो जगमगा रहे होंगे ।⁽¹⁾

मंगल के नवाफिल

शहादत की मौत :

हज़रते सय्यिदुना यजीद रक्काशी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने मंगल के दिन निस्फ़ दिन के वक़्त दस रकअत नमाज़ पढ़ी ।” एक रिवायत में है कि “सूरज बुलन्द होते वक़्त दस रकअत नमाज़ पढ़ी हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, एक बार आयतुल कुरसी और तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ी तो 70 दिन तक उस की कोई बुराई न लिखी जाएगी अगर 70 दिन के अन्दर मर गया तो शहादत की मौत मरेगा और उस के 70 साल के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे ।”⁽²⁾

बुध के नवाफिल

अज़ाबे क़ब्र और क़ियामत की सख़्तियों से नजात :

हज़रते सय्यिदुना अबू इदरीस खौलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الثُّورَانِي हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत करते हैं कि मुस्तफ़ा जाने रहमत ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने बुध के दिन सूरज बुलन्द होते वक़्त बारह रकअत नमाज़ अदा की हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, एक बार आयतुल कुरसी, तीन बार सूरए इख़्लास और तीन तीन बार मुअव्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ी तो अर्श के पास एक मुनादी निदा देता है : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे ! नए सिरे से अमल कर तेरे गुज़श्ता गुनाह बख़्श दिये गए । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तुझ से क़ब्र का अज़ाब, इस की तंगी व तारीकी और क़ियामत की सख़्तियों को उठा लिया ।” उस दिन एक नबी के अमल के बराबर उस का अमल बुलन्द होगा ।⁽³⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب ف-ل الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٣، “يشيعونه” بدله “يسعون به”-

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب ف-ل الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٣-

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب ف-ل الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٣، ليس فيه ذكر آية الكرسي-

जुमा'रात के नवाफिल

मोअमिनीन व मुतवक्कलीन की ता'दाद के बराबर नेकियां :

हज़रते सय्यिदुना इकरमा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ هज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रिवायत करते हैं कि मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने जुमा'रात के दिन जोहर और अ़स्र के दरमियान दो रकअतें पढ़ीं, पहली रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, 100 बार आयतुल कुरसी और दूसरी रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, 100 बार सूरए इख़्लास पढ़ी और 100 बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे रजब, शा'बान और रमज़ान के रोज़े रखने वाले का षवाब अता फ़रमाएगा और उस के लिये हज़ करने वाले की मिस्ल षवाब है। नीज़ उस के लिये मोअमिनीन व मुतवक्कलीन की ता'दाद के बराबर नेकियां लिखी जाएंगी।”⁽¹⁾

जुमुआ के नवाफिल

नेकियां ही नेकियां :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से मरवी है कि आक़ाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जुमुआ का पूरा दिन नमाज़ के लिये है। जब सूरज क़रार पकड़ ले और नेज़े की मिक्दार या इस से ज़ियादा बुलन्द हो जाए तो कोई बन्दए मोमिन अच्छी तरह वुजू करे फिर हालते ईमान और षवाब की उम्मीद पर दो रकअत नमाज़े चाशत पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 200 नेकियां लिखता, उस के 200 गुनाह मिटाता है और जो चार रकअतें पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के 400 दर्जात बुलन्द फ़रमाता है और जो आठ रकअतें पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जन्नत में उस के 800 दर्जात बुलन्द फ़रमाता और उस के तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है और जो बारह रकअतें पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये 2200 नेकियां लिखता, 2200 गुनाह मिटाता है और जन्नत में उस के 2200 दर्जात बुलन्द फ़रमाता है।”⁽²⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فى الصلاة.....الخ، ج 1، ص 52، بتغيرٍ-

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فى الصلاة.....الخ، ج 1، ص 52، بتغيرٍ-

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहूतशम ने इरशाद फ़रमाया : “जो जुमुआ के दिन जामेअ मस्जिद में दाख़िल हो और जुमुआ की नमाज़ से पहले चार रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा और 50 बार सूरए इख़्लास पढ़े वोह मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख लेगा या उसे दिखा दिया जाएगा।”⁽¹⁾

हफ़्ते के नवाफ़िल

अर्शे इलाही के साए में अम्बिया व शुहदा عَلَيْهِمُ السَّلَام का साथ :

हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि प्यारे आका, मदीने वाले मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख़्स हफ़्ते के दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और तीन बार सूरए इख़्लास पढ़े, सलाम फेरने के बा’द आयतुल कुरसी पढ़े तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हर हर्फ़ के बदले उस के लिये एक हज़ व उमरे का षवाब लिखता, हर हर्फ़ के बदले एक साल के रोज़ों और रात के कियाम का षवाब बढ़ाता, हर हर्फ़ के बदले एक शहीद का षवाब अता फ़रमाता है और (बरोजे कियामत) वोह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व शुहदाए उज़्ज़ाम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के साथ अर्शे इलाही के साए में होगा।”⁽²⁾

हफ़्तावार शब के नवाफ़िल ।

शबे इत्वार के नवाफ़िल

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िला :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख़्स शबे इतवार बीस रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, 50 बार सूरए इख़्लास और एक एक बार मुअव्वज़तैन (सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े फिर 100 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर अपने लिये और अपने वालिदैन् के लिये 100 बार मग़फ़िरत की दुआ मांगे, 100 बार दुरूदे पाक पढ़े, अपनी

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیہ کتاب فـ لـ الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۴۔

②.....المرجع السابق، ص ۵۵، ”قل هو الله احد“ بدله ”قل یا ایها الکفرون“۔

ताक़त व कुव्वत से बरात का इज़हार करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करे फिर कहे : मैं गवाही देता हूँ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام सफ़ियुल्लाह हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें अपने दस्ते कुदरत से बनाया है। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ख़लीलुल्लाह, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कलीमुल्लाह, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام रूहुल्लाह और हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हबीबुल्लाह हैं तो उस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अवलाद की दुआ मांगने और न मांगने वालों की ता'दाद के बराबर षवाब है। बरोजे क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अमन वालों के साथ उठाएगा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उसे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िल फ़रमाए।⁽¹⁾

शबे पीर के नवाफ़िल

सलातुल हाजत पढ़ने की फ़ज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना आ'मश رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत करते हैं कि, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम से रिवायत करते हैं कि, हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम ने इरशाद फ़रमाया : “जो पीर के दिन चार रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और 10 बार सूरए इख़्लास पढ़े, दूसरी रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और 20 बार सूरए इख़्लास पढ़े, तीसरी में एक बार सूरए फ़ातिहा और 30 बार सूरए इख़्लास पढ़े, चौथी में एक बार सूरए फ़ातिहा और 40 बार सूरए इख़्लास पढ़े फिर सलाम फेर कर 75 बार सूरए इख़्लास पढ़े फिर अपने और अपने वालिदैन के लिये 75 बार इस्तिग़फ़ार करे फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी हाजत त़लब करे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्मए करम पर है कि उस की हाजत पूरी फ़रमा दे।”⁽²⁾

शबे मंगल के नवाफ़िल

जो शख़्स दो रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में 15 बार सूरए फ़ातिहा, 15 बार सूरए इख़्लास और 15-15 बार मुअव्वज़तैन (या'नी सूरए फ़लक़ व नास) पढ़े और सलाम फेरने के बा'द 15 बार आयतुल कुरसी पढ़े और 15 बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करे तो उस के लिये अज़ीम षवाब और बड़ा अज़्र है।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فـل الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٥-

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فـل الصلاة.....الخ، ج ١، ص ٥٥-٥٦، بتغير-

जहन्नम से आजादी :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स मंगल की रात दो रकअत नमाज़ पढ़े, हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और सात बार सूरए क़द्र और सूरए इख़्लास पढ़े तो **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे जहन्नम की आग से आज़ाद फ़रमा देगा और बरोजे क़ियामत येह नमाज़ उस के लिये जन्नत की तरफ़ राहनुमा और दलील होगी ।”⁽¹⁾

शबे बुध के नवाफ़िल

4 लाख 90 हजार मलाइक़ का नुज़ूल :

शहज़ादिये कौनेन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि नानाए हसनैन, दुखी दिलों के चैन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स बुध की रात चार रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और 10 बार सूरए फ़लक़ पढ़े, दूसरी में एक बार सूरए फ़ातिहा और 10 बार सूरए नास पढ़े फिर सलाम के बा'द 10 बार इस्तिग़फ़ार करे और 10 बार मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े तो हर आस्मान से 70 हजार फ़िरिशते नाज़िल होंगे जो क़ियामत तक उस का षवाब लिखते रहेंगे ।”⁽²⁾

अहले ख़ाना के 10 अफ़राद की शफ़ाअत का हक़ :

एक रिवायत में है कि “जो (इस रात) 16 रकअत नमाज़ पढ़े, सूरए फ़ातिहा के बा'द जितना चाहे (कुरआन) पढ़े और हर दो रकअत के आख़िर में 30 बार आयतुल कुरसी पढ़े और पहली दो रकअतों में 30 बार सूरए इख़्लास पढ़े तो वोह अपने घर वालों में से उन 10 अशख़ास की शफ़ाअत करेगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका होगा ।”

70 साल के गुनाह मुआफ़ :

शहज़ादिये कौनेन हज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शबे बुध छे रकअत पढ़े, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द येह आयत :

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیہ کتاب فـل الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۲، باختصار۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیہ کتاب فـل الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۲، لیس فیہ ذکر الاستغفار والتسليم۔

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتُزِيلُ الْمُلْكَ مِنْ تَشَاءُ وَتُعْزِّزُ مَنْ تَشَاءُ وَتُزِيلُ مَنْ تَشَاءُ ۚ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠﴾

पढ़े, जब फ़ारिग़ हो तो यूँ कहे : جَزَا اللَّهُ مُحَمَّدًا عَمَّا هُوَ أَهْلُهُ : या'नी **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी तरफ़ से हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन की शायाने शान जज़ा अता फ़रमाए । तो उस के 70 साल के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे और उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाएगी ।”

शबे जुमा'रात के नवाफ़िल

शुहदा व सिद्दीकीन का मर्तबा :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने जुमा'रात की रात मग़रिब व इशा के दरमियान दो रकअतें इस तरह पढ़ीं कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा और पांच बार आयतुल कुरसी, पांच बार सूरए इख़्लास और पांच-पांच बार मुअव्वजतैन (या'नी सूरए फ़लक़ व नास) पढ़ीं और सलाम के बा'द 15 बार इस्तिग़फ़ार किया और इस का षवाब अपने वालिदैन को पहुंचाया तो तहक़ीक़ उस ने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया अगर्चे उन का नाफ़रमान हो और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ उसे शुहदा व सिद्दीकीन का मर्तबा अता फ़रमाएगा ।”⁽¹⁾

शबे जुमुआ के नवाफ़िल

12 साल शबो रोज़ इबादत की मिष्ठल :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख़्स शबे जुमुआ मग़रिब व इशा के दरमियान 12 रकअतें पढ़े हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा और 11 बार सूरए इख़्लास पढ़े तो गोया उस ने 12 साल **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की इस तरह इबादत की, कि दिन रोज़े में और रात क़ियाम में गुज़ारी ।”⁽²⁾

①..... قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیہ کتاب فـل الصلاة..... الخ، ج ١، ص ٥٦۔

②..... قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فیہ کتاب فـل الصلاة..... الخ، ج ١، ص ٥۔

शबे क़द्र की इबादत का षवाब :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स शबे जुमुआ इशा की नमाज़ बा जमाअत पढ़े और दो सुन्नतें अदा करने के बा’द 10 रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, सूरए इख़्लास और आख़िरी मुअव्वज़तैन (सूरए फ़लक व नास) पढ़े फिर तीन रकआत वित्र पढ़ कर दाएं पहलू पर क़िल्ला रुख़ हो कर सो जाए तो गोया उस ने शबे क़द्र इबादत में गुज़ारी।”⁽¹⁾

सरकारे मदीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “रोशन रात और चमकते दिन या’नी जुमुआ की रात और जुमुआ के दिन में मुझ पर क़षरत से दुरूदे पाक पढ़ो।”⁽²⁾

शबे हफ़्ता के नवाफ़िल

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स शबे हफ़ता मग़रिब व इशा के दरमियान 12 रकअतें पढ़े उस के लिये जन्नत में एक महल बनाया जाएगा और गोया उस ने हर मोमिन व मोमिना पर सदका किया और यहूदियों से बेज़ार हुवा और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर है कि उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे”⁽³⁾

﴿3﴾....सालाना नवाफ़िल :

येह चार नमाज़ें हैं : इंदैन, तरावीह और माहे रजब व शा’बान की नमाज़।
इंदैन की नमाज़ : सुन्नते मुअक्कदा⁽⁴⁾ और दीन की निशानियों में से एक निशानी है। इस में सात बातों का ख़याल रखना ज़रूरी है :

(1).....तीन बार इस तरह तक्बीर कहना :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ كَثِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَنَ اللَّهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ
या’नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सब से बड़ा है, उस की बहुत ज़ियादा ता’रीफ़ है, उस की सुब्ह-शाम पाकी है, उस के सिवा कोई मा’बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, निरे उसी के हो जाओ, पड़े बुरा मानें काफ़िर।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فـل الصلاة.....الخ، ج 1، ص 56.

②.....المعجم الاوسط، الحديث: 221، ج 1، ص 82، باختصار.

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فـل الصلاة.....الخ، ج 1، ص 56.

④....अहनाफ़ के नज़दीक : इंदैन की नमाज़ वाजिब है मगर सब पर नहीं बल्कि उन्हीं पर जिन पर जुमुआ वाजिब है।
(बहारे शरीअत, जि. 1 स.779)

ईदुल फ़ित्र की रात से शुरू कर के नमाज़े ईद तक कहता रहे और ईदुल अज़हा में यौमे अरफ़ा (9 जुल हिज्जतिल हराम) की फ़त्र से शुरू करे और 13 जुल हिज्जतिल हराम के दिन के आख़िर तक पढ़े। येह कामिल तरीन अक्वाल में से है। फ़र्ज़ नमाज़ों और नवाफ़िल⁽¹⁾ के बा'द तक्बीर कहे फ़राइज़ के बा'द कहने की ज़ियादा ताकीद है।⁽²⁾

(2).....ईद के दिन की सुब्ह गुस्ल करना, ज़ीनत इख़्तियार करना और खुशबू लगाना जैसा कि जुमुआ के बयान में ज़िक्र हुवा, मर्दों के लिये इमामा और चादर अफ़ज़ल है। बच्चे रेशमी कपड़ों से इजतिनाब करें और बुढ़ी औरतें ईद के लिये निकलें तो ज़ीनत इख़्तियार न करें।

(3).....एक रास्ते से जाना और दूसरे से वापस आना।⁽³⁾ कि रसूलुल्लाह ﷺ का येही तरीका था और आप जवान औरतों और पर्दादार ख़वातीन को भी निकलने की इजाज़त देते थे।^{(4) (5)}

(4).....मक्कए मुकर्रमा और बैतुल मुक़दस के इलावा (नमाज़े ईद के लिये) सहरा (या खुले मैदान) में जाना मुस्तहब है। अगर बारिश हो तो मस्जिद में नमाज़ पढ़ने में भी कोई हरज नहीं। दिन अब्र आलूद हो तो इमाम किसी शख्स को नाइब बनाए जो कमज़ोरों को मस्जिद में नमाज़ पढ़ाए और खुद क़वी लोगों के साथ बाहर जाए और (रास्ते में) तक्बीर कहते जाएं।

(5)....वक्त का ख़याल रखना : ईद की नमाज़ का वक्त तुलूए आफ़ताब से ज़वाल तक है।

①....अहनाफ़ के नज़दीक : नफ़ल व सुन्नत व वित्र के बा'द तक्बीर (तक्बीरे तशरीक़) वाजिब नहीं और जुमुआ के बा'द वाजिब है और नमाज़े ईद के बा'द भी कह ले। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 785)

②....अहनाफ़ के नज़दीक : नर्वी ज़िल हिज्जा की फ़त्र से तेरहवीं की अ़स् तक हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बा'द जो जमाअते मुस्तहब्बा के साथ अदा की गई, एक बार तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार अफ़ज़ल इसे तक्बीरे तशरीक़ कहते हैं, वोह येह है : **اللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ اللّٰهُ أَكْبَرُ وَاللّٰهُ أَكْبَرُ** : (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 784)

③.....سنن الترمذی، کتاب العیدین، باب ماجاء فی خروج النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۵۴۱، ج ۲، ص ۶۹۔

④....अहनाफ़ के नज़दीक : औरतों को किसी नमाज़ में जमाअत की हज़िरी जाइज़ नहीं, दिन की नमाज़ हो या रात की, जुमुआ हो या ईदैन, ख़्वाह वोह जवान हों या बुढ़ियां। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 584)

⑤.....صحیح مسلم، کتاب الجمعة، باب ذکر اباحۃ خروج النساء.....الخ، الحدیث: ۸۹۰، ص ۴۴۔

कुरबानी का वक्त :

कुरबानी के वक्त की इब्तिदा दो खुतबों और दो रकअतों जितनी देर के बा'द से ले कर तेरह ज़िल हिज्जा के आखिर (या'नी गुरुबे आफ़ताब से पहले) तक है।⁽¹⁾

कुरबानी की वजह से ईदुल अज़हा में जल्दी करना मुस्तहब है और ईदुल फ़ित्र में ताख़ीर मुस्तहब है ताकि पहले सदक़ए फ़ित्र तक्सीम हो जाए, येही सुन्नत है।⁽²⁾

नमाज़े ईद का तरीक़ा :

(6).....नमाज़े ईद के लिये जाते हुए लोग रास्ते में तक्बीर कहते हुए जाएं। जब इमाम ईदगाह पहुंचे तो न बैठे, न नफ़ल पढ़े और लोग भी नफ़ल न पढ़ें फिर एक मुनादी ए'लान करे कि नमाज़ खड़ी होने वाली है। इमाम उन्हें दो रकअतें पढ़ाए, पहली रकअत में इमाम तक्बीरे तहरीमा और तक्बीरे रुकूअ के इलावा सात तक्बीरें कहे और हर दो तक्बीरों के दरमियान येह तस्बीह पढ़े : “سُبْحَنَ اللهُ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاللهُ أَكْبَرُ” तक्बीरे तहरीमा के बा'द येह कहे : اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهَیَّ لِلْذِّیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ (या'नी मैं ने अपना मुंह उस की तरफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए) और आठवीं तक्बीर तक तअव्वुज़ (या'नी اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ) न पढ़े। पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए ق और दूसरी में اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ (सूरए क़मर) पढ़े। दूसरी रकअत में क़ियाम और रुकूअ की तक्बीरों के इलावा ज़ाइद तक्बीरें पांच हैं, इस में भी हर दो तक्बीरों के दरमियान मज़क़ूरा तस्बीह पढ़े। नमाज़ के बा'द इमाम दो खुतबे पढ़े इन के दरमियान कुछ देर बैठे। जिस की नमाज़े ईद फ़ौत हो जाए वोह इस की क़ज़ा करे।”⁽³⁾

①अहनाफ़ के नज़दीक : कुरबानी का वक्त दसवीं ज़िल हिज्जा के तुलूए सुब्हे सादिक् से बारहवीं के गुरुबे आफ़ताब तक है। (बहारे शरीअत, जि. 3 स. 336)

②.....السنن الکبری للبيهقی، کتاب صلاة العیدین، باب الغدو الى العیدین، الحدیث: ۶۱۴۹، ج ۳، ص ۳۹۹۔

③अहनाफ़ के नज़दीक : इमाम ने नमाज़ पढ़ ली और कोई शख्स बाकी रह गया ख़्वाह वोह शामिल ही न हुवा था या शामिल तो हुवा मगर उस की नमाज़ फ़ासिद हो गई तो अगर दूसरी जगह मिल जाए पढ़ ले वरना नहीं पढ़ सकता, हां बेहतर येह है कि येह शख्स चार रकअत चाशत की नमाज़ पढ़े। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 783)

नोट : नमाज़े ईद का तरीक़ए हनफ़ी की मा'लूमात के लिये बहारे शरीअत जिल्द अव्वल, हिस्सा चहारुम के सफ़हा

781-782 का मुतालआ कीजिये !

कुरबानी :

(7).....मेंढे की कुरबानी करना (सुन्नत है) कि रसूले करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दो चितकुबरे मेंढों की कुरबानी की और उन्हें अपने हाथ से ज़ब्ह किया और पढ़ा : عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अल्लाह** के नाम से, **अल्लाह** या 'नी بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ هَذَا عَنِّي وَعَمَّنْ لَمْ يَضَحَّ مِنْ أُمَّتِي सब से बड़ा है। येह कुरबानी मेरी तरफ़ से और मेरी उम्मत के उन लोगों की तरफ़ से जो कुरबानी नहीं कर सकते।”⁽¹⁾

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : “जो शख्स जुल हिज्जतिल हुराम का चांद देखे और कुरबानी करने का इरादा रखता हो तो अपने बालों और नाखुनों में से कुछ न ले।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “एक शख्स अहदे रिसालत में अपने घर वालों की तरफ़ से कुरबानी करता था वोह खुद भी खाता और दूसरों को भी खिलाता।”⁽³⁾ कुरबानी का गोश्त तीन दिन बल्कि इस के बा'द भी खा सकते हैं। पहले इस की मुमानअत थी फिर रुख़्सत दे दी गई। हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : ईदुल फ़ित्र के बा'द 12 रकअतें पढ़ना और ईदुल अज़हा के बा'द 6 रकअतें पढ़ना मुस्तहब है। (जब कि एक रिवायत में है कि) येह सुन्नत है।”

नमाज़े तरावीह : नमाज़े तरावीह की 20 रकअतें हैं। इन का तरीक़ा मशहूर है और येह भी सुन्नते मुअक्कदा हैं अगरचे इस का दर्जा ईदैन से कम है।

तशरीफ़ तन्हा पढ़ना अफ़ज़ल है या बा जमाअत ? :⁽⁴⁾

इस में इख़िलाफ़ है कि नमाज़े तरावीह बा जमाअत पढ़ना अफ़ज़ल है या तन्हा क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तरावीह की जमाअत के लिये दो या तीन रातें तशरीफ़

①.....سنن أبي داود، كتاب ال - حایا، باب ما يستحب من ال - حایا، الحديث: 2495، ج 3، ص 126، بتغير۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الاضاحی، باب نهی من دخل علیه عشردی الحجة.....الخ، الحديث: 1944، ص 1092، مفهوماً۔

③.....سنن الترمذی، کتاب الاضاحی، باب ماجاء أن الشاة الواحدة.....الخ، الحديث: 1510، ج 3، ص 198۔

④.....**अहनाफ़ के नज़दीक** : तरावीह में जमाअत सुन्नते किफ़ायी है कि अगर मस्जिद के सब लोग छोड़ देंगे तो गुनाहगार होंगे और अगर किसी एक ने घर में तन्हा पढ़ ही ली तो गुनाहगार नहीं मगर जो शख्स मुक्तदा हो कि उस के होने से जमाअत बड़ी होती है और छोड़ देगा तो लोग कम हो जाएंगे उसे बिना उज़्र जमाअत छोड़ने की इजाज़त नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 691)

लाए फिर तशरीफ़ न लाए और इरशाद फ़रमाया : “मुझे ख़ौफ़ है कि तुम पर वाजिब न हो जाए ।”(1)

जब वहूय मुक्कतेअ होने के सबब इस के वाजिब होने का डर न रहा तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लोगों को बा जमाअत तरावीह के लिये जम्अ कर दिया । इस बिना पर कहा गया कि अमीरुल मोअमिनीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के अमल की वजह से तरावीह की जमाअत अफ़ज़ल है क्यूंकि इजतिमाअ की बरकत व फ़ज़ीलत है और इस की दलील फ़र्ज नमाज़ है । नीज़ तन्हाई में अकषर सुस्ती पैदा हो जाती है जब कि बहुत से लोगों को देख कर चुस्ती पैदा होती है । एक कौल येह है कि तन्हा पढ़ना अफ़ज़ल है क्यूंकि येह ऐसी सुन्नत है जो शआइरे इस्लाम में से नहीं जैसे ईदैन की नमाज़ें शआइरे इस्लाम में से हैं । पस इसे चाशत की नमाज़ और तहिय्यतुल मस्जिद के साथ मिलाना ज़ियादा बेहतर है और इस में जमाअत मशरूअ नहीं और आदते जारिया है कि चन्द लोग इकठ्ठे मस्जिद में दाख़िल होते हैं तो फिर भी बा जमाअत तहिय्यतुल मस्जिद नहीं पढ़ते क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “नफ़ल नमाज़ घर में पढ़ना मस्जिद में पढ़ने से इतनी अफ़ज़ल है जितनी फ़र्ज नमाज़ मस्जिद में पढ़ना घर में पढ़ने से अफ़ज़ल है ।”(2)

मस्जिदे नबवी और मस्जिदे ह़राम में नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल अमल :

अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मेरी इस मस्जिद में एक नमाज़ पढ़ना दीगर मसाजिद में 100 नमाज़ें पढ़ने से अफ़ज़ल है और मस्जिदे ह़राम में एक नमाज़ पढ़ना मेरी मस्जिद में हज़ार नमाज़ें पढ़ने से अफ़ज़ल है और इन तमाम से अफ़ज़ल येह है कि कोई शख़्स अपने घर के कोने में दो रक्अत नमाज़ पढ़े जिस का इल्म सिर्फ़ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ को हो ।”

वज़ाहत :

बा'ज अवकात बा जमाअत नमाज़ पढ़ने की सूरत में रिया और बनावट आ जाती है और तन्हाई में बन्दा इस से महफूज़ होता है । लिहाज़ा आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रिया को पेशे नज़र रखते हुए येह कौल इरशाद फ़रमाया ।

①..... صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الترغيب في قيام رمـان..... الخ، الحديث: ٧٦١، ص ٣٨٣، مفهومًا۔

②..... سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء في فـل صلاة التطوع في البيت، الحديث: ٤٥٠، ج ١، ص ٤٤٧، مفهومًا۔

المصنف لابن ابي شيبة، كتاب صلاة التطوع والامامة، من امر بالصلاة في البيوت، الحديث: ٥٠، ج ٢، ص ١٥٧، مفهومًا۔

खुलासए कलाम :

मुख्तार कौल येह है कि तरावीह बा जमाअत पढ़ना अफ़ज़ल है जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का ख़याल था क्यूंकि बा'ज नवाफ़िल में जमाअत जाइज़ है और नमाज़े तरावीह के ज़ियादा मुनासिब है कि येह बा जमाअत हो क्यूंकि येह उन शिआर में से है जिस का इज़हार मुनासिब है। जमाअत की सूरत में रिया की तरफ़ और अलाहिदा पढ़ने की सूरत में सुस्ती की तरफ़ तवज्जोह देना फ़ज़ीलते जमाअत के मक्सूद से फिरना है जो कि इस के जमाअत होने की हैषियत से हासिल है। गोया इस का काइल कहता है कि “सुस्ती के सबब तर्क करने से नमाज़ पढ़ना बेहतर है और इख़्लास रिया से बेहतर है।”

हम इस मस्अले को यूं फ़र्ज़ करते हैं कि जिसे खुद पर ए'तिमाद हो कि अगर अलाहिदा पढ़े तो सुस्ती न करेगा और जमाअत में दिखावा न करेगा तो उस के लिये कौन सी सूरत अफ़ज़ल है ? तो नज़र जमाअत की बरकत और तन्हा पढ़ने में कुव्वते इख़्लास और हुजूरे क़ल्बी के दरमियान घूमती है। इस सूरत में एक को दूसरी पर फ़ज़ीलत देने में तरद्दुद ही रहेगा।

माहे रमज़ान के आख़िरी पन्दरह दिनों में वित्रों में दुआए कुनूत पढ़ना मुस्तहब है।⁽¹⁾

माहे रमज़ान मुश्बब के नवाफ़िल

अहले ख़ाना के 700 अफ़राद की शफ़अत का हक़ :

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स रजब की पहली जुमा'रात को रोज़ा रखे फिर मग़रिब व इशा के दरमियान 12 रकअत नमाज़ दो दो रकअत कर के पढ़े, हर रकअत में एक बार सूरए फ़तिहा, तीन बार सूरए क़द्र और 12 बार सूरए इख़्लास पढ़े, सलाम के बा'द मुझ पर 70 बार येह दुरूदे पाक पढ़े : **اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰی اٰلِهٖ**, फिर सजदा करे और सजदे में 70 मरतबा **سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ** पढ़े, फिर सर उठा कर 70 मरतबा येह दुआ पढ़े : **رَبِّ اغْفِرْ وَاَرْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَكْرَمُ** (या'नी ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, मुझ पर रहम फ़रमा और जो तू जानता है उस से दरगुज़र फ़रमा बेशक तू इज़्ज़तो बुजुर्गी वाला है।)”

①....अहनाफ़ के नज़दीक : दुआए कुनूत का पढ़ना वाजिब है, दुआए कुनूत आहिस्ता पढ़े इमाम हो या मुन्फ़रिद या मुक़तदी, अदा हो या क़ज़ा, रमज़ान में हो या और दिनों में। (माख़ूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि. 1 स. 654-655)

फिर दूसरा सजदा करे और इस में भी पहले सजदे की तरह तस्बीह पढ़े फिर अपनी हाजत का सुवाल करे तो वोह पूरी कर दी जाएगी।” हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स येह नमाज़ पढ़ता है **अल्लाह** عزّوجلّ उस के तमाम गुनाह मुआफ़ फ़रमा देता है अगर्चे समुन्दर की झाग, रैत के ज़रात, पहाड़ों के वज़न और दरख़्तों के पत्तों के बराबर हों और बरोजे क़ियामत वोह अपने घर के उन 700 अपराद की सिफ़ारिश करेगा जिन पर जहन्नम वाजिब हो चुका होगा।”⁽¹⁾

येह नमाज़ मुस्तहब है। हम ने इसे यहां इस लिये ज़िक्र किया क्यूंकि येह साल के बदलने से बदलती है। अगर्चे इस का मरतबा नमाज़े तरावीह और नमाज़े ईद को नहीं पहुंचता क्यूंकि इस नमाज़ का षुबूत ख़बरे वाहिद से है लेकिन मैं ने तमाम अहले कुद्स (या'नी बैतुल मुक़द्स वालों) को देखा है कि वोह इस की पाबन्दी करते हैं और इसे तर्क नहीं करते, इस लिये मैं ने इसे यहां ज़िक्र करना अच्छा समझा।

माहे शा'बानुल मुअज़्ज़म के नवाफ़िल

शा'बानुल मुअज़्ज़म की पन्दरहवीं रात 100 रकअतें पढ़े, हर दो रकअत पर सलाम फेरे, हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द 11 बार सूरए इख़्लास पढ़े। अगर चाहे तो 10 रकअत नमाज़ पढ़े। हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द 100 बार सूरए इख़्लास पढ़े। दीगर नफ़ल नमाज़ों के ज़िम्न में येह भी मरवी है। अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللّهُ السَّلَام इसे पढ़ते और सलातुल ख़ैर का नाम देते, इस के लिये इकठ्ठे होते और बा'ज अवकात जमाअत से भी पढ़ते थे।

70 बार नज़रे रहमत :

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّهِ الْقَوِی़ फ़रमाते हैं : मुझ से 30 सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّهُ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ ने बयान फ़रमाया कि “जो शख्स शबे बराअत की रात येह नमाज़ पढ़े **अल्लाह** عزّوجلّ उस की तरफ़ 70 बार नज़रे रहमत फ़रमाता है और हर नज़र के साथ उस की 70 हाजात पूरी फ़रमाता है जिन में से सब से छोटी हाजत उस की मग़फ़िरत है।”⁽²⁾

①.....جامع الاصول، كتاب الصلاة، الفصل السابع في صلاة الرغائب، الحديث ٢٢٦٨، ج ٢، ص ٤٠، باختصار۔

②.....قوت القلوب، الفصل العشرون في ذكر احياء الليالي.....الخ، ج ١، ص ١١٣۔

﴿4﴾.....अस्बाब से मुतअल्लिक नवाफिल का बयान :

वोह नवाफिल जो आरिजी अस्बाब के साथ मुतअल्लिक हैं किसी खास वक्त से इन का तअल्लिक नहीं, येह ता'दाद में नव हैं : नमाजे खुसूफ व कुसूफ (सूरज व चांद ग्रहन की नमाज), नमाजे इस्तिस्का (तलबे बारिश के लिये नमाज), तहिय्यतुल मस्जिद व तहिय्यतुल वुजू, अज़ान और इक़ामत के दरमियान दो रकअतें, घर से निकलते वक्त और दाखिल होते वक्त की दो रकअतें और दीगर इस जैसी नमाजें ।

(1).....ग्रहन की नमाज :

जब हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साहिबज़ादे हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का विसाल हुवा तो सूरज को ग्रहन लग गया, लोग कहने लगे : “इब्ने रसूल के विसाल पर इसे ग्रहन लग गया ।” तब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सूरज और चांद **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की निशानियों में से दो निशानियां हैं, किसी की मौत या जिन्दगी पर इन्हें ग्रहन नहीं लगता । जब तुम (सूरज या चांद) ग्रहन देखो तो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के जिक्र और नमाज की तरफ जल्दी करो ।”^{(1) (2)}

नमाजे ग्रहन का तरीका व वक्त :

इस का तरीका येह है कि मकरूह⁽³⁾ या ग़ैरे मकरूह वक्त में जब सूरज ग्रहन हो तो आवाज़ दी जाए कि नमाज खड़ी होने वाली है । इमाम मस्जिद में लोगों को दो रकअत नमाज पढ़ाए, हर रकअत में दो रुकूअ करे,⁽⁴⁾ दूसरी के मुक़ाबले में पहली रकअत लम्बी पढ़े, क़िरातत बुलन्द आवाज़ से न करे, पहली रकअत के पहले क़ियाम में सूरए फ़ातिहा और सूरए बक़रह जब कि दूसरे क़ियाम में सूरए फ़ातिहा और सूरए आले इमरान पढ़े, दूसरी रकअत के पहले क़ियाम में सूरए फ़ातिहा और सूरए निसा जब कि दूसरे क़ियाम में सूरए फ़ातिहा और सूरए माइदह पढ़े

①....मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 381 पर है : इस कलाम शरीफ़ में उस जहालत के अक़ीदे का रद्द है जो अहले अरब में फैला हुवा था और इत्तिफ़ाक़न इस दिन हज़रते इब्राहीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इन्तिक़ाल भी हुवा था इस से उन के ख़यालात में और पुख़्तगी होने का अन्देशा था इस लिये हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह इरशाद फ़रमाया ।

②.....صحيح مسلم، كتاب الكسوف، باب ذكر النداء بصلاة الكسوف.....الخ، الحديث: 915، ص 256، مفهوماً۔

③....अहनाफ़ के नज़दीक : मकरूह वक्त में नमाजे ग्रहन न पढ़ी जाए । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 787)

④....अहनाफ़ के नज़दीक : येह नमाज और नवाफिल की तरह दो रकअत पढ़ें या'नी हर रकअत में एक रुकूअ और दो सजदे करें । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 787)

या इन की मिक्दार में जहां से चाहे पड़े। अगर हर क़ियाम में सूरए फ़ातिहा पर इक्तिफ़ा करे तो भी काफ़ी है और अगर छोटी सूरत पर इक्तिफ़ा करे तब भी कोई हरज नहीं। मक्सूद येह है कि इसे सूरज रोशन होने तक तवील करे। पहले रुकूअ में सो आयात, दूसरे में दो सो आयात, तीसरे में तीन सो आयात और चौथे में चार सो आयात की मिक्दार तस्बीह पढ़े और हर रकअत में सजदे भी रुकूअ के बराबर होने चाहियें। फिर नमाज़ के बा'द दो खुतबे पढ़े जिन के दरमियान एक जल्सा हो और लोगों को सदका, गुलाम आज़ाद करने और तौबा का हुक्म दे। चांद ग्रहन में भी इसी तरह करे। अलबत्ता, इस में क़िराअत बुलन्द आवाज़ से करे क्यूंकि वोह रात की नमाज़ है।

वक्त : सूरज ग्रहन की नमाज़ का वक्त सूरज ग्रहन लगने से शुरूअ हो कर इस के रोशन होने तक है और सूरज गुरुब होने पर इस का वक्त ख़त्म हो जाता है और सूरज की टिकिया ज़ाहिर होने पर चांद ग्रहन की नमाज़ का वक्त ख़त्म हो जाता है क्यूंकि इस वक्त रात का ग़लबा ख़त्म हो जाता है। अगर ग्रहन लगने से चांद छुप जाए तो भी इस का वक्त ख़त्म नहीं होता क्यूंकि पूरी रात चांद का ग़लबा होता है। अगर नमाज़ के दौरान ग्रहन ख़त्म हो जाए तो नमाज़ मुख़्तसर कर दे। जो इमाम के साथ दूसरा रुकूअ पाए उस की वोह रकअत फ़ौत हो गई क्यूंकि अस्ल पहला रुकूअ है।

(2)....नमाज़े इस्तिश्का :

जब नहरों का पानी अन्दर चला जाए, बारिश बन्द हो जाए या नालियां सूख जाएं तो इमाम के लिये मुस्तहब है कि अव्वलन लोगों को तीन दिन रोज़ा रखने का हुक्म दे और हस्बे इस्तिताअत सदका दें, लोगों के हुक्क अदा करें और गुनाहों से सच्ची तौबा करें। फिर चौथे दिन मर्दों, बुढ़ी औरतों और बच्चों को ले कर निकलें। पाक साफ़ फटे पुराने कपड़े पहन कर अज़िज़ी करते हुए मिस्कीनी की हालत में जाएं न कि ईद की तरह ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार कर के। एक क़ौल के मुताबिक़ चोपायों को साथ ले जाना मुस्तहब है क्यूंकि वोह भी हाज़त में शरीक हैं। नीज़ हदीषे मुबारका में है कि “अगर बच्चे दूध पीने वाले, बुढ़े रुकूअ करने वाले और चोपाए चरने वाले न होते तो तुम पर शिद्दत से अज़ाब की बारिश होती।”⁽¹⁾ अगर ज़िम्मी⁽²⁾ अ़लाहिदा तौर पर निकलें तो उन्हें मन्अ न किया जाए।

①.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب صلاة الاستسقاء، باب استحباب الخروج.....الخ، الحديث: ٢٣٩٠، ٢٣٩١، ج ٣، ص ٢٨١، بتغير۔

②फ़तावा फैजुरसूल जिल्द 1 सफ़हा 501 पर फ़कीहे मिल्लत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : “ज़िम्मी उस काफ़िर को कहते हैं जिस के जान व माल की हिफ़ाज़त का बादशाहे इस्लाम ने जिज़ये के बदले ज़िम्मा लिया हो।”

जब लोग वसीअ सहरा में जम्अ हो जाएं तो येह आवाज़ दी जाए : “नमाज़ खड़ी होने वाली है।” इमाम लोगों को नमाज़े ईद की तरह बिगैर इक़ामत के दो रक्अत नमाज़ पढ़ाए फिर दो खुतबे पढ़े और इन के दरमियान मुख़्तसरसा जल्सा करे, दोनों खुतबों में ज़ियादा तर इस्तिग़फ़ार हो, दूसरे खुतबे के दरमियान इमाम लोगों से मुंह फेर कर क़िब्ला रुख़ हो जाए और हालत बदलने के लिये नेक फ़ाली के तौर पर अपनी चादर उलटाए कि सुन्नत है।⁽¹⁾ यूं कि ऊपर वाले हिस्से को नीचे, दाएं को बाएं और बाएं को दाएं तरफ़ कर दे। लोग भी इसी तरह करें, इस वक़्त आहिस्ता आवाज़ में दुआ मांगे। फिर इमाम लोगों की तरफ़ मुंह कर के खुतबा पढ़े और चादरें इसी तरह उलटी हुई रहने दें हत्ता कि जब कपड़े उतारें, चादरें भी तब ही उतारें।

दुआ :

दुआ यूं मांगें :

اللّهُمَّ اِنَّكَ اَمَرْتَنَا بِدُعَايِكَ فَقَدْ دَعَوْنَا كَمَا اَمَرْتَنَا فَاجِبْنَا كَمَا وَعَدْتَنَا اَللّهُمَّ فَاْمُنْ عَلَيْنَا بِمَغْفِرَةٍ مَّا قَارَفْنَا وَاِجَابَتِكَ فِى سَعْيَانَا وِزَادِقَانَا
या'नी ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَل तूने हमें दुआ मांगने का हुक्म दिया और क़बूलिय्यत का वा'दा फ़रमाया है। हम ने तेरे हुक्म के मुताबिक़ दुआ मांगी पस तू अपने वा'दे के मुताबिक़ क़बूल फ़रमा। ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَل हम पर करम फ़रमा कर हमारे गुनाह बख़्श दे, हमें बारिश अता फ़रमाने और हमारे रिज़क़ को कुशादा फ़रमाने की सूरत में क़बूलिय्यते दुआ के वा'दे को पूरा फ़रमा।⁽²⁾

तीनों दिन नमाज़े इस्तिस्का के लिये निकलने से पहले नमाज़ों के बा'द दुआ मांगने में कोई हरज नहीं। इस (हालत में) दुआ के लिये कुछ बातिनी आदाब व शराइत हैं : वोह येह कि तौबा करें और दूसरों के हुक्क़ वगैरा अदा करें। मज़ीद तफ़्सील **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ غَرْوَجَل** किताबुद्दा'वात में बयान की जाएगी।

(3).....नमाज़े जनाज़ा :

इस का तरीका मशहूर है, इस में पढ़ी जाने वाली दुआए माषूरा वोह है जो हज़रते सय्यिदुना औफ़ बिन मालिक **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से सहीह सनद के साथ मरवी है। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : मैं ने रसूलुल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को एक शख़्स की नमाज़े जनाज़ा पढ़ते देखा। आप ने जो दुआ पढ़ी उसे मैं ने हिफ़ज़ कर लिया। दुआ येह है :

1.....صحیح مسلم، کتاب صلاة الاستسقاء، الحديث: ۸۹۴، ص ۴۴۳

2.....معرفة السنن والاثار للبيهقي، کتاب الاستسقاء، باب السنة فى صلاة الاستسقاء، الحديث: ۲۰۱۱، ج ۳، ص ۹۸

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَأَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مَدْخَلَهُ وَأَغْسِلْهُ بِالمَاءِ الثَّلْجِ وَالْبَرْدِ وَنَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يَنْقَى الثَّوْبُ الْأَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَأَبْدِلْهُ دَارًا خَيْرًا مِنْ دَارِهِ وَأَهْلًا خَيْرًا مِنْ أَهْلِهِ وَزَوْجًا خَيْرًا مِنْ زَوْجِهِ وَأَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَأَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْغَيْرِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ

या'नी ऐ **अब्बाह** غَزَّوَجَلَّ इसे बख़्श दे, इस पर रहम फ़रमा, अफ़ियत अता फ़रमा, इसे मुआफ़ फ़रमा, इस की अच्छी तरह मेहमानी फ़रमा, इस की क़ब्र कुशादा फ़रमा, इसे पानी, बर्फ़ और औलों से धो डाल, इसे ख़ताओं से ऐसा पाक साफ़ कर दे जैसे सफ़ेद कपड़े को मैल कुचैल से साफ़ करता है, इसे इस के घर से अच्छा घर, घर वालों से अच्छे घर वाले और इस की बीवी से बेहतर बीवी अता फ़रमा, इसे जन्नत में दाख़िल फ़रमा, अज़ाबे क़ब्र और जहन्नम के अज़ाब से बचा ।”

हज़रते सय्यिदुना औफ़ बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं ने तमन्ना की, कि काश ! वोह मय्यित मैं होता ।”⁽¹⁾

जो शख्स दूसरी तक्बीर पाए उसे चाहिये कि दिल में नमाज़ की तरतीब का खयाल रखे और इमाम के साथ तक्बीरें कहे । जब इमाम सलाम फेरे तो अपनी फ़ौत शुदा तक्बीर कह ले जिस तरह मसबूक (या'नी जिस की एक या चन्द रक्अतें रह गई हों) करता है । अगर मुक़्तदी तक्बीरात में जल्दी करे तो इस नमाज़ में इक्तिदा का कोई मा'ना नहीं रहता । तक्बीरें नमाज़े जनाज़ा के ज़ाहिरी अरकान हैं, इन्हें दीगर नमाज़ों की रक्अत के काइम मक़ाम क़रार देना ज़ियादा मुनासिब है । येह तौजीह मेरे (या'नी इमाम ग़ज़ाली के) नज़दीक ज़ियादा मुनासिब है अगर्चे दीगर तौजीहात का भी एहतिमाल है ।

नमाज़े जनाज़ा पढ़ने और जनाज़े के साथ जाने की फ़ज़ीलत में बहुत सी अहादीष वारिद हैं, इन्हें ज़िक्र कर के हम बात को तूल नहीं देते, इस की अज़ीम फ़ज़ीलत क्यूंकर न होगी हालांकि येह फ़र्जे किफ़ाया है ? नफ़ल उस के हक़ में है कि दूसरों की शिर्कत के सबब जिस पर शरीक होना ज़रूरी न हो फिर भी उसे फ़र्जे किफ़ाया ही का षवाब मिलेगा अगर्चे उस का जाना ज़रूरी न हो क्यूंकि शरीक होने वालों ने फ़र्जे किफ़ाया की अदाएंगी कर के दूसरों से हरज को दूर किया है । लिहाज़ा येह नफ़ल नमाज़ की तरह न होगी कि जिस की अदाएंगी से किसी से फ़र्ज साक़ित नहीं होता । जनाज़े में ज़ियादा लोगों को तलाश करना मुस्तहब है क्यूंकि ज़ियादा लोगों की शिर्कत और दुआएं बाड़पे बरकत हैं, नीज़ इन में कोई मुस्तजाबुद्वा'वात भी होगा ।

जनाजे में 40 लोगों के शरीक होने की बरकत :

हज़रते सय्यिदुना कुरैब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के बेटे का इन्तिक़ाल हो गया तो उन्होंने ने मुझे फ़रमाया : “ऐ कुरैब ! कितने लोग जम्अ हो गए हैं ?” मैं निकला तो कुछ लोग जम्अ हो ही गए थे, मैं ने आप को ख़बर दी । फ़रमाया : “क्या तुम कह सकते हो कि चालीस होंगे ।” मैंने कहा : “हां ।” फ़रमाया : मय्यित को लाओ । मैं ने रसूले अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना कि “जो मुसलमान फ़ौत हो जाए और उस के जनाजे में चालीस आदमी हों जो **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के साथ शरीक न ठहराते हों तो **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ उस के बारे में उन की सिफ़ारिश ज़रूर क़बूल फ़रमाता है ।”⁽¹⁾

क़ब्रिस्तान में सलाम करने का तरीक़ा :

जब जनाजे के साथ क़ब्रिस्तान जाए या वैसे ही जाए तो यूं कहे :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ هَذِهِ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُسْلِمِينَ وَيَرْحَمُ اللَّهُ الْمُسْتَقْدِمِينَ مَنَا وَالْمُسْتَأْخِرِينَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللَّهُ بِكُمْ لَاحِقُونَ
या 'नी इन घरों में रहने वाले मोमिनों और मुसलमानों पर सलाम हो, **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ हम में से आगे जाने वालों और पीछे रहने वालों पर रहूम फ़रमाए, **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ हम तुम से मिलने वाले हैं ।⁽²⁾

दफ़न करने के बा'द की दुआ :

अफ़ज़ल येह है कि मय्यित को दफ़न करने से पहले वापस न आए । जब मय्यित पर क़ब्र बराबर कर दी जाए तो वहां खड़ा हो कर येह दुआ करे :

اللَّهُمَّ عَبْدُكَ رَدَّ إِلَيْكَ فَأَرَأَيْتَ بِهِ وَأَرْحَمَهُ اللَّهُمَّ جَافِ الْأَرْضِ عَنْ جَنَّتِيهِ وَأَقْتَمِ أَبْوَابَ السَّمَاءِ لِرُوحِهِ وَتَقَبَّلْهُ مِنْكَ بِقَوْلٍ حَسَنِ اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ مُحْسِنًا فَضَاعِفْ لَهُ فِي إِحْسَانِهِ وَإِنْ كَانَ مُسِيئًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ

या 'नी ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ तेरा बन्दा तेरी तरफ़ लौटा दिया गया, इस पर नमी कर और इस पर रहूम फ़रमा । ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ इस के दोनों पहलूओं से ज़मीन को दूर कर दे, इस की रूह के लिये आस्मान के दरवाजे खोल दे और इसे अच्छी तरह क़बूल फ़रमा । ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَजَلَّ अगर येह नेक था तो इस की नेकियों का षवाब दुगना फ़रमा और अगर गुनहगार था तो इस से दरगुज़र फ़रमा ।”⁽³⁾

①..... صحيح مسلم، كتاب الجنائز، باب من صلى عليه اربعون شفعا وفيه، الحديث: ٩٢٨، ص ٢٤٣-

②..... صحيح مسلم، كتاب الجنائز، باب ما يقال عند دخول القبور والدعاء لاهلها، الحديث: ٩٤٢، ص ٢٨٥-

③..... المصنف لابن ابي شيبه، كتاب الجنائز، في الدعاء للميت بعد مايدفن..... الخ، الحديث: ١، ج ٣، ص ٢١٢-

(4).....तहिय्यतुल मस्जिद :

दो या इस से ज़ियादा रकअतें मुअक्कदा हैं। अगरचें इमाम जुमुआ के दिन खुतबा दे रहा हो फिर भी साक़ित न होंगी (इन्दशशवाफ़ेअ) बावजूद येह कि तवज्जोह से खुतबा सुनना वाजिब है। अगर (मस्जिद में दाख़िल होते ही) फ़र्ज़ या क़ज़ा नमाज़ में मशगूल हो जाए तो इसी से तहिय्यतुल मस्जिद के नवाफ़िल अदा हो गए और फ़ज़ीलत भी हासिल हो गई क्यूंकि मक़सूद येह है कि मस्जिद के हक़ की वजह से मस्जिद में दाख़िल होने की इब्तिदा उस इबादत से ख़ाली न हो जो मस्जिद के साथ ख़ास है, इसी वजह से मस्जिद में बे वुजू दाख़िल होना मकरूह है। अगर मस्जिद से गुज़रने या वहां बैठने केलिये दाख़िल हो तो चार मरतबा येह कलिमात कहे : (1) سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ मन्कूल है कि येह कलिमात फ़ज़ीलत में दो रकअतों के बराबर हैं।

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي का मस्लक येह है कि मकरूह अवकात में भी तहिय्यतुल मस्जिद मकरूह नहीं (2) और वोह फ़त्र व अस्स के बा'द का वक़्त, ज़वाल का वक़्त, तुलूअ व गुरुबे आफ़ताब का वक़्त है। क्यूंकि मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अस्स के बा'द दो रकअतें अदा फ़रमाई तो अर्ज़ की गई : “क्या आप ने हमें इस (या'नी नमाज़े अस्स के बा'द नफ़ल पढ़ने) से मन्अ नहीं फ़रमाया ?” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “येह दो रकअतें मैं जोहर के बा'द पढ़ता था (आज मुलाक़ात के लिये आए) एक वफ़द की वजह से न पढ़ सका।” (3)

हदीष से हासिल शुदा दो फ़वाइद :

(1).....सिर्फ़ वोह नमाज़ मकरूह है जिस का कोई सबब न हो और सब से कमज़ोर सबब नवाफ़िल की क़ज़ा है क्यूंकि नवाफ़िल की क़ज़ा में उ-लमा का इख़िलाफ़ है कि जब वोह ऐसा अमल करे जैसा फ़ौत हुवा तो क्या येह क़ज़ा होगी (या अदा) ? तो जब सब से कमज़ोर सबब (या'नी नवाफ़िल की क़ज़ा) की वजह से कराहिय्यत ख़त्म हो गई तो मस्जिद में दाख़िल होने से भी कराहिय्यत ख़त्म होनी चाहिये क्यूंकि येह क़वी सबब है, इसी लिये (इस वक़्त में) जब

①.....قوت القلوب، الفصل التاسع فيه ذكر وقت الفجر.....الخ، ج 1، ص 45-

②....अहनाफ़ के नज़दीक : (कोई शख़्स) ऐसे वक़्त मस्जिद में आया जिस में नफ़ल नमाज़ मकरूह है मषलन बा'दे तुलूअ फ़त्र या बा'दे नमाज़े अस्स वोह तहिय्यतुल मस्जिद न पढ़े बल्कि तस्बीह व तहलील व दुरूद शरीफ़ में मशगूल हो हक़के मस्जिद अदा हो जाएगा। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 674)

③.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب معرفة الركعتين.....الخ، الحديث: 834، ص 14-

जनाज़ा आ जाए तो नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मकरूह नहीं और न ही इन अवक़ात में नमाज़े खुसूफ़ व इस्तिसका मकरूह है (इन्द्शशवाफ़ेअ) क्यूंकि इन के लिये भी अस्बाब हैं।

(2).....नवाफ़िल की भी क़ज़ा है क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ ने इन की क़ज़ा की और हमें आप की पैरवी बेहतर है। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका तय्यिबा ताहि़रा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मेरे सरताज, साहिबे मे’राज ﷺ जिस रात नींद या मरज़ के ग़लबे के सबब क़ियाम न फ़रमा सकते तो दिन के शुरूअ में 12 रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते।”⁽¹⁾

उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं : जो शख़्स नमाज़ में मशगूल होने के सबब अज़ान का जवाब न दे सके तो सलाम फैरने के बा’द बतौर क़ज़ा अज़ान का जवाब दे अगर्चे मुअज़्ज़िन ख़ामोश हो चुका हो। जब मुआमला ऐसा हो तो काइल के इस कौल कि “येह अदा है क़ज़ा नहीं” का कोई मा’ना नहीं क्यूंकि अगर ऐसा होता तो हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक ﷺ मकरूह वक़्त में नफ़ल न पढ़ते।

ख़ुलासउ कलाम :

किसी शख़्स का वजीफ़ा हो और किसी उज़्र की वजह से वक़्त पर न पढ़ सके तो उसे चाहिये कि अपने नफ़्स को इस के छोड़ने की रुख़्सत न दे बल्कि किसी दूसरे वक़्त में इस का तदारुक करे ताकि उस का नफ़्स आसाइश व आराम की तरफ़ माइल न हो और नफ़्स के मुजाहदे के तौर पर इस का तदारुक अच्छा है क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “**اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से पसन्दीदा अमल वोह है जो हमेशा किया जाए अगर्चे थोड़ा हो।”⁽²⁾

इस से आप ﷺ की मुराद येह है कि पाबन्दी के साथ किये जाने वाले अमल में कोताही न हो। क्यूंकि उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इबादत करता हो, फिर उक्ता कर इसे छोड़ दे तो **اللّٰهُ** उस पर ग़ज़ब नाक होता है।”⁽³⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب جامع صلاة الليل.....الخ، الحديث: ٤٢٦، ص ٣٤٥، مفهوماً۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب فـ سیلة العمل الدائم.....الخ، الحديث: ٤٨٢، ص ٣٩٣۔

③.....قوت القلوب، الفصل التاسع فيه ذکر وقت الفجر.....الخ، ج ١، ص ٢٢۔

लिहाजा इस वर्ड का मुस्तहक बनने से डरना चाहिये। इस हदीष की तहकीक येह है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उक्ताहट के सबब छोड़ने पर ग़ज़ब फ़रमाता है, अगर **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी और रहमते इलाही से दूरी न होती तो उस पर उक्ताहट मुसल्लत न होती।

(5).....तहिय्यतुल वुजू :

वुजू के बा'द दो रकअतें पढ़ना मुस्तहब है क्यूंकि वुजू एक इबादत है, इस का मक्सूद नमाज़ है और बे वुजू होना एक अरिज़ा है। बसा अवकात इन्सान पर नमाज़ से पहले हदष तारी हो जाता है तो वुजू टूट जाता और मेहनत राइगां जाती है। लिहाजा जल्दी जल्दी दो रकअत अदा कर लेने से वुजू का मक्सूद फ़ौत होने से पहले पूरा हो जाता है। नीज़ हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की हदीष से येह बात जानी जा सकती है कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं जन्नत में दाख़िल हुवा तो बिलाल को वहां पाया। मैं ने बिलाल से पूछा : किस अमल के सबब तुम जन्नत में मुझ से पहले पहुंच गए ?” बिलाल ने अर्ज़ की : “और तो मैं कुछ नहीं जानता, अलबत्ता इतनी बात है कि मैं जब भी वुजू करता हूं तो इस के बा'द दो रकअत नमाज़ पढ़ लेता हूं।”⁽¹⁾

(6)....घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त के नवाफ़िल :

घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त दो रकअत नफ़ल (पढ़ना मुस्तहब) है। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम अपने घर से निकलो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ लो येह तुम्हें बुरे निकलने से बाज़ रखेंगी और जब घर में दाख़िल हो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ लो येह तुम्हें बुरे दाख़िले से महफूज़ रखेंगी।”⁽²⁾

हर जी मर्तबा काम शुरू करने का मुआमला भी इसी तरह है। इसी लिये एहराम के वक़्त दो रकअतें,⁽³⁾ इब्तिदाए सफ़र में दो रकअतें⁽⁴⁾ और सफ़र से वापसी पर घर में दाख़िल

①.....صحیح مسلم، کتاب فـ -ائیل الصحابة، باب من فـ -ائیل بلال رضی اللّٰه عنه، الحديث: ۲۴۵۸، ص ۱۳۳۲، ۱۳۳۵، مفهوماً۔

②.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی الصلوات، فـ -ل الاذان والاقامة للصلوة المكتوبة، الحديث: ۳۰۷۸، ج ۳، ص ۱۲۲۔

③.....صحیح البخاری، کتاب الحج، باب خروج النبی صلی اللّٰه علیه وسلم.....الخ، الحديث: ۵۳۳۳، ج ۱، ص ۵۱۶، مفهوماً۔

④.....المصنف لابن ابی شیبہ، کتاب الصلاة، الرجل یرید السفر، الحديث: ۱، ج ۱، ص ۵۲۹۔

होने से पहले मस्जिद में दो रकअतें पढ़ना⁽¹⁾ हदीषे पाक में वारिद और रसूले अकरम ﷺ के अमल से षाबित हैं। बा'ज सालेहीने किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ जब कुछ खाते या पानी पीते तो दो रकअतें पढ़ते। इसी तरह उन्हें जो मुआमला भी पेश आता उस वक़्त दो रकअत नमाज़ पढ़ते। हर काम का आगाज़ करते हुए **اَللّٰهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ के नाम से बरकत हासिल करनी चाहिये। इस के तीन दर्जे हैं :

(1)....बा'ज काम कई बार किये जाते हैं जैसे खाना पीना तो इन का आगाज़ तस्मिया से किया जाए कि हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो भी अहम काम بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर शुरूअ नहीं किया जाता वोह अधूरा रह जाता है।”⁽²⁾

(2)....कई काम ऐसे हैं जो बार बार नहीं किये जाते लेकिन वोह अहम होते हैं। जैसे अक़दे निकाह और नसीहत व मश्वरे की इब्तिदा। इस सूरत में मुस्तहब येह है कि **اَللّٰهُمَّ** की हम्द से शुरूअ करे। लिहाज़ा निकाह कराने वाला यूं कहे : “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ وَوَجَّهْتُ رِئِیْتَیْ” कबूल करने वाला यूं कहे : “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالصَّلٰوةُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ قَبِلْتُ الْیَکَامَ” सहाबए किराम رَضَوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ की आदत थी कि कोई पैग़ाम भेजते या नसीहत और मश्वरा करते तो हम्दे इलाही से आगाज़ करते।

(3)....अमल में तकरार तो नहीं होता लेकिन जब किया जाए तो देर पा होता है गोया वोह भी अहम काम होता है। जैसे सफ़र करना, नया घर ख़रीदना, एहराम बांधना या इस जैसे दीगर आ'माल। लिहाज़ा इन से पहले दो रकअतें पढ़ना मुस्तहब है। इस का अदना दर्जा घर से निकलना और दाख़िल होना है क्यूंकि येह भी क़रीबी सफ़र की एक किस्म है।

(7)....**नमाज़े इस्तिख़ारा :**

जो शख़्स किसी काम का इरादा करे लेकिन उस के अन्जाम का इल्म न हो और न ही येह जानता हो कि इस के करने में बेहतरी है या छोड़ने में तो ऐसे शख़्स को रसूलुल्लाह ﷺ ने इस तरीक़े पर दो रकअत पढ़ने का हुक्म फ़रमाया कि “पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा और सूरए काफ़िरून, दूसरी में सूरए फ़ातिहा और सूरए इख़्लास पढ़े। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो यूं दुआ मांगे :

①.....صحیح مسلم، کتاب التوبة، باب حدیث توبة کعب بن مالک، الحدیث: ۲۷۹، ص ۱۲۸۳، مفهوماً۔

②.....الجامع الصغير، حرف الکاف، الحدیث: ۲۲۸۲، ص ۳۹۱، بلفظ “اقطع”۔

کشف الخفاء، حرف الکاف، تحت الحدیث: ۱۹۶۲، ج ۲، ص ۱۰۹۔

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيمِ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِي فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَعَاقِبَةِ أَمْرِي وَعَاجِلِهِ وَأَجَلِهِ فَأَقْدِرْهُ لِي وَبَارِكْ لِي فِيهِ ثُمَّ يَسِّرْهُ لِي وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هَذَا الْأَمْرَ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَعَاقِبَةِ أَمْرِي وَعَاجِلِهِ وَأَجَلِهِ فَأَصْرِفْنِي عَنْهُ وَاصْرِفْهُ عَنِّي وَاقْدِرْ لِي الْخَيْرَ أَيْنَمَا كَانَ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस्तिखारा करता हूं, तेरे इल्म और तेरी कुदरत के साथ ताक़त तलब करता हूं और तुझ से तेरे फ़ज़ले अज़ीम का सुवाल करता हूं इस लिये कि तू क़ादिर है और मैं क़ादिर नहीं, तू जानता है और मैं नहीं जानता और तू ग़ैबों का जानने वाला है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अगर तेरे इल्म में येह काम मेरे लिये बेहतर है मेरे दीन व दुन्या और अन्जामे कार में, इस वक़्त या आयन्दा तू इसे मेरे लिये मुक़द्दर कर दे और आसान कर फिर मेरे लिये इस में बरकत दे और अगर तेरे इल्म में मेरे लिये येह काम बुरा है मेरे दीन व दुन्या और अन्जामे कार में, इस वक़्त या आयन्दा तू इसे मुझ से और मुझे इस से फैर दे और मेरे लिये ख़ैर को मुक़द्दर फ़रमा जहां भी हो बेशक तू सब कुछ कर सकता है।⁽¹⁾

इसे हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने रिवायत किया। आप फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमें तमाम उमूर में इस्तिखारा की ता'लीम फ़रमाते जैसे कुरआने पाक की सूरत ता'लीम फ़रमाते थे और इरशाद फ़रमाते : जब तुम में से कोई किसी काम का क़स्द करे तो दो रक्अत नफ़ल पढ़े फिर उस काम का नाम ले और (मज़क़ूर) दुआ मांगे।⁽²⁾

(8).....**नमाज़े हाज़त :**

जिस शख्स पर कोई मुआमला तंग हो जाए और उसे दीन व दुन्या के मुआमले में किसी ऐसे मुआमले की हाज़त हो जो उस पर मुश्किल हो तो उसे चाहिये कि येह नमाज़ पढ़े।

①.....صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء عند الاستخارة، الحدیث: ۶۳۸۲، ج ۴، ص ۲۱۱، ۲۱۲۔

منحة الخالق على البحر الرائق، کتاب الصلاة، باب الوتر والنوافل، ج ۲، ص ۹۱-۹۲، باختصار۔

②.....صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء عند الاستخارة، الحدیث: ۶۳۸۲، ج ۴، ص ۲۱۲، بتغییر الفاظ۔

दुआ ज२२ कबूल हो :

हजरते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि एक ऐसी दुआ है जो रद्द नहीं की जाती कि बन्दा 12 रकअत नमाज़ पढ़े हर रकअत में सूरए फ़ातिहा, आयतुल कुरसी और सूरए इख़्लास पढ़े जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो सजदा करे, फिर यूँ कहे :

سُبْحَنَ الَّذِي لَيْسَ الْبَعْزُ وَقَالَ بِهِ سُبْحَنَ الَّذِي تَعَطَّفَ بِالْمَجْدِ وَتَكْرَمَ بِهِ سُبْحَنَ الَّذِي أَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ بِعِلْمِهِ سُبْحَنَ الَّذِي لَا يَنْبَغِي التَّسْبِيحُ إِلَّا لَهُ سُبْحَنَ ذِي الْمَنِّ وَالْفَضْلِ سُبْحَنَ ذِي الْعِزِّ وَالْكَرَمِ وَسُبْحَنَ ذِي الطُّولِ أَسْأَلُكَ بِمُعَايِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَمُنْتَهَى الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَبِاسْمِكَ الْأَعْظَمِ وَجَدِّكَ الْأَعْلَى وَكَلِمَاتِكَ الثَّمَانَةِ الْعَامَاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ أَنْ تُصَلِّيَ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ

या'नी पाक है वोह ज़ात जिस ने इज्ज़त को लिबास बनाया और इसे पसन्द किया पाक है वोह ज़ात जिस ने बुजुर्गी को चादर बनाया और इसे अपनाया । पाक है वोह ज़ात जिस के इहातए इल्म में हर चीज़ है । पाक है वोह ज़ात जिस के लिये तस्बीह है । एहसान व फ़ज़ल वाली ज़ात पाक है । इज्ज़त व करम वाली ज़ात पाक है । ने'मत वाली ज़ात पाक है । मैं तुझ से इज्ज़त की उन ख़स्लतों के वसीले से सुवाल करता हूँ जिन का तअल्लुक तेरे अर्श से है, तेरी किताब के ज़रीए सुवाल करता हूँ जो रहमत की इन्तिहा है, तेरे इस्मे आ'ज़म, बुलन्द व बरतर शान और उन कामिल व आम कलिमात के ज़रीए सुवाल करता हूँ कि जिन से कोई नेक और बद तजावुज़ नहीं कर सकता कि तू हजरते मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और आले मुहम्मद (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) पर रहमत नाज़िल फ़रमा ।"⁽¹⁾

फिर अपनी उस हाज़त का सुवाल करे जिस में कोई गुनाह न हो तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ उस की दुआ ज़रूर कबूल होगी ।

हजरते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हमें येह बात पहुंची है कि कहा जाता था : बे वुकूफ़ों को येह दुआ न सिखाओ वरना वोह इस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की नाफ़रमानी पर मदद हासिल करेंगे ।”

जिसे चार ने'मतें मिलें वोह चार से महश्म न होगा :

बा'ज़ हुक्मा फ़रमाते हैं : “जिसे चार चीज़ें अ़ता की गई उस से चार चीज़ें न रोकी जाएंगी :

- (1)....जिसे शुक्र की ने'मत अ़ता की गई उस से मज़ीद ने'मत न रोकी जाएगी ।
- (2)....जिसे तौबा की तौफ़ीक़ दी गई उस से क़बूलिय्यत न रोकी जाएगी ।
- (3)....जिसे इस्तिख़ारा की तौफ़ीक़ दी गई उस से भलाई न रोकी जाएगी ।
- (4)....जिसे मश्वरे की तौफ़ीक़ दी गई उसे सीधी राह से न रोका जाएगा ।”

(9)....सलातुत्तस्बीह और इस की फज़ीलत :

येह हदीषे पाक से षाबित है, किसी वक़्त या सबब के साथ खास नहीं। हफ़्ते या महीने में एक बार पढ़ना मुस्तहब है।

हज़रते सय्यिदुना इक़रमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि मदीने के सुल्तान, रहमते अलमिय्यान وَاللَّهُ وَسَلَّمَ ने (अपने चचा) हज़रते सय्यिदुना अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “(ऐ चचा!) क्या मैं तुम को अता न करूं? क्या मैं तुम को बख़्शिश न करूं? क्या मैं तुम को ऐसी चीज़ न दूँ कि जब तुम करो तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा। अगला पिछला पुराना नया जो भूल कर किया और जो क़सदन किया छोटा और बड़ा पोशीदा और ज़ाहिर। तुम चार रकअत नमाज़ पढ़ो हर रकअत में सूरए फ़ातिहा और सूरत पढ़ो, जब पहली रकअत में क़िराअत से फ़रिग हो जाओ तो हालते क़ियाम में 15 बार سُبْحَنَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ पढ़ो, फिर रुकूअ करो और रुकूअ में दस बार पढ़ो, फिर रुकूअ से सर उठाओ और दस बार पढ़ो, फिर सजदे में जाओ और दस बार पढ़ो, फिर सजदे से सर उठा कर दस बार पढ़ो, फिर सजदे में जाओ और दस बार पढ़ो फिर दूसरे सजदे के बा'द दस बार पढ़ो। यूँ हर रकअत में 75 बार तस्बीह हुई, चारों रकअतों में इसी तरह करो। अगर येह नमाज़ हर रोज़ एक बार पढ़ सको तो पढ़ो, अगर ऐसा न कर सको तो हर जुमुआ में एक बार पढ़ो, अगर येह न कर सको तो महीने में एक बार पढ़ो और अगर येह भी न कर सको तो साल में एक बार पढ़ो।”⁽¹⁾

सलातुत्तस्बीह का उम्दा तरीक़ा :

एक रिवायत में है कि इस नमाज़ के शुरूअ में यूँ षना पढ़े :

سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ وَتَقَدَّسَتْ أَسْمَاءُكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

फिर क़िराअत से पहले 15 बार तस्बीह पढ़े और क़िराअत के बा'द 10 बार तस्बीह पढ़े और दीगर अरकान में गुज़श्ता तरतीब से दस दस बार तस्बीह पढ़े और दूसरे सजदे के बा'द बैठ कर तस्बीह न पढ़े।⁽²⁾ येह ज़ियादा अच्छा तरीक़ा है। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इसे ही इख़्तियार किया है। दो रिवायतों के मजमूए से 300 तस्बीहात बनती हैं। येह नमाज़ अगर दिन में पढ़े तो एक सलाम से पढ़े और रात में पढ़े

①.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب صلاة التسييح، الحديث: 1294، ج 2، ص 22-25.

②.....قوت القلوب، الفصل الخامس عشر في ذكر ورد العبد من التسييح.....الخ، ج 1، ص 82، بتغير.

तो दो सलामों से पढ़ना बेहतर है क्योंकि हदीसे पाक में है कि “रात की नमाज़ दो दो रकअत है।”⁽¹⁾
और अगर तस्बीह के बा’द येह कलिमात कहे तो अच्छा है : “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ”⁽²⁾

मज़क़रा नवाफ़िल अह्दादिष से षाबित हैं। इन में से सिवाए तहिय्यतुल मस्जिद के कोई नमाज़ मकरूह अवक़ात में पढ़ना बेहतर नहीं (अहनाफ़ के नज़दीक मकरूह वक़्त में सिवाए नमाज़े जनाज़ा के कोई नमाज़ नहीं पढ़ सकते) तहिय्यतुल वुजू, सफ़री और घर से निकलते वक़्त नमाज़ और नमाज़े इस्तिख़ारा मकरूह अवक़ात में जाइज़ नहीं क्योंकि इस से ताकीद के साथ मन्अ किया गया है और येह अस्बाब कमज़ोर हैं, लिहाज़ा येह नवाफ़िल नमाज़े खुसूफ़ व इस्तिस्का और तहिय्यतुल मस्जिद के दर्जे तक नहीं पहुंचते।

मैं ने बा’ज़ बनावटी सूफ़ियों को मकरूह अवक़ात में तहिय्यतुल वुजू पढ़ते देखा है हालांकि येह बर्ईद अज़ क्रियास है क्योंकि वुजू नमाज़ का सबब नहीं बल्कि नमाज़ वुजू का सबब है। लिहाज़ा नमाज़ पढ़ने के लिये वुजू करना चाहिये न येह कि वुजू करने की वजह से नमाज़ पढ़े। हर बे वुजू शख्स जो मकरूह वक़्त में नमाज़ पढ़ना चाहता है वोह बे वुजू नहीं पढ़ सकता तो कराहत का कोई मा’ना बाकी नहीं रहता। मुनासिब येही है कि वुजू करते वक़्त दो रकअत वुजू की निय्यत न करे जैसे दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद की निय्यत की जाती है। बल्कि जब वुजू करे दो नफ़ल पढ़ ले ताकि वुजू राइगां न जाए जैसा कि हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ किया करते थे। येह सिर्फ़ नफ़ल हैं जो वुजू के बा’द पढ़े जाते हैं। हज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की रिवायत इस बात पर दलालत नहीं करती कि नमाज़े खुसूफ़ व तहिय्यतुल मस्जिद की तरह वुजू भी (नमाज़ का) सबब है कि दो रकअत वुजू की निय्यत की जाए। वुजू से नमाज़ की निय्यत करनी चाहिये न की नमाज़ से वुजू की निय्यत। येह कैसे दुरुस्त है कि वुजू में वोह कहे कि नमाज़ के लिये वुजू करता हूं और नमाज़ में कहे मैं वुजू की वजह से नमाज़ पढ़ता हूं बल्कि जो शख्स मकरूह वक़्त में वुजू को बेकार होने से बचाना चाहे वोह क़ज़ा की निय्यत करे क्योंकि मुमकिन है कि उस के ज़िम्मे ऐसी नमाज़ हो जिस में किसी सबब से ख़लल वाक़ेअ हो गया हो और मकरूह अवक़ात में क़ज़ा नमाज़ पढ़ना मकरूह नहीं⁽³⁾ लेकिन नफ़ल की निय्यत की कोई वजह नहीं।

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها.....الخ، باب صلاة الليل مثنى.....الخ، الحديث: ८२९، ص ८८-३.

②.....قوت القلوب، الفصل الخامس عشر في ذكر ورد العبد من التسبیح.....الخ، ج ۱، ص ۸۲.

③.....अहनाफ़ के नज़दीक : मकरूह अवक़ात में क़ज़ा नमाज़ें पढ़ना जाइज़ नहीं। चुनान्वे, दा’वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 702 पर है : क़ज़ा के लिये कोई वक़्त मुअय्यन नहीं उम्र में जब पढ़ेगा बरियुज़्जिमा हो जाएगा मगर तुलूअ व ग़ुरूब और ज़वाल के वक़्त कि इन वक़्तों में नमाज़ जाइज़ नहीं।

अवकाते मकरूहा में मुमानअते नमाज़ की वुजूहात :

मकरूह अवकात में नमाज़ से मन्अ करने की तीन वुजूहात हैं :

﴿1﴾.....सूरज की पूजा करने वालों की मुशाबहत से बचना ।

﴿2﴾.....शयातीन के मुन्तशिर होने से बचना क्योंकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “सूरज तुलूअ होता है तो इस के साथ शैतान के सींग होते हैं । जब तुलूअ होता है तो शैतान इस के साथ मिल जाता है और जब बुलन्द हो जाता है तो सींग इस से अलग हो जाते हैं । जब ठहरता (या'नी ज़वाल का वक़्त होता) है फिर इस से मिल जाते हैं, जब ढल जाता है तो अलग हो जाते हैं, जब डूबने के करीब होता है तो फिर इस से मिल जाते हैं और जब डूब जाता है तो अलग हो जाता है ।”⁽¹⁾

इस वजह से इन अवकात में नमाज़ पढ़ने से मन्अ किया गया और इस ख़राबी पर तम्बीह की गई ।

﴿3﴾.....राहे आख़िरत के मुसाफ़िर तमाम अवकात में नमाज़ पर हमेशगी इख़्तियार करते हैं । मुसलसल एक ही तरीक़े पर इबादत करने से उक्ताहट पैदा होती है । जब एक घड़ी के लिये बन्दे को रोका जाए तो उस की चुस्ती में इज़ाफ़ा होता और इबादत में रग़बत पैदा होती है । नीज़ इन्सान को जिस चीज़ से मन्अ किया जाए वोह उस का ज़ियादा हरीस होता है । इन अवकात में इबादत से रोकना ज़ियादा तम्अ का सबब बनता है और बन्दा वक़्त ख़त्म होने का मुन्तज़िर रहता है ।

लिहाज़ा इन अवकात को तस्बीह व इस्तिग़फ़ार के साथ ख़ास किया गया ताकि तसलसुल से नमाज़ के बाइष तबीअत उक्ता न जाए और एक किस्म से दूसरी किस्म की इबादत की तरफ़ मुन्तक़िल होने से तबीअत खुश हो क्योंकि नई चीज़ में लज़ज़त व निशात होती है जब कि एक ही चीज़ पर मुस्तक़िल अमल पैरा रहना भारी पन और उक्ताहट का बाइष बनता है । इसी लिये नमाज़ महज़ रुकूअ व सुजूद या क़ियाम का नाम नहीं बल्कि इबादात मुख़्तलिफ़ आ'माल और जुदा जुदा अज़कार का नाम है और इन में से हर अमल की तरफ़ इन्तिक़ाल से दिल नई लज़ज़त पाता है अगर वोह मुसलसल एक ही चीज़ पर रहे तो जल्द उक्ताहट का शिकार हो जाता है । अवकाते मकरूहा में नमाज़ की मुमानअत के मुतअल्लिक़ येह अहम उमूर हैं, इस के इलावा दीगर असरार भी हैं लेकिन इस पर आगाह होना (अ़ाम) इन्सानी कुव्वत के बस की बात नहीं,

अब्बाह غُرُوعٍ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेहतर जानते हैं ।

①.....سنن النسائي، كتاب المواقيت، باب الساعات التي نهى عن الصلاة فيها، الحديث: ٥٥٦، ص ٩٩، باختصار۔

जब ऐसी बात है तो इन अहम वुजूह को सिर्फ इसी बुनियाद पर छोड़ा जा सकता है कि शरई तौर पर अहम अस्बाब पाए जाते हों जैसे नमाज़ की क़ज़ा, नमाज़े इस्तिस्का, नमाज़े कुसूफ़ और तहिय्यतुल मस्जिद वगैरा (इन्दश्शवाफ़ेअ) लेकिन जो ज़ईफ़ अस्बाब हों तो इन की वजह से इन अहम वुजूह को न छोड़ा जाए। हमारे नज़दीक़ येह बात ज़ियादा मुनासिब है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है कि उसी की मदद और हुस्ने तौफ़ीक़ से “इह्याउल उलूमिद्दीन” के बाब “नमाज़ के असरार” की तक्मील हुई। अब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ “ज़कात के असरार” का बयान आएगा।

सब ख़ूबियां उस खुदाए वहुदहू लाशरीक के लिये हैं जो अकेला है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मख़्लूक में से बेहतरीन ज़ात हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और इन की आल व असहाब पर रहमतें और ख़ूब सलाम हो।



«.....हदीषे कुदशी.....»

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 54 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “नसीहतों के मदनी फूल व वसीलए अह्दादीषे रसूल” सफ़हा 51 ता 52 पर है :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : **ऐ इब्ने आदम !** जिस ने हंस हंस कर गुनाह किये मैं उसे रुला रुला कर जहन्नम में डालूंगा और जो मेरे ख़ौफ़ से रोता रहा मैं उसे खुश कर के जन्नत में दाख़िल करूंगा।

ऐ इब्ने आदम ! कितने ग़नी ऐसे हैं जो रोज़े हिसाब मोहताजी व मुफ़िलसी की तमन्ना करेंगे ?
 ❀....कितने बे रहम ऐसे हैं जिन्हें मौत ज़लीलो रुस्वा कर देगी ? ❀...कितनी शीरीं चीज़ें ऐसी हैं जिन्हें मौत तल्ख़ कर देगी ? ❀...नेमतों पर कितनी खुशियां ऐसी हैं कि जिन्हें मौत गदला कर देगी ?
 ❀...कितनी खुशियां ऐसी हैं जो अपने बा'द तवील गुम लाएंगी ?

(مجموعة رسائل الامام الغزالي، المواعظ فی الاحادیث القدسیة، ص 56)

नक़ात के असर का बयान (1)

सब खूबियां **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की तरफ़ से सआदत मन्दी व बद बख़्ती है और जिस ने ज़िन्दगी और मौत दी, हंसाया और रुलाया, वुजूद बख़्शा और फ़ना किया, फ़कीर व ग़नी बनाया, रोका और अता किया, जिस ने हैवान को मादए मनविख्या के क़तरे से पैदा किया, वोह सिफ़ते ग़ना के साथ मख़्लूक से मुमताज़ है, फिर अपने बा'ज बन्दों को नेकी के साथ ख़ास किया और इन में से जिसे चाहा अपनी ने'मतों से नवाज़ा और ग़नी कर दिया, रिज़क़ कमाने में नाकाम होने वालों को इम्तिहान और आजमाइश के लिये उन बन्दों का मोहताज कर दिया फिर ज़कात को दीन की बुन्याद बनाया और इस बात को वाजेह किया कि उस के बन्दों में से जो पाक हुवा वोह उस के फज़लो करम से ही पाक हुवा और जिस का माल पाक हुवा वोह भी उस के ग़ना से ही पाक हुवा और मख़्लूक के सरदार हिदायत के सूरज हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर रहमत हो और इल्म व तक्वा के साथ मख़सूस आप के आलो असहाब رِضْوَانُ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ पर भी रहमत हो ।

बेशक **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ ने ज़कात को इस्लाम की बुन्यादों में से एक बुन्याद करार दिया और दीन की बड़ी अलामत नमाज़ के बा'द ज़कात ही का ज़िक्र किया । चुनान्वे, इरशादे खुदावन्दी है :

وَأَقِمْوَالصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ (البقرة: १७३)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : और नमाज़ काइम रखो और ज़कात दो ।

नीज़ मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : इस्लाम की बुन्याद पांच चीज़ों पर है : इस बात की गवाही देना कि **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं, नमाज़ काइम करना, ज़कात अदा करना, रमज़ान के रोज़े रखना और बैतुल्लाह का हज़ करना ।⁽²⁾

जकाद न देने वालों का अन्जाम :

ज़कात देने के मुआमले में कोताही करने वालों को सख़्त वईद सुनाई । चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

①.....ज़कात के फ़ज़ाइल व मसाइल की तफ़सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द 1, हिस्सा 5 सफ़हा 866 ता 957 का मुतालआ कीजिये ।

②.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب بیان ارکان الاسلام.....الخ، الحدیث: 16، ص 24-28.

وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ
وَلَا يَنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣٠﴾ (پ. ۱۰، العوبة: ۳۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह कि जोड़ कर रखते हैं सोना और चांदी और उसे **अल्लाह** की राह में खर्च नहीं करते उन्हें खुशखबरी सुनाओ दर्द नाक अज़ाब की ।

और **अन्फ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लह** का मा'ना ज़कात का हक अदा करना है ।

हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन कैस **रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** फ़रमाते हैं : मैं कुछ अहले कुरैश के साथ था कि हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी **रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** का वहां से गुज़र हुवा । आप ने फ़रमाया : “ख़ज़ाने जम्अ करने वालों को बिशारत दे दो कि उन की पीठों में दाग़ लगाया जाएगा जो उन के पहलूओं से निकलेगा और उन की गुदियों में दाग़ लगाया जाएगा जो उन की पेशानियों से ज़ाहिर होगा ।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि उन के पिस्तानों के ऊपर रखा जाएगा तो कन्धों की नर्म जगह से ज़ाहिर होगा और कन्धों की नर्म जगह पर रखा जाएगा तो पिस्तानों के ऊपर से थरथराता हुवा निकलेगा ।⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र गिफ़ारी **रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ** फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का'बए मुशर्रफ़ के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे, मैं ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवा तो मुझे देख कर इरशाद फ़रमाया : “रब्बे का'बा की क़सम ! वोह ख़सारा पाने वाले हैं ।” मैं ने अर्ज की : “वोह कौन हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “कषरते मालो दौलत वाले मगर वोह लोग जो अपने आगे पीछे, दाएं बाएं इस तरह उस तरह खर्च करें और ऐसे लोग बहुत कम हैं और जो ऊंट, गाए और बकरी का मालिक ज़कात अदा नहीं करता तो वोह जानवर बरोज़े क़ियामत पहले से ज़ियादा मोटे ताजे हो कर आएंगे, उसे अपने सींगों से मारेंगे और खुरों से रौंदेंगे जब आखिरी गुज़र जाएगा तो पहला दोबारा आ जाएगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फैसला हो जाए ।”⁽³⁾

जब बुख़ारी व मुस्लिम में इस क़दर शदीद वईद मज़कूर है तो ज़कात के असरार, इस की ज़ाहिरी व पोशीदा शराइत और ज़ाहिरी व बातिनी मअानी को बयान करना दीन के ज़रूरी उमूर में से है । नीज़ उन मसाइल पर इक्तिफ़ा ज़रूरी है जिन की मा'रिफ़त ज़कात देने और लेने वाले के लिये ज़रूरी है । इन उमूर को चार फ़स्तलों में बयान किया जाएगा ।

①.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فی الكنازین للاموال والتغلیظ علیهم، الحدیث: ۹۹۲، ص ۴۹۸۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فی الكنازین للاموال والتغلیظ علیهم، الحدیث: ۹۹۲، ص ۴۹۷۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب تغلیظ عقوبة من لا یؤدی الزکاة، الحدیث: ۹۹۰، ص ۴۹۵، ۴۹۶۔

पहली फ़स्ल : ज़कात की अक्साम और इस के वुजूब के अस्बाब ।

दूसरी फ़स्ल : ज़कात के आदाब और इस की ज़ाहिरी व बातिनी शराइत ।

तीसरी फ़स्ल : ज़कात लेने वाले और इस के मुस्तहिक होने की शराइत का बयान और ज़कात लेने का तरीका ।

चौथी फ़स्ल : नफ़ली सदका और इस की फ़ज़ीलत ।

पहली फ़स्ल : ज़कात की अक्साम और इस के वुजूब के अस्बाब

अपने मुतअल्लिकात के ए'तिबार से ज़कात की छे अक्साम हैं :

(1)....जानवरों की ज़कात (2).....सोने चांदी की ज़कात (3).....माले तिजारत की ज़कात (4).....ख़ज़ाने और मा'दिनिय्यात की ज़कात (5).....ज़मीनी पैदावार की ज़कात और (6)....सदक़ए फ़ित्र ।

﴿1﴾....**जानवरों की ज़कात :**

जानवरों वगैरा की ज़कात आज़ाद मुसलमान पर फ़र्ज़ है इस में बालिग़ होना शर्त नहीं बल्कि येह बच्चे और पागल के माल में भी वाजिब होती है । येह उस शख़्स के लिये शराइत हैं जिस पर ज़कात वाजिब है ।⁽¹⁾

माल में ज़कात फ़र्ज़ होने की शराइत :⁽²⁾

माल में ज़कात फ़र्ज़ होने की पांच शराइत हैं :

(1)....जानवर हो (2)....चरने वाला हो (3).....पूरा साल बाक़ी रहने वाला हो (4).....निसाब पूरा हो और (5).....कामिल तौर पर मिल्कियत और तसरूफ़ में हो ।

❶.....**अहनाफ़ के नज़दीक :** ज़कात वाजिब होने के लिये चन्द शर्तें हैं : (1)....मुसलमान होना (2)....बुलूग़ (3)....अक़ल (4)....आज़ाद होना (5)....माल ब क़दरे निसाब उस की मिल्क में होना (6)....पूरे तौर पर इस का मालिक हो (7)....निसाब का दैन (क़र्ज़) से फ़ारिग़ होना (8)....निसाब हाज़ते अस्लिय्या से फ़ारिग़ हो (9)....माले नामी हो । (10)....साल गुज़रना, साल से मुराद क़मरी साल है या'नी चांद के महीनों से बारह महीने ।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 875 ता 884 मुलख़बसन)

❷.....**अहनाफ़ के नज़दीक :** ज़कात तीन किस्म के माल पर है : (1)....षमन या'नी सोना चांदी (2)....माले तिजारत (3)....साइमा या'नी चराई पर छुटे जानवर । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 882)

तप्सील :

- (1).....**जानवर हो** : लिहाजा ऊंट, गाए और बकरी के इलावा में ज़कात वाजिब नहीं। घोड़े, खच्चर, गधे, हिरन और बकरी के मिलाप से पैदा होने वाले जानवर में ज़कात वाजिब नहीं।
- (2).....**चरने वाला हो** : लिहाजा जिसे (घर पर) चारा दिया गया उस पर ज़कात वाजिब नहीं और अगर कभी चराया गया और कभी चारा दिया गया और इस में (खुराक वगैरा का) खर्च ज़ाहिर हो तो भी ज़कात वाजिब न होगी।
- (3).....**पूरा साल बाक़ी रहने वाला हो** : जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “किसी माल में उस वक़्त तक कोई ज़कात नहीं जब तक कि इस पर साल न गुज़र जाए।”⁽¹⁾

जानवरों के पैदा होने वाले बच्चे इस शर्त से ख़ारिज हैं क्यूंकि इन पर माल का हुक्म सादिक़ आता है और इन के उसूल पर साल गुज़रने से इन पर भी ज़कात फ़र्ज़ होगी और साल के दौरान जब कभी माल बेच दे या किसी को हिबा कर दे तो साल पूरा नहीं होगा। (या'नी वोह जानवर हिसाब में शुमार न होगा)

- (4).....**कामिल तौर पर मिल्कियत में हो** : लिहाजा रहन रखे हुए जानवरों में भी ज़कात वाजिब है क्यूंकि उस ने अपने आप को खुद इस में तसरुफ़ से रोका हुवा है।⁽²⁾ गुमशुदा या ग़सब शुदा जानवर में ज़कात फ़र्ज़ नहीं। अलबत्ता अगर वोह अपने पूरे मनाफ़ेअ के साथ वापस आ जाए तो वापसी पर गुज़श्ता सालों की ज़कात भी देना होगी। अगर उस पर इतना क़र्ज़ है जो उस के तमाम माल को घेरे हुए है तो उस पर कोई ज़कात वाजिब न होगी क्यूंकि वोह इस के सबब ग़नी शुमार न होगा इस लिये कि ग़ना उस माल से होता है जो हाजत से बच जाए।

①.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب فی زکاة السائمة، الحدیث: ۱۵۷۳، ج ۲، ص ۱۴۴۔

- ②**अहनाफ़ के नज़दीक** : शै मरहून (जो चीज़ गिरवी रखी गई है उस) की ज़कात न मुरतहिन (या'नी जिस के पास चीज़ गिरवी रखी गई हो उस) पर है न राहिन (गिरवी रखने वाले) पर, मुरतहिन तो मालिक ही नहीं और राहिन की मिल्के ताम नहीं कि इस के कब्जे में नहीं और बा'दे रहन छुड़ाने के भी इन बरसों की ज़कात वाजिब नहीं।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 877)

(5).....निसाब पूरा हो : (निसाब की तफ़्सील दर्जे ज़ैल है)

ऊंट की ज़कात :

पांच से कम ऊंटों में ज़कात वाजिब नहीं, पांच ऊंटों में जिज़आ⁽¹⁾ भेड़ होगी या षनिथ्या (या'नी बकरी) जो तीसरे साल में दाख़िल हो,⁽²⁾ दस ऊंटों में दो बकरियां, पन्द्रह ऊंटों में तीन बकरियां, बीस ऊंटों में चार बकरियां होगी और पच्चीस ऊंटों में एक बन्ते मखाज़⁽³⁾ लिया जाएगा और अगर इस के माल में बन्ते मखाज़ न हो तो एक इब्ने लबून⁽⁴⁾ लिया जाएगा अगरचे वोह दो साल का मादा बच्चा ख़रीद सकता हो। छत्तीस (से पैतालीस तक) में एक बन्ते लबून (या'नी दो साला ऊंटनी) ली जाएगी, छियालीस (से साठ तक) हों तो एक हिक्का⁽⁵⁾ ली जाएगी, इक्सठ (से पछत्तर तक) हों तो एक जिज़आ ली जाएगी,⁽⁶⁾ छहत्तर (से नव्वे तक) हों तो दो बन्ते लबून ली जाएंगी, इक्यानवे (से एक सो बीस तक) हों तो दो हिक्का ली जाएंगी, एक सो इक्कीस हो जाएं तो तीन बन्ते लबून ली जाएंगी और जब एक सो तीस हो जाएं तो हिसाब ठहर जाएगा फिर हर पचास में एक हिक्का और हर चालीस में एक बन्ते लबून होगी।⁽⁷⁾

①.....जिज़आ : जो एक साल की हो कर दूसरे साल में दाख़िल हो जाए (या'नी एक साला भेड़)। अज़ मुसन्निफ़

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : ज़कात में जो बकरी दी जाए वोह साल भर से कम की न हो। बकरी दें या बकरा, इस का इख़्तियार है। (ردالمحتار، کتاب الزکاة، باب نصاب الابل، ج ۳، ص ۲۳۸)

③.....बन्ते मखाज़ : ऊंट का वोह मादा बच्चा जो दूसरे साल में दाख़िल हो चुका हो।

④.....इब्ने लबून : ऊंट का वोह नर बच्चा जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुका हो।

⑤.....हिक्का : वोह ऊंटनी जो चौथे साल में दाख़िल हो चुकी हो।

⑥.....जिज़आ : वोह ऊंटनी है जो पांचवें साल में दाख़िल हो चुकी हो। अज़ मुसन्निफ़

⑦.....अहनाफ़ के नज़दीक : पांच ऊंट से कम में ज़कात वाजिब नहीं और जब पांच या पांच से ज़ियादा हों, मगर पच्चीस से कम हों तो हर पांच में एक बकरी वाजिब है या'नी पांच हों तो एक बकरी, दस हो तो दो। وعلى هذا القياس और अगर पच्चीस ऊंट हों तो एक बन्ते मखाज़, पैतालीस तक येही हुक़म है या'नी वोही बन्ते मखाज़ देंगे। छत्तीस से पैतालीस तक में एक बन्ते लबून, छियालीस से साठ तक में हिक्का, इक्सठ से पछत्तर तक जिज़आ, छहत्तर से नव्वे तक में दो बन्ते लबून, इक्यानवे से एक सो बीस तक में दो हिक्का। इस के बा'द एक सो पैतालीस तक दो हिक्का और हर पांच में एक बकरी। मषलन एक सो पच्चीस में दो हिक्का एक बकरी और एक सो तीस में दो हिक्का दो बकरियां। وعلى هذا القياس (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 893)

नोट : तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअत के इसी मक़ाम का मुतालआ कीजिये।

गाए की ज़कात :

तीस से कम गायों में ज़कात वाजिब नहीं, तीस गायों में एक तबीअ, ⁽¹⁾ चालीस में एक मुसिन्ना ⁽²⁾ और साठ में दो तबीअ, फिर हिसाब रुक जाएगा और अब हर चालीस में एक मुसिन्ना और हर तीस में एक तबीअ होगी। ⁽³⁾

बकरी की ज़कात :

चालीस से कम बकरियों में ज़कात वाजिब नहीं, बकरियां चालीस (से 120 तक) हों तो एक जिज़आ भेड़ होगी या बकरी का एक षनिय्या होगा, 121 (से 200 तक) में दो बकरियां होगी, 201 (से 399 तक) में तीन बकरियां होंगी और 400 में चार बकरियां होंगी, फिर हिसाब रुक जाएगा और अब हर 100 में एक बकरी होगी।

निसाब में शरीक मालिकों की ज़कात की शूरत :

अगर एक निसाब में दो शरूख़ शरीक हों तो उन की ज़कात एक मालिके निसाब की ज़कात की तरह है या'नी जब दो आदमियों की मुश्तरका 40 बकरियां हों तो इन में एक बकरी ज़कात वाजिब होगी, अगर तीन आदमियों की मुश्तरका 120 बकरियां हों तो सब पर एक ही बकरी ज़कात वाजिब होगी। ⁽⁴⁾ पड़ोस की शिर्कत हिस्सों की शिर्कत की तरह है लेकिन शर्त यह है कि इन का बाड़ा एक हो और वोह एक जगह पानी पियें, एक ही जगह इन का दूध दोहा जाए और इन की चरागाह एक हो और नर का मादा को जुफ़्ती करना एक वक़्त में हो और दोनों मालिक उन में से हों जिन पर ज़कात वाजिब हो। ज़िम्मी और मुकातब के साथ शिर्कत का ए'तिबार नहीं। बा'ज अवक़ात ऊंट उम्र में कम होता है इस में कोई हरज नहीं बशर्तेकि वोह बिन्ते मखाज़ से कम न हो और उम्र की कमी को यूँ पूरा किया जाएगा कि एक साल की कमी को दो

①...तबीअ : वोह गाए जो दूसरे साल में दाख़िल हो चुकी हो।

②...मुसिन्ना : जो तीसरे साल में दाख़िल हो चुकी हो। अज़ मुसनिफ़

③...अहनाफ़ के नज़दीक : गाए भैंस की ज़कात में इख़्तियार है कि नर लिया जाए या मादा, मगर अफ़ज़ल यह है कि गाए ज़ियादा हों तो बछ्या और नर ज़ियादा हों तो बछड़ा। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 896)

④...अहनाफ़ के नज़दीक : मवेशी में शिर्कत से ज़कात पर कुछ अषर नहीं पड़ता, ख़्वाह वोह किसी किस्म की हो। अगर हर एक का हिस्सा बक़दरे निसाब है तो दोनों पर पूरी पूरी ज़कात वाजिब और एक का हिस्सा बक़दरे निसाब है दूसरे का नहीं तो इस पर वाजिब है, उस पर नहीं मषलन एक की चालीस बकरियां हैं दूसरे की तीस तो चालीस वाले पर एक बकरी तीस वाले पर कुछ नहीं और अगर किसी की बक़दरे निसाब न हों मगर मजमूआ बक़दरे निसाब है तो किसी पर कुछ नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 900)

बकरियों या बीस दिरहम से पूरा किया जाएगा और दो साल की कमी को चार बकरियों या चालीस दिरहम से पूरा किया जाएगा और उम्र में ज़ियादा भी दे सकते हैं मगर वोह जिज़ा से ज़ियादा बड़ा न हो और जो ज़ियादा दिया इस की कमी बैतुल माल के कारन्दों से ली जाएगी। अगर बा'ज माल सहीह हो तो ज़कात में बीमार जानवर नहीं लिया जाएगा अगर चें एक ही सहीह हो। अच्छे माल में से अच्छा माल और ख़राब में से ख़राब माल लिया जाएगा और माल से खाने के लिये तय्यार किया हुवा जानवर, बच्चे जनने वाला जानवर, दूध देने वाला जानवर, सांड और कीमती माल न लिया जाए। (बल्कि दरमियानी किस्म का लिया जाए)

﴿2﴾....जमीनी पैदावार की ज़कात :⁽¹⁾

हर उगने वाली चीज़ जिसे बतौर ग़िज़ा इस्ति'माल किया जाए जब आठ सो सैर यानी बीस मन हो तो उस में उ़श्र वाजिब है।⁽²⁾ इस से कम में नहीं, फलों और रूई में उ़श्र नहीं, लेकिन उस ग़ल्ले में उ़श्र है जिसे बतौर ग़िज़ा इस्ति'माल करते हैं। खुश्क खजूर (छूहारों) और किश्मिश में ज़कात वाजिब है। खुश्क खजूरों और किश्मिश जब कि तर खजूर और अंगूर न हो तो उस पर उ़श्र वाजिब होने में बीस मन का ए'तिबार है और वज़न का ए'तिबार खुश्क होने के बा'द होगा।

जमीनी पैदावार में शरीक मालिकों के उ़श्र की शूरत :

जब हिस्सों में शीर्कत हो तो दो शरीकों के माल को एक दूसरे के साथ मिला कर पूरा किया जाएगा जैसे तमाम शुरका के वुरषा में मुश्तरका बाग़ में आठ सो सैर या'नी बीस मन किश्मिश हो तो तमाम पर उन के हिस्सों के ए'तिबार से दो मन किश्मिश वाजिब होगी और इस में पड़ोस की शीर्कत का ए'तिबार नहीं। गन्दुम का निसाब जव से पूरा नहीं किया जाएगा। अलबत्ता जव का निसाब सुलत (या'नी छिलके के बिगैर जव जिसे पैगुम्बरी जव कहते हैं) से पूरा किया जाएगा क्योंकि येह इसी की किस्म है।

①जमीनी पैदावार की ज़कात के मसाइल तफ़्सीलन जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द 1, हिस्सा 5, सफ़हा 914 ता 921 का और 48 सफ़हात पर मुश्तमिल “उ़श्र के अहक़ाम” नामी रिसाले का मुतालआ कीजिये।

②अहनाफ़ के नज़दीक : इस में निसाब भी शर्त नहीं। एक साअ भी पैदावार हो तो उ़श्र (या'नी दसवां हिस्सा) वाजिब है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 917)

जमीनी पैदावार में उश्र कब वाजिब होगा ?

जमीनी पैदावार में उश्र (या'नी दसवां हिस्सा) इस सूरत में वाजिब होगा जब कि वोह फ़स्ल जारी पानी या नाली से सैराब होती हो और अगर उसे ऊंट या कुंवें से डोलों के ज़रीए सैराब किया जाए तो निस्फ़ उश्र या'नी बीसवां हिस्सा वाजिब होगा और अगर दोनों तरीक़े जम्अ हो जाएं (या'नी बारिश और कुंवें का पानी वगैरा) तो ग़ालिब का ए'तिबार किया जाएगा। नीज़ खजूर, खुश्क किश्मिश और खुश्क ग़ल्ले से भूसा वगैरा दूर करने के बा'द उश्र लिया जाए, तर खजूर और अंगूर से उश्र न लिया जाए। अलबत्ता अगर दरख़्तों पर कोई आफ़त आ जाए और फ़ल पकने से पहले दरख़्तों को काटना ज़रूरी हो तो तर खजूरों से भी उश्र लिया जाए माप कर नव हिस्से मालिक को और एक हिस्सा फ़कीर को दिया जाए और येह तक्सीम हमारे इस क़ौल के मुख़ालिफ़ नहीं कि "तक्सीम बैअ है।" (या'नी जब कच्चे फ़ल की ख़रीदो फ़रोख़्त जाइज़ नहीं तो तक्सीम किस तरह जाइज़ होगी) बल्कि हाज़त के तहूत इस की इजाज़त दी जाएगी।

उश्र वाजिब होने का वक़्त :

उश्र वाजिब होने का वक़्त येह है कि फ़लों में सलाहिय्यत ज़ाहिर हो जाए और दाना सख़्त हो जाए जब कि उश्र की अदाएगी खुश्क होने के बा'द होगी।

﴿3﴾.....सोने चांदी की ज़कात :

चांदी का निसाब : ख़ालिस चांदी जब मक्कए मुकर्रमा **رَازَاهَا اللَّهُ شَرْفًاوَتَعْظِيمًا** के वज़न से 200 दिरहम (या'नी साढ़े बावन तोले चांदी) पर साल पूरा हो जाए तो इस में पांच दिरहम ज़कात वाजिब होगी और येह चालीसवां हिस्सा है और ज़ाइद में इस के हिसाब से ज़कात होगी अगर्चे एक दिरहम हो।⁽¹⁾

सोने का निसाब : बीस मिषक़ाल (या'नी साढ़े सात तोले) सोना है और येह भी मक्कए मुकर्रमा **رَازَاهَا اللَّهُ شَرْفًاوَتَعْظِيمًا** के वज़न से है इस में भी चालीसवां हिस्सा है और जो ज़ियादा हो इस में इस के हिसाब से ज़कात होगी और अगर निसाब से कुछ भी कम हो तो ज़कात वाजिब नहीं। जिस के पास खोट मिले दराहिम हों तो उस पर भी ज़कात वाजिब है जब कि इस

①....अहनाफ़ के नज़दीक : निसाब से ज़ियादा माल है तो अगर येह ज़ियादती निसाब का पांचवां हिस्सा है तो इस की ज़कात भी वाजिब है, मषलन दो सो चालीस दिरहम हो तो ज़कात में छे दिरम वाजिब। **وعلى هذا القياس**

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 903 मुलख़बसन)

में ख़ालिस चांदी की भी इतनी मिक्कदार मौजूद हो। सोने की डली, ममनूअ ज़ेवरात जैसे सोने चांदी के बरतन और मर्दों के लिये सोने की काठियों में ज़कात वाजिब है और जाइज़ (या'नी औरतों के इस्ति'माली) ज़ेवरात में ज़कात वाजिब नहीं।⁽¹⁾ अगर कर्ज़ किसी ऐसे शख्स पर हो जो देने पर क़ादिर हो (लेकिन देने में टालम टोल कर रहा हो) तो इस कर्ज़ पर भी ज़कात है लेकिन कर्ज़ वुसूल करने के बा'द वाजिब होगी और अगर कर्ज़ की अदाएगी का वक़्त मुक़र्रर हो तो मुद्दत पूरी होने पर ज़कात वाजिब होगी।

﴿4﴾.....माले तिजारात की ज़कात :

येह भी सोने चांदी की ज़कात की तरह है। अगर रक़म निसाब के बराबर हो तो साल उस वक़्त से शुरूअ होगा जब वोह उस रक़म का मालिक हुवा जिस से उस ने सामान ख़रीदा और अगर रक़म निसाब से कम हो या उस ने सामान के बदले तिजारात की निय्यत से कोई चीज़ ख़रीदी तो ख़रीदारी के वक़्त से साल की इब्तिदा होगी और मुल्क में राइज़ सिक्कों से ज़कात अदा की जाएगी और उसी के साथ कीमत लगाई जाएगी अगर किसी सिक्के से सामान ख़रीदा और इस से निसाब कामिल है तो अपने शहर के सिक्के के बजाए इसी से कीमत लगाना ज़ियादा बेहतर है।

जिस ने अपने ज़ाती माल में तिजारात की निय्यत की तो महज़ निय्यत से साल शुरूअ न होगा जब तक कि इस से कोई चीज़ न ख़रीदे। साल पूरा होने से पहले तिजारात की निय्यत ख़त्म हो जाए तो ज़कात साक़ित हो जाएगी लेकिन बेहतर येह है कि वोह उस साल की ज़कात अदा करे।

साल के आख़िर में हासिल होने वाले मनाफ़ेअ पर इस सूरत में ज़कात वाजिब होगी जब कि अस्ल माल पर साल पूरा हो जाए, इस के लिये अलग साल शुरूअ न किया जाए जैसे जानवरों के बच्चों में नहीं करते। ज़रगरों (सुनारों) के दरमियान जारी रहने वाले बाहमी तबादलों से इन के माल में साल ख़त्म नहीं होता जिस तरह बाकी तिजारातों में ख़त्म नहीं होता।

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : सोना चांदी जब कि बक्दरे निसाब हों तो इन की ज़कात चालीसवां हिस्सा है, ख़्वाह वोह वैसे ही (डली की सूरत में) हों या इन के सिक्के जैसे रूपे अशरफ़ियां या इन की कोई चीज़ बनी हुई हो ख़्वाह इस का इस्ति'माल जाइज़ हो जैसे औरत के लिये ज़ेवर, मर्द के लिये चांदी की एक नग की एक अंगूठी साढ़े चार माशे से कम की या सोने चांदी के बिला ज़न्जीर के बटन या इस्ति'माल ना जाइज़ हो जैसे चांदी सोने के बरतन, घड़ी, सुर्मादानी, सलाई कि इन का इस्ति'माल मर्द व औरत सब के लिये हुराम है या मर्द के लिये सोने चांदी का छल्ला या ज़ेवर या सोने की अंगूठी या साढ़े चार माशे से ज़ियादा चांदी की अंगूठी या चन्द अंगूठियां या कई नग की एक अंगूठी, गरज़ जो कुछ हो ज़कात सब की वाजिब है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 903)

माले मुज़ारबत⁽¹⁾ के नफ़अ में मुज़ारिब पर ज़कात वाजिब होगी अगरचें अभी तक़सीम न हुवा हो क़ियास का तकाज़ा येही है।

﴿5﴾.....दफ़ीनों औऱ मा'दनिय्यात की ज़कात :

दफ़ीने की ज़कात : उस माल को रिकाज़ कहते हैं जो ज़मानए जाहिलियत में कहीं दफ़न किया गया और ऐसी जगह से मिला जिस पर इस्लाम में मिल्क जारी नहीं हुई तो उस ख़ज़ाने को पाने वाले पर सोने चांदी की सूरत में पांचवा हिस्सा लाज़िम होगा और साल पूरा होने का ए'तिबार न होगा और बेहतर तो येह है कि इसी तरह निसाब का ए'तिबार भी न हो क्यूंकि पांचवां हिस्सा वाजिब करने में माले ग़नीमत के साथ मुशाबहत पाई जाती है और निसाब का ए'तिबार करना भी बर्इद अज़ क़ियास नहीं क्यूंकि इस के इस्ति'माल की जगह वोही है जो ज़कात की है इसी लिये सहीह क़ौल के मुताबिक़ दफ़ीने को सोने चांदी के साथ ख़ास किया जाएगा।

मा'दनिय्यात की ज़कात : सोने चांदी के इलावा मा'दनिय्यात पर ज़कात नहीं।⁽²⁾ दो अक्वाल में से सहीह क़ौल के मुताबिक़ सोने चांदी को भट्टी से गुज़ारने और ख़ालिस करने के बा'द इन में से चालीसवां हिस्सा लिया जाएगा और इसी बुन्याद पर निसाब मो'तबर होगा। साल पूरा होने के मुतअल्लिक़ दो क़ौल हैं एक क़ौल के मुताबिक़ खुम्स वाजिब है इस बुन्याद पर निसाब का ए'तिबार न होगा। निसाब के मुतअल्लिक़ भी दो क़ौल हैं ज़ियादा मुनासिब येह है (और **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है) कि वाजिब मिक्दार में माले तिजारत की ज़कात से मिला दें क्यूंकि येह भी एक किस्म की कमाई है और साल के ए'तिबार से उ़शरी चीज़ों के साथ मिला दें इस तरह साल का ए'तिबार न होगा क्यूंकि येह बिल्कुल नर्मी का बरताव है। अलबत्ता ! उ़शरी चीज़ों की तरह निसाब का ए'तिबार किया जाएगा लेकिन एह्तियात इस में है कि क़लील व क़षीर मिक्दार में पांचवां हिस्सा निकाला जाए और शुबए इख़्तिलाफ़ से बचते हुए सोने चांदी के ऐन से निकालें क्यूंकि येह गुमान तअरुज़ के करीब है और तअरुज़े इश्तिबाह के सबब एक बात पर फ़तवा देना मुमकिन नहीं।

①....मुज़ारबत : तिजारत में एक किस्म की शिर्कत है कि एक जानिब से माल हो और एक जानिब से काम और मुनाफ़अ में दोनों शरीक। माल देने वाले को रब्बुल माल और काम करने वाले को मुज़ारिब और मालिक ने जो दिया उसे रासुल माल कहते हैं। (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि. 3 स. 1)

②....अहनाफ़ के नज़दीक : कान से लोहा, सीसा, तांबा, पीतल, सोना, चांदी निकले, इस में खुम्स (पांचवां हिस्सा) लिया जाएगा और बाकी पाने वाले का है। (अलबत्ता) फ़ीरोज़ा व याकूत व ज़मरुद व दीगर जवाहिर और सुर्मा, फ़टकरी, चूना, मोती में और नमक वगैरा बहने वाली चीज़ों में खुम्स नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 912, मुलख़ब्सन)

﴿6﴾.....सदक़ा फ़ित्र :

सदक़ा फ़ित्र ज़बाने मुस्तफ़ा से हर उस मुसलमान पर वाजिब है जिस के पास अपने और अपने ज़ेरे क़िफ़ालत लोगों के लिये ईदुल फ़ित्र के दिन और रात के खाने से एक साअ़ जाइद उन चीज़ों में से हो जिसे बतौर ख़ुराक इस्ति'माल किया जाता है⁽¹⁾ और रसूले अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साअ़ से इस का हिसाब लगाया जाएगा⁽²⁾ जो कि दो सेर और सेर का तिहाई हिस्सा है।⁽³⁾ उस चीज़ की जिन्स से दे जिसे वोह खुद खाता है या इस से अफ़ज़ल चीज़ से दे। अगर वोह गन्दुम खाता है तो सदक़ा फ़ित्र में जव देना जाइज़ नहीं।⁽⁴⁾ अगर मुख़लिफ़ अनाज खाता है तो इन में से बेहतर को इख़्तियार करे बहर हाल जिस से दे अदा हो जाएगा और सदक़ा फ़ित्र की तक्सीम अम्वाल की ज़कात की तक्सीम की तरह है। लिहाज़ा इस में तमाम मसारिफ़े ज़कात (या'नी जिन्हें ज़कात दी जाती है) को घेरना ज़रूरी है। सदक़ा फ़ित्र में आटा या सत्तू देना जाइज़ नहीं।⁽⁵⁾

मुसलमान मर्द पर अपनी बीवी-बच्चों,⁽⁶⁾ गुलामों और हर उस क़रीबी रिश्तेदार का सदक़ा फ़ित्र वाजिब है जो इस के ज़ेरे क़िफ़ालत हो या'नी इस के मां बाप और अवलाद में से जिन का नफ़का इस पर वाजिब है उन की तरफ़ से सदक़ा फ़ित्र देगा⁽⁷⁾ कि हुज़ूर नबिय्ये पाक साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो तुम्हारे ज़ेरे क़िफ़ालत हैं उन का सदक़ा फ़ित्र अदा करो।”⁽⁸⁾

①अहनाफ़ के नज़दीक : सदक़ा फ़ित्र के वुजूब की शराइत दर्जे ज़ैल हैं : सदक़ा फ़ित्र हर मुसलमान आज़ाद मालिके निसाब पर जिस की निसाब हाज़ते अस्लिह्या से फ़ारिग़ हो वाजिब है। इस में अक़िल बालिग़ और माले नामी होने की शर्त नहीं। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 935)

②صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب زکاة الفطر علی المسلمین.....الخ، الحدیث: 984، ص 289۔

③ दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़हा 1321 पर है : “अहनाफ़ के नज़दीक सदक़ा फ़ित्र की मिक्दार एक सो पछतर रूपे अठन्नी भर” वज़्न गैहूँ या इस का आटा या इतने गैहूँ की कीमत एक सदक़ा फ़ित्र की मिक्दार है। (या'नी 2 किलो ग्राम से 80 ग्राम कम)

④अहनाफ़ के नज़दीक : जव वगैरा देना भी जाइज़ है। (माखूज़ अज़ : बहारे शरीअत, जि. 1 स. 939)

⑤अहनाफ़ के नज़दीक : गैहूँ और जव के देने से इन का आटा देना अफ़ज़ल है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 939)

⑥अहनाफ़ के नज़दीक : अपनी औरत और औलाद अक़िल बालिग़ का फ़ित्रा उस के ज़िम्मे नहीं अगर्चे अपाहज हो, अगर्चे उस के नफ़कात इस के ज़िम्मे हों। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 938)

⑦अहनाफ़ के नज़दीक : मां बाप, दादा दादी, नाबालिग़ भाई और दीगर रिश्तेदारों का फ़ित्रा उस के ज़िम्मे नहीं और बिगैर हुक्म अदा भी नहीं कर सकता। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 938)

⑧السنن الکبری للبيهقی، کتاب الزکاة، باب اخراج زکاة الفطر عن نفسه.....الخ، الحدیث: 828، ج 2، ص 262، مفهوماً۔

मुश्तरक गुलाम का सदक़ए फ़ित्र दोनों शरीकों पर वाजिब है⁽¹⁾ लेकिन काफ़िर गुलाम का सदक़ए फ़ित्र वाजिब नहीं। अगर ज़ौजा अपनी तरफ़ से अदा करे तो अदा हो जाएगा और शोहर उस की इजाज़त के बिग़ैर भी अदा कर सकता है। अगर कोई शख्स बा'ज का नफ़का अदा कर सकता हो तो बा'ज का ही अदा कर दे और इन में से ज़ियादा हक़दार वोह हैं जिन का नफ़का ज़ियादा लाज़िम है। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बच्चों के नफ़के को बीवी के नफ़के पर और बीवी के नफ़के को ख़ादिम के नफ़के पर मुक़द्दम फ़रमाया है।⁽²⁾

पस येह वोह फ़िक़ही अहक़ाम हैं कि जिन का जानना मालदार शख्स के लिये ज़रूरी है और कभी इन मसाइल के इलावा नादर वाकिआत भी पेश आते हैं तो ऐसे वाकिआत के पेश आने पर उ-लमा से पूछने में हरज नहीं लेकिन इन मसाइल को याद रखना चाहिये।

दूसरी फ़सल : नफ़का की अदाएगी और इस की जाहिरी व बातिनी शराइब

जान लीजिये कि नफ़का अदा करने वाले पर पांच बातों की रिआयत ज़रूरी है :

﴿1﴾.....निय्यत करना :

या'नी अपने दिल से फ़र्ज़ नफ़का की निय्यत करे मगर उस पर माल को मुतअय्यन करना लाज़िम नहीं। अगर उस का माल गाइब हो तो यूं कहे : “येह मेरे गाइब माल की नफ़का है अगर वोह सहीह सलामत है वरना नफ़ली सदका हो जाए” येह कहना जाइज़ है। क्यूंकि अगर वोह तसरीह न करता और मुतलक़न कहता तो भी इसी तरह होता और वली की निय्यत पागल और बच्चे की निय्यत के काइम मक़ाम है। जो शख्स नफ़का अदा न करे (और बादशाहे इस्लाम उस से जबरन ले ले) तो बादशाह की निय्यत उस की निय्यत के काइम मक़ाम हो जाती है लेकिन येह जाहिरी दुन्यवी हुक्म के ए'तिबार से है या'नी दुन्या में उस से मुतालबा न हो, आख़िरत के ए'तिबार से नहीं बल्कि उस की ज़िम्मेदारी बाकी रहेगी यहां तक कि वोह नए सिरे से नफ़का अदा करे। अगर कोई शख्स नफ़का की अदाएगी के लिये किसी को वकील बनाए और वकील बनाते हुए निय्यत कर ले या किसी को निय्यत का वकील करे तो काफ़ी है क्यूंकि निय्यत का वकील बनाना भी निय्यत ही है।

①....अहनाफ़ के नज़दीक : मुश्तरक गुलाम का सदक़ए फ़ित्र किसी पर वाजिब नहीं। चुनान्चे, बहारे शरीअत में आलमगीरी के हवाले से है कि दो या चन्द शख्सों में गुलाम मुश्तरक है तो इस का फ़ित्रा किसी पर नहीं।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 937)

②.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب فی صلاة الرحم، الحديث: ١٦٩١، ج ٢، ص ٨٨٣، مفهوماً.

﴿2﴾.....साल पूरा होने पर अदाएगी में जल्दी करना :

साल पूरा होने पर ज़कात जल्दी अदा कर दे। सदक़ए फ़ित्र में ईदुल फ़ित्र के दिन से ताख़ीर न करे और सदक़ए फ़ित्र वाजिब होने का वक़्त माहे रमज़ान के आख़िरी दिन के गुरुबे आफ़ताब से शुरूअ होता है⁽¹⁾ और इसे जल्दी अदा करने का वक़्त पूरा माहे रमज़ान है। जो शख़्स कुदरत के बा वुजूद अपने माल की ज़कात देने में ताख़ीर करे तो वोह गुनहगार है लेकिन इस से ज़कात साक़ित न होगी अगर्चे उस का माल ज़ाएअ हो जाए और क़ादिर होने से मुराद येह है कि उसे मुस्तहिक्के ज़कात मिल जाए और अगर उस ने मुस्तहिक्क न मिलने के सबब ज़कात देने में ताख़ीर की और माल ज़ाएअ हो गया तो उस से ज़कात साक़ित हो जाएगी। निसाब मुकम्मल होने और साल गुज़रने के बा'द जल्दी ज़कात देना जाइज़ है।⁽²⁾ और दो साल की ज़कात जल्दी अदा कर देना भी जाइज़ है और जल्दी ज़कात अदा की फिर साल पूरा होने से पहले मिस्कीन मर गया या मुर्तद हो गया या ज़कात के इलावा माल के सबब अमीर हो गया या मालिक का माल तलफ़ हो गया या मालिक मर गया तो दिये हुए माल से ज़कात अदा न होगी और इस से वापस भी नहीं ले सकता अलबत्ता अगर देते वक़्त वापसी की शर्त लगाए तो वापस ले सकता है। लिहाज़ा ज़कात जल्दी देने वाले को उमूरे आख़िरत और आख़िरत की सलामती की तरफ़ ध्यान देना चाहिये।

﴿3﴾.....माल की जगह कीमत न देना :

माल के बजाए कीमत न दे बल्कि जिस के बारे में हुक्म है वोही माल दे। लिहाज़ा सोने के बदले चांदी या चांदी के बदले सोना न दे अगर्चे येह कीमत में ज़ियादा हो।⁽³⁾

①अहनाफ़ के नज़दीक : ईद के दिन सुब्हे सादिक़ तुलूअ होते ही सदक़ए फ़ित्र वाजिब होता है।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 935)

②अहनाफ़ के नज़दीक : ज़कात फ़र्ज हो जाने के बा'द फ़ौरन अदा करना वाजिब है और इस की अदाएगी में बिला उज़्रे शर्इ ताख़ीर करना गुनाह है। (الفتاوى الهندية، كتاب الزكوة، فصل في مال التجارة، الباب الاول، ج 1 ص 140)

③अहनाफ़ का मौक़िफ़ : किसी के पास सोना भी है और चांदी भी और दोनों की कामिल निसाबें तो येह ज़रूर नहीं कि सोने को चांदी या चांदी को सोना करार दे कर ज़कात अदा करे, बल्कि हर एक की ज़कात अलाहिदा अलाहिदा वाजिब है। हां, ज़कात देने वाला अगर सिर्फ़ एक चीज़ से दोनों निसाबों की ज़कात अदा करे तो उसे इख़्तियार है मगर इस सूरत में येह वाजिब होगा कि कीमत वोह लगाए जिस में फ़कीरों का ज़ियादा नप़अ है।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 904)

﴿4﴾.....**जकात दूसरे शहर की तरफ मुन्तकिल न करना :**⁽¹⁾

चौथी शर्त यह है कि जकात को दूसरे शहर की तरफ मुन्तकिल न करे क्योंकि हर शहर के मसाकीन वहां के मालों पर निगाह रखते हैं और दूसरी जगह मुन्तकिल करने से बदगुमानी पैदा होगी। अगर कोई ऐसा करे तो एक कौल के मुताबिक जकात अदा हो जाएगी लेकिन इख्तिलाफ के शुबे से निकलना ज़ियादा बेहतर है। लिहाज़ा पूरे माल की जकात उसी शहर में निकाले और उसी शहर के गुरबा में तक्सीम करने में कोई हरज नहीं।

﴿5﴾.....**मसारिफे जकात की ता'दाद के मुताबिक माले जकात तक्सीम करना :**

अपने शहर में मौजूद तमाम मसारिफे जकात की ता'दाद के मुताबिक माल तक्सीम करे क्योंकि तमाम मसारिफे जकात को घेरना वाजिब है⁽²⁾ कि इस फ़रमाने बारी तअ़ाला का ज़ाहिरी मफ़हूम इसी पर दलालत करता है। चुनान्वे, इरशाद होता है :

إِنَّمَا الصَّدَقَتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالسَّائِلِينَ... الآية

(प. १०, التوبة: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जकात तो इन्हीं लोगों के लिये है मोहताज और निरे नादार।

येह मरीज़ के उस कौल के मुशाबेह है कि “मेरा तिहाई माल फुकरा और मसाकीन के लिये है” और उस का तकाज़ा है कि मालिक बनाने में सब को शरीक किया जाए और इबादात में ज़ाहिरी मफ़हूम मुराद लेने से बचा जाए।

आठ अक्साम में से दो किस्म के मुस्तहिक्के जकात ऐसे हैं जो अकषर शहरों में नहीं पाए जाते : (1)....**एक मोअल्लफ़तुल कुलूब** (या'नी जिन के दिलों को इस्लाम की तरफ़ माइल करने के लिये जकात दी जाती है) और (2)..... **आमिल** (या'नी जिसे बादशाहे इस्लाम ने जकात और उश्र वुसूल करने के लिये मुक़र्रर किया)। चार किस्म के मुस्तहिक्के जकात ऐसे हैं

①.....**अहनाफ़ के नज़दीक :** दूसरे शहर को जकात भेजना मकरूह है, मगर जब कि वहां इस (या'नी भेजने वाले) के रिश्तेवाले हों तो उन के लिये भेज सकता है या वहां के लोगों को ज़ियादा हाज़त है या ज़ियादा परहेज़गार हैं या मुसलमानों के हक़ में वहां भेजना ज़ियादा नाफ़ेअ है या तालिबे इल्म के लिये भेजे या ज़ाहिदों के लिये या दारुल हर्ब में है और जकात दारुल इस्लाम में भेजे या साले तमाम से पहले ही भेज दे, इन सब सूरतों में दूसरे शहर को भेजना बिला कराहत जाइज़ है। (नीज़) शहर से मुराद वोह शहर है जहां माल हो, अगर खुद एक शहर में है और माल दूसरे शहर में तो जहां माल हो वहां के फुकरा को जकात दी जाए और सदकए फ़ित्र में वोह शहर मुराद है जहां खुद है, अगर खुद एक शहर में है उस के छोटे बच्चे और गुलाम दूसरे शहर में तो जहां खुद है वहां के फुकरा पर सदकए फ़ित्र तक्सीम करे। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 933)

②.....**अहनाफ़ के नज़दीक :** जकात देने वाले को इख़्तियार है कि इन सातों किस्मों को दे या इन में किसी एक को दे दे, ख़्वाह एक किस्म के चन्द अश्खास को या एक को। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 927)

जो तमाम शहरों में पाए जाते हैं : (1).....फुकरा (2)..... मसाकीन (3)..... कर्जदार और (4)..... मुसाफिर। दो किस्म के मुस्तहिक्के ज़कात बा'ज शहरों में पाए जाते हैं, बा'ज में नहीं : (1).....जिहाद करने वाले और (2)..... मुकातब गुलाम।⁽¹⁾

मिषाल के तौर पर अगर पांच किस्म के लोग मौजूद हों तो इन के दरमियान बराबर बराबर या इस के करीब करीब माल की ज़कात तक्सीम की जाए। हर एक के लिये एक हिस्सा मुकर्रर किया जाए फिर हर किस्म को आपस में बराबर बराबर या थोड़े बहुत फर्क के साथ तीन हिस्सों में तक्सीम करे या ज़ियादा हिस्से करे और किसी एक किस्म के तहत सब को बराबर देना वाजिब नहीं, इस के लिये जाइज़ है कि दस या बीस पर तक्सीम करे पस हर एक का हिस्सा कम हो जाएगा लेकिन अक्सामे मसारिफ़ ज़ियादती या कमी को क़बूल नहीं करती। लिहाज़ा हर किस्म में तीन से कम न करें अगर वोह पाए जाते हों। फिर अगर सदक़ाए फ़ित्र में एक ही साअ़ वाजिब हो और पांच किस्म के मसारिफ़ पाए जाएं तो उसे चाहिये कि पन्दरह आदमियों को दे, अगर इमकान के बा वुजूद एक को न पहुंचे तो उस एक के हिस्से का तावान दे, अगर वाजिब के कम होने के सबब येह (या'नी तक्सीम) मुश्किल हो तो एक गुरौह को जिन पर ज़कात वाजिब हो, अपने साथ शरीक कर ले और अपना माल उन के माल के साथ मिला ले फिर मुस्तहिक्कीन को जम्अ करे और माल इन के सिपुर्द कर दे ताकि वोह आपस में तक्सीम कर लें क्योंकि येह अमल उस के लिये ज़रूरी है।

ज़कात के बाबिनी आदाब की बायीकियां

जान लीजिये कि राहे आख़िरत का इरादा करने वाले हर शख्स पर ज़कात के मुतअल्लिक कुछ ज़िम्मेदारियां आइद होती हैं :

❶..... ज़कात के वुजूब और इस के मा'ना को समझना नीज़ इस के ज़रीए आजमाइश की वजह क्या है? इसे इस्लाम के बुन्यादी अरकान में से क्यूं करार दिया गया हालांकि येह महज़ माली तसरुफ़ है, बदनी इबादात से नहीं।

वुजूबे ज़कात की तीन वुजूहात :

पहली वजह : कलिमाते शहादत की अदाएगी का मक्सद तौहीद को लाज़िम करना और मा'बूद के एक होने की गवाही देना है और इसे पूरा करने की शर्त येह है कि मुवहिद् (तौहीद के काइल) के लिये उस यक्ता ज़ात के सिवा कोई महबूब न रहे क्यूंकि महबूबत शिर्कत को क़बूल नहीं करती और ज़बान के साथ वहदानिय्यत का इकरार करने में कम आजमाइश है और महबूब की जुदाई से मुहिब्ब के दर्जे का इमतिहान लिया जाता है और बन्दों के नज़दीक पसन्दीदा व

❶.....मुकातब : आका अपने गुलाम से माल की एक मिक्दार मुकर्रर कर के येह कह दे कि "इतना अदा कर दे, तू आज़ाद है" और गुलाम इसे क़बूल भी कर ले तो ऐसे गुलाम को मुकातब कहते हैं। (माखूज अज़ : बहारे शरीअत, जि. 2 हिस्सा 9, स. 292)

महबूब चीज़ अमवाल हैं क्योंकि येह दुन्या में उन के लुत्फ़ उठाने का आला हैं और इन्ही अमवाल के ज़रीए वोह इस जहान से मानूस होते और मौत से नफ़रत करते हैं हालांकि इसी मौत के ज़रीए महबूब की मुलाकात होती है। लिहाज़ा इन के दा'वे की तस्दीक़ के लिये महबूब चीज़ में उन्हें आजमाया जाता और उन से इस माल का मुतालबा किया जाता है जो उन्हें महबूब व मरगूब है। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ ط (پ ۱، التوبة: ۱۱۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों से उन के माल और जान ख़रीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।

और येह फ़ज़ीलत जिहाद से हासिल होती है और जिहाद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाकात के शौक में जान का नज़राना पेश करने का नाम है और माल से चश्म पोशी करना जान की ब निस्बत ज़ियादा आसान है। जब माल व अस्बाब के खर्च करने पर येह मा'ना समझे गए तो अब लोगों की तीन किस्में बन गई :

अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **काफ़ी हैं :**

(1).....वोह लोग जिन्हों ने तौहीद की तस्दीक़ की और अपने अहद को पूरा किया, अपना तमाम माल छोड़ दिया, दिरहमो दीनार जम्अ न किये और ऐसी नौबत ही न आने दी कि उन पर ज़कात फ़र्ज हो यहां तक कि उन में से बा'ज़ से पूछा गया कि “दो सो दिरहम में कितनी ज़कात फ़र्ज है ?” तो फ़रमाया : अ़वाम पर तो शरीअत के हुक्म से पांच दिरहम हैं लेकिन हम पर तमाम माल खर्च करना वाजिब है।” इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपना तमाम माल सदका कर दिया और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपना आधा माल पेश कर दिया सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने पूछा : “ऐ उमर ! घर वालों के लिये क्या छोड़ा ?” अर्ज़ की : “इसी की मिष्ठल।” फिर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा : “घर वालों के लिये क्या छोड़ा ?” अर्ज़ की : “**अल्लाह** रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ और उस का रसूल काफ़ी है।” तो आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तुम दोनों के दरमियान इतना फ़र्क़ है जिनता तुम दोनों के कलिमात में फ़र्क़ है।”⁽¹⁾ पस अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने तमाम सिद्क़ को पूरा कर दिया और अपने पास **अल्लाह** और उस के रसूल के सिवा कुछ न छोड़ा।

①.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب فی الرحمة فی ذلک، الحدیث: ۱۶۸۰، ج ۲، ص ۱۸۰، یثون بَعْضِ الْأَلْفَاظِ۔

माल में ज़कात के इलावा भी कुछ हुक्क हैं :

(2)..... दूसरी किस्म के लोगों का दर्जा पहली किस्म के लोगों से कम है। ये वो लोग हैं जो अपने माल रोक रखते हैं। ज़रूरियात और ख़ैरात के मौसिमों के मुन्तज़िर रहते हैं। जम्अ करने से इन का मक्सद ऐशो इशरत नहीं बल्कि ज़रूरत के मुताबिक़ खर्च करना होता है। ये हाज़त से जाइद माल को ज़रूरत पड़ने पर नेकी के कामों में खर्च करते हैं। ये लोग ज़कात की मिक्दार पर इक्तिफ़ा नहीं करते और एक गुरौहे ताबेईन ने इस मौकिफ़ को इख़्तियार किया है कि माल में ज़कात के इलावा भी कुछ हुक्क हैं जैसे हज़रते सय्यिदुना इमाम नख्ई, हज़रते सय्यिदुना शअबी, हज़रते सय्यिदुना अता और हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ)। हज़रते सय्यिदुना इमाम शअबी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा गया कि “क्या माल में ज़कात के इलावा भी कोई हक़ है?” फ़रमाया : जी हां ! क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ये फ़रमान नहीं सुना :

وَأَتَى الْمَالَ عَلَى حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ

(प २, البقرة: १८८)

नीज इन्हों ने इन फ़ामीने बारी तआला से इस्तिदलाल किया :

وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ۝

(प ९, الانفال: ३)

एक मकाम पर इरशाद हुवा :

وَأَنْفَقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاهُمْ

(प २८, المنافقون: १०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की महब्बत में अपना अज़ीज़ माल दे रिश्तेदारों को।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में खर्च करें।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हमारे दिये में से कुछ हमारी राह में खर्च करो।

इन हज़रात का ख़याल है कि ये हुक्म आयते ज़कात से मन्सूख़ नहीं बल्कि येह मुसलमान पर मुसलमान के हक़ में दाख़िल है। इस का मा'ना येह है कि माले ज़कात के इलावा मालदार पर वाजिब है कि जब वो मोहताज को पाए तो उस की हाज़त पूरी करे। इस बाब में फ़िक्ह की रू से दुरुस्त मस्अला येह है कि जब किसी मुसलमान को हाज़त तंग करे तो दूसरों पर इस का इज़ाला करना फ़र्जे किफ़ाया है क्यूंकि किसी मुसलमान को ज़ाएअ करना जाइज़ नहीं। अलबत्ता येह एहतिमाल है कि “यूँ कहा जाए कि मालदार उसे इतना माल कर्ज़ दे दे कि उस की हाज़त पूरी हो जाए और जब मालदार अपने माल की ज़कात दे दे तो अब मज़ीद कुछ खर्च करना

उस पर लाज़िम नहीं।” यह भी कहा जा सकता है कि “इसी वक़्त उस पर खर्च करना लाज़िम है लेकिन कर्ज़ देना जाइज़ नहीं या”नी फ़कीर को कर्ज़ क़बूल करने की तक्लीफ़ देना लाज़िम नहीं।” इस मस्अले में इख़िलाफ़ है।

(3).....कर्ज़ लेना अ़वाम के दर्जात में से आख़िरी दर्जे की तरफ़ उतरना है और येह तीसरी किस्म का दर्जा उन लोगों का है जो वाजिब की अदाएगी पर इक्तिफ़ा करते हैं कि न इस से कम करते हैं, न ज़ियादा। (आरिफ़ीन के नज़दीक) येह तमाम दर्जात से कम दर्जा है। आ़म लोग इसी पर इक्तिफ़ा करते हैं क्यूंकि वोह माल के मुआमले में कन्ज़ूसी से काम लेते और इस की तरफ़ मैलान की वजह से आख़िरत से उन की महब्बत कमज़ोर है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

إِنْ يَسْأَلْكُمُوهَا فَيُحْفِكُمْ تَبَخَّلُوا وَ يُخْرِجْ
أَصْغَانَكُمْ ۝ (پ ۲۶، محمد: ۳۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर इन्हें तुम से त़लब करे और ज़ियादा त़लब करे तुम बुख़ल करोगे और वोह बुख़ल तुम्हारे दिलों के मैल जाहिर कर देगा।

इन दोनों बन्दों में कितना फ़र्क़ है कि एक से उस का जान और माल जन्नत के बदले ख़रीद लिया और दूसरे पर इस के बुख़ल की वजह से ज़ियादा मुता़लबा नहीं किया गया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों को माल खर्च करने का जो हुक्म फ़रमाया येह उस के मआनी में से एक मा'ना है।

दूसरी वजह : बुख़ल की सिफ़त से पाक होना क्यूंकि येह मोहलिकात में से है। चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तीन चीज़ें हलाक करने वाली हैं : (1).....ऐसा बुख़ल जिस की इताअत हो (2).....ऐसी ख़्वाहिश जिस की इत्तिबाअ की जाए (3).....इन्सान का अपने आप को अच्छा जानना।”⁽¹⁾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يُؤَقِّ شَحْنُ نَفْسِهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ۝ (پ ۲۸، الحشر: ۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।

आगे मोहलिकात के बाब में बुख़ल के हलाकत खेज़ होने की वजह और इस से बचने का तरीक़ा बयान किया जाएगा।

बुख़ल से बचने का तरीका :

बुख़ल की सिफ़त यूँ जाइल हो सकती है कि इन्सान माल खर्च करने का आदी हो जाए क्यूँकि किसी चीज़ की महबूबत उसी सूरत में ख़त्म हो सकती है कि इन्सान उस के छोड़ने पर नफ़्स को मजबूर करे यहां तक कि वोह उस की आदत बन जाए इसी मा'ना के ए'तिबार से ज़कात पाक करने वाली है या'नी साहिबे माल को हलाकत खेज़ बुख़ल की बुराई से पाक कर देती है और पाकीज़गी उसी क़दर हासिल होगी जिस क़दर बन्दा खर्च करते और ज़कात देते वक़्त खुशी का इज़हार करेगा ।

माली ने'मतों का शुक्र :

तीसरी वजह : ने'मत का शुक्र अदा करना चूँकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दे पर उस की जान और माल के ए'तिबार से इन्आम फ़रमाया है : लिहाज़ा बदनी इबादात बदनी ने'मतों और माली इबादात माली ने'मतों का शुक्र हैं । वोह शख़्स कितना हकीर है जो किसी फ़कीर को देखता है कि उसे रिज़क की तंगी लाहिक् है और वोह इस का मोहताज है फिर भी वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करने पर माइल नहीं होता कि उस ने इसे सुवाल से बे नियाज़ कर दिया और माल के चालीसवें या दसवें हिस्से में दूसरों को इस का मोहताज बना दिया ।

﴿2﴾.....दूसरी ज़िम्मेदारी वक़्ते अदाएंगी से मुतअल्लिक है । दीनदार लोगों का तरीका येह है कि हुक्मे इलाही बजा लाने में इज़हारे रग़बत के लिये वक़्ते वुजूब से पहले ज़कात अदा करते हैं ताकि वोह फुकरा के दिलों में खुशी दाख़िल करें और हवादिषाते ज़माना की वजह से जल्दी करते हैं ताकि भलाई के काम में हरज वाक़ेअ न हो क्यूँकि वोह जानते हैं कि ताख़ीर करने में आफ़ात हैं नीज़ अगर वक़्ते वुजूब से ताख़ीर हुई तो बन्दा गुनहगार होता है । कभी कभार बातिन से नेकी की आवाज़ आती है तो इसे ग़नीमत समझना चाहिये क्यूँकि येह फ़िरिश्ते का अलका होता है । हदीषे पाक में है कि “मोमिन का दिल रहमान की दो उंगलियों के दरमियान होता है ।”

तो इस का बदलना कितना तेज़ होगा जब कि शैतान तंगदस्ती से डराता और बे हयाई और बुरी बातों का हुक्म देता है और फ़िरिश्ते के इलका के बा'द शैतान का वस्वसा होता है । लिहाज़ा दिल में सबबे ख़ैर गुज़रने को ग़नीमत जाने ।

अदाएगिये ज़कात के अफ़ज़ल अवकात :

अगर यकमुश्त ज़कात अदा करता हो तो उस के लिये एक महीना मुक़र्रर कर ले और अफ़ज़ल अवकात में ज़कात अदा करने की कोशिश करे ताकि इस के सबब षवाब ज़ियादा हो और ज़कात दो गुना हो जाए। जैसे मुहर्रम का महीना कि येह साल का पहला महीना है और हुर्मत वाले महीनों में से है या माहे रमज़ानुल मुबारक कि आकाए दो अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम मख़्लूक से ज़ियादा सखी थे और रमज़ानुल मुबारक में तेज़ चलने वाली हवा की तरह होते कि इस में कोई चीज़ न रोकते, ⁽¹⁾ रमज़ान शरीफ़ में शबे क़द्र की फ़ज़ीलत भी है नीज़ कुरआने पाक भी इस माहे मुबारक में नाज़िल हुवा।

रमज़ान नहीं बल्कि माहे रमज़ान कहो :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाया करते थे कि “रमज़ान न कहो बल्कि माहे रमज़ान कहो क्यूंकि येह **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नामों में से एक नाम है।”

माहे जुल हिज्जतिल हुराम भी कषीर फ़ज़लो बरकत वाले महीनों में से है क्यूंकि येह हुर्मत वाला महीना है और इस में हज़्जे अक्बर है और मा'लूम दिन या'नी पहले दस दिन और गिने हुए दिन या'नी अय्यामे तशरीक भी इसी में हैं। ⁽²⁾ माहे रमज़ान के आख़िरी और माहे जुलहिज्जा के पहले दस दिन अफ़ज़ल हैं।

छुपा कर सदका करने की फ़ज़ीलत :

﴿3﴾.....तीसरी ज़िम्मेदारी येह है कि ज़कात का पोशीदा अदा करना क्यूंकि येह रिया और नामो नुमूद से दूर है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अफ़ज़ल सदका येह है कि कम कमाने वाले का मेहनत कर के फ़कीर को पोशीदा तौर पर सदका देना।” ⁽³⁾

①.....صحیح البخاری، کتاب بدء الوحی، باب کیف کان بدء الوحی.....الخ، الحديث: ٦، ج ١، ص ١٠، مفهوماً۔

②....अय्यामे तशरीक की वजहे तसमिय्या : बक़र ईद के दिन या'नी दसवीं ज़िलहिज्जा के बा'द वाले तीन दिनों को अय्यामे तशरीक कहते हैं कि इन दिनों में अहले अरब कुरबानी के गोशत सुखाते इन्हें धूप देते हैं, तशरीक ब मा'ना सुखाना, धूप देना। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 4 स. 171)

अय्यामे तशरीक पांच हैं : चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 784 पर है : नवीं ज़िलहिज्जा की फ़त्र से तेरहवीं की अस् तक, हर नमाज़े फ़र्ज़ पंजगाना के बा'द जो जमाअते मुस्तहब्बा के साथ अदा की गई एक बार तकबीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार अफ़ज़ल इसे तकबीर तशरीक कहते हैं, वोह येह है :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمْدُ

③.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث أبي ذر الغفاري، الحديث: ٢١٦٠٢، ج ٨، ص ١٣٠۔

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “तीन बातें नेकी के खज़ानों में से हैं। इन में से एक पोशीदा तौर पर सदका करना है।”⁽¹⁾

नीज़ मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक बन्दा पोशीदा तौर पर कोई अमल करता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे पोशीदा में लिख देता है फिर अगर वोह ज़ाहिर करता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ पोशीदा से निकाल कर अलानिया में लिख देता है और अगर वोह किसी को बताता है तो पोशीदा और अलानिय्या दोनों से निकाल कर रिया में लिख देता है।”⁽²⁾

मशहूर हदीष में है कि “सात किस्म के लोग ऐसे हैं जिन्हें **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस दिन (अर्श का) साया अता फ़रमाएगा जिस दिन उस के साए के सिवा कोई साया न होगा इन में से एक वोह है जिस ने यूं सदका किया कि बाएं हाथ को ख़बर न हुई कि दाएं हाथ ने क्या सदका किया।”⁽³⁾

एक रिवायत में है : “صَدَقَةُ السِّرِّ تُطْفِئُ غَضَبَ الرَّبِّ” या'नी पोशीदा सदका ग़ज़बे इलाही की आग को बुझा देता है।”⁽⁴⁾

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَأَنْ تُخْفُوها وَتُؤْتُوها الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ
(ب.अ.البقرة: २८१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर छुपा कर फ़कीरों को दो येह तुम्हारे लिये सब से बेहतर है।

छुपा कर सदका देने का फ़ाइदा :

पोशीदा सदका देने का फ़ाइदा येह है कि बन्दा दिखावे और नामो नुमूद की आफ़ात से बच जाता है। नीज़ मरवी है कि मक्की मदनी सुल्तान, रहमते अलमिय्यान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस का अमल क़बूल नहीं फ़रमाता जो लोगों को सुनाए, रियाकारी करे और एहसान जताए।”⁽⁵⁾ जब कि सदके का चर्चा करने वाला सुनाने की ख़्वाहिश करता है और लोगों की मौजूदगी में सदका देने वाला रियाकारी चाहता है और पोशीदा देने वाला, ख़ामोश रहने वाला रियाकारी से बचने वाला है।

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الصبر على المصائب، الحديث: ١٠٠٥١، ج ٤، ص ٢١٥، “إخفاء” بدله “كتمان”-

②.....التفسير الكبير للرازي، سورة البقرة: ٢٤١، ج ٣، ص ٦٢-

③.....صحيح البخاري، كتاب الاذان، باب من جلس في المسجد.....الخ، الحديث: ٢٦٠، ج ١، ص ٢٣٦-

④.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الزكاة، فصل في الاختيار في صدقة التطوع، الحديث: ٣٢٢٢، ج ٣، ص ٢٢٥-

⑤.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤٨-

सदके में नुमूद व नुमाइश से बचने के तरीके :

उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام के एक गुरौह ने पोशीदा तौर पर सदका देने में मुबालगा किया यहां तक कि उन्होंने ने कोशिश की, कि सदका लेने वाला देने वाले को न पहचान सके। इन में से बा'ज तो नाबीना के हाथ में सदका देते, बा'ज फ़कीर के रास्ते में डाल देते और उस के बैठने की जगह रख देते जहां से वोह देख लेता लेकिन देने वाला नज़र न आता, बा'ज सोए हुए फ़कीर के कपड़े में बांध देते, बा'ज किसी दूसरे के हाथ फ़कीर की तरफ़ भेज देते ताकि वोह देने वाले को न जाने और कह देता कि इसे हमारे बारे में न बताए। येह तमाम तरीके ग़ज़बे इलाही को बुझाने वाले, रियाकारी और सुनाने से बचाने वाले हैं अगर एक शख्स के पहचाने बिगैर देना मुमकिन न हो तो वकील को दे कि वोह मिस्कीन के हवाले कर दे और मिस्कीन का न जानना ज़ियादा बेहतर है क्योंकि मिस्कीन के जानने में रियाकारी और एहसान जतलाना दोनों पाए जाते हैं जब कि पहुंचाने वाले के जानने में सिर्फ़ रियाकारी पाई जाती है।

बुख़ल और रियाकारी सांप और बिच्छू की सूरत में :

जब भी शोहरत मक्सूद होगी तो अमल जाएअ हो जाएगा क्योंकि ज़कात बुख़ल के खातिमे और माल की महब्वत कम करने के लिये होती है और हुब्बे जाह दिल पर हुब्बे माल से ज़ियादा ग़लबा रखती है, दोनों में से हर एक आखिरत में नुक़सान देह है। बुख़ल क़ब्र में डंक मारने वाले बिच्छू की शक़ल में जब कि रियाकारी ज़हरीले सांप की सूरत में आती है और इन्सान को हुक्म है कि इन दोनों की तकलीफ़ को दूर करने या कम करने के लिये दोनों को कमज़ोर कर दे या मार दे। जब भी वोह दिखावे और सुनाने का इरादा करेगा तो गोया बिच्छू के बा'ज आ'जा को सांप के लिये गिज़ा बना देगा तो जिस क़दर बिच्छू कमज़ोर होगा उसी क़दर सांप ताक़तवर हो जाएगा अगर मुआमले को जूं का तूं छोड़ देता तो येह उस पर ज़ियादा आसान होता। इन सिफ़ात के तकाज़े के मुताबिक़ अमल करने से उन्हें तक्विय्यत मिलती और उन के तकाज़े के ख़िलाफ़ अमल करने से येह कमज़ोर होती हैं (और मक्सद उन्हें कमज़ोर करना ही है) लिहाज़ा बुख़ल की तरफ़ ले जाने वाले उमूर की मुख़ालफ़त और रिया का सबब बनने वाले उमूर की इताअत का क्या फ़ाइदा ? इस तरह तो अदना मज़ीद कमज़ोर और मज़बूत मज़ीद क़वी हो जाएगा। अज़ क़रीब मोहलिकात के बाब में इन मअ़ानी के असरार बयान किये जाएंगे।

﴿4﴾..... चौथी जिम्मेदारी येह है कि जब मा'लूम हो कि अलानिया सदका देने से लोगों को तरगीब मिलेगी तो जाहिरी तौर पर सदका दे और अपने बातिन को रियाकारी के तरीके से इस तरह बचाए जो हम "किताबुर्रिया" में रिया के इलाज के सिलसिले में जिक्र करेंगे। **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाता है :

﴿٢٧١: البقرة: ٢٧١﴾ **اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَرِعَبًا ۖ**

तर्जमए कन्जुल ईमान : अगर ख़ैरात अलानिया दो तो वोह क्या ही अच्छी बात है।

सदका जाहिर कर के देने की सूरत :

येह वहां है जहां हाल जाहिर करने का तकाज़ा करता हो या तो दूसरों की इक्तिदा के लिये या इस लिये कि साइल लोगों के मजमअ में मांगे। लिहाज़ा रिया से डरते हुए जाहिरी तौर पर सदका देना तर्क न करे बल्कि उसे चाहिये कि सदका करे और जहां तक हो सके अपने बातिन को रिया से बचाए। नीज़ जाहिर कर के सदका देने में एहसान जताने और रियाकारी के इलावा तीसरी ममनूअ चीज़ भी है और वोह फ़कीर की पर्दादरी है क्यूंकि अक़षर फ़कीर को येह बात तक्लीफ़ देती है कि उसे मोहताज़ की सूरत में देखा जाए तो जिस ने लोगों के सामने सुवाल किया उस ने अपना पर्दा खुद फ़ाश किया। लिहाज़ा उसे अलानिया देने में येह तीसरी ख़राबी ममनूअ न रहेगी जिस तरह कि कोई शख्स पोशीदा फ़िस्क़ करता है तो उसे जाहिर करना ममनूअ है और इस की टोह में पड़ना और पीछे से उस का जिक्र करना भी ममनूअ है लेकिन जो अलानिया फ़िस्क़ का मुरतकिब होता है उस पर ह़द काइम करना उस की इशाअत ही तो है लेकिन इस का सबब वोह खुद है। हुज़ूर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के इस इरशादे गिरामी : **“مَنْ أَلْفَى جِلْبَابَ الْحَيَاءِ فَلَا غِيْبَةَ لَهُ”** जिस ने हया की चादर उतार डाली उस की कोई गीबत नहीं।⁽¹⁾ का येही मा'ना है।

इरशादे बारी तआला है :

وَأَنْفَقُوا مِمَّا رَزَقْتَهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً

﴿٢٩: فاطر: ٢٩﴾

तर्जमए कन्जुल ईमान : और हमारे दिये से कुछ हमारी राह में खर्च करते हैं पोशीदा और जाहिर।

अलानिया देना भी मुस्तहब है क्यूंकि इस में तरगीब का फ़ाइदा है। पस बन्दे को इस फ़ाइदे के वज़्न का इस के मुतअल्लिक़ वारिद मुमानअत के साथ गहरी नज़र से मुवाज़ना करना चाहिये। क्यूंकि येह बात हालात और लोगों के बदलने से मुख़्तलिफ़ होती है। बा'ज़ अवकात बा'ज़ लोगों के लिये अलानिया देना अफ़ज़ल होता है। जो ख़्वाहिशात से क़तए नज़र फ़वाइद और ख़राबियों को देखता है उस के लिये हर हाल में मुनासिब और बेहतर बात सामने आ जाती है।

①..... السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الشهادات، باب الرجل من اهل الفقه..... الخ، الحديث: ٢٠٩١، ج ١، ص ٥٥٣.

﴿5﴾.....पांचवीं जिम्मेदारी येह है कि एहसान जता कर और तकलीफ़ पहुंचा कर अपने सदके को फ़ासिद न करना ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَا تُطْلُوا صَدَقَتَكُمْ بِالسَّنِّ وَالْأَدَىٰ

(پ ۳، البقرة: ۲۶۴)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : अपने सदके बातिल न कर दो एहसान रख कर और ईजा दे कर ।

एहसान जताने और तकलीफ़ पहुंचाने की हकीकत में उ-लमा का इख़िलाफ़ है । चुनान्चे,

एहसान जताने और ईजा देने की हकीकत :

कहा गया है कि “एहसान जताने से मुराद येह है कि सदका दे कर उस का तज़क़िरा करे और ईजा देने से मुराद येह है कि देने के बा’द उसे ज़ाहिर करे ।”

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान पौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि “जिस ने एहसान जताया उस का सदका फ़ासिद हो गया ।” अर्ज़ की गई : “एहसान जताना क्या है ?” फ़रमाया : “उसे याद करे और लोगों को बताए ।”

एक कौल है कि “एहसान जताना येह है कि कुछ दे कर ख़िदमत लेना और अज़िय्यत पहुंचाना येह है कि ग़ुरबत का ता’ना देना ।”

बा’ज हज़रात ने फ़रमाया : “एहसान जताना येह है कि अपने अतिथ्ये के सबब उस पर तकब्बुर करे और अज़िय्यत पहुंचाना येह है कि सुवाल करने पर उसे झिड़के और बुरा भला कहे ।” और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एहसान जताने वाले का सदका क़बूल नहीं करता ।”⁽¹⁾

(हुज्जतुल इस्लाम हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं :) मेरे नज़दीक एहसान जताने की एक बुन्याद और जड़ है और वोह दिल के अहवाल और इस की सिफ़ात हैं फिर इस से ज़ाहिरी अहवाल ज़बान और आ’ज़ा पर मुरतब होते हैं ।

एहसान जताने की बुन्याद :

इस की बुन्याद येह है कि सदका देने वाला येह समझे कि मैं ने इस पर इन्आम और एहसान किया । जब कि हक़ येह है कि फ़कीर तो मोहसिन है कि उस ने इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का हक़ क़बूल किया जो इस के लिये त़हारत और जहन्नम से नजात का ज़रीआ है कि अगर वोह क़बूल न करता तो येह इस के सबब गिरवी रहता । लिहाज़ा इसे फ़कीर का एहसान मन्द होना चाहिये

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۷۸، مفهوماً۔

कि इस ने **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के हक़ को क़बूल करने के लिये अपनी हथेली को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का नाइब बनाया । जैसा कि रसूले अन्वर, शाफ़ेए महशर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया :
 “सदका साइल के हाथ में पहुंचने से पहले **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में पहुंच जाता है ।”⁽¹⁾

पस उसे येह यकीन रखना चाहिये कि साइल को देने में वोह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का हक़ उसे पेश कर रहा है और हाजत मन्द **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से अपना रिज़क़ वुसूल कर रहा है क्यूंकि हाजत मन्द को मिलने से पहले वोह **اَلलّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के पास पहुंच चुका होता है । बिल फ़र्ज़ अगर मालदार पर किसी का क़र्ज़ हो और क़र्ज़ ख़्वाह कह दे कि येह रक़म मेरे गुलाम या ख़ादिम को दे देना जो मेरे ज़ैरे कफ़ालत है तो मकरूज़ का येह ख़याल करना बे वुकूफ़ी व जहालत है कि उस ने क़र्ज़ वुसूल करने वाले पर एहसान किया है क्यूंकि एहसान करने वाला तो वोह है जो उस के रिज़क़ का कफ़ील है उस ने तो वोह चीज़ अदा की है जो अपनी पसन्दीदा चीज़ ख़रीदने के सबब उस पर लाज़िम होती थी । लिहाज़ा वोह अपने हक़ में कोशिश करने वाला है दूसरों पर उस का कोई एहसान नहीं ।

अल गरज़ जब वुजूबे ज़कात के मुतअल्लिक़ हमारे ज़िक़्र कर्दा तीन मअानी को वोह समझ ले या इन में से एक को समझ ले तो वोह सिर्फ़ अपनी ज़ात पर एहसान ख़याल करेगा या'नी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से इज़हार मद्बत के लिये माल को ख़र्च कर रहा है या बुख़्ल की बुराई से खुद को पाक कर रहा है या मज़ीद के हुसूल के लिये माली ने'मत पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का शुक्र अदा कर रहा है । बहर हाल जो भी सूरत हो येह उस का और फ़कीर का मुआमला नहीं कि वोह खुद को फ़कीर पर एहसान करने वाला समझ बैठे । बा'ज़ अवकात जहालत यूं भी ज़ाहिर होती है कि वोह खुद को फ़कीर पर एहसान करने वाला समझता है तो इस से अमल ज़ाहिर होता है जो एहसान जताने के मा'ना में ज़िक़्र किया गया या'नी वोह इसे बयान करता, इस का इज़हार करता और उस से बदला त़लब करता है कि वोह उस का शुक्र अदा करे और दुआ, ख़िदमत, ता'जीम व तौकीर, हुकूक की अदाएगी, मजालिस में मुक़द्दम करना और हर बात में उस की पैरवी करना वगैरा उमूर की ख़्वाहिश रखता है और येह तमाम बातें एहसान जताने का नतीजा हैं । एहसान जताने का बातिनी मा'ना वोह है जो अभी हम ने ज़िक़्र किया ।

अज़िय्यत पहुंचाने का ज़ाहिर :

जहां तक अज़िय्यत पहुंचाने का तअल्लुक़ है तो इस का ज़ाहिर तौबीख़, अ़ार दिलाना, सख़्त कलामी, तुर्शरूई, इसे ज़ाहिर कर के पर्दा दरी करना है और इसे हक़ीर जानने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े इख़्तियार करना है ।

अजिज्यत पहुंचाने का बातिन और इस की बुन्याद :

इस की बुन्याद दो बातें हैं : (1).....माल से अपना हाथ उठा लेने को बुरा जानना और इसे अपने नफ्स पर गिरां समझना क्योंकि यह बात मख्लूक के लिये बिल यकीन तंगी का बाइष बनती है। (2).....खुद को फ़कीर से बेहतर समझना और यह कि फ़कीर अपनी हाजत के सबब इस से घट्या है। यह दोनों बातें जहालत के बाइष पैदा होती हैं। मषलन किसी को माल देने को नापसन्द करना हमाक़त है क्योंकि जो एक हजार के बराबर चीज़ पर एक दिरहम खर्च करना नापसन्द करता है वोह बहुत बड़ा बेवुकूफ़ है और यह बात **اظهر من الشمس** (सूरज से ज़ियादा ज़ाहिर) है कि जो माल रिज़ाए इलाही पाने और आख़िरत में षवाब के हुसूल के लिये खर्च किया जाता है वोह उस माल से बेहतर है जो वोह खुद को बुख़ल की बुरी आदत से पाक करने या मज़ीद के हुसूल के लिये बतौर शुक्र खर्च किया जाता है। बहर हाल कोई सी भी सूरत हो नापसन्दीदगी की कोई वजह नहीं।

दूसरी बात (या'नी खुद को फ़कीर से बेहतर समझना) भी जहालत है क्योंकि अगर वोह ग़ना (मालदारी) पर फ़क्र की फ़ज़ीलत को जानता और ग़ना का ख़तरा जानता तो कभी फ़कीर को ह़कीर न समझता बल्कि इस से बरक़त लेता और इस का दर्जा पाने की तमन्ना करता। लिहाज़ा फ़ुक्रा मालदार नेक लोगों से **500** साल पहले जन्नत में जाएंगे। इसी लिये **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “रब्बे का'बा की क़सम ! वोह ख़सारा पाने वाले हैं।” हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने अर्ज़ की : “कौन ?” इरशाद फ़रमाया : “जो ज़ियादा मालदार हैं।”⁽¹⁾

मालदार शख्स मोहताज ख़ादिम है :

मालदार कैसे फ़कीर को ह़कीर समझता है। हालांकि **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ने इसे उस के लिये ज़रीअए तिजारत बना दिया क्योंकि मालदार अपनी कोशिश से माल कमाता और इस में ज़ियादती चाहता है और बक़दरे हाजत इस की हिफ़ाज़त की कोशिश करता है और इस पर लाज़िम किया गया है कि फ़कीर को उस की हाजत की मि़क़दार सिपुर्द कर दे और ज़ाइद माल अगर उस के लिये नुक्सान देह हो तो वोह इस से रोक ले। पस फ़कीर के रिज़क़ के लिये कोशिश करने में अमीर उस का ख़ादिम है। फिर लोगों के हुकूक की जिम्मेदारी, मशक्क़त बर्दाश्त करने और ज़ाइद माल की हिफ़ाज़त करने में वोह फ़कीर से जुदा है। यहां तक कि जब अमीर शख्स

①.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب تغلیظ عقوبة من لا یؤدی الزکاة، الحدیث: ۹۹۰، ص ۴۹۵۔

मर जाता है तो उस का माल उस के दुश्मन खाते हैं। पस इस सूरत में जब नापसन्दीदगी फ़रहत व मसरत में बदल जाती और खुशी हासिल होती है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इसे वाजिब की अदाएंगी की तौफ़ीक़ बख़्शी और फ़कीर माल क़बूल कर के इसे ज़िम्मेदारी से ओहदा बरआ करता है इस वक़्त अज़िय्यत पहुंचाने, झिड़कने और तुर्शरूई का ख़ातिमा हो जाता है, फिर येह बातें खुशी, ता'रीफ़ और एहसान क़बूल करने में बदल जाती हैं। अज़िय्यत पहुंचाने और एहसान जताने का मक्सद येही है (जो मैं ने ज़िक्र किया)।

सुवाल-जवाब :

सुवाल नम्बर 1 : अगर आप कहें कि ज़कात देने वाले का अपने आप को मोहसिन समझना बहुत बारीक मुआमला है। क्या कोई ऐसी अ़लामत है जिस के ज़रीए इस के दिल का इम्तिहान लिया जाए और मा'लूम हो जाए कि वोह खुद को एहसान जताने वाला नहीं समझता।

जवाब : जान लीजिये कि इस की एक बारीक वाज़ेह अ़लामत है और वोह येह है कि अगर फ़कीर उस का कोई नुक़सान कर दे या उस के दुश्मन की मदद करे तो देखे कि (दिल में) उस की नफ़रत व दूरी जो अब पैदा हुई क्या येह ज़कात देने से पहले की नफ़रत से ज़ियादा है? अगर ज़ियादा है तो इस का सदका एहसान जताने के शाइबे से ख़ाली नहीं क्यूंकि ज़कात के सबब इसे अब फ़कीर से जो उम्मीद है वोह पहले न थी।

सुवाल नम्बर 2 : अगर आप कहें कि येह भी बारीक मुआमला है और किसी का दिल इस से ख़ाली नहीं इस का इलाज क्या है?

जवाब : जान लीजिये कि इस के दो इलाज हैं : एक बातिनी और एक ज़ाहिरी।

बातिनी इलाज : येह है कि उन हक़ाइक़ (या'नी तीन मअानी) की पहचान हासिल करना जो हम ने वुजूब के समझने में ज़िक्र किये हैं और येह कि फ़कीर ज़कात क़बूल कर के उस के माल को पाक करने में उस पर एहसान करता है।

ज़ाहिरी इलाज : येह है कि वोह ऐसे आ'माल करे जो ममनून आदमी करता है क्यूंकि ज़ाहिरी अख़्लाक़ व अफ़़ाल का दिल पर अषर होता है जैसा कि इस किताब के आखिरी हिस्से में इस के असरार बयान किये जाएंगे इसी लिये बा'ज़ बुजुर्ग़ाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْبَرِيّين फ़कीर के पास सदका रख कर उस के सामने खड़े हो जाते और क़बूल करने की दरख़्वास्त करते हत्ता कि साइल की तरह खड़े हो जाते और डरते कि वोह रद्द न कर दे। बा'ज़ अपनी हथेली फैला देते ताकि फ़कीर इस की हथेली से ले ले और फ़कीर का हाथ ऊपर रहे। उम्मुल मोअमिनीन हज़रते

सय्यदतुना अइशा सिद्दीका और उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यदतुना उम्मे सलमा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) जब फ़कीर की तरफ़ कोई हदिय्या भेजतीं तो ले जाने वाले से कहतीं कि इस के दुआइय्या कलिमात को याद रखे फिर इस जैसे कलिमात के साथ जवाब देतीं और कहतीं : दुआ के बदले इस लिये दुआ दी है ताकि हमारा सदका महफूज़ रहे। अल ग़रज़ सालिहीन तो दुआ की तवक्कोअ भी नहीं रखते थे क्यूंकि येह बदले के मुशाबेह है और वोह दुआ के बदले दुआ दिया करते थे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यदुना इमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और आप के बेटे हज़रते सय्यदुना अब्दुल्लाह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ भी ऐसा ही किया करते थे। अस्हाबे कुलूब हज़रात अपने दिलों का इलाज इसी तरह किया करते थे।

ज़ाहिरी ए'तिबार से इस का इलाज येही आ'माल हैं जो अज़िज़ी व इन्किसारी और एहसान कबूल करने पर दलालत करते हैं बातिनी ए'तिबार से इस का इलाज उन चीज़ों की पहचान है जो हम ने ज़िक्र की हैं। येह अमल के ए'तिबार से है और वोह इल्म के ए'तिबार से जब कि दिल का इलाज इल्मो अमल दोनों के इम्तिज़ाज से होता है। ज़कात की मज़कूरा (बातिनी) शराइत नमाज़ में खुशूअ व खुजूअ के काइम मक़ाम हैं और येह दोनों बातें (या'नी नमाज़ व ज़कात की बातिनी शराइत कुरआन व हदीष से षाबित हैं)

(नमाज़ के मुतअल्लिक) इरशाद हुवा : “बन्दे के लिये नमाज़ में वोही कुछ है जो इसे समझ आए।”⁽¹⁾

(ज़कात के मुतअल्लिक) इरशाद हुवा : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ एहसान जताने वाले का सदका कबूल नहीं करता।”⁽²⁾

नीज़ इरशादे बारी तअ़ाला है :

لَا تَبْطُلُوا صَدَقَتَكُمْ بِالسَّنِ وَالْأَدَىٰ

(प ३, البقرة: २१२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने सदके बातिल

न कर दो एहसान रख कर और ईज़ा दे कर।

अलबत्ता फ़कीह का फ़तवा कि ज़कात अपने मक़ाम पर पहुंच गई और उस की ज़िम्मेदारी पूरी हो गई येह एक अलाहिदा बात है। हम ने “किताबुस्सलात” में इस मा'ना की तरफ़ इशारा कर दिया है।

①..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج २، ص १२९- १४०۔

②..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج २، ص १४८، مفهوماً۔

المعجم الكبير، الحديث: ६५२، ج ८، ص ११९۔

﴿6﴾.....छटी जिम्मेदारी येह है कि अपने अतिथ्ये को कम समझे क्यूंकि अगर वोह इसे बड़ा समझेगा तो खुदपसन्दी में मुब्तला होगा और खुदपसन्दी हलाक करने वाली है और इस से आ'माल जाएअ हो जाते हैं। चुनान्वे, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ اِذْ اَعْجَبَكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا
(پ ۱۰، التوبة: ۲۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कषरत पर इतरा गए थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई । (1)

कहा जाता है कि जब भी नेकी को छोटा समझा जाता है तो वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक अज़मत वाली हो जाती है और जब भी नाफ़रमानी को बड़ा समझा जाता है तो वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक छोटी हो जाती है ।

नेकी की तक्मील :

मन्कूल है कि नेकी तीन उमूर से मुकम्मल होती है : (1)....नेकी को छोटा समझना (2)....इसे करने में जल्दी करना और (3)....इसे छुपाना । नीज़ बड़ा समझना एहसान जताने और अज़ियत पहुंचाने के इलावा है क्यूंकि अगर कोई शख्स अपना माल मस्जिद या मुसाफ़िर खाने की ता'मीर में खर्च करे तो इस में बड़ा समझना मुमकिन है लेकिन एहसान जताने या अज़ियत पहुंचाने का इमकान नहीं बल्कि खुद पसन्दी और बड़ा समझना तमाम इबादात में जारी होते हैं ।

①सदरुल अफ़ाज़िल मुफ़सिरे शहीर हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी तफ़सीरे ख़ाज़िनुल इरफ़ान में इस आयत के तहत फ़रमाते हैं : मक्का से थोड़े ही रोज़ बा'द कबीला हवाज़न व षकीफ़ से जंग हुई । इस जंग में मुसलमानों की ता'दाद बहुत कपीर बारह हज़ार या इस से ज़ा़द थी और मुशरिकीन चार हज़ार थे जब दोनों लश्कर मुक़ाबिल हुए तो मुसलमानों में से किसी शख्स ने अपनी कषरत पर नज़र कर के येह कहा कि अब हम हरगिज़ मग़लूब न होंगे, येह कलिमा रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बहुत गिरां गुज़रा क्यूंकि हुज़ूर हर हाल में **اَللّٰهُ** तआला पर तवक्कुल फ़रमाते थे और ता'दाद की किल्लत व कषरत पर नज़र न रखते थे । जंग शुरू हुई और क़िताले शदीद हुवा मुशरिकीन भागे और मुसलमान माले ग़नीमत लेने में मसरूफ़ हो गए तो भागे हुए लश्कर ने इस को ग़नीमत समझा और तीरों की बारिश शुरू कर दी और तीर अन्दाज़ी में बहुत महारत रखते थे । नतीजा येह हुवा कि इस हंगामे में मुसलमानों के क़दम उखड़ गए, लश्कर भाग पड़ा और सय्यिदे आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास सिवाए हुज़ूर के चचा हज़रते अब्बास और आप के इब्ने उम्म अबू सुफ़यान बिन हारिष के और कोई बाक़ी न रहा । हुज़ूर ने उस वक़्त अपनी सुवारी को कुफ़फ़ार की तरफ़ आगे बढ़ाया और हज़रते अब्बास को हुक्म दिया कि वोह बुलन्द आवाज़ से अपने अस्हाब को पुकारें, इन के पुकारने से वोह लोग लब्बैक लब्बैक कहते हुए पलट आए और कुफ़फ़ार से जंग शुरू हो गई जब लड़ाई खूब गर्म हुई हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक में संगरेज़े ले कर कुफ़फ़ार के मुंहों पर मारे और फ़रमाया : रब्बे मुहम्मद की क़सम ! भाग निकले, संगरेज़ों का मारना था कि कुफ़फ़ार भाग पड़े और रसूले करीम صَلَّय اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की ग़नीमतें मुसलमानों को तक्सीम फ़रमा दीं ।

बुख़ल और खुद पसन्दी का इलाज :

इस का इलाज इल्मो अमल के ज़रीए ही मुमकिन है। इल्म का मतलब येह है कि वोह येह समझे कि दसवां या चालीसवां हिस्सा कषीर में से कलील है और उस ने खर्च करने में हल्के दर्जे पर क़नाअत की है जैसा कि हम ने वुजूब के बाब में ज़िक्र किया है। लिहाज़ा मुनासिब येही है कि वोह इस पर इक्तिफ़ा करने में हया करे, वोह कैसे इसे बड़ा समझता है अगर्चे बुलन्द दर्जे तक पहुंच जाए और अपना तमाम या अकषर माल खर्च कर दे। उसे गौर करना चाहिये कि येह माल उस के पास कहां से आया और वोह कहां खर्च कर रहा है ? येह माल **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का है और उस का एहसान है कि उस ने उसे माल अता फ़रमाया और खर्च करने की तौफ़ीक़ बख़्शी। लिहाज़ा **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के हक़ में इसे बड़ा न समझे जो खुद **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का हक़ है। उस का मक़ाम व मर्तबा तो येह तकाज़ा करता है कि वोह आख़िरत को पेशे नज़र रखे और षवाब के लिये खर्च करे, नीज़ इस माल के खर्च करने को क्यूं बड़ा समझता है जिस के बदले उसे दुगना (अत्रो षवाब) मिलेगा ?

अमल से मुराद येह है कि वोह अपने बुख़ल की वजह से बाक़ी माल **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से रोकने के सबब शर्मसार हो। पस माल देते वक़्त उस की अज़िज़ी व इन्क़िसारी की कैफ़ियत होनी चाहिये बिल्कुल ऐसे ही जैसे कोई शख़्स अमानत वापस करते हुए बा'ज माल रोक लेता है क्यूंकि तमाम माल **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का है और तमाम का खर्च करना उस के नज़दीक पसन्दीदा है लेकिन उस ने तमाम माल खर्च करने का हुक्म इस लिये नहीं दिया कि फ़ितरती बुख़ल के सबब येह उस पर गिरां गुज़रता है। जैसा कि कुरआने मजीद में इरशाद होता है :

(پ ۲۶، محمد: ۳۷) **فِيْخِفُوْكُمْ تَبْخُلُوْا**

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़ियादा तलब करे तुम बुख़ल करोगे।

﴿7﴾.....सातवीं ज़िम्मेदारी येह है कि अपने माल में से उम्दा, पसन्दीदा और पाक व साफ़ माल दे क्यूंकि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** पाक है और पाक माल को ही पसन्द फ़रमाता है। अगर माल शुबे से हासिल हुवा तो मुमकिन है कि वोह इस की मिल्क ही न हो लिहाज़ा अपने मौक़अ पर न होगा।

खुश बख़्त शख़्स :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** से मरवी है कि “उस बन्दे के लिये खुश ख़बरी है जो उस माल में से खर्च करता है जो उस ने बिग़ैर किसी गुनाह के कमाया।”⁽¹⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الزكاة، فصل في كراهية امساك.....الخ، الحديث: ۳۳۸۸، ج ۳، ص ۲۲۵، مفهوماً۔

ज़कात में घटिया माल देना येह बे अदबी है क्यूंकि अगर उस ने बेहतरीन माल अपने लिये या घर वालों या गुलाम के लिये रखा है तो उस ने ग़ैर को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर तरजीह दी। अगर येही सुलूक वोह अपने मेहमान के साथ करे और उस के सामने मा'मूली खाना रखे तो उस का दिल अ़दावत से भर जाए। येह इस सूरत में है कि जब उस की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ हो और अगर उस की नज़र अपनी ज़ात और आख़िरत के षवाब की तरफ़ हो तो वोह शख्स अक्लमन्द नहीं जो ग़ैर को खुद पर तरजीह देता है हालांकि उस का माल वोही है जो उस ने सदका किया और वोह बाकी रहेगा या खा कर फ़ना कर दिया और जो वोह खाता है वोह तो फ़ौरी ज़रूरत को पूरा करता है। पस अक्लमन्दी येह नहीं कि वोह फ़ौरी ज़रूरत पर नज़र रखे और जम्अ करना छोड़ दे।

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ
وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَلَا تَيَسَّبُوا
الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخْذِيهِ إِلَّا
أَنْ تُغْضُوا فِئَةً ۖ

(پ ۳، البقرة: ۲۶۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी पाक कमाइयों से कुछ दो और उस में से जो हम ने तुम्हारे लिये ज़मीन से निकाला और खास नाक़िस का इरादा न करो कि दो तो उस में से और तुम्हें मिले तो न लोगे जब तक इस में चश्म पोशी न करो।

या'नी तुम नापसन्द करते और हया करते हुए लेते हो, चश्म पोशी का येही मतलब है। लिहाज़ा अपने खब **عَزَّوَجَلَّ** के लिये भी ऐसी बात को तरजीह न दो। हदीषे पाक में है कि “एक दिरहम हज़ार दराहिम पर सबक़त ले गया।”⁽¹⁾ इस की सूरत येह है कि इन्सान अपने हलाल और उमदा माल में से एक दिरहम निकाले और इसे रिज़ामन्दी और खुशी के साथ अदा करे और कभी अपने नापसन्दीदा माल में से एक लाख दिरहम खर्च कर देता है तो येह इस बात पर दलालत करता है कि वोह अपनी पसन्दीदा चीज़ के हवाले से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को तरजीह नहीं देता। इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन लोगों की मज़म्मत फ़रमाई जो नापसन्दीदा चीज़ों को

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के नाम पर देते हैं। चुनान्चे,

وَيَجْعَلُونَ لِلَّهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَوَصَّفَ الْبُذُنُ أَنْ لَكُمْ الْحَقُّ لَا (پ ۱۳، النحل: ۶۲) : इरशादे बारी तअला है :

बा'ज कुरा हजरात ने हर्फे नफी "ला" पर वक्फ किया इस तरह उन को झुटलाया फिर शुरू करते हुए यूँ पढ़ा : "جَرَمَ أَنْ لَكُمْ النَّاسُ (پ ۱۳، النحل: ۶۲)" जर्म का मा'ना कसब है या'नी अपना नापसन्दीदा माल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये खर्च करने के सबब वोह जहन्नमी हुए। (आम किराअत **لاجرم** के साथ है या'नी उन के लिये जहन्नम की आग है)

﴿8﴾....आठवीं जिम्मेदारी येह है कि अपने सदके के लिये ऐसे लोगों को तलाश करे जिन के जरीए सदके को पाकीजगी हासिल हो जाए। मसारिफे जकात में से आम लोगों पर इक्तिफा न करे बल्कि इन में से भी उसे दे जिस में छे सिफात पाई जाएं और इन सिफात का खास खयाल रखे वोह येह हैं :

जकात मुत्तकी व परहेजगार हाजत मन्द को दो :

(1).....मुत्तकी लोगों को तलाश करे जो दुन्या से कनारा कश हों और खुद को आखिरत की तिजारत के लिये खास कर लिया हो। चुनान्चे, मरवी है कि हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : "तू सिर्फ मुत्तकी का खाना खा और तेरा खाना भी मुत्तकी ही खाए।" (1) येह इस लिये फरमाया कि मुत्तकी शख्स खाने के जरीए तक्वा पर मदद हासिल करता है तो इस तरह तुम उस की मदद कर के उस के साथ इबादत में शरीक हो जाओगे।

एक रिवायत में है कि "अपना खाना मुत्तकियों और नेक मोअमिनीन को खिलाओ।" (2)

एक रिवायत में येह अल्फाज हैं : "अपने खाने के साथ उस की मेहमान नवाजी करो जिस से तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये महब्बत करते हो।" (3)

औलिया में से एक वली :

एक अलिम साहिब के बारे में मन्कूल है कि वोह खाना वगैरा सदका करने में फुकरा सूफियाए उज्जाम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام को दीगर फुकरा पर तरजीह देते थे। उन से कहा गया कि "अगर आप तमाम फुकरा के साथ उम्मी तौर पर नेकी करें तो अफज़ल है।" फरमाया : "नहीं, येह (या'नी फुकरा सूफिया) ऐसे लोग हैं जिन्होंने ने अपनी हिम्मत व इरादे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ लगा रखा है और जब येह फाका कशी का शिकार होते हैं तो उन की तवज्जोह मुन्तशिर हो

1.....سنن ابی داود، کتاب الادب، باب من يؤمر ان يجالس، الحديث: ۴۸۳۲، ج ۴، ص ۳۲۱، باختصار۔

2.....الزهد لابن المبارك، باب مجاء فی تخويف عواقب الذنوب، الحديث: ۴۳، ص ۲۴۔

3.....الزهد لابن المبارك، باب جليس الصديق وغير ذلك، الحديث: ۳۶۲، ص ۱۲۴۔

जाती है। पस मैं एक शख्स की तवज्जोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ लगा दूं तो मुझे येह उस से ज़ियादा पसन्द है कि उन हजार आदमियों को खाना खिलाऊं जिन का मक्सद दुन्या (का हुसूल) है।” जब येह बात सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي से ज़िक्र की गई तो उन्होंने ने उस की तहसीन फ़रमाई और फ़रमाया : “येह शख्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के औलिया में से एक वली है मैं ने आज तक ऐसा उम्दा कलाम नहीं सुना।” कुछ अर्से बा’द उस के हालात ख़राब हो गए और उस ने दुकान छोड़ने का इरादा कर लिया तो हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي ने उस की तरफ़ माल भेजा और फ़रमाया : “इसे अपने माल में शामिल कर लो और दुकान न छोड़ो बेशक तुम जैसे लोगों को तिजारत नुक़सान नहीं पहुंचाती।” येह शख्स सब्जी फ़रोश था फुकरा को जो कुछ देता उस की कीमत नहीं लेता था।

अपने माल से उ-लमा की मदद करने का ज़ब्बा :

(2).....जिसे ज़कात दें वोह ख़ास अहले इल्म से हो क्यूंकि येह इल्म पर उस की मदद है और इल्म सब से मुअज़्ज़ज़ इबादत है जब कि निय्यत सहीह हो। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अपना सदा ख़ुसूसन अहले इल्म में तक्सीम फ़रमाते थे। इन से अर्ज की गई : “अगर आप तमाम लोगों में तक्सीम किया करें तो ज़ियादा बेहतर है ?” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं मक़ामे नबुव्वत के बा’द उ-लमा के मक़ाम से बढ़ कर किसी के मक़ाम को अफ़ज़ल नहीं समझता। जब इन में से किसी का दिल अपनी हाज़त में मशगूल होता है तो वोह इल्म के लिये फ़राग़त नहीं पाता और इल्म हासिल करने की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता लिहाज़ा ऐसे लोगों को हुसूले इल्म के लिये फ़ारिग़ करना अफ़ज़ल है।”

जकात लेने वाले को कैसा होना चाहिये ?

(3).....जकात लेने वाला तक्वा और इल्मे तौहीद में सच्चा हो। उस की तौहीद येह है कि जब वोह कोई चीज़ ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द और उस का शुक्र बजा लाए और यकीन रखे कि येह ने’मत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से है, किसी सबब की तरफ़ मुतवज्जेह न हो तो येह शख्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का सब से ज़ियादा शुक्र गुज़ार बन्दा है या’नी उस का यकीन है कि तमाम ने’मतें उसी खुदाए वाहिद की तरफ़ से हैं।

हज़रते सय्यिदुना लुक़मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने बेटे को वसिय्यत फ़रमाई कि अपने और रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दरमियान किसी को इन्आम देने वाला न समझना, किसी दूसरे की तरफ़ से मिलने वाली ने’मत को खुद पर कर्ज समझना, जिस ने ग़ैरे खुदा का शुक्रिया अदा किया गोया

उस ने इन्आम देने वाले को नहीं पहचाना और उसे यकीन नहीं कि जो वासिता होता है वोह मग़लूब और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से मुसख़्बर होता है क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अमल की दा'वत देने वाले उमूर उस पर मुसल्लत किये और उस के लिये अस्बाब को आसान कर दिया लिहाज़ा वोह इस तरह दे रहा है कि वोह बारगाहे खुदावन्दी में मग़लूब है। अगर वोह इसे छोड़ने का इरादा भी करे तो ऐसा नहीं कर सकता क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस के दिल में येह बात डाल दी है कि इस अमल में उस के दीन व दुन्या की बेहतरी है। नेकी पर उभारने वाली बात जितनी ज़ियादा मज़बूत होगी इरादा भी उतना ही ज़ियादा पुख़्ता होगा और ताक़त उभरेगी, नीज़ बन्दा तरगीब देने वाली उस मज़बूत बात की मुख़ालफ़त नहीं कर सकता जिस में किसी किस्म का तरहुद नहीं। इन उमूरे तरगीबिया को पैदा करने, इन्हें हरकत देने, इन से कमज़ोरी और तरहुद को दूर करने और इन उमूर के तकाज़े के मुताबिक़ कुदरत को मुसख़्बर करने वाली ज़ात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की है और जिसे ऐसा यकीन हासिल हो जाए उस की नज़र मुसबिबुल अस्बाब की तरफ़ होती है। इस किस्म के बन्दे का यकीन दूसरों की तरफ़ से मिलने वाली ता'रीफ़ और शुक्रिया वगैरा से ज़ियादा मुफ़ीद है क्योंकि वोह तो महज़ ज़बान की हरकत है जिस का नफ़अ आम तौर पर कम होता है और इस किस्म के मुवहिहद बन्दे की मदद जाएअ नहीं होती। नीज़ वोह शख्स जो ज़कात मिलने पर देने वाले की ता'रीफ़ करता और भलाई की दुआ देता है तो न देने पर उस की मज़म्मत भी करेगा और ईज़ा पहुंचने पर बद दुआ देगा और उस का हाल एक जैसा नहीं रहेगा।

हर हाल में नज़र मुसबिबुल अस्बाब पर हो :

मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक हाजत मन्द की तरफ़ सदका भेजा और ले जाने वाले से इरशाद फ़रमाया : “जो कुछ वोह कहे उसे याद रखना।” जब उस ने सदका वुसूल किया तो कहा : “तमाम खूबियां उस ज़ात के लिये हैं जो अपना ज़िक्र करने वालों को भूलता नहीं और अपना शुक्र अदा करने वाले को जाएअ नहीं करता।” फिर कहा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने फुलां को नहीं भुलाया पस तू उसे ऐसा बना दे कि वोह तुझे न भुलाए।” जब आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इस की ख़बर दी गई तो आप खुश हुए और इरशाद फ़रमाया : “मुझे मा'लूम था कि वोह येही कहेगा।”⁽¹⁾ पस ग़ौर कीजिये कि कैसे उस ने अपनी तवज्जोह ज़ाते बारी तआला पर महदूद रखी।

मरवी है कि हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने एक शख्स से इरशाद फ़रमाया : “तौबा कर ।” उस ने कहा : “मैं **अब्बाह** वाहिद की तरफ़ तौबा करता हूं, मुहम्मद ﷺ की तरफ़ तौबा नहीं करता ।” तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “इस ने हक़दार के हक़ को पहचान लिया ।”⁽¹⁾

जब वाकिअए इफ़क़ में उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की बराअत नाज़िल हुई तो अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने उन से फ़रमाया : “उठो और रसूलुल्लाह ﷺ के सरे अन्वर को बोसा दो ।” तो उन्होंने ने कहा : “**अब्बाह** غَرْوَجَل की क़सम ! मैं ऐसा नहीं करूंगी और **अब्बाह** के सिवा किसी की हम्द नहीं करूंगी ।” तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ अबू बक्र ! इसे छोड़ दो ।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से कहा : “मैं तो **अब्बाह** का शुक्र करती हूं न कि आप दोनों का ।” तो हुजूर नबिय्ये करीम ﷺ ने इस पर इन्कार न फ़रमाया⁽³⁾ हालांकि इन तक बराअत की ख़बर रसूलुल्लाह ﷺ ही की ज़बाने मुबारक से पहुंची थी ।

कुप्फ़ार का तरीक़ा :

अश्या का ग़ैरे खुदा की तरफ़ से होने का नज़रिया रखना कुप्फ़ार का तरीक़ा है । चुनान्वे, **अब्बाह** इरशाद फ़रमाता है :

وَإِذَا ذَكَرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ
الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذَكَرَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ⑤

(प २२, الزمر: २५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब एक **अब्बाह** का ज़िक्र किया जाता है दिल सिमट जाते हैं उन के जो आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और जब इस के सिवा औरों का ज़िक्र होता है ज़भी वोह खुशियां मनाते हैं ।

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند المكين، حديث الاسود بن سريع، الحديث: ١٥٥٨٤، ج ٥، ص ٣٠٣۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی قبلة الرجل ولده، الحديث: ٥٢١٩، ج ٢، ص ٥٥٥۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٨٣۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٨٣، بتغییر۔

المعجم الكبير، الحديث: ١٢٢، ج ٢٣، ص ٢٢، باختصار۔

जिस का बातिन वासितों को महज वासिता नहीं समझता तो उस का बातिन पोशीदा शिर्क से महफूज नहीं रह सकता। लिहाजा वहदानियत को शिर्क की मैल और इस के शुबहात से पाक करने के मुआमले में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से डरते रहना चाहिये।

सफेद पोश मुस्तहिक् को सदका देने का षवाब :

(4).....जकात लेने वाला अपनी जरूरत को छुपाता हो, न तो इस का चर्चा करे और न ही शिकवा करे या अहले मुरव्वत में से हो कि जिस की ने'मत चली गई लेकिन आदत बाकी रही कि हुस्नो खूबी की चादर ओढ़े रखता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (ऐसे लोगों के अवसाफ़ बयान करते हुए) इरशाद फ़रमाता है :

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ
تَعْرِفُهُمْ بِسَيِّئِهِمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِحْقَاقًا
(ب ३, البقرة: २८३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : नादान उन्हें तवंगर समझे बचने के सबब तो उन्हें उन की सूरत से पहचान लेगा, लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़ गिड़ाना पड़े।

या'नी वोह सुवाल करने में हद से नहीं बढ़ते क्यूंकि वोह अपने यकीन के सबब ग़नी और अपने सब्र की वजह से मुअज़्ज़ हैं। लिहाजा हर महल्ले में ऐसे दीनदार लोगों को तलाश किया जाए और नेक लोगों के अन्दरूनी हालात मा'लूम करने की कोशिश की जाए क्यूंकि उन्हें सदका देने का षवाब उन लोगों की ब निस्बत कई गुना ज़ियादा है जो ज़ाहिरन मांगते हैं।

(5)....जकात लेने वाला शख्स इयालदार हो या किसी मरज या किसी और वजह से कमाने से रुका हुआ हो, इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस इरशादे पाक का मफ़हूम पाया जाता है :

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
(ب ३, البقرة: २८३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन फ़कीरों के लिये जो राहे खुदा में रोके गए।

या'नी किसी बीमारी या मईशत की तंगी या इस्लाहे क़ल्ब के सबब वोह ज़मीन में चलने की ताक़त नहीं रखते, यूं येह लोग आख़िरत के रास्ते से रोक दिये गए हैं क्यूंकि इन के पर कटे हुए और पाउं रुके हुए हैं। इन्हीं अस्बाब की बदौलत अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अहले बैते किराम को बकरियों का एक रेवड़ देते थे जिस में दस या इस से ज़ाइद बकरियां होती थीं।⁽¹⁾

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ किसी शख्स को उस के अहलो इयाल के हिसाब से माल अता फ़रमाते थे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से जुहदुल बला के मुतअल्लिक पूछा गया तो फ़रमाया : “इयाल की कषरत और माल की किल्लत ।”⁽¹⁾

(6).....सदका लेने वाला उस का क़रीबी रिश्तेदार हो तो येह सदका भी होगा और सिलए रहूमी भी और सिलए रहूमी में बे शुमार षवाब है। चुनान्चे,

एक गुलाम आजाद करने से ज़ियादा महबूब :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم फ़रमाते हैं : “मुझे अपने भाई पर एक दिरहम सदका करना किसी और पर बीस दिरहम सदका करने से ज़ियादा पसन्द है। अपने भाई पर बीस दिरहम सदका करना किसी और पर 100 दिरहम सदका करने से ज़ियादा पसन्द है। अपने भाई पर 100 दिरहम खर्च करना एक गुलाम आजाद करने से ज़ियादा पसन्द है।”

जिस तरह क़रीबी रिश्तेदार अजनबी लोगों पर मुक़द्दम है इसी तरह दोस्त और दीनी भाई भी सदकात के हवाले से दूसरों पर मुक़द्दम हैं। इन बारीक बातों का लिहाज़ रखना चाहिये। येह मतलूबा सिफ़ात हैं और हर सिफ़त में कुछ दर्जात हैं पस आ'ला दर्जे की जुस्तजू होनी चाहिये। अगर येह तमाम सिफ़ात इकट्ठी हासिल हो जाएं तो येह बहुत बड़ा ज़ख़ीरा और बहुत बड़ी ग़नीमत है। जब भी कोई इस मुआमले में कोशिश करे और मक्सद को पा ले तो उस के लिये दो अज़्र हैं और अगर ख़ता करे तो एक अज़्र है। दो अज़्रों में से फ़िलहाल एक तो येह मिलता है कि उस का नफ़्स बुख़ल की सिफ़त से पाक हो जाता, दिल में महबूबते इलाही और इताअत में कोशिश पुख़्ता हो जाती है। येही सिफ़ात उस के दिल का तक्वा हैं जो उसे मुलाकाते खुदावन्दी का शौक़ दिलाती हैं। दूसरा अज़्र ज़कात लेने वाले की दुआ और तवज्जोह का हासिल होना है क्यूंकि नेक लोगों के दिलों के लिये मौजूदा हालात और आयन्दा के लिये कुछ अलामात होती हैं। लिहाज़ा अगर (ज़कात देने में) सहीह नतीजा निकले तो दो अज़्र हासिल होंगे और अगर ख़ता हो जाए तो पहला फ़ाइदा हासिल होगा दूसरा नहीं। इसी वजह से इजतिहाद में दुरुस्ती तक पहुंचने वाले को इस सूरत में भी और दीगर मक़ामात पर भी दो गुना षवाब मिलता है और **اَبْلَاهُ** غَرْوَجَل बेहतर जानता है।

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج 2، ص 185 - فيه ذكر "ابن عمر"۔

तीसरी फ़स्ल : ज़कात लेने वाला, मुस्तहिक होने के अस्बाब और कबले के बजाइफ़ मुस्तहिके ज़कात होने के अस्बाब :

जान लीजिये ! ज़कात का मुस्तहिक वोह आज़ाद मुसलमान है जो हाशिमि या मुत्तलिबी न हो और कुरआने पाक में मज़कूर आठ किस्म की सिफ़ात में से किसी सिफ़त से मुत्तसिफ़ हो । किसी काफ़िर, गुलाम, हाशिमि, मुत्तलिबी को ज़कात देना जाइज़ नहीं । बच्चे और पागल को ज़कात देना जाइज़ है जब कि इन का वली क़ब्ज़ा करे । हम यहां मसारिफ़े ज़कात की आठ किस्मों को ज़िक्र करेंगे ।

❶.....**फ़ुक़रा** : फ़कीर⁽¹⁾ वोह शख्स है जिस के पास न तो माल हो और न ही वोह कमाने पर क़ादिर हो अगर उस के पास एक दिन की खुराक और फ़िलहाल पहनने के कपड़े हों तो वोह फ़कीर नहीं बल्कि मिस्कीन है । अगर उस के पास निस्फ़ दिन का रिज़्क है तो वोह फ़कीर है । अगर उस के पास क़मीस हो लेकिन रूमाल, मोज़ा और शलवार न हो और क़मीस की इतनी कीमत नहीं जो फ़ुक़रा के हाल के मुवाफ़ि़क़ इन तमाम चीज़ों की कीमत को पहुंच सके तो वोह भी फ़कीर है क्यूंकि फ़िल वक़्त उस के पास वोह तमाम चीज़ें नहीं जिन का वोह मोहताज और जिन से वोह अज़िज़ है । लिहाज़ा फ़कीर में येह शर्त नहीं रखनी चाहिये कि उस के पास सतर छुपाने के इलावा लिबास हो क्यूंकि येह बहुत ज़ियादा है और अ़म तौर पर ऐसा आदमी नायाब होता है ।

अगर उसे मांगने की आदत हो तो वोह फ़ुक़रा के जुमरे से ख़ारिज नहीं होगा और मांगने को कसब क़रार नहीं दिया जाएगा अलबत्ता अगर वोह कमाने पर क़ादिर हो तो फ़ुक़रा की सिफ़त से निकल जाएगा ।⁽²⁾

- ❶मसारिफ़े ज़कात की तफ़सील जानने के लिये बहारे शरीअत जिल्द अब्वल से हिस्सा पन्जुम का मुतालआ करें ।
- ❷**सुवाल** : भीक मांगना कैसा ? और भीक मांगने वालों को ज़कात देने से ज़कात अदा होगी या नहीं ? “**फ़तावा फैज़रूसूल, जि. 1 स. 505**” पर फ़कीहे मिल्लत हज़रते अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मज़कूरा सुवाल के जवाब में फ़रमाते हैं : “भीक मांगने वाले तीन तरह के होते हैं । एक मालदार जैसे बहुत से क़ौम के फ़कीर, जोगी और साधू । इन्हें भीक मांगना ह़राम और इन्हें देना ह़राम । ऐसे लोगों को देने से ज़कात नहीं अदा हो सकती । दूसरे वोह जो ह़कीक़त में फ़कीर हैं या’नी निसाब के मालिक नहीं हैं मगर मज़बूत व तन्दुरुस्त हैं, कमाने की कुव्वत रखते हैं और भीक मांगना किसी ऐसी ज़रूरत के लिये नहीं जो इन की ताक़त से बाहर हो । मज़दूरी वगैरा कोई काम नहीं करना चाहते मुफ़्त खाना खाने की आदत पड़ी है जिस के सबब भीक मांगते फिरते हैं । ऐसे लोगों को भीक मांगना ह़राम है और.....

﴿2﴾....मसाकीन :⁽¹⁾ मिस्कीन वोह है जिस की आमदनी से इस के अखराजात पूरे न होते हों। हो सकता है कि वोह हजार दिरहम का मालिक होने के बा वुजूद मिस्कीन हो और बा'ज अवकात वोह सिर्फ कुलहाड़ी और रस्सी का मालिक होता है लेकिन अमीर होता है। छोटा सा मकान और वोह कपड़ा जिस से वोह बकदरे जरूरत सतर ढांपता है उसे मसाकीन की सिफत से खारिज नहीं करता, इसी तरह घर का सामान है या'नी जिस की इसे जरूरत होती है और जो सामान उस के हाल के मुताबिक हो, इसी तरह कुतुबे फिकह उसे मिस्कीन होने से खारिज नहीं कर सकती कि जब वोह सिर्फ कुतुब का मालिक हो तो उस पर सदकए फित्र वाजिब नहीं और किताबों का हुक्म कपड़ों और घरेलू सामान की तरह है क्योंकि उसे इन चीजों की जरूरत होती है। लेकिन उसे चाहिये कि किताब की जरूरत के हवाले से मोहतात रहे।

किताब की जरूरत के मकासिद :

सिर्फ तीन मकासिद के लिये किताब की जरूरत होती है :

(1).....ता'लीम (2)...फाइदा हासिल करना (3).....मुतालाए के जरीए सुरूर का हुसूल।

तफसील : जहां तक **सुरूर** के हुसूल का तअल्लुक है तो इस का ए'तिबार नहीं जैसे अशआर की कुतुब और तारीखी कुतुब और इस जैसी दीगर कुतुब जो आखिरत में नफअ नहीं देती, दुन्या में भी महज लुत्फो सुरूर देती और मानूस करती हैं। ऐसी किताबों को कफ़रों और सदकए फित्र (की अदाएगी) के लिये बेचा जाए और ऐसे शख्स को मिस्कीन नहीं कह सकते।

जहां तक **ता'लीमी** जरूरत का तअल्लुक है तो अगर ता'लीम कमाने के लिये हो जैसे तनख्वाह पर इल्मो अदब सिखाने वाले और मुदर्रीसीन वगैरा तो इन के लिये येह कुतुबे आला हैं। इन्हें सदकए फित्र के लिये नहीं बेच सकते येह ऐसे ही हैं जैसे दरजी और दीगर पेशों के लोगों के औजार, अगर वोह फर्जे किफ़ाय़ा को काइम रखने के लिये पढ़ाता है तो उस की किताबें न बेची जाएं और इस से उस के मिस्कीन होने की नफ़ी न होगी क्योंकि येह अहम हाजत है।

कुतुब से **फाइदा** हासिल करना और सीखना जैसे तिब्ब की किताबें इस लिये इकठ्ठी करना ताकि इन के जरीए अपना इलाज कर सके या वा'ज की किताबें रखना ताकि इन का मुतालाआ कर के वा'ज करे, अगर शहर में डॉक्टर और वाइज मौजूद हैं तो इसे इन किताबों की जरूरत नहीं और अगर मौजूद नहीं तो फिर येह इन कुतुब का मोहताज है। फिर कभी एक मुद्त तक इन्सान को किसी

①....अहनाफ़ के नज़दीक : मिस्कीन वोह है कि जिस के पास कुछ न हो यहां तक कि खाने और बदन छुपाने के लिये इस का मोहताज है कि लोगों से सुवाल करे और उसे सुवाल हलाल है, फ़कीर को सुवाल नाजाइज़ कि जिस के पास खाने और बदन छुपाने को हो उसे बिगैर जरूरत व मजबूरी सुवाल हराम है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 924)

किताब की ज़रूरत नहीं पड़ती तो उसे मुहते ज़रूरत को देखना चाहिये। यूँ कहना ज़ियादा मुनासिब है कि साल भर तक जिस किताब की ज़रूरत नहीं पड़ती वोह ज़रूरत में दाखिल नहीं।

जो शख्स एक दिन के खाने से ज़ाईद चीज़ का मालिक हो तो उस पर सदक़ए फ़ित्र वाजिब है। जब हम ने खुराक के सिलसिले में एक दिन का तख्मीना लगाया तो घर के सामान और बदन के कपड़ों की हाजत के सिलसिले में एक साल का अन्दाज़ा होना चाहिये। गर्मियों के कपड़े सर्दियों में नहीं बेचे जा सकते और किताबें कपड़ों और घरेलू सामान के ज़ियादा मुशाबेह हैं और बा'ज अवकात बन्दे के पास एक किताब के दो नुस्खे होते हैं तो इन में से एक की हाजत नहीं होती और अगर वोह कहे कि एक नुस्खा ज़ियादा सहीह है और दूसरा ज़ियादा उम्दा और मुझे दोनों की हाजत है तो हम कहेंगे कि अस्सह पर इक्तिफ़ा करो, अहसन को बेच दो और ऐशो इशरत छोड़ दो। अगर एक ही इल्म से मुतअल्लिक दो नुस्खे हैं जिन में से एक किताब बड़ी और दूसरी मुख्तसर है तो अगर उस का मक्सद इस्तिफ़ादा हो तो वोह बड़ी किताब पर इक्तिफ़ा करे और अगर पढ़ाने का इरादा है तो उसे दोनों की ज़रूरत पड़ेगी क्योंकि इन में से हर एक में जो फ़ाइदा है वोह दूसरी में नहीं।

इस किस्म की बेशुमार मिषालें हैं, फ़न्ने फ़िक़ह में इन के मुतअल्लिक बहष नहीं की गई। हम ने इसे यहां इस लिये बयान किया कि इस में आ़म तौर पर लोग मुव्तला हैं नीज़ इस बात का लिहाज़ दूसरी चीज़ों में भी करें क्योंकि इन सब सूरतों का ज़िक्र करना मुमकिन नहीं कि हर एक चीज़ में येह नज़र हो सकती है मषलन घर का सामान, इस की मिक्दार, ता'दाद और अक्साम, बदन के कपड़े और मकान की वुस्अत व तंगी को देखा जाता है। इन उमूर के लिये कोई हुदूद मुकर्रर नहीं बल्कि मुज्ताहिद अपनी राए से इजतिहाद करता और राए के मुताबिक हद बन्दी करता है और यूँ शुबहात के ख़तरे में दाखिल हो जाता है जब कि परहेज़गार आदमी एहतियात से काम लेता और शक वाली बात को छोड़ कर ग़ैरे मशकूक को इख़्तियार करता है और जो दर्जात दरमियान में हैं और दोनों तरफ़ के ज़ाहिरी उमूर के दरमियान हैं वोह ग़ैर वाजेह और बहुत ज़ियादा हैं और इन से नजात का तरीक़ा येही है कि एहतियात से काम लिया जाए और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

﴿3﴾.....**अमिलीन** :⁽¹⁾ येह वोह लोग हैं जो कोशिश कर के ज़कात जम्अ करते हैं। काज़ी और ख़लीफ़ा इन में शामिल नहीं। निगरान, कातिब, वुसूल करने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला और

①....**अमिल** : वोह है जिसे बादशाहे इस्लाम ने ज़कात और उ़शर वुसूल करने के लिये मुकर्रर किया, उसे काम के लिहाज़ से इतना दिया जाए कि उस को और उस के मददगारों को मुतवस्सित तौर पर काफ़ी हो, मगर इतना न दिया जाए कि जो वुसूल कर लाया है उस के निस्फ़ से ज़ियादा हो जाए। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 924)

नक़ल करने वाला इन में शामिल हैं और किसी को राइज उजरत से ज़ियादा न दी जाए। अगर आठवें हिस्से में आम उजरत से कुछ बच जाए तो दूसरे मसारिफ़ को दें और अगर कम हो जाए तो दीगर ज़रूरतों के माल से मुकम्मल किया जाए।

﴿4﴾..... **मुअल्लफ़तुल कुलूब** :⁽¹⁾ वोह लोग जिन के दिलों को इस्लाम के लिये नर्म किया जाए, येह मुअज़्ज़ज लोग होते हैं जो इस्लाम क़बूल करते हैं तो क़ौम इन की इताअत करती है। इन को देने का मक़सद येह होता है कि येह इस्लाम पर षाबित क़दम रहें और दीगर इन जैसे लोगों और इन की इत्तिबाअ करने वालों को तरगीब मिले।

﴿5﴾....**मुकातब** : (इस की ता'रीफ़ माक़बूल गुज़र चुकी है) मुकातब का हिस्सा उन के सरदार को दिया जाए और अगर मुकातब को भी दिया तो जाइज़ है। सरदार अपने मुकातब को ज़कात नहीं दे सकता क्यूंकि येह अपना गुलाम शुमार होता है।

﴿6﴾....**क़र्जदार** :⁽²⁾ ग़ारिम उस शख़्स को कहते हैं जो किसी इबादत या किसी जाइज़ काम के लिये क़र्ज़ लेता है और येह फ़कीर है। अगर किसी गुनाह के लिये क़र्ज़ ले तो उस वक़्त तक ज़कात न दी जाए जब तक तौबा न करे, अगर ग़नी हो तो उस का क़र्ज़ अदा न किया जाए मगर येह कि उस ने किसी मस्लेहत के पेशे नज़र या किसी फ़ितने को दबाने के लिये क़र्ज़ लिया हो।

﴿7﴾....**मुजाहिदीन** : येह वोह हैं कि जिन का वज़ीफ़ा मुहाफ़िज़ ख़ाने के दफ़्तर में कुछ न हो तो इन्हें एक हिस्सा दिया जाए अगर्चे वोह मालदार हों क्यूंकि येह जिहाद पर मदद करना है।

﴿8﴾....**मुसाफ़िर** : मुसाफ़िर से मुराद वोह शख़्स है जो अपने शहर से सफ़र के लिये निकला जबकि गुनाह का इरादा न हो या वोह ज़कात देने वाले के शहर से गुज़रा, अगर फ़कीर है तो उसे ज़कात दी जाए और अगर उस का माल दूसरे शहर में है तो इतना दिया जाए कि वोह वहां तक पहुंच सके।

① **मुअल्लफ़तुल कुलूब** ब इजमाए सहाबा साक़ित हो गए क्यूंकि जब **अब्बाह** तबारक व तआला ने इस्लाम को ग़लबा दिया तो अब इस की हाज़त न रही। येह इजमाअ ज़मानए सिद्दीक़ में मुन्अक़िद हुवा।

(माखुذاज़ الهدایه اولین، کتاب الزکوة، باب من یجوز دفع الصلقات الیه و من لا یجوز، ص ۱۸۴)

②**ग़ारिम** : से मुराद मदयून (क़र्जदार) है या'नी इस पर इतना दैन (क़र्ज़) हो कि उसे निकालने के बा'द निसाब बाक़ी न रहे, अगर्चे इस का औरों पर बाक़ी हो मगर लेने पर क़ादिर न हो, मगर शर्त येह है कि मदयून हाशिमि न हो।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 926)

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि येह सिफ़ात किस तरह पहचानी जा सकती हैं ? तो इस का जवाब येह है कि जहां तक फ़कीरी व मिस्कीनी का मुआमला है तो वोह लेने वाले के कौल से मा'लूम होंगी, उस से न तो दलील त़लब की जाएगी और न ही क़सम ली जाएगी बल्कि उस के कहने पर ए'तिमाद करना जाइज़ है जब कि झूटा होना साबित न हो । जिहाद और सफ़र तो मुस्तक़बिल का मुआमला है, अगर वोह कहे कि मैं जिहाद पर जाऊंगा तो उसे ज़कात दी जाएगी फिर अगर वोह अपना कौल पूरा न करे तो वापस ले ली जाए । इन के इलावा दीगर मसारिफ़े ज़कात में गवाही ज़रूरी है । येह ज़कात के मुस्तहिक् होने की शराइत हैं । हर मसरफ़े ज़कात को कितना कितना देना चाहिये इस का बयान आगे आएगा ।

ज़कात लेने वाले की ज़िम्मेदारी :

ज़कात लेने वाले की पांच ज़िम्मेदारियां हैं :

﴿१﴾.....पहली ज़िम्मेदारी : वोह जाने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने दूसरों पर उस के लिये ज़कात इस लिये फ़र्ज की है ताकि उस की तमाम फ़िक्रें ख़त्म हो जाएं सिर्फ़ एक बाकी रहे । नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों पर लाज़िम किया है कि उन की तमाम फ़िक्रें एक फ़िक्र में जम्अ हो जाएं और वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और आख़िरत की फ़िक्र है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमाने आलीशान का येही मा'ना है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥١﴾

(प २, अल्लित: ५१)

तर्जमए कन्जुल इमान : और मैं ने जिन और आदमी इतने ही (इसी) लिये बनाए कि मेरी बन्दगी करें ।

लेकिन चूंकि हिक्मत का तकाज़ा येह है कि बन्दे पर ख़्वाहिशात और हाजात मुसल्लत की जाएं और ख़्वाहिश व हाजात बन्दे की सोच व फ़िक्र को मुतफ़रिक् कर देती है तो उस का करम ने'मत की ऐसी कषरत का तकाज़ा करता है जो हाजात में किफ़ायत करे । पस उस ने अम्वाल की कषरत कर के लोगों के हाथों में दे दिया ताकि येह उन की हाजात को पूरा करने का आला और इबादात के लिये फ़राग़त का वसीला बन जाए । बा'ज़ लोगों के लिये माल की कषरत आजमाइश व फ़ितने का सबब बन गई और उन्हें ख़तरे में डाल दिया जब कि बा'ज़ को अपना महबूब बना लिया और उन्हें दुन्या से बचा लिया जैसे कोई शफ़ीक़ व मेहरबान शख़्स अपने मरीज़ की हिफ़ाज़त करता है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन से ज़ाइद माल को दूर रखा और बक़दरे हाजात मिक्दारे अग़निया के ज़रीए उन तक पहुंचाई कि कमाने, जम्अ करने और हिफ़ाज़त करने की मेहनत व मशक्क़त की ज़िम्मेदारी मालदारों पर रहे और इस का फ़ाइदा फुक़रा को पहुंचे और वोह

इबादते इलाही और सफ़रे आख़िरत की तय्यारी के लिये फ़ारिग़ हों, दुन्या का ज़ाइद माल उन्हें इबादत से नहीं फेरता और फ़ाका कशी सफ़रे आख़िरत की तय्यारी में रुकावट नहीं बनता, येह ने'मत की इन्तिहा है। लिहाज़ा फ़कीर पर लाज़िम है कि ने'मते फ़क्र की क़दरो कीमत पहचाने और इस बात को अच्छी तरह जान ले कि जो चीज़ मुझे अ़ता की गई इस के मुकाबले में जो अ़ता नहीं की गई उस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुझ पर बहुत बड़ा फ़ज़ल है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की तहकीक़ और वज़ाहत फ़क्र के बयान में आएगी।

हासिल शुदा माल में मोहताज की निय्यत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ल से फ़कीर को जो कुछ हासिल हो उसे अपना रिज़क़ समझे और इताअत पर मददगार बनाए और येह निय्यत करे कि इस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत पर कुव्वत हासिल करेगा, अगर ऐसा न कर सकता हो तो (बक़दरे हाज़त रख कर) बाक़ी को जाइज़ मसरफ़ में खर्च कर दे। अगर उस ने इस के ज़रीए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी पर मदद चाही तो वोह ने'मतों की नाशुकी करने वाला नीज़ रहमते इलाही से दूरी और उस की नाराज़ी का मुस्तहिक़ होगा।

﴿२﴾.....दूसरी ज़िम्मेदारी : देने वाले का शुक्रिया अदा करे, उस के लिये दुआ करे, उस की ता'रीफ़ करे लेकिन इस शुक्र और दुआ के ज़रीए इसे वासिता होने से न निकाले (या'नी हकीक़ी देने वाला न समझे) बल्कि इसे अपने तक ने'मते इलाही पहुंचने का रास्ता समझे और इस ए'तिबार से रास्ते का भी एक हक़ है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे रास्ता और ज़रीआ बनाया (लिहाज़ा इस का भी शुक्रिया अदा करना चाहिये) और येह नज़रिया रखना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ने'मत मिलने के अक़ीदे के ख़िलाफ़ नहीं कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : **مَنْ لَمْ يَشْكُرِ النَّاسَ لَمْ يَشْكُرِ اللَّهَ** या'नी जो बन्दों का शुक्रिया अदा नहीं करता वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्र अदा नहीं करता।^(१)

बा'ज़ मक़ामात पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने खुद बन्दों के आ'माल के सबब उन की ता'रीफ़ फ़रमाई हालांकि आ'माल का ख़ालिफ़ और इस की कुदरत पैदा करने वाला वोही है। जैसा कि इरशादे खुदावन्दी है :

نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿٣٠﴾ (ब २३, व ३०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला।

इस के इलावा भी कई आयात में ऐसे फ़रामीन मौजूद हैं।

जकात लेने वाला देने वाले को यूँ दुआ दे :

जकात लेने वाले को चाहिये कि (देने वाले के लिये) यूँ दुआ करे :

“طَهَّرَ اللَّهُ قَلْبَكَ فِي قُلُوبِ الْبَرَارِ وَزَكَّى عَمَلَكَ فِي عَمَلِ الْخَيْرِ وَصَلَّى عَلَى رُوحِكَ فِي أَرْوَاحِ الشُّهَدَاءِ” या'नी **अल्लाह** عز وجل नेक लोगों के दिलों के साथ तेरे दिल को पाक व साफ़ करे, नेकूकारों के आ'माल के साथ तेरे अमल को पाकीजगी बख़्शे और शहदा की रूहों के साथ तुझ पर रहमत भेजे ।”

नीज मरवी है कि हज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “जो तुम्हारे साथ भलाई करे तुम उस का बदला दो, अगर बदला नहीं दे सकते तो उस के लिये दुआ करो यहां तक कि तुम जान लो कि तुम ने उस का बदला दे दिया ।”(1)

कामिल शुक्र येह है कि अगर अतिथ्या (या'नी दी गई चीज़) में कोई ऐब हो तो उसे छुपाए, न उस की तहकीर करे और न ही मजम्मत, अगर वोह न दे तो इस पर उसे अर न दिलाए । देने वाले के अमल को खुद भी बड़ा समझे और लोगों के सामने भी इसे बड़ा ही करार दे ।

अतिथ्या देने और लेने वाले की निय्यत :

देने वाले की जिम्मेदारी है कि अपने अतिथ्ये को हकीर समझे जब कि लेने वाले की जिम्मेदारी है कि उस का एहसान मन्द हो और उसे बड़ा खयाल करे । हर बन्दे पर लाजिम है कि अपने हक़ पर काइम रहे और इस मस्अले में कोई तज़ाद नहीं क्यूंकि छोटा और बड़ा मानने के अस्बाब में फ़र्क़ है । देने वाले के लिये छोटाई के अस्बाब का लिहाज़ नफ़अ बख़्श है और इस का ख़िलाफ़ नुक़सान देह जब कि लेने वाले का मुआमला इस के बर अक्स है और दोनों सूरतों में ने'मत को **अल्लाह** عز وجل की तरफ़ से जानने में कोई तज़ाद नहीं क्यूंकि जो वासिते को वासिता नहीं जानता वोह जाहिल है जो वासिते को अस्ल समझता है वोह मुन्किर है ।

﴿3﴾....तीसरी जिम्मेदारी : लेने वाला देखे कि वोह क्या ले रहा है अगर जाइज़ न हो तो न ले ।

कि **अल्लाह** عز وجل फ़रमाता है :

①.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب عطية من سأل الله عزوجل، الحديث: ١٦٤٢، ج ٢، ص ٤٨، مفهوماً۔

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا
وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

(پ ۲۸، الطلاق: ۳، ۴)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो । (1)

हराम से बचने वाला हलाल के मिलने से महरूम नहीं रहता । पस तुर्को (या'नी सरकारी लोगों), सिपाहियों और बादशाहों के अम्वाल से न ले नीज़ उन लोगों से भी न ले जिन की अकषर कमाई हराम की होती है । अलबत्ता अगर उस पर मुआमला तंग हो जाए और जो माल उसे दिया जा रहा है इस का मुअय्यन मालिक मा'लूम न हो तो वोह ज़रूरत के मुताबिक ले सकता है क्योंकि ऐसी सूरत में शरीअत का फ़तवा येह है कि इसे ख़ैरात कर दे जैसा कि हलाल व हराम के बयान में आएगा और येह इस सूरत में है जब हलाल से अज़िज़ हो जाए । नीज़ जब (इस किस्म का माल) लेगा तो ज़कात लेने वाला नहीं होगा क्योंकि हराम माल से देने वाले की ज़कात अदा नहीं होती ।

﴿4﴾....चौथी जिम्मेदारी : येह है कि जो कुछ वोह ले रहा है उस की मिक्दार के मुआमले में भी शक व शुबे से बचे । जाइज़ मिक्दार में भी उस वक़्त ले जब षाबित हो जाए कि लेने का हक़दार होने की सिफ़त से मुत्तसिफ़ है ।

अगर मुकातबत या कर्ज़ के इवज़ लेता है तो कर्ज़ की मिक्दार से ज़ियादा न ले ।

अगर आमिल (या'नी माल जम्अ करने पर मुक़रर हो) और अमल की वजह से ले तो आम उजरत से ज़ियादा न ले, अगर ज़ियादा दिया जाए तो इन्कार कर दे और न ले क्योंकि देने वाला माल का मालिक नहीं कि वोह अपनी तरफ़ से ज़ियादा दे ।

अगर वोह मुसाफ़िर हो तो ज़ादे राह और मन्ज़िल तक सुवारी के किराए से ज़ियादा न ले ।

①सदरुल अफ़ज़िल मुफ़स्सिरे शहीर हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी **रज़ी अल्ले त़ैअली** عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मरवी है कि जो शख्स इस आयत को पढ़े **अल्लाह** तआला उस के लिये शुब्हाते दुन्या ग़मरते मौत व शदाइदे रोज़े क़ियामत से ख़लास की राह निकालेगा और इस आयत की निस्बत सय्यिदे आलम **रज़ी अल्ले त़ैअली** عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह भी फ़रमाया कि मेरे इल्म में एक ऐसी आयत है जिसे लोग महफूज़ कर लें तो उन की हर ज़रूरत व हाज़त के लिये काफ़ी है । **शाने नुज़ूल** : (हज़रते सय्यिदुना) औफ़ बिन मालिक के फ़रज़न्द को मुशरिकीन ने कैद कर लिया तो (हज़रते) औफ़ नबिब्ये करीम **रज़ी अल्ले त़ैअली** عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने ने येह भी अर्ज़ किया कि मेरा बेटा मुशरिकीन ने कैद कर लिया है और इसी के साथ अपनी मोहताजी व नादारी की शिकायत की, सय्यिदे आलम **रज़ी अल्ले त़ैअली** عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला का डर रखो और सब्र करो और कषरत से पढ़ते रहो (हज़रते सय्यिदुना) औफ़ ने घर आ कर अपनी बीबी से येह कहा और दोनों ने पढ़ना शुरूअ किया वोह पढ़ ही रहे थे कि बेटे ने दरवाज़ा खट खटाया, दुश्मन गाफ़िल हो गया था उस ने मौक़अ पाया कैद से निकल भागा और चलते हुए चार हज़ार बकरियां भी दुश्मन की साथ ले आया, (हज़रते सय्यिदुना) औफ़ ने ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हो कर दरयाफ़्त किया कि येह बकरियां इन के लिये हलाल हैं ? हुज़ूर ने इजाज़त दी और येह आयत नाज़िल हुई ।

अगर गाज़ी हो तो घोड़े, अस्लहे और नफ़के के लिये जितने माल का मोहताज है उसी क़दर ले, इस की कोई हद मुक़रर नहीं बल्कि उस का अन्दाज़ा ग़ौरो फ़िक्क से होगा इसी तरह ज़ादे सफ़र का मुआमला है और तक्वा येह है कि शक वाली चीज़ को छोड़ कर उसे इख़्तियार किया जाए जिस में शक न हो।

अगर तंगदस्ती की वजह से ले रहा है तो पहले अपने घर के सामान, कपड़ों और किताबों को देखे कि क्या इन में से कोई ऐसी चीज़ है जो ज़ाती तौर पर उस की ज़रूरत से ज़ाइद है या उसे इस की उम्दगी की ज़रूरत नहीं। क्यूंकि मुमकिन है कि उसे बदल कर वोह हासिल करे जो उसे काफ़ी हो और उस की कीमत में से कुछ रक़म बच भी जाए और येह तमाम बातें बन्दे के ग़ौरो फ़िक्क से तअल्लुक़ रखती हैं। इस में एक ज़ाहिरी पहलू है जिस से षाबित होता है कि वोह मुस्तहिक़ है और एक पहलू वोह है कि जिस से उस का मुस्तहिक़ न होना षाबित होता है। दोनों के दरमियान कुछ मुश्तबहात उमूर हैं। जो शख़्स शाही चरागाह के आस-पास (जानवर) चराता है तो क़रीब है कि वोह इस में चरने लगें। नीज़ इस मुआमले में लेने वाले के ज़ाहिरी क़ौल पर ए'तिमाद किया जाएगा। मोहताज के लिये तंगी और वुस्अत के ए'तिबार से हाजात का अन्दाज़ा लगाने के सिलसिले में कई मक़ामात हैं, इस के मरातिब शुमार नहीं हो सकते। तक्वा का मैलान तंगी की तरफ़ जब कि सुस्ती करने वाले का मैलान वुस्अत की तरफ़ होता है जिस के सबब वोह नफ़्स को कई ज़रूरतों के लिये मोहताज समझता है और येह बात शरीअत में बुरी है।

जब हाजात षाबित हो जाए तो कषीर माल न ले बल्कि इतना ले जो लेने के वक़्त से साल भर तक ज़रूरत पूरी करे। रुख़्सत की इन्तिहाई हद येही (एक साल) है क्यूंकि जब साल लौट आता है तो आमदनी के अस्बाब भी लौट आते हैं। एक वजह येह भी है कि सय्यिदुल मुतवक्किलीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने घर वालों के लिये एक साल ही की ख़ूराक जम्अ फ़रमाई⁽¹⁾ येह हदबन्दी फ़कीर और मिस्कीन की ता'रीफ़ के ज़ियादा क़रीब है अगर उस ने एक माह या एक दिन की ज़रूरत पर इक्तिफ़ा किया तो येह तक्वा के ज़ियादा क़रीब है। ज़कात और सदके के माल से ली जाने वाली मिक्दार के हुक्म में उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब हैं। चुनान्वे,

सदक़ात से ली जाने वाली मिक्दार के हुक्म में मुख़्तलिफ़ मौक़िफ़ :

(1).....बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने कमी में मुबालगा करते हुए एक दिन और एक रात की ख़ूराक पर इक्तिफ़ा को वाजिब क़रार दिया और हज़रते सय्यिदुना सहल बिन

①.....صحیح مسلم، کتاب الجهاد والسير، باب حکم الفیء، الحدیث: ۱۷۵۷، ص ۹۶۵، مفہوماً۔

हन्ज़ला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी इस रिवायत से इस्तिदलाल किया कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ग़ना (तवंगरी) के होते हुए सुवाल करने से मन्अ फ़रमाया । ग़ना के मुतअल्लिक पूछा गया तो इरशाद फ़रमाया : “सुब्ह और शाम का खाना ग़ना है ।”⁽¹⁾

(2).....बा'ज फ़रमाते हैं : ग़ना की हद तक ले सकता है और वोही निसाबे ज़कात है क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अग़निया पर ही ज़कात फ़र्ज फ़रमाई । उन्होंने ने ज़कात लेने वाले के मुतअल्लिक फ़रमाया कि वोह अपने लिये और अपने अहलो इयाल में से हर एक के लिये निसाबे ज़कात ले सकता है ।

(3)....एक गुरौह का मौक़िफ़ है कि ग़ना (मालदारी) की हद 50 दिरहम या इतनी मालियत का सोना है । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स ब क़दरे ज़रूरत माल होने के वा वुजूद सुवाल करता है तो बरोज़े क़ियामत वोह इस हाल में आएगा कि उस के चेहरे पर ख़राशें होंगी ।” पूछा गया : “बक़दरे ज़रूरत की हद क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “50 दिरहम या इतनी कीमत का सोना ।”⁽²⁾

(4).....बा'ज हज़रात ने 40 दिरहम मिक्दार को ग़ना क़रार दिया है क्योंकि हज़रते सय्यिदुना अता बिन यसार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار से एक मुन्क़तअ रिवायत मरवी है कि सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना, फैजे गन्जीना صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने एक ऊक़िया (या'नी 40 दिरहम) सोना होने के बा वुजूद सुवाल किया उस ने मांगने में मुबालगा किया ।”⁽³⁾

(5).....बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السّالَام ने वुस्अत में मुबालगा करते हुए फ़रमाया : इतनी मिक्दार ले ले कि जिस से सामान ख़रीद कर उम्र भर के लिये बे नियाज़ हो जाए या सामान तय्यार कर के तिजारत करे और इस के ज़रीए तमाम उम्र के लिये मुस्तग़नी हो जाए क्योंकि येही ग़ना (मालदारी) है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “इतना दो कि लोग ग़नी हो जाएं ।”

(6).....एक गुरौह का मौक़िफ़ है कि अगर (कोई मालदार) मोहताज हो जाए तो उस के लिये इतना माल लेना जाइज़ है कि वोह साबिका हालत पर लौट आए अगर्चे दस हज़ार दिरहम हो मगर हद्दे ए'तिदाल से न निकले ।

①.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب من یعطى من الصدقة.....الخ، الحدیث: ۱۲۲۹، ج ۲، ص ۱۶۳-۱۶۵، مفهوماً۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب من یعطى من الصدقة.....الخ، الحدیث: ۱۲۲۶، ج ۲، ص ۱۶۳۔

③.....المرجع السابق، الحدیث: ۱۲۲۷، ص ۱۶۳۔

खजूरों का बाग़ सदका कर दिया :

हज़रते सय्यिदुना अबू तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की अपने बाग़ के सबब जब नमाज़ से तवज्जोह कम होने लगी तो फ़रमाया : “मैंने इसे सदका किया ।” तो आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “इसे अपने रिश्तेदारों पर सदका कर दो येह तुम्हारे लिये बेहतर है ।” तो उन्होंने ने वोह बाग़ हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन षाबित और सय्यिदुना अबू क़तादा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) पर सदका कर दिया ।⁽¹⁾ और खजूरों का एक बाग़ दो आदमियों के लिये कषीर और ग़नी बनाने वाला है ।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक आ'राबी को ऊंटनी के साथ दूध पीता बच्चा भी अता फ़रमा दिया ।

कौले फैसल :

येह सब कुछ वुस्अत (या'नी ज़ियादा देने) के मुआमले में मन्कूल है । जहां तक एक दिन के रिज़क़ और एक ऊक़िया (40 दिरहम) देने की सूरत में क़िल्लत का तअल्लुक़ है तो (इस का हुक्म येह है कि) इतना होते हुए सुवाल न करे और दर दर की ठोक़रें न खाता फ़िरे क्यूंकि गदागरी (या'नी मांगने) का पेशा शरअन बुरा है और इस का हुक्म और है । येह तजवीज़ एहतिमाल के ज़ियादा क़रीब है कि वोह सामान ख़रीद कर ग़नी हो जाए लेकिन येह भी फुज़ूल ख़र्ची की तरफ़ माइल है । ए'तिदाल के ज़ियादा क़रीब येह है कि (इतना ले जो) एक साल के लिये क़िफ़ायत करे, इस से जाइद लेने में ख़तरा और कम में तंगी है । जिन उमूर में कोई अन्दाज़ा मुक़रर नहीं किया जा सकता उन में तवक्कुफ़ किया जाएगा और मुज्ताहिद पर जो हाल ज़ाहिर हो उस के मुताबिक़ हुक्म लगाए । परहेज़गार से कहा जाएगा कि “अपने दिल से फ़तवा ले अगर्चे लोग तुझे कुछ फ़तवा दें, अगर्चे लोग तुझे कुछ फ़तवा दें ।”⁽²⁾ क्यूंकि गुनाहों के बाइष दिल सख़्त हो जाते हैं । अगर लेने वाला माल की वजह से अपने दिल में कोई ख़दशा महसूस करे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से डरे और उ-लमाए ज़ाहिर के फ़तवे को इल्लत बना कर रुख़्सत न ढूंढता फ़िरे क्यूंकि इन के फ़तवों में कुछ कुयूदात होती हैं और वोह ज़रूरतों की कैद से आज़ाद भी होते हैं । इन में तख़्मीने और शुबहात पाए जाते हैं और शुबहात से बचना दीनदारों का तरीक़ा और राहे आख़िरत पर चलने वालों की आदात में से है ।

①.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب فـل النفقة والصدقة على الاقربین.....الخ، الحدیث: ۹۹۸، ص ۵۰۰۔

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حدیث وابصة بن معبد الاسدی، الحدیث: ۱۸۰۲۳، ج ۶، ص ۲۹۲، مفهوماً۔

﴿5﴾.....जकात लेने वाले की पांचवी जिम्मेदारी : यह है कि वोह साहिबे माल से उस पर वाजिब जकात की मिक्दार मा'लूम करे, वोह माल जो वोह दे रहा है अगर आठवें हिस्से से ज़ियादा हो तो न ले क्यूंकि वोह अपने शरीक के साथ सिर्फ आठवें हिस्से का मुस्तहक है तो आठवें हिस्से से भी इतना कम करे जो इस किस्म के दो रुफ़का को मिल सके। अक़षर लोगों पर येह बात पूछना वाजिब है क्यूंकि वोह जहालत या सुस्ती की वजह से इस तक्सीम की परवाह नहीं करते। अलबत्ता जब हुर्मत का ग़ालिब गुमान न हो तो सुवाल न करना जाइज़ है। सुवाल के मवाकेअ और एहतिमाल के दर्जात का बयान **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हलाल व हराम के बयान में आएगा।

चौथी फ़स्ल : नफ़ली सदक़े के फ़ज़ाइल और लेने देने के आदाब
फ़ज़ाइले सदक़ा के मुतअल्लिक 18 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....सदका करो अगरचें एक खजूर हो क्यूंकि येह भूके की भूक मिटाता और गुनाहों को इस तरह मिटा देता है जिस तरह पानी आग बुझा देता है।⁽¹⁾

﴿2﴾.....आग से बचो अगरचें खजूर के एक टुकड़े के ज़रीए, अगर कुछ न पाओ तो अच्छे कलिमे के ज़रीए बचो।⁽²⁾

﴿3﴾.....**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** हलाल (माल) ही क़बूल फ़रमाता है, पस जो मुसलमान बन्दा हलाल कमाई से कुछ सदका करता है तो **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उसे अपने दाएं दस्ते कुदरत से पकड़ता है फिर उस की ऐसी परवरिश करता है जैसे तुम में से कोई ऊंट के बच्चे को पालता है हत्ता कि एक खजूर उहद पहाड़ के बराबर हो जाती है।⁽³⁾

﴿4﴾.....मक्की मदनी सुल्तान **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से इरशाद फ़रमाया : “जब शोरबा पकाओ तो इस का पानी ज़ियादा करो फिर अपने पड़ोसियों को देखो और इस में से कुछ उन्हें दे कर उन के साथ भलाई करो।”⁽⁴⁾

①.....الزهد لابن المبارك، باب الصلقة، الحديث: ٢٥١، ص ٢٢٩۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب الحث على الصدقة.....الخ، الحديث: ١٠١٦، ص ٥٠٤۔

③.....صحيح البخارى، كتاب الزكاة، باب الصدقة من كسب طيب، الحديث: ١٢١٠، ج ١، ص ٢٤٦، مفهوماً۔

سنن ابن ماجه، كتاب الزكاة، باب فـل الصدقة، الحديث: ١٨٢٢، ج ٢، ص ٢٠٣-٢٠٢، مفهوماً۔

④.....صحيح مسلم، كتاب البر والصلة، باب الوصية بالجار والاحسان اليه، الحديث: ٢٦٢٥، ص ١٢١٣، عن ابى ذر۔

﴿5﴾.....जो बन्दा अच्छा सद्का देता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के छोड़े हुए माल में बरकत डाल देता है।⁽¹⁾

﴿6﴾.....(बरोजे क़ियामत) हर शख्स अपने सद्के के साए में होगा यहां तक कि लोगों के दरमियान फैसला हो जाए।⁽²⁾

﴿7﴾.....सद्का बुराई के 70 दरवाजे बन्द कर देता है।⁽³⁾

﴿8﴾.....पोशीदा सद्का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब को बुझाता है।⁽⁴⁾

﴿9﴾.....जो शख्स कुशादगी की हालत में सद्का देता है वोह षवाब में उस से अफ़ज़ल नहीं जो हाज़त के सबब क़बूल करता है।⁽⁵⁾

शायद इस से मुराद वोह है जो इल्मे दीन के हुसूल की ख़ातिर फ़राग़त की निय्यत से अपनी हाज़त पूरी करने का इरादा करता है तो (षवाब में) वोह देने वाले के बराबर होगा जो अपनी अ़ता से दीन की ता'मीर का इरादा करता है।

﴿10﴾.....बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कौन सा सद्का अफ़ज़ल है ?” इरशाद फ़रमाया : “इस हालत में सद्का करना अफ़ज़ल है जब तुम तन्दुरुस्त हो, माल के हरीस हो, ज़िन्दगी की उम्मीद रखते हो, फ़ाके से डरते हो और इतनी ताख़ीर न हो कि रूह हल्क़ तक पहुंच जाए फिर तुम कहो : फुलां के लिये इतना माल, फुलां के लिये इतना माल हालांकि (अब तो) वोह फुलां का हो चुका।”⁽⁶⁾

﴿11﴾.....एक दिन प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सहाबए किराम أَجْمَعِينَ से इरशाद फ़रमाया : “सद्का दो।” एक शख्स ने अ़र्ज़ की : “मेरे पास एक दीनार है।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “इसे अपने ऊपर ख़र्च कर।” उस ने अ़र्ज़ की : “और भी है।” इरशाद फ़रमाया : “इसे अपनी ज़ौजा पर ख़र्च कर।” अ़र्ज़ की : “और

①.....الزهد لابن المبارك، باب الصدقة، الحديث: ٢٢٣، ص ٢٢٤۔

②.....المستدرک، کتاب الزکاة، باب کل امری فی ظل صدقته.....الخ، الحديث: ٥٥٤، ج ٢، ص ٢٣۔

③.....المعجم الكبير، الحديث: ٢٢٠٢، ج ٢، ص ٢٤٢، الشر بدله السوء۔

④.....شعب الايمان للبيهقي، باب فی الزکاة، فصل فی الاختیار فی صدقة التطوع، الحديث: ٣٢٢٢، ج ٣، ص ٢٢٥۔

⑤.....المعجم الكبير، الحديث: ١٣٥٦٠، ج ٢، ص ٣٢٢، مفهوماً۔

⑥.....صحيح البخاری، کتاب الزکاة، باب أى الصدقة افضل.....الخ، الحديث: ١٢١٩، ج ١، ص ٢٤٩۔

भी है।” इरशाद फ़रमाया : “इसे अपने बच्चे पर खर्च कर।” अर्ज की : “और भी है।” फ़रमाया : “इसे अपने खादिम पर खर्च कर।” अर्ज की : “एक और भी है।” इरशाद फ़रमाया : “जहां बेहतर समझो खर्च करो।”(1)

﴿12﴾.....आले मुहम्मद के लिये सदका जाइज़ नहीं, येह तो लोगों की मैल है।(2)

﴿13﴾.....मांगने वाले का हक़ लौटाओ अगर्चे परन्दे के सर के बराबर खाना हो।(3)

﴿14﴾.....अगर मांगने वाला सच्चा हो तो इसे (ख़ाली हाथ) लौटाने वाला फ़लाह नहीं पा सकता।(4)

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स मांगने वाले को अपने घर से ख़ाली हाथ लौटाता है तो सात दिन तक रहमत के फ़िरिश्ते उस घर में नहीं आते।”

﴿16﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ कभी दो काम किसी के सिपुर्द नहीं फ़रमाते थे। रात को वुजू का पानी खुद रखते और इसे ढांप कर रखते और मिस्कीन को अपने हाथ से खिलाते थे।(5)

﴿17﴾.....मिस्कीन वोह नहीं जिसे एक दो खजूरें या एक दो लुक़्मे दे कर वापस लौटा देते हैं बल्कि मिस्कीन तो वोह है जो सुवाल से बचता है चाहो तो येह आयते मुबारका पढ़ो :

﴿6﴾ **تَرْجَمَةُ كَنْزُ الْمَعْنَى** : लोगों से सुवाल नहीं करते कि गिड़गिड़ा पड़े। (البقرة: २८३)

﴿18﴾.....जो मुसलमान किसी मुसलमान भाई को लिबास पहनाता है तो जब तक उस (के जिस्म) पर एक टुकड़ा भी रहता है पहनाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हिफ़्ज़ो अमान में रहता है।(7)

①.....سنن ابی داود، کتاب الزکاة، باب فی صلة الرحم، الحدیث: ۱۶۹۱، ج ۲، ص ۸۴، بتغییر۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب ترک استعمال آل النبی علی الصدقة، الحدیث: ۱۰۷۲، ص ۵۴۰، بتغییر۔

③.....کتاب الـعفاء للعقيلي، اسحق بن نصیح الملقی: ۱۲۳، ج ۱، ص ۱۲۱، بتغییر۔

④.....المقاصد الحسنة، حرف اللام، الحدیث: ۸۹۲، ص ۳۵۱۔

⑤.....سنن ابن ماجه، کتاب الطهارة، باب تغطية الاناء، الحدیث: ۳۶۲، ج ۱، ص ۲۲۶، مفهوماً۔

⑥.....صحیح مسلم، کتاب الزکاة، باب المسکین الذی لا یجد غنی.....الخ، الحدیث: ۱۰۳۹، ص ۵۱۷۔

⑦.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، باب: ۴۱، الحدیث: ۲۴۹۲، ج ۴، ص ۲۱۸، بتغییر۔

फज़ाइले सदका के मुतअल्लिक 17 अक्वाले बुजुर्गाने दीन :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना उर्वा बिन जुबैर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने 50 हजार (दिरहम) सदका किये हालांकि आप की ओढ़नी में पैवन्द लगे हुए थे ।”⁽¹⁾

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد इस फ़रमाने बारी तअ़ाला : **تَرْجَمَاف كَنْزُالْإِيمَانِ** और खाना खिलाते हैं उस की महबूबत पर मस्कीन और यतीम और असीर (कैदी) को । की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि “वोह खाने की ख़्वाहिश के बा वुजूद खिलाते हैं ।”⁽²⁾

﴿3﴾....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दुआ फ़रमाया करते थे कि “ऐ **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ हमारे अच्छे लोगों को दौलत अता फ़रमा कि वोह इसे हाज़त मन्दों की तरफ़ लौटाएं ।”

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन उमैर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “नमाज़ तुझे आधे रास्ते तक पहुंचाती, रोज़ा बादशाह के दरवाजे तक पहुंचाता और सदका इस में दाख़िल कर देता है ।”⁽³⁾

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना इब्ने अबिल जअद رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “बेशक सदका बुराई के 70 दरवाजे बन्द कर देता है⁽⁴⁾ और पोशीदा सदका ज़ाहिरी सदके पर 70 गुना ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है⁽⁵⁾ और येह 70 शयातीन के जबड़े चीर देता है ।”

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “एक शख्स ने 70 साल **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ की इबादत की फिर एक फ़ाहिशा से ज़िना कर बैठा तो उस के तमाम आ'माल ज़ाएअ हो गए फिर एक मस्कीन के पास से गुज़रा और उस पर एक रोटि सदका की तो **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने उस का गुनाह बख़्श दिया और उस के 70 साल के आ'माल लौटा दिये ।”⁽⁶⁾

1.....الزهد لابن المبارك، باب اصلاح ذات البين، الحديث: ٤٥٣، ص ٢٦٠، بلفظ سبعين۔

2.....الدر المنثور، الجزء التاسع والعشرون، سورة الانسان: ٨، ج ٨، ص ٣٤٠۔

3.....المستطرف في كل فن مستظرف، الباب الاول في مباني الاسلام.....الخ، الفصل الثالث في الزكاة وفـلـها، ج ١، ص ١٩۔

4.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٤٨۔

5.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، يزيد بن بشر السکسکی: ٨٢٣٦، ج ٢٥، ص ١٣١، باختصار۔

6.....جامع العلوم والحکم، الحديث: الثامن عشر، ص ٢٢٠، بتغير۔

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना लुक्मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए फ़रमाया :

“जब तुझ से कोई ख़ता हो जाए तो सदका दे ।”⁽¹⁾

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुआज़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं सदके के दाने के इलावा किसी दाने को नहीं जानता जो दुनिया के पहाड़ों के बराबर वज़नी हो ।”⁽²⁾

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी रव्वाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْجَوَاد़ फ़रमाते हैं : “कहा जाता है कि तीन बातें जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं :

(1).....बीमारी को छुपाना (2)....सदका छुपा कर देना और (3)....मुसीबतों को छुपाना ।”⁽³⁾

﴿10﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं :

“आ’माल आपस में फ़ख़र करते हैं तो सदका कहता है : मैं तुम सब से अफ़ज़ल हूं ।”⁽⁴⁾

﴿11﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) शकर सदका किया करते और फ़रमाते : मैं ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का येह फ़रमान सुना है :

“तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ न खर्च करो ।” और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जानता है कि मुझे शकर बहुत पसन्द है ।”⁽⁵⁾

﴿12﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “मुझे ऐबदार चीज़ राहे खुदा में सदका करना नापसन्द है ।”

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना उबैद बिन उमैर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “बरोजे क़ियामत लोग इतने भूके होंगे जितने पहले कभी न थे, इतने प्यासे होंगे जितने पहले कभी न थे और ऐसे बरहना होंगे जैसे पहले कभी न थे तो जिस ने (दुनिया में) रिज़ाए इलाही के लिये किसी को कुछ खिलाया **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे पेट भर कर खिलाएगा, जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के लिये किसी को कुछ पिलाया **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ उसे सैराब फ़रमाएगा और जिस ने **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की रिज़ा की

1.....البر والصلة، باب ما جاء في الصدقة والنفقة، الحديث: ٢٨١، ص ١٢٣۔

2.....المستطرف في كل فن مستظرف، الباب الاول في مباني الاسلام.....الخ، الفصل الثالث في الزكاة وفـلـمـها، ج ١، ص ٩۔

3.....اللائى المصنوعة، كتاب المرض والطب، ج ٢، ص ٣٢٩، عن ابن عمر۔

4.....المستطرف في كل فن مستظرف، الباب الاول في مباني الاسلام.....الخ، الفصل الثالث في الزكاة وفـلـمـها، ج ١، ص ٩۔

5.....الدر المنثور، الجزء الرابع، سورة آل عمران: ٩٢، ج ٢، ص ٢٢٢۔

﴿1﴾ ”(1) खातिर किसी को लिबास पहनाया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे (जन्ती) लिबास पहनाएगा ।“

﴿14﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहता तो तुम्हें ग़नी कर देता तुम में कोई फ़कीर न होता लेकिन उस ने तुम में से बा'ज़ को बा'ज़ के ज़रीए आज़माया ।“ (2)

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना शा'बी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : “जो शख्स खुद को सदके के षवाब का इस से ज़ियादा मोहताज न समझे जितना फ़कीर सदके का मोहताज है तो उस ने अपना सदका ज़ाएअ कर दिया और इसे अपने चेहरे पर दे मारा ।“ (3)

﴿16﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَالِك फ़रमाते हैं : “हम इस में कोई हरज नहीं समझते कि खुश हाल शख्स सदके के पानी या मस्जिद के पानी से पिये क्यूंकि वोह प्यासों के लिये होता है जो भी प्यासा हो नीज़ इस पर फ़क़त अहले हाज़त और मसाकीन लोग ही नहीं आते ।“

﴿17﴾.....मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के क़रीब से एक दलाल गुज़रा उस के साथ एक लौंडी भी थी । आप ने दलाल से पूछा : “क्या तुम इस की एक या दो दिरहम कीमत पर राज़ी हो ?” उस ने कहा : “नहीं ।” आप ने फ़रमाया : “जाओ ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक पैसे और एक लुक़्मे के बदले जन्ती हूर देने पर राज़ी होता है ।“ (4)

सदके को छुपाना और ज़ाहि़र करना

इस सिलसिले में इख़्लास की जुस्तजू करने वालों का रास्ता मुख़्तलिफ़ है । कुछ हज़रात इस तरफ़ माइल हुए कि पोशीदा देना अफ़ज़ल है और कुछ हज़रात का मौक़िफ़ येह है कि ज़ाहि़री तौर पर देना अफ़ज़ल है । हम दोनों में से हर एक में मौजूद मअ़ानी और आफ़ात की तरफ़ इशारा करते हैं फिर हक़ बात से पर्दा उठाएंगे ।

पोशीदा तौर पर देने में पांच हिक्मते :

﴿1﴾.....इस तरह लेने वाले का पर्दा रह जाता है क्यूंकि ज़ाहि़री तौर पर लेने से उस की मु़रव्वत पोशीदा नहीं रहती, हाज़त सामने आ जाती है और वोह इस पसन्दीदा इफ़फ़त की सिफ़त से ख़ारिज हो जाता है जिस से मुत्तसिफ़ शख्स को जाहिल लोग मालदार समझते हैं क्यूंकि वोह सुवाल करने से इजतिनाब करता है ।

①.....المستطرف في كل فن مستظرف، الباب الاول في مبادئ الاسلام.....الخ، الفصل الثالث في الزكاة.....الخ، ج 1، ص 19 -

②.....الدر المنثور، الجزء التاسع عشر، سورة الفرقان: 20، ج 6، ص 222، عن الحسن عن النبي صلى الله عليه وسلم -

③.....المستطرف في كل فن مستظرف، الباب الاول في مبادئ الاسلام.....الخ، الفصل الثالث في الزكاة وفـلها، ج 1، ص 19 -

④.....روح البيان، سورة التوبة، الجزء العاشر، ج 3، ص 222 -

﴿2﴾.....इस तरह लोगों की ज़बानें और दिल महफूज़ रहते हैं क्योंकि बा'ज़ अवकात लोग हसद करते और इस के लेने पर ए'तिराज़ करते हैं। वोह इसे बिला ज़रूरत लेने वाला गुमान करते हैं या ज़ियादा लेने की तरफ़ मन्सूब करते हैं। हालांकि हसद, बद गुमानी और गीबत कबीरा गुनाहों में से है और लोगों को इन से बचाना बेहतर है। हज़रते सय्यिदुना अय्यूब सख़्त्रियानी قُدَسَ سِرُّهُ الْغُورَانِ फ़रमाते हैं: “मैं ने इस डर से नए कपड़े पहनना छोड़ दिये कि कहीं मेरे पड़ोसी हसद में मुब्तला न हो जाएं।” किसी ज़ाहिद (दुन्या से कनारा कश शख्स) का कौल है कि “बा'ज़ अवकात मैं अपने भाइयों की वजह से किसी चीज़ का इस्ति'माल छोड़ देता हूं क्योंकि वोह कहते हैं कि येह कहां से आई है?” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तैमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَنَى के दोस्तों ने उन्हें नई कमीस पहने देख कर पूछा: “येह तुम्हारे पास कहां से आई?” फ़रमाया: “मुझे मेरे भाई ख़ैषमा ने पहनाई है, अगर मुझे मा'लूम होता कि इस के मुतअल्लिक़ उन के घर वालों को मा'लूम है तो मैं क़बूल न करता।”⁽¹⁾

﴿3﴾.....छुपा कर देने वाले के अमल को पोशीदा रखने में इस की मदद करना है क्योंकि पोशीदा देने की ज़ाहिरन देने से ज़ियादा फ़ज़ीलत है और नेकी को मुकम्मल करने पर मदद करना भी नेकी है और किसी चीज़ को मुकम्मल तौर पर दो आदमियों के ज़रीए छुपाया जा सकता है तो जब एक (या'नी मिसकीन) का हाल ज़ाहिर हो जाए तो देने वाले का मुआमला भी वाजेह हो जाता है।

अस्लाफ़ ज़ाहिदन दी गई चीज़ क़बूल न करते :

मन्कूल है कि एक शख्स ने किसी अ़ालिम को कोई चीज़ ज़ाहिरी तौर पर दी तो उन्होंने ने वापस कर दी, दूसरे ने पोशीदा तौर पर दी तो क़बूल फ़रमा ली। उन से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया: “पोशीदा देने वाले ने नेकी छुपाने में अदब को मल्हूज़े खातिर रखा मैं ने क़बूल कर ली जब कि पहले ने नेकी छुपाने में अदब को पेशे नज़र नहीं रखा इस लिये मैं ने वापस लौटा दी।”

एक शख्स ने किसी सूफ़ी को मजमअ में कोई चीज़ दी तो उन्होंने ने वापस कर दी। उस शख्स ने कहा: “आप ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अतिरिया क्यूं वापस कर दिया।” तो सूफ़ी साहिब ने फ़रमाया: “जो चीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये थी तुम ने इस में ग़ैरुल्लाह को शरीक कर लिया और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर क़नाअत न की तो मैं ने तेरा शिर्क तुझे वापस लौटा दिया।”

एक अरिफ़ ने पोशीदा तौर पर दी गई वोही चीज़ क़बूल कर ली जो अलानिया मिलने पर वापस लौटा दी थी। उन से इस का सबब पुछा गया तो फ़रमाया : “तुम ने अलानिया दे कर गुनाह किया तो मैं गुनाह में तुम्हारा शरीक नहीं बनना चाहता था और पोशीदा दे कर **अल्लाह** की फ़रमां बरदारी की तो मैं ने नेकी पर तुम्हारी मदद की।”

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान पौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفِي फ़रमाते हैं : “अगर मुझे मा'लूम हो कि कोई शख्स अपने सदके का ज़िक्र नहीं करेगा और किसी से बयान नहीं करेगा तो मैं ज़रूर उस का सदका क़बूल कर लूं।”⁽¹⁾

﴿4﴾.....ज़ाहिरी तौर पर लेने में ज़िल्लत और तौहीन है और मोमिन के लिये दुरुस्त नहीं कि वोह अपने नफ़्स को रुस्वा करे। बा'ज़ उ-लमा पोशीदा तौर पर दी गई चीज़ ले लेते थे जब कि अलानिया दी गई चीज़ नहीं लेते थे और फ़रमाया करते थे : “इस के ज़ाहिर करने में इल्म की रुस्वाई और अहले इल्म की तौहीन है। लिहाज़ा मैं इल्म को पस्त और अहले इल्म को रुस्वा कर के किसी दुन्यवी चीज़ को बुलन्द नहीं कर सकता।”

﴿5﴾.....पोशीदा तौर पर लेने में शिर्कत के शुबे से बचाव हो जाता है। चुनान्वे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “लोगों की मौजूदगी में जिसे कोई चीज़ बतौर हदिय्या दी जाए तो इस में लोग भी उस के साथ शरीक हैं।”⁽²⁾

अगर वोह चांदी या सोना हो तब भी हदिय्या ही रहेगा कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने महज़ चांदी को भी हदिय्या करार दिया है। चुनान्वे,

सय्यिदुल मुबल्लिग़िन, रहमतुल्लिल अलामीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अफ़ज़ल हदिय्या जो कोई शख्स अपने भाई को देता है वोह चांदी या उसे रोटी खिलाना है।”⁽³⁾

लिहाज़ा मजलिस में सब की रिज़ा मन्दी के बिगैर किसी एक को देना मकरूह है और शुबे से ख़ाली नहीं तो जब तन्हाई में इनफ़िरादी तौर पर लेगा तो शिर्कत के शुबे से बच जाएगा।

①.....قوت القلوب، الفصل الحادى والاربعون فى ذكر فـائل الفقر.....الخ، ج ٢، ص ٢٣٩، مفهوماً۔

②.....المعجم الكبير، الحديث: ١١٨٣، ج ١، ص ٨٥۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادى والاربعون فى ذكر فـائل الفقر.....الخ، ج ٢، ص ٣٣٩۔

जाहिरी तौर पर देने में चार हिक्मते :

﴿1﴾.....इख्लास, सच्चाई, अपने माल की लोगों के धोके और रियाकारी से सलामती है।

﴿2﴾.....जाहो मर्तबा को दूर करना, बन्दगी और गुर्बत को जाहिर करना, तकब्बुर और इस्तिग़ना के दा'वे से बरी होना और लोगों की निगाहों में नफ़्स को गिराना है।

हिक्मयत : सदक्क़ जाहिर करने की फ़ज़ीलत :

मा'रेफ़ते इलाही रखने वाले एक बुजुर्ग ने अपने शागिर्द से फ़रमाया : “अगर तुम सदक्क़ लो तो हर हाल में उसे जाहिर करो क्योंकि तुम दो में से एक शख्स से ख़ाली न होंगे एक शख्स वोह है कि जब तुम ऐसा करोगे तो उस के दिल से गिर जाओगे और येही मक्सूद है क्योंकि इस में तुम्हारे दीन की सलामती ज़ियादा और नफ़्स की आफ़ात कम हैं या दूसरा वोह शख्स कि तुम्हारे सच जाहिर करने के सबब उस के दिल में तुम्हारा मक़ाम बुलन्द होगा और तुम्हारा भाई भी येही चाहता है क्योंकि वोह तुम से जिस क़दर ज़ियादा महब्बत करेगा और तुम्हारी ता'जीम करेगा उस का षवाब ज़ियादा होगा और चूँकि तुम उस के लिये मज़ीद षवाब का बाइष बने लिहाज़ा तुम्हें भी अज़्र दिया जाएगा।

﴿3﴾.....अरिफ़ की नज़र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर होती है उस के हक़ में पोशीदा व अलानिया एक जैसे होते हैं। पस हाल का मुख़लिफ़ होना तौहीद में शिर्क हैं। बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ फ़रमाते हैं : “हम उस शख्स की दुआ का ए'तिबार नहीं करते जो पोशीदा तो ले ले मगर अलानिया लौटा दे। लोग मौजूद हों या ग़ाइब इन की तरफ़ मुतवज्जेह होना फ़ौरी नुक़सान का बाइष है बल्कि बन्दे की नज़र हमेशा **अल्लाह** वाहिद पर लगी रहे।”

हिक्मयत : अल्लाह देख रहा है !

मन्कूल है कि एक बुजुर्ग को अपने एक मुरीद से बहुत ज़ियादा महब्बत थी दूसरों को येह बात बहुत नागवार थी, बुजुर्ग ने लोगों के सामने उस मुरीद की फ़ज़ीलत जाहिर करने का इरादा किया। चुनान्वे, हर एक को एक एक मुर्गी दी और फ़रमाया : “तुम में से हर एक अकेला जाए और इसे वहां जा कर ज़ब्द करे जहां कोई न देख रहा हो।” लिहाज़ा हर शख्स ने तन्हाई में जा कर मुर्गी ज़ब्द कर दी लेकिन वोह मुरीद ज़िन्दा मुर्गी वापस ले आया। शैख़ ने दीगर मुरीदों से पूछा तो उन्होंने ने जवाब दिया हम ने शैख़ के हुक्म की ता'मील की है। फिर शैख़ ने मुरीदे ख़ास

से पूछा कि “तुम ने अपने दोस्तों की तरह मुर्गी ज़ब्ह क्यूं न की?” उस ने जवाब दिया : “मुझे कोई ऐसी जगह न मिली जहां मुझे कोई न देख रहा हो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो (मुझे) हर जगह मुलाहज़ा फ़रमा रहा है।” येह सुन कर शैख़ ने फ़रमाया : “इसी ख़ूबी की वजह से मैं इस की तरफ़ ज़ियादा मैलान रखता हूं क्यूंकि येह ग़ैरे खुदा की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।”

﴿4﴾.....अलानिया तौर पर देने में सुन्नते शुक्र को काइम करना है। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : (پ۰۳، الضحیٰ: ۱۱) وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब की ने'मत का ख़ूब चर्चा करो।

और छुपाना ने'मत की नाशुक्रि है।

नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने अ़ता कर्दा माल को पोशीदा रखने से मन्अ फ़रमाया और ऐसा करने वाले को बख़ील का साथी क़रार दिया। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

الَّذِينَ يَخْلُونُ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبَخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ (پ۰۵، النساء: ۳۷)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : जो आप बुख़ल करें और औरों से बुख़ल के लिये कहें और **अल्लाह** ने जो इन्हें अपने फ़ज़ल से दिया है उसे छुपाएं।

नीज़ हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ किसी बन्दे को ने'मत अ़ता फ़रमाता है तो वोह पसन्द करता है कि वोह ने'मत उस पर दिखाई दे।⁽¹⁾”

एक शख़्स ने किसी अरिफ़ को कोई चीज़ छुपा कर दी तो उन्होंने ने उसे उठा कर फ़रमाया : “येह दुन्या में से है और इसे ज़ाहिर करना अफ़ज़ल है जब कि उमूरे आख़िरत को पोशीदा रखना अफ़ज़ल है।”

इसी लिये बा'ज़ उ-लमा ने फ़रमाया : जब तुम्हें लोगों में अ़ता किया जाए तो ले लो फिर पोशीदा तौर पर लौटा दो और इस पर शुक्रिया अदा करने की तरगीब दी गई है। चुनान्चे,

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने लोगों का शुक्रिया अदा न किया उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का भी शुक्रिया अदा न किया।”⁽²⁾

और शुक्रिया अदा करना भी बदला देने के काइम मक़ाम है। चुनान्चे,

①.....سنن الترمذی، کتاب الادب، باب ماجاء ان الله تعالى يحب.....الخ، الحديث: ۲۸۲۸، ج ۴، ص ۳۷۴، مفهوماً۔

②.....سنن الترمذی، کتاب البر والصلة، باب ماجاء في الشكر لمن احسن اليك، الحديث: ۱۹۶۲، ج ۳، ص ۳۸۴۔

मुस्तफ़ा जाने रहमत ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो तुम्हारे साथ भलाई करे उसे इस का बदला दो अगर बदला नहीं दे सकते तो उस की अच्छी ता’रीफ़ करो और उस के लिये दुआ करो हत्ता कि तुम जान लो कि तुम ने बदला दे दिया।”⁽¹⁾

नीज़ जब मुहाजिरीन ने शुक्र के बारे में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह ﷺ हम ने उन लोगों (या’नी अन्सार) से बेहतर किसी को न देखा कि हम उन के पास ठहरे तो उन्होंने ने हमारे दरमियान अपने अमवाल भी तक्सीम कर दिये यहां तक कि हमें ख़ौफ़ होने लगा कि सारा अन्न येह ले जाएंगे।” तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : ऐसा हरगिज़ नहीं है, तुम ने जो इन का शुक्रिया अदा किया और इन की ता’रीफ़ की येही इस का बदला है।

फ़ैसलाउ ग़ज़ाली :

अब जब कि तुम ने येह मअानी समझ लिये तो जान लीजिये कि इस में लोगों का इख़िलाफ़ अस्ल मस्अले में इख़िलाफ़ नहीं बल्कि येह हालत में इख़िलाफ़ है। हकीक़ते हाल यूं वाजेह होगी कि हम क़तई फ़ैसला नहीं दे सकते कि हर हाल में पोशीदा देना अफ़ज़ल है या अलानिया ? बल्कि निय्यतों के बदलने से हुक्म और अहवाल व अश्खास के बदलने से निय्यतें बदल जाती हैं। पस मुख़्लिस शख़्स को अपने नफ़्स की हिफ़ज़त करनी चाहिये कि कहीं वोह धोके की रस्सी में न लटक जाए, तबीअत और शैतान के मक्रो फ़रैब में न फंस जाए। नीज़ दोनों सूरतों में धोके का अमल दख़्ल है मगर अलानिया देने की ब निस्बत पोशीदा देने में मक्रो फ़रैब ज़ियादा है।

पोशीदा तौर पर लेने में फ़रैब का दख़्ल इस तरह है कि इस की तरफ़ तबीअत का मैलान होता है। नीज़ इस में जाहो मर्तबा की हिफ़ज़त और लोगों की नज़रों से अपनी इज़्ज़त को गिरने से बचाना है और इस से भी एहतिराज़ है कि लोग इस की तरफ़ तौहीन आमेज़ नज़रों से देखें और देने वाले को मुनइम व मोहसिन ख़याल करें। येह ला इलाज बीमारी और नफ़्स में क़रार पकड़ती है। शैतान इस के ज़रीए अच्छे मअानी को ज़ाहिर करता है यहां तक कि मज़कूरा पांचों (पोशीदा देने के) मअानी को इल्लत बना कर पेश करता है। इन तमाम का मे’यार व कसोटी एक ही बात है, वोह येह कि उसे अपने सदका लेने का हाल खुल जाने का इतना ही ग़म हो जितना उसे अपने दूसरे अहबाब के सदका के ज़ाहिर होने से दुख होता है क्यूंकि अगर उस का मक्सद येह है कि लोग ग़ीबत, हसद, बद गुमानी या पर्दा दरी से बचें या देने वाले की पोशीदा देने पर इआनत या इल्म की ज़िल्लत से हिफ़ज़त मक्सूद हो तो येह तमाम बातें दूसरे भाई के सदके

का हाल खुलने से भी होंगी। अगर इस का हाल खुलने का इन्किशाफ़ दूसरों का हाल खुलने के इन्किशाफ़ से ज़ियादा भारी महसूस हो तो पोशीदा ले कि इन मअानी का बहाना बनाना महज़ झूट और शैतान का धोका है क्योंकि इल्म का ज़लील होना इस ए'तिबार से है कि वोह इल्म है न कि इस ए'तिबार से कि वोह ज़ैद या अम्र का इल्म है और ग़ीबत इस ए'तिबार से ममनूअ है कि येह महफूज़ इज़्ज़त को ऐब लगाना है न कि इस ए'तिबार से कि ख़ास तौर पर ज़ैद की इज़्ज़त को ऐब लगाना है। लिहाज़ा जो आदमी इन बातों को अच्छी तरह पेशे नज़र रखता है बा'ज़ अवकात शैतान उस से अज़िज़ आ जाता है वरना वोह हमेशा ज़ियादा अमल कर के कम फ़ाइदा पाता है।

जहां तक ज़ाहिरी तौर पर सदका देने का मस्अला है तो इस की तरफ़ तबीअत का मैलान इस लिये होता है कि इस से देने वाले को दिली खुशी होती है और उसे ऐसे कामों की तरगीब मिलती है। दूसरों के सामने ज़िक्र करने से मुराद येह है कि येह (या'नी लेने वाला) शख्स बहुत ज़ियादा शुक्र करने वाला है ताकि वोह उस की इज़्ज़त करें और उस पर माल खर्च करें। येह बातिनी ला इलाज बीमारी है और शैतान दीनदार आदमी पर उसी सूरत में कादिर होता है कि वोह उस के सामने ऐसे कामों को सुन्नत के तौर पर पेश करता है और कहता है : “शुक्र अदा करना सुन्नत है जब कि पोशीदा रखना रियाकारी है।” नीज़ उस के सामने हमारे ज़िक्र कर्दा (ज़ाहिर कर के देने वाले चार) मअानी पेश करता है ताकि उसे ज़ाहिर कर के देने पर उभारे हालांकि उस का मक्सद वोही होता है जो हम ने ज़िक्र कर दिया है। उस का मे'यार व कसोटी येह है कि वोह शुक्र की तरफ़ अपने नफ़्स का मैलान देखे यहां तक कि उस की ख़बर देने वाले को भी न पहुंचे और न उन लोगों तक पहुंचे जो उसे देने की रग़बत रखते हैं और जिन की आदत है कि वोह उसी को देते हैं जो पोशीदा रखता है और शुक्रिया अदा नहीं करता। अगर इस के नज़दीक येह अहवाल बराबर हों तो जान ले कि इस का मक्सद सुन्नत को काइम करना और ने'मत का इज़हार करना है वरना येह धोका है।

फिर जब वोह जान ले कि इस का सबब शुक्रिया अदा करने में सुन्नत को अपनाना है तो देने वाले को उस का हक़ अदा करने में ग़ाफ़िल न हो। पस वोह ग़ौर कर ले कि अगर वोह शुक्रिया अदा करने और इस के ज़ाहिर होने को पसन्द करता है तो चाहिये कि मख़फ़ी रखे और शुक्रिया अदा न करे क्योंकि उस के हक़ को पूरा करना येह है कि जुल्म पर उस की मदद न करे और उस से शुक्रिया अदा करने का मुतालबा करना जुल्म है और जब उस का हाल इस बात पर दलालत करे कि वोह शुक्रिया अदा करने को पसन्द नहीं करता और न इस का इरादा रखता है तो उस वक़्त उस का शुक्रिया अदा करे और उस का सदका ज़ाहिर करे। येही वजह है कि

हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने एक शख्स की ता'रीफ की गई तो आप ने इरशाद फरमाया : “तुम ने उस की गर्दन मार दी⁽¹⁾ अगर वोह सुनता तो कामयाबी न पाता ।”⁽²⁾ हालां कि आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कई लोगों की उन के सामने ता'रीफ की क्योंकि आप उन के यकीन के मुतअल्लिक मुतमइन थे और जानते थे कि येह चीज़ उन्हें नुक्सान नहीं देगी बल्कि उन की रग़बत में इज़ाफ़ा करेगी । चुनान्वे,
किसी के सामने उस की ता'रीफ करना कैसा ?

एक शख्स से इरशाद फरमाया : “येह जंगल वालों का सरदार है ।”⁽³⁾ ⁽⁴⁾

एक से इरशाद फरमाया : “जब तुम्हारे पास कौम का मुअज़्ज़ज़ शख्स आए तो उस की तकरीम करो ।”⁽⁵⁾ ⁽⁶⁾

एक शख्स की (फ़सीह व बलीग़) गुफ्तू सुन कर पसन्द फरमाई और इरशाद फरमाया : “إِنَّ مِنَ الْبَيِّنَاتِ لَسِحْرًا” या'नी बेशक बा'ज़ बयान जादू होते हैं ।”⁽⁷⁾

एक रिवायत में है कि “जब तुम में से किसी को अपने भाई की नेकी का इल्म हो तो उसे बता दे क्योंकि इस से नेकी में रग़बत बढ़ती है ।”⁽⁸⁾

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند البصريين، حديث أبي بكره..... الخ، الحديث: ٥٣٥، ٢٠، ج ٤، ص ٣٣٢، بتغير الفاظ۔

②....मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान مِير آतातुल मनाजीह، जि. 6 स. 455 पर इस के तहत फरमाते हैं : “वोह शख्स ऐसी तबीअत का है कि तेरी ता'रीफ़ सुन कर मगरूर व मुतकब्बिर हो जाएगा । ऐसे शख्स की मुंह पर ता'रीफ़ उसे नुक्सान देती है ।”

③....येह बात हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना कैश बिन आसिम तमीमी رَضِيَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ के मुतअल्लिक़ इरशाद फरमाई थी । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 347)

④.....المستدرک، کتاب معرفة الصحابة، ذکر قیس بن عاصم المنقری، الحديث: ٦٦٣، ج ٢، ص ٨٠٣۔

⑤....इस रिवायत का सबब कुछ यूँ है कि हज़रते सय्यिदुना जरीर बिन अब्दुल्लाह बजली رَضِيَ اللہ تَعَالٰی عَنْہُ अपनी कौम के सरदार और मुअज़्ज़ज़ शख्स थे । जब येह बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए तो आप صَلَّى اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की ता'ज़ीम व तौकीर फरमाई और उन के लिये अपनी चादरे मुबारक बिछा दी और इरशाद फरमाया : “जब तुम्हारे पास कौम का मुअज़्ज़ज़ शख्स आए तो उस की तकरीम करो ।”

(عمدة القاری لعینی، کتاب المناقب، باب مناقب الانصار، ذکر جریر بن عبد اللہ البجلي رضى اللہ تَعَالٰی عَنْہُ، ج ١، ص ٥٣٥)

⑥.....سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب اذا اتاکم کریم قوم فاکرموه، الحديث: ٣١٢، ج ٢، ص ٢٠٨، بتغير۔

⑦.....صحيح البخاری، کتاب الطب، باب من البیان سحرا، الحديث: ٥٤٦٤، ج ٢، ص ٣١۔

⑧.....تهذيب التهذيب، علم الجرح والتعديل، ج ١، ص ٢٢۔

एक रिवायत में है कि “जब किसी मोमिन (के सामने उस) की ता’रीफ़ की जाती है तो उस के दिल में ईमान बढ़ता है।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “जिस ने अपने नफ़्स को पहचान लिया लोगों की ता’रीफ़ उसे नुक़सान नहीं पहुंचाती।”

हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात से फ़रमाया : “जब मैं तुम्हारे साथ कोई भलाई करूं और इस पर तुम से ज़ियादा खुश होऊं और इसे अपने ऊपर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने’मत शुमार करूं तो तुम मेरा शुक्रिया अदा करो वरना मेरा शुक्रिया अदा न करो।”⁽²⁾

अपने दिल की निगरानी करने वाले को इन बारीक मअानी का लिहाज़ करना चाहिये क्योंकि इन मक़ासिद से ग़फ़लत के बा वुजूद आ’जा को अमल में लगा देना शैतान का कहकहा और खुशी है कि इस में थकावट ज़ियादा और नफ़अ कम है। इस किस्म के इल्म के मुतअल्लिक कहा जाता है कि एक मस्अला मा’लूम करना साल भर की इबादत से अफ़ज़ल है क्योंकि इल्म के ज़रीए ज़िन्दगी भर की इबादत ज़िन्दा होती है, जब कि जहालत की वजह से उम्र भर की इबादत मुर्दा और ख़त्म हो जाती है।

हर्फ़े आखिर :

लोगों के सामने लेना और अ़लाहिदगी में वापस करना तमाम रास्तों से उम्दा और महफूज़ रास्ता है। इसे मुलम्मअ साज़ी से दूर नहीं करना चाहिये। अलबत्ता मा’रिफ़त मुकम्मल हो जाए या’नी पोशीदा व ज़ाहिर बराबर हो जाए तो अलग बात है लेकिन ऐसा शख्स सुख़ गन्धक की तरह (नायाब) है जिस का ज़िक्र तो होता है लेकिन दिखाई नहीं देती। हम **अल्लाह** करीम عَزَّوَجَلَّ से अच्छी मदद और तौफ़ीक़ का सुवाल करते हैं।

सदका लेना अफ़ज़ल है या ज़क़ात :

(इस में दो मौक़िफ़ हैं) (1).....हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़वास, हज़रते सय्यिदुना जुनैद बग़दादी और एक गुरौहे सूफ़िया رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ تَعَالَى के नज़दीक़ सदका लेना अफ़ज़ल है।

①.....تهذيب التهذيب، علم الجرح والتعديل، ج ١، ص ٢٢ - المعجم الكبير، الحديث: ٢٢٢، ج ١، ص ١٤١ -

②.....قوت القلوب، الفصل الحادى والاربعون فى ذكر فائى الفقر.....الخ، ج ٢، ص ٣٢١ -

(वजहे तरजीह) क्यूँकि ज़कात लेने की सूरत में मसाकीन की मुज़ाहमत और इन पर तंगी करना है। नीज़ बा'ज़ अवकात ज़कात लेने में कुरआने पाक में ज़िक्र कर्दा औसाफ़ के मुताबिक़ सिफ़ते इस्तिहकाक़ की तकमील नहीं होती लेकिन सदके के मुआमले में चूँकि ज़ियादा वुस्अत है (इस लिये सदका लेना अफ़ज़ल है)।

(2)....कुछ हज़रात का मौक़िफ़ है कि ज़कात लेना अफ़ज़ल है न कि सदका।

(वजहे तरजीह) क्यूँकि येह वाजिब की अदाएंगी पर मदद करना है और अगर तमाम मसाकीन ज़कात लेना छोड़ दें तो सब गुनहगार होंगे। नीज़ ज़कात में एहसान जताना भी नहीं पाया जाता इस लिये कि येह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये वाजिब हक़ और उस के मोहताज बन्दों का रिज़क़ है। नीज़ ज़कात हाज़त के सबब ली जाती है और इन्सान यकीनी तौर पर अपनी हाज़त को जानता है जब कि सदका दैन के बदले में लेना होता है क्यूँकि अक़षर देने वाला उसे देता है जिस में कोई भलाई देखता है। नीज़ मसाकीन की मुवाफ़क़त ज़िल्लत व गुर्बत में ज़ियादा दाख़िल करती और तकब्बुर से दूर रखती है इस लिये कि बा'ज़ अवकात इन्सान सदका हदिय्ये के तौर पर ले लेता है और यूँ सदका और हदिय्ये में फ़र्क़ नहीं रहता मगर ज़कात में लेने वाले की ज़िल्लत और हाज़त वाजेह हो जाती है।

फैसलए ग़ज़ाली :

इस में दुरुस्त कौल येह है कि येह बात लोगों के अहवाल के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ होती है कि इस पर क्या ग़ालिब है और इस की निय्यत क्या है ?

अगर इस के सिफ़ते इस्तिहकाक़ से मुत्तसिफ़ होने में शुबा हो तो ज़कात नहीं लेनी चाहिये और जब मा'लूम हो कि वोह क़तई तौर पर मुस्तहिक्क़ है जैसा कि उस पर कोई क़र्ज़ हो और उसे पूरा करने की कोई सूरत न हो तो उसे ज़कात और सदके में इख़्तियार है।

अगर सदका देने वाले की सूरत येह हो कि अगर येह न लेता तो वोह सदका न देता तो सदका ले ले क्यूँकि ज़कात देने वाला उस के मुस्तहिक्क़ तक वाजिब ज़कात पहुंचा देगा। इस में ख़ैर में इज़ाफ़ा करना और मसाकीन पर वुस्अत करना है।

अगर माल सड़के के लिये रखा हो और ज़कात लेने की सूरत में मसाकीन पर तंगी भी न आती हो तो उसे इख़्तियार है और इन दोनों सूरतों में मुआमला मुख़लिफ़ है और अक़षर अहवाल में नफ़्स की सरकशी को तोड़ने और इसे रुस्वा करने में ज़कात लेना ज़ियादा मुअ्ष्भिर है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बेहतर जानता है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की हम्द, उस की मदद और हुस्ने तौफ़ीक़ से “असरारुज़्ज़कात” का बयान मुकम्मल हो गया। इस के फ़ौरन बा’द إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ “असरारुस्सौम” का बयान शुरू होगा।

दुआ :

तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जो तमाम ज़हानों का पालने वाला है और हमारे सरदार मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तमाम अम्बिया व मुर्सलीन, तमाम फ़िरिशतों, ज़मीन व आस्मान के हर मुक़र्रब बन्दे और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आलो अस्हाब पर ता क़ियामत हमेशा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमतें और ख़ूब सलाम हो। तमाम ता’रीफ़ें **अल्लाह** वहदहू लाशरीक के लिये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम को बस (काफ़ी) है और क्या अच्छा कारसाज़।



﴿.....अच्छी आदतों की नसीहत.....﴾

दा ‘वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 43 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इमामे आ ‘ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم की वसिय्यतें” सफ़हा 27 पर हज़रते सय्यिदुना इमामे आ ‘ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने अपने एक शागिर्द को यूं नसीहत फ़रमाई : “तुम हर शख्स को उस के मर्तबे के लिहाज़ से इज्ज़त देना, शुरफ़ की इज्ज़त और अहले इल्म की ता’ज़ीम व तौक़ीर करना, बड़ों का अदब व एहतिराम और छोटों से प्यार व महब्बत करना, आम लोगों से तअल्लुक़ काइम करना, फ़ासिक् व फ़ाजिर को ज़लील व रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोहबत इख़्तियार करना, सुल्तान की इहानत करने से बचना, किसी को भी हक़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आदात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़माए किसी की सोहबत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटिया शख्स की ता’रीफ़ न करना।”

रोज़ों का बयान

तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने अपने बन्दों पर एहसाने अजीम फ़रमाया कि इन से शैतान के मक्रो फ़रेब को दूर किया, उस की उम्मीद को मर्दूद और उस के गुमान को नाकाम कर दिया। रोज़ों को अपने दोस्तों के लिये क़लआ और ढाल बनाया। इन के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये और इन्हें इस बात की पहचान कराई कि इन के दिलों तक शैतान के पहुंचने का ज़रीआ ख़्वाहिशात हैं। ख़्वाहिशात को ख़त्म करने से नफ़से मुतमइन्ना दुश्मन शैतान को ख़त्म करने में ग़ालिब और क़वी होता है। मख़्लूक के काइद और सुन्नत पर चलाने वाले हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा, अहमदे मुज्ताबा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के आल व अस्हाब पर रहमत और ख़ूब सलाम हो जो रोशन बसीरत और तरजीह याफ़ता अक्लों वाले हैं।

फ़ज़ाइले रोज़ा के मुतअल्लिक 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

बेशक रोज़ा चौथाई ईमान है। क्योंकि

﴿1﴾.....रोज़ा आधा सब्र है।⁽¹⁾

﴿2﴾.....और सब्र आधा ईमान है।⁽²⁾

फिर रोज़े को येह खुसूसियत हासिल है कि दूसरे तमाम अरकान की ब निस्बत इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से ख़ास निस्बत हासिल है। चुनान्चे,

﴿3﴾.....हदीषे कुदसी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “हर नेकी का षवाब 10 गुना से ले कर 700 गुना तक है सिवाए रोज़ा के। बेशक येह मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा दूंगा।”⁽³⁾

इरशादे बारी तअ़ाला है :

اِنَّمَا يَوْئِي الصَّيْرُونَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ

حِسَابٍ ﴿٥٠﴾ (پ ۲۳، الزمر: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : साबिरों ही को उन का

षवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती।

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب في الصوم زكاة الجسد، الحديث: ۴۴۵، ج ۲، ص ۳۴۷۔

سنن الترمذی، كتاب الدعوات، باب: ۹۲، الحديث: ۳۵۳۰، ج ۵، ص ۳۰۸۔

②.....تاریخ بغداد، مطیع بن عبد اللہ بن مطیع بن راشد الکبری: ۱۹۷، ج ۱۳، ص ۲۲۷۔

③.....صحیح مسلم، كتاب الصيام، باب فضل الصيام، الحديث: ۱۱۵۱، ص ۵۷۹۔

صحیح ابن خزيمة، كتاب الصيام، باب ذکر اعطاء الرب الخ، الحديث: ۱۸۹۷، ج ۳، ص ۱۹۷، بتغییر قلیل۔

रोज़ा सब्र का निस्फ़ है इस का षवाब अन्दाज़ व हिसाब से बढ़ कर है और इस की फ़ज़ीलत जानने के लिये येही बात काफ़ी है कि सरवरे आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :

﴿4﴾.....उस ज़ात की क़सम जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है ! रोज़ादार के मुंह की बू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक मुश्क की खुशबू से बेहतर है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “येह शख्स अपनी ख़्वाहिश और खाने पीने को मेरे लिये छोड़ता है पस रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इस की जज़ा दूंगा ।” (1)

﴿5﴾.....जन्नत का एक दरवाज़ा है जिसे रय्यान कहा जाता है जिस में सिर्फ़ रोज़ादार दाख़िल होंगे । (2) रोज़े की जज़ा के तौर पर रोज़ादार से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मुलाक़ात का वा'दा किया गया है ।

﴿6﴾....रोज़ादार के लिये दो खुशियां हैं : एक खुशी इफ़्तार के वक़्त, दूसरी खुशी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात के वक़्त । (3)

﴿7﴾.....हर चीज़ का एक दरवाज़ा है और इबादत का दरवाज़ा रोज़ा है । (4)

﴿8﴾....रोज़ादार का सोना इबादत है । (5)

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जब माहे रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं, शयातीन को जकड़ दिया जाता है और एक मुनादी निदा करता है : ऐ भलाई के तालिब ! आगे बढ़ और ऐ बुराई चाहने वाले ! बाज़ आ ।” (6)

①.....صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول الله تعالى: يريدون ان يبدلوا.....الخ، الحديث: ٤٣٩٢، ج ٢، ص ٥٤٢۔

صحیح البخاری، کتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحديث: ١٨٩٣، ج ١، ص ٢٢٢، باختصار۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، الحديث: ١١٥٢، ص ٥٨١۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب فضل الصیام، الحديث: ١١٥١، ص ٥٨٠۔

④.....الزهد لابن المبارك، الجزء الحادى عشر، الحديث: ١٣٢٣، ص ٥٠٠، بتغییر قلیل۔

⑤.....شعب الایمان للبيهقي، باب فى الصیام، اخبار و حکایات فى الصیام، الحديث: ٣٩٣٨، ج ٣، ص ٢١٥۔

⑥.....سنن الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فى فضل شهر رمضان، الحديث: ٦٨٢، ج ٢، ص ١٥٥، بتغییر۔

हज़रते सय्यदुना वकीअ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَدِيدِ ने **اللَّهُ** के इस फ़रमाने आलीशान :

تَرْجَمَةُ كَنْزُ الْمَنَ : खाओ और पीओ रचता हुवा
كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْعَالِيَةِ ⑩
 सिला उस का जो तुम ने गुज़रे दिनों में आगे भेजा ।
 (प २९, الحاقة: २२)

के मुतअल्लिक़ फ़रमाया : इस से मुराद रोज़ों के अय्याम हैं क्योंकि इन दिनों उन्होंने ने खाना पीना छोड़ दिया और मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दुनिया में जोहद इख़्तियार करने और रोज़ा रखने के रुतबे पर फ़ख़ को जम्अ कर के इरशाद फ़रमाया ।

⑩...बेशक **اللَّهُ** नौजवान आबिद पर फ़िरिश्तों के सामने फ़ख़ करते हुए इरशाद फ़रमाता है : “ऐ मेरे लिये अपनी ख़्वाहिश को तर्क करने वाले, मेरे लिये अपनी जवानी ख़र्च करने वाले नौजवान ! तू मेरे नज़दीक मेरे बा’ज़ फ़िरिश्तों की तरह है ।” (1)

⑪.....आकाए दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रोज़ादार के मुतअल्लिक़ फ़रमाया कि **اللَّهُ** इरशाद फ़रमाता है : “ऐ मेरे फ़िरिश्तों ! मेरे बन्दे को देखो, इस ने अपनी ख़्वाहिश, अपनी लज़ज़त और अपना खाना पीना मेरे लिये छोड़ दिया ।” (2)

इरशादे बारी तआला है :

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةٍ
أَعْيُنٌ عَرَاةٍ يَبْصُرُونَهَا يَنْزِيلُهَا فِي الْبُحْرِ
 (प २१, السجدة: १७)

تَرْجَمَةُ كَنْزُ الْمَنَ : तो किसी जी को
 नहीं मा’लूम जो आंख की ठंडक उन के लिये छुपा रखी है सिला उन के कामों का ।

इस की तफ़सीर में एक कौल येह है कि इन लोगों का अमल रोज़े रखना है क्योंकि

اللَّهُ का फ़रमाने आलीशान है :

إِنَّا يُؤْتِي الصَّابِرِينَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ⑪
 (प २३, الزمر: १०)

तَرْजَمَةُ كَنْزُ الْمَنَ : साबिरों ही को उन
 का षवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती ।

①.....جمع الجوامع، حرف الهمزة، الحديث ५५३، ج २، ص २११، بتقدم وتأخر-

قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون: الصيام وترتيبه.....الخ، ج १، ص १३२، “مبذل” بدله “مبتدل”

②.....قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون: الصيام وترتيبه.....الخ، ج १، ص १३२، بتقدم وتأخر-

लिहाजा रोज़ादार को इस की जज़ा वाफ़िर और बे हिसाब दी जाएगी जो किसी गुमान और पैमाने के तहत नहीं होगी और मुनासिब येही है कि ऐसा ही हो क्यूंकि रोज़ा **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये है और इस की तरफ़ मन्सूब होने की वजह से इसे खुसूसी मक़ाम व मर्तबा हासिल है अगर्चे तमाम इबादात उसी के लिये हैं येह बिल्कुल ऐसे ही है जैसे बैतुल्लाह शरीफ़ को तमाम ज़मीन पर फ़ज़ीलत हासिल है अगर्चे तमाम ज़मीन उसी की है क्यूंकि बैतुल्लाह शरीफ़ को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ने अपनी तरफ़ मन्सूब किया है ।

दीगर इबादात पर रोज़े की अफ़ज़लियत की वजह :

इस की दो वुजूहात हैं : (1).....रोज़ा अमल को छोड़ने और इस से रुकने का नाम है और येह ज़ाती तौर पर पोशीदा है इस में दिखाई देने वाला कोई अमल नहीं जब कि दीगर तमाम आ'माल लोगों को नज़र आते हैं । रोज़े को **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ही मुलाहज़ा फ़रमाता है और वोह महज़ सब्र के ज़रीए बातिनी अमल है । (2).....येह दुश्मने खुदा (शैतान मर्दूद) पर ग़लबा पाने का ज़रीआ है क्यूंकि शैताने लईन का वसीला ख़्वाहिशात हैं (जिन के ज़रीए वोह बनी आदम को धोका देता है) और शहवात को तक्विय्यत खाने पीने से हासिल होती है इसी लिये हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक शैतान इन्सान में खून की तरह दौड़ता है पस भूक के ज़रीए इस के रास्तों को तंग करो ।” (1) इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहताशम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** से इरशाद फ़रमाया : “हमेशा जन्नत का दरवाज़ा खटखटाती रहो ।” उन्होंने ने अर्ज़ की : “किस चीज़ से ?” इरशाद फ़रमाया : “भूक से ।” (2)

अन करीब “मोहलिकात” के बयान में खाने की ख़राबी और इस के इलाज के ज़िम्न में भूक की फ़ज़ीलत बयान की जाएगी । लिहाजा (दीगर इबादात के मुक़ाबले में) बिल खुसूस रोज़ा शैतान की जड़ काटने वाला, उस के रास्तों को रोकने और तंग करने वाला है तो वोह खुसूसी तौर पर **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के साथ निस्बत का मुस्तहिक़ हुवा और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के दुश्मन की बेख़ कनी **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की मदद से ही मुमकिन है और मददे इलाही तब शामिले हाल होगी जब बन्दा दीने इलाही की मदद करे । चुनान्चे, कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद में इरशाद होता है :

①.....التفسير الكبير للرازي، اركان الاستعاذة، ج ١، ص ٨٥۔

قوت القلوب، الفصل السابع والعشرون: كتاب اساس المريدين.....الخ، ج ١، ص ١٤٠۔

②.....كشف الخفاء، حرف الدال المهملة، الحديث: ١٣٢٦، ج ١، ص ٣٦٤۔

قوت القلوب، الفصل التاسع والثلاثون في ترتيب الاقوات.....الخ، ج ٢، ص ٢٨٨، مفهوم

إِنْ تَنْصُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُخَيِّتْ
أَقْدَامَكُمْ ⑤ (پ ۲۶، محمد: ۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अगर
तुम दीने खुदा की मदद करोगे **अल्लाह** तुम्हारी
मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा ।

पस इब्तिदाअन जिहो जहद बन्दे का काम है और हिदायत के साथ बदला **अल्लाह**
عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है । इसी लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا
(پ ۲۱، العنکبوت: ۲۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और जिन्हों ने हमारी
राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते
दिखा देंगे ।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُغَيِّرُوا مَا
بِأَنْفُسِهِمْ ⑥ (پ ۱۳، الرعد: ۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह**
किसी क़ौम से अपनी ने'मत नहीं बदलता जब
तक वोह खुद अपनी हालत न बदल दें ।

और येह तब्दीली ख़्वाहिशात की कषरत की वजह से हुई क्यूंकि ख़्वाहिशात शैतान की
चरागाहें हैं और जब तक येह तरोताज़ा रहती हैं शैतान का आना जाना बन्द नहीं होता और जब
तक वोह आता रहता है बन्दे के सामने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जलाल ज़ाहिर नहीं होता और वोह
इस की मुलाक़ात से पर्दे में रहता है । (इसी लिये) मक्की मदनी सुल्तान, रहमते अ़लमियान
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अगर बनी आदम के दिलों पर शयातीन चक्कर न
लगाते तो वोह आस्मानों की बादशाही देख लेते ।” (1)

इसी वजह से रोज़ा इबादत का दरवाज़ा और ढाल बन गया । जब इस की फ़ज़ीलत इस
क़दर है तो इस के अरकान व सुनन को बयान करने के साथ ज़ाहिरी व बातिनी शराइत को बयान
करना ज़रूरी है । हम इसे तीन फ़स्तलों में बयान करेंगे ।

﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرِ اللَّهُ.....﴾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

पहली फ़स्ल : रोज़े के वाजिबात, जाहिरी सुन्नतों और रोज़ा तोड़ने वाले लाज़िम उमूर का बयान

जाहिरी वाजिबात :

रोज़े के जाहिरी वाजिबात तो छे हैं :

﴿1﴾.....माहे रमज़ान शुरू होने का ख़याल रखना : येह चांद देखने से होता है और अगर मतलब अब्र आलूद हो तो शा'बान के तीस दिन पूरे करे। रूयत से मुराद इल्म है और येह एक आदिल आदमी के कौल से हासिल हो जाता है लेकिन चूँकि इबादत में मोहतात तरीका इख़्तियार किया गया है इसी लिये शव्वाल का चांद दो आदिल शख्सों के कौल से षाबित होता है और जिस ने किसी आदिल शख्स से सुना और उसे उस के कौल पर ए'तिमाद और उस के सच्चा होने का गुमान ग़ालिब हो तो उस पर रोज़ा लाज़िम है अगरचें काज़ी फैसला न करे। लिहाज़ा अपनी इबादत के मुआमले में हर शख्स अपने ग़ालिब गुमान की पैरवी करे।

अगर किसी शहर में चांद दिखाई दे और दूसरे में दिखाई न दे और दोनों के दरमियान दो मरहलों (या'नी दो दिन की मसाफ़त) से कम फ़ासिला हो तो सब पर रोज़ा वाजिब है और अगर दो मरहलों से ज़ियादा फ़ासिला हो तो हर शहर के लिये अलग हुक्म होगा और वुजूब मुतअद्दी न होगा (या'नी ऐसा नहीं कि एक शहर में वाजिब हो गया तो दूसरे में भी वाजिब हो)।⁽¹⁾

निय्यत के मुतअल्लिक अहक़ाम :

﴿2﴾.....निय्यत करना : हर रोज़े के लिये रात को पुख़्ता निय्यत करना और इसे मुतअय्यन करना लाज़िम है। हम ने "كُلَّ لَيْلَةٍ" (हर शब) की कैद इस लिये लगाई कि अगर एक ही बार पूरे रमज़ान के रोज़ों की निय्यत कर ली तो येह काफ़ी न होगी।

①..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 979 पर है : एक जगह चांद हुवा तो वोह सिर्फ़ वहीं के लिये नहीं, बल्कि तमाम जहां के लिये है। मगर दूसरी जगह के लिये इस का हुक्म उस वक़्त है कि उन के नज़दीक उस दिन तारीख़ में चांद होना शरई षुबूत से षाबित हो जाए या'नी देखने की गवाही या काज़ी के हुक्म की शहादत गुज़रे या मुतअद्द जमाअतें वहां से आ कर ख़बर दें कि फुलां जगह चांद हुवा है और वहां लोगों ने रोज़ा रखा या ईद की है।"

“میتة” (रात) की कैद इस लिये लगाई कि अगर दिन में (जहवए कुब्रा से पहले) निय्यत की तो येह नफ़ली रोज़े के लिये तो कार आमद हो सकती है लेकिन अदाए रोज़ए रमज़ान, कज़ा और नज़्र के रोज़ों के लिये काफी न होगी।⁽¹⁾

“معينة” (मुतअय्यन करना) की कैद इस लिये लगाई कि अगर मुतलक रोज़े की निय्यत की या मुतलक फ़र्ज की निय्यत की तो येह निय्यत सहीह नहीं जब तक कि यूं निय्यत न करे कि येह **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ से रमज़ान का फ़र्ज रोज़ा है।⁽²⁾

“جائمة” की कैद इस लिये लगाई कि अगर किसी ने शक की रात (या’नी शा’बान की तीसवीं रात) निय्यत की, कि अगर कल रमज़ान हुवा तो रोज़ा रखूंगा तो येह निय्यत सहीह नहीं क्योंकि येह यकीनी नहीं मगर येह कि वोह अपनी निय्यत की निस्बत किसी आदिल शाहिद के कौल की तरफ़ करे और उस आदिल के कौल में ग़लती या झूट का एहतिमाल यकीन को नहीं बदलता या मौजूदा सूरते हाल की तरफ़ मन्सूब करे जैसे रमज़ानुल मुबारक की आख़िरी रात शक पड़ना कि येह निय्यत की पुख़्तगी को नहीं बदलता या इजतिहाद की तरफ़ मन्सूब करे जैसे कोई शख़्स किसी तहख़ाने में कैद हो और इजतिहाद की बुन्याद पर उसे ज़न्ने ग़ालिब हो जाए कि रमज़ान शरीफ़ दाख़िल हो चुका है तो उस का शक उसे निय्यत से नहीं रोकेगा और जब शक की रात वोह शक में होगा तो ज़बान से पुख़्ता करना कुछ फ़ाइदा न देगा क्योंकि निय्यत का महल दिल है और इस में शक के साथ पुख़्ता इरादा मुतसव्वर नहीं हो सकता। जैसा कि अगर वोह रमज़ान के दरमियान में कहे : “अगर कल रमज़ान हुवा तो मैं रोज़ा रखूंगा।” तो येह बात उसे नुक्सान नहीं देती क्योंकि येह अल्फ़ाज़ में तरहुद है और निय्यत के महल (या’नी दिल) में तरहुद नहीं बल्कि उसे यकीन है कि कल रमज़ान है। जिस ने रात को रोज़े की निय्यत करने के बा’द ख़ाया तो उस की निय्यत फ़ासिद न हुई। अगर किसी औरत ने हैज़ में रोज़े की निय्यत की फिर फ़ज़्र से पहले पाक हो गई तो उस का रोज़ा सहीह है।

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : दिन में निय्यत करना भी मुफ़ीद है। चुनान्वे बहारे शरीअत, जिल्द अब्वल, सफ़हा 967 पर है : “अदाए रोज़ए रमज़ान और नज़्रे मुअय्यन और नफ़ल के रोज़ों के लिये निय्यत का वक़्त गुरुबे आफ़ताब से जहवए कुबरा तक है, इस वक़्त में जब निय्यत कर ले, येह रोज़े हो जाएंगे।”

②..... अहनाफ़ के नज़दीक : मुतलक निय्यत भी मुफ़ीद है। चुनान्वे बहारे शरीअत, जिल्द अब्वल, सफ़हा 970 पर है : “रमज़ान की अदा और नफ़ल व नज़्रे मुअय्यन मुतलक रोज़े की निय्यत से हो जाते हैं। ख़ास इन्हीं की निय्यत ज़रूरी नहीं। यूं ही नफ़ल की निय्यत से भी अदा हो जाते हैं, बल्कि ग़ैर मरीज़ व मुसाफ़िर ने रमज़ान में किसी और वाजिब की निय्यत की जब भी उसी रमज़ान का होगा।”

﴿3﴾.....रोज़ा याद होते हुए जान बूझ कर पेट तक कोई चीज़ पहुंचाने से रुकना : खाने पीने, नाक में दवाई चढ़ाने और हुक़ना लेने से रोज़ा फ़ासिद हो जाता है और रग कटवाने, पछने लगवाने, सुरमा डालने और कान या उज़्वे तनासुल में सलाई दाख़िल करने से रोज़ा फ़ासिद नहीं होता अलबत्ता अगर उज़्वे तनासुल में ऐसी चीज़ डाल दे जो मषाने तक पहुंच जाए तो रोज़ा टूट जाएगा ।

बिला क़स्द रास्ते का जो गुबार या मख़बी पेट तक पहुंच जाए या कुल्ली से जो चीज़ पेट तक पहुंच जाए तो इस से रोज़ा नहीं टूटेगा । हां, अगर कुल्ली करने में मुबालगा किया तो रोज़ा टूट जाएगा क्यूंकि वोह कोताही करने वाला है । हम ने “عَنْتًا” की कैद इसी लिये लगाई है । रोज़ा याद होने की कैद इस लिये लगाई है ताकि भूलने वाले का इस्तिषना हो जाए क्यूंकि भूल कर खाने पीने से रोज़ा नहीं टूटता । जिस ने दिन के दोनों अतराफ़ में जान बूझ कर खाया फिर उसे मा’लूम हो गया कि उस ने यकीनी तौर पर दिन के वक़्त खाया है तो उस पर क़ज़ा लाज़िम है और अगर (यकीन न हुवा और) वोह अपने गुमान और इजतिहाद पर क़ाइम रहा तो उस पर क़ज़ा लाज़िम नहीं लिहाज़ा उसे चाहिये कि दिन के शुरूअ (तुलूअ सुब्हे सादिक़ के वक़्त) और आख़िर में (या’नी गुरुबे आफ़ताब के वक़्त) रात के ग़ालिब गुमान के बिगैर न खाए ।

﴿4﴾.....जिमाअ से रुकना : इस की हद हश्फ़ा का ग़ाइब होना है । अगर भूल कर जिमाअ किया तो रोज़ा नहीं टूटा । अगर रात को जिमाअ किया या एहतिलाम के सबब जुनुबी हो गया तो रोज़ा नहीं टूटा । बीवी से सोहबत में मशगूल था कि फ़ज़्र तुलूअ हो गई अगर फ़ौरन जुदा हो गया तो रोज़ा सहीह है और अगर ठहरा रहा तो रोज़ा फ़ासिद हो जाएगा और कफ़़ारा लाज़िम होगा ।⁽¹⁾

﴿5﴾.....मनी ख़ारिज करने से रुकना : इस से मुराद जिमाअ या बिगैर जिमाअ के मनी ख़ारिज करना है क्यूंकि इस से रोज़ा टूट जाता है और अपनी बीवी का बोसा लेने या इस के साथ लैटने से जब तक इन्ज़ाल न हो रोज़ा नहीं टूटता लेकिन येह मकरूह है अलबत्ता अगर बुद्ध हो या खुद पर क़ाबू रख सकता हो तो बोसा लेने में हरज नहीं लेकिन न लेना बेहतर है । अगर बोसा लेने से इन्ज़ाल का डर हो और बोसा लिया और मनी ख़ारिज हो गई तो इस की कोताही की वजह से रोज़ा टूट जाएगा ।

①..... इस सूरत में अहनाफ़ के नज़दीक : क़ज़ा वाजिब है कफ़़ारा नहीं । चुनान्चे, बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल, सफ़हा 990 पर है : “सुब्हे से पहले या भूल कर जिमाअ में मशगूल था, सुब्हे होते ही याद आने पर फ़ौरन जुदा हो गया तो कुछ नहीं और इसी हालत पर रहा तो क़ज़ा वाजिब है, कफ़़ारा नहीं ।”

कै के अहकाम :

﴿6﴾.....कै (उल्टी) करने से बचना : जान बूझ कर कै करने से रोज़ा फ़ासिद हो जाता है, अगर बिला इख़्तियार कै आ जाए तो रोज़ा नहीं टूटेगा।⁽¹⁾ अगर अपने हल्क़ या सीने से बलग़म खींच कर निगल ली तो रोज़ा नहीं टूटेगा इस में इब्तिलाए आम की वजह से रुख़्सत है। अलबत्ता मुंह में पहुंचने के बा'द निगले तो रोज़ा टूट जाएगा।

रोज़ा तोड़ने से लाज़िम होने वाले उमूर :

रोज़ा तोड़ने से चार बातें लाज़िम आती हैं : (1).....क़ज़ा (2).....कफ़ारा (3).....फ़िदया और (4).....रोज़ादारों से मुशाबहत इख़्तियार करते हुए बाक़ी दिन खाने पीने से रुके रहना।

तफ़सील :

﴿1﴾.....क़ज़ा : येह हर मुकल्लफ़ मुसलमान पर वाजिब है, ख़्वाह उज़्र की वजह से रोज़ा छोड़े या बिग़ैर उज़्र के, हाइज़ा रोज़े की क़ज़ा करेगी इसी तरह मुर्तद भी (जब दोबारा इस्लाम लाए तो ज़मानए इर्तिदाद की) क़ज़ा करेगा (अहनाफ़ के नज़दीक नहीं करेगा) लेकिन काफ़िर, बच्चे और पागल पर कोई क़ज़ा नहीं, क़ज़ाए रमज़ान के रोज़े मुसलसल रखना ज़रूरी नहीं इकठ्ठे या अलाहिदा अलाहिदा जैसे चाहे क़ज़ा कर सकता है।

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : कै से रोज़ा टूटने न टूटने की दर्जे ज़ैल सूरेतें हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़हा 1048 पर है : “﴿1﴾ रोज़े में खुद ब खुद कितनी ही कै (उल्टी) हो जाए (ख़्वाह बालटी ही क्यूं न भर जाए) इस से रोज़ा नहीं टूटता। ﴿2﴾ अगर रोज़ा याद होने के बा वुजूद क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) कै की और अगर वोह मुंह भर है (या'नी जिसे बिला तकल्लुफ़ न रोका जा सके) तो अब रोज़ा टूट जाएगा। ﴿3﴾ क़स्दन मुंह भर होने वाली कै से भी उस सूरेत में रोज़ा टूटेगा जब कि कै में खाना (या पानी) या सफ़रा (या'नी कड़वा पानी) या खून आए। ﴿4﴾ अगर कै में सिर्फ़ बलग़म निकला तो रोज़ा नहीं टूटेगा। ﴿5﴾ क़सदन कै की मगर थोड़ी सी आई, मुंह भर न आई तो अब भी रोज़ा न टूटा। ﴿6﴾ मुंह भर से कम कै हुई और मुंह ही से दोबारा लौट गई या खुद ही लौटा दी, इन दोनों सूरेतों में रोज़ा नहीं टूटेगा। ﴿7﴾ मुंह भर कै बिला इख़्तियार हो गई तो रोज़ा न टूटा अलबत्ता अगर इस में से एक चने के बराबर भी वापस लौटा दी तो रोज़ा टूट जाएगा और एक चने से कम हो तो रोज़ा न टूटा।”

﴿2﴾.....कफ़ारा : कफ़ारा फ़क़त जिमाअ से वाजिब होता है। मनी ख़ारिज करने, खाने पीने और जिमाअ के इलावा उमूर से कफ़ारा लाजिम नहीं आता।⁽¹⁾

रोज़े का कफ़ारा :

एक गुलाम आज़ाद करना, अगर गुलाम मुयस्सर न हो तो लगातार दो माह के रोज़े रखना, अगर इस से भी अज़िज़ हो तो साठ मिस्कीनों को खाना खिलाना हर एक को एक एक मुद (या'नी एक किलो गन्दुम) देना है।⁽²⁾

﴿3﴾.....बाक़ी दिन में न खाना : जिस ने रोज़ा तोड़ कर ना फ़रमानी की या कोताही की उस पर वाजिब है कि दिन का बक़िया हिस्सा खाने पीने से बाज़ रहे। हाइज़ा जब पाक हो तो उस पर बक़िया दिन खाने पीने से रुकना ज़रूरी नहीं। मुसाफ़िर जब दो दिन की मसाफ़त तै कर के आए तो उस पर भी खाने पीने से रुकना ज़रूरी नहीं और शक के दिन अगर एक अदिल शख़्स चांद नज़र आने की ख़बर दे तो खाना पीना छोड़ना ज़रूरी है और सफ़र के दौरान इफ़तार के बजाए रोज़ा रखना अफ़ज़ल है। अलबत्ता अगर ताक़त न हो तो न रखे, जिस दिन सफ़र शुरूअ करना हो और दिन की इब्तिदा में घर में हो तो उस दिन का रोज़ा न छोड़े और रोज़े की हालत में सफ़र से आए तो भी रोज़ा न तोड़े।

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : दर्जे ज़ैल सूरतों में क़ज़ा और कफ़ारा दोनों लाजिम हैं।

चुनान्वे बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 991 पर है : “रमज़ान में रोज़ादार मुकल्लफ़ मुक़ीम ने अदाए रोज़ए रमज़ान की निय्यत से रोज़ा रखा और किसी आदमी के साथ जो क़ाबिले शहवत है, उस के आगे या पीछे के मक़ाम में जिमाअ किया, इन्ज़ाल हुवा हो या नहीं या उस रोज़ादार के साथ जिमाअ किया गया या कोई ग़िज़ा या दवा खाई या पानी पिया या कोई चीज़ लज्ज़त के लिये खाई या पी या कोई ऐसा फ़ै'ल किया, जिस से इफ़तार का गुमान न होता हो और उस ने गुमान कर लिया कि रोज़ा जाता रहा फिर क़स्दन खा पी लिया (मषलन फ़स्द या पंछना लिया या सुरमा लगाया या जानवर से वती की या औरत को छुवा या बोसा लिया या साथ लैटाया या मुबाशरते फ़ाहिशा की, मगर इन सब सूरतों में इन्ज़ाल न हुवा या पाख़ाने के मक़ाम में खुशक उंगली रखी, अब इन अफ़आल के बा'द क़स्दन खा लिया) तो इन सब सूरतों में रोज़े की क़ज़ा और कफ़ारा दोनों लाजिम हैं।”

②..... अहनाफ़ के नज़दीक : रोज़े के कफ़ारे का तरीक़ा दर्जे ज़ैल है।

चुनान्वे फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, सफ़्हा 1084 पर है : “रोज़ा तोड़ने का कफ़ारा येह है कि मुमकिन हो तो एक बांदी या गुलाम आज़ाद करे और येह न कर सके मषलन उस के पास न लौंडी, गुलाम न इतना माल कि ख़रीद सके, या माल तो है मगर गुलाम मुयस्सर नहीं जैसा कि आज कल लौंडी गुलाम नहीं मिलते। तो अब पै दर पै साठ रोज़े रखे। येह भी अगर मुमकिन न हो तो साठ मिस्कीनों को पेट भर कर दोनों वक़्त खाना खिलाए येह ज़रूरी है कि जिस को एक वक़्त खिलाया दूसरे वक़्त भी उसी को खिलाए। येह भी हो सकता है कि साठ मसाकीन को एक एक सदक़ए फ़ित्र या'नी तक़रीबन 2किलो ग्राम से 80 ग्राम कम गैहूँ या इस की रक़म का मालिक कर दिया जाए। एक ही मिस्कीन को इकठ्ठे साठ सदक़ए फ़ित्र नहीं दे सकते। हां येह कर सकते हैं कि एक ही को साठ दिन तक रोज़ाना एक एक सदक़ए फ़ित्र दें।” (ملخص از رد المحتار ج 3 ص 390)

④.....फ़िदया : हामिला और दूध पिलाने वाली को अगर बच्चे पर खौफ़ की वजह से रोज़ा छोड़ना पड़े तो इन पर फ़िदया वाजिब है⁽¹⁾ कि हर दिन के बदले एक मिस्कीन को एक मुद (या'नी एक किलो) गन्दुम दें और क़ज़ा भी करें और शैख़े फ़ानी (या'नी बहुत बुढ़ा शख़्स)⁽²⁾ हर दिन के बदले एक मुद गन्दुम दे।

रोज़े की सुन्नतें :

(1)....सहरी में ताख़ीर करना (2).....नमाज़े मग़रिब से पहले ख़जूर या पानी से इफ़तार में जल्दी करना (3).....ज़वाल के बा'द मिस्वाक न करना⁽³⁾ (4)....माहे रमज़ान में ख़ूब सखावत करना जैसा कि “किताबुज़्ज़कात” में इस के फ़ज़ा़इल बयान हो चुके हैं (5).....कुरआने पाक का दौर करना (या'नी सुनना सुनाना) (6).....मस्जिद में ए'तिकाफ़ करना।

ख़ुसूसन आख़िरी अशरे में कि प्यारे मुस्त्फ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आदते मुबारका थी कि “जब आख़िरी अशरा आता तो बिस्तर लपेट देते और इबादत पर कमरबस्ता हो जाते, खुद भी ख़ूब इबादत करते और घर वालों को भी तरगीब दिलाते।”⁽⁴⁾ या'नी : इबादत पर हमेशगी इख़्तियार करते क्यूंकि इस अशरह में लैलतुल क़द्र है और ज़न्ने ग़ालिब येह है कि येह ताक़ रातों में है और ज़ियादा इमकान इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं रात का है।

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : हामिला और दूध पिलाने वाली पर सिर्फ़ क़ज़ा लाज़िम, फ़िदया वाजिब नहीं। चुनान्वे, शैख़ुल इस्लाम बुरहानुद्दीन अबुल हसन अली बिन अबी बक्र फ़िरग़ानी मरग़िनानी قُدِّسَ سِرُّهُ الثُّوْرَانِ फ़रमाते हैं : “हम्ल वाली या दूध पिलाने वाली औरत को अगर अपनी या बच्चे की जान जाने का सहीह अन्देशा हो तो रोज़ा न रखें बा'द में क़ज़ा कर लें इस सूत में न इन पर कफ़़ारा है न फ़िदया।

(ماخوذ از الهدایه شرح بدایة المبتدی، کتاب الصوم، باب ما یوجب القضاء و الکفارة، ج ۱، ص ۱۲۳)

②..... फैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्वल, सफ़हा 1076 पर है : “शैख़े फ़ानी या'नी वोह मुअम्मर बुजुर्ग जिन की उम्र इतनी बढ़ चुकी है कि अब वोह बे चारे रोज़ बरोज़ कमज़ोर ही होते चले जाएंगे। जब वोह बिल्कुल ही रोज़ा रखने से आजिज़ हो जाएं। या'नी न अब रख सकते हैं न आयन्दा रोज़े की ताक़त आने की उम्मीद है उन्हें अब रोज़ा न रखने की इजाज़त है। लिहाज़ा हर रोज़े के बदले में (बतौरै फ़िदया) एक सदक़ए फ़ित्र (सदक़ए फ़ित्र की मिक्दार 2 किलो ग्राम से 80 ग्राम कम है) की मिक्दार मिस्कीन को दें।”

③..... बहारे शरीअत, जिल्द अब्वल, सफ़हा 997 पर है : “रोज़े में मिस्वाक करना मकरूह नहीं, बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है रोज़े में भी मसनून है। मिस्वाक खुशक हो या तर अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करे या बा'द किसी वक़्त मकरूह नहीं। अकषर लोगों में मशहूर है कि दोपहर बा'द रोज़ादार के लिये मिस्वाक करना मकरूह है, येह हमारे मज़हब (या'नी अहनाफ़) के ख़िलाफ़ है।”

अलबत्ता, मुजद्दिदे आ'ज़म आ'ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज्विय्या, जि. 1 स. 511 पर फ़रमाते हैं कि “अगर मिस्वाक चबाने से रेशे छूटें या मज़ा महसूस हो तो ऐसी मिस्वाक रोज़े में नहीं करना चाहिये।”

④..... قوت القلوب، الفصل العشرون فی ذکر احیاء الیالی..... الخ، ج ۱، ص ۱۱۵۔

ए'तिकाफ़ के अहकाम :⁽¹⁾

ए'तिकाफ़ में तसलसुल काइम रखना (मुसलसल दस दिन मस्जिद में ठहरना) ज़ियादा मुनासिब है और अगर मुसलसल ए'तिकाफ़ करने की नज़्र मानी या इस की निय्यत की (और ए'तिकाफ़ किया) तो बिना ज़रूरत मस्जिद से निकलने की वजह से ए'तिकाफ़ टूट जाएगा जैसे वोह किसी की इयादत के लिये या गवाही के लिये या जनाज़े के लिये या किसी से मुलाक़ात के लिये या ताज़ा वुजू करने के लिये निकले (जब कि पहले से बा वुजू हो) ।

अगर क़ज़ाए हाज़त के लिये निकला तो ए'तिकाफ़ नहीं टूटेगा उसे चाहिये कि घर में वुजू करे और किसी दूसरे काम में मशगूल न हो । हदीषे मुबारका में है कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सिर्फ़ क़ज़ाए हाज़त के लिये तशरीफ़ ले जाते थे और चलते चलते ही बीमार पुर्सी भी फ़रमा लेते थे ।”⁽²⁾

जिमाअ करने से ए'तिकाफ़ का तसलसुल टूट जाता है मगर बोसा लेने से नहीं टूटता और मस्जिद में खुशबू लगाने, अक़दे निकाह करने, खाने (पीने) सोने और तशत में हाथ धोने में कोई हरज नहीं, मुसलसल ए'तिकाफ़ में इन सब कामों की ज़रूरत होती है और बा'ज़ बदन को मस्जिद से बाहर निकालने से ए'तिकाफ़ का तसलसुल नहीं टूटता कि हुज़ूरे अन्वर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपना सरे अन्वर हुज़रए मुबारका की तरफ़ झुका देते तो उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا हुज़रे में खड़ी खड़ी ही मूए मुबारक में कंधी कर देती ।⁽³⁾

जब मो'तकिफ़ क़ज़ाए हाज़त से लौटे तो उसे दोबारा ए'तिकाफ़ की निय्यत करना ज़रूरी है और अगर पहले ही दस दिन की निय्यत कर चुका है तब भी नई निय्यत करना अफ़ज़ल है ।

①..... ए'तिकाफ़ के अहकाम जानने और तफ़्सीली मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल सफ़हा 1173 ता 1280 का मुतालआ कीजिये ।..... इल्मिय्या

②..... صحيح مسلم، كتاب الحيض، باب جواز غسل الحائض..... الخ، الحديث 294، ص 140، باختصار۔

سنن ابی داود، کتاب الصوم، باب المعتكف يعود المريض، الحديث 244، ج 2، ص 92، باختصار۔

③..... صحيح مسلم، كتاب الحيض، باب جواز غسل الحائض..... الخ، الحديث 294، ص 140۔

दूसरी फ़स्ल : रोज़े के असरार और इस की बादिनी शराइव

जान लीजिये कि रोज़े के तीन दर्जे हैं :

(1).....अवाम का रोज़ा (2).....ख़वास का रोज़ा और (3).....अख़सुल ख़वास का रोज़ा ।

तफ़सील :

आम लोगों का रोज़ा येह है कि बदन और शर्मगाह को ख़्वाहिश पूरी करने से रोकना जैसा कि पहले गुज़र चुका है ।

ख़ास लोगों का रोज़ा (खाने पीने और जिमाअ से रुकने के साथ साथ) कान, आंख, ज़बान, हाथ, पाउं और तमाम आ'जा को गुनाहों से रोकना है ।

ख़ासुल ख़ास लोगों का रोज़ा दिल को बुरे खयालात और दुन्यवी फ़ि़क़्रों बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा हर चीज़ से मुकम्मल तौर पर ख़ाली करना है । इस सूरत में जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और क़ियामत के सिवा कोई दूसरी फ़ि़क़्र या दुन्यवी फ़ि़क़्र आएगी तो रोज़ा टूट जाएगा । अलबत्ता अगर दुन्यवी फ़ि़क़्र दीन के लिये हो तो इस का हुक्म मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि येह ज़ादे आख़िरत से है न कि दुन्या से । बा'ज़ अहले दिल हज़रात का कौल है कि “जो शख्स दिन के वक़्त येह बात सोचे कि किस चीज़ से इफ़्तार करूंगा तो उस पर ख़ता लिख दी जाती है क्यूंकि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ल और उस के रिज़्के मौज़ुद (या'नी उस ने रिज़्क देने का जो वा'दा फ़रमाया है उस) पर कामिल यक़ीन न होने की दलील है ।”

येह (आख़िरी दर्जा) अम्बिया, सिदीक़ीन और मुक़र्रबीन عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का रुतबा है इस की तफ़सील में ज़ियादा कलाम नहीं किया जाएगा लेकिन इस की अमली तहक़ीक़ बयान की जाएगी क्यूंकि येह रोज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ लौ लगाने और मुकम्मल तौर पर ग़ैरुल्लाह से कनारा कश होने से हासिल होता है जब कि बन्दा इस इरशादे बारी तआला को अपना ओढ़ना बिछौना बना ले ।

قُلِ اللّٰهُ لَا تُمَدَّرُ هُمْ فِيْ حَوْضِهِمْ
يَلْعَبُوْنَ ۝ (پہلے، الانعام: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** कहो फिर उन्हें छोड़ दो उन की बेहदगी में खेलता ।

ख़ास लोगों का रोज़ा औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का रोज़ा है और वोह येह कि अपने आ'जा को गुनाहों से बचाना । येह रोज़ा छे बातों से मुकम्मल होता है :

﴿1﴾....आंख का रोज़ा : उन चीज़ों को देखने से बचना जो बुरी और मकरूह हैं और नज़र को हर उस चीज़ से बचाना जो दिल को (दुनियावी कामों में) मशगूल कर के ज़िक्रे इलाही से गाफ़िल कर दे। चुनान्वे, सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “नज़र इब्लीसे मलऊन के बुझे हुए तीरों में से एक तीर है। जिस ने ख़ौफ़ के सबब बद निगाही को तर्क कर दिया **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसा ईमान अता फ़रमाएगा जिस की हलावत वोह अपने दिल में पाएगा।” (1)

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “पांच चीज़ें रोज़ा दार का रोज़ा तोड़ देती हैं (1).....झूट (2)....गीबत (3)....चुग़ली (4).....झूटी क़सम और (5)....शहवत से देखना।” (2) (3)

﴿2﴾....ज़बान का रोज़ा : ज़बान को बेहूदा गुफ़्तगू करने, झूट, गीबत, चुग़ली, फ़ोहश गोई, जुल्म, लड़ाई, रियाकारी और ख़ामोशी इख़्तियार करने से बचा कर ज़िक्रे इलाही और तिलावते कुरआन में मशगूल रखना।

हज़रते सय्यिदुना बिशर बिन हारिष हाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِی ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی से नक़ल फ़रमाया कि “गीबत रोज़े को फ़ासिद कर देती है।”

हज़रते सय्यिदुना लैष عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی ने हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَاحِد से नक़ल फ़रमाते हैं कि “दो ख़स्लतें गीबत और झूट रोज़े को फ़ासिद कर देती हैं।”

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक रोज़ा ढाल है। लिहाज़ा जब तुम में से कोई रोज़ादार हो तो न बे हयाई की बात करे, न जहालत की और अगर कोई शख्स उस से लड़ाई झगड़ा या गाली गलोच करे तो कह दे कि मैं रोज़े से हूँ।” (4)

①.....المعجم الكبير، الحديث: ١٠٣٦٢، ج ١٠، ص ٤٣، بتغير۔

②..... इन उमूर से रोज़ा फ़ासिद नहीं होता। चुनान्वे, फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़हा 1057 पर है : “झूट, चुग़ली, गीबत, बद निगाही, गाली देना, बिला इजाज़ते शरई किसी का दिल दुखाना, दाढ़ी मुन्डाना वगैरा चीज़ें वैसे भी नाजाइज़ व ह़राम हैं रोज़े में और ज़ियादा ह़राम और इन की वजह से रोज़े में कराहिyyत आती और रोज़े की नूरानिय्यत चली जाती है।”

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٨٩۔

④.....صحيح البخاري، كتاب الصوم، باب فضل الصوم، الحديث: ١٨٩٢، ج ١، ص ٢٢٣، دون قوله: اذا كان احدكم قائما۔

हिक्वायत :- इन्सानी गोश्त खोर रोज़ादार :

हदीषे पाक में है कि ज़मानए रिसालत में दो औरतों ने रोज़ा रखा दिन के इख़िताम पर उन्हें भूक और प्यास ने तंग किया करीब था कि वोह हलाक हो जातीं, चुनान्वे, उन्होंने ने किसी को बारगाहे रिसालत में भेज कर रोज़ा इफ़तार की इजाज़त त़लब की तो हुज़ुरे पुर नूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन की तरफ़ एक प्याला भेजा और फ़रमाया : “उन दोनों से कहो कि तुम ने जो खाया है उस की प्याले में कै करो ।” चुनान्वे, एक ने ताज़ा ख़ून और गोश्त की कै की और दूसरी ने भी इस जैसी कै की हत्ता कि दोनों ने प्याला भर दिया । लोगों को इस पर तअज़्जुब हुवा तो आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “उन दोनों ने **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की हलाल कर्दा चीज़ से रोज़ा रखा और उस की ह़राम कर्दा चीज़ से इफ़तार किया, यूं कि दोनों में से एक दूसरी के पास बैठी और दोनों लोगों की ग़ीबत करने लगिं तो येह लोगों का गोश्त है जो उन्होंने ने (ग़ीबत की सूरत में) खाया ।”^(१)

③.....कानों का रोज़ा : येह है कि इन्हें हर बुरी बात सुनने से रोकना क्यूंकि जिस बात का करना ह़राम है उस की तरफ़ तवज्जोह देना भी ह़राम है । इसी लिये **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने ग़ौर से सुनने वाले और माले ह़राम खाने वाले को बराबर क़रार दिया । चुनान्वे, इरशादे बारी तआला है :

سَعُونَ لِكُذِبِ الْكُفُونِ لِلْحُكْمِ
(پ ۶، المائدة: ۴۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बड़े झूट सुनने वाले बड़े ह़राम खोर ।

और इरशाद फ़रमाया :

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبُّ بَيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ
قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ
(پ ۶، المائدة: ۶۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन्हें क्यूं नहीं मन्ज़ करते उन के पादरी और दुरवेश गुनाह की बात कहने और ह़राम खाने से ।

लिहाज़ा ग़ीबत पर ख़ामोशी इख़्तियार करना ह़राम है । एक जगह इरशाद फ़रमाया :

اَنْكُمُ اِذَا مَشَهُمْ
(پ ۵، النساء: ۱۳۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वरना तुम भी इन्हीं जैसे हो ।

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث عبید مولى النبى، الحديث: ۲۳۷۱۳، ج ۹، ص ۱۶۵، مفهوماً۔

इसी लिये आकाए दो जहां, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
“गीबत करने वाला और सुनने वाला दोनों गुनाह में (बराबर के) शरीक हैं।”⁽¹⁾

हराम ज़हर जब कि हलाल दवा है :

﴿4﴾....बक़िया आ 'जा को गुनाहों से बचाना :

हाथ पाउं का रोज़ा : गुनाहों और नापसन्दीदा उमूर से बचाना ।

पेट का रोज़ा : इफ़्तार के वक़्त इसे शुबहात से बचाना । क्यूंकि उस रोज़े का कोई फ़ाइदा नहीं जिस में हलाल खाने से रुका जाए फिर हराम पर इफ़्तार किया जाए । ऐसे रोज़ादार की मिषाल उस शख्स की सी है जो महल बनाता है और शहर को गिरा देता है, क्यूंकि हलाल खाना ज़ियादा होने की वजह से नुक़सान देता है न कि किसी और वजह से । नीज़ रोज़े का मक़सद खाने में कमी करना है । ज़ियादा दवा को उस के नुक़सान देह होने की वजह से छोड़ कर ज़हर खाने वाला बे वुकूफ़ है । हराम दीन को हलाक करने वाला ज़हर जब कि हलाल दवा है जिस का क़लील नफ़अ का बाइष और कषीर नुक़सान देह है और रोज़े का मक़सद इस हलाल ग़िज़ा को कम करना है । चुनान्वे,

हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कितने ही रोज़ेदार ऐसे हैं कि जिन्हें उन के रोज़े से सिवाए भूक प्यास के कुछ हासिल नहीं होता ।”⁽²⁾

शर्ह हदीष :

इस की शर्ह में मुख़लिफ़ अक्वाल हैं : (1)....इस से मुराद वोह है जो हराम पर इफ़्तार करता है (2)....इस से मुराद वोह है जो हलाल खाने से तो रुकता है लेकिन ग़ीबत के ज़रीए लोगों के गोश्त से इफ़्तार कर लेता है क्यूंकि ग़ीबत हराम है (3)....इस से मुराद वोह शख्स है जो अपने आ'जा को गुनाहों से नहीं बचाता ।

﴿5﴾.....इफ़्तार के वक़्त पेट भर कर हलाल खाने से बचना : **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक उस पेट से बुरा बरतन कोई नहीं जो हलाल से भर जाए । रोज़े से **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन (शैतान) पर ग़लबा पाने और शहवत को तोड़ने का फ़ाइदा कैसे हासिल होगा जब कि रोज़ादार दिन के वक़्त होने वाली कमी को इफ़्तार के वक़्त पूरा कर ले । बा'ज़ अवकात बन्दे के पास अन्वाअ व अक्साम के खाने जम्अ हो जाते हैं हत्ता कि अब तो येह आदत बन चुकी है कि रमज़ान

①.....المقاصد الحسنة، حرف الميم، الحديث: ١٠٣٦، ص ٣٩٥-

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب ماجاء في الغيبة والرفث للصائم، الحديث: ١٦٩٠، ج ٢، ص ٣٢٠، مفهوماً-

المعجم الكبير، الحديث: ١٣٢١٣، ج ١٢، ص ٢٩٢، مفهوماً-

के लिये खाने जम्अ किये जाते हैं और इस महीने में वोह खाने खाए जाते हैं जो दीगर महीनों में नहीं खाए जाते हालांकि येह बात मा'लूम है कि रोज़े का मक्सद पेट को ख़ाली रखना और ख़्वाहिशात को तोड़ना है ताकि नफ़्स तक्वा पर कुव्वत हासिल कर ले। लेकिन जब सुब्ह से शाम तक मे'दे को काबू (कन्ट्रोल) किये रखा यहां तक कि ख़्वाहिश ने जोश मारा और रग़बत मजबूत हो गई फिर उसे लज़ीज़ खाने दे कर सैर किया गया तो उस की लज़ज़त में भी इज़ाफ़ा हो गया और उस की कुव्वत दुगनी हो गई और वोह ख़्वाहिशात उभरी जो आदतन पैदा नहीं होती।

रोज़े की रूह और राज़ :

रोज़े की रूह और राज़ उन कुव्वतों को कमज़ोर करना है जो बुराइयों की तरफ़ लौटाने में शैतान का ज़रीआ हैं और येह चीज़ कम खाने से हासिल होती है यूं कि वोह इतना खाना खाए जितना रोज़ादार न होने की सूरत में हर रात खाता है। अगर उस ने सुब्ह से शाम तक का खाना खाया तो उस के रोज़े का कोई फ़ाइदा नहीं बल्कि रोज़े के आदाब में से है कि वोह दिन को ज़ियादा न सोए ताकि उसे भूक और प्यास का एहसास हो और आ'ज़ा की कमज़ोरी महसूस हो, दिल इसी सूरत में साफ़ होगा फिर हर रात इसी क़दर कमज़ोरी पैदा होगी तो उस पर तहज़ुद और दीगर अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ना आसान हो जाएगा। पस मुमकिन है कि शैतान उस के दिल पर चक्कर न लगाए और वोह मल्कूत की बादशाही देख ले और लैलतुल क़द्र उसी रात को कहते हैं जिस में मल्कूत की कोई चीज़ मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) की जाती है। इस फ़रमाने बारी तआला :

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ (प. ३०, القدر: १)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा।

से येही मुराद है। लिहाज़ा जो शख्स अपने सीने और दिल के दरमियान खाने का पर्दा ह़ाइल कर दे वोह इस (या'नी आलमे मल्कूत के मुशाहदे) से पर्दे में रहता है और जिस ने अपने मे'दे को ख़ाली रखा तो महज़ येह बात भी पर्दा उठने के लिये काफ़ी नहीं जब तक कि वोह अपनी सोच ग़ैरे खुदा से हटा न ले। मक्सदे हकीकी येही है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ ही लौ लगी रहे और इन तमाम मुआमलात की इब्तिदा कम खाना है। इस की मज़ीद वज़ाहत **“खाने के बयान”** में आएगी।

﴿6﴾.....इफ़्तार के बा'द रोज़ेदार का दिल उम्मीद व ख़ौफ़ के दरमियान मुअल्लक़ व मुतरद्दिद रहे : क्यूंकि वोह नहीं जानता कि उस का रोज़ा क़बूल कर लिया गया और वोह मुक़रबीन में से है या रद्द कर दिया गया और धुतकारे हुआओं में से है? नीज़ हर इबादत के बा'द उस की दिली कैफ़ियत येही हो।

मुक़ाबले का मैदान :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى ईद के दिन कुछ लोगों के पास से गुज़रे, उन्हें हंसते देख कर फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने माहे रमज़ान को अपनी मख़्लूक के लिये मुक़ाबले का मैदान बनाया और वोह इस में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इताअत में मुक़ाबला करते हैं, कुछ लोग सबक़त ले गए और कामयाब हो गए जब कि कुछ लोग पीछे रह गए और नाकाम हो गए । पस उस दिन खेलने और हंसने वाले पर इन्तिहाई तअज्जुब है जिस में सबक़त ले जाने वाले कामयाब और नाकाम होने वाले खाइब व खासिर होते हैं । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! अगर पर्दा उठा दिया जाए तो भलाई करने वाला अपनी भलाई में और बुराई करने वाला अपनी बुराई में मशगूल होगा या'नी मक्बूल की खुशी उसे खेल-कूद से बे परवाह कर देगी और मर्दूद का अफ़सोस उस पर हंसी का दरवाज़ा बन्द कर देगा ।

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन कैस رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से अर्ज़ की गई : “आप उम्र रसीदा बुजुर्ग हैं और रोज़े आप को कमज़ोर कर देंगे ।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “मैं इसे एक लम्बे सफ़र का सामान बनाता हूँ और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की इताअत पर सब्र करना उस के अज़ाब पर सब्र करने से ज़ियादा आसान है ।” येह रोज़े के बातिनी उमूर हैं ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप कहें कि फुक़हा फ़रमाते हैं कि जो पेट और शर्मगाह की शहवत से रुकने पर इक्तिफ़ा करे और ज़िक्र कर्दा बातिनी उमूर को छोड़ दे उस का रोज़ा सहीह है तो इस का क्या मा'ना है ? जान लीजिये कि ज़ाहिरी फुक़हा ज़ाहिरी शराइत को ऐसे दलाइल के साथ षाबित करते हैं जो उन दलाइल से कमज़ोर होते हैं जो हम ने इन बातिनी शराइत में बयान किये हैं खुसूसन ग़ीबत और इस की मिष्ल दूसरी चीज़ें ।

रोज़े का मक्सद :

फुक़हाए ज़ाहिर वोही पाबन्दियां बयान करते हैं जो अ़ाम ग़ाफ़िल और दुन्या की तरफ़ मुतवज्जेह होने वाले लोगों के लिये आसान हों लेकिन उ-लमाए आख़िरत रोज़े की सिहहत से क़बूलिय्यत मुराद लेते हैं और क़बूलिय्यत से मुराद मक्सूद तक रसाई है और वोह इस बात को समझते हैं कि रोज़े का मक्सद **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अख़्लाक से मुत्तसिफ़ होना है और वोह बे नियाज़ी है । नीज़ इस का एक मक्सद शहवात से बच कर फ़िरिश्तों की पैरवी करना है क्यूंकि

वोह शहवात से पाक हैं। नीज़ इन्सान का मर्तबा जानवरों के रुतबे से बुलन्द है क्यूंकि इन्सान नूरे अक्ल के ज़रीए शहवात को ख़त्म कर सकता है और फ़िरिश्तों के मर्तबे से (आम) इन्सानों का रुतबा कम है क्यूंकि उन पर शहवात ग़ालिब हैं और उन्हें मुजाहिदे में मुब्तला किया गया है। लिहाज़ा जब वोह शहवात में मुनहमिक होता है तो सब से निचले दर्जे में गिरता है और जानवरों के दर्जे में चला जाता है और जब शहवात का ख़ातिमा होता है तो आ'ला इल्लिय्यीन में चला जाता और मलाइका की दुन्या से जा मिलता है और फ़िरिश्ते **اَبَواهُ** عَزَّوَجَلَّ के मुक़र्रब हैं और जो शख्स फ़िरिश्तों की इक्तिदा करता और उन के अख़्लाक से मुशाबहत इख़्तियार करता है वोह भी उन्ही की तरह **اَبَواهُ** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब बन जाता है क्यूंकि क़रीब की मुशाबहत इख़्तियार करने वाला भी क़रीब होता है और वहां मकान का कुर्ब नहीं बल्कि सिफ़ात का कुर्ब होता है।

जब अहले अक्ल और अहले दिल हज़रात के नज़दीक रोज़े का मक्सद और राज़ येह है तो एक खाने को मुअख़्ख़र कर के दोनों को शाम के वक़्त इकठ्ठा करने नीज़ दिन भर शहवात में मुनहमिक रहने का क्या फ़ाइदा ? अगर इस का कोई फ़ाइदा है तो फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आलीशान का क्या मतलब होगा कि “कितने ही रोज़ादार ऐसे हैं कि जिन्हें अपने रोज़े से भूक और प्यास के सिवा कुछ हासिल नहीं होता।”⁽¹⁾

पहाड़ों के बराबर इबादत से अफ़ज़ल व राजेह :

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “अक्लमन्द शख्स का सोना और इफ़्तार करना कितना अच्छा है वोह बे वुकूफ़ के रोज़े और बेदारी को कैसे बुरा न जाने ? अलबत्ता यकीन और तक्वा वालों का ज़रा (भर भलाई) धोके में मुब्तला लोगों की पहाड़ों के बराबर इबादत से अफ़ज़ल और राजेह है।”

इसी लिये बा'ज़ उ-लमा ने फ़रमाया : कितने ही रोज़ादार, बे रोज़ा और कितने ही बे रोज़ा, रोज़ादार होते हैं। रोज़ा न रखने के बा वुजूद रोज़ादार वोह शख्स है जो अपने आ'जा को गुनाहों से बचाता है अगरचें वोह खाता पीता भी है और रोज़ा रखने के बा वुजूद बे रोज़ा वोह शख्स है जो भूका प्यासा रहता और अपने आ'जा को (गुनाहों की) खुली छूट दे देता है।

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب ما جاء في الغيبة والرفث للصائم، الحديث: ١٦٩٠، ج ٢، ص ٣٢٠، مفهوماً.

المعجم الكبير، الحديث: ١٣٣١٣، ج ١٢، ص ٢٩٢، مفهوماً.

गुनाहों में मुलव्वष रहने वाले रोज़ादार की मिषाल :

रोज़े का मफ़हम और इस की हिक्मत समझने से येह बात मा'लूम हुई कि जो शख़्स खाने (पीने) और जिमाअ से तो रुका रहे लेकिन गुनाहों में मुलव्वस होने के बाइष रोज़ा तोड़ दे तो वोह उस शख़्स की तरह है जो वुजू में अपने किसी उज़्व पर तीन बार मस्ह करे उस ने ज़ाहिर में ता'दाद को पूरा किया लेकिन मक्सूद या'नी आ'ज़ा को धोना तर्क कर दिया तो जहालत के सबब उस की नमाज़ उस पर लौटा दी जाएगी। जो खाने के ज़रीए रोज़ादार नहीं लेकिन आ'ज़ा को नापसन्दीदा अफ़आल से रोकने के सबब रोज़ादार है उस की मिषाल उस शख़्स की सी है जो अपने आ'ज़ा को एक एक बार धोता है उस की नमाज़ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** क़बूल होगी क्यूंकि उस ने अस्ल को पुख़्ता किया अगरचे ज़ाइद को छोड़ दिया और जिस ने दोनों को जम्अ किया वोह उस की तरह है जो हर उज़्व को तीन तीन बार धोता है उस ने अस्ल और ज़ाइद दोनों को जम्अ किया और येही कमाल है।

मरवी है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक रोज़ा अमानत है तो तुम अपनी अमानत की हिफ़ाज़त करो।”

आ'ज़ा भी अमानत है :

आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने जब येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا (النساء: ५८)

तर्जमए कज़ुल ईमान : बेशक **अव्वाह** तुम्हें हुक़्म देता है कि अमानतें जिन की हैं उन्हें सिपुर्द करो।

और अपना हाथ, कान और आंख पर रख कर इरशाद फ़रमाया : “समाअत व बसारत भी अमानत है।”^(१)

और अगर येह रोज़े की अमानतों में से न होती तो हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** येह बात न फ़रमाते कि “वोह यूं कह दे कि मैं रोज़े से हूं।”^(२) या'नी ज़बान मेरे पास अमानत है ताकि मैं इस की हिफ़ाज़त करूं। लिहाज़ा तुम्हें जवाब देने के लिये इसे कैसे खुला छोड़ दूं।

अब येह बात वाजेह हो गई कि हर इबादत का ज़ाहिर भी है और बातिन भी, छिलका भी है और मज़ भी। इस के छिलकों के कई दर्जात और हर दर्जे के कई तबकात हैं। अब तुम्हें इख़्तियार है कि तुम मज़ छोड़ कर छिलके पर क़नाअत करो या अक्लमन्दों के गुरौह में शामिल हो जाओ।

①.....قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون، الصيام وترتيبه.....الخ، ج ۱، ص ۱۳۶۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الصيام، باب حفظ اللسان للصائم، الحديث: ۱۱۵۱، ص ۵۷۹۔

तीसरी फ़स्ल : **बफ़्फ़ी रोज़ों और इन में बग़ाइफ़ की बरबीब**

जान लीजिये कि फ़ज़ीलत वाले दिनों में रोज़ों का मुस्तहब होना मुअक्कद है और फ़ज़ीलत वाले दिनों में बा'ज साल में एक बार, बा'ज हर महीने में और बा'ज हर हफ़्ते में पाए जाते हैं।

तफ़्सील :

❶.....साल में एक बार आने वाले अफ़ज़ल अय्याम : साल में रमज़ानुल मुबारक के बा'द अरफ़ा (नवीं जुल हिज्जह) का दिन⁽¹⁾ दसवीं मुहर्रम का दिन, जुल हिज्जह के इब्तिदाई नव दिन, मुहर्रमुल ह़राम के इब्तिदाई दस दिन और इज़्ज़त वाले महीने (जुल का'दह, जुल हिज्जह, मुहर्रम और रजब) रोज़ों के लिये उम्दा महीने और येह फ़ज़ीलत वाले अवक़ात हैं। नीज़ मरवी है कि "हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शा'बान में ब कषरत रोज़े रखते थे हत्ता कि गुमान होता कि येह माहे रमज़ान है।"⁽²⁾

एक हदीषे मुबारका में है कि "माहे रमज़ान के बा'द अफ़ज़ल रोज़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महीने मुहर्रम के रोज़े हैं।"⁽³⁾ क्यूंकि येह साल का पहला महीना है। लिहाज़ा इसे नेकी में गुज़ारना ज़ियादा पसन्दीदा और दाइमी बरकत की उम्मीद है।"

एक रोज़ा 30 रोज़ों से अफ़ज़ल :

मक्की मदनी सुल्तान, रहमते अलमियान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : "हुरमत वाले महीने का एक रोज़ा दूसरे महीनों के 30 रोज़ों से अफ़ज़ल है और रमज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा हुरमत वाले महीने के 30 रोज़ों से अफ़ज़ल है।"⁽⁴⁾

❶..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़ैज़ाने सुन्नत ज़िल्द अब्वल सफ़हा 1405 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ اَللّٰهُمَّ نक्ल फ़रमाते हैं : "हज़ करने वाले पर जो अरफ़ात में है, उसे अरफ़ा (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम) के दिन रोज़ा रखना मकरूह है कि हज़रते सय्यिदुना खुज़ैमा رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ हज़रते सय्यिदुना अबू हु़रैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रावी (या'नी रिवायत फ़रमाते हैं) कि हुज़ुरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अरफ़ा के दिन (या'नी 9 जुल हिज्जतिल ह़राम के रोज़ हाज़ी को) अरफ़ात में रोज़ा रखने से मन्अ फ़रमाया।" (صحيح ابن خزيمة، ج 3، ص 292 الحديث: 2101)

❷.....صحيح البخارى، كتاب الصوم، باب صوم شعبان، الحديث: 1929-1940، ج 1، ص 228، دون بعض الالفاظ۔

❸.....صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث: 1123، ص 591۔

❹.....قوت القلوب، الفصل الثانى والعشرون.....الخ، ج 1، ص 132

900 साल की इबादत का षवाब :

एक रिवायत में है कि “जो आदमी हुरमत वाले महीने में तीन दिनों जुमा’रात, जुमुआ और हफ्ते का रोज़ा रखता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर दिन के बदले 900 साल की इबादत (का षवाब) लिखता है।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “निस्फ़ शा’बान के बा’द रमज़ानुल मुबारक तक कोई रोज़ा नहीं।”⁽²⁾

इस लिये मुस्तहब है कि रमज़ानुल मुबारक से चन्द दिन पहले रोज़े रखना तर्क कर दे। अगर शा’बान को (रोज़ों के ज़रीए) रमज़ान के साथ मिला दिया तो भी जाइज़ है कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एक बार ऐसा किया⁽³⁾ और कई बार दोनों को जुदा जुदा रखा⁽⁴⁾ (या’नी शा’बान के आखिर में रोज़ा रखना छोड़ दिया)। नीज़ इस्तिफ़ाबाले रमज़ान के लिये दो या तीन दिन पहले के रोज़े रखना जाइज़ नहीं। अलबत्ता अगर किसी के मा’मूल के मुवाफ़िक़ हों तो रख सकता है। बा’ज़ सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने पूरा माहे रजबुल मुरज्जब रोज़े रखने को मकरूह करार दिया ताकि माहे रमज़ान से मुशाबहत न हो जाए।

फ़ज़ीलत व हुरमत वाले महीने :

फ़ज़ीलत वाले महीने चार हैं : (1).....जुल हिज्जतिल हराम (2).....मुहर्रमुल हराम (3).....रजबुल मुरज्जब और (4).....शा’बानुल मुअज़्ज़म और हुरमत वाले महीने भी चार हैं : (1).....जुल का’दतिल हराम (2).....जुल हिज्जतिल हराम (3).....मुहर्रमुल हराम और (4).....रजबुल मुरज्जब। एक (या’नी रजबुल मुरज्जब) अलग और बाक़ी तीन लगातार हैं। इन में से अफ़ज़ल ज़ुल हिज्जतिल हराम है क्योंकि इस में हज़ और वोह अय्याम हैं जिन्हें अय्यामे मा’लूमह और मा’दूदह कहा गया है। ज़ुल का’दतिल हराम हुरमत वाले और हज़ के महीनों में से है, शव्वालुल मुकर्रम हज़ के महीनों में से है लेकिन हुरमत वाले महीनों में से नहीं जब कि मुहर्रमुल हराम और रजबुल मुरज्जब (हुरमत वाले महीनों में से तो हैं लेकिन) हज़ के महीनों में से नहीं।

①.....المعجم الاوسط، الحديث: 489، ج 1، ص 285، بلفظ عبادة سنتين۔

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب ماجاء فى النهى ان يتقدم.....الخ، الحديث: 1651، ج 2، ص 302۔

③.....سنن ابى داود، كتاب الصوم، باب فيمن يصل شعبان برمضان، الحديث: 2336، ج 2، ص 238۔

④.....سنن ابى داود، كتاب الصوم، باب من قال: فان غم عليكم.....الخ، الحديث: 2324، ج 2، ص 235۔

राहे खुदा में जिहाद से अफ़ज़ल अमल :

हदीषे पाक में है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक जुल हिज्जतिल हराम के दस दिनों से बढ़ कर कोई दिन नहीं जिस में नेक आ'माल करना ज़ियादा अफ़ज़ल और पसन्दीदा हों, इस के एक दिन का रोज़ा साल भर के रोज़ों के बराबर है और एक रात का क़ियाम शबे क़द्र के क़ियाम के बराबर है।” अर्ज़ की गई : “क्या राहे खुदा में जिहाद भी नहीं ?” इरशाद फ़रमाया : “हां ! राहे खुदा में जिहाद भी नहीं मगर जो शख्स अपने घोड़े को ज़ख्मी करे और इस का खून बहाए (या'नी बहादुरी के ख़ूब जोहर दिखाए)।”⁽¹⁾

﴿2﴾.....हर महीने में आने वाले अफ़ज़ल अय्याम : जो दिन महीने में बार बार आते हैं वोह महीने के अव्वल, दरमियान और आख़िर है और दरमियान में अय्यामे बीज़ या'नी चांद की तेरह, चौदह और पन्दरह तारीख़ है।

﴿3﴾.....हर हफ़्ते में आने वाले अफ़ज़ल अय्याम : हफ़्ते में बार बार आने वाले दिन पीर, जुमा'रात और जुमुआ है।

येह फ़ज़ीलत वाले अय्याम हैं इन में रोज़े रखना और बक़्शरत ख़ैरात करना मुस्तहब है ताकि इन अवक़ात की बरक़त से इस का अज़्र दुगना हो।

कुछ सौमे दहर के बारे में :

जहां तक सौमे दहर (या'नी उम्र भर के रोज़े) का तअल्लुक़ है तो वोह इन तमाम और मज़ीद कुछ दिनों को शामिल है। मगर सालिकीन की इस बारे में कई आरा हैं। बा'ज़ ने इसे मकरूह करार दिया है क्यूंकि रिवायात इस की कराहत पर दलालत करती हैं।⁽²⁾ लेकिन सहीह येह है कि येह दो बातों की वजह से मकरूह है : (1).....ईदैन और अय्यामे तशरीक़ में भी रोज़ा न छोड़ा जाए और येह उम्र भर का रोज़ा है। (2).....इफ़्तार के मुआमले में सुन्नत को छोड़ कर खुद पर रोज़ा लाज़िम कर लेना हालांकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ रुख़्सत को भी पसन्द फ़रमाता है जैसा

①.....سنن الترمذی، کتاب الصوم، باب ماجاء فی العمل فی ایام العشر، الحدیث: ۷۵۷، ۷۵۸، ج ۲، ص ۱۹۱، ۱۹۲، مفهوماً۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النهی عن صوم الدهر لمن تضربه.....الخ، الحدیث: ۱۱۵۹، ص ۵۸۷۔

صحیح البخاری، کتاب الصیام، باب حق الاهل فی الصوم، الحدیث: ۱۹۷۷، ج ۱، ص ۲۵۰۔

कि वोह अज़ीमत को पसन्द फ़रमाता है।⁽¹⁾ लिहाज़ा जब इन दोनों में से कोई बात न हो और हमेशा रोज़ा रखने के मुआमले में नफ़्स की इस्लाह का पहलू नुमायां हो तो सौमे दहर के रोज़े रखना जाइज़ है कि सहाबए किराम व ताबेईने उज़्ज़ाम رَحْمَهُمُ اللهُ السَّلَام के एक गुरौह ने ऐसा किया है।

नीज़ हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्शरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी हदीषे पाक में है कि **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो उम्र भर रोज़ा रखे उस पर जहन्नम तंग कर दी जाएगी और अपने हाथ से नव्वे का अदद बनाया।”⁽²⁾ इस का मा'ना येह है कि उस के लिये जहन्नम में कोई जगह नहीं रहती (या'नी वोह जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा)।

इस से कम एक और दर्जा है और वोह निस्फ़ दहर का रोज़ा है। इस का तरीका येह है कि एक दिन रोज़ा रखे और एक दिन इफ़्तार करे और येह नफ़्स पर ज़ियादा शदीद और इसे मग़लूब करने में ज़ियादा क़वी है। नीज़ इस की फ़ज़ीलत में कई अहादीष मरवी है क्यूंकि इस में बन्दा एक दिन रोज़ा रखता और दूसरे दिन शुक्र अदा करता है।

सब से अफ़ज़ल रोज़े :

सरकारे मक्काए मुकर्रमा, सरदारे मदीनाए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझ पर दुन्या और ज़मीन के ख़ज़ानों की कुंजियां पेश की गईं लेकिन मैं ने वापस कर दीं और कहा : “(ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ) मैं एक दिन भूका रहूंगा और एक दिन सैर हो कर खाऊंगा जब सैर हो कर खाऊंगा तो तेरी ता'रीफ़ करूंगा और जब भूका होऊंगा तो तेरी बारगाह में गिड़ गिड़ाऊंगा।”⁽³⁾

①..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 868 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “इस्लाहे आ'माल” जिल्द अव्वल, सफ़हा 687 और 688 पर है : रुख़सत का लुग़वी मा'ना : **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से बन्दे को किसी काम में दी गई सहूलत व आसानी। शरई व इस्तिलाही मा'ना : उम्र वालों (या'नी मा'ज़राने शरई) पर मेहरबानी और इन्हें वुस्अत देने के लिये हुक्म को अस्ल से तख़फ़ीफ़ व सहूलत की तरफ़ फेर देने का नाम रुख़सत है। और सफ़हा 695 पर है : अज़ीमत का लुग़वी मा'ना : **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के वाजिब कर्दा अहक़ाम में से एक वाजिब हुक्म। शरई व इस्तिलाही मा'ना : वोह चीज़ जो शरीअत में इब्तिदा ही से बन्दों के आ'ज़ार पर मन्बी न हो और इस में फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़ल, हराम, मकरूह और मुबाह सब शामिल हैं।

②.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث أبي موسى الأشعري، الحديث: ١٩٤٣٣، ج ٤، ص ٢٨، بتغيير۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثانی والعشرون: الصيام وترتيبه.....الخ، ج ١، ص ١٣٢۔

एक रिवायत में है कि “सब से अफ़ज़ल रोज़े मेरे भाई हज़रते दाऊद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के रोज़े हैं, वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन इफ़्तार करते थे।”⁽¹⁾

इस की ताकीद इस हदीषे मुबारका से भी होती है कि जब हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने (बारगाहे रिसालत में) अर्ज़ की : “मैं इस (या'नी एक दिन रोज़ा और एक दिन इफ़्तार) से ज़ियादा की ताक़त रखता हूं।” तो मुश्फ़िक् व मेहरबान आका صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “एक दिन रोज़ा रखो और एक दिन इफ़्तार करो।” अर्ज़ की : “मैं इस से अफ़ज़ल का इरादा करता हूं।” इरशाद फ़रमाया : “इस से अफ़ज़ल कोई अमल नहीं।”⁽²⁾

मरवी है कि “हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने माहे रमज़ान के इलावा कभी भी पूरा महीना रोज़े न रखे।”⁽³⁾ बल्कि ग़ैरे रमज़ान में रोज़ा छोड़ भी देते।

जो निस्फ़ दहर के रोज़ों पर क़ादिर न हो तो तिहाई हिस्से में कोई हरज नहीं या'नी एक दिन रोज़ा रखे और दो दिन छोड़ दे और जब महीने की इब्तिदा, दरमियान और इख़िताम पर तीन रोज़े रखे तो येह भी तिहाई है और येह फ़ज़ीलत के अवकात में वाक़ेअ होंगे और पीर जुमा'रात और जुमुअ़ा का रोज़ा रखे तो येह भी तिहाई के क़रीब है। जब फ़ज़ीलत के अवकात ज़ाहिर हो गए तो कमाल येह है कि इन्सान रोज़े का मा'ना समझे और येह कि इस का मक्सूद दिल को पाक करना और अपनी तमाम तरफ़िक् को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह करना है। बातिन की बारीकियों को जानने वाला शख्स अपने अहवाल को देखता है कभी इस का हाल हमेशा रोज़ा रखने का तकाज़ा करता है और कभी हमेशा इफ़्तार का और कभी रोज़े और इफ़्तार दोनों को मिलाने का तकाज़ा करता है। जब वोह (लफ़्ज़े सौम से हासिल होने वाला) मा'ना समझ गया और दिल की निगरानी के ज़रीए त़रीके आख़िरत पर चलने में उस की कोशिश षाबित हो गई तो इस पर अपने दिल की इस्लाह पोशीदा नहीं रहेगी और येह चीज़ हमेशा की तरतीब का तकाज़ा नहीं करती।

①.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النهی عن صوم الدهر لمن تضربه.....الخ، الحديث: ۱۵۹، ۱، ص ۵۸۸۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب النهی عن صوم الدهر لمن تضربه.....الخ، الحديث: ۱۵۹، ۱، ص ۵۸۲۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب صیام النبی صلی الله علیه وسلم فی غیر رمضان.....الخ، الحديث: ۱۵۷، ۱، ص ۵۸۳۔

इसी लिये मरवी है कि “हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम ﷺ रोज़े रखते रहते यहां तक कि कहा जाता अब रोज़ा नहीं छोड़ेंगे और रोज़े रखना तर्क फ़रमा देते यहां तक कि कहा जाता अब रोज़ा नहीं रखेंगे और आप ﷺ आराम फ़रमाते यहां तक कि कहा जाता अब (नफ़ल नमाज़ के लिये) क़ियाम नहीं करेंगे और क़ियाम फ़रमाते यहां तक कि कहा जाता अब आराम नहीं फ़रमाएंगे।” (1)

और ये सब कुछ इस के मुताबिक़ होता जो आप ﷺ के लिये अवकात के हुक्क के सिलसिले में नूरे नबुव्वत से मुन्कशिफ़ होता।

(अहले बातिन) उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने यौमे ईद और अय्यामे तशरीक़ का अन्दाज़ा लगाते हुए चार दिन से ज़ियादा मुसलसल रोज़ा न रखने को मकरूह क़रार दिया है इस बिना पर कि येह दिल को सख़्त करता, घटया अ़दात को जनम देता और ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोलता है। मेरी ज़िन्दगी की क़सम ! येह अक़षर लोगों के हक़ में इसी तरह है खुसूसन वोह लोग जो रात और दिन में दो मरतबा खाते हैं। ज़िक़ कर्दा कलाम वोह है जो हम ने नफ़ली रोज़े की तरतीब के सिलसिले में ज़िक़ करने का इरादा किया था।

दुआ :

रोज़े के असरार का बयान पायए तक्मील को पहुंचा और **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है उस की तमाम खूबियों पर जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते उस की तमाम ने'मतों पर जो हम जानते हैं और जो नहीं जानते और हमारे सरदार हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ि ﷺ, आप के आल व अस्हाब اَجْمَعِينَ عَلَيْهِمُ اللَّهُ تَعَالَى और ज़मीन व आस्मान के हर बर गुज़ीदा बन्दे पर **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की रहमत का नुज़ूल और सलाम व करम की बरसात हो।



﴿.....تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّهُ.....﴾

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

1.....صحیح مسلم، کتاب الصیام، باب صیام النبی صلی اللہ علیہ وسلم.....الخ، الحدیث: 1154، ص 583، باختصار۔

हज का बयान

सब खूबियां **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं जिस ने कलिमए तौहीद को अपने बन्दों के लिये पनाह गाह और क़ल्आ बनाया, अपने क़ाबिले तकरीम घर का 'बतुल्लाहे मुशर्रफ़ा को लोगों के लौटने और अम्न की जगह बनाया, खास करते और एहसान करते हुए इसे अपनी तरफ़ मन्सूब कर के शरफ़ बख़्शा, इस की ज़ियारत व तवाफ़ को बन्दे और अज़ाब के दरमियान पर्दा व ढाल बनाया, वालिये उम्मत, हुज़ूर नबिय्ये रहमत ﷺ पर और इन के आल व अस्हाब पर जो हक़ की तरफ़ लाने वाले और मख़्लूक के सरदार हैं रहमत और ख़ूब सलाम हो।

हज इस्लाम के बुन्यादी अरकान में से है। येह उम्र भर की इबादत, अन्जामे कार, इस्लाम की तक्मील और दीन का कमाल है। इसी के मुतअल्लिक **अल्लाह** عز وجل ने इरशाद फ़रमाया :

أَيُّوْمَا كُنْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَأَنْتُمْ عَلَيَّكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمْ الْإِسْلَامَ دِيْنًا (پ ۶، المسائده: ۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।

नीज़ हुज़ूर सय्यिदे दो अलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स (बा वुजूद फ़र्ज होने के) हज किये बिगैर मर जाए तो चाहे यहूदी हो कर मरे, चाहे ईसाई हो कर।”⁽¹⁾

वोह इबादत किस क़दर अज़मत वाली है कि जिस के न होने से दीन का कमाल ख़त्म हो जाता है और उसे छोड़ने वाला गुमराही में यहूदो नसारा की तरह है। पस जब येह इस क़दर अहम इबादत है तो ज़ियादा मुनासिब है कि इस की तशरीह, अरकान की तफ़सील, सुनन व आदाब और फ़ज़ाइल व असरार को बयान किया जाए और येह तमाम बातें तौफीके इलाही से तीन अबवाब में वाजेह हो जाएंगी। पहले बाब में हज, मक्कए मुकर्रमा رَازِهَا اللهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا के फ़ज़ाइल, अरकान और वुजूब की शराइत का बयान है। दूसरे बाब में सफ़र की इब्तिदा से लौटने तक बित्तरतीब ज़ाहिरी आ'माल का बयान है। तीसरे बाब में आदाब की बारीकियों, खुफ़िया असरार और बातिनी आ'माल का बयान है।



बाब नम्बर : 1

फ़ग़ाहले हज का बयान

(इस में दो फ़स्लें हैं)

पहली फ़स्ल : हज, बैल्लाह, मक्का व मदीना के फ़ग़ाहल
और मशागिद की ग़ानिब अफ़र करने का बयान
हज की फ़जीलत :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى
كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿٢٧﴾

(प १, الحج: २७)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और लोगों में हज की आ़म
निदा कर दे वोह तेरे पास हाज़िर होंगे प्यादा और हर
दुबली ऊंटनी पर कि हर दूर की राह से आती हैं।

हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते
सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को लोगों में हज का ए'लान करने का हुक्म दिया तो आप
عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने निदा दी : “ऐ लोगो ! बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक घर बनाया है पस तुम
इस का हज करो।”

अगली आयते मुबारका में इरशाद होता है :

لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ ﴿٢٨﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ताकि वोह अपना फ़ाइदा पाएं।

मन्कूल है कि इस से मुराद मौसिमे हज की तिजारत और आखिरत का अज़्र है।

बा'ज् अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने जब येह बात सुनी तो फ़रमाया : “रब्बे का'बा
की क़सम ! इन की बख़्शिश हो गई।”

कुरआने करीम में है :

لَا تُعَذِّبْ لَهُمْ سِرًّا طَكَ الْمُسْتَقِيمُ ﴿٢٩﴾

(प ८, الاعراف: २९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते
पर इन की ताक में बैटूंगा।

इस आयते मुक़द्दसा की तफ़्सीर में एक कौल येह भी है कि इस से मुराद मक्के का रास्ता
है। शैतान इस पर बैठता है ताकि लोगों को इस से रोके।

फज़ाइले हज़ प२ मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुश्तफ़ा :

﴿1﴾.....जिस ने हज़ किया और रफ़ष (फ़ोहश कलाम) और फ़िस्क न किया तो गुनाहों से पाक हो कर ऐसा लौटा जैसे उस दिन कि मां के पेट से पैदा हुवा हो ।⁽¹⁾

﴿2﴾.....शैतान जिस तरह यौमे अरफ़ा में ज़लील, हकीर, धुतकारा हुवा और ग़ज़ब नाक होता है ऐसा कभी नहीं देखा गया । यह इस लिये होता है कि वोह नुज़ूले रहमत और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से बड़े बड़े गुनाहों की मुआफ़ी देखता है ।⁽²⁾

﴿3﴾.....मन्कूल है कि “कुछ गुनाह ऐसे हैं जो सिर्फ़ वुकूफ़े अरफ़ा से मुआफ़ होते हैं ।”⁽³⁾
 इस रिवायत को हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الصَّمَد ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ मन्सूब किया है ।

एक बुजुर्ग और शैतान का मुक़ालमा :

एक मुक़र्रबे बारगाहे इलाही का बयान है कि इब्लीसे मलज़न मैदाने अरफ़ात में उस के सामने इन्सानी सूरत में इस हालत में जाहिर हुवा कि दुबला पतला, रंग ज़र्द, गिरयां चश्म और पीठ टूटी हुई है । उन्होंने ने पूछा : “तुझे किस चीज़ ने रुलाया ?” कहा : “हाजियों के बिगैर निर्य्यते तिजारत इस (या'नी बैतुल्लाह शरीफ़) की तरफ़ निकलने ने । मैं कहता हूं कि इन्हों ने महज़ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का क़स्द किया और मुझे डर है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इन्हें रुस्वा नहीं करेगा और येह बात मुझे ग़मज़दा कर देती है ।” उन्होंने ने पूछा : “तेरा जिस्म इतना कमज़ोर क्यूं हो गया ?” कहा : “राहे खुदा में घोड़ों के हनहनाने की वजह से, हालांकि मुझे येह बात ज़ियादा महबूब थी कि येह मेरी राह पर होते ।” पूछा : “तेरा रंग क्यूं बदला हुवा है ।” उस ने कहा : “इताअत पर लोगों के एक दूसरे की मदद करने की वजह से, अगर नाफ़रमानी पर बाहम तआवुन करते तो येह मुझे ज़ियादा पसन्द होता ।” पूछा : “तेरी पीठ क्यूं टूटी हुई है ?” कहा : “इस लिये कि बन्दा कहता है : (ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ) मैं तुझ से अच्छे ख़ातिमे का सुवाल करता हूं । मैं कहता हूं : हाए मेरी हलाकत ! येह कब अपने अमल पर खुद पसन्दी में मुब्तला होगा मुझे डर है कि कहीं इसे येह बात मा'लूम न हो जाए (कि अपने अमल पर इतराना नहीं चाहिये बल्कि रहमते इलाही की उम्मीद रखनी चाहिये) ।”

①.....صحیح البخاری ، کتاب المحصر ، باب قول اللّٰه: ولا فسوق.....الخ، الحديث: ۱۸۲۰، ج ۱، ص ۶۰۰،

خرج من “ذنوبه” بدله “رجع”-

②.....الموطأ للامام مالک، کتاب الحج، باب جامع الحج، الحديث: ۹۸۲، ج ۱، ص ۳۸۶-۳۸۷-

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۹۹-

﴿4﴾..... “जो हज या उमरा के लिये निकला और मर गया तो क़ियामत तक उस के लिये हज व उमरा करने वाले का षवाब लिखा जाएगा और जिस का हरमैन शरीफ़ैन में से किसी जगह इन्तिक़ाल हुवा तो उस की पेशी नहीं होगी, न उस का हिसाब होगा और उस से कहा जाएगा : तू जन्नत में दाख़िल हो जा ।”⁽¹⁾

﴿5﴾..... “हज्जे मक़बूल दुन्या व माफ़ीहा से बेहतर है और हज्जे मक़बूल की जज़ा जन्नत के सिवा कुछ नहीं ।”⁽²⁾

﴿6﴾..... “हज व उमरा करने वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वफ़द और उस की ज़ियारत करने वाले हैं, अगर वोह उस से सुवाल करें तो वोह अता फ़रमाता, अगर मुआफ़ी चाहें तो मुआफ़ फ़रमाता है, अगर दुआ करें तो उन की दुआ क़बूल होती है और अगर शफ़ाअत करें तो शफ़ाअत क़बूल होती है ।”⁽³⁾

﴿7﴾..... “लोगों में सब से बड़ा गुनहगार वोह है जो अरफ़ा में ख़ड़ा हो और येह गुमान करे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की मग़फ़िरत नहीं फ़रमाई ।”⁽⁴⁾

﴿8﴾..... हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बैतुल्लाह शरीफ़ पर हर रोज़ 120 रहमतें नाज़िल होती हैं, 60 तवाफ़ करने वालों के लिये, 40 नमाज़ पढ़ने वालों के लिये और 20 ज़ियारत करने वालों के लिये हैं ।”⁽⁵⁾

①..... شعب الایمان للبيهقي، باب فی المناسک، فضل الحج والعمرة، الحديث: ۴۰۹۸-۴۱۰۰، ج ۳، ص ۴۷۲، باختصار۔

②..... سنن النسائي، کتاب مناسک الحج، باب فضل الحج المبرور، الحديث: ۲۶۱۹، ص ۴۳۲۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

③..... سنن ابن ماجه، کتاب المناسک، باب فضل دعاء الحاج، الحديث: ۹۳-۲۸۹۲، ج ۳، ص ۴۱۰-۴۱۱۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

④..... كشف الخفاء، حرف الهمزة مع العين المهملة، الحديث: ۴۲۵، ج ۱، ص ۱۳۱۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

⑤..... شعب الایمان للبيهقي، باب فی المناسک، فضيلة الحجر الاسود..... الخ، الحديث: ۴۰۵۱، ج ۳، ص ۴۵۵،

دون قوله ”ينزل على هذا البيت“۔

﴿9﴾..... बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ क़षरत से करो क्यूंकि येह उन में सब से ज़ियादा क़द्रो मन्ज़िलत वाला है जिन्हें तुम बरोज़े क़ियामत अपने नामए आ'माल में पाओगे और येह तुम्हारे आ'माल में सब से ज़ियादा क़ाबिले रश्क होगा।⁽¹⁾ इसी लिये हज़ व उमरा के इलावा तवाफ़ मुस्तहब है।

﴿10﴾..... “जिस ने नंगे पाउं और नंगे सर तवाफ़ के सात चक्कर लगाए उसे एक गुलाम आज़ाद करने का षवाब मिलेगा और जिस ने बारिश में तवाफ़ के सात चक्कर लगाए उस के गुज़ता गुनाह बख़्श दिये जाएंगे।”⁽²⁾

मन्कूल है कि “जब **अव्बाह** عَزَّ وَجَلَّ अरफ़ात में किसी बन्दे के गुनाह बख़्शता है तो वहां पहुंचने वाले हर शख्स के गुनाह भी बख़्श देता है।”

दो ईदें :

बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحْمَهُمُ اللهُ السَّيِّئِينَ फ़रमाते हैं : “अरफ़ा (या'नी नवीं जुल हिज्जा) का दिन जुमुआ को आ जाए तो तमाम अहले अरफ़ा की मग़फ़िरत कर दी जाती है और वोह दुन्या में सब से अफ़ज़ल दिन होता है। इसी दिन हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज्जतुल वदाअ अदा फ़रमाया और मैदाने अरफ़ात ही में थे कि येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :”

اَيُّوْمًا كُنْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَآتَيْتُ
عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ
دِيْنًا ط (پ ۶، المائدة: ۳)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।

अहले किताब ने कहा : “अगर येह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम इस दिन को ईद का दिन बना लेते।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं गवाही देता हूं कि येह आयते मुबारका दो ईदों या'नी यौमे अरफ़ा और जुमुआ के दिन हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर नाज़िल हुई और आप अरफ़ा में वुकूफ़ फ़रमा थे।”⁽³⁾

①..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۲، ص ۱۹۸۔

②..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۲، ص ۱۹۸، دون “اسبوعا”۔

③..... صحيح مسلم، كتاب التفسير، الحديث: ۳۰۱۷، ص ۱۶۰۸- ۱۶۰۹، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۲، ص ۲۰۰۔

﴿11﴾.....ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज करने वाले को बख़्श दे और जिस के लिये हाजी बख़्शिश की दुआ़ करे उसे भी बख़्श दे ।⁽¹⁾

हिक्वायत :- जन्नत में दाखिले की बिशारत :

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना अली बिन मुवफ़फ़क़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने हुजूर अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तरफ़ से कई हज किये । फ़रमाते हैं : “मैं ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशर्रफ़ हुवा, आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “ऐ इब्ने मुवफ़फ़क़ ! तू ने मेरी तरफ़ से हज किये ?” मैं ने अर्ज की : “जी हां !” इरशाद फ़रमाया : “तूने मेरी तरफ़ से तल्बिया कहा ?” मैं ने अर्ज की : “जी हां !” इरशाद फ़रमाया : “मैं क़ियामत के दिन तुझे इन का बदला दूंगा और मौक़िफ़ (या'नी महशर) में तेरा हाथ थाम कर तुझे जन्नत में दाख़िल करूंगा जब कि लोग अभी हिसाब की सख़्ती में होंगे ।”

फ़ज़ाइले हज पर मुश्तमिल अक्वाले बुजुर्गाने दीन :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد और दीगर उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “हज करने वाले जब मक्कए मुकर्रमा رَاَدَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا आते हैं तो फ़िरिश्ते उन से मुलाक़ात करते हैं । ऊंट पर सुवार हाजियों को सलाम करते, दराज़ गोश (गधे) पर सुवार हाजियों से मुसाफ़हा करते और पैदल चलने वालों से गले मिलते हैं ।”

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “जो रमज़ान के बा'द या ग़ज़वे के बा'द या हज के बा'द मरा वोह शहादत का रुत्बा पाएगा ।”

﴿3﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने फ़रमाया : “हज करने वाला मग़फ़िरत याफ़ता है और हाजी ज़िल हिज्जतिल हराम, मुहर्रमुल हराम, सफ़रुल मुजफ़्फ़र और रबीउल अव्वल के 20 दिनों में जिस के लिये इस्तिग़फ़ार करे उस की भी मग़फ़िरत हो जाती है ।”

अस्लाफ़े किराम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का तरीक़ा रहा है कि वोह मुजाहिदीन को रुख़्सत करते और हाजियों का इस्तिफ़ाल करते, उन की आंखों के दरमियान बोसा देते और उन्दें दुआ़ के लिये कहते और येह काम सलफ़े सालिहीन उन के गुनाहों में आलूदा होने से पहले पहले करते ।

छे के सदके छे लाख का हज कबूल :

हजरते सय्यिदुना अली बिन मुवफ़फ़क़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने एक साल हज किया जब अरफ़े की रात आई तो मैं मस्जिदे ख़ैफ़ में मिना के मक़ाम पर सो गया । ख़्वाब में देखा कि सब्ज़ हल्लों में मल्बूस दो फ़िरिश्ते आस्मान से उतरे, एक ने दूसरे को पुकारा : ऐ अब्दुल्लाह ! दूसरे ने कहा : “मैं हाज़िर हूं, ऐ अब्दुल्लाह ! उस ने पूछा : “क्या तुम जानते हो कि इस साल कितने लोगों ने हज किया ?” कहा : “मैं नहीं जानता ।” उस ने कहा : “छे लाख लोगों ने हज किया । क्या तुम जानते हो कि कितने लोगों का हज क़बूल हुवा ?” कहा : “नहीं ।” कहा : “सिर्फ़ छे आदमियों का ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : फिर वोह दोनों हवा में बुलन्द हो गए और मुझ से गाइब हो गए । मैं घबरा कर बेदार हो गया और बहुत ज़ियादा ग़मगीन हुवा और मुझे मेरे मुआमले ने परेशान कर दिया । मैं ने सोचा : जब फ़क़त छे आदमियों का हज क़बूल हुवा तो मैं छे आदमियों में कहां हो सकता हूं ? जब मैं अरफ़ात से वापस आया तो मशअरे हराम के पास खड़ा हाजियों की कषरत और उन लोगों की क़िल्लत के मुतअल्लिक़ सोचने लगा जिन का हज क़बूल हुवा, मुझे नींद ने आ लिया तो देखा कि पहले दो की सूरत पर दो शख़्स आस्मान से उतरे, एक ने दूसरे को पुकारा और इसी तरह का कलाम किया फिर पूछा : “क्या तुम जानते हो कि आज रात हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ने क्या हुक्म फ़रमाया ?” उस ने कहा : “नहीं ।” कहा : “बेशक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने छे में से हर एक को एक लाख दे दिये ।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं बेदार हुवा तो मुझे इतनी खुशी हुई कि बयान से बाहर है ।”

हिक्कयत :- ख़्वाब में दीदारे इलाही :

इन्ही से मन्कूल है, फ़रमाते हैं : एक साल मैं ने हज किया जब मनासिके हज अदा कर चुका तो उन लोगों के बारे में ग़ौरो फ़िक़र करने लगा जिन का हज क़बूल न हुवा । मैं ने बारगाहे इलाही में अर्ज की : “ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं ने अपना हज और इस का षवाब उन लोगों को दिया जिन का हज क़बूल नहीं हुवा ।” फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशरफ़ हुवा तो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “ऐ अली ! क्या मुझ पर सखावत करता है हालांकि सखावत और सखियों को मैं ने ही पैदा फ़रमाया, मैं ही सब से बढ़ कर जूदो करम करने वाला और मैं ही तमाम जहान वालों से ज़ियादा जूदो करम का हक़ रखता हूं, मैं ने उन तमाम लोगों को जिन का हज क़बूल नहीं हुवा उन के हवाले कर दिया है जिन का हज क़बूल हुवा (या'नी मक्बूलों के सदके उन का भी क़बूल हो गया)।”

बैतुल्लाह शरीफ और मक्कउ मुकर्रमा के फज़ाइल :

हुज़ूर नबिय्ये मुकर्रम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस घर से वा'दा फ़रमाया है कि हर साल छे लाख आदमी इस का हज़ करेगे, अगर कम हुए तो फ़िरिश्तों के ज़रीए उन की कमी पूरी फ़रमा देगा और का'बए मुशर्रफ़ पहली रात की दुल्हन की तरह उठाया जाएगा और इस का हज़ करने वाले तमाम लोग इस के पर्दे से लटके होंगे, वोह इस के गिर्द चक्कर लगाएंगे यहां तक कि येह जन्नत में दाख़िल होगा तो वोह भी दाख़िल हो जाएंगे।” (1)

हदीषे पाक में है कि “बेशक हज़रे अस्वद जन्नती पथ्थरों में से एक पथ्थर है, इसे बरोजे क़ियामत यूं उठाया जाएगा कि इस की दो आंखें और एक ज़बान होगी जिस के ज़रीए येह कलाम करेगा और हर उस शख्स के हक़ में गवाही देगा जिस ने हक़ व सदाक़त के साथ इसे बोसा दिया होगा।” (2)

मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ हज़रे अस्वद को बहुत ज़ियादा बोसे दिया करते थे।” (3)

एक रिवायत में है कि “आप ﷺ ने हज़रे अस्वद पर पेशानी रखी।” (4) और आप सुवारी पर तवाफ़ फ़रमाते हुए अपने असा मुबारक का मुड़ा हुवा कनारा इस पर रख देते फिर उस किनारे को बोसा देते। (5)

हज़रे अस्वद नफ़अ भी देता है और नुक़सान भी :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रे अस्वद को बोसा दे कर फ़रमाया : “बेशक मैं जानता हूँ कि तू एक पथ्थर है न नफ़अ दे सकता है न नुक़सान, अगर मैं ने प्यारे मुस्तफ़ा ﷺ को तुझे बोसा देते न देखा होता तो मैं

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ٢٠١-

②.....سنن ابن ماجه، كتاب المناسك، باب استلام الحجر، الحديث: ٢٩٢٢، ج ٣، ص ٢٣٢، بتغير-

قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ٢٠١-

③.....سنن النسائي، كتاب مناسك الحج، باب كيف يقبل، الحديث: ٢٩٣٥، ص ٢٤٨، عن عمر رضى الله عنه-

قوت القلوب الفصل الثالث، والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ٢٠١-

④.....قوت القلوب الفصل الثالث، والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ٢٠١-

المستدرک، کتاب المناسک، باب استلام الحجر وتقبيله.....الخ، الحديث: ١٤١٥، ج ٢، ص ١٠٦-

⑤.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب جواز الطواف علی بغير.....الخ، الحديث: ١٢٤٢-١٢٤٥، ج ١، ص ٦٢٣-

तुझे कभी बोसा न देता ।” फिर आप रोने लगे यहां तक कि आप की आवाज़ बुलन्द हो गई । फिर अपने पीछे की जानिब मुतवज्जेह हुवे और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम अल्लह त़ैअली व ज़हे क़र्रिम को देख कर फ़रमाया : “ऐ अबल हसन ! यहां पर आंसू बहाए जाते और दुआएं क़बूल होती हैं ।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा क़र्रम अल्लह त़ैअली व ज़हे क़र्रिम ने कहा : “ऐ अमीरुल मोअमिनीन ! बल्कि येह पथ्थर नफ़अ भी देता है और नुक़सान भी ।” पूछा : “वोह कैसे ?” कहा : “बेशक **अल्लाह** عزّ وجلّ ने जब बन्दों से अहद लिया तो एक तहरीर लिख कर इस पथ्थर को खिला दी, पस येह मोमिन के हक़ में ईफ़ाए अहद की और काफ़िर के ख़िलाफ़ उस के इन्कार की गवाही देगा ।”⁽¹⁾

हज़रे अश्वद को बोसा देते वक़्त की दुआ :

मन्कूल है कि इसे बोसा देते हुए लोगों के मज़कूर कलिमात पढ़ने का येही मा'ना है : “**اللَّهُمَّ إِيْمَانًا بِكَ وَتَصَدِيقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ**” या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मैं तुझ पर ईमान लाते, तेरी किताब की तस्दीक़ करते और तेरे वा'दे को पूरा करते हुए (इसे बोसा देता हूँ) ।”

एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर :

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی से मन्कूल है कि “मक्कए मुक़र्रमा **رَادَّهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا** में एक दिन का रोज़ा एक लाख रोज़ों के बराबर है । एक दिरहम सदक़ा करना एक लाख दिरहम के बराबर है । इसी तरह हर नेकी एक लाख नेकी के बराबर है ।”

मन्कूल है कि “सात मर्तबा तवाफ़ करना एक उमरा के बराबर है और तीन उमरे एक हज़ के बराबर हैं ।”

माहे रमज़ान में उमरा करने की फ़ज़ीलत :

हदीषे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये रहमत, शफ़ीए उम्मत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “रमज़ान में उमरा मेरे साथ हज़ के बराबर है ।”⁽²⁾

①.....المستدرک، کتاب المناسک، باب الحجر الاسود یمین اللہ.....الخ، الحدیث: ۱۷۲۵، ج ۲، ص ۱۰۹-۱۱۰، باختصار۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل العمرة فی رمضان، الحدیث: ۱۷۵۶، ص ۲۵۷۔

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं पहला वोह शख्स हूँ जिस से ज़मीन खोली जाएगी, फिर मैं बक़ीअ वालों के पास आऊंगा तो वोह मेरे साथ जम्अ किये जाएंगे, फिर अहले मक्का की तरफ़ आऊंगा तो दोनों हरमों के दरमियान मेरा हज़र होगा।”⁽¹⁾

हदीषे पाक में है कि “जब हज़रते आदम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने मनासिके हज़ (या)नी हज़ के अरकान व अफ़ाल) अदा कर लिये तो फ़िरिश्तों ने आप से मुलाक़ात कर के अर्ज़ की : ऐ आदम ! आप का हज़ मक्बूल हुवा, हम ने आप से दो हज़ार साल पहले इस घर का हज़ किया।”⁽²⁾

तवाफ़ और नमाज़ अदा करने वालों की बख़्शिश :

एक रिवायत में है कि “बेशक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ हर रात अहले ज़मीन की तरफ़ नज़र फ़रमाता है, सब से पहले अहले हरम की तरफ़ नज़र फ़रमाता है और अहले हरम में भी सब से पहले मस्जिदे ह़राम वालों की तरफ़ नज़र फ़रमाता है तो जिसे तवाफ़ में मशगूल पाता है उसे बख़्शा देता है, जिसे नमाज़ पढ़ते देखता है उस की भी मग़फ़िरत फ़रमा देता है और जिसे का'बे की तरफ़ मुंह किये हुए खड़ा देखता है उसे भी बख़्शा देता है।”⁽³⁾

एक वली फ़रमाते हैं मुझे कशफ़ हुवा : “मैं ने देखा कि तमाम वादियों के कुशादा मक़ामात, **अब्बादान**⁽⁴⁾ की तरफ़ झुके हुए हैं और **अब्बादान** को देखा कि वोह जिद्दा की जानिब झुका हुवा है।”

का'बा और क़ुरआन उठाए जाने का वक़्त :

मन्कूल है कि “जब तक अबदाल⁽⁵⁾ में से कोई शख्स बैतुल्लाह का तवाफ़ न कर ले

①.....سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی مناقب عمر بن الخطاب رضی اللہ عنہ، الحدیث: ۳۷۱۲، ج ۵، ص ۳۸۸۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۲۰۱-۲۰۲۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۲۰۲۔

④..... बसरा के करीब बहरे फ़ारस के कनारे मशरिकी जानिब एक शहर है जो जानिबे जुनूब झुका हुवा है।

(اتحاف السادة المتقين، ج ۴، ص ۴۷)

⑤..... औलिया की अक्साम में से चौथा मर्तबा अबदाल का है। येह हर दौर में सात होते हैं। इन के ज़रीए **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ सात ज़मीनों की हिफ़ाज़त फ़रमाता है। इन में से हर एक के लिये एक ज़मीन होती है जहां उस की विलायत होती है येह सातों बिस्तरतीब इन सात अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के क़दम पर होते हैं :

(1) हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लिलुल्लाह (2) हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह (3) हज़रते सय्यिदुना हारून (4) हज़रते सय्यिदुना इदरीस (5) हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ (6) हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह और (7) हज़रते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह (عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام)

उस दिन का सूरज गुरुब नहीं होता और जब तक अवताद^(१) में से कोई त्वाफ़ न कर ले फ़ज़्र तुलूअ नहीं होती। जब येह सिलसिला मुन्कतेअ हो जाएगा तो येह बैतुल्लाह के ज़मीन से उठने का सबब होगा। लोग सुब्ह करेंगे तो का'बा उठा लिया गया होगा हत्ता कि इस का निशान तक भी बाक़ी न होगा और येह उस वक़्त होगा जब इस पर सात साल यूं गुज़र जाएंगे कि कोई शख़्स इस का हज़ न करेगा। फिर मसाहिफ़ में से कुरआने पाक उठा लिया जाएगा लोग सुब्ह करेंगे तो कागज़ सफ़ेद चमकते होंगे उन पर हुरूफ़ न होंगे। फिर कुरआने पाक दिलों से उठा लिया जाएगा हत्ता कि इस का एक कलिमा भी याद न रहेगा। फिर लोग अशआर, गानों और ज़मानए जाहिलिय्यत की बातों की तरफ़ रुजूअ करेंगे। फिर दज्जाल निकलेगा और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का नुज़ूल होगा, आप दज्जाल को क़त्ल करेंगे और उस वक़्त क़ियामत इतनी क़रीब होगी जितनी कि हामिला औरत के बच्चा जनने की तवक्कोअ होती है।”

हदीषे मुबारका में है कि “इस घर का त्वाफ़ क़षरत से करो क़ब्ल इस के कि इसे उठा लिया जाए, येह दो मरतबा गिराया गया और तीसरी मरतबा उठा लिया जाएगा।”^(२)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से मरवी है कि हुज़ूर सरवरे दो अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “जब मैं दुन्या को ख़त्म करने का इरादा करूंगा तो अपने घर से इब्तिदा करूंगा इस के बा'द दुन्या को ख़त्म करूंगा।”^(३)

मक्कए मुक़र्रमा में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?

ख़ाइफ़ीन और मोहतात उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने तीन वजह से मक्कए मुक़र्रमा में रिहाइश इख़्तियार करने को मकरूह (नापसन्द) जाना :

①..... औलिया में तीसरा मर्तबा अवताद का है : येह हर दौर में सिर्फ़ चार ही होते हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इन चारों के ज़रीए चारो जिहात या'नी मशरीक़, मग़रिब, शिमाल और जुनूब की हिफ़ाज़त फ़रमाता है। इन में हर एक की विलायत एक जहत में होती है। इन के सिफ़ाती नाम हैं : अब्दुल हय्य, अब्दुल अलीम, अब्दुल कादिर और अब्दुल मुरीद।

(جامع کرامات اولیاء، ج ۱، ص ۶۹، مطبوعه: مرکز اهل سنت برکات رضا)

②..... صحیح ابن خزیمہ، کتاب المناسک، باب الامر بتعجیل الحج خوف..... الخ، الحديث: ۲۵۰۶، ج ۴، ص ۱۲۹۔

③..... قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام..... الخ، ج ۴، ص ۲۰۴۔

کشف الخفاء، حرف الهمزة مع الذال المعجمة، الحديث: ۱۹۳، ج ۱، ص ۷۰، دون “على اثره”۔

﴿1﴾.....उक्ता जाने और बैतुल्लाह से उन्स पैदा होने का खौफ़ : क्यूंकि येह चीज़ बा'ज अवकात एहतिराम के सिलसिले में दिल की ह़रारत को मिटा देती है। येही वजह है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हज़ के बा'द हाजियों को मारते और फ़रमाते “ऐ अहले यमन ! यमन को जाओ। ऐ अहले शाम ! शाम को जाओ और ऐ अहले इराक़ ! इराक़ को जाओ।”

नीज़ आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने लोगों को कषरते त़वाफ़ से मन्अ किया और फ़रमाया : “मुझे डर है कि लोग बैतुल्लाह शरीफ़ से मानूस न हो जाएं (क्यूंकि किसी चीज़ से उन्सियत के सबब उस की अहमियत कम हो जाती है)।”

﴿2﴾.....जुदाई की वजह से दोबारा आने का शौक़ पैदा होता है : क्यूंकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने बैतुल्लाह शरीफ़ को मरजअ और अमान बनाया या'नी वोह उस की त़रफ़ बार बार लौटें और उस से उन की ख़्वाहिश पूरी न हो। बा'ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “तुम किसी भी शहर में हो लेकिन तुम्हारा दिल मक्का का मुश्ताक़ हो और इस घर से लगा हुवा हो तो येह इस से बेहतर है कि तुम मक्का में हो और इस से उक्ता जाओ और तुम्हारा दिल किसी और शहर का मुश्ताक़ हो।”

बा'ज बुजुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “कितने ही लोग ख़ुरासान में हैं लेकिन त़वाफ़ करने वालों से ज़ियादा बैतुल्लाह के क़रीब हैं।”

मन्कूल है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के कुछ बन्दे ऐसे हैं कि कुर्बे इलाही के हुसूल के लिये का'बतुल्लाहे मुशरफ़ा उन का त़वाफ़ करता है।”

﴿3﴾.....रिहाइश इख़्तियार करने में कहीं गुनाहों और ख़ताओं का इर्तिकाब न हो जाए : इस लिये ख़तरा है कि कहीं इस मक़ाम के शरफ़ व बुजुर्गी की बे हुरमती के सबब ग़ज़बे इलाही का शिकार न हो जाए।

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्दमक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلٰی फ़रमाते हैं : मैं एक रात ह़तीम में नमाज़ पढ़ रहा था कि मैं ने का'बा और उस के पर्दों के दरमियान से येह कलाम सुना : “मैं **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से, फिर ऐ जिब्रईल तुम से शिकायत करता हूं कि मेरा त़वाफ़ करने वाले दुन्यवी बातों में ग़ौरो फ़ि़र करते और लगव फ़ुज़ूल बातें करते हैं अगर वोह इस से बाज़ न आए तो मैं ऐसी हरकत करूंगा कि मेरा हर पथ्थर उस पहाड़ की त़रफ़ चला जाएगा जिस से वोह जुदा किया गया था।”

हरम में इरादु गुनाह पर भी मुआख़ज़ा है :

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मक्का के इलावा किसी शहर में **अब्बाह** غَرَوْجَل गुनाह करने से पहले महज़ निय्यत पर मुआख़ज़ा नहीं फ़रमाता, फिर येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَمَنْ يَرِدْ فِيهِ بِالْحَادِ بِظُلْمِ نُدْقِهِ مِنْ
عَذَابِ الْيَمِّ (پ ۱، الحج: ۲۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो इस में किसी ज़ियादती का नाहक़ इरादा करे हम उसे दर्दनाक अज़ाब चखाएंगे ।

या'नी महज़ इरादा करने पर येह सज़ा मिलेगी ।”

मन्कूल है कि “नेकियों की तरह यहां गुनाहों की सज़ा भी दुगनी हो जाती है ।” हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “हरमे मक्का में ज़ख़ीरा अन्दोज़ी करना बे दीनी है ।” मन्कूल है कि “हरमे मक्का में झूट बोलना भी बे दीनी है ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मुझे रुकिया⁽¹⁾ में 70 गुनाह करना मक्का में एक गुनाह करने से ज़ियादा पसन्द है ।”

इस (या'नी बे हरमती के) ख़ौफ़ के सबब मक्कए मुकर्रमा में रहने वाले बा'ज़ हज़रात हरम शरीफ़ में क़ज़ाए हाज़त न करते बल्कि क़ज़ाए हाज़त के वक़्त हुदूदे हरम से बाहर निकल जाते । बा'ज़ हज़रात ने वहां एक महीना क़ियाम किया लेकिन ज़मीन पर अपना पहलू न लगाया । मक्का में रहने की मुमानअत के सबब बा'ज़ उ-लमा ने वहां के मकानात के किराये को ना पसन्द जाना है ।

इज़ालु वहम :

(ऐ सुनने वाले !) तुझे येह ख़याल नहीं करना चाहिये कि वहां ठहरने की कराहत इस मक़ाम की फ़ज़ीलत कम कर देगी क्यूंकि कराहत की वजह मख़लूक की कमज़ोरी और इस मक़ाम के हक़ की अदाएगी में कोताही करना है । लिहाज़ा हमारे इस क़ौल कि “वहां न ठहरना अफ़ज़ल है” का मा'ना येह है कि इस मक़ाम से उकताने और इस की ता'ज़ीम में कोताही की सूरत में ऐसा है वरना इस मक़ाम का हक़ अदा करने की सूरत में कहीं और ठहरना कैसे अफ़ज़ल हो सकता है ? और मक्का शरीफ़ कैसे अफ़ज़ल न होगा जब कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब दोबारा मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लाए तो का'बे की तरफ़ मुतवज्जेह हो कर फ़रमाया : “यकीनन

① रुकिया : मक्का व ताइफ़ के दरमियान एक जगह है । (अज़ मुसन्निफ़)

तू **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की बेहतरीन ज़मीन है और मुझे उस के तमाम शहरों से ज़ियादा महबूब है। अगर मुझे यहां से निकलने पर मजबूर न किया जाता तो मैं कभी न निकलता।”⁽¹⁾

और ऐसा क्यूंकर न हो जब कि बैतुल्लाह शरीफ़ को देखना भी इबादत है। नीज़ इस में नेकियां कई गुना बढ़ जाती हैं जैसा कि हम ने ज़िक्र किया।

मदीनए मुनव्वरा की अफ़ज़लियत :

मक्कए मुकर्रमा के बा’द मदीनए मुनव्वरा رَزَاہَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا से अफ़ज़ल कोई ज़मीन नहीं, इस में भी नेक आ’माल का षवाब बढ़ जाता है।

एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों से बेहतर :

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मेरी इस मस्जिद (या’नी मस्जिदे नबवी) में एक नमाज़ मस्जिदे हराम के इलावा दीगर मसाजिद में एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है।”⁽²⁾ इसी तरह मदीनए मुनव्वरा رَزَاہَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में किया जाने वाला हर अमल एक हज़ार के बराबर है। मदीनए मुनव्वरा के बा’द बैतुल मुक़द्दस का मर्तबा है। इस में एक नमाज़ मस्जिदे हराम के इलावा दीगर मस्जिदों की पांच सो नमाज़ों के बराबर है और इसी तरह तमाम आ’माल हैं।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मस्जिदे नबवी में एक नमाज़ 10 हज़ार नमाज़ों के बराबर है। बैतुल मुक़द्दस में एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों के बराबर है और मस्जिदे हराम में एक नमाज़ लाख नमाज़ों के बराबर है।”⁽³⁾

शफ़ाअत की बिशाःत :

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने मदीनए मुनव्वरा की सख़्ती और इस की शिद्दत पर सब्र किया बरोजे क़ियामत मैं उस का शफ़ीअ होऊंगा।”⁽⁴⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل مکة، الحدیث: ۳۹۵۱، ج ۵، ص ۳۸۶۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب فضل الصلاة بمسجدی مکة والمدینة، الحدیث: ۱۳۹۴، ص ۷۲۰۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۲۰۴۔

الترغیب والترہیب، کتاب النوافل، الترغیب فی قیام اللیل، الحدیث: ۹۲۹، ج ۱، ص ۲۹۲، مفہومًا۔

④.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب الترغیب فی سکنی المدینة.....الخ، الحدیث: ۱۳۷۸، ص ۷۱۶، بتقدم وتاخر۔

हुजूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस से हो सके वोह मदीने में मरे क्यूंकि जो मदीने में मरेगा मैं क़ियामत के दिन उस का शफ़ीअ़ होऊंगा ।”⁽¹⁾

इन तीन मक़ामाते मुक़द्दसा के बा'द इस्लामी सरहदों के इलावा तमाम मक़ामात बराबर हैं क्यूंकि इस्लामी सरहद पर दुश्मन की निगरानी के लिये क़ियाम करने की बड़ी फ़ज़ीलत है । इसी लिये हुजूर सय्यिदे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “तीन मस्जिदों के सिवा किसी तरफ़ कजावे न बांधे जाएं : मस्जिदे ह़राम, मेरी येह मस्जिद (या'नी मस्जिदे नबवी) और मस्जिदे अक्सा ।”^{(2) (3)}

ज़ियारते कुबूर के लिये सफ़र करने का हुक्म :

बा'ज अहले इल्म ने इस हदीषे पाक से इस्तिदलाल करते हुए मुतबर्क मक़ामात और उ-लमा व औलिया की कुबूर की ज़ियारत के लिये सफ़र करने से मन्अ किया है लेकिन मुझ (या'नी इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي) पर जो बात ज़ाहिर हुई है येह कि ज़ियारते कुबूर के लिये सफ़र करना जाइज़ है क्यूंकि इस का हुक्म दिया गया है । चुनाच्चे,

①..... سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینة، الحدیث: ۳۹۴۳، ج ۵، ص ۸۳، مفہومًا۔

②..... मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान میر آتول مناجیہ، ج. ۱ عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَلٰئِکَاتِ

1 स. 431 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : वहाबी हज़रात ने इस के मा'ना येह समझे कि सिवाए इन तीन मस्जिदों के किसी और मस्जिद की तरफ़ सफ़र ही ह़राम है । लिहाज़ा उर्स, ज़ियारते कुबूर वग़ैरा के लिये सफ़र ह़राम । अगर येह मतलब हो तो फिर तिजारत, इलाज, दोस्तों की मुलाक़ात, इल्मे, दीन सीखने वग़ैरा तमाम कामों के लिये सफ़र ह़राम होंगे और रेल्वे का मोहकमा मअत्तल (काम से बेकार) हो कर रह जाएगा और येह हदीष कुरआन के ख़िलाफ़ ही होगी और दीगर अहदीष के भी । رَوَّی عَنْهُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ : (۱) : (۲) (۳) (۴) (۵) (۶) (۷) (۸) (۹) (۱۰) (۱۱) (۱۲) (۱۳) (۱۴) (۱۵) (۱۶) (۱۷) (۱۸) (۱۹) (۲۰) (۲۱) (۲۲) (۲۳) (۲۴) (۲۵) (۲۶) (۲۷) (۲۸) (۲۹) (۳۰) (۳۱) (۳۲) (۳۳) (۳۴) (۳۵) (۳۶) (۳۷) (۳۸) (۳۹) (۴۰) (۴۱) (۴۲) (۴۳) (۴۴) (۴۵) (۴۶) (۴۷) (۴۸) (۴۹) (۵۰) (۵۱) (۵۲) (۵۳) (۵۴) (۵۵) (۵۶) (۵۷) (۵۸) (۵۹) (۶۰) (۶۱) (۶۲) (۶۳) (۶۴) (۶۵) (۶۶) (۶۷) (۶۸) (۶۹) (۷۰) (۷۱) (۷۲) (۷۳) (۷۴) (۷۵) (۷۶) (۷۷) (۷۸) (۷۹) (۸۰) (۸۱) (۸۲) (۸۳) (۸۴) (۸۵) (۸۶) (۸۷) (۸۸) (۸۹) (۹۰) (۹۱) (۹۲) (۹۳) (۹۴) (۹۵) (۹۶) (۹۷) (۹۸) (۹۹) (۱۰۰) (۱۰۱) (۱۰۲) (۱۰۳) (۱۰۴) (۱۰۵) (۱۰۶) (۱۰۷) (۱۰۸) (۱۰۹) (۱۱۰) (۱۱۱) (۱۱۲) (۱۱۳) (۱۱۴) (۱۱۵) (۱۱۶) (۱۱۷) (۱۱۸) (۱۱۹) (۱۲۰) (۱۲۱) (۱۲۲) (۱۲۳) (۱۲۴) (۱۲۵) (۱۲۶) (۱۲۷) (۱۲۸) (۱۲۹) (۱۳۰) (۱۳۱) (۱۳۲) (۱۳۳) (۱۳۴) (۱۳۵) (۱۳۶) (۱۳۷) (۱۳۸) (۱۳۹) (۱۴۰) (۱۴۱) (۱۴۲) (۱۴۳) (۱۴۴) (۱۴۵) (۱۴۶) (۱۴۷) (۱۴۸) (۱۴۹) (۱۵۰) (۱۵۱) (۱۵۲) (۱۵۳) (۱۵۴) (۱۵۵) (۱۵۶) (۱۵۷) (۱۵۸) (۱۵۹) (۱۶۰) (۱۶۱) (۱۶۲) (۱۶۳) (۱۶۴) (۱۶۵) (۱۶۶) (۱۶۷) (۱۶۸) (۱۶۹) (۱۷۰) (۱۷۱) (۱۷۲) (۱۷۳) (۱۷۴) (۱۷۵) (۱۷۶) (۱۷۷) (۱۷۸) (۱۷۹) (۱۸۰) (۱۸۱) (۱۸۲) (۱۸۳) (۱۸۴) (۱۸۵) (۱۸۶) (۱۸۷) (۱۸۸) (۱۸۹) (۱۹۰) (۱۹۱) (۱۹۲) (۱۹۳) (۱۹۴) (۱۹۵) (۱۹۶) (۱۹۷) (۱۹۸) (۱۹۹) (۲۰۰) (۲۰۱) (۲۰۲) (۲۰۳) (۲۰۴) (۲۰۵) (۲۰۶) (۲۰۷) (۲۰۸) (۲۰۹) (۲۱۰) (۲۱۱) (۲۱۲) (۲۱۳) (۲۱۴) (۲۱۵) (۲۱۶) (۲۱۷) (۲۱۸) (۲۱۹) (۲۲۰) (۲۲۱) (۲۲۲) (۲۲۳) (۲۲۴) (۲۲۵) (۲۲۶) (۲۲۷) (۲۲۸) (۲۲۹) (۲۳۰) (۲۳۱) (۲۳۲) (۲۳۳) (۲۳۴) (۲۳۵) (۲۳۶) (۲۳۷) (۲۳۸) (۲۳۹) (۲۴۰) (۲۴۱) (۲۴۲) (۲۴۳) (۲۴۴) (۲۴۵) (۲۴۶) (۲۴۷) (۲۴۸) (۲۴۹) (۲۵۰) (۲۵۱) (۲۵۲) (۲۵۳) (۲۵۴) (۲۵۵) (۲۵۶) (۲۵۷) (۲۵۸) (۲۵۹) (۲۶۰) (۲۶۱) (۲۶۲) (۲۶۳) (۲۶۴) (۲۶۵) (۲۶۶) (۲۶۷) (۲۶۸) (۲۶۹) (۲۷۰) (۲۷۱) (۲۷۲) (۲۷۳) (۲۷۴) (۲۷۵) (۲۷۶) (۲۷۷) (۲۷۸) (۲۷۹) (۲۸۰) (۲۸۱) (۲۸۲) (۲۸۳) (۲۸۴) (۲۸۵) (۲۸۶) (۲۸۷) (۲۸۸) (۲۸۹) (۲۹۰) (۲۹۱) (۲۹۲) (۲۹۳) (۲۹۴) (۲۹۵) (۲۹۶) (۲۹۷) (۲۹۸) (۲۹۹) (۳۰۰) (۳۰۱) (۳۰۲) (۳۰۳) (۳۰۴) (۳۰۵) (۳۰۶) (۳۰۷) (۳۰۸) (۳۰۹) (۳۱۰) (۳۱۱) (۳۱۲) (۳۱۳) (۳۱۴) (۳۱۵) (۳۱۶) (۳۱۷) (۳۱۸) (۳۱۹) (۳۲۰) (۳۲۱) (۳۲۲) (۳۲۳) (۳۲۴) (۳۲۵) (۳۲۶) (۳۲۷) (۳۲۸) (۳۲۹) (۳۳۰) (۳۳۱) (۳۳۲) (۳۳۳) (۳۳۴) (۳۳۵) (۳۳۶) (۳۳۷) (۳۳۸) (۳۳۹) (۳۴۰) (۳۴۱) (۳۴۲) (۳۴۳) (۳۴۴) (۳۴۵) (۳۴۶) (۳۴۷) (۳۴۸) (۳۴۹) (۳۵۰) (۳۵۱) (۳۵۲) (۳۵۳) (۳۵۴) (۳۵۵) (۳۵۶) (۳۵۷) (۳۵۸) (۳۵۹) (۳۶۰) (۳۶۱) (۳۶۲) (۳۶۳) (۳۶۴) (۳۶۵) (۳۶۶) (۳۶۷) (۳۶۸) (۳۶۹) (۳۷۰) (۳۷۱) (۳۷۲) (۳۷۳) (۳۷۴) (۳۷۵) (۳۷۶) (۳۷۷) (۳۷۸) (۳۷۹) (۳۸۰) (۳۸۱) (۳۸۲) (۳۸۳) (۳۸۴) (۳۸۵) (۳۸۶) (۳۸۷) (۳۸۸) (۳۸۹) (۳۹۰) (۳۹۱) (۳۹۲) (۳۹۳) (۳۹۴) (۳۹۵) (۳۹۶) (۳۹۷) (۳۹۸) (۳۹۹) (۴۰۰) (۴۰۱) (۴۰۲) (۴۰۳) (۴۰۴) (۴۰۵) (۴۰۶) (۴۰۷) (۴۰۸) (۴۰۹) (۴۱۰) (۴۱۱) (۴۱۲) (۴۱۳) (۴۱۴) (۴۱۵) (۴۱۶) (۴۱۷) (۴۱۸) (۴۱۹) (۴۲۰) (۴۲۱) (۴۲۲) (۴۲۳) (۴۲۴) (۴۲۵) (۴۲۶) (۴۲۷) (۴۲۸) (۴۲۹) (۴۳۰) (۴۳۱) (۴۳۲) (۴۳۳) (۴۳۴) (۴۳۵) (۴۳۶) (۴۳۷) (۴۳۸) (۴۳۹) (۴۴۰) (۴۴۱) (۴۴۲) (۴۴۳) (۴۴۴) (۴۴۵) (۴۴۶) (۴۴۷) (۴۴۸) (۴۴۹) (۴۵۰) (۴۵۱) (۴۵۲) (۴۵۳) (۴۵۴) (۴۵۵) (۴۵۶) (۴۵۷) (۴۵۸) (۴۵۹) (۴۶۰) (۴۶۱) (۴۶۲) (۴۶۳) (۴۶۴) (۴۶۵) (۴۶۶) (۴۶۷) (۴۶۸) (۴۶۹) (۴۷۰) (۴۷۱) (۴۷۲) (۴۷۳) (۴۷۴) (۴۷۵) (۴۷۶) (۴۷۷) (۴۷۸) (۴۷۹) (۴۸۰) (۴۸۱) (۴۸۲) (۴۸۳) (۴۸۴) (۴۸۵) (۴۸۶) (۴۸۷) (۴۸۸) (۴۸۹) (۴۹۰) (۴۹۱) (۴۹۲) (۴۹۳) (۴۹۴) (۴۹۵) (۴۹۶) (۴۹۷) (۴۹۸) (۴۹۹) (۵۰۰) (۵۰۱) (۵۰۲) (۵۰۳) (۵۰۴) (۵۰۵) (۵۰۶) (۵۰۷) (۵۰۸) (۵۰۹) (۵۱۰) (۵۱۱) (۵۱۲) (۵۱۳) (۵۱۴) (۵۱۵) (۵۱۶) (۵۱۷) (۵۱۸) (۵۱۹) (۵۲۰) (۵۲۱) (۵۲۲) (۵۲۳) (۵۲۴) (۵۲۵) (۵۲۶) (۵۲۷) (۵۲۸) (۵۲۹) (۵۳۰) (۵۳۱) (۵۳۲) (۵۳۳) (۵۳۴) (۵۳۵) (۵۳۶) (۵۳۷) (۵۳۸) (۵۳۹) (۵۴۰) (۵۴۱) (۵۴۲) (۵۴۳) (۵۴۴) (۵۴۵) (۵۴۶) (۵۴۷) (۵۴۸) (۵۴۹) (۵۵۰) (۵۵۱) (۵۵۲) (۵۵۳) (۵۵۴) (۵۵۵) (۵۵۶) (۵۵۷) (۵۵۸) (۵۵۹) (۵۶۰) (۵۶۱) (۵۶۲) (۵۶۳) (۵۶۴) (۵۶۵) (۵۶۶) (۵۶۷) (۵۶۸) (۵۶۹) (۵۷۰) (۵۷۱) (۵۷۲) (۵۷۳) (۵۷۴) (۵۷۵) (۵۷۶) (۵۷۷) (۵۷۸) (۵۷۹) (۵۸۰) (۵۸۱) (۵۸۲) (۵۸۳) (۵۸۴) (۵۸۵) (۵۸۶) (۵۸۷) (۵۸۸) (۵۸۹) (۵۹۰) (۵۹۱) (۵۹۲) (۵۹۳) (۵۹۴) (۵۹۵) (۵۹۶) (۵۹۷) (۵۹۸) (۵۹۹) (۶۰۰) (۶۰۱) (۶۰۲) (۶۰۳) (۶۰۴) (۶۰۵) (۶۰۶) (۶۰۷) (۶۰۸) (۶۰۹) (۶۱۰) (۶۱۱) (۶۱۲) (۶۱۳) (۶۱۴) (۶۱۵) (۶۱۶) (۶۱۷) (۶۱۸) (۶۱۹) (۶۲۰) (۶۲۱) (۶۲۲) (۶۲۳) (۶۲۴) (۶۲۵) (۶۲۶) (۶۲۷) (۶۲۸) (۶۲۹) (۶۳۰) (۶۳۱) (۶۳۲) (۶۳۳) (۶۳۴) (۶۳۵) (۶۳۶) (۶۳۷) (۶۳۸) (۶۳۹) (۶۴۰) (۶۴۱) (۶۴۲) (۶۴۳) (۶۴۴) (۶۴۵) (۶۴۶) (۶۴۷) (۶۴۸) (۶۴۹) (۶۵۰) (۶۵۱) (۶۵۲) (۶۵۳) (۶۵۴) (۶۵۵) (۶۵۶) (۶۵۷) (۶۵۸) (۶۵۹) (۶۶۰) (۶۶۱) (۶۶۲) (۶۶۳) (۶۶۴) (۶۶۵) (۶۶۶) (۶۶۷) (۶۶۸) (۶۶۹) (۶۷۰) (۶۷۱) (۶۷۲) (۶۷۳) (۶۷۴) (۶۷۵) (۶۷۶) (۶۷۷) (۶۷۸) (۶۷۹) (۶۸۰) (۶۸۱) (۶۸۲) (۶۸۳) (۶۸۴) (۶۸۵) (۶۸۶) (۶۸۷) (۶۸۸) (۶۸۹) (۶۹۰) (۶۹۱) (۶۹۲) (۶۹۳) (۶۹۴) (۶۹۵) (۶۹۶) (۶۹۷) (۶۹۸) (۶۹۹) (۷۰۰) (۷۰۱) (۷۰۲) (۷۰۳) (۷۰۴) (۷۰۵) (۷۰۶) (۷۰۷) (۷۰۸) (۷۰۹) (۷۱۰) (۷۱۱) (۷۱۲) (۷۱۳) (۷۱۴) (۷۱۵) (۷۱۶) (۷۱۷) (۷۱۸) (۷۱۹) (۷۲۰) (۷۲۱) (۷۲۲) (۷۲۳) (۷۲۴) (۷۲۵) (۷۲۶) (۷۲۷) (۷۲۸) (۷۲۹) (۷۳۰) (۷۳۱) (۷۳۲) (۷۳۳) (۷۳۴) (۷۳۵) (۷۳۶) (۷۳۷) (۷۳۸) (۷۳۹) (۷۴۰) (۷۴۱) (۷۴۲) (۷۴۳) (۷۴۴) (۷۴۵) (۷۴۶) (۷۴۷) (۷۴۸) (۷۴۹) (۷۵۰) (۷۵۱) (۷۵۲) (۷۵۳) (۷۵۴) (۷۵۵) (۷۵۶) (۷۵۷) (۷۵۸) (۷۵۹) (۷۶۰) (۷۶۱) (۷۶۲) (۷۶۳) (۷۶۴) (۷۶۵) (۷۶۶) (۷۶۷) (۷۶۸) (۷۶۹) (۷۷۰) (۷۷۱) (۷۷۲) (۷۷۳) (۷۷۴) (۷۷۵) (۷۷۶) (۷۷۷) (۷۷۸) (۷۷۹) (۷۸۰) (۷۸۱) (۷۸۲) (۷۸۳) (۷۸۴) (۷۸۵) (۷۸۶) (۷۸۷) (۷۸۸) (۷۸۹) (۷۹۰) (۷۹۱) (۷۹۲) (۷۹۳) (۷۹۴) (۷۹۵) (۷۹۶) (۷۹۷) (۷۹۸) (۷۹۹) (۸۰۰) (۸۰۱) (۸۰۲) (۸۰۳) (۸۰۴) (۸۰۵) (۸۰۶) (۸۰۷) (۸۰۸) (۸۰۹) (۸۱۰) (۸۱۱) (۸۱۲) (۸۱۳) (۸۱۴) (۸۱۵) (۸۱۶) (۸۱۷) (۸۱۸) (۸۱۹) (۸۲۰) (۸۲۱) (۸۲۲) (۸۲۳) (۸۲۴) (۸۲۵) (۸۲۶) (۸۲۷) (۸۲۸) (۸۲۹) (۸۳۰) (۸۳۱) (۸۳۲) (۸۳۳) (۸۳۴) (۸۳۵) (۸۳۶) (۸۳۷) (۸۳۸) (۸۳۹) (۸۴۰) (۸۴۱) (۸۴۲) (۸۴۳) (۸۴۴) (۸۴۵) (۸۴۶) (۸۴۷) (۸۴۸) (۸۴۹) (۸۵۰) (۸۵۱) (۸۵۲) (۸۵۳) (۸۵۴) (۸۵۵) (۸۵۶) (۸۵۷) (۸۵۸) (۸۵۹) (۸۶۰) (۸۶۱) (۸۶۲) (۸۶۳) (۸۶۴) (۸۶۵) (۸۶۶) (۸۶۷) (۸۶۸) (۸۶۹) (۸۷۰) (۸۷۱) (۸۷۲) (۸۷۳) (۸۷۴) (۸۷۵) (۸۷۶) (۸۷۷) (۸۷۸) (۸۷۹) (۸۸۰) (۸۸۱) (۸۸۲) (۸۸۳) (۸۸۴) (۸۸۵) (۸۸۶) (۸۸۷) (۸۸۸) (۸۸۹) (۸۹۰) (۸۹۱) (۸۹۲) (۸۹۳) (۸۹۴) (۸۹۵) (۸۹۶) (۸۹۷) (۸۹۸) (۸۹۹) (۹۰۰) (۹۰۱) (۹۰۲) (۹۰۳) (۹۰۴) (۹۰۵) (۹۰۶) (۹۰۷) (۹۰۸) (۹۰۹) (۹۱۰) (۹۱۱) (۹۱۲) (۹۱۳) (۹۱۴) (۹۱۵) (۹۱۶) (۹۱۷) (۹۱۸) (۹۱۹) (۹۲۰) (۹۲۱) (۹۲۲) (۹۲۳) (۹۲۴) (۹۲۵) (۹۲۶) (۹۲۷) (۹۲۸) (۹۲۹) (۹۳۰) (۹۳۱) (۹۳۲) (۹۳۳) (۹۳۴) (۹۳۵) (۹۳۶) (۹۳۷) (۹۳۸) (۹۳۹) (۹۴۰) (۹۴۱) (۹۴۲) (۹۴۳) (۹۴۴) (۹۴۵) (۹۴۶) (۹۴۷) (۹۴۸) (۹۴۹) (۹۵۰) (۹۵۱) (۹۵۲) (۹۵۳) (۹۵۴) (۹۵۵) (۹۵۶) (۹۵۷) (۹۵۸) (۹۵۹) (۹۶۰) (۹۶۱) (۹۶۲) (۹۶۳) (۹۶۴) (۹۶۵) (۹۶۶) (۹۶۷) (۹۶۸) (۹۶۹) (۹۷۰) (۹۷۱) (۹۷۲) (۹۷۳) (۹۷۴) (۹۷۵) (۹۷۶) (۹۷۷) (۹۷۸) (۹۷۹) (۹۸۰) (۹۸۱) (۹۸۲) (۹۸۳) (۹۸۴) (۹۸۵) (۹۸۶) (۹۸۷) (۹۸۸) (۹۸۹) (۹۹۰) (۹۹۱) (۹۹۲) (۹۹۳) (۹۹۴) (۹۹۵) (۹۹۶) (۹۹۷) (۹۹۸) (۹۹۹) (۱۰۰۰) (۱۰۰۱) (۱۰۰۲) (۱۰۰۳) (۱۰۰۴) (۱۰۰۵) (۱۰۰۶) (۱۰۰۷) (۱۰۰۸) (۱۰۰۹) (۱۰۱۰) (۱۰۱۱) (۱۰۱۲) (۱۰۱۳) (۱۰۱۴) (۱۰۱۵) (۱۰۱۶) (۱۰۱۷) (۱۰۱۸) (۱۰۱۹) (۱۰۲۰) (۱۰۲۱) (۱۰۲۲) (۱۰۲۳) (۱۰۲۴) (۱۰۲۵) (۱۰۲۶) (۱۰۲۷) (۱۰۲۸) (۱۰۲۹) (۱۰۳۰) (۱۰۳۱) (۱۰۳۲) (۱۰۳۳) (۱۰۳۴) (۱۰۳۵) (۱۰۳۶) (۱۰۳۷) (۱۰۳۸) (۱۰۳۹) (۱۰۴۰) (۱۰۴۱) (۱۰۴۲) (۱۰۴۳) (۱۰۴۴) (۱۰۴۵) (۱۰۴۶) (۱۰۴۷) (۱۰۴۸) (۱۰۴۹) (۱۰۵۰) (۱۰۵۱) (۱۰۵۲) (۱۰۵۳) (۱۰۵۴) (۱۰۵۵) (۱۰۵۶) (۱۰۵۷) (۱۰۵۸) (۱۰۵۹) (۱۰۶۰) (۱۰۶۱) (۱۰۶۲) (۱۰۶۳) (۱۰۶۴) (۱۰۶۵) (۱۰۶۶) (۱۰۶۷) (۱۰۶۸) (۱۰۶۹) (۱۰۷۰) (۱۰۷۱) (۱۰۷۲) (۱۰۷۳) (۱۰۷۴) (۱۰۷۵) (۱۰۷۶) (۱۰۷۷) (۱۰۷۸) (۱۰۷۹) (۱۰۸۰) (۱۰۸۱) (۱۰۸۲) (۱۰۸۳) (۱۰۸۴) (۱۰۸۵) (۱۰۸۶) (۱۰۸۷) (۱۰۸۸) (۱۰۸۹) (۱۰۹۰) (۱۰۹۱) (۱۰۹۲) (۱۰۹۳) (۱۰۹۴) (۱۰۹۵) (۱۰۹۶) (۱۰۹۷) (۱۰۹۸) (۱۰۹۹) (۱۱۰۰) (۱۱۰۱) (۱۱۰۲) (۱۱۰۳) (۱۱۰۴) (۱۱۰۵) (۱۱۰۶) (۱۱۰۷) (۱۱۰۸) (۱۱۰۹) (۱۱۱۰) (۱۱۱۱) (۱۱۱۲) (۱۱۱۳) (۱۱۱۴) (۱۱۱۵) (۱۱۱۶) (۱۱۱۷) (۱۱۱۸) (۱۱۱۹) (۱۱۲۰) (۱۱۲۱) (۱۱۲۲) (۱۱۲۳) (۱۱۲۴) (۱۱۲۵) (۱۱۲۶) (۱۱۲۷) (۱۱۲۸) (۱۱۲۹) (۱۱۳۰) (۱۱۳۱) (۱۱۳۲) (۱۱۳۳) (۱۱۳۴) (۱۱۳۵) (۱۱۳۶) (۱۱۳۷) (۱۱۳۸) (۱۱۳۹) (۱۱۴۰) (۱۱۴۱) (۱۱۴۲) (۱۱۴۳) (۱۱۴۴) (۱۱۴۵) (۱۱۴۶) (۱۱۴۷) (۱۱۴۸) (۱۱۴۹) (۱۱۵۰) (۱۱۵۱) (۱۱۵۲) (۱۱۵۳) (۱۱۵۴) (۱۱۵۵) (۱۱۵۶) (۱۱۵۷) (۱۱۵۸) (۱۱۵۹) (۱۱۶۰) (۱۱۶۱) (۱۱۶۲) (۱۱۶۳) (۱۱۶۴) (۱۱۶۵) (۱۱۶۶) (۱۱۶۷) (۱۱۶۸) (۱۱۶۹) (۱۱۷۰) (۱۱۷۱) (۱۱۷۲) (۱۱۷۳) (۱۱۷۴) (۱۱۷۵) (۱۱۷۶) (۱۱۷۷) (۱۱۷۸) (۱۱۷۹) (۱۱۸۰) (۱۱۸۱) (۱۱۸۲) (۱۱۸۳) (۱۱۸۴) (۱۱۸۵) (۱۱۸۶) (۱۱۸۷) (۱۱۸۸) (۱۱۸۹) (۱۱۹۰) (۱۱۹۱) (۱۱۹۲) (۱۱۹۳) (۱۱۹۴) (۱۱۹۵) (۱۱۹۶) (۱۱۹۷) (۱۱۹۸) (۱۱۹۹) (۱۲۰۰) (۱۲۰۱) (۱۲۰۲) (۱۲۰۳) (۱۲۰۴) (۱۲۰۵) (۱۲۰۶) (۱۲۰۷) (۱۲۰۸) (۱۲۰۹) (۱۲۱۰) (۱۲۱۱) (۱۲۱۲) (۱۲۱۳) (۱۲۱۴) (۱۲۱۵) (۱۲۱۶) (۱۲۱۷) (۱۲۱۸) (۱۲۱۹) (۱۲۲۰) (۱۲۲۱) (۱۲۲۲) (۱۲۲۳) (۱۲۲۴) (۱۲۲۵) (۱۲۲۶) (۱۲۲۷) (۱۲۲۸) (۱۲۲۹) (۱۲۳۰) (۱۲۳۱) (۱۲۳۲) (۱۲۳۳) (۱۲۳۴) (۱۲۳۵) (۱۲۳۶) (۱۲۳۷) (۱۲۳۸) (۱۲۳۹) (۱۲۴۰) (۱۲۴۱) (۱۲۴۲) (۱۲۴۳) (۱۲۴۴) (۱۲۴۵) (۱۲۴۶) (۱۲۴۷) (۱۲۴۸) (۱۲۴۹) (۱۲۵۰) (۱۲۵۱) (۱۲۵۲) (۱۲۵۳) (۱۲۵۴) (۱۲۵۵) (۱۲۵۶) (۱۲۵۷) (۱۲۵۸) (۱۲۵۹) (۱۲۶۰) (۱۲۶۱) (۱۲۶۲) (۱۲۶۳) (۱۲۶۴) (۱۲۶۵) (۱۲۶۶) (۱۲۶۷) (۱۲۶۸) (۱۲۶۹) (۱۲۷۰) (۱۲۷۱) (۱۲۷۲) (۱۲۷۳) (۱۲۷۴) (۱۲۷۵) (۱۲۷۶) (۱۲۷۷) (۱۲۷۸) (۱۲۷۹) (۱۲۸۰) (۱۲۸۱) (۱۲۸۲) (۱۲۸۳) (۱۲۸۴) (۱۲۸۵) (۱۲۸۶) (۱۲۸۷) (۱۲۸۸) (۱۲۸۹) (۱۲۹۰) (۱۲۹۱) (۱۲۹۲) (۱۲۹۳) (۱۲۹۴) (۱۲۹۵) (۱۲۹۶) (۱۲۹۷) (۱۲۹۸) (۱۲۹۹) (۱۳۰۰) (۱۳۰۱) (۱۳۰۲) (۱۳۰۳) (۱۳۰۴) (۱۳۰۵) (۱۳۰۶) (۱۳۰۷) (۱۳۰۸) (۱۳۰۹) (۱۳۱۰) (۱۳۱۱) (۱۳۱۲) (۱۳۱۳) (۱۳۱۴) (۱۳۱۵) (۱۳۱۶) (۱۳۱۷) (۱۳۱۸) (۱۳۱۹) (۱۳۲۰) (۱۳۲۱) (۱۳۲۲) (۱۳۲۳) (۱۳۲۴) (۱۳۲۵) (۱۳۲۶) (۱۳۲۷) (۱۳۲۸) (۱۳۲۹) (۱۳۳۰) (۱۳۳۱) (۱۳۳۲) (۱۳۳۳) (۱۳۳۴) (۱۳۳۵) (۱۳۳۶) (۱۳۳۷) (۱۳۳۸) (۱۳۳۹) (۱۳۴۰) (۱۳۴۱) (۱۳۴۲) (۱۳۴۳) (۱۳۴۴) (۱۳۴

हुजुरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने तुम्हें क़ब्रों की ज़ियारत से मन्अ किया था अब ज़ियारत किया करो⁽¹⁾ लेकिन ना मुनासिब कलाम न करो ।”⁽²⁾

मज़ारते औलिया की ज़ियारत का हुक्म :

माक़बल हदीष मसाजिद के मुतअल्लिक मरवी है और मक़ामाते मुक़दसा का हुक्म ऐसा नहीं क्यूंकि तीन मसाजिद के इलावा दीगर मसाजिद बराबर हैं और कोई शहर ऐसा नहीं जिस में मस्जिद न हो लिहाज़ा किसी दूसरी मस्जिद की तरफ़ सफ़र करने का कोई मा'ना नहीं । रहा

①..... मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَلٰٓئِکَاتِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 522 पर “ज़ियारते कुबूर से मन्अ किया था” के तहत फ़रमाते हैं : शुरूए इस्लाम में ज़ियारते कुबूर से मुसलमान मर्दों औरतों को मन्अ थी क्यूंकि लोग नए नए इस्लाम लाए थे । अन्देशा था कि बुत परस्ती के आदी होने की वजह से अब क़ब्र परस्ती शुरूअ कर दें जब इन में इस्लाम रासिख़ हो गया तो येह मुमानअत मन्सूख़ हो गई, जैसे जब शराब ह़राम हुई तो शराब के बरतन इस्ति'माल करना भी ममनूअ हो गया ताकि लोग बरतन देख कर फिर शराब याद न कर लें, जब लोग तर्कें शराब के आदी हो गए तो बरतनों के इस्ति'माल की मुमानअत मन्सूख़ हो गई । “अब ज़ियारत किया करो” के तहत फ़रमाते हैं : येह अम्र इस्तिहबाबी है हक़ येह है कि इस हुक्म में औरतें भी शामिल हैं कि इन्हें भी ज़ियारते कुबूर की इजाज़त दी गई (لغات، اشعر، مرقاة) लेकिन अब औरतों को ज़ियारते कुबूर से रोका जाए या'नी घर से ज़ियारते कुबूर के लिये न निकलें सिवाए रोज़ए अतहर हुजुरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे मुनव्वर की ज़ियारत के, हां अगर कहीं जा रही हों और रास्ते में क़ब्र वाक़ेअ हो तो ज़ियारत कर लें जैसा कि हज़रते आइशा सिद्दीका (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ने हज़रते अब्दुरहमान (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ) की क़ब्र की ज़ियारत की और अगर किसी घर में ही इत्तिफ़ाक़न वाक़ेअ हो तो ज़ियारत कर सकती हैं, हज़रते आइशा सिद्दीका (رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) के घर में हुजुरे अन्वर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्र शरीफ़ थी जहां आप मुजावरा व मुन्तज़िमा थीं । ख़याल रहे कि زُورُوا मुतलक़ अम्र है लिहाज़ा मुसलमानों को ज़ियारते क़ब्र के लिये सफ़र भी जाइज़ है, जब हस्पतालों और हकीमों के पास सफ़र कर के जा सकते हैं तो मज़ारते औलिया पर भी सफ़र कर के जा सकते हैं कि इन की कुबूर रूहानी हस्पताल हैं, नीज़ अगर कहीं क़ब्र पर लोग नाजाइज़ हरकतें करते हों तो इस से ज़ियारते कुबूर न छोड़े, हो सके तो इन हरकतों को बन्द करे क्यूंकि زُورُوا मुतलक़ है, देखो हुजूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हिजरत से पहले बुतों की वजह से का'बा न छोड़ा बल्कि जब मौक़अ मिला तो बुत निकाल दिये आज भी निकाह में लोग ना जाइज़ हरकतें करते हैं मगर इस की वजह से न निकाह बन्द किये जाते हैं न वहां की शिर्कत, निकाह भी सुन्नते मुतलक़ा है और ज़ियारते कुबूर भी सुन्नते मुतलक़ा, निकाह व ज़ियारते कुबूर दोनों के लिये सफ़र भी दुरुस्त है और नाजाइज़ उमूर की वजह से इन में शिर्कत ममनूअ नहीं, येह दोनों मसाइल शामी ने जिल्द अव्वल बाब ज़ियारते कुबूर में बहुत तफ़्सील से बयान फ़रमाए ।

नोट : मज़ीद तफ़्सील जानने के लिये आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दिनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَةُ الْمَلٰٓئِکَاتِ का रिसाला “جَمَلُ النُّورِ فِي نَهْيِ الْبَسَاءِ عَنْ زِيَارَةِ الْقُبُورِ” (नूर के जुम्ले, औरतों को ज़ियारते कुबूर से रोकने के बारे में) फ़तावा रज़विय्या, जि. 9, स. 541 ता 567 का मुतालआ कीजिये ।

②.....المستدرک، کتاب الجنائز، باب زیارة النبی صلی اللہ علیہ وسلم قبرأمہ، الحدیث: ۱۳۳۳، ج ۱، ص ۱۱۱۔

मकामाते मुकद्दसा का मुआमला तो वोह एक जैसे नहीं बल्कि इन की ज़ियारत की बरकत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक इन के दर्जात के मुताबिक़ होती है। हां अगर कोई शख्स ऐसी जगह हो जहां मस्जिद न हो तो उस के लिये ऐसी जगह की तरफ़ सफ़र करना जाइज़ है जहां मस्जिद हो और अगर चाहे तो मुकम्मल तौर पर वहीं मुत्तक़िल हो जाए। काश मैं जान लेता कि क्या येह मुन्किरे अम्बियाए किराम मषलन हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना यहूया (عَلَى نَبِينَا وَعَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) वगैरा की कुबूर की ज़ियारत से भी मन्अ करेगा और इस से मन्अ करना तो बहुत मुहाल है। जब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मज़ारात की ज़ियारत जाइज़ है तो औलिया, उ-लमा और सु-लहा के मज़ारात का भी येही हुक्म है। येह बात बर्ईद नहीं कि सफ़र से मज़ाराते औलिया पर हाज़िरी मक्सूद हो जैसे उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام की हयात में उन की ज़ियारत के लिये सफ़र का क़स्द किया जाता है।

यहां तक तो एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम की तरफ़ सफ़र के मुतअल्लिक़ बहूष थी। जहां तक इक़ामत इख़्तियार करने का तअल्लुक़ है तो मुरीद के लिये बेहतर येह है कि जब सफ़र से मक्सूद इल्म का हुसूल न हो तो अपने वतन में ही सुकूनत इख़्तियार करे जब कि वहां रहने में सलामती हो और अगर वहां सलामती न हो तो ऐसी जगह तलाश करे जहां उसे कोई न जानता हो, उस का दीन ज़ियादा महफूज़ हो, उस का दिल फ़ारिग़ हो और इबादत के लिये आसानी हो तो ऐसी जगह उस के लिये सब से अफ़ज़ल है। चुनान्वे,

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तमाम शहर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हैं और तमाम मख़्लूक़ उस के बन्दे हैं। पस तुम जहां आसानी पाओ वहीं ठहर जाओ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र करो।”⁽¹⁾

हदीषे पाक में है कि जिसे किसी चीज़ में बरकत दी गई तो उसे चाहिये कि इसे लाज़िम पकड़े और जिस का ज़रीअ़ मआश किसी चीज़ में रखा गया हो तो वोह उस से दूसरी चीज़ की तरफ़ मुत्तक़िल न हो जब तक कि ज़रीअ़ मआश न बदल जाए।⁽²⁾

हिक्कयत :- हिफ़ाज़ते दीन की फ़िक़र :

हज़रते सय्यिदुना अबू नुऐम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान षौरी رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي को तौशादान कन्धे पर रखे और पानी का कूज़ा हाथ में लिये देखा गोया कहीं

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند الزبير بن العوام، الحديث: ١٢٢٠، ج ١، ص ٣٥٠، مفهوماً.

②.....سنن ابن ماجه، كتاب التجارات، باب اذ قسم للرجل رزق.....الخ، الحديث: ٢١٢٤-٢١٢٨، ج ٣، ص ١١٠، مفهوماً.

जाने का इरादा रखते हैं। चुनान्चे, मैं ने पूछा : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! कहां का इरादा है ?” फ़रमाया : “ऐसे शहर का जहां थेली को दराहिम से भर लूं।” एक रिवायत में है, फ़रमाया : मुझे ख़बर पहुंची है कि फुलां गाउं में अनाज बहुत सस्ता है लिहाज़ा मैं वहां रिहाइश इख़्तियार करूंगा।” हज़रते सय्यिदुना अबू नुऐम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ने कहा : “ऐ अबू अब्दुल्लाह ! आप भी ऐसा करेंगे ?” फ़रमाया : “हां ! जब तुम किसी शहर में अरज़ानी देखो (या’नी वहां मेहंगाई न हो) तो वहां का क़स्द करो क्यूंकि इस से तुम्हारा दीन महफूज़ होगा और फ़िक्के कम होंगी।” हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى फ़रमाया करते थे : “येह बुरे लोगों का ज़माना है। इस में गुमनाम रहने वाले भी महफूज़ नहीं तो मशहूर लोग कैसे महफूज़ रह सकते हैं ? येह इन्तिक़ाल का ज़माना है बन्दा अपने दीन को फ़ितनों से बचाने के लिये एक गाउं से दूसरे गाउं की तरफ़ मुन्तक़िल होता है।”

मैं कहां रिहाइश इख़्तियार करूं ?

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى फ़रमाते हैं : “**अब्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़स्म ! मैं नहीं जानता कि मैं किस शहर में सुकूनत इख़्तियार करूं ?” अर्ज़ की गई : “खुरासान में।” फ़रमाया : “वहां मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और फ़ासिद ख़यालात (के लोग) हैं।” अर्ज़ की गई : “शाम में।” फ़रमाया : “तुम्हारी तरफ़ उंगलियों से इशारा किया जाएगा या’नी तुम्हारी शोहरत होगी।” अर्ज़ की गई : “इराक़ में।” फ़रमाया : “ज़ालिमों का मुल्क है।” अर्ज़ की गई : “मक्काए मुकर्रमा में।” फ़रमाया : “येह अक्ल व जिस्म को पिघला देता है।”

तीन वशिyyतें :

एक अजनबी शख़्स ने हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान घौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى की ख़िदमत में अर्ज़ की : “मेरा मक्काए मुकर्रमा رَادَاهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में रिहाइश इख़्तियार करने का इरादा है, मुझे नसीहत फ़रमाइये !” फ़रमाया : “मैं तुझे तीन नसीहतें करता हूं :

- (1).... पहली सफ़ में नमाज़ न पढ़ना
- (2).... किसी क़रशी की सोहबत इख़्तियार न करना
- (3)..... सदका ज़ाहिर न करना।”

पहली सफ़ से इस लिये मन्अ फ़रमाया क्यूंकि इस से बन्दा मशहूर हो जाता है, फिर जब गाइब हो तो मफ़कूद समझा जाता (या’नी तलाश किया जाता) है, यूं उस के अमल में दिखावा और बनावट आ जाती है।

दूसरी फ़स्ल : वुजूबे हज़ की शराइत, अरकान की दुरुस्ती और वाजिबात व ममनूआत का बयान⁽¹⁾

हज़ की शराइत :

हज़ सहीह होने की दो शर्तें हैं : (1).....वक़्त का पाया जाना (2).....मुसलमान होना ।

बच्चे का हज़ सहीह है, अगर तमीज़ रखता हो तो खुद एहराम बांधे और अगर छोटा हो तो वली उस की तरफ़ से एहराम बांधे और उस से वोह तमाम अफ़़ाल कराए जो हज़ में किये जाते हैं जैसे तवाफ़ व सअय वगैरा ।

हज़ का वक़्त :

शव्वालुल मुकर्रम, जुल का'दतिल हराम, जुल हिज्जतिल हराम के नव दिन और यौमे नहर (या'नी कुरबानी के दिन) की फ़ज़्र तुलूअ होने तक है । जिस ने इस मुदत के इलावा हज़ का एहराम बांधा तो वोह उमरा कहलाएगा⁽²⁾ और उमरे का वक़्त पूरा साल है लेकिन जो शख़्स मिना के दिनों में हज़ के एहक़ाम का पाबन्द हो उसे उमरे का एहराम नहीं बांधना चाहिये । क्यूंकि वोह मिना के अफ़़ाल की अदाएगी में मशगूलियत के सबब इस के बा'द उमरे के अफ़़ाल अदा न कर सकेगा ।

फ़र्ज़ हज़ अदा होने की शराइत :

हज़्जे इस्लाम अदा होने की पांच शराइत हैं :

(1).....इस्लाम (2).....आज़ादी (3).....बुलूग़ (4).....अक़ल और (5).....वक़्त ।⁽³⁾

①..... फ़िक़हे हनफ़ी के मुताबिक़ अरकाने हज़ व शराइते हज़, वाजिबात व ममनूआत जानने और तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल, हिस्सा 6, सफ़्हा 1032 ता 1232 हज़ के बयान का मुतालआ कीजिये !

②..... अहनाफ़ के नज़दीक : हज़ का वक़्त शव्वाल से दसवीं ज़िल हिज्जा तक है कि इस से पेशतर हज़ के अफ़़ाल नहीं हो सकते, सिवा एहराम के कि एहराम इस से पहले भी हो सकता है अगरचें मकरूह है ।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 1036)

③..... अहनाफ़ के नज़दीक : हज़्जे फ़र्ज़ अदा होने के लिये नव शर्तें हैं :

(1).....इस्लाम (2)..... मरते वक़्त तक इस्लाम ही पर रहना (3).....आक़िल (4)..... बालिग़ होना (5)..... अज़ाद होना (6).....अगर क़ादिर हो तो खुद अदा करना (7).....नफ़्ल की निय्यत न हो (8).....दूसरे की तरफ़ से हज़ करने की निय्यत न हो (9).....फ़ासिद न करना । (बहारे शरीअत, जि.1 स.1047)

अगर बच्चे या गुलाम ने एहराम बांधा लेकिन अरफ़ा या मुज़दलिफ़ा में गुलाम आज़ाद हो गया और बच्चा बालिग़ हो गया और तुलूए फ़ज्र से पहले अरफ़े की तरफ़ लौट आया तो इन दोनों का हज्जे इस्लाम अदा हो जाएगा⁽¹⁾ क्योंकि हज अरफ़ा में ठहरने का नाम है। अलबत्ता, दोनों पर बतौर दम एक बकरी लाज़िम होगी। उमरा अदा होने की भी येही शराइत हैं सिवाए वक़्त के।

हज्जे नफ़ल अदा होने की शराइत :

आज़ाद बालिग़ शख्स के नफ़ली हज के अदा होने की शराइत दर्जे ज़ैल हैं :

हज्जे नफ़ल हज्जे इस्लाम से बरियुज्जिम्मा होने के बा'द होगा क्योंकि हज्जे इस्लाम मुक़द्दम है। फिर उस हज की क़ज़ा है जो वुकूफ़ (अरफ़ा) की हालत में फ़ासिद कर दिया हो। फिर नज़्र का हज, फिर किसी का नाइब बन कर हज करना, फिर हज्जे नफ़ल है और येह तरतीब ज़रूरी है। इसी तरह हज अदा होगा अगरचे इस के ख़िलाफ़ निय्यत करे।

हज वाजिब होने की शराइत :

हज वाजिब होने की पांच शराइत हैं : (1).....बालिग़ होना (2).....मुसलमान होना (3).....आक़िल होना (4).....आज़ाद होना और (5).....साहिबे इस्तिताअत होना⁽²⁾ जिस पर फ़र्ज़ हज लाज़िम हो उस पर फ़र्ज़ उमरा भी लाज़िम है।⁽³⁾

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : नाबालिग़ ने हज का एहराम बांधा और वुकूफ़े अरफ़ा से पेशतर बालिग़ हो गया तो अगर इसी पहले एहराम पर रह गया हज नफ़ल हुवा हिज्जतुल इस्लाम न हुवा और अगर सिरे से एहराम बांध कर वुकूफ़े अरफ़ा किया तो हिज्जतुल इस्लाम हुवा। गुलाम ने अपने मौला (आका) के साथ हज किया तो येह हज नफ़ल हुवा हिज्जतुल इस्लाम न हुवा। आज़ाद होने के बा'द अगर शराइत पाए जाएं तो फिर करना होगा और अगर मौला के साथ हज को जाता था, रास्ते में उस ने आज़ाद कर दिया तो अगर एहराम से पहले आज़ाद हुवा, अब एहराम बांध कर हज किया तो हिज्जतुल इस्लाम अदा हो गया और एहराम बांधने के बा'द आज़ाद हुवा तो हिज्जतुल इस्लाम न होगा, अगरचे नया एहराम बांध कर हज किया हो। (बहारे शरीअत, जि.1 स. 1038)

②..... अहनाफ़ के नज़दीक : हज वाजिब होने की आठ शर्तें हैं, जब तक वोह सब न पाई जाएं हज फ़र्ज़ नहीं : (1).....इस्लाम (2).....दारुल हर्ब (3).....बुलूग़ (4).....आक़िल होना (5).....आज़ाद होना (6).....तन्दुरुस्त हो (7).....सफ़रे ख़र्च का मालिक हो और सुवारी पर क़ादिर हो (8).....वक़्त (माखूज अज़ बहारे शरीअत, जि.1 स. 1036 ता 1043) तफ़सील के लिये बहारे शरीअत के मज़क़ूरा मक़ाम का मुतालआ कीजिये।

③..... अहनाफ़ के नज़दीक : ज़िन्दगी में एक बार उमरा करना सुन्नते मुअक्कदा है। (दरالمختार وردالمختار, ج 3, ص 545)

जो जियारत या तिजारत के लिये मक्काए मुकर्रमा **رَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में दाखिल हो और लकड़ियां बेचने वाला न हो तो एक कौल के मुताबिक उस पर एहराम बांधना लाजिम है, फिर उमरा या हज करने के बा'द एहराम खोल दे।⁽¹⁾

इस्तिताअत की अक्शाम :

इस्तिताअत दो ए'तिबार से होती है :

❶.....खुद आ'माले हज का बजा लाना : इस के कई अस्बाब हैं, वोह या तो उस की जात से मुतअल्लिक हैं या'नी उस का सिहहत मन्द होना या रास्ते से मुतअल्लिक या'नी रास्ता सर सब्ज और पुर अम्म हो, समन्दरी और खतरनाक न हो और न ही रास्ते में जालिम दुश्मन मौजूद हो। माल के ए'तिबार से इस्तिताअत येह है कि आने जाने के अखराजात रखता हो ख्वाह उस के अहलो इयाल हो या न हो। क्यूंकि वतन की जुदाई ना क़बिले बरदाश्त होती है। नीज उन लोगों के अखराजात अदा करने की भी ताक़त रखता हो जिन का नफ़ा इस के ज़िम्मे लाजिम है। कर्ज की अदाएगी के लिये भी माल मौजूद हो। सुवारी या इस के किराए पर कादिर हो। कजावा या सुवारी हो बशर्ते कि इस पर ठहर सकता हो।

❷.....जो खुद आ'माले हज अदा न कर सकता हो (या'नी अपाहज हो) उस के ए'तिबार से इस्तिताअत येह है कि वोह किसी ऐसे शख्स को उजरत पर ले जो फ़र्ज हज से फ़ारिग हो चुका हो ताकि उस की तरफ़ से हज करे और इस क़िस्म में, जाने के लिये सुवारी के अखराजात काफ़ी हैं।⁽²⁾

❶..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1250** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा **1068** पर सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى** नक़ल फ़रमाते हैं : (किसी का) मक्काए मुकर्रमा जाने का इरादा न हो बल्कि मीकात के अन्दर किसी और जगह मषलन जिद्दा जाना चाहता है तो उसे एहराम की ज़रूरत नहीं फिर वहां से अगर मक्काए मुअज़्ज़मा जाना चाहे तो बिगैर एहराम जा सकता है, लिहाज़ा जो शख्स हरम में बिगैर एहराम जाना चाहता है वोह येह हीला कर सकता है बशर्ते कि वाकेई उस का इरादा पहले मषलन जिद्दा जाने का हो। नीज मक्काए मुअज़्ज़मा हज और उमरा के इरादे से न जाता हो, मषलन तिजारत के लिये जिद्दा जाता है और वहां से फ़ारिग हो कर मक्काए मुअज़्ज़मा जाने का इरादा है और अगर पहले ही से मक्काए मुकर्रमा जाने का इरादा है तो अब बिगैर एहराम नहीं जा सकता। जो शख्स दूसरे की तरफ़ से हज्जे बदल को जाता हो उसे येह हीला जाइज़ नहीं।

❷..... अहनाफ़ के नजदीक : हज वाजिब होने के लिये तन्दुरुस्त होना भी ज़रूरी जब कि मा'ज़ूर अशखास पर हज वाजिब नहीं। चुनान्वे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ **1250** सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा **1039** पर सदरुशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى** वाजिबाते हज की शराइत नक़ल फ़रमाते हुए लिखते हैं : तन्दुरुस्त हो कि हज को जा सके, आ'ज़ा सलामत हों, अख़यारा हो, अपाहज और फ़ालिज वाले और जिस के पाउं कटे हों और बुढ़े पर कि सुवारी पर खुद न बैठ सकता हो हज फ़र्ज नहीं। यू हीं अन्धे पर भी वाजिब नहीं अगरचे हाथ पकड़ कर ले चलने वाला उसे मिले। इन सब पर येह भी वाजिब नहीं कि किसी को भेज कर अपनी तरफ़ से हज करा दें या वसियत कर जाएं और अगर तकलीफ़ उठा कर हज कर लिया तो सहीह हो गया और हिज्जतुल इस्लाम अदा हुवा या'नी इस के बा'द अगर आ'ज़ा दुरुस्त हो गए तो अब दोबारा हज फ़र्ज न होगा वोही पहला हज काफ़ी है। अगर पहले तन्दुरुस्त था और दीगर शराइत भी पाए जाते थे और हज न किया फिर अपाहज वगैरा हो गया कि हज नहीं कर सकता तो उस पर वोह हज फ़र्ज बाक़ी है। खुद न कर सके तो हज्जे बदल कराए।

अगर अपाहज शख्स का बेटा उस की खिदमत के लिये तय्यार हो जाए तो वोह इस्तिताअत वाला शुमार होगा और अगर बेटा अपना माल पेश कर दे तो इस सूरत में साहिबे इस्तिताअत शुमार न होगा⁽¹⁾ क्यूंकि खुद को खिदमत के लिये पेश करना बेटे की इज्जत व सआदत मन्दी है जब कि माल खर्च करना बाप पर एहसान करना है। इस्तिताअत के साथ साथ जिस में तमाम शराइत पाई जाएं उस पर हज लाजिम है, अगर्चे ताखीर जाइज है मगर खतरा है।

इस्तिताअत के बा वुजूद हज न करने वाले का हुक्म :

अगर आखिरी उम्र में भी हज की सआदत मिल गई तो इस से फर्ज साकि़त हो जाएगा। लेकिन अगर फर्ज होने के बा'द अदाएंगी से पहले मर गया तो हज छोड़ने की वजह से बारगाहे इलाही में गुनहगार हाज़िर होगा। इस सूरत में उस के तर्के से किया जाएगा अगर्चे उस ने वसियत न की हो जैसे तमाम कर्जों का मुआमला है।

अगर एक साल में साहिबे इस्तिताअत हुवा और लोगों के साथ हज के लिये न निकला और उसी साल लोगों के हज करने से पहले उस का माल हलाक हो गया फिर उस का इन्तिकाल हो गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि उस पर (हज न करने का) गुनाह न होगा। जिस ने खुशहाली के बा वुजूद हज न किया और मर गया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक इस का मुआमला बड़ा सख्त है।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “मैं ने अज़म किया है कि हुक्काम को लिखूं कि जो बा वुजूदे इस्तिताअत हज नहीं करता उस पर जिज़या लाजिम कर दो।”

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नखई, हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद और हज़रते सय्यिदुना ताउस (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) फ़रमाते हैं : “अगर किसी दौलत मन्द शख्स के बारे में मा'लूम हो कि वाजिब होने के बा वुजूद वोह हज किये बिगैर मर गया तो हम उस पर नमाज़े जनाज़ा न पढ़ें।”

मन्कूल है कि “एक बुजुर्ग का खुशहाल पड़ोसी हज किये बिगैर मर गया तो उन्होंने ने उस की नमाज़े जनाज़ा न पढ़ी।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाया करते थे : जो साहिबे इस्तिताअत होने के बा वुजूद ज़कात अदा किये और हज किये बिगैर मर गया वोह दुन्या में दोबारा लौटने का सुवाल करेगा फिर आप ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत फ़रमाई :

① अहनाफ़ के नज़दीक : किसी ने हज के लिये माल हिबा किया तो क़बूल करना उस पर वाजिब नहीं। देने वाला अजनबी हो या मां, बाप, औलाद वगैरा मगर क़बूल कर लेगा तो हज वाजिब हो जाएगा। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 1039)

رَبِّ ارْجِعُونِ ۖ لَعَلِّيْ اَعْمَلُ صَالِحًا فَيُنَازِلُنِيْ
تَرَكْتُ (پ ۱۸، المؤمنون: ۱۰۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब्ब ! मुझे वापस फेर दीजिये, शायद अब मैं कुछ भलाई कमाऊँ उस में जो छोड़ आया हूँ।

और इस की तफ्सीर में फ़रमाया : इस से मुराद हज़ है :

हज़ के अरकान :

अरकान कि जिन के बिगैर हज़ दुरुस्त नहीं होता पांच है : (1)....एहराम बांधना (2)....तवाफ़ करना (3)....सअय करना (4)....अरफ़ात में ठहरना और (5)....सर मुन्डाना।⁽¹⁾ एक कौल के मुताबिक़ सर मुन्डवाना भी अरकाने हज़ में शामिल है (जब कि एक कौल के मुताबिक़ वाजिबात में से है।) उमरा के अरकान भी येही हैं सिवाए वुकूफ़ अरफ़ा के।

हज़ के वाजिबात :

वाजिबाते हज़ कि जिन के रह जाने से दम लाज़िम आता है⁽²⁾ छे हैं⁽³⁾ :

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : हज़ के सात अरकान हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 1047 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَوِي नक्ल फ़रमाते हैं : हज़ में येह चीजें फ़र्ज़ हैं : (1)....एहराम, कि येह शर्त है। (2)....वुकूफ़ अरफ़ा या'नी नर्वी ज़िल हिज्जा के आफ़ताब ढलने से दस्वी की सुब्हे सादिक़ से पेशतर तक किसी वक़्त अरफ़ात में ठहरना। (3)....तवाफ़े ज़ियारत का अकषर हिस्सा, या'नी चार फेरे पिछली दोनों चीजें या'नी वुकूफ़ व तवाफ़ रुकन हैं। (4)....निय्यत। (5)....तरतीब या'नी पहले एहराम बांधना फिर वुकूफ़ फिर तवाफ़। (6)....हर फ़र्ज़ का अपने वक़्त पर होना, या'नी वुकूफ़ उस वक़्त होना जो मज़कूर हो इस के बा'द तवाफ़ इस का वक़्त वुकूफ़ के बा'द से आख़िर उम्र तक है। (7)....मकान या'नी वुकूफ़ ज़मीने अरफ़ात में होना सिवा बतने अरना के और तवाफ़ का मकान मस्जिदुल ह़राम शरीफ़ है।

②..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 304 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीकुल हरमैन सफ़हा 228 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अन्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْغَالِيَة नक्ल फ़रमाते हैं : दम या'नी एक बकरा (इस में नर, मादा, दुम्बा, भेड़, नीज़ गाए या ऊंट का सातवां हिस्सा सब शामिल हैं)।

③..... अहनाफ़ के नज़दीक : हज़ के 28 वाजिबात हैं। चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 1048 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَوِي नक्ल फ़रमाते हैं : हज़ के वाजिबात येह हैं : (1)....मीक़त से एहराम बांधना, या'नी मीक़त से बिगैर एहराम न गुज़रना और अगर मीक़त से पहले ही एहराम बांध लिया तो जाइज़ है। (2).....सफ़ व मरवा के दरमियान दौड़ना इस को सअय कहते हैं। (3).....सअय को सफ़ से शुरू करना और अगर मरवा से शुरू की तो पहला फेरा शुमार न किया जाए.....

(1).....मीक़ात से एहराम बांधना पस जो मीक़ात से एहराम बांधे बिगैर गुज़र गया तो उस पर बतौरै दम एक बकरी लाज़िम है। (2).....जमरात को कंकरियां मारना। एक क़ौल के मुताबिक़ इसे छोड़ने पर भी दम लाज़िम होगा। (3)....गुरूबे आफ़ताब तक अरफ़ात में ठहरना।

..... उस का इआदा करे। (4).....अगर उज़्र न हो तो पैदल सअ्य करना, सअ्य का त्वाफ़ मुअतदबा के बा'द या'नी कम से कम चार फेरों के बा'द होना। (5).....दिन में वुकूफ़ किया तो इतनी देर तक वुकूफ़ करे कि आफ़ताब डूब जाए ख़्वाह आफ़ताब ढलते ही शुरूअ किया हो या बा'द में, गरज़ गुरूब तक वुकूफ़ में मशगूल रहे और अगर रात में वुकूफ़ किया तो उस के लिये किसी ख़ास हद तक वुकूफ़ करना वाजिब नहीं मगर वोह उस वाजिब का तारिक़ हुवा कि दिन में गुरूब तक वुकूफ़ करता। (6)....वुकूफ़ में रात का कुछ जुज़ आ जाना। (7)....अरफ़ात से वापसी में इमाम की मुताबेअत करना या'नी जब तक इमाम वहां से न निकले येह भी न चले, हां अगर इमाम ने वक़्त से ताख़ीर की तो उसे इमाम के पहले चला जाना जाइज़ है और अगर भीड़ वगैरा किसी ज़रूरत से इमाम के चले जाने के बा'द ठहर गया साथ न गया जब भी जाइज़ है। (8)....मुजदलिफ़ा में ठहरना। (9)....मगरिब व इशा की नमाज़ का वक़्त इशा में मुजदलिफ़ा में आ कर पढ़ना। (10).....तीनों जमरों पर दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं तीनों दिन कंकरियां मारना या'नी दसवीं को सिर्फ़ जमरतुल अक़बा पर और ग्यारहवीं बारहवीं को तीनों पर रमी करना। (11)....जमरए अक़बा की रमी पहले दिन हल्क़ से पहले होना। (12)....हर रोज़ की रमी का उसी दिन होना। (13).....सर मुंडाना या बाल कतरवाना। (14)....और उस का अय्यामें नहर और (15)....हरम शरीफ़ में होना अगरचें मिना में न हो। (16)....किरान और तमतोअ वाले को कुरबानी करना और (17)....इस कुरबानी का हरम और अय्यामे नहर में होना। (18)....तवाफ़े इफ़ाज़ा का अकषर हिस्सा अय्यामे नहर में होना। अरफ़ात से वापसी के बा'द जो तवाफ़ किया जाता है उस का नाम तवाफ़े इफ़ाज़ा है और उसे तवाफ़े ज़ियारत भी कहते हैं। तवाफ़े ज़ियारत के अकषर हिस्से से जितना जाइद है या'नी तीन फेरे अय्यामे नहर के गैर में भी हो सकता है। (19) तवाफ़ हतीम के बाहर से होना। (20)....दहनी तरफ़ से तवाफ़ करना या'नी का'बए मुअज्जमा तवाफ़ करने वाले की बाई जानिब हो। (21)....उज़्र न हो तो पाउं से चल कर तवाफ़ करना, यहां तक कि अगर घसीटते हुए तवाफ़ करने की मन्नत मानी जब भी तवाफ़ में पाउं से चलना लाज़िम है और तवाफ़े नफ़ल अगर घसीटते हुए शुरूअ किया तो हो जाएगा मगर अफ़ज़ल येह है कि चल कर तवाफ़ करे। (22)....तवाफ़ करने में नजासते हुक्मिय्या से पाक होना, या'नी जुनुब व बे वुजू न होना, अगर बे वुजू या जनाबत में तवाफ़ किया तो इआदा करे। (23)....तवाफ़ करते वक़्त सित्र छुपा होना या'नी अगर एक उज़्व की चौथाई या इस से ज़ियादा हिस्सा खुला रहा तो दम वाजिब होगा और चन्द जगह से खुला रहा तो जम्अ करेंगे, गरज़ नमाज़ में सित्र खुलने से जहां नमाज़ फ़ासिद होती है यहां दम वाजिब होगा। (24)....तवाफ़ के बा'द दो रकअत नमाज़ पढ़ना, न पढ़ी तो दम वाजिब नहीं। (25)....कंकरियां फेंकने और जब्ड़ और सर मुन्डाने और तवाफ़ में तरतीब या'नी पहले कंकरियां फेंके फिर गैर मुफ़रिद कुरबानी करे फिर सर मुन्डाए फिर तवाफ़ करे। (26)....तवाफ़े सदर या'नी मीक़ात से बाहर के रहने वालों के लिये रुख़्सत का तवाफ़ करना। अगर हज़ करने वाली हैज़ या नफ़ास से है और तहारत से पहले काफ़िला रवाना हो जाएगा तो उस पर तवाफ़े रुख़्सत नहीं। (27)....वुकूफ़े अरफ़ा के बा'द सर मुन्डाने तक जिमाअ न होना। (28)....एहराम के ममनूआत, मषलन सिला कपड़ा पहनने और मुंह या सर छुपाने से बचना।

(4-5).....मुजदलिफा व मिना में रात गुज़ारना और (6).....तवाफ़े वदाअ।⁽¹⁾

मुअख़्ख़रुज्ज़िक् चार (वाजिबात) को छोड़ने पर एक कौल के मुताबिक़ दम लाज़िम होगा जब कि एक कौल के मुताबिक़ इस्तिहबाबी तौर पर दम होगा।

हज व उमरा की अदाएगी के तरीके :

हज व उमरा की अदाएगी के तीन तरीके हैं :

❶.....हज्जे इफ़राद : येह अफ़ज़ल है।⁽²⁾ इस का तरीका येह है कि पहले सिर्फ़ हज करे, जब फ़ारिग़ हो तो हिल की तरफ़ (या'नी हुदूदे हरम से बाहर) निकल जाए और एहराम बांध कर उमरा करे। उमरा के एहराम के लिये हिल में अफ़ज़ल जगह जिइराना है फिर तनईम फिर हुदैबिया। हज्जे इफ़राद करने वाले पर कुरबानी लाज़िम नहीं बल्कि नफ़ल है।

❷.....हज्जे क़िरान : इस का तरीका येह है कि हज व उमरा को जम्अ करे और कहे मैं हज व उमरा के साथ हाज़िर हूँ। वोह दोनों के साथ मोहरिम (या'नी दोनों का एहराम बांधने वाला) हो जाएगा उस के लिये हज के आ'माल काफ़ी हैं और उमरा हज के तहत आ जाएगा जैसे वुजू गुस्ल के ज़िम्न में हो जाता है। अलबत्ता, जब वोह तवाफ़ करे और वुकूफ़े अरफ़ा से पहले सअय करे तो इस की सअय दोनों इबादतों की तरफ़ से शुमार होगी लेकिन तवाफ़ शुमार नहीं होगा क्यूंकि हज के फ़र्ज तवाफ़ के लिये शर्त येह है कि वोह वुकूफ़े अरफ़ा के बा'द हो और कारिन पर एक बकरी की कुरबानी लाज़िम है। अलबत्ता, अगर वोह मक्कए मुकर्रमा का रिहाइशी हो तो इस पर कुछ लाज़िम नहीं क्यूंकि उस ने मीकात को तर्क नहीं किया इस लिये कि उस का मीकात मक्का ही है।

❸.....हज्जे तमत्तोअ : इस का तरीका येह है कि वोह मीकात से उमरे के एहराम के साथ दाख़िल हो और उमरा करने के बा'द एहराम खोल दे और वक्ते हज तक ममनूअते एहराम से फ़ाइदा उठाए फिर हज का एहराम बांधे।

तमत्तोअ की शराइत :

तमत्तोअ की पांच शराइत हैं : (1).....हज्जे तमत्तोअ करने वाला मस्जिदे हराम के हाज़िरीन में से न हो और इस के हाज़िरीन में से वोह है जो इतनी मसाफ़त पर हो जिस में नमाज़े क़सर न होती हो। (2).....वोह उमरा को हज पर मक़द्दम करे। (3)..... उमरा हज के महीनों

❶..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 304 सफ़हात पर मुशतमिल किताब रफ़ीकुल हरमैन सफ़हा 35 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ नक्ल फ़रमाते हैं : हज के बा'द मक्कए मुकर्रमा से रुख़्सत होते हुए किया जाता है। येह हर "आफ़की" (मीकात के बाहर से आने वाले) हाजी पर वाजिब है।

❷..... अहनाफ़ के नज़दीक : सब से अफ़ज़ल हज्जे क़िरान फिर तमत्तोअ फिर इफ़राद है। (231) (ردالمحتار، کتاب الحج، باب الفرائض، ج 3، ص 231)

में हो । (4)....एहराम हज के लिये मीकाते हज या इस के बराबर मसाफ़त की तरफ़ न लौटे । (5).....हज व उमरा एक ही शख्स की तरफ़ से हो ।⁽¹⁾

जब येह औसाफ़ पाए जाएं तो वोह हज्जे तमतोअ करने वाला होगा और उस पर बकरी की कुरबानी लाज़िम होगी । अगर बकरी न पाए तो यौमे नहर (या'नी कुरबानी के दिन) से पहले हज के दिनों में तीन रोज़े रखे ख़्वाह मुतफ़रिफ़ तौर पर हों या लगातार और वतन वापस आने के बा'द सात रोज़े रखे । अगर तीन रोज़े रखे बिगैर वतन वापस लौट आया तो मुसलसल या मुतफ़रिफ़ तौर पर दस रोज़े रखे । क़िरान और तमतोअ की कुरबानी एक जैसी है । इन में अफ़ज़ल हज्जे इफ़राद है फिर तमतोअ फिर क़िरान । (इन्दश्शवाफ़ेअ)

हज व उमरा के ममनूअत :

हज व उमरा (या'नी हालते एहराम) में छे उमूर ममनूअ हैं :

❶.....शलवार क़मीस और मोज़े पहनना, इमामा बांधना : इज़ार, रिदाअ (या'नी दो चादरें) और चप्पल पहने, अगर चप्पल न पाए तो जूते पहने । अगर इज़ार न पाए तो शलवार पहन ले । कमर बन्द बांधने और कजावे के साए में बैठने में कोई हरज नहीं लेकिन अपना सर न ढांपे क्यूंकि मर्द का एहराम उस के सर में है । औरत हर सिला हुवा कपड़ा पहन सकती है । अलबत्ता, चेहरे को ऐसी चीज़ से न ढांपे जो चेहरे को मस करती हो क्यूंकि उस का एहराम उस के चेहरे में है ।

❷..... अहनाफ़ के नज़दीक : तमतोअ की 10 शराइत हैं ।

चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अव्वल सफ़हा 1158 पर सदरुशशरीआ, बदरुत्तरीका हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक़ल फ़रमाते हैं : तमतोअ की दस शर्तें हैं : (1).....हज के महीने में पूरा तवाफ़ करना या अकषर हिस्सा या'नी चार फेरे । (2).....उमरे का एहराम हज के एहराम से मुक़द्दम होना । (3).....हज के एहराम से पहले उमरा का पूरा तवाफ़ या अकषर हिस्सा कर लिया हो । (4).....उमरा फ़ासिद न किया हो । (5).....हज फ़ासिद न किया हो । (6).....इलमामे सहीह न किया हो । इलमामे सहीह के येह मा'ना हैं कि उमरा के बा'द एहराम खोल कर अपने वतन को वापस जाए और वतन से मुराद वोह जगह है जहां वोह रहता है । पैदाइश का मक़ाम अगरचें दूसरी जगह हो । लिहाज़ा अगर उमरह करने के बा'द वतन गया फिर वापस आ कर हज किया तो तमतोअ न हुवा और अगर उमरा करने से पेशतर गया या उमरा कर के बिगैर हल्क किये या'नी एहराम ही में वतन गया फिर वापस आ कर इसी साल हज किया तो तमतोअ है । यूं ही अगर उमरा कर के एहराम खोल दिया फिर हज का एहराम बांध कर वतन गया तो येह भी इलमामे सहीह नहीं, लिहाज़ा अगर वापस आ कर हज करेगा तो तमतोअ होगा । (7).....हज व उमरा दोनों एक ही साल में हों । (8).....मक्काए मुअज्ज़मा में हमेशा के लिये ठहरने का इरादा न हो, लिहाज़ा अगर उमरा के बा'द पक्का इरादा कर लिया कि यहीं रहेगा तो तमतोअ नहीं और दो एक महीने का हो तो है । (9).....मक्काए मुअज्ज़मा में हज का महीना आ जाए तो बे एहराम के न हो, न ऐसा हो कि एहराम है मगर चार फेरे तवाफ़ के इस महीने से पहले कर चुका है, हां अगर मीकात से बाहर वापस जाए फिर उमरा का एहराम बांध कर आए तो तमतोअ हो सकता है । (10).....मीकात से बाहर का रहने वाला हो । मक्के का रहने वाला तमतोअ नहीं कर सकता ।

﴿2﴾.....**खुशबू लगाना** : लिहाजा मोहरिम हर उस चीज से बचे जिसे उ-क़ला खुशबू शुमार करते हैं। अगर उस ने खुशबू लगाई या मला हुआ कपड़ा पहना तो इस पर बतौर दम एक बकरी लाज़िम होगी।

﴿3﴾.....**बाल मुंडवाना और नाखून तरशवाना** : इन में भी फ़िदया या'नी बकरी का खून बहाना लाज़िम होगा। सुरमा लगाने, हम्माम में जाने, पछने या सींगी लगवाने और बालों को कंघी करने में कोई हरज नहीं।

﴿4﴾.....**जिमाअ करना** : अगर एहराम खोलने से पहले जिमाअ किया तो हज़ फ़ासिद हो गया और इस में ऊंट, गाय, या सात बकरियों की कुरबानी लाज़िम है। अगर एहराम खोलने के बा'द जिमाअ किया तो एक ऊंट कुरबान करना लाज़िम है लेकिन हज़ फ़ासिद नहीं होगा।

﴿5﴾.....**जिमाअ की तरफ़ ले जाने वाले उमूर** : जैसे बोसा देना या इस तरह छूना कि अगर औरत के साथ ऐसा किया जाए तो वुजू टूट जाए, इस में एक बकरी की कुरबानी वाजिब है। येही हुक्म मुश्तज़नी (या'नी हाथ से मनी ख़ारिज करने) का है। हालते एहराम में निकाह करना या कराना भी हराम है। अलबत्ता, इस में दम वाजिब नहीं क्योंकि येह निकाह मुनअकिद नहीं होता।⁽¹⁾

﴿6﴾.....**खुशकी का शिकार करना** : या'नी जो जानवर खाया जाता है या जो हलाल और हराम के मिलाप से पैदा हुआ हो, अगर मोहरिम ने किसी जानवर को क़त्ल किया तो उस पर इस की मिष्ल जानवर लाज़िम होगा या'नी जो जिस्मानी तौर पर इस जितना हो और समन्दरी शिकार हलाल है, इस में कोई बदला नहीं।⁽²⁾

①..... **अहनाफ़ के नज़दीक** : एहराम की हालत में निकाह हो सकता है (मुजामअत जाइज़ नहीं)।

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 1216)

②..... **अहनाफ़ के नज़दीक** : दर्जे ज़ैल उमूर हालते एहराम में ममनूअ हैं : (1).....औरत से सोहबत। (2).....बोसा। (3).....मसास। (4).....गले लगाना। (5)..... उस की इन्दांम नहानी पर निगाह जब कि येह चारों बातें ब शहवत हों। (6).....औरतों के सामने इस काम का नाम लेना। (7).....फ़ोहूहश। (8).....गुनाह हमेशा हराम थे अब और सख़्त हराम हो गए। (9).....किसी से दुन्यवी लड़ाई झगड़ा। (10).....जंगल का शिकार। (11).....उस की तरफ़ शिकार करने को इशारा करना। या (12).....किसी तरह बताना (13).....बन्दूक या बारूद या उस के ज़ब्ह करने को छुरी देना। (14).....उस के अन्दे तोड़ना। (15).....पर उख़ैड़ना। (16).....पाउं या बाजू तोड़ना। (17).....उस का दूध दोहना। (18).....उस का गोश्त। या (19).....अन्दे पकाना, भूनना। (20).....बेचना। (21).....ख़रीदना। (22).....खाना। (23).....अपना या दूसरे का नाखून कतरना या दूसरे से अपना कतरवाना। (24).....सर से पाउं तक कहीं से कोई बाल किसी तरह जुदा करना। (25).....मुंह, या (26).....सर किसी कपड़े वग़ैरा से छुपाना (27).....बस्ता या कपड़े की बुक़ची या गठड़ी सर पर रखना। (28).....इमामा बांधना। (29).....बुरक़अ (30).....दस्ताने पहनना। (31).....मोज़े या जुराबें वग़ैरा जो वस्ते क़दम को छुपाए

बाब नम्बर 2 : इब्तिदाए सफ़र से वापसी तक के दस आदाब

﴿1﴾.....घर से निकलने से ले कर एहराम तक के आदाब :

इस में आठ उमूर मस्तून हैं :

(1).....माल से मुतअल्लिक उमूर : हज पर जाने वाला तौबा से इब्तिदा करे, लोगों के हुकूक अदा करे, कर्ज वगैरा लिया हो तो वापस करे, जेरे कफ़ालत लोगों को वापसी तक के अख़राजात दे, लोगों की अमानतें पास हों तो लौटा दे, अपने साथ पाक हलाल माल ले जाए जो उसे जाने से वापसी तक के लिये काफ़ी हो बल्कि इतना माल हो कि खर्च करने नीज़ कमज़ोरों और फ़कीरों के साथ हुस्ने सुलूक करने की गुन्जाइश हो, निकलने से पहले कोई चीज़ सदका करे, सुवार होने के लिये एक क़वी सुवारी ख़रीद ले जो कमज़ोर न हो या किराए पर ले ले, अगर किराए पर ले तो सुवारी के मालिक को सब कुछ बता दे कि वोह कितना सामान लादेगा थोड़ा या ज़ियादा और इस में उस की रिज़ामन्दी हासिल कर ले ।

(2).....रफ़ीके सफ़र से मुतअल्लिक सुन्तें : उसे चाहिये कि किसी नेक शख्स को रफ़ीके सफ़र बनाए जो भलाई का ख़्वाहां और इस पर मदद गार हो कि अगर येह भूल जाए तो वोह याद दिलाए और याद हो तो इस की मदद करे, अगर येह बुज़दिली का मुज़ाहरा करे तो वोह इसे शुजाअत पर आमादा करे, अगर अज़िज़ आ जाए तो वोह इसे क़वी करे, अगर (मसाइब व आलाम के बाइष) येह तंग दिल हो तो वोह इसे सब्र की तल्कीन करे, अपने मुक़ीम दोस्तों, भाइयों और पड़ोसियों से रुख़्सत होते वक़्त उन्हें दुआओं की दरख़्वास्त करे क्यूंकि **अल्लाह** عزّوجلّ ने उन की दुआओं में भलाई रखी है ।

..... (जहां अरबी जूते का तस्मा होता है) पहनना अगर जूतियां न हों तो मोजे काट कर पहनें कि वोह तस्मे की जगह न छुपे । (32).....सिला कपड़ा पहनना । (33).....खुशबू बालों, या (34).....बदन, या (35).....कपड़ों में लगाना । (36).....मिलागीरी या कुसुम, कैसर गरज किसी खुशबू के रंगे कपड़े पहनना जब कि अभी खुशबू दे रहे हों । (37).....खालिस खुशबू मुश्क, अम्बर, जा'फ़रान, जावतरी, लोंग, इलाइची, दारचीनी, ज़नजबील वगैरा खाना । (38).....ऐसी खुशबू का आंचल में बांधना जिस में फ़िल हाल महक हो जैसे मुश्क, अम्बर, जा'फ़रान । (39).....सर या दाढ़ी को ख़तमी या किसी खुशबूदार या ऐसी चीज़ से धोना जिस से जूएं मर जाएं । (40).....वस्मा या मेहंदी का खिज़ाब लगाना । (41).....गुन्द वगैरा से बाल जमाना । (42).....जैतून, या (43).....तिल का तेल अगर्चे बे खुशबू हो बालों या बदन में लगाना । (44).....किसी का सर मुन्डना अगर्चे उस का एहराम न हो । (45).....जूं मारना । (46).....फैंकना । (47).....किसी को इस के मारने का इशारा करना । (48).....कपड़ा इस के मारने को धोना । या (49).....धूप में डालना । (50).....बालों में पारा वगैरा इस के मारने को लगाना गरज जूं के हलाक पर किसी तरह बाइष होना ।

किसी को रुख़सत करते वक़्त की दुआ :

रुख़सत के वक़्त येह दुआ पढ़ना सुन्नत है : **يَا'नी** मैं तेरे दीन, तेरी अमानत और तेरे अमल के खातिमे को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिपुर्द करता हूं।⁽¹⁾

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब किसी को रुख़सत फ़रमाते तो येह दुआ पढ़ते : **يَا'नी** मैं तुझे **अल्लाह** فِي حِفْظِ اللَّهِ وَكَفَيْهِ زَوْدَكَ اللَّهُ التَّقْوَى وَغَفَرَ ذَنْبَكَ وَوَجَّهَكَ لِلْخَيْرِ إِنَّمَا كُنْتُ عَزَّوَجَلَّ की हिफ़ाज़त और उस की पनाह में देता हूं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक्वा को तेरा तोशा करे, तेरे गुनाह बख़्श दे और तू जहां भी हो तेरे लिये भलाई मुयस्सर करे।”⁽²⁾

(3).....घर से निकलते वक़्त की सुन्नतें : जब घर से निकलने का इरादा करे तो पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द सूरए काफ़िरून और दूसरी में सूरए इख़्लास पढ़े, सलाम फेरने के बा'द हाथ उठा कर इख़्लास व सच्ची निय्यत से बारगाहे इलाही में दुआ करे।

सफ़रे हज़ पर श्वाना होने से पहले की दुआ :

اللَّهُمَّ أَنْتَ الصَّاحِبُ فِي السَّفَرِ وَأَنْتَ الْخَلِيفَةُ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ وَالْأَصْحَابِ احْفَظْنَا وَإِيَّاهُمْ مِنْ كُلِّ آفَةٍ وَعَاقَةِ اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَلُكَ فِي مَسِيرِنَا هَذَا الْبَرِّ وَالتَّقْوَى وَمِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضَى اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْتَلُكَ أَنْ تَطْوِيَ لَنَا الْأَرْضَ وَتَهَوِّنَ عَلَيْنَا السَّفَرَ وَأَنْ تَرْزُقَنَا فِي سَفَرِنَا سَلَامَةَ الْبَدَنِ وَالْدِينِ وَالْمَالِ وَتُبَلِّغَنَا حَجَّ بَيْتِكَ وَزِيَارَةَ قَبْرِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ مِنْ وَعْثَاءِ السَّفَرِ وَكَآبَةِ الْمُنْقَلَبِ وَسُوءِ الْمُنْظَرِ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ وَالْأَصْحَابِ اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا وَإِيَّاهُمْ فِي جَوَارِكَ وَلَا تَسْلِبْنَا وَإِيَّاهُمْ نِعْمَتَكَ وَلَا تَغَيِّرْ مَا بَنَّا بِهِمْ مِنْ عَافِيَتِكَ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ही सफ़र का रफ़ीक़ और अहलो माल और अवलाद व अहबाब की हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला है, हमें और इन्हें हर आफ़त व मुसीबत से महफूज़ फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम अपने इस सफ़र में नेकी, तक्वा और उस अमल का सुवाल करते हैं जिस में तेरी रिज़ा हो। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सुवाल करते हैं कि हमारे लिये ज़मीन लपेट दे, हम पर सफ़र आसान फ़रमा, हमें सफ़र में बदन, दीन और माल की सलामती अता फ़रमा और हमें अपने घर का हज़ और अपने

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مايقول اذا ودع انساناً، الحديث: ۳۴۵۴، ج ۵، ص ۲۷۷۔

②.....کنز العمال، کتاب السفر، فصل فی آدابه، الحديث: ۱۷۵۹۱، ج ۶، ص ۳۰۸۔

प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत की सआदत अता फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सफ़र की सख़्ती, बुरी वापसी, अहलो माल और अवलाद व असहाब के बुरे हालात देखने से तेरी पनाह मांगते हैं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें और इन्हें अपने जवारे रहमत में जगह अता फ़रमा, हम से ने'मत सल्ब न फ़रमा और अता की हुई आफ़ियत को हम से तब्दील न फ़रमाना ।

(4)....दरवाजे पर पहुंचने से मुतअल्लिक सुन्नतें : जब घर के दरवाजे पर पहुंचे तो हुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ اَعُوذُ بِاللّٰهِ رَبِّ اَعُوذُ بِكَ اَنْ اُضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَوْ اُزِلَّ اَوْ اُزَلَّ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اُجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ لَمْ اُخْرِجْ اَشْرًا بَطْرًا وَلَا دِرْبًا وَلَا سَمْعَةً بَلْ خَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَارْتِبَاءَ مَرْضَاتِكَ وَقَضَاءَ فَرْضِكَ وَارْتِبَاءَ سَنَةِ نَبِيِّكَ وَشَوْقًا اِلٰی لِقَائِكَ

या 'नी : मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से जाता हूं, मैं ने उसी पर भरोसा किया, गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ नहीं मगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से, मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करता हूं । ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि मैं गुमराह होऊं या गुमराह किया जाऊं, ज़लील होऊं या ज़लील किया जाऊं, लगज़िश करूं या मुझे कोई लगज़िश दे, किसी पर जुल्म करूं या मुझ पर जुल्म किया जाए, जाहिल बनूं या जाहिल बनाया जाए । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ना शुक्री, तकब्बुर और दिखावे के लिये नहीं निकला बल्कि तेरी नाराज़ी से डरने, तेरी रिज़ा चाहने, तेरे फ़र्ज़ को अदा करने और तेरे नबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नत की पैरवी में और तेरी मुलाक़ात के शौक में निकला हूं ।”

रवाना होते वक़्त की दुआ :

जब रवाना हो तो येह हुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ بِكَ اِنْتَشَرْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَبِكَ اِعْتَصَمْتُ وَبِكَ تَوَجَّهْتُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ ثَقِیْتُ وَاَنْتَ رَجَاۤئِیْ فَاكْفِنِیْ مَا اَهَمَّنِیْ وَمَا لَا اِهْتَمَّ بِہٖ وَمَا اَنْتَ اَعْلَمُ بِہٖ مِنْنِیْ عَزَّ جَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰہَ غَیْرُكَ اَللّٰهُمَّ زَوِّدْنِیْ التَّقْوٰی وَاعْفِرْ لِیْ ذَنْبِیْ وَوَجِّهْنِیْ لِلْخَیْرِ اَیْنَمَا تَوَجَّهْتُ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी मदद से मैं निकला, तुझी पर भरोसा करता, तेरी पनाह लेता और तेरी तरफ़ मुतवज्जेह होता हूं । ऐ **अल्लाह** मुझे तुझी पर ए'तिमाद है और तू ही मेरी उम्मीद गाह, मुझे किफ़ायत कर उस चीज़ से जो मुझे फ़िक्र में डाले और उस से जिस की मैं फ़िक्र नहीं करता और उस से जिसे तू मुझ से ज़ियादा जानता है, तेरी पनाह लेने वाला बा इज़्ज़त है, तेरी षना बुलन्द व बाला है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक्वा को मेरा ज़ादे राह कर और मेरे गुनाहों को बख़्श दे और मुझे ख़ैर की तरफ़ मुतवज्जेह कर जिधर मैं तवज्जोह करूं ।”

जिस मन्ज़िल से चले इसे पढ़ लिया करे ।

सुवार होते वक्त की दुआ :

(5).....सुवार होने से मुतअल्लिक सुन्नतें : जब सुवार हो तो येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ مَا شَاءَ اللَّهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ سُبْحَنَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ اللَّهُمَّ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ إِلَيْكَ وَفَوَضْتُ أَمْرِي كُلَّهُ إِلَيْكَ وَتَوَكَّلْتُ فِي جَمِيعِ أُمُورِي عَلَيْكَ أَنْتَ حَسْبِي وَنِعْمَ الْوَكِيلُ

या 'नी : मैं **अल्लाह** عز وجل के नाम से सुवार होता हूँ **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है, मैं ने **अल्लाह** عز وجل पर भरोसा किया, गुनाहों से बचने की ताकत और नेकी करने की तौफीक नहीं मगर **अल्लाह** عز وجل की तरफ से जो सब से बुलन्द अज़मत वाला है, जो **अल्लाह** عز وجل ने चाहा हुवा, जो नहीं चाहा न हुवा, पाकी है उसे जिस ने इस सुवारी को हमारे बस में कर दिया और येह हमारे बूते की न थी और बेशक हमें अपने रब्ब की तरफ पलटना है, ऐ **अल्लाह** عز وجل मैं तेरी तरफ मुतवज्जेह हुवा, अपना तमाम तर मुआमला तेरे सिपुर्द किया, अपने तमाम उमूर में तुझ पर ही भरोसा किया तू मुझे काफ़ी है और अच्छा कार साज ।”

जब सुवारी पर पुर सुकून हो कर बैठ जाए तो सात बार येह पढ़े : سُبْحَنَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ
और येह भी पढ़े : الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ اللَّهُمَّ أَنْتَ الْحَامِلُ عَلَى الظَّهِيرِ وَأَنْتَ الْمُسْتَعَانُ عَلَى الْأُمُورِ

या 'नी : पाकी है **अल्लाह** عز وجل के लिये, तमाम खूबियां **अल्लाह** عز وجل के लिये हैं, **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है। सब खूबियां **अल्लाह** عز وجل को जिस ने हमें उस की राह दिखाई और हम राह न पाते अगर **अल्लाह** عز وجل न दिखाता। ऐ **अल्लाह** عز وجل तू इस (या'नी सुवारी) की पीठ पर बिठाने वाला है और तमाम उमूर में तू ही मददगार है ।”

(6).....किसी जगह ठहरने से मुतअल्लिक सुन्नतें : जब तक दिन गर्म न हो जाए किसी जगह पड़ाव न करे, ज़ियादा तर सफ़र रात में हो कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम रात में सफ़र किया करो क्यूंकि रात में ज़मीन लपेट दी जाती है जो दिन में नहीं लपेटी जाती ।”(1)

किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो येह दुआ पढ़े :

रात में कम सोए ताकि सफ़र पर मदद मिले, जब किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَمَا أَظْلَلْنَ وَرَبَّ الْأَرْضِينَ السَّبْعِ وَمَا أَقْلَلْنَ وَرَبَّ الشَّيْطَانِ وَمَا أَضْلَلْنَ وَرَبَّ الرِّيَّاحِ وَمَا ذَرَيْنَ وَرَبَّ الْبَحَارِ وَمَا جَرَيْنَ أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْمَنْزِلِ وَخَيْرَ أَهْلِهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا فِيهِ إِصْرِفْ عَنِّي شَرَّ رَأْسِهِمْ

1.....سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی الدرجة، الحدیث: ۲۵۷۱، ج ۳، ص ۴۰، بدون قوله: ما لا تطوى بالنهار۔

या 'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सातों आस्मानों के रब्ब और उन के जिन पर इन का साया है, सातों ज़मीनों के रब्ब और उन के जिन को इन्होंने उठा रखा है, शयातीन के रब्ब और उन के जिन्होंने गुमराह किया, हवाओं के रब्ब और उन के जिसे वोह उड़ाएं, समन्दरों के रब्ब और उन के जिसे वोह बहाएं ! मैं तुझ से इस मक़ाम और इस में रहने वालों की भलाई का सुवाल करता हूं, इस के शर और इस में मौजूद चीजों के शर से तेरी पनाह त़लब करता हूं, यहां के शरीर लोगों के शर को मुझ से दूर कर दे ।”

जब किसी मक़ाम पर ठहरे तो दो रक़अत नमाज़ पढ़ कर येह दुआ पढ़े :

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يَجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

या 'नी मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उन कलिमाते ताम्मा के साथ उस की मख़लूक के शर से पनाह मांगता हूं जिन से कोई नेक व बद तजावुज़ नहीं कर सकता ।

रात के वक़्त येह दुआ पढ़े :

जब रात छा जाए तो येह दुआ पढ़े :

يَا أَرْضُ! رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شَرِّ مَا دَبَّ عَلَيْكَ وَشَرِّ مَا فِيكَ وَشَرِّ مَا دَبَّ عَلَى كُلِّ أَسَدٍ وَأَسَدٍ وَحَيَّةٍ وَعَقْرَبٍ وَمِنْ شَرِّ سَاكِنِ الْبَلَدِ وَالْوَالِدِ وَمَا وَلَدَ وَلَكِ مَا سَكَنَ فِي الْيَلِّ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

या 'नी : ऐ ज़मीन ! मेरा और तेरा रब्ब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, मैं तेरे शर, तुझ में मौजूद चीजों के शर और तुझ पर चलने वाली चीजों के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं। मैं शेर, अज़दहे, सांप, बिच्छू, शहर में रहने वाले और बाप (शैतान) और उस की अवलाद के शर से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह चाहता हूं और उसी का है जो कुछ बसता है रात और दिन में और वोही है सुनता जानता ।”

(7).....**हिफ़ाज़ती इक़दामात** : दिन के वक़्त ख़ूब एहतिyयात बरते और क़ाफ़िले से अलग तन्हा न चले क्यूंकि बा'ज़ अवक़ात इन्सान ग़फ़लत में क़त्ल कर दिया जाता या क़ाफ़िले से बिछड़ जाता है, रात को होशियार हो कर सोए । अगर रात के इब्तिदाई हिस्से में आराम करे तो बाजूओं को बिछा ले और अगर आख़िरी हिस्से में सोए तो बाजूओं को खड़ा कर ले और सर हथेली पर रख ले कि “प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र में इसी तरह आराम फ़रमाया करते थे ।”(1) क्यूंकि बसा अवक़ात नींद का ऐसा ग़लबा होता है कि सूरज तुलूअ हो जाता (और फ़ज़्र क़ज़ा हो जाती) है और बन्दे को ख़बर तक नहीं होती हालांकि नमाज़ जो क़ज़ा हो जाती है वोह हज़ में मिलने वाले षवाब से अफ़ज़ल थी । रात के वक़्त बेहतर येह है कि दो रफ़ीक़ बारी बारी हिफ़ाज़त करें कि जब एक सो जाए तो दूसरा हिफ़ाज़त करे, येही सुन्नत है ।

दुश्मन या किसी दरिन्दे का खौफ हो तो येह दुआ पढे :

अगर रात या दिन में दुश्मन या किसी दरिन्दे के हमले का खौफ हो तो येह दुआ पढे :

”اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ“

لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يُعَلِّمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝ لَا تَرَاهُ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَيَئِمُّ عَلَيْهِمُ ۝ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكَ لَهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ مِنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ (پ ۳، البقرة: ۲۵۵-۲۵۷)،
شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْهَيْكَلُ وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ اللَّهِ الْأَسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أَلْتُوا إِلَهُكُم مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ بِالْعِلْمِ بَعِيْبَاتٍ يُعَذِّبُهُمْ ۝ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ (پ ۳، آل عمران: ۱۸۰)

सूरए इख़्लास, सूरए फ़लक और सूरए नास फिर येह दुआ पढे :

بِسْمِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ حَسْبِيَ اللَّهُ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا يَأْتِي بِالْخَيْرِ إِلَّا اللَّهُ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا يَصْرِفُ السُّوءَ إِلَّا اللَّهُ حَسْبِيَ اللَّهُ وَكَفَى سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ دَعَا لَيْسَ وَرَاءَ اللَّهِ مُنْتَهَى وَلَا دُونَ اللَّهِ مَلْجَأٌ كَتَبَ اللَّهُ لَأَعْلَيْنَ أَنَا وَرُسُلِي إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ تَحَصَّنْتُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ وَاسْتَعِثْتُ بِالْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ اللَّهُمَّ احْرِسْنَا بِعَيْنِكَ الَّتِي لَا تَنَامُ وَكُنْفِنَا بِرُحْنِكَ الَّتِي لَا يَرَامُ اللَّهُمَّ ارْحَمْنَا بِقُدْرَتِكَ عَلَيْنَا فَلَا نَهْلِكَ وَأَنْتَ تَقْتُنُنَا وَرَجَاؤُنَا اللَّهُمَّ اعْظِفْ عَلَيْنَا قُلُوبَ عِبَادِكَ وَإِمَانِكَ بِرَأْفَةٍ وَرَحْمَةٍ إِنَّكَ أَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

या 'नी : मैं **अल्लाह** के नाम से शुरू करता हूँ जो **अल्लाह** चाहे (वोही होता है), **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई ताक़त नहीं, मुझे **अल्लाह** काफ़ी है मैं ने **अल्लाह** पर भरोसा किया जो **अल्लाह** عز وجل चाहे (वोही होता है), **अल्लाह** के सिवा कोई भलाई नहीं ला सकता जो **अल्लाह** عز وجل चाहे (वोही होता है), **अल्लाह** के सिवा कोई बुराई को नहीं टाल सकता, मुझे **अल्लाह** काफ़ी है, वोह पुकारने वाले की पुकार सुनता है, **अल्लाह** के सिवा कोई इन्तिहा व ठिकाना नहीं और ना ही उस के सिवा कोई पनाहगाह है, **अल्लाह** लिख चुका कि ज़रूर मैं ग़ालिब आऊंगा और मेरे रसूल, बेशक **अल्लाह** कुव्वत वाला इज़्ज़त वाला है, मैं ने अज़मत वाले रब्ब के क़ल्प में पनाह ली, उस ज़िन्दा की बारगाह में इस्तिगाथा किया जिसे कभी मौत नहीं। ऐ **अल्लाह** अपनी उस नज़र के साथ हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा जो सोती नहीं, अपने उस सहारे के साथ हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा जो कभी जुदा नहीं होता। ऐ **अल्लाह** हम पर अपनी कुदरत के मुताबिक़ रहम फ़रमा ताकि हम हलाक न हों कि हमें तुझ पर ही भरोसा है और तू ही हमारी उम्मीदगाह है। ऐ **अल्लाह** अपने बन्दों और बन्दियों के दिलों को अपनी रहमत व मेहरबानी से हम पर मेहरबान फ़रमा, बेशक तू सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाला है।”

(8).....बुलन्दी पर चढ़ने और ढलान में उतरने की सुन्नतें : जब रास्ते में ज़मीन के किसी बुलन्द मक़ाम पर पहुंचे तो तीन बार **اللَّهُ أَكْبَرُ** कहना और यह दुआ पढ़ना मुस्तहब है :
'**يَا'नी** : ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** तू सब से बुजुर्ग व बरतर है और हर हाल में तेरी ही हम्द है। जब ढलान में उतरे तो **سُبْحَنَ اللَّهِ** कहे।

डर-खौफ़ महसूस हो तो येह दुआ पढ़े :

दौराने सफ़र डर-खौफ़ महसूस हो तो येह दुआ पढ़े :

سُبْحَنَ اللَّهُ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ جَلَّتِ السَّمُوتُ بِالْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوتُ

या'नी : पाक है **अल्लाह** जो मुक़द्दस बादशाह है, वोह फ़िरिश्तों और जिब्रईल (عليهم السلام) का रब्ब है, उसी की इज्ज़त व ग़लबे के साथ आस्मानों को बुजुर्गी हासिल हुई।

﴿2﴾.....एहराम बांधने से ले कर दुख्रूले मक्का तक के आदाब :

इस में पांच उमूर मुस्तहब हैं :

(1).....गुस्ल से मुतअल्लिक उमूर : एहराम की निय्यत से गुस्ल करे या'नी जब उस मशहूर मीक़ात तक पहुंचे जहां से लोग एहराम बांधते हैं (तो गुस्ल करे) और ख़ूब सफ़ाई सुथराई से काम ले, दाढ़ी और सर में कंधी करे, नाखुन तराशे, और मूँछें पस्त करे अल ग़रज़ तहारत के बाब में बयान किये गए तरीक़े के मुताबिक़ अच्छी तरह गुस्ल करे।

(2)....कपड़ों से मुतअल्लिक उमूर : सिले हुए कपड़े न पहने बल्कि एहराम की दो चादरें पहने, सफ़ेद अफ़ज़ल हैं कि सफ़ेद कपड़े **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को ज़ियादा महबूब हैं। एक ऊपर ओढ़ ले और दूसरी को बतौर तहबन्द बांध ले, कपड़ों और जिस्म पर खुशबू लगाए, ऐसी खुशबू लगाने में कोई हरज नहीं कि एहराम के बा'द जिस का ज़िर्म बाक़ी रहे क्यूंकि हुज़ूर नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने एहराम बांधने से पहले जो खुशबू इस्ति'माल की थी बांधने के बा'द भी कुछ खुशबू सरे अन्वर पर पाई गई थी। (1) (2)

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : बदन और कपड़ों पर खुशबू लगाएं कि सुन्नत है, अगर खुशबू ऐसी है कि इस का ज़िर्म (या'नी तेह) बाक़ी रहेगा जैसे मुश्क वगैरा तो कपड़ों में न लगाएं। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 1072)

②.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب الطیب للمحرم عند الاحرام، الحدیث: 1190، ص 209، مفہومًا۔

(3).....एहराम बांधने के बा'द के उमूर : एहराम बांधने के बा'द कुछ देर तवक्कुफ़ करे यहां तक कि सुवारी उसे ले कर उठे जब कि सुवार हो, अगर पैदल हो तो चलना शुरू करे, इस वक्त हज या उमरे के एहराम की निय्यत करे। हज्जे किरान या इफ़राद जो भी उस का इरादा हो, एहराम के इनइकाद के लिये फ़क़त निय्यत काफी है लेकिन सुन्नत येह है कि निय्यत के साथ तल्बिय्या भी कह ले और यूं कहे : “لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكُ لَا شَرِيكَ لَكَ” या 'नी : मैं हाज़िर हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं हाज़िर हूं, मैं हाज़िर हूं, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूं, बेशक हम्द, ना'त और बादशाही तेरे लिये है, तेरा कोई शरीक नहीं।”

अगर ज़ियादा कहना चाहे तो यूं कहे : “

لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدَيْكَ وَالرَّغْبَاءُ إِلَيْكَ لَبَّيْكَ بِحَبَّةٍ حَقًّا تَعْبَدًا وَرِقًّا اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ یا 'नी : मैं हाज़िर हूं और बार बार हाज़िर हूं और तमाम भलाई तेरे कब्ज़ए कुदरत में है और तेरी तरफ़ रग़बत है। मैं तेरी बन्दगी व गुलामी करते हुए हक़ के साथ हज के लिये हाज़िर हूं। ऐ **अल्लाह** صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم मुहम्मद मुहम्मद عَزَّوَجَلَّ और उन की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा।”

एहराम बांधने के बा'द येह दुआ पढ़े :

(4).....तल्बिय्या कह लेने के बा'द के उमूर : जब तल्बिय्या के साथ एहराम मुन्अकिद हो जाए तो येह दुआ पढ़ना मुस्तहब है :

اللَّهُمَّ إِنِّي أُرِيدُ الْحَجَّ فَيَسِّرْهُ لِي وَأَعِنِّي عَلَى آدَاءِ فُرْضِهِ وَتَقَبَّلْهُ مِنِّي اللَّهُمَّ إِنِّي نَوَيْتُ آدَاءَ فَرِيضَتِكَ فِي الْحَجِّ فَأَجْعَلْنِي مِنَ الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لَكَ وَأَمِنُوا بوعِدِكَ وَأَتَّبَعُوا أَمْرَكَ وَأَجْعَلْنِي مِنْ وَفْدِكَ الَّذِينَ رَضِيتَ عَنْهُمْ وَأَرْتَضِيَتْ وَقَبِلْتَ فَيَسِّرْ لِي آدَاءَ مَا نَوَيْتُ مِنَ الْحَجِّ اللَّهُمَّ قَدْ أَحْرَمَ لَكَ لَحْمِي وَشَعْرِي وَدَمِي وَعَصْصِي وَمَخْيِي وَعِظَامِي عِظَامِي وَحَرَمْتُ عَلَى نَفْسِي النِّسَاءَ وَالطَّيِّبَ وَلَبَّسَ الْمُخِيطَ ابْتِغَاءَ وَجْهِكَ وَالذَّارَ الْآخِرَةَ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं हज का इरादा करता हूं, इसे मेरे लिये आसान फ़रमा दे, हज फ़र्ज अदा करने पर मेरी मदद फ़रमा और इसे मेरी तरफ़ से कबूल फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने हज में तेरे फ़र्ज को अदा करने की निय्यत की, तू मुझे उन लोगों में से बना जिन्होंने तेरा हुक्म माना, तेरे वा'दे पर ईमान लाए, तेरे हुक्म की पैरवी की, उन लोगों के गुरौह में से कर जिन से तू राज़ी हुवा, जिन्हें तू ने राज़ी किया और जिन्हें मकबूल बनाया। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने हज का इरादा किया है लिहाज़ा इस की अदाएगी मेरे लिये आसान फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे गोश्त, बालों, खून, आ'साब, मज़ और हड्डियों ने तेरे लिये एहराम बांधा और मैं ने तेरी रिज़ा जोई और दारे आख़िरत के हुसूल के लिये औरतों, खुशबू और सिले हुए कपड़ों को खुद पर हराम कर लिया।

एहराम बांधते ही उस पर हमारी माक़बल ज़िक्र कर्दा छे चीज़ें हराम हो जाती हैं। लिहाज़ा इन से बचे।

(5).....बार बार तल्बिय्या कहने से मुतअल्लिक़ उमूर : एहराम बांधे हुए बार बार तल्बिय्या कहना मुस्तहब है, खुसूसन जब रुफ़का से मुलाकात हो, लोग जम्अ हों, हर बार चढ़ाई पर चढ़ते, उतरते, सुवारी पर सुवार होते और उतरते वक़्त बा आवाज़ बुलन्द तल्बिय्या कहे लेकिन गला फाड़ कर न कहे, न ही सांस रूके क्यूंकि वोह किसी बहरे या गाइब को नहीं सुना रहा जैसा कि हदीष शरीफ़ में वारिद है।⁽¹⁾ नीज़ तीन मसाजिद (या'नी मस्जिदे हराम, मस्जिदे मीकात और मस्जिदे खैफ़) में बुलन्द आवाज़ से तल्बिय्या कहने में कोई हरज नहीं क्यूंकि येह अरकाने हज की जगह वाक़ेअ हैं, इन के इलावा दीगर मसाजिद में आहिस्ता आवाज़ से कहने में कोई हरज नहीं।

कोई चीज़ अच्छी लगे तो येह पढो :

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जब कोई चीज़ अच्छी लगती तो फ़रमाते :
“لَبَّيْكَ اِنَّ الْعِشَّ عِشُّ الْاٰخِرَةِ” या'नी मैं हाज़िर हूं बेशक ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है।”⁽²⁾

﴿3﴾.....**दुखूले मक्का से तवाफ़ तक के आदाब :**

इस में छे उमूर मुस्तहब हैं :

(1).....मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने से मुतअल्लिक़ उमूर : दुखूले मक्का के लिये ज़ी तवा के मक़ाम पर गुस्ल करे, हज में मुस्तहब मस्नून गुस्ल 9 हैं : (1).....मीकात से एहराम के लिये (2).....मक्का में दाख़िल होने के लिये (3).....तवाफ़े कुदूम⁽³⁾ के लिये (4-5).....वुकूफ़े अरफ़ा व मुज्दलिफ़ा के लिये (6-7-8).....(अय्यामे तशरीक़ में) जमरात को कंकरियां मारने के तीन गुस्ल (यौमे नहूर) जमरए अक्बा की रमी के लिये गुस्ल करना मुस्तहब नहीं।

①.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء والتوبة.....الخ، الحدیث: ۲۷۰۴، ص ۱۴۵۰۔

②.....المسند للإمام الشافعی، ومن کتاب المناسک، ص ۱۲۲۔

③..... मक्का मुअज़्ज़मा में दाख़िल होने पर (जो) पहला तवाफ़ किया जाता है उसे तवाफ़े कुदूम कहते हैं येह “इफ़राद” या “कि़रान” की निय्यत से हज करने वालों के लिये सुन्नते मुअक्कदा है।

(रफ़ीकुल हरमैन, स. 34)

(9).....तवाफे वदाअ के लिये । हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के नज़दीक तवाफे ज़ियारत⁽¹⁾ और तवाफे वदाअ के लिये नए गुस्ल की ज़रूरत नहीं, इसी तरह येह 7 रह जाते हैं।⁽²⁾

हुदूदे हरम में दाख़िल होने से पहले की दुआ :

(2)..... हुदूदे हरम में दाख़िल होने से मुतअल्लिक़ उमूर : हरम शरीफ़ के शुरूअ में दाख़िल होते वक़्त मक्का मुकर्रमा से बाहर ही येह दुआ पढ़े :

اللّٰهُمَّ هَذَا حَرَمُكَ وَأَمْنُكَ فَحَرِّمْ لِحْيَتِي وَدُمِّي وَشَعْرَتِي وَبَشَرَتِي عَلَى النَّارِ وَأَمْنِي مِنْ عَذَابِكَ يَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَكَ وَاجْعَلْنِي مِنْ أَوْلِيَّائِكَ وَأَهْلِ طَاعَتِكَ
 या 'नी : ऐ **अल्लाह** غُرٍّ وَجَلٍّ येह तेरा हरम और अमन की जगह है। पस मेरा गोशत, मेरा खून, मेरे बाल और मेरी खाल आग पर हराम फ़रमा दे, जिस दिन तू अपने बन्दों को उठाएगा उस दिन मुझे अज़ाब से महफूज़ रखना, मुझे अपने औलिया और इताअत गुज़ार बन्दों में से कर दे।”

मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने और निकलने की सुन्नत :

(3).....मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने से मुतअल्लिक़ उमूर : वादिये अबतह से मक्का शरीफ़ में दाख़िल हो और वोह षनिय्यए कदा (या'नी कदा की घाटी) है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आम रास्ते से हट कर इसे इख़्तियार फ़रमाया था।⁽³⁾ लिहाज़ा हुज़ूर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की पैरवी ज़ियादा बेहतर है, जब निकले तो षनिय्यए कुदा से निकले। षनिय्यए कदा बुलन्द जब कि कुदा पस्त घाटी है।

बैतुल्लाह पर पहली नज़र पड़ते वक़्त की दुआ :

(4).....जब मक्का मुकर्रमा رَزَاهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا में दाख़िल हो और जूँ ही बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़े तो येह दुआ पढ़े :

① दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 304 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीकुल हरमैन सफ़हा 34 पर शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि रजवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ اَعْلٰیهِ ने क़ल फ़रमाते हैं : इसे तवाफ़े इफ़ाज़ा भी कहते हैं। येह हज़ का रुक्न है। इस का वक़्त 10 जुल हिज्जा की सुबह सादिक़ से बारह जुल हिज्जा के गुरूबे आप़ताब तक है मगर दस ज़िल हिज्जा को करना अफ़ज़ल है।

② अहनाफ़ के नज़दीक : अरफ़ा के दिन और एहराम बांधते वक़्त गुस्ल करना सुन्नत है और बुकूफ़े अरफ़ा व मुज्दलिफ़ा, हाज़िरिये हरम व हाज़िरिये सरकारे आ'ज़म, तवाफ़, दुखूल मिना, जमरों पर कंकरियां मारने के लिये और अरफ़ा की रात गुस्ल करना मुस्तहब है। (ص 339-342) (الدرالمختار، کتاب الطهارة، ج 1، ص 339-342)

③ صحیح مسلم، کتاب الحج، باب استحباب دخول مكة من الثنية العليا..... البخ، الحديث: 1258-1259، ص 254-

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَبَارَكْ دَارُ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ اللَّهُمَّ إِنَّ هَذَا بَيْتَكَ عَظَمَتُهُ وَكَرَمَتُهُ وَشَرَفَتُهُ اللَّهُمَّ فَزِدْهُ تَعْظِيمًا وَزِدْهُ تَشْرِيفًا وَتَكْرِيمًا وَزِدْهُ مَهَابَةً وَزِدْ مَنْ حَاجَهُ بَرًّا وَكَرَامَةً اللَّهُمَّ انْفُتِحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَأَدْخِلْنِي جَنَّاتَكَ وَأَعِزَّنِي مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

या 'नी : अब्बाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, अब्बाह सब से बड़ा है। ऐ अब्बाह तू सलामती वाला है, तुझ से सलामती है, तेरा घर सलामती वाला घर है, ऐ जलाल व बुजुर्गी वाले ! तू बरकत वाला है। ऐ अब्बाह बेशक तूने अपने इस घर को बुजुर्गी, करामत और शरफ अता फरमाया। ऐ अब्बाह इस की ता'जीम, शरफ व बुजुर्गी और इस के रो'ब में इजाफा फरमा, इस का हज करने वाले की नेकी और बुजुर्गी में इजाफा फरमा। ऐ अब्बाह मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाजे खोल दे, मुझे जन्नत में दाखिल फरमा और शैतान मर्दूद से महफूज फरमा।”

(5).....मस्जिदे हराम में दाखिले से मुतअल्लिक उमूर : जब मस्जिदे हराम में दाखिल हो तो बाबे बनी शैबा से दाखिल हो और येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ وَبِاللَّهِ وَمِنَ اللَّهِ وَإِلَى اللَّهِ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या 'नी : अब्बाह के नाम से, उसी की मदद से, उसी की तरफ से, उसी की तरफ,

उसी की राह में और उस के रसूल के दीन पर काइम रहते हुए दाखिल होता हूं।

बैतुल्लाह के करीब पहुंच कर येह दुआ पढ़े :

जब बैतुल्लाह शरीफ के करीब पहुंचे तो येह दुआ पढ़े :

الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَى اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُولِكَ وَعَلَى إِبراهيمَ خَلِيلِكَ وَعَلَى جَمِيعِ أَنْبِيَائِكَ وَرُسُلِكَ

या 'नी सब खूबियां अब्बाह के लिये हैं, उस के पसन्दीदा बन्दों पर सलाम हो। ऐ अब्बाह अपने बन्दे और रसूल हजरते सय्यिदुना मुहम्मद एवं वंश पर, अपने खलील हजरते सय्यिदुना इब्राहीम

पर, अपने तमाम अम्बिया और रसूलों पर रहमत नाज़िल फरमा।

पर, अपने तमाम अम्बिया और रसूलों पर रहमत नाज़िल फरमा।

फिर हाथ उठा कर येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ فِي مَقَامِي هَذَا فِي أَوَّلِ مَنْاسِكِي أَنْ تَقْبَلَ تَوْبَتِي وَأَنْ تَتَجَاوَزَ عَنِّي خَطِيئَتِي وَتَضَعُ عَنِّي وَزْرِي الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بَلَّغَنِي بَيْتَهُ الْحَرَامَ

الَّذِي جَعَلَهُ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَجَعَلَهُ مَبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَالْبَدَلُ بِذَلِكَ وَالْحَرَمُ حَرَمُكَ وَالْبَيْتُ بَيْتُكَ جِئْتُكَ أَطُوبُ رَحْمَتِكَ

وَأَسْأَلُكَ مَسْأَلَةَ الْمُضْطَرِّ الْخَائِفِ مِنْ عِقَابِكَ الرَّاجِي لِرَحْمَتِكَ أَطُوبُ رَحْمَتِكَ

या 'नी : ऐ अब्बाह मैं इस मकाम पर और हज के पहले अमल पर तुझ से सुवाल करता हूं कि मेरी तौबा कबूल फरमा, मेरी ख़ताओं से दर गुज़र फरमा, मेरा बोझ मुझ से उतार दे। सब खूबियां

अब्बाह के लिये हैं जिस ने मुझे अपने इज्जत वाले घर तक पहुंचाया जिसे उस ने लोगों के लौटने

अब्बाह के लिये हैं जिस ने मुझे अपने इज्जत वाले घर तक पहुंचाया जिसे उस ने लोगों के लौटने

और अमन की जगह बनाया, इसे मुबारक और तमाम जहानों के लिये हिदायत बनाया। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरा बन्दा हूँ, येह शहर तेरा शहर है, येह हरम तेरा हरम है, येह घर तेरा घर है, मैं तेरी बारगाह में तेरी रहमत का तलबगार बन कर हाज़िर हुवा हूँ मैं तुझ से इस तरह सुवाल करता हूँ जिस तरह कोई मजबूर शख्स तेरे अज़ाब से खौफ़ज़दा, तेरी रहमत का उम्मीद वार और तेरी रिज़ा का मुतलाशी सुवाल करता है।

हज़रे अस्वद को बोसा दे कर येह दुआ पढ़े :

(6).....हज़रे अस्वद से मुतअल्लिक उमूर : इस के बा'द हज़रे अस्वद के पास जाए और उसे दाएं हाथ से छू कर बोसा दे और येह दुआ पढ़े :

“اللَّهُمَّ آمَانَتِي أَدِيْتُهَا وَمِيثَاقِي وَفَيْتَهُ أَشْهَدُ لِي بِالْمُؤَافَاةِ” يا'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने अपनी अमानत अदा कर दी, अपना वा'दा पूरा किया तू इस वफ़ा पर गवाह रहना।” अगर बोसा न दे सके तो उस के सामने खड़ा हो कर मजकूर दुआ पढ़े फिर तवाफ़े कुदूम के इलावा कोई और अमल न करे। अलबत्ता, अगर लोगों को फ़र्ज नमाज़ में मशगूल पाए तो उन के साथ नमाज़ पढ़े फिर तवाफ़ करे।

﴿4﴾.....**तवाफ़ के आदाब :**

जब तवाफ़ का इरादा हो ख़्वाह तवाफ़े कुदूम हो या कोई और तो इन छे उमूर का ख़याल रखे :

(1).....**नमाज़ की शराइत का ख़याल रखे :** जैसे बा वुजू होना, लिबास, जिस्म, जगह का पाक होना और सित्रे औरत वगैरा कि बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ भी नमाज़ की तरह है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस में कलाम करने की इजाज़त अता फ़रमाई है। तवाफ़ की इब्तिदा में इज़्तिबाअ करे। इज़्तिबाअ का तरीक़ा येह है कि चादर का दरमियानी हिस्सा दाएं बग़ल के नीचे से ले जा कर इस के दोनों कनारे बाएं कन्धे पर जम्अ कर दे, इस के एक कनारे को पीठ की जानिब लटका दे जब कि दूसरे को सीने पर रखे। तवाफ़ शुरूअ करते ही तल्बिय्या कहना छोड़ दे और उन दुआओं में मशगूल हो जाए जो हम अंन करीब ज़िक्र करेंगे।

(2).....**इज़्तिबाअ के बा'द के मा'मूलात :** जब चादर कन्धे पर डाल ले हज़रे अस्वद के पास यूं खड़ा हो कि बैतुल्लाह शरीफ़ उस के दाईं जानिब हो लेकिन इस से कुछ दूर रहे ताकि हज़रे अस्वद उस के सामने हो और वोह तवाफ़ की इब्तिदा में अपने पूरे जिस्म के साथ पूरे हज़रे अस्वद के सामने से गुज़रे, अपने और बैतुल्लाह शरीफ़ के दरमियान तीन क़दमों का फ़ासिला रखे ताकि ख़ानए का'बा के करीब रहे क्यूंकि येह अफ़ज़ल है, नीज़ शाज़रवान (या'नी दीवार के पाये के साथ अर्ज में छोड़े हुए हिस्से) के अन्दर तवाफ़ करने वाला न हो क्यूंकि येह ख़ानए का'बा में शामिल है। हज़रे अस्वद के पास शाज़रवान ज़मीन से मिला हुवा है, इस में तवाफ़ करने वाले

का तवाफ़ सहीह नहीं क्यूंकि वोह खानए का'बा के अन्दर तवाफ़ करने वाला शुमार होता है। शाजरवान वोह हिस्सा है जो खानए का'बा की दीवार की चौड़ाई से बच गया था जब ऊपर से दीवार तंग हो गई थी। फिर उसी जगह से तवाफ़ शुरूअ करे।

(3).....तवाफ़ शुरूअ करने से पहले के मा'मूलात : हज़रे अस्वद के पास से गुज़रने से पहले बल्कि तवाफ़ की इब्तिदा में येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُمَّ إِيْمَانًا بِكَ وَتَصَدِّيقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ وَإِتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

या 'नी : **अल्लाह** عز وجل के नाम से शुरूअ, **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है। ऐ **अल्लाह** عز وجل मैं तुझ पर ईमान लाते, तेरी किताब की तस्दीक करते, तेरे वा'दे को पूरा करते और तेरे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत की पैरवी करते हुए तवाफ़ करता हूं।

तवाफ़ का तरीका

अब तवाफ़ करे, हज़रे अस्वद से आगे बढ़ने के बा'द सब से पहले खानए का'बा का दरवाज़ा आता है वहां येह कलिमात कहे :

اللَّهُمَّ هَذَا الْبَيْتُ بَيْتُكَ وَهَذَا الْحَرَمُ حَرَمُكَ وَهَذَا الْأَمْنُ أَمْنُكَ وَهَذَا الْمَقَامُ الْمَقَامُ الْعَائِدِ بِكَ مِنَ النَّارِ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عز وجل येह घर तेरा घर है, येह हरम तेरा हरम है, येह अमन तेरी जाबिन से है और येह वोह जगह है जहां जहन्नम की आग से तेरी पनाह तलब की जाती है।

मक़ामे इब्राहीम को देख कर येह दुआ पढ़े :

मजक़रा कलिमात पढ़ते हुए जब मक़ाम का ज़िक्र आए तो आंखों से मक़ामे इब्राहीम की तरफ़ इशारा करे और येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ إِنَّ بَيْتَكَ عَظِيمٌ وَوَجْهَكَ كَرِيمٌ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ فَأَعِزَّنِي مِنَ النَّارِ وَرَنِ الشَّيْطَانَ الرَّجِيمَ وَحَرِّمِ لَحْمِي

وَدَمِي عَلَى النَّارِ وَأَمِّنِّي مِنْ أَهْوَالِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَأَكْفِنِي مُؤُونَةَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عز وجل बेशक तेरा घर अज़ीम और तेरी ज़ात करीम है, तू सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाला है, जहन्नम और शैतान मर्दूद से मुझे पनाह अता फ़रमा, मेरे गोश्त और खून को आग पर हराम फ़रमा, मुझे रोज़े महशर की हौलनाकियों से अमन अता फ़रमा और दुन्या व आखिरत की मशक्कतों में मुझे क़िफ़ायत फ़रमा।"

फिर **अल्लाह** عز وجل की हम्दो तस्बीह बयान करते हुए रुकने इराकी तक पहुंचे और येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الشِّرْكِ وَالشَّكِّ وَالْكُفْرِ وَالنِّفَاقِ وَالشَّقَاقِ وَسُوءِ الْأَخْلَاقِ وَسُوءِ الْمُنَظَرِ فِي الْأَهْلِ وَالْمَالِ وَالْوَلَدِ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عز وجل मैं शिर्क, शक, कुफ़्र, निफ़ाक़, बद बख़्ती, बद अख़्लाकी और अहलो माल व औलाद के मुतअल्लिक़ बुराई देखने से तेरी पनाह तलब करता हूं।

मीजाबे रहमत के पास येह दुआ पढ़े :

जब मीजाबे रहमत के पास पहुंचे तो येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ اِظْلَمْنَا تَحْتَ عَرْشِكَ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّكَ اللَّهُمَّ اَسْقِنِي بِكَاسِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَرْبَةً لَا اُظْمَأُ بَعْدَهَا اَبَدًا

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें उस दिन अपने अर्श का साया अता फ़रमा जिस दिन तेरे (अर्श के) साए के सिवा कोई साया न होगा। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मुझे हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم के मुबारक कूज़े से ऐसा जाम पिलाना कि इस के बा'द मैं कभी प्यासा न होऊँ।

रुक्ने शामी के पास पहुंचे तो येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ حَبًّا مَبْرُورًا وَسَعِيًّا مَشْكُورًا وَذَنْبًا مَغْفُورًا وَتِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ يَا عَزِيزُ يَا غَفُورُ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوِزْ عَمَّا نَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ इस हज़ को मक्बूल फ़रमा, इस कोशिश को कबूलियत अता फ़रमा, गुनाह मुआफ़ फ़रमा और इसे न ख़त्म होने वाली तिजारत बना। ऐ अज़ीज़ ! ऐ ग़फ़ूर ! ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ मुझे बख़्श दे, रहम फ़रमा, मेरे गुनाहों को तू जानता है इन से दर गुज़र फ़रमा बेशक तू बहुत इज़्ज़त व इकराम वाला है।

रुक्ने यमानी के पास पहुंचे तो येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْفَقْرِ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُرْبِیْ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

“या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मैं कुफ़्र से तेरी पनाह मांगता हूँ, फ़क़्र, अज़ाबे क़ब्र, ज़िन्दगी और मौत के फ़ितने, नीज़ दुन्या व आख़िरत की रुस्वाई से तेरी पनाह मांगता हूँ।”

रुक्ने यमानी और हज़रे अस्वद के दरमियान येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ رَبَّنَا اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا بِرَحْمَتِكَ فِتْنَةَ الْقَبْرِ وَعَذَابَ النَّارِ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ऐ रब्ब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अपनी रहमत से फ़ितनए क़ब्र और जहन्नम के अज़ाब से बचा।

हज़रे अस्वद के पास पहुंचे तो येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِيْ بِرَحْمَتِكَ اَعُوْذُ بِرَبِّ هٰذَا الْحَجَرِ مِنَ الدَّيْنِ وَالْفَقْرِ وَضِيْقِ الصَّدْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ अपनी रहमत से मुझे बख़्श दे। मैं क़र्ज़, तंग दस्ती, सीने की तंगी और अज़ाबे क़ब्र से इस पथ़र के रब्ब की पनाह चाहता हूँ।

इस वक़्त त़वाफ़ का एक चक्कर मुकम्मल हो गया। इसी तरह सात चक्कर पूरे करे हर बार मज़क़ूरा दुआएं पढ़े।

(4).....रमल से मुतअल्लिक उमूर : पहले तीन फेरों में रमल करे और बक़िय्या में आदत के मुताबिक चले। रमल का तरीका यह है कि पाउं करीब करीब रखते हुए तेज़ तेज़ चलना। यह दौड़ने से कम लेकिन आम आदत से कुछ तेज़ है। रमल व इज्तिबाअ से मक्सूद बे ख़ौफ़ी और कुव्वत का इज़हार है। शुरूअ में कुफ़्फ़ार का तम्अ ख़त्म करने के लिये इस का मक्सूद येही था, अब भी यह सुन्नत बाक़ी है। ख़ानए का'बा के करीब से रमल करना अफ़ज़ल है अगर भीड़ के सबब ऐसा मुमकिन न हो तो दूर से रमल करना अफ़ज़ल है। मताफ़ (मक़ामे तवाफ़) के कनारे पर चलते हुए तीन फेरों में रमल करे फिर बैतुल्लाह शरीफ़ के करीब हुजूम में आ जाए चार फेरों में आम तरीके पर चले। अगर हर चक्कर में हज़रे अस्वद का इस्तिलाम⁽¹⁾ कर सके तो ज़ियादा अच्छा है और अगर हुजूम रूकावट हो तो हाथ से इशारा कर के हाथ को बोसा दे ले। इसी तरह रुकने यमानी का इस्तिलाम भी मुस्तहब है दीगर अरकान (या'नी रुकने शामी व इराक़ी) का इस्तिलाम मुस्तहब नहीं। मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रुकने यमानी का इस्तिलाम करते,⁽²⁾ उसे बोसा देते⁽³⁾ और अपना रुख़्सारे पुर अन्वार उस पर रख देते थे।”⁽⁴⁾ जो ख़ास तौर पर हज़रे अस्वद को बोसा देना और रुकने यमानी को इस्तिलाम करना चाहे तो यह ज़ियादा बेहतर है।

(5).....तवाफ़ के बा'द के मा'मूलात : जब तवाफ़ के सात चक्कर पूरे हो जाएं तो मुल्लतज़म के पास आए और यह हज़रे अस्वद और दरवाज़े के दरमियान है। यह वोह जगह है जहां दुआ कबूल होती है। यहां बैतुल्लाह शरीफ़ से चिमट जाए, पर्दों से लटक जाए, अपने पेट को बैतुल्लाह शरीफ़ से मिला ले, इस पर अपना दायां रुख़्सार रख दे, अपने बाजू और हथेलियां इस पर फैला दे।

तवाफ़ के बा'द की दुआ :

फिर यह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ يَا رَبَّ الْبَيْتِ الْعَتِيقِ اَعْتَقْ رَقَبَتِيْ مِنَ النَّارِ وَاَعِزَّنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ وَاَعِزَّنِيْ مِنْ كُلِّ سَوْءٍ وَفَعِّلْنِيْ بِمَا رَزَقْتَنِيْ وَبَارِكْ لِيْ فِيْمَا اَتَيْتَنِيْ اَللّٰهُمَّ اِنَّ هَذَا الْبَيْتَ بَيْتُكَ وَالْعَبْدُ عَبْدُكَ وَهَذَا مَقَامُ الْعَائِدِيْنَ بِكَ مِنَ النَّارِ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِيْ مِنْ اَكْرَمِ وَفِدِكَ عَلَيْهِكَ

① दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 304 सफ़हात पर मुशतमिल किताब रफीकुल हरमैन सफ़हा 70 पर शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ نक्ल फ़रमाते हैं : हज़रे अस्वद को बोसा देने या हाथ से छू कर चूमने या हाथों का इशारा कर के इन्हें चूम लेने को इस्तिलाम कहते हैं।

② صحيح مسلم، كتاب الحج، باب استحباب استلام الركنين اليمانيين..... الخ، الحديث: 1264، ص 261 -

③ المستدرک، کتاب المناسک، باب تقبيل الركن اليماني..... الخ، الحديث: 1814، ج 2، ص 104 -

④ المستدرک، کتاب المناسک، باب تقبيل الركن اليماني..... الخ، الحديث: 1814، ج 2، ص 104 -

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ कदीम घर के रब्ब ! मेरी गर्दन को जहन्नम से आज़ाद फ़रमा और मुझे शैतान मर्दूद से पनाह अता फ़रमा और हर बुराई से पनाह दे और जो चीज़ तू ने मुझे अता फ़रमाई इस पर क़नाअत की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमा और मेरे लिये इस में बरक़त डाल दे । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! येह घर तेरा घर है, येह बन्दा तेरा बन्दा है और येह दोज़ख़ से तेरी पनाह मांगने वाले का मक़ाम है । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी बारगाह में आने वालों में से बेहतर लोगों में कर दे ।”

इस मक़ाम पर कषरत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो षना बयान करे और उस के प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और तमाम रुसुल व अम्बिया وَالسَّلَام عَلَیْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर ब कषरत दुरुदे पाक पढ़े । अपनी ख़ास हाजात के लिये दुआ मांगे, गुनाहों की बख़्शिश चाहे ।

मन्कूल है कि बा'ज बुजुर्ग इस मक़ाम पर अपने खुदाम से फ़रमाते : “मुझ से दूर हो जाओ ताकि मैं रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अपने गुनाहों का इक़रार करूं ।”

(6).....तवाफ़ की दो रकअतें⁽¹⁾: तवाफ़ वगैरा के मा'मूलात से फ़ारिग़ होने के बा'द मक़ामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ पढ़े, पहली रकअत में सूरए काफ़िरून और दूसरी में सूरए इख़्लास पढ़े । येह तवाफ़ की दो रकअतें हैं ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ोहरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “येह सुन्नत है कि बन्दा हर सात फेरों के बा'द दो रकअत नमाज़ पढ़े । अगर कई बार तवाफ़ कर के दो रकअत पढ़ ले तब भी जाइज़ है ।⁽²⁾ कि येह भी सुन्नत है । हर सात फेरे एक तवाफ़ है ।”

दो रकअत तवाफ़ के बा'द की दुआ :

तवाफ़ की दो रकअतों के बा'द येह दुआ पढ़े :

اللّٰهُمَّ یَسِّرْ لِّی الْیُسْرٰی وَجَنِّبْنِی الْعُسْرٰی وَاعْفُرْ لِّیْ فِی الْاٰخِرَةِ وَالْاَوَّلٰی

وَاعْصِمْنِی بِالطَّافِكِ حَتّٰی لَا اَعْصِیْكَ وَاَعِیْنِیْ عَلٰی طَاعَتِكَ بِتَوْفِیْقِكَ وَجَنِّبْنِیْ مَعَاصِیْكَ وَاَجْعَلْنِیْ مِمَّنْ یُحِبُّكَ وَیُحِبُّ مَلَائِکَتَكَ وَرُسُلَكَ وَیُحِبُّ عِبَادَكَ الصّٰلِحِیْنَ اللّٰهُمَّ حَبِّبْنِیْ اِلٰی مَلَائِکَتِكَ وَرُسُلِكَ وَاِلٰی عِبَادِكَ الصّٰلِحِیْنَ اللّٰهُمَّ فَكَمَا هَدَيْتَنِیْ اِلٰی الْاِسْلَامِ فَتَبَتَّنِیْ عَلَیْهِ بِالطَّافِكِ وَوَلَّیْتَكَ وَاَسْتَعْمِلْنِیْ لِطَاعَتِكَ وَطَاعَةِ رَسُوْلِكَ وَاَجِرْنِیْ مِنْ مُضَلَّلَاتِ الْفِتَنِ

①..... येह नमाज़ वाजिब है । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 1102)

②..... صحیح البخاری، کتاب الحج، تحت الباب صلی النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم لسبوعہ رکعتین، ج 1، ص 523۔

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये आसानी को आसान फ़रमा, मुझे तंगी से बचा, दुनिया व आखिरत में मेरी बख़्शिश फ़रमा, अपनी मेहरबानियों के ज़रीए मुझे बचा ले ताकि मैं तेरी नाफ़रमानी न करूँ, अपनी तौफ़ीक़ से इबादत पर मेरी मदद फ़रमा, मुझे अपनी नाफ़रमानियों से बचा, मुझे उन लोगों में से कर दे जो तुझ से, तेरे फ़िरिशतों, तेरे रसूलों और तेरे नेक बन्दों से महबूबत करते हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जैसा कि तू ने इस्लाम की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाई तू अपनी मेहरबानियों से मुझे इस पर षाबित क़दम रख। मुझे अपनी और अपने रसूल की फ़रमां बरदारी वाले काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और मुझे गुमराह कुन फ़ितनों से महफूज़ फ़रमा।”

फिर हज़रे अस्वद की तरफ़ आए और इस का इस्तिलाम कर के तवाफ़ ख़त्म कर दे।

गुलाम आज़ाद करने का षवाब :

हुज़ूर नबिय्ये अन्वर صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “जो बैतुल्लाह शरीफ़ का एक हफ़्ता तवाफ़ करे ⁽¹⁾ और दो रकअत नमाज़ पढ़े तो उस के लिये एक गुलाम आज़ाद करने का षवाब है।” ⁽²⁾

येह तवाफ़ का तरीक़ा मज़कूर हुवा। नमाज़ की शराइत (मषलन तहारत, सित्रे औरत वगैरा) के बा'द मज़कूरा उमूर में से वाजिब येह है कि पूरे बैतुल्लाह शरीफ़ के सात चक्कर मुकम्मल करे, हज़रे अस्वद से इब्तिदा करे, ख़ानए का'बा बाई जानिब हो और मस्जिद के अन्दर तवाफ़ करे लेकिन ख़ानए का'बा से बाहर हो, न तो बुन्याद पर तवाफ़ करे, न ही हतीम के अन्दर करे, पै दरपै सात चक्कर पूरे करे, इन में आ़म आदत से ज़ियादा फ़र्क़ न हो। इन के इलावा वोह उमूर सुन्नत व मुस्तहब हैं।

5).....सअय के आदाब :

जब तवाफ़ से फ़ारिग़ हो जाए तो बाबे सफ़ा से निकले, येह रुकने यमानी और हज़रे अस्वद के दरमियान मौजूद दीवार के मुक़ाबिल है। जब इस दरवाज़े से बाहर निकल कर सफ़ा पहाड़ी तक पहुंचे तो इस के नीचे से इन्सान की क़द के बराबर कुछ ऊपर चला जाए कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم इस पर चढ़े यहां तक कि ख़ानए का'बा नज़र आ गया। ⁽³⁾ पहाड़ के दामन से सअय शुरू करना भी काफ़ी है और येह ज़ियादती (या'नी ऊपर चढ़ना) मुस्तहब है। लेकिन दर्जे नए बनाए गए हैं लिहाज़ा इन्हें अपनी पीठ के पीछे नहीं छोड़ना चाहिये क्यूंकि इस तरह वोह सअय मुकम्मल करने वाला न होगा। जब यहां से इब्तिदा करे तो सफ़ा व मर्वा के दरमियान सात मरतबा सअय करे।

①..... इस तरह कि मुसलसल एक हफ़्ता तवाफ़ करे, कोई दिन नागा न हो।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 4, स. 134)

②..... سنن ابن ماجه، كتاب المناسك، باب فضل الطواف، الحديث: ۲۹۵۶، ج ۳، ص ۴۳۹، باختصار۔

③..... صحيح مسلم، كتاب الحج، باب حجة النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ۱۲۱۸، ص ۶۳۵۔

सफ़ा पर चढ़े तो येह दुआ पढे :

सफ़ा पर चढ़ते हुए बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ रुख़ करे और येह दुआ पढे :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى مَا هَدَانَا اللَّهُ بِمَحَامِدِهِ كُلِّهَا عَلَى جَمِيعِ نِعَمِهِ كُلِّهَا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ صَدَقَ وَعْدُهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَأَعَزَّ جُنْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تُمَتِّشُونَ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيمَانًا دَائِمًا وَيَقِينًا صَادِقًا وَعِلْمًا نَافِعًا وَقَلْبًا خَاشِعًا وَإِسْلَامًا ذَاكِرًا وَأَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

या 'नी : अब्लाह **عَزَّوَجَلَّ** सब से बड़ा है, **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** सब से बड़ा है, सब खूबियां **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं कि उस ने हमें हिदायत अता फ़रमाई, **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की तमाम ने'मतों पर तमाम ता'रीफ़ों के साथ उस की हम्द है। **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं उसी के लिये बादशाहत है, उसी के लिये ता'रीफ़ है, वोह जिलाता और मारता है, उसी के क़ब्ज़ क़ुदरत में भलाई है, वोह सब कुछ कर सकता है। **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह तन्हा है, उस ने अपना वा'दा सच्चा किया, अपने बन्दे की मदद फ़रमाई, अपने लश्कर को इज़्ज़त अता फ़रमाई और तन्हा दुश्मन के लश्करो को भगा दिया, **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं अगर्चे काफ़िरो को नापसन्द हो, **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मा'बूद नहीं, हम सिर्फ़ उसी की इबादत करते हैं सब खूबियां **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं, तो **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह हो और उसी की ता'रीफ़ है आस्मानों और ज़मीन में और जो कुछ दिन रहे और जब तुम्हें दोपहर हो, वोह ज़िन्दा को निकालता है मुर्दे से और मुर्दे को निकालता है ज़िन्दा से और ज़मीन को जिलाता है उस के मरे पीछे और यूँही तुम निकाले जाओगे और उस की निशानियों से है येह कि तुम्हें पैदा किया मिट्टी से फिर जभी तुम इन्सान हो दुनिया में फैले हुए। ऐ **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मैं तुझ से दाइमी ईमान, सच्चे यकीन, इल्मे नाफ़ेअ, डरने वाले दिल और ज़िक्र वाली ज़बान का सुवाल करता हूँ और तुझ से बख़िश, दाइमी अफ़ियत और दुनिया व आख़िरत में मुआफ़ी त़लब करता हूँ।

फिर बारगाहे रिसालत में हदिय्यए दुरूद पेश करे और इस के बा'द **अब्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से जिस हाजत की चाहे दुआ करे।

फिर सफ़ा से उतर कर येह कहते हुए सअय शुरू कर दे :

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ اللَّهُمَّ اتِّمَّا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

या 'नी : ऐ रब्ब غ़ुज़ल मुज़ पर रहम फ़रमा और मेरी जो ख़ताएं तू जानता है उन से दर गुज़र फ़रमा, बेशक तू बहुत ज़ियादा इज़्ज़त व इकराम वाला है। ऐ **अल्लाह** ग़ुज़ल हमें दुनिया में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अज़ाबे दोज़ख़ से बचा।

और आहिस्ता आहिस्ता चलते हुए सब्ज़ मील तक पहुंचे, येह सफ़ा से उतरते हुए सब से पहले आता है और येह मस्जिदे हराम के कोने पर है। जब इस के और सब्ज़ मील के दरमियान छे गज़ फ़ासिला रह जाए तो तेज़ चलना शुरू कर दे या'नी रमल करे यहां तक कि मैलाने अख़ज़रैन तक जा पहुंचे अब आम रफ़्तार से चले जब मर्वा के पास पहुंचे तो उस पर इसी तरह चढ़े जिस तरह सफ़ा पर चढ़ा था और चेहरा सफ़ा की तरफ़ कर ले और ऐसी ही दुआ करे जैसी सफ़ा पर की थी। यहां एक मरतबा सअय मुकम्मल हो गई। जब सफ़ा की तरफ़ लौटेगा तो दो चक्कर मुकम्मल हो जाएंगे। यूं सात चक्कर लगाए और हर चक्कर में तेज़ चलने की जगह तेज़ और आहिस्ता की जगह आहिस्ता चले जैसा कि बयान हो चुका है और हर बार सफ़ा व मर्वा पर चढ़े। जब ऐसा कर लिया तो तवाफ़े कुदूम और सअय से फ़ारिग़ हो गया और येह दोनों सुन्नत हैं। सअय के लिये वुजू मुस्तहब है वाजिब नहीं जब कि तवाफ़ में वुजू वाजिब है। जब सअय कर ली तो अब वुकूफ़ अरफ़ा के बा'द दोबारा सअय की ज़रूरत नहीं, बतौर रुकन येह सअय काफ़ी है क्योंकि सअय में येह शर्त नहीं कि वुकूफ़ अरफ़ा के बा'द हो अलबत्ता, फ़र्ज़ तवाफ़ में येह शर्त है। हां ! हर सअय में येह शर्त है कि वोह तवाफ़ के बा'द हो ख़्वाह कोई भी तवाफ़ हो (तवाफ़े कुदूम या फ़र्ज़ तवाफ़)।

﴿6﴾.....**वुकूफ़ अरफ़ा और इस से पहले के आदाब :**

अगर हाजी नव ज़िल हिज्जा के दिन अरफ़ात पहुंचे तो वुकूफ़ अरफ़ा से पहले तवाफ़े कुदूम और मक्का मुकर्रमा की हाज़िरी के लिये न जाए, अगर कुछ दिन पहले पहुंचे तो तवाफ़े कुदूम करे और ज़िल हिज्जा की सात तारीख़ तक हालते एहराम में रहे। सातवीं तारीख़ को इमाम जोहर के बा'द का'बा शरीफ़ के पास खुतबा देता और लोगों को बताता है कि यौमे तरविया (या'नी आठ ज़िल हिज्जा) को मिना जाने की तय्यारी करें और वहां रात गुज़ारे, दूसरे दिन सुबह अरफ़ात में जाएं ताकि ज़वाल के बा'द वुकूफ़ कर के फ़र्ज़ की अदाएगी करें क्योंकि वुकूफ़ का वक़्त (नव ज़िल हिज्जा के) ज़वाल से ले कर यौमे नहर (या'नी कुरबानी के दिन) की तुलू सुबह सादिक तक है। चुनान्चे, तल्बिय्या कहते हुए मिना की तरफ़ निकले, अगर ताक़त रखता हो तो मक्का से ले कर हज़ ख़त्म होने तक तमाम अरकाने हज़ पैदल अदा करे कि मुस्तहब है। मस्जिदे इब्राहीम (येह मैदाने अरफ़ात में है वहां) से जाए वुकूफ़ तक पैदल चलना अफ़ज़ल है और इस की ज़ियादा ताकीद है।

मिना में पहुंच कर येह दुआ पढ़े :

”اللَّهُمَّ هَذِهِ مِنِّي فَأَمِّنْ عَلَيَّ بِمَا مَنَنْتَ بِهِ عَلَيَّ أَوْلِيَّائِكَ وَأَهْلَ طَاعَتِكَ“

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह मिना है, मुझ पर ऐसे ही करम फरमा जैसे तू ने अपने औलियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام और नेक बन्दों पर करम फरमाया ।”

येह रात मिना में गुजारे यहां सिर्फ रात गुजारना है, हज का कोई अमल इस से मुतअल्लिक नहीं ।

अरफ़ात की जानिब जाए तो येह दुआ पढ़े :

नौ ज़िल हिज्जा की सुबह फ़ज्र की नमाज़ पढ़े और कोहे षबीर पर सूरज तुलूअ होने के बा'द अरफ़ात की तरफ़ जाए और येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا خَيْرَ غَدَوَةٍ وَعَدْوَةٍ قَطُّ وَأَقْرَبَهَا مِنْ رِضْوَانِكَ وَأَبْعَدَهَا مِنْ سَخَطِكَ اللَّهُمَّ الْيَكْ

غَدَوْتُ وَإِيَّاكَ رَجَوْتُ وَعَلَيْكَ اعْتَمَدْتُ وَوَجْهَكَ أَرَدْتُ فَاجْعَلْنِي مِمَّنْ تَبَاهِي بِهِ الْيَوْمَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي وَأَفْضَلُ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस सुबह को उन तमाम सुबहों से बेहतर कर दे जो मैं ने की हैं, इसे अपनी रिज़ा के करीब और अपनी नाराज़ी से दूर कर दे । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने तेरी तरफ़ सुबह की, तेरी तरफ़ रूजूअ किया, तुझ से उम्मीद रखी, तुझी पर भरोसा किया और तेरा ही इरादा किया, पस मुझे उन लोगों में से कर दे जिन पर आज तू उन (या'नी फिरिशतों) के सामने फ़ख़्र फ़रमाता है जो मुझ से बेहतर और अफ़ज़ल हैं ।

जब मैदाने अरफ़ात में पहुंच जाए तो मक़ामे निमरह में मस्जिद के करीब खैमा लगाए कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी यहीं खैमा लगाया था ।⁽¹⁾ निमरह उरना का निचला हिस्सा है जो मौक़िफ़ और अरफ़ात के इलावा है । वुकूफ़ के लिये गुस्ल करना सुन्नत है । जब ज़वाल का वक़्त हो जाए तो इमाम एक मुख़्तसर खुतबा दे कर बैठ जाए, मुअज़्ज़िन अज़ान दे और इमाम दूसरा खुतबा दे, इक़ामत को अज़ान के साथ इस तरह मिलाया जाए कि मुअज़्ज़िन के इक़ामत कहने के साथ इमाम खुतबा से फ़ारिग़ हो जाए, फिर एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ जोहर व अस् की नमाज़ मिला कर पढ़े, (अगर शरई मुसाफ़िर हों तो) नमाज़ क़स्स पढ़े । फिर मौक़िफ़ की तरफ़ चल पड़े और अरफ़ात में ठहर जाए, वादिये उरना में न ठहरे, (अगर शरई मुसाफ़िर हों तो) नमाज़ क़स्स पढ़े । फिर मौक़िफ़ की तरफ़ चल पड़े और अरफ़ात में ठहर जाए, वादिये उरना में न ठहरे । मस्जिदे इब्राहीम वादिये उरना से शुरूअ हो कर अरफ़ा में ख़त्म होती है, लिहाज़ा जिस ने मस्जिद के अगले हिस्से में वुकूफ़ किया उसे वुकूफ़े अरफ़ा हासिल न होगा ।

①.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب حجة النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث: ۱۲۱۸، ص ۲۳۶۔

मस्जिद में अरफ़ात की जगह को बड़े बड़े पथ्थरों के ज़रीए मुस्ताज़ किया गया है, बेहतर यह है कि इन पथ्थरों के पास इमाम के करीब क़िब्ला रू हो कर सुवारी पर खड़ा हो। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्दो घना, तस्बीह व तहलील और तौबा व इस्तिग़फ़ार की क़षरत करे। इस दिन रोज़ा न रखे ताकि मुसलसल दुआ पर कुव्वत हासिल हो, अरफ़ा के दिन तल्बिय्या कहना न छोड़े बल्कि कभी तल्बिय्या कहे और कभी दुआ में मशगूल हो। अरफ़ात से गुरुबे आफ़ताब से पहले नहीं निकलना चाहिये ताकि अरफ़ात में दिन और रात जम्अ हो जाए, चांद के शुबे की वजह से आठवीं तारीख़ की एक साअत वहां ठहरना मुमकिन हो तो यह एहतियात के मुताबिक़ है। जो शख़्स दस ज़िल हिज्जा की तुलूए फ़ज़्र तक वुकूफ़ न कर सके उस का हज़ फ़ौत हो जाएगा, उस पर लाज़िम है कि उमरा के अफ़आल अदा कर के एहराम खोल दे, फिर हज़ फ़ौत होने की वजह से जानवर ज़ब्ह करे और आयन्दा साल क़ज़ा करे। इस दिन सब से अहम मशगूलियत दुआ करते रहना है क्यूंकि इस क़िस्म की जगह, इस क़िस्म के इजतिमाअ में दुआओं के क़बूल होने की ज़ियादा उम्मीद होती है। वोह दुआएं जो वुकूफ़े अरफ़ा के दिन पढ़ने के बारे में मन्कूल हैं उन का पढ़ना बेहतर है।

वुकूफ़े अरफ़ा के दिन पढ़ी जाने वाली दुआएं :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اَللّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا وَفِي بَصَرِي نُورًا وَفِي لِسَانِي نُورًا اَللّهُمَّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي وَيَسِّرْ لِي اَمْرِي

या 'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी की बादशाहत है, सब खूबियां उसी के लिये हैं, वोह जिलाता और मारता है, वोह ऐसा ज़िन्दा है जिसे मौत नहीं, तमाम भलाई उसी के क़ब्ज़ए कुदरत में है, वोह हर चाहे पर क़ादिर है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल, मेरी समाअत, मेरी बसारत और मेरी ज़बान को मुनव्वर फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान फ़रमा। (1)

दुआए ख़िज़्र :

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَي نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से मन्कूल दुआ ब क़षरत पढ़े, जो यह है :

يَا مَنْ لَا يَشْغَلُهُ شَأْنٌ عَنْ شَأْنٍ وَلَا سَمْعٌ عَنْ سَمْعٍ وَلَا تَشْتَبِهُ عَلَيْهِ الْأَصْوَاتُ يَا مَنْ لَا تَغْلُطُهُ الْمَسَائِلُ وَلَا تَخْتَلِفُ عَلَيْهِ اللُّغَاتُ يَا مَنْ لَا يَبْرِمُهُ الْخَطَا الْمُتَجَمِّعِينَ وَلَا تَضْجُرُهُ مَسْأَلَةُ السَّائِلِينَ اِزْنًا بَرْدَ عَفْوِكَ وَحِلَاوَةَ مُنَاجَاتِكَ

①.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب افضل الدعاء يوم عرفة، الحديث: ٩٢٤٥، ج ٥، ص ٩٠،

بلون: "يحيى ويميت وهو حي لا يموت بيده الخير"

या 'नी : ऐ वोह ज़ात कि जिसे न तो एक काम दूसरे काम से, न एक बात का सुनना दूसरी बात के सुनने से मशगूल रखता है, न ही उस पर आवाज़ें मुश्तबा होती हैं। ऐ वोह ज़ात जिसे मसाइल में ग़लती नहीं लगती, न ही ज़बानें उस पर मुख़्तलिफ़ होती हैं। ऐ वोह ज़ात जो गिर्या करने वालों के गिर्या से बे चैन नहीं होती, न ही सुवाल करने वालों का सुवाल उसे तंग करता है, हमें अपने दरगुज़र की ठन्डक और क़बूलिय्यते दुआ की मिठास चखा।

इस के इलावा जो दुआएं याद हों वोह पढ़े। नीज़ अपने लिये, अपने वालिदैन् और तमाम मुसलमान मदों और औरतों के लिये इस्तिग़फ़ार करे। ख़ूब गिड़गिड़ा कर दुआ मांगे क्यूंकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के सामने कोई चीज़ बड़ी नहीं।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुत्तरिफ़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने मैदाने अरफ़ात में बारगाहे इलाही में यूं अर्ज़ की : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरी वजह से तमाम लोगों की दुआ रद्द न करना।”

हज़रते सय्यिदुना बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنٰی फ़रमाते हैं : एक शख्स ने कहा कि “जब मैं ने अहले अरफ़ात को देखा तो गुमान किया कि अगर मैं इन में न होता तो इन की बख़्शिश कर दी जाती।”

﴿7﴾.....हज़ के बक़िय्या आ'माल व आदाब :

वुकूफ़े अरफ़ा के बा'द (मुज़दलिफ़ा में) रात गुज़ारना, कंकरियां मारना, कुरबानी करना, सर मुन्डवाना और तवाफ़ करना। जब गुरूबे आफ़ताब के बा'द अरफ़ात से वापस आए तो सुकून व वफ़ार के साथ वापसी हो, घोड़ों और ऊंटों को दौड़ाने से बचे जैसे बा'ज़ लोगों की आदत है क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने घोड़े दौड़ाने और ऊंटों को तेज़ चलाने से मन्अ किया और इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से डरो और अच्छी तरह चलो, किसी कमज़ोर को न रेंदो और न किसी मुसलमान को अज़ियत पहुंचाओ।”⁽¹⁾

जब मुज़दलिफ़ा पहुंचे तो गुस्ल करे क्यूंकि मुज़दलिफ़ा हरम से है, लिहाज़ा गुस्ल कर के वहां दाख़िल हो। अगर पैदल दाख़िल हो सके तो येह अफ़ज़ल है और ता'ज़ीमे हरम के ज़ियादा क़रीब है। रास्ते में बा अवाज़े बुलन्द तल्बिय्या कहता जाए।

मुज़दलिफ़ा की दुआ :

जब मुज़दलिफ़ा पहुंचे तो येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذِهِ مُؤَدَّفَةٌ جَمَعَتْ فِيْهَا اَسْنَةٌ مُّخْتَلِفَةٌ نَسْنَاكَ حَوَائِجَ مُّوْتَنِفَةً فَاجْعَلْنِيْ مِنْ دَعَاكَ فَاسْتَجِبْ لَهٗ وَتَوَكَّلْ عَلَيْكَ فَاَكْفِيْتَهُ

①.....کنز العمال، کتاب الحج والعمرة، باب فی واجبات الحج و مندوباته، الحديث: ۱۲۶۱، ج ۵، ص ۸۱، مفہوماً۔

या'नी : ऐ **अव्वाह** عَزَّوَجَلَّ येह मुजदलिफा है, इस में मुख्तलिफ़ ज़बानें बोलने वाले लोग जम्अ हैं, हम तुझ से नए सिरे से हाजात का सुवाल करते हैं, मुझे उन लोगों में से कर दे जिन की दुआओं को तूने क़बूल फ़रमाया और उन्होंने ने तुझ पर तवक्कुल किया तो तू उन्हें काफ़ी हुवा।”

फिर मुजदलिफा में इशा के वक़्त में मग़रिब व इशा की नमाज़ एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ पढ़े, ⁽¹⁾ (अगर मुसाफ़िर हो तो) इशा की नमाज़ क़स्र पढ़े, दोनों के दरमियान कोई नफ़ल न पढ़े, मग़रिब व इशा की सुन्नतें, नवाफ़िल व वित्र दोनों के फ़र्जों के बा'द पढ़े, ⁽²⁾ पहले मग़रिब फिर इशा के नवाफ़िल पढ़े जैसे फ़र्जों में तरतीब काइम रखी थी, सफ़र में भी नवाफ़िल न छोड़े कि नवाफ़िल का छोड़ना ज़ाहिरी नुक़सान है। (मग़रिब व इशा के) सुन्नत व नवाफ़िल की वक़्त में अदाएगी का हुक्म देना भी तक्लीफ़ पहुंचाना है, नीज़ नवाफ़िल व फ़राइज़ के दरमियान जो तरतीब है या'नी नफ़ल फ़र्ज के ताबेअ हैं इसे ख़त्म करना है। जब ताबेअ होने के हुक्म से एक तयम्मुम के साथ नवाफ़िल को फ़राइज़ के साथ अदा किया जा सकता है तो फ़राइज़ के ताबेअ कर के इन्हें जम्अ कर के पढ़ना बदरजए औला जाइज़ है। नीज़ इस से नवाफ़िल का फ़राइज़ से बा'ज़ बातों में जुदा होना रुकावट नहीं बनता मघलन नफ़ल सुवारी पर अदा हो सकते हैं (जब कि फ़राइज़ सुवारी पर अदा नहीं हो सकते) येह इस लिये रुकावट नहीं बनते कि येह फ़र्ज के ताबेअ हैं और हाजात भी पाई जाती है जैसा कि हम ने इस की तरफ़ इशारा किया।

रात मुजदलिफा में ठहरे कि येह भी हज़ के अरकान में से है। जो रात के पहले निस्फ़ हिस्से में वहां से निकल जाए और वहां रात न गुज़ारे तो इस पर दम (या'नी बकरी ज़ब्द करना) लाज़िम है। ⁽³⁾ जिस से हो सके वोह इस रात को इबादत में गुज़ारे कि इस मुबारक रात को इबादत

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : अरफ़ात में जोहर व अस्र के लिये एक अज़ान और दो इक़ामतें हैं और मुजदलिफा में मग़रिब व इशा के लिये एक अज़ान और एक इक़ामत। (बहारे शरीअत, जि.1 स.1133)

②..... अहनाफ़ के नज़दीक : दोनों नमाज़ों के दरमियान में सुन्नत व नवाफ़िल न पढ़े। मग़रिब की सुन्नतें भी बा'दे इशा पढ़े अगर दरमियान में सुन्नतें पढ़ीं या कोई और काम किया तो एक इक़ामत और कही जाए या'नी इशा के लिये। (बहारे शरीअत, जि.1 स.1133)

③..... मुजदलिफा में रात गुज़ारना सुन्नते मुअक्कदा है मगर इस का वुकूफ़ वाजिब है। वुकूफ़े मुजदलिफा का वक़्त सुब्हे सादिक् से ले कर तुलूए आफ़ताब तक है। इस के दरमियान अगर एक लम्हा भी यहां गुज़ार लिया तो वुकूफ़ हो गया। ज़ाहिर है कि जिस ने फ़ज़्र के वक़्त में यहां नमाज़े फ़ज़्र अदा की उस का वुकूफ़ सहीह हो गया। जो सुब्हे सादिक् से पहले ही मुजदलिफा से चला गया उस का वाजिब तर्क हो गया। लिहाज़ा उस पर दम वाजिब है। हां, औरत, बीमार या ज़ईफ़ या कमज़ोर कि जिन्हें भीड़ के सबब ईजा पहुंचने का अन्देशा हो अगर ऐसे लोग मजबूरन चले गए तो कुछ नहीं। (रफ़ीकुल हरमैन, स.152)

में गुज़ारना उम्दा इबादात में से है। जब निस्फ़ रात गुज़र जाए तो जाने की तय्यारी करे, वहां से कंकरियां ले ले क्योंकि वहां नर्म पथ्थर हैं। 70 कंकर ले ले कि इतने ही की ज़रूरत है, ज़रूरत से ज़ियादा लेने में भी कोई हरज नहीं क्योंकि बा'ज अवकात कोई कंकरी गिर जाती है। नीज़ कंकरियां छोटी हों ताकि उंगलियों के पोरों में आ सकें। फिर अन्धेरे में नमाज़े फ़ज़्र पढ़ कर चल पड़े।

मशअरे हराम में येह दुआ पढे :

जब मशअरे हराम तक पहुंच जाए जो मुज़दलिफ़ा का इख़िताम है तो वहां खड़ा हो जाए और सुब्ह रौशन होने तक येह दुआ करता रहे :

اللَّهُمَّ بِحَقِّ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَالْمَبِيتِ الْحَرَامِ وَالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالرُّكْنِ وَالْمَقَامِ أَيْلُغْ رَوْحَ مُحَمَّدٍ مِنَّا التَّجَنُّبَ وَالسَّلَامَ وَأَدْخِلْنَا دَارَ السَّلَامِ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ
या 'नी : ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मशअरे हराम, बैतुल्लाह शरीफ़, हुरमत वाले महीने, रुक्ने यमानी और मक़ामे इब्राहीम का वासिता ! ऐ इज़्ज़त व बुजुर्गी वाले ! हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे मुबारक को हमारी तरफ़ से सलाम पहुंचा और हमें सलामती के घर (जन्नत) में दाख़िल फ़रमा ।”

फिर तुलूआ आफ़ताब से पहले वहां से चल पड़े यहां तक कि “वादिये मुहस्सिर” में पहुंच जाए। इस जगह सुवारी को तेज़ करना मुस्तहब है हत्ता कि वादी से निकल जाए, अगर पैदल हो तो तेज़ तेज़ चले। जब यौमे नहर (या'नी कुरबानी के दिन) की सुब्ह हो तो तकबीर और तल्बिय्या को मिलाए कि कभी तल्बिय्या कहे और कभी तकबीर हत्ता कि मिना पहुंच जाए और जमरात (या'नी कंकरियां मारने) के तीन मक़ामात में से पहले और दूसरे से गुज़र जाए क्योंकि यौमे नहर यहां उस का कोई काम नहीं यहां तक कि जमराए अक़बा के पास पहुंच जाए, क़िब्ला रुख़ होने की सूरत में जमराए अक़बा दाई जानिब रास्ते में पहाड़ के नीचे कुछ ऊंचाई पर है और कंकरियों की जगह में से येह वाज़ेह है। एक नेज़ा सूरज बुलन्द होने के बा'द जमराए अक़बा को कंकरियां मारे।

कंकरियां मारने का तरीक़ा :⁽¹⁾

क़िब्ला रू खड़ा हो, अगर जमरे की तरफ़ मुंह करे तो भी हरज नहीं, हाथ बुलन्द कर के सात कंकरियां मारे और तल्बिय्या को तकबीर में बदल दे। हर कंकरी मारते वक़्त येह दुआ पढें :

① दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 304 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीकुल हरमैन सफ़हा 154 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी رَفَعَهُ اللّٰهُ عَنْهُمْ कंकरियां मारने का तरीक़ा इस तरह तहरीर फ़रमाते हैं : सात कंकरियां अपने उलटे हाथ में रख लें बल्कि दो तीन कंकरियां ज़ाइद ले लें।.....

اللَّهُ أَكْبَرُ عَلَى طَاعَةِ الرَّحْمَنِ وَرَغْمِ الشَّيْطَانِ اللَّهُمَّ تَصَدِّقًا بِكِتَابِكَ وَإِتِّبَاعًا لِسُنَّةِ نَبِيِّكَ

या 'नी : **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है। मैं रहमान عز وجل की इताअत और शैतान को जलीलो रुस्वा करने के लिये कंकरियां मार रहा हूं। ऐ **अल्लाह** عز وجل मैं तेरी किताब की तस्दीक करता और तेरे नबी की सुन्नत की पैरवी करता हूं।"

जब कंकरियां मारना शुरू करे तो तल्बय्या व तक्बीर कहना छोड़ दे। अलबत्ता, कुरबानी के दिन की जोहर से अय्यामे तशरीक के आखिरी दिन की फ़ज्र तक फ़र्ज नमाज़ के बा'द की तक्बीरे (तशरीक) कहना न छोड़े।⁽¹⁾ इस दिन वहां दुआ के लिये न ठहरे बल्कि अपनी कियाम गाह में आ कर दुआ मांगे।

तक्बीरे तशरीक :

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ كَثِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَنَ اللَّهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ صَدَقَ وَعْدُهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ

या 'नी : **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है, **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है, **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है, सब खूबियां उसी के लिये हैं, मैं सुब्हो शाम इस की पाकी बयान करता हूं, **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है, उस का कोई शरीक नहीं, हम उस केलिये दीन को खालिस करते हैं पड़े काफ़िर बुरा माने, **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस ने अपना वा'दा सच्चा किया और अपने बन्दे की मदद की और तन्हा, दुश्मन के लश्करो को भगाया, **अल्लाह** عز وجل के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** عز وجل सब से बड़ा है,"

अगर कुरबानी का जानवर साथ हो तो उसे जब्ह करे, अपने हाथ से जब्ह करना बेहतर है।

.....अब सीधे हाथ की शहादत की उंगली और अंगूठे की चुटकी में ले कर और सीधा हाथ अच्छी तरह उठा कर कि बगल की रंगत ज़ाहिर हो بسم الله الله أكبر कहते हुए एक एक कर के सात कंकरियां इस तरह मारें कि तमाम कंकरियां जमरे तक पहुंचें वरना कम अज़ कम तीन हाथ के फासिले तक गिरें। पहली कंकरी मारते ही लबैक कहना मौकूफ़ कर दें कि अब लबैक कहना सुन्नत न रहा। जब सात पूरी हो जाएं तो वहां न रुके, न सीधे जाएं, न दाएं बाएं। बल्कि फौरन ज़िक्र व दुआ करते हुए पलट आइये।

① अहनाफ़ के नज़दीक : नवीं ज़िल हिज्जा की फ़ज्र से तेरहवीं की अस् तक हर नमाज़े फ़र्ज पंजगाना के बा'द जो जमाअते मुस्तहब के साथ अदा की गई एक बार तक्बीर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है और तीन बार अफ़ज़ल, इसे तक्बीरे तशरीक कहते हैं, वो येह है : اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَلِلَّهِ الْحَمْدُ

(बहारे शरीअत, जि. 1 स. 784)

जब् करने के बा'द की दुआ :

जब् के बा'द येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُمَّ مِنْكَ وَبِكَ وَإِلَيْكَ تَقَبَّلْ مِنِّي كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ خَلِيلِكَ إِبْرَاهِيمَ

या 'नी : **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ येह कुरबानी तुझ से, तेरे साथ और तेरे लिये, इसे मेरी तरफ से कबूल फरमा जिस तरह तूने अपने खलील हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيَّ نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ से कबूल फरमाई ।

सब से अफ़ज़ल ऊंट की कुरबानी है, फिर गाए की, फिर बकरी की । ऊंट और गाए में सात लोगों के शरीक होने से बकरी की कुरबानी अफ़ज़ल है । बकरी से दुम्बे की कुरबानी अफ़ज़ल है ।

बेहतरीन कुरबानी :

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया : “बेहतरीन कुरबानी सींगों वाले मेंढ़े की है ।”⁽¹⁾ सफ़ेद रंग का दुम्बा मटयाले और सियाह दुम्बे से अफ़ज़ल है ।

एक सफ़ेद दुम्बा दो सियाह दुम्बों से अफ़ज़ल है :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फरमाते हैं : “कुरबानी में एक सफ़ेद दुम्बा दो सियाह दुम्बों से अफ़ज़ल है ।” अगर नफ़ली कुरबानी हो तो इस में से कुछ खाए ।⁽²⁾

वोह ऐब कि जिन के सबब कुरबानी जाइज़ नहीं :

लंगड़ा होना, नाक या कान का कटा होना, कान का ऊपर या नीचे से चीरा होना, सींगों का टूटा हुवा होना, पाउं कटे हुए होना, खारिश ज़दा होना,⁽³⁾ कान के अगले या पिछले हिस्से

①..... سنن ابی داود، کتاب الجنائز، باب کراهیة المغالاة فی الکفن، الحدیث: ۳۱۵۶، ج ۳، ص ۲۶۷۔

②..... **अहनाफ़ के नज़दीक** : कुरबानी का गोश्त खुद भी खा सकता है और दूसरे शख्स ग़नी या फ़कीर को दे सकता है खिला सकता है बल्कि उस से कुछ खा लेना कुरबानी करने के लिये मुस्तहब है । कुरबानी अगर मन्नत की है तो इस का गोश्त न खुद खा सकता है न अग़निया को खिला सकता है बल्कि उस को सदका कर देना वाजिब है वोह मन्नत मानने वाला फ़कीर हो या ग़नी दोनों का एक ही हुक्म है कि खुद नहीं खा सकता है न ग़नी को खिला सकता है ।

③..... **अहनाफ़ के नज़दीक** : खारिशी जानवर की कुरबानी जाइज़ है जब कि फ़रबा (मोटा, सिह्हत मन्द) हो और इतना लाग़ कि हड्डी में मज़ न रहा तो कुरबानी जाइज़ नहीं । (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 340)

नोट : मज़ीद तफ़्सील के लिये बहारे शरीअत के मज़कूरा मक़ाम का मुतालाआ कीजिये !

में सुराख होना इतना दुब्ला व कमजोर कि हड्डियों में गुदा न रहे। जिस जानवर में मजकूरा उयूब में से कोई ऐब हो उस की कुरबानी जाइज़ नहीं।

कुरबानी के बा'द सर मुंडाए। सुन्नत येह है कि क़िल्ला रू हो, सर के अगले हिस्से से शुरूअ करे और दाई तरफ़ से गुद्दी पर उभरी हुई हड्डियों तक हल्क़ कराए फिर बाकी सर का हल्क़ कराए।

हल्क़ कराने के बा'द की दुआ :

सर मुन्डवाने के बा'द येह दुआ पढ़े :

اللّٰهُمَّ اَنْتَ لِيْ بِكُلِّ شَعْرَةٍ حَسَنَةٌ وَّ اَمْرٌ عَنِّيْ بِهَا سَيِّئَةٌ وَّ اَرْفَعُ لِيْ بِهَا عِنْدَكَ دَرَجَةً يَا نَبِيَّ : ऐ **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ हर बाल के बदले मेरे लिये नेकी लिख दे और गुनाह मिटा दे और अपने हां हर बाल के बदले एक दर्जा बुलन्द फ़रमा दे।"

औरत (पौरे बराबर) बाल कतरवाए। गन्जे के लिये सर पर उस्तरा फिराना मुस्तहब है।⁽¹⁾ जमरों को कंकरियां मारने के बा'द जब हल्क़ कराए तो एहराम से बाहर हो गया, सिवाए औरतों और शिकार के तमाम ममनूअ काम हलाल हो गए। फिर मक्कए मुकर्रमा की तरफ़ लौटे और हमारे बयान कर्दा तरीक़े के मुताबिक़ तवाफ़ करे, येह तवाफ़ हज़ का रुक्न है इसे तवाफ़े ज़ियारत कहते हैं।

तवाफ़े ज़ियारत का वक़्त :

इस का अव्वल वक़्त कुरबानी की निस्फ़ रात के बा'द से शुरूअ होता है। अफ़ज़ल वक़्त कुरबानी का दिन है। इस के लिये आख़िरी वक़्त मुकर्रर नहीं बल्कि इसे मुअख़्ख़र कर सकता है लेकिन एहराम की कैद बाकी रहेगी, इस तवाफ़ के बा'द ही उस के लिये औरत का कुर्ब हलाल होगा। एहराम से मुकम्मल तौर पर उस वक़्त बाहर होगा जब तवाफ़े ज़ियारत कर ले, बीवी से जिमाअ भी तब ही जाइज़ होगा। अब सिर्फ़ अय्यामे तशरीक़ की कंकरियां मारना और मिना में रात गुज़ारना बाकी है, एहराम से निकलने के बा'द हज़ की इत्तिबाअ में येह वाजिब है। दो रक्अतों के साथ तवाफ़े ज़ियारत का तरीक़ा वोही है जो तवाफ़े कुदूम का है। जब दो रक्अतें पढ़ चुके तो हमारे बयान कर्दा तरीक़े के मुताबिक़ (सफ़ा व मर्वा के दरमियान) सअूय करे बशर्तेकि तवाफ़े कुदूम के बा'द सअूय न की हो और अगर सअूय कर चुका है तो इस का येह रुक्न अदा हो गया अब दोबारा सअूय करना ज़रूरी नहीं।

एहराम से निकलने के अस्बाब :

एहराम से निकलने के तीन अस्बाब हैं :

① अहनाफ़ के नज़दीक : जिस के सर पर बाल न हो उसे उस्तरा फिरवाना वाजिब है।

(बहारे शरीअत, जि.1 स.1142)

(1)....कंकरियां मारना (2)....सर मुन्डवाना (3)....फर्ज त्वाफ करना ।

इन तीन में से दो बातें पाई गईं तो उस के लिये दो में से एक हिल्लत पाई गई और जब्ह के साथ इन तीनों को मुक़द्दम व मुअख़्ख़र करने में कोई हरज नहीं, मगर बेहतर यह है कि पहले कंकरियां मारे, फिर जब्ह करे, फिर सर मुंडाए फिर त्वाफ़ करे। इस दिन इमाम के लिये सुन्नत यह है कि ज़वाल के बा'द खुतबा दे और यह रसूलुल्लाह ﷺ का अलवदाई खुतबा था।

हज के खुतबात :

हज में चार खुतबे हैं : (1).... सातवीं जुल हिज्जा का खुतबा (2)....यौमे अरफ़ा (नवीं जुल हिज्जा) का खुतबा (3)....कुरबानी के दिन का खुतबा (4)....मिना से वापसी के पहले दिन (या'नी बारहवीं जुल हिज्जा) का खुतबा।⁽¹⁾ यह तमाम खुतबे ज़वाल के बा'द होंगे। तमाम में एक खुतबा होगा सिवाए अरफ़ात कि इस में दो खुतबे होंगे जिन के दरमियान बैठना है। जब त्वाफ़ से फ़ारिग़ हो जाए तो रात गुज़ारने और कंकरियां मारने के लिये मिना वापस लौटे और वोह रात मिना में गुज़ारे। इस रात को लैलतुल क़र (या'नी ठहरने की रात) कहा जाता है क्योंकि दूसरे दिन लोग मिना में ठहरते हैं, वहां से जाते नहीं। जब ईद का दूसरा दिन आए और सूरज ढल जाए तो कंकरियां मारने के लिये गुस्ल करे और पहले जमरह जो अरफ़ात से मिला हुवा है उस का क़स्द करे, यह रास्ते की दाईं जानिब है, इसे सात कंकरियां मारे जब इस से आगे निकल जाए तो रास्ते की दाईं जानिब से थोड़ा हट कर क़िब्ला रुख़ खड़ा हो और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की हम्द करे, **اللّٰهُ اَكْبَرُ** और **اللّٰهُ اَكْبَرُ** पढ़े, फिर हुजुरे क़ल्ब और खुशूअ व खुजूअ के साथ दुआ मांगे। दुआ मांगते हुए सूरए बकरह पढ़ने की मिक्दार क़िब्ला रू खड़ा रहे फिर जमरए वुस्ती की तरफ़ जाए और उसे भी पहले जमरह की तरह कंकरियां मारे और यहां भी पहले की तरह खड़ा हो कर दुआ मांगे, फिर जमरए अक़बा की तरफ़ आए और सात दफ़आ कंकरियां मारे, फिर किसी और काम में मशगूल न हो बल्कि अपनी क़ियाम गाह की तरफ़ लौटे और यह रात भी मिना में गुज़ारे, इस रात को **ليلة النفر الاول** (या'नी पहले कूच की रात) कहा जाता है, यहीं सुब्ह करे और अय्यामे तशरीक़ के दूसरे दिन जब ज़ोहर की नमाज़ पढ़ ले तो इस दिन भी **21** कंकरियां मारे जैसे गुज़स्ता दिन मारी थीं, फिर उसे इख़्तियार है कि मिना में रात गुज़ारे या मक्काए मुकर्रमा वापस लौट जाए। अगर गुरूबे आफ़ताब से पहले मिना से निकला तो उस पर कुछ लाज़िम नहीं, अगर रात

① अहनाफ़ के नज़दीक : हज में तीन खुतबे सुन्नत हैं : (1).....इमाम का मक्के में सातवीं को और (2)....अरफ़ात में नवीं को और (3)....मिना में ग्यारहवीं को खुतबा पढ़ना। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 1050)

तक सब्र किया तो निकलना जाइज नहीं बल्कि रात गुज़ारना लाज़िम है यहां तक कि दूसरे कूच के दिन 21 कंकरियां मारे जैसा कि गुज़र चुका है। मिना में रात न गुज़ारने और कंकरियां न मारने की वजह से जानवर ज़ब्ह करना लाज़िम होता है और उसे चाहिये कि इस का गोश्त सदका कर दे (खुद न खाए)। मिना की रातों में ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ के क़स्द से जा सकता है बशर्ते कि रात मिना ही में गुज़रे⁽¹⁾ कि रसूलुल्लाह ﷺ का येही तरीका था। (मिना में मौजूद) मस्जिदे ख़ैफ़ में इमाम के साथ फ़र्ज नमाज़ की हाज़िरी को तर्क न करे क्यूंकि इस की बड़ी फ़ज़ीलत है। जब मिना से वापस आए तो अफ़ज़ल येह है कि “वादिये मुह़स्सब” में ठहरे, वहां अस्स, मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़े और कुछ देर सो जाए कि येह सुन्नत है, इसे एक गुरौहे सहाबा رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने रिवायत किया, अगर ऐसा न किया तब भी उस पर कुछ लाज़िम नहीं।

﴿8﴾.....उमरह और तवाफ़े वदाअ तक के दीगर आदाब :

जो शख़्स हज से पहले या बा'द उमरा का इरादा रखता हो तो वोह गुस्ल कर के मीकात से उमरे का एहराम बांध ले जैसा कि हज के बयान में गुज़र चुका है और उमरे का अफ़ज़ल मीकात जिर्ज़राना है फिर तनईम फिर हुदैबिया। उमरे की निय्यत कर के तल्बिय्या कहे, मस्जिदे आइशा का क़स्द करे और वहां दो रकअतें पढ़े और जो चाहे दुआ मांगे फिर तल्बिय्या कहते हुए मक्कए मकर्रमा आ जाए यहां तक कि मस्जिदे हराम में दाख़िल हो जाए। जब मस्जिदे हराम में दाख़िल हो तो तल्बिय्या कहना छोड़ दे, सात मरतबा तवाफ़ करे और सात मरतबा हमारे बयान कर्दा तरीके के मुताबिक़ सअूय करे, जब फ़ारिग़ हो जाए तो सर मुन्डवाए, यूं उस का उमरह मुकम्मल हो जाएगा।

जो शख़्स मक्कए मुकर्रमा में क़ियाम पज़ीर हो उसे चाहिये कि उमरे और तवाफ़ कषरत से करे, बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत ब कषरत करे, अगर (खुश नसीबी से) बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होने की सआदत मिल जाए तो ता'ज़ीमन नंगे पाउं दाख़िल हो और दो सुतूनों के दरमियान दो रकअत नमाज़ पढ़े कि येह अफ़ज़ल है।

मेरे क़दम तो इस क़ाबिल भी नहीं!

किसी बुजुर्ग से पूछा गया : “क्या आज आप बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल हुए हैं ?”

①..... अहनाफ़ के नज़दीक : येह चीज़ें हज की सुन्नतों में से हैं : नवीं रात मिना में गुज़ारना। आफ़ताब निकलने के बा'द मिना से अरफ़ात को रवाना होना। वुकूफ़े अरफ़ा के लिये गुस्ल करना। अरफ़ात से वापसी में मुज़दलिफ़ा में रात को रहना और आफ़ताब निकलने से पहले यहां से मिना को चले जाना। (बहारे शरीअत, जि.1, स. 1050)

फरमाया : “**अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की कसम ! बैतुल्लाह शरीफ में दाखिल होना तो दूर की बात मैं तो अपने कदमों को इस काबिल भी नहीं समझता कि येह बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करें क्योंकि मैं जानता हूं कि येह कहां चले और किस तरफ चले हैं।”

जमजम पिये और येह दुआ मांगे :

खूब पेट भर कर जमजम पिये, अगर मुमकिन हो तो किसी की मदद लिये बिगैर खुद निकाल कर पिये और येह दुआ पढ़े : “**اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ شِفَاءً مَنْ كُلِّ دَاءٍ وَسَقَمٍ وَارْزُقْنِي الْإِخْلَاصَ وَالْيَقِينَ وَالْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ** يا'नी : ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इसे हर बीमारी और कमजोरी के लिये शिफा बना और मुझे इख्लास, यकीन और दुन्या व आखिरत में आफियत की ने'मत से सरफराज फरमा।”

हदीषे पाक में है कि हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया : “आबे जमजम इसी मकसद के लिये है जिस के लिये इसे पिया जाए।”⁽¹⁾ या'नी जिस बीमारी से शिफा की नियत से पिया जाए उस से शिफा मिल जाती है।

9).....तवाफे वदाअ के आदाब :

हज व उमरह की तकमील के बा'द जब वतन वापसी का इरादा हो तो पहले दीगर काम कर ले, सुवारी पर कजावा कस ले और बैतुल्लाह शरीफ से रुखसती सब से आखिर में हो।

मक्का मुकर्रमा से रुखसती के आदाब :

मक्का शरीफ से रुखसत होने से कबल रमल व इज्तिबाअ के बिगैर बैतुल्लाह शरीफ का सात बार तवाफ करे, जब तवाफ कर ले तो मकामे इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज पढ़े, आबे जम जम पिये फिर मुलतजम की तरफ आए और खूब गिड़ गिड़ा कर यूं दुआ मांगे :

اللَّهُمَّ إِنَّ الْبَيْتَ بَيْتَكَ وَالْعَبْدَ عَبْدَكَ وَإِبْنَ عَبْدِكَ وَإِبْنَ أَمَّتِكَ حَمَلْتَنِي عَلَى مَا سَخَّرْتَ لِي مِنْ خَلْقِكَ حَتَّى سَمَّرْتَنِي فِي بِلَادِكَ وَبَلَّغْتَنِي بِنِعْمَتِكَ حَتَّى أَعْتَمَتَنِي عَلَى قَضَاءِ مَنَاسِكَكَ فَإِنْ كُنْتَ رَضِيتَ عَنِّي فَارْزُدْ عَنِّي رِضًا وَإِلَّا فَمِنْ أَلَانٍ قَبْلَ تَبَاعُدِي عَنْ بَيْتِكَ هَذَا أَوْ أَنْ تُصِرَّافِي إِنْ أَذْنْتَ لِي غَيْرَ مُسْتَبَدِّلٍ بِكَ وَلَا بِبَيْتِكَ وَلَا رَاغِبٍ عَنْكَ وَلَا عَنْ بَيْتِكَ اللَّهُمَّ أَصْجِبْنِي الْعَافِيَةَ فِي بَدَنِي وَالْعَصْمَةَ فِي دِينِي وَأَحْسِنْ مُنْقَلَبِي وَارْزُقْنِي طَاعَتَكَ أَبَدًا مَا أَبْقَيْتَنِي وَاجْمَعْ لِي خَيْرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْ هَذَا آخِرَ عَهْدِي بِبَيْتِكَ الْحَرَامِ وَإِنْ جَعَلْتَهُ آخِرَ عَهْدِي فَعَوِضْنِي عَنْهُ الْجَنَّةَ

1.....سنن ابن ماجه، كتاب المناسك، باب الشرب من زمزم، الحديث: ٣٠٢٢، ج ٣، ص ٣٩٠، دون "ماء"

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह घर तेरा घर है और येह बन्दा तेरा बन्दा, तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा है, अपनी मख्लूक में से मुझे तू ने उस चीज़ पर सुवार किया जिसे तू ने मेरे क़ाबू में किया हत्ता कि मुझे अपने शहरों की सैर कराई, अपनी ने'मत से सरफ़राज़ फ़रमाया, अरकाने हज़ की अदाएगी में मेरी मदद फ़रमाई, अगर तू मुझ से राज़ी है तो मज़ीद रिज़ा अ़ता फ़रमा, अगर राज़ी नहीं तो अपने इस घर से वापसी से पहले पहले मुझ पर एहसान फ़रमा, अगर तू मुझे इजाज़त दे तो मैं तेरी जगह किसी और को इख़्तियार न करूं, तेरे घर के इलावा कोई और घर न चाहूं, तुझ से और तेरे घर से मुंह न फेरूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे बदन में अफ़ियत और दीन में हिफ़ाज़त अ़ता फ़रमा, मेरा आलोटना अच्छा फ़रमा, मुझे हमेशा अपनी इताअत की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा, मेरे लिये दुन्या व आख़िरत की भलाई ज़म्अ़ फ़रमा, बेशक तू हर चाहे पर क़ादिर है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी बैतुल्लाह शरीफ़ की इस हाज़िर को आख़िरी हाज़िरी न बना, अगर तू ने इसे मेरी आख़िरी हाज़िरी बनाया तो मुझे इस के बदले जन्नत अ़ता फ़रमा।”

मुस्तहब येह है कि जब तक बैतुल्लाह शरीफ़ से ओझल न हो इस से निगाह न फेरे।

﴿10﴾..... ज़ियारते मदीना और इस के आदाब :

तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾..... يا'नी जिस ने मेरी वफ़ात के बा'द मेरी ज़ियारत की गोया उस ने मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की।⁽¹⁾

﴿2﴾..... يا'नी जो बा वुजूदे कुदरत मेरी ज़ियारत को न आया उस ने मुझ से जफ़ा की।

﴿3﴾..... يا'नी जो मेरी ज़ियारत के लिये आया और उस का मेरी ज़ियारत के सिवा कोई मक्सद न था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर है कि मैं उस का शफ़ीअ बनूं।⁽²⁾

मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार पर नज़र पड़े तो येह पढ़ो !

जिस का ज़ियारते मदीना का इरादा हो वोह रास्ते में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जिस का ज़ियारते मदीना का इरादा हो वोह रास्ते में हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर क़रत से दुरुदे पाक पढ़े। जब मदीनए मुनव्वरा رَاَدَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَتَعْظِيْمًا के दरो दीवार और

①.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب زيارة قبر النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ١٠٢٤٣، ج ٥، ص ٢٠٣، مفهوماً۔

②.....المعجم الكبير، الحديث: ١٣١٣٩، ج ١٢، ص ٢٢٥، مفهوماً۔

दरख्तों पर नज़र पड़े तो यूँ कहे :

“اللَّهُمَّ هَذَا حَرَمُ رَسُولِكَ فَاجْعَلْهُ لِي وَفَاةً مِنَ النَّارِ وَأَمَانًا مِنَ الْعَذَابِ وَسُوءِ الْحِسَابِ” **या'नी : ऐ अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ यह तेरे रसूले पाक का हरम है, इसे मेरे लिये जहन्नम से बचने, अज़ाब और बुरे हिसाब से अमान का सबब बना ।”

मदीनए मुनव्वरा के आदाब :

मदीना शरीफ में दाखिल होने से पहले बिअरे हुरा (हुरा के मक़ाम पर एक कुंवां है इस के पानी) से गुस्ल करे, खुशबू लगाए, साफ़ कपड़े पहने, अज़िज़ी व इन्किसारी करते, ता'जीम बजा लाते हुए दाखिल हो और यह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ وَعَلَى مِلَّةِ رَسُولِ اللَّهِ رَبِّ ادْخِلْنِي مَدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَاجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا نَصِيرًا

या'नी : अब्बाह عَزَّ وَجَلَّ के नाम से और हुज़ूर नबिये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दीन पर दाखिल होता हूँ ऐ मेरे रब्ब ! मुझे सच्ची तरह दाखिल कर और सच्ची तरह बाहर ले जा और मुझे अपनी तरफ़ से मददगार ग़लबा दे ।”

मस्जिदे नबवी के आदाब :

फिर मस्जिदे नबवी शरीफ़ का क़स्द करे, मस्जिद में दाखिल हो, मिम्बर के पास दो रक्अत नमाज़ अदा करे, मिम्बर के सुतून को अपने दाएं कंधे के मुक़ाबिल रखे, मुंह उस सुतून की तरफ़ करे जिस तरफ़ सन्दूक है, मस्जिद के क़िब्ले में जो दाइरा है वोह आंखों के सामने हो कि मस्जिद की तब्दीली (या'नी अज़ सरे नौ ता'मीर) से पहले प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ के लिये यहीं खड़े होते थे । मस्जिद के उस हिस्से में नमाज़ पढ़ने की कोशिश करे जो तौसीअ से पहले थी ।

रौज़ए अक्दस पर हाज़िरी :

फिर रौज़ए अक्दस के पास हाज़िर हो और सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चेहरए अन्वर की जानिब रुख़ कर के इस तरह खड़ा हो कि क़िब्ले की तरफ़ पीठ हो और रौज़ए मुबारका की दीवार की तरफ़ रुख़ कर के इस सुतून से चार गज़ के फ़ासिले पर खड़ा हो जो रौज़ए अक्दस की दीवार से मुत्तसिल है, क़िन्दील सर पर रहे । रौज़ए अन्वर की दीवार को छूना और बोसा देना अदब के ख़िलाफ़ है बल्कि दूर खड़ा होना एहतिराम के ज़ियादा करीब है । मज़क़ूरा तरीक़े के मुताबिक़ खड़ा हो कर यूँ हदिय्यए सलाम पेश करे ।

पर, आप के पाकीज़ा अस्हाब और आप की पाक बाज़ अज़वाजे मोअमिनीन की माओं पर सलाम हो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारी तरफ़ से आप को इस से अफ़ज़ल जज़ा अता फ़रमाए जो किसी नबी को उस की क़ौम या किसी रसूल को उस की उम्मत की तरफ़ से अता फ़रमाई, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर रहमत नाज़िल फ़रमाए जब भी याद करने वाले आप को याद करें, जब भी ग़फ़लत शिआर आप से ग़ाफ़िल रहे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप पर पहलों और पिछलों में वोह रहमत नाज़िल फ़रमाए जो किसी मख़्लूक पर नाज़िल होने वाली रहमत से ज़ियादा फ़ज़ीलत वाली, ज़ियादा कामिल, ज़ियादा बुलन्द और ज़ियादा पाक हो जैसा कि उस ने आप के ज़रीए हमें गुमराही से बचाया और हमें (दिली) अन्धेपन से बचा कर बसीरत अता फ़रमाई और आप के ज़रीए हमें हिदायत अता फ़रमाई। मैं गवाही देता हूँ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह यक्ता है उस का कोई शरीक नहीं, मैं गवाही देता हूँ कि आप उस के बन्दे, रसूल, अमीन, चुने हुए और उस की मख़्लूक में सब से बेहतर हैं, मैं गवाही देता हूँ कि आप ने उस का पैग़ाम पहुंचा दिया, अमानत अदा कर दी, उम्मत की ख़ैर ख़्वाही की, कुफ़्फ़ार से जिहाद किया, अपनी उम्मत को हिदायत दी, तमाम जिन्दगी इबादत में गुज़ारी, आप पर और आप के अहले बैत पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रहमत, सलाम, बुजुर्गी, क़रामत और अज़मत का नुज़ूल हो।

बारगाहे रिशालत में किसी का सलाम पहुंचाने का तरीक़ा :

अगर किसी ने बारगाहे रिशालत में हदिय्यए सलाम पेश करने की नसीहत की हो तो यूं कहे : “ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ مِنْ قُلَانٍ اَلسَّلَامُ عَلَیْكَ مِنْ قُلَانٍ ” या 'नी (या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फुलां बिन फुलां की तरफ़ से आप पर सलाम हो या फुलाना बिनते फुलां की तरफ़ से आप पर सलाम हो।”

बारगाहे सिद्दीकी व फ़ारूकी में हदिय्यए सलाम :

फिर बारगाहे सिद्दीकी में हदिय्यए सलाम पेश करने के लिये एक गज़ की मिक्दार पीछे हट जाए क्यूंकि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का सरे मुबारक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मुबारक कन्धे के पास है और बारगाहे फ़ारूकी में हदिय्यए सलाम करने के लिये एक गज़ की मिक्दार और पीछे हट जाए क्यूंकि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक रَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का मुबारक सर अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के कन्धे के करीब है। फिर बारी बारी दोनों की बारगाह में यूं सलाम पेश करे :

اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ اَیَّا وَزِیْرُی رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم وَالْمُعَاوِنِیْنَ لَهٗ عَلَی الْقِیَامِ بِالْدِّیْنِ مَا دَامَ حَیًّا وَالْقَائِمِیْنَ فِیْ اَمَّتِهٖ بَعْدَهٗ بِاُمُوْر الدِّیْنِ تَتِمَّعَانِ فِیْ ذٰلِكَ اَثَارَهٗ وَتَعْمَلَانِ بِسُنَّتِهٖ فَجَزَاكُمَا اللّٰهُ خَيْرَ مَا جَزٰی وَزِیْرُی نَبِیِّ عَنْ دِیْنِهٖ

या 'नी : ऐ रसूलुल्लाह ﷺ के वजीरों, सरकार की हयाते मुबारका में दीने मतीन को काइम रखने में इन की मदद करने वालों और विसाले (जाहिरी) के बा'द उम्मत में दीन के उमूर को काइम रखने वालो ! तुम पर सलाम हो, इस मुआमले में तुम ने हुजूर के तरीके पर अमल किया और सुन्नते रसूल की पैरवी की, **अल्लाह** عز وجل तुम्हें इस से बेहतर बदला अता फरमाए जो किसी नबी के दो वजीरों को दीन के मुआमले में दिया ।

हुजूर के वशीले से दुआ :

फिर लौट कर रसूलुल्लाह ﷺ की कब्रे अन्वर और सुतून (जो सय्यिदुना इमाम गज़ाली رحمه الله تعالى के दौर में था उस) के दरमियान सरकार के सरे अक्दस के सामने जानिबे क़िब्ला मुंह कर के खड़ा हो, **अल्लाह** عز وجل की हम्द व बुजुर्गी बयान करे और कषरत से दुरूदे पाक पढ़े और यूँ अर्ज करे : “ऐ **अल्लाह** عز وجل बेशक तू ने इरशाद फरमाया और तेरा कौल बर हक है, (फिर येह आयते मुबारका तिलावत करे :)”

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ جَاءُوكَ
فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ
لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ۝

(प ५, النساء : २४)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब ! तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों और फिर **अल्लाह** से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फरमाए तो ज़रूर **अल्लाह** को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।

फिर अर्ज करे :

اللَّهُمَّ إِنَّا قَدْ سَمِعْنَا قَوْلَكَ وَأَطَعْنَا أَمْرَكَ وَقَصَدْنَا نَبِيَّكَ مُتَشَفِّعِينَ بِهِ إِلَيْكَ فِي ذُنُوبِنَا وَمَا أَثْقَلَ ظُهُورُنَا مِنْ أَوْزَارِنَا تَائِبِينَ مِنْ زُلْمِنَا مُعْتَرِفِينَ بِخَطَايَانَا وَتَقْصِيرِنَا فَتُبَّ اللَّهُمَّ عَلَيْنَا وَشَفِّعْ نَبِيَّكَ هَذَا فِينَا وَارْفَعْنَا بِمَنْزِلَتِهِ عِنْدَكَ وَحَقِّهِ عَلَيْكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِلْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَاغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ اللَّهُمَّ لَا تَجْعَلْهُ آخِرَ الْعَهْدِ مِنْ قَبْرِ نَبِيِّكَ وَمِنْ حَرَمِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّحِمِينَ

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عز وجل बेशक हम ने तेरा फ़रमान सुना, तेरे हुक्म की पैरवी की, अपने गुनाहों के मुआमले में तेरे नबी को शफ़ाअ बनाते हुए इन की बारगाह का क़स्द किया, गुनाहों से हमारी पीठें बोझल हो गई, हम अपनी लगज़िशों से तौबा करते, अपनी ख़ताओं और कोताहियों का ए'तिराफ़ करते हैं, ऐ **अल्लाह** عز وجل हमारी तौबा क़बूल फ़रमा, हमारे हक़ में अपने नबी की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा, तेरी बारगाह में जो इन का मक़ाम व मर्तबा और तुझ पर इन का जो हक़ है इस के तुफ़ैल हमें बुलन्दी अता फ़रमा, ऐ **अल्लाह** عز وجل मुहाजिरीन व अन्सार की मग़फ़िरत फ़रमा, हमारी और हमारे उन भाइयों की भी मग़फ़िरत फ़रमा जो हम से पहले ईमान की हालत में रुख़सत हो चुके हैं, ऐ **अल्लाह** عز وجل अपने नबी के मज़ारे पुर अन्वार और अपने हरम शरीफ़ में हमारी इस हाज़िरी को आखिरी हाज़िरी न बनाना ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ।

रियाजुल जन्नह की फज़ीलत :

फिर रियाज़ में हाज़िर हो कर दो रकअत नमाज़ पढ़े और हस्बे इस्तिताअत क़षरत से दुआ करे कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ का फ़रमाने आलीशान है :
 “مَا يَنْ قَبْرِ قَبْرِي وَمَنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ وَمَنْبَرِي عَلَى حَوْضِي”
 के बागों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है।”⁽¹⁾

मिम्बर के पास भी दुआ करे और मुस्तहब है कि अपना हाथ निचले पाए पर रखे कि हुज़ूर ﷺ भी खुतबे के दौरान अपना हाथ इसी पाए पर रखते थे।⁽²⁾ जुमा'रात के दिन शुहदाए उहुद की क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाना मुस्तहब है, नमाज़े फ़ज़्र मस्जिदे नबवी में अदा कर के ज़ियारत के लिये निकल जाए और जोहर की नमाज़ मस्जिदे नबवी में आ कर अदा करे, हर फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिदे नबवी में बा जमाअत अदा करे।

जन्नतुल बक़ीअ में हाज़िरी :⁽³⁾

हर रोज़ बारगाहे रिसालत में हदिय्यए सलाम पेश कर के जन्नतुल बक़ीअ में हाज़िरी दे

①..... صحيح مسلم، كتاب الحج، باب ما بين القبر والمنبر..... الخ، الحديث: ۱۳۹۰ - ۱۳۹۱، ص ۲۰، “قبري” بدله “بיתי” -

②..... وفاء الوفاء، مساحة المنبر، الجزء الثاني، ج ۱، ص ۲۰۲ -

③..... दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 304 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब रफ़ीकुल हरमैन सफ़हा 200 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार क़ादिर रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ नक्ल फ़रमाते हैं : जन्नतुल बक़ीअ के मदफूनीन की ख़िदमत में बाहर ही खड़े हो कर सलाम अर्ज़ करें और बाहर ही से दुआ मांगे क्यूँकि नजदियों ने जन्नतुल बक़ीअ शरीफ़ नीज़ जन्नतुल मा'ला (मक्काए मुकर्रमा) दोनों मुक़द्दस क़ब्रिस्तानों के मक़बरों और मज़ारों को निहायत ही बे दर्दी और गुस्ताख़ी के साथ शहीद कर दिया है। हज़ारहा सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ और बे शुमार अहले बैते अतहार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ व औलियाए किबार رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام उश्शाके ज़ार رَحِمَهُمُ اللَّهُ के मज़ारात के नुकूश तक मिटा दिये हैं। आप अगर अन्दर तशरीफ़ ले गए तो आप को क्या मा'लूम कि आप का पाउं किसी सहाबी या किसी वली के मज़ार शरीफ़ पर पड़ रहा है बल्कि आ़म मुसलमानों की क़ब्रों पर भी पाउं रखना हराम है। जो रास्ता क़ब्रे मुन्हदिम कर के बनाया जाए उस पर चलना हराम है। बल्कि इमामे अहले सुन्नत, आ'ला हज़रत عَلَيْهِ الرَحْمَةُ फ़रमाते हैं कि अगर किसी रास्ते के बारे में शक़ भी हो कि येह रास्ता क़ब्रों को मिटा कर बनाया गया है तो इस पर भी चलना हराम है। (وَالْوَيْلُ لِلَّذِينَ يَلْعَنُونَ) जन्नतुल बक़ीअ के दरवाज़े पर ही हाज़िर हो कर सलाम अर्ज़ करना ज़रूरी नहीं। अस्ल तरीक़ा तो येह है कि उस सम्त से हाज़िर हों जहां से क़िब्ला को आप की पीठ हो और मदफूनीन के चेहरे आप की तरफ़ हों।

कि मुस्तहब है, वहां अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमान बिन अफ़फ़ान, हज़रते सय्यिदुना हसन बिन अली, हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन अली और हज़रते सय्यिदुना जा'फ़र बिन मुहम्मद की कुबूर की ज़ियारत करे और मस्जिदे फ़ातिमा में नमाज़ पढ़े, नीज़ इब्ने रसूल हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ और हुज़ूर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की फूफी हज़रते सय्यिदुना सफ़ीया (व अज़वाजे मुतहहरात عَنْهُنَّ) के मज़ारात की ज़ियारत करे। येह तमाम मज़ारात जन्नतुल बक़ीअ में हैं। हर हफ़्ते के दिन मस्जिदे कुबा में जाना और वहां नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है।

एक उमरे का षवाब :

मरवी है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने घर से निकले यहां तक कि मस्जिदे कुबा में आए और इस में नमाज़ पढ़े तो उस के लिये एक उमरे का षवाब है।”⁽¹⁾

फिर मस्जिदे कुबा के क़रीब अरीस नामी कुंवें पर आए, इस से वुजू करे, इस का पानी पिये, मन्कूल है कि आकाए दो अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस में अपना लुआबे दहन डाला था।⁽²⁾ फिर मक़ामे ख़न्दक के पास मस्जिदे फ़तह में आए। इसी तरह तमाम मसाजिद और मक़ामाते मुक़द्दसा पर हाज़िरी दे। मन्कूल है कि मदीनए मुनव्वरा شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में मसाजिद और मुक़द्दस मक़ामात 30 हैं जिन के मुतअल्लिक़ शहर के लोग जानते हैं जहां तक हो सके इन (की ज़ियारत) का क़स्द करे। इसी तरह उन कुवों पर भी जाए जिन से हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वुजू व गुस्ल फ़रमाते और इन का पानी पीते थे, येह सात कुंवें हैं, हुसूले बरकत व शिफ़ा की निय्यत से इन पर हाज़िर हो।⁽³⁾

अगर मदीनए पाक की हुरमत की पासदारी करते हुए वहां रहना मुमकिन हो तो इस में बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जो मदीने की सख़्ती और शिद्दत पर सन्न करेगा मैं बरोजे क़ियामत उस का शफ़ीअ होऊंगा।”⁽⁴⁾

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة.....الخ، باب ماجاء فى الصلاة.....الخ، الحديث: ١٢١٢، ج ٢، ص ٤٥، مفهوماً۔

②.....المجموع شرح المذهب، باب صفة الحج، ج ٨، ص ٢٤٦، فيه: يأتى بئراوليس۔

③.....المجموع شرح المذهب، باب صفة الحج، ج ٨، ص ٢٤٦، دون للشفاء وتبركابه۔

④.....صحيح مسلم، كتاب الحج، باب الترغيب فى سكنى المدينة.....الخ، الحديث: ١٣٤٤، ص ٤٥۔

एक रिवायत में है कि “जिस से हो सके मदीने में मरे क्योंकि जो मदीने में मरेगा मैं बरोजे कियामत उस का शफीअ और गवाह होऊंगा।” (1) (2)

मदीनए मुनव्वरा से वापसी के आदाब :

(ज़ा़इर) जब तमाम तर मशगूलियात से फ़ारिग़ हो कर मदीनए मुनव्वरा **زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** से निकलने का इरादा हो तो रौज़ए अन्वर पर हाज़िर हो कर बयान कर्दा तरीके के मुताबिक़ दुआ व ज़ियारत करना मुस्तहब है। नीज़ बारगाहे रिसालत में अल वदाई सलाम पेश करे और **اَللّٰهُمَّ** से दुआ करे कि दोबारा हाज़िरी की तौफीक़ अता फ़रमाए, सफ़र में सलामती की दुआ मांगे, फिर रौज़ए सगीरा में दो रकअत नमाज़ पढ़े येह मस्जिद में मक़सूरा के इज़ाफ़े से पहले हुज़ूर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के खड़े होने की जगह थी। मस्जिद से निकलते वक़्त पहले बायां पाउं निकाले फिर दायां और येह दुआ पढ़े :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَلَا تَجْعَلْ اٰخِرَ الْعَهْدِ بَيْنِيْكَ وَحُطَّ اَوْزَارِيْ بِزِيَارَتِهِ وَاصْبِرْ لِيْ فِيْ سَفَرِيْ السَّلَامَةِ وَيَسِّرْ رُجُوْعِيْ اِلٰى اَهْلِيْ وَوَطْنِيْ سَالِمًا يَارْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

① मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **مِير आतुल मनाजीह, जि. 4** स. 222 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : ज़ाहिर येह है कि येह बिशारत और हिदायत सारे मुसलमानों को है न कि सिर्फ़ मुहाजिरिन को या'नी जिस मुसलमान की निय्यत मदीनए पाक में मरने की हो वोह कोशिश भी वहां ही मरने की करे कि खुदा नसीब करे तो वहां ही क़ियाम करे खुसूसन बुढ़ापे में और बिला ज़रूरत मदीनए पाक से बाहर न जाए कि मौत व दफ़न वहां का ही नसीब हो, हज़रते उमर **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** दुआ करते थे कि मौला मुझे अपने महबूब के शहर में शहादत की मौत दे, आप की दुआ ऐसी क़बूल हुई कि **سُبْحَنَ اللّٰهُ** की नमाज़ मस्जिदे नबवी मेहराबुन्नबी, मुसल्लए नबी और वहां शहादत ! मैं ने बा'ज़ लोगों को देखा कि तीस चालीस साल से मदीनए मुनव्वरा में हैं, हुदूदे मदीना बल्कि शहरे मदीना से भी बाहर नहीं जाते, इसी ख़तरे से कि मौत बाहर न आ जाए हज़रते इमामे मालिक का भी येह ही दस्तूर रहा। यहां शफ़ाअत से मुराद खुसूसी शफ़ाअत है। गुनाह गारों के सारे गुनाह बख़्शवाने की शफ़ाअत और नेकोकारों के बहुत दर्जे बुलन्द करने की शफ़ाअत, वरना हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** अपनी सारी ही उम्मत की शफ़ाअत फ़रमाएंगे। ख़याल रहे कि मदीनए पाक में रहना भी अफ़ज़ल, वहां मरना भी आ'ला और वहां दफ़न होना भी बेहतर। बा'ज़ सहाबा बा'दे मौत मदीना में ला कर दफ़न किये गए। इस से इशारतन मा'लूम होता है कि जो शख्स मदीनए पाक में मरने दफ़न होने की कोशिश करे वोह **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ईमान पर मरेगा, क्यूंकि उस के लिये शफ़ाअते खास का वा'दा है और शफ़ाअत सिर्फ़ मोमिन की हो सकती है।

② سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب فی فضل المدینة، الحدیث: ۳۹۴۳، ج ۵، ص ۴۸۳۔

या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ और आप की आल पर रहमत नाज़िल फ़रमा और और अपने नबी की बारगाह में हमारी इस हाज़िरी को आखिरी हाज़िरी न बनाना, इस ज़ियारत के तुफ़ैल मेरे (गुनाहों वगैरा के) बोझ को उतार दे, सफ़र में मुझे सलामती अता फ़रमा और मुझे अपने वतन व घर वालों के पास खैरो अफ़ियत से पहुंचा, ऐ सब से बढ़ कर रहम फ़रमाने वाले !”

(ज़ाइर से) जिस क़दर हो सके हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ के कुर्बो जवार में रहने वालों पर सदका करे । नीज़ मदीनए मुनव्वरा व मक्कए मुकर्रमा رَآدَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَتَعْظِيمًا के दरमियान आने वाली मसाजिद में हाज़िरी दे और वहां नमाज़ पढ़े, येह 20 मसाजिद हैं ।
सफ़र से वापसी के आदाब :

रसूलुल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سَلَّمَ जब किसी ग़ज़वा या हज़ व उमरह से वापस तशरीफ़ लाते तो ज़मीन की हर बुलन्द जगह पर तीन दफ़आ तक्बीर कहते और येह कलिमात पढ़ते थे :
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ آيُّونَ تَائِبُونَ عَابِدُونَ سَاجِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ
صَدَقَ اللَّهُ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ

या 'नी : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है । हम रुजूअ करने वाले, तौबा करने वाले, इबादत करने वाले, अपने रब्ब को सजदा करने वाले और ता'रीफ़ करने वाले हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपना वा'दा सच्च कर दिखाया, अपने बन्दे की मदद फ़रमाई और तन्हा, (दुश्मन के) लश्करो को भगा दिया ।” (1)

बा'ज़ रिवायात में है कि येह (आयते मुबारका भी) पढ़ते :

كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ ط لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ع (प २०, القصص ८४)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के, उसी का हुक्म है और उस की तरफ़ फिर जाओगे ।

वापसी में इस सुन्नत पर अमल करे । जब अपने शहर के क़रीब पहुंचे तो अपनी सुवारी को ह़रकत दे और येह दुआ पढ़े : “اللَّهُمَّ اجْعَلْ لَنَا بِهَا قَرَارًا وَرِزْقًا حَسَنًا” या 'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस शहर में सुकून और अच्छा रिज़क अता फ़रमा ।” (2)

①.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب مايقول اذا قفل من سفر الحج وغيره، الحديث: ۱۳۴۲، ص ۷۰۱۔

②.....کنز العمال، کتاب الفضائل / فضائل الامکنه، الحديث: ۳۸۱۵۵، ج ۱۴، ص ۶۰۔

किसी को घर भेज कर अपने आने की ख़बर दे ताकि अचानक घर न जाए कि येही सुन्नत है ।^(१)

रात के वक़्त घर वालों के पास न जाए । जब शहर में दाख़िल हो तो पहले मस्जिद में जाए और दो रकअत नमाज़ पढ़े कि सुन्नत है^(२) हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ इसी तरह किया करते थे ।^(३)

जब घर में दाख़िल हो तो येह दुआ पढ़े :

تَوْبًا تَوْبًا لِرَبِّنَا أَوْبًا لَا يَغَادِرُ عَلَيْنَا حَوْبًا

या 'नी : मैं तौबा करता हूं, मैं तौबा करता हूं, अपने रब्ब غَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ करता हूं, वोह हम पर कोई गुनाह बाकी न रखे ।

हज्जे मक़बूल की अ़लामत :

जब घर लौट कर मुतमइन हो जाए तो **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ ने उसे बैतुल्लाह शरीफ़, हरम शरीफ़ और रौज़ए अन्वर की ज़ियारत की सूरत में जो ने'मतें अता फ़रमाई उन्हें न भुलाए । (लौटने के बा'द) अगर दोबारा लहव लअूब, ग़फ़लत और गुनाहों में मशगूल हो जाए तो येह उस ने'मत की ना शुक्री होगी । नीज़ येह हज्जे मक़बूल की अ़लामत नहीं बल्कि हज्जे मक़बूल की अ़लामत येह है कि वोह दुनिया से बे रग़बत और आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाए और ज़ियारते बैतुल्लाह शरीफ़ के बा'द **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ से मुलाक़ात की तय्यारी करे ।



﴿.....मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां.....﴾

हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां हैं : (१)....जब बात करे तो झूट बोले (२).....जब वा'दा करे तो वा'दा ख़िलाफ़ी करे और (३)....जब उस के पास अमानत रखी जाए तो उस में ख़ियानत करे ।”

(صحيح البخارى، الحديث: ٣٣، ج ١، ص ٢٢)

①.....قال العراقي: لم اجد فيه ذكر الارسال، هامش الاحياء، ج ١، ص ٥٩٠۔

②.....صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب حديث توبة كعب بن مالك.....الخ، الحديث: ٢٤٦٩، ص ١٢٨٣۔

③.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب الدعاء اذا سفر، الحديث: ١٠٣٠٢، ج ٥، ص ٢١٠۔

बाब नम्बर 3 : हज की बारीकियां और बादिनी अमल दश कबिले तवज्जोह आदाब :

﴿1﴾.....नफ़्का हलाल कमाई से हो और हाथ दिल को मशगूल करने वाली और खयालात को मुन्तशिर करने वाली तिजारत से खाली हो ताकि मुकम्मल तवज्जोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ हो, दिल मुतमइन और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र और उस की निशानियों की ता'जीम की तरफ़ मुतव्वजेह हो। मरवी है कि “आखिरी ज़माने में लोग हज के लिये चार किस्में हो कर निकलेंगे : बादशाह ऐशो इशरत के लिये, उमरा तिजारत के लिये, फुक़रा मांगने के लिये और कुर्रा दिखावे के लिये।” (1)

मज़कूरा हदीषे पाक में ऐसे दुन्यवी मक़ासिद की तरफ़ इशारा है जो हज के ज़रीए हासिल हो सकते हैं और ऐसी तमाम चीज़ें हज की फ़ज़ीलत के हुसूल में रुकावट बनती और खुसूसी हज की हद से निकाल देती हैं, खुसूसन जब नफ़से हज के बदले तिजारत करे या'नी किसी की तरफ़ से उजरत पर हज करे और उख़रवी अमल के बदले दुन्या तलब करे। मुत्तकी व परहेज़गार अहले दिल ने इसे नापसन्द फ़रमाया सिवाए येह कि इस का मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में ठहरने का इरादा हो और उस के पास इतना माल न हो जो वहां तक पहुंचा दे तो इस इरादे से उजरत लेने में कोई हरज नहीं, दीन के ज़रीए दुन्या हासिल करना मक्सूद न हो बल्कि दुन्या के ज़रीए दीन का हुसूल मक्सूद हो। उस वक़्त उस की निय्यत येह होनी चाहिये कि बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत करेगा और अपने भाई से फ़र्ज साक़ित कर के उस की मदद करेगा।

एक हज के बदले तीन का जन्नत में दाख़िला :

हुज़ूरे अन्वर, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
“**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक हज के बदले तीन शख़्सों को दाख़िले जन्नत फ़रमाएगा : (1)....वसिय्यत करने वाला (2)....इसे नाफ़िज़ करने वाला (3).....अपने भाई की तरफ़ से हज करने वाला।” (2)
मैं येह नहीं कहता कि उजरत लेना जाइज़ नहीं या फ़र्ज हज अदा करने के बा'द किसी

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون في ذكر دعائم الاسلام.....الخ، ج ٢، ص ١٩٣-١٩٢.

کنز العمال، کتاب الحج والعمرة، الباب الثالث، الحديث: ١٢٣٥٨، ج ٥، ص ٥٢، بتغير.

②.....السنن الكبرى للبيهقي، کتاب الحج، باب النيابة في الحج.....الخ، الحديث: ٩٨٥٥، ج ٥، ص ٢٩٣، مفهوماً.

का ऐसा करना हुराम है। बेहतर येह है कि वोह ऐसा न करे और इसे कमाई व तिजारत का ज़रीआ न बनाए क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दीन के बदले दुन्या अता फ़रमा देता है लेकिन दुन्या के बदले दीन नहीं देता।

हज़ पर उजरत लेने वाले की मिषाल :

हदीषे पाक में है कि “जो राहे खुदा में जिहाद करता और उजरत लेता है उस की मिषाल हज़रते मूसा عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मां की सी है जो अपने बेटे को दूध पिलाती और उजरत लेती थी।” (1)

हज़ पर उजरत लेने वाले की मिषाल हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मां की सी हो तो उस के उजरत लेने में कोई हरज नहीं क्यूंकि वोह तो इस लिये लेता है ताकि उस के ज़रीए हज़ व ज़ियारत मुमकिन हो, न कि उजरत लेने के लिये हज़ करता है बल्कि उस की निय्यत येह होती है कि हज़ पर क़ादिर हो सके, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मां उजरत लेती थी ताकि उन के लिये दूध पिलाना आसान हो जाए क्यूंकि लोगों पर इन (या'नी उम्मे मूसा) का हाल पोशीदा था।

﴿2﴾....जिज़्या (टेक्स) दे कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन की मदद न करे और वोह मस्जिदे हुराम से रोकने वाले मक्का के उमरा और वोह आ'राब (या'नी देहाती) हैं जो रास्ते में घात लगा कर बैठते हैं क्यूंकि उन्हें माल देना जुल्म पर उन की मदद करना और अस्बाब मुहय्या कर के उन के लिये आसानी करना है और येह खुद इस काम में मदद करने के क़ाइम मक़ाम है। लिहाज़ा इस से छुटकारे की तदबीर करनी चाहिये अगर इस पर क़ादिर न हो तो बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : अगर नफ़ली हज़ छोड़ दे और रास्ते से वापस आ जाए तो येह ज़ालिमों की मदद करने से अफ़ज़ल है। क्यूंकि येह बिदअत है जो बा'द में ईजाद हुई। अगर इन लुटेरों की बात मान ली जाए तो येह आम रवाज बन जाएगा, नीज़ जिज़्या देने के सबब मुसलमानों की ज़िल्लत व रुस्वाई है, किसी की इस बात का कोई मा'ना नहीं कि मुझ से लिया गया, मैं मजबूर था क्यूंकि अगर वोह घर में बैठा रहता और रास्ते से वापस आ जाता तो उस से कोई चीज़ न ली जाती बल्कि बा'ज़ अवकात खुशहाली के अस्बाब ज़ाहिर होने के सबब उन का मुतालबा बढ़ जाता है, अगर फुकरा की वज़ अ क़त़अ अपनाए होता तो उस से मुतालबा न होता। पस उस ने अपने आप को खुद हालते इज़तिरार में मुब्तला किया।

﴿3﴾....ज़ादे राह में वुस्रत हो, खुश दिली से इफ़रात व तफ़रीत के बिगैर मियाना रवी से खर्च करे। इसराफ़ से मुराद मालदारों की आदत के मुताबिक़ तरह तरह के खाने खाना और मशरूबात पीना है।

इसराफ़ में भलाई नहीं और भलाई में इसराफ़ नहीं :

महज़ ज़ियादा खर्च करने में इसराफ़ नहीं क्योंकि इसराफ़ में कोई भलाई नहीं और भलाई के काम में कोई इसराफ़ नहीं जैसा मन्कूल है कि “राहे हज़ में माल खर्च करना **अल्लाह** की राह में माल खर्च करना है और एक दिरहम के बदले **700** दराहिम हैं।”

सखी होने की एक अलामत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : “सफ़र में खुश दिली से खर्च करना इन्सान के सखी होने की अलामत से है।” नीज़ फ़रमाया करते थे : “अफ़ज़ल हाजी वोह है जिस की नय्यत ख़ालिस, खर्च पाक और यकीन उम्दा हो।”

हदीषे मुबारका में है कि “हज़्जे मक़बूल की जज़ा जन्नत ही है।” अर्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह صلى الله تعالى عليه وآله وسلم हज़ की मक़बूलियत किस चीज़ से है ?” इरशाद फ़रमाया : “अच्छा कलाम करना और खाना खिलाना।”⁽¹⁾

﴿4﴾.....रफ़ष, फ़िस्क़ और जिदाल तर्क कर दे जैसा कि कुरआने पाक में हुक्म है।

रफ़ष : से मुराद हर फुज़ूल, बेहूदा और बे हयाई वाली बात है, औरतों के बारे में इश्क़िया और दिल्लगी की बातें करना, जिमाअ और इस के मुक़द्मात के बारे में गुफ़्तगू करना भी इस में शामिल है क्योंकि येह चीज़ जिमाअ पर उभारती है जो इस वक़्त ममनूअ है और ममनूअ की तरफ़ ले जाने वाला काम भी ममनूअ होता है। **फ़िस्क़ :** इताअते इलाही से ख़ारिज हर काम को शामिल है। **जिदाल :** से मुराद बहुत ज़ियादा झगड़ना है जिस से कीना पैदा हो जाए, उसी वक़्त हिम्मत मुन्तशिर और हुस्ने अख़्लाक़ ख़त्म हो जाए।

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान पौरी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : “जिस ने बेहूदा बात की उस का हज़ फ़ासिद हो गया।” और हुज़ूर صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने खाना खिलाने के साथ अच्छी गुफ़्तगू को भी हज़ की क़बूलियत का सबब क़रार दिया और झगड़ा अच्छी गुफ़्तगू के मनाफ़ी है। लिहाज़ा अपने रफ़ीक़, ऊंट हांकने वाले और दीगर रुफ़का पर ज़ियादा ए'तिराज़ न करे बल्कि

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند أبي هريرة، الحديث: ٩٩٥٥، ج ٣، ص ٣٨٦، باختصار۔

السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الحج، باب فضل الحج والعمرة، الحديث: ١٠٣٩٠، ج ٥، ص ٢٣١، بتقدم وتأخر۔

अपने पहलू को नर्म करे, बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ जाने वालों के लिये अज़िज़ी के बाजू बिछाए, हुस्ने अख़्लाक़ को लाज़िम पकड़े। हुस्ने खुल्क़ सिर्फ़ अज़िय्यत दूर करने का नाम नहीं बल्कि (दूसरों की तरफ़ से पहुंचने वाली) अज़िय्यत बरदाश्त करना भी हुस्ने खुल्क़ है।

सफ़र को सफ़र कहने की वजह :

मन्कूल है कि सफ़र को सफ़र इस लिये कहते हैं कि येह लोगों के अख़्लाक़ को ज़ाहिर करता है, इसी वजह से जब एक शख़्स ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़े आ'जम رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की मौजूदगी में कहा कि मैं फुलां शख़्स को जानता हूं, तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “क्या तुम ने उस के साथ सफ़र किया है जिस से उस के अच्छे अख़्लाक़ का पता चलता ?” अर्ज की : “नहीं।” फ़रमाया : “मेरा ख़याल है कि तुम उसे नहीं जानते।”

एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर :

﴿5﴾.....अगर हो सके तो पैदल हज़ करे कि अफ़ज़ल है। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ब वक्ते मौत अपने बेटों को वसिय्यत करते हुए फ़रमाया : “ऐ मेरे बेटो ! पैदल हज़ करो क्यूंकि पैदल हज़ करने वाले के लिये हर क़दम के बदले हरम की नेकियों में से सात सो नेकियां हैं ?” अर्ज की गई : “हरम की नेकियां क्या हैं ?” फ़रमाया : “एक नेकी लाख नेकियों के बराबर है।”

रास्ते की ब निस्बत, अरकाने हज़ अदा करते हुए मक्का शरीफ़ से मैदाने अरफ़ात और मिना की तरफ़ पैदल चलने की ज़ियादा ताकीद है। इरशादे बारी तआला है :

وَاتَّبِعُوا الْحَبَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ط (پ ۲، البقرة: ۱۹۶)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और हज़ और उमरह अब्बास के लिये पूरा करो।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा और मुअल्लिमुल उम्मह हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद (رَضَوْن اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِينَ) इस की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि “अगर घर से ही एहराम बांध कर चले तो येह हज़ की तक़मील है।”

बा'ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُم اللّٰهُ السّلام फ़रमाते हैं : “सुवार होना अफ़ज़ल है क्यूंकि इस में माल खर्च करना है। नीज़ इस में नफ़्स को ज़ियादा मशक्क़त नहीं उठानी पड़ती, इसे अज़िय्यत में मुब्तला नहीं किया जाता, सलामती ज़ियादा और हज़ को मुकम्मल करना है।”

ततबीक :

हकीकत येह है कि येह पहली बात के मुखालिफ नहीं बल्कि इस में तफ्सील होनी चाहिये और यूँ कहा जाए कि जिस के लिये पैदल चलना आसान हो उस के लिये पैदल चलना अफ़ज़ल है और जो कमज़ोर हो कि पैदल न चल सके, नीज़ पैदल चलने के सबब बद अख़्लाकी और अमल में कोताही पैदा हो तो सुवार होना अफ़ज़ल है जैसा कि मुसाफ़िर के लिये रोज़ा अफ़ज़ल है और मरीज़ के लिये तब अफ़ज़ल है जब कि कमज़ोरी और बद अख़्लाकी पैदा न हो।

जो नफ़्स पर ग़िरां गुज़रता हो वोह अमल अफ़ज़ल है :

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام से उमरे के मुतअल्लिक पूछा गया कि इस में पैदल चले या एक दिरहम के बदले सुवारी किराए पर ले ले तो फ़रमाया : “अगर एक दिरहम खर्च करना ज़ियादा मा'लूम होता हो तो किराए पर जाना पैदल चलने से अफ़ज़ल है और अगर पैदल चलना मुश्किल लगता हो जैसा कि उमरा तो उस के लिये पैदल चलना अफ़ज़ल है।”

गोया उन्होंने ने मुजाहदए नफ़्स का तरीका इख़्तियार किया, इस की भी एक वजह है। लेकिन अफ़ज़ल येह है कि पैदल चले और दिरहम को भलाई के काम में खर्च कर दे और ऐसा करना सुवारी किराए लेने से बेहतर है। अगर उस का नफ़्स पैदल चलने और माल खर्च करने की दोहरी मशक्कत बरदाश्त न करे तो मज़कूरा (बा'ज़ उ-लमा की बयान कर्दा) सूरत ही मुनासिब है।

सुवार होने से मुतअल्लिक आदाब :

﴿6﴾.....बोझ उठाने वाले जानवर पर बिगैर कजावे के सुवार हो। अलबत्ता, जब खौफ़ हो कि किसी उज़्र की वजह से जानवर (की पीठ) पर न ठहर सकेगा तो कजावे में बैठ सकता है। इस की दो वजहें हैं : (1).....सुवारी पर तख़्फ़ीफ़ करना क्यूंकि कजावा उसे तक्लीफ़ देता है (2)....खुशहाल मुतकब्बीर लोगों की वज़अ क़तअ से बचना।

मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जिस सुवारी पर सुवार हो कर हज़ किया उस पर पुराना कजावा और फटा हुवा कपड़ा था जिस की कीमत चार दिरहम थी, (1)

और सुवारी पर ही तवाफ़ फ़रमाया ताकि लोग आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तरीके और आदते मुबारका को देखें।”⁽¹⁾ और इरशाद फ़रमाया : “अपने अरकाने हज़ मुझ से सीख लो।”⁽²⁾

मन्कूल है कि कजावे में सुवार होना हज्जाज बिन युसूफ़ षक़फ़ी का ईजाद कर्दा तरीका है और उस दौर के उलमा उसे नापसन्द करते थे।

हिक्वयत :- पशन्दीदा हाजी :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي के वालिदे मोहतरम हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मसरूक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं हज़ के लिये “कूफ़ा” से “क़ादिसिय्या” की तरफ़ गया, वहां शहर के रुफ़का मिल गए, मैं ने देखा कि तमाम हाजी सुवार हैं उन के पास कजावे और उम्दा क़िस्म के कपड़े थे सिवाए दो के कि वोह सिर्फ़ कजावों पर सुवार थे। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने हाजियों के लिबास और कजावों को देखा तो फ़रमाया : “हाजी कम और सुवार ज़ियादा हैं।” फिर एक मिस्कीन शख़्स को देखा जिस की हालत कमज़ोर थी, उस के नीचे ऊनी कपड़ा था तो फ़रमाया : “येह कितना अच्छा हाजी है।”

हाजी को कैसा होना चाहिये ?

﴿7﴾.....हाजी का लिबास अम व सादा हो, परा गन्दा हाल और बिखरे बालों वाला हो, ज़ियादा ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार न करे और न ही एक दूसरे पर फ़ख़र करने और माल में ज़ियादती चाहने के अस्बाब की तरफ़ माइल हो वरना उस का नाम मुतकब्बिरीन और दुन्यादारों की फ़ेहरिस्त में लिख दिया जाएगा और वोह कमज़ोरों, मिस्कीनों और नेकूकारों के गुरौह से निकल जाएगा हालांकि हज़रते सय्यिदुना फ़ज़ाला बिन उबैद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी रिवायत में है कि रसूले अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने परा गन्दा बालों और नंगे पाउं वाला होने का हुक्म दिया,⁽³⁾ ऐशो इशरत और अय्याश होने से मन्ज़ फ़रमाया।⁽⁴⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب جواز الطواف علی بعر و غیره.....الخ، الحديث: ۱۲۴۳، ص ۶۲۲۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الحج، باب استحباب رمی جمرة العقبة.....الخ، الحديث: ۱۲۹۴، ص ۶۴۵۔

③.....مجمع الزوائد، کتاب اللباس، باب ترک الرفاهية، الحديث: ۸۶۰۹-۸۶۱۰، ج ۵، ص ۲۴۰، مفهوماً۔

④.....سنن ابی داود، کتاب التّرجل، الحديث: ۴۱۶۰، ج ۴، ص ۱۰۲، فيه لفظ ”ينہانعن كثير من الرفاه“۔

एक रिवायत में है कि “हज करने वाला वोह है जो मैला और बू वाला हो।” (1) (2)

اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे घर की ज़ियारत करने वालों को देखो वोह मेरे पास दूर दूर से परा गन्दा बालों और गर्द आलूद चेहरों के साथ आए हैं।” (3)

इरशादे बारी तआला है :

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفَثَهُمْ (پ ۱، الحج: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर अपना मैल कुचेल उतारें।

“تَفَثٌ” का मा’ना बालों का बिखरा होना और चेहरे का गर्द आलूद होना है और “قُضَاءٌ” से मुराद बाल मुन्डाना, मूछें तरशवाना और नाखुनों का काटना है।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने लश्करों के सरदारों को लिखा कि “पुराने और खुरदरे लिबास पहनो।”

मन्कूल है कि हाजियों की जीनत अहले यमन हैं क्योंकि वोह अज़िज़ी और मिस्कीनी इख़्तियार करते और अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام के तौर तरीकों पर चलते हैं। लिहाज़ा हाजी को खुसूसी तौर पर सुख़ लिबास और उमूमी तौर पर लिबासे शोहरत से बचना चाहिये।

मरवी है कि एक बार सहाबए किराम رَضُوا اللَّهَ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ सफ़र में थे, एक मक़ाम पर पड़ाव डाला जब ऊंट चरने लगे तो आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने पालानों पर सुख़ कपड़े देख कर इरशाद फ़रमाया : “मैं देख रहा हूँ कि येह सुख़ रंग तुम पर ग़ालिब आने लगा है।” सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ उसी वक़्त उठे और उन की पीठों से वोह कपड़े उतार लिये यहां तक कि बा’ज ऊंट बिदकने लगे। (4)

① मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن مिरआतुल मनाज़ीह, जि. 4 स. 96 पर इस हदीषे पाक के तहत फ़रमाते हैं : सुवाल येह था कि कामिल हाजी कौन है ? फ़रमाया : जिस पर दो अ़लामतें हों। परागन्दगी बाल सर मैला, क्योंकि ब हालते एहराम बाल टूटने के अन्दशे से सर कम धोते हैं और बू वाला क्योंकि ब हालते एहराम खुशबू लगाना मन्अ है, और बसा अवक़ात पसीना और लोगों के अज़दहाम से कुछ बू सी महसूस होने लगती है : खुलासा येह है कि हाजी ब हालते हज दुन्यावी, तक्ल्लुफ़त से एक दम कनारा क़श हो जाता है।

② سنن ابن ماجه، كتاب المناسك، باب ما يوجب الحج، الحديث: ۲۸۹۶، ج ۳، ص ۲۱۲-

③ شعب الايمان للبيهقي، باب في المناسك / فضل الوقوف بعرفات، الحديث: ۴۰۶۷، ج ۳، ص ۶۰-

④ سنن ابی داود، كتاب اللباس، باب في الحمرة، الحديث: ۴۰۷۰، ج ۴، ص ۷۷، مفهوماً-

सुवारी के मुतअल्लिक़ आदाब :

﴿8﴾.....सुवारी के साथ नर्म बरताव करे, उस पर ताक़त से ज़ियादा बोझ न लादे, कजावा भी उस की ताक़त से बाहर है, सुवारी पर सोना उस के लिये अज़िय्यत का बाइष और उस पर बोझ बनता है। अहले तक़्वा सुवारियों पर नहीं सोते थे सिर्फ़ बैठे बैठे ऊंघते थे और उस पर ज़ियादा देर बैठते भी नहीं थे।

हदीषे मुबारका में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :
“अपने जानवरों की पीठों को कुरसियां न बनाओ।” (1)

सुब्हो शाम सुवारी के जानवर से उतरना मुस्तहब है कि इस से वोह राहत पाएगा। (2)
नीज़ येह सुन्नते मुबारका है। इस बारे में अस्लाफ़ के अक़वाल मिलते हैं। बा'ज अस्लाफ़े किराम رحمهمुल्लेसलाम इस शर्त पर जानवर किराए पर लेते थे कि जानवर से उतरेंगे नहीं और पूरी उजरत देंगे फिर उतर जाते थे ताकि यूं वोह जानवर से भलाई करने वाले हो जाएं। पस येह अमल उन की नेकी शुमार होता और (बरोज़े क़ियामत) उन के मीज़ान में रखा जाएगा किराए पर देने वाले के मीज़ान में नहीं रखा जाएगा। जिस ने किसी चोपाए को अज़िय्यत दी और उस की ताक़त से ज़ियादा बोझ लादा तो क़ियामत के दिन उस से मुतालबा किया जाएगा। हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رضي الله تعالى عنه ने ब वक्ते मौत अपने ऊंट से फ़रमाया : “ऐ ऊंट ! अपने रब्ब की बारगाह में मुझ से न झगड़ना, मैंने तुझ पर ताक़त से ज़ियादा बोझ नहीं लादा।”

खुलासए कलाम :

हर गर्म जिगर (या'नी जानदार चीज़) में अज़्र है। लिहाज़ा सुवारी और किराए पर देने वाले के हक़ की रिआयत करनी चाहिये और घड़ी भर इस से उतरने में सुवारी को राहत देना और इस के मालिक के दिल को खुश करना है।

तक़्वा हो तो ऐशा :

एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رحمه الله تعالى عليه से कहा : “मेरा येह ख़त फुलां तक पहुंचा दें।” आप ने फ़रमाया : “(ठहरो !) मैं सुवारी के मालिक से इजाज़त ले लूं क्योंकि मैंने येह जानवर किराए पर लिया है।” ग़ौर कीजिये ! उन्होंने ने ख़त उठाने के मुआमले में भी तक़्वा इख़्तियार किया हालांकि इस का कोई वज़न नहीं होता। तक़्वा में येह

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند المكيين، حديث معاذ بن انس الجهني، الحديث: ١٥٦٥٠، ج ٥، ص ٣١٥، مفهوماً۔

②.....مجمع الزوائد، كتاب الحج، باب المشي عن الرواحل، الحديث: ٥٣١٣، ج ٣، ص ٢٩٢۔

एहतितात का तरीका है क्यूंकि अगर थोड़े काम का दरवाजा खुल जाए तो येह आहिस्ता आहिस्ता ज़ियादा की तरफ़ ले जाता है ।

﴿9﴾.....जानवर का खून बहा कर (या'नी कुरबानी कर के) कुर्बे इलाही हासिल करे अगर्चे वाजिब न हो और कोशिश करे कि जानवर मोटा ताजा और उम्दा हो । अगर नफ़ली कुरबानी हो तो उस में से खाए और वाजिब हो तो न खाए । (इन्दश्शवाफ़ेअ)
इरशादे बारी तअ़ाला है :

ذَلِكَ وَمَنْ يُعِظْ شَعِيرًا اللَّهُ فَنَهَا مِنْ
تَقْوَى الْقُلُوبِ ﴿٣٢﴾ (پ ۱، الحج: ۳۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बात येह है और जो
अल्लाह के निशानों की ता'ज़ीम करे तो येह
दिलों की परहेज़गारी से है ।

इस फ़रमाने बारी तअ़ाला की तफ़सीर में कहा गया है कि यहां ता'ज़ीम से मुराद उम्दा और मोटे जानवर की कुरबानी देना है । मीक़ात से कुरबानी का जानवर ले जाना अफ़ज़ल है जब कि मशक्क़त और दुश्वारी न हो, ख़रीदते वक़्त कीमत न घटाए, कि बुजुर्ग़ाने दीन رَحِمَهُمُ اللَّهُ الْمُسِيئِينَ तीन चीज़ों में कीमत ज़ियादा देते और कम कराने को नापसन्द करते थे :

(1).....हदी⁽¹⁾ (2).....कुरबानी का जानवर और (3).....गुलाम ।

क्यूंकि इन में ज़ियादा कीमत वाला मालिक के नज़दीक ज़ियादा उम्दा होता है ।

सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म और 300 दीनार :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कुरबानी के लिये एक बख़्ती ऊंट लाए, आप से 300 दीनार में त़लब किया गया, आप ने रसूले अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से पूछा कि येह बेच कर दूसरा ऊंट ख़रीद लूं तो आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मन्अ करते हुए इरशाद फ़रमाया : “इसे ही कुरबान करो ।”⁽²⁾

इस लिये कि थोड़ी आ'ला चीज़ ज़ियादा अदना चीज़ से बेहतर है और तीन सो दीनार के तीस जानवर आ सकते थे, इन में गोश्त भी ज़ियादा होता लेकिन मक्सूद गोश्त नहीं बल्कि मक्सूद तो नफ़्स को बुख़ल से पाक करना और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये ता'ज़ीम व हुस्ने ख़ूबी से मुज़य्यन करना है । अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

① हदी : उस जानवर को कहते हैं जो कुरबानी के लिये हरम को ले जाया जाए । (बहारे शरीअत, जि.1 स. 1213)

② سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب تبدیل الهدی، الحديث: ۴۵۶، ج ۲، ص ۲۰۷، مفهوماً۔

لَنْ يَسَالَ اللَّهُ لُحُومُهَا وَلَا دِمَاؤها وَلَكِنْ
يَسْأَلُهُ التَّقْوَى مِنْكُمْ ط (پ ۱، الحج: ۳۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** को हरगिज़ न उन के गोश्त पहुंचते हैं न उन के खून हां तुम्हारी परहेज़गारी उस तक बारयाब होती है ।

और तक्वा तब हासिल होता है जब कीमत में उम्दगी की रिआयत की जाए चाहे ता'दाद कम हो या ज़ियादा ।

हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अर्ज़ की गई : “हज़ की नेकी क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : **الْعَمَّ وَالْعَمَّ**

عَمَّ से मुराद बुलन्द आवाज़ से तल्बिया कहना और عَمَّ से मुराद जानवर की कुरबानी करना है ।⁽¹⁾

बक़रह ईद के दिन सब से अफ़ज़ल नेकी :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका तय्यिबा ताहिरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने इरशाद फ़रमाया : “इन्सान बक़रह ईद के दिन कोई ऐसी नेकी नहीं करता जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को खून बहाने से ज़ियादा प्यारी हो, येह कुरबानी क़ियामत में अपने सींगों और खुरों के साथ आएगी और कुरबानी का खून ज़मीन पर गिरने से पहले **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के हां मक़बूल हो जाता है, लिहाज़ा खुश दिली से कुरबानी करो ।”⁽²⁾

हदीषे पाक में है कि “तुम्हारे लिये कुरबानी के जानवर के ऊन के हर बाल के इवज़ नेकी है और खून के हर क़तरे के बदले एक नेकी है, येह नेकियां मीज़ान में रखी जाएंगी, पस तुम्हारे लिये खुश ख़बरी है ।”⁽³⁾

एक रिवायत में है कि “अपनी कुरबानी के जानवरों को मोटा ताज़ा करो क्यूंकि येह बरोजे क़ियामत तुम्हारी सुवारियां होंगी ।”⁽⁴⁾

﴿10﴾.....राहे हज़ में ज़ादे राह या कुरबानी वगैरा में जो माल खर्च करे खुश दिली से करे, नीज़ माल या बदन में किसी क़िस्म का नुक़सान हो या कोई मुसीबत पहुंचे तो उसे भी खुश दिली से क़बूल करे (और सब्र करे) क्यूंकि येह हज़ क़बूल होने की दलील है ।

①.....مسند البزار، مسند ابی بکر الصديق رضى الله عنه، الحديث: ۷۲، ج ۱، ص ۱۴۴۔

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الاضاحی، باب ثواب الاضحية، الحديث: ۳۱۲۶، ج ۳، ص ۵۳۱۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث والثلاثون فی ذکر دعائم الاسلام.....الخ، ج ۲، ص ۱۹۶-۱۹۷۔

④.....تلخیص الحبير، كتاب الضحايا، الحديث: ۱۹۵۳، ج ۴، ص ۳۲۱، مفهوماً۔

सफ़रे हज़ में मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत :

सफ़रे हज़ में मुसीबत पर सब्र करना राहे खुदा में खर्च (या'नी सदका) करने के बराबर है कि एक दिरहम के बदले **700** दिरहम सदका करने का षवाब मिलता है। नीज़ येह जिहाद में तकलीफ़ पहुंचने की मिष्ल है। लिहाज़ा हाजी जो भी तकलीफ़ पाए या नुक़सान उठाए (सब्र करने पर) उसे षवाब मिलेगा। **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां कोई चीज़ जाएअ नहीं होती।

क़बूलिय्यते हज़ की एक अ़लामत :

मन्कूल है कि क़बूलिय्यते हज़ की एक अ़लामत येह है कि वोह जिन नाफ़रमानियों में मुब्तला था उन्हें छोड़ दे और अपने बुरे दोस्तों को छोड़ कर नेकों की सोहबत इख़्तियार करे, लहव व लअब और ग़फ़लत की मजालिस को छोड़ कर ज़िक्रो फ़िक्र और बेदारी की महाफ़िल इख़्तियार करे।

बातिनी आ'माल और इख़लास

बातिनी आ'माल, खुलूसे निय्यत, मक्वामाते मुक़द्दशा से कुछ हासिल करने, इन में ग़ौरो फ़िक्र करने और इब्तिदाए हज़ से एख़ितताम तक के असरार व मझानी को याद करने का बयान

जान लीजिये ! हज़ के मुतअल्लिक चन्द उमूर को समझना ज़रूरी है। सब से पहले इस बात को समझना कि दीन में हज़ का क्या मक़ाम है, फिर इस का शौक रखना, इस का अज़म करना, इस से रोकने वाली चीज़ों को ख़त्म करना, एहराम के कपड़े ख़रीदना, जादे राह ख़रीदना, किराए पर सुवारी लेना, हज़ के लिये निकलना, जंगलों का सफ़र तै करना, मीकात से तल्बिय्या के साथ एहराम बांधना, मक्कए मुकर्रमा **رَادَهَا اللّٰهُ شَرْفًا وَتَعْظِيمًا** में दाख़िल होना फिर बयान कर्दा तरीके के मुताबिक़ अफ़आले हज़ को मुकम्मल करना। इन उमूर में से हर एक में नसीहत मानने वाले के लिये नसीहत, इब्रत हासिल करने वाले के लिये इब्रत, मुरीदे सादिक़ के लिये तम्बीह और हर ज़हीन के लिये मा'रिफ़त व इशारा है। हम इन की कुन्जियों की तरफ़ इशारा करते हैं ताकि इन का दरवाज़ा खुल जाए और तुम इन के अस्बाब जान लो और हर हाजी के लिये इन के वोह असरार व रुमूज़ खुल जाएं जिन्हें उन की क़ल्बी सफ़ाई, बातिनी त़हारत और समझ बूझ की रसाई चाहती है।

हज का महम :

जान लीजिये कि बारगाहे इलाही तक रसाई का इस के सिवा कोई रास्ता नहीं कि शहवात से बचा जाए, लज्जात से कनारा कशी इख्तियार की जाए, ज़रूरतों पर इक्तिफा किया जाए और तमाम हरकात व सकनात में इख्लास अपनाया जाए, इसी वजह से साबिका उम्मतों के राहब मख्लूक से कनारा कशी इख्तियार कर के पहाड़ों की चोटियों पर चले गए और मख्लूक से वहशत को तरजीह दी ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ उनसियत हासिल करें। पस इन्होंने ने रिज़ाए इलाही की खातिर लज्जात को तर्क कर दिया और आखिरत में रग़बत रखते हुए मुजाहदात को खुद पर लाज़िम कर लिया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने पाक में इन की ता'रीफ़ करते हुए फ़रमाता है :

ذٰلِكَ بِاَنْ مِنْهُمْ قَسِيْسَيْنِ وُرُهْبَانًا
وَاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾ (المائدة: ८२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह इस लिये कि इन में अ़ालिम और दुरवेश हैं और येह गुरुर नहीं करते।

सरकार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअषत का महसद :

जब येह चीज़ मिट गई और लोग ख़्वाहिशात के पीछे पड़ गए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये तन्हाई इख्तियार करने को छोड़ दिया और इस में सुस्ती करने लगे तो **अल्लाह** صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा को मबरूफ़ फ़रमाया ताकि आप आखिरत के रास्ते को ज़िन्दा करें और इस पर चलने में पहले रसूलों की सुन्नत की तजदीद फ़रमाए। जब मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के लोगों ने हुज़ूर नबिय्ये करीम से दीन में रुहबानिय्यत (या'नी गोशा नशीनी) और सियाहत के मुतअल्लिक पूछा तो इरशाद फ़रमाया : **“अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमें इस के बदले जिहाद और हर बुलन्द मक़ाम पर तक्बीर कहने का हुक्म दिया।”^(१) यहां जिहाद से मुराद हज है और सय्याहों के मुतअल्लिक पूछा गया तो फ़रमाया : **“वोह रोज़ेदार हैं।”**^(२)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस उम्मत पर इन्आम फ़रमाया कि हज को इन के लिये रुहबानिय्यत क़रार दिया, बैतुल्लाह शरीफ़ को अपनी तरफ़ मन्सूब कर के इसे इज़्ज़त अता फ़रमाई और इसे अपने बन्दों के इरादों का मक़ाम बनाया, इस की शान व अज़मत के पेशे नज़र इस के इर्द गिर्द

①..... سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب فی النهی عن السیاحة، الحدیث: ۲۳۸۶، ج ۳، ص ۹، باختصار۔

سنن ابن ماجه، کتاب الجهاد، باب فضل الحرس والتکبیر فی سبیل اللّٰه، الحدیث: ۲۷۷۱، ج ۳، ص ۳۲۲، باختصار۔

②..... السنن الکبریٰ للبیہقی، کتاب الصیام، باب فی فضل شهر رمضان..... الخ، الحدیث: ۸۵۱۴، ج ۴، ص ۵۰۳۔

को हरम करार दिया, मैदाने अरफ़ात को हरम के मैदान की तरह कर दिया, मक्कए मुकर्रमा के शिकार और दरख्तों की हुरमत बयान कर के इस की हुरमत को मजीद पुख्ता और बादशाहों के दरबार की तरह करार दिया, इस की तरफ़ दूर दराज़ से परागन्दा बालों और गर्द आलूद चेहरों वाले ज़ाइरीन बैतुल्लाह शरीफ़ के रब्ब के लिये अज़िज़ी करते और उस की जलालत व इज़्ज़त के सामने खुशूअ व खुजूअ अपनाते हुए हाज़िर होते और इस बात का ए'तिराफ़ करते हैं कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस से पाक है कि कोई घर या शहर इस का इहाता करे ताकि इन की गुलामी और बन्दगी मजीद बढ़े, इन की इताअत व फ़रमां बरदारी की तकमील हो ।

आ'माले हज और दीगर इबादात में फ़र्क़ :

हज में उन आ'माल की बजा आवरी का हुक्म है जिन से लोग मानूस नहीं और न ही अक्ल उन के बातिनी मा'ना तक रसाई पाती है जैसे रमिये जिमर और सफ़ा व मर्वा की सअूय । इस जैसे आ'माल से गुलामी और बन्दगी का कमाल ज़ाहिर होता है क्यूंकि ज़कात में नमी है, इस की हिकमत समझ आती और अक्ल इस की तरफ़ माइल होती है । रोज़ा उस ख़्वाहिश को तोड़ता है जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के दुश्मन शैतान का आला है और मसरूफ़िय्यात से रुक कर इबादत के लिये फ़ारिग़ होना है । नमाज़ में रुकूअ व सुजूद ऐसे अफ़आल हैं जिन की अदाएगी के तरीक़े में ही **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के लिये अज़िज़ी पाई जाती है । और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ता'जीम से लोगों को उन्स मिलता है लेकिन बार बार सफ़ा व मर्वा के दरमियान दौड़ने, जमरात को कंकरियां मारने और इस जैसे दीगर अफ़आले हज में नुफूस का कोई हिस्सा नहीं, न इन से तबीअत को उन्स मिलता है और न ही अक्ल की इन के बातिनी मआनी तक रसाई होती है । लिहाज़ा इन की बजा आवरी का बाइष महज़ हुक्मे इलाही है, हुक्म की बजा आवरी इस ए'तिबार से है कि उस के हुक्म पर अमल करना वाजिब है, अक्ल को इस में तसरूफ़ से रोकना और नफ़्स व तबीअत को इन के महल्ले उन्स से फेरना है क्यूंकि हर वोह चीज़ जिस के मआनी तक अक्ल की रसाई हो तबीअत उस की तरफ़ माइल हो जाती है तो येह मैलान हुक्म मानने में मुआविन षाबित होता और इस काम का बाइष बनता है, इस से गुलामी और फ़रमां बरदारी का कमाल ज़ाहिर नहीं होता इसी लिये हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने हज के मुतअल्लिक़ खुसूसी तौर पर इरशाद फरमाया : “मैं हज के लिये हाज़िर हूं जो ख़ालिस बन्दगी का हक़ है ।”^(१) जब कि नमाज़ वगैरा के मुतअल्लिक़ येह बात इरशाद नहीं फ़रमाई ।

हिक्मते इलाही का तकाज़ा :

हिक्मते इलाही का तकाज़ा है कि मख्लूक की नजात उन आ'माल से मरबूत हो जो तबीअतों की ख्वाहिश के मुख़ालिफ़ हों और मख्लूक की लगाम शरीअत के हाथ में हो और वोह इन्हें तस्लीम करने और बन्दगी के तरीक़े पर बजा लाएं। क्यूंकि जिन आ'माल के बातिनी मअानी समझ नहीं आते वोह तज़कियए नफ़्स, तबीअत के तकाज़े और आदात को बन्दगी की तरफ़ फेरने के सिलसिले में ज़ियादा बलीग़ होते हैं (इस लिये कि इन में ख़ालिस बन्दगी पाई जाती है)। येह बात समझ जाओ तो तुम जान लोगे कि इन अज़ीब अफ़आल में नुफ़ूस का तअज़्जुब करना इस वजह से है कि वोह इबादात के असरार से बे ख़बर हैं। हज़ की हकीक़त को समझने के लिये इतनी वज़ाहत काफ़ी है।

हज़ का शौक :

इस का शौक तब पैदा होता है जब येह बात समझ आ जाए कि बैतुल्लाह शरीफ़ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का घर है, येह हाज़िरी बादशाहों के दरबार में हाज़िरी की मिष्ल है, इस का क़स्द करने वाला **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का क़स्द करने वाला और उस की ज़ियारत करने वाला है। बेशक जिस ने दुन्या में बैतुल्लाह शरीफ़ का क़स्द किया वोह इस का मुस्तह़िक़ है कि उस की ज़ियारत जाएअ न हो, उसे मुक़ररा मुदत में ज़ियारत का मक़सूद अता कर दिया जाए और वोह आख़िरत में दीदारे इलाही से मुशररफ़ होना है क्यूंकि दुन्या में फ़ना होने वाली और नाक़िस आंख में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के वजहे करीम को क़बूल करने की ताब नहीं, न ही इसे बरदाश्त कर सकती और अपनी कमज़ोरी के बाइष इसे बतौर सुर्मा भी इस्ति'माल नहीं कर सकती है, इस के बर अक्स आख़िरत में इसे बाक़ी रहने पर मदद मिलेगी और तग़य्युर व फ़ना के अस्बाब से पाक हो जाएगी तो दीदारे इलाही के लिये तय्यार हो जाएगी लेकिन वोह बैतुल्लाह शरीफ़ का क़स्द करने और उस का दीदार करने के सबब यकीनी तौर पर वा'दए इलाही के मुताबिक़ बैतुल्लाह के रब्ब के दीदार का मुस्तह़िक़ हो जाएगा। मुहिब्ब हर उस चीज़ का मुश्ताक़ होता है जिसे उस के महबूब से निस्बत होती है। जब बैतुल्लाह शरीफ़ को रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** से निस्बत है तो महज़ इस निस्बत की वजह से उस का मुश्ताक़ होना चाहिये चे जाइका इस पर वोह अज़ीम षवाब मिले या न मिले जिस का वा'दा किया गया है।

हज़ का अज़म :

अज़िमे मक्का व मदीना बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत की तरफ़ मुतवज्जेह होते हुए अपने अहलो इयाल, वतन और ख्वाहिश़ात व लज़्ज़ात को छोड़ने का अज़म करता है तो उस के दिल में बैतुल्लाह शरीफ़ और उस के रब्ब की ता'ज़ीम होनी चाहिये और उसे मा'लूम होना चाहिये कि उस ने रफ़ीउश्शान काम का इरादा किया है, जिस का मुअामला मुश्किल है और जो

बड़े काम का इरादा करता है उसे बड़े ख़तरात का सामना करना पड़ता है, लिहाज़ा उस का अज़्म ख़ालिस रिज़ाए इलाही के लिये हो जिस में दिखावे और शोहरत का शाइबा भी न हो, उसे यकीन होना चाहिये कि उस की निय्यत और अमल में से वोही क़बूल होगा जिस में इख़्लास होगा। येह बहुत बड़ी बुराई है कि कोई बादशाह के घर और उस के हरम का इरादा करे लेकिन मक़सूद कुछ और हो। पस उस का इरादा सहीह होना चाहिये और येह तब सहीह होगा जब इख़्लास होगा और इख़्लास तब होगा जब दिखावे व शोहरत वग़ैरा से मुकम्मल इजतिनाब करेगा। लिहाज़ा उम्दा चीज़ के बदले हकीर चीज़ लेने से बचना चाहिये।

तमाम तर ख़यालात से दिल को पाक करना :

इस का मा'ना येह है कि जुल्मन लिया हुआ माल वापस करना और तमाम गुनाहों से ख़ालिसतन **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये तौबा करना हर ज़ियादती एक अलाका है और हर अलाका कर्ज ख़्वाह की तरह है जो उस के गिरेबान को पकड़े हुए कह रहा है : “तू किस तरफ़ मुतवज्जेह है ? क्या तू बादशाहों के बादशाह के घर का इरादा रखता हालांकि अपने घर में तू उस के हुक्म को जाएअ कर रहा है, उसे हकीर जान रहा और उस की ता'मील नहीं कर रहा या क्या तुझे हया नहीं आती कि उस की बारगाह में नाफ़रमान बन्दे की तरह पेश हो और वोह तुझे ठुकरा दे, क़बूल न करे ? अगर तेरी ख़्वाहिश है कि तेरा येह ज़ियारत करना क़बूल हो तो उस के अहकाम पर अमल कर, जुल्मन लिया हुआ माल लौटा दे, पहले उस की बारगाह में तमाम गुनाहों से सच्ची तौबा कर, अपने दिल को किसी और जानिब मुतवज्जेह होने से रोक ले ताकि पूरी तवज्जोह के साथ उस की तरफ़ मुतवज्जेह हो जैसे ज़ाहिरी चेहरे से उस के घर की तरफ़ मुतवज्जेह होता है। अगर तू ने ऐसा न किया तो दुन्या में अपने इस सफ़र में तुझे थकावट व बदबख़्ती के सिवा कुछ हासिल न होगा और आख़िरत में तुझे धुतकार कर लौटा दिया जाएगा। अपने वतन के साथ तअल्लुकात को इस तरह दिल से निकाल दे जिस तरह कोई शख्स वतन को छोड़ देता और दिल में खयाल करता है कि दोबारा उस की तरफ़ लौट कर नहीं आएगा। अपने अहलो इयाल के लिये वसिय्यत लिखे क्यूंकि मुसाफ़िर और उस का माल ख़तरे में होते हैं, सिवाए उस के जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ महफूज रखे। जब सफ़रे हज के लिये जुदा हो रहा हो तो सफ़रे आख़िरत के लिये सब से जुदा होने को याद करे क्यूंकि वोह भी क़रीब और सामने है। सफ़रे हज में जो कुछ पेश आए उसे सफ़रे आख़िरत की आसानी का ज़रीआ समझे क्यूंकि वोह मुस्तक़िल ठिकाना है और उसी की तरफ़ लौटना है। लिहाज़ा इस सफ़र की तय्यारी के वक़्त उस सफ़र से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिये।”

जादे राह :

जादे राह हलाल जगह से हासिल करे, जब महसूस करे कि नफ़्स उस की कषरत का हरीस है और चाहता है कि दूर दराज़ सफ़र के बा वुजूद वोह बचा रहे, न उस में कोई तब्दीली आए और न ही मक्सद तक पहुंचने से पहले वोह ख़राब हो तो याद करे कि सफ़रे आख़िरत इस सफ़र से बहुत तवील है, उस का जादे राह तक्वा है, इस के इलावा जिस चीज़ को जादे राह गुमान किया जाता है वोह मौत के वक़्त दुन्या में ही रह जाएगी और ख़यानत करेगी वोह उस के साथ बाकी नहीं रहेगी, जैसे ताज़ा खाना जो सफ़र की पहली मंज़िल पर ही ख़राब हो जाता है और ज़रूरत के वक़्त इन्सान हैरान व परेशान और मोहताज हो जाता है उस के पास कोई हीला नहीं होता, लिहाज़ा उसे डरना चाहिये कि उस के वोह आ'माल जो आख़िरत का जादे राह हैं मौत के बा'द उस का साथ नहीं देंगे बल्कि वोह रियाकारी के शाइबे और कोताही की मैल कुचेल से ख़राब हो जाएंगे।

सुवारी :

जब सुवारी के पास पहुंचे तो दिल से **اَللّٰهُمَّ** का शुक्र अदा करे कि उस ने उस के लिये सुवारी को मुसख़्ख़र किया ताकि इस से तक्लीफ़ दूर और मशक्कत कम करे, इस वक़्त उस सुवारी को याद करे जिस पर सुवार हो कर आख़िरत की तरफ़ जाएगा और वोह जनाज़ा (की चारपाई) है जिस पर डाल कर उसे ले जाया जाएगा क्यूंकि हज़ का मुआमला एक ए'तिबार से सफ़रे आख़िरत की तरह है तो उसे देखना चाहिये कि क्या इस सुवारी पर सफ़र इस क़ाबिल है कि इस सुवारी (जनाज़ा) पर सफ़रे आख़िरत करे और वोह सफ़र इस के किस क़दर क़रीब है, उसे क्या मा'लूम हो सकता है कि मौत क़रीब हो और सुवारी पर सुवार होने से पहले ही इसे जनाज़े की चारपाई पर सुवार होना पड़े। जनाज़े पर सुवार होना तो यकीनी है जब कि अस्बाबे सफ़र की आसानी मशकूक है। तो कोई अक्ल मन्द कैसे मशकूक अस्बाबे सफ़र में एहतियात से काम लेता, उस के लिये जादे राह और सुवारी लेता है और यकीनी सफ़र का मुआमला मुहमल छोड़ देता है ?

एहराम के कपड़े ख़रीदना :

एहराम के कपड़े ख़रीदते हुए कफ़न और उस में लपेटे जाने को याद करे क्यूंकि अ़न क़रीब बैतुल्लाह शरीफ़ से क़रीब होते वक़्त वोह एहराम की एक चादर नीचे और दूसरी ऊपर बांधेगा और हो सकता है उस का सफ़र मुकम्मल भी न हो और वोह यकीनी तौर पर कफ़न के

कपड़ों में लिपटा हुआ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाकात करे तो जिस तरह वोह आम लिबास के बर अक्स लिबास में बैतुल्लाह शरीफ से मुलाकात करता है इसी तरह मौत के बाद दुन्यवी लिबास के मुखालिफ लिबास में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाकात करेगा। एहराम भी कफ़न की तरह बिगैर सिला हुआ होता है।

रवानगी :

शहर से रवाना होते वक़्त उसे इल्म होना चाहिये कि उस ने अपने घर वालों और वतन को छोड़ दिया और ऐसे सफ़र की तरफ़ पेश कदमी कर दी है जो दुन्यवी सफ़रों के मुशाबेह नहीं। लिहाज़ा अपने दिल में येह बात हाज़िर करे कि उस का क्या इरादा है? किस की तरफ़ मुतवज्जेह है? किस की ज़ियारत का क़स्द कर रहा है? दीगर ज़ाइरीन के साथ बादशाहों के बादशाह की तरफ़ मुतवज्जेह है, जिन्हें पुकारा गया तो उन्होंने ने जवाब दिया, उन्हें ज़ियारत का शौक़ दिलाया गया तो वोह मुश्ताक़ हो गए, उन्हें रग़बत दिलाई गई तो वोह तय्यार हो गए, उन्होंने ने तमाम रिश्ते नाते ख़त्म कर दिये, लोगों से जुदाई इख़्तियार कर ली और बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने शान बुलन्द फ़रमाई, उसे क़द्रो मन्ज़िलत अता फ़रमाई ताकि वोह रब्बे का'बा से मुलाकात की जगह बैतुल्लाह शरीफ़ की मुलाकात से दिल को तसल्ली दे लें यहां तक कि उन की आखिरी तमन्ना पूरी कर दी जाए और वोह अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के दीदार की सआदत पा लें। उसे चाहिये कि दिल में बारगाहे इलाही तक रसाई और क़बूलिय्यत की उम्मीद रखे और यूं न कहे कि मैं ने इतनी मुद्दत से अपने अहलो इयाल और माल व अस्बाब को छोड़ा हुआ है बल्कि फ़ज़ले इलाही पर भरोसा रखे और येह उम्मीद रखे कि जो उस के घर की ज़ियारत करे उस से वा'दा पूरा किया जाता है और उम्मीद रखे कि अगर का'बतुल्लाहि मुशरफ़ा तक न पहुंच सका और रास्ते में मौत आ गई तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से यूं मुलाकात करेगा कि वोह उस की तरफ़ सफ़र करने वाला होगा क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद, फुरक़ाने हमीद में इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَ

رَسُولِهِ ثُمَّ يَدْرِكُهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ

عَلَى اللَّهِ ^ط (پ ۵، النساء: ۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो अपने घर से निकला **अल्लाह** व रसूल की तरफ़ हिजरत करता फिर उसे मौत ने आ लिया तो उस का षवाब **अल्लाह** के ज़िम्मे पर हो गया।

जंगल व बयाबान का सफ़र :

मीक़ात की तरफ़ जाते हुए जंगलों में दाख़िल होने और उन घाटियों का मुशाहदा करते हुए उस वक़्त को याद करे कि मौत से क़ियामत तक के अर्से में जो हौलनाक मुआमला पेश आएगा और सुवालात होंगे, डाकूओं के ख़ौफ़ से मुन्कर नकीर के सुवालात की होलनाकी को याद करे, दरिन्दों से क़ब्र के बिच्छूओं, कीड़े मकोड़ों और सांपों को याद करे, घर बार और रिश्तेदारों से जुदाई को क़ब्र की तन्हाई, सख़्ती और तन्हाई का पेश ख़ैमा समझे। अल ग़रज अपने आ'माल व अक्वाल में जिस चीज़ से भी ख़ौफ़ करे उसे क़ब्र की डरावनी चीज़ों के लिये सामान बनाए।

मीक़ात से एह़राम बांधना और तल्बिय्या कहना :

जान लीजिये कि इस का मा'ना **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पुकार को क़बूल करना है तो उस के मक़बूल होने की उम्मीद रखे और उस से डरे कि कहीं “لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ” या'नी तुम्हारी हाज़री क़बूल नहीं” न कह दिया जाए। पस उम्मीद और ख़ौफ़ के दरमियान रहे, अपनी कुव्वत व ताक़त के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़्लो करम पर भरोसा करे क्यूंकि तल्बिय्या का वक़्त इब्तिदाई मुआमला है और येह ख़तरे का मक़ाम है।

कहीं “لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ” न कह दिया जाए :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अली बिन हुसैन (या'नी सय्यिदुना इमाम जैनुल अ़बिदीन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) जब हज़ के इरादे से एह़राम बांध कर सुवारी पर बैठ गए तो रंग ज़र्द हो गया और कपकपी तारी हो गई हत्ता कि तल्बिय्या भी न कह सके। अर्ज की गई : “आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ तल्बिय्या क्यूं नहीं कहते ?” फ़रमाया : “मुझे डर है कि कहीं येह न कह दिया जाए : لَا لَبَّيْكَ وَلَا سَعْدَيْكَ या'नी तुम्हारी हाज़री क़बूल नहीं।” जब तल्बिय्या कहा तो आप पर ग़शी तारी हो गई और सुवारी से नीचे तशरीफ़ ले आए, हज़ मुकम्मल करने तक आप पर येही कैफ़ियत तारी रही।

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अबी हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدِّسَ سِرُّهُ السُّورَانِ के साथ था जब आप ने एह़राम का इरादा किया तो तल्बिय्या न कह सके हम एक मील ही चले थे कि उन पर ग़शी तारी हो गई। जब इफ़ाका हुवा तो फ़रमाया : ऐ अहमद ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْهِ نَبِیْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْهِ नَبِیْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की तरफ़ वह्य़ फ़रमाई कि “बनी इसराईल के ज़ालिमों को हुक्म दो कि मेरा ज़िक्र कम किया करें

क्योंकि इन में से जो मुझे याद करता है मैं उसे ला'नत के साथ याद करता हूँ।" ऐ अहमद ! तेरा बुरा हो मुझे येह बात पहुंची है कि जो नाजाइज़ माल से हज़ करे और तल्बिय्या कहे तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : "तेरी हाज़िरी क़बूल नहीं जब तक कि तू लोगों का ग़सब किया हुआ माल लौटा न दे।" तो हम इस से बे ख़ौफ़ नहीं कि हमें भी येह न कह दिया जाए।

मीक़ात में तल्बिय्या कहते वक़्त तल्बिय्या कहने वाले को याद रखना चाहिये कि उस ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पुकार पर लब्बैक कहा जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम علی نبینا وعلیه الصلوٰۃ والسلام से फ़रमाया :

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ (پ ۱، الحج: ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और लोगों में हज़ की आम निदा कर दे।

नीज़ सूर फूंकने के ज़रीए मख़्लूक को निदा करने, उन के क़ब्रों से उठने और मैदाने महशर में जम्अ हो कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पुकार पर जवाब देने और मुक़रबीन व मग़ज़बीन और मक़बूलीन व मर्दूदीन में उन की तक्सीम को याद रखे और इब्तिदा में वोह ख़ौफ़ व उम्मीद के दरमियान मुतरद्दिद होंगे जैसे हाजी मीक़ात में मुतरद्दिद होते हैं और नहीं जानते कि उन के लिये हज़ की तक्मील और क़बूलिय्यत आसान होगी या नहीं ?

मक्कए मुक़रमा में दाख़िला :

मक्कए मुक़रमा رِادَها اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में दाख़िल होते वक़्त येह याद रखे कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अम्न वाले घर में पहुंच गया है, उस वक़्त येह उम्मीद रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब से भी अम्न में रहेगा और येह ख़ौफ़ भी हो कि हो सकता है वोह कुर्ब का अहल ही न हो और हरम में दाख़िल होने के बा वुजूद ना मुराद लौटा दिया जाए और नाराज़ी का मुस्तहिक़ ठहरे लेकिन तमाम अवक़ात में उम्मीद ग़ालिब रहनी चाहिये कि करम आम और रब्ब عَزَّوَجَلَّ की सिफ़त रहीम है, बैतुल्लाह शरीफ़ का शरफ़ अज़ीम है, उस की ज़ियारत करने वाले के हक़ की रिआयत की जाती है और पनाह त़लब करने वाले की हुरमत ज़ाएअ नहीं की जाती।

बैतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र :

जब बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़े तो दिल में उस की अज़मत को हाज़िर करे और इन्तिहाई ता'ज़ीम की बदौलत यूं समझे गोया बैतुल्लाह शरीफ़ के रब्ब की ज़ियारत कर रहा है और येह उम्मीद रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने वजहे करीम की ज़ियारत नसीब फ़रमाएगा जैसा

कि उस ने अज़ीम घर की ज़ियारत की सआदत अता फ़रमाई। नीज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने इस मर्तबे तक पहुंचने की सआदत अता फ़रमाई और अपनी बारगाह में हाज़िर होने वालों के गुरौह के साथ मिलाया। उस वक़्त क़ियामत में लोगों के दुखूले जन्नत की उम्मीद से उस की तरफ़ जाने को याद करे कि इन में से बा'ज को दाख़िले की इजाज़त मिलेगी और बा'ज को लौटा दिया जाएगा यूं ही बा'ज का हज़ क़बूल होगा और बा'ज का रद्द कर दिया जाएगा। अल ग़रज़ जो चीज़ देखे उस से उमूरे आख़िरत की याद से ग़ाफ़िल न हो क्यूंकि हाज़ियों के तमाम अहवाल अहवाले आख़िरत पर दलील हैं।

तवाफ़े ख़ानए का'बा :

जान लीजिये कि तवाफ़ भी नमाज़ की तरह है, लिहाज़ा ब वक़्ते तवाफ़ दिल में ता'ज़ीम, खौफ़, उम्मीद और महबूबत को हाज़िर करे जैसा कि “किताबुस्सलात” में हम तफ़सीलन बयान कर चुके हैं और जान लो कि तवाफ़ करते हुए तुम अर्श के गिर्द चक्कर लगाने वाले मुक़र्रब फ़िरिशतों से मुशाबहत रखते हो और येह गुमान न करो कि सिर्फ़ जिस्म से तवाफ़ करना मक़सूद है बल्कि रब्बे का'बा के ज़िक्र के साथ दिल का तवाफ़ मक़सूद है हत्ता कि इसी से ज़िक्र की इब्तिदा की जाए और इख़िताम भी इसी पर किया जाए जैसा कि बैतुल्लाह शरीफ़ से तवाफ़ शुरू किया जाता है और बैतुल्लाह पर ही ख़त्म किया जाता है। येह भी याद रखे कि हकीकत में तवाफ़ बारगाहे इलाही में दिल का तवाफ़ है, बैतुल्लाह शरीफ़ तो ज़ाहिरी दुन्या में इस हाज़िरी की एक मिषाल है जिसे आंखों से नहीं देखा जा सकता और वोह आलमे मलकूत है जैसा कि बदन आलमे शहादत में दिल के लिये ज़ाहिरी मिषाल है जिसे आंखों से नहीं देखा जा सकता और वोह आलमे ग़ैब में है। आलमे दुन्या व आलमे शहादत उस शख्स के लिये आलमे ग़ैब और आलमे मलकूत की तरफ़ ज़ीना (ज़रीआ) हैं जिस के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आलमे ग़ैब का दरवाज़ा खोल दे। इसी मुनासबत से इशारा किया गया कि का'बा शरीफ़ के ऐ'न ऊपर आस्मानों में बैतुल मा'मूर है जिस का फ़िरिशते इसी तरह तवाफ़ करते हैं जिस तरह इन्सान बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते हैं तो जब अक़षर लोग फ़िरिशतों जैसे तवाफ़ से कम रुत्बे में हैं तो उन्हें हुक्म दिया गया कि हत्तल इमकान उन की मुशाबहत इख़्तियार करें और उन से वा'दा किया गया कि “مَنْ تَشَبَهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ” या'नी जो किसी क़ौम की मुशाबहत इख़्तियार करे वोह उन्हीं में से हैं।⁽¹⁾ और जो शख्स उन जैसा तवाफ़ कर सकता है इस के मुतअल्लिक कहा जाता है कि का'बा उस की ज़ियारत और तवाफ़ करता है जैसा कि बा'ज अहले कश्फ़ ने बा'ज औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام को मुलाहज़ा फ़रमाया।

①.....سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب فی لبس الشهرة، الحديث: ۴۰۳۱، ج ۴، ص ۶۲.

हजरे अस्वद का इस्तिलाम :

हजरे अस्वद को बोसा देते हुए यह ए'तिफ़ाद रखे कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की इताअत पर इस की बैअत करने वाला है। लिहाज़ा अपनी बैअत को पूरा करने का अज़मे मुसम्मम करे क्योंकि जो बैअत में धोका देही से काम लेता है वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी का मुस्तहिक् हो जाता है।

दायां दस्ते कुदरत :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “हजरे अस्वद ज़मीन में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ का दायां दस्ते कुदरत है इस के साथ वोह अपनी मख़्नूक से मुसाफ़हा करता है जैसे कोई शख्स अपने भाई से मुसाफ़हा करता है।”⁽¹⁾

ग़िलाफ़े का'बा से लिपटना और मुलतज़म से चिमटना :

ग़िलाफ़े का'बा से लिपटते और मक़ामे मुलतज़म से चिमटते वक़्त येह निय्यत हो कि महबबत व शौक के साथ का'बा और रब्बे का'बा का कुर्ब त़लब कर रहा और इसे छू कर बरकत हासिल कर रहा हूं और येह उम्मीद हो कि बदन का जो भी जुज़ बैतुल्लाह शरीफ़ से लगा हुवा है वोह जहन्नम से आज़ाद होगा। नीज़ येह निय्यत हो कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से त़लबे मुआफ़ी और अमान के सुवाल में इसरार कर रहा हूं जैसा कि मुजरिम उस शख्स के कपड़ों से लिपट जाता है जिस का हक़ तलफ़ किया हो और उस से मुआफ़ी मांगने में गिर्या व ज़ारी करता और ज़ाहिर करता है कि उस के लिये इस के सिवा कोई पनाह गाह नहीं, उस के अफ़वो करम के सिवा कोई ठिकाना नहीं, मुआफ़ी मिले बिग़ैर उस का दामन नहीं छोड़ेगा और मुस्तक्बल में भी अम्न की ज़मानत दे दे।

सफ़ा व मर्वा की सअय :

का'बतुल्लाहि मुशरफ़ा के सहन में सफ़ा व मर्वा के दरमियान सअय इसी तरह है जैसे बन्दा बादशाह के दरबार के सहन में बार बार आता जाता और मुतरद्दि होता है, ख़िदमत में खुलूस ज़ाहिर करता है और उम्मीद होती है कि उसे रहमत की निगाह से देखा जाएगा जैसे कोई शख्स

①.....الكامل في ضعفاء الرجال، اسحاق بن بشير: ١٤٢، ج ١، ص ٥٥٤، بتغير۔

كشف الخفاء، حرف الحاء المهملة، الحديث: ١١٠٤، ج ١، ص ٣١١، باختصار۔

बादशाह के दरबार में पेश होता है लेकिन वोह नहीं जानता कि बादशाह उस के हक में क्या फैसला फ़रमाएगा, उसे क़बूल करेगा या रद्द कर देगा। चुनान्चे, वोह बार बार महल के सहन में आता जाता है इस उम्मीद पर कि अगर पहली बार रहम न किया गया तो दूसरी बार ज़रूर रहम किया जाएगा। नीज़ सफ़ा व मर्वा के दरमियान सअय करतें हुए मैदाने क़ियामत में मीज़ान के दो पलड़ों के दरमियान चक्कर लगाने को याद करे, सफ़ा को नेकियों का पलड़ा और मर्वा को बुराइयों का पलड़ा तसव्वुर करे और याद रखे कि दोनों पलड़ों के दरमियान इसी तरह दौड़ेगा और देखेगा कि कौन सा पलड़ा भारी होता है, कौन सा हलका ? और वोह अज़ाब व बख़्शिश में मुतरद्दिद होगा।

तुक्कूफ़े अरफ़ा :

मैदाने अरफ़ात में क़ियाम के दौरान लोगों के हुजूम, आवाज़ों के बुलन्द होने, ज़बानों के इख़्तिलाफ़, मैदाने महशर में मुख़्तलिफ़ गुरौहों के अपने अइम्मा के साथ मक़ामाते मुक़द्दसा पर जाने, उम्मतों के अम्बियाए किराम व अइम्माए उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के साथ जम्अ होने, हर उम्मत के अपने नबी के पीछे चलने, उन की शफ़ाअत त़लब करने और मैदाने महशर में रद्दो क़बूल के दरमियान हैरान व शशदर खड़े होने को याद करे, जब इस बात को याद कर ले तो अपने दिल में अज़िज़ी को लाज़िम कर ले और बारगाहे इलाही में ख़ूब गिड़ गिड़ा कर दुआ मांग तुझे रहम किये गए कामयाब लोगों में उठाया जाएगा और क़बूलिय्यते दुआ की पुख़्ता उम्मीद रख। मौक़िफ़ (या'नी मैदाने अरफ़ात) मक़ामे शरफ़ है और रहमतें इलाही **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ज़मीन के अवताद के अज़ीज़ दिलों के वासिते से तमाम मख़्लूक तक पहुंचती है और मौक़िफ़ किसी भी वक़्त अब्दाल व अवताद, सालिहीन और अहले दिल के तबक़े से ख़ाली नहीं होता। जब उन की हिम्मतें जम्अ हो जाएं, दिल अज़िज़ी और गिर्या व ज़ारी के लिये ख़ाली हो जाएं, हाथ बारगाहे इलाही में उठ जाएं, गर्दनें उस की तरफ़ और उन की निगाहें आस्मान की जानिब बुलन्द हों और हुसूले रहमत के लिये सब की हिम्मतें इकट्ठी हों तो येह गुमान न करना कि उन की उम्मीद ना काम होगी, कोशिश ज़ाएअ हो जाएगी और उन्हें ढांपने वाली रहमत रूक कर जम्अ कर दी जाएगी। इसी लिये मन्कूल है कि बड़ा गुनाह येह है कि “बन्दा अरफ़ात में हाज़िर हो और येह गुमान करे कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने उस की बख़्शिश नहीं फ़रमाई।” चुनान्चे, सब हिम्मतों का इजतिमाअ और मुख़्तलिफ़ शहरों से आए हुए अब्दाल व अवताद का जम्अ हो कर उन का साथ

देना ही हज का भेद और अस्ली मक्सद है। लिहाजा जहां हिम्मतें जम्अ हों और एक वक्त में एक ही मैदान में दिल एक दूसरे के मुआविन हो तो रहमते इलाही के हुसूल का कोई तरीका इस तरीके जैसा नहीं।

जमशत को कंकरियां मारना :

कंकरियां मारते वक्त हुक्म की इताअत, गुलामी और बन्दगी का इजहार करे, महज हुक्म की बजा आवरी के लिये तय्यार हो जिस में अक्ल व नफ्स का कोई हिस्सा न हो, फिर हजरते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मुशाबहत का इरादा करे कि इस जगह इब्लीस मलऊन ने उन के हज में शुबा डालने या उन्हें नाफरमानी में मुब्तला करने की कोशिश की थी तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उन्हें हुक्म फरमाया कि इसे कंकरियों के साथ भगा दें और इस की उम्मीद खत्म कर दें।

वस्वसा : अगर तेरे दिल में वस्वसा आए कि शैतान हजरते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के सामने ज़ाहिर हुवा था, उन्होंने ने इसे देखा था इसी लिये कंकरियां मारी थीं लेकिन मेरे सामने तो शैतान नहीं आता ? (लिहाजा, मैं कंकरियां क्यों मारूं ?)

इलाजे वस्वसा : जान लो कि येह वस्वसा भी शैतान की तरफ से है, उसी ने तेरे दिल में येह बात डाली ताकि तेरे कंकरियां मारने का इरादा कमजोर हो जाए और तेरे दिल में येह खयाल डाले कि इस काम में कोई फाइदा नहीं और येह कि येह खेल के मुशाबेह है फिर तू इस में क्यों मशगूल है ? लिहाजा खूब कंकरियां मार कर उसे भगाओ और ज़लीलो रुस्वा करो और यकीन रखो कि बज़ाहिर सुतूनों को कंकरियां मार रहे हो लेकिन हकीकत में शैतान के मुंह पर कंकरियां मार रहे हो, उस की पीठ पर मार रहे हो क्योंकि शैतान तभी ज़लीलो रुस्वा हो सकता है जब कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की ता'जीम करते हुए उस के हुक्म पर अमल किया जाए जिस में नफ्स व अक्ल का कोई हिस्सा न हो।

कुरबानी करना :

जान लीजिये कि जानवर ज़बह करने में भी हुक्मे इलाही पर अमल करना और उस का कुर्ब मिलने का ज़रीआ है। लिहाजा कामिल कुरबानी करे और उम्मीद रखे कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ कुरबानी के जानवर के हर हिस्से बदल दे उस के ज़िस्म का वोह हिस्सा जहन्नम से आज़ाद फरमाएगा,

इसी तरह वा'दा मन्कूल है। चुनान्वे, कुरबानी का जानवर जितना बड़ा और इस के अजजा जितने ज़ियादा होंगे वोह उतना ही ज़ियादा तेरे लिये जहन्नम से बचाव का ज़रीआ होगा।

मदीनए तय्यिबा की हाज़िरी :

जब निगाहें मदीना शरीफ़ के दरों दीवार पर पड़ें तो इस शहर को याद करे जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया और उन्हें इस की तरफ़ हिजरत का हुक्म फ़रमाया और येही वोह जगह है जहां आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज व सुन्नत को शुरू फ़रमाया, उस के दुश्मन से जिहाद किया, मरते दम तक उस के दीन को ग़ालिब किया यहां तक कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का विसाले ज़ाहिरी हो गया फिर इन की आखिरी आराम गाह और इन के दो वज़ीरों की क़ब्रें वहीं बनाई जिन्होंने इन के बा'द हक़ को काइम किया। जब इस शहर में चले तो सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के क़दमैने शरीफ़ैन लगने की जगहों का तसव्वुर करे कि जहां भी क़दम रख रहा हूं वहां प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के नूरानी क़दम लगे होंगे, लिहाज़ा अपने पाउं सुकून व वक़ार के साथ रख और याद कर कि इन ग़लियों में मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ चले हैं और यहां आप के क़दम लगे हैं, चलने में आप के खुशूअ व खुजूअ का तसव्वुर काइम करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन के क़ल्बे मुबारक में जो अपनी मा'रिफ़त रखी, इन के ज़िक्र को अपने ज़िक्र से मिला कर बुलन्दी अता फ़रमाई इसे भी ज़ेहन में हाज़िर करे।

नीज़ येह तसव्वुर भी काइम करे कि जो भी तौहीने रिसालत का मुर्तकिब हुवा उस के तमाम आ'माल ज़ाएअ कर दिये गए अगर्चे सिर्फ़ उन की आवाज़ से आवाज़ ऊंची हो। फिर लोगों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के उस एहसान को याद करे जो उस ने उन पर किया कि उन्हें हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बा बरकत सोहबत नसीब फ़रमाई, इन के दीदार से मुशर्रफ़ फ़रमाया, इन का कलाम सुनने की सआदत अता फ़रमाई और तुझे इस पर बहुत अफ़सोस करना चाहिये कि तू मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की और सहाबए किराम رَضُواْ اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ की सोहबत न पा सका। फिर सोच कि तू दुन्या में तो ज़ियारत से महरूम रहा और आखिरत में भी ज़ियारत का यकीन नहीं। फिर मुमकिन है कि बरोज़े क़ियामत तू हसरत भरी निगाह से इन्हें देखे कि तेरे और इन के माबैन तेरे बुरे आ'माल हाइल हो जाएं जैसा कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बा'जू लोगों को मेरे पास लाएगा वोह कहेंगे :

“ऐ मुहम्मद ! ऐ मुहम्मद !” मैं बारगाहे इलाही में अर्ज करूंगा : “ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ येह मेरे अस्हाब हैं।”⁽¹⁾ तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : “आप नहीं जानते कि इन्हों ने आप के बा’द क्या बातें पैदा कीं ?”⁽²⁾ तो मैं कहूंगा उसे दूरी हो जो मेरे बा’द तब्दीली करे।⁽³⁾

अगर तू ने हुरमते शरीअत की पासदारी न की अगर्चे लम्हा भर के लिये तू इस से बे खौफ़ न रहना कि हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के बताए हुए रास्ते से रूगर्दानी तेरे और इन के दरमियान हिजाब बन जाए। लेकिन इस के बा वुजूद क़वी उम्मीद रख कि **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तेरे और इन के माबैन कोई चीज़ हाइल न फ़रमाएगा कि उस ने तुझे ईमान की दौलत अता फ़रमाई, तुझे वतन से रौज़ए रसूल की ज़ियारत के लिये बुलाया कि न तो तेरी तिजारत की निय्यत थी और न ही दुन्या से कुछ लेना मक्सूद था बल्कि महज़ मुस्तफ़ा करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्बत और शौक में हाज़िर हुवा ताकि उन के मुबारक आषार और मज़ारे अक़दस की ज़ियारत कर सके क्यूंकि जब तू हयाते मुबारका में ज़ियारत के शरफ़ से महरूम रहा तो अब सिर्फ़ तूने इसी मक्सद (या’नी मज़ारे अक़दस की ज़ियारत) के लिये सफ़र किया, लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की शान के लाइक़ है कि वोह तेरी तरफ़ नज़रे रहमत फ़रमाए।

① मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلِيهِ رَحْمَةُ الْمَنَانِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 408 पर इस जुज के तहत फ़रमाते हैं : मेरे दोस्त या मेरे साथ उठने बैठने वाले मेरा नाम लेने वाले हैं हुजूरे अन्वर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) का येह फ़रमान उन को ज़ियादा ज़लील करने के लिये होगा। जैसे रब्ब तअ़ाला दोज़ख़ियों से फ़रमाएगा : (پ ۲۵، الدخان: ۴۹) **قُلْ إِنْ أَنْتَ الْعَزِيزُ الرَّكِيمُ** तो चख़ तू तो बड़ा इज़ज़त वाला करम वाला है, येह मतलब नहीं कि हुजूरे अन्वर पहचानेंगे नहीं अभी फ़रमाने अली गुज़रा “اعرفهم” मैं इन्हें पहचानता हूँ। नीज़ येह वाकिअ हुजूर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को आज तो मा’लूम है कल कैसे भूल जावेगा। नीज़ उन के मुंह काले, हाथ बंधे हुए, बाएं हाथ में नामए आ’माल लिये होंगे, रब्ब तअ़ाला फ़रमाता है : “يَعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمَاهُمْ” (پ ۲۷، الرحمن: ۴۱) :

② मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلِيهِ رَحْمَةُ الْمَنَانِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 409 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : फ़िरिश्तों का या रब्ब तअ़ाला का येह कहना कि तुम नहीं जानते, उन मुरतदीन पर इज़हारे ग़ज़ब के लिये है जैसे बिला शुबा बाप बेटे को मारने लगे मां जो उस से सख़्त नालां थी महब्बते मादरी में बचाना चाहे बाप कहे तू इस की हैषियत को नहीं जानती इसे तो मैं ही जानता हूँ इस का मक्सद येह है कि इसे मत बचा मुझे सज़ा दे लेने दे। रब्ब तअ़ाला मुनाफ़िक़ीन के मुतअल्लिक़ फ़रमाता है : “لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ” (پ ۱۱، التوبة: ۱۰) इन्हें तुम नहीं जानते हम जानते हैं। हालांकि हुजूर (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) मुनाफ़िक़ीन को ख़ूब जानते थे, फ़रमाता है : (پ ۲۶، محمد: ۳۰) : तुम इन्हें कलाम की रविश से ही पहचान लेते हो।

③ صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب اثبات حوض نبینا..... الخ، الحديث: ۲۳۰۴، ص ۱۲۶۱، مختصراً.

जब मस्जिदे नबवी में पहुंचे तो याद कर कि येह वोह जगह है जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने अपने प्यारे नबी **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**, इब्तिदाई मुसलमानों और अफ़ज़ल गुरौह के लिये पसन्द फ़रमाया, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के फ़राइज़ सब से पहले इसी जगह अदा किये गए, मख़्लूक में से ज़िन्दगी में और बा'दे विसाल भी सब से अफ़ज़ल लोग इसी जगह जम्अ हैं। लिहाज़ा तुझे **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से पुर उम्मीद होना चाहिये कि तुझे वहां दाख़िल कर के तुझ पर रहूम फ़रमाएगा, लिहाज़ा खुशूअ व खुजूअ और ता'ज़ीम से दाख़िल हो और येह जगह इस के लाइक है कि हर मोमिन से दिली खुशूअ का मुतालबा किया जाए, जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी **قُدَسَ سِرُّهُ التُّوَرَانِ** से मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना उवैस क़रनी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَنٰی** ने हज़ किया और मदीना शरीफ़ में दाख़िल हो गए। जब मस्जिदे नबवी के दरवाज़े पर पहुंचे तो उन्हें बताया गया कि येह दो आलम के ताजदार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का रौज़ए मुबारका है तो आप पर ग़शी तारी हो गई जब इफ़ाका हुवा तो फ़रमाया : “मुझे यहां से ले चलो कि मैं वहां नहीं रह पाऊंगा जहां रौज़ए रसूल है (क्योंकि मैं यहां के आदाब का ख़याल न रख सकूंगा)।⁽¹⁾

ज़ियारते रौज़ए रसूल :

ज़ियारत करने वाले को चाहिये कि बारगाहे रिसालत में हाज़िरी के वक़्त हमारे बयान कर्दा तरीक़े के मुताबिक़ खड़ा हो और विसाले ज़ाहिरी के बा'द भी इसी तरह ज़ियारत की जाए जैसे ज़िन्दगी में की जाती थी, रौज़ए मुबारका के ज़ियादा क़रीब खड़ा न हो बल्कि इतना क़रीब खड़ा हो जितना कि हयाते तय्यिबा में खड़ा होता अगर ज़ाहिरी तौर पर दुन्या में तशरीफ़ फ़रमा होते। जिस तरह हयाते तय्यिबा में जिस्मे अतहर को छूना और बोसा वगैरा देना ख़िलाफ़े ता'ज़ीम और सूए अदब था बल्कि दूर ही से खड़े खड़े ज़ियारत कर ली जाती थी अब भी ऐसा ही करना चाहिये क्योंकि मुक़द्दस हस्तियों के मज़ारात को छूना और बोसे देना यहूदो नसारा की आदत है। नीज़ रौज़ए अन्वर पर हाज़िर होने वाला येह अक़ीदा रखे कि हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** तेरे हाज़िर होने, खड़े होने और ज़ियारत करने को जानते हैं और तेरा दुरूदो सलाम उन तक पहुंचता है। हुज़ूर नबिय्ये करीम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की हसीन सूरत को अपने सामने लहद में मौजूद तसव्वुर करे और अपनी मा'रिफ़त के मुताबिक़ दिल में आप के अज़ीम मर्तबे का तसव्वुर बांधे।

दुस्रो सलाम बारगाह तक पहुंचता है :

मरवी है कि “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के रौज़ए अन्वर पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर फ़रमाया है कि उम्मत में से जब भी कोई आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर सलाम भेजता है तो वोह उस का सलाम बारगाहे रिसालत तक पहुंचाता है।” (1)

येह फ़ज़ीलत तो उस के हक़ में है जो क़ब्रे अन्वर पर हाज़िर न हो सका तो वोह शख़्स जिस ने वतन से जुदाई इख़्तियार की, मुलाक़ात के शौक़ में जंगलों का सफ़र तै किया और हुज़ूर की हयाते मुबारका में ज़ियारत से मुशर्रफ़ न हो सका इस लिये रौज़ए मुक़द्दसा की ज़ियारत के लिये हाज़िर हुवा, उसे कैसी फ़ज़ीलत हासिल होगी।

एक के बदले दस :

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने मुझ पर एक मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर 10 रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।” (2) जब ज़बान से दुरूदे पाक भेजने की येह जज़ा है तो अपने बदन के साथ बारगाहे रिसालत में हाज़िरी का क्या मक़ाम होगा।

फिर मिम्बरे रसूल के पास हाज़िर हो और तसव्वुर करे कि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मिम्बरे अक़्दस पर जल्वा अफ़ोज़ हैं और दिल में रोशन चेहरे का तसव्वुर लाए कि मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हैं, मुहाजिरीन व अन्सार आप के गिर्द हलक़ा बनाए बैठे हैं और आप उन्हें अपने खुतबे के साथ इताअते इलाही पर उभार रहे हैं। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुवाल कर कि वोह क़ियामत में तेरे और आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के दरमियान जुदाई न डाले।

इख़्ततामी क़लिमात :

येह आ'माले हज़ के बातिनी आदाब हैं। जब इन तमाम उमूर से फ़ारिग़ हो जाए तो उस का दिल लाज़िमी तौर पर ग़म व हुज़्न और ख़ौफ़ में मुब्तला रहे, क्यूंकि वोह नहीं जानता कि उस का हज़ क़बूल कर के उसे पसन्दीदा बन्दों के गुरौह में रखा गया है या रद्द कर के धुतकारे हुवों में शामिल कर दिया गया। वोह अपने दिल और आ'माल की कैफ़ियत से इस चीज़ को समझे,

①.....مجمع الزوائد، الحديث: ۱۷۲۹۱، ج ۱۰، ص ۲۵۱-

②.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ۴۰۸، ص ۲۱۶-

अगर उस के दिल की, दुन्या से बे रग़बती बढ़ गई और वोह आखिरत की तरफ़ फिर गया और उस ने अपने आ'माल को शरीअत के तराजू के मुताबिक़ पाया तो क़बूलिय्यते हज़ का यकीन रखे क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसी से क़बूल फ़रमाता है जिस से महब्बत करता है और जिस से महब्बत करता है उसे अपना वली (दोस्त) बना लेता, उस पर अपनी महब्बत के आधार ग़ालिब फ़रमा देता है और उस से अपने दुश्मन इब्लीसे मलऊन का ग़लबा हटा देता है, लिहाज़ा जब उस पर येह चीज़ ग़ालिब हो तो येह क़बूलिय्यत पर दलील है लेकिन अगर मुआमला इस के बर अक्स हो तो क़रीब है कि उसे अपने सफ़र से कुलफ़त व थकावट के सिवा कुछ हासिल न हो। हम इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह त़लब करते हैं।



....दो दिन और दो रातें.....

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 84 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "दुन्या से बे रग़बती और उम्मीदों की कमी" सफ़हा 76 पर है : हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरशाद फ़रमाते हैं : "क्या मैं तुम्हें उन दो दिनों और दो रातों के बारे में न बताऊं जिन की मिष्ल मख़्लूक ने नहीं सुनी :

(1) एक दिन वोह है जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से आने वाला तेरे पास रिज़ाए इलाही का मुज़दा ले कर आएगा या उस की नाराज़ी का पैग़ाम और (2) दूसरा दिन वोह जब तू अपना नामए आ'माल लेने के लिये बारगाहे इलाही में हाज़िर होगा और वोह नामए आ'माल तेरे दाएं हाथ में दिया जाएगा या बाएं में। (और दो रातों में से) (1) एक रात वोह है जो मय्यित अपनी क़ब्र में गुज़रेगी और इस से पहले इस ने ऐसी रात कभी नहीं गुज़ारी होगी। और (2) दूसरी रात वोह है जिस की सुब्ह को क़ियामत का दिन होगा और फिर इस के बा'द कोई रात नहीं आएगी।"

तिलावत कुरआन का बयान

सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस ने अपने प्यारे महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और कुरआने मजीद के ज़रीए बन्दों पर एहसान फ़रमाया, कुरआने पाक की शान बयान करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : (1) “لَا يَأْتِيَنَّكَ لِبَاطِلٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِّنْ حَكِيمٍ حَبِيدٍ” (1) यहां तक कि ग़ौरो फ़ि़क़र करने वालों पर उस के किस्सों और ख़बरों से इब्रत पाने का रास्ता कुशादा और सीधा रास्ता वाजेह हो गया जिस में अहकाम की तफ़सील और हलाल व हराम की तफ़रीक है, येह रोशनी और नूर है, इस के ज़रीए गुरूर से नजात मिलती है, इस में सीने की बीमारियों से शिफ़ा है, ज़ालिमों में से जिस ने इस की मुख़ालफ़त की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस की कमर तोड़ दी, जिस ने इस के इलावा किसी और किताब में इल्म तलाश किया उसे गुमराह कर दिया, येह मज़बूत रस्सी, वाजेह नूर और पुख़्ता गिरह और मुकम्मल तौर पर महफूज़ पनाह गाह है, येह क़लील व कषीर और छोटे बड़े को घेरे हुए है, इस के अज़ाइब व ग़राइब ख़त्म नहीं होते, अहले इल्म के नज़दीक कोई चीज़ इस के फ़वाइद का इहाता नहीं कर सकती, तिलावत करने वालों के नज़दीक बार बार तिलावत करने से भी येह पुरानी नहीं होती, येह वोह किताब है जिस ने अव्वलीन व आख़िरीन की रहनुमाई फ़रमाई, जब ज़िन्नो ने इसे सुना तो फ़ौरन अपनी क़ौम की तरफ़ पलटे और उन्हें डराते हुए कहा :

(2) “فَقَالُوا إِنَّا سِعَاقٌ إِنَّا عَجَبٌ ۖ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَامْتَابِهِ ۖ وَلَنْ تُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا” (2)

इस पर ईमान लाने वाला तौफ़ीक़ याफ़ता हो गया, इस का क़ाइल ही इस की तस्दीक़ करने वाला है, इसे मज़बूती से थामने वाला हिदायत याफ़ता हो गया, इस पर अमल करने वाला फ़लाह पा गया। इरशादे बारी तआला है : (3) “إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَفِظُونَ” (3) कुलूब व मसाहिफ़ में कुरआन के महफूज़ रहने का सबब इस की पाबन्दी से तिलावत करना और ज़ाहिरी आदाब का लिहाज़ रखना है। नीज़ कुरआने पाक के आदाब व शराइत को मलहूजे ख़ातिर रखना, इस

①..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बातिल को उस की तरफ़ राह नहीं न उस के आगे न उस के पीछे से, उतारा हुवा है हिक्मत वाले सब खूबियों सराहे का। (प २२, ज़म सज्दा: २२)

②..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : तो बोले हम ने एक अजीब कुरआन सुना कि भलाई की राह बताता है तो हम इस पर ईमान लाए और हम हरगिज़ किसी को अपने रब्ब का शरीक न करेंगे। (प २९, अल जिन: २, १)

③..... **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : बेशक हम ने उतारा है येह कुरआन और बेशक हम खुद इस के निगहबान हैं।

(प १२, अल हजर: ९)

में बयान कर्दा बातिनी आ'माल और ज़ाहिरी आदाब की पाबन्दी करना भी इस के महफूज़ रहने का सबब है, इस लिये इन उमूर का बयान और इन की तफ़्सील ज़रूरी है और इस के मक़ासिद चार अब्बाब में बयान किये जाएंगे :

- ﴿1﴾.....कुरआन और क़ारिये कुरआन की फ़ज़ीलत का बयान ।
- ﴿2﴾.....तिलावत के ज़ाहिरी आदाब का बयान ।
- ﴿3﴾.....तिलावत के बातिनी आदाब का बयान ।
- ﴿4﴾.....कुरआने पाक समझने और इस की तफ़्सीर बिराए वग़ैरा का बयान ।



﴿....."बिस्मिल्लाह" शरीफ़ की बरक़त व फ़वाइद.....﴾

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1548 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "फ़ैज़ाने सुन्नत" सफ़हा 134 ता 135 पर शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ नक्ल फ़रमाते हैं :

- ﴿1﴾ जो कोई सोते वक़्त بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ ले إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस रात शैतान, चोरी, अचानक मौत और हर तरह की आफ़त व बला से महफूज़ रहे ।
- ﴿2﴾ जो किसी ज़ालिम के सामने بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ 50 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े उस ज़ालिम के दिल में पढ़ने वाले की हैबत पैदा हो और उस के शर से बचा रहे ।
- ﴿3﴾ जो शख़्स तुलूए आफ़ताब के वक़्त सूरज की तरफ़ रुख़ कर के بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ 300 बार और (कोई भी) दुरूद शरीफ़ 300 बार पढ़े اَبْلَاحَ عَزَّوَجَلَّ उस को ऐसी जगह से रिज़क़ अता फ़रमाएगा जहां उस का गुमान भी न होगा और (रोज़ाना पढ़ने से) إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ एक साल के अन्दर अन्दर अमीरो कबीर हो जाएगा ।
- ﴿4﴾ कुन्द ज़ेहन अगर بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ 786 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस का हाफ़िज़ा मज़बूत हो जाए और जो बात सुने याद रहे । (شمس المعارف مترجم، ص 43)

बाब नम्बर 1 : कुरआन और क़ारिये कुरआन की फ़नीनत फ़ज़ाइले तिलावत के मुतअल्लिक 11 फ़रामीने मुस्तफ़ :

- ﴿1﴾.....“जिस ने कुरआन पढ़ा फिर येह ख़याल किया कि किसी को इस से अफ़ज़ल अता किया गया तो तहकीक़ उस ने उस चीज़ को छोटा जाना जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अज़मत दी ।” (1)
- ﴿2﴾.....“बरोजे क़ियामत कोई शफ़ाअत करने वाला कुरआने पाक से ज़ियादा मर्तबा वाला न होगा न कोई नबी, न कोई फ़िरिश्ता और न ही कोई और ।” (2)
- ﴿3﴾.....“अगर कुरआने पाक चमड़े में हो तो इसे आग न छूएगी ।” (3) (4)
- ﴿4﴾.....“أَفْضَلُ عِبَادَةٍ أَمْتِي تِلَاوَةُ الْقُرْآنِ या'नी मेरी उम्मत की अफ़ज़ल इबादत तिलावते कुरआन है ।” (5)
- ﴿5﴾.....“**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक पैदा करने से हज़ार साल पहले सूरए ताहा और यासीन की तिलावत फ़रमाई, जब फ़िरिश्तों ने कुरआन सुना तो बोले : ख़ैर व ख़ूबी है उस उम्मत को जिस पर येह उतरेगी और ख़ूबी है उन सीनों को जो इसे उठाएंगे और ख़ूबी है उन ज़बानों को जो इसे पढ़ेंगी ।” (6)

①.....الزهد لابن المبارك، باب ماجاء فى ذنب التنعم فى الدنيا، الحديث: ٤٩٩، ص ٢٤٥-٢٤٦، مفهوماً۔

②.....بستان الواعظین، مجلس فى ذکر المیزان والصراط، ص ٤٢۔

③.....هُجَرَتِ سَيِّدُنَا إِمَامُ أَبُو مُهَمَّدٍ هُوسَيْنُ بْنُ مُهَمَّدٍ بَغْوِي عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस हदीषे पाक की शर्ह में फ़रमाते हैं : “إِهَابٍ (चमड़े)” से बन्दे का दिल मुराद है और हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह बूशन्जी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي के हवाले से नक़ल फ़रमाते हैं कि “इस का मा'ना येह है कि कुरआने पाक हिफ़ज़ करने और इस की तिलावत करने वाले को बरोजे क़ियामत जहन्नम की आग न छूएगी ।” अगर इसे ज़ाहिरी मा'ना पर महमूल किया जाए तो फिर येह ज़मानए रिसालत के साथ ख़ास था ।

(شرح السنة للبيهقي، كتاب فضائل القرآن، باب فى فضل تلاوة القرآن، تحت الحديث: ١١٤٥، ج ٣، ص ٨)

④.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى تعظيم القرآن، فصل فى تنوير موضع القرآن، الحديث: ٢٤٠٠، ج ٢، ص ٥٥٥، مفهوماً۔

⑤.....شعب الايمان للبيهقي، باب فى تعظيم القرآن، فصل فى ارمان تلاوته، الحديث: ٢٠٢٢، ج ٢، ص ٣٥٢، دون اللفظ “تلاوة”۔

⑥.....المجالسة وجواهر العلم، الجزء الاول، الحديث: ١٢، ج ١، ص ٢١۔

﴿10﴾.....दिलों को भी जंग लग जाता है जिस तरह लोहे को जंग लग जाता है। अर्ज की गई :
“या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस की जिला (सफ़ाई) किस चीज़ से होगी ?” इरशाद
फ़रमाया : तिलावते कुरआन और मौत की याद से ।” (1)

﴿11﴾.....“गाने वाली लौंडी का मालिक जितनी तवज्जोह से इसे सुनता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस
से ज़ियादा तवज्जोह कुरआन पढ़ने वाले की तरफ़ फ़रमाता है ।” (2)

17 अक्वाले बुजुगाने दीन :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा बाहिली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “कुरआन पढ़ा करो,
येह लटके हुए कुरआन तुम्हें मुग़लते में न डालें बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस दिल को अज़ाब
न देगा जो कुरआने पाक के लिये बरतन है ।” (3)

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जब तुम हुसूले
इल्म का इरादा करो तो कुरआने पाक में ग़ौरो फ़िक्र करो क्योंकि इस में अव्वलीन व आख़िरीन
का इल्म है ।” (4)

﴿3﴾.....इन्ही से मन्कूल है, फ़रमाते हैं : “कुरआन पढ़ो बेशक तुम्हें इस के हर हर्फ़ के बदले 10
नेकियां दी जाएंगी मैं येह नहीं कहता कि **अल्लाह** एक हर्फ़ है बल्कि “ا” एक हर्फ़, “ل” एक हर्फ़ और
“م” एक हर्फ़ है ।”

﴿4﴾.....मज़ीद फ़रमाते हैं : “तुम में से कोई शख्स अपने आप से कुरआन के मुतअल्लिक़ ही
पूछे अगर वोह कुरआन से महब्बत करता और उसे पसन्द करता है तो वोह **अल्लाह** और उस
के रसूल से महब्बत करता है और अगर कुरआन से महब्बत नहीं करता तो वोह **अल्लाह** और
उस के रसूल से महब्बत नहीं करता ।”

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन अ़ास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “कुरआने पाक की हर
आयते मुबारका जन्नत का एक दर्जा और तुम्हारे घरों का चराग़ है ।”

﴿6﴾.....मज़ीद फ़रमाते हैं : “जिस ने कुरआन पढ़ा उस ने नबुव्वत को अपने दोनों पहलूओं के
दरमियान जम्अ कर लिया मगर येह कि उस की तरफ़ वह्य नहीं की जाती ।”

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعظيم القرآن، فصل في ارمان تلاوته، الحديث: ٢٠١٢، ج ٢، ص ٣٥٣-

②.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب في حسن الصوت بالقرآن، الحديث: ١٣٢٠، ج ٢، ص ١٣١، بتغيير-

③.....المصنف لابن ابى شيبه، كتاب فضائل القرآن، في الوصية بالقرآن.....الخ، الحديث: ٣، ج ٤، ص ١٤٦ -

④.....تذكرة الحفاظ للذهبي، الطبقة الاولى، ابن مسعود الامام الرباني رضى الله عنه.....الخ، ج ١، ص ١٤ -

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जिस घर में कुरआन पढ़ा जाता है वोह अपने रहने वालों पर कुशादा होता है, उस की भलाई क़बीर होती है, उस में फ़िरिश्ते हाज़िर होते और शयातीन उस से निकल जाते हैं और जिस घर में कुरआन नहीं पढ़ा जाता वोह अपने रहने वालों पर तंग हो जाता है, उस की भलाई कम हो जाती है, उस से फ़िरिश्ते निकल जाते और शयातीन आ जाते हैं।”

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَوَّل फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुवा, मैं ने अर्ज़ की : “ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ तेरे नज़दीक कौन सा अमल अफ़ज़ल है जिस के ज़रीए मुक़र्रबीन तेरा कुर्ब हासिल करते हैं ?” इरशाद फ़रमाया : “ऐ अहमद ! वोह मेरा पाक कलाम (कुरआने पाक) है।” मैं ने अर्ज़ की : “ऐ रब्ब عَزَّ وَجَلَّ इसे समझ कर पढ़े या बिग़ैर समझे पढ़े ?” इरशाद फ़रमाया : “समझ कर पढ़े या बिग़ैर समझे।”

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब कुर्ज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “क़ियामत के दिन जब लोग **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ से कुरआन सुनेंगे तो उन्हें ऐसा लगेगा गोया कभी उन्होंने ने कुरआन सुना ही नहीं।”

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : “कुरआन याद करने वाले और इस पर अमल करने वाले को चाहिये कि वोह किसी का मोहताज न हो, न उसे खुलफ़ा से कोई सरोकार हो और न ही इन के इलावा किसी और से बल्कि लोगों को उस का मोहताज होना चाहिये।”

﴿11﴾.....मज़ीद फ़रमाते हैं : “हाफ़िज़े कुरआन इस्लाम का झन्डा उठाने वाला है, उसे चाहिये कि वोह हक्के कुरआन की ता'ज़ीम करते हुए लहवो लअूब, भूलने वालों और लगव काम करने वालों का साथ न दे।”

﴿12﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : “जब बन्दा कुरआन पढ़ता है तो फ़िरिश्ता उस की दोनों आंखों के दरमियान बोसा देता है।”

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन मैमून عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “जिस ने नमाज़े फ़ज़्र के बा'द कुरआने पाक खोला और उस की 100 आयात तिलावत कीं **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उसे तमाम अहले दुन्या के अमल की मिष्ल बुलन्दी अता फ़रमाएगा।”

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन उक़बा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अर्ज़ की : “कुरआने पाक में से कुछ तिलावत कीजिये।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ
ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالنُّكْرِ
الْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾

(پ ۱۴، النحل: ۹۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक **अल्लाह** हुक्म
फ़रमाता है इन्साफ़ और नेकी और रिश्तेदारों के
देने का और मन्अ़ फ़रमाता है बे हयाई और बुरी
बात और सरकशी से तुम्हें नसीहत फ़रमाता है कि
तुम ध्यान करो ।

उस ने अर्ज़ की : “फिर पढ़िये ।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दोबारा पढ़ी तो कहने लगा :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! इस में मिठास है, इस पर ख़ूब सूरती है, इस का निचला हिस्सा
पत्तों वाला, ऊपरी फलदार है और येह किसी इन्सान का कलाम नहीं ।⁽¹⁾

﴿14﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ
की क़सम ! कुरआन से बढ़ कर कोई दौलत नहीं और इस के बा’द कोई फ़ाका नहीं ।”

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : “जिस ने सुब्ह के
वक़्त सूरए ह़श की आख़िरी आयात पढ़ीं फिर उसी दिन मर गया तो उस पर शुहदा की मोहर
लगा दी जाएगी । जिस ने शाम के वक़्त पढ़ी फिर उसी रात मर गया तो उस के लिये भी शुहदा
की मोहर लगा दी जाएगी ।”

﴿16﴾.....हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन अब्दुरहमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “मैं ने एक
आबिद से पूछा : “क्या यहां कोई ऐसा नहीं जिस से तुम्हें उन्स हो ?” तो उन्होंने ने कुरआने पाक
की तरफ़ हाथ बढ़ाया और उसे अपनी गोद में रख कर फ़रमाया : “मुझे इस से उन्स है ।”

﴿17﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم फ़रमाते
हैं : “तीन चीज़ें कुव्वते हाफ़िज़ा में इज़ाफ़ा करती और बलग़म को ख़त्म करती हैं :

(1) मिस्वाक करना (2) रोज़े रखना (3) कुरआने पाक की तिलावत करना ।”

ग़फ़लत से तिलावत करने वालों की मजम्मत :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “कितने ही कुरआन
पढ़ने वाले ऐसे हैं कि कुरआन उन पर ला’नत करता है ।”

हज़रते सय्यिदुना मैसरा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “फ़ासिक़ व फ़ाजिर शख़्स के पेट
में कुरआन अजनबी है ।”

①.....دلائل النبوة للبيهقي، باب اعتراف مشرکی قریش، بما فی کتاب اللہ.....الخ، ج ۲، ص ۱۹۹۔

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَس سرُّهُ التُّورَانِ फ़रमाते हैं : “जब हुफ़फ़ाज़, कुरआन पढ़ने के बा’द **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी करें तो ऐसे हुफ़फ़ाज़ को फ़िरिश्ते बुतों के पुजारियों से पहले पकड़ेंगे ।”

बा’ज उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “जब इब्ने आदम दौराने तिलावत लगव बातों में मशगूल हो कर फिर पढ़ने लगता है तो उसे कहा जाता है कि तुझे हमारे कलाम से क्या वासिता ?”

हज़रते सय्यिदुना इब्ने रमाह رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “कुरआन हिफ़ज़ कर के मुझे बड़ी नदामत हुई क्योंकि मुझे येह बात पहुंची है कि बरोजे क़ियामत हामिलीने कुरआन से वोही सुवाल होगा जो अम्बिया से होगा ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं : “हाफ़िजे कुरआन को इन सिफ़ात से पहचानना चाहिये : रात से जब लोग सो रहे हों, दिन से जब लोग कोताही कर रहे हों, ग़म से जब लोग खुश हों, रोने से जब लोग हंस रहे हों, ख़ामोशी से जब लोग बातें कर रहे हों, अज़िज़ी व इन्किसारी से जब लोग तकब्बुर करते हों । नीज़ हाफ़िजे कुरआन को चाहिये कि वोह ख़ामोशी का पैकर और नर्म मिज़ाज हो, बद अख़्लाक़, झगड़ालू, चीखो पुकार, शोरो गुल करने वाला और गुसीला न हो ।” हदीषे मुबारका में है कि “इस उम्मत के अक़षर कुरा मुनाफ़िक़ होंगे ।” (1)

एक रिवायत में है कि “कुरआन पढ़ो येह तुम्हें नाफ़रमानी से रोकेगा, अगर तिलावते कुरआन तुम्हें नाफ़रमानी से न रोके तो तुम ने कुरआन पढ़ा ही नहीं ।” (2)

एक रिवायत में है कि “जिस ने कुरआन के ह़राम को ह़लाल जाना उस का कुरआन पर ईमान नहीं ।” (3)

एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ से मन्कूल है कि “बा’ज अवकात बन्दा एक सूरत शुरूअ करता है तो उसे पूरी पढ़ लेने तक फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए रहमत करते हैं और कभी बन्दा एक सूरत शुरूअ करता है तो उसे पूरी पढ़ लेने तक फ़िरिश्ते उस पर ला’नत भेजते हैं ।” अर्ज़ की गई : “येह कैसे ?” फ़रमाया : “जब वोह उस के ह़लाल को ह़लाल और ह़राम को ह़राम जानता है तो फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए रहमत करते हैं वरना ला’नत भेजते हैं ।”

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ٦٦٢٣-٦٦٢٥، ج ٢، ص ٥٨٤-

②.....مجمع الزوائد، كتاب العلم، باب فيمن لم ينتفع بعلمه، الحديث: ٨٤٠، ج ١، ص ٢٢٠-

③.....سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، الحديث: ٢٩٢٤، ج ٢، ص ٢٢١-

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : “बन्दा कुरआन पढ़ता है और खुद पर ला'नत करता है और उसे मा'लूम भी नहीं होता । वोह पढ़ता है :”

أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ (پ ۲، ۱۸: هود)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अरे ज़ालिमों पर खुदा की ला'नत ।

हालां कि वोह खुद पर (या किसी और पर) जुल्म करने वाला होता है और पढ़ता है :

لَعْنَتُ اللَّهِ عَلَى الْكَذِبِينَ (پ ۳، ۱: آل عمران)

तर्जमए कन्जुल ईमान : झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत ।

हालांकि वोह झूटों में से होता है ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى ने कुरा से मुख़ातिब हो कर फ़रमाया : “तुम ने क़िराअते कुरआन को मन्ज़िलें और रात को ऊंट मुक़र्र कर लिया है जिस पर सुवार हो कर अपनी मन्ज़िलें तै करते हो जब कि तुम से पहले के लोग रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के पैग़ाम ब सूरते रसाइल देखते तो रात को इन में ग़ौरो फ़िक्क करते और दिन में इन्हें खुद पर नाफ़िज़ करते ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “कुरआन लोगों पर इस लिये नाज़िल किया गया है ताकि इस के मुताबिक़ अमल करें लेकिन लोगों ने इस के पढ़ने पढ़ाने को अमल ठहरा लिया है बेशक तुम में से कोई शख्स सूरए फ़ातिहा से आख़िर तक कुरआन पढ़ लेता है उस में से कोई हर्फ़ भी नहीं छोड़ता लेकिन इस पर अमल छोड़ देता है ।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर और हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी रिवायत में है कि “हम ने एक ज़माना गुज़ारा है कि हम में से हर एक को ईमान कुरआन से पहले दिया गया, हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर जब कोई सूरत नाज़िल होती तो वोह उस के हलाल व हराम, अवामिर व नवाही को सीख लेता और जहां तवक्कुफ़ करना मुनासिब होता वहां तवक्कुफ़ करता, फिर हम ने ऐसे लोगों को भी देखा कि जिन में से किसी को ईमान से पहले कुरआन दिया गया वोह सूरए फ़ातिहा से आख़िर तक पूरा कुरआने पाक पढ़ लेता लेकिन इस के अवामिर व नवाही को नहीं जानता और न येह जानता कि कहां तवक्कुफ़ करना मुनासिब है । वोह इसे रद्दी खजूरों की तरह बिखेरता चला जाता है ।”(1)

1.....السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب البيان انه انما قيل يومهم اقرؤهم، الحديث: ۵۲۹۰، ج ۳، ص ۱۷۱۔

क्या तेरे नज़दीक मेरा कोई मर्तबा ही नहीं ?

तौरात शरीफ में है कि (अल्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :) ऐ बन्दे ! क्या तुझे मुझ से हया नहीं आती ? कि तू रास्ते में चल रहा होता है, तेरे पास तेरे किसी भाई का ख़त आता है तो तू रास्ते से हट जाता और बैठ कर उस के एक एक हर्फ़ को ग़ौर से पढ़ता है यहां तक कि उस का कोई लफ़्ज़ नहीं छोड़ता जब कि येह कुरआन मेरी किताब है, मैं ने तेरी तरफ़ नाज़िल की, देख ! इस में तेरे लिये कितनी तफ़सील है, मैं ने कितनी बार तुझे समझाया ताकि तू इस के तूल व अर्ज़ में ग़ौरो ख़ौज़ करे फिर भी तू इस से ए'राज़ करता है । क्या मेरा मर्तबा तेरे नज़दीक तेरे भाइयों से भी कम है ? ऐ मेरे बन्दे ! तेरे पास तेरा कोई भाई बैठता है तो तू उस की तरफ़ मुकम्मल तौर पर मुतवज्जेह होता है और अपने दिल को मुकम्मल तौर पर उस की बातों की तरफ़ मुतवज्जेह करता है अगर इस दौरान कोई शख्स बात करे या कोई उस की बातों में ख़लल डाले तो तू उसे इशारे से ख़ामोश कर देता है, अब जब कि मैं तेरी तरफ़ मुतवज्जेह और तुझ से कलाम कर रहा हूं तो तेरी हालत येह है कि तेरा दिल मुझ से ए'राज़ करने वाला है क्या तू ने मुझे अपने भाइयों से भी कम मर्तबा समझ लिया है ?



.....अच्छी आदतों की नसीहत.....

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 43 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم की वसियतें” सफ़हा 27 पर हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने अपने एक शागिर्द को यूं नसीहत फ़रमाई : “तुम हर शख्स को उस के मर्तबे के लिहाज़ से इज़्ज़त देना, शुरफ़ा की इज़्ज़त और अहले इल्म की ता'ज़ीम व तौकीर करना, बड़ों का अदब व एहतिराम और छोटों से प्यार व महब्बत करना, आम लोगों से तअल्लुक़ काइम करना, फ़ासिक़ व फ़ाजिर को ज़लील व रुस्वा न करना, अच्छे लोगों की सोहबत इख़्तियार करना, सुल्तान की इहानत करने से बचना, किसी को भी हक़ीर न समझना, अपने अख़्लाक़ व आदात में कोताही न करना, किसी पर अपना राज़ ज़ाहिर न करना, बिग़ैर आज़माए किसी की सोहबत पर भरोसा न करना, किसी ज़लील व घटया शख्स की ता'रीफ़ न करना ।”

बाब नम्बर 2 : तिलावत के ग़ाहिशी आदाब

﴿1﴾.....करिये कुरआन की हालत :

तिलावत करने वाले को चाहिये कि बा वुजू हो, अदब व सुकून की हालत में क़िल्बा रू हो कर सर झुकाए खड़ा या बैठा हो, न चोकड़ी मार कर बैठे, न टेक लगा कर और न ही मुतकब्बिराना अन्दाज़ में बैठे बल्कि यूँ बैठे जैसे उस्ताज़ के सामने बैठता है। सब से अफ़ज़ल हालत येह है कि मस्जिद में नमाज़ में खड़े हो कर क़िराअत करे और येह सब से अफ़ज़ल अमल है। अगर बिग़ैर वुजू बिस्तर पर लैटे क़िराअत की तो इस में भी फ़ज़ीलत है मगर कम है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद में इरशाद फ़रमाता है :

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيًّا وَتُعَوِّذُوا عَلَى
جُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ع (پ مال عمران: 191)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : जो **अल्लाह** की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे और आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश में गौर करते हैं।

इस आयते मुबारका में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम की ता'रीफ़ फ़रमाई मगर खड़े हो कर ज़िक्र करने वालों को मुक़द्दम किया फिर बैठ कर और लैट कर ज़िक्र करने वालों का तज़क़िरा किया।

हर हर्फ़ के बदले 100 नेकियां :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं :
“जो नमाज़ में खड़े हो कर कुरआन की तिलावत करे उस के लिये हर हर्फ़ के बदले 100 नेकियां हैं और जो बैठ कर तिलावत करे उस के लिये हर हर्फ़ के बदले 50 नेकियां हैं और जो नमाज़ के इलावा बा वुजू तिलावत करे उस के लिये 25 नेकियां हैं और जो बिग़ैर वुजू तिलावत करे उस के लिये 10 नेकियां हैं और रात का क़ियाम अफ़ज़ल है क्यूंकि इस वक़्त दिल ज़ियादा फ़ारिग़ होता है।”

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “दिन को क़षरत से सजदे और रात को तवील क़ियाम अफ़ज़ल है।”

﴿2﴾.....क़िराअत की मिक्दार :

तिलावत की कमी और ज़ियादती के सिलसिले में कुरा की अ़ादात मुख़्तलिफ़ हैं। बा'ज़ दिन और रात में एक बार पूरा कुरआन पढ़ लेते हैं। बा'ज़ दो बार, बा'ज़ तीन बार और बा'ज़ महीने में एक बार ख़त्म करते हैं लेकिन मिक्दार के सिलसिले में सब से बेहतर बात वोह है जो

हुजूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाई । चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया : “जिस ने तीन दिन से कम में कुरआन पढ़ा उस ने समझा नहीं।” (1) (2)

येह इस लिये फ़रमाया क्यूंकि ज़ियादा पढ़ना ठहर ठहर कर पढ़ने से मानेअ है ।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने एक शख्स को तेज़ी से कुरआन पढ़ते देखा तो फ़रमाया : “इस ने न तो कुरआन पढ़ा न ख़ामोश रहा ।”

नीज़ हुजुरे अन्वर, शाफ़ेअ महशर ﷺ ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا को हर सात दिन में कुरआन ख़त्म करने का हुक्म दिया। (3) इसी तरह सहाबए किराम رَضُوا اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ का एक गुरौह हर जुमुअ को कुरआन ख़त्म करता था जैसे अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उष्मान, हज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन षाबित, हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद और हज़रते सय्यिदुना उबय्य बिन का'ब (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمْ)

ख़त्मे कुरआन के सिलसिले में दर्जात :

ख़त्मे कुरआन के सिलसिले में चार दर्जात हैं : (1)....दिन और रात में पूरा कुरआन ख़त्म करना इसे एक गुरौह ने मकरूह करार दिया । (2).....महीने में एक ख़त्म करना यूं कि हर रोज़ एक सिपारा पढ़ा जाए, गोया येह कमी में मुबालगा है जैसा कि मा क़ब्ल दर्जा क़षरत में मुबालगा है । इन दोनों के दरमियान दो मोअतदिल दर्जात हैं : (3)....हफ़्ते में एक बार ख़त्म करना (4).....हफ़्ते में दो बार ख़त्म करना या'नी तक़रीबन तीन दिन में ख़त्म हो और ज़ियादा

①....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِكَةِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 270 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : जो शख्स हमेशा तीन दिन से कम में ख़त्मे कुरआन किया करे, वोह जल्दी तिलावत की वजह से न तो अल्फ़ाज़े कुरआन सहीह तौर पर समझ सकेगा, और न इस के ज़ाहिरी मा'ने में ग़ौर कर सकेगा, ख़याल रहे कि येह हुक्म आम मुसलमानों के लिये है कि वोह अगर बहुत जल्दी तिलावत करें, तो ज़बान लिपट जाती है हर्फ़ सहीह अदा नहीं होते ख़वास का हुक्म और है खुद हुजूर ﷺ तहज्जुद की एक एक रकअत में पांच पांच छे छे पारे पढ़ लेते थे । हज़रते उष्माने ग़नी ने एक रात में ख़त्मे कुरआन किया है, दावूद عَلَيْهِ السَّلَام चन्द मिनट में ज़बूर ख़त्म कर लेते थे, हज़रते अली क़ुम लहज़े क़रिब घोड़ा कसने से पहले ख़त्मे कुरआन कर लेते थे ।

②.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب في كم يستحب يختم القرآن، الحديث: 1324، ج 2،

ص 135، بتقديم وتأخر-

③.....صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب النهي عن صوم الدهر.....الخ، الحديث: 159، ص 585-

पसन्दीदा येह है कि एक ख़त्म रात में करे और एक ख़त्म दिन में, दिन का ख़त्म पीर शरीफ़ की नमाज़े फ़ज़्र की दो रकअतों में या इन के बा'द हो और रात का ख़त्म जुमुआ की रात मग़रिब की दो रकअतों में या इन के बा'द हो ताकि दिन और रात के आगाज़ का ख़त्मे कुरआन से इस्तिक़बाल करे क्यूंकि अगर कोई शख्स रात को ख़त्मे कुरआन करे तो सुब्ह तक फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए रहमत करते हैं और अगर दिन को ख़त्म करे तो शाम तक फ़िरिश्ते दुआए रहमत करते हैं यूं इन की बरकत पूरे दिन रात को शामिल हो जाती है।

ख़ुलासए कलाम :

मिक्दारे क़िराअत में तफ़्सील येह है कि अगर तिलावत करने वाला आबिदीन और अमल की राह पर चलने वालों में से है तो हफ़्ते में दो से कम बार ख़त्म न करे और अगर क़ल्बी आ'माल और फ़िक्क के ज़रीए राहे सुलूक तै करता है या इल्म फैलाने में मशगूल है तो हफ़्ते में एक बार पर इक्तिफ़ा करने में हरज नहीं और अगर कुरआन के मआनी में ग़ौरो फ़िक्क करता है तो महीने में एक बार पर इक्तिफ़ा करे क्यूंकि उसे बार बार पढ़ने और सोचने की ज़ियादा ज़रूरत है।

﴿3﴾....मिक्दारे क़िराअत की तक्सीम :

जो शख्स हफ़्ते में एक बार ख़त्म करे वोह कुरआने पाक को सात हिस्सों में तक्सीम कर ले कि सहाबए किराम رَضُواْ اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ ने भी कुरआने पाक को हिस्सो में तक्सीम किया।⁽¹⁾ चुनान्वे, मरवी है कि “अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना इषमाने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ जुमुआ की रात सूरए बक़रह से सूरए माइदह तक पढ़ते, हफ़्ते की रात सूरए अन्आम से सूरए हूद तक तिलावत करते, इतवार की रात सूरए यूसुफ़ से सूरए मरयम तक तिलावत फ़रमाते, पीर की रात सूरए ताहा से सूरए طّٰسَم तक पढ़ते, मंगल की रात सूरए अन्कबूत से सूरए ص तक तिलावत करते, बुध की रात सूरए तन्ज़ील से सूरए रहमान तक तिलावत फ़रमाते और जुमा'रात की रात ख़त्म करते।”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ तिलावत को कई अक्साम में तक्सीम कर लेते थे लेकिन उन की येह तरतीब न थी। मन्कूल है कि कुरआने करीम की मन्ज़िलें सात हैं। पहली मन्ज़िल में तीन सूरतें हैं, दूसरी में पांच, तीसरी में सात, चौथी में नव, पांचवीं में ग्यारह, छटी में तेरह जब कि सातवीं मन्ज़िल में सूरए ق से आख़िर तक (छियासठ सूरतें) हैं।

①.....سنن ابی داود، کتاب شهر رمضان، باب تخریب القرآن، الحدیث: ۱۳۹۳، ج ۲، ص ۷۹۔

सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने इसे यूँही तक्सीम किया हुआ था और इसी तरह तिलावत करते थे, नीज़ इस सिलसिले में हदीषे पाक भी मरवी है।⁽¹⁾ येह तब की बात है जब इसे पांच, दस या तीस हिस्सों में तक्सीम नहीं किया गया था येह तक्सीम बा'द की है।

﴿4﴾.....किताबते कुरआन के आदाब :

कुरआने पाक को वाजेह तौर पर और खूब सूरती से लिखना मुस्तहब है, इस पर नुक्ते और सुख अलामात वगैरा लगाने में कोई हरज नहीं क्योंकि येह जीनत, वजाहत और पढ़ने वालों को गलती से बचाना है।

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी और हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا पांच या दस या तीस पारों की तक्सीम को नापसन्द करते थे।

हज़रते सय्यिदुना इमाम शा'बी और हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम नखई (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا) से सुख नुक्ते लगाने और इस पर उजरत लेने की कराहत मरवी है, वोह फ़रमाया करते थे कि “कुरआन को साफ़ रखो।” इन के मुतअल्लिक़ येही गुमान किया जा सकता है कि उन्होंने ने इस दरवाजे को खोलना इस खौफ़ से नापसन्द किया कि कहीं येह चीज़ ज़ियादतियों की तरफ़ न ले जाए, लिहाज़ा इन्होंने ने इस दरवाजे को बन्द करने और कुरआन को तब्दीली से बचाने के ज़ब्बे के तहत ऐसा किया, लेकिन अगर इस से कोई ममनूअ बात लाज़िम न आए और उम्मत इत्तिफ़ाक़ करे कि इसे (नुक्ते वगैरा लगाने) से कुरआन की मा'रिफ़त बढ़ती है तो इस में कोई हरज नहीं, इस का महज़ नया होना मुमानअत की दलील नहीं कितने ही नए काम अच्छे हैं जैसा कि तरावीह में जमाअत काइम करने के मुतअल्लिक़ मन्कूल है कि येह अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जारी की और येह बिदअते हसना है और बिदअते मज़मूमा वोह होती है जो सुन्नते क़दीमा के मुख़ालिफ़ हो या उस की तब्दीली का सबब बने।

एक बुजुर्ग का कौल है कि “मैं नुक्तों वाले कुरआन से पढ़ लेता हूँ लेकिन खुद अपने लिये नुक्ते नहीं लगाता।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम औज़ाई सय्यिदुना इमाम यहूया बिन अबी कषीर (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا) से नक्ल करते हैं कि कुरआने पाक मुसाहिफ़ में नुक्तों वगैरा से ख़ाली था, सब से पहले इस में ب और ت पर नुक्ते लगाए गए और उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने फ़रमाया कि इस में कोई

हरज नहीं क्यूँकि येह उस का नूर है फिर इन्हों ने आयात के इख़िताम पर बड़े बड़े नुक्ते लगाए और फ़रमाया इस में भी कोई हरज नहीं इस के ज़रीए आयत ख़त्म होने की पहचान होती है। फिर आगाज़ व इख़िताम की अलामात लगाई गई।

हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र हुज़ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلَى फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى से मुसाहिफ़ पर सुख़ नुक्ते लगाने के मुतअल्लिक़ पूछा तो इन्हों ने फ़रमाया : “येह नुक्ते क्या हैं ?” मैं ने अर्ज़ की : “कलिमे को अरबी में ए’राब लगाते हैं।” तो फ़रमाया : “कुरआन पर ए’राब लगाने में कोई हरज नहीं।”

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मेहरान हज़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “मैं हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने सीरीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُسِين की खिदमत में हाज़िर हुवा तो इन्हें नुक्तों वाले कुरआन से तिलावत करते देखा हालांकि आप नुक्ते लगाने को नापसन्द करते थे।”

कुरआन पर ए’राब किस ने लगवाए ?

मन्कूल है कि येह (या’नी नुक्ते व ए’राब वगैरा लगाने का) काम हज़्जाज बिन यूसुफ़ ने किया। इस ने कुराए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام को जम्अ किया यहां तक कि उन्हों ने कुरआन के कलिमात और हुरूफ़ को शुमार किया और इस के अजज़ा को बराबर कर के तीस हिस्सों में तक्सीम किया और कुछ और तक्सीम भी कीं।

﴿5﴾.....तरतीले कुरआन के आदाब :

कुरआने पाक में तरतील (या’नी ठहर ठहर कर पढ़ना) मुस्तहब है, अज़ क़रीब हम बयान करेंगे कि तिलावत से मक्सूद ग़ौरो फ़िक्र करना है और ठहर ठहर कर पढ़ना इस पर मददगार है इसी लिये उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़िराअत की ता’रीफ़ करते हुए फ़रमाया : “एक एक हर्फ़ अलग अलग पढ़ते थे।” (1)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “मुझे सूरए बक़रह और आले इमरान तरतील और ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ना बिगैर तरतील के पूरा कुरआन पढ़ने से ज़ियादा पसन्द है।” आप से येह भी मन्कूल है कि “मुझे सूरए ज़िलज़ाल और क़ारिअह तरतील से ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ना सूरए बक़रह और आले इमरान बिगैर तरतील जल्दी जल्दी पढ़ने से ज़ियादा पसन्द है।”

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد से नमाज़ पढ़ने वाले दो आदमियों के मुतअल्लिक पूछा गया, इन का क़ियाम एक जैसा था मगर एक ने फ़क़त सूरए बक़रह पढ़ी जब कि दूसरे ने पूरा कुरआन पढ़ा तो आप ने फ़रमाया : “दोनों का अज़्र एक जैसा है।”

जान लीजिये कि तरतील मुस्तहब है न कि सिर्फ़ ग़ौरो फ़ि़र करना इस लिये कि अज़मी शख़्स जो कुरआन का मा'ना नहीं समझता उस के लिये भी क़िराअत में तरतील मुस्तहब है क्यूंकि इस में इज़ज़त व एह़तिराम ज़ियादा है नीज़ येह जल्दी पढ़ने की ब निस्बत दिल में ज़ियादा तापीर का बाइष बनती है।

﴿6﴾.....रोना :

कुरआने पाक पढ़ते हुए रोना मुस्तहब है कि मुस्तफ़्र जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कुरआन पढ़ो और रोओ अगर तुम्हें रोना न आए तो रोने जैसी सूरत बना लो।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “जो शख़्स कुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से नहीं पढ़ता वोह हम में से नहीं।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना सालेह़ मुर्ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِي फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सामने कुरआने पाक की तिलावत की तो आप ने इस्तिफ़सार फ़रमाया : “ऐ सालेह़ ! येह तिलावते कुरआन है तो रोना कहां है ?”

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “जब तुम **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ के लिये आयते सजदा तिलावत करो तो सजदा करने में जल्दी न करो यहां तक कि रोने लगो, अगर तुम में से किसी की आंख न रोए तो उस के दिल को रोना चाहिये।”

ब तकल्लुफ़ रोने का तरीक़ा : येह है कि दिल में ग़म को हाज़िर करे कि इस से रोना पैदा होता है। हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कुरआन ग़म के साथ नाज़िल हुवा, लिहाज़ा जब तुम इस की क़िराअत करो तो ग़म ज़ाहिर करो।”⁽³⁾

सब से बड़ी मुसीबत :

ग़म की कैफ़ियत पैदा करने का तरीक़ा : येह है कि इस में वारिद तम्बीहात व वर्इदात और अहद व पैमान को याद करे, फिर इस के अवामिर व नवाही के मुआमले में अपनी

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب في حسن الصوت بالقرآن، الحديث: ١٣٣٤، ج ٢، ص ١٢٩، بتغيرٍ۔

②.....صحيح البخارى، كتاب التوحيد، باب قول الله تعالى: واسروا قولكم.....الخ، الحديث: ٤٥٢٤، ج ٢، ص ٥٨٦۔

③.....مجمع الزوائد، كتاب التفسير، باب القراءة بالحزن، الحديث: ١١٦٩٣، ج ٤، ص ٣٥١، مفهوماً۔

कोताहियों में ग़ौरो फ़िक्र करे तो बिल यकीन वोह ग़मगीन होगा और रोने लगेगा। अगर उस पर ग़म और रोने की कैफ़ियत तारी न हो जैसे साफ़ दिल वालों पर तारी होती है तो उसे न रोने और ग़मगीन न होने पर रोना चाहिये क्यूंकि येह सब से बड़ी मुसीबत है।

﴿7﴾.....आयात के हक़ की रिआयत के आदाब :

जब आयते सजदा तिलावत करे तो सजदा करे, इसी तरह जब किसी दूसरे से आयते सजदा सुने तो जब तिलावत करने वाला सजदा करे येह भी सजदा करे और बा वुजू सजदा करे। कुरआने पाक में 14 सजदे हैं। सूरए हज़ में दो सजदे हैं ⁽¹⁾, सूरए ص में सजदा नहीं ⁽²⁾।

सजदए तिलावत का तरीका : ⁽³⁾

इस की कम अज़ कम हद येह है कि पेशानी ज़मीन पर रखे और कामिल सजदा येह है कि तकबीर कह कर सजदा करे और तिलावत कर्दा आयत के मुनासिब दुआ मांगे। मिषाल के तौर पर येह आयते मुबारका पढ़े :

اٰمٰیْیُوْمُنْ بِاٰیٰتِنَا الَّذِیْنَ اِذَا ذُکِّرُوْا بِهَا
خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا
یَسْتَكْبِرُوْنَ ^(الحجۃ ١٥) (پ ٢١، السجدة: ٥)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हमारी आयतों पर वोही ईमान लाते हैं कि जब वोह उन्हें याद दिलाई जाती हैं सजदे में गिर जाते हैं और अपने रब्ब की ता'रीफ़ करते हुए उस की पाकी बोलते हैं और तकब्बुर नहीं करते। ⁽⁴⁾

①.....अहनाफ़ के नज़दीक : सूरए हज़ में एक सजदा है। पहली जगह जहां सजदे का ज़िक्र है। सूरए हज़ की आखिरी आयत जिस में सजदे का ज़िक्र है इस के पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब नहीं कि इस में सजदे से मुराद नमाज़ का सजदा है। (बहारे शरीअत, जि.1 स.726-729)

②.....अहनाफ़ के नज़दीक : सूरए ص में सजदा है। (बहारे शरीअत, जि. 1 स. 727)

③....अहनाफ़ के नज़दीक : सजए तिलावत का मसनून तरीका येह है कि खड़ा हो कर **अल्लाहु** अकबर कहता हुवा सजदे में जाए और कम से कम तीन बार **سُبْحٰنَ رَبِّیْ اَلاَعْلٰی** कहे, फिर **अल्लाहु** अकबर कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार **अल्लाहु** अकबर कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सजदे में जाना और सजदे के बा'द खड़ा होना येह दोनों कियाम मुस्तहब है। (बहारे शरीअत, जि.1 स.731)

नोट :-सजदए तिलावत के तफ़्सीली अहक़ाम जानने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब बहारे शरीअत जिल्द अब्वल सफ़हा 726 ता 739 का या

49 सफ़हात पर मुश्तमिल मतबूआ रिसाला "तिलावत की फ़ज़ीलत" का मुतालआ कीजिये।

④...येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है। (बहारे शरीअत, जि.1 स.728)

तो यूँ दुआ करे : اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ السَّاجِدِينَ لَوَجْهِكَ الْمُسَبِّحِينَ بِحَمْدِكَ وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْتَكْبِرِينَ عَنْ أَمْرِكَ أَوْ عَلَى أَوْلِيَاكَ
या'नी ऐ **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ मुझे अपनी रिज़ा के लिये सजदा करने वालों में से बना जो तेरी हम्द के साथ तेरी पाकी बयान करते हैं और मैं इस से पनाह मांगता हूँ कि तेरे हुक्म और तेरे औलिया से तकब्बुर करने वालों में से हो जाऊँ ।

जब इस आयते मुबारका की तिलावत करे :

وَيَخْرُؤْنَ لِلْأَذْقَانِ يَبْكُونَ وَيَزِيدُهُمْ خُشُوعًا ۝ (پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۰۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और ठोड़ी के बल गिरते हैं रोते हुए और येह कुरआन उन के दिल का झुकना बढ़ाता है । (1)

तो यूँ दुआ मांगे : اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الْبَاكِينَ الْبَائِكِ الْخَائِعِينَ لَكَ يَا'नी : ऐ **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ मुझे उन लोगों में से कर दे जो तेरी बारगाह में रोने वाले और तेरे लिये खुशूअ करने वाले हैं ।

इसी तरह हर सजदे में करे । सजदए तिलावत में नमाज़ की शराइत का पाया जाना जरूरी है जैसे सित्रे औरत, इस्तिक़बाले क़िब्ला, तहारत । जो शख्स आयते सजदा सुनते वक़्त बा वुजू न हो तो जब बा वुजू हो तब सजदा कर ले ।

सजदए तिलावत के कामिल होने के बारे में एक कौल येह भी है कि तक्बीरे तहरीमा के लिये हाथों को उठाते हुए तक्बीर कहे, फिर सजदे के लिये झुकते हुए तक्बीर कहे, फिर सजदे से उठते हुए तक्बीर कहे, फिर सलाम फेरे । बा'ज ने तशह्हुद का भी इज़ाफ़ा किया है । (2)

इस की कोई अस्ल नहीं सिवाए इस के कि इसे सुजूदे नमाज़ पर कियास किया हो और येह कियास बईद अज़ अक्ल है, क्योंकि सिर्फ़ सजदे का हुक्म वारिद हुवा है इस लिये इसी की पैरवी की जाएगी और झुकने के लिये तक्बीर कहना इब्तिदा के ज़ियादा करीब है इस के इलावा दीगर कुयूदात लगाना दुरुस्त नहीं ।

मुक्तदी इमाम के सजदए तिलावत करते वक़्त सजदा करे, अगर मुक्तदी खुद आयते सजदा पढ़े तो सजदा न करे ।

﴿8﴾.....किराअत शुरूअ करने के आदाब :

किराअत की इब्तिदा यूँ करे :

أَعُوذُ بِاللَّهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيَاطِينِ وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ

①.....येह आयते सजदा है और आयते सजदा पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है । (माखूज़ अज़ बहारे शरीअत, जि.1 स.728)

②....अहनाफ़ के नज़दीक : सजदए तिलावत के लिये **اللَّهُ** अक्बर कहते वक़्त न हाथ उठाना है और न इस में तशह्हुद है न सलाम । (बहारे शरीअत, जि.1 स.728)

या'नी में शैतान मरदूद से खुदाए समीअ व बसीर की पनाह मांगता हूं, ऐ मेरे रब्ब ! तेरी पनाह शयातीन के वस्वसों से और ऐ मेरे रब्ब ! तेरी पनाह कि वोह मेरे पास आए।

नीज सूरए नास और सूरए फातिहा पढ़े और जब किराअत से फरागि हो तो यूं कहे :
 صَدَقَ اللَّهُ تَعَالَى وَبَلَغَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْهَمَهُمْ أَنْفَعَنَا بِهِ وَبَارَكَ لَنَا فِيهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَاسْتَغْفِرُ اللَّهُ الْحَيَّ الْقَيُّومَ
 या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सच फरमाया और रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने सच पहुंचाया। ऐ **अल्लाह** हमें इस से नफ़अ अता फरमा और हमें इस में बरकत अता फरमा, सब खूबिया **अल्लाह** को जो मालिक सारे जहान वालों का और मैं **अल्लाह** की पनाह मांगता हूं जो जिन्दा और काइम रखने वाला है।

किराअत के दौरान जब आयते तस्बीह पर पहुंचे तो तस्बीह और तक्बीर कहे, जब दुआ व इस्तिग़फ़ार वाली आयत पर पहुंचे तो दुआ व इस्तिग़फ़ार करे, जब उम्मीद (व रहमत) वाली आयत पर पहुंचे तो सुवाल करे, जब खौफ़ वाली आयत पर पहुंचे तो पनाह मांगे और उसे इख्तियार है कि येह काम अपनी ज़बान से करे या दिल से। आयते तस्बीह पर पहुंचे तो यूं कहे :
 سُبْحَانَ اللَّهِ نَعُوذُ بِاللَّهِ اللَّهُمَّ ارْزُقْنَا اللَّهُمَّ ارْحَمْنَا
 या'नी **अल्लाह** के लिये पाकी है, हम **अल्लाह** से पनाह मांगते हैं, ऐ **अल्लाह** हमें रिज़क अता फरमा। ऐ **अल्लाह** हम पर रहम फरमा।

हज़रते सय्यिदुना हुजैफा बिन यमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फरमाते हैं : मैं ने हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इक्तिदा में नमाज़ अदा की आप ने सूरए बकरह की तिलावत शुरूअ फरमाई जब आयते रहमत की तिलावत करते तो रहमत का सुवाल करते, जब आयते अज़ाब से गुज़रते तो पनाह तलब करते, जब आयते तन्ज़िया (या'नी ऐसी आयत जिस में **अल्लाह** की पाकी बयान की गई हो) की तिलावत करते तो **سُبْحَانَ اللَّهِ** कहते।⁽¹⁾ जब फ़ारिग हुए तो वोही दुआ मांगी जो ख़त्मे कुरआन के वक़्त करते थे :

اللَّهُمَّ ارْحَمْنِي بِالْقُرْآنِ وَاجْعَلْهُ لِي إِمَامًا وَنُورًا وَهُدًى
 وَرَحْمَةً اللَّهُمَّ ذَكِّرْنِي مِنْهُ مَا نَسِيتُ وَعَلِّمْنِي مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِي تِلَاوَتَهُ آتَاءَ اللَّيْلِ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِي حُجَّةً يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ
 या'नी ऐ **अल्लाह** कुरआन के ज़रीए मुझे पर रहम फरमा, इसे मेरे लिये इमाम, नूर, हिदायत और रहमत बना, ऐ **अल्लाह** इस में से जो मैं भूल चुका हूं वोह मुझे याद दिला दे और जिस से मैं ला इल्म हूं वोह मुझे सिखा दे और मुझे रात की घड़ियों और दिन के अतराफ़ में (या'नी सुबह शाम) इस की तिलावत की तौफ़ीक़ अता फरमा।

1.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب تطويل القراءة.....الخ، الحديث: 442، ص 391، مفهوماً۔

9).....बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना :

इस में कोई शक नहीं कि इतनी आवाज़ से क़िराअत करे कि खुद सुन ले क्यूंकि क़िराअत इस चीज़ का नाम है कि हुरूफ़ को आवाज़ के साथ वाज़ेह तौर पर अदा करे, लिहाज़ा आवाज़ का होना ज़रूरी है, क़िराअत की कम अज़ कम मि़क़दार येह है कि क़िराअत करने वाला खुद सुन ले अगर खुद भी न सुने तो उस की नमाज़ सहीह नहीं। इतनी बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना कि दूसरा भी सुन ले येह एक ए'तिबार से पसन्दीदा है और एक ए'तिबार से मकरूह।

आहिस्ता आवाज़ से क़िराअत मुस्तहब :

हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “सिरी (या'नी आहिस्ता) क़िराअत की बुलन्द आवाज़ से क़िराअत पर इतनी फ़ज़ीलत है जितनी पोशीदा सदक़े की अलानिया सदक़े पर।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “अलानिया कुरआन पढ़ने वाला अलानिया सदक़ा देने वाले की तरह है और आहिस्ता कुरआन पढ़ने वाला खुफ़या सदक़ा देने वाले की तरह है।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “पोशीदा अमल अलानिया अमल पर 70 गुना ज़ियादा फ़ज़ीलत रखता है।”⁽³⁾

एक रिवायत में है कि “बेहतररीन रिज़क़ वोह है जो काफ़ी हो और बेहतररीन ज़िक़र वोह है जो पोशीदा हो।”⁽⁴⁾

हदीषे पाक में है कि “मग़रिब और इशा के दरमियान की क़िराअत में तुम एक दूसरे से आवाज़ बुलन्द न करो।”⁽⁵⁾

हिक्कयत :- हाकिमे मदीना की अज़िज़ी :

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ ने एक रात मस्जिदे नबवी में अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ को नमाज़ में

①.....قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج 1، ص 110۔

②.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءة.....الخ، الحديث: 1333، ج 2، ص 56۔

③.....قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج 1، ص 110۔

شعب الايمان للبيهقي، باب في محبة الله، فصل في اقامة ذكر الله، الحديث: 556، ج 1، ص 408، مفهوماً۔

④.....المستدلل امام احمد بن حنبل، مسند ابی اسحاق سعد بن ابی وقاص، الحديث: 1244، ج 1، ص 362، بتقديم وتأخر۔

⑤.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءة في صلاة الليل، الحديث: 332، ج 2، ص 25، باختصار۔

قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج 1، ص 110۔

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करते सुना, आप की आवाज़ भी अच्छी थी तो अपने गुलाम से फ़रमाया : “इस नमाज़ी से कहो कि आवाज़ आहिस्ता करे ।” गुलाम ने अर्ज़ की : “मस्जिद हमारी नहीं इस में दूसरे लोगों का भी हक़ है ।” तो हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने बुलन्द आवाज़ से फ़रमाया : “ऐ नमाज़ी ! अगर नमाज़ से रिज़ाए इलाही मक्सूद है तो अपनी आवाज़ पस्त कर ले और अगर लोगों की रिज़ा चाहता है तो **اَبْصَاهُ** عَزَّوَجَلَّ के हां येह तेरे कुछ काम न आएगी ।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَزِيز ने अपनी आवाज़ आहिस्ता कर ली, नमाज़ मुख़्तसर की, सलाम फैरा और ख़ामोशी से तशरीफ़ ले गए हालांकि उस वक़्त आप हाकिमे मदीना थे ।

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत मुस्तहब :

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत के मुस्तहब होने पर येह रिवायत दलालत करती है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रात की नमाज़ में सहाबए किराम اَجْمَعِينَ के एक मज्मअ को बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करते सुना तो इसे (या'नी उन के बुलन्द आवाज़ से पढ़ने को) दुरुस्त क़रार दिया ।⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम रात को उठ कर नमाज़ पढ़ो तो बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करो क्यूंकि फ़िरिशते और घर में रहने वाले जिन्नात इस क़िराअत को सुनते और इसी की मिष्ल नमाज़ पढ़ते हैं ।”⁽²⁾

एक रात प्यारे मुस्लिम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने तीन सहाबए किराम اَجْمَعِينَ के पास से गुज़रे, उन के अहवाल मुख़्तलिफ़ थे । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास से गुज़रे जो आहिस्ता क़िराअत कर रहे थे, उन से आहिस्ता पढ़ने के मुतअल्लिक़ इस्तिफ़सार फ़रमाया तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “मैं जिस की बारगाह में मुनाजात कर रहा हूं वोह सुन रहा है ।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास से गुज़रे जो बुलन्द आवाज़ से क़िराअत कर रहे थे, उन से बुलन्द आवाज़ से क़िराअत के मुतअल्लिक़ इस्तिफ़सार फ़रमाया तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “मैं सोतों को जगाता और शैतान को भगाता हूं ।” हज़रते सय्यिदुना बिलाले हबशी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास से

①.....قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج ١، ص ١٠٠ -

②.....قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج ١، ص ١٠٠ -

गुजरे, वोह कुछ आयात एक सूरत से और कुछ दूसरी से तिलावत कर रहे थे, उन से इस के मुतअल्लिक इस्तिफ़सार फ़रमाया तो उन्होंने ने अर्ज़ की : “मैं तय्यिब के साथ तय्यिब को मिलाता हूं।” तो हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम सब ने अच्छा और दुरुस्त किया।”⁽¹⁾

मजकूरा रिवायात में ततबीक :

आहिस्ता पढ़ना रिया और बनावट से दूर करता है और येह उस के हक़ में अफ़ज़ल है जिसे खुद पर इस का ख़ौफ़ हो और अगर रियाकारी वगैरा का ख़ौफ़ न हो और बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में किसी की नमाज़ में ख़लल न होता हो तो बुलन्द आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल है क्यूंकि इस में अमल ज़ियादा है और इस का फ़ाइदा दूसरों को भी पहुंचता है और दूसरों तक पहुंचने वाली भलाई एक शख्स तक महदूद भलाई से अफ़ज़ल है।

बुलन्द आवाज़ से पढ़ने के फ़वाइद :

बुलन्द आवाज़ से क़िराअत, पढ़ने वाले के दिल को बेदार रखती, इस की फ़िक्र को कुरआन में गोरो फ़िक्र करने की तरफ़ इकठ्ठा करती, उसे इस तरफ़ मुतवज्जेह रखती, नींद को दूर करती, चुस्ती बड़हाती और सुस्ती कम करती है। बुलन्द आवाज़ से पढ़ने में सोए हुए शख्स के बेदार होने की उम्मीद होती है तो येह उस के बेदार होने का सबब है, नीज़ बा'ज़ अवक़ात कोई ग़ाफ़िल व बेकार शख्स उसे देख कर उस की चुस्ती के सबब चुस्त हो जाता है और इस में इबादत का जौक़ व शौक़ पैदा हो जाता है। अगर क़ारिये कुरआन की इन में से कोई निय्यत हो तो बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना अफ़ज़ल है और जब येह तमाम निय्यतें जम्अ हो जाएं तो अज़्रो षवाब दुगना हो जाता है।

जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना षवाब श्री ज़ियादा :⁽²⁾

निय्यतों की कषरत से नेक लोगों के आ'माल का तज़कियां होता और उन के अज़्र दुगने हो जाते हैं। क्यूंकि अगर एक अमल में 10 निय्यतें हों तो इस के 10 अज़्र मिलेंगे। इसी लिये

①.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب رفع الصوت بالقراءة.....الخ، الحديث: 1329-1330، ج 2، ص 55-

قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، کتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج 1، ص 110-

②.....अच्छी अच्छी निय्यतों के मुतअल्लिक मा'लूमात हासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 616 सफ़हात पर मुश्तमिल शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अतार क़ादिरि دامت برکاتہم العالیہ की मायानाज़ तस्नीफ़ “नेकी की दा'वत” (हिस्सा अव्वल) सफ़हा 109 ता 129 का मुतालआ कीजिये !

हम कहते हैं कि देख कर कुरआने पाक पढ़ना अफ़ज़ल है क्योंकि इस से अमल में देखना, कुरआन में ग़ौरो फ़ि़क़र करना और इसे उठाना बढ़ जाता है लिहाज़ा इस के सबब अज़्र भी बढ़ जाता है। नीज़ मन्कूल है कि देख कर कुरआन पढ़ने का सात गुना अज़्र है क्योंकि कुरआने पाक को देखना भी इबादत है।

कषरते तिलावत के सबब.....?

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उषमाने ग़नी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस कषरत से तिलावत फ़रमाते थे कि इस के सबब आप के पास दो मुस्हफ़ शरीफ़ शहीद हो गए थे। कई सहाबए किराम رِضْوَانُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ देख कर कुरआने पाक पढ़ते और कोई दिन कुरआने पाक को देखे बिग़ैर गुज़ारना ना पसन्द करते थे।

सुब्ह तक इसे बन्द नहीं करता :

मिस्र के एक फ़कीह एक रोज़ सुब्ह के वक़्त हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي के पास हाज़िर हुए, उस वक़्त आप कुरआने पाक से देख कर तिलावत कर रहे थे। आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ तَعَالَى ने उस फ़कीह से फ़रमाया : “तुम्हें फ़ि़क़ह ने कुरआने पाक से ग़ाफ़िल कर दिया, मैं इशा की नमाज़ पढ़ता हूँ और कुरआने पाक मेरे सामने होता है, फिर सुब्ह तक इसे बन्द नहीं करता।”

﴿10﴾.....ख़ुश इल्हानी व उम्दगी से किराअत करना :

कुरआने पाक को अच्छी आवाज़ से और ठहर ठहर कर पढ़ना सुन्नत है लेकिन हुरूफ़ को इतना ज़ियादा न खींचे कि आवाज़ बदल जाए या नज़मे कुरआन तब्दील हो जाए। नीज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कुरआने पाक को अपनी आवाज़ों से मुज़य्यन करो।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने जितना ख़ुश इल्हानी से तिलावते कुरआन का हुक्म दिया इतना किसी और चीज़ का न दिया।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “जो ख़ुश इल्हानी से कुरआन न पढ़े वोह हम में से नहीं।”⁽³⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب استحباب الترتیل فی القراءة، الحدیث: ۱۴۶۸، ج ۲، ص ۱۰۵۔

②.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب تحسین.....الخ، الحدیث: ۴۹۲، ص ۳۹۷-۳۹۸۔

③.....صحیح البخاری، کتاب التوحید، باب قول الله: واسروا قولکم.....الخ، الحدیث: ۴۵۲۷، ج ۴، ص ۵۸۶۔

सय्यिदुना सालिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुश इल्हानी :

मरवी है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक रात उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिदीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا का इन्तिज़ार फ़रमा रहे थे। उन्हें आने में कुछ देर हो गई तो इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुम्हें किस चीज़ ने रोका?” अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मैं ने एक शख्स को क़िराअत करते सुना, उस से अच्छी आवाज़ मैं ने नहीं सुनी।” तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ ले गए और काफी देर तक उस की क़िराअत सुनते रहे, फिर वापस आ कर इरशाद फ़रमाया : “येह अबू हुज़ैफ़ा का गुलाम सालिम है, तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को जिस ने मेरी उम्मत में ऐसा शख्स पैदा फ़रमाया।”⁽¹⁾

इसी तरह एक रात अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक़ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) हुज़ूरे अन्वर صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मइय्यत में (साथ में) हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद की तरफ़ गए और काफी देर ठहरे उन की क़िराअत सुनते रहे, फिर आप صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स कुरआने पाक को इस तरह तरो ताज़ा पढ़ना चाहे जिस तरह नाज़िल हुवा तो वोह इब्ने उम्मे अब्द की तरह क़िराअत करे।”⁽²⁾

सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुश इल्हानी :

एक रोज़ हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “मेरे सामने तिलावत करो।” अर्ज की : “मैं आप के सामने क्या पढ़ूं? आप पर ही तो कुरआन उतरा है।” इरशाद फ़रमाया : “मैं चाहता हूं कि दूसरे से सुनूं।” चुनान्चे, आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ तिलावत करते रहे और रसूलुल्लाह صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चश्माने मुबारक से आंसू बहते रहे।⁽³⁾

सय्यिदुना अबू मूसा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुश इल्हानी :

हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّयَ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की क़िराअत सुन कर इरशाद फ़रमाया : “इसे दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की सी खुश आवाज़ी अता

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب في حسن الصوت بالقرآن، الحديث: ۱۳۳۸، ج ۲، ص ۱۳۰، بتغيرٍ۔

②.....السنن الكبرى للنسائي، كتاب المناقب، عبد الله بن مسعود، الحديث: ۸۲۵۶-۸۲۵۷، ج ۵، ص ۷۱۔

③.....صحيح البخارى، كتاب فضائل القرآن، باب البكاء عند قراءة القرآن، الحديث: ۵۰۵۵، ج ۳، ص ۴۱۸، مفهوماً۔

हुई है।⁽¹⁾ जब येह बात हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को पहुंची तो इन्हों ने अर्ज की : “या رسूलل्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर मुझे मा'लूम होता कि आप सुन रहे हैं तो मैं मजीद खुश इल्हानी से पढ़ता।”⁽²⁾

हिक्वायत : खुश नसीब करिये कुरआन :

हज़रते सय्यिदुना क़ारी हैषम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِ फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशरफ़ हुवा तो आप ने मुझ से इरशाद फ़रमाया : “तू ही हैषम है जो खुश इल्हानी से कुरआन की तिलावत करता है?” मैं ने अर्ज की : “जी हां!” तो दुआ से नवाज़ते हुए फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तुझे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए।”

मरवी है कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان जब इकठ्ठे होते तो किसी एक से कहते कि “कुरआन की कोई सूरत सुनाओ।”

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से फ़रमाते : “हमें हमारे रब्ब की याद दिलाओ?” वोह उन के सामने कुरआने पाक की तिलावत करते यहां तक कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाता तो कहा जाता : “नमाज़ नमाज़।” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते : “क्या हम नमाज़ में नहीं हैं?” आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के इस कौल से इस फ़रमाने बारी तआला की तरफ़ इशारा है :

“**تَرْجَمَةُ كَنْزُ اللّٰهِ اَكْبَرُ** (پ ۲۱، العنکبوت: ۴۵) **और बेशक اَللّٰهُ का ज़िक्र सब से बड़ा।**”

हदीषे मुबारका में है कि “जो शख्स कुरआने पाक की कोई आयत सुनता है, बरोजे क़ियामत वोह उस के लिये नूर होगी।”⁽³⁾

एक रिवायत में है कि “उस के लिये 10 नेकियां लिखी जाएगी।”⁽⁴⁾

कुरआने मजीद की तिलावत सुनने का कितना अज़ीमुश्शान अज़्र है और तिलावत करने वाला जो इस का सबब है वोह भी अज़्रो षवाब में इस का शरीक है बशर्ते कि रियाकारी व बनावट की निय्यत न हो।



①.....صحيح البخارى، كتاب فضائل القرآن، باب حسن الصوت بالقراءة، الحديث: ۵۰۴۸، ج ۳، ص ۴۱۶۔

②.....قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج ۱، ص ۱۱۲۔

③.....المستدللّام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ۸۵۰۲، ج ۳، ص ۲۴۵، “استمع” بدله “تلا”۔

④.....قوت القلوب، الفصل التاسع عشر، كتاب الجهر بالقرآن.....الخ، ج ۱، ص ۱۱۱۔

बाब नम्बर 3 : तिलावत के बातिनी आदाब

तिलावत के बातिनी आदाब दस हैं : (1).....अस्ले कलाम का समझना (2).....उस की ता'जीम करना (3)..... हुजूरे क़ल्बी के साथ तिलावत करना (4).....उस के मअानी में ग़ौरे फ़िक्क करना (5).....मअानी को समझना (6).....समझने में हाइल होने वाली रुकावटों को दूर करना (7).....तख़सीस (8).....तअषुर (9).....तरक्की (10)..... बराअत का इज़हार करना ।

﴿1﴾.....कलाम की अज़मत व बुलन्दी को समझना :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के फ़ज़ल व एहसान और लुत्फ़ो करम को यूं समझना कि उस ने अर्शे बरीं से ऐसा आसान कलाम उतारा कि मख़्लूक की समझ में आ जाए, इस पर ग़ौर करना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अपनी मख़्लूक पर कितनी मेहरबानी है कि वोह कलाम जो उस की सिफ़ते क़दीमा और उस की ज़ात के साथ काइम था उस के मअानी को मख़्लूक की समझ तक पहुंचा दिया, वोह सिफ़त हुरूफ़ व अस्वात (आवाज़ों) से किस तरह ज़ाहिर हुई हालांकि हुरूफ़ व अस्वात बशरी सिफ़ात हैं लेकिन चूंकि बशर को ताक़त नहीं कि वोह अपनी सिफ़ात के वसीले के बिग़ैर सिफ़ाते इलाहिय्या को समझ सके, लिहाजा इन हुरूफ़ व अस्वात के पैराए में इस सिफ़ते कलाम को ढाल दिया गया, अगर बिल्फ़र्ज कलामे इलाही के जलाल की हकीक़त हुरूफ़ के पैराए में छुपी न होती तो अर्श भी इसे सुन कर न ठहर सकता, न खाक को इस के सुनने की ताब होती, इस की अज़मत और नूरे जलाल से फ़र्श ता अर्श सब ना पैद हो जाते । अगर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को षाबित क़दम न रखता तो इन में कलामे इलाही सुनने की ताब न होती जैसे पहाड़ अदना तजल्ली बर्दाश्त न कर सका और रेज़ा रेज़ा हो गया । कलामे इलाही की अज़मत को ऐसी मिषालों के बिग़ैर समझना मुमकिन नहीं जिन तक मख़्लूक की अक्ल की रसाई हो । इसी लिये बा'ज़ आरिफ़ीन ने इसे यूं ता'बीर किया कि कलामे इलाही में से हर हर्फ़ लौहे महफूज़ में कोहे काफ़ पहाड़ से बड़ा है, अगर तमाम फ़िरिश्ते एक हर्फ़ को उठाने के लिये जम्अ हो जाएं तो भी न उठा पाएं अलबत्ता लौहे महफूज़ पर मामूर फ़िरिश्ते हज़रते सय्यिदुना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام उसे उठा लेते हैं लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इज़्म और उस की रहमत से न कि अपनी ताक़त व कुव्वत से, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें येह ताक़त अता फ़रमाई है और येह काम उन्हीं के सिपुर्द है । कलामे इलाही के बुलन्द मर्तबा होने के बा वुजूद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान की अक्ल को उस के मअानी समझने तक रसाई अता फ़रमाई और इसे षाबित रखा हालांकि इन्सान का मर्तबा कम है ।

कलामे इलाही के मअानी को इस मिषाल से समझो :

एक बुजुर्ग ने कलाम के मअानी तक पहुंचने की एक लतीफ़ सूरत बयान फ़रमाई बल्कि एक मिषाल भी पेश की है। चुनान्चे, फ़रमाते हैं : किसी दाना शख़्स ने एक बादशाह को अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की (लाई हुई) शरीअत की दा'वत दी तो बादशाह ने चन्द सुवाल किये तो दाना ने बादशाह की समझ के मुताबिक़ जवाबात दिये। बादशाह ने कहा : “मैं ने देखा है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जो कलाम लाते हैं तुम इस के मुतअल्लिक़ कहते हो कि येह लोगों का कलाम नहीं बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है, फिर लोग इसे कैसे समझते हैं ?” उस दाना शख़्स ने जवाब दिया : हम देखते हैं कि लोग जब किसी जानवर या परन्दे को कुछ सिखाना चाहते हैं मषलन आगे बढ़ना, पीछे हटना, सामने मुंह करना और पुशत फेरना वगैरा और वोह जानवरों को देखते हैं कि वोह लोगों की अक्ल से तहसीन व तजईन और अजीब तन्जीम के साथ सादिर होने वाले कलाम को समझने से कासिर हैं तो वोह जानवरों के रंग में ढल कर कलाम करते हैं और अपने मक्सूद को इन में ऐसी आवाज़ से पहुंचाते हैं जो इन कि समझ के मुनासिब हो मषलन टख़ टख़ करना, सीटी बजाना और ऐसी आवाज़ें जो इन की आवाज़ों के क़रीब क़रीब हों ताकि वोह उन्हें समझ सकें। इसी तरह लोग भी कलामे इलाही को इस की माहिyyत और कमाले सिफ़ात से समझने से अजिज़ हैं तो अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने भी इन के साथ वोही अन्दाज़ इख़्तियार किया जो लोग जानवरों के साथ बरतते हैं या'नी उस कलामे पाक को ऐसे अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ में बयान किया जिस से लोग उस की हिक्मत को समझ जाएं जैसे जानवर सीटी वगैरा से इन के मतालिब को समझ लेते हैं और चूँकि हिक्मत के मअानी इन हुरूफ़ और अस्वात में पोशीदा रहते हैं लिहाज़ा इन मअानी की शराफ़त और अज़मत के सबब कलाम की समझ आती है तो गोया आवाज़ हिक्मत के लिये जिस्म और मकान जब कि हिक्मत आवाज़ के लिये जान और रूह है। जिस तरह आदमी का जिस्म रूह के सबब मुकर्रम व मुअज़्ज़म होता है इसी तरह कलाम के अस्वात व हुरूफ़ भी इन में मौजूद हिक्मतों की वजह से मुशरफ़ व मक्सूद होते हैं और कलाम बुलन्द मर्तबा और आ'ला दर्जा रखता है, ग़लबे में ज़बरदस्त, हक़ व बातिल में हुक्म नाफ़िज़ करने वाला, हाकिमे अदिल और पसन्दीदा गवाह है, इसी से अम्र व नहय का सुदूर होता है बातिल को ताब नहीं कि पुर हिक्मत कलाम के सामने ठहर सके जैसे साया सूरज की शुआअ के सामने नहीं ठहर सकता, बन्दों में ताक़त नहीं कि हिक्मत की गहराई के पार जाएं जैसे वोह अपनी आंखों को सूरज की रोशनी के पार नहीं कर

सकते। अलबत्ता, सूरज की रोशनी से इन्हें इतना हासिल होता है कि जिस से इन की आंखों में नूर आ जाए और वोह अपनी ज़रूरियात की तरफ़ रहनुमाई हासिल कर लें।

कलामे इलाही छुपे हुए बादशाह की मानिन्द है जिस का चेहरा महसूस नहीं होता लेकिन उस का हुक्म जारी है या गोया वोह सूरज है जिस की रोशनी ज़ाहिर है मगर वोह खुद पोशीदा है या चमकते सितारे की मिष्ल है कि जिसे उस की चाल से वाकिफ़ियत नहीं होती वोह भी उस के ज़रीए राह पा लेता है।

ख़ुलासए कलाम :

येह है कि कलामे इलाही निहायत उम्दा ख़ज़ानों की चाबी है। येह आबे हयात है कि जिस ने इस में से पिया वोह हयाते अबदी से मुत्तसिफ़ हो गया और ऐसी दवा है कि जिस ने इस को नोश किया कभी बीमार न हुवा। येह दाना शख़्स ने जो बयान किया है कलाम के मा'नी को समझने के लिये एक मुख़्तसर सी बात है, इस से ज़ियादा बयान करना इल्मे मुआमला के मुनासिब नहीं लिहाज़ा इसी पर इक्तिफ़ा करना चाहिये।

﴿2﴾....मुतकल्लिम की ता'जीम :

कारिये कुरआन को चाहिये कि तिलावते कुरआन शुरू करते वक़्त दिल में मुतकल्लिम की अज़मत ज़ाहिर करे और येह जाने कि जो कुछ मैं पढ़ रहा हूं येह बन्दों का कलाम नहीं। कलामे मजीद की तिलावत में बहुत ज़ियादा ख़तरा है क्यूंकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

لَا يَسْمَعُ إِلَّا الْبَاطِلَ وَنُوحٍ ﴿٧٩﴾ (سورة الواقعة: ٧٩) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** इसे न छूएं मगर बा वुजू।

जिस तरह ज़ाहिरी जिल्दे कुरआन और इस के अवराक़ का येह अदब है कि आदमी का जिस्म बिगैर तहारत इन्हें न लगे इसी तरह इस के मअानी का बातिन भी **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से पर्दे में है जो दिल के अन्दर हर तरह की नापाकी से पाक हुए बिगैर और नूरे ता'जीम व तौकीर से मुनव्वर हुए बिगैर नहीं आ सकते। जिस तरह हर एक हाथ जिल्दे मुस्हफ़ को छूने के लाइक़ नहीं इसी तरह हर ज़बान इस के हुरूफ़ की तिलावत की भी लियाक़त नहीं रखती, न हर एक दिल में इस के मअानी हासिल करने की काबिलियत है। इसी ता'जीम के सबब हज़रते सय्यिदुना इकरमा बिन अबी जहल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जब कुरआने पाक खोलते तो उन पर ग़शी तारी हो जाती और फ़रमाते : “येह मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** का कलाम है, येह मेरे रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** का कलाम है।”

कलाम की अज़मत से मुतकल्लिम की अज़मत होती है और मुतकल्लिम की अज़मत दिल में तब तक नहीं आ सकती जब तक कि उस की सिफ़ात और जलाल व अफ़ाल में फ़िक्र न करें। पस जब क़ारी के दिल में अर्श, कुरसी, आस्मान, ज़मीन और इन के दरमियान की चीज़ें या'नी जिन्नो इन्स और दरख़्त व हैवानात आएँ और वोह यकीन से जाने कि इन सब का पैदा करने वाला, इन पर कुदरत रखने वाला, इन्हें रोज़ी देने वाला वाहिद व यक्ता है और सब के सब उस के क़बज़ए कुदरत में और उस के फ़ज़्लो रहमत और अज़ाब व सुतूत में मुतरद्दिद हैं अगर वोह इन्आम करेगा तो अपने फ़ज़्ल से और अगर अज़ाब देगा तो अपने अद्ल से। उसी का इरशाद है कि “येह लोग बहिश्त के लिये हैं और मुझे कोई परवाह नहीं और येह लोग दोज़ख़ के लिये हैं और मुझे कोई परवाह नहीं।” येह अज़मत व बुजुर्गी की इन्तिहा है। ऐसे उमूर में ग़ौरो फ़िक्र करने से मुतकल्लिम की अज़मत दिल में पैदा होती है फिर कलाम की अज़मत इस में जा गुर्ज़ी होती है।

﴿3﴾.....हुज़ूरे क़ल्ब के आदाब :

हुज़ूरे क़ल्ब के साथ तिलावत करना और दिल में पैदा होने वाले ख़यालात को तर्क करना। बा'ज मुफ़स्सरीन फ़रमाते हैं : इस फ़रमाने बारी तआला : **يَجِيْ خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ** (ب ۱۲: ۱) से मुराद कोशिश व इजतिहाद है और कोशिश के साथ पकड़ने का मतलब येह है कि इस की क़िराअत के वक़्त सिर्फ़ इसी की तरफ़ तवज्जोह हो किसी दूसरी जानिब न हो।”

कुरआन से ज़ियादा महबूब कुछ नहीं :

किसी नेक बन्दे से पूछा गया कि तिलावते कुरआन के दौरान आप अपने नफ़्स से भी कोई बात करते हैं? (या'नी दिल में किसी और चीज़ का ख़याल आता है?) उन्होंने ने फ़रमाया : “क्या कोई चीज़ मुझे कुरआन से ज़ियादा महबूब होगी कि मैं नफ़्स से उस के बारे में गुफ़्तगू करूं।”

बा'ज बुजुर्ग जब कुरआने करीम की कोई आयत पढ़ते और दिल इस की तरफ़ मुतवज्जेह न होता तो उसे दोबारा पढ़ते। येह सिफ़त ता'जीमे कलाम से पैदा होती है जिस का पहले ज़िक्र हुवा क्यूंकि जो शख्स पढ़े जाने वाले कलाम की ता'जीम करता है वोह उस पर खुश होता और उस से मानूस होता है और उस से ग़ाफ़िल नहीं होता।

बागात, हुज़रे, दुल्हनें और रेशमी लिबास वगैरा :

कुरआने पाक में उन्स की बातें हैं अगर पढ़ने वाला इस का अहल हो तो वोह ग़ैर के ज़रीए कैसे उन्स हासिल करेगा। कुरआने पाक में सैर व सियाहत और खुशी के मक़ामात हैं और जो

शख्स सैरो तफरीह के मक़ाम पर हो वोह दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता। मन्कूल है कि कुरआने पाक में मैदान, बागात, हुजरे, दुल्हनें, रेशमी लिबास, बागीचे और सराएं हैं। लफ़्जे **مِم** कुरआने पाक के मैदान हैं, लफ़्जे **ل** कुरआने पाक के बागात है लफ़्जे **ح** इस के हुजरे हैं, तस्बीह से शुरू होने वाली सूरतें कुरआने पाक की दुल्हनें हैं, **حَم** कुरआने पाक के रेशमी कपड़े हैं, मुफ़स्सल सूरतें इस के बागीचे हैं और इस के इलावा सराएं हैं। जब कुरआने पाक पढ़ने वाला मैदानों में दाख़िल होता, बागात से फल चुनता, हुजरो में दाख़िल हो कर दुल्हनों के पास जाता, रेशमी लिबास पहनता, बागीचों में सैर करता है और सराएं में सुकूनत इख़्तियार करता है तो ये सब उसे घेर लेता और अपने मासिवा से फेर देता है, फिर न तो उस का दिल दूसरी तरफ़ मुतवज्जेह होता है और न ही उस की सोच मुन्तशिर होती है।

﴿4﴾..... ग़ौरो फ़िक्र करना :

येह हुजुरे क़ल्ब के इलावा है क्यूंकि कभी तिलावत करने वाला कुरआन के इलावा में ग़ौर तो नहीं करता मगर फ़क़त कुरआन सुनने पर इक्तिफ़ा करता है, इस में तदब्बुर नहीं करता हालांकि क़िराअत से मक़सूद तदब्बुर करना है, इसी लिये तरतील से (या'नी ठहर ठहर कर) तिलावत करना मसनून है क्यूंकि अगर ज़ाहिरन ठहर ठहर कर पढ़ेगा तो ग़ौरो ख़ौज़ भी करेगा।

अनमोल मोती :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** फ़रमाते हैं : “उस इबादत में कोई भलाई नहीं जिस में समझ न हो और उस क़िराअत में कोई बेहतरी नहीं जिस में ग़ौरो फ़िक्र न हो। ”

अगर बार बार पढ़े बिग़ैर ग़ौरो फ़िक्र पर क़ादिर न हो तो बार बार पढ़े। अलबत्ता, इमाम की इक्तिदा में हो तो ऐसा न करे क्यूंकि अगर वोह एक आयत में ग़ौरो फ़िक्र करता रहा और इमाम दूसरी में मशगूल हो गया तो येह शख्स गुनहगार होगा। इस की मिषाल उस शख्स जैसी है कि कोई इस के कान में कोई कलिमा कहे और वोह इस के एक लफ़्ज़ से तअज्जुब करने लगे और बाक़ी कलाम में ग़ौरो फ़िक्र न करे। इसी तरह अगर वोह रुकूअ की तस्बीह में हो और उस आयत में ग़ौरो फ़िक्र करना शुरू कर दे जो इमाम साहिब ने पढ़ी तो येह वस्वसा है।

हिक्वायत :- इस बारगाह से कैसे फ़िक्र :

मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन अब्दे कैस **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** ने फ़रमाया : “मुझे नमाज़ में वस्वसे आते हैं।” अर्ज़ की गई : “क्या दुन्यावी मुआमलात के वस्वसे आते हैं ?”

फ़रमाया : “मुझे दुन्या के वस्वसों से ज़ियादा पसन्द येह है कि मुझ में नेजे आर पार कर दिये जाएं। मेरा दिल रब्ब عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़ा होने में लग जाता है और सोचता हूं कि इस बारगाह से कैसे फ़िरूं।”

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इसे वस्वसा शुमार किया और येह वस्वसा ही है कि नमाज़ी जो कुछ पढ़ रहा हो उसे समझने नहीं देता और शैतान कामिलुल ईमान लोगों पर इसी तरह काबू पाता है कि उन्हें किसी दीनी काम में मशगूल कर देता बल्कि इस के ज़रीए अफ़ज़ल काम से रोकता है। जब हज़रते इमाम हसन बसरी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से येह बात की गई तो आप ने फ़रमाया : “अगर तुम उन के मुतअल्लिक येह सच कहते हो तो हम पर **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने येह एहसान नहीं फ़रमाया।”

तिलावत हो तो ऐसी :

मरवी है कि एक बार हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ पढ़ी और इसे 20 मरतबा दोहराया। 20 बार इस लिये दोहराया क्यूंकि आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इस के मआनी में गौरो फ़िक्र कर रहे थे।

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि एक रात हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हमारे पास क़ियाम फ़रमाया आप एक ही आयते मुक़द्दसा बार बार पढ़ते रहे। वोह आयत येह है :

إِنْ تَعَذَّبْتُمْ فَاتُّبِعُوا عِبَادَكَ وَإِنْ تَعَفَّرْتُمْ
فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (پ ۱۸، المائدة: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तू उन्हें अज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू उन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला। (1)

एक रात हज़रते सय्यिदुना तमीम बिन औस दारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ खड़े हो कर येह आयते मुबारका बार बार पढ़ते रहे :

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ
نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या जिन्होंने ने बुराइयों का इर्तिक़ाब किया येह समझते हैं कि हम इन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये।

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक रात खड़े हो कर येह आयत तिलावत करते रहे :

وَأَمَّا زُواكِرُ الْيَوْمِ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ (پ ۲۳، یس: ۵۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आज अलग फट जाओ ऐ मुजरिमो !

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं : “मैं एक सूरत शुरू करता हूँ और उस में ऐसी बात का मुशाहदा करता हूँ कि सुबह तक खड़ा रहता हूँ और वोह सूरत मुकम्मल नहीं होती ।”

एक और बुजुर्ग के बारे में मन्कूल है, फ़रमाते हैं : “जिस आयते मुबारका को मैं समझे बिगैर बे तवज्जोगी से पढ़ता हूँ उसे बाइषे षवाब नहीं समझता ।”

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَسَ سِرُّهُ الشُّرَاقِي फ़रमाते हैं : “मैं कुरआने पाक की कोई आयत पढ़ता हूँ तो चार पांच रातें उसी में ग़ौरो फ़िक्र करते गुज़र जाती हैं अगर मैं खुद उस में ग़ौरो फ़िक्र करना न छोड़ूँ तो दूसरी आयत की नोबत ही न आए ।”

एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं : “मैं 6 माह सूरए हूद को बार बार पढ़ता रहा लेकिन उस में ग़ौरो फ़िक्र करने से फुरसत न मिली ।”

मा'रिफ़ते इलाही रखने वाले एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं : “मैं हर जुमुआ एक ख़त्मे कुरआन करता हूँ और हर महीने में एक ख़त्म करता हूँ और हर साल एक ख़त्म करता हूँ और तीस साल से एक ख़त्म कर रहा हूँ जिस से अभी तक फ़ारिग़ नहीं हुवा और येह मुदत तदब्बुर व तफ़्तीश के दर्जात के ए'तिबार से है ।”

इन्ही का कौल है, फ़रमाते हैं : “मैं ने अपने नफ़्स को मज़दूर के काइम मक़ाम ठहरा लिया है इसी लिये मैं इस से रोज़ाना भी काम लेता हूँ, हफ़्तावार भी, माहाना भी और सालाना भी ।”

﴿5﴾.....समझना :

इस से मुराद येह है कि हर आयत की उस के मुताबिक़ वज़ाहत करना क्यूंकि कुरआने पाक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात, उस के अफ़अल और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और उन्हें झुटलाने वालों के अहवाल के ज़िक्र पर मुश्तमिल है और येह कि वोह कैसे हलाक किये गए । नीज़ कुरआने पाक अहकामे इलाही, तम्बीहात और जन्नत व दोज़ख़ के ज़िक्र पर मुश्तमिल है ।

सिफ़ते बारी तझाला :

सिफ़ात का बयान इन आयात में है । चुनान्चे, इरशाद होता है :

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

(پ ۲۵، الشوری: ۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस जैसा कोई नहीं और वोही सुनता देखता है ।

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُنِيبُ
الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ط (پ ۲۸، الحشر: ۲۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बादशाह निहायत पाक सलामती देने वाला अमान बख़्शने वाला हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला इज़्ज़त वाला अज़मत वाला तकब्बुर वाला ।

इन अस्मा व सिफ़त के मअानी में ग़ौरो फ़िक्र कीजिये ताकि इन के असरार मुन्कशिफ़ हों । हर एक के तहत बहुत से मअानी पोशीदा हैं जो सिर्फ़ तौफ़ीक़ वालों पर ही मुन्कशिफ़ होते हैं ।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** ने अपने इस फ़रमान में इसी तरफ़ इशारा फ़रमाया कि “मुझे हुजूरे अन्वर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने कोई ऐसी खुफ़्या बात न बताई जो लोगों से छुपा रखी हो मगर हकीक़त येह है कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** किसी बन्दे को अपनी किताब की समझ अता फ़रमा देता है ।”^(१) पस हर एक को इस समझ की तलब का हरीस होना चाहिये ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** फ़रमाते हैं : “जो अव्वलीन व आख़िरीन का इल्म चाहता हो उसे चाहिये कि कुरआन में बहषो मुबाहषा करे ।”

कुरआन के बड़े बड़े उलूम अस्मा व सिफ़ाते इलाहिyyा के तहत हैं क्यूंकि अकषर मख़्लूक इन का इदराक नहीं कर सकती सिवाए उन उमूर के जो उन की समझ में आ सकते हों और वोह उस के वाजेह हक़ाइक़ और पोशीदा बारीक़ बातों पर आगाह नहीं होते ।

अफ़आले इलाहिyyा :

इन्हें उन आयात से समझा जा सकता है जिन में ज़मीनो आस्मान की तख़लीक़ का ज़िक्र है । तिलावत करने वाला उन से **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की सिफ़ात और उस के जलाल को समझे क्यूंकि फ़े’ल फ़ाइल पर दलालत करता है कि काम की अज़मत ख़ालिक़ की अज़मत पर दलालत करती है । लिहाज़ा बन्दे को चाहिये कि फ़े’ल में फ़ाइल को देखे न कि फ़े’ल को । जिस ने हक़ को पहचान लिया वोह हर चीज़ में उसे देखता है क्यूंकि हर चीज़ उसी से है, उसी की तरफ़ है, उसी के साथ है और उसी के लिये है । हकीक़तन हर एक का येही मज़हब है । जो हर देखी हुई चीज़ में उसे नहीं देखता गोया उस ने **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** को पहचाना ही नहीं और जिस ने उसे पहचान लिया उस ने जान लिया कि **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के सिवा हर चीज़ बातिल और उस की ज़ात के सिवा हर चीज़ हलाक़ होने वाली है । येह मुराद नहीं कि वोह चीज़ दूसरी हालत में

①.....سنن النسائي، كتاب القسامة والقود: سقوط القود من المسلم للكافر، الحديث: ۴۵۳، ص ۶۴۔

बातिल है बल्कि अगर उस की ज़ात का ए'तिबार किया जाए तो वोह अभी बातिल है और अगर यूँ ए'तिबार किया जाए कि वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस की कुदरत के साथ मौजूद है तो वोह बित्तबअ क़ाइम व षाबित है जब कि ज़ाती तौर पर महज़ बातिल है। येह इल्मे मुकाशफ़ की इब्तिदाई बातों में से है। इस लिये तिलावत करने वाला जब इन आयाते तथ्यबा की तिलावत करे :

﴿1﴾ اَفَرَعَيْتُمْ مَا تَحْرُثُونَ ﴿٢٣﴾ (प २, الواقعة: २३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो भला बताओ तो जो बोते हो।

﴿2﴾ اَفَرَعَيْتُمْ مَا تَشْبُونَ ﴿٥٨﴾ (प २, الواقعة: ५८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो।

﴿3﴾ اَفَرَعَيْتُمُ الْبَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٢٨﴾ (प २, الواقعة: २८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो।

﴿4﴾ اَفَرَعَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُوْرُونَ ﴿٧١﴾ (प २, الواقعة: ७१)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रोशन करते हो।

तो उस की नज़र पानी, आग, खेती और मनी पर न ठहर जाए बल्कि माहए मनविख्या में ग़ौरो फ़िक्र करे जो अज्ज़ा की मिष्ल नुत्फ़ा है फिर इस के गोश्त, हड्डियों, रगों और पठ्ठों में तक्सीम होने को देखे और येह भी देखे कि उस के आ'ज़ा मुख़लिफ़ शक्लों मषलन सर, हाथ, पाउं, जिगर, और दिल वगैरा में कैसे मुतशक्किल होते हैं, फिर उन अच्छी सिफ़ात की तरफ़ नज़र करे जो इस में पैदा होती हैं : जैसे वोह सुनता, देखता, समझता है वगैरा वगैरा और मजमूम अ़ादात की तरफ़ देखे : जैसे गुस्सा, शहवत, तकब्बुर, जहालत, तक्ज़ीब और झगड़ा वगैरा जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

اَوَلَمْ يَرِ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ تُطْفَةٍ فَادَّا
هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾ (प २३, यूसुफ़: ८८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और क्या आदमी ने न देखा कि हम ने उसे पानी की बूंद से बनाया जभी वोह सरीह झगड़ालू है।

इन अज़ाइबात में ग़ौर करे ताकि सब से ज़ियादा अज़ीब तक पहुंचे और येह वोह सिफ़त है जिस से येह अज़ीब उमूर सादिर हुए। लिहाज़ा मुसलसल सन्अत (कारीगरी) में ग़ौरो ख़ौज़ करता रहे ताकि सानेअ को देख ले।

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के अहवाल :

जहां तक अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के अहवाल का तअल्लुक है तो जब सुने कि इन हज़रात को किस तरह झुटलाया गया, कैसे मारा गया, कैसे बा'ज़ को शहीद किया गया तो इस से

समझे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रसूलों और जिन की तरफ़ इन्हें मबरूफ़ किया गया उन से बे नियाज़ है और येह कि अगर वोह उन तमाम को हलाक कर दे तब भी उस की बादशाहत में कुछ फ़र्क़ न आएगा। जब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मदद के बारे में सुने तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वाजेह कुदरत और उस चीज़ को समझे कि वोह हक़ की मदद का ही इरादा फ़रमाता है।
झुटलाने वालों का तज़क़िरा :

झुटलाने वालों मषलन आद व षमूद वगैरा के हालात और उन पर नाज़िल होने वाले अज़ाब के मुतअल्लिक़ पढ़े तो दिल में **अल्लाह** तआला के अज़ाब और ग़लबा व कुदरत का ख़ौफ़ पैदा करे और इन बातों से इब्रत हासिल करे कि अगर गाफ़िल और बे अदब दी गई मोहलत से धोके में रहा तो मुमकिन है कि इस पर भी वोही अज़ाब नाज़िल हो और इस के बारे में भी वोही फैसला हो (जो इन के हक़ में हुवा)। इसी तरह जब जन्नत व दोज़ख़ के औसाफ़ और जो कुछ कुरआन में इस के मुतअल्लिक़ है सुने तो इन में अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ ग़ौर करे क्यूंकि सब बातों को समझना मुमकिन नहीं इस लिये कि इस की कोई इन्तिहा नहीं और हर बन्दे को वोही मिलता है जो उस के लिये मुक़द्दर है। इरशादे बारी तआला है :

وَلَا رَاطِبٍ وَلَا يَاسِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ①
(ب: الانعام: ५९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और न कोई तर और न खुशक जो एक रोशन किताब में लिखा न हो।

एक जगह इरशाद होता है :

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَّكَلِّتُ رَإِّي لَتَقَدَّ
الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَتَقَدَّ كَلِّتُ رَإِّي وَلَوْ جُنَّا
بِشَلِّهِ مَدَادًا ② (ب: الكهف: १०९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमा दो अगर समन्दर मेरे रब्ब की बातों के लिये सियाही हो तो ज़रूर समन्दर ख़त्म हो जाएगा और मेरे रब्ब की बातें ख़त्म न होंगी अगर्चे हम वैसा ही और उस की मदद को ले आएंगे।

इसी लिये अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने फ़रमाया : “अगर मैं चाहूँ तो सूरए फ़ातिहा की तफ़सीर से 70 ऊंट भर दूँ।”

जो कुछ हम ने ज़िक्र किया इस से समझने के तरीके पर आगाह करना मक्सूद है ताकि इस का दरवाज़ा खुले। जहां तक तफ़सील बयान करने का तअल्लुक़ है तो इस की तम्अ नहीं

की जा सकती और जो शख्स कुरआन के मज़ामीन को अदना तौर पर भी न समझे तो वोह उन लोगों में दाख़िल है जिन का तज़क़िरा इस आयते तय्यिबा में है। चुनान्चे, इरशादे बारी तआला है :

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَعِزُّ بِاللَّيْلِ حَتَّىٰ إِذَا خَرَجُوا
مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا
قَالَ أَنفَاءً أُولَٰئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ
قُلُوبِهِمْ (پ ۲۶، محمد: ۱۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इन में से बा'ज तुम्हारे इरशाद सुनते हैं यहां तक कि जब तुम्हारे पास से निकल कर जाएं इल्म वालों से कहते हैं “अभी इन्होंने क्या फ़रमाया ?” यह हैं वोह जिन के दिलों पर **अव्वाह** ने मुहर कर दी।

ताबेअ (या'नी मुहर) से मुराद वोह रुकावटें हैं जिन्हें हम मवानए फ़हम (समझ में रुकावट बनने वाले उमूर) के तहत बयान करेंगे। मन्कूल है कि आदमी उस वक़्त तक मुरीद (इरादा करने वाला) नहीं हो सकता जब तक कि अपने मतलूब को कुरआन से न पा ले और इस से मज़ीद नुक्सान न जान ले और मौला عز وجل की हिमायत हासिल कर के बन्दों से बे परवाह न हो जाए।

﴿६﴾....**मअ़ानी समझने में रुकावट बनने वाले अस्बाब का ख़ातिमा :**

बहुत से लोग इन अस्बाब और पर्दों की वजह से कुरआने पाक के मअ़ानी को समझने से रुक गए जो शैतान ने उन के दिलों पर डाल रखे हैं। लिहाज़ा वोह कुरआने पाक के अज़ाइब व असरार से अन्धे हो गए। चुनान्चे, हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया : “अगर बनी आदम के दिलों पर शयातीन घेरा न डाले होते तो वोह अलमे मल्कूत को देख लेते।”^(१)

कुरआन के मअ़ानी भी “मलकूत” में दाख़िल हैं और हर वोह चीज़ जो हवासे ज़ाहिरा से ग़ाइब हो और सिवाए नूरे बसीरत के किसी चीज़ के ज़रीए इस का इदराक न किया जा सके वोह भी “मलकूत” में दाख़िल है।

कुरआन के मा'ना समझने में हाइल रुकावटें :

कुरआन के मअ़ाना समझने की राह में चार रुकावटें हाइल हैं :

पहली रुकावट : यह है कि कारिये कुरआन की तमाम तर तवज्जोह व फ़ि़क़र हुरूफ़ को मख़ारिज से अदा करने की तरफ़ रहे। इस काम का ज़िम्मेदार एक शैतान है जो कारियों पर

मुसल्लत है ताकि इन्हें कलामे इलाही का मअानी समझने से (दूसरी तरफ) फेर दे। लिहाजा वोह येह खयाल पैदा कर के कि अभी हर्फ अपने मखरज से अदा नहीं हुवा मुसलसल इस हर्फ के बार बार पढ़ने पर उभारता रहता है तो जब पूरी तवज्जोह व फ़िक्क मख़ारिजे हुरूफ़ की तरफ़ रहेगी तो उस के लिये मअानी कैसे रोशन होंगे और शैतान का सब से बड़ा मसख़रा वोह शख़्स है जो इस किस्म के मुग़ालते में आ जाता है।

दूसरी रुकावट : येह है कि वोह सुनी सुनाई बातों की पैरवी करे और इसी पर जम जाए, अपनी बसीरत व मुशाहदे के ज़रीए उस तक पहुंचे बिगैर सिर्फ़ इन्हीं बातों की पैरवी करे और उस के दिल में तअस्सुब पैदा हो जाए। येह वोह शख़्स है जिसे उस के ए'तिकाद ने आगे बढ़ने से कैद कर रखा है। उस के दिल में अपने अक़ीदे के सिवा कुछ भी दाख़िल नहीं हो सकता लिहाजा उस की नज़र अपने सुने सुनाए अक़ीदे पर ही मौकूफ़ रहती है, अगर दूर से उस के लिये रोशनी की कोई किरन चमके और मअानिये कुरआन में से कोई मा'ना ज़ाहिर हो लेकिन वोह उस के अक़ीदे के ख़िलाफ़ हो तो तक्लीद का भूत उस पर हम्ला करते हुए कहता है “तेरे दिल में येह खयाल कैसे आ गया हालांकि येह तेरे बाप दादा के अक़ीदे के ख़िलाफ़ है” तो वोह इस मा'ना को शैतान का फ़रेब खयाल कर के इस से दूर रहता और इस तरह दीगर मअानी से बचता है।

इसी किस्म के लोगों के लिये सूफ़ियाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : “إِنَّ الْعِلْمَ حِجَابٌ” या'नी इल्म एक हिजाब है।” इल्म से इन की मुराद वोह अक़ाइद हैं जिन पर बहुत से लोग महज़ सुनी सुनाई बातों की पैरवी या उन मुनाज़राना कलिमात की वजह से काइम हैं जो मज़हब के मुतअस्सिब लोगों ने लिख कर इन्हें दे दिये हैं। इल्मे हकीकी तो नूरे बसीरत के ज़रीए हासिल होने वाले कश्फ़ व मुशाहदे का नाम है, येह कैसे हिजाब हो सकता है ? हालांकि येही तो मतलूब व मक्सूद की इन्तिहा है।

येह तक्लीद कभी बातिल होती है, इस वक़्त मअानिये कुरआन समझने की राह में रुकावट बनती है। जैसा कि वोह शख़्स जो “اَسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ” से येह अक़ीदा रखे कि **अल्लाह** عَرْوَجْلٍ अर्श पर ठहरे और क़रार पकड़े हुए हैं, अगर इस वक़्त **अल्लाह** कुहूस عَرْوَجْلٍ के बारे में उस के दिल में येह खयाल आए भी कि वोह उन तमाम बातों से पाक है जो मख़लूक के लिये जाइज़ हैं तो उस का येह अक़ीदा इस खयाल को उस के दिल में जमने नहीं देगा, अगर बिल्फ़र्ज जम भी जाए तब भी येह इसे दूसरे कश्फ़ फिर तीसरे कश्फ़ की तरफ़ ले जाएगा और वोह इस के ज़रीए सरीह हक़ तक पहुंच जाएगा लेकिन इस खयाल को अपने दिल से निकालने में वोह जल्दी करेगा क्यूंकि येह उस के बातिल अक़ीदे से टकराता है।

बा'ज अवकात तक़लीद हक़ होती है लेकिन फिर भी मअनिये कुरआन समझने और मुन्कशिफ़ होने की राह में रुकावट होती है क्यूंकि मख़्लूक़ को जिस हक़ के ए'तिकाद का मुकल्लफ़ बनाया गया है उस के बहुत से मरातिब व दर्जात हैं। उस का एक ज़ाहिरी मब्दा होता है और एक बातिनी गहराई होती है और तबीअत का ज़ाहिर पर जम जाना बातिनी गहराई तक पहुंचने से रुकावट बनता है। इसे हम ने “क़वाइदे अक़ाइद के बयान में” इल्मे ज़ाहिर व बातिन में फ़र्क़ करते हुए बयान कर दिया है।

तीसरी रुकावट : येह है कि क़ारिये कुरआन गुनाह पर मुसिर या सिफ़ते तकब्बुर से मुत्तसिफ़ हो या दुन्यवी ख़्वाहिशात में मुब्तला हो और इन के पीछे चले, येह चीजें क़ल्ब के तारीक और जंग आलूद होने का सबब हैं। येह उस शीशे की मानिन्द है जिस पर कोई मैल लगी हो जिस के सबब अक्स वाजेह न, इसी तरह येह चीजें हक़ की तजल्ली में रुकावट होती हैं जिस के बाइष हक़ दिल पर सहीह तरह वाजेह व रोशन नहीं होता। येह दिल के लिये बहुत बड़ा हिजाब है और अक़षर लोग इसी हिजाब का शिकार हैं। जैसे जैसे शहवात ज़ियादा होती रहती हैं, कलामे इलाही के मअनी समझने की राह में हिजाब भी बढ़ता रहता है और जैसे जैसे दिल से दुन्या का बोझ हल्का होता है, मअनिये कुरआन की तजल्ली भी क़रीब होती रहती है। पस दिल, आईना की मानिन्द और शहवात, जंग की मानिन्द हैं और मअनिये कुरआन उन सूरतों की तरह हैं जो शीशे में दिखाई देती हैं और शहवात को दूर करने के साथ रियाज़ते क़ल्ब करना शीशे से जंग को साफ़ करने की तरह है।

न करने का नुक़शान : اَمْرًا مَعْرُوفٌ وَنَهًی عَنِ الْمُنْكَرِ

रसूले अकरम नूरे मुजस्सम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब मेरी उम्मत दिरहम व दीनार को बड़ा समझने लगेगी तो इस्लाम की हैबत उन से निकाल ली जाएगी और जब नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ करना तर्क कर देगी तो वहूय की बरकत से महरूम हो जाएगी।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوُحَّاب ने इस क़ौल “वहूय की बरकत से महरूम हो जाएगी” की वज़ाहत करते हुए फ़रमाया : “वोह कुरआने पाक की समझ से महरूम हो जाएगी।”

नीज़ **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ ने समझ और नसीहत के लिये (अपनी तरफ़) रुजूअ करने को शर्त क़रार दिया है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

تَبَصَّرَةٌ وَذِكْرًا لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ⁽⁸⁾ (٢٦: ٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : सूझ और समझ हर रुजूअ वाले बन्दे के लिये।

①.....موسوعة لابن ابي الدنيا، كتاب الامر بالمعروف.....الخ، الحديث: ٢٨، ج ٢، ص ٢١٢.

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُنِيبُ ﴿١٣﴾ (پ २३، المؤمن: १३)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और नसीहत नहीं मानता मगर जो रुजूअ लाए ।

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٩﴾ (پ २३، الزمر: ९)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : नसीहत तो वोही मानते हैं जो अक्ल वाले हैं ।

पस वोह शख्स जो दुन्या की फ़रेब कारियों को आख़िरत की ने'मतों पर तरजीह दे वोह अक्ल मन्दों में से नहीं है इसी वजह से कुरआने पाक के असरार भी इस के लिये मुन्कशिफ़ नहीं होते ।

चौथी रुकावट : येह है कि वोह कुरआने पाक की ज़ाहिरी तफ़सीर पढ़ कर येह अक़ीदा रखे कि कुरआने पाक के कलिमात के वोही मअानी हैं जो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) वग़ैरा से मन्कूल हैं, इस के इलावा जो कुछ भी है तफ़सीर बिराए है और जिस ने अपनी राए से कुरआने पाक की तफ़सीर की उस ने अपना ठिकाना जहन्म में बना लिया ।

मअानी समझने में येह भी बहुत बड़ा हिजाब है । अंन क़रीब चौथे बाब में हम तफ़सीर बिराए का मा'ना बयान करेंगे और येह भी बयान करेंगे कि येह बात अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم के इस क़ौल “मगर येह कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने किसी बन्दे को कुरआने पाक की समझ अता फ़रमाए” से नहीं टकराती । अगर कलिमाते कुरआन के मा'नी सिर्फ़ और सिर्फ़ वोही होते जो ज़ाहिर और मन्कूल हैं तो इस में लोगों का इख़िलाफ़ न होता ।

﴿7﴾.....तख़सीस :

इस से मुराद येह है कि कुरआने पाक के हर ख़िताब में येह तसव्वुर करे कि इस से मैं ही मक्सूद हूँ, मषलन अम्र व नहय सुने तो येह खयाल करे कि येह अम्र व नहय इसी के लिये है, अगर वा'दा व वईद सुने फिर भी येही तसव्वुर करे और अगर गुज़रे हुए लोगों और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के वाक़िआत सुने तो जान ले कि उन के ज़िक्र करने का मक्सद महूज़ किस्से कहानियां बयान करना नहीं बल्कि इन का मक्सद येह है कि इब्रत हासिल की जाए, लिहाज़ा इन के बयान से इब्रत व नसीहत हासिल करे, क्यूंकि कुरआने पाक में कोई ऐसा वाक़िआ नहीं जिस के लाने से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ या आप की उम्मत को कोई फ़ाइदा न हुवा हो । इसी वजह से **अल्लाह** तबारक व तआला ने इरशाद फ़रमाया :

مَا نَشِئْتُ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ (پ ۱۲، ہود: ۱۲۰)

تَرْجَمَہ کَنْزُالْ اِیْمَان : جس سے تومہارا دل
ٹھہرا ہے۔

لیہاجا بندے کو یہ خیال کرنا چاہیے کہ **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ نے کُرآنے کریم میں
امبیایا کیرام عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ، ان کے تکالیف پر سب کرنے اور ان کے نوسرے اسلامی کا
انتیجار کرتے ہوئے دین پر ثابت قدم رہنے کے جو واکیات بیان فرمائے ہیں وہ اس لیے
ہیں تاکہ اس کا دل کایم و ثابت رہے اور یہ خیال کیں نہ کیا جائے؟ ہالانکہ
اَللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ نے کُرآنے پاک کو ہجور صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم پر خاس تیر پر آپ کے لیے
ہی ناجیل نہیں فرمایا بلکہ کُرآنے پاک تو تمام االمین کے لیے شفا و رمت اور
ہدایت و نور ہے۔ اسی لیے **اَللّٰہُ** عَزَّوَجَلَّ نے تمام لوگوں کو کُرآنے پاک کی نہمت پر
شکر ادا کرنے کا حکم فرمایا ہے۔ چنانچہ،
(چند آیات مبارک اولاہجہ ہوں :)

﴿1﴾

وَاذْكُرْ وَاَنْعَمْتَ اللّٰهُ عَلَیْكُمْ وَمَا اَنْزَلَ
عَلَیْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ یَعْظُمُ بِہٖ ۚ
(پ ۲، البقرة: ۲۳۱)

تَرْجَمَہ کَنْزُالْ اِیْمَان : اور یاد کرو **اَللّٰہُ**
کا اہسان جو تم پر ہے اور وہ جو تم پر
کتاب اور حکمت اٹاری تمہیں نسیہت دینے کو۔

﴿2﴾

لَقَدْ اَنْزَلْنَا اِلَیْكُمْ کِتٰبًا فِیْہِ ذِکْرُکُمْ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۙ (پ ۱۰، الانبیاء: ۱۰)

تَرْجَمَہ کَنْزُالْ اِیْمَان : بے شک ہم نے تومہاری
طرف اک کتاب اٹاری جس میں تومہاری ناموری
ہے تو کیا تمہیں اقل نہیں؟

﴿3﴾

وَاَنْزَلْنَا اِلَیْكَ الذِّکْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا
نُزِّلَ اِلَیْہِمْ (پ ۱۴، النحل: ۴۴)

تَرْجَمَہ کَنْزُالْ اِیْمَان : اور اے مہبب ! ہم نے
تومہاری طرف یہ یادگار اٹاری کہ تم لوگوں سے
بیان کر دو جو ان کی طرف اٹرا۔

﴿4﴾

كَذٰلِکَ یَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝۳
(پ ۲۶، محمد: ۳)

تَرْجَمَہ کَنْزُالْ اِیْمَان : **اَللّٰہُ** لوگوں سے
ان کے اہوال یوں بیان فرماتا ہے۔

﴿5﴾

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ
(پ ۲۴، الزمر: ۵۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उस की पैरवी करो जो अच्छी से अच्छी तुम्हारे रब्ब से तुम्हारी तरफ़ उतारी गई ।

﴿6﴾

هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ
يُوقِنُونَ ۝ (پ ۲۵، الجاثية: ۲۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : येह लोगों की आंखें खोलना है और ईमान वालों के लिये हिदायत व रहमत ।

﴿7﴾

هَذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ
لِّلْمُتَّقِينَ ۝ (پ ۳, آل عمران: ۱३८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : येह लोगों को बताना और राह दिखाना और परहेज़गारों को नसीहत है ।

लिहाज़ा जब ख़िताब का मक्सूद तमाम लोग हैं तो हर शख्स फ़र्दन फ़र्दन भी इस ख़िताब का मक्सूद होगा और येह अकेला कुरआने पाक पढ़ने वाला भी इस ख़िताब का मक्सूद होगा तो अब इसे बाकी लोगों से क्या वासिता ? इसे येह तसव्वुर करना चाहिये कि वोही इस ख़िताब का मक्सूद है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَأَوْحِيَ إِلَىٰ هَٰذَا الْقُرْآنِ لِأُنْذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ
بَكَرٌ ۝ (پ ५, الانعام: ११९)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और मेरी तरफ़ इस कुरआन की वहुय हुई है कि मैं इस से तुम्हें डराऊं और जिन जिन को पहुंचे ।

गोया अल्लाह ने कलाम फ़रमाया :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन का'ब कुरज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं :
“عَزَّوَجَلَّ مَنْ بَلَغَهُ الْقُرْآنُ فَكَانَ مِمَّا كَلَّمَهُ اللَّهُ”
उस से कलाम फ़रमाया ।”

कुरआन किस नियत से पढ़ा जाए ?

जब इस पर कादिर (या'नी येह तसव्वुर कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ख़िताब कर रहा है काइम) हो जाए तो महज़ कुरआने पाक पढ़ लेने को ही अपना अमल मुक़रर न कर ले बल्कि इसे इस तरह

पढ़े जिस तरह गुलाम अपने आका के खत को पढ़ता है जो इस की तरफ़ इस लिये लिखा है ताकि यह इस में ग़ौरो फ़िक्र करे और इस के तकाज़े के मुताबिक़ अमल करे। इसी वजह से बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने फ़रमाया : “येह कुरआन वोह खुतूत हैं जो हमारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से हमारे पास अहदो पैमान के साथ आए हैं ताकि हम नमाज़ों में इन में ग़ौरो फ़िक्र करें, तन्हाइयों में इन से आगाही हासिल करें और ताआत व इबादात में इन पर अमल पैरा हों।”

कुरआन बहार है :

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار फ़रमाया करते थे : “ऐ अहले कुरआन ! कुरआन ने तुम्हारे दिलों में क्या बोया है ? बेशक जैसे बारिश ज़मीन के लिये बहार है ऐसे ही कुरआन मोमिन के लिये बहार है।”

हज़रते सय्यिदुना क़तादा बिन दिआमा सुदूसी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي ने फ़रमाया : “जो शख्स भी कुरआने मजीद की मजलिस में बैठता है वोह नफ़अ या नुक़सान के साथ उठता है। चुनान्वे,

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ وَلَا يَزِيدُ
الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا ① (प १५, बन्ती स्रआयिल: ८२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह चीज़ जो ईमान वालों के लिये शिफ़ा और रहमत है और उस से ज़ालिमों को नुक़सान ही बढ़ता है।

﴿8﴾.....तअब्बुर :

इस से मुराद यह है कि तिलावत करने वाले का दिल मुख़्तलिफ़ आयात से मुख़्तलिफ़ तरह का अषर ले, हर आयत के मा'ना समझने के मुताबिक़ दिल में हाल व वज्द की मुख़्तलिफ़ कैफ़ियत पैदा हो यूं कि दिल ख़ौफ़ व ग़म और उम्मीद व रहमत वग़ैरा सिफ़ात से मौसूफ़ हो, तो जब उस की मा'रिफ़त मुकम्मल हो जाएगी तो दिल में ख़शियते इलाही तमाम अहवाल पर ग़ालिब होगी क्यूंकि आयाते कुरआनिय्या पर तंगी ग़ालिब है इस लिये जहां भी मग़फ़िरत व रहमत का ज़िक्र होता है, चन्द शराइत के साथ मिला होता है जिन्हें पाने से आरिफ़ कासिर होता है। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَإِنِّي لَغَفَّارٌ ② (प १६, अः ८२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक मैं बहुत बख़्शने वाला हूं।

फिर इस के बा'द चार शर्तों का जिक्र फ़रमा दिया :

لَسَنُ تَابَ وَأَمِنَ وَعَمِلَ صَالِحًا مَّا أَهْتَدَى ۝

(प ११, १: ८२)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उसे जिस ने तौबा की और ईमान लाया और अच्छा काम किया फिर हिदायत पर रहा ।

इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَالْعَصْرِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّصُوا بِالْحَقِّ وَتَوَّصُوا بِالصَّبْرِ ۝

(प ३०, ३: १-३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ज़मानए महबूब की क़सम ! बेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है मगर वोह जो ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताकीद की और एक दूसरे को सब्र की वसियत की ।

इस में भी **अल्लाह** तबारक व तअ़ाला ने चार शराइत ज़िक्र फ़रमाई हैं । वोह मक़ाम कि जहां एक ऐसी शर्त पर इक्तिफ़ा किया जो सब को शामिल है वोह येह है । चुनान्चे, इरशादे बारी तअ़ाला है :

إِنَّ رَاحَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝

(प ८, १: ५६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** की रहमत नेकों से क़रीब है ।

(इस आयते मुबारका में हुसूले रहमत के लिये एहसान को शर्त क़रार दिया है और) एहसान तमाम शराइत को शामिल है ।

ऐसे ही जो शख़्स कुरआने पाक में शुरूअ से आख़िर तक तलाश व जुस्तजू करे (वोह इस तरह के मज़ामीन पाएगा) । पस जिस ने येह बात समझ ली उस के लाइक़ येही है कि उस पर ख़ौफ़ व ग़म की कैफ़ियत त़ारी हो ।

उस की जिन्दगी में इन्क़िलाब आ जाता है :

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की क़सम ! जो बन्दा इस हाल में सुब्ह करता है कि कुरआने पाक पढ़ता और इस पर ईमान रखता है तो उस का ग़म ज़ियादा और खुशी कम हो जाती है, उस का रोना ज़ियादा और हंसना कम हो जाता है, उस की थकावट व मशगूलियत ज़ियादा और राहत व फ़राग़त कम हो जाती है ।

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “रिवायात और वा'जों में ग़ौर किया तो हम ने कुरआने पाक की तिलावत करने, उसे समझने, उस में ग़ौरो फ़िक्र करने से ज़ियादा दिलों को नर्म करने वाली और ग़म व हुज़्म लाने वाली कोई चीज़ न पाई ।”

यूं तिलावत करे :

बन्दा तिलावते कुरआन से इस तरह अषर ले कि तिलावत की जाने वाली आयत की सिफ़त के साथ मौसूफ़ हो जाए यूं कि जब वर्ईद का ज़िक्र हो और मग़फ़िरत को शराइत के साथ ख़ास किया जाए तब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ से इतना छोटा और हकीर बन जाए गोया मरने के करीब है। जब रहमते इलाही की वुस्अत का ज़िक्र और मग़फ़िरत का वा'दा हो तब इतना खुश हो गोया खुशी से उड़ रहा है। जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के अस्मा व सिफ़ात का ज़िक्र हो तब उस के जलाल के सामने अज़िज़ी करते और उस की अज़मत को पुकारते हुए झुक जाए। जब कुफ़ार की उन बातों का ज़िक्र हो जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर मुहाल हैं मषलन इन का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बीवी व अवलाद षाबित करना, तब अपनी आवाज़ को पस्त करे और उन के इस कबीह कौल से हया करते हुए दिल में बे बसी की कैफ़ियत पैदा करे। जब जन्नत की सिफ़ात का ज़िक्र हो तब दिल में जन्नत का शौक़ पैदा हो और जब जहन्नम की सिफ़ात का ज़िक्र हो तो उस के ख़ौफ़ की वजह से जिस्म कांपने लग जाए कि जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “मेरे सामने तिलावत करो।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “मैं ने सूरए निसा पढ़नी शुरूअ की जब इस आयत पर पहुंचा :”

كَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا
بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا (پ ۵، النساء : ۴۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी होगी जब हम
हर उम्मत से एक गवाह लाएं और ऐ महबूब ! तुम्हें
उन सब पर गवाह और निगहबान कर लाएं।

तो मैं ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आंखें अशक बार देखीं। आप ने इरशाद फ़रमाया : “अब बस करो।” येह कैफ़ियत इस वजह से थी कि इस हालत के मुशाहदे ने आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दिल को मुकम्मल तौर पर अपनी तरफ़ मुतवज्जेह कर लिया था।

ख़शियते इलाही रखने वालों में ऐसे लोग भी थे कि वर्ईद वाली आयात की तिलावत के वक़्त उन पर ग़शी तारी हो जाती और बा'ज का तो विसाल भी हो जाता।

कलामे इलाही हिक्कयत की नियत से न पढ़ा जाए :

इस किस्म के अहवाल तिलावत करने वाले को महूज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के कलाम की

हिकायत करने वाला नहीं रहने देते। जब येह आयते मुबारका पढ़े :

إِنِّي أَخَافُ أَنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ (پ ۷، الانعام: ۱۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अगर मैं अपने रब्ब की नाफरमानी करूं तो मुझे बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

तो दिल में खौफ़े खुदा भी पैदा करे वगरना वोह महज़ हिकायत करने वाला होगा। जब इस आयते तय्यिबा की तिलावत करे :

رَبَّنَا عَلَيْنِكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنبَأُ وَإِلَيْكَ
الْبَصِيرُ (پ ۲۸، الممتحنة: ۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ हमारे रब्ब हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है।

तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा और उस की तरफ़ रुजूअ करे वगरना वोह महज़ हिकायत करने वाला होगा।

जब येह आयते मुकद्दसा पढ़े :

وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا آذَيْتُمُونَا (پ ۱३، ابراهيم: १२)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम जो हमें सता रहे हो हम ज़रूर इस पर सब्र करेंगे।

तो सब्र या इस का पुख़्ता इरादा करे ताकि तिलावत की हलावत को पा ले। अगर इन सिफ़ात के साथ मुत्तसिफ़ न हो और दिल इन अहवाल के मुताबिक़ तब्दील न हो तो इन आयात की तिलावत से इस का हिस्सा खुद पर सरीह ला'नत करते हुए ज़बान को हरकत देने के सिवा कुछ नहीं। चुनान्वे, इरशादे खुदा वन्दी है :

الْأَعْنَةُ لِلَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ (پ १८، هود: १८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अरे ज़ालिमों पर खुदा की ला'नत।

इरशादे बारी तआला है :

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ (پ २८، الصف: ३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : कितनी सख़्त नापसन्द है **अल्लाह** को वोह बात कि वोह कहो जो न करो।

और फ़रमाता है :

وَهُمْ فِي عَقْلَةٍ مُّعْرِضُونَ (پ १५، الانبياء: १)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह ग़फ़लत में मुंह फेरे हैं।

एक मक़ाम पर इरशाद होता है :

فَاعْرِضْ عَنْ مَن تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ
إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾ (النجم: २९)

एक जगह इरशाद फ़रमाता है :

وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿١١﴾
(الحجرات: ११)

इस मौजूअ पर इस के इलावा भी बहुत सी आयात हैं। नीज़ येह शख्स इन फ़रामीने बारी तआला में दाख़िल है। चुनान्वे, इरशाद होता है :

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا
أَمَانًى ﴿٤٨﴾ (البقرة: ४८)

और फ़रमाता है :

وَكَايِن مِّنْ آيَةٍ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ
يُتْرُونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ ﴿١٠﴾
(يوسف: १०)

कुरआने पाक ज़मीनो आस्मान की निशानियों को बयान करने वाला है और जब तिलावत करने वाला इन्हें पढ़ कर आगे गुज़र जाता है और इन से अघर नहीं लेता तो गोया वोह इन से बे ख़बर है।

मेरे कलाम को भी छोड़ दे :

इसी वजह से मन्कूल है कि वोह शख्स जो कुरआने पाक के अख़्लाक़ से मुत्तसिफ़ नहीं जब कुरआन पढ़ता है तो **اَللّٰهُ** उसे निदा फ़रमाता है : “तुझे मुझ से और मेरे कलाम से क्या तअल्लुक़ ? हालांकि तू मुझ से रू गर्दानी करता है। अगर तू मेरी बारगाह में तौबा नहीं करता तो मेरे कलाम को भी छोड़ दे।”

तिलावत करने वाले नाफ़रमान की मिषाल :

कुरआने पाक को बार बार पढ़ने वाले नाफ़रमान की मिषाल उस शख्स की तरह है जो किसी बादशाह के ख़त को हर रोज़ कई बार पढ़े जिस में येह लिखा है कि मुल्क को आबाद कर

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो तुम उस से मुंह फेर लो जो हमारी याद से फिरा और उस ने न चाही मगर दुन्या की ज़िन्दगी।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और इन में कुछ अनपढ़ हैं कि जो किताब को नहीं जानते मगर ज़बानी पढ़ लेना।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कितनी निशानिया हैं आस्मानों और ज़मीन में कि लोग इन पर गुज़रते हैं और इन से बे ख़बर रहते हैं !

और येह इसे वीरान करने में मशगूल है, फ़क़त ख़त पढ़ने पर ही इक्तिफ़ा किये हुए है हुक्म पर अमल नहीं करता, अगर वोह उसे न पढ़ता और हुक्म की मुख़ालफ़त करता तो उस के कलाम से कम मज़ाक़ करने वाला और नाराज़ी का कम मुस्तहिक् ठहरता ।

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “मैं कुरआने पाक पढ़ने का इरादा करता हूँ, जब मुझे इस के मज़ामीन याद आते हैं तो अज़ाब से डर कर तस्बीह व इस्तिग़फ़ार में मशगूल हो जाता हूँ ।”

कुरआने पाक पर अमल से रू गर्दानी करने वाले का ज़िक्र इस आयते तय्यिबा में है ।
चुनान्वे, इरशाद होता है :

فَبَدَّلَ وَهْوَ رَأَى ظُهُورَهُمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا
قَلِيلًا فَبُئْسَ مَا يَشْتَرُونَ ﴿٨٧﴾ (پ ۳، مال عمران: ۸۷)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : तो उन्होंने ने इसे अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और इस के बदले ज़लील दाम हासिल किये तो कितनी बुरी ख़रीदारी है ।

उक्ताहट महशूस हो तो तिलावत न करो :

मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जब तक दिल लगे और जिस्म नर्म हो तब तक कुरआन पढ़ते रहो⁽¹⁾ जब इधर उधर होने लगो तो पढ़ना छोड़ दो ।”⁽²⁾

एक रिवायत में है कि “जब इधर उधर होने लगो तो उस से उठ जाओ ।”⁽³⁾ ⁽⁴⁾

اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ (तिलावत का हक़ अदा करने वालों की ता'रीफ़ करते हुए) इरशाद फ़रमाता है :

①.....मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْمَنّٰن میرआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 265 पर इस के तहूत फ़रमाते हैं : येह काइदा उन खुश नसीब लोगों के लिये है जिन को कुरआन शरीफ़ की तिलावत में लज़्ज़त और हुज़ूरे क़्लब मुयस्सर होता है, और कभी ज़ियादा तिलावत की वजह से दिल उक्ता जाता है वोह दिल लगने तक पढ़ते रहें मगर वोह शख्स जिस का दिल तिलावत में लगता ही न हो वोह दिल को मजबूर कर के तिलावत करे, दिल न लगने के उज़्र से तिलावत छोड़ न दे पहले कुछ दिन दिल पर ज़ब्र करना पड़ेगा फिर दिल लगने लगेगा जैसा कि तजरिबा है ।

②.....صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرو القرآن.....الخ، الحديث: ۵۰۶۱، ج ۳، ص ۴۱۹، بدون: ولانت له جلود کم۔

قوت القلوب، الفصل الثامن عشر فيه کتاب ذکر الوصف المکروه.....الخ، ج ۱، ص ۱۰۸۔

③.....میرआتुल मनाजीह, जि. 3 स. 265 पर इस के तहूत है : कुछ देर के लिये तिलावत बन्द कर दो हत्ता कि वोह हालत जाती रहे तमाम इबादात का येही हाल है कि दिल लगा कर अदा करो ।

④.....صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب اقرو القرآن.....الخ، الحديث: ۵۰۶۱، ج ۳، ص ۴۱۹۔

الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩﴾ (پ ۹: الانفال: ۲)

तर्जमए कञ्जुल ईमान : वोही हैं कि जब **अल्लाह** याद किया जाए उन के दिल डर जाएं और जब उन पर उस की आयतें पढ़ी जाएं उन का ईमान तरक्की पाए और अपने रब्ब ही पर भरोसा करें ।

अच्छी आवाज़ से तिलावत करने वाला कौन ?

मरवी है कि प्यारे मुस्लिम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फरमाया :

إِنَّ أَحْسَنَ النَّاسِ صَوْتًا بِالْقُرْآنِ الَّذِي إِذَا سَمِعْتَهُ يَقْرَأُ رَأَيْتَ أَنَّهُ يَخْشَى اللَّهُ تَعَالَى

या'नी लोगों में सब से अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने वाला वोह शख्स है कि जिसे तुम जब कुरआन पढ़ते सुनो तो महसूस करो कि वोह **अल्लाह** से डर रहा है ।⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “ لَا يَسْمَعُ الْقُرْآنَ مِنْ أَحَدٍ أَشْهُى مِنْهُ مِمَّنْ يَخْشَى اللَّهَ عَزَّ وَجَلَّ ” या'नी खौफ़े खुदा रखने वाले शख्स से ज़ियादा अच्छी आवाज़ में तिलावत कुरआन किसी से नहीं सुनी जाती ।⁽²⁾

कुरआने पाक की तिलावत का मक़सद येही है कि दिल पर येह अहवाल पेश आएँ और इस पर अमल किया जाए वरना ख़ाली हुरूफ़ को पढ़ने के साथ ज़बान को हरकत देना बहुत आसान है ।

एक कारिये कुरआन का बयान है कि मैं ने एक मरतबा अपने उस्ताज़ साहिब को कुरआने पाक सुनाया, दूसरी बार पढ़ने लगा तो उन्होंने ने रोक दिया और फ़रमाया : “तूने मेरे सामने कुरआने करीम पढ़ने को अमल बना लिया है ? जा ! जा कर **अल्लाह** से सामने पढ़ फिर देख कि वोह तुझे किस चीज़ का हुक्म देता और किस चीज़ से मन्ज़ूर करता है ।”

सिर्फ़ छे हाफ़िज़े कुरआन :

तमाम अहवाल व आ'माल में सहाबए किराम **رَضَوُا لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** का येही मशग़ला था । चुनान्वे, जब रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने विसाले ज़ाहिरी फ़रमाया तो 20 हज़ार⁽³⁾

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة.....الخ، باب فى حسن الصوت بالقرآن، الحديث: ۱۳۳۹، ج ۲، ص ۱۳۰، مفهوماً۔

②.....كتاب الزهد لابن المبارك، باب ماجاء فى فضل العبادة، الحديث: ۱۱۳، ص ۳۷۔

③.....शायद इस से मदीनए तथ्यिबा के सहाबए किराम **مُرَادُ عَلَيْهِمُ الرَضَوَان** मुआद हैं वरना विसाले ज़ाहिरी के वक़्त सहाबए किराम की कुल ता'दाद एक लाख चौदह हज़ार थी जैसा कि दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 866 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “इस्लाहे आ'माल” जिल्द अव्वल सफ़हा 115 पर सथ्यिदी अब्दुल ग़नी नाबुलसी **رَضَوُا لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ** के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त सहाबए किराम की ता'दाद तकरीबन एक लाख 14 हज़ार थी जो सब अहले इल्म थे ।

(شرح العلامة الزرقاني على المواهب، ج ۹، ص ۳۰۸۔ المواهب اللدنية، المقصد السابع، الفصل الثالث، ج ۲، ص ۵۴۴۔ اتحاف السادة المتقين، ج ۵، ص ۱۱۹)

सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को छोड़ा जिन में से छे के इलावा कोई हाफ़िज़ न था इन में भी दो के बारे में इख़्तिलाफ़ है।⁽¹⁾ अक़षर सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان एक या दो सूरतें हिफ़ज़ करते थे।

जो कोई सूरए बक़रह और सूरए अन्आम हिफ़ज़ करता उसे उ-लमा में शुमार किया जाता।⁽²⁾

मरवी है कि एक शख़्स बारगाहे रिसालत में कुरआने पाक की ता'लीम हासिल करने के लिये हाज़िर हुवा जब इस आयते मुक़दसा तक पहुंचा :

فَسَنْ يَّعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ⁽⁷⁾
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ⁽⁸⁾
(پ ३०، الزلزال: ८، ९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो जो एक ज़रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

तो कहने लगा : “इतना ही काफ़ी है, फिर वापस चला गया।” तो हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “येह शख़्स इस हाल में वापस गया कि येह फ़कीह है।”

हकीकत में पसन्दीदा हालत वोही है कि जो **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ बन्दए मोमिन को आयत समझ लेने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाता है। महूज़ ज़बान को हरक़त देने का फ़ाइदा बहुत कम है बल्कि जो शख़्स ज़बान से तिलावते कुरआन करता और इस पर अमल करने से रू गर्दानी करता है वोह इन फ़रामीने बारी तआला का मिस्दाक़ है। चुनान्चे, इरशाद होता है :

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً⁽¹⁾
ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَعْمٰی⁽¹²³⁾
(پ १६، طه: १२३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिस ने मेरी याद से मुंह फेरा तो बेशक उस के लिये तंग ज़िन्दगानी है और हम उसे क़ियामत के दिन अन्धा उठाएंगे।

और इरशाद फ़रमाता है :

كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اِيْتَانَفَسِیَّتِهَآ وَكَذٰلِكَ⁽²⁾
الْیَوْمَ تُنْشِی⁽¹²⁴⁾
(پ १६، طه: १२४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : यूंही तेरे पास हमारी आयतें आई थीं तू ने उन्हें भुला दिया और ऐसे ही आज तेरी कोई ख़बर न लेगा।

①.....المعجم الكبير، الحديث: २०१२، ج २، ص २११، مفهوماً۔

قوت القلوب، الفصل الثامن عشر فيه كتاب ذكر الوصف المکروه.....الخ، ج १، ص १०८۔

②.....سنن الترمذی، کتاب فضائل قرآن، باب ماجاء فی فضل سورة البقرة.....الخ، الحديث: २८८५، ج २، ص ४०१، مفهوماً۔

या'नी तू ने कुरआने पाक को तर्क कर दिया, न तो इस में गौरो फ़िक्र किया और न ही इस की कुछ परवाह की क्योंकि जो शख्स किसी मुआमले में कोताही करता है तो कहा जाता है कि "उस ने इस मुआमले को भुला दिया।"

तिलावते कुरआन का हक़ :

कुरआने पाक की तिलावत का हक़ येह है कि इस में ज़बान, अक्ल और दिल तीनों शरीक हों। ज़बान का हिस्सा येह है कि वोह हुरूफ़ को तरतील के साथ सहीह सहीह अदा करे, अक्ल का हिस्सा इस के मआनी को ज़ाहिर करना है और दिल का हिस्सा इस के अवामिर व नवाही पर अमल पैरा हो कर नसीहत हासिल करना और अषर लेना है। लिहाज़ा ज़बान तरतील के साथ पढ़ती, अक्ल तर्जुमानी करती और दिल नसीहत क़बूल करता है।

﴿9﴾.....तरक्की :

इस से मुराद येह है कि तिलावते कुरआन में इस हद तक तरक्की करे कि अपने आप से नहीं बल्कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ से कुरआने पाक को सुने।

तिलावते कुरआन के दर्जात :

तिलावते कुरआन के तीन दर्जे हैं :

﴿1﴾.....सब से अदना दर्जा येह है कि बन्दा येह तसव्वुर करे कि वोह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ को सुना रहा और उस की बारगाह में खड़ा है और **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे देख रहा और उस की तिलावत सुन रहा है। (जब येह तसव्वुर करेगा तो) इस वक़्त उस की हालत सुवाल, खुशामद करने और आज़िजी व इन्किसारी वाली होगी।

﴿2﴾.....दिल से येह यकीन करे कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ इसे देख रहा, अपने लुत्फ़ो करम से इसे ख़िताब फ़रमा रहा और अपने इन्आम व एहसान से इसे राज़ बता रहा है। (जब येह तसव्वुर करेगा तो) उस वक़्त उस का मक़ाम, हया, ता'ज़ीम, सुनना और समझना होगा।

﴿3﴾.....कलाम में मुतकल्लिम और कलिमात में सिफ़ात पर नज़र रखे, खुद पर और अपनी तिलावत पर नज़र न रखे और न ही इन्आम पर इस हैषियत से नज़र करे कि येह इन्आम उस पर हुवा है बल्कि उस की पूरी की पूरी तवज्जोह व फ़िक्र मुतकल्लिम की तरफ़ ही हो गोया कि वोह दूसरों से मुंह फेर कर सिर्फ़ और सिर्फ़ मुतकल्लिम के मुशाहदे में मुस्तगरक़ है। (पहला दर्जा

मुता'रिफ़ीन व मुरीदीन का), दूसरा अस्हाबे यमीन का और तीसरा मुक़र्रबीन का है और जो इन से ख़ारिज है वोह गाफ़िलीन के दर्जात में है ।

सब से बुलन्द दर्जे के बारे में हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र बिन मुहम्मद सादिक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में मुख़्तूक के लिये तजल्ली फ़रमाई है लेकिन वोह देखते नहीं हैं ।”

गोया अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से सुन रहा हूँ :

एक बार हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़र बिन मुहम्मद सादिक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हालते नमाज़ में बे होश हो कर ज़मीन पर तशरीफ़ ले आए । इफ़ाका होने पर लोगों ने इस के मुतअल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया : “मैं एक आयत को बार बार पढ़ता रहा हूँ कि मैं ने उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुना तो उस की कुदरत के मुआइने के लिये मेरा जिस्म ठहर न सका ।”

इस क़िस्म के दर्जे में मिठास और मुनाजात की लज़ज़त बढ़ती रहती है । किसी दानिश्वर के बारे में मन्कूल है कि मैं कुरआन पढ़ता लेकिन इस की हलावत न पाता हूँ कि मैं ने कुरआने पाक की इस तरह तिलावत की गोया रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुन रहा हूँ कि आप सहाबए किराम رَضَوْنَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ के सामने तिलावत फ़रमा रहे हैं, फिर मेरा मर्तबा इस से बुलन्द किया गया और मैं इस तरह तिलावत करता गोया हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام से सुन रहा हूँ और वोह हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सुना रहे हैं, फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे वोह मर्तबा अता फ़रमाया कि अब मैं खुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से सुनता हूँ इस वक़्त मैं ऐसी लज़ज़त और सुकून पाता हूँ कि इस से रुक नहीं सकता ।

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना इष्माने ग़नी और हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया : “अगर दिल पाक हो जाएं तो कुरआने पाक की तिलावत से कभी सैर न हों ।”

इन्होंने ने येह सिर्फ़ इस वजह से फ़रमाया कि दिल की तह़ारत से इन्सान तरक्की कर के कलाम में मुतकल्लिम का मुशाहदा करता है । इसी लिये हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدْسَ سِرُّهُ التُّورَانِي ने फ़रमाया : “मैं ने 20 बरस कुरआने पाक से मशक्क़त उठाई और फिर 20 बरस इस की हलावत पाई ।”

अगर इन्सान मुतकल्लिम के मुशाहदे के साथ किसी दूसरे को न देखे तो इस फ़रमाने बारी तअ़ाला पर अमल करने वाला होगा :

فَقَرُّوْا اِلَى اللّٰهِ ط (प २५, الذّरیت: ५०)

तर्जमए कज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** की तरफ़ भागो ।

और इस फ़रमान पर भी अमल करने वाला होगा :

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ط (प २५, الذّरیت: ५१)

तर्जमए कज़ुल ईमान : और **अल्लाह** के साथ और मा'बूद न ठहराओ ।

तो जो शख्स तमाम मुआमलात में सिर्फ़ उसी की तरफ़ नज़र न करे वोह उस के ग़ैर को देखने वाला है । **अल्लाह** तअ़ाला के इलावा हर वोह शै कि जिस की तरफ़ कोई शख्स इल्तिफ़ात करे, उस का इल्तिफ़ात शिके ख़फ़ी को शामिल होगा । तौहीदे ख़ालिस येह है कि बन्दा तमाम मुआमलात में **अल्लाह** तअ़ाला के सिवा किसी और की तरफ़ मुतवज्जेह न हो ।⁽¹⁾

﴿10﴾..... बराअत का इज़हार :

इस से मुराद येह है कि अपनी ताक़त व कुव्वत और अपने नफ़्स की तरफ़ रिज़ा व तजकिये की निगाह करने से बराअत ज़ाहिर करे । जब नेक लोगों की ता'रिफ़ और उन के लिये इन्आमात के वा'दे पर मुश्तमिल आयात की तिलावत करे तो खुद को पेशे नज़र न रखे बल्कि अहले यकीन और सिद्दीकीन को पेशे नज़र रखे और इस बात का शौक़ रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे भी उन के साथ मिला दे । जब नाफ़रमानी व कोताही करने वालों की मज़म्मत और नाराज़ी पर मुश्तमिल आयात की तिलावत करे तो खुद को पेशे नज़र रखे और ख़ौफ़ व डर के सबब येह तसव्वुर करे कि येह खुद इन आयात का मुखातब है । इसी लिये हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا फ़रमाया करते थे : “اللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُكَ لِطُلُوبِیْ وَكُفْرِیْ” या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अपने जुल्म और कुफ़्र से तेरी बख़्शिश का सुवाल करता हूँ ।” उन से अर्ज़ की गई : “जुल्म तो मा'लूम है, कुफ़्र से क्या मुराद है ?” तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने येह आयते मुक़द्दसा तिलावत की :

اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ کَفّٰرٌ ط (प १३, البرहیم: ३३)

तर्जमए कज़ुल ईमान : बेशक आदमी बड़ा ज़ालिम बड़ा ना शुक्रा है ।

①..... इस से कोई येह न समझे कि महबूबाने खुदा से तवस्सुल करना उन से मदद मांगना वगैरा भी तौहीदे ख़ालिस के मनाफ़ी है क्यूंकि महबूबाने खुदा की तरफ़ नज़र करना (उन से तवस्सुल करना और मदद मांगना वगैरा) हकीकत में **अल्लाह** तबारक व तअ़ाला की तरफ़ ही नज़र करना है न कि ग़ैर की तरफ़ । चुनान्वे, दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 318 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब फ़जाइले दुआ सफ़हा 65 पर सय्यिदी आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : “महबूबाने खुदा से तवस्सुल नज़र ब खुदा है न कि नज़र बग़ैर (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों को अपनी हाज़त रवाई के लिये वसीला बनाना दर हकीकत **अल्लाह** तअ़ाला ही से मदद मांगना है न कि किसी और से) ।”

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन अस्बात رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से पूछा गया : “जब आप कुरआने पाक की तिलावत करते हैं तो किस चीज़ की दुआ करते हैं?” फ़रमाया : “मैं 70 बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी कोताहियों की मग़फ़िरत त़लब करता हूँ।”

जब इन्सान तिलावते कुरआन के वक़्त खुद को कोताही करने वाला तसव्वुर करेगा तो येह उस की कुर्बत का सबब बनेगा क्यूंकि जो शख़्स कुर्ब में दूरी को देखता है (या'नी क़रीब होते हुए भी दूरी महसूस करता है) उसे ख़ौफ़ अ़ता होता है हत्ता कि येह ख़ौफ़ उसे कुर्ब में दूसरे दर्जे की तरफ़ ले जाता है जो पहले से आ'ला होता है और जो दूरी में कुर्ब को देखता है उस से ख़ौफ़ को रोक लिया जाता है, फिर वोह पहले से भी निचले दर्जे में चला जाता है।

जब इन्सान अपने नफ़्स की तरफ़ रिज़ा की निगाह से देखता है तो उस का नफ़्स ही उस के लिये हिजाब बन जाता है और जब तिलावते कुरआन में नफ़्स की तरफ़ इल्तिफ़ात करने से तजावुज़ कर के सिर्फ़ और सिर्फ़ ज़ाते बारी तअ़ला को पेशे नज़र रखता है तो उस के लिये मलकूत के असरार खुल जाते हैं।

हिक्क़ायत :- जन्नती फूल :

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَسَ سرُّهُ التُّورَانِي फ़रमाते हैं : “हज़रते सय्यिदुना इब्ने शौबान رَحْمَةُ اللَّهِ الْمَنَانُ عَلَيْهِ ने अपने एक भाई से वा'दा किया कि रात को खाना उन के पास खाएंगे लेकिन किसी सबब से तशरीफ़ न ला सके हत्ता कि सुब्ह हो गई। अगले दिन जब उन से मुलाक़ात हुई तो उन्होंने ने कहा : “आप ने मुझ से वा'दा फ़रमाया था कि रात को खाना मेरे पास खाएंगे फिर वा'दा ख़िलाफ़ी क्यूं की?” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “अगर मेरा तुम से वा'द न होता तो मैं तुम्हें कभी भी न बताता कि मुझे तुम्हारे पास आने से किस चीज़ ने रोका जब मैं ने इशा की नमाज़ पढ़ी तो सोचा कि तुम्हारे पास आने से पहले वित्र पढ़ लूं कहीं ऐसा न हो कि मौत आ जाए। चुनान्चे, जब मैं दुआए कुनूत पढ़ने लगा तो मेरे सामने एक सबज़ बागीचा लाया गया जिस में तरह़ तरह़ के जन्नती फूल थे, मैं उसे देखता रहा हत्ता कि सुब्ह हो गई।”

ख़ुलाशए क़लाम :

मुकाशफ़ात, नफ़्स और इस की ख़्वाहिशात की तरफ़ इल्तिफ़ात करने से बराअत ज़ाहिर किये बिग़ैर हासिल नहीं होते फिर येह मुकाशफ़ात उस शख़्स के अहवाल के ए'तिबार से ख़ास होते हैं जिस पर क़शफ़ होता है। लिहाज़ा जब वोह उम्मीद वाली आयात तिलावत करता और

इस के हाल पर बिशारत ग़ालिब होती है तो उस के लिये जन्नत की सूरत मुन्कशिफ़ हो जाती है और वोह उसे ऐसे देखता है गोया अपनी आंखों से देख रहा है और जब इस के हाल पर ख़ौफ़ ग़ालिब होता है तो उस पर दोज़ख़ मुन्कशिफ़ हो जाती है हत्ता कि वोह उस के मुख़लिफ़ किस्म के अज़ाबात देखता है। येह इस वजह से है कि कलामे इलाही आसान व खुशगवार, सख़्त और उम्मीद व ख़ौफ़ वाली बातों पर मुश्तमिल है और येह इस के अवसाफ़ के ए'तिबार से है क्यूंकि **अल्लाह** तआला के अवसाफ़ में रहमत, मेहरबानी, इन्तिक़ाम और पकड़ भी है तो कलिमात और सिफ़ात का मुशाहदा करने के ए'तिबार से दिल मुख़लिफ़ हालात में बदलता रहता और हर हालत के ए'तिबार से इस के मुनासिब अम्र के मुशाहदे के लिये तय्यार हो जाता है, इस लिये कि येह मुहाल है कि सुनने वाले की एक ही हालत रहे और जो सुना जा रहा है वोह बदलता रहे हालांकि इस में रिज़ा व ग़ज़ब वाले का कलाम भी है और इन्आम करने वाले, इन्तिक़ाम लेने वाले और जब्बार व मुतकब्बिर का कलाम भी है जो बे परवाह है और मेहरबानी व एहसान करने वाले का कलाम भी है जो बेकार नहीं छोड़ता।



.....छे अपशद पर ला'नत.....

फ़रमाने मुस्तफ़ा : छे तरह के लोगों पर मैं ला'नत करता हूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी उन पर ला'नत फ़रमाता है और हर नबी की दुआ क़बूल है, छे अश्ख़ास येह है :

(1) किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ में इज़ाफ़ा करने वाला (2) तक्दीर को झुटलाने वाला (3) मेरी उम्मत पर जुल्म के साथ तसल्लुत करने वाला कि उस शख़्स को इज़्ज़त देता है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़लील किया और उस को ज़लील करता है जिस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इज़्ज़त अता फ़रमाई (4) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हरम (या'नी हरमे मक्का) को हलाल ठहराने वाला (5) मेरे अहले बैत की हुरमत जिस का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुक्म दिया है उस को पामाल करने वाला और (6) मेरी सुन्नत को छोड़ने वाला ।”

(الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، الحديث ٥٤٩، ج ٤، ص ٥٠١)

बाब नम्बर 4 : फहमे कुरआन और तफसीर बिराए का बयान

शायद तुम कहो कि गुज़स्ता बहूष में असरारे कुरआन को समझने और पाकीज़ा दिल वालों के लिये मुन्कशिफ़ होने वाले मअानी की अज़मत बयान की गई है, येह बात कैसे दुरुस्त हो सकती है ? हालांकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “مَنْ فَسَّرَ الْقُرْآنَ بِرَأْيِهِ فَلَيْتَ بَؤْسَ مَقْعَدِهِ مِنَ النَّارِ” या'नी जो कुरआन की तफ़सीर अपनी राए से करे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाए।” (1) (2)

येही वजह है कि ज़ाहिरी तफ़सीर करने वाले अहले इल्म हज़रात ने मुफ़स्सरीन में से उन अहले तसव्वुफ़ पर ए'तिराज़ किया है जो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और तमाम मुफ़स्सरीन के ख़िलाफ़, बतरीक़े तसव्वुफ़ कलिमाते कुरआन की तावील करते हैं, उन के नज़दीक येह कुफ़्र है। अगर येह सहीह हो जो ज़ाहिरी तफ़सीर करने वालों ने कहा है तो फिर सिवाए तफ़सीर याद करने के कुरआने पाक को समझने का क्या मा'ना ? और अगर दुरुस्त न हो तो फिर हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस फ़रमान कि “जो कुरआन की तफ़सीर अपनी राए से करे वोह अपना ठिकाना जहन्नम में बनाए” का क्या मा'ना ?

जान लीजिये ! जिस ने येह गुमान किया है कि कुरआने पाक के सिर्फ़ वोही मअानी हैं जो ज़ाहिरी तफ़सीर बयान करे तो वोह अपनी ज़ात की हद के बारे में ख़बर देता है और वोह अपनी ज़ात के बारे में ख़बर देने में सच्चा है लेकिन तमाम मख़्लूक़ को अपने जैसा समझने में ख़ता पर है।

मझानिये कुरआन का दाइरा बहुत वसीअ है :

अख़बार व आधार इस बात पर दलालत करते हैं कि अक्ल वालों के लिये कुरआने पाक

①.....मुफ़स्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلٰٓئِكَةِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 1 स. 208 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : कुरआन की तफ़सीर बिराए करने वाला जहन्नमी है, ख़याल रहे कि कुरआन की बा'ज चीज़ें नक्ल पर मौकूफ़ है जैसे शाने नुज़ूल, नासिख़ मन्सूख़, तजवीद के क़वाइद इन्हें राए से बयान करना ह़राम है वोही यहां मुराद है और बा'ज चीज़ें शरई अक्ल से भी मा'लूम हो सकती हैं जैसे आयात के इल्मी निक्क़त अच्छी और सहीह तावीलें, पैदा होने वाले ए'तिराज़ात के जवाबत वगैरा इन में नक्ल लाज़िम नहीं गरज़ कि कुरआन की तफ़सीर बिराए ह़राम है और तावील बिराए उ-लमाए दीन के लिये बाइषे षवाब या इस की तहकीक़ हमारी किताब जाअल हक़ और मिरक़ात में इसी मक़ाम पर देखो : रब्ब तअ़ाला फ़रमाता है “أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْاِنشَازَ” मा'लूम हुवा कि कुरआन में तदब्बुर व तफ़क्कुर का हुक्म है। इस में इशारतन फ़रमाया कि उ-लमा को कुरआनी तावीलात की इजाज़त है जोहला को येह भी ह़राम, इस से वोह लोग इब्रत पकड़ें जो फ़क़त तर्जमए कुरआन से ग़लत मस्अले मुस्तम्बत कर के लोगों को गुमराह करते हैं। हदीष व कुरआन के फ़क़त तर्जमे बिगैर फ़िक़ह की रोशनी के अ़वाम के लिये ज़हरे कातिल हैं।

के मअानी का दाइरा बहुत वसीअ है। चुनान्वे, अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : “मगर येह कि **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ किसी बन्दे को कुरआने पाक की समझ बूझ अता फ़रमा दे।”⁽¹⁾ अगर मन्कूल शुदा तर्जमे के सिवा कुरआने पाक के और कोई मअानी नहीं हैं तो फिर इस “समझ” से क्या मुराद है ?

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मा’रिफ़त निशान है : “**إِنَّ لِلْقُرْآنِ ظَاهِرًا وَبَاطِنًا وَحَدًّا وَمَطْلَعًا**” या’नी बेशक कुरआन का ज़ाहिर भी है और बातिन भी, इस की एक हद है और एक मत्लअ।”

पस ज़ाहिर व बातिन और हद्दो मत्लअ (इब्तिदा व इन्तिहा) का क्या मा’ना है ?

सय्यिदुना अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इल्म :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने फ़रमाया : “**لَوْ شِئْتُ لَأَوْقَرْتُ سَبْعِينَ بَعِيرًا مِنْ تَفْسِيرِ فَاتِحَةِ الْكِتَابِ**” या’नी अगर मैं चाहूँ तो सूरए फ़ातिहा की तफ़सीर से **70** ऊंट भर दूँ।” इस का क्या मा’ना है ? हालांकि इस की ज़ाहिरी तफ़सीर तो निहायत मुख्तसर है।

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “**لَا يَفْقَهُ الرَّجُلُ حَتَّى يَجْعَلَ لِلْقُرْآنِ وَجُوهًا**” या’नी बन्दा उस वक़्त तक फ़कीह नहीं हो सकता जब तक कुरआने पाक को कई वुजूह से न जान ले।”

कुरआने पाक कितने उलूम पर मुश्तमिल है ?

बा’ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने फ़रमाया : “हर आयत के **60** हज़ार मफ़हूम हैं और जो समझने से रह गए वोह इस से ज़ियादा हैं।”

बा’ज उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने फ़रमाया : “कुरआने पाक **77** हज़ार **200** उलूम पर मुश्तमिल है क्यूंकि हर कलिमा एक इल्म है फिर येह चार गुना हो जाता है क्यूंकि हर कलिमे का एक ज़ाहिर है, एक बातिन, एक हद है और एक मत्लअ।”

नीज़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** को **70** मरतबा दोहराना भी इसी लिये था कि इस के बातिनी मअानी में ग़ौरो फ़िक्र करें वगर्ना इस का तर्जमा व तफ़सीर तो ज़ाहिर है और इस किस्म की आयत को बार बार दोहराने की हाज़त नहीं होती।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया :
 “مَنْ أَرَادَ عِلْمَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ فَلْيَتَدَبَّرِ الْقُرْآنَ” या’नी जो अव्वलीन व आख़िरीन के उलूम जानना चाहता है उसे चाहिये कि कुरआने पाक में ग़ौरो फ़िक्र करे।” येह चीज़ें सिर्फ़ तफ़्सीरे ज़ाहिरी से हासिल नहीं होतीं।

ख़ुलासए कलाम :

तमाम उलूम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के अफ़्आल व सिफ़ात में दाख़िल हैं और कुरआने पाक में उस की ज़ात, अफ़्आल और सिफ़ात की शर्ह है। इन उलूम की कोई इन्तिहा नहीं और कुरआने पाक में इन तमाम उलूम की तरफ़ इजमाली तौर पर इशारा है, इन की तफ़्सील की गहराई कुरआने पाक को समझने पर मौकूफ़ है, सिर्फ़ ज़ाहिरी तफ़्सीर इस की तरफ़ इशारा नहीं करती बल्कि हर वोह चीज़ जो ग़ौरो फ़िक्र करने वालों पर मुशक़ल है और इस के बारे में मख़्लूक के नज़रियात व मा’कूलात में इख़िलाफ़ है तो कुरआने पाक में इन की तरफ़ इशारे और दलालतें हैं जिन का इदराक़ अहले इल्म ही को होता है तो ज़ाहिरी तर्जमा व तफ़्सीर इसे कैसे पूरा कर सकती है ? इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :
 “اقْرءُوا الْقُرْآنَ وَالتَّهْمِسُوا غَرَائِبَهُ” या’नी कुरआने पाक पढ़ो और इस के अजाइबात तलाश करो।”⁽¹⁾

मजबूत रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़अबख़्श शिफ़ा :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “क़सम है उस ज़ात की जिस ने मुझे हक़ के साथ नबी बना कर भेजा ! मेरी उम्मत अस्ल दीन और जमाअत से हट कर 72 फ़िक्रों में बट जाएगी जो तमाम के तमाम गुमराह और गुमराह गर होंगे वोह जहन्म की तरफ़ बुलाएंगे, जब ऐसा हो तो तुम पर कुरआने पाक की पैरवी लाज़िम है क्यूंकि इस में तुम से पहले और तुम्हारे बा’द आने वालों की ख़बरे हैं और तुम्हारे आपस के झगड़ों का फैसला है, जो मुतकब्बिर इस की मुख़ालफ़त करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे हलाक कर देगा और जो इस के इलावा किसी और चीज़ में इल्म तलाश करेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे गुमराह कर देगा, येह **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की मजबूत रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़अबख़्श शिफ़ा है, जो इसे मजबूत थामे उस के लिये इस्मत है और जो इस की पैरवी करे उस के लिये नजात है, येह टेढ़ा नहीं होता कि सीधा करने

①.....شعب الإيمان للبيهقي، باب في تعظيم القرآن، فصل في قراءة القرآن.....الحديث: ٢٢٩٢، ج ٢، ص ٢٢٤.

की ज़रूरत हो और न ही किसी तरफ़ माइल होता है कि दुरुस्त किया जाए इस के अज़ाबता ख़त्म नहीं होते और न ही बार बार पढ़ना इसे पुराना करता है।⁽¹⁾

राहे नजात :

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जब हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने बा'द इख़िलाफ़ और फ़िर्की की ख़बर दी तो मैं ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अगर मैं वोह ज़माना पाऊं तो आप मुझे क्या नसीहत फ़रमाते हैं ?” तो आप صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “कुरआने पाक की ता'लीम हासिल करो और उस के मज़ामीन पर अमल करो कि इस से निकलने का येही रास्ता है।” हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने तीन मर्तबा येही सुवाल किया तो आप صَلَّی اللَّهُ तَعَالَى عَلَیْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने तीनों बार येही जवाब इरशाद फ़रमाया कि “कुरआने पाक की ता'लीम हासिल करो और इस के मज़ामीन पर अमल करो कि इसी में नजात है।”⁽²⁾

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने फ़रमाया : “مَنْ فَهِمَ الْقُرْآنَ فَسَرِبَ جَمَلُ الْعِلْمِ” या'नी जिस ने कुरआने पाक को समझ लिया वोह इस के ज़रीए तमाम उलूम बयान कर सकता है।” इस फ़रमान से आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की मुराद येह है कि कुरआने पाक तमाम उलूम की तरफ़ इजमाली तौर पर इशारा करता है।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने **अब्बास** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमान :

وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا^(پ ۳، البقرة: ۲۶۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जिसे हिक्मत मिली उसे बहुत भलाई मिली।
के बारे में फ़रमाया कि इस से मुराद कुरआने करीम की समझ है।

इरशादे बारी तअ़ाला है :

فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ ۚ وَكُلًّا آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا وَعِلْمًا

(پ ۱، الانبیاء: ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने वोह मुआमला सुलैमान को समझा दिया और दोनों को हुक्मत और इल्म अता किया।

①.....سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن، باب ماجاء فی فضل القرآن، الحدیث: ۲۹۱۵، ج ۴، ص ۴۱۵، مفہومًا۔

قوت القلوب، الفصل السادس عشر، فی ذکر معاملۃ العبد فی تلاوته.....الخ، ج ۱، ص ۹۰۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الفتن والملاحم، باب ذکر الفتن ودلائلہا، الحدیث: ۴۲۴۶، ج ۴، ص ۱۳۱، مفہومًا۔

قوت القلوب، الفصل السادس عشر، فی ذکر معاملۃ العبد فی تلاوته.....الخ، ج ۱، ص ۹۰۔

अव्बाह عَزَّوَجَلَّ ने जो कुछ हज़रते सय्यिदुना दावूद और हज़रते सय्यिदुना सुलैमान को अता फ़रमाया इस का नाम इल्मो हिक्मत रखा और इन की समझदारी को जिस में हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيَّهِ السَّلَام मुन्फ़रिद थे खास तौर पर “फ़हम” के लफ़्ज़ के साथ ज़िक्र फ़रमाया और इसे इल्मो हिक्मत पर मुक़द्दम फ़रमाया ।

येह तमाम उमूर इस बात पर दलालत करते हैं कि कुरआने पाक के मअानी समझने में बहुत ज़ियादा कुशादगी व वुस्अत है और जो कुछ ज़ाहिरी तफ़्सीर से मन्कूल है वोह कुरआने पाक के मअानी समझने की इन्तिहा नहीं । रहा हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह इरशादे गिरामी कि “जो कुरआन की तफ़्सीर अपनी राए से करे”⁽¹⁾ नीज़ तफ़्सीर बिर्आए से मुमानअत⁽²⁾ और अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीकِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का येह फ़रमान कि “अगर मैं कुरआने पाक में अपनी राए से कुछ कहूं तो मुझे कौन सी ज़मीन उठाएगी और कौन सा आस्मान मुझ पर साया करेगा ?” और इन के इलावा अख़बार व आपार में से दीगर अक्वाल कि जिन में अपनी राए से कुरआने पाक की तफ़्सीर करने से मन्अ किया गया है, दो हाल से ख़ाली नहीं या तो इस से मुराद होगा कि सिर्फ़ और सिर्फ़ मन्कूल शुदा और अपने सुने हुए पर इक्तिफ़ा किया जाए, इस्तिम्बात और खुद समझने को छोड़ दिया जाए या फिर इन से मुराद कुछ और होगी ।

मन्कूल तफ़्सीर पर इक्तिफ़ा करना कैसा ?

येह मुराद लेना कि “मन्कूल तफ़्सीर के इलावा कोई शख़्स कुरआन में कलाम न करे” चन्द वुजूह से बातिल है :

﴿1﴾....सुनने में येह शर्त है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सुना गया हो और आप ही की तरफ़ मन्सूब हो और येह बात कुरआने पाक के बा’ज हिस्से में ही हो सकती है । लिहाज़ा जो कुछ हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا और हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने अपनी तरफ़ से कहा है इसे भी क़बूल नहीं करना चाहिये और इसे भी तफ़्सीर बिर्आए कहना चाहिये क्यूंकि उन्होंने ने इसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से नहीं सुना । इसी तरह दीगर सहाबए किराम رَضُوا اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمْ أَجْمَعِينَ का मुआमला है ।

﴿2﴾....सहाबए किराम और मुफ़स्सिरीन ने बा’ज आयात की तफ़्सीर में इख़िलाफ़ किया है, इन की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक्वाल हैं जिन में ततबीक़ नहीं दी जा सकती और इन तमाम का

①.....مشكاة المصابيح، كتاب العلم، الفصل الثاني، الحديث: ۲۳۲، ج ۱، ص ۶۵، مفهوماً۔

②.....مشكاة المصابيح، كتاب العلم، الفصل الثاني، الحديث: ۲۳۳-۲۳۴، ج ۱، ص ۶۵۔

रसूलुल्लाह ﷺ से सुनना भी मुहाल है, अगर एक कौल सुना गया हो तो बाकी रद्द हो जाएंगे, इस से यकीनी तौर पर ज़ाहिर हो गया कि हर मुफ़स्सिर ने वोह मा'ना बयान किया है जो बहूष व इस्तिम्बात के ज़रीए इस पर ज़ाहिर हुवा हत्ता कि इन्हों ने सात सूरतों के इब्तिदाई हुरूफ़ के बारे में मुख़्तलिफ़ किस्म के अक्वाल कहे जिन के दरमियान ततबीक देना मुमकिन नहीं। मषलन कहा गया है कि "الر" लफ़्ज़ "الرَّحْمَن" के बा'ज हुरूफ़ हैं, येह भी कहा गया है कि "ا" से **अब्बाह** "ا" से लतीफ़ और "ر" से मुराद रहीम है, इस के इलावा दीगर अक्वाल भी हैं और इन तमाम में ततबीक देना नामुमकिन है लिहाज़ा कैसे हो सकता है कि येह तमाम अक्वाल हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ से सुने हुए हों ?"

﴿3﴾....मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ ने हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के लिये दुआ करते हुए इरशाद फ़रमाया : "يَا'نِي اللَّهُمَّ فَقِّهْهُ فِي الدِّينِ وَعَلِّمَهُ التَّوِيلَ" : "अगर अल्फ़ाज़ की तरह कुरआने पाक की तफ़सीर भी सुनी हुई और महफूज़ हो तो फिर हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا को इस के साथ ख़ास करने का क्या मा'ना है ?

﴿4﴾....इरशादे बारी तअ़ाला है :

لَعَلَّهِ الَّذِينَ يَسْتَبِطُونَهُ مِنْهُمْ
(پ. ۵، النساء: ۸۴)

तर्जमए कज़ज़ुल ईमान : तो ज़रूर उन से उस की हकीकत जान लेते येह जो बा'द में काविश करते हैं।

इस आयते मुकद्दसा में **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इल्म वालों के लिय इस्तिम्बात को षाबित किया है और येह बात मा'लूम है कि इस्तिम्बात सुनी हुई बातों के इलावा में होता है और वोह तमाम आधार जो हम ने कुरआने पाक समझने के सिलसिले में ज़िक्र किये हैं वोह इस ख़याल के ख़िलाफ़ हैं, लिहाज़ा तफ़सीर में सुने हुए होने की शर्त लगाना बातिल हो गया और हर साहिबे इल्म कि जिसे **अब्बाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उलूमे कुरआन पर कुदरत अता फ़रमाई उस के लिये जाइज़ हो गया कि वोह कुरआने करीम से अपनी समझ और अक्ल की हद के मुताबिक़ मा'ना अख़ज़ करे।

तफ़सीर बिर्राए से मुमानअत की वुजूह :

बहर हाल जहां तक (तफ़सीर बिर्राए) से मुमानअत का तअल्लुक है तो वोह दो सूरतों में से किसी एक में होगी :

﴿1﴾....आदमी की किसी शै के बारे में कोई राए हो और उस की तबीअत व ख़्वाहिश का मैलान भी उसी तरफ़ हो फिर वोह अपनी राए व ख़्वाहिश के मुताबिक़ कुरआने पाक की तफ़सीर करे

ताकि इस से अपनी गरज के सहीह होने पर दलील पकड़ सके, अगर इस बारे में उस की येह राए व ख्वाहिश न होती तो उस के लिये कुरआने पाक से येह मा'ना जाहिर न होता ।

कभी तो इल्म होने के बा वुजूद वोह ऐसा करता है जैसे कोई शख्स कुरआने पाक की बा'ज आयात से अपनी बिदअत के सहीह होने पर दलील पकड़ता है हालांकि वोह जानता है कि इस आयत से येह मुराद नहीं लेकिन वोह इस के ज़रीए अपने मद्दे मुक़ाबिल को धोका देना चाहता है ।

कभी जहालत की वजह से ऐसा मा'ना बयान करता है । लेकिन अगर आयत इस मा'ना का एहतिमाल रखती हो और उस की फ़हम इस तरफ़ माइल हो जाए जो उस की गरज के मुवाफ़िक़ है और वोह अपनी राए व ख्वाहिश की वजह से इसे तरजीह दे दे तो इस वक़्त वोह राए से तफ़्सीर करने वाला होगा या'नी उस की राए ने उसे इस तरह तफ़्सीर पर उभारा कि अगर उस की राए न होती तो उस के नज़दीक येह मा'ना तरजीह न पाता ।

कभी अपनी किसी सहीह गरज की वजह से कुरआने पाक से कोई दलील तलाश करता है और इस पर ऐसी आयत वग़ैरा से इस्तिदलाल करता है जिस के बारे में वोह जानता है कि इस से येह मुराद नहीं, जैसा कि कोई शख्स सहरी के वक़्त इस्तिग़फ़ार की तरफ़ बुलाए और इस फ़रमाने मुस्तफ़ा से इस्तिदलाल करे कि “सहरी करो बेशक सहरी में बरकत है ।”^(१) और गुमान करे कि सहरी से मुराद ज़िक्र है हालांकि वोह जानता है कि इस से मुराद खाना है । इसी तरह कोई शख्स किसी सख़्त दिल को मुजाहदे की तरफ़ बुलाए और इस फ़रमाने बारी तअ़ला से दलील पकड़े : “ادْهَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ” (طه: २४) और इस से दिल की तरफ़ इशारा करते हुए कहे कि फिरऔन से मुराद येही है । येह तरीक़ा बा'ज वाइज़ सहीह मक़ासिद के हुसूल के लिये कलाम को ख़ूब सूरत बनाने और सामेईन को रग़बत दिलाने के लिये इस्ति'माल करते हैं, जो कि ममनूअ है ।

इस तरीक़े को फ़िर्कए बातिनिय्या वालों ने अपने फ़ासिद मक़ासिद के हुसूल के लिये लोगों को धोके में मुब्तला कर के उन्हें अपने बातिल मज़हब की तरफ़ बुलाने के लिये इख़्तियार किया । वोह अपनी राए व मज़हब के मुताबिक़ कुरआने पाक की तफ़्सीर करते हालांकि क़तई तौर पर जानते थे कि इस से येह मुराद नहीं ।

येह तफ़्सीर बिराए से मुमानअत की एक सूरत है और यहां पर राए से मुराद वोह फ़ासिद राए होगी जो ख्वाहिश के मुताबिक़ हो, न कि वोह जो इजतिहादे सहीह के मुताबिक़ हो ।

राए सहीह और फ़ासिद दोनों तरह की होती है आम तौर पर जो ख़्वाहिश के मुताबिक़ हो इस के साथ “राए” का नाम खास कर दिया गया है।

﴿2﴾.....ज़ाहिरी अरबी अल्फ़ाज़ की तरफ़ नज़र करते हुए कुरआने पाक की तफ़्सीर करने में जल्दी करे, कुरआने पाक के अज़ाइबात और इस में जो मुब्हम व मुबद्ल अल्फ़ाज़, इख़्तिसार, हज़फ़, इज़मार, तक्दीम व ताख़ीर हैं, इन में मसमूअ व मन्कूल रिवायात से मदद न ले।

जिसे कुरआने पाक की ज़ाहिरी तफ़्सीर में पुख़्तगी हासिल न हो, वोह सिर्फ़ अरबी समझ लेने के साथ कुरआने पाक के मअानी के इस्तिम्बात करने में जल्दी करे तो बहुत ग़लतियां करेगा और तफ़्सीर बिराए करने वालों में शामिल होगा, लिहाज़ा अव्वलन ज़ाहिरी तफ़्सीर में मसमूअ व मन्कूल रिवायात का होना ज़रूरी है ताकि इस के ज़रीए ग़लती की जगहों से बचा जा सके, इस के बा’द फ़हम व इस्तिम्बात में वुस्अत पैदा होती है।

कुरआने पाक के वोह अज़ाइबात जो बिगैर समाअ के समझ में नहीं आ सकते बहुत हैं, हम इन में से बा’ज़ की तरफ़ इशारा कर देते हैं ताकि इन के ज़रीए इन की मिष्ल दीगर अज़ाइबात पर इस्तिदलाल किया जा सके और मा’लूम हो जाए कि अव्वलन ज़ाहिरी तफ़्सीर को याद करने में सुस्ती व ला परवाही करना जाइज़ नहीं और ज़ाहिरी इल्म को मज़बूत किये बिगैर बातिन तक पहुंचने का कोई ज़रीआ नहीं, लिहाज़ा जो शख्स कुरआने पाक के असरार को समझने का दा’वा करे हालांकि उसे ज़ाहिरी तफ़्सीर में पुख़्तगी हासिल न हो तो उस की मिषाल ऐसी है जैसे कोई शख्स घर के दरवाज़े से गुज़रने से पहले उस के अन्दर पहुंच जाने का दा’वा करे या कोई शख्स तुर्कियों के कलाम से उन के मक़ासिद समझने का दा’वा करे हालांकि उसे तुर्की ज़बान न आती हो। ज़ाहिरी तफ़्सीर लुग़त सीखने के काइम मक़ाम है जो किसी भी बात को समझने के लिये ज़रूरी होती है।

﴿यहां हज़रते सय्यिदुना इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي ने चन्द उमूर और इन की मिषालें बयान की हैं जिन में ज़ाहिरी तफ़्सीर के लिये मसमूअ या’नी सुना हुवा होना ज़रूरी है, इन्हें हज़फ़ कर दिया गया है, इल्मी जौक़ रखने वाले अस्ल किताब की तरफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं। इल्मिय्या﴾

रासिख़ फ़िल इल्म हज़रात का हिस्सा :

कुरआने पाक के मअानी के असरार सिर्फ़ रासिख़ फ़िल इल्म हज़रात के लिये इतनी ही मिक्दार में मुन्कशिफ़ होते हैं जितना उन के उलूम की कषरत, दिलों की सफ़ाई, ग़ौरो फ़िक्र की तरफ़ बुलाने वाले उमूर की कषरत और इन की तलब में इख़्लास होता है। हर किसी के लिये

एक दर्जे से आ'ला दर्जे की तरफ़ तरक्की की एक हद होती है लेकिन तमाम दर्जात को तै कर लेना मुमकिन नहीं क्यूंकि अगर तमाम समन्दर सियाही और तमाम दरख्त क़लमें बन जाएं तब भी कलिमाते इलाही के असरार की कोई इन्तिहा न होगी और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के कलिमात के ख़त्म होने से पहले येह समन्दर ख़त्म हो जाएंगे। इसी वजह से कुरआने पाक की ज़ाहिरी तफ़्सीर को जानने में मुश्तरक होने के बा वुजूद इस के मअानी को समझने में मख़्लूक बाहम मुख़्तलिफ़ है क्यूंकि ज़ाहिरी तफ़्सीर असरारे कुरआन को समझने से बे नियाज़ नहीं करती।

एक मिषाल :

हुज़ूर नबिय्ये पाक **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने हालते सजदा में येह दुआ फ़रमाई :

”أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَأَعُوذُ بِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوبَتِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ“

या'नी मैं तेरी नाराज़ी से तेरी रिज़ा की और तेरी सज़ा से तेरी अफ़ियत की पनाह मांगता हूँ, तेरी तुझ से पनाह मांगता हूँ, तेरी हम्द मैं नहीं कर सकता, तू ऐसा ही है जैसी तू ने खुद अपनी हम्द की।⁽¹⁾

दुआ के अशरारे रूमूज़ :

बा'ज अरबाबे कुलूब ने इस दुआ से येह समझा कि आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को सजदे के ज़रीए कुर्बे खुदावन्दी का हुक्म हुवा तो आप ने सजदे में कुर्ब को पाया, फिर सिफ़ाते बारी तअाला की तरफ़ नज़र की तो बा'ज से बा'ज की पनाह त़लब की, कि रिज़ा व नाराज़ी दो वस्फ़ हैं (तो नाराज़ी से रिज़ा की पनाह त़लब की), फिर मज़ीद कुर्ब बढ़ा तो पहला कुर्ब इस में दाख़िल हो गया और सिफ़ात से ज़ात की तरफ़ तरक्की हुई तो फ़रमाया : ”أَعُوذُ بِكَ مِنْكَ“ मैं तुझ से तेरी ही पनाह लेता हूँ। फिर कुर्ब में ज़ियादती हुई तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने बिसाते कुर्ब में पनाह त़लब करने से हया करते हुए **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की ता'रीफ़ व तौसीफ़ की तरफ़ तवज्जोह फ़रमाई तो यूँ षना बयान की : ”لَا أَحْصِي ثَنَاءً عَلَيْكَ“ या'नी मैं (जैसी चाहिये वैसी) तेरी षना नहीं कर सकता।” फिर इस कोताही को (कि शायाने शान तेरी षना नहीं कर सकता) जान कर अर्ज़ की : ”أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ“ या'नी तू ऐसा ही है जैसा कि तूने खुद अपनी ता'रीफ़ फ़रमाई।”

इख़्ततामी कलिमात :

येह वोह तफ़कुरात व ख़यालात हैं जो अरबाबे कुलूब पर ही खुलते हैं। फिर इन असरार व रुमूज़ की गहराइयां होती हैं। मषलन कुर्ब के मा'ना समझना, कुर्बे खास सजदे में होना, एक सिफ़त के साथ दूसरी से पनाह मांगना, फिर ज़ात की पनाह लेना वग़ैरा। इस के असरार बहुत हैं जिन पर लफ़्ज़ की ज़ाहिरी तफ़्सीर दलालत नहीं करती और येह ज़ाहिरी तफ़्सीर के ख़िलाफ़ भी नहीं बल्कि वोह तो इसे मुकम्मल करने वाले और इस के ज़ाहिर से मग़ज़ तक पहुंचाने वाले होते हैं। बातिनी मा'ना समझने से हमारी मुराद येही है, न कि वोह जो ज़ाहिरी तफ़्सीर के ख़िलाफ़ हो। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ عَلَى مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ
وَعَلَى كُلِّ عَبْدٍ مُّصْطَفًى مِنْ كُلِّ الْعَالَمِينَ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ
وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



.....जन्नत में ले जाने वाले आ'माल.....

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, करारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो शख्स हलाल खाए, सुन्नत पर अमल करे और लोग इस के शर से महफूज़ रहे वोह जन्नत में दाख़िल होगा।” सहाबए किराम اَجْمَعِينَ ने अज़फ़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोग तो इस वक़्त बहुत हैं !” इरशाद फ़रमाया : अُن करीब मेरे बा'द भी ऐसे लोग होंगे।”

(المستدرک، الحديث: ٤١٥٥، ج ٥، ص ١٢٢)

ज़िक्रुल्लाह और दुआओं का बयान

तमाम खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस की मेहरबानी सब को शामिल, जिस की रहमत आम और जिस का ज़िक्र करने वाले बन्दे का उस की बारगाह में चर्चा होता है। जैसा कि फ़रमाने आलीशान है (البقرة: १५२) **تَرْجَمَةُ كَنْزُالْإِيمَانِ** : तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।" और उस ने बन्दों को अपनी बारगाह में सुवाली बनने और दस्ते दुआ दराज करने की तरगीब देते हुए इरशाद फ़रमाया : (المؤمن: २३) **تَرْجَمَةُ كَنْزُالْإِيمَانِ** : मुझ से दुआ करो मैं कबूल करूंगा।" और उस ने नेक व बद और बारगाहे आली से क़रीब होने वाले और दूरी इख़्तियार करने वाले हर शख्स को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह होने और झोलियां फैलाने की दा'वत दी कि वोह इन की हाजतों और ख़्वाहिशों को पूरा फ़रमाएगा। (البقرة: १८०) चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया : **تَرْجَمَةُ كَنْزُالْإِيمَانِ** : और ऐ महबूब जब तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूं दुआ कबूल करता हूं, पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे।" क़पीर दुरूदो सलाम हों सरदारे अम्बिया महबूबे किब्रिया हज़रते सय्यिदुना मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर और आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के आल व अस्हाब पर जो मुन्तख़ब और बेहतरीन बन्दगाने खुदा में से हैं।

तिलावते कुरआन के बा'द ज़िक्रुल्लाह और हाजत बरआरी के लिये बारगाहे खुदा में इख़लास के साथ मांगी जाने वाली दुआ से बढ़ कर कोई ज़बानी इबादत नहीं। लिहाज़ा ज़रूरी है कि तफ़्सील के साथ ज़िक्र के फ़ज़ाइल व मुख़्तलिफ़ अज़कार बयान किये जाएं और साथ ही दुआ के फ़ज़ाइल व आदाब और इस के शराइत और दीनी व दुन्यवी मक़ासिद की तक्मील के लिये आयात व रिवायात में मन्कूल तलबे मग़फ़िरत व तलबे पनाह के लिये मख़्सूस जामेअ दुआओं का भी ज़िक्र हो। इस की तफ़्सील पांच अबवाब पर मुश्तमिल है।

बाब नम्बर 1 : कुरआन व हदीष और अक्वाले अस्लाफ़ से ज़िक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान।

बाब नम्बर 2 : इस्तिग़फ़ार, दुरूद और दुआ के फ़ज़ाइल व आदाब।

बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुजुर्गाने दीन से मन्कूल 16 दुआएं।

बाब नम्बर 4 : कुरआन व हदीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआएं।

बाब नम्बर 5 : मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ की मस्नून दुआएं।



बाब नम्बर 1 : क़ुरआन व हदीष और अक़्वाले अश्लाफ़ से जिक्क़ल्लाह के फ़नाइल व फ़वाइद का बयान

(इस में पांच फ़स्ले हैं)

पहली फ़स्ल : जिक्क़ल्लाह की फ़ज़ीलत
जिक्क़ की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 9 फ़रामीने बारी तझाला :

﴿1﴾

فَاذْكُرُونِي اَذْكُرْكُمْ (پ ۲، البقرة: ۱۵۲) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो मेरी याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा ।

हज़रते सय्यिदुना षाबित बुनानी قُدَسَ سَمَاءُ التُّورَانِ फ़रमाते हैं : “मुझे उस साअत का इल्म है जिस में मेरा रब्ब عَزَّ وَجَلَّ मेरा जिक्क़ फ़रमाता है ।” हाज़िरीन झुंजला कर कहने लगे : “येह आप को कैसे पता चलता है ?” फ़रमाया : जब मैं उस का जिक्क़ करता हूं तो वोह मेरा चर्चा करता है ।

﴿2﴾

اَذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيرًا (پ ۲۲، الاحزاب: ۴۱) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** **अल्लाह** को बहुत याद करो ।

﴿3﴾

فَاِذَا آفَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْبُشَيْرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰكُمْ (پ ۲، البقرة: ۱۹۸) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** तो जब अरफ़ात से पलटो तो **अल्लाह** की याद करो मश्अरे हराम के पास और उस का जिक्क़ करो जैसे उस ने तुम्हें हिदायत फ़रमाई ।

﴿4﴾

فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَنِ كَرِكُمْ اِبَاءَكُمْ اَوْ اَشْدَّ ذِكْرًا (پ ۲، البقرة: ۲۰۰) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** फिर जब अपने हज़ के काम पूरे कर चुको तो **अल्लाह** का जिक्क़ करो जैसे अपने बाप दादा का जिक्क़ करते थे बल्कि इस से ज़ियादा ।

﴿5﴾

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيًّا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ (پ ۴، ال عمران: ۱۹۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : जो **अल्लाह** की याद करते हैं खड़े और बैठे और करवट पर लैटे ।

﴿6﴾

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ قِيًّا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ (پ ۵، النساء: ۱۰۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : फिर जब तुम नमाज़ पढ़ चुको तो **अल्लाह** की याद करो खड़े और बैठे और करवटों पर लैटे ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا मज़कूरा आयते मुबारका की तफ़सीर में फ़रमाते हैं : इस का मा'ना येह है कि “दिन रात, खुशकी व तरी, सफ़र व हज़र, गुर्बत व मालदारी, मरज़ व सिह्हत और पोशीदा व अलानिया हर हालत में उस का ज़िक्र करो ।”

﴿7﴾

وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا (پ ۵، النساء: ۱۴۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और **अल्लाह** को याद नहीं करते मगर थोड़ा ।

﴿8﴾

وَإِذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ (پ ۹، الاعراف: ۲۰۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और अपने रबब को अपने दिल में याद करो ज़ारी (आजिज़ी) और डर से और बे आवाज़ निकले ज़बान से सुब्ह और शाम और गाफ़िलों में न होना ।

﴿9﴾

وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ (پ ۲۱، العنکبوت: ۴۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा ।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं मज़कूरा आयते मुबारका की दो तफ़सीरें हैं :

(1).....तुम **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को याद करते हो इस से अज़ीम तर बात येह है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तुम्हारा ज़िक्र फ़रमाता है ।

(2).....तमाम इबादतों से अफ़ज़ल इबादत **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र है ।

इस के इलावा भी आयात ज़िक्र की फ़ज़ीलत का मफ़हूम अदा करती हैं ।

ज़िक्र की फज़ीलत पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्तफ़ :

- ﴿1﴾..... ذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ كَالشَّجَرَةِ الْخَضِرَاءِ فِي وَسْطِ الْهَشِيمِ..... يا'नी ग़ाफ़िलों में ज़िक्रुल्लाह करने वाला ऐसा है जैसे खुश्क जंगल में सर सब्ज़ा दरख़्त ।⁽¹⁾
- ﴿2﴾..... ذَاكِرُ اللَّهِ فِي الْغَافِلِينَ كَالْمُقَاتِلِ بَيْنَ الْفَارِسَيْنِ..... يا'नी ग़ाफ़िलों में **अब्बाह** का ज़िक्र करने वाला (मैदाने जिहाद से) भागने वालों में मुजाहिद की मानिन्द है ।⁽²⁾
- ﴿3﴾..... **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “اَنَا مَعَ عَبْدِي مَاذَكَرَنِي وَتَحَرَّكَتْ شَفَتَا بِي” يا'नी मैं बन्दे के साथ होता हूँ जब तक वोह मेरा ज़िक्र करता है और उस के होंट मेरे ज़िक्र के लिये हिलते रहें ।”⁽³⁾
- ﴿4﴾..... किसी बन्दे ने ज़िक्रुल्लाह से बढ़ कर अज़ाबे इलाही से नजात दिलाने वाला कोई अमल नहीं किया । सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : “يَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” क्या **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद भी नहीं ?” इरशाद फ़रमाया : “जिहाद भी नहीं, मगर येह कि तुम अपनी तल्वार से कुफ़्फ़ार को मारो यहां तक कि तल्वार टूट जाए फिर मारो फिर टूट जाए फिर मारो फिर टूट जाए ।”⁽⁴⁾
- ﴿5﴾..... مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَرْتَعَ فِي رِيَاضِ الْجَنَّةِ فَلْيَكْثُرْ ذِكْرُ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ..... يا'नी बागे जन्नत में आसूदगी का ख़्वाहिश मन्द ज़िक्रुल्लाह की क़षरत करे ।⁽⁵⁾
- ﴿6﴾..... बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : “कौन सा अमल अफ़ज़ल है ?” इरशाद फ़रमाया : “मरते दम तक तेरी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रहे ।”⁽⁶⁾
- ﴿7﴾..... तू सुब्हो शाम अपनी ज़बान ज़िक्रुल्लाह से तर रख (इस की बरकत से) तेरे सुब्हो शाम गुनाहों से पाक गुज़रेगे ।

①..... شعب الايمان للبيهقي، باب في محبة الله، فصل في اقامة ذكر الله، الحديث: ٥٦٥، ج ١، ص ١١١-

②..... شعب الايمان للبيهقي، باب في محبة الله، فصل في اقامة ذكر الله، الحديث: ٥٦٥، ج ١، ص ١١١، بتغير-

③..... سنن ابن ماجه، كتاب الادب، باب فضل الذكر، الحديث: ٣٤٩٢، ج ٢، ص ٢٢٣-

④..... المعجم الكبير، الحديث: ٣٥٢، ج ٢٠، ص ١٦٤ - ⑤..... المعجم الكبير، الحديث: ٣٢٦، ج ٢٠، ص ١٥٤-

⑥..... شعب الايمان للبيهقي، باب في محبة الله، فصل في اقامة، ذكر الله، الحديث: ٥١٦، ج ١، ص ٣٩٣-

एक रिवायत में है कि “सुब्हो शाम **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का जिक्र जिहाद में तल्वारें तोड़ने और फ़य्याजी से माल ख़ैरात करने से बेहतर है।”⁽¹⁾

﴿8﴾.....**अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है : “जब मेरा बन्दा मुझे दिल में याद करता है तो मैं भी उसे तन्हा याद करता हूँ और अगर वोह मेरा जिक्र मजमअ में करता है तो मैं उस से बेहतर मजमअ में उस का जिक्र करता हूँ अगर वोह एक बालिशत मुझ से क़रीब होता है तो मैं एक हाथ उस के क़रीब हो जाता हूँ और अगर वोह एक हाथ मेरे क़रीब आता है तो मैं उस से दो हाथ क़रीब हो जाता हूँ और अगर वोह मेरे पास चल कर आता है तो मैं उस की तरफ़ दौड़ कर आता हूँ।”⁽²⁾ (3)

मजक़ूरा हदीषे पाक में “दौड़ने” से मुराद बन्दे की फ़रयाद रसी और क़बूलिय्यते दुआ में जल्दी करना है।

﴿9﴾.....या'नी सात शख़्स **سَبْعَةُ يَظْلُهُمُ اللَّهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ** **رَجُلٌ ذَكَرَ اللَّهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ**.....⁽⁹⁾ वोह हैं कि जिन्हें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** उस दिन अपने साए में रखेगा⁽⁴⁾ जिस दिन उस के सिवा कोई साया न होगा (इन में से) एक वोह है जो तन्हाई में **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** को याद करे तो उस की आंखों से आंसू बहें।⁽⁵⁾

﴿10﴾.....क्या मैं तुम्हें ऐसा बेहतरीन अमल न बताऊं जो रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** के नज़दीक बहुत सुथरा, तुम्हारे दर्जे बुलन्द करने वाला और तुम्हारे लिये सोना, चांदी ख़ैरात करने से भी बेहतर हो और तुम्हारे लिये उस से भी बेहतर हो कि तुम दुश्मन से जिहाद कर के उन की गर्दनें मारो और वोह तुम्हें शहीद करें। सहाबए किराम **عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان** ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह **وَالِهِ وَسَلَّمَ** “या रसूलल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** का जिक्र करते रहना।”⁽⁶⁾ इरशाद फ़रमाया : “हर वक़्त **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का जिक्र करते रहना।”⁽⁶⁾

①.....الزهد لابن المبارك، الجزء التاسع، الحديث: ١١١٦، ص ٣٩٢۔

②.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان** मिरआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 307 पर फ़रमाते हैं : येह कलाम बतौर मिषाल समझाने के लिये है मतलब येह है कि तुम्हारी तलब से हमारी रहमत सबक़त ले गई है, अगर तुम ऐसे मा'मूली आ'माल करो जिन से बदेर हम तक पहुंच सको तो हम तुम को अपने करम से बहुत जल्द अपने दामने रहमत में ले लेंगे।

③.....صحيح البخارى، كتاب التوحيد، باب قول الله: ويحذرکم الله نفسه، الحديث: ٤٢٠٥، ج ٢، ص ٥٢١۔

④.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان** मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 435 पर फ़रमाते हैं : या'नी अपनी रहमत के साए में या अर्शें आ'जम के साए में ताकि कियामत की धूप से महफूज़ रहे।” बरोजे कियामत सायए अर्श पाने वाले खुश नसीबों के मुतअल्लिक जानने के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 88 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “सायए अर्श किस किस को मिलेगा ?” का मुतालआ फ़रमा लीजिये।

⑤.....صحيح مسلم، كتاب الزكاة، باب فضل اخفاء الصدقة، الحديث: ١٠٣١، ص ٥١٢، دون “من خشية الله”۔

⑥.....سنن الترمذی، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٣٨٨، ج ٥، ص ٢٢٦۔

या'नी مَنْ شَغَلَهُ ذِكْرِي عَنْ مَسْأَلَتِي أُعْطِيَتهُ أَفْضَلَ مَا أُعْطِيَ السَّائِلِينَ. : “**अल्लाह**.....**﴿11﴾** जिसे मेरा जिक्र मुझ से मांगने से रोक दे मैं उसे मांगने वालों से ज़ियादा दूंगा।” (1) (2)

घड़ी भर रब्ब तअ़ाला को याद करना :

हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّابِ फ़रमाते हैं : हमें येह रिवायत पहुंची है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “ऐ मेरे बन्दे तू मुझे फ़ज़्र व अस्स के बा'द घड़ी भर याद कर लिया कर मैं तुझे इन दो साअतों के दरमियान (या'नी दिन रात के तमाम अवकात) में किफ़ायत करूंगा।”

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “जब मैं किसी बन्दे के दिल को अपनी याद में महूव पाता हूं तो उस के तमाम उमूर को संवार देता, उस की निशस्त व कलाम को अपनी रहमत अता करता और उसे अपना दोस्त बना लेता हूं।”

जिक्रुल्लाह से मुतअल्लिक़ तीन अक्वाले बुजुर्गान :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْفَوْرِي फ़रमाते हैं : “जिक्र दो किस्म के हैं : (1)....जो सिर्फ़ बन्दे और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के दरमियान हो (कोई और इस पर मुत्तलअ न हो) । येह याद भी क्या ही ख़ूब और अज़ीम अज़्र वाली है ।

(2)....और इस से भी ज़ियादा फ़ज़ीलत वाला जिक्र येह है कि इन्सान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की हराम कर्दा चीज़ों के मुआमले में **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ को याद रखे (या'नी हराम काम का ख़याल आते ही रब्ब तअ़ाला को याद करे और हरामकारी से बाज़ रहे) ।

﴿2﴾..... **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ का जिक्र करने वाले के इलावा हर शख्स दुन्या से प्यासा रुख़सत होगा ।

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुअज़ बिन जबल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “अहले जन्नत किसी चीज़ पर हसरत नहीं करेंगे सिवाए उस घड़ी के जो यादे इलाही से ग़फ़लत में गुज़री ।”

①.....तीन खुश नसीबों को बिन मांगे अता किया जाता है : (1)....जिक्रे इलाही करने वाला (2)....तिलावते कुरआन करने वाला और (3)....दुरूदे पाक की कषरत करने वाला ।

नोट : तफ़सील के लिये मक्तबतुल मदीना की मतबूआ “फ़ज़ाइले दुआ” से सफ़हा 228 ता 232 का मुतालअ कीजिये !

②.....شعب الايمان للبيهقي، باب في محبة الله، فصل في ادامة ذكر الله، الحديث: ٥٤٢، ج ١، ص ٢١٣.

दूसरी फ़स्ल : मजालिसे जिक्र की फ़नीलत मजालिसे जिक्र से मुतअल्लिक 9 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

- ﴿1﴾.....जो लोग **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने के लिये जम्अ होते हैं फिरिश्ते उन्हें घेर लेते और रहमत उन्हें ढांप लेती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फिरिश्तों के सामने उन का चर्चा करता है।⁽¹⁾
- ﴿2﴾.....जो लोग महज़ रिज़ाए इलाही के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने बैठते हैं तो आस्मान से एक मुनादी निदा करता है कि मग़फ़िरत याफ़ता हो कर लौट जाओ तुम्हारे गुनाह नेकियों में बदल दिये गए हैं।⁽²⁾
- ﴿3﴾.....जब कोई क़ौम किसी मजलिस में बैठे और इस में न तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे और न ही मुझ पर दुरूदे पाक पड़े तो बरोज़े क़ियामत येह मजलिस उन के लिये हसरत का बाइष होगी।⁽³⁾
- ﴿4﴾.....मरवी है कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ मांगी : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जब तू मुझे देखे कि मैं ज़ाकिरीन की महफ़िल छोड़ कर ग़ाफ़िलीन की तरफ़ बढ़ रहा हूं तो मेरे पाऊं ज़ाएअ़ फ़रमा देना कि येह भी तेरा मुझ पर एक इन्आम होगा।”
- ﴿5﴾.....सरकारे दो अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : “الْمَجْلِسُ الصَّالِحُ يَكْفِّرُ عَنِ الْمُؤْمِنِ أَلْفَ مِائَةِ مَجْلِسٍ مِنَ الْمَجْلِسِ السُّوءِ” या’नी अच्छी महफ़िल मोमिन के लिये 20 लाख बुरी मजलिसों का कफ़ारा है।⁽⁴⁾
- ﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जिन घरों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र होता है अहले आस्मान उन घरों को ऐसे देखते हैं जैसे तुम सितारों को देखते हो।”
- ﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जब लोग ज़िक्रल्लाह के लिये जम्अ होते हैं तो शैतान और दुन्या अलाहिदा हो जाते हैं, शैतान दुन्या से कहता है : “तू देख रही है कि येह क्या कर रहे हैं ?” दुन्या कहती है : “इन्हें छोड़ दे, जूं ही येह ज़िक्र से फ़ारिग़ होंगे मैं इन्हें गर्दनों से पकड़ कर तेरे हवाले कर दूंगी।”

①.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب فضل الاجتماع على تلاوة.....الخ، الحديث: ۲۷۰۰، ص ۱۴۳۸۔

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالك، الحديث: ۱۲۴۵۶، ج ۴، ص ۲۸۶۔

③.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی القوم یجلسون ولا یدکرون الله، الحديث: ۳۳۹۱، ج ۵، ص ۲۴۷۔

④.....فردوس الاخبار للديلمي، باب الألف، الحديث: ۵۸۷، ج ۱، ص ۹۷، بتغير۔

﴿८﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक मरतबा बाज़ार में तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : “लोगो ! मैं तुम्हें यहां देख रहा हूं हालांकि मस्जिद में सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मीराष तक्सीम हो रही है।” लोग बाज़ार छोड़ कर मस्जिद की तरफ़ गए मगर उन्हें कोई मीराष बटती दिखाई न दी, उन्होंने ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहा : “हम ने तो मस्जिद में कोई मीराष तक्सीम होते नहीं देखी।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने पूछा : “फिर तुम ने वहां क्या देखा ?” बोले : “हम ने देखा वहां कुछ लोग **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ का ज़िक्र करने और कुरआने मजीद की तिलावत में मशगूल हैं।” आप رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “येही तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मीराष है।” (१)

﴿९﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा और हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “**اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने नामए आ'माल लिखने वाले फ़िरिश्तों के इलावा ऐसे फ़िरिश्तों को पैदा फ़रमाया जो ज़मीन में सियाहत (सैर) करते रहते हैं, जब वोह किसी कौम को ज़िक्र में मशगूल पाते हैं तो एक दूसरे को पुकारते और कहते हैं : “अपने मतलूब की तरफ़ आओ।” फिर वोह सब जम्अ हो जाते हैं और अहले ज़िक्र को आस्मान तक घेर लेते हैं। (इख़ितामे महफ़िल के बा'द जब वापस लौटते हैं तो) **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : मेरे बन्दों को तुम ने किस हाल में छोड़ा ? वोह क्या कर रहे थे ?” “फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं : “या **اَللّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ वोह तेरी हम्द, तेरी बुजुर्गी और तस्बीह बयान कर रहे थे।” इरशाद फ़रमाता है : “क्या उन्होंने ने मुझे देखा है ?” फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं : “नहीं।” **اَللّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “अगर वोह मुझे देख लें तो ?” फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं : “अगर वोह तुझे देख लें तो और भी ज़ियादा तेरी तस्बीह व तहमीद बयान करें।” इरशाद फ़रमाता है : “वोह किस चीज़ से पनाह मांग रहे थे ?” अर्ज़ करते हैं : “जहन्नम से।” **اَلलّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “क्या उन्होंने ने जहन्नम को देखा है ?” फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं : “नहीं।” इरशाद फ़रमाता है : “अगर वोह जहन्नम को देख लें तो उन की क्या हालत हो ?” अर्ज़ करते हैं : “अगर वोह उसे देख लें तो और ज़ियादा उस से भागें और नफ़रत करें।” **اَلलّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “वोह किस चीज़ का सुवाल कर रहे थे ?” फ़िरिश्ते अर्ज़ करते हैं : “वोह जन्नत त़लब कर रहे थे।” इरशाद फ़रमाता है : “क्या उन्होंने ने जन्नत को देखा है ?” अर्ज़ करते हैं : “नहीं।” **اَلलّٰهُ** عَزَّ وَजَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “अगर

वोह जन्नत को देख लेते तो क्या करते ?” फिरिश्ते अर्ज करते हैं : “उस की तलब में और ज़ियादा कोशिश करते ।” इरशाद फ़रमाता है : “मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैं ने उन सब को बख़्श दिया ।” फिरिश्ते अर्ज करते हैं : “उन में फुलां बिन फुलां भी था जो (ज़िक्र के लिये नहीं बल्कि) अपनी किसी ज़रूरत के लिये आया था ।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “येह ऐसे लोग हैं जिन का हम नशीन भी महरूम नहीं रहता ।”(1)

तीसरी फ़स्तल : **कलिमाए लौहीह पढ़ने के फ़ज़ाइल**

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ से मुतझल्लिक 15 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾....सब से अफ़ज़ल कलिमा जो मैं ने और तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अदा किया वोह येह है “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ” (2)

﴿2﴾.....जो शख्स रोज़ाना 100 बार येह कलिमात “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ” पढ़ता है तो उसे दस गुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब मिलता है, उस के नामए आ’माल में 100 नेकियां लिखी जाती और 100 गुनाह मिटा दिये जाते हैं, वोह उस दिन शाम तक शैतान से महफूज़ रहता है और इस से बढ़ कर किसी और का अमल नहीं होता मगर येह कि कोई शख्स उस से ज़ियादा बार येह कलिमात पढ़े ।(3)

﴿3﴾.....जो शख्स कामिल वुजू कर के आस्मान की तरफ़ निगाहें उठा कर कहे :

“أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ”

तो उस के लिये जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, जिस से चाहे दाख़िल हो जाए ।(4)

﴿4﴾.....**لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** पढ़ने वाले को क़ब्रों हशर में कोई वदहशत न होगी, और गोया मैं मुलाहज़ा कर रहा हूँ कि सूर फूँका जा रहा है और येह लोग सर से मिट्टी झाड़ते हुए कह रहे हैं :

“الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحُزْنَ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ” या’नी सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस ने हम से ग़म को दूर फ़रमाया, बिना शुबा हमारा रब्ब عَزَّوَجَلَّ बख़्शने वाला और क़द्र करने वाला है ।(5)

①.....سنن الترمذی، احادیث شتی، باب ماجاء ان لله ملائكة سياحين.....الخ، الحديث: ۳۶۱۱، ج ۵، ص ۳۴۴، بتقدم وتأخر۔

②.....سنن الترمذی، احادیث شتی، باب فی دعاء یوم عرفة، الحديث: ۳۵۹۶، ج ۵، ص ۳۳۹۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب فضل التهلیل والتسبیح، الحديث: ۲۶۹۱، ص ۱۴۴۵۔

④.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب ما یقول الرجل اذا توضأ، الحديث: ۱۶۹، ج ۱، ص ۹۰، بتغیر۔

⑤.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی الایمان بالله، الحديث: ۱۰۰، ج ۱، ص ۱۱۱، باختصار۔

﴿5﴾.....ऐ अबू हुरैरा ! क़ियामत के दिन तुम्हारी हर नेकी तोली जाएगी सिवाए इस कलिमे “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” के। सिद्के दिल से पढ़ा हुआ कलिमा अगर मीज़ाने अमल के एक पलड़े में रखा जाए और दूसरे में सातों ज़मीनो आस्मान और जो कुछ इस में है सब रख दिया जाए तो भी لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ वाला पलड़ा ही भारी रहेगा।⁽¹⁾

﴿6﴾.....सच्चे दिल से “لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ” पढ़ने वाला अगर ज़मीन भर गुनाह ले कर आए फिर भी **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस की मग़फ़िरत फ़रमा देगा।⁽²⁾

﴿7﴾.....ऐ अबू हुरैरा ! अपने मुर्दों को لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ की तल्कीन किया करो कि येह गुनाहों को बिल्कुल मिटा देता है। “हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ येह तो मुर्दों के लिये है, ज़िन्दों के लिये क्या है?” इरशाद फ़रमाया : “هِيَ أَهْدَمُ هِيَ أَهْدَمُ” या’नी येह (गुनाहों को) ज़ियादा मिटाने वाला है, येह ज़ियादा मिटाने वाला है।⁽³⁾

﴿8﴾.....जिस ने इख़्लास के साथ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहा वोह दाख़िले जन्नत हुआ।⁽⁴⁾

﴿9﴾.....तुम में से हर एक दाख़िले जन्नत होगा सिवाए उस के जो इन्कार करे और बारगाहे खुदावन्दी से इस तरह भागे जैसे ऊंट अपने मालिक से भागता है। अर्ज़ की गई : “या रसूलल्लाह ﷺ येह इन्कार करने और **اللَّهُ** عَزَّ وَجَلَّ से दूर होने वाला कौन है?” इरशाद फ़रमाया : “जो لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ नहीं कहता। तुम येह कलिमा कषरत से पढ़ा करो इस से पहले कि तुम्हारे और उस के दरमियान फ़ासिला पैदा हो जाए (या’नी मौत आ जाए) येह कलिमा तौहीद है, येह कलिमा इख़्लास है, येह परहेज़गारी का कलिमा है, येह पाकीज़ा कलिमा है, येह दा’वते हक़ है, येह मुहक़म गुरौह है, येह जन्नत की कीमत है।”⁽⁵⁾

اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ कुरआने पाक में इरशाद फ़रमाता है : (پ ۲۴، الرحمن: ۲۰) هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ इस आयत की तफ़्सीर में कहा गया है कि दुन्या में एहसान لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ कहना है, जिस का बदला आख़िरत में जन्नत है।

①.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، فضل لا اله الا الله.....الخ، الحديث: ۱۹۷۹، ج ۲، ص ۲۱۶، باختصار۔

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی فضل التوبۃ والاستغفار.....الخ، الحديث: ۳۵۵۱، ج ۵، ص ۳۱۹، مفہومًا۔

③.....کنز العمال، کتاب الموت، الباب الثانی فی امور قبل الدفن، الحديث: ۴۲۱۹۵، ج ۱۵، ص ۲۴۱، مفہومًا۔

④.....المعجم الكبير، الحديث: ۵۰۷۴، ج ۵، ص ۱۹۷۔

⑤.....المستدرک، کتاب التوبۃ والانابة، باب کلکم یدخل الجنة.....الخ، الحديث: ۷۷۰۲، ج ۵، ص ۳۵۱، باختصار۔

इसी तरह एक और मक़ाम पर इरशाद होता है : (پ ۱۱، یونس: ۲۶)

“तर्जमए कज़्ज़ल ईमान : भलाई वालों के लिये भलाई है और इस से भी जाइद ।”

﴿10﴾.....”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“.....” येह कलिमात 10 मरतबा पढ़ने वाले को 10 गुलाम आज़ाद करने के बराबर षवाब मिलता है ।⁽¹⁾

﴿11﴾.....जो शख्स दिन में 200 मरतबा येह कलिमात कह ले
”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

तो उस के दर्जे को न कोई पहले वाला पा सकता है और न बा’द वाला मगर वोह जो उस से अफ़ज़ल अमल करे ।⁽²⁾

﴿12﴾.....जो शख्स किसी बाज़ार में येह कलिमात पढ़े :

”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

तो उस के नामए आ’माल में 10 लाख नेकियां लिखी जाएगी, 10 लाख गुनाह मिटाए जाएंगे और जन्नत में उस के लिये एक घर बनाया जाएगा ।⁽³⁾

﴿13﴾.....जब बन्दा ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ“ कहता है तो येह कलिमा उस के नामए आ’माल की तरफ़ बढ़ता है और इस में जो गुनाह पाता है उसे मिटा देता है हत्ता कि अपनी मिष्ल नेकी पा कर उस के पहलू में बैठ जाता है ।⁽⁴⁾

﴿14﴾.....जिस शख्स ने 10 मरतबा येह कलिमात पढ़े ”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“ गोया उस ने अवलादे इस्माईल में से चार गुलाम आज़ाद किये ।⁽⁵⁾

﴿15﴾.....जो शख्स रात भर जाग कर येह कलिमात पढ़े

”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

फिर अर्ज़ करे : “या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा !” तो उस की मग़फ़िरत कर दी जाएगी, या कोई दुआ करे तो क़बूल की जाएगी और अगर नमाज़ पढ़े तो क़बूल की जाएगी ।⁽⁶⁾

①.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، باب من قال لا اله الا الله وحده.....الخ، الحديث: ۱۸۸۸، ج ۲، ص ۱۷۶۔

②.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند عبد الله بن عمرو بن العاص، الحديث: ۴۰۲۴، ج ۲، ص ۶۷۱۔

③.....سنن ابن ماجه، کتاب التجارات، باب الاسواق ودخولها، الحديث: ۲۲۳۵، ج ۳، ص ۵۳-۵۴۔

④.....مجمع الزوائد، کتاب الاذکار، باب ماجاء في فضل لا اله الا الله، الحديث: ۱۶۸۰۳، ج ۱۰، ص ۸۸، مفهوماً۔

⑤.....صحيح مسلم، کتاب الذکرو الدعاء.....الخ، باب فضل التهليل والتسبیح والدعاء، الحديث: ۲۶۹۳، ص ۱۴۴۶۔

⑥.....صحيح البخاری، کتاب التهجد، باب فضل من تعاز من الليل فصلي، الحديث: ۱۱۵۴، ج ۱، ص ۳۹۱، بتقدم وتاخر۔

चौथी फ़स्ल : سُبْحَنَ اللّٰهِ , اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और दीगर अनाकार के फनाइल

और दीगर अजवर के मुतअल्लिक 22 फ़ामीने मुस्तफ़ :

और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ 33 , سُبْحَنَ اللّٰهِ 33 मरतबा के बा'द जिस ने हर नमाज़ के लिए 100 का अदद पूरा करने के लिए 33 मरतबा اللّٰهُ اَكْبَر कहा, फिर

”لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ“

कहा तो उस के गुनाह मुआफ़ कर दिये जाएंगे अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों ।⁽¹⁾

जो एक दिन में 100 मरतबा سُبْحَنَ اللّٰهِ وَيَحْمَدُهُ पढ़ता है उस के गुनाह मिटा दिये जाते हैं अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों ।⁽²⁾

एक शख्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صلی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुनिया ने मुझ से मुंह मोड़ लिया और मेरा माल कम पड़ गया है ।” हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صلی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “तुम फिरिश्तों की नमाज़ और मख़्लूक की तस्बीह क्यूं नहीं पढ़ते जिस के सबब उन्हें रिज़क मिलता है ।” अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صلی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह क्या है ?” इरशाद फ़रमाया : “سُبْحَنَ اللّٰهِ وَيَحْمَدُهُ سُبْحَنَ اللّٰهِ الْعَظِيمِ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ” तुलूए फ़ज़्र और नमाज़े फ़ज़्र के दरमियान 100 मरतबा येह कलिमात पढ़ा करो दुनिया तुम्हारे पास ज़लील व हकीर हो कर आएगी और अब्लाह عَزَّوَجَلَّ हर कलिमे से एक फिरिश्ता पैदा फ़रमाएगा जो क़ियामत तक अब्लाह عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह बयान करता रहेगा जिस का षवाब तुम्हारे नामए आ'माल में लिखा जाता रहेगा ।”⁽³⁾

जब बन्दा “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ” कहता है तो येह (कलिमा) ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देता है, जब दूसरी मरतबा “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ” कहता है तो सातवें आस्मान से ले कर तहूतुष्परा तक को भर देता है और जब तीसरी मरतबा “اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ” कहता है तो अब्लाह عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “सुवाल कर, तुझे अता किया जाएगा ।”

①.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، الحديث: 594، ص 301.

②.....صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب فضل التسبیح، الحديث: 2405، ج 4، ص 219.

③.....اللالی المصنوعة، کتاب الذکر والدعاء، ج 2، ص 284، بتغییر.

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना रफ़ाअ बिन राफ़ेअ जुरकी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : एक दिन हम हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की इक़्तिदा में नमाज़ अदा कर रहे थे जब आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रुकूअ से उठते हुए سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهُ कहा तो पीछे से किसी शख्स की आवाज़ आई : “رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَوِيلًا مَبَارَكًا فِيهِ” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नमाज़ के बा’द इस्तिफ़सार फ़रमाया : “येह (कलिमात) किस ने अदा किये?” उस ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैं ने ।” तो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने देखा कि 30 से ज़ाइद फ़िरिश्ते इन कलिमात की तरफ़ बढ़ रहे थे कि इन में से कौन इन कलिमात को पहले लिखता है ।”(1)

﴿6﴾.....“لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، سُبْحَنَ اللَّهُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ” बाकी रहने वाली नेकियां हैं ।(2)

﴿7﴾.....जमीन पर रहने वाला जो भी शख्स येह कलिमात पढ़े :

“لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، سُبْحَنَ اللَّهُ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ”

तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे समन्दर के झाग के बराबर हों ।(3)

﴿8﴾.....जो लोग **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के जलाल, तस्बीह, तक्बीर और तहमीद का ज़िक्र करते हैं तो वोह कलिमात अर्श के गिर्द तवाफ़ करते हैं, उन की आवाज़ शहद की मखिखियों की भिनभिनाहट की तरह होती है, वोह अपने पढ़ने वालों का तज़क़िरा करते हैं । क्या तुम नहीं चाहते कि **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के हां हमेशा तुम्हारा तज़क़िरा होता रहे ?(4)

﴿9﴾.....“سُبْحَنَ اللَّهُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ” कहना मुझे हर उस चीज़ से ज़ियादा महबूब है जिस पर सूरज तुलूअ होता है ।(5)

1.....صحیح البخاری، کتاب الآذان، الحدیث: ۷۹۹، ج ۱، ص ۲۸۰۔

2.....الدر المنثور، الجزء الخامس عشر، سورة الکہف، ج ۵، ص ۳۹۶، بتقدم وتاخر۔

3.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، باب افضل الذکر لا اله الا الله.....الخ، الحدیث: ۱۸۹۶، ج ۲، ص ۱۷۹۔

4.....سنن ابن ماجه، کتاب الادب، باب فضل التسبیح، الحدیث: ۳۸۰۹، ج ۶، ص ۲۵۳، مفہومًا۔

5.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب فضل التہلیل والتسبیح والدعاء، الحدیث: ۲۶۹۵، ص ۱۴۲۶۔

एक रिवायत में “لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ” का इजाफ़ा है और आखिर में है कि “येह दुन्या व माफीहा (या’नी दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर है।”

﴿10﴾.....**अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ को चार कलिमात बहुत ज़ियादा पसन्द हैं :

(1)..... سُبْحَنَ اللَّهِ (2)..... الْحَمْدُ لِلَّهِ (3)..... لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (4)..... اللَّهُ أَكْبَرُ

इन में से जिस कलिमे को पहले कहो कोई हरज नहीं।⁽¹⁾

﴿11﴾.....सफ़ाई ईमान का हिस्सा है, الْحَمْدُ لِلَّهِ कहना मीज़ान को भर देता है और سُبْحَنَ اللَّهِ وَاللَّهُ أَكْبَرُ ज़मीनो आस्मान के दरमियान को भर देते हैं। नमाज़ नूर है, सदका दलील है, सब्र रोशनी है, कुरआन तेरे हक़ में या तेरे खिलाफ़ दलील है। हर शख्स इस हाल में सुब्ह करता है कि अपने आप को बेचने वाला होता है पस वोह खुद को हलाकत में डाल देता है या अपने आप को ख़रीदने वाला होता है पस खुद को (जहन्नम से) आज़ाद करा लेता है।⁽²⁾

﴿12﴾..... दो कलिमात ज़बान पर हल्के, मिज़ान में भारी और रहमान غَزَّوَجَلَّ को महबूब हैं :

(1)..... سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَظِيمِ (2)..... سُبْحَنَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : “बारगाहे इलाही में सब से अफ़ज़ल कलाम कौन सा है ?” इरशाद फ़रमाया : “वोह जिसे **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ ने अपने मलाइका के लिये खास कर लिया या’नी : سُبْحَنَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَظِيمِ :⁽⁴⁾

﴿14﴾.....बेशक **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ ने अपने कलाम में से (इन कलिमात)

“سُبْحَنَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ” को चुन लिया है। चुनान्चे, जब बन्दा سُبْحَنَ اللَّهِ कहता है तो उस के लिये 20 नेकियां लिखी जाती और 20 गुनाह मिटा दिये जाते हैं और जब **अल्लाह** कहता है तो भी येही फ़ज़ीलत हासिल होती है। (रावी कहते हैं :) आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बक़िय्या कलिमात की भी येही फ़ज़ीलत इरशाद फ़रमाई।⁽⁵⁾

1.....صحیح مسلم، کتاب الادب، باب کراهة التسمية بالاسماء القبيحة.....الخ، الحديث: ۲۱۳۷، ص ۱۱۸۱۔

2.....صحیح مسلم، کتاب الطهارة، باب فضل الوضوء، الحديث: ۲۲۳، ص ۱۴۰، دون “مشتتر نفسه”۔

3.....صحیح البخاری، کتاب التوحيد، باب قول الله: ونضع الموازين.....الخ، الحديث: ۵۷۲۳، ج ۲، ص ۶۰۰، بتقدم و تاخر۔

4.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب فضل سبحان الله وبحمده، الحديث: ۲۷۳۱، ص ۱۲۶۲، مفهوماً۔

5.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحديث: ۸۰۹۹، ج ۳، ص ۸۲۔

(1)जो سُبْحَنَ اللّٰهُ وَيَحْمَدُهُ कहता है उस के लिये जन्नत में खजूर का एक दरख्त लगा दिया जाता है।

(16).....फुकरा ने बारगाहे रिसालत में अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم आखिरत का षवाब तो सब अमीरों ने ले लिया क्यूंकि हमारी तरह वोह भी नमाज रोजे की पाबन्दी करते हैं और इस के साथ साथ अपने जाइद अमवाल में से सदका व खैरात भी करते हैं।” आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फरमाया : “क्या **اَبْلَاح** ने तुम्हारे लिये सदके का सबब नहीं बनाया ? कहना सदका है, **الْحَمْدُ لِلّٰهِ** कहना सदका है, **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** कहना सदका है, नेकी की दा'वत देना सदका है, बुराई से मन्अ करना सदका है, तुम में से कोई अपनी अहलिय्या के मुंह में लुक्मा रखता है तो येह भी उस के लिये सदका है और अपनी बीवी से मुलाकात करना भी सदका है।” उन्होंने ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अगर कोई शख्स अपनी बीवी से शहवत के साथ मुलाकात करे तो क्या इस में भी उस के लिये अज्र है ?” फरमाया : “क्यूं नहीं अगर वोह हराम तरीके से (शहवत पूरी) करता तो क्या गुनाहगार न होता ?” उन्होंने ने अर्ज की : “जी हां !” इरशाद फरमाया : “इसी तरह जब वोह हलाल तरीके से (शहवत पूरी) करेगा तो अज्र पाएगा।” (2)

(17).....हजरते सय्यिदुना अबू जर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मालदार लोग अज्रो षवाब में बढ़ गए क्यूंकि वोह हमारी ही तरह इबादत करते हैं और माल भी खर्च करते हैं और हम इस की इस्तिताअत नहीं रखते। तो हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने फरमाया : क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज न सिखाऊं जिस के जरीए तुम अगलों और पिछलों के अज्र को पा लो और अज्र में तुम्हारे बराबर कोई न हो सके मगर जो तुम्हारी मिष्ल कहे। (वोह येह है कि) हर नमाज के बा'द **سُبْحَنَ اللّٰهُ** और **الْحَمْدُ لِلّٰهِ** 33-33 बार और **اللّٰهُ اَكْبَر** 34 बार पढ़ लिया करो।” (3)

(18).....तस्बीह, तहलील और तक्दीस (4) को खुद पर लाजिम कर लो इस से कभी गफलत न बरतना और उंगलियों पर शुमार किया करो क्यूंकि इन्हें बोलने की कुव्वत अता की जाएगी। (5) या'नी वोह बरोजे क्रियामत गवाही देंगी।

1..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۴۷۵، ج ۵، ص ۲۸۶۔

2..... صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب استحباب الذكر بعد..... الخ، الحدیث: ۵۹۵، ص ۳۰۰، باختصار۔

3..... سنن ابن ماجه، کتاب اقامة الصلاة..... الخ، باب ما يقال بعد التسليم، الحدیث: ۹۲۷، ج ۱، ص ۲۹۸، مفهوماً۔

4..... سُبْحَنَ الْمَلِکِ الْقُدُّوسِ یا سُبْحَنَ رَبِّ الْعَالَمِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ اور तक्दीस या'नी तहलील یا'नी سُبْحَنَ اللّٰهُ तस्बीह या'नी

5..... سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب التسبیح بالحصی، الحدیث: ۱۵۰۱، ج ۲، ص ۱۱۵-۱۱۶، عن یسیره

एक रिवायत में है कि जो येह कलिमात पढ़ेगा **अल्लाह** तआला उस से राजी होगा ।
घर से निकलते वक्त शयातीन से हिफ़ाज़त :

हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد** फ़रमाते हैं : जब बन्दा घर से निकलते हुए **بِسْمِ اللَّهِ** कहता है तो फ़िरिश्ता कहता है : “तू ने हिदायत पाई ।” जब वोह **تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ** या ‘नी मैं ने **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** पर भरोसा किया कहता है तो फ़िरिश्ता कहता है : “तुझे किफ़ायत करेगा ।” और जब **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ** कहता है तो फ़िरिश्ता कहता है : “तू महफूज़ हो गया ।” फिर शयातीन येह कहते हुए उस से दूर हो जाते हैं कि “तुम्हारा उस शख्स से क्या वासिता जो हिदायत, किफ़ायत और हिफ़ाज़त से नवाज़ा गया, अब तुम्हारा उस पर कोई बस नहीं चल सकता ।”

पांचवीं फ़सल : हकीकते ज़िक्र और इस के फ़वाइद
एक दु'तिराज़ और इस का जवाब :

अगर तू येह कहे कि ज़िक्रुल्लाह ज़बान पर आसान और मशक्कत में कम है तो फिर येह दीगर इबादात से अफ़ज़ल व मुफ़ीद तर क्यूं ? हालांकि इन में मशक्कत ज़ियादा है । तो जान ले कि इस की हकीकते हाल पर आगाही तो इल्मे मुकाशफ़ा से ही मुमकिन है । हां ! इल्मे मुआमला की रू से सिर्फ़ इतना कहा जा सकता है कि मुअब्बिर व मुफ़ीद ज़िक्र वोही है जो हुजूरे दिल के साथ हमेशा हो । अगर ज़बान ज़ाकिर और दिल गाफ़िल हो तो नफ़अ कम होता है । इस बात की ताईद अहादीषे मुबारका⁽¹⁾ से होती है । इसी तरह किसी लम्हे दिल का हाज़िर होना और फिर दुन्यावी मशाग़िल में मशगूल हो जाना भी नफ़अ कम कर देता है । कुल वक्त या अक़षर अवकात हुजूरे क़ल्ब के साथ ज़िक्रे इलाही तमाम इबादात पर मुक़द्दम बल्कि सब से अफ़ज़ल है और इल्मी इबादात का इन्तिहाई नतीजा है ।

ज़िक्र की इब्तिदा भी है और इन्तिहा भी, इस की इब्तिदा भी उन्स व महब्बत लाज़िम करती है और इन्तिहा भी और येही दो चीज़ें मतलूब हैं । रिज़ाए इलाही का इरादा करने वाला

①.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया : **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** से क़बूलियत के यकीन के साथ दुआ मांगो और याद रखो ! **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** खेलने वाले गाफ़िल दिल के साथ मांगी हुई दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता ।

(सनन الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۴۹۰، ج ۵، ص ۲۹۲، مفهوماً)

इब्तिदा में अपनी ज़बान व दिल को बे तकल्लुफ़ वसाविस से बचा कर ज़िक्रुल्लाह में मशगूल रखता है और अगर उसे इस अमल पर इस्तिक़ामत नसीब हो जाती है तो वोह इस से मानूस हो जाता है और मज़कूरा महब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और येह बात कोई हैरान कुन नहीं, क्यूंकि आम तौर पर येही देखने में आता है कि जब एक शख्स के सामने किसी अजनबी और ग़ैर मौजूद शख्स का ज़िक्र और उस के अवसाफ़ का बार बार तज़क़िरा किया जाए तो उस के दिल में जज़्बाते महब्बत उभरना शुरू हो जाते हैं बल्कि उस के अवसाफ़ और कषरते ज़िक्र की बिना पर उस का आशिक़ हो जाता है। फिर वोही ज़िक्र जिस की कषरत इब्तिदाअन तकलीफ़ का बाइष थी अब जब उस का आशिक़ हो गया तो उसी ज़िक्र की कषरत पर येह ऐसा मजबूर होता है कि उस के बिग़ैर चैन नहीं आता। क्यूंकि **مَنْ أَحَبَّ شَيْئًا كَثُرَ ذِكْرُهُ** या'नी बन्दा जिस चीज़ को महबूब रखता है उस का तज़क़िरा भी कषरत से करता है और जो किसी चीज़ का ज़िक्र ज़ियादा करता है ब तकल्लुफ़ ही सही (आख़िरे कार) उसे पसन्द करता है। इसी तरह शुरू में तकल्लुफ़ के साथ ज़िक्र का नतीजा उन्स व महब्बत होता है हत्ता कि एक वक़्त ऐसा आता है कि उस से बाज़ रहना मुश्किल हो जाता है। तो जो चीज़ नतीजा थी अब वोह सबब बन जाती है। और अकाबिरीन के इस कौल का येही मतलब है कि “मैं ने 20 साल तक कुरआने पाक (पढ़ने में) रियाज़त की और 20 साल तक इस से नफ़अ अन्दोज़ हुवा।”

इस लुत्फ़ अन्दोज़ी का सुदूर उन्स व महब्बत से ही होता है और उन्स व महब्बत का हुसूल तब होता है जब कोशिश दाइमी हो और तवील मुद्दत तक तकल्लुफ़ से काम लिया जाए हत्ता की तकल्लुफ़ तबीअत में शामिल हो जाए और येह अम्र बईद अज़ क़ियास नहीं कि इन्सान कोई नापसन्द खाना अव्वलन बित्तकल्लुफ़ खाता है तो मशक्क़त बरदाश्त करता है लेकिन जब येही खाना मुसलसल खाने लग जाता है तो वोह उस को रास आ जाता है हत्ता कि अब उस से उस खाने के बिग़ैर नहीं रहा जाता। अल गरज़ नफ़्स पर जो चीज़ तकल्लुफ़ के साथ लाज़िम की जाए वोह उस का मुतहम्मिल और आदी बन जाता है। **هِيَ النَّفْسُ مَاعُوذَتْهَا تَعَوُّدٌ** या'नी नफ़्स को तू जिस चीज़ की आदत डालेगा वोह उस का आदी बन जाएगा।” खुलासा येह कि इब्तिदा में जो चीज़ उस के लिये तकलीफ़ का बाइष बनती है वोह बा'द में उस की तबीअत बन जाती है।

फिर जब बन्दा ज़िक्रुल्लाह से उन्स पा लेता है तो ग़ैरुल्लाह का ज़िक्र ख़त्म हो जाता है। और ग़ैरुल्लाह से मुराद वोह चीज़ है जो मौत के वक़्त जुदा हो जाए और क़ब्र में उस का साथ न दे। घर, माल, अवलाद और ओहदा कुछ भी बाकी नहीं रहता सिवाए ज़िक्रुल्लाह के पस अगर उसे ज़िक्रुल्लाह से उन्स था तो अब वोह इस से नफ़अ उठाएगा और ज़िक्र से ग़ाफ़िल करने वाली

चीजों की जुदाई से लज़्ज़त पाएगा। क्योंकि दुन्यवी ज़िन्दगी में ज़रूरियात पूरी करने वाली अश्या ज़िक्रुल्लाह से रुकावट बनती हैं लेकिन मौत के बा'द येह रुकावटें ख़त्म हो जाती हैं। गोया उस के और महबूब के दरमियान हाइल कैद ख़ाने से नजात मिल गई अब वोह है और उस का महबूब ! उस की खुशी में इज़ाफ़ा होगा। इसी वजह से रसूले खुदा, मुहम्मदे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “बेशक ज़िब्राईल ने मेरे दिल में येह बात डाली कि जिस से महबूबत करनी है कर लो बिल आख़िर आप इसे छोड़ने वाले हैं।”⁽¹⁾

मज़कूरा हदीषे पाक में मुराद हर वोह चीज़ है जिस का तअल्लुक दुन्या से हो क्योंकि मरते ही येह चीज़ें उस के हक़ में फ़ना हो जाती हैं। ज़मीन पर जितने हैं सब को फ़ना है और बाक़ी है रब्ब عَزَّوَجَلَّ की ज़ात, अज़मत और बुजुर्गी वाला।

पस मरने वाले के हक़ में दुन्या फ़ानी हो चुकी यहां तक कि मख़सूस मुद्दत के बा'द बज़ाते खुद दुन्या भी फ़ना हो जाएगी। अब येह (ज़िक्रुल्लाह से) उन्स व महबूबत ही है कि मरने के बा'द बन्दा जिस से लुत्फ़ अन्दोज़ होता रहता है हत्ता कि ज़वारे रहमत में जगह पा लेता है और ज़िक्र से तरक्की करता हुवा मुलाकात की मन्ज़िल तक जा पहुंचता है और इस अज़्र का जुहूर क़ब्रों से उठने और निय्यतों के सामने आने के बा'द होगा।

एक सुवाल और इस का जवाब :

कोई येह कहता है कि मौत के बा'द बन्दे के साथ ज़िक्रे इलाही नहीं रह सकता क्योंकि मौत तो अदम का नाम है, इस के साथ ज़िक्रुल्लाह का रहना मुमकिन नहीं। तो ऐसा हरगिज़ नहीं क्योंकि मौत कोई ऐसा अदम नहीं जो ज़िक्रुल्लाह के लिये रुकावट बने, बल्कि मौत तो सिर्फ़ दुन्या और ज़ाहिरी आलम से मा'दूम करती है, आलमे ग़ैब से नहीं। हमारी इस बात का षुबूत दर्जे ज़ैल फ़रामीने मुस्तफ़ा से मिलता है :

﴿1﴾ الْقَبْرِ إِمَّا حُفْرَةً مِنْ حُفَرِ النَّارِ أَوْ رَوْضَةً مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ..... ﴿1﴾ या'नी क़ब्र दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है या जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़।”⁽²⁾

﴿2﴾ أَرْوَاحُ الشَّهَدَاءِ فِي حَوَاصِلِ طُيُورٍ خُضِرَ..... ﴿2﴾ या'नी शुहदा की रूहें सब्ज़ परन्दों के क़ालिब में रहती हैं।”⁽³⁾

①.....المعجم الاوسط، الحديث: ٢٨٢٥، ج ٣، ص ٣٦٢، مفهوماً۔

②.....سنن الترمذی، کتاب صفة القيامة، الحديث: ٢٣٦٨، ج ٢، ص ٢٠٩، بتقدم وتاخر۔

③.....صحيح مسلم، کتاب الامارة، باب بيان ان ارواح الشهداء.....الخ، الحديث: ١٨٨٤، ص ١٠٣،

”حواصل طيور“ بدله ”جوف طير“۔

﴿3﴾.....महबूबे परवर दगार, गैबों पर ख़बरदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ग़ज़वए बद्र के मुशरिक मकतूलों के नाम ले ले कर फ़रमाया : ऐ फुलां ! ऐ फुलां ! तुम्हारे रब्ब عَزَّ وَجَلَّ ने तुम से जो वा'दा किया था क्या तुम ने उसे सच्चा जान लिया ? मैं तो अपने रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के किये हुए वा'दे को सच पाता हूँ। हज़रते सय्यिदुना उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ यह सुन कर अर्ज़ करने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ यह तो मुर्दे हैं, यह कैसे सुनेंगे और जवाब देंगे ? तो सरवरे काइनात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : कसम उस ज़ात की जिस के क़बज़ए कुदरत में मेरी जान है ! यह लोग मेरी बात तुम से ज़ियादा सुनते हैं, लेकिन जवाब देने पर कादिर नहीं।⁽¹⁾

येह सहीह की रिवायत है और येह हदीषे पाक मुशरिकीन के मुतअल्लिक है।

जब कि मोअमिनीन व शुहदा के मुतअल्लिक इरशाद फ़रमाया : “शुहदा की रुहें सब्ज परन्दों के क़ालिब में अर्श के नीचे मुअल्लिक रहती हैं।”⁽²⁾

मज़कूरा रिवायात से मा'लूम होने वाली कैफ़ियत व हालत भी ज़िक्रुल्लाह से मानेअ नहीं। नीज़ इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ^(١٦٩)

(प ३, अल عمران: १६९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो **अल्लाह** की राह में मारे गए हरगिज़ उन्हें मुर्दा न ख़याल करना बल्कि वोह अपने रब्ब के पास ज़िन्दा हैं रोज़ी पाते हैं।

ज़िक्रुल्लाह के आ'ला होने की वजह से मर्तबए शहादत भी अज़ीम ठहरा, क्यूंकि मक्सूद ख़ातिमा है और ख़ातिमे से हमारी मुराद दुन्या को छोड़ना और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में इस तरह हाज़िर होना है कि दिल यादे इलाही में डूबा हुवा और ग़ैरे खुदा से टूटा हुवा हो। अगर कोई बन्दा अपने दिल को यादे इलाही में मुस्तगरक करने पर कादिर हो तो इस हालत पर मरने की कुदरत सिवाए मैदाने जिहाद में सफ़ आरा होने के किसी और तरह हासिल न हो सकेगी। क्यूंकि मैदाने जंग में जान व माल, घर और अवलाद बल्कि पूरी दुन्या की महबूबत ख़त्म हो जाती है। कि

①.....صحیح مسلم، کتاب الجنة.....الخ، باب عرض مقعد المیت سن.....الخ، الحديث: ۲۸۷۴، ص ۱۵۳۷، بتغییر الفاظ۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الامارة، باب بیان ان ارواح الشهداء فی الجنة.....الخ، الحديث: ۱۸۸۷، ص ۱۰۴۷،

”حواصل طیور“ بدله ”جوف طیر“۔

سن ابن ماجه، کتاب الجنائز، باب ماجاء فیما یقال عند المریض.....الخ، الحديث: ۱۴۴۹، ج ۲، ص ۱۹۶، مفهوماً۔

येह चीजें तो वोह अपनी ज़िन्दगी के लिये चाहता था और अब हुब्बे इलाही और रिज़ाए इलाही की खातिर ज़िन्दगी ही दाव पर लगा दी। खुदा तआला के ही हो रहने की इस से बढ़ कर और कोई सूरत नहीं, इसी वजह से शहादत का मुआमला अज़ीम ठहरा और इस के कषीर फ़ज़ाइल वारिद हुए। इन में से एक फ़ज़ीलत येह है।

शहीद को बे हिजाब रब्ब तआला का दीदार :

जब हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के वालिद हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ग़ज़वए उहुद में शहीद हुए, तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से इरशाद फ़रमाया : “ऐ जाबिर ! क्या, मैं तुझे एक खुश ख़बरी न सुनाऊं ?” अर्ज़ की : “हां, क्यूं नहीं ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को भलाई की बिशारतें अता फ़रमाए।” आप صَلَّى اللَّهُ तَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने तेरे वालिद को ज़िन्दगी अता फ़रमा कर अपनी बारगाह में इस तरह बिठाया कि उस के और **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के दरमियान कोई पर्दा हाइल न था और इरशाद फ़रमाया : “ऐ मेरे बन्दे ! अपनी चाहत मुझ से बयान कर मैं तुझे अता करूंगा।” (तेरे वालिद ने) अर्ज़ की : “ऐ रब्ब **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मुझे दुन्या में वापस भेज ताकि मैं तेरी और तेरे नबी عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की रिज़ा की खातिर शहीद कर दिया जाऊं। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “येह मैं पहले मुक़र्रर कर चुका हूं कि यहां से कोई वापस नहीं जाएगा।” (1)

फिर क़त्ल इस जैसी पसन्दीदा हालत पर मरने का बाइष है। क्यूंकि अगर वोह क़त्ल न हो और मज़ीद कुछ अर्सा ज़िन्दा रहे तो ऐन मुमकिन है कि दुन्यावी ख़्वाहिशात उस की तरफ़ लौट आएं और ज़िक्रुल्लाह में मगन दिल पर ग़लबा पा लें। इसी वजह से अरिफ़ीन बुरे ख़ातिमे के ख़ौफ़ में मुब्तला रहते हैं। क्यूंकि दिल ख़्वाह कितना ही ज़िक्रे इलाही में मशगूल रहता हो पलटने, दुन्यावी ख़्वाहिशात की तरफ़ माइल होने और कोताही में पड़ने से ख़ाली नहीं होता। अगर आख़िरी वक़्त में दिल इसी तरह दुन्या के क़बजे में हो, और उसी हालत पर मौत आ जाए और येह क़ब्ज़ा बर करार रहे तो वोह मरने के बा'द दोबारा दुन्या में आने की ख़्वाहिश करेगा इस लिये कि उस का आख़िरत में हिस्सा कम होगा। क्यूंकि इन्सान की मौत उस हाल पर आती है जिस पर ज़िन्दगी गुज़ारता है और रोज़े महशर उसी हाल में उठाया जाएगा जिस पर मौत आई होगी। इन तमाम ख़तरात से हिफ़ाज़त शहादत की मौत में है। जब कि शहादत से मक्सूद जाहो माल

①.....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة آل عمران، الحديث: ۳۰۲۱، ج ۵، ص ۱۲، مفهوماً۔

वगैरा न हो। जैसा कि हदीषे मुबारक में बयान किया गया है।^(१) बल्कि रिज़ाए इलाही और दीने हक़ की सर बुलन्दी महबूब हो और येही वोह हालत है जिसे दर्जे ज़ैल आयते मुबारका में बयान किया गया। चुनान्वे, इरशाद होता है :

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ (پ ۱، التوبة: ۱۱۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** ने मुसलमानों से इन के माल और जान खरीद लिये हैं इस बदले पर कि उन के लिये जन्नत है।

और इसी तरह का शख्स आखिरत के बदले दुन्या बेच देता है और शहीद की हालत **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** के इस मा'ना के मुवाफ़िक़ होती है कि **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** के सिवा इस का कोई मक्सूद नहीं और उस के सिवा इस का कोई मा'बूद नहीं। येह शहीद अपनी ज़बाने हाल से येह गवाही देता है कि **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं क्यूंकि उस के सिवा इस का कोई मक्सूद नहीं। जो लोग येह कलिमाते तय्यिबा ज़बान से तो पढ़ें लेकिन उन की हालत इस के मुताबिक़ न हो तो ऐसे लोगों का मुआमला पुर ख़तर और **अल्लाह** रब्बुल इज़्ज़त की मशियत पर मुनहसिर है। इसी वजह से रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के ज़िक्र को सब अज़कार पर फ़ाइक़ बयान किया^(२) और बतौर तरगीब इस बात को मुतलक़ ज़िक्र फ़रमाया, फिर बा'ज़ मक़ामात पर सिद्क़ व इख़्लास की भी शर्त लगाई। जैसा कि एक मौक़अ पर फ़रमाया : “مَنْ قَالَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُخْلِصًا” या'नी जिस ने इख़्लास के साथ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** पढ़ा।” और इख़्लास का मतलब है कि हालत कौल के मुताबिक़ हो।

हम **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की बारगाह में दुआ गो हैं कि वोह हमारा ख़ातिमा उन लोगों जैसा करे जो हाल व क़ाल और ज़ाहिर व बातिन से **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** वाले हैं। ताकि हम दुन्या से इस तरह रुख़सत हों कि दिल हुब्बे दुन्या से ख़ाली और तंग हो और **अल्लाह** **عَزَّ وَजَلَّ** से मुलाक़ात का शाइक़ हो। क्यूंकि जो **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** से मुलाक़ात पसन्द करता है **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** उस से मुलाक़ात पसन्द फ़रमाता है। और जो उस से मुलाक़ात नापसन्द जानता है **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** भी उस से मुलाक़ात नापसन्द फ़रमाता है। येह हैं मतालिबे ज़िक्र के असरार व रुमूज़, इल्मे मुआमला में इस से ज़ियादा बयान करना मुश्किल है।



①.....हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश़रि **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** बयान करते हैं कि एक शख्स ने हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** से अर्ज़ की : एक शख्स ग़नीमत की ख़ातिर जिहाद करता है और एक शोहरत की ख़ातिर और एक इस लिये लड़ता है कि बहादुरी में उस का मर्तबा देखा जाए तो मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह कौन है ? फ़रमाया : जो सिर्फ़ दीने हक़ की सर बुन्दी के लिये जिहाद करे दर हक़ीक़त वोही मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह है।

(صحيح البخارى، كتاب الجهاد، باب من قاتل لتكون كلمة الله هي العليا، الحديث: ۲۸۱۰، ج ۲، ص ۲۵۶)

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء ان دعوة المسلم مستجابة، الحديث: ۳۳۹۳، ج ۵، ص ۲۲۸، مفهوماً۔

बाब नम्बर 2 : इस्तिगफार, दुरूद और दुआ के फनाइल व आदाब
(इस में चार फस्ले हैं)

पहली फस्ल : दुआ की फजीलत
फजीलते दुआ से मुतअल्लिक चार फरामीने बारी तआला :

﴿1﴾

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ ۖ أُجِيبُ
دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ ۚ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي
(پ ۲، البقرة: ۱۸۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और ऐ महबूब ! जब
तुम से मेरे बन्दे मुझे पूछें तो मैं नज़दीक हूँ। दुआ
क़बूल करता हूँ पुकारने वाले की जब मुझे पुकारे। तो
उन्हें चाहिये मेरा हुक्म मानें।

﴿2﴾

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا
يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ (پ ۸، الاعراف: ۵۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अपने रब्ब से दुआ करो
गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हृद से बढ़ने
वाले उसे पसन्द नहीं।

﴿3﴾

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ
الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ
جَهَنَّمَ ذَٰخِرِينَ ۝ (پ २३، المؤمن: ६०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम्हारे रब्ब ने
फ़रमाया मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा बेशक
वोह जो मेरी इबादत से ऊंचे खचते (तकबुर करते)
हैं अज़ क़रीब जहन्नम में जाएंगे ज़लील हो कर।

﴿4﴾

قُلْ ادْعُوا اللَّهَ أَدْعُوكُمُ وَإِذَا دُعُوا الرَّحْمَنُ ۚ أَيَّامًا تَدْعُوا
فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ (پ १५، بنی اسرائیل: ११)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह**
कह कर पुकारो या रहमान कह कर जो कह कर
पुकारो सब उसी के अच्छे नाम हैं।

फजीलते दुआ से मुतअल्लिक पांच फरामीने मुस्तफ़ :

﴿1﴾ يَا نَبِيَّ دُعَا بِي إِذَا دُعِيَ بِي ۚ يَا نَبِيَّ دُعَا بِي إِذَا دُعِيَ بِي ۚ يَا نَبِيَّ دُعَا بِي إِذَا دُعِيَ بِي ۚ يَا نَبِيَّ دُعَا بِي إِذَا دُعِيَ بِي ۚ
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते

मुबारका तिलावत फ़रमाई :

(1) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : मुझ से दुआ करो मैं क़बूल करूंगा । (अ. المؤمن: १०)

(2) **الدُّعَاءُ مَعَ الْعِبَادَةِ** (2) या'नी दुआ इबादत का मज़ है ।

(3) **عَزَّوَجَلَّ** की बारगाह में दुआ से बढ़ कर कोई चीज़ नहीं । (3)

(4) **.....** बन्दे की दुआ तीन चीज़ों में से एक से ख़ाली नहीं होती या तो उस का कोई गुनाह मुआफ़ कर दिया जाता है या फ़ौरन उसे कोई भलाई अता कर दी जाती है या उस के लिये भलाई जम्अ कर दी जाती है । (4)

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “दुआ नेकी में इस तरह किफ़ायत करती है जिस तरह खाने में नमक ।”

(5) **.....** **اَللّٰهُ** से उस के फज़ल का सुवाल करो क्यूंकि **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** पसन्द करता है कि उस से मांगा जाए और बेहतरीन इबादत (सब्र के साथ) फ़राखी का इन्तिज़ार है । (5)

दूसरी फ़स्ल : **दुआ के दस आदाब** (6)

पहला अदब :

दुआ के लिये अच्छे अवक़ात का ख़याल रखा जाए जैसे 9 ज़ुल हिज्जा का दिन, माहे रमज़ान, रोज़े जुमुआ और सहूर का वक़्त ।

वक़्ते सहूर के तीन फ़ज़ाइल :

(1) **.....** **اَللّٰهُ** **عَزَّوَجَلَّ** इरशाद फ़रमाता है :

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ (अ. الذरिअत: १८) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते ।

1..... سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة المؤمن، الحديث: ۳۲۵۸، ج ۵، ص ۱۶۶۔

2..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحديث: ۳۳۸۲، ج ۵، ص ۲۴۳۔

3..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی فضل الدعاء، الحديث: ۳۳۸۱، ج ۵، ص ۲۴۳۔

4..... المسند للامام احمد بن حنبل، مسند ابی سعید الخدری، الحديث: ۱۱۳۳، ج ۴، ص ۳۷، مفهوماً۔

5..... سنن الترمذی، احادیث شتی، باب انتظار الفرج وغير ذلك، الحديث: ۳۵۸۲، ج ۵، ص ۳۳۳۔

6...दुआ के फ़ज़ाइल से मुतअल्लिक़ मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 318 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “फ़ज़ाइले दुआ” का मुतालआ कीजिये !

﴿2﴾.....हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ ने फ़रमाया : रात के आख़िरी तिहाई हिस्से में **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ आस्माने दुन्या पर ख़ास तजल्ली फ़रमाता है और इरशाद फ़रमाता है : “है कोई दुआ मांगने वाला कि उस की दुआ क़बूल करूं ? है कोई सुवाल करने वाला कि उसे अता करूं ? है कोई बख़्शिश का तालिब कि उसे बख़्श दूं ।” (1)

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना या'कूब عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने (अपने बेटों से) जो कलाम फ़रमाया था रब्ब तआला ने बिएनिही इसे अपने पाक कलाम में ज़िक्र फ़रमाया, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّي (پ ۱۳، یوسف: ۹۸) **تَرْجَمَہ کَنْزُالْإِمَان** : جلد मैं तुम्हारी बख़्शिश अपने रब्ब से चाहूंगा ।

इस से आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का मक़सूद ब वक़्ते सहर दुआ करना था । बयान किया जाता है कि आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام सहर के वक़्त खड़े हो कर दुआ में मशगूल हो गए और बेटे आप के पीछे आमीन कहते । तो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ ने वहूय फ़रमाई कि मैं ने इन्हें बख़्श दिया और ओहदए नबुव्वत से सरफ़राज़ किया । (2)

दूसरा अदब :

दुआ मांगने वाला मुक़द्दस अहवाल से भी फ़ाइदा उठाए । चुनान्चे,

क़बूलिय्यते दुआ के अवक़ात :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “राहे ख़ुदा में सफ़बन्दी, बारिश और फ़र्ज नमाज़ अदा करते वक़्त आस्मानों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, लिहाज़ा इन अवक़ात में तुम ख़ूब दुआ मांगा करो ।”

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुजाहिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد फ़रमाते हैं : “नमाज़ें बेहतरीन अवक़ात में मुक़र्र की गई हैं, लिहाज़ा नमाज़ों के बा'द दुआ मांगना खुद पर लाज़िम कर लो ।”

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الترغيب فی الدعاء.....الخ، الحديث: ۴۵۸، ص ۳۸۱

②.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِكَة जाअल हक़, स. 352 पर एक ए'तिराज़ का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं : जमहूर उ-लमा ने इन्हें पैग़म्बर न माना । हां, एक जमाअत ने कुछ ज़ईफ़ दलाइल से इन की नबुव्वत का वहम किया है इसी लिये हम ने मुक़द्दमे में अर्ज किया कि अम्बियाए किराम का नबुव्वत से पहले बद अक़ीदगी से पाक होना इजमाई मस्अला है और गुनाहे कबीरा से पाक होना जमहूर का कौल है और बा'दे नबुव्वत गुनाहे कबीरा से पाक होने पर भी इजमाअ है । इन हज़रात की नबुव्वत किसी सरीही आयत या हदीष या कौले सहाबा से षाबित नहीं ।

.....रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने क़बूलिय्यत निशान है :

“(1) ”या’नी अज़ान व इक़ामत के दरमियानी वक़्त में दुआ रद्द नहीं होती।“

एक रिवायत में है कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“(2) ”या’नी रोज़ादार की दुआ रद्द नहीं होती।“

दर हकीक़त बेहतरीन अवक़ात भी बेहतरीन अहवाल का सबब बनते हैं। जैसे ब वक़्ते सहर दिल साफ़, मुख़्लिस और फ़िक्को से ख़ाली होता है। नव जुल हिज्जा और जुमुआ का दिन अज़ाइम में पुख़्तगी लाने और रहमते इलाही के हुसूल के लिये दिलों के मुत्तफ़ि़क़ होने के अवक़ात हैं। येह अवक़ात की फ़ज़ीलत का एक सबब है और बा बरक़त अवक़ात में इस के इलावा असरार भी पाए जाते हैं लेकिन इन की ख़बर किसी बशर को नहीं होती।

सजदे में दुआ की कषरत करो :

हालते सजदा में भी क़बूलिय्यते दुआ के इमकानात बढ़ जाते हैं। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत اقْرَبُ مَا يَكُونُ الْعَبْدُ مِنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ وَهُوَ سَاجِدٌ فَاكْثُرُوا فِيهِ مِنَ الدُّعَاءِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : या’नी बन्दा सजदे की हालत में अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा क़रीब होता है इस लिये तुम सजदे में ब कषरत दुआ किया करो। (3) (4)

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “मुझे रुकूअ व सुजूद में क़िराअत से मन्अ किया गया है, रुकूअ में तुम अपने परवर दगार की अज़मत का ज़ि़क़ किया करो और सजदे में ख़ूब दुआ किया करो क्यूंकि येह क़बूलिय्यते दुआ के ज़ियादा लाइक़ है।” (5)

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی العفو والعافیة، الحدیث: ۳۶۰۵، ج ۵، ص ۳۴۲، بتقدّم و تاخّر۔

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۶۰۹، ج ۵، ص ۳۴۳، مفهوماً۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما یقال فی الركوع والسجود، الحدیث: ۴۸۴، ص ۲۵۰۔

④.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान میرआतुल मनाजीह, जि. 2
स. 82-83 पर फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि नवाफ़िल के सजदों में हमेशा दुआ मांगे फ़राइज़ के सजदों में कभी कभी।
बा’ज लोग सजदे में गिर कर दुआएं मांगते हैं या’नी दुआ के लिये सजदा करते हैं इन का माख़ज़ येह हदीष है।

⑤.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب النهی عن قراءة القرآن فی الركوع والسجود، الحدیث: ۴۷۹، ص ۲۴۹۔

तीसरा अद्वय :

दुआ़ किब्ला रुख़ हो कर मांगी जाए और हाथ इस क़दर उठाए जाएं के बग़लों की सफ़ेदी नजर आने लगे ।

दुआ़ा किंज़ला रुख़ हो कर मांगिये :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि “हुज़ूर सय्यिदे अलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मैदाने अरफ़ात में तशरीफ़ लाए और क़िब्ला रुख़ हो कर ता गुरुबे आफ़ताब दुआ मांगते रहे।”(1)

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “तुम्हारा रब्ब हया फ़रमाने वाला और बहुत अज़ा करने वाला है, हया फ़रमाता है कि बन्दा उस की बारगाह में हाथ उठाए और वोह उसे खाली लौटा दे।”⁽²⁾

दुआ में हाथ उठाने का तरीका :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ दुआ में इस क़दर हाथ बुलन्द फ़रमाते कि बग़लों की सफ़ेदी ज़ाहिर होने लगती और उंगली से इशारा न फ़रमाते ।”(3)

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का एक ऐसे शख्स के पास से गुज़र हुवा जो दौराने दुआ हाथ की दोनों शहादत की उंगलियों से इशारे कर रहा था । आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “ اَحَدٌ اَحَدٌ ” या ’नी एक उंगली के इशारे पर ही इक्तिफा करो ।” (4) (5)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : इन हाथों को (दुआ के लिये) उठाओ इस से पहले कि इन्हें जन्जीरों में जकड़ दिया जाए।⁽⁶⁾

①..... صحيح مسلم، كتاب الحج، باب حجة النبي، الحديث: ١٢١٨، ص ٢٣٤، "واقفاً" مكان "يدعو".

2..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۵۶۷، ج ۵، ص ۳۲۶، بتغير۔

3..... صحيح مسلم، كتاب الاستسقاء، باب رفع اليدين بالدعاء في الاستسقاء، الحديث: ٨٩٥، ص ٢٢٢، دون قوله: ولا يشير بأصبعه.

④.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن मिरआतुल मनाजीह, जि. 2

स. 94 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : या'नी दाहिने हाथ की कलमे की उंगली से इशारा करो बाएं हाथ की कोई उंगली न उठाओ ।
 5.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۵۶۸، ج ۵، ص ۳۲۶، مفهوماً۔

6.....تفسير قرطبي، سورة الانسان: ٤، ج ١٠، جزء ١٩، ص ٩١.

दुआ के बा'द हाथ चेहरे पर फेरना :

इख़ितामे दुआ पर दोनों हाथ चेहरे पर फेर लेना चाहिये । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “रसूले करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब दुआ के लिये हाथ उठाते तो इन्हें चेहरे पर फेरने से पहले नीचे नहीं लाते थे ।”(1)

दुआ में हाथ बुलन्द करने का तरीका :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “**اَبَّااا** عَزَّ وَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब दुआ मांगते तो हथेलियां मिलाते और इन का पेट अपने रुखे अन्वर की तरफ़ रखते ।”(2) यह दुआ में हाथ उठाने का तरीका है ।

दौराने दुआ आस्मान की तरफ़ निगाह नहीं उठानी चाहिये, सरकारे मदीना करारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “जो लोग दुआ में आस्मान की तरफ़ निगाहें उठाते हैं वोह बाज़ आ जाएं वरना उन की बीनाई जाती रहेगी ।”(3)

चौथा अदब :

दुआ मांगते वक़्त आवाज़ न तो इतनी आहिस्ता हो कि ख़ामोशी कहलाए और न ही ज़ियादा बुलन्द हो । जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश़अरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बयान करते हैं : हम हुज़ूर नबिय्ये अकरम, रसूले मोहूतशम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हमराही में मदीनए तय्यिबा जा रहे थे, जब मदीना करीब आ गया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने ना'रए तक्बीर बुलन्द किया, लोगों ने ख़िलाफ़े अ़दत बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कही तो सरदार मदीनए मुनव्वरा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! तुम किसी बहरे

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ماجاء فی رفع الایدی عندالدعاء، الحدیث: ۳۳۹۷، ج ۵، ص ۲۵۰۔

②.....المعجم الكبير، الحدیث: ۱۲۲۳۳، ج ۱۱، ص ۳۲۳، باختصار۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب النهی عن رفع البصر الى السماء فی الصلاة، الحدیث: ۴۲۹، ص ۲۲۹۔

या गाइब का जिक्र नहीं कर रहे बल्कि उस का जिक्र कर रहे हो जो तुम्हारे और तुम्हारी सुवारियों की गर्दनों के दरमियान भी है।” (1) (2)

दुआ में आवाज़ पस्त रखने के मुतअल्लिक तीन फ़रामीने बारी तअ़ाला :

﴿1﴾

وَلَا تَجْهَرُ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافُتُ بِهَا
(प १५, बनी اسرائیل: ११)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपनी नमाज़ न बहुत आवाज़ से पढ़ो न बिल्कुल आहिस्ता ।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं इस आयत में صَلَوة से मुराद दुआ है। (3)

आहिस्ता आवाज़ में दुआ करने पर ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना ज़क़रिया की ता'रीफ़ फ़रमाई । चुनान्वे, फ़रमाया :

﴿2﴾

إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا (प १६, मरिम: ३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जब उस ने अपने रब्ब को आहिस्ता पुकारा ।

﴿3﴾

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً (प ८, الاعراف: ५५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब्ब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता ।

पांचवां अदब :

दुआ में हम वज़्न व मुसज्जअ लफ़्ज़ों का तकल्लुफ़ करने की मुमानअत :

दुआ में हम वज़्न अल्फ़ाज़ लाने का तकल्लुफ़ न किया जाए क्यूंकि दुआ गो की हालत आजिजी व इन्किसारी वाली होनी चाहिये यहां तकल्लुफ़ मुनासिब नहीं । रसूले खुदा,

①.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان मिरआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 341 पर इसी मफ़हूम की हदीष के तहत फ़रमाते हैं : इस लिये चीख़ कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करना, खुदा तअ़ाला आहिस्ता ज़िक्र सुन नहीं सकता मन्अ है बल्कि बद अक़ीदगी है ज़िक्र बिल जहर तो अपने नफ़्स और दूसरे गाफ़िलों को जगाने, शैतान को भगाने दरो दीवार को अपने ईमान का गवाह बनाने के लिये होता है, ख़याल रहे कि **अल्लाह** तअ़ाला के हमारी शह रग से ज़ियादा क़रीब होने के मा'ना येह हैं कि उस का इल्म, कुदरत, रहमत क़रीब वरना हक़ तअ़ाला कुर्बे मकानी से पाक है। (मुलतक़तन)

②.....सनन अबी दाउद, کتاب الوتر, باب فی الاستغفار, الحديث: १५२८, ج २, ص १२२ -

③.....صحیح مسلم, کتاب الصلاة, باب التوسط فی القراءة فی الصلاة الجهرية, الحديث: ४२८, ص २३५ -

हबीबे क़ब्रिया صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : अंन करीब ऐसे लोग होंगे जो दुआ में हद से तजावुज़ करेंगे, ^(१) हालांकि इरशादे बारी तआला है :

﴿४﴾

أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
السُّعْدَيْنِ ۝ (۸۰) (الاعراف: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब्ब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द नहीं ।

मज़कूरा आयते मुबारका की तफ़सीर में कहा गया है कि हद से बढ़ने से मुराद मुक़फ़ा व मुसज्जअ लफ़्ज़ों के तकल्लुफ़ में पड़ना है । बेहतर येह है कि रिवायात में मन्कूल दुआएं मांगने पर इक्तिफ़ा करे । क्यूंकि मुमकिन है आदमी दुआ में हद से तजावुज़ कर जाए और **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से ऐसा सुवाल कर दे जो उस की मरज़ी के ख़िलाफ़ हो । क्यूंकि हर आदमी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ मुआज़ सय्यिदुना मुआज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ अच्छी तरह दुआ मांगना नहीं जानता । इसी बिना पर हज़रते सय्यिदुना मुआज़ रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जन्नत में भी उ-लमाए किराम की ज़रूरत होगी क्यूंकि जब अहले जन्नत से फ़रमाया जाएगा अपनी कोई तमन्ना पेश करो तो वोह उ-लमा की ख़िदमत में हाज़िर हो कर पुछेंगे हम किस तरह अपनी तमन्ना बयान करें ?

सरकारे दो जहां, महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने नसीहत निशान है : दुआ में काफ़िया बन्दी से बचो । तुम्हारे लिये बस येह दुआ काफ़ी है :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَاقَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَعَمَلٍ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَاقَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَعَمَلٍ
“या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से जन्नत और इस में ले जाने वाले कौल व अमल का सुवाल करता हूं और जहन्म और इस में ले जाने वाले कौल व अमल से तेरी पनाह मांगता हूं ।” ^(२)

हदीषे पाक में है : “سَيَأْتِي قَوْمٌ يَعْتَدُونَ فِي الدُّعَاءِ وَالطُّهُورِ يا’नी अंन करीब ऐसे लोग आएंगे जो दुआ मांगने और तहारत हासिल करने में हद से तजावुज़ करेंगे ।” ^(३)

क़ुरआन व हदीष और बुजुर्गाने दीन से मन्कूल दुआ के अलफ़ाज़ :

एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का गुज़र एक क़िस्सा गो वाइज़ के पास से हुवा जो दुआ मांगने

①.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب الاسراف فی الماء، الحدیث: ۹۶، ج ۱، ص ۶۸۔

②.....قوت القلوب، باب ذکر الفرق بین علماء الدنیا و علماء الآخرة.....الخ، ج ۱، ص ۲۸۱۔

المستطرف فی کل فن مستطرف، الباب السابع والسبعون فی الدعاء وآدابه وشروطه.....الخ، ج ۲، ص ۴۴۰۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب الاسراف فی الماء، الحدیث: ۶۹، ج ۱، ص ۶۸، بتقدم وتاخر۔

में लफ़ाज़ी से काम ले रहा था। बुजुर्ग़ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : बारगाहे खुदा में मुबालगा आराई करते हो ? गवाह रहो ! मैं ने हज़रते सय्यिदुना हबीब अज़मी رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को देखा कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की दुआ में इस से ज़ियादा अल्फ़ाज़ नहीं होते थे :

اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا جَوِيدِينَ اللَّهُمَّ لَا تَفْضَحْنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اللَّهُمَّ وَفَقْنَا لِلْخَيْرِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें मुख़्लिस बन्दा बना, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें रोज़े क़ियामत रुस्वा होने से बचाना। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भलाई की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ क़बूलिय्यते दुआ के हवाले से मशहूर थे और अतराफ़ के लोग आप की मइय्यत में दुआएं मांगते थे।

बा'ज़ बुजुर्ग़ाने दीन फ़रमाते हैं : दुआ अज़िज़ी और मोहताज़ी की ज़बान से मांगो, फ़साहत व बलाग़त की ज़बान से नहीं। मन्कूल है : उ-लमा व अब्दाल की दुआ सात कलिमात से ज़ियादा न होती। इस की दलील सूरए बकरह की आख़िरी आयात हैं ⁽¹⁾ क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने किसी भी मक़ाम पर बन्दों को इस से ज़ियादा दुआ ता'लीम नहीं फ़रमाई।

जान लीजिये ! सज्ज (या'नी क़ाफ़िया बन्दी) से मुराद पुर तकल्लुफ़ कलाम करना है जो कि इज्ज व इह्तियाज के ख़िलाफ़ है। हां ! मसनून दुआओं में भी हम वज़्न कलिमात होते हैं वलّی الله تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शहीद मौजूदात, शाहे काइनात, सरवरे काइनात, जैसा कि सरवरे काइनात, शाहे मौजूदात की ता'लीम कर्दा दर्जे ज़ैल दुआ और इस की मिश्ल और दुआएं :

أَسْأَلُكَ الْأَمْنَ مِنْ يَوْمِ الْوَعِيدِ وَالْجَنَّةَ يَوْمَ الْخُلُودِ مَعَ الْمُقَرَّبِينَ الشُّهُودِ وَالرَّكْعَ السُّجُودِ الْمُؤْمِنِينَ بِالْعَهْدِ إِنَّكَ رَحِيمٌ وَدُودٌ وَإِنَّكَ تَفْعَلُ مَا تَرِيدُ

या'नी (ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) मैं रोज़े जज़ा अम्न का और हमेशगी के दिन मुक़र्रबीन व शाहिदीन और रुकूअ व सुजूद करने वालों और वा'दा पूरा करने वालों के साथ जन्नत का सुवाल करता हूं बेशक तू रहूम फ़रमाने वाला और महब्बत करने वाला है और तू जो चाहता है करता है। ⁽²⁾

①.....सूरए बकरह में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने मोमिन बन्दों को दुआ का तरीका बताते हुए इरशाद फ़रमाया कि यूँ رَبَّنَا لَا تُؤْخِذْنَا إِنْ كُنَّا نَسِيًّا أَوْ أَخْطَاةً رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا أَصْرَ كَسَابَتِنَا عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ع : अर्ज़ की जाए : وَأَعْفُ عَنَّا وَاعْفُزْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ (پ ۳، البقرة: ۲۸۶)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : ऐ ربब हमारे हमारी पकड़ न कर अगर हम भूलें या चूँके ऐ ربब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा कि तू ने हम से अगलों पर रखा था ऐ ربब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहाय न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्श दे और हम पर रहूम कर तू हमारा मौला है तू क़ाफ़िरोں पर हमें मदद दे।

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۲۳۰، ج ۵، ص ۲۶۵۔

लिहाजा मसनून व मन्कूल दुआओं पर इक्तिफ़ा करना चाहिये या बिगैर किसी सज्ज व तकल्लुफ़ के आजिजी और खुशूअ के साथ दुआ मांगनी चाहिये क्यूंकि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ आजिजी पसन्द फ़रमाता है ।

छटा अदब :

दुआ गो आजिजी व इन्किसारी करने वाला और उम्मीद व खौफ़ रखने वाला हो ।

खौफ़ व उम्मीद से दुआ मांगने के मुतअल्लिक़ दो फ़रामैने बारी तआला :

﴿1﴾

اِنَّهُمْ كَانُوْا يُسْرِعُوْنَ فِيْ لُخَيْرٍ وَّيَدْعُوْنَ رَاغِبًا وَّرَاهِبًا (پ ۱، الانبياء: ۹۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक वोह भले कामों में जल्दी करते थे और हमें पुकारते थे उम्मीद और खौफ़ से ।

﴿2﴾

اَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً (پ ۸، الاعراف: ۵۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अपने रब्ब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता ।

हदीषे पाक में है : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे को महबूब बनाता है तो उसे मुब्तलाए आलाम कर देता है ताकि उस की गिर्या व ज़ारी सुने ।” (1)

सातवां अदब : दुआ की क़बूलियत का यकीन और उम्मीदे वाषिक़ हो ।

कामिल यकीन के साथ दुआ मांगने से मुतअल्लिक़ तीन फ़रामीने मुश्तफ़ा :

﴿1﴾.....जब तुम में से कोई दुआ मांगे तो येह न कहे कि “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ अगर तू चाहे तो मेरी मग़फ़िरत फ़रमा, तू चाहे तो मुझ पर रहम फ़रमा !” बल्कि उसे कामिल यकीन के साथ दुआ करनी चाहिये क्यूंकि **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ को कोई मजबूर करने वाला नहीं । (2)

﴿2﴾.....जब तुम में से कोई दुआ करे तो ख़ूब रग़बत ज़ाहिर करे क्यूंकि **اَلलّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के लिये कुछ भी मुश्किल नहीं । (3)

①.....فردوس الاخبار للدليمي، باب الالف، الحديث: ۹۷۵، ج ۱، ص ۱۵۱ -

②.....صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء.....الخ، باب العزم بالدعاء.....الخ، الحديث: ۲۶۷۹، ص ۱۴۴۰ -

③.....الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، كتاب الرقائق، باب الادعية، الحديث: ۸۹۳، ج ۲، ص ۱۲۷ -

﴿3﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में दुआ मांगो कि तुम्हें इस की क़बूलियत का यकीन हो और जान लो कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ाफ़िल दिल की दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : तुम अपनी ज़ात में कोई बुराई पा कर दुआ से बाज़ न रहो क्योंकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब से बुरी मख़्लूक शैतान की भी दुआ क़बूल फ़रमाई । इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हिकायतन ज़िक्र किया, चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया :

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمٍ يُبْعَثُونَ قَالِ إِنَّكَ
مِنَ الْمُنظَرِينَ^(١٥) (پ ٨، الاعراف: ١٥، ١٢)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बोला : मुझे फुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाए जाएं । फ़रमाया : तुझे मोहलत है ।

आठवां अदब :

सुवाल करने में इसरार करे और अपनी दुआ तीन मरतबा दोहराए । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “रसूले करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब भी दुआ या सुवाल करते तीन मरतबा करते ।”⁽²⁾

क़बूलियते दुआ में ताख़ीर न समझे जैसा कि सरकारे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जब तक तुम जल्दबाज़ी करते हुए यूँ न कहो कि मैं ने दुआ की लेकिन क़बूल न हुई उस वक़्त तक तुम्हारी दुआ क़बूल की जाती रहेगी, जब दुआ मांगो तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से बहुत ज़ियादा सुवाल करो क्योंकि तुम करीम ज़ात को पुकार रहे हो !”⁽³⁾

एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं : “मैं 20 साल से बारगाहे इलाही में एक दुआ कर रहा हूँ अगर्चे अभी तक क़बूल नहीं हुई लेकिन मुझे इस के क़बूल होने का यकीन है । रब्ब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मेरा सुवाल येह है कि वोह मुझे बे मक्सद कामों को छोड़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे ।”

दुआ की क़बूलियत ज़ाहिर् होने या न होने पर पढ़े जाने वाले क़लिमात :

हुज़ूरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने तकर्रब निशान है : तुम में से जब कोई अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ से दुआ मांगे और इस के क़बूल होने का इल्म हो जाए तो यूँ कहे

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحدیث: ۳۴۹۰، ج ۵، ص ۲۹۲۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الجہاد والسير، باب مالقی النبی صلی اللہ علیہ وسلم.....الخ، الحدیث: ۱۷۹۴، ص ۹۹۱۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب بیان انه یتستجاب الداعی.....الخ، الحدیث: ۲۷۳۵، ص ۱۲۶۳، باختصار۔

“الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي يَنْعِمُ بِتَمِّ الصَّالِحَاتِ” या’नी तमाम ता’रीफें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं जिस की ने’मत से नेकियां मुकम्मल होती हैं।” और जिसे ताखीर महसूस हो तो वोह कहे “الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ” या’नी हर हाल में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है।”⁽¹⁾

नववां अदब :

दुआ का आगाज़ ज़िक्रुल्लाह से किया जाए न कि सुवाल से कि हज़रते सय्यिदुना सलमा बिन अकूअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं ने रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दुआ का आगाज़ इन्ही कलिमात से करते सुना :

“سُبْحَانَ رَبِّيَ الْعَلِيِّ الْأَعْلَى الْوَهَّابِ” या’नी मेरा रब्ब पाक बुलन्द और अता फ़रमाने वाला है।”⁽²⁾

दुआ की कबूलियत का सबब :

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدْسُ سِرُّهُ الثُّورَانِي फ़रमाते हैं : “जो शख्स बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में अपनी कोई हाज़त पेश करना चाहे तो वोह अपनी दुआ के अव्वल व आखिर दुरूदे पाक पढ़े, बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दुरूद शरीफ़ कबूल फ़रमाता है तो उस की येह शान नहीं कि वोह बीच की दुआ रद्द कर दे।”

एक रिवायत में है कि रसूले करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किसी हाज़त का सुवाल करो तो इब्तिदाअन मुझ पर दुरूद भेजो इस लिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की शाने करीमी ऐसी नहीं कि उस से दो हाज़तें तलब की जाएं तो वोह एक को तो पूरा फ़रमादे और दूसरी को रद्द कर दे।”⁽³⁾

येह रिवायत हज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू तालिब मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने अपनी किताब “क़तूल कुलूब” में नक़ल की है।

दशवां अदब :

इस अदब का तअल्लुक बातिन से है और कबूलियते दुआ में येही अस्ल है या’नी तौबा करना, जुल्मन लिया हुवा माल वापस करना और अपनी पूरी कोशिश से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह होना। येह दुआओं की कबूलियत का करीबी सबब है।

①.....کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحديث: ۳۱۷۹، ج ۲، ص ۳۳۔

②.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند المدنیين، الحديث: ۱۶۵۴۸، ج ۵، ص ۵۶۱۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث فی ذکر عمل المريد.....الخ، ج ۱، ص ۱۵، “يقضى” بدله “يعطى”۔

कहूत साली के मुबअल्लिक 12 हिकायात

चुगल खोरी का ववाल :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि एक दफ़्आ हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के ज़माने में सख़्त कहूत पड़ गया। आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام बनी इसराईल की हमराही में बारिश के लिये दुआ मांगने चले लेकिन बारिश न हुई आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने तीन दिन तक येही मा'मूल रखा लेकिन बारिश फिर भी न हुई। फिर **अल्लाह** तबारक व तआला की तरफ़ से वह्य नाज़िल हुई कि ऐ मूसा ! मैं तुम्हारी और तुम्हारे साथ वालों की दुआ कबूल नहीं करूंगा क्योंकि इन में एक चुगल ख़ोर है। हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने अर्ज़ की : “ऐ परवर दगार عَزَّوَجَلَّ वोह कौन है ताकि हम उसे यहां से निकाल दें।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से जवाब मिला : “ऐ मूसा ! मैं तो बन्दों को इस से रोकता हूं।” चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने बनी इसराईल को हुक्म फ़रमाया कि तुम सब बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में चुगली से तौबा करो। जब सब ने तौबा की तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बारिश अता फ़रमा दी।

कहूत साली दूर हो गई :

﴿2﴾.....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन जुबैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि बनी इसराईल के एक बादशाह के ज़माने में खुशक साली हो गई उन्होंने ने बारिश के लिये दुआ मांगी। फिर उस बादशाह ने कहा कि “या तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें बारिश अता फ़रमाएगा या हम उसे अज़ियत देंगे।” लोगों ने कहा : “तुम्हारे लिये ऐसा क्यूंकर मुमकिन है ? उस की कुदरत तो आस्मानों को मुहीत है।” उस ने कहा : “मैं उस के वलियों और बरगुज़ीदा बन्दों को क़त्ल करूंगा जो उस के लिये बाइषे अज़ियत है।”⁽¹⁾ चुनान्वे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें बारिश अता फ़रमा दी।

जुलम का अन्जाम :

﴿3﴾.....हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “हमें येह रिवायत पहुंची है कि एक दफ़्आ बनी इसराईल सात साल तक कहूत साली में मुब्तला रहे हत्ता कि वोह

①.....बादशाह का येह कौल लोगों को कामिल तवज्जोह के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिये था। जब लोगों ने येह सुना तो अपनी तमाम तर तवज्जोह के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उन की दुआ कबूल फ़रमा ली। (اتحاف السادة المتقين، ج 5، ص 213)

कूड़ा कर-कट के ढेरों से मुर्दार और बच्चों तक को खा गए और पहाड़ों की तरफ निकल कर गिरी जा रही करने लगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस दौर के अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की तरफ वह्य फरमाई कि (अपनी कौम को बता दो) “अगर तुम मेरी बारगाह की तरफ इतना चलो कि तुम्हारे घुटने घिस जाएं और हाथ आस्मान तक पहुंच जाएं और दुआ मांगते मांगते तुम्हारी ज़बानें थक जाएं तब भी मैं किसी की दुआ कबूल करूंगा न किसी रोने वाले पर रहम करूंगा हत्ता कि तुम जुल्मन लिया हुआ माल हकदार को लौटा न दो।” उन लोगों ने जूही इस बात पर अमल किया उसी वक्त उन्हें बारिश अता कर दी गई।

गुनाहों की नुहूसत :

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار फरमाते हैं : एक दफ़ा बनी इसराईल पर कहूत पड़ गया। मुतअहद बार बारिश के लिये दुआ की (लेकिन बारिश न हुई) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उस वक्त के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ वह्य फरमाई कि “उन लोगों को बता दो कि मेरी बारगाह में पेश होने वाले तुम्हारे जिस्म गन्दे हैं, दुआ के लिये उठने वाले तुम्हारे हाथ नाहक खून से रंगीन हैं और तुम्हारे पेट हराम से भरे हुए हैं। ऐसे में तुम मेरी बारगाह से बहुत ज़ियादा दूरी और मेरे शदीद ग़ज़ब का शिकार हो चुके हो।”

च्यूटी की फरयाद :

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू सिद्दीक नाजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي फरमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام وَالصَّلَوةُ وَالسَّلَام عَلَيْهِ बारिश के लिये दुआ मांगने के इरादे से चले कि रास्ते में एक च्यूटी नज़र आई जिस की पीठ ज़मीन से लगी हुई और टांगें आस्मान की तरफ उठी हुई थीं, वोह अर्ज कर रही थी : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम भी तेरी एक मख़्लूक हैं और हम तेरे रिज़क से बे नियाज़ नहीं, पस तू हमें दूसरों के गुनाहों की वजह से हलाकत में न डाल।” हज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام وَالصَّلَوةُ وَالسَّلَام ने लोगों से फरमाया : “लौट चलो ! दूसरों की दुआओं के सदके तुम पर बारिश बरसेगी।”

बारगाहे इलाही में मकबूलियत :

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुर्रहमान औज़ाई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फरमाते हैं कि एक बार लोग बारिश की दुआ के लिये निकले। इन में हज़रते सय्यिदुना बिलाल बिन सा'द عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى भी थे, वोह खड़े हुए, हम्दो पनाए इलाही के बा'द हाज़िरीन को मुख़ातब कर के पूछा : “क्या तुम खुद को गुनाहगार तस्लीम करते हो ?” लोगों ने कहा : “हां।” चुनान्चे, आप ने बारगाहे

इलाही में दस्ते सुवाल दराज करते हुए अर्ज की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम ने तेरा येह फ़रमान सुना : “مَاعَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ (پ ۱۰، التوبة: ۹۱)” तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : नेकी वालों पर कोई राह नहीं।” हम गुनाहों का इक़रार करते हैं और तेरी मग़फ़िरत हम जैसों के लिये ही है। ऐ **अल्लाह** رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى हमारी मग़फ़िरत फ़रमा, हम पर रहूम फ़रमा और हम पर बारिश बरसा। आप عَلَيْهِ ने और हाज़िरीन ने दुआ के लिये हाथ उठाए ही थे कि बारिश बरसने लगी।

बारिश में ताख़ीर नहीं बल्कि!

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار से लोगों ने अर्ज की : “आप बारगाहे खुदावन्दी में हमारे लिये दुआ फ़रमाएं।” तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “तुम समझ रहे हो कि बारिश में ताख़ीर हो रही है जब कि मैं तो (बुरे आ’माल के सबब) पथ्थर बरसने में ताख़ीर देख रहा हूँ।”

एक आंख वाला आदमी :

﴿8﴾....मन्कूल है कि एक मरतबा हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام बारिश की दुआ मांगने के लिये निकले। जब आप عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सहरा में पहुंचे तो ए’लान फ़रमाया : “मेरे साथ ऐसा शख्स न आए जिस ने कोई गुनाह किया हो।” येह सुन कर सिवाए एक शख्स के सब लौट गए। हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने उस से पूछा : “तुम ने कोई गुनाह नहीं किया ?” उस ने जवाब दिया : “हुज़ूर ! मुझे अपना कोई गुनाह याद नहीं सिवाए इस के कि एक दिन मैं नमाज़ पढ़ रहा था पास से एक औरत गुज़री तो मैं ने उसे इस आंख से देखा, उस के गुज़र जाने के बा’द (मुझ पर नदामत ग़ालिब आई और) मैं ने उंगली से वोह आंख निकाल कर उस औरत के पीछे फेंक दी।”

येह सुन कर हज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالसَّلَام ने फ़रमाया : “तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ पर आमीन कहूंगा।” जब उन्होंने ने दुआ मांगी तो आस्मान पर बादल छा गए, बारिश बरसने लगी और लोग सैराब हो गए।

उ-लमाउ किराम की अहम्मियत :

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना यहूया ग़स्सानी قُدِّسَ سِرُّهُ الْتَوْرَانी फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मुबारक दौर में क़हत पड़ गया, लोगों ने दुआ के लिये तीन उ-लमा मुन्तख़ब किये। जब वोह बारिश की दुआ के लिये निकले तो एक अ़लिम साहिब ने बारगाहे इलाही में अर्ज की : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने तौरात शरीफ़ में फ़रमाया कि जुल्म करने वाले

को मुआफ़ कर दो। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम ने अपनी जानों पर जुल्म किया तू हमें मुआफ़ फ़रमा दे।” दूसरे अलिम साहिब ने यूँ दुआ की : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने तौरात में येह भी फ़रमाया कि अपने गुलामों को आजाद करो। तो ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरे गुलाम हैं हमें आजाद फ़रमा दे।” तीसरे अलिम साहिब ने दुआ मांगते हुए कहा : “ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तूने तौरात में हुक्म फ़रमाया कि जब दरवाज़े पर मिस्कीन आए तो उसे ख़ाली हाथ न लौटाओ। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम तेरे मिस्कीन बन्दे हैं, तेरे दर पर हाज़िर हैं, हमें ख़ाली न लौटाना !” इस दुआ के फ़ौरन बा’द बारिश बरसने लगी।

सा’दून मजनून की दुआ :

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना अता सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं कि एक बार हम से बारिश रोक दी गई, हम दुआ के लिये बाहर निकले तो देखा कि सा’दून मजनून क़ब्रिस्तान में बैठे हैं। मुझे देख कर कहने लगे : “ऐ अता ! आज क़ियामत का दिन है या लोग क़ब्रों से निकल आए हैं।” मैं ने कहा : “ऐसा नहीं है बल्कि बारिश नहीं हो रही, लिहाज़ा हम दुआ के लिये निकले हैं।” सा’दून ने कहा : “ऐ अता ! किस दिल से दुआ मांगने चले हो, ज़मीनी या आस्मानी ?” मैं ने कहा : “आस्मानी।” सा’दून ने कहा : “ऐ अता ! अफ़सोस ! खोटे सिक्के चलाने की कोशिश करने वालों को बता दो खोटे सिक्के न चलाओ कि परखने वाला बहुत बिसारत रखता है।” फिर इन्होंने कन अंखियों से आस्मान की तरफ़ देख कर (बारगाहे खुदावन्दी में) अर्ज़ की : “ऐ मेरे मा’बूद ! मेरे आका ! अपने शहरों को अपने बन्दों के गुनाहों की वजह से बरबाद न कर बल्कि अपने नामों के पोशीदा राजों और पर्दों में छुपी ने’मतों के वसीले से हमें कषीर मीठा पानी अता फ़रमा जिस से शहर सैराब हो जाएं और तेरे बन्दे ज़िन्दा रह सकें। ऐ हर चाहे पर क़ादिर !” हज़रते सय्यिदुना अता सुलमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : सा’दून मजनून की दुआ अभी मुकम्मल भी न हुई थी कि आस्मान गरजने चमकने लगा और मुसलाधार बारिश शुरू हो गई। फिर सा’दून येह कहते चल दिये :

أَفَلَمْ الزَّاهِدُونَ وَالْعَابِدُونَ إِذْ لَمَوْا لَهُمْ أَجَاعُوا الْبُطُونَا
أَسْهَرُوا الْأَعْيُنَ الْعَلِيلَةَ حُبًّا فَأَنْقَضَى لَيْلُهُمْ وَهُمْ سَاهِرُونَ
شَغَلَتْهُمْ عِبَادَةُ اللَّهِ حَتَّى حَسِبَ النَّاسُ أَنْ فِيهِمْ جُنُونَا

तर्जमा : ज़ाहिदीन व आबिदीन कामयाब हो गए क्योंकि उन्होंने ने अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये फ़ाक़े किये। उन्होंने ने हुब्बे मौला में बीमार आंखों के साथ रातें जाग कर गुज़ारीं और इबादते इलाही में इस क़दर मशगूल हो गए कि लोग उन्हें मजनून गुमान करने लगे।

हबशी गुलाम की दुआ :

﴿11﴾....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : मैं सख़्त कहूँ तू सली के अय्याम में मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुवा, लोग बारिश की दुआ के लिये निकले तो मैं भी उन के साथ हो लिया। इस दौरान एक हबशी गुलाम आया और मेरे पास ही बैठ गया, उस के पास दो चादरें थीं एक का तहबन्द बांध रखा था और दूसरी ओढ़ी हुई थी। मैं ने सुना कि वोह बारगाहे खुदावन्दी में यूँ दुआ गो है : “ऐ **اَللّٰهُ** غُرِّوْجَلْ बुरे आ'माल और कषरते गुनाह के सबब येह चेहेरे तेरी बारगाह में रुस्वा हो गए। इस की पादाश में बारिश रोक कर तू अपने बन्दों को तम्बीह फ़रमा रहा है। ऐ बुर्दबारी फ़रमाने वाले ! तेरे बन्दों ने तुझ से अच्छाई और भलाई की ही उम्मीद लगा रखी है। मैं तेरी बारगाह में अर्ज करता हूँ कि तू इन को इसी वक़्त बारिश अता फ़रमा दे।” वोह येही कहता रहा : “السَّاعَةُ السَّاعَةُ يا'नी इसी वक़्त इसी वक़्त।” हत्ता कि आस्मान बादलों से भर गया और हर तरफ़ बारिश होने लगी।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं इस वाक़िअ के बा'द मैं हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन अयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب के पास गया, मुझे देख कर फ़रमाने लगे : “तुम अफ़सुर्दा दिखाई देते हो !” मैं ने कहा : “एक शख़्स किसी मुआमले में हम से आगे निकल गया और उस मुआमले का वाली बन गया।” फिर मैंने गुज़श्ता सारा वाक़िआ बयान किया। सुन कर हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन अयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب ने एक चीख़ मारी और बेहोश हो गए।

वसीले की बरक़त :

﴿12﴾.....मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चचा हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के वसीले से बारिश की दुआ मांगी। जब हज़रते सय्यिदुना उमर रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ दुआ मांग चुके तो हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में यूँ अर्ज गुज़ार हुए : “ऐ **اَللّٰهُ** غُرِّوْجَلْ आस्मान से बलाएं गुनाहों के सबब नाज़िल होती हैं और तौबा के सबब इन से नजात मिलती है। तेरे नबी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का रिश्तेदार होने के नाते लोगों ने तेरी बारगाह में मेरा वसीला पेश किया। गुनाहों से आलूदा हाथ तेरी बारगाह में दराज़ हैं। पेशानियां तौबा के लिये झुकी हैं। तू वाली है, तू भटके हुआओं से बे ख़बर नहीं। शिकस्ता हाल को ज़ाएअ होने के मक़ाम पर नहीं छोड़ता। अब छोटे फ़रयादी और बड़े गिर्या कनां हैं। फ़रयाद के लिये आवाज़ें बुलन्द हैं। तू राजों और छुपी बातों को जानता है। ऐ बारी तअ़ाला ! इस से पहले कि लोग मायूस हो कर हलाकत में पड़ जाएं तू इन को इन की आहो ज़ारी के बदले बारिश अता फ़रमा दे। तेरी रहमत

से तो सिर्फ काफिर मायूस हो सकता है ।” रावी फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की दुआ अभी मुकम्मल न हुई थी कि आस्मान पहाड़ जैसे बादलों से भर गया ।

तीसरी फ़स्ल : दुरुद पाक की फज़ीलत और अज़मत में मुख़फ़ा

इरशादे बारी तअ़ाला है :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا

تَسْلِيمًا ﴿٥١﴾ (پ ۲۲، الاحزاب: ۵۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अब्बास** और उस के फ़िरिश्ते दुरुद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालो ! उन पर दुरुद और ख़ूब सलाम भेजो ।

फज़ीलते दुरुद से मुतअल्लिक 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा :

﴿1﴾.....मरवी है कि एक दिन रसूले मोहूतशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तशरीफ़ लाए तो चेहरए अन्वर खुशी से चमक रहा था, आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : मेरे पास जिब्राईल आए और कहा : “ऐ मुहम्मद (صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) क्या आप इस बात पर राज़ी नहीं कि आप की उम्मत में से जो शख्स एक मरतबा आप पर दुरुद भेजे मैं उस पर दस रहमतें नाज़िल करूं और जो एक मरतबा सलाम भेजे मैं उस पर दस मरतबा सलाम नाज़िल करूं !” (1)

﴿2﴾.....जो मुझ पर दुरुद भेजता है तो जब तक वोह दुरुद पढ़ता रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआए रहमत करते रहते हैं अब बन्दे की मरज़ी है कम पढ़े या ज़ियादा । (2)

﴿3﴾.....إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِي أَكْثَرُهُمْ عَلَى صَلَاةٍ या’नी मेरा ज़ियादा कुर्ब उसे नसीब होगा जो मुझ पर दुरुद की कषरत करता होगा । (3)

﴿4﴾.....किसी मोमिन के बख़ील होने के लिये इतना काफ़ी है कि उस के सामने मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद न पढ़े । (4)

﴿5﴾.....या’नी रोज़े जुमुआ मुझ पर दुरुदे पाक की कषरत करो । (5)

﴿6﴾.....मेरा जो उम्मती मुझ पर एक मरतबा दुरुदे पाक पढ़ता है उस के लिये 10 नेकियां लिखी जातीं और 10 गुनाह मिटा दिये जाते हैं । (6)

1.....سنن النسائي، كتاب السهو، باب الفضل في الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ۱۲۹۲، ص ۲۲۲۔

2.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ۹۰۷، ج ۱، ص ۳۹۰۔

3.....سنن الترمذی، كتاب الوتر، باب ماجاء في فضل الصلاة.....الخ، الحديث: ۲۸۴، ج ۲، ص ۲۷۔

4.....سنن الترمذی، كتاب الدعوات، باب قول رسول الله رغم انف رجل، الحديث: ۳۵۵۷، ج ۵، ص ۳۲۱، مفهوماً۔

5.....سنن ابی داود، كتاب الصلاة، باب فضل يوم الجمعة.....الخ، الحديث: ۱۰۴۷، ج ۱، ص ۳۹۱، بتقديم و تاخیر۔

6.....سنن النسائي، كتاب السهو، باب الفضل في الصلاة على النبي صلى الله عليه وسلم، الحديث: ۱۲۹۲، ص ۲۲۲، مفهوماً۔

﴿7﴾.....जो शख्स अज़ान व इक़ामत के बा'द येह दुआ पढ़े उस के लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब होगी : (1)

اللَّهُمَّ رَبِّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ الْعَامَّةِ وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ
وَرَسُولِكَ وَأَعْطِهِ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَالدرَجَةَ الرَّفِيعَةَ وَالشَّفَاعَةَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

﴿8﴾.....जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (2)

﴿9﴾.....إِنَّ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةً سَيَّاحِينَ يَبْلُغُونَ عَنْ أُمَّتِي السَّلَامَ..... या'नी ज़मीन पर कुछ फिरिश्ते घूमते फिरते हैं जो मेरी उम्मत का सलाम मुझ तक पहुंचाते हैं । (3)

﴿10﴾.....لَيْسَ أَحَدٌ يَسْلِمُ عَلَى الرَّادِّ لِلَّهِ عَلَى رُوحِي حَتَّى أَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ..... या'नी जब भी कोई शख्स मुझ पर सलाम भेजता है तो **अल्लाह** मेरी रूह लौटा देता है हत्ता कि मैं उस का जवाब देता हूं । (4) (5)

﴿11﴾.....رسوله اكرم، نوره موجسسّم صَلَّى الله تعالى عليه وآله وسلّم से पूछा गया कि “हम आप पर किस तरह दुरूद भेजें ?” तो इरशाद फ़रमाया : “यूं पढ़ो :

①.....صحیح البخاری، کتاب الأذان، باب الدعاء عند النداء، الحديث: ۶۱۴، ج ۱، ص ۲۲۴، ملنطقاً۔

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ۱۸۳۵، ج ۱، ص ۴۹۷۔

③.....الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان، کتاب الرقائق، باب الادعية، الحديث: ۹۱۰، ج ۲، ص ۱۳۴، بتقدم وتأخر۔

④.....سنن ابی داود، کتاب المناسک، باب زیارة القبور، الحديث: ۲۰۲۱، ج ۲، ص ۳۱۵۔

⑤.....मुफ़रिस्सरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عليه رَحْمَةُ الْمَنَان मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 101 पर फ़रमाते हैं : यहां रूह से मुराद तवज्जोह है न वोह जान जिस से ज़िन्दगी काइम है । हुज़ूर तो ब हयाते दाइमी ज़िन्दा हैं । इस हदीष का येह मतलब नहीं कि मैं वैसे तो बे जान रहता हूं किसी के दुरूद पढ़ने पर ज़िन्दा हो कर जवाब देता रहता हूं वरना हर आन हुज़ूर पर लाखों दुरूद पढ़े जाते हैं तो लाज़िम आएगा कि हर आन लाखों बार आप की रूह निकलती और दाख़िल होती रहे । ख़याल रहे कि हुज़ूर एक आन में बे शुमार दुरूद ख़्वानों की तरफ़ यकसां तवज्जोह रखते हैं सब के सलाम का जवाब देते हैं । जैसे सूरज बयक वक़्त सारे आलम पर तवज्जोह कर लेता है ऐसे आस्माने नबुव्वत के सूरज (आफ़ताबे नबुव्वत) एक वक़्त में सब का दुरूदो सलाम सुन भी लेते हैं और इस का जवाब भी देते हैं लेकिन इस में आप को कोई तकलीफ़ भी महसूस नहीं होती । क्यूं न हो कि मज़हरे ज़ाते किब्रिया हैं रब्ब तआला बयक वक़्त सब की दुआएं सुनता है ।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِ وَذُرِّيَّتِهِ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَآلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ (1)

खसाइसे मुखफा

महबूबे रब्बे जुल जलाल صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم के विसाले पुर मलाल के बा'द अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'जम رَضِی اللہ تعالیٰ عنہ फ़िराके रसूल में रोते हुए कहने लगे : या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप खजूर के तने से टेक लगा कर खुतबा इरशाद फ़रमाया करते थे । जब ता'दाद में इज़ाफ़ा हुवा तो आप ने मिम्बर बनवाया ताकि लोग (ब आसानी) खुतबा सुन सकें । आप के फ़िराक में उस तने ने गिराया व ज़ारी की तो आप ने दस्ते मुबारक फेर कर तसल्ली दी तो वोह चुप हो गया । या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم आप की जुदाई में आप की उम्मत पर इस तने से ज़ियादा रोने का हक़ बनता है ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! बारगाहे इलाही में आप का मक़ाम इस क़दर बुलन्द है कि **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त ने आप की इताअत को अपनी इताअत क़रार देते हुए फ़रमाया :

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ

(प ५: النساء: ८०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : जिस ने रसूल का हुक्म

माना बेशक उस ने **अल्लाह** का हुक्म माना ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم आप पर मेरे मां बाप कुरबान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के हां आप की इस क़दर फ़ज़ीलत है कि आप की लगज़िश की ख़बर देने से पहले आप के लिये अफ़व की नवीद सुनाई और फ़रमाया :

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذْنَتْ لَهُمْ

(प १०: التوبة: २३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हें मुआफ़

करे तुम ने उन्हें क्यूं इज़्ज़ दे दिया ?

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर सदेक़े ! रब्ब तअ़ाला के हां आप को इस दर्जे की फ़ज़ीलत हासिल है कि उस ने आप को सब से आख़िर में मबरूफ़ फ़रमाया लेकिन ज़िक्र सब से पहले किया :

وَإِذَا أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ
مِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ (پ ۲۱، الاحزاب: ۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब ! याद करो जब हम ने नबियों से अहद लिया और तुम से और नूह और इब्राहीम से ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप ने बारगाहे इलाही में इतनी फ़ज़ीलत पाई कि जहन्नमी जहन्नम के मुख़्तलिफ़ तबक़ात में जल रहे होंगे और आप की इताअत न करने पर ग़म व हसरत का इज़हार करते होंगे । रब्ब तअ़ाला ने कुरआने पाक में इसे यूं बयान फ़रमाया :

يَلِيَّتَنَا طَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ (پ ۲۱، الاحزاب: ۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हाए ! किसी तरह हम ने **अल्लाह** का हुक्म माना होता और रसूल का हुक्म माना होता ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! हज़रते सय्यिदुना मूसा बिन इमरान الصّلوٰۃ والسلام को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने पथ्थर अता फ़रमाया जिस से नहरें फूट पड़ीं लेकिन इस से ज़ियादा तअज़्जुब खेज़ अम्र येह है कि रब्ब तअ़ाला ने आप की उंगलियों से पानी के चश्मे जारी फ़रमा दिये ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन दावूद عَلَيْهِمَا الصّلوٰۃ والسلام के बस में ऐसी हवा कर दी जिस के ज़रीए सुब्हो शाम एक एक महीने का फ़ासिला तै किया जा सकता था और इस से भी अज़ीब तर आप का बुराक़ था जिस पर आप न सिर्फ़ सातवें आस्मान तक पहुंचे बल्कि नमाज़े फ़ज़्र वादिये बतह में अदा फ़रमाई ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर फ़िदा ! अगर हज़रते सय्यिदुना ईसा बिन मरयम عَلَيْهِمَا الصّلوٰۃ والسلام को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुर्दे ज़िन्दा करने का मो'जिज़ा अता फ़रमाया तो इस से ज़ियादा तअज़्जुब खेज़ मुआमला येह है कि ज़हर आलूद भुनी हुई बकरी के शाने ने आप से कलाम किया और अर्ज की : मुझे तनावुल न फ़रमाइये क्यूंकि मुझ में ज़हर मिलाया गया है ।

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने अपनी कौम के खिलाफ़ दुआ की जिसे **اَللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ** ने इस तरह बयान फ़रमाया :

رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ عَلَى الْاَرْضِ مِنْ الْكٰفِرِيْنَ
دَيَّارًا ۝ (پ ۲۹، النوح: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब्ब ! ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला न छोड़ ।

अगर आप भी इसी की मिस्ल बारगाहे इलाही में इल्तिजा करते तो सब हलाक हो जाते । आप की पीठ मुबारक को रौंदा गया, रुखे अन्वर को खून आलूद किया गया, दन्दाने मुबारक शहीद किये गए । लेकिन आप ने उन के लिये भलाई ही मांगी और बारगाहे इलाही में यूँ इल्तिजा की :
“اللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِقَوْمِيْ فَاِنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ” या'नी ऐ **اَللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ** मेरी कौम को मुआफ़ फ़रमा येह मुझे नहीं जानते ।”

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! आप की उम्र मुबारक और ज़मानए तब्तीग़ कम लेकिन आप पर ईमान लाने वालों की ता'दाद ज़ियादा है जब कि हज़रते सय्यिदुना नूह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की उम्र और ज़मानए तब्तीग़ ज़ियादा लेकिन उन पर ईमान लाने वालों की ता'दाद कम रही ।

रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आजिजी :

या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर फ़िदा ! अगर आप अपने साथ सिर्फ़ अपने बराबर के लोगों को बिठाते तो हमें न बिठाते । अगर आप अपने बराबर के लोगों में शादी करना चाहते तो हमारे ख़ानदान में आप का निकाह न होता । अगर आप अपने बराबर के लोगों के साथ खाना खाना चाहते तो हमारे साथ न खाते । लेकिन **اَللّٰہُ عَزَّ وَجَلَّ** की क़सम ! आप ने हमें अपनी हम नशीनी का शरफ़ बख़्शा, हमारे ख़ानदान में शादी की । हमें खाने में साथ बिठाया, ऊन का लिबास ज़ेबे तन फ़रमाया, दराज़ गोश को सुवारी बनाया, सुवारी पर अपने पीछे दूसरों को बिठाया, ज़मीन पर बैठ कर खाना खाया, बतौर तवाज़ोअ अपनी उंगलियां चाटीं ।

दुरूद हमेशा मुकम्मल पढ़ें या लिखें :

एक बुजुर्ग़ رَحْمَةُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ फ़रमाते हैं कि मैं हदीष शरीफ़ की किताबत करता था और जहां मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे मुबारक आता तो मैं सिर्फ़ दुरूद लिखता सलाम न लिखता । एक बार मुझे ख़्वाब में सरकारे अली वकार, शहनशाहे अबरार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का दीदार नसीब हुवा, आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰलِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : “तुम अपनी किताब में मुकम्मल दुरूद क्यूं

नहीं लिखते ?” वोह बुजुर्ग फ़रमाते हैं : “इस के बा’द मैं ने दुरूद के साथ सलाम लिखने का भी मा’मूल बना लिया ।”

हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं एक दफ़्ता में ख़्वाब में महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत से मुशरफ़ हुवा तो अर्ज की : “या रसूलल्लाह الرِّسَالَةَ” में जो लिखा है صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُونَ وَغَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُونَ :” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “उन्हें इस के इन्आम में हिसाबो किताब के लिये खड़ा नहीं किया जाएगा ।”

चौथी फ़स्ल : इस्लामफार की फ़गीलब

हज़रते सय्यिदुना अलक़मा और हज़रते सय्यिदुना अस्वद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا का बयान है कि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : कुरआने पाक में येह आयतें ऐसी हैं कि अगर गुनाहगार इन की तिलावत कर के रब्ब عَزَّ وَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करे तो उस की मग़फ़िरत कर दी जाए ।

﴿1﴾

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ

(प ३, आल عمران: १३५)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बेहयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें **अल्लाह** को याद कर के अपने गुनाहों की मुआफ़ी चाहें ।

﴿2﴾

وَمَنْ يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ
يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَحِيمًا

(प ५, النساء: ११०)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जो कोई बुराई या अपनी जान पर जुल्म करे फिर **अल्लाह** से बख़्शिश चाहे तो **अल्लाह** को बख़्शाने वाला मेहरबान पाएगा ।

﴿3﴾

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ إِنَّهُ كَانَ
تَوَّابًا

(प ३०, النصر: ३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो अपने रब्ब की षना करते हुए उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो । बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है ।

तर्जमए कञ्जुल ईमान : और पिछले पहर से
मुआफ़ी मांगने वाले ।

﴿١﴾.....رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ أَكْثَرُ يَهْدِيكَ إِلَى أَنْتَ التَّوَابُ الرَّحِيمُ : अक़्ब़र यह पढ़ा करते : سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَابُ الرَّحِيمُ : या'नी ऐ **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात पाक है और सब ता'रीफें तेरे लिये हैं ऐ **अब्बाह** मेरी मग़फ़िरत फ़रमा बेशक तू तौबा कबूल करने वाला और रहम फ़रमाने वाला है ।” (1)

﴿2﴾.....जो इस्तिग़्फ़ार की क़षरत करेगा **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ उस की हर परेशानी दूर फ़रमाएगा, हर तंगी से उस के लिये नजात की राह निकालेगा और ऐसी जगह से रिज़्क अ़ता फ़रमाएगा जहाँ से उसे गुमान भी न होगा ।⁽²⁾

.....बिला शुबा मैं रोज़ाना 70 मरतबा **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से इस्तिग़फ़र और तौबा करता हूँ।⁽³⁾ ⁽⁴⁾
 हालांकि आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** के सद्के अगले पिछले लोगों ने भी मग़फ़ित की ने'मत पाई।

❦.....मेरे दिल पर कभी (अन्वारे इलाही के ग़लबे से अब्र छ जाता है) और मैं रोज़ाना 100 बार इस्तिगफ़ार करता हूँ।⁽⁵⁾ ⁽⁶⁾

5.....सोते वक़्त जो येह कलिमात : **“اَسْتَغْفِرُ اللهَ الْعَظِيمَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ** मैं 'नी मैं अज़मत व बुजुर्गी वाले परवर दगार **عَزَّ وَجَلَّ** से मग़फ़िरत त़लब करता हूं उस के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, वोह आप जिन्दा और दूसरों को काइम रखने वाला है और मैं उस की बारगाह

١..... كتاب الدعاء للطبراني، القول في السجود، الحديث، ٥٩٤، ص ٩٣، دون "الرحيم".

2.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث: ۱۵۱۸، ج ۲، ص ۱۲۲، بتغییر۔

3मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रेते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِكَةِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 353 पर फ़रमाते हैं: तौबा व इस्तिग़फ़ार रोज़े नमाज़ की तरह इबादत भी है इसी लिये हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर अमिल थे या येह अमल हम गुनहगारों की तालीम के लिये है वरना हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मा'सुम हैं गुनाह आप के करीब भी नहीं आता।

4..... كتاب الدعاء للطبراني، فصل الاستغفار في ادبار الصلوة، الحديث: ١٨٣٨، ص ٥١٦، بتقدم وتأخر.

5.....मुफ़स्सिरे शहीर इकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن मिरआतुल मनाजीह, जि. 3 स. 353 पर फ़रमाते हैं : इस पर्दे के मुतअल्लिक़ शारेहीन ने बहुत ख़ामा फ़रसाई की है मगर हक़ येह है कि यहां ग़ैन (पर्दे) से मुराद अपनी उम्मत के गुनाहों को देख कर ग़म फ़रमाना है। और इस्तिग़फ़ार से मुराद उन गुनाहगारों के लिये इस्तिग़फ़ार करना है। (मुलतक़तन)

6..... صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء..... الخ، باب استحباب الاستغفار..... الخ، الحديث: ٢٤٠٢، ص ١٢٢٩ -

में तौबा करता हूं।" तीन मरतबा पढ़ ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा अगर्चे समन्दर की झाग या रेत के ज़रात या दरख़्त के पत्तों या दुन्या के दिनों के बराबर हों।⁽¹⁾

एक और रिवायत में है कि जो शख़्स मज़क़ूरा कलिमात पढ़ लेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह बख़्श देगा अगर्चे वोह मैदाने जिहाद से ही क्यूं न भागा हो।⁽²⁾

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा बिन यमान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं, मैं अपने अहले ख़ाना के साथ सख़्त कलामी किया करता था। (एक रोज़) बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे ख़ौफ़ आता है कि कहीं मेरी ज़बान मेरे लिये जहन्नम का बाइष न बन जाए।” येह सुन कर महबूबे रब्बे जुल जलाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “तुम इस्तिग़फ़ार क्यूं नहीं करते ! मैं तो रोज़ाना 100 मरतबा इस्तिग़फ़ार करता हूं।”⁽³⁾

﴿7﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : “अगर कोई गुनाह हो जाए तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करो और उस की बारगाह में तौबा करो, बेशक नदामत और त़लबे मग़फ़िरत का नाम तौबा है।”⁽⁴⁾

﴿8﴾.....ताजदारे रिसालत, मख़ज़ने जूदो सख़ावत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ (ता'लीमे उम्मत के लिये) इस तरह इस्तिग़फ़ार करते :

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي خَطِيئَتِي وَجَهْلِي وَأَسْرَافِي فِي أَمْرِي وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي
اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي هَزْلِي وَجِدِّي وَخَطِيئِي وَعَمْدِي وَكُلَّ ذَلِكَ عِنْدِي اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ
وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी ख़ता, नादानी, अपने मुआमलात में हद से तजावुज़ और मेरे मुतअल्लिक़ जो भी तू जानता है उसे मुआफ़ फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मज़ाक़ में, सन्जीदगी में, भूले में या जान बूझ कर मुझ से जो भी गुनाह सरज़द हुए हैं उन्हें मुआफ़ फ़रमा। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे अगले पिछले, जलवत व ख़लवत के गुनाह और जिन को तू मुझ से बेहतर जानता है मुआफ़ फ़रमा। तू ही आगे करने वाला और पीछे लाने वाला है और तू सब कुछ कर सकता है।”⁽⁵⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۴۰۸، ج ۵، ص ۲۵۵، بتقدم وتأخر۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحديث: ۱۵۱۷، ج ۲، ص ۱۲۱۔

③.....سنن الدارمی، ومن کتاب الرقاق، باب فی الاستغفار، الحديث: ۲۷۲۳، ج ۲، ص ۳۹۱، بتغییر۔

④.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی معالجة كل ذنب بالتوبة، الحديث: ۷۰۲۷، ج ۵، ص ۳۸۲۔

⑤.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب التعوذ من شر ما عمل، الحديث: ۲۷۱۹، ص ۱۴۵۔

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمَ फ़रमाते हैं : मैं वोह शख्स हूँ कि जब नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से हदीष सुनता हूँ तो **अल्लाह** जितना चाहता है मुझे इस से नफ़अ अता फ़रमाता है और जब कोई सहाबिये रसूल मुझे हदीषे रसूल सुनाता है तो मैं उस से क़सम लेता हूँ और जब वोह क़सम खाता है तो मैं उस की तस्दीक़ करता हूँ और मुझे अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिदीक़ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हदीष सुनाई और सच फ़रमाया कि मैं ने मदनी आका صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को इरशाद फ़रमाते सुना कि “जो बन्दा गुनाह कर बैठे तो अच्छे तरीक़े से वुजू करे फिर खड़े हो कर दो रकअतें अदा करे फिर **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करे तो उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है।” फिर आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह आयते मुबारका तिलावत फ़रमाई :

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
(प १३५, अल عمران)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे हयाई या अपनी जानों पर जुल्म करें। (1)

﴿10﴾.....बन्दा जब कोई गुनाह करता है तो उस के दिल पर एक सियाह नुक्ता लगा दिया जाता है फिर अगर वोह तौबा करे और उस गुनाह से बाज़ आ जाए और इस्तिग़फ़ार करे तो उस का दिल चमका दिया जाता है और अगर वोह मज़ीद गुनाह करे तो उस सियाही में इज़ाफ़ा कर दिया जाता है यहां तक कि उस के दिल पर छा जाती है। (2)

येह वोही जंग है जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने कुरआने पाक में यूं ज़िक्र फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ سَوَّلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ (प ३००, المطففين)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर जंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

﴿11﴾.....**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ जन्नत में बन्दे को एक दर्जा अता फ़रमाएगा, बन्दा अर्ज़ करेगा : “ऐ मौला عَزَّ وَجَلَّ येह दर्जा मुझे कैसे मिला ?” **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ इरशाद फ़रमाएगा : “उस इस्तिग़फ़ार के बदले जो तेरे बेटे ने तेरे लिये किया।” (3)

①.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، الحدیث: ۱۵۲۱، ج ۲، ص ۱۲۲-۱۲۳۔

②.....سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة ویل للمطففین، الحدیث: ۳۳۲۵، ج ۵، ص ۲۲۰، مفهوماً۔

③.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند ابی هريرة، الحدیث: ۱۰۶۱۵، ج ۳، ص ۵۸۴۔

﴿12﴾.....उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا रिवायत करती हैं कि सरकारे वाला तबार, शफीए रोज़े शुमार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में यूँ अर्ज की : “اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الَّذِينَ إِذَا أَحْسَنُوا اسْتَبَشَرُوا وَإِذَا أَسَؤُوا اسْتَغْفَرُوا” या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे उन लोगों में शामिल फ़रमा जो नेकी कर के खुश होते हैं और अगर ख़ता कर बैठें तो मग़फ़िरत त़लब करते हैं।” (1)

﴿13﴾.....बन्दा जब कोई गुनाह कर बैठे फिर कहे : “اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي” या'नी या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे मुआफ़ फ़रमा।” तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है : “मेरे बन्दे से गुनाह हो गया, और वोह जानता है कि उस का रब्ब है जो गुनाह पर पकड़ भी फ़रमाता है और बख़्श भी देता है। ऐ मेरे बन्दे ! जो चाहे कर मैं ने तेरी बख़्शिश फ़रमा दी।” (2)

﴿14﴾.....मुआफी मांग लेने वाला गुनाह पर अड़ा रहने वाला नहीं अगर्चे दिन में 70 बार गुनाह करे। (3)

﴿15﴾.....एक शख्स जिस ने कभी कोई नेकी न की थी एक रोज़ आस्मान की तरफ़ निगाह उठा कर कहने लगा : “बेशक मेरा एक परवर दगार है, ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा।” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “मैं ने तुझे बख़्श दिया।” (4)

﴿16﴾.....जिस से कोई गुनाह सरज़द हो जाए और वोह यकीन रखे कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी इस ख़ता पर मुत्तलअ है तो उस की मग़फ़िरत कर दी जाती है अगर्चे वोह इस्तिग़फ़ार भी न करे। (5)

﴿17﴾.....फ़रमाया, रब्ब तअाला फ़रमाता है : “ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुनाहगार हो सिवाए उस के जिसे मैं महफूज़ रखूँ, लिहाज़ा मुझ से मग़फ़िरत का सुवाल करो मैं तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा और तुम में से जो येह जान ले कि मैं बख़्श देने पर क़ादिर हूँ तो मैं उस की मग़फ़िरत फ़रमा दूंगा और मुझे कुछ परवाह नहीं।” (6)

﴿18﴾.....जो शख्स येह कलिमात कहे : “سُبْحَانَكَ ظَلَمْتُ نَفْسِي وَعَمِلْتُ سُوءًا فَافْغِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ” या'नी (या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) तेरी ज़ात पाक है, मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया और बुरे अमल

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الأدب، باب الاستغفار، الحديث: ٣٨٢٠، ج ٢، ص ٢٥٨۔

②.....صحيح مسلم، كتاب التوبة، باب قبول التوبة من الذنوب.....الخ، الحديث: ٢٤٥٨، ص ١٢٤-١٢٥، بتقديم و تاخير۔

③.....سنن ابی داود، كتاب الوتر، باب الاستغفار، الحديث: ١٥١٢، ج ٢، ص ١٢١۔

④.....موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، حسن الظن بالله، الحديث: ١٠٢، ج ١، ص ١٠٢، مفهوماً۔

⑤.....المعجم الاوسط، الحديث: ٢٢٤٢، ج ٣، ص ٢٢٢۔

⑥.....سنن الترمذی، كتاب صفة القيامة، الحديث: ٢٥٠٣، ج ٢، ص ٢٢٢، مفهوماً۔

किये, पस तू मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख़्शाने वाला कोई नहीं।” तो उस के गुनाह बख़्श दिये जाते हैं अगर्चे च्यूंटियों की ता’दाद के बराबर हों।⁽¹⁾

﴿19﴾.....रिवायत में है कि अफ़ज़ल इस्तिग़फ़ार येह है :

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي وَأَنَا عَبْدُكَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ عَلَى نَفْسِي بِذُنُوبِي فَقَدْ ظَلَمْتُ نَفْسِي وَاعْتَرَفْتُ بِذُنُوبِي فَأَغْفِرْ لِي ذُنُوبِي مَا قَدَّمْتُ مِنْهَا وَمَا أَخَّرْتُ فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعَهَا إِلَّا أَنْتَ يَا نَبِيَّ

या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तू मेरा रब्ब है, मैं तेरा बन्दा हूं, तू ने मुझे पैदा किया और मैं ब कदरे ताक़त तेरे अहदो पैमान पर काइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी दी हुई ने’मत और अपनी जान के खिलाफ़ गुनाहों का भी इक़रार करता हूं, बेशक मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, मुझे अपने गुनाहों का ए’तिराफ़ है, पस मेरे अगले पिछले गुनाहों को बख़्श दे कि तेरे सिवा बख़्शाने वाला कोई नहीं।⁽²⁾

अल्लाह के महबूब बन्दे :

हज़रते सय्यिदुना ख़ालिद बिन मा’दान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَيْرَان का बयान है कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “मेरे महबूब बन्दे वोह हैं जो मुझ से महब्बत के सबब आपस में महब्बत रखते हैं, उन के दिल मसाजिद में लगे रहते हैं और वक्ते सहर इस्तिग़फ़ार करते हैं। जब मैं अहले ज़मीन को अज़ाब देने का इरादा करता हूं तो इन्हीं लोगों की वजह से उन से फेर देता हूं।

इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक्वाले बुजुर्गाने दीन :

﴿1﴾.....हज़रते सय्यिदुना क़तादा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : “कुरआने पाक तुम्हारी बीमारी की तशखीस करता और इस के लिये दवा तजवीज़ फ़रमाता है, गुनाह तुम्हारी बीमारी है और इस्तिग़फ़ार इस का इलाज है।”

﴿2﴾.....अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم ने इरशाद फ़रमाया : “तअज्जुब है उस शख्स पर जो सामाने नजात रखने के बा वुजूद हलाक हो जाता है।” पूछा गया : “सामाने नजात क्या है ?” फ़रमाया : “इस्तिग़फ़ार।”

﴿3﴾.....इन्ही से मरवी है कि “**अल्लाह** जब्बार व क़हहार जिसे अज़ाब देने का इरादा फ़रमा लेता है उसे तौबा की तौफीक नहीं देता।”

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : बन्दा “أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ” कहता है उस का मतलब है कि “(मौला !) मुझे बख़्श दे।”

①.....کنز العمال، کتاب الاذکار، باب فی الدعاء، الحديث: ۵۰۴۹، ج ۲، ص ۲۸۷، مفهوماً۔

②.....صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، الحديث: ۶۳۰۶، ج ۴، ص ۱۹۰، باختصار۔

﴿5﴾.....उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : बन्दा गुनाह और ने'मत के दरमियान होता है। इन दोनों के लिये الْحَمْدُ لِلَّهِ और اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ है (या'नी हुसूले ने'मत पर हम्दो षना और इर्तिकाबे गुनाह पर तौबा व इस्तिग़फ़ार करे)।

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन खुषैम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : तुम में से कोई इस तरह न कहे : اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं और तौबा करता हूं। क्योंकि अगर तुम ने ऐसा न किया (या'नी इस्तिग़फ़ार न किया) तो येह झूट और गुनाह होगा। हां ! यूं कहना चाहिये : “اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي وَتُبْ عَلَيَّ” या'नी या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत फ़रमा और तौबा क़बूल फ़रमा।”

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّابُ फ़रमाते हैं : “तर्के गुनाह के बिगैर तौबा झूटों की तौबा है।”

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना राबिअ अदविध्या رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا फ़रमाती हैं : हमारी तौबा को भी बहुत सी तौबा की ज़रूरत है।”

﴿9﴾.....हुकमा का कहना है : नादिम हुए बिगैर तौबा करने वाला गोया (ला इल्मी) में **अल्लाह** رब्बुल इज़्ज़त से मज़ाक़ करने वाला है।

﴿10﴾.....एक आ'रबी को ग़िलाफ़े का'बा से लिपट कर येह कहते सुना गया :

اللَّهُمَّ إِنَّ اسْتِغْفَارِي مَعَ اِصْرَارِي لِلْوَمِّ وَإِنَّ تَرْكِي اسْتِغْفَارَكَ مَعَ عَلَيَّ بِسَعَةِ عَفْوِكَ لَعَجَزْتُ فَاكُمُ تَتَحَبَّبُ إِلَيَّ بِالنِّعَمِ مَعَ غَنَاكَ عَنِّي وَكَمْ اتَّبَعْتُ إِلَيْكَ بِالْمَعَاصِي مَعَ فَقْرِي إِلَيْكَ يَا مَنْ إِذَا وَعَدَ وَفَى وَإِذَا أَوْعَدَ أَدْخَلَ عَظِيمَ جُرْمِي فِي عَظِيمِ عَفْوِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अगर मैं गुनाह पर इसरार के बा वुजूद तुझ से मग़फ़िरत त़लब करूं तो येह मलामत है और तेरे अफ़वो दरगुज़र की वुस्अतों का यकीन रखते हुए इस्तिग़फ़ार न करूं तो येह मेरी कमजोरी है। तू मुझ पर कितने ही इन्आम व इकराम फ़रमा कर मुझे दोस्त रखता है हालांकि तुझे मेरी कोई ज़रूरत नहीं जब कि मैं तेरा मोहताज होने के बा वुजूद तेरी नाफ़रमानियां कर के तेरे ग़ज़ब का शिकार होता हूं। ऐ वा'दा पूरा करने वाले ! वईद सुना कर मुआफ़ करने वाले ! ऐ रहम करने वाले मौला ! मेरे बड़े जुर्मों को अपने अज़ीम अफ़व से मिटा दे।

﴿11﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह वर्राक़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الرَّزَّاقُ फ़रमाते हैं, अगर तेरे गुनाह पानी के क़तरों और समन्दर की झाग के बराबर भी हो जाएं तो बारगाहे इलाही में खुलूस दिल से येह दुआ कर तेरे गुनाह मिटा दिये जाएंगे :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ تَبْتُ إِلَيْكَ مِنْهُ ثُمَّ عُدْتُ فِيهِ وَأَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ مَا وَعَدْتُكَ بِهِ مِنْ نَفْسِي وَلَمْ أَوْفِ لَكَ بِهِ وَأَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ عَمَلٍ أَرَدْتُ بِهِ وَجْهَكَ فَخَالَطَهُ غَيْرُكَ وَأَسْتَغْفِرُكَ مِنْ كُلِّ نِعْمَةٍ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَاسْتَعَنْتُ بِهَا عَلَى مُعَصِيَتِكَ وَأَسْتَغْفِرُكَ يَا عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ أَتَيْتُهُ فِي ضِيَاءِ النَّهَارِ وَسَوَادِ اللَّيْلِ فِي مَلَأٍ أَوْ خَلَاءٍ وَسِرٍّ وَعَلَانِيَةٍ يَا حَلِيمٌ

या'नी : ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से अपने हर गुनाह की बख्शिाश तलब करता हूं और तेरे हुजूर उन ख़ताओं से तौबा करता हूं जिन के तर्क का तुझ से वा'दा कर के फिर उन में मुब्तला हो जाता हूं। मैं तुझ से हर उस अमल से भी तौबा करता हूं जो करना तो तेरी रिज़ा के लिये चाहता हूं लेकिन उस में ग़ैर का ख़याल शामिल हो जाता है। मैं उस बात से भी तौबा करता हूं कि तू मुझे ने'मत अता करता है और मैं इस से तेरी ही नाफ़रमानी पर मदद हासिल करता हूं। ऐ ज़ाहिरो बातिन को जानने वाले ! ऐ हिल्म वाले ! मैं तुझ से सब गुनाहों की मुआफ़ी का तलबगार हूं चाहे वोह दिन की रोशनी में किये हों या रात की तारीकी में, जलवत में हों या ख़लवत में, अलानिया हों या पोशीदा।

मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना आदम व हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र (عليهما الصلوة والسلام) की दुआए इस्तिग़फ़ार भी येही है।



.....क़ब्र क़ रफ़ीक़.....

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना की मतबूआ 54 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "नसीहतों के मदनी फूल व वसीलए अहादीषे रसूल" सफ़हा 51 पर है : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : ऐ इब्ने आदम ! नेकी कर क्योंकि येह जन्नत की चाबी है और उसी की तरफ़ रहनुमाई करेगी। बुराई से इजतिनाब कर क्योंकि येह जहन्नम की चाबी है और उसी की तरफ़ ले जाएगी।

ऐ इब्ने आदम ! येह बात अच्छी तरह जान ले ! कि ख़राबी पर तुझे तम्बीह (की जाती) है। बेशक तेरी उम्र ख़राब होने के लिये, जिस्म मिट्टी के लिये और जो कुछ तू ने जम्अ किया है वोह वुरषा के लिये और ऐशो आराम दूसरों के लिये है जब कि हि़साबो किताब तुझ पर लाज़िम और सज़ा व नदामत तेरे लिये है। और "क़ब्र में तेरा रफ़ीक़" सिर्फ़ तेरा अमल ही है लिहाज़ा तू खुद अपना मुहासबा कर क़ब्र इस से कि तेरा मुहासबा किया जाए। मेरी इताअत को लाज़िम कर ले, मेरी नाफ़रमानी से रुक जा और मेरी अता पर राज़ी हो कर शुक्र गुज़ारों में से हो जा।

(مجموعة رسائل الامام الغزالي، المواعظ في الاحاديث القدسية، ص 544)

बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व तनुगानि दीन से मब्कूल 16 दुआए

﴿1﴾.....दुआए मुस्तफा बा'द अज सुनने फ़ज्र :

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : एक मरतबा शाम के वक़्त मेरे वालिदे गिरामी हज़रते सय्यिदुना अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मुझे बारगाहे रिसालत में भेजा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरी ख़ाला हज़रते सय्यिदतुना मैमूना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर तशरीफ़ फ़रमा थे। (मैं ने देखा कि) आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रात भर नमाज़ पढ़ते रहे फिर फ़ज्र की सुन्नतों के बा'द और फ़र्जों से पहले बारगाहे खुदावन्दी में यूँ इल्तिजा की :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِكَ تَهْدِي بِهَا قَلْبِي وَتَجْمَعُ بِهَا شَمْلِي وَتُلْئِمُ بِهَا شَعْنِي وَتَرُدُّ بِهَا الْفِتْنَ عَنِّي وَتَصْلَحُ بِهَا دِينِي وَتَحْفَظُ بِهَا غَائِبِي وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِي وَتُزَكِّي بِهَا عَمَلِي وَتَبَيِّضُ بِهَا وَجْهِي وَتُلْهِمْنِي بِهَا رُشْدِي وَتُعْصِمْنِي بِهَا مِنْ كُلِّ سُوءٍ اللَّهُمَّ أَعْطِنِي إِيْمَانًا صَادِقًا وَيَقِينًا لَيْسَ بَعْدَهُ كُفْرٌ وَرَحْمَةً أَنَالُ بِهَا شَرَفَ كَرَامَتِكَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْفَوْزَ عِنْدَ الْقَضَاءِ وَمَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ وَعَيْشَ السُّعَدَاءِ وَالتَّصَرُّعَ عَلَى الْأَعْدَاءِ وَمُرَافَقَةَ الْأَنْبِيَاءِ اللَّهُمَّ إِنِّي أُنْزِلُ بِكَ حَاجَتِي وَإِنْ ضَعُفَ رَأْيِي وَقَلَّتْ حِيلَتِي وَقَصُرَ عَمَلِي وَافْتَقَرْتُ إِلَى رَحْمَتِكَ فَاسْأَلُكَ يَا كَافِي الْأُمُورِ وَيَا شَافِيَ الصُّدُورِ كَمَا تُجِيرُ بَيْنَ الْبُحُورِ أَنْ تُجِيرَنِي مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ وَمِنْ دَعْوَةِ الثُّبُورِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْقَبُورِ اللَّهُمَّ مَا قَصَرَ عَنْهُ رَأْيِي وَضَعُفَ عَنْهُ عَمَلِي وَلَمْ تَبْلُغْهُ نِيَّتِي وَأُمْنِيَّتِي مِنْ خَيْرٍ وَعَدَّتْهُ أَحَدًا مِّنْ عِبَادِكَ أَوْ خَيْرٍ أَنْتَ مُعْطِيهِ أَحَدًا مِّنْ خَلْقِكَ فَإِنِّي أَرْغَبُ إِلَيْكَ فِيهِ وَأَسْأَلُكَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا هَادِينَ مُهْتَدِينَ غَيْرَ ضَالِّينَ وَلَا مُضِلِّينَ حَرَبًا لِأَعْدَائِكَ وَسَلَامًا لِأَوْلِيَانِكَ نُحِبُّ بِحَبِّكَ مَنْ أَطَاعَكَ مِنْ خَلْقِكَ وَنُعَادِي بِعِدَاوَتِكَ مَنْ خَالَفَكَ مِنْ خَلْقِكَ اللَّهُمَّ هَذَا الدُّعَاءُ وَعَلَيْكَ الْإِجَابَةُ وَهَذَا الْجُحْدُ وَعَلَيْكَ التُّكْلَانُ وَإِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ذِي الْحَبْلِ الشَّدِيدِ وَالْأَمْرِ الرَّشِيدِ أَسْأَلُكَ الْأَمْنَ يَوْمَ الْوَعِيدِ وَالْجَنَّةَ يَوْمَ الْخُلُودِ مَعَ الْمُقَرَّبِينَ الشُّهُودِ وَالرَّكَعَ السُّجُودَ الْمُؤَفِّينَ بِالْعُهُودِ أَنْتَ رَحِيمٌ وَدُودٌ وَأَنْتَ تَفْعَلُ مَا تُرِيدُ سُبْحَانَ الَّذِي لَيْسَ الْغَرْزُ وَقَالَ بِهِ سُبْحَانَ الَّذِي تَعَطَّفَ بِالْمُجِدِّ وَتَكْرَمَ بِهِ سُبْحَانَ الَّذِي لَا يَنْبَغِي التَّسْبِيحُ إِلَّا لَهُ سُبْحَانَ ذِي الْفَضْلِ وَالْبَعَمِ سُبْحَانَ ذِي الْعِزَّةِ وَالْكَرَمِ سُبْحَانَ الَّذِي أَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ بِعِلْمِهِ اللَّهُمَّ اجْعَلْ لِي نُورًا فِي قَلْبِي وَنُورًا فِي قَبْرِي وَنُورًا فِي سَمْعِي وَنُورًا فِي بَصَرِي وَنُورًا فِي شَعْرِي وَنُورًا فِي لَحْيِي وَنُورًا فِي دَمِي وَنُورًا فِي عِظَامِي وَنُورًا مِّنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَنُورًا مِّنْ خَلْفِي وَنُورًا عَنْ يَمِينِي وَنُورًا عَنْ شِمَالِي وَنُورًا مِّنْ فَوْقِي وَنُورًا مِّنْ تَحْتِي اللَّهُمَّ زِدْنِي نُورًا وَأَعْطِنِي نُورًا وَاجْعَلْ لِي نُورًا.

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से ऐसी रहमत का सुवाल करता हूं जिस की बरकत से मेरा दिल हिदायत पर काइम कर दे, मेरे मुतफर्रिक उमूर जम्अ फरमा और मेरे मुआमलात दुरुस्त फरमा। मुझ से फितने दूर फरमा। मेरे दीन की इस्लाह फरमा। मेरे बातिन की हिफाजत, ज़ाहिर को बुलन्द और आ'माल को सुथरा फरमा। मेरा चेहरा रोशन फरमा। नेकी की हिदायत अता फरमा, हर बुराई से बचा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे ईमाने सादिक और यकीने कामिल अता फरमा कि जिस के बा'द कुफ़ न हो और रहमत अता फरमा जिस के ज़रीए मैं दोनों जहां में तेरे फज़लो करम से मुशरफ़ हो सकूं। या इलाही عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से मौत के वक़्त कामयाबी, दर्जाते शुहदा, सअदत मन्दों जैसी ज़िन्दगी, दुश्मनों पर ग़लबा और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की रफ़ाक़त का सुवाल करता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अपनी ज़रूरत तेरे सामने पेश करता हूं अगर्चे मेरी राए कमज़ोर, अमल नाक़िस और कोशिश कोताह है, मैं तेरी रहमत का मोहताज हूं। ऐ मुआमलात को किफ़ायत करने और दिलों को शिफ़ा देने वाले ! मैं तुझ से सुवाल करता हूं कि जिस तरह तू समन्दरों को मिलने से बचाता है इसी तरह मुझे भड़कती आग के अज़ाब, हलाक़त की आवाज़ और क़ब्र की आजमाइश से बचा ले। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस अग्रे ख़ैर में मेरी राए नाक़िस और अमल कम हो या वोह मेरी निय्यत व ख़्वाहिश में शामिल न हो और वोह भलाई तूने अपने बन्दों में से किसी को देने का वा'दा फ़रमाया हो या वोह भलाई तू अपने किसी बन्दे को अता करने वाला हो तो उस ख़ैर की त़लब मुझे भी है, ऐ कुल आलम के परवर दगार ! मैं तुझ से इस भलाई का सुवाली हूं, या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें रहनुमाई करने वाला और हिदायत वाला बना, गुमराह और गुमराह कुन न बना, तेरे दुश्मनों से लड़ने और तेरे दोस्तों से सुल्ह करने वाला बना। तुझ से महब्बत के सबब तेरे फ़रमां बरदार बन्दों से महब्बत और तेरा हुक्म न मानने वाले तेरे दुश्मनों से दुश्मनी रखने वाला बना। या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह दुआ क़बूल फ़रमाना तेरे ज़िम्माए करम पर है। येह कोशिश है और भरोसा तुझी पर है। हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के माल हैं और हम को उसी की त़रफ़ फिरना। गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त बुलन्दी व अज़मत वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ से है। ऐ दीने मतीन और सीधी राह के मालिक ! मैं तुझ से रोज़े जज़ा अम्न का और हमेशगी के दिन मुक़र्रबीन व शाहिदीन और रुकूअ व सुजूद करने वालों और वा'दा पूरा करने वालों के साथ जन्नत का सुवाल करता हूं बेशक तू रहूम और महब्बत करने वाला है और तू जो चाहता है करता है। पाक है वोह ज़ात जो साहिबे इज़ज़त है और इस के सबब हर एक पर ग़ालिब है। पाक है वोह जो बुजुर्ग़ हुवा और अपने बन्दों पर इन्आम व इकराम फ़रमाया। पाक है वोह ज़ात जिस के सिवा किसी की पाकी बयान करना जाइज़ नहीं। पाक है वोह जो फ़ज़ल व इन्आम फ़रमाता है। पाक है वोह जो

इज़्ज़त व करम वाला है। पाक है जिस के इल्म में हर शै का शुमार है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे दिल में नूर भर दे, मेरी क़ब्र को पुरनूर कर दे, मेरी समाअत व बसारत नूरानी बना दे, मेरे बाल, गोश्त, खून और हड्डियों में नूर डाल दे। मेरे आगे पीछे, दाएं बाएं, ऊपर नीचे नूर कर दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे नूर में इज़ाफ़ा फ़रमा, मुझे नूर अता फ़रमा और मुझे नूर बना दे।⁽¹⁾

﴿2﴾.....जामेअ और कामिल दुआ :

सरदारे अम्बिया, मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से इरशाद फ़रमाया : “जामेअ और कामिल दुआएं मांगा करो और यूं अर्ज गुज़ार हुवा करो :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ كُلِّهِ عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ أَعْلَمْ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهِ عَاجِلِهِ وَآجِلِهِ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَمَا لَمْ أَعْلَمْ وَأَسْأَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَعَمَلٍ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ إِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ وَعَمَلٍ وَأَسْأَلُكَ مِنَ الْخَيْرِ مَا سَأَلَكَ عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَسْتَعِيذُكَ مِمَّا اسْتَعَاذَكَ مِنْهُ عَبْدُكَ وَرَسُولُكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَسْأَلُكَ مَا قَضَيْتَ لِي مِنْ أَمْرٍ أَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهُ رُشْدًا بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ.

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से हर भलाई का तालिब हूं वोह भलाई चाहे जल्दी हो या देर से मुझे मा'लूम हो या न हो। मैं तुझ से हर बुराई से पनाह चाहता हूं चाहे वोह जल्द आने वाली हो या ताखीर से मुझे उस का इल्म हो या न हो। मैं तुझ से जन्नत और जन्नत से क़रीब करने वाले आ'माल का सुवाल करता हूं और जहन्म और इस से क़रीब करने वाले आ'माल से तेरी पनाह मांगता हूं। मैं तुझ से उस भलाई का सुवाल करता हूं जिस का सुवाल तेरे ख़ास बन्दे और रसूल हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने किया और उस चीज़ से तेरी पनाह चाहता हूं जिस से तेरे ख़ास बन्दे और रसूल हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने पनाह चाही। ऐ सब से बढ़ कर रहूम फ़रमाने वाले ! तेरी रहमत के सदके मैं तुझ से इल्तिजा करता हूं कि मेरे बारे में तू ने जो फैसला फ़रमाया है उस का अन्जाम बख़ैर हो।⁽²⁾

﴿3﴾.....दुआए दाफ़ेए रन्जो अलम व ग़म :

पैकरे हुस्नो जमाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! मेरी नसीहत सुनने से तुम्हें कुछ मानेअ तो नहीं ? पस, यूं कहा करो :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ لَا تَكِلْنِي إِلَى نَفْسِي طَرْفَةَ عَيْنٍ وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ

①.....صحیح ابن خزيمة، کتاب الصلاة، باب الدعاء بعد رکعتی الفجر، الحديث: ۱۱۱۹، ج ۲، ص ۱۶۶-۱۶۷، بتغییر۔

②.....سنن ابن ماجه، کتاب الدعاء، باب الجوامع من الدعاء، الحديث: ۳۸۴۶، ج ۴، ص ۲۷۱، مفهوماً۔

या'नी ऐ जिन्दा और दूसरों को काइम रखने वाले ! मैं तेरी रहमत के भरोसे मदद मांग रही हूं पलक झपकने की देर भी मुझे मेरे नफ्स के हवाले न कर और मेरे सब काम बना दे ।" (1)

﴿4﴾.....**दुआए सिद्दीके अक्बर :**

हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफुर्रहीम ﷺ ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को येह दुआ सिखाई :

اللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْئَلُكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّكَ وَاِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِكَ وَمُوسٰى نَجِيِّكَ وَعِيسٰى كَلِمَتِكَ وَرُوْحَكَ وَبِتَوْرَةِ مُوسٰى وَانْجِيْلِ عِيسٰى وَزَبُوْرٍ دَاوُدَ وَفُرْقَانَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَعَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ وَبِكُلِّ وَحْيٍ اَوْحِيْتَهُ اَوْ قَضَاۗءٍ قَضَيْتَهُ اَوْ سَاۗئِلٍ اَعْطَيْتَهُ اَوْ غَنِيٍّ اَفْقَرْتَهُ اَوْ فَقِيْرٍ اَغْنَيْتَهُ اَوْ ضَالٍّ هَدَيْتَهُ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى اَنْزَلْتَهُ عَلٰى مُوسٰى عَلَيْهِ السَّلَامُ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى بَثَّتْ بِهٖ اَرْزَاقَ الْعِبَادِ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى وَضَعْتَهُ عَلٰى الْاَرْضِ فَاسْتَقَرَّتْ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى وَضَعْتَهُ عَلٰى السَّمٰوٰتِ فَاسْتَقَلَّتْ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى وَضَعْتَهُ عَلٰى الْجِبَالِ فَرَسَتْ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى اسْتَقَلَّ بِهٖ عَرْشُكَ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الطَّهْرِ الطَّاهِرِ الْاَحَدِ الصَّمَدِ الْوَتْرِ الْمُنَزَّلِ فِى كِتَابِكَ مِنْ لَدُنْكَ مِنَ النُّوْرِ الْمُبِيْنِ وَاَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِى وَضَعْتَهُ عَلٰى النَّهَارِ فَاسْتَنَارَ وَعَلٰى اللَّيْلِ فَاطْلَمَ وَبِعَظَمَتِكَ وَكِبَرِيَّاكَ وَبِنُوْرِ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ اَنْ تَرْزُقَنِى الْقُرْاٰنَ وَالْعِلْمَ بِهٖ وَتَخْلِطَ لِىْ بِدَحْمِىْ وَدَمِّىْ وَسَمْعِىْ وَبَصَرِىْ وَتَسْتَعْمَلَ بِهٖ جَسَدِىْ بِحَوْلِكَ وَقُوَّتِكَ فَانَّهٗ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

या'नी ऐ **अबूबक्र** عزَّ وَّجَلَّ तेरे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह और हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह (عليهم السلام) के वसीले मैं तुझ से दुआ मांगता हूं। सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तौरात, सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की इन्जील, सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की ज़बूर, हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ के कुरआन, तेरी हर नाज़िल कर्दा वहूय, तेरे फ़रमाए हुए हर फैसले जिसे तू ने अता किया उस साइल, जिस ग़नी को तू ने फ़कीर किया, जिस मोहताज को तू ने अमीर किया और जिस गुमराह को तू ने हिदायत दी (उन तमाम) के वसीले मैं तुझ से सुवाल करता हूं। तेरे उस नाम के वसीले से जिसे तू ने हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल किया, तेरे उस नाम के वसीले से जिस के सदके तू मख़्लूक को रिज़क़ तक्सीम फ़रमाता है। तेरे उस नाम के वासिते से जिसे तू ने ज़मीन पर रखा तो वोह क़ार पकड़ गई। तेरे उस नाम के तुफ़ैल जिसे तू ने आस्मानों में रखा तो वोह बुलन्द हो गए, तेरे उस नाम के वसीले जिसे तू ने पहाड़ों पर रखा तो वोह जम गए और तेरे उस नाम के सदके सुवाल करता हूं

जिस से अर्श काइम है। तेरे उस नाम के वासिते दुआ करता हूं जो पाक है और पाक करने वाला है, एक है, बे नियाज है, यक्ता है, तेरी नाज़िल शुदा किताब में तेरी तरफ से जो रोशन नूर है उस के सदके तुझ से सुवाल करता हूं, तुझे तेरे उस नाम का वासिता पेश करता हूं, जिसे तू ने दीन पर रखा तो वोह रोशन हो गया, रात पर रखा तो वोह तारीक हो गई। तेरी अज़मत व किब्रियाई और तेरे वजहे करीम के नूर के वसीले दुआ गो हूं कि मुझे कुरआन याद करने और इसे समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इसे मेरे गोश्त, खून और समाअत व बिसारत में मिला दे और अपनी कुव्वत व तौफ़ीक़ से मेरे बदन को इस के मुताबिक़ इस्ति'माल फ़रमा। ऐ सब से ज़ियादा रहूम फ़रमाने वाले ! गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकी करने की तौफ़ीक़ तेरी ही तरफ़ से है।⁽¹⁾

﴿5﴾.....**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **किस से भलाई का इरादा फ़रमाता है ?**

मरवी है कि ताजदारे काइनात, फ़ख़रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सय्यिदुना बुरैदा असलमी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को मुख़ातब कर के इरशाद फ़रमाया : “ऐ बुरैदा ! मैं तुम्हें वोह कलिमात न सिखा दूं जिन्हें सिर्फ़ वोह सीख पाता है जिस के साथ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भलाई का इरादा फ़रमाता है। इन्हें कभी भूलना मत।” अर्ज़ की : “ज़रूर ! या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ” फ़रमाया, पढो :

اللَّهُمَّ إِنِّي ضَعِيفٌ فَقَوِّ فِي رِضَاكَ ضَعْفِي وَخُذْ إِلَى الْخَيْرِ بِنَاصِيَّتِي وَأَجْعَلِ الْإِسْلَامَ مُنْتَهَى رِضَايَ
اللَّهُمَّ إِنِّي ضَعِيفٌ فَقَوِّنِي وَإِنِّي ذَلِيلٌ فَأَعِزَّنِي وَإِنِّي فَقِيرٌ فَأَغْنِنِي يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं कमज़ोर हूं अपनी रिज़ा हासिल करने पर मुझे कुव्वत दे। मेरी पेशानी भलाई की तरफ़ फेर दे, मेरी रिज़ा सिर्फ़ दीने इस्लाम बना दे, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ना तुवां हूं तवाना कर दे। ज़लील हूं इज़्ज़त अता कर। मोहताज हूं ग़नी कर दे। ऐ सब से ज़ियादा रहूम फ़रमाने वाले !”⁽²⁾

﴿6﴾.....**कोढ़, बरस, फ़लिज से नजात देने और दाखिले जन्नत करने वाले कलिमात :**

हज़रते सय्यिदुना कबीसा बिन मुख़ारक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुझे ऐसे कलिमात बताइयें जिन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे लिये नाफ़ेअ बना दे। अब मैं बुढ़ा हो गया हूं और कई ऐसे आ'माल जो पहले मैं किया करता था अब उन से अज़िज़ आ चुका हूं।” रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : तुम्हारी दुन्या (की बेहतरी) के लिये येह दुआ है, बा'द नमाज़े फ़ज़्र इसे तीन मरतबा पढ़ लिया

①.....جامع الاصول، الفصل التاسع في دعاء الحفظ، الحديث: ٢٣٠٢، ج ٢، ص ٢٢٩، مختصرًا۔

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ٢٥٨٥، ج ٥، ص ٢٢، دون قوله: يا ارحم الراحمين۔

पाक है **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ या'नी "سُبْحَنَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَنَ اللّٰهِ الْعَظِيمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ" करो और ता'रीफ़ें उसी के लिये हैं, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ पाक है अज़मत वाला। गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त अज़मत व बुलन्दी के मालिक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ही की तरफ़ से है।" (1)

पस अगर तुम ने येह दुआ पढ़ ली तो तुम ग़म, कोढ़, बरस और फ़ालिज से महफूज़ हो जाओगे। और तुम्हारी आख़िरत के लिये (मुफ़ीद) दुआ येह है :

اللّٰهُمَّ اهْدِنِيْ مِنْ عِنْدِكَ وَاَوْضِ عَلَيَّ مِنْ فَضْلِكَ وَاَنْشُرْ عَلَيَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَيَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ

या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी जनाब से हिदायत अता फ़रमा, अपने फ़ज़ल से बहरा मन्द फ़रमा, मुझ पर अपनी रहमत बरसा और अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमा।"

इस के बा'द रसूले करीम, महबूबे रब्बे अज़ीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो इन कलिमात को हमेशा पढ़ता रहेगा बरोज़े क़ियामत उस के लिये जन्नत के चार दरवाज़े खोले जाएंगे जिस से चाहे दाख़िल हो जाए।"

.....**ह२ नुक्शान से हिफ़ाज़त की दुआ :**

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के महल्ले में एक दफ़आ आग लग गई। किसी ने आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ को ख़बर दी कि आप का घर जल गया है। फ़रमाया : "**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ऐसा नहीं होने देगा।" उन्हें तीन बार येह ख़बर दी गई मगर आप रَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस के जवाब में येही कहते "**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ऐसा नहीं होने देगा।" फिर एक शख़्स ने आ कर बताया : "ऐ अबू दरदा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ महल्ले में लगने वाली आग जब आप के घर के क़रीब पहुंची तो बुझ गई !" येह सुन कर फ़रमाया : "मुझे मा'लूम था।" पूछा गया : "आप की बात हैरान कुन है अस्ल मुआमला क्या है ?" फ़रमाया : मैं ने रहमते अ़लमिय्यान, सरवरे इन्सो जान صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह फ़रमान सुना कि जो शख़्स दिन या रात में येह कलिमात पढ़ लेगा उसे कोई नुक्शान न पहुंचेगा और मैं ने पढ़ लिये थे। वोह कलिमात येह हैं :

اللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ اَعْلَمُ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ وَاِنَّ اللّٰهَ قَدْ احَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَاَحْصٰی كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا اللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ اَخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ

①.....المعجم الكبير، من اسمه قبضة، الحديث: ٩٢٠، ج ١، ص ٣٦٨، باختصار-

کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحديث: ٣٤٠٢، ج ٢، ص ٨٣، مفهوماً-

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू मेरा परवर दगार है तेरे सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं। मैं ने तुझी पर भरोसा किया और तू बड़े अर्श का मालिक है। गुनाह से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताकत अज़मत व बुलन्दी के मालिक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ही है। वोह जो चाहता है होता है जो वोह नहीं चाहता नहीं होता। मुझे यकीन है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हर चाहे पर कादिर है। बेशक उस का इल्म हर चीज़ को मुहीत और हर चीज़ उस के शुमार में है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अपने नफ़्स और ज़मीन पर चलने वाली हर चीज़ के शर से तेरी पनाह चाहता हूँ जिस की चोटी तेरे कब्ज़े में है। बेशक मेरा रब्ब **अल्लाह** सीधे रास्ते पर मिलता है।⁽¹⁾

﴿8﴾....सारे दिन के शुक्राने की दुआ :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ा करते :

اَللّٰهُمَّ هٰذَا خَلْقٌ جَدِيْدٌ فَاتَّخِذْهُ عَلَيَّ بِطَاعَتِكَ وَاٰخِرَتِكَ بِمَغْفِرَتِكَ وَرِضْوَانِكَ وَاَرْزُقْنِيْ فِيْهِ حَسَنَةً تَقْبَلُهَا مِنِّيْ وَزَكَاةً وَصَغْفَهَا لِيْ وَمَا عَمِلْتُ فِيْهِ مِنْ سَيِّئَةٍ فَاَغْفِرْهَا لِيْ اِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ وَدُوْدٌ كَرِيْمٌ.

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ यह (सुबह) एक नया आगाज़ है इस में मुझ पर अपनी इताअत के रास्ते खोल दे और इस का इख़िताम अपनी रिज़ा व बख़िश के साथ फ़रमा। आज के दिन मुझे नेकी की तौफ़ीक़ दे और फिर इसे क़बूल और पाक फ़रमा और मेरे नामए आ'माल में (इस का अज़्र) दुगना फ़रमा और मुझ से होने वाली बुराई मुआफ़ फ़रमा। बेशक तू बख़्शने वाला, रहम करने वाला, महब्वत करने वाला और करम फ़रमाने वाला है।"

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام फ़रमाते हैं : जिस शख्स ने ब वक़्ते सुबह यह दुआ पढ़ ली उस ने उस दिन का शुक्र अदा कर लिया।

﴿9﴾.....दुआए ईसा :

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام यूँ दुआ फ़रमाया करते :

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَصْبَحْتُ لَا اَسْتَطِيْعُ دَفْعَ مَا اَكْرَهُ وَلَا اَمْلِكُ نَفْعَ مَا اَرْجُوْ وَاصْبَحَ الْاَمْرُ بِيَدِ غَيْرِيْ وَاَصْبَحْتُ مَرْتَهَنًا بِعَمَلِيْ فَلَا فَقِيْرَ اَقْرَبُ مِنِّيْ اَللّٰهُمَّ لَا تُشْمِتْ بِيْ عَدُوِّيْ وَلَا تُسَيِّءْ بِيْ صَدِيْقِيْ وَلَا تَجْعَلْ مُصِيْبَتِيْ فِيْ دِيْنِيْ وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا اَكْبَرَ هِمِّيْ وَلَا تَسْلُطْ عَلَيَّ مَنْ لَا يَرْحَمُنِيْ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ

①.....الدعاء للطبرانی، القول عند الصباح والمساء، الحديث: ۳۴۳، ص ۲۸-۱۲۹، دون قوله: واحصى كل شئ عدا۔

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं ने इस हाल में सुब्ह की, कि मैं नापसन्दीदा चीज़ को दूर नहीं कर सकता और जिस नफ़अ का तलबगार हूं उस का मालिक नहीं। मुआमला किसी और (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) के दस्ते कुदरत में है और मेरी जान (गोया) गिरवी है मेरे आ'माल के बदले। मुझ से ज़ियादा कोई भी मोहताज न होगा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरे दुश्मनों को मुझ पर न हंसा और मुझ से मेरे दोस्त परेशान न हों। मुझे दीनी मसाइब से महफूज़ फ़रमा और (हुसूले) दुन्या मेरा मक्सद न बना। ऐ ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाले ! मुझ पर कोई ऐसा (हाकिम) न बनाना जो मुझ पर रहूम न करे।

﴿10﴾.....डूबने और चोरी से हिफ़ाज़त की दुआ :

मन्कूल है कि अय्यामे हज़ में जब हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र और हज़रते सय्यिदुना इल्यास की मुलाकात होती है तो येह कलिमात पढ़े बिगैर जुदा नहीं होते :

بِسْمِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ كُلُّ نِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ الْخَيْرُ كُلُّ بَيْدٍ لِلَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا يَصْرِفُ السُّوءَ إِلَّا اللَّهُ عَلَيْهِمَا السَّلَام
या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरू जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे उस के बिगैर कोई कुव्वत नहीं, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे हर ने'मत उसी की तरफ़ से है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे हर भलाई **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ही दस्ते कुदरत में है, जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहे बुराइयों को टालने वाला, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई नहीं।

जो येह दुआ सुब्ह तीन मरतबा पढ़ लेगा जलने, डूबने और चोरी से महफूज़ रहेगा।

(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)

﴿11﴾.....दीनो दुन्या की भलाई के हुसूल की दुआ :

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हस्सान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان फ़रमाते हैं कि मुझ से हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ करखी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने फ़रमाया : “क्या मैं तुम्हें 10 कलिमात न सिखाऊं जिन में से पांच दुन्यवी (बेहतरी) के लिये और पांच उख़रवी (बेहतरी) के लिये हैं ? जो इन कलिमात के ज़रीए **अल्लाह** रब्बुल इज़ज़त عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में दुआ करेगा इन (कलिमात) को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां पाएगा।” हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन हस्सान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَان ने फ़रमाया : “मुझे येह लिख दीजिये।” फ़रमाया : नहीं ! मैं तुम्हारे सामने इन कलिमात की तकरार करता हूं जिस तरह बक्र बिन ख़ुनय्यिस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने मेरे सामने की थी :

حَسْبِيَ اللَّهُ لِيَدِينَنِي حَسْبِيَ اللَّهُ لِيَدْنِيَايَ حَسْبِيَ اللَّهُ الْكَرِيمُ لِمَا أَهْمَنِي حَسْبِيَ اللَّهُ الْحَلِيمُ الْقَوِيُّ لِمَنْ بَغَى عَلَيَّ حَسْبِيَ اللَّهُ الشَّدِيدُ لِمَنْ كَادَنِي بِسُوءٍ حَسْبِيَ اللَّهُ الرَّحِيمُ عِنْدَ الْمَوْتِ حَسْبِيَ اللَّهُ الرَّؤُوفُ عِنْدَ الْمَسْئَلَةِ فِي الْقَبْرِ حَسْبِيَ اللَّهُ الْكَرِيمُ عِنْدَ الْحِسَابِ حَسْبِيَ اللَّهُ اللَّطِيفُ عِنْدَ الْهِيَزَانِ حَسْبِيَ اللَّهُ الْقَدِيرُ عِنْدَ الصِّرَاطِ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

या'नी मेरे दीनो दुनिया के लिये मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफी है। ग़मों से छुटकारे के लिये मुझे खुदाए करीम काफी है। जिस ने मुझ पर जुल्म किया उस के लिये हिल्मो कुव्वत वाला रब्बे करीम काफी है। जो मेरी तरफ़ बुराई बढ़ाए उस के लिये सख़्त पकड़ फ़रमाने वाला रब्ब عَزَّوَجَلَّ काफी है। मौत के वक़्त मुझे रहम फ़रमाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफी है। क़ब्र में (मुन्कर नकीर के) सुवालात के वक़्त मुझे मेहरबान खुदा عَزَّوَجَلَّ काफी है। हिसाबो किताब के वक़्त करम फ़रमाने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफी है। लुप्तो करम फ़रमाने वाला परवर दगार عَزَّوَجَلَّ मुझे मीज़ाने अमल पर काफी है। कुदरत वाला रब्ब عَزَّوَجَلَّ मुझे पुल सिरात पर चलते वक़्त काफी है। मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ काफी है, उस के सिवा कोई लाइके इबादत नहीं और वोह बड़े अर्श का मालिक है।

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो शख्स येह दुआ :

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ (پ ۱۱، التوبة: ۱۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : फिर अगर वोह मुंह फ़ैरें तो तुम फ़रमा दो कि मुझे **अल्लाह** काफी है, उस के सिवा किसी की बन्दगी नहीं, मैं ने उसी पर भरोसा किया और वोह बड़े अर्श का मालिक है।”

रोज़ाना 7 मरतबा पढ़ ले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे तमाम उख़रवी उमूर में किफ़ायत करेगा अगर्चे वोह सच्चा हो या झूटा।⁽¹⁾

﴿12﴾.....जन्नत में दाखिले की दुआ :

हज़रते सय्यिदुना इतबा गुलाम عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْأَنَامِ की वफ़ात के बा'द किसी ने ख़्वाब में आप की ज़ियारत की तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस से फ़रमाया : मैं इन कलिमात की बरकत से दाखिले जन्नत हुवा हूं :

اللَّهُمَّ يَا هَادِيَ الْمَضِلِّينَ وَيَا رَاحِمَ الْمُدْنِيِّينَ وَيَا مُقِيلَ عَثَرَاتِ الْعَاثِرِينَ ارْحَمْ عَبْدَكَ ذَا الْخَطَرِ الْعَظِيمِ وَالْمُسْلِمِينَ كُلَّهُم أَجْمَعِينَ وَاجْعَلْنَا مَعَ الْأَخْيَارِ وَالْمَرْزُوقِينَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصَّادِقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ آمِينَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ऐ गुमराहों को हिदायत देने वाले ! ऐ गुनाहगारों पर रहम फ़रमाने वाले ! ऐ ख़ताकारों की ख़ताएं मुआफ़ फ़रमाने वाले ! बड़े ख़तरात में घिरे अपने बन्दे पर और तमाम मुसलमानों पर रहम फ़रमा और हमें पसन्दीदा खुश नसीब और जिन पर तू ने फ़ज़ल किया, या'नी अम्बिया, सिद्दीकीन, शुहदा और नेक लोगों का साथ नसीब फ़रमा। ऐ तमाम ज़हानों के परवर दगार ! मेरी दुआ क़बूल फ़रमा।⁽²⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۱، مفهوماً.

②.....قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۲.

﴿13﴾.....रन्जो अलम और मोहताजी से नजात की दुआ :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि जब **अल्लाह** عَلَيهِ السَّلَام ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा कबूल करना चाही तो आप ने सात मरतबा बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ किया उस वक़्त का'बे की इमारत न थी बल्कि वहाने एक सुर्ख टीला था, फिर आप ने खड़े हो कर दो रक्अत नफ़ल अदा किये और यूँ दुआ की :

اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ سِرِّي وَعَلَانِيَتِي فَأَقْبِلْ مَعْدِنَتِي وَتَعْلَمُ حَاجَتِي فَأَعْطِنِي سَوَالِي وَتَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي فَأَغْفِرْ لِي ذُنُوبِي اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيمَانًا يَبْشُرُ قَلْبِي وَيَقِينًا صَادِقًا حَتَّى أَعْلَمَ أَنَّهُ لَنْ يُصِيبَنِي إِلَّا مَا كَتَبْتَهُ عَلَيَّ وَالرِّضَا بِمَا قَسَمْتَ لِي يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तू मेरे ज़ाहिर व बातिन से वाकिफ़ है मेरा उज़्र कबूल फ़रमा। मेरी हाज़त जानता है मेरा सुवाल पूरा फ़रमा। मेरे दिल में क्या है तू इस से भी बा ख़बर है मेरी लगज़िशें मुआफ़ फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से पुख़्ता ईमान और यकीने सादिक़ का सुवाल करता हूँ हत्ता कि मुझे यकीन हो जाए कि मुझे कोई मुसीबत नहीं पहुंच सकती सिवा उस के जो तू ने (अपने इल्मे अज़ली से) मेरे मुक़द्दर में लिख दी। ऐ अज़मत व बुजुर्गी वाले ! तू ने मेरी जो किस्मत बनाई है इस पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा।”

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर वह्य फ़रमाई की तुम्हारी अवलाद में से जो कोई येह कलिमात पढ़ कर मुझ से दुआ मांगे मैं उस की मग़फ़िरत कर दूंगा, उस के ग़म व अलम दूर कर दूंगा और उस के सामने से फ़क़ दूर कर दूंगा, हर ताजिर से ज़ियादा उसे नफ़अ अता फ़रमाउंगा और दुन्या उस के पास ज़लील हो कर आएगी अगर्चे वोह इसे न चाहता होगा।

﴿14﴾.....तश्बीहाते बारी तआला :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ से रिवायत है कि रसूले खुदा, अहमदे मुजतबा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ रोज़ाना अपनी बुजुर्गी यूँ बयान फ़रमाता है :

إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا الْحَيُّ الْقَيُّومُ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا لَمْ أَدْ وَلَمْ أُولَدْ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا الْعَفْوُ الْغَفُورُ إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا مُبْدِئُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَى يَعُودُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ مَالِكُ يَوْمِ الدِّينِ خَالِقُ الْخَيْرِ وَالشَّرِّ خَالِقُ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ الْوَاحِدُ الْأَحَدُ الْفَرْدُ الصَّمَدُ الَّذِي لَمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَلَا وَكْدًا الْفَرْدُ الْوَتَرُ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْمَلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهِيمُنُ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالَى الْمُقْتَدِرُ الْقَهَّارُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ أَهْلُ الْغَنَاءِ وَالْمُجِدُّ أَعْلَمُ السِّرِّ وَأَخْفَى الْقَادِرُ الرَّزَّاقُ فَوْقَ الْخَلْقِ وَالْخَلِيقَةِ.

या'नी बेशक मैं **अल्लाह** हूं तमाम जहानों का पालनहार। बिला शुबा मैं **अल्लाह** हूं मेरे सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, आप ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाला हूं। मैं ही रब्ब हूं इबादत के लाइक कोई नहीं सिवाए मुझ अज़मत व बुलन्दी वाले के। बेशक मैं **अल्लाह** हूं मेरे इलावा कोई लाइके इबादत नहीं मेरी कोई अवलाद है न मैं किसी से पैदा हुवा। मैं **अल्लाह** हूं मुआफ़ करने वाला, बख़्शने वाला मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। तहकीक़ मैं ही रब्ब हूं हर चीज़ को आगाज़ देने वाला और हर चीज़ मेरी ही तरफ़ लौटेगी, सिवाए मेरे कोई मा'बूद नहीं। इज़ज़त व हिक्मत वाला हूं। बड़ा मेहरबान रहमत वाला हूं। रोज़े जज़ा का मालिक हूं। खैरो शर और जन्नत व दोज़ख़ का ख़ालिक हूं। एक हूं, अकेला हूं, तन्हा हूं, बे नियाज़ हूं, वोह ज़ात हूं जिस की कोई बीवी है न कोई अवलाद, तन्हा और ताक़ हूं। ज़ाहिर व छुपा सब जानता हूं। बादशाह, निहायत पाक सलामती देने वाला, अमान बख़्शने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, इज़ज़त व अज़मत और तकब्बुर वाला हूं। बनाने वाला, पैदा करने वाला, हर एक को सूरत देने वाला हूं। बड़ा बुलन्द, कुदरत वाला, ग़लबे वाला, बुर्दबार और करम फ़रमाने वाला हूं। षना और बुजुर्गी के लाइक हूं। मैं पोशीदा और मख़फ़ी उमूर को ख़ूब जानता हूं। कुदरत वाला और रिज़क़ अता करने वाला हूं। मख़्लूक व तख़लीक़ से बाला हूं।⁽¹⁾

यहां हर कलिमे से पहले "إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا" मज़कूर है जैसा कि हम पहले बयान कर चुके हैं। जो शख्स इन अस्माए हुस्ना के साथ दुआ मांगना चाहे वोह "إِنِّي أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا" के बजाए "إِنَّكَ أَنْتَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ" पढ़े बक़िया कलिमात इसी तरह पढ़े। जो आदमी येह दुआ मांगे वोह उन सजदा करने वालों और अज़िज़ी करने वालों में लिखा जाता है जो रोज़े क़ियामत हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह, हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह और दीगर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के पड़ोस में होंगे, उसे ज़मीनो आस्मान में इबादत करने वालों के बराबर षवाब मिलेगा।

﴿15﴾.....बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में बुलन्द मर्तबा तस्बीहात :

रूम के अलाके में शहीद होने वाले एक शख्स को हज़रते सय्यिदुना यूनस बिन उबैद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने ख़्वाब में देख कर पूछा : तुम ने इस जहां में किस अमल को अफ़ज़ल पाया ? शहीद ने जवाब दिया : हज़रते सय्यिदुना सुलैमान बिन मो'तमर तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنَى जो तस्बीहात पढ़ा करते थे उन्हें मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बुलन्द दर्जा पाया वोह तस्बीहात येह हैं :

سُبْحَنَ اللَّهُ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ عَدَدَ مَا خَلَقَ وَعَدَدَ مَا هُوَ خَالِقٌ وَزِنَةَ مَا خَلَقَ وَزِنَةَ مَا هُوَ خَالِقٌ وَمِلءَ مَا هُوَ خَالِقٌ وَمِلءَ سَمَوَاتِهِ وَمِلءَ أَرْضِهِ وَمِثْلَ ذَلِكَ وَأَضْعَافَ ذَلِكَ وَعَدَدَ خَلْقِهِ وَزِنَةَ عَرْشِهِ وَمُنْتَهَى رَحْمَتِهِ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ وَمَبْلَغَ رِضَاةٍ حَتَّى يَرْضَى وَإِذَا رَضِيَ وَعَدَدَ مَا ذَكَرَهُ بِهِ خَلْقَهُ فِي جَمِيعِ مَاضِي وَعَدَدَ مَا هُمْ ذَاكِرُوهُ فِي مَا بَقِيَ فِي كُلِّ سَنَةٍ وَشَهْرٍ وَجُمُعَةٍ وَيَوْمٍ وَلَيْلَةٍ وَسَاعَةٍ مِنَ السَّاعَاتِ وَشَمِّ وَنَفْسٍ مِنَ الْأَنْفَاسِ وَأَبَدٍ مِنَ الْأَبَادِ مِنْ أَبَدٍ إِلَى أَبَدٍ أَبَدِ الدُّنْيَا وَأَبَدِ الْآخِرَةِ وَأَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ لَا يَنْقُطُ أَوَّلُهُ وَلَا يَنْقُذُ آخِرُهُ.

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पाक है, सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हैं, उस के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, बुराई से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताकत उसी अज़मत व बुलन्दी वाले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है। वोह जो कुछ पैदा फ़रमा चुका और जो पैदा फ़रमाएगा उस की ता'दाद, वज़न और उन की जगहों की मिक्दार भर, ज़मीनो आस्मान की मिक्दार भर, इस के बराबर और इस से दुगना, उस की मख़्लूक की ता'दाद, अर्श के वज़न, उस की इन्तिहाए रहमत, उस के कलिमात की रोशनाई, उस की रिज़ा हासिल करने तक और जब वोह राजी हो, तमाम मख़्लूक ने जो ज़िक्र किया और जो करेगी उस की ता'दाद बराबर, हर साल, महीने, जुमए और शबो रोज़ के अवकात और हर साअत, हर सांस और दुन्या आबाद रहने और आखिरत बाकी रहने तक और इस से भी ज़ियादा, न इस का आगाज़ टूटे न आखिर ख़त्म हो (इतनी ता'दाद व मिक्दार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह करता हूँ)

﴿16﴾..... **हुआए इब्राहीम बिन अदहम :**

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के खादिम हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار फ़रमाते हैं कि आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हर जुमुआ की सुब्हो शाम येह हुआ पढ़ा करते थे :

مَرْحَبًا بِيَوْمِ الْمَزِيدِ وَالصُّبْحِ الْجَدِيدِ وَالْكَاتِبِ وَالشَّهِيدِ يَوْمَنَا هَذَا يَوْمَ عِيدٍ أَكْتُبُ لَنَا فِيهِ مَا نَقُولُ بِسْمِ اللَّهِ الْحَمِيدِ الْمَجِيدِ الرَّفِيعِ الْوَدُودِ الْفَعَّالِ فِي خَلْقِهِ مَا يَرِيدُ، أَصْبَحْتُ بِاللَّهِ مُؤْمِنًا وَبِلِقَائِهِ مُصَدِّقًا وَبِحُجَّتِهِ مُعْتَرِفًا وَمِنْ ذَنْبِي مُسْتَغْفِرًا وَلِرُبُوبِيَّةِ اللَّهِ خَاضِعًا وَلِلسَّوَى اللَّهِ فِي إِلَهَةٍ جَاحِدًا وَإِلَى اللَّهِ فَقِيرًا وَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلًا وَإِلَى اللَّهِ مُنِيبًا أَشْهَدُ اللَّهَ وَأَشْهَدُ مَلَائِكَتَهُ وَأَنْبِيَائَهُ وَرُسُلَهُ وَحَمَلَةَ عَرْشِهِ وَمَنْ خَلَقَهُ وَمَنْ هُوَ خَالِقُهُ بِأَنَّهُ هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ

وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا وَأَنَّ الْجَنَّةَ حَقٌّ وَأَنَّ النَّارَ حَقٌّ وَالْحَوْضَ حَقٌّ وَالشَّفَاعَةَ حَقٌّ وَمَنْكَرًا وَنَكِيرًا حَقٌّ وَوَعْدَكَ حَقٌّ وَوَعِيدَكَ حَقٌّ وَلِقَاءَكَ حَقٌّ وَالسَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَأَنَّ اللَّهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُورِ عَلَى ذَلِكَ أَحْيَا وَعَلَيْهِ أَمُوتُ وَعَلَيْهِ أُبْعَثُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ، اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ خَلَقْتَنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ اللَّهُمَّ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَيْ شَرٍّ، اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ذُنُوبِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ وَاهْدِنِي لِأَحْسَنِ الْأَخْلَاقِ فَإِنَّهُ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ وَأَصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا فَإِنَّهُ لَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ لَبِّيكَ وَسَعْدِيدِكَ وَالْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدِكَ أَنَا لَكَ وَالْيَكِ اسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ أَمَنْتُ اللَّهُمَّ بِمَا أَرْسَلْتَهُ مِنْ رَسُولٍ وَأَمَنْتُ اللَّهُمَّ بِمَا أَنْزَلْتَ مِنْ كِتَابٍ وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ وَعَلَى آلِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا خَاتِمِ كَلَامِي وَمِفْتَاحِهِ وَعَلَى أَنْبِيَائِهِ وَرُسُلِهِ أَجْمَعِينَ آمِينَ يَا رَبَّ الْعَالَمِينَ اللَّهُمَّ أَوْرِدْنَا حَوْضَ مُحَمَّدٍ وَأَسْقِنَا بِكَاسِهِ مُشْرَبًا رَوِيًّا سَانِعًا هَنِئْنَا لَا نَظْمًا بَعْدَهُ أَبَدًا وَأَحْشُرْنَا فِي زَمَرَتِهِ غَيْرَ خَزَايَا وَلَا نَاكِثِينَ لِلْعَهْدِ وَلَا مُرْتَابِينَ وَلَا مَفْتُونِينَ وَلَا مَغْضُوبَ عَلَيْنَا وَلَا ضَالِّينَ، اللَّهُمَّ اعْصِمْنِي مِنْ فِتَنِ الدُّنْيَا وَفَقْتِنِي لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى وَأَصْلِحْ لِي شَأْنِي كُلَّهُ وَثَبِّتْنِي بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَا تُضِلَّنِي وَإِنْ كُنْتُ ظَالِمًا سُبْحَنَكَ يَا عَلِيُّ يَا عَظِيمُ يَا بَارِي يَا رَحِيمُ يَا عَزِيزُ يَا جَبَّارُ سُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ السَّمَوَاتُ بِأَكْنَافِهَا وَسُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ الْبِحَارُ بِأَمْوَاجِهَا وَسُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ الْجِبَالُ بِأَصْدَائِهَا وَسُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ الْحَيَاتَانُ بِلُغَاتِهَا وَسُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ النُّجُومُ فِي السَّمَاءِ بِأَبْرَاجِهَا وَسُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ الْأَشْجَارُ بِأُصُولِهَا وَثَمَارِهَا وَسُبْحَانَ مَنْ سَبَحَتْ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُونَ السَّبْعُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَمَنْ عَلَيْهِنَّ سُبْحَانَ مَنْ سَبَحَ لَهُ كُلُّ شَيْءٍ مِنْ مَخْلُوقَاتِهِ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ سُبْحَنَكَ سُبْحَنَكَ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا عَلِيمُ يَا حَلِيمُ سُبْحَنَكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ وَحْدَكَ لَا شَرِيكَ لَكَ تَحِيُّيُ وَتَوْبِيَّتُ وَأَنْتَ حَيٌّ لَا تَمُوتُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ.

या'नी फ़ज़ीलत वाले दिन, नई सुबह और कातिबीन व शाहिदीने आ'माल को खुश आमदीद । येह (जुमुआ का) दिन हमारा ईद का दिन है । इस दिन हम जो बोलें वोह लिख दे । **अल्लाह** के नाम से शुरुअ जो ता'रीफ़ वाला, बुजुर्गी वाला, बुलन्द शान वाला, महबबत करने वाला और अपनी मख़्लूक के लिये जो चाहता है करने वाला है । मैं ने हालते ईमान में सुबह की और मैं **अल्लाह** से मुलाक़ात का यकीन रखने वाला, उस की हुज्जत को मानने वाला, अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहने वाला, **अल्लाह** की रबूबियत के सामने अज़िज़ी करने वाला, उस के

इलावा किसी को मा'बूद न मानने वाला, उसी का मोहताज, उसी पर भरोसा करने वाला और उसी की तरफ लौटने वाला हूं। मैं **अल्लाह** और उस के अम्बिया व रसूल, मलाइका व हामिलीने अर्श और जो कुछ वोह पैदा फरमा चुका और जो पैदा फरमाएगा उन तमाम को गवाह बनाता हूं कि वोही **अल्लाह** है उस के सिवा कोई लाइके इबादत नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं और मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के खास बन्दे और उस के रसूल हैं, बेशक जन्नत व दोजख, हौजे कौषर, शफाअत और मुन्कर नकीर के सुवालात हक हैं, (ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ) तेरा वा'दा सच्चा है, तेरी वईद दुरुस्त है, तुझ से मुलाकात सच है। बेशक क़ियामत काइम हो कर रहेगी। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ कब्र वालों को (रोजे क़ियामत) उठाएगा। मैं इसी अक़ीदे पर ज़िन्दा हूं, इसी पर मरूंगा और इसी पर (रोजे महशर) उठाया जाऊंगा إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तू मेरा रब्ब है, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तू ने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूं और ब क़द्रे ताक़त तेरे अहदो पैमां पर काइम हूं, मैं अपने किये के शर से और हर शरीर के शर से तेरी पनाह मांगता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ बेशक मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया, पस तू मेरे गुनाह बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं। मुझे अख़्लाके हसना अपनाने की तौफ़ीक़ मर्हमत फ़रमा कि येह तौफ़ीक़ भी तेरी ही बारगाह से मिलती है। मुझ से बद अख़्लाकी को दूर फ़रमा कि येह दूरी पैदा करना भी सिर्फ़ तेरे इख़्तियार में है। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मैं तेरी बारगाह में हाज़िर हूं। हर भलाई तेरे क़ब्ज़ए कुदरत में है। मैं तेरा बन्दा हूं, तुझ ही से लौ लगी हुई है, तुझ से मग़फ़िरत का तालिब हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ तू ने जो रसूल मबऊष फ़रमाए और जो कलाम नाज़िल फ़रमाया मैं इन सब पर ईमान लाया और जो कुछ मैं ने कहा इस पर भी मेरा ईमान है। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ की रहमत और ख़ूब सलाम हो उम्मी नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर, उन की आल पर और तमाम अम्बिया व रसूल पर। ऐ कुल जहां के परवर दगार عَزَّ وَजَلَّ मेरी अर्ज क़बूल फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ हमें हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हौज़ पर आने की सआदत नसीब फ़रमा, आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के प्याले से ऐसा मशरूब पिला जो ख़ूब उम्दा और सैराब करने वाला है, इस के बा'द हम पर कभी प्यास तारी न हो। बिग़ैर किसी ज़िल्लत के हमारा हशर गुरौहे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में फ़रमाना। हम न वा'दा ख़िलाफ़ बनें, न शकी, न फ़िल्ते में पड़ें, न तेरे ग़ज़ब का शिकार हों और न ही गुमराह हों। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मुझे दुन्या के फ़िल्तों से महफूज़ फ़रमा और अपनी मशिय्यत व रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा। मेरे सब अहवाल दुरुस्त फ़रमा दे। दुन्या व आख़िरत में कलिमए शहादत पर इस्तिफ़ामत अता फ़रमा। अगर्चे मैं ज़ियादती करने वाला हूं लेकिन मुझे गुमराही से महफूज़ रखना। तू पाक है, ऐ अज़ीम, ऐ बारी, ऐ रहीम, ऐ अज़ीज़, ऐ जब्बार। पाक

है वोह ज़ात जिस की तस्बीह तमाम आस्मानों के हर कोने में बयान की जाती है। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह समन्दर अपनी मौजों समेत बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह पहाड़ अपनी गूँज से करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह मछलियां अपनी ज़बानों से करती हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह आस्मानों में सितारे अपने बुरजों से बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह दरख्त अपने फलों और जड़ों से बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह सातों ज़मीन और सातों आस्मान अपने अन्दर मौजूद अश्या से बयान करते हैं। पाक है वोह ज़ात जिस की तस्बीह हर मख़्लूक करती है। तू बरकत वाला है, बुलन्दो बाला है। ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तू पाक है। ऐ ज़िन्दा ! ऐ दूसरों को फ़ाइम रखने वाले ! ऐ इल्म वाले ! ऐ बुर्दबार ! तू पाक है तू ही मा'बूद है। तू अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, तू ही ज़िन्दा करता और मारता है। तू खुद ज़िन्दा है तुझे कभी मौत न आएगी। खैर सिर्फ तेरे ही दस्ते कुदरत में है। बेशक तू हर चाहे पर कादिर है।



.....आठ (8) रूहानी इलाज.....

- ★ **هُوَ اللّٰهُ الرَّحِيْمُ** जो हर नमाज़ के बा'द 7 बार पढ़ लिया करेगा **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शैतान के शर से बचा रहेगा और उस का ईमान पर खातिमा होगा।
- ★ **يَا مُلْكُ** 90 बार, जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** गुर्बत से नजात पा कर मालदार हो।
- ★ **يَا قُدُّوسُ** का जो कोई दौराने सफ़र विर्द करता रहे, **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** थकन से महफूज़ रहेगा।
- ★ **يَا عَزِيْزُ** 41 बार, हाकिम या अफ़सर वग़ैरा के पास जाने से क़ब्ल पढ़ लीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** वोह हाकिम या अफ़सर मेहरबान हो जाएगा।
- ★ **يَا بَارِي** 10 बार, जो कोई हर जुमुआ को पढ़ लिया करे **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** उस को बेटा अता होगा।
- ★ **يَا فَتّٰحُ** 70 बार, जो रोज़ाना पढ़ा करेगा **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मुस्तजाबुद्वा'वात होगा (या'नी हर दुआ क़बूल हुवा करेगी)।
- ★ **يَا حَكِيْمُ** 80 बार, जो रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द पढ़ लिया करे **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** किसी का मोहताज न होगा।
- ★ **يَا جَلِيْلُ** 10 बार, पढ़ कर जो अपने माल व अस्बाब और रक़म वग़ैरा पर दम कर दे **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** चोरी से महफूज़ रहे।

(हर विर्द के अव्वल व आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1 स. 168 ता 170 मुलतक़तन)

बाब नम्बर 4 : कुरआनो हदीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआएं

त़ालिबे आख़िरत के लिये मुस्तहब है कि सुबह के वक़्त उस का पसन्दीदा वज़ीफ़ा दुआ होनी चाहिये, इस का मज़ीद बयान “किताबुल अवराद” में आया। तो अगर तुम आख़िरत की खेती और दुआ में हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पैरवी के ख़्वाहिशमन्द हो तो नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली दुआओं का आगाज़ इन कलिमात से करो।

नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 27 दुआएं :

﴿1﴾ سُبْحَنَ رَبِّيَ الْأَعْلَىٰ الْوَهَّابِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ या'नी मेरा परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ पाक, बुलन्द, आ'ला और बहुत अ़ता करने वाला है, उस के सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं, वोह तन्हा है, उस का कोई शरीक नहीं, बादशाहत उसी की, ता'रीफ़े उसी के लिये हैं और वोह हर चीज़ पर क़ादिर है।⁽¹⁾

﴿2﴾ येह कलिमात तीन मरतबा पढ़ो : رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيًّا या'नी मैं अब्बाह के रब्ब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के नबी होने पर राज़ी हूँ।⁽²⁾

﴿3﴾ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغُيُوبِ وَالشَّهَادَةِ رَبِّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي وَشَرِّ الشَّيْطَانِ وَشَرِّكَ या'नी ऐ अब्बाह ज़मीनो आस्मान को पैदा करने वाले ! ज़हिरो बातिन का इल्म रखने वाले ! हर शै के परवर दगार व मालिक ! मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई लाइके इबादत नहीं। मैं नफ़सो शैतान के शर और उस के शिर्क से तेरी पनाह मांगता हूँ।⁽³⁾

﴿4﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي وَآمِنْ رَوْعَاتِي وَأَقِلْ عَثْرَاتِي وَأَحْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيْ وَمِنْ خَلْفِي وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَغْتَالَ مِنْ تَحْتِي

①..... صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب استحباب الذكر بعد الصلاة، الحديث: ٥٩٣، ص ٢٩٨، باختصار۔

قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة..... الخ، ج ١، ص ١٩۔

②..... المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الكوفيين، الحديث: ١٨٩٩٠، ج ٤، ص ١٢۔

③..... سنن الترمذی، كتاب الدعوات، الحديث: ٣٢٠٣، ج ٥، ص ٢٥٢۔

या'नी ऐ **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से दीनो दुन्या, अहलो इयाल और अपने माल में अफ़ियत का सुवाल करता हूं, ऐ **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरे इयूब की पर्दा पोशी फ़रमा, मुझे ख़ौफ़ से अमन अता फ़रमा, मेरी ख़ताएं मुअफ़ फ़रमा, दाएं बाएं, आगे पीछे और ऊपर से मेरी हिफ़ाज़त फ़रमा और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि मुझे नीचे से हलाक किया जाए।⁽¹⁾

اللّٰهُمَّ لَا تُؤْمِنِيْ مُكْرَكَ وَلَا تُؤَلِّبْنِيْ غَيْرَكَ وَلَا تُغْزَعْ عَنِّيْ سِتْرَكَ وَلَا تُنْسِنِيْ ذِكْرَكَ وَلَا تُجْعَلْنِيْ مِنَ الْغَافِلِيْنَ⁽⁵⁾
या'नी ऐ **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझे अपनी खुफ़्या तदबीर से ग़ाफ़िल न कर, मुझे ग़ैरों के हवाले न कर, मुझ से अपना पर्दा न छीन, मुझे अपना ज़िक्र न भूला और ग़ाफ़िल लोगों में शामिल न फ़रमा।⁽²⁾

﴿6﴾..... येह दुआ तीन मरतबा पढ़िये :

اللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِيْ وَاَنَا عَبْدُكَ وَاَنَا عَلَىٰ عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ
اَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ اَبُوْءُ لَكَ بِعَمَلِكَ عَلَيَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِيْ فَاغْفِرْ لِيْ ذُنُوْبِيْ فَانَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ

या'नी ऐ **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तू मेरा रब्ब है तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, तूने मुझे पैदा किया, मैं तेरा बन्दा हूं और बक़दरे ताक़त तेरे अहदो पैमान पर काइम हूं, मैं अपने किये के शर से तेरी पनाह मांगता हूं, तेरी दी हुई ने'मत का इक़रार करता हूं और अपने गुनाहों का ए'तिराफ़ करता हूं पस मेरे गुनाह बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाहों को बख़्शने वाला कोई नहीं।⁽³⁾

﴿7﴾.....येह दुआ भी तीन मरतबा पढ़िये :
اللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِىْ بَدْنِيْ وَعَافِنِيْ فِىْ سَمْعِيْ وَعَافِنِيْ فِىْ بَصَرِيْ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ
या'नी ऐ **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरे जिस्म और मेरी समाअत व बसारत को अफ़ियत अता फ़रमा, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं।⁽⁴⁾

﴿8﴾.....
اللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ الرِّضَا بَعْدَ الْقَضَاءِ وَبِرَدِّ الْعِيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَكَذٰلِكَ النَّظْرُ اِلَىٰ وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ وَشَوْقًا اِلَىٰ لِقَائِكَ مِنْ غَيْرِ ضَرَاءٍ مُّضِرَّةٍ وَلَا فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ وَاَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ اَوْ اَعْتَدَىٰ اَوْ يُعْتَدَىٰ عَلَيَّ اَوْ اُكْسِبَ خَطِيْئَةً اَوْ ذَنْبًا لَا تَغْفِرُهُ.

या'नी ऐ **اللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से तक्दीर पर राज़ी रहने और मौत के बा'द राहत भरी ज़िन्दगी पाने और तेरे करम वाले चेहरे के दीदार की लज़ज़त का सुवाल करता हूं और बिग़ैर किसी तक्लीफ़ और गुमराह कुन फ़ितने के तुझ से शौक़े मुलाकात का सुवाल करता हूं। ज़ालिम व मज़लूम बनने, ज़ियादती

①.....سنن ابن ماجه، كتاب الدعاء، باب مايدعوه به الرجل.....الخ، الحديث: ٣٨٤١، ج ٢، ص ٢٨٥، بتغير.

②.....المقاصد الحسنة، حرف الهمزة، الحديث: ١٤٣، ص ١٠٠، دون "ولاتولى غيرك".

قوت القلوب، الفصل الثالث عشر فيه كتاب جامع.....الخ، ج ١، ص ٦٢.

③.....صحيح البخارى، كتاب الدعوات، باب افضل الاستغفار، الحديث: ٢٣٠٦، ج ٢، ص ١٩٠، دون "ثلاث مرات".

④.....سنن ابى داود، كتاب الادب، باب مايقول الرجل اذا.....الخ، الحديث: ٥٠٩٠، ج ٢، ص ٢١٩.

करने और ज़ियादती किये जाने से मैं तेरी पनाह मांगता हूँ और उस गुनाह या ख़ता से तेरी पनाह चाहता हूँ जिस को तू न बख़्शे ।⁽¹⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الْأَمْرِ وَالْعَزِيمَةَ فِي الرُّشْدِ وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ وَأَسْأَلُكَ قَلْبًا خَاشِعًا سَلِيمًا وَخُلُقًا مُسْتَقِيمًا وَلسَانًا صَادِقًا وَعَمَلًا مُتَقَبَّلًا وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعَلَّمَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعَلَّمَ وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا تَعَلَّمْتُ فَإِنَّكَ تَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मैं तुझ से उमूरे दीनिया पर षाबित क़दमी और हिदायत पर पुख़्ता मिज़ाजी का सुवाल करता हूँ। तुझ से तेरी ने'मत का शुक्र अदा करने और अहसन तरीके से तेरी इबादत बजा लाने का सुवाल करता हूँ। अज़िज़ी व सलामती वाला दिल, अच्छे अख़लाक़, सच्ची ज़बान और मक़बूल अमल का सुवाली हूँ। मैं तुझ से भलाई का सुवाल करता और बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ जिन्हें तू जानता है और ख़ताओं से मुआफ़ी का तलबगार हूँ जिन्हें तू जानता है, बेशक तू जानता है मैं नहीं जानता और तू सब ग़ैबों को ख़ूब जानता है ।⁽²⁾

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي فَإِنَّكَ أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ وَعَلَى كُلِّ غَيْبٍ شَهِيدٌ

या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मेरे अगले पिछले, अलानिय्या पोशीदा गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा और उन्हें भी बख़्श दे जिन्हें तू मुझ से ज़ियादा जानता है कि आगे लाने वाला और पीछे हटाने वाला तू ही है और तू हर चाहे पर क़ादिर और हर पोशीदा अम्र को जानता है ।⁽³⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ إِيْمَانًا لَا يَرْتَدُّ وَنِعِيمًا لَا يَنْفَدُ وَفِرَّةً عَيْنِ الْآبِدِ وَمُرَافَقَةً نَبِيِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أَعْلَى جَنَّةِ الْخُلْدِ.....⁽¹¹⁾

या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मैं तुझ से उस ईमान का तालिब हूँ जिस के बा'द कुफ़्र न हो और उस ने'मत का जो ख़त्म न हो और मैं तुझ से आंखों की दाइमी ठण्डक और हमेशा रहने वाली जन्नत के आ'ला दर्जे में तेरे रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रफ़ाक़त का सुवाल करता हूँ ।⁽⁴⁾

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث زيد بن ثابت، الحديث: ٢١٤٢٢، ج ٨، ص ١٥٦-١٥٧

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ٣٢١٨، ج ٥، ص ٢٥٩، بحذف قليل

③.....صحيح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب التعوذ من شر ما.....الخ، الحديث: ٢٤١٩، ص ١٢٥٤،

دون قوله: وعلى كل غيب شهيد

④.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٦٢٢، ج ٢، ص ٣١، مفهوماً

المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٤٩٤، ج ٢، ص ٦٠، دون قوله: وفرة عين الآبد

﴿12﴾..... اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الطَّيِّبَاتِ وَفَعَلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرَكْتُ الْمُنْكَرَاتِ وَحَبَّبَ الْمَسَاكِينَ أَسْأَلُكَ حَبِّكَ وَحُبَّ مَنْ أَحَبَّكَ وَحُبَّ كُلِّ عَمَلٍ يَقْرُبُ إِلَى حَبِّكَ وَأَنْ تَتُوبَ عَلَيَّ وَتَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي وَإِذَا أَرَدْتَ بِقَوْمٍ فِتْنَةً فَأَقْبِضْنِي إِلَيْكَ غَيْرَ مُفْتُونٍ.

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से पाकी, नेक अफ़आल, तर्के गुनाह और महब्बते मसाकीन का सुवाली हूं। मैं तुझ से तेरी, तुझ से महब्बत करने वालों की और तेरी महब्बत की तरफ़ राग़िब करने वाले आ'माल की महब्बत का सुवाल करता हूं। मेरी इल्तिजा है कि तू मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, मुझे बख़्शा दे, मुझ पर रहम फ़रमा और जब तू लोगों को फ़ितने में मुब्तला करना चाहे तो मुझे किसी फ़ितने में डाले बिग़ैर वहां से उठा ले। (1)

﴿13﴾..... اللَّهُمَّ بَعْلِيكَ الْغَيْبِ وَقُدْرَتِكَ عَلَى الْخَلْقِ أَحْيِنِي مَا كَانَتِ الْحَيَاةُ خَيْرًا لِّي وَتَوَفَّنِي مَا كَانَتِ الْوَفَاةُ خَيْرًا لِّي، أَسْأَلُكَ خَشْيَتِكَ فِي الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَكَلِمَةَ الْعَدْلِ فِي الرِّضَا وَالْغَضَبِ وَالْقَصْدِ فِي الْغِنَى وَالْفَقْرِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ وَ الشَّوْقَ إِلَى لِقَائِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ ضَرَاءٍ مُضِرَّةٍ وَفِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ وَاللَّهُمَّ زَيِّنَا بِزِينَةِ الْإِيمَانِ وَاجْعَلْنَا هِدَاةً مُهْتَدِينَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ अपने इल्मे ग़ैब और मख़्लूक पर कुदरत के सदके मुझे ज़िन्दा रख जब तक मेरे लिये ज़िन्दगी बेहतर है और जब मेरे लिये मौत बेहतर हो तो मौत अता फ़रमा, मैं तुझ से जलवत व ख़लवत में डरने, खुशी व ग़मी में दामने अद्ल थामे रहने, अमीरी व ग़रीबी में मियाना रबी इख़्तियार करने, तेरी ज़ियारत का लुत्फ़ पाने और तेरी मुलाक़ात का शौक़ रखने का सुवाल करता हूं। मैं तेरी पनाह मांगता हूं तकलीफ़ और गुमराह कुन फ़ितने से। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें ज़ीनते ईमान से मुजय्यन कर दे और हमें हिदायत की तरफ़ रहनुमाई करने वाला बना। (2)

﴿14﴾..... اللَّهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُولُ بِهِ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تَبْلُغُنَا بِهِ جَنَّتِكَ وَمِنَ الْبَقِيَّةِ مَا تَهْوُونَ بِهِ عَلَيْنَا مَصَانِبُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ हमें अपना ख़ौफ़ अता फ़रमा जो हमारे और गुनाहों के दरमियान रुकावट बन जाए, अपनी इताअत नसीब फ़रमा जो हमें तेरी जन्नत में पहुंचा दे और हमें यकीन की दौलत अता कर कि फिर हमें दुन्या व आख़िरत के मसाइब की परवाह न रहे। (3)

﴿15﴾..... اللَّهُمَّ أَمْلَأْ وَجُوهَنَا مِنْكَ حَيَاءً وَقُلُوبَنَا مِنْكَ فَرَقًا وَأَسْكُنْ فِي نَفُوسِنَا مِنْ عَظَمَتِكَ مَا تَدْلِلُ بِهِ جَوَارِحَنَا لِيَخْدَمَتِكَ وَاجْعَلْكَ اللَّهُمَّ أَحَبَّ إِلَيْنَا مِمَّنْ سِوَاكَ وَاجْعَلْنَا أَحْسَنَ لَكَ مِمَّنْ سِوَاكَ

1..... سنن الترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورة ص، الحديث: ۳۲۴، ج ۵، ص ۵۹، باختصار۔

کتاب الدعاء للطبرانی، ماکان النبی صلی اللہ علیہ وسلم يدعو به فی..... الخ، الحديث: ۱۴۱، ص ۱۸، لم يذكر فيه "الطيبات"۔

2..... سنن النسائي، کتاب السهو، نوع آخر، الحديث: ۱۳۰۲، ص ۲۲۵۔

3..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ۳۵۱۳، ج ۵، ص ۳۰۱۔

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे चेहरों को हया से और हमारे दिलों को अपने खौफ से भर दे। हमारे अन्दर अपनी अज़मत व जलालत इस क़दर डाल दे कि हमारे आ'जा तेरे फ़रमां बरदार बन जाएं।

ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ग़ैरों के बजाए सब से ज़ियादा अपनी महबूबत व खौफ़ अता फ़रमा।

﴿16﴾ اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَوَّلَ يَوْمِنَا هَذَا صَلَاحًا وَأَوْسَطَهُ فَلَاحًا وَآخِرَهُ نَجَاحًا اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَوَّلَهُ رَحْمَةً وَأَوْسَطَهُ نِعْمَةً..... ﴿16﴾
وَأَخِرَهُ تَكْرِمَةً وَمَغْفِرَةً

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमारे आज के दिन का आगाज़ इस्लाह, वस्तु कामरानी और इख़िताम कामयाबी के साथ फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आज के दिन की इब्तिदा रहमत, दरमियान ने'मत और आखिर इज़्ज़त व मग़फ़िरत के साथ हो। (1)

﴿17﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي تَوَاضَعَ كُلُّ شَيْءٍ لِّعَظَمَتِهِ وَذَلَّ كُلُّ شَيْءٍ لِّعَزَّتِهِ وَخَضَعَ كُلُّ شَيْءٍ لِّمُلْكِهِ وَأَسْتَسْلَمَ كُلُّ شَيْءٍ لِّقُدْرَتِهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي سَكَنَ كُلُّ شَيْءٍ لِّهَيْبَتِهِ وَأَظْهَرَ كُلُّ شَيْءٍ بِحِكْمَتِهِ وَتَصَاغَرَ كُلُّ شَيْءٍ لِّكِبَرِيَّانِهِ..... ﴿17﴾

या'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस की अज़मत के सामने हर चीज़ सरनिगू है, जिस की इज़्ज़त के आगे हर शै सर झुकाए हुए है, जिस की सल्तनत में हर चीज़ उस के ताबेअ है और जिस की कुदरत के सामने हर एक सरे तस्लीम ख़म किये हुए है। सब ख़ूबियां उस खुदा को जिस के जलाल के बाइष हर शै साकिन है, जिस ने हर शै को अपनी हिकमत से ज़ाहिर फ़रमाया और जिस की बड़ाई के सामने हर शै छोटी है। (2)

﴿18﴾ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِ وَبَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِ..... ﴿18﴾
كَمَا بَارَكْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ فِي الْعَالَمِينَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रहमत भेज हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और आप की आल, अवलाद और अज़वाज पर और बरकत दे हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को और उन की आल, अवलाद व अज़वाज को जिस तरह तू ने हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام और उन की आल को दोनों जहां में बरकत दी, बेशक तू ही सब ख़ूबियों वाला इज़्ज़त वाला है। (3)

①..... الزهد لابن المبارك، الجزء الثامن، الحديث: ١٠٨٥، ص ٣٨٢، باختصار۔

قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة..... الخ، ج ١، ص ٢٥، مفهوماً۔

②..... المعجم الكبير، الحديث: ١٣٥٢٢، ج ١٢، ص ٣٢٢، باختصار۔

③..... صحيح البخاري، كتاب احاديث الانبياء، الحديث: ٣٣٦٩، ج ٢، ص ٢٢٩، ملخصاً۔

﴿19﴾..... اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُولِكَ النَّبِيِّ الْأَمِيِّ رَسُولِكَ الْأَمِينِ وَأَعْطِهِ الْمَقَامَ الْمُحَمَّدَ الَّذِي وَعَدْتَهُ يَوْمَ الدِّينِ
या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل रहमत भेज हजरते मुहम्मद صلى الله تعالى عليه وآله وسلم पर जो तेरे खास बन्दे, नबी और रसूल हैं वोह तेरे उम्मी नबी और अमानत दार रसूल हैं, तू इन्हें अपने वा'दे के मुताबिक रोजे कियामत मकामे महमूद अता फरमा ।⁽¹⁾

﴿20﴾..... اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ أَوْلِيَاكَ الْمُتَّقِينَ وَحَزْبِكَ الْمُفْلِحِينَ وَعِبَادِكَ الصَّالِحِينَ وَاسْتَعْمِلْنَا لِمَرْضَاتِكَ عَنَّا وَوَقِّفْنَا.....
لِمَحَابِّكَ مِنَّا وَصَرِّفْنَا بِحُسْنِ اخْتِيَارِكَ لَنَا
या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل हमारा शुमार अपने परहेजगार औलिया, कामयाब गुरौह और नेक बन्दों में फरमा, हमें अपनी रिज़ा के कामों में लगा दे, अपनी महबबत अता कर और अपनी पसन्द की राह पर चला कर अपनी बारगाह में लौटा ।⁽²⁾

﴿21﴾..... نَسْأَلُكَ جَوَامِعَ الْخَيْرِ وَفَوَاتِحَهُ وَخَوَاتِمَهُ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ جَوَامِعِ الشَّرِّ وَفَوَاتِحِهِ وَخَوَاتِمِهِ
या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل हम तुझ से तमाम भलाइयों का बमअ आगाज व इखिताम के सुवाल करते हैं और तमाम बुराइयों से बमअ आगाज व इखिताम के पनाह चाहते हैं ।⁽³⁾

﴿22﴾..... اللَّهُمَّ بِقُدْرَتِكَ عَلَى تَبِّ عَلَى أَنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ وَبِحِلْمِكَ عَنِّي أَعْفُ عَنِّي إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفَّارُ الْحَلِيمُ.....
وَبِعِلْمِكَ بِي أَرْفُقْ بِي إِنَّكَ أَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ وَبِمَلِكِكَ لِي مَلِكِي نَفْسِي وَلَا تَسْلُطْهَا عَلَيَّ إِنَّكَ أَنْتَ الْمَلِكُ الْجَبَّارُ
या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل मुझ पर अपनी कुदरत के सदके मेरी तौबा कबूल फरमा बेशक तू ही बहुत तौबा कबूल करने वाला मेहरबान है । अपने हिल्म के तुफैल मुझे मुआफ़ फरमा बेशक तू बहुत बख्शाने वाला हिल्म वाला है । तू मेरी हालत से बा ख़बर है मुझ पर नर्मी फरमा बेशक तू सब मेहरबानों से बढ़ कर मेहरबान है । तू मेरा मालिक है मुझे नफ़्स पर ग़ालिब कर, नफ़्स को मुझ पर ग़लबा न दे, बेशक तू ही अज़मत वाला बादशाह है ।⁽⁴⁾

﴿23﴾..... سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ عَمِلْتُ سُوءَ وَظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي ذَنْبِي إِنَّكَ أَنْتَ رَبِّي وَلَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ.....
या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل तू पाक है, सब ख़ूबियां तेरे लिये, सिवा तेरे कोई मा'बूद नहीं, मैं ने गुनाह किये और अपनी जान पर जुल्म किया पस तू मेरे गुनाह मुआफ़ फरमा, बेशक तू ही मेरा परवर दगार है और गुनाहों को बख़शने वाला तेरे सिवा कोई नहीं ।⁽⁵⁾

﴿24﴾..... اللَّهُمَّ الْهَمْنِي رَشِيدِي وَفَيْتِي شَرِّ نَفْسِي.....
या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل मेरे दिल में भलाई की बात डाल दे और मुझे नफ़्स के शर से महफूज़ फरमा ।⁽⁶⁾

①..... قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة..... الخ، ج ١، ص ٢٦ -

②..... المرجع السابق، مفهوماً - ③..... المرجع السابق - ④..... المرجع السابق - ⑤..... المرجع السابق -

⑥..... سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: ٣٢٩٣، ج ٥، ص ٢٩٢، "وقتی" بذله "واعذنی" -

قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة..... الخ، ج ١، ص ٢٦ -

﴿25﴾ أَلْهَمَّ ارْزُقْنِي حَلَالًا لَا تَعَابِيَنِي عَلَيْهِ وَقِنِّعْنِي بِمَا رَزَقْتَنِي وَأَسْتَعْمِلْنِي بِهِ صَالِحًا تَقْبَلَهُ مِنِّي.....

या'नी ऐ **अल्लाह** غَرْ وَجَل मुझे रिज़्के हलाल अता फ़रमा और इस का हिसाब न ले और जो तू ने मुझे रिज़्क दिया इस पर क़नाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और इस के ज़रीए मुझे नेक कामों में लगा और फिर इन्हें क़बूल फ़रमा।⁽¹⁾

﴿26﴾ أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَحُسْنَ الْيَقِينِ وَالْمُعَافَاةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ..... तुझ से दरगुज़र, अफ़ियत, हुस्ने यकीन और दुन्या व आख़िरत में मुआफ़ी का सुवाली हूं।⁽²⁾

﴿27﴾ يَا مَنْ لَا تَضُرُّهُ الدُّنُوبُ وَلَا تَنْقُصُهُ الْمَغْفِرَةُ هَبْ لِي مَا لَا يَضُرُّكَ وَأَعْطِنِي مَا لَا يَنْقُصُكَ..... या'नी ऐ वोह जात जिसे गुनाह कोई तक्लीफ़ दे सके न मग़फ़िरत कोई नुक़सान ! मुझे वोह अता फ़रमा जो तेरे लिये मुज़िर् नहीं और वोह भी अता फ़रमा जिस में तेरा कोई नुक़सान नहीं।⁽³⁾

नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 12 क़ुरआनी दुआएं :

﴿1﴾ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوْفِقًا مُسْلِمِينَ (پ ۹، الاعراف: ۱۲۶).....

या'नी ऐ रब्ब हमारे ! हम पर सब्र उंडेल दे और हमें मुसलमान उठा ।

﴿2﴾ أَنْتَ وَلِيٌّ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّقْنِي مُسْلِمًا وَالْحَقِيقَ بِالصَّالِحِينَ (پ ۱۳، يوسف: ۱۰۱).....

या'नी तू मेरा काम बनाने वाला है दुन्या और आख़िरत में, मुझे मुसलमान उठा और उन से मिला जो तेरे कुर्बे ख़ास के लाइक़ हैं ।

﴿3﴾ أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ حَيُّ الْغَفُورِينَ (پ ۹، الاعراف: ۱۵۵).....

या'नी (ऐ **अल्लाह** غَرْ وَجَل) तू हमारा मौला है तो हमें बख़्श दे और हम पर महर (रहमो करम) कर और तू सब से बेहतर बख़्शाने वाला है, और हमारे लिये इस दुन्या में भलाई लिख और आख़िरत में, बेशक़ हम तेरी तरफ़ रुजूअ़ लाए ।

﴿4﴾ رَبَّنَا عَلَيْنِكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ (پ २८، الممتحنة: ४)..... या'नी ऐ हमारे रब्ब ! हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ़ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है ।

﴿5﴾ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (پ ११، یونس: ۸۵).....

या'नी इलाही ! हम को ज़ालिम लोगों के लिये आज़माइश न बना ।

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۶۔

②.....قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۶۔

③.....قوت القلوب، الفصل الخامس في ذكر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۷۔

20 मस्नून दुआएं और मुख्तलिफ इस्तिआजे :

﴿1﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَرَحْمَتَكَ كَمَا رَحِمْتَ رَجُلًا صَغِيرًا وَأَغْفِرْ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ الْأَحْيَاءِ مِنْهُمْ وَالْأَمْوَاتِ..... يا'नी ऐ मेरे रब्ब ! मुझे और मेरे मां बाप को बख्श दे और इन पर रहम कर जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला और तमाम ज़िन्दा व फ़ौत शुदा मुसलमान मर्दों और औरतों और ईमान वाले और ईमान वालियों की मग़फ़िरत फ़रमा ।⁽¹⁾

﴿2﴾ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَتَجَاوَزْ عَمَّا تَعْلَمُ وَأَنْتَ الْأَعَزُّ الْأَكْرَمُ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ..... يا'नी ऐ मेरे रब्ब ! मग़फ़िरत फ़रमा और रहम फ़रमा और जिन ख़ताओं को तू जानता है मुआफ़ फ़रमा और तू सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला, करम वाला, सब से बढ़ कर रहम वाला और सब से बेहतर बख़्शने वाला है ।⁽²⁾

﴿3﴾ إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ وَحَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى..... مُحَمَّدٍ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا
या'नी हम **अल्लाह** का माल हैं और हमें उसी की तरफ़ लौटना है, बदी से बचने की कुव्वत और नेकी करने की ताक़त सिर्फ़ बुलन्दी व अज़मत वाले **अल्लाह** عزّ وجلّ ही की तरफ़ से है और हमें **अल्लाह** عزّ وجلّ काफ़ी है और वोह बेहतरीन कारसाज़ है और ख़ूब क़शरत के साथ **अल्लाह** रब्बुल अनाम की रहमत व सलामती हों आख़िरी नबी हज़रते मुहम्मद صلى الله تعالى عليه وآله وسلم पर, आप की आल व अस्हाब पर ।

﴿4﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْجَبْنِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ اَنْ اُرْدَّ اِلٰی اَرْدَلِ الْعُمْرِ وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدُّنْيَا وَاَعُوْذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मैं बुख़ल, बुज़दिली, ऐसी लम्बी उम्र जिस में दानाई जाती रहे, दुन्या के फ़ितने और अज़ाबे क़ब्र से तेरी पनाह मांगता हूँ ।⁽³⁾

﴿5﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ طَمَعٍ يَّهْدِيْ اِلٰی طَمَعٍ وَّيَمِّنُ طَمَعٍ فِیْ غَيْرِ مَطْمَعٍ وَمِنْ طَمَعٍ حَيْثُ لَا مَطْمَعٍ..

①.....قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۷ مفهوماً۔

②.....قوت القلوب، الفصل الخامس فی ذکر الادعية المختارة.....الخ، ج ۱، ص ۲۷۔

③.....صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب التعوذ من البخل، الحدیث: ۶۳۷۰، ج ۴، ص ۲۰۹۔

या'नी ऐ **اللَّهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं ऐसी ख्वाहिश से जो ऐबदार बना दे और बे मक्सद ख्वाहिश और बे फ़ाइदा चीज़ की ख्वाहिश से तेरी पनाह चाहता हूं।⁽¹⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ وَقَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَدَعَاءٍ لَا يَسْمَعُ وَنَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْجُوعِ فَإِنَّهُ..... ﴿6﴾
بُنْسَ الضَّجِيعُ وَمِنَ الْخِيَانَةِ فَإِنَّهَا بُنْسَتِ الْبَطَانَةَ وَمِنَ الْكَسَلِ وَالْبُخْلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَمِنْ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْدَلِ الْعُمَرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الدَّجَالِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ
या'नी ऐ **اللَّهُمَّ** عَزَّ وَजَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं ऐसे इल्म से जो नफ़ा न दे, ऐसे दिल से जो अजिज़ी न करे, ऐसी दुआ से जो सुनी न जाए, ऐसे नफ़स से जो सैर न हो और मैं तेरी पनाह चाहता हूं भूक से (जो इबादत से रोके) क्योंकि इस का साथ बहुत बुरा है और ख़ियानत से पनाह चाहता हूं क्योंकि येह बहुत बुरा हम नशीन है और सुस्ती, बुख़ल, बुजदिली, बुढ़ापे और ऐसी लम्बी उम्र से तेरी पनाह चाहता हूं जिस में दानाई जाती रहे और दज्जाल, अज़ाबे क़ब्र और मौत व हयात के फ़ित्नों से तेरी पनाह चाहता हूं।

اللَّهُمَّ إِنَّا نَسْأَلُكَ قُلُوبًا أَوَاهَةً مُخَبِّتَةً مُنِيبَةً فِي سَبِيلِكَ ﴿7﴾ या'नी ऐ **اللَّهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ हम तुझ से ऐसे दिल का सुवाल करते हैं जो नर्म, अजिज़ी वाला और तेरी बारगाह में रुजूअ करने वाला हो।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَمَوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَالسَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ إِثْمٍ وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بَرٍّ وَالْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ ﴿8﴾ या'नी ऐ **اللَّهُمَّ** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से तेरी बख्शिश के आ'माल, तेरी रहमत के अस्बाब, हर गुनाह से हिफ़ाज़त, हर नेकी में ग़नीमत, जन्नत के साथ कामयाबी और जहन्नम से नजात का सुवाल करता हूं।⁽²⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ التَّرَدِّيِّ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْغَمِّ وَالْغَرَقِ وَالْهَدَمِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَمُوتَ فِي سَبِيلِكَ مُدْبِرًا..... ﴿9﴾
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَمُوتَ فِي طَلَبِ الدُّنْيَا

या'नी ऐ **اللَّهُمَّ** عَزَّ وَजَلَّ मैं गिर कर मरने, ग़मगीन होने, डूबने और इमारत गिरने से तेरी पनाह मांगता हूं और मौत के वक़्त तेरे रास्ते से फिरने और दुनिया की त़लब से तेरी पनाह मांगता हूं।⁽³⁾

1.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الانصار، حديث معاذ بن جبل، الحديث: ٢٢٠٨٢، ج ٨، ص ٢٣٤،

بلفظ "استعينوا بالله".

2.....المستدرک، کتاب العلم، التعوذ من علم لا ینفع، الحديث: ٣٦٢، ج ١، ص ٣٠٠، مختصرًا.

3.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذه، الحديث: ١٥٥٢، ج ٢، ص ١٣٢،

دون قوله: واعوذ بك ان اموت في طلب الدنيا.

﴿10﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَلِمْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْلَمْ.....

और जो नहीं जानता (सब से) तेरी पनाह चाहता हूँ।⁽¹⁾

﴿11﴾ اللَّهُمَّ جَنِّبْنِي مُنْكَرَاتِ الْأَخْلَاقِ وَالْأَعْمَالِ وَالْأَدْوَاءِ وَالْأَهْوَاءِ.....

आ'माल, अमराज और बुरी ख्वाहिशत से महफूज फ़रमा।⁽²⁾

﴿12﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ وَسُوءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ.....

आजमाइश, ना मुरादी, बुरे फैसले और दुश्मनों के मुझ पर हंसने से तेरी पनाह मांगता हूँ।⁽³⁾

﴿13﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالذِّينِ وَالْفَقْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَالِ.....

अल्लाह मैं तेरी पनाह मांगता हूँ कुफ़्र, कर्ज और मोहताजी से और अज़ाबे नार और फ़ितनए

दज्जाल से तेरी पनाह मांगता हूँ।⁽⁴⁾

﴿14﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ سَمْعِي وَبَصَرِي وَشَرِّ لِسَانِي وَقَلْبِي وَشَرِّ مَنِيِّ.....

लेता हूँ कान, आंख और दिल व ज़बान के शर और शर्मगाह के शर से।⁽⁵⁾

﴿15﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ جَارِ السُّوءِ فِي دَارِ الْمَقَامَةِ فَإِنَّ جَارَ الْبُيُوتِ يَتَحَوَّلُ.....

से तेरी पनाह मांगता हूँ क्योंकि जंगल का पड़ोसी तो बदलता रहता है।⁽⁶⁾

﴿16﴾ اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْقُسُوفِ وَالْغَفْلَةِ وَالْعِيَلَةِ وَالذَّلَّةِ وَالْمُسْكِنَةِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَالْفُسُوقِ.....

وَالشَّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوءِ الْأَخْلَاقِ وَضِيْقِ الْأَرْزَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّيَاءِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَالْبُكْمِ وَالْعُمَى وَالْجُنُونِ وَالْجَذَامِ وَالْبَرَصِ وَسَيِّئِ الْأَسْقَامِ

या'नी ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ सख़्त दिली, ग़फ़लत, हाथ की तंगी, रुस्वाई

और मिसकीनी से। इलाही ! मैं कुफ़्र, मोहताजी, नाफ़रमानी, अदावत, मुनाफ़क़त, बुरे अख़लाक़,

①.....صحیح مسلم، کتاب الذکر.....الخ، باب التعوذ من شر ما عمل.....الخ، الحديث: ٢٤١٦، ص ١٢٥٦، بتغییر۔

②.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، باب التعوذ من الهمم والتردى، الحديث: ١٩٩٢، ج ٢، ص ٢٢١، بتقدم و تاخر۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب فی التعوذ من سوء.....الخ، الحديث: ٢٤٠٤، ص ١٢٥٢، بتقدم و تاخر۔

④.....سنن النسائی، کتاب الاستعاذة، الحديث: ٥٢٤٢-٥٢٤٣-٥٥١٥، ص ٨٦٤، ٨٤٣۔

⑤.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی الاستعاذة، الحديث: ١٥٥١، ج ٢، ص ١٣٢۔

⑥.....سنن النسائی، کتاب الاستعاذة، الاستعاذة من جوار السوء، الحديث: ٥٥١٢، ص ٨٤٣۔

रिज़क की तंगी, शोहरत और रियाकारी से तेरी पनाह मांगता हूँ और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ अन्धा, बहरा, गूंगा होने और पागल पन, कोढ़, बरस और बुरी बीमारियों में मुब्तला होने से ।⁽¹⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَمِنْ تَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَمِنْ فُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ وَمِنْ جَمِيعِ سَخَطِكَ.....﴿17﴾

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ने'मतों के ज़वाल, तेरी आफ़ियत के फिर जाने, नागहानी आफ़ात और तेरी हर किस्म की नाराज़ी से मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ।⁽²⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغَنِيِّ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَشَرِّ.....﴿18﴾
فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَالِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं अज़ाबे जहन्नम, फ़ितनए जहन्नम, अज़ाबे क़ब्र, फ़ितनए क़ब्र से और अमीरी व ग़रीबी के फ़ितने के शर और फ़ितनए मसीहे दज्जाल के शर से तेरी पनाह मांगता हूँ और क़र्ज़ और गुनाह से मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ।⁽³⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ وَقَلْبٍ لَا يَخْشَعُ وَصَلَاةٍ لَا تَنْفَعُ وَدَعْوَةٍ لَا تَسْتَجِبُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ الْغَمِّ وَفِتْنَةِ الصَّدْرِ.....﴿19﴾
या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ऐसे नफ़्स से जो सैर न हो, ऐसे दिल से जो आजिज़ी न करे, ऐसी नमाज़ से जो नफ़अ न दे, ऐसी दुआ से जो क़बूल न की जाए और मैं तेरी पनाह मांगता हूँ ग़म और सीने के फ़ितनों के शर से ।⁽⁴⁾

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدِّينِ وَغَلَبَةِ الْعُدُوِّ وَشِمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ.....﴿20﴾ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूँ क़र्ज़ से, दुश्मनों के ग़लबे और उन के मुझ पर हंसने से ।⁽⁵⁾

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत हो हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और तमाम जहानों के हर बरगुज़ीदा बन्दे पर । (आमीन)



①.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، التعوذ من الجبن وغیره، الحدیث: ۱۹۸۷، ج ۲، ص ۲۱۹۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب اکثر اهل الجنة الفقراء.....الخ، الحدیث: ۲۷۳۹، ص ۱۴۶۵۔

③.....صحیح البخاری، کتاب الاذان، باب الدعاء قبل السلام، الحدیث: ۸۳۲، ج ۱، ص ۲۹۱، ملخصاً۔

④.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب التعوذ من شر ما.....الخ، الحدیث: ۲۷۲۲، ص ۱۴۵۷، مختصراً۔

⑤.....سنن النسائي، کتاب الاستعاذة، الاستعاذة من غلبة الدين، الحدیث: ۵۴۸۵، ص ۸۶۹۔

बाब नम्बर 5 :

मुख़ालिफ़ मख़बूत दुआएँ

येह हम पहले बता चुके हैं कि जब तुम सुबह की अज़ान सुनो तो तुम्हारे लिये अज़ान का जवाब देना मुस्तहब है और बैतुल ख़ला में दाख़िल होते और निकलते वक़्त और वुजू की दुआएँ हम ने “किताबुत्तहारत” में बयान कर दी हैं।

मस्जिद की तरफ़ जाते वक़्त की दुआ :

اللَّهُمَّ اجْعَلْ فِي قَلْبِي نُورًا وَفِي لِسَانِي نُورًا وَاجْعَلْ فِي سَمْعِي نُورًا وَاجْعَلْ فِي بَصَرِي نُورًا وَاجْعَلْ خَلْفِي نُورًا... (1)

وَأَمَامِي نُورًا وَاجْعَلْ مِنْ فَوْقِي نُورًا اللَّهُمَّ اعْطِنِي نُورًا

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मेरे दिल व ज़बान को पुरनूर कर दे, और मेरी समाअत व बसारत नूरानी बना दे और मेरे आगे पीछे और ऊपर नूर कर दे। ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मुझे नूर अता फ़रमा। (1)

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِينَ عَلَيْكَ وَبِحَقِّ مَشَايِ هَذَا الْبَيْتِ فَإِنِّي لَمْ أَخْرُجْ أَشْرًا وَلَا بَطْرًا وَلَا رِيَاءً وَلَا سُمْعَةً.... (2)

خَرَجْتُ اتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ فَاسْأَلُكَ أَنْ تَنْقِذَنِي مِنَ النَّارِ وَأَنْ تَغْفِرَ لِي ذُنُوبِي إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सुवाल करने वालों और तेरी राह में चलने वालों के हक़ के वसीले से तेरी बारगाह में सुवाल करता हूँ। मेरा यूँ तेरे घर तरफ़ निकलना गुरूर, तकब्बुर, दिखावे और शोहरत पाने के लिये नहीं बल्कि तेरी नाराज़ी से बचने और तेरी रिज़ा हासिल करने के लिये है। (ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ) तेरी बारगाह में इल्तिजा करता हूँ कि मुझे नारे जहन्नम से बचा ले और मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा, बेशक तू ही गुनाहों को मुआफ़ फ़रमाने वाला है। (2)

घर से निकलते वक़्त की दुआ :

بِسْمِ اللَّهِ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ أَوْ أَجْهَلَ أَوْ يُجْهَلَ عَلَيَّ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ بِسْمِ اللَّهِ التَّكْلَانُ عَلَى اللَّهِ

या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नाम से शुरूअ, ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ मैं तेरी पनाह चाहता हूँ इस से कि मैं किसी पर जुल्म करूँ या कोई मुझ पर जुल्म करे या मैं किसी दीनी मुआमले में कोताही करूँ या मुझ से कराई जाए। **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहूँ

1.....صحیح البخاری، کتاب الدعوات، باب الدعاء اذ انتبه باللیل، الحدیث: ۶۳۱۶، ج ۴، ص ۹۳، مفہومًا۔

2.....سنن ابن ماجہ، کتاب المساجد والجماعات، باب المشی الی الصلاۃ، الحدیث: ۷۷۸، ج ۱، ص ۲۹، “تفذنی” بدلہ “تعیذنی”۔

वाला, बदी से बचने की कुव्वत और नेकी करने की तौफीक बुलन्द व बुजुर्ग **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** ही की तरफ से है, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नाम से शुरू भरोसा करते हुए **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** पर।⁽¹⁾

मस्जिद में दाखिल होते वक़्त की दुआ :

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** या'नी ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَسَلِّمْ، اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي جَمِيعَ ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ رَحْمَتِ وَ سَلَامَتِي भेज हज़रते मुहम्मद **عَزَّوَجَلَّ** पर और आप की आल पर। ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** मेरे तमाम गुनाह बख़्श दे और मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।⁽²⁾

जब मस्जिद में दाखिल होने का इरादा हो तो पहले यह दुआ पढ़ें फिर दायां पाउं अन्दर रखें।

अगर मस्जिद में किसी को ख़रीदो फ़रोख़्त करते देखो तो यह दुआ पढ़ो :

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** तुझे तिजारात में नफ़ा न दे।⁽³⁾ لَا أَرْبَحَ اللَّهُ تِجَارَتَكَ

जब मस्जिद में किसी को गुमशुदा चीज़ का ए'लान करते देखो तो यह दुआ पढ़ो, जिस का रसूलुल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** ने हुक्म इरशाद फ़रमाया है :

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** तुझे वोह चीज़ वापस न लौटाए।⁽⁴⁾ لَا رَدَّهَا اللَّهُ إِلَيْكَ

रुकूअ की दुआ :

(नवाफ़िल के) रुकूअ में यह दुआ पढ़िये :

अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** मेरा रुकूअ और मेरी अज़िज़ी तेरे लिये है, मैं तुझ ही पर ईमान लाया और खुद को तेरे सिपुर्द किया, तुझ ही पर भरोसा किया, तू ही मेरा रब है। मेरी समाअत बसारत और मेरी हड्डियां, मग़ज़ और पठ्ठे और मेरे पाउं पर लदा बोझ तमाम जहानों के परवर दगार के सामने अज़िज़ है।⁽⁵⁾

1.....سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مايقول اذاخرج من بيته، الحديث: ٥٠٩٢، ج ٢، ص ٢٢٠۔

سنن ابن ماجه، کتاب الدعاء، باب مايدعوه الرجل اذاخرج من بيته، الحديث: ٣٨٨٥، ج ٢، ص ٢٩٢، مختصراً۔

2.....سنن الترمذی، ابواب الصلاة، باب ماجاء مايقول عنددخول المسجد، الحديث: ٣١٢، ج ١، ص ٣٣٩، مختصراً۔

3.....سنن الترمذی، کتاب البيوع، باب النهی عن البيع فی المسجد، الحديث: ١٣٢٥، ج ٣، ص ٥٩۔

4.....صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب النهی عن نشد.....الخ، الحديث: ٥٦٨، ص ٢٨٢۔

5.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها.....الخ، باب الدعاء فی صلاة.....الخ، الحديث: ٤٤١، ص ٣٩٠، باختصار۔

अगर चाहे तो तीन मरतबा **يَا'नी** पाक है मेरा रब्ब अज़मत वाला कहे ।⁽¹⁾ या कहे **سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ** या'नी फ़िरिश्तों और रूहुल अमीन का परवर दगाar पाक और मुक़द्दस है ।⁽²⁾

रुकूअ से उठते वक़्त की दुआ :

سَمِعَ اللَّهُ لِمَنْ حَمِدَهُ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ مِلءَ السَّمَوَاتِ وَمِلءَ الْأَرْضِ وَمِلءَ مَا شِئْتَ مِنْ شَيْءٍ بَعْدَ أَهْلِ الثَّنَاءِ وَالْمَجْدِ
أَحَقُّ مَا قَالَ الْعَبْدُ وَكُنَّا لَكَ عَبْدٌ لَا مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطَى لِمَا مَنَعْتَ وَلَا يَنْفَعُ ذَا الْجِدِّ مِنْكَ الْجِدُّ

या'नी **अल्लाह** عزّ وجلّ ने उस की सुन ली जिस ने उस की हम्द की, ऐ हमारे रब्ब ! तू उस ता'रीफ़ का मुस्तहिक् है जिस से तमाम आस्मानो ज़मीन भर जाएं और तेरी हम्द व बुजुर्गी बयान करने वालों के बा'द जो तू चाहे वोह भी भर जाए । तू ही इस का हक़दार है जो तेरे बन्दे ने कहा । हम सब तेरे बन्दे हैं, जो तू दे उसे कोई रोक नहीं सकता और जो तू रोके उसे कोई दे नहीं सकता, तेरे मुक़ाबिल ग़नी को ग़ना नफ़अ नहीं पहुंचाती ।⁽³⁾

सजदे में जाते वक़्त की दुआ :

اللَّهُمَّ لَكَ سَجَدْتُ وَبِكَ أَمِنْتُ وَلَكَ أَسْلَمْتُ سَجَدَ وَجْهِي لِلَّذِي خَلَقَهُ وَصَوَّرَهُ وَشَقَّ سَمْعَهُ وَبَصَرَهُ فَتَبَارَكَ اللَّهُ

أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ اللَّهُمَّ سَجَدَ لَكَ سَوَادِي وَخَيْكَلِي وَأَمِنْ بِكَ فُؤَادِي أَبُوءُ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ وَأَبُوءُ بِذَنْبِي وَهَذَا مَا جَنَيْتُ عَلَى نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ
या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجلّ मैं ने तेरे ही लिये सजदा किया, तुझ ही पर ईमान लाया और खुद को तेरे सिपुर्द किया । मेरा चेहरा उस ज़ात के लिये झुका है जिस ने इसे पैदा किया और इस के कान और आंख बनाएं । **अल्लाह** عزّ وجلّ बड़ी बरकत वाला सब से बेहतर बनाने वाला है । मेरा वुजूद व ख़याल तेरे हुज़ूर सर ब सुजूद है, मेरा दिल तुझ पर ईमान लाया, तू ने मुझे ने'मतें अता कीं इन का इक़रार करता हूं और अपनी ख़ताओं का भी ए'तिराफ़ करता हूं, येह मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया पस मुझे बख़्श दे कि तेरे सिवा गुनाह बख़्शने वाला कोई नहीं ।⁽⁴⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مقدار الركوع والسجود، الحديث: ۸۸۶، ج ۱، ص ۳۳۶۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما یقال فی الركوع والسجود، الحديث: ۴۸۷، ص ۲۵۲۔

③.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب ما یقول اذا رفع راسه من الركوع، الحديث: ۴۷۶-۴۷۷، ص ۲۴۷-۲۴۸۔

④.....صحیح مسلم، کتاب الصلاة، باب الدعاء فی صلاة اللیل وقیامه، الحديث: ۷۷۱، ص ۳۹۰-۳۹۱، مختصرًا۔

المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، الدعاء الجامع.....الخ، الحديث: ۲۰۰۰، ج ۲، ص ۲۲۳، مختصرًا۔

(1) ”या तीन मरतबा येह कहे : “سُبْحَنَ رَبِّيَ الْأَعْلَى” या’नी पाक है मेरा परवर दगार बुलन्दी वाला ।“

नमाज़ के बा’द की दुआ :

या’नी ऐ **अल्लाह** غَرْ وَجَلْ तू ही सलामती देने वाला है और तुझी से सलामती हासिल होती है । तू बड़ी बरकत वाला है ऐ अज़मत व बुजुर्गी वाले ! (2)
नमाज़ के बा’द मांगी जाने वाली दुआ में येह दुआ भी मांग लिया करें ।

मजलिस से उठते वक़्त की दुआ :

سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ عَمِلْتُ سُوءَ وَظَلَمْتُ نَفْسِي فَاعْفُرْ لِي فَإِنَّكَ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ
या’नी ऐ **अल्लाह** غَرْ وَجَلْ तेरी ज़ात पाक और लाइके हम्द है, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा’बूद नहीं, मैं तुझ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं और तेरी बारगाह में तौबा करता हूं मैं ने गुनाह किये और अपनी जान पर जुल्म किया, पस तू मेरी मग़फ़ित फ़रमा कि तेरे सिवा गुनाह बख़्शाने वाला कोई नहीं । (3)

जब तुम मजलिस बरखास्त करो और इस में होने वाली लगविख्यात का कफ़ारा चाहो तो येह दुआ पढ़ लिया करो ।

बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
या’नी **अल्लाह** غَرْ وَجَلْ के सिवा कोई मा’बूद नहीं, वोह अकेला है, उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है, वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ मौत न आएगी, तमाम भलाई उसी के दस्ते कुदरत में है और वोह हर चाहे पर कादिर है । (4)

بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ السُّوقِ وَخَيْرَ مَا فِيهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَصِيبَ فِيهَا يَمِينًا فَاجِرَةً أَوْ صَفْقَةً خَاسِرَةً.

①.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مقدار الركوع والسجود، الحديث: ۸۸۶، ج ۱، ص ۳۳۶۔

②.....صحيح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب استحباب الذكر بعد الصلاة.....الخ، الحديث: ۵۹۱، ص ۲۹۷۔

③.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، باب دعاء کفارة المجالس، الحديث: ۲۰۱۵، ج ۲، ص ۲۲۹۔

④.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا دخل السوق، الحديث: ۳۴۳۹، ج ۵، ص ۲۷۱۔

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से शुरूअ, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तुझ से इस बाज़ार और जो कुछ इस में है उस की भलाई तलब करता हूं, ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस बाज़ार और जो कुछ इस में मौजूद है उस के शर से। इलाही ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस से कि मैं झूटी क़सम खाऊं या घाटे का सौदा करूं।⁽¹⁾

अदाएगिये कर्ज की दुआ :

अगर मकरूज हैं तो येह दुआ पढ़िये : اللَّهُمَّ اكْفِنِي بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَأَغْنِنِي بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ
या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे हलाल रिज़क अता फ़रमा, हराम से बचा और अपने फज़्लो करम से अपने सिवा किसी का मोहताज न कर।⁽²⁾

नया लिबास पहनते वक्त की दुआ :

اللَّهُمَّ كَسَوْتَنِي هَذَا الثَّوْبَ فَلَكَ الْحَمْدُ اسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِهِ وَخَيْرِ مَا صُنِعَ لَهُ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا صُنِعَ لَهُ
या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरा शुक्र है कि तू ने मुझे येह कपड़ा पहनाया। मैं तुझ से इस की भलाई और जिस गरज के लिये येह बनाया गया है इस की भलाई मांगता हूं और इस की बुराई और जिस गरज के लिये येह बनाया गया है इस की बुराई से तेरी पनाह तलब करता हूं।⁽³⁾

जब कोई शगून⁽⁴⁾ दिल में खटके तो येह दुआ पढ़े :

اللَّهُمَّ لَا يَأْتِيَنِي بِالْحَسَنَاتِ إِلَّا أَنْتَ وَلَا يُذْهِبُ السَّيِّئَاتِ إِلَّا أَنْتَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ
या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ही भलाईयां अता फ़रमाता और बुराईयां दूर करता है और गुनाह से बचने की ताक़त और नेकी करने की कुव्वत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की मदद से है।⁽⁵⁾

①.....المستدرک، کتاب الدعاء والتکبیر.....الخ، باب دعاء دخول السوق، الحدیث: ۲۰۲۱، ج ۲، ص ۲۳۲۔

②.....سنن الترمذی، احادیث شتی، الحدیث: ۳۵۷۴، ج ۵، ص ۳۲۹۔

③.....سنن ابی داود، کتاب اللباس، باب ما یقول اذا لبس ثوبا جديدا، الحدیث: ۴۰۲۰، ج ۴، ص ۵۹۔

④..... एक हदीषे पाक जिस में शगून का जिक्र किया गया इस के तहत मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِکِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 6 स. 266 पर फ़रमाते हैं : फ़ाल से मुराद नेक फ़ाल है जो अच्छी बात है अच्छा नाम सुनने से ली जाए। या'नी येह जाइज़ है लेकिन कोई शख्स किसी काम को जाते वक्त नापसन्दीदा चीज़ देखे या सुने जिस से बद शगूनी ली जाए तो वोह महज़ इस वजह से अपने काम से वापस न हो। **अल्लाह** पर तवक्कुल करे और काम को जाए। इस के बारे में मज़ीद सफ़हा 255 पर फ़रमाते हैं : “नेक फ़ाल लेना सुन्नत है इस में **अल्लाह** तआला से उम्मीद है और बद फ़ाली लेना ममनूअ कि इस में रब्ब से ना उम्मीदी है। उम्मीद अच्छी है ना उम्मीदी बुरी। हमेशा रब्ब से उम्मीद रखो।”

⑤.....شعب الایمان للبيهقي، باب التوکل والتسليم، الحدیث: ۱۱۶۷، ج ۲، ص ۶۲۔

नया चांद देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ :

اللَّهُمَّ أَهْلَهُ عَلَيْنَا بِالْأَمْنِ وَالْإِيمَانِ وَالْبِرِّ وَالسَّلَامَةِ وَالْإِسْلَامِ وَالتَّوْفِيقِ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضَى وَالْحِفْظِ عَمَّنْ تَسْخُطُ رَبِّي وَرَبُّكَ اللَّهُ..... ﴿1﴾

या'नी ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَل इसे हम पर अमन, ईमान, नेकी, सलामती, इस्लाम और उस चीज की तौफीक का चांद बना कर चमका जिसे तू पसन्द करता है और जिस से तू राजी है और उस चीज से हिफाजत का चांद बना कर चमका जिस से तू नाराज होता है। (ऐ चांद !) मेरा और तेरा परवर दगार **अल्लाह** غَرْوَجَل है।⁽¹⁾

﴿2﴾.....चांद देख कर तीन दफ़ा “اللَّهُ أَكْبَرُ” कहिये और फिर यह दुआ पढ़िये :

هَلَالُ رُشْدِي وَخَيْرٌ أَمْنْتُ بِخَالِقِكَ اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الشَّهْرِ وَخَيْرَ الْقَدْرِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ يَوْمِ الْحُشْرِ

या'नी हिदायत और भलाई का चांद हो मैं उस पर ईमान लाया जो तेरा खालिक है।⁽²⁾
ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَل मैं तुझ से इस महीने की भलाई और अच्छी तक्दीर का सुवाल करता हूं और रोज़े महशर के शर से तेरी पनाह मांगता हूं।⁽³⁾

आंधी के वक़्त की दुआ :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذِهِ الرِّيحِ وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا وَمِنْ شَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ

या'नी इलाही ! मैं तुझ से इस आंधी की और जो कुछ इस में है और जिस के साथ यह भेजी गई है उस की भलाई का सुवाल करता हूं और मैं तेरी पनाह मांगता हूं इस के शर से और उस चीज के शर से जो इस में है और उस के शर से जिस के साथ यह भेजी गई।⁽⁴⁾

किसी के इन्तिकाल की ख़बर सुन कर पढ़ी जाने वाली दुआ :

إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ اللَّهُمَّ اكْتُبْهُ فِي الْمُحْسِنِينَ وَاجْعَلْ كِتَابَهُ فِي عِلِّيِّينَ وَأَخْلِفْهُ عَلَى عَقْبِهِ فِي الْغَابِرِينَ اللَّهُمَّ لَا تَحْرِمْنَا أَجْرَهُ وَلَا تَفْتِنْنَا بَعْدَهُ وَاعْفُ رَنَاوَلَهُ

1.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب مايقول عند رؤية الهلال، الحديث: ۳۲۶۲، ج ۵، ص ۲۸۱، مختصراً۔

المعجم الكبير، الحديث: ۱۳۳۳۰، ج ۱۲، ص ۲۷۳، مختصراً۔

2.....سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مايقول الرجل اذ ارأى الهلال، الحديث: ۵۰۹۲، ج ۴، ص ۴۲۰، بتغير۔

3.....المسند للإمام احمد بن حنبل، مسند الانصار، الحديث: ۲۲۸۵۵، ج ۸، ص ۴۲۲، بتغير۔

4.....سنن الترمذی، کتاب الفتن، باب ماجاء فی النهی عن سب الرياح، الحديث: ۲۲۵۹، ج ۴، ص ۱۱۱، بتغير۔

या'नी बेशक हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का माल हैं और हम को उसी की तरफ़ फिरना है और बेशक हम अपने रब्ब की तरफ़ पलटने वाले हैं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस का नाम नेकूकारों में लिख दे और इस का नाम आ'माल इल्लिय्यीन में कर दे और इस के पीछे रह जाने वालों की हिफ़ाज़त व निगेहबानी फ़रमा। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें इस के अज़्र से महरूम न रख और इस के बा'द आज़माइश में मुब्तला न कर और हमारी और इस की मग़फ़िरत फ़रमा।^(१)

सदक़ा देते वक़्त की दुआ :

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (پ، البقرة: ۱۲۷)

या'नी ऐ रब्ब हमारे ! हम से क़बूल फ़रमा बेशक तू ही है सुनता जानता।

कोई नुक़सान हो जाए तो येह दुआ पढ़िये :

عَسَى رَبَّنَا أَنْ يَبْدُلَنَا خَيْرًا مِنْهَا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا رَاغِبُونَ (پ، القلم: ۳۲)

या'नी उम्मीद है कि हमें हमारा रब्ब इस से बेहतर बदल दे, हम अपने रब्ब की तरफ़ रग़बत लाते हैं।

जाइज़ काम शुरू करते वक़्त की दुआ :

﴿1﴾ يَا'नी ऐ हमारे रब्ब ! हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर।

رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي (پ، طه: ۲۶، ۲۵)

या'नी ऐ मेरे रब्ब ! मेरे लिये मेरा सीना खोल दे और मेरे लिये मेरा काम आसान कर।

आश्मान की तरफ़ देखते वक़्त की दुआ :

﴿1﴾ يَا'नी ऐ हमारे रब्ब ! तू ने येह बेकार न बनाया पाकी है तूझे तू हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले।

﴿2﴾ يَا'नी बड़ी बरक़त वाला تَبَرَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا (پ، الفرقان: ۶۱)

है वोह जिस ने आश्मान में बुर्ज बनाए और इन में चराग़ रखा और चमकता चांद।

बादल के गरजने पर पढ़ी जाने वाली दुआ :

يَا'नी پاک ہے وہو جات गरज उसे सराहती हुई

उस की पाकी बोलती है और फिरिश्ते उस के डर से ।⁽¹⁾

जब आश्मानी बिजली चमके तो येह दुआ पढ़िये :

يَا'नी इलाही غرّوجلّ हमें अपने ग़ज़ब से

गरात न कर और अपने अज़ाब से हलाक न कर और हमें इस से पहले मुआफ़ फ़रमा ।⁽²⁾

बारिश के वक़्त की दुआ :

يَا'नी ऐ हमारे रब्ब ! ऐसी बारिश हो जो सैराब करने वाली, बा

बरकत और बहुत मुफ़ीद हो ।⁽³⁾

يَا'नी ऐ हमारे रब्ब ! ऐसी बारिश हो जो सैराब करने वाली, बा

बरकत और बहुत मुफ़ीद हो ।⁽³⁾

जब किसी पर गुस्सा आ जाए तो येह दुआ पढ़िये :

يَا'नी ऐ मेरे गुनाह

मुआफ़ फ़रमा, मेरे दिल के गुस्से को दूर फ़रमा और मुझे शैतान मरदूद से महफूज़ रख ।⁽⁵⁾

①.....الموطا للإمام مالك، كتاب الكلام، باب القول اذا سمعت الرعد، الحديث: ١٩٢٠، ج ٢، ص ٣٤٠.

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب ما يقول اذا سمع الرعد، الحديث: ٣٢٦١، ج ٥، ص ٢٨١.

③.....صحيح البخارى، كتاب الاستسقاء، باب ما يقال اذا امطرت، الحديث: ١٠٣٢، ج ١، ص ٣٥٣، مختصراً.

مشكاة المصابيح، كتاب الصلاة، باب فى الرياح، الحديث: ١٥٢٠، ج ١، ص ٢٩٢، مختصراً.

④.....السنن الكبرى للنسائى، كتاب عمل اليوم والليلة باب ما يقول اذا كشفه الله، الحديث: ١٠٤٥٢، ج ٦، ص ٢٢٤.

⑤.....المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث ام سلمة زوج النبى، الحديث: ٢٦٦٣٨، ج ١٠، ص ٩٣.

किसी कौम से ख़तरे के वक़्त की दुआ :

اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ يَا'नी ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَلْ हम इन के मुक़ाबिल तुझे करते हैं और इन के शर से तेरी पनाह चाहते हैं ।⁽¹⁾

कुपफ़ार से जिहाद करते वक़्त की दुआ :

اللَّهُمَّ أَنْتَ عَضِدِي وَنَصِيرِي وَبِكَ أَقَاتِلُ يَا'नी ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَلْ तू मुझे कुव्वत देने वाला और मददगार है, तेरे ही भरोसे मैं जिहाद करता हूँ ।⁽²⁾

कान बजते हों तो.....!

जब कान बजते हों तो दुरूदे पाक पढ़ कर येह कलिमात पढ़िये : “ذَكَرَ اللَّهُ مَنْ ذَكَرْنِي بِغَيْرِ”
या'नी **अल्लाह** غَرْوَجَلْ उस का चर्चा फ़रमाए जो मुझे भलाई के साथ याद करे ।

दुआ की कबूलियत पर येह दुआ पढ़िये :

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي بِعِزَّتِهِ وَجَلَّالِهِ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ يَا'नी सब ख़ूबियां **अल्लाह** غَرْوَجَلْ के लिये जिस की इज़्ज़त व बुजुर्गी के सदेक़े नेकियां मुकम्मल होती हैं ।⁽³⁾

और दुआ में ताख़ीर महसूस हो तो कहे :

الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ يَا'नी **अल्लाह** غَرْوَجَلْ का शुक्र है हर हाल में ।⁽⁴⁾

अजाने मग़रिब के वक़्त की दुआ :

اللَّهُمَّ هَذَا إِقْبَالُ لَيْلِكَ وَإِدْبَارُ نَهَارِكَ وَأَصْوَاتُ دُعَائِكَ وَحُضُورُ صَلَوَاتِكَ أَسْأَلُكَ أَنْ تَغْفِرَ لِي يَا'नी ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَلْ येह वक़्त तेरी रात के आने और तेरे दिन के जाने का है, येह तेरी तरफ़ बुलाने वालों की सदाएं हैं और तेरी नमाज़ों के लिये हाज़िर होने का वक़्त है, (ऐ **अल्लाह** غَرْوَجَلْ) मैं तुझ से अपनी मग़फ़िरत का सुवाली हूँ ।⁽⁵⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب مايقول الرجل اذاخاف قوماً، الحديث: ١٥٣٤، ج ٢، ص ١٢٤۔

②.....سنن ابی داود، کتاب الجهاد، باب مايدعى عنداللقاء، الحديث: ٢٦٣٢، ج ٣، ص ٥٩۔

③.....المعجم الكبير، الحديث: ٩٥٨، ج ١، ص ٣٢٢، بتقدم وناخر۔

④.....کنز العمال، کتاب الاذکار، الباب الثامن فی الدعاء، الحديث: ٣١٤٩، ج ٢، ص ٣٣، دون قوله: بعزته وجلاله۔

⑤.....سنن ابی داود، کتاب الصلاة، باب مايقول عنداذان المغرب، الحديث: ٥٣٠، ج ١، ص ٢٢٣، دون قوله: وحضور صلواتک اسالک۔

कोई ग़म पहुंचे तो येह दुआ पढ़िये :

اللَّهُمَّ إِنِّي عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَأَبْنُ أَمَّتِكَ نَاصِيَتِي بِيَدِكَ مَاضٍ فِي حُكْمِكَ عَدْلٌ فِي قَضَائِكَ أَسْأَلُكَ بِكُلِّ اسْمٍ هُوَ لَكَ سَمِيَتْ بِهِ نَفْسُكَ أَوْ أُنْزِلَتْ فِي كِتَابِكَ أَوْ عَلِمْتَهُ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ أَوْ اسْتَأْثَرْتُ بِهِ فِي عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَكَ أَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ رَبِيعَ قَلْبِي وَنُورَ صَدْرِي وَجَلَاءَ غَمِّي وَذَهَابَ حُزْنِي وَهَبِي

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तेरा बन्दा हूं और तेरे बन्दे और तेरी बन्दी का बेटा हूं। मेरी पेशानी तेरे दस्ते कुदरत में है। तेरा हुक्म जारी रहने वाला, तेरा फैसला ऐन इन्साफ़ है। मैं तुझ से तेरे हर उस नाम की बरकत से जो तू ने अपना रखा या जो नाम तू ने अपनी किताब में उतारा या जो नाम अपनी मख़्लूक में से किसी को सिखाया या जो नाम अपने पास पर्दे ग़ैब में पोशीदा रखा येह सुवाल करता हूं कि तू कुरआन को मेरे दिल की बहार, मेरे सीने का नूर, मेरे ग़म की दवा और मेरे रंजो अलम को दूर करने वाला बना दे।⁽¹⁾

ग़मगुसारे उम्मत, शफ़ीए रोज़े कियामत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अफ़ियत निशान है : “जो ग़मगीन इस दुआ को पढ़ लेगा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के ग़म को फ़रहत में बदल देगा।” अर्ज की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ क्या हम येह दुआ सीख न लें ?” फ़रमाया : “क्यूं नहीं, जो येह दुआ सुने उसे चाहिये कि इसे याद भी कर ले।”⁽²⁾

जिस्म में दर्द हो तो येह दुआ पढ़िये :

अगर तुम्हें या किसी और को जिस्म में दर्द हो तो शफ़ीए उमम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दम से इस का इलाज करो कि जब किसी को फोड़ा या ज़ख़म वगैरा होता तो रसूले जीवफ़ार, शहनशाहे अबरार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी शहादत की उंगली ज़मीन पर रखते फिर उठा कर येह कलिमात पढ़ते : بِسْمِ اللَّهِ تَرَبُّةً أَرَضْنَا بَرَقِيَةً بَعْضُنَا يَشْفِي سَقِيمًا بِإِذْنِ رَبِّكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नाम से, हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से किसी के दम के सबब हमारे बीमार को हमारे परवर दगार عَزَّ وَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा देती है।⁽³⁾

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٤١٢، ج ٢، ص ٢١-

②.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند عبد الله بن مسعود، الحديث: ٣٤١٢، ج ٢، ص ٢٢-

③.....صحيح مسلم، كتاب السلام، باب استحباب الرقية من العين.....الخ، الحديث: ٢١٩٢، ص ١٢٠٦-

जब जिस्म में दर्द हो तो दर्द वाली जगह पर उंगली रख कर तीन मरतबा **بِسْمِ اللَّهِ** और सात मरतबा येह दुआ पढ़िये : **‘أَعُوذُ بِعِزَّةِ اللَّهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا أَحْدُ وَأَحْذَرُ’** या'नी मैं **अल्लाह** की इज्जत व कुदरत से उस चीज के शर से पनाह मांगता हूं जिस को मैं पाता हूं और जिस से मैं डरता हूं।⁽¹⁾

मुसीबत के वक़्त की दुआ :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْعَلِيُّ الْحَلِيمُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ

या'नी बुलन्द और बुर्दबार **अल्लाह** के सिवा कोई मा'बूद नहीं। बड़े अर्श के परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं। सातों आस्मानों और इज्जत वाले अर्श के परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** के सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं।⁽²⁾

सोते वक़्त के अवशद और दुआएं :

जब सोने का इरादा हो तो बा वुजू और क़िब्ला रू हो कर सीधी करवट लेटिये और फिर 34 मरतबा **الْحَمْدُ لِلَّهِ** 33 मरतबा **سُبْحَانَ اللَّهِ** 33 मरतबा **اللَّهُ أَكْبَرُ** कीजिये :

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ وَبِمَعْفَاتِكَ مِنْ عِقَابِكَ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْكَ اللَّهُمَّ إِنِّي لَا أَسْتَطِيعُ أَنْ أَبْلُغَ ثَنَاءً عَلَيْكَ...⁽¹⁾
وَلَوْ حَرَصْتُ وَلَكِنْ أَنْتَ كَمَا أَثْنَيْتَ عَلَى نَفْسِكَ

या'नी इलाही ! मैं तेरी रिज़ा की तेरी नाराज़ी से, तेरे अफ़वो दरगुज़र की तेरी सज़ा से और तुझ से तेरी पनाह मांगता हूं ऐ मौला **عَزَّوَجَلَّ** अगर मैं चाहूं तब भी तेरी षना का हक़ अदा नहीं कर सकता बस तेरी ज़ात के लाइक तो वोह ता'रीफ़ है जो तू ने खुद अपनी फ़रमाई।⁽³⁾

اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا...⁽²⁾

या'नी ऐ **अल्लाह** मैं तेरे नाम के साथ ही मरता और जीता (सोता और जागता) हूं।⁽⁴⁾

اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ وَرَبَّ الْأَرْضِ وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهَ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوَى وَمُنْزِلَ التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ ذِي شَرٍّ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا أَنْتَ الْأَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُونَكَ شَيْءٌ اقْضْ عَنِّي الدَّيْنَ وَأَغْنِنِي مِنَ الْفَقْرِ.

1.....صحیح مسلم، کتاب السلام، باب استحباب وضع یدہ علی موضع الالم مع الدعاء، الحدیث: ۲۲۰۲، ص ۱۲۰۹۔

2.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب دعاء الكرب، الحدیث: ۲۷۳۰، ص ۱۲۶۱۔

3.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب التسمیة اول النهار.....الخ، الحدیث: ۲۷۲۷، ص ۱۲۶۰، بتغییر۔

السنن الكبرى للنسائي، کتاب الوتر، مايقول فی آخر وتره، الحدیث: ۱۲۴۴، ج ۱، ص ۴۵۲، مختصراً۔

4.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب مايقول عندالنوم.....الخ، الحدیث: ۲۷۱۱، ص ۱۲۵۳۔

या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ऐ ज़मीनो आस्मान और हर चीज़ के परवर दगार व मालिक ! दाने और गुठली को चीरने वाले ! तौरात, इन्जील और कुरआने मजीद को नाज़िल करने वाले ! मैं तुझ से हर शरीर के शर और हर जानवर के शर से तेरी पनाह मांगता हूं जिस की चोटी तेरे कब्ज़े कुदरत में है। तू अव्वल है तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं। तू आखिर है तेरे बा'द कोई चीज़ नहीं। तू ज़ाहिर है तुझ से ऊपर कोई चीज़ नहीं। तू बातिन है तुझ से दूर कोई चीज़ नहीं। मुझ से कर्ज़ दूर कर और मोहताजी से नजात अता फ़रमा।⁽¹⁾

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ خَلَقْتَ نَفْسِيْ وَاَنْتَ تَتَوَقَّاهَا لَكَ مَمَاتُهَا وَمَحْيَاهَا اَللّٰهُمَّ اِنْ اَمْتَهَا فَاغْفِرْ لَهَا وَاِنْ اَحْيَيْتَهَا فَاحْفَظْهَا.....﴿4﴾
اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ الْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ

या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तू ने ही मेरी जान पैदा की और तू ही इसे मौत देगा। मौत व हयात का तू ही मालिक है। ऐ **اَلलّٰहु** जब तू इसे मौत दे तो इसे बख़्श दे और अगर ज़िन्दगी अता करे तो इस की हिफ़ाज़त फ़रमा। ऐ **اَلलّٰहु** मैं तुझ से दोनों ज़हान की अफ़ियत का तलबगार हूं।⁽²⁾

بِاسْمِكَ رَبِّىْ وَضَعْتَ جَنْبِىْ فَاغْفِرْ لِّىْ ذَنْبِىْ.....﴿5﴾

या'नी मेरे परवर दगार **عَزَّوَجَلَّ** तेरे नाम के साथ करवट लेता हूं पस मेरे गुनाह मुआफ़ फ़रमा।⁽³⁾

اَللّٰهُمَّ قِنِّىْ عَذَابَكَ يَوْمَ تَجْمَعُ عِبَادَكَ.....﴿6﴾

या'नी ऐ **اَلलّٰहु** **عَزَّوَجَلَّ** रोज़े महशर मुझे अपने अज़ाब से महफूज़ रखना।⁽⁴⁾

اَللّٰهُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِيْ اِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِيْ اِلَيْكَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِيْ اِلَيْكَ وَالْجَانَّتْ ظَهْرِيْ اِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً اِلَيْكَ.....﴿7﴾
لَا مُلْجَا وَلَا مُنْجٰى مِنْكَ اِلَّا اِلَيْكَ اَمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِىْ اَنْزَلْتَ وَنَبِيِّكَ الَّذِىْ اَرْسَلْتَ

या'नी ऐ **اَلलّٰहु** **عَزَّوَجَلَّ** मैं ने अपना आप तेरे सिपुर्द किया, अपना रुख़ तेरी तरफ़ किया और अपने मुआमलात तेरे सिपुर्द किये। मैं ने अपनी पुश्त तेरी पनाह में दी तेरी तरफ़ रग़बत करते हुए और तुझ से डरते हुए, तेरी बारगाह के सिवा कोई जाए पनाह नहीं और कोई जाए नजात नहीं। मैं तेरी नाज़िल कर्दा किताब और तेरे भेजे हुए रसूल पर ईमान लाया।⁽⁵⁾

①.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب مايقول عندالنوم.....الخ، الحديث: ۲۷۱۳، ص ۱۴۵۵-۱۴۵۴۔

②.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب مايقول عندالنوم.....الخ، الحديث: ۲۷۱۲، ص ۱۴۵۴۔

③.....کنز العمال، کتاب المعیشتہ والعادات، الحديث: ۴۱۹۶۳، ج ۱۵، ص ۲۱۱۔

④.....سنن ابی داود، کتاب الادب، باب مايقول عندالنوم، الحديث: ۵۰۴۵، ج ۴، ص ۴۰۴، "تجمع" بدله "تبعث"۔

الشمائل المحمدية للترمذی، باب ماجاء فی صفة نوم رسول الله، الحديث: ۲۴۲، ص ۱۵۷۔

⑤.....صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء.....الخ، باب مايقول عندالنوم.....الخ، الحديث: ۲۷۱۰، ص ۱۴۵۳-۱۴۵۴، بتقدم و تاخر۔

सोते वक्त के अवराद में से येह दुआ आखिर में मांगनी चाहिये कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इसी का हुक्म इरशाद फरमाया और इस से पहले येह दुआ मांगिये :

﴿8﴾ اللَّهُمَّ أَيْقُظْنِي فِي أَحَبِّ السَّاعَاتِ إِلَيْكَ وَاسْتَعْمِلْنِي بِأَحَبِّ الْأَعْمَالِ إِلَيْكَ تَقَرِّبْنِي إِلَيْكَ زُلْفَى وَتُبْعِدْنِي مِنْ.....
سَخَطِكَ بَعْدًا أَسْأَلُكَ فَتُعْطِيَنِي وَاسْتَغْفِرُكَ فَتَغْفِرَ لِي وَأَدْعُوكَ فَتَسْتَجِيبَ لِي

या'नी ऐ **अल्लाह** عز وجل मुझे उस घड़ी बेदार फरमा जो तुझे सब से ज़ियादा पसन्द हो और उन कामों में मशगूल फरमा जो तेरी बारगाह में पसन्दीदा, तेरा कुर्ब अता करने वाले और तेरे ग़ज़ब को दूर करने वाले हों। मैं तुझ से सुवाल करता हूँ मुझे अता कर, तुझ से मग़फ़िरत त़लब करता हूँ मेरी मग़फ़िरत फरमा, तेरी बारगाह में दुआ गो हूँ मेरी दुआ कबूल फरमा।⁽¹⁾

नींद से बेदार होते वक्त की दुआएं :

﴿1﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُور..... या'नी सब खूबियां **अल्लाह** عز وجل को जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द हयात (बेदारी) अता फरमाई और उसी की तरफ़ उठना है।⁽²⁾

﴿2﴾ أَصْبَحْنَا وَأَصْبَحَ الْمُلْكُ لِلَّهِ وَالْعِزَّةُ وَالسُّلْطَانُ لِلَّهِ وَالْعِزَّةُ وَالْقُدْرَةُ لِلَّهِ..... या'नी हम ने और **अल्लाह** عز وجل के मुल्क ने सुब्ह की, अज़मत व बादशाहत और इज़ज़त व कुदरत **अल्लाह** عز وجل ही के लिये है।⁽³⁾

﴿3﴾ أَصْبَحْنَا عَلَى فِطْرَةِ الْإِسْلَامِ وَكَلِمَةِ الْإِخْلَاصِ وَعَلَى دِينِ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ.....
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ

या'नी हम ने सुब्ह की इस हाल में कि हम इस्लाम और कलिमए तौहीद पर ए'तिकाद रखते हैं और अपने नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दीन पर हैं और अपने जदे अमजद हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के दीन पर हैं जो हर बातिल से जुदा थे और मुशरिकों से न थे।⁽⁴⁾

①..... قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع..... الخ، ج 1، ص 22.

②..... صحيح مسلم، كتاب الذكر والدعاء..... الخ، باب ما يقول عند النوم..... الخ، الحديث: 1/241، ص 1252.

③..... قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع..... الخ، ج 1، ص 23.

④..... المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند المكيين، الحديث: 15360، ج 5، ص 238.

اللَّهُمَّ بِكَ أَصْبَحْنَا وَبِكَ أَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيَا وَبِكَ نَمُوتُ وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ..... ﴿4﴾

या'नी इलाही ! हम ने तेरी मेहरबानी से सुबह की, तेरी ही मेहरबानी से शाम करेंगे और तेरी ही मेहरबानी से जियेंगे और तेरे ही फज़ल से मौत से हम कनार होंगे और तेरी ही तरफ़ फिरना है । (1)

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ أَنْ تَبْعَثَنِي فِي هَذَا الْيَوْمِ إِلَى كُلِّ خَيْرٍ وَتَعُوذُ بِكَ أَنْ تَجْتَرِحَ فِيهِ سُوءٌ أَوْ تَجْرَةَ إِلَى مُسْلِمٍ.... ﴿5﴾

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि आज के दिन हमें हर खैर की तरफ़ उठा और हम किसी बुराई में पड़ने या किसी मुसलमान को बुराई में मुब्तला करने से तेरी पनाह मांगते हैं ।

क्योंकि तू खुद अपनी पाक किताब कुरआने मजीद में फ़रमाता है :

وَهُوَ الَّذِي يُؤَقِّمُكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ۖ (ب-٤، الانعام: ٦٠)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोही है जो रात को तुम्हारी रुहें क़ब्ज़ करता है और जानता है जो कुछ दिन में कमाओ फिर तुम्हें दिन में उठाता है कि ठहराई हुई मीआद पूरी हो ।

اللَّهُمَّ فَالِقَ الْإِصْبَاحِ وَجَاعِلَ اللَّيْلِ سَكَنًا وَالشَّمْسِ وَالْقَمَرِ حُسْبَانًا أَسْأَلُكَ خَيْرَ هَذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ مَا فِيهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهِ وَشَرِّ مَا فِيهِ..... ﴿6﴾

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ तारीकी चाक कर के सुबह निकालने वाले ! रात को चैन का ज़रीआ बनाने वाले ! सूरज और चांद को हिसाब का ज़रीआ बनाने वाले । मैं तुझ से इस दिन और जो कुछ इस में है इस की भलाई का सुवाल करता हूँ और मैं तुझ से इस दिन और जो कुछ इस में है इस के शर से पनाह मांगता हूँ । (2)

بِسْمِ اللَّهِ مَاشَاءَ اللَّهِ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ كُلُّ نَعْمَةٍ مِنَ اللَّهِ مَاشَاءَ اللَّهِ الْخَيْرُ كُلُّهُ بِيَدِ اللَّهِ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا يَصْرِفُ السُّوءَ إِلَّا اللَّهُ (3)..... ﴿7﴾

رَضِيتُ بِاللَّهِ رَبًّا وَبِالْإِسْلَامِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ نَبِيًّا (4) رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنْتَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

या'नी **अल्लाह** के नाम से शुरूअ जो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ चाहे उस के बिगैर कोई कुव्वत नहीं, जो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ चाहे हर ने'मत उसी की तरफ़ से है, जो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ चाहे हर भलाई **अल्लाह** के ही दस्ते कुदरत में है, जो **अल्लाह** عَزَّ وَजَلَّ चाहे बुराइयों को टालने वाला **अल्लाह** के सिवा कोई नहीं । मैं **अल्लाह** के रब्ब होने, इस्लाम के दीन होने और मुहम्मद صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नबी होने पर राजी हूँ । ऐ हमारे रब्ब ! हम ने तुझी पर भरोसा किया और तेरी ही तरफ़ रुजूअ लाए और तेरी ही तरफ़ फिरना है ।

1..... سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ما یقول اذا صبح، الحدیث: ۵۰۶۸، ج ۴، ص ۴۱۲، "الیک النشور" مکان "الیک المصیر"۔

2..... قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع..... الخ، ج ۱، ص ۶۳۔

3..... قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع..... الخ، ج ۱، ص ۶۳۔

تاریخ دمشق لابن عساکر، الخضر، ج ۱۶، ص ۴۲۷، دون "الخیر کلہ بیداللہ"۔

4..... سنن ابی داود، کتاب الادب، باب ما یقول اذا صبح، الحدیث: ۵۰۷۲، ج ۴، ص ۴۱۳۔

शाम के वक्त की दुआ :

शाम के वक्त भी नींद से बेदारी की तमाम दुआएं पढ़ियें अलबत्ता लफ़्ज़ (أَصْبَحْنَا) या'नी हम ने सुब्ह की) की जगह (أَمْسَيْنَا) या'नी हम ने शाम की) पढ़ें और येह दुआ भी पढ़ सकते हैं :

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ وَأَسْمَائِهِ كُلِّهَا مِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ وَبَرَأَ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ ذِي شَرٍّ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ أَنْتَ
أَخِذْ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ

या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के तमाम कलिमात और उस के तमाम अस्माए हुस्ना के साथ पनाह मांगता हूं हर उस चीज़ के शर से जिसे उस ने वुजूद बख़्शा और जिसे उस ने पैदा किया और हर शरीर के शर से और ज़मीन पर रहने वाली हर उस चीज़ के शर से जिस की चोटी तेरे कब्ज़ए कुदरत में है। बेशक मेरा रब्ब सीधे रास्ते पर मिलता है।⁽¹⁾

आईना देखते वक्त की दुआ :

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي سَوَّى خَلْقِي فَعَدَلَهُ وَكَرَّمَ صُورَةَ وَجْهِهِ وَحَسَّنَهَا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ

या'नी सब खूबियां **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ को जिस ने मेरी तख़लीक़ बराबर और ए'तिदाल के साथ फ़रमाई और मेरे चेहरे को इज़्ज़त और अच्छी सूरत बख़्शी और मुझे मुसलमान बनाया।⁽²⁾

कोई चीज़ ख़रीदते वक्त की दुआ :

जब कोई जानवर या कोई और चीज़ ख़रीदें तो उस की पेशानी पकड़ कर येह कलिमात पढ़िये اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا خَيْرٍ مَا جِبِلَ عَلَيْهِ وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا جِبِلَ عَلَيْهِ या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से इस की और जिस फ़ितरत पर इसे रखा गया है इस की ख़ैर का सुवाल करता हूं और इस के शर और जिस फ़ितरत पर इसे रखा गया है इस के शर से मैं तेरी पनाह मांगता हूं।⁽³⁾

①.....قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع.....الخ، ج ١، ص ٦٣۔

تاریخ دمشق لابن عساکر، ذکر من اسمه کعب، کعب بن مانع بن هیسوع.....الخ، ج ٥٠، ص ١٢٦۔

②.....المعجم الاوسط، الحديث: ٤٨٤، ج ١، ص ٢٣٠۔

③.....سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب فی جامع النکاح، الحديث: ٢١٦٠، ج ٢، ص ٣٦٢۔

निकाह की मुबारक बाद देते वक्त की दुआ :

بَارَكَ اللَّهُ فِيكَ وَبَارَكَ عَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِي خَيْرٍ. या'नी **अल्लाह** عزوجل तुझे बरकत दे, तुझ पर बरकत नाज़िल फ़रमाए और तुम दोनों को भलाई के साथ जम्भ रखे ।⁽¹⁾

कर्ज अदा करते वक्त की दुआ :

कर्ज अदा करते हुए कर्ज ख़्वाह को येह दुआ भी दीजिये : بَارَكَ اللَّهُ لَكَ فِي أَهْلِكَ وَمَالِكَ : या'नी **अल्लाह** عزوجل तेरे अहलो माल में बरकत अता फ़रमाए । क्यूंकि रहमते अलमियान, सरवरे जीशान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है कि “कर्ज का इवज शुक्रिया और अदाएगी है ।”⁽²⁾

मज़कूरा बाला दुआएं वोह हैं कि राहे आख़िरत के मुसाफ़िर के लिये इन्हें याद करना ज़रूरी है । इस के इलावा मज़ीद जैसे सफ़र, वुजू और नमाज़ वगैरा की दुआएं किताबुल हज़, किताबुस्सलात और किताबुत्तहारत में बयान की जा चुकी हैं ।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर आप के ज़ेहन में येह वस्वसा आए कि दुआ मांगने का क्या फ़ाइदा है हालांकि तक्दीर को कोई चीज़ नहीं टाल सकती ? तो जान लीजिये कि दुआ के सदके बलाओं का दूर होना भी तक्दीर से है । लिहाज़ा दुआ बलाएं दूर करने और रहमत पाने का एक सबब है जैसे ढाल तीर से बचाने का और पानी ज़मीन से सब्जियां उगाने का एक ज़रीआ है, तो जिस तरह ढाल तीर से बचाती है और दोनों एक दूसरे के मुक़ाबिल आ जाती हैं इसी तरह दुआ और बला भी एक दूसरे के मुक़ाबिल रहती हैं । **अल्लाह** عزوجل की तक्दीर पर ईमान लाने से येह ज़रूरी नहीं हो जाता कि हथियार न उठाए जाएं, ऐसा नहीं बल्कि खुद **अल्लाह** عزوجل का हुक्म है :

”خُذُوا حِذْرَكُمْ (النساء: १०२) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** : अपनी पनाह लिये रखो ।”

और अगर ऐसा हो तो फिर तो ज़मीन में बीज बो कर इसे पानी ही न दिया जाए और येह ज़ेहन बना लिया जाए कि अगर मुक़द्दर में सब्जी का उगना हुवा तो उग आएगी अगर तक्दीर में नहीं तो नहीं उगेगी । मुसबब का सबब से मरबूत होना ही पहली तक्दीर है जो पलक झपकने बल्कि इस से भी ज़ियादा तेज़ है । फिर बतदरीज सबब के साथ साथ मुसबब का तरत्तुब होता है और तक्दीर येह है कि ख़ैर व शर का फैसला हो चुका यूं कि ख़ैर को किसी सबब के साथ और शर को इसे दूर करने वाले किसी सबब के साथ मुक़द्दर फ़रमाया गया है ।

①.....سنن ابی داود، کتاب النکاح، باب ما یقال للمتزوج، الحدیث: ۲۱۳۰، ج ۲، ص ۳۵۱۔

②.....سنن النسائی، کتاب البیوع، الاستقراض، الحدیث: ۴۶۹۲، ص ۷۵۳۔

फिर दुआ के दीगर फ़वाइद भी हैं जिन्हें फ़ज़ाइले ज़िक्र के तहत बयान किया जा चुका है। इन में से एक येह है कि दुआ के सबब दिल में इख़्लास पैदा किया जाता है और इबादत से अस्ल मक्सूद भी येही है। सय्यिदुल आबिदीन, महबूबे रब्बुल आलमीन صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिलनशीन है : **“(1) ”** **”الدُّعَاءُ مُمْرُ الْعِبَادَةِ“** दुआ इबादत का मग़ज़ है।

आम मुशाहदा भी येही है कि मख़्लूक के दिल ज़िक्रुल्लाह की तरफ़ उस वक़्त मुतवज्जेह होते हैं जब वोह किसी हाज़त बरआरी के तालिब या परेशानी का शिकार होते हैं। क्यूंकि इन्सान की फ़ितरत है कि जब उसे कोई तकलीफ़ पहुंचती है तब वोह लम्बी लम्बी दुआएं करता है, लिहाज़ा हाज़त बरआरी के लिये दुआ की ज़रूरत मुसल्लम है और दुआ दिल को अजिज़ी व मिस्कीनी के साथ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ मुतवज्जेह कर देती है। नीज़ दुआ ज़िक्रे इलाही का ज़रीआ है जिस का शुमार अशरफ़ इबादात में होता है। इसी वजह से अम्बियाए किराम व औलियाए उज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और दीगर मुक़र्रबीने बारगाह पर हस्बे मरातिब ज़ियादा मसाइब नाज़िल होते हैं। क्यूंकि मसाइब दिल को मोहताजी और अजिज़ी के साथ बारगाहे इलाही की तरफ़ मुतवज्जेह रखते हैं उस की याद से ग़ाफ़िल नहीं करते। जब कि मालदारी उमूमन तकब्बुर का सबब बनती है, कि बन्दा जब खुद को ग़नी समझता है तो सरकश हो जाता है।

जिन अज़कार और दुआओं को बयान करने का हम ने इरादा किया था वोह पूरी हो चुकी हैं। भलाई की तौफीक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ही देता है। खाने, सफ़र और इयादत वगैरा जैसी दीगर दुआएं **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अपने अपने मक़ाम पर बयान की जाएंगी। ज़ाते इलाही पर ही भरोसा है। अज़कार व दुआओं का बयान पायए तक्मील को पहुंचा इस के बा'द वज़ाइफ़ व अवराद का बयान आएगा। **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَعَلَىٰ آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ



अवश्राफ़ की बरतीब और शब बेदारी की

बफ़्शील का बयान

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों पर उस की कषीर हम्द करते हैं, ऐसा ज़िक्र करते हैं जो दिल में तकब्बुर व गुरूर को नहीं रहने देता, उस का शुक्र अदा करते हैं कि उस ने दिन ज़िक्र व शुक्र का इरादा करने वाले के लिये रात को एक दूसरे के बा'द आने जाने वाला बनाया और दुरूद भेजते हैं उस के प्यारे नबी हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर जिन्हें बशीर व नज़ीर बना कर हक़ के साथ मबरूफ़ फ़रमाया और दुरूद भेजते हैं इन की आल व अस्हाब पर कि जिन्होंने ने इबादत में सुब्हो शाम कोशिशें कीं हत्ता कि इन में से हर एक दीन में हिदायत देने वाला सितारा और रोशन चराग़ बन गया ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन को अपने बन्दों के ताबेअ़ इस लिये नहीं किया कि वोह बुलन्दो बाला मकानों (को दाइमी ठिकाना समझ कर इस) में सुकूनत पज़ीर हो जाएं बल्कि इस लिये ताबेअ़ बनाया कि वोह इसे (मुसाफ़िर की तरह) क़ियाम गाह जानें और महूज़ इतना ज़ादे राह लें जो वतने अस्ली (या'नी आख़िरत) के सफ़र में उन के काम आए, इस के जालों व हलाकतों से बचते हुए अपने लिये अमल व फ़ज़ल के तोहफ़े ज़ख़ीरा करें और यकीन कर लें कि उम्र उन्हें ऐसे लिये जाती है जैसे किशती अपने सुवारों को । लोग दुन्या में मुसाफ़िर हैं, इन की पहली मन्ज़िल झूला और आख़िरी क़ब्र है, इन का वतन जन्नत या जहन्नम, उम्र सफ़र की मसाफ़त, साल सफ़र के मराहिल, महीने सफ़र के फ़रसंग⁽¹⁾ दिन सफ़र के मील, सांस सफ़र के क़दम, इताअत सफ़र के लिये ज़ादे राह, अवकात सफ़र का अस्ल सरमाया और शहवात व अग़राज़ रास्ते के डाकू हैं । इस का नफ़अ जन्नत में बड़ी सलतनत और ने'मत के साथ **अल्लाह** तआला का दीदार करने में कामयाब होना और इस का नुक़सान जहन्नम के तबकात में बेड़ियों, तोक़ों और दर्दनाक अज़ाब के साथ **अल्लाह** तआला से दूरी है । तो जो एक सांस के मुआमले में भी ग़फ़लत करता और उसे कुर्बे इलाही का सबब बनने वाली इताअत के बिग़ैर गुज़ारता है । तो क़ियामत के दिन उसे बे इन्तिहा नुक़सान व हसरत का सामना होगा । इसी बड़े ख़तरे और हौलनाक अम्र की वजह से तौफ़ीक़ याफ़ता लोग मेहनत व कोशिश के लिये तय्यार हो गए और

① एक फ़रसंग तीन मील का होता है । (मुलतक़तन फ़तावा रज़विया, जि.8 स.255)

लज़्ज़ाते नफ़्सानी को यक्सर छोड़ दिया, अपनी बक़िय्या उम्र को ग़नीमत जान कर दिन रात ज़िक्रे इलाही में बसर करने के शौक़, कुर्बे इलाही के हुसूल और दारुल क़रार (या'नी आख़िरत) की तरफ़ कोशिश करते हुए मुख़्तलिफ़ अवक़ात के ए'तिबार से जुदा जुदा अवरादो वज़ाइफ़ मुरत्तब किये। लिहाज़ा तरीक़े आख़िरत के इल्म में येह ज़रूरी है कि तक्सीमे अवराद की तफ़्सील बयान की जाए, नीज़ इबादात कि जिन की तशरीह पीछे गुज़र चुकी इन्हें मुख़्तलिफ़ अवक़ात के मुताबिक़ तक्सीम कर दिया जाए। येह दो अबवाब से वाज़ेह होगा।

पहला बाब : अवराद की फ़ज़ीलत और रात दिन में इन की तरतीब के बयान पर मुश्तमिल है।
दूसरा बाब : शब बेदारी का तरीक़ा, इस की फ़ज़ीलत और इस से तअल्लुक़ रखने वाली बातों के बयान पर मुश्तमिल है।



«.....नेकियों का ज़ख़ीरा.....»

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अब्बाह व रसूल ﷺ की खुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये “दा'वते इस्लामी” के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से “मदनी इन्आमात” नामी रिसाला हासिल कर के इस के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब सुन्नतों की बहारें लूटिये। “दा'वते इस्लामी” के सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये बे शुमार मदनी क़ाफ़िले शहर ब शहर, गाऊं ब गाऊं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये “नेकियों का ज़ख़ीरा” इक़ठा करें। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** आप अपनी ज़िन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर “मदनी इन्क़िलाब” बर्पा होता देखेंगे।

बाब नम्बर 1 : अवराद की फज़ीलत और तश्बीह व

अहकाम का बयान

अवराद की फज़ीलत और इन की पाबन्दी का बयान कि
येही बाश्गाहे इलाही तक रशाई का ज़रीआ है

जान लीजिये कि नूरे बसीरत से मुशाहदा करने वाले लोग येह बात जानते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुलाकात के सिवा कहीं नजात नहीं और मुलाकात का रास्ता सिवाए इस के कुछ नहीं कि बन्दा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से महबूब करते हुए दुन्या से रुख़्सत हो, इसे मा'रिफ़ते इलाही भी हासिल हो। महबूब के दाइमी ज़िक्र और इस पर मुवाज़हत के बिग़ैर उस से महबूब व उन्स हासिल नहीं होता और न ही उस की ज़ात व सिफ़ात और अफ़आल में दाइमी ग़ौरो फ़िक्र के बिग़ैर उस की मा'रिफ़त हासिल होती है। ज़ाते बारी तआला और उस के अफ़आल के सिवा किसी का वुजूद नहीं, दुन्या और इस की शहवात को छोड़े बिग़ैर और इस में से ब क़दरे ज़रूरत लेने पर इक्तिफ़ा किये बिग़ैर दाइमी ज़िक्रो फ़िक्र मुयस्सर नहीं होता और येह उसी वक़्त होगा जब बन्दा अपने दिन रात को ज़िक्रो फ़िक्र के वज़ाइफ़ में मसरूफ़ रखे। नफ़्स चूँकि फ़ित्री तौर पर थकावट व उक्ताहट का शिकार हो जाता है इस लिये वोह ज़िक्रो फ़िक्र के मुअय्यन अस्वाब में से किसी एक पर सब्र नहीं करता बल्कि अगर इसे एक ही तरीक़े पर रखा जाए तो वोह बोझ व उक्ताहट महसूस करता है। (मरवी है कि) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मलाल नहीं डालता हत्ता कि तुम खुद मलाल में पड़ो।⁽¹⁾⁽²⁾

अवराद को मुख़्तलिफ़ अवशाम में तक्सीम करने की वजह :

ज़िक्रो फ़िक्र में लुत्फ़ पाने के लिये ज़रूरी है कि हर वक़्त के ए'तिबार से एक तरीक़े से दूसरे तरीक़े और एक नोअ से दूसरी नोअ की तरफ़ मुन्तक़िल हुवा जाए ताकि मुन्तक़िल होने से ज़िक्रो फ़िक्र की लज़ज़त ज़ियादा हो और रग़बत में इज़ाफ़ा हो और जूँ जूँ रग़बत में इज़ाफ़ा होगा ज़िक्रो फ़िक्र पर हमेशगी हासिल होगी इसी वजह से अवराद को मुख़्तलिफ़ किस्मों में तक्सीम किया गया।

①..... मुफ़सिस्से शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 264 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : अगर तुम खुद मलाल व मशक्क़त वाले कामों को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि रोज़ाना सो रक़अत पढ़ने या हमेशा रोज़ा रखने की नज़्र मान लो तो तुम पर येह चीज़ें वाजिब हो जाएंगी फिर तुम मशक्क़त में पड़ जाओगे मगर येह मशक्क़त रब्व ने न डाली तुम ने खुद अपने पर डाली येह मा'ना नहीं कि **अल्लाह** मलाल में नहीं पड़ता हत्ता कि तुम मलाल में पड़ो, रब्व तआला मलाल करने से पाक है।

②..... صحيح البخاری، کتاب التهجد، باب ما یکره من التشدید فی العبادة، الحديث: ۱۱۵۱، ج ۱، ص ۳۹۰

नफ़्स की फ़ितरत :

बेहतर येह है कि नफ़्स तमाम अवक़ात ज़िक्रो फ़िक्र में मसरूफ़ रहे क्यूंकि येह फ़ितरी तौर पर दुन्यावी लज़्ज़ात की तरफ़ माइल होता है। मिषाल के तौर पर अगर बन्दा अपने अवक़ात का आधा हिस्सा दुन्यावी तदबीरों और इस की जाइज़ ख़्वाहिशात में मसरूफ़ रखे और आधा इबादात में तो नफ़्स का मैलान दुन्या की तरफ़ तरजीह पा जाएगा क्यूंकि फ़ितरी तौर पर भी वोह इसी के मुवाफ़िक़ है अगर्चे दोनों का वक़्त बराबर है लेकिन नफ़्स फ़ितरी तौर पर दुन्या की तरफ़ ज़ियादा माइल होगा इस लिये कि दुन्यावी मुआमलात पर ज़ाहिर व बातिन मुवाफ़िक़ होते हैं और दिल दुन्या को तलब करने के लिये ख़ूब साफ़ और फ़ारिग़ होता है जब कि दिल को इबादात की तरफ़ फ़ेरने में मशक्क़त होती है इस लिये इबादात में दिल की हुज़ूरी व इख़्लास कभी कभी ही मुयस्सर होती है।

नजात के ख़्वाहिश मन्द का ज़दव़ल :

जो शख़्स बिग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िले का ख़्वाहिश मन्द हो उसे चाहिये कि अपने तमाम अवक़ात को इताअत में बसर करे, जो नेकियों वाले पलड़े को भारी करने का इरादा रखता हो उसे चाहिये कि अपना ज़ियादा वक़्त इताअत में गुज़ारे और जो अच्छे व बुरे दोनों किस्म के आ'माल इख़्तियार करे उस का मुआमला ख़तरे में है लेकिन **अल्लाह** तआला की रहमत से ना उम्मीद न हो, उस के करम से मुआफी का मुन्तज़िर रहे, करीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने फ़ज़लो करम से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे। येह वोह है जो नूरे बसीरत से देखने वालों के लिये मुन्कशिफ़ हुवा और अगर तुम अहले बसीरत में से नहीं तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जो अपने रसूल صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ख़िताब फ़रमाया उस से इस्तिफ़ादा कर लो।

चन्द फ़रामीने बारी तआला :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने बन्दों में से अपने सब से ज़ियादा मुक़र्रब और बुलन्द दर्जा हस्ती (या'नी हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से इरशाद फ़रमाया :

﴿1﴾

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَيِّلًا ۖ وَادْكُرْ
اسْمَ رَبِّكَ وَتَبْتَئِلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ۖ

(प. २९, मज़ल: ८०५)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान : बेशक दिन में तो तुम को बहुत से काम हैं और अपने रब्ब का नाम याद करो और सब से टूट कर उसी के हो रहो।

﴿2﴾

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۚ وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ﴿٢٦﴾

(پ ۲۹، ۲۵: الدھر: ۲۶)

﴿3﴾

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۚ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾

(پ ۲۶، ۳۹: ق: ۴۰)

﴿4﴾

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۚ وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

(پ ۲۷، ۴۸: الطور: ۴۹)

﴿5﴾

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيلًا ﴿٦﴾

(پ ۲۹، ۶: مزمل: ۶)

﴿6﴾

وَمِنْ أُنْمَائِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَىٰ ﴿١٣﴾

(پ ۱۶، ۱۳: طہ: ۱۳)

﴿7﴾

وَاقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَرُفْقًا مِنَ اللَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنَاتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ﴿١٢﴾

(پ ۱۲، ۱۲: ہود: ۱۲)

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : اور اپنے رب کا نام سو بھو شام یاد کرو اور کچھ رات میں اسے سجدہ کرو اور بڑی رات تک اس کی پاکی بولو ۔

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : تو ان کی باتوں پر صبر کرو اور اپنے رب کی تائیدی کرتے ہوئے اس کی پاکی بولو سورج چمکنے سے پہلے اور ڈوبنے سے پہلے اور کچھ رات گئے اس کی تسبیح کرو اور نمازوں کے بعد ۔

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : اور اپنے رب کی تائیدی کرتے ہوئے اس کی پاکی بولو جب تو خدے ہو اور کچھ رات میں اس کی پاکی بولو اور تاروں کے پیٹ دے ۔

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : بے شک رات کا اٹھنا، وہ جیسا دباؤ ڈالتا ہے اور بات خوب سیدھی نکل جاتی ہے ۔

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : اور رات کی چڑیوں میں اس کی پاکی بولو اور دن کے کناروں پر اس امید پر کہ تو راجہ ہو ۔

ترجمہ کَنْزُالْإِيمَان : اور نماز قائم رکھو دن کے دونوں کناروں اور کچھ رات کے حصوں میں بے شک نیکیاں برائیوں کو مٹا دیتی ہیں ۔

फ़लाह पाने वालों की ता'रीफ़ में वारिद आयात :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने अपने कामयाब बन्दों की किस तरह और किस के साथ ता'रीफ़ फ़रमाई है। चुनान्चे इरशाद होता है :

﴿1﴾

أَمَّنْهُوَ قَانَتْ أَنَاءُ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا
يَحْدُرُ الْآخِرَةَ وَيَرْجُو أَرْحَمَ رَبِّهِ طُ قُلْ
هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا
يَعْلَمُونَ ط (پ ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमां बरदारी में रात की घड़ियां गुज़रें सुजूद में और क़ियाम में, आख़िरत से डरता और अपने रब्ब की रहमत की आस लगाए। क्या वोह नाफ़रमानों जैसा हो जाएगा ? तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान ?

﴿2﴾

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا ط (پ ۲۱، السجدة: ۱۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाब गाहों से और अपने रब्ब को पुकारते हैं डरते और उम्मीद करते।

﴿3﴾

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ط
(پ ۱۹، الفرقان: ۲۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह जो रात काटते हैं अपने रब्ब के लिये सजदे और क़ियाम में।

﴿4﴾

كَانُوا أَقْيَلًا مِنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ط
وَبِالْآسَافِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ط
(پ ۲۶، الذّٰرِیٰت: ۱۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : वोह रात में कम सोया करते और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।

﴿5﴾

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ط
(پ ۲۱، الروم: ۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुब्ह हो।

﴿6﴾

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ ^ط (پ ۷: الانعام: ۵۲)

ترجمہ کجڑل ایمان : اور دूर न करो उन्हें जो अपने रब्ब को पुकारते हैं सुब्द और शाम उस की रिज़ा चाहते ।

सूरज और चांद का खयाल रखने वाले :

इन तमाम आयात से वाजेह हुवा कि बारगाहे इलाही तक रसाई का रास्ता येह है कि बन्दा अपने अवकात की हिफाज़त करे और पाबन्दी के साथ इन्हें अवरादो वज़ाइफ़ में सर्फ़ करे इसी वजह से रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “बन्दों में से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा बन्दे वोह हैं जो ज़िक्रे इलाही के लिये सूरज, चांद और सायों का खयाल रखते हैं ।” (1) (2)

(सूरज व चांद का तज़क़िरा करते हुए) **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

﴿1﴾

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ^ل (پ ۷: الرحمن: ۵)

ترجمہ کجڑल ایمان : सूरज और चांद हिसाब से हैं ।

﴿2﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ وَلَوْ شَاءَ لَجَعَلَهُ سَاكِنًا ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا ^ل ثُمَّ قَصَّصْنَاهُ الْيَتَامَىٰ سِيرًا ^ع (پ ۹: الفرقان: ۴۵, ۴۶)

ترجمہ कजड़ल ایمान : ऐ महबूब ! क्या तुम ने अपने रब्ब को न देखा कि कैसा फैलाया साया और अगर चाहता तो इसे ठहराया हुवा कर देता फिर हम ने सूरज को इस पर दलील किया । फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता इसे अपनी तरफ़ समेटा ।

﴿3﴾

وَالْقَمَرَ قَدَرْنَاهُ مَنَازِلَ ^پ (پ ۲۳: يس: ۳۹)

ترجمہ कजड़ल ایمान : और चांद के लिये हम ने मन्ज़िलें मुक़रर कीं ।

① या'नी वोह इन के ज़रीए वक़्त दाख़िल होने की ताक में रहते हैं ताकि मख़सूस अवकात में **अल्लाह** (اتحاف السادة المتقين، ج، ۵، ص ۴۰۵) का ज़िक्र करें । (عز وجل)

② السنن الكبرى للبيهقي، كتاب الصلاة، باب مراعاة ادلة المواقيت، الحديث: ۸۱، ج ۱، ص ۵۵۸، “احب” بدل “ان خيار”-

﴿4﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النَّجْمَ لِتَهْتَدُوا بِهَا
فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالْبَحْرِ ط (پ ۷، الانعام: ۹۷)

ترجمہ کَنْزُْل اِْمَان : اور وہی ہے جس نے
تुम्हारे लिये तारे बनाए कि इन से राह पाओ खुशकी
और तरी के अन्धेरों में ।

इस से हरगिज़ येह खयाल न करना कि सूरज और चांद के एक मन्जूम व मुरतब हिसाब के मुताबिक चलने और साए, रोशनी और सितारों के पैदा करने की गरज़ येह है कि दुनियावी मुआमलात में इन से मदद ली जाए बल्कि इन की गरज़ येह है कि इन के ज़रीए अवक़ात की मिक्दार मा'लूम कर के इन्हें इताअत और दारे आखिरत की तिजारत में सर्फ़ किया जाए । **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** का येह मुबारक फ़रमान भी इसी की तरफ़ राहनुमाई करता है । चुनाच्चे, इरशाद होता है :

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن
أَرَادَ أَنْ يَذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ۝
(پ ۹، الفرقان: ۲۲)

ترجمہ کَنْزُْل اِْمَان : اور وہی ہے جس نے
रात और दिन की बदली रखी उस के लिये जो
ध्यान करना चाहे या शुक्र का इरादा करे ।

या'नी उस ने रात और दिन को एक दूसरे के पीछे आने वाला बनाया ताकि अगर इन में से किसी एक वक़्त में कोई अमल रह जाए तो दूसरे वक़्त में इस का तदारुक कर लिया जाए । नीज़ येह भी बयान फ़रमा दिया कि येह ज़िक्रो फ़िक्र और शुक्र के लिये है न कि किसी और चीज़ के लिये । एक जगह इरशाद होता है :

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَتَيْنِ فَمَحَوْنَا آيَةَ
الَّيْلِ وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصَرَةً لِّتَبْتَغُوا
فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ
وَالْحِصَابَ ط (پ ۱۵، بنی اسرائیل: ۱۲)

ترجمہ कَنْزुल اِْمَان : और हम ने रात और
दिन को दो निशानियां बनाया तो रात की निशानी
मिटी हुई रखी और दिन की निशानी दिखाने वाली
की, कि अपने रब्ब का फ़ज़ल तलाश करो और
बरसों की गिनती और हिसाब जानो ।

इस आयते मुबारका में जिस फ़ज़ल की तलाश का हुक्म है वोह षवाब और मग़फ़िरत ही है । हम **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** से सुवाल करते हैं कि हमें अपनी रिज़ा वाले काम करने की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए ।

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

अवशह की ता'दाह और बशीब का बयान

जान लीजिये ! दिन के वज़ाइफ़ सात हैं : (1).....तुलूए फ़ज़्र से तुलूए तुलूए आफ़ताब तक एक वज़ीफ़ा है । (2-3).....तुलूए आफ़ताब से ज़वाल तक दो वज़ीफ़े हैं । (4-5).....ज़वाल से ले कर अ़स्र के वक़्त तक भी दो वज़ीफ़े हैं । (6-7)....अ़स्र से मग़रिब तक भी दो वज़ीफ़े हैं ।

रात को चार वज़ाइफ़ में तक्सीम किया गया है : (1-2).....मग़रिब से ले कर लोगों के सोने तक दो वज़ीफ़े हैं । (3-4).....रात के दूसरे निस्फ़ से ले कर तुलूए फ़ज़्र तक भी दो वज़ीफ़े हैं ।

दिन के वज़ाइफ़ की बाफ़शीब

पहला वज़ीफ़ा :

तुलूए फ़ज़्र से तुलूए आफ़ताब तक । येह वक़्त फ़ज़ीलत व शराफ़त वाला है और इस की फ़ज़ीलत व शराफ़त की दलील येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की क़सम खाई है ।

चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया :

وَالصُّبْحُ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ (پ ३०، التکویر: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और (क़सम है) सुब्ह की जब दम ले ।

अपनी ता'रीफ़ बयान करते हुए इस का ज़िक्र फ़रमाया :

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ﴿٩٢﴾ (پ ६، الانعام: ۹۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तारीकी चाक कर के सुब्ह निकालने वाला ।

(एक जगह) इरशाद फ़रमाया :

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ (پ ३०، الفلق: ۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह का पैदा करने वाला है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस वक़्त में साए को समेटने से अपनी कुदरत का इज़हार यूँ फ़रमाया :

ثُمَّ قَبْضَهُ إِلَى يَاقُوتِ السِّيرِ ﴿٤٩﴾ (پ १९، الفرقان: ۴۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : फिर हम ने आहिस्ता आहिस्ता इसे अपनी तरफ़ समेटा ।

येह वोह वक़्त है जिस में रात का साया समेट कर सूरज की रोशनी को फैलाया जाता है और इस वक़्त में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने लोगों की तस्बीह की तरफ़ राहनुमाई फ़रमाई ।

चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया :

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾

(پ ۲۱، الروم: ۱۷)

एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया :

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ
وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ أَنْ آئِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ
وَاطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضَى ﴿١٧﴾

(پ ۱۶، طه: ۱۳۰)

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿١٥﴾ (پ २९، الدھر: २۵)

तरतीब : इस वजीफे को नींद से बेदार होने के वक़्त से शुरू कर दे ।

बेदार होने के बाद की दुआ :

जब सो कर उठे तो बेहतर यह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से इब्तिदा करते हुए येह दुआ पढ़े : الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ या 'नी तमाम ता'रीफ़े **अल्लाह** तआला के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बाद हयात (बेदारी) अता फ़रमाई और हमें उसी की तरफ़ लौटना है ।^(१)

इस के इलावा वोह तमाम दुआएं व आयात पढ़े जिन्हें हम ने “दुआओं के बयान” में बेदार होते वक़्त की दुआओं में ज़िक्र किया है । इसी दौरान लिबास पहने और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म की बजा आवरी के लिये सित्रे औरत और इबादत पर मदद हासिल करने की निय्यत करे, रियाकारी व तकब्बुर मक्सूद न हो । अगर ज़रूरत हो तो बैतुल ख़ला की तरफ़ मुतवज्जेह हो और पहले अपना बायां पाउं दाखिल करे और वोह दुआएं पढ़े जो हम ने “तहारत के बयान” में बैतुल ख़ला में जाने और निकलने के सिलसिले में ज़िक्र की हैं । फिर सुन्नत के मुताबिक़ मिस्वाक करे और उन तमाम सुन्नतों व दुआओं की रिआयत करते हुए वुजू करे जिन्हें हम “तहारत के बयान” में ज़िक्र कर आए हैं । माक़बल हम ने तमाम इबादात को फ़र्दन फ़र्दन इस लिये ज़िक्र कर दिया ताकि यहां सिर्फ़ तरकीब और तरतीब का ज़िक्र करें । जब वुजू से फ़ारिग़ हो तो फ़ज्र की सुन्नतें घर में ही पढ़े किरसूले अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इसी तरह किया करते थे ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुबह हो ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब को सराहते (ता'रीफ़ करते) हुए उस की पाकी बोलो सूरज चमकने से पहले और उस के डूबने से पहले और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो और दिन के कनारों पर इस उम्मीद पर कि तुम राज़ी हो ।

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब्ब का नाम सुब्हो शाम याद करो ।

फ़ज़ की सुन्नतों के बा'द की दुआ :

सुन्नतें ख़्वाह घर में अदा की हों या मस्जिद में, अदा करने के बा'द हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी येह दुआ पढ़े : **اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِكَ تَهْدِي بِهَا قَلْبِي** या'नी ऐ **अबूबाह** عَزَّ وَجَلَّ मैं तुझ से तेरी रहमत का सुवाल करता हूं कि तू इस के ज़रीए मेरे दिल को हिदायत अता फ़रमा।⁽¹⁾ (पूरी दुआ किताबुल अज़कार बाब नम्बर 3 सफ़्हा 937 पर है) फिर घर से निकल कर मस्जिद का रुख़ करे और मस्जिद की तरफ़ जाते वक़्त की दुआ को न भूले, नमाज़ के लिये दौड़ता न जाए बल्कि सुकून और वक़ार से चले जैसा कि मरवी है। उंगलियों को एक दूसरे में न डाले, मस्जिद में दाख़िल हो तो पहले सीधा पाउं दाख़िल करे, मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ पढ़े जो हदीष शरीफ़ में आई है, अगर वुस्अत पाए तो पहली सफ़ की कोशिश करे, न तो लोगों की गर्दनें फ़लांगे और न ही किसी से मुज़ाहमत करे जैसा कि “जुमुआ के बयान” में गुज़रा, अगर घर में फ़ज़ की सुन्नतें नहीं पढ़ी थीं तो अब पढ़ ले और ज़िक्र कर्दा दुआ में मशगूल हो जाए, अगर सुन्नतें पढ़ चुका है तो दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ कर⁽²⁾ जमाअत के इन्तिज़ार में बैठ जाए, फ़ज़ की जमाअत अन्धेरे में काइम करना मुस्तहब है कि “हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सुब्ह की नमाज़ अन्धेरे में अदा फ़रमाया करते थे।”⁽³⁾ (4)

मक्बूल हज़ व उमरे का षवाब :

नमाज़े बा जमाअत खुसूसन फ़ज़ व इशा की जमाअत कभी तर्क न करे कि इन की बड़ी फ़ज़ीलत है। चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने नमाज़े फ़ज़ के मुतअल्लिक़ इरशाद फ़रमाया :

①.....صحیح ابن خزيمة، کتاب الصلاة، باب الدعاء بعد ركعتی الفجر، الحديث: 1119، ج 2، ص 126۔

② अहनाफ़ के नज़दीक : तुलूए फ़ज़ से तुलूए आफ़ताब तक सिवाए दो रकअत सुन्नते फ़ज़ के कोई नफ़्त नमाज़ जाइज़ नहीं। (बहारे शरीअत, जि.1 स.455)

③ अहनाफ़ के नज़दीक : फ़ज़ में ताख़ीर कर के उजाले में पढ़ना मुस्तहब है। (माखूज अज़ बहारे शरीअत, जि.1 स.451) नीज़ तिरमिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “नमाज़े फ़ज़ ख़ूब उजाला कर के पढ़ो कि इस का षवाब ज़ियादा है।”

(جامع الترمذی، ابواب الصلاة، باب ما جاء فی الاسفار بالفجر، الحديث: 153، ج 1، ص 204)

④ صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب استحباب التبکیر بالصبح.....الخ، الحديث: 226، ص 323۔

“जिस ने वुजू किया फिर मस्जिद की तरफ़ मुतवज्जेह हुवा ताकि नमाज़ अदा करे उसे हर क़दम के बदले एक नेकी मिलेगी और एक गुनाह मिटाया जाएगा और इस नेकी की मिष्ल मज़ीद 10 नेकियां मिलेंगी, जब नमाज़ पढ़ कर तुलूए आफ़ताब के वक़्त वापस लौटे तो उस के ज़िस्म के हर बाल के बदले उस के लिये एक नेकी लिखी जाएगी और हज़्जे मक़बूल के साथ वापस लौटेगा, अगर वहीं बैठा रहे हत्ता कि चाशत की नमाज़ भी पढ़ ले तो उस के लिये हर रक़अत के बदले 20 लाख नेकियां लिखी जाएंगी और जिस ने इशा की नमाज़ अदा की तो उस के लिये भी इसी की मिष्ल षवाब है और वोह मक़बूल उमरे के साथ लौटेगा।” (1)

राहे खुदा में जिहाद के बराबर अमल :

तुलूए फ़ज़्र से पहले ही मस्जिद में चले जाना बुजुर्गों की आदत थी। एक ताबेई बुजुर्ग फ़रमाते हैं : मैं तुलूए फ़ज़्र से पहले मस्जिद में दाख़िल हुवा तो मेरी मुलाक़ात हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से हुई, उन्होंने ने मुझ पर सबक़त करते हुए मुझ से फ़रमाया : “ऐ भतीजे ! किस चीज़ के लिये इस वक़्त तू अपने घर से निकला ?” मैं ने अर्ज़ की : “सुबह की नमाज़ के लिये।” फ़रमाया : “तेरे लिये खुशख़बरी है, इस वक़्त घर से निकल कर मस्जिद में बैठने को हम राहे खुदा में जिहाद करने के बराबर समझते हैं।” या इस तरह फ़रमाया : “इस वक़्त घर से निकल कर मस्जिद में बैठने को हम रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मइय्यत में जिहाद के बराबर समझते हैं।”

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : एक रात हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारे पास तशरीफ़ लाए। मैं और हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا सोए हुए थे, आप ने इरशाद फ़रमाया : “तुम नमाज़ क्यूं नहीं पढ़ते ?” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ फ़रमाते हैं : मैं ने अर्ज़ की : “या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हमारी जानें अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के क़बज़ए कुदरत में हैं जब वोह हमें बेदार करना चाहेगा कर देगा।” आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ वापस तशरीफ़ ले गए। मैंने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को वापस तशरीफ़ ले जाते (अपना हाथ) रान पर मार कर येह (आयते तय्यिबा तिलावत) करते सुना :

①.....تاريخ مدينة دمشق لابن عساکر، سعيد بن خالد بن ابی طویل، الحديث: ۴۷۱۳، ج ۲۱، ص ۴۷-۴۸۔

وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرُ شَيْءٍ جَدَلًا ۖ

(پ ۱۵، الکہف: ۵۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और आदमी हर चीज से बढ़ कर झगड़ालू है । (1)

बेहतर येह है कि सुन्नते फ़ज़्र और दुआ के बा'द जमाअत काइम होने तक इस्तिग़फ़ार व तस्बीह में मशगूल रहे । 70 मरतबा येह पढ़े : اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَتَوْبُ إِلَيْهِ : या'नी मैं **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ से मग़फ़िरत त़लब करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं, वोह खुद जिन्दा दूसरों को काइम रखने वाला है और मैं उसी की तरफ़ रुजूअ करता हूं ।

100 मरतबा येह पढ़े سُبُّحَنَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ या'नी **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ पाक है तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ के लिये, **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है ।

फिर उन तमाम ज़ाहिरी व बातिनी आदाब की रिआयत करते हुए फ़र्ज़ अदा करे जिन्हें हम “किताबुस्सलात” में “नमाज़ व इक्तिदा के बयान” में ज़िक्र कर चुके हैं । जब फ़र्ज़ पढ़ चुके तो तुलूए आफ़ताब तक मस्जिद में बैठ कर ज़िक्रुल्लाह में मसरूफ़ रहे, अंन करीब हम इस की तरतीब बयान करेंगे ।

चार गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा महबूब अमल :

मरवी है कि रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “मुझे चार गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा येह पसन्द है कि मैं नमाज़े फ़ज़्र से तुलूए आफ़ताब तक अपनी जगह बैठ कर **अल्लाह** غَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करूं ।” (2)

नीज़ मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब फ़ज़्र की नमाज़ अदा फ़रमाते तो तुलूए आफ़ताब तक नमाज़ पढ़ने की जगह पर ही तशरीफ़ फ़रमा रहते ।” (3)

बा'ज़ रिवायात में है कि “फिर दो रक्अतें अदा फ़रमाते ।” या'नी तुलूए आफ़ताब के बा'द दो रक्अतें अदा फ़रमाते । (4) इस नमाज़ की फ़ज़ीलत में इतनी रिवायात मरवी हैं कि उन्हें शुमार नहीं किया जा सकता । हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : वोह चीज़ें कि जिन्हें हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने रब्ब غَزَّوَجَلَّ की

①.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب ما روى فيمن نام الليل.....الخ، الحديث: ۷۷۵، ص ۳۹۲۔

②.....سنن ابی داود، كتاب العلم، باب فى القصص، الحديث: ۳۶۶۷، ج ۳، ص ۴۵۲۔

③.....صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب فضل الجلوس فى مصلاه.....الخ، الحديث: ۲۸۰، ص ۳۳۷۔

④.....قوت القلوب، الفصل السابع فى ذكر اوراد النهار، ج ۱، ص ۳۲۔

रहमत में से ज़िक्र फ़रमाया करते थे इन में से येह भी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :
 “ऐ इब्ने आदम ! तू नमाज़े फ़त्र व अ़स्र के बा’द एक-एक साअत मेरा ज़िक्र कर मैं इन दोनों
 वक्तों के दरमियान तुझे किफ़ायत करूंगा ।”(1)

नमाज़े फ़त्र के बा’द के वज़ाइफ़ :

जब इस की फ़ज़ीलत ज़ाहिर हो चुकी तो चाहिये कि नमाज़े फ़त्र के बा’द तुलूए आप़ताब तक बैठा रहे और किसी से कलाम न करे बल्कि बेहतर येह है कि तुलूए आप़ताब तक इस का वज़ीफ़ा इन चार अक्साम पर मुश्तमिल हो : (1).....दुआएं पढ़े । (2).....अज़कार को बार बार दोहराता रहे । (3).....कुरआने पाक की तिलावत और (4).....ग़ौरो फ़िक्र में मसरूफ़ रहे ।

﴿1﴾.....दुआएं :

जब भी नमाज़ से फ़ारिग़ हो तो येह पढ़े :

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ وَسَلِّمْ اللَّهُمَّ أَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ
 السَّلَامُ وَإِلَيْكَ يَعُودُ السَّلَامُ حِينَ رَبَّنَا بِالسَّلَامِ وَأَدْخَلْنَا دَارَ السَّلَامِ تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

या’नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और उन की आल पर दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा । ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू सलामती देने वाला है और तेरी ही तरफ़ से सलामती है और तेरी तरफ़ ही सलामती लौटती है । ऐ हमारे रब्ब عَزَّوَجَلَّ हमें सलामती के साथ ज़िन्दा रख और सलामती के घर (या’नी जन्नत) में दाख़िल फ़रमा । तू बरकत वाला है ऐ जलाल व बुजुर्गी वाले ।

फिर वोह दुआ पढ़े जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ा करते थे, जो येह है :

سُبْحَنَ رَبِّيَ الْأَعْلَى الْوَهَّابِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحُكْمُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَهْلُ النِّعْمَةِ وَالْفَضْلِ وَالْثَنَاءِ الْحَسَنِ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَلَا نَعْبُدُ إِلَّا إِيَّاهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ
 या’नी मेरा रब्ब عَزَّوَجَلَّ पाक है जो बुलन्दो बाला और बहुत ज़ियादा अता फ़रमाने वाला है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा’बूद नहीं, वोह अकेला है उस का कोई शरीक नहीं, उसी के लिये है बादशाही और उसी के लिये हम्द है, वोही ज़िन्दा करता और मारता है और वोह ज़िन्दा है उस को हरगिज़ कभी मौत नहीं आएगी, तमाम भलाइयां उसी के दस्ते कुदरत में हैं और वोह हर चीज़ पर कादिर है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो ने'मत व फ़ज़ल और अच्छी षना वाला है ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और हम उसी की बन्दगी करते हैं निरे उस के बन्दे हो कर पड़े बुरा मानें काफ़िर ।⁽¹⁾

फिर वोह दुआएं पढ़े जिन्हें हम “दुआओं के बयान” के तीसरे और चौथे बाब में ज़िक्र कर आए हैं । अगर कुदरत हो तो वोह तमाम दुआएं पढ़े या इन में से वोह दुआ याद कर ले जिसे अपने हाल के ज़ियादा मुवाफ़िक़, दिल को ज़ियादा नर्म करने वाली और ज़बान पर ज़ियादा हलकी जाने ।

﴿2﴾.....बार बार किये जाने वाले अज़कार :

येह वोह कलिमात हैं जिन्हें बार बार पढ़ने के फ़ज़ाइल आए हैं । इन्हें ज़िक्र कर के हम कलाम को तवील नहीं करना चाहते । बेहतर येह है कि इन में से हर एक कम अज़ कम तीन या सात मरतबा या ज़ियादा से ज़ियादा 70 या 100 मरतबा पढ़े जब कि दरमियानी मिक्दार 10 मरतबा है । लिहाज़ा अपनी फ़राग़त व वक़्त की वुस्अत के मुताबिक़ इन अज़कार को बार बार दोहराए, ज़ियादा की फ़ज़ीलत ज़ियादा है मगर दरमियानी मिक्दार ही राहे ए'तिदाल है और वोह येह है कि 10 मरतबा पढ़े और हमेशा पढ़े, येही ज़ियादा लाइक़ है क्यूंकि बेहतरीन अमल वोह है जो हमेशा हो अगर्चे क़लील हो । हर वोह वज़ीफ़ा जिस की कषरत पर मुवाज़बत मुमकिन न हो इस की क़लील मिक्दार ही अफ़ज़ल होगी जब कि हमेशगी के साथ हो और दिल में उस कषरत से ज़ियादा अषर करने वाली होगी जो कभी कभी हो । हमेशा किये जाने वाले अमले क़लील की मिषाल पानी के उन क़तरों की सी है जो मुसलसल ज़मीन पर गिरते रहते हैं आख़िरे कार ज़मीन में गढ़ा हो जाता है अगर्चे येह पथ्थर पर ही गिरें इस के बर अक्स वोह अमल जो कषरत के साथ हो लेकिन मुसलसल न हो इस की मिषाल उस पानी की तरह है जो एक ही मरतबा गिर जाए या चन्द बार मुतफ़र्रिक़ जगहों पर मुख़्तलिफ़ अवक़ात में गिरे तो इस का कोई अषर ज़ाहिर नहीं होता ।

बार-बार पढ़े जाने वाले दस कलिमात :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِي وَيُمِيتُ، وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ....⁽¹⁾

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، مسند المدنين، الحديث: ١٦٥٢٨، ج ٥، ص ٥٦١۔

سنن أبي داود، كتاب الوتر، باب مايقول الرجل اذا سلم، الحديث: ١٥٠٦، ج ٢، ص ١٨٨، مفهوماً۔

सूरए नास, सूरए फ़लक़, सूरए इख़्लास, सूरए काफ़िरून और आयतुल कुरसी पढ़ कर, सात बार येह पढ़ो : **يَا نَبِيَّ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ** या'नी **अल्लाह** عزّ وجلّ पाक है, सब ख़ूबियां **अल्लाह** عزّ وجلّ को, **अल्लाह** عزّ وجلّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और **अल्लाह** عزّ وجل़ सब से बड़ा है। फिर सात बार बारगाहे रिसालत में हदिय्यए दुरूद भेजो, फिर सात बार अपने लिये, अपने बालिदैन और तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिये मग़फ़िरत की दुआ़ करो फिर सात बार येह पढ़ो :

اللَّهُمَّ افْعَلْ بِيْ وَبِهِمْ عَاجِلًا وَآجِلًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ مَا أَنْتَ لَهُ أَهْلٌ وَلَا تَفْعَلْ بِنَا يَا مَوْلَانَا مَا نَحْنُ لَهُ أَهْلٌ إِنَّكَ غَفُورٌ حَكِيمٌ جَوَادٌ كَرِيمٌ رَّؤُوفٌ رَّحِيمٌ

या'नी ऐ **अल्लाह** عزّ وجل़ मेरे और इन सब के साथ अभी और बा'द में, दीन, दुन्या और आख़िरत के बारे में वोह मुआमला फ़रमाना जो तेरी शायाने शान है वोह मुआमला न फ़रमाना जिस के हम मुस्तह़िक़ हैं बेशक तू बख़्शने वाला, बुर्दबार, जव्वाद, करम फ़रमाने वाला, मेहरबान और रहूम फ़रमाने वाला है। इस वज़ीफ़े को सुब्हो शाम पढ़ना मत छोड़ना।”

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा : “आप को येह तोहफ़ा किस ने दिया ?” फ़रमाया : “मुझे येह तोहफ़ा हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा, अहमदे मुजतबा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दिया है।” मैं ने कहा : “इस की फ़ज़ीलत के बारे में बताइये।” फ़रमाया : जब तू सरकारे दो अलम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मिले तो उन से इस की फ़ज़ीलत के बारे में पूछ लेना वोह इस का षवाब बता देंगे।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : एक दिन मैं ने ख़्वाब में फ़िरिश्तों को देखा कि वोह मेरे पास आए और मुझे उठा कर ले गए हत्ता कि जन्नत में दाख़िल कर दिया। मैं ने जन्नती ने'मतें और बड़े बड़े उमूर देख कर फ़िरिश्तों से पूछा : येह किस के लिये है ?” जवाब दिया : “उस के लिये जो आप के अमल की मिष्ल अमल करे।” फ़रमाते हैं : मैं ने जन्नती फ़ल खाए और इस के मशरूबात पिये, फिर हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ 70 अम्बियाए किराम الصَّلَاةُ وَالسَّلَام عَلَيْهِم ने मुझे सलाम से नवाज़ा और मेरा हाथ पकड़ लिया, मैं ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने मुझे ख़बर दी है कि उन्होंने ने आप से येह हदीष सुनी है।” तो प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने दो बार इरशाद फ़रमाया : “हज़रते ख़िज़्र ने सच कहा और जो कुछ उन्होंने ने बताया हक़ है, वोह अहले ज़मीन के अलिम और अब्दाल के सरदार और ज़मीन पर

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लश्कर में से हैं।" मैं ने अर्ज की : "या रसूलल्लाह ﷺ जो कोई येह अमल करे और जो मैं ने ख़्वाब में देखा वोह न देखे क्या उसे भी इस में से कुछ दिया जाएगा ?" तो इरशाद फ़रमाया : "उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबरूष फ़रमाया ! जो भी येह अमल करेगा उसे इसी की मिष्ल दिया जाएगा अगरचें उस ने मुझे और जन्नत को न देखा हो, उस के तमाम कबीरा गुनाह बख़्श दिये जाएंगे जो उस ने किये हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस से अपना ग़ज़ब और अज़ाब दूर फ़रमा देगा और बाईं जानिब वाले फ़िरिश्ते को हुक्म फ़रमाएगा कि एक साल तक इस का कोई गुनाह न लिखे। उस ज़ात की क़सम जिस ने मुझे हक़ के साथ मबरूष फ़रमाया ! इस अमल को वोही करेगा जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सआदत मन्दी से सरफ़राज़ फ़रमाया और वोही तर्क करेगा बद बख़्ती जिस का मुक़दर होगी।" हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُی ने जो चार माह तक कुछ खाया न पिया शायद येह इस ख़्वाब के बा'द का वाकिआ है।

येह क़िराअत का वज़ीफ़ा है अगर इस पर कुछ इज़ाफ़ा कर ले या इसी क़दर पर इक्तिफ़ा करे दोनों तरह बेहतर है, क्यूंकि कुरआने पाक ज़िक्रो फ़िक्र और तमाम दुआओं की फ़ज़ीलत का जामेअ है जब कि ग़ौरो फ़िक्र के साथ पढ़ा जाए जैसा कि इस की फ़ज़ीलत और आदाब हम "तिलावत के बयान" में ज़िक्र कर चुके हैं।

﴿4﴾.....ग़ौरो फ़िक्र करना :

अपने वज़ाइफ़ में इसे भी एक वज़ीफ़ा बनाना चाहिये, अन् करीब नजात देने वाले उमूर के ज़िम्न में "ग़ौरो फ़िक्र के बयान" में इस की तफ़्सील आएगी कि किस बारे में ग़ौरो फ़िक्र किया जाए और इस का तरीक़ा क्या हो ? लेकिन इस का मजमूआ दो फ़न्नों की तरफ़ लौटता है :

फ़न्ने अव्वल : नफ़अ बख़्श मुआमलात के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे यूं कि अपनी कोताहियों पर नफ़्स का मुहासबा करे, आने वाले दिन के लिये वज़ाइफ़ को तरतीब दे, उन रुकावटों को दूर करने की तदबीर करे जो नेकी से रोकती हैं, अपनी कोताही और आ'माल में ख़लल डालने वाली चीज़ों को याद करे ताकि अपनी इस्लाह कर सके, अपने आ'माल और दीगर मुसलमानों के मुआमलात के बारे में अपने दिल में अच्छी अच्छी निय्यतें हाज़िर करे।

फ़न्ने दुवुम : उस अम्र के बारे में है जो इल्मे मुकाशफ़ा में नफ़अ का बाइष बनता है यूं कि एक बार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतों और ज़ाहिरी व बातिनी निशानियों के मुसलसल आने के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि इस के ज़रीए मा'रिफ़ते इलाही में इज़ाफ़ा हो और इस पर जितना

हो सके **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सज़ाओं के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करे ताकि मा'बूद की कुदरत व बेनियाज़ी की पहचान में इज़ाफ़ा हो और इन सज़ाओं से डरने में ज़ियादती हो। इन उमूर में से हर एक की बहुत सी शाखें हैं जिन में बा'ज़ लोगों को ग़ौरो फ़िक्र करने की इस्तिताअत होती है और बा'ज़ को नहीं, इसे हम "ग़ौरो फ़िक्र के बयान" में ज़िक्र करेंगे।

सब से बुलन्द रुत्बा इबादत :

जब ग़ौरो फ़िक्र करना आसान हो जाए तो इबादात में ये सब से बुलन्द रुत्बा इबादत है क्योंकि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र का मा'ना भी पाया जाता है और इस के साथ दो अम्र मज़ीद पाए जाते हैं : (1)....मा'रिफ़ते इलाही में इज़ाफ़ा होता है क्योंकि ग़ौरो फ़िक्र करना मा'रिफ़त व कश्फ़ की चाबी है। (2).....महब्बते इलाही में इज़ाफ़ा होता है क्योंकि दिल उसी से महब्बत करता है जिस की ता'ज़ीम का वोह ए'तिकाद रखता है। नीज़ अज़मत व जलाले इलाही तभी मुन्कशिफ़ होते हैं जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सिफ़ात, कुदरत और अफ़़ाल के अज़ाइबात की मा'रिफ़त हासिल होती है। लिहाज़ा ग़ौरो फ़िक्र से मा'रिफ़त, मा'रिफ़त से ता'ज़ीम और ता'ज़ीम से महब्बत हासिल होती है।

उन्स व महब्बत में फ़र्क :

ज़िक्र भी उन्स का बाइष है, उन्स महब्बत ही की एक किस्म है लेकिन मा'रिफ़त के सबब हासिल होने वाली महब्बत ज़ियादा क़वी, ज़ियादा षाबित और ज़ियादा अज़ीम होती है।

आरिफ़ की महब्बत और ज़ाकिर के उन्स में निस्बत :

आरिफ़ की महब्बत और मुकम्मल तौर पर देखे बिग़ैर नूरे इरफ़ान से उन्स हासिल करने वाले ज़ाकिर के उन्स के दरमियान निस्बत ऐसे है जैसे वोह शख्स जिस ने किसी के जमाल को आंखों से देखा, उस के हुस्ने अख़्लाक़, हुस्ने अफ़़ाल व ख़साइले हमीदा पर तजरिबे की रोशनी में मुत्तलअ हुवा, उस के इश्क़ की निस्बत उस शख्स के उन्स से हो जिस के कानों पर किसी ऐसे शख्स की अच्छी सीरत व सूरत के अवसाफ़ बिग़ैर तफ़्सील के बार बार बयान किये जाते रहे हों जो उस की आंखों से गा़इब है, उस की महब्बत उस शख्स की महब्बत की तरह नहीं जिस ने देख कर महब्बत की है और न ही ख़बर मुशाहदे की तरह होती है।

वोह बन्दे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र पर दिलो ज़बान से हमेशगी इख़्तियार करते और रुसुले इज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام जो ले कर आए हैं सिर्फ़ ईमाने तक्लीदी से इस की तस्दीक करते हैं, उन के पास सिफ़ाते बारी तअ़ाला की ख़ूबियों में से चंद ऐसे मुजमल उमूर के सिवा कुछ नहीं जिन्हें येह उस शख्स की तस्दीक से मानता है जिस ने इसे उन के सामने बयान किया जब कि अरिफ़ीन वोह हैं जिन्होंने ने उस के जलाल व जमाल का बातिनी बसीरत की आंख से मुशाहदा किया है जो ज़ाहिरी बसारत से ज़ियादा मज़बूत होती है क्यूंकि कोई शख्स भी उस के जलाल व जमाल की हकीकत का इहाता नहीं कर सकता इस लिये कि मख़्लूक में से कोई भी इस पर कादिर नहीं। अलबत्ता, हर शख्स इसी क़दर मुशाहदा करता है जिस क़दर हिजाब उस से उठाया जाता है। जमाले इलाही की कोई इन्तिहा नहीं और न ही उस के हिजाबात की कोई हद है, सिर्फ़ उन हिजाबों की ता'दाद 70 है जो “नूर” कहलाने के हक़दार हैं और उन तक पहुंचने वाला येह गुमान करने लगता है कि वोह अस्ल तक पहुंच गया है।

नूर के 70 हिजाबात :

मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

إِنَّ لِلَّهِ سَبْعِينَ حِجَابًا مِّنْ نُورٍ لَّوْ كَشَفَهَا لَأَحْرَقَتْ سَبْحَاتُ وَجْهِهِ كُلَّ مَا أَدْرَكَ بَصَرَهُ

या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये नूर के 70 हिजाबात हैं अगर वोह इन्हें खोल दे तो उस की ज़ात के अन्वार हर उस चीज़ को जला दें जिस तक उस की नज़र पहुंचे।⁽¹⁾

इन हिजाबों में भी तरतीब है। इन अन्वार में आपस में मर्तबे के ए'तिबार से ऐसे तफ़ावुत पाया जाता है जैसे सूरज, चांद और सितारों के दरमियान तफ़ावुत है। पहले वोह नूर ज़ाहिर होता है जो सब से छोटा है, फिर वोह जो उस से मिला हुवा है, फिर वोह जो उस से मिला हुवा है। इसी बिना पर बा'ज सूफ़ियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने इस के दर्जात बयान किये हैं जो हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَی نَبِیِّنا وَعَلَیْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के तरक्की करने में ज़ाहिर हुवा। फ़रमाने बारी तअ़ाला है : فَلَمَّا جَنَّ عَلَیْهِ اللَّیْلُ : इस की तफ़सीर में सूफ़ियाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : या'नी जब इन पर मुअमला पोशीदा हो गया तो ”رَأَوْا كَوَکَبًا“ (پ- الانعام: ٧٦) या'नी नूर के हिजाबात में से एक हिजाब तक पहुंच गए और उसे तारे से ता'बीर किया।

इस से येह चमकते हुए जिस्म मुराद नहीं क्यूंकि येह बात किसी पर पोशीदा नहीं कि

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जिस्म व जिस्मानिय्यत से पाक है, बल्कि येह बात तो पहली ही नज़र में जान

①.....صحیح مسلم، کتاب الایمان، باب فی قوله علیه السلام ان الله لا ینام.....الخ، الحدیث: ٤٩١، ص ١٠٩، مفہومًا۔

ली जाती है तो जिस चीज़ से अवाम गुमराह नहीं होते, उस चीज़ से हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَى نَبِيْنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام कैसे राह से हट सकते हैं। और वोह हिजाबात जिन्हें अन्वार का नाम दिया गया है उन से मुराद येह रोशनी नहीं जो आंख के साथ देखी जाती है बल्कि इन से मुराद वोह नूर है जो **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के इस फ़रमान में मुराद है :

اَللّٰهُ نُورُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط مِثْلُ نُورٍ
كِشْكُوْتٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ط
(پ ۱۸، النور: ۳۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **اَللّٰهُ** नूर है आस्मानों और ज़मीनों का उस के नूर की मिषाल ऐसी जैसे एक ताक़ कि इस में चराग़ है।

हमें इन मअानी से चश्म पोशी करते हुए गुज़र जाना चाहिये क्यूंकि येह इल्मे मुअमला से ख़ारिज हैं और बिगैर कश्फ़ के इन की हकीक़त तक नहीं पहुंचा जा सकता और वोह कश्फ़, ख़ालिस ग़ौरो फ़िक्क के ताबेअ है और कम ही लोगों के लिये येह दरवाज़ा खुलता है। अवाम को वोही ग़ौरो फ़िक्क मुयस्सर होती है जो इल्मे मुअमला में फ़ाइदा देती है, इस का भी बड़ा फ़ाइदा और बड़ा नफ़ा है।

ख़ुलासए क़लाम :

हर तालिबे आख़िरत को नमाज़े फ़ज़्र के बा'द येह चार वज़ाइफ़ करने चाहिये या'नी दुआ, ज़िक्क, तिलावते कुरआन और ग़ौरो फ़िक्क करना बल्कि हर फ़र्ज नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा'द इन्हें वज़ीफ़ा बनाए कि नमाज़ के बा'द इन चार वज़ाइफ़ के सिवा कोई वज़ीफ़ा नहीं। इस वज़ीफ़े पर उस वक़्त कादिर हुवा जा सकता है जब हथियार और ढाल पकड़े हुए हों और रोज़ा वोह ढाल है जो शैतान के रास्तों को तंग कर देता है और शैतान ऐसा दुश्मन है जो हिदायत के रास्ते से भटकाने वाला है।

तुलूए फ़ज़्र के बा'द से तुलूए आफ़ताब तक फ़ज़्र की दो सुन्नतों और फ़र्जों के इलावा कोई (नफ़ल) नमाज़ जाइज़ नहीं। प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सहाबए किराम رَضَوُاْ اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ येह वक़्त ज़िक्को अज़कार में सर्फ़ करते थे और येही बेहतर है। अलबत्ता, फ़ज़्र के फ़राइज़ से पहले नींद का ग़लबा हो और वोह नमाज़ के सिवा किसी और चीज़ से दूर न होता हो, इस वजह से (नफ़ल) नमाज़ पढ़े तो कोई हरज नहीं। (इन्द्शशवाफ़ेअ)

दूशरा वज़ीफ़ा :

तुलूए आफ़ताब से चाशत के वक़्त तक। चाशत के वक़्त से मुराद तुलूए आफ़ताब से ज़वाल के दरमियान का निस्फ़ वक़्त है। मषलन दिन के 12 घंटे फ़र्ज किये जाएं तो तीन घंटे गुज़र ने तक येह वक़्त होगा और येह दिन का चौथाई हिस्सा है, इस हिस्से में दो वज़ीफ़े जाइद हैं :

﴿1﴾.....नमाज़े चाशत : इसे हम “नमाज़ के बयान” में ज़िक्र कर चुके हैं। बेहतर यह है कि इशराक़ के वक़्त दो रक़अतें पढ़ें और यह वोह वक़्त है जब धूप ज़मीन पर फैल जाए और सूरज निस्फ़ नेज़े की मिक्दार बुलन्द हो जाए और जब ज़मीन के गर्म होने की वजह से ऊंटनी के बच्चों के पाउं जलने लगें और क़दम सूरज की गर्मी से तपिश महसूस करने लगें तो उस वक़्त (चाशत की) चार, छे या आठ रक़अतें पढ़ें। (इशराक़ की) दो रक़अतों का वक़्त तो वोह है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में मुराद है :

يَسِيْحُنَ بِالْعِشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ (پ ۲۳، ص: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तस्बीह करते शाम को और सूरज चमकते ।

येह सूरज के चमकने का वक़्त है इस वक़्त ज़मीन की सतह से उठने वाले बुख़ारात और गुबार से सूरज के बुलन्द होने के बाइष इस की रोशनी मुकम्मल तौर पर जाहिर हो जाती है क्यूंकि येह बुख़ारात वगैरा उस के मुकम्मल तौर पर चमकने में रुकावट होते हैं और चार रक़आत का वक़्त, चाशत का वक़्त है। इस की क़सम बयान करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

وَالصُّحُفِ وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَى ﴿٢٠﴾ (پ ۳۰، الضحی: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : चाशत की क़सम और रात की जब पर्दा डाले ।

रुजूअ करने वालों की नमाज़ का वक़्त :

एक मरतबा हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ इशराक़ के वक़्त सहाबए किराम رضوان الله تعالى عليهم أجمعين के पास तशरीफ़ लाए तो वोह नमाज़ पढ़ रहे थे, उन्हें बुलन्द आवाज़ से पुकार कर इरशाद फ़रमाया : “जान लो ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ रुजूअ करने वालों की नमाज़ उस वक़्त है जब गर्म ज़मीन की वजह से ऊंटनी के बच्चों के पाउं जलने लगें ।” **﴿1﴾**

इसी वजह से हम कहते हैं कि जब एक ही मरतबा नमाज़ पढ़ने पर इक्तिफ़ा करना चाहे तो चाशत का वक़्त अफ़ज़ल है अगर्चे अस्ल फ़ज़ीलत वक़्ते कराहत के दोनों कनारों के दरमियान नमाज़ पढ़ने से भी हासिल हो जाएगी, वक़्ते कराहत के कनारे येह हैं :

﴿1﴾.....सूरज के तुलूअ होने से ले कर इस के अन्दाज़न निस्फ़ नेज़े की मिक्दार बुलन्द होने तक
﴿2﴾.....जवा़ल के वक़्त से पहले जब सूरज आस्मान के दरमियान ठहरता है । लफ़ज़े “चाशत” का इत्लाक़ इस तमाम वक़्त पर होता है गोया कि इशराक़ की दो रक़अतें उस वक़्त होती हैं जब वक़्ते मकरूह ख़त्म होने के बा’द वक़्ते ग़ैरे मकरूह की इब्तिदा होती है क्यूंकि

सरकारे दो अलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया :

“إِنَّ الشَّمْسَ تَطْلُعُ وَمَعَهَا قَرْنُ الشَّيْطَانِ فَإِذَا ارْتَفَعَتْ فَارْقَهَا”⁽¹⁾ होते हैं, जब बुलन्द हो जाता है तो सींग इस से अलग हो जाते हैं।

सूरज के बुलन्द होने की कम से कम मिक्दार येह होगी कि वोह ज़मीन के बुख़ारात और गुबार से बुलन्द हो जाए और इस में अन्दाज़े का ए'तिबार किया जाता है।⁽²⁾

②.....इस वक़्त का दूसरा वज़ीफ़ा वोह नेक काम हैं जिन का तअल्लुक़ लोगों से है और इन का सुब्ह के वक़्त करना राइज है मषलन मरीज़ की इयादत करना, जनाज़े के साथ चलना, नेकी व तक्वा पर मदद करना, इल्म की मजलिस में हाज़िर होना और इस के काइम मक़ाम दीगर काम जैसे मुसलमानों की हाज़त को पूरा करना वगैरा।

अगर इन में से कोई काम न हो तो उन चार वज़ाइफ़ की तरफ़ लौट आए जिन्हें हम ने पीछे ज़िक्र किया या'नी दुआएं, ज़िक्र, तिलावते कुरआन और ग़ौरो फ़िक्र करना। अगर चाहे तो इन के साथ साथ नफ़ल नमाज़ें भी पढ़े कि वोह नमाज़े फ़ज़्र के फ़ौरन बा'द मकरूह है अब मकरूह नहीं। लिहाज़ा जो इस वक़्त में नमाज़ भी पढ़ना चाहे तो उस के लिये इस वक़्त के वज़ाइफ़ में से नमाज़ पांचवां वज़ीफ़ा हो जाएगा। फ़ज़्र के फ़र्जों के बा'द हर वोह नमाज़ मकरूह है जिस का कोई सबब मौजूद न हो। तुलूए फ़ज़्र के बा'द बेहतर येह है कि फ़ज़्र की दो सुन्नतों और तहिय्यतुल मस्जिद (इन्द्शशवाफ़ेअ) पर ही इक्तिफ़ा करे इस के इलावा दीगर नवाफ़िल में मशगूल न हो बल्कि ज़िक्र, तिलावते कुरआन, दुआ और ग़ौरो फ़िक्र में मशगूल रहे।

तीसरा वज़ीफ़ा :

येह चाशत के वक़्त से ले कर ज़वाल तक के लिये है, चाशत के वक़्त से हमारी मुराद निस्फ़ दिन और इस से कुछ पहले का वक़्त है क्यूंकि हर तीन घन्टों के बा'द नमाज़ का हुक्म दिया गया है कि जब तुलूए फ़ज़्र के बा'द तीन घंटे गुज़र जाएं तो उस वक़्त और उस के गुज़रने से पहले नमाज़े चाशत का वक़्त है, जब तीन घन्टे और गुज़र जाएं तो नमाज़े ज़ोहर है, जब तीन घन्टे और गुज़र जाएं तो नमाज़े अस्र है, जब तीन घन्टे और गुज़र जाएं तो नमाज़े मग़रिब है। लिहाज़ा नमाज़े चाशत का मर्तबा तुलूअ और ज़वाल के दरमियान ऐसे है जैसे ज़वाल और गुरुब

①.....سنن النسائي، كتاب المواقيت، باب الساعات التي نهى عن الصلاة فيها، الحديث: ٥٥٢، ص ٩٩۔

② येह वक़्त आप़ताब का कनारा ज़ाहिर होने से ले कर उस वक़्त तक है कि इस पर निगाह ख़ीरा होने लगे जिस की मिक्दार कनारा चमकने से 20 मिनट तक है। (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 454)

के दरमियान नमाज़े अस्स का मर्तबा मगर नमाज़े चाश्त फ़र्ज़ नहीं की गई क्यूंकि येह लोगों का अपने कामों में मसरूफ़ रहने का वक़्त है, इस लिये लोगों पर आसानी कर दी गई ।

इस वक़्त का वज़ीफ़ा :

इस वक़्त में वोह चार अक़्साम (या'नी दुआ, ज़िक्र, तिलावते कुरआन, गौरो फ़िक्र) और मज़ीद दो अम्र हैं :

﴿1﴾.....काम-काज, तदबीर मईशत और बाज़ार की हाज़िरी में मशगूल हो, अगर ताजिर है तो सच्चाई व अमानत दारी से तिजारत करे, अगर हुनर मन्द है तो ख़ैरख़्वाही व शफ़क़त को पेशे नज़र रखे और अपनी तमाम मशगूलिय्यात में ज़िक्रे इलाही को न भूले । अगर रोज़ाना कमाने पर कुदरत रखता है तो हर रोज़ इतनी कमाई पर ही इक्तिफ़ा करे जितनी उसे उस दिन में हाज़त है, जब एक दिन का रिज़क़ हासिल कर ले तो मस्जिद की तरफ़ लौट आए और आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार करे क्यूंकि ज़ादे आख़िरत की हाज़त ज़ियादा सख़्त और इस का नफ़अ दाइमी है । लिहाज़ा इस की तय्यारी में मशगूल होना वक़्ती हाज़त से ज़ा़द कमाने से ज़ियादा अहम है ।

मोमिन के मिलने की तीन जगहें :

मन्कूल है कि मोमिन तीन जगहों में ही पाया जाता है : (1)....मस्जिद में, जिस को नमाज़ के ज़रीए आबाद करता है । (2)....घर में, जो उसे छुपाता है । (3).....किसी ऐसी हाज़त में जिस के बिगैर कोई चारा नहीं ।

बहुत कम लोग ऐसे हैं जिन्हें येह मा'लूम है कि हाज़त की मिक्दार कितनी है जिस के बिगैर चारा नहीं, अक़षर लोग ग़ैर ज़रूरी को भी ज़रूरी समझते हैं, इस की वजह येह है कि शैतान इन्हें मुफ़िलसी का अन्देशा दिलाता और बेहयाई का हुक्म देता है । लिहाज़ा वोह मुफ़िलसी के डर से शैतान की तरफ़ माइल हो कर उसे भी जम्अ करते हैं जिसे वोह खाते नहीं और बख़्शिश व फ़ज़ल का वा'दा करने वाले खुदाए रहमान عَزَّوَجَلَّ से ए'राज़ करते हैं और उस की तरफ़ राग़िब नहीं होते ।

﴿2﴾.....“कैलूला” करे और येह सुन्नत भी है, इस के ज़रीए रात के क़ियाम पर मदद ली जाती है जैसा कि सहरी सुन्नत है और इस के ज़रीए दिन के रोज़े पर मदद ली जाती है । अगर कोई शख़्स रात को क़ियाम तो नहीं करता लेकिन अगर इस वक़्त न सोएगा तो नेकी में भी मशगूल नहीं होगा और बसा अवक़ात ग़ाफ़िल लोगों के साथ मेल जोल और इन से बात चीत करेगा तो जब वोह मजकूर

अवरादो वज़ाइफ़ की तरफ़ रुजूअ करने के लिये नहीं जागता तो उस के लिये सोना बेहतर है क्योंकि नींद में ख़ामोशी व सलामती है (लिहाज़ा ऐसी हालत में उस के हक़ में सोना बेहतर है) ।

बा'ज़ बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं : “लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा कि उन के तमाम आ'माल में अफ़ज़ल अमल ख़ामोशी और नींद होंगे ।”

बहुत से आबिद ऐसे हैं कि उन की बेहतरीन हालत नींद है । येह उस वक़्त है जब वोह रिया के लिये इबादत करे और इस में इख़्लास न हो, तो फिर ग़ाफ़िल फ़ासिक़ की क्या हालत होगी ?

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام इस बात को पसन्द फ़रमाया करते थे कि फ़ारिग़ अवकात में सलामती त़लब करने के लिये सो जाएं ।”

नींद भी इबादत है :

पस जब नींद सलामती को त़लब करने और रात के वक़्त क़ियाम करने की निय्यत से हो तो उस की येह नींद भी इबादत होगी, लेकिन ज़वाल से इतनी देर पहले बेदार हो जाना चाहिये जिस में वोह वक़्ते नमाज़ दाख़िल होने से पहले पहले वुज़ू और मस्जिद में हाज़िर होने के ज़रीए नमाज़ की तय्यारी कर सके कि येह आ'माल के फ़ज़ाइल में से है ।

दिन के आ'माल में सब से अफ़ज़ल अमल :

अगर इस वक़्त न सोए और न ही कस्बे मुआश में मशगूल हो बल्कि नमाज़ और ज़िक़्र में मशगूल रहे तो येह दिन के आ'माल में सब से अफ़ज़ल अमल है क्योंकि येह वोह वक़्त है जिस में लोग यादे इलाही से ग़ाफ़िल होते और अपने दुन्यवी रंजो अफ़कार में मशगूल होते हैं तो वोह दिल जो उस वक़्त अपने रब्ब عَزَّوَجَلَّ की इबादत के लिये फ़ारिग़ होता है जिस वक़्त लोग उस की बारगाह से ए'राज़ करते हैं, वोह इस लाइक़ है कि **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ उसे पाक व साफ़ फ़रमाए और उसे अपने कुर्ब व मा'रिफ़त के लिये चुन ले । इस की फ़ज़ीलत शब बेदारी की फ़ज़ीलत की तरह है क्योंकि रात नींद की वजह से ग़फ़लत का वक़्त है और येह (या'नी चाशत से ज़वाल तक का) वक़्त अपनी ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ और दुन्यवी रंजो अफ़कार में मशगूलिय्यत के सबब ग़फ़लत का वक़्त है ।

इरशादे बारी तअ़ाला है :

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَن
أَرَادَ أَن يَذَّكَّرَ (پ ۹، الفرقان: ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और वोही है जिस ने रात और दिन की बदली रखी उस के लिये जो ध्यान करना चाहे ।

इस का एक मा'ना येह है कि उस ने फज़ीलत में एक को दूसरे के पीछे रखा, दूसरा मा'ना येह है कि वोह एक दूसरे के पीछे आते हैं कि अगर एक में कोई अमल रह जाए तो दूसरे में इस का तदारुक कर लिया जाए ।

चौथा वज़ीफ़ा :

जवाल से ले कर नमाज़े जोहर और इस की सुन्नतों से फ़ारिग़ होने तक के लिये है, येह दिन के वज़ाइफ़ में से सब से छोटा और अफ़ज़ल वज़ीफ़ा है । जब जवाल से पहले वुजू कर के मस्जिद में हाज़िर हो और सूरज ढल जाए और मुअज़्ज़िन अज़ान कहना शुरू करे तो अज़ान के जवाब से फ़ारिग़ होने तक सब्र करे, फिर अज़ान व इक़ामत के दरमियान इबादत के लिये खड़ा हो जाए कि येह वोह दोपहर का वक़्त है जो **اَبُو** عَزَّوَجَلَّ के इस फ़रमान में मुराद है :

وَحِينَ تَظْهَرُونَ (پ ۷، الروम: ۱۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम्हें दोपहर हो ।

इस वक़्त में चार रक़अतें एक सलाम से पढ़े । दिन की तमाम नमाज़ों में से येही एक नमाज़ है जिस के बारे में बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने फ़रमाया : “इसे एक सलाम के साथ पढ़े ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِي का मौक़िफ़ येह है कि तमाम नवाफ़िल की तरह इन्हें भी दो दो कर के पढ़ा जाएगा, सहीह रिवायात इसी के बारे में वारिद हैं ।^(१)

येह चार रक़अतें लम्बी कर के पढ़ी जाएं क्यूंकि इस वक़्त आस्मान के दरवाज़े खोले जाते हैं जैसा कि हम ने “नफ़ल नमाज़ों के बयान” में इस के बारे में एक रिवायत ज़िक्र की है । इस में सूरए बक़रह या 100-100 आयात वाली दो सूरतें या 100 से कम आयात वाली चार सूरतें पढ़े कि येह वोह घड़ियां हैं जिन में दुआ क़बूल होती है, नीज़ प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी इस बात को पसन्द फ़रमाया कि आप का कोई अमल इन घड़ियों में बारगाहे खुदावन्दी की तरफ़ उठाया जाए ।

हत्तल इम्कान इन चार रक्अत को कभी तर्क न करे, जब मजकूरा तरीके के मुताबिक लम्बी लम्बी या फिर छोटी छोटी चार रक्अतें पढ़ ले तो नमाज़े जोहर जमाअत के साथ अदा करे, जोहर के बा'द पहले दो रक्अतें पढ़े, फिर चार रक्अतें पढ़े क्योंकि हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़र्ज़ नमाज़ के बा'द बिगैर फ़ासिले के इसी किस्म की नमाज़ पढ़ने को नापसन्द फ़रमाया ।

इन नवाफ़िल में आयतुल कुरसी, सूरए बक़रह का आख़िरी रुकूअ और वोह आयात पढ़ना मुस्तहब हैं जिन्हें हम “पहले वज़ीफ़े” में ज़िक्र कर चुके हैं ताकि येह दुआ, ज़िक्र, तिलावते कुरआन, नमाज़ और तस्बीह व तहमीद सब को जामेअ हो और इस के साथ साथ वक़्त की फ़ज़ीलत भी हासिल हो ।

पांचवा वज़ीफ़ा :

नमाज़े जोहर के बा'द से नमाज़े अस् तक के लिये है, इस दौरान मस्जिद में ज़िक्रो नमाज़ या दीगर नेक कामों में मशगूल रहते हुए ए'तिकाफ़ करना मुस्तहब है और येह ए'तिकाफ़ नमाज़ के इन्तिज़ार में हो कि एक नमाज़ के बा'द दूसरी नमाज़ का इन्तिज़ार करना भी फ़ज़ीलत वाले आ'माल में से है । और बुजुर्गों का तरीका था कि जब कोई शख्स जोहर व अस् के दरमियान मस्जिद में दाख़िल होता तो वोह शहद की मख़्खी की भिनभिनाहट की तरह नमाज़ियों के कुरआने पाक की तिलावत करने की आवाज़ सुनता । अगर उसे घर में दीन की सलामती और दिल जमई ज़ियादा हासिल होती हो तो उस के हक़ में घर ही अफ़ज़ल है ।

तीन चीज़ों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है :

इस वज़ीफ़े की फ़ज़ीलत भी तीसरे वज़ीफ़े की तरह है क्योंकि येह भी लोगों के ग़ाफ़िल होने का वक़्त है, जो शख्स ज़वाल से पहले सो चुका हो उस के लिये इस वक़्त में सोना मकरूह है क्योंकि दिन में दो बार सोना मकरूह है । बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام ने फ़रमाया : तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है : (1)....तअज्जुब खेज़ बात के बिगैर हंसना । (2)....बिगैर भूक के खाना । (3).....बिगैर शब बेदारी के दिन में सोना ।

नींद की मिक्दार :

रात और दिन के 24 घंटे हैं । नींद में ए'तिदाल येह है कि रात और दिन में आठ घंटे सोए फिर अगर इतने घंटे रात में ही सो चुका हो तो दिन में सोने का कोई मतलब नहीं और अगर

कुछ मिक्दार कम है तो इसे दिन में पुरा कर ले। इब्ने आदम अगर 60 बरस तक ज़िन्दा रहे तो उस के लिये इतना ही काफी है कि उस की उम्र में से 20 बरस कम हो जाएं जब कि वोह आठ घंटे सोता हो कि आठ घंटे, 24 घंटों का तिहाई (1/3) है लिहाज़ा उस की उम्र में से एक तिहाई हिस्सा कम हो जाएगा। चूंकि नींद रूह की गिज़ा है जैसे खाना अजसाम की और इल्मो ज़िक्र दिल की तो नींद को बिल्कुल ख़त्म कर देना मुमकिन नहीं और दरमियानी मिक्दार येह है (जो कि बयान की गई या'नी 8 घंटे), इस से कमी करना बसा अवकात जिस्म के बिगाड़ की तरफ़ ले जाता है मगर शब बेदारी कर के बतदरीज जिस की आदत बन गई हो तो वोह बिगैर इज़तिराब व परेशानी के आसानी के साथ इस पर अमल कर सकता है।

येह वज़ीफ़ा लम्बे लम्बे वज़ाइफ़ में से है और बन्दों के लिये ज़ियादा नफ़अ बरखा है। एक तफ़्सीर के मुताबिक़ "أَصَالَ" से मुराद येही वक़्त है, जिस का ज़िक्र **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने पाक में यूं फ़रमाया है :

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
طُوعًا وَكَرْهًا وَظَلُمُهمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاَصَالِ الْحَيَّةِ
(پ ۱۳، الرعد: ۱۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** ही को सजदा करते हैं जितने आस्मानों और ज़मीन में हैं खुशी से ख़्वाह मजबूरी से और उन की परछाइयां हर सुब्हो शाम।

जब जमादात भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को सजदा करते हैं तो फिर येह कैसे जाइज़ हो सकता है कि एक अक्ल रखने वाला शख्स इबादत की मुख़्तलिफ़ अक्साम से गाफ़िल रहे।

छटा वज़ीफ़ा :

जब अस्स का वक़्त शुरूअ हो जाए तो छटे वज़ीफ़े का वक़्त शुरूअ हो जाएगा। येह वोह वक़्त है जिस की **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क़सम याद फ़रमाई है : "وَالْعَصْرِ (پ ۳۰، العصر: ۱)" एक मा'ना येही है। एक तफ़्सीर के मुताबिक़ "أَصَالَ" से भी येही मुराद है और येही "عَشَى" है जिस का ज़िक्र **अल्लाह** तआला के इस फ़रमान में है : "وَعَشِيًّا (پ ۶، मريم: ۶۲)" एक मक़ाम पर है : "بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ (پ ۲۳، ص: ۱۸)"

इस वज़ीफ़े में अज़ान व इक़ामत के दरमियान चार रकअतों के इलावा और कोई नमाज़ नहीं जैसा कि ज़ोहर में गुज़र चुका है, फिर अस्स के फ़र्ज़ अदा कर के उन चार अक्साम में मशगूल हो जाए जो पहले वज़ीफ़े में मज़कूर हुईं हत्ता कि धूप दीवारों के ऊपर सरों तक पहुंच जाए और

सूरज ज़रद हो जाए, उस वक़्त जब नमाज़ पढ़ना ममनूअ हो जाए तो ग़ौरो फ़िक्र और मअानी के समझते हुए कुरआने पाक की तिलावत करना अफ़ज़ल है कि येह ज़िक्रो फ़िक्र और दुआ तीनों की जामेअ है लिहाज़ा इस क़िस्म में तीन अक़्साम के अक़षर मक़ासिद दाख़िल हो जाएंगे ।

शातवां वज़ीफ़ा :

जब सूरज ज़रद हो जाए बई तौर कि ज़मीन के क़रीब हो जाए या'नी उस की रोशनी को सतह ज़मीन से उठने वाले बुख़ारात और गुबार छुपा लें और उस की रोशनी में ज़र्दी देखी जाए तो इस वज़ीफ़े का वक़्त शुरू हो जाएगा, येह वज़ीफ़ा पहले वज़ीफ़े की तरह है जो तुलूए फ़ज़्र से तुलूए आफ़ताब तक था, जैसे वोह तुलूए आफ़ताब से पहले तक था ऐसे ही येह गुरुबे आफ़ताब से पहले तक है और **अल्लाह** तअ़ाला के इस फ़रमान से भी येही वक़्त मुराद है :

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾

(प २१, الروम: १)

तर्जमए कन्ज़ुल इमन : तो **अल्लाह** की पाकी बोलो जब शाम करो और जब सुबह हो ।

और येही वोह दूसरी तरफ़ है जो **अल्लाह** तअ़ाला के इस फ़रमान में मुराद है :

فَسَبِّحْهُ وَاطْرَافَ النَّهَارِ (प १२, طه: १३०)

तर्जमए कन्ज़ुल इमन : और दिन के कनारों पर (उस की पाकी बोलो) ।

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “अकाबिरीन رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِينِ दिन के पहले हिस्से से ज़ियादा शाम की ता'जीम किया करते थे ।”

बा'ज बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं : “अकाबिरीन رَحْمَةُ اللَّهِ الْمُبِينِ दिन के पहले हिस्से को दुन्या के लिये और आख़िरी हिस्से को आख़िरत के लिये क़रार देते थे ।”

लिहाज़ा इस वक़्त में वोह तमाम अवराद खुसूसन तस्बीह व इस्तिग़फ़ार करना मुस्तहब है जिन्हें हम ने पहले वज़ीफ़े में ज़िक्र किया है मषलन येह कहे :

اَسْتَغْفِرُ اللَّهَ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ وَأَسْأَلُهُ التَّوْبَةَ وَسُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ

या'नी मैं **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से बख़्शिश त़लब करता हूं जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं वोह खुद ज़िन्दा और दूसरों को क़ाइम रखने वाला है और मैं उस से तौबा का सुवाल करता हूं, पाकी है **अल्लाह** अज़मत वाले को और उसी की हम्द है ।” येह कलिमात इस फ़रमाने बारी तअ़ाला से माखूज़ हैं :

وَأَسْتَغْفِرُ لَذُنُوبِكَ وَسَيِّئِ بِحَدِّ رَبِّكَ
بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ۝ (پ ۲۳، المؤمن: ۵۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और अपनों के गुनाहों की मुआफी चाहो और अपने रब्ब की ता'रीफ करते हुए सुब्हो शाम उस की पाकी बोलो ।

कुरआने पाक में जितने अस्माए हुस्ना जिक्र किये गए हैं इन के साथ इस्तिगफार करना ज़ियादा पसन्दीदा है ।

तौबा व इस्तिगफार से मुतअल्लिक चन्द फ़रामीने बारी तआला :

﴿1﴾

أَسْتَغْفِرُ وَأَرْبُكُمُ ۖ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝ (پ ۲۹، نوح: ۱०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अपने रब्ब से मुआफी मांगो बेशक वोह बड़ा मुआफ़ फ़रमाने वाला है ।

﴿2﴾

وَأَسْتَغْفِرُ لَهُ ۖ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝ (پ ३०، النصر: ३)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है ।

﴿3﴾

رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّحِيمِينَ ۝ (پ १८، المؤمنون: ११८)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब्ब ! बख़्श दे और रहम फ़रमा और तू सब से बरतर रहम करने वाला ।

﴿4﴾

فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَفِيرِينَ ۝ (پ ९५، الاعراف: १५५)

तर्जमए कन्जुल ईमान : तू हमें बख़्श दे और हम पर मेहर (रहमो करम) कर और तू सब से बेहतर बख़्शने वाला है ।

गुरुबे आफ़ताब से पहले “وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَىٰ” “وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا” पूरी सूरतें और मुअव्वजतैन (या'नी सूराए फ़लक़ और सूराए नास) की तिलावत करना मुस्तहब है ताकि उस पर सूरज इस हालत में गुरुब हो कि वोह तौबा व इस्तिगफार में मशगूल हो ।

मगरिब की अज़ान के वक़्त की दुआ :

जब (मगरिब की) अज़ान सुने तो येह पढ़े :

يَا'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ येह तेरी रात के आने, तेरे दिन के जाने और तेरी तरफ़ बुलाने वालों की आवाज़ों का वक़्त है ।

जैसा कि पीछे गुजर चुका है। फिर अज्ञान का जवाब दे और नमाज़े मगरिब में मशगूल हो जाए। गुरुबे आफ़ताब के साथ ही दिन के वज़ाइफ़ भी ख़त्म हो चुके हैं।

मुहासबउ नफ़्स :

बन्दे को चाहिये कि अपने अहवाल की तरफ़ नज़र करे और नफ़्स का मुहासबा करे कि उस के रास्ते की एक मन्ज़िल गुजर चुकी है, अगर उस का येह दिन पिछले दिन के बराबर हो तो नुक़सान में है और अगर पिछले दिन से बदतर हो तो बरकत से महरूम है। चुनान्वे, मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : لَا بُورْكَ لِي فِي يَوْمٍ لَا أَزْدَادُ فِيهِ خَيْرًا : ”(1) या’नी मुझे उस दिन में बरकत नहीं दी गई जिस में, मैं भलाई में इज़ाफ़ा न करूं।“

अगर वोह अपने नफ़्स को पूरा दिन भलाई में कोशिश करने वाला और मशक्कत बरदाश्त करने वाला पाए तो उस के लिये खुशख़बरी है। लिहाज़ा इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र अदा करे कि उस ने अपने रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ दी और इसी पर काइम रखा। अगर दूसरी हालत में देखे तो फिर रात दिन का ख़लीफ़ा है। लिहाज़ा इस में साबिका कोताहियों की तलाफ़ी करने की कोशिश करे क्यूंकि नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं। नीज़ कोताहियों के तदारुक में मशगूल होने के लिये पूरी रात जिस्मानी सिहहत और उम्र के बाकी रहने पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र बजा लाए और दिल में तसव्वुर करे कि येह उस की उम्र का आख़िरी दिन है, जिस में ज़िन्दगी का सूरज गुरुब हो जाएगा फिर तुलूअ नहीं होगा और उस वक़्त कोताहियों के तदारुक और उज़्र ख़्वाही का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा। ज़िन्दगी चन्द रोज़ की है यकीनन येह तमाम के तमाम एक एक कर के गुज़र जाएंगे।

﴿.....صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ.....﴾

रात के वज़ाइफ़ का बयान

रात के वज़ाइफ़ पांच हैं :

पहला वज़ीफ़ :

जब सूरज ग़रूब हो जाए तो नमाज़े मग़रिब पढ़ने के बा'द मग़रिब और इशा के दरमियानी वक़्त को इबादत में सर्फ़ करे, इस वज़ीफ़े का आख़िरी वक़्त वोह है कि जब शफ़क़ गा़इब हो जाए, शफ़क़ से मुराद वोह सुर्ख़ी है जिस के गा़इब होने के साथ ही इशा का वक़्त शुरूअ हो जाता है (इन्दशशवाफ़ेअ) । **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ ने इस की क़सम याद फ़रमाई है :

فَلَا أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۖ (پ ۳۰، الانشقاق: ۶)

तर्जमए कज़्जुल ईमान : तो मुझे क़सम है शाम के उजाले की ।

इस वक़्त की नमाज़ को نَاشِئَةُ اللَّيْلِ कहते हैं क्यूंकि येह रात की साअतें आने का अव्वल वक़्त है और येह वक़्त उन अवक़ात में से है जो इस फ़रमाने बारी तआला में मज़कूर हैं :

وَمِنْ أَمَّا أَيْ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ (پ ۶، طه: ۱۳۰)

तर्जमए कज़्जुल ईमान : और रात की घड़ियों में उस की पाकी बोलो ।

येही “सलातुल अव्वाबीन” है । इस फ़रमाने बारी तआला से भी येही मुराद है :

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

(پ ۲۱، السجدة: ۶)

तर्जमए कज़्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से ।

येह हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से मरवी है । इब्ने अबी ज़ियाद ने इसे रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ मन्सूब किया है कि आप से इस आयत के मुतअल्लिक़ सुवाल किया गया तो इरशाद फ़रमाया : **يَا'نِي يَهْه نَمَاज़े मग़रिब व इशा के दरमियान है ।** फिर इरशाद फ़रमाया : **“عَلَيْكُمْ بِالصَّلَاةِ بَيْنَ الْعِشَائَيْنِ فَإِنَّهَا تَذْهَبُ بِمَلَاعَاتِ النَّهَارِ وَتَهْدُبُ آخِرَهُ”** या'नी तुम पर मग़रिब व इशा के दरमियान नमाज़ पढ़ना लाज़िम है क्यूंकि येह दिन के लगिवय्यात को ले जाती है और उस के आख़िर को साफ़ कर देती है ।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मग़रिब व इशा के दरमियान सोने वाले शख़्स के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया : वोह ऐसा न करे क्यूंकि येह वोह घड़ी है जो इस फ़रमाने बारी तआला से मुराद ली गई है :

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ

(پ ۲۱، السجدة: ۲۶)

तर्जमए कन्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख़्वाबगाहों से ।

अन क़रीब दूसरे बाब में मग़रिब व इशा के दरमियान इबादत करने की फ़ज़ीलत का बयान आया ।

इस वज़ीफ़े की तरतीब :

मग़रिब के बा'द पहले दो रकअतें पढ़े, इन में **قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ** और **قُلْ يَٰ أَيُّهَا الْكَافِرُونَ** पढ़े, येह दो रकअतें मग़रिब के फ़ौरन बा'द कोई कलाम या काम किये बिग़ैर पढ़े, फिर लम्बी लम्बी चार रकअतें पढ़े, फिर शफ़क़ गा़इब होने तक जिस क़दर आसानी हो नमाज़ पढ़ता रहे । अगर मस्जिद घर के क़रीब है और उस का इरादा मस्जिद में ए'तिकाफ़ करने का नहीं तो फिर घर में नमाज़ पढ़ने में भी कोई हरज नहीं, अगर नमाज़ इशा के इन्तिज़ार में ए'तिकाफ़ करने का इरादा करे तो येही अफ़ज़ल है जब कि बनावट और रियाकारी का अन्देशा न हो ।

दूसरा वज़ीफ़ा :

येह वज़ीफ़ा नमाज़ इशा का वक़्त शुरू होने से ले कर लोगों के सोने तक है और येह अन्धेरे के अच्छी तरह छा जाने का पहला वक़्त है । **اَللّٰهُ** عزّوجلّ इस की क़सम याद करते हुए इरशाद फ़रमाता है :

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ﴿١٧﴾ (پ ۳۰، الانشقاق: ۱۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और (मुझे क़सम है) रात की और जो चीज़ें इस में जम्अ होती हैं ।

मज़ीद फ़रमाता है :

اِلَىٰ غَسَقِ اللَّيْلِ (پ ۱۵، بتی اسراءیل: ۷۸)

तर्जमए कन्जुल ईमान : रात की अन्धेरी तक ।

इस वक़्त रात छा जाती और इस की तारीकी पुख़्ता हो जाती है ।

इस वज़ीफ़े की तरतीब :

इस वज़ीफ़े की तरतीब में तीन उमूर की रिआयत की जाएगी :

﴿1﴾.....इशा के फ़र्जों के इलावा मज़ीद 10 रकअतें पढ़े, चार रकअतें फ़राइज़ से पहले ताकि अज़ान व इक़ामत का दरमियानी वक़्त भी इबादत में गुज़रे, छे रकअतें फ़राइज़ के बा'द बई तौर

कि पहले दो रकअतें पढ़े फिर चार और इन में कुरआने करीम की मख्सूस आयात की तिलावत करे मषलन सूरए बकरह की आखिरी आयात, आयतुल कुरसी, सूरए हदीद की इब्तिदाई आयात और सूरए हशर की आखिरी आयात ।

﴿2﴾.....तेरह रकअतें पढ़े जिन के आखिर में वित्र हो क्यूंकि हुजूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रात की नमाज़ के बारे में अकषर रिवायात इसी तरह हैं । अक़ल मन्द लोग अपने वजीफ़े के अवकात रात के इब्तिदाई हिस्से में मुक़र्रर करते हैं जब कि मजबूत व ताक़तवर लोग आखिरी हिस्से में मुक़र्रर करते हैं और एहतियात यह है कि शुरूअ में ही मुक़र्रर कर ले क्यूंकि कभी कभी बन्दा बेदार नहीं हो पाता या उस पर खड़ा होना मुश्किल होता है मगर जब इस की आदत हो जाए तो फिर उस के लिये रात का आखिरी हिस्सा अफ़ज़ल है । इस नमाज़ में उन मख्सूस सूरातों में से 300 आयात की मिक्दार तिलावत करे जिन की हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अकषर तिलावत फ़रमाया करते थे । मषलन सूरए यासीन, सजदह, लुक़मान, दुख़बान, मुल्क, जुमर और सूरए वाकिअह ।⁽¹⁾

अगर येह नमाज़ न भी पढ़े तो भी सोने से पहले इन तमाम या इन में से बा'ज सूरातों की तिलावत को तर्क न करे । कि हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हर रात जो कुछ तिलावत फ़रमाया करते थे तीन अहादीष में मरवी है, ज़ियादा मशहूर सूरए सजदह, मुल्क, जुमर और वाकिअह है । एक रिवायत में सूरए जुमर और बनी इसराईल है ।

हज़ार आयात से अफ़ज़ल :

एक रिवायत में है कि हर रात “मुसब्बिहात” (या'नी सूरए हदीद, हशर, सफ़, जुमअह और तगाबुन) तिलावत फ़रमाया करते थे । फिर फ़रमाते :

﴿2﴾ ”.....فِيهَا آيَةٌ أَفْضَلُ مِنْ أَلْفِ آيَةٍ“ या'नी इन में से एक ऐसी आयत है जो हज़ार आयात से अफ़ज़ल है ।

①.....قوت القلوب، الفصل الثامن في ذكر اوراد الليل الخمسة، ج 1، ص 40-

②.....قوت القلوب، الفصل الثامن في ذكر اوراد الليل الخمسة، ج 1، ص 39-

سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: 3316، ج 5، ص 259-

سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: 3316، ج 5، ص 259، ”خير“ بدله ”افضل“-

इ-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ “سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى” का इजाफ़ा करते हुए छे की ता’दाद मुक़रर करते हैं क्यूँकि एक हदीषे पाक में है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى” को पसन्द फ़रमाते और वित्र की तीन रकअतों में येह तीन सूरेतें तिलावत फ़रमाते : “(1)..... (2) “سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى” (3)..... और (3)..... सूरे इख़्लास । (1) سُبْحَنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ : वित्र से फ़ारिग़ होने के बा’द तीन मरतबा येह कहते :

(3).....वित्र, अगर रात को क़ियाम की आदत न हो तो सोने से पहले ही वित्र पढ़ ले । हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “أَوْصَانِي رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ لَا أَتَمَّ إِلَّا عَلَى وَتَرٍ” : (2) “يا’नी प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे वसियत फ़रमाई है कि वित्र पढ़े बिगैर न सोऊँ ।” (2) अलबत्ता, अगर रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने की आदत हो तो ताख़ीर करना ही अफ़ज़ल है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “रात की नमाज़ दो दो रकअतें हैं फिर जब तुम में से कोई सुब्ह का खौफ़ करे तो एक रकअत और पढ़ ले जो इस की पढ़ी हुई नमाज़ को वित्र बना दे ।” (3)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि मेरे सरताज, साहिबे मे’राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने रात के इब्तिदाई हिस्से में भी वित्र पढ़े हैं, दरमियानी में भी और आख़िर में भी और आप के वित्र सहर पर मुन्तही हुए । (4) (5)

वित्रो से फ़ारिग़ होने के बा’द येह पढ़ना मुस्तहब है : سُبْحَنَ الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ رَبِّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ جَلَّتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضُ بِالْعِظَمَةِ وَالْجَبَرُوتِ وَتَعَزَّزَتْ بِالْقُدْرَةِ وَقَهَرَتْ الْعِبَادَ بِالْمَوْتِ या’नी मैं निहायत पाक बादशाह की पाकी बयान करता हूँ जो मलाइका और जिब्राईले अमीन का

①.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، ومن مسند علي بن أبي طالب، الحديث: ٤٣٢، ج ١، ص ٢٠٦۔

سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسنة فيها، باب ماجاء فيما يقرأ في الوتر، الحديث: ١١٤٢، ج ٢، ص ٤٧، مفهوماً۔

②.....صحيح مسلم، كتاب الصلاة، باب استحباب صلاة الضحى.....الخ، الحديث: ٤٢٢، ص ٣٦٢، عن أبي الدرداء۔

③.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة الليل مثنى مثنى.....الخ، الحديث: ٤٣٩، ص ٣٤٤۔

④मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान ميرआतुल मनाजीह، जि. 2 स. 273 पर इस के तहत फ़रमाते हैं : हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी इशा के वक़्त वित्र पढ़ लिये और कभी इशा पढ़ कर सोए और दरमियान रात जाग कर तहज्जुद व वित्र पढ़े मगर आख़िरी अमल येह रहा कि सुब्हे सादिक़ के क़रीब तहज्जुद के बा’द वित्र पढ़े । मुसलमान जिस पर अमल करेगा सुन्नत का षवाब पाएगा अगर्चे आख़िर रात पढ़ना अफ़ज़ल है । ⑤.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة الليل وعدد ركعات.....الخ، الحديث: ٤٣٥، ص ٣٤٣۔

रब्ब है। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तू ने आस्मानों और ज़मीन को अज़मत व जबरूत के साथ ढांपा हुआ है और तू अपनी कुदरत के साथ इज़ज़त वाला है और तू ने अपने बन्दों को मौत के ज़रीए क़ाबू कर रखा है।”

मरवी है कि “आक़ाए दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ विसाले ज़ाहिरी तक फ़राइज़ के इलावा दीगर नमाज़ें अक़षर अवक़ात बैठ कर अदा फ़रमाते।”⁽¹⁾

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “या’नी बैठ कर नमाज़ पढ़ने वाले के लिये खड़े हो कर नमाज़ पढ़ने वाले की ब निस्बत निस्फ़ षवाब है और लैट कर पढ़ने वाले के लिये बैठ कर पढ़ने वाले की ब निस्बत निस्फ़ षवाब है।”⁽²⁾ ⁽³⁾ येह फ़रमाने आलीशान इस पर दलालत करता है कि लैट कर नवाफ़िल पढ़ना दुरुस्त है।

तीशरा वज़ीफ़ा :

सोना (आराम करना) : नींद को वज़ाइफ़ में शुमार करने में कोई हरज नहीं क्यूंकि जब इस के आदाब की रिआयत की जाएगी तो येह सोना भी इबादत में शुमार होगा।

मन्कूल है कि बन्दा जब त़हारत व पाकीज़गी और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र पर सोता है तो बेदार होने तक नमाज़ी लिखा जाता है, इस के लिबास में एक फ़िरिश्ता दाख़िल हो जाता है, अगर हालते नींद में हरकत करता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करता है तो फ़िरिश्ता **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के लिये दुआ मांगता और मग़फ़िरत त़लब करता है।⁽⁴⁾

हदीषे पाक में है : “या’नी जब बन्दा बा वुजू सोता है तो उस की रूह अर्श तक बुलन्द होती है।”⁽⁵⁾

①.....سنن النسائي، كتاب قيام الليل وتطوع النهار، باب صلاة القاعد.....الخ، الحديث: ١٥٠، ص ٢٨٨، “مات” بدله “قبض”-

②.....मुफ़सिस्से शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَائِكَةِ मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 2 स. 266 पर इस के तहूत फ़रमाते हैं : जो शख्स नफ़ली नमाज़ क़ियाम पर क़ादिर होते हुए बैठ कर पढ़े तो उसे आधा षवाब मिलेगा फ़र्ज़ नमाज़ बिना उज़्र बैठ कर नहीं होगी।

③.....صحيح البخاري، كتاب تقصير الصلاة، باب صلاة القاعد، الحديث: ١١١٥، ج ١، ص ٣٤٩-

④.....قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع.....الخ، ج ١، ص ٦٤-

الزهد لابن المبارك، الجزء العاشر، الحديث: ١٢٢٢، ص ٢٢١، مفهومًا-

⑤.....قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع.....الخ، ج ١، ص ٦٤، “رفع روحه” بدله “عرج بروحه”-

आलम का सोना इबादत है :

येह तो अ़वाम के बारे में है, ख़वास, उ-लमा और पाक व साफ़ दिल रखने वालों का क्या आलम होगा ? येह तो वोह लोग हैं कि जिन पर नींद के आलम में असरार मुन्कशिफ़ होते हैं इसी वजह से हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :
 “نَوْمُ الْعَالَمِ عِبَادَةٌ وَنَفْسُهُ تَسْبِيحٌ” (1) या 'नी आलम का सोना इबादत और उस का सांस लेना तस्बीह है।"

हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अशअरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से पूछा : “आप शब बेदारी कैसे करते हैं ? फ़रमाया : “पूरी रात क़ियाम करता हूं, थोड़ी देर भी नहीं सोता और वक़फ़े वक़फ़े से कुरआने पाक पढ़ता हूं।” हज़रते सय्यिदुना मुआज़ बिन जबल رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “लेकिन मैं सोता हूं फिर उठता हूं और अपनी नींद को क़ियाम की तरह बाइषे षवाब शुमार करता हूं।” फिर दोनों ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर इस के मुतअल्लिक अर्ज़ की तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :
 “मुआज़ तुम से ज़ियादा फ़कीह है।” (2)

सोने के 10 आदाब :

«1».....वुजू और मिस्वाक कर के सोए कि मुस्तफ़ा जाने रहमत ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “जब बन्दा बा वुजू सोता है उस की रूह अर्श की तरफ़ ले जाई जाती है तो उस के ख़्वाब सच्चे होते हैं। अगर बा वुजू न सोए तो उस की रूह पहुंचने से कासिर रहती है और उसे परेशान कुन ख़्वाब आते हैं जो सच्चे नहीं होते।” (3) तहारत से ज़ाहिरी व बातिनी दोनों क़िस्म की तहारत मुराद है, तहारते बातिनी ही ग़ैब के पर्दों के मुन्कशिफ़ होने में मुअ्षिर होती है।

«2».....अपने सिरहाने मिस्वाक और वुजू का पानी रखे और बेदार होते वक़्त इबादत के लिये कमर बस्ता होने की निय्यत करे, जब भी बेदार हो तो मिस्वाक करे कि बा'ज़ बुजुर्ग इसी तरह किया करते थे। नीज़ मरवी है कि “हुज़ूर नबिय्ये पाक ﷺ हर रात कई बार मिस्वाक करते थे, हर बार सोते वक़्त भी और बेदार होते वक़्त भी।” (4)

①.....فردوس الاخبار للدليمي، باب النون، الحديث: ٢٩٩٩، ج ٢، ص ٣٢٥۔

②.....قوت القلوب، الفصل الرابع عشر في ذكر تقسيم قيام الليل.....الخ، ج ١، ص ٤٢۔

③.....قوت القلوب، الفصل الثالث عشر كتاب جامع.....الخ، ج ١، ص ٦٤۔

④.....صحيح مسلم، كتاب الطهارة، باب السواك، الحديث: ٢٥٦، ص ١٥٣، مفهوماً۔

अगर वुजू करना दुश्वार हो तो पानी से आ'जा पर मस्ह कर लेना मुस्तहब है। अगर वुजू के लिये पानी मुयस्सर न हो तो क़िल्ला रू बैठ कर ज़िक्रो दुआ और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कुदरत और उस की ने'मतों में ग़ौरो फ़िक्र करने में मशगूल हो जाए तो येह रात के क़ियाम के काइम मक़ाम हो जाएगा कि हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने बिस्तर पर आते वक़्त, रात को उठ कर नमाज़ पढ़ने की निय्यत करे फिर उस पर नींद ग़ालिब आ जाए हत्ता की सुब्ह हो जाए तो उस के लिये उस की निय्यत के मुताबिक़ षवाब लिखा जाएगा और उस की नींद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से उस पर सदका है।”⁽¹⁾

उसे कलाम की इजाज़त न दी जाएगी :

﴿3﴾.....जिस ने कोई वसिय्यत करनी हो वोह वसिय्यत लिख कर अपने सिरहाने रखे बिगैर न सोए क्यूंकि हालते नींद में रूह के क़ब्ज़ होने से अमन नहीं है तो अगर येह बिगैर वसिय्यत किये मर गया तो बरज़ख़ से ले कर रोज़े क़ियामत तक उस को कलाम करने की इजाज़त न दी जाएगी, दीगर फ़ौत शुदा लोग इस से मिलने के लिये आएंगे, इस से बातें करेंगे लेकिन येह उन से कलाम न कर सकेगा तो वोह एक दूसरे से कहेंगे : “येह मिस्कीन बन्दा बिगैर वसिय्यत के ही मर गया है !” लिहाज़ा अचानक मौत के ख़ौफ़ से वसिय्यत करना मुस्तहब है। अचानक मौत हल्की होती है मगर उस के लिये नहीं जो मौत के लिये तय्यार नहीं कि उस की पीठ पर लोगों के हुकूक का बोझ है।

﴿4﴾.....तमाम गुनाहों से तौबा कर के सोए, तमाम मुसलमानों के बारे में दिल साफ़ हो, दिल में किसी के जुल्म को बयान न करे और न ही बेदार होने के बा'द कोई गुनाह करने का इरादा करे कि हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो अपने बिस्तर में इस हालत में आए कि न तो किसी पर जुल्म की निय्यत हो और न ही किसी से बुग़ज़ व कीना रखता हो तो उस के साबिका जुर्मों को बख़्श दिया जाएगा।”⁽²⁾

﴿5﴾.....नर्म व मुलायम बिस्तर बिछा कर ऐश परस्ती में न पड़े बल्कि उसे बिल्कुल तर्क कर दे या फिर दरमियानी किस्म का बिस्तर इख़्तियार करे कि बा'ज़ बुजुर्ग सोने के लिये बिस्तर बिछाने को मकरूह समझते और इसे तकल्लुफ़ ख़याल करते थे। नीज़ अस्हाबे सुफ़्फ़ा رَضَوُا اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ أَجْمَعِينَ अपने और मिट्टी के दरमियान कोई चीज़ हाइल न करते और फ़रमाते : “हम इसी से पैदा किये

①.....سنن ابن ماجه، كتاب اقامة الصلاة والسننة فيها، باب ماجاء فيمن نام عن.....الخ، الحديث: ١٣٢٢، ج ٢، ص ١٣٣

②.....تاريخ دمشق لابن عساكر، محمد بن صالح ابونصر العسقلاني، الحديث: ١١٢٢٦، ج ٥٣، ص ٢٤٣، باختصار

गए हैं और इसी में लौटाए जाएंगे।” नीज़ इसे रक्कते क़ल्बी में इज़ाफ़े का बाइष और तवाज़ोअ के ज़ियादा लाइक़ ख़याल करते थे। लिहाज़ा जिस के लिये येह मुमकिन न हो तो वोह दरमियाना रास्ता इख़्तियार करे।

﴿6﴾....उस वक़्त तक न सोए जब तक नींद का ग़लबा न हो, जब रात के आख़िरी हिस्से में इबादत की निय्यत न हो तो नींद को लाने में भी तकल्लुफ़ न करे।

अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام की तीन ख़स्लतें :

हमारे अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام नींद के ग़लबे के वक़्त सोते, भूक की शिद्दत के वक़्त खाते और ज़रूरत के मुताबिक़ कलाम किया करते थे। इसी वजह से उन की येह सिफ़त बयान की गई है कि “वोह रात को बहुत कम सोया करते थे।” अगर नींद का इस क़दर ग़लबा हो जाए कि नमाज़ और ज़िक़्र से रोक दे और येह हालत हो जाए कि जो कुछ कहता है उसे समझता नहीं तो इतनी देर आराम कर ले कि जो कहता है समझने लगे।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बैठ कर सोने को नापसन्द फ़रमाया करते थे। नीज़ हदीषे पाक में है कि “रात के वक़्त मशक्क़त न झेलो।” (1)

एक रिवायत में है कि बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई कि “फुलां औरत रात को नमाज़ पढ़ती है, जब उस पर नींद का ग़लबा होता है तो एकरस्सी को थाम लेती है।” आप صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस से मन्अ करते हुए इरशाद फ़रमाया : “तुम में से कोई शख़्स रात में नमाज़ पढ़े तो इतनी देर पढ़े जितनी देर आसानी से पढ़ सके, जब नींद का ग़लबा हो तो सो जाए।” (2)

एक रिवायत में है कि “अमल में बक़दरे ताक़त मशक्क़त बर्दाश्त करो क्यूंकि **अल्लाह** عزّ وجلّ मलाल नहीं डालता हत्ता कि तुम खुद मलाल में पड़ो।” (3) एक रिवायत में है कि (4) “خَيْرُ هَذَا الدِّينِ أَيْسَرُهُ” या’नी इस दीन में सब से बेहतर चीज़ वोह है जो सब से ज़ियादा आसान हो।”

1.....فردوس الاخبار للدیلمی، باب اللام الف، الحدیث: ۶۲۲، ج ۲، ص ۲۲۰۔

2.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب امر من نعل فی.....الخ، الحدیث: ۸۶، ص ۳۹۵، مفہومًا۔

3.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فضیلة العمل الدائم.....الخ، الحدیث: ۸۵، ص ۳۹۵، بتغییر۔

4.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند الکوفیین، الحدیث: ۱۸۹۸، ج ۷، ص ۱۵۔

बारगाहे रिसालत में अर्ज की गई कि “फुलां शख्स नमाज़ पढ़ता है, सोता नहीं, रोज़ा रखता है, तर्क नहीं करता।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “लेकिन मैं नमाज़ भी पढ़ता हूँ और सोता भी हूँ, रोज़े भी रखता हूँ और इफ़्तार भी करता हूँ, येह मेरी सुन्नत है तो जिस ने मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ा वोह मुझ से नहीं।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “इस दीन से मुक़ाबला मत करो, बेशक येह मज़बूत व पुख़्ता है जो शख्स इस से मुक़ाबला करेगा, येह उस पर ग़ालिब आ जाएगा। लिहाज़ा अपने नफ़्स के नज़दीक **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की इबादत को नापसन्दीदा न ठहराओ।”⁽²⁾

﴿7﴾.....किब्ला रू हो कर सोए। किब्ला रुख़ होने की दो सूरतें हैं :

पहली सूरत : वोह है जो क़रीबुल मौत शख्स की होती है कि वोह अपनी गर्दन के पिछले हिस्से (या'नी गुद्दी) पर चित लैटे हुए होता है इस सूरत में किब्ला रू होना इस तरह होगा कि उस का चेहरा और पाउं के तल्वे किब्ले की तरफ़ हो (अहनाफ़ के नज़दीक किब्ले की जानिब पाउं फैलाना मकरूह है)

दूसरी सूरत : वोह है कि जिस तरह क़ब्र में किब्ले की तरफ़ रुख़ किया जाता है वोह येह है कि करवट के बल इस तरह लैटे कि चेहरा और बदन का सामने वाला हिस्सा किब्ले की तरफ़ हो येह उस वक़्त होगा जब सीधी करवट पर लैटे।

सोते वक़्त की दुआ :

﴿8﴾.....सोते वक़्त येह दुआ पढ़े : “يَا نِيَّيْ اَرْفَعْ رَاسِيْ وَصَضْعْتُ جَنْبِيْ وَيَسِيْرُكَ اَرْفَعْ” या'नी ऐ रब्ब **عَزَّوَجَلَّ** मैं तेरे ही नाम से अपना पहलू रखता हूँ और तेरे ही नाम से उठाता हूँ।” नीज़ “**दुआओं के बयान**” में जि़क़ कर्दा दुआए मापूरा भी पढ़े।⁽³⁾ मख़सूस आयात मषलन आयतुल कुरसी और सूराए बक़रह का आख़िरी रुकूअ वग़ैरा पढ़ना मुस्तहब है।

वोह कु़रआन न भूलेगा :

दर्जे ज़ैल आयात पढ़ना भी मुस्तहब है :

①.....صحیح مسلم، کتاب النکاح، باب استحباب النکاح لمن تاقت نفسه اليه.....الخ، الحديث: ١٢٠١، ص ٤٢٥،

دون الالفاظ “هذه سنتي”-

②.....السنن الكبرى للبيهقي، کتاب الصلاة، باب القصد في العبادة.....الخ، الحديث: ٢٤٢١-٢٤٢٣، ص ٢٤-٢٨،

③.....سنن أبي داود، کتاب الادب، باب مايقول عند النوم، الحديث: ٥٠٥٠، ج ٢، ص ٢٠٦-

وَالْهَيْكُمُ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ
الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّيِّئَاتِ وَالْأَرْضِ
وَإِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي
فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِ النَّاسِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ
مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَّاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ
الرِّيْحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لَا يَتِّ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

(پ ۲، البقرة: ۱۶۳، ۱۶۴)

منکूल है कि जो शख्स सोते वक्त मजकूर आयात पढ़ेगा **اللّٰهُ** उस पर कुरआने पाक को महफूज रखेगा (या'नी उसे कुरआने पाक याद रखने की तौफीक अता फ़रमाएगा) वोह कभी भी कुरआने पाक नहीं भूलेगा ।

सूरए आ'राफ़ की येह आयात भी तिलावत करे :

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّيِّئَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِ ۝
أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۝ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝ اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۝ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا

तर्जमए कन्जुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रहमत वाला मेहरबान । बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कशती कि दरया में लोगों के फ़ाइदे ले कर चलती है और वोह जो **اللّٰهُ** ने आस्मान से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला दिया और ज़मीन में हर किस्म के जानवर फैलाए और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में अक्ल मन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं ।

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब्ब **اللّٰهُ** है जिस ने आस्मान और ज़मीन छे दिन में बनाए फिर अर्श पर इस्तिवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक है रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के दबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत वाला है **اللّٰهُ** रब्ब सारे जहान का । अपने रब्ब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हद से बढ़ने वाले उसे पसन्द

وَطَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ (پ ۸، الاعراف: ۵۳ تا ۵۶)

سूरए बनी इसराईल की आखिरी दो

قُلِ ادْعُوا اللَّهَ أَدْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّا مَا
تَدْعُوا فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ وَلَا تَجْهَرُ
بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافُتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ
سَبِيلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَمْ
يَتَّخِذْ وَلَدًا وَلَمْ يَكُن لَّهُ شَرِيكٌ فِي
الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُن لَّهُ وَلِيٌّ مِّنَ الدَّلِّ وَ
كَبُرُهُ تَكْبِيرًا ۝ (پ ۵، اہنبی اسرائیل: ۱۱۰، ۱۱۱)

तो उस के लिबास में एक फिरिश्ता दाखिल होगा जो उस की हिफाजत के लिये मुक़रर किया गया होगा, वोह फिरिश्ता उस के लिये दुआए मग़फ़िरत करेगा ।

फिर मुअव्वजतैन (या'नी सूरए फ़लक़ और सूरए नास) पढ़ कर हाथों पर दम करे और दोनों हाथों को चेहरे और पूरे जिस्म पर फेर ले कि **اللَّهُ** के प्यारे हबीब **عَزَّ وَجَلَّ** से इसी तरह मरवी है ।^(१)

नीज़ सूरए कहफ़ के शुरू और आखिर से दस दस आयात पढ़े । येह आयात रात को इबादत के वासिते जागने के लिये हैं । अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तज़ा फ़रमाया करते : “मैं उस शख्स को कामिल अक़ल वाला नहीं समझता जो सूरए बकरह की आखिरी दो आयात पढ़े बिग़ैर सो जाए ।”

फिर पच्चीस पच्चीस मरतबा येह कलिमात कहे **سُبْحَانَ اللَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، اللَّهُ أَكْبَرُ** ताकि सब का मजमूआ 100 हो जाए ।

.....सोते वक़्त येह बात याद करे कि नींद भी मौत की एक किस्म है और बेदार होना मरने के बा'द क़ियामत के दिन दोबारा उठाए जाने की किस्म है । इरशादे बारी तअ़ाला है :

①.....صحیح البخاری، کتاب فضائل القرآن، باب فضل المعوذات، الحديث: ۵۰۱، ج ۳، ص ۴۰۷۔

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي
لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا (پ ۲۳، الزمر: ۴۲)

एक जगह इरशाद फ़रमाया :

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ
(پ ۷، الانعام: ۶०)

तर्जमए कन्जुल ईमान : **अल्लाह** जानों को वफ़ात देता है उन की मौत के वक़्त और जो न मरें उन्हें उन के सोते में ।

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोही है जो रात को तुम्हारी रूहें कब्ज़ करता है ।

इन आयात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नींद को मौत का नाम दिया है । जैसे जो शख्स नींद से बेदार होता है तो उस के लिये ऐसे मुशाहदात मुन्कशिफ़ होते हैं जो हालते नींद में उस के अहवाल के मुनासिब नहीं होते, ऐसे ही मरने के बा'द क़ियामत के दिन उठने वाला वोह कुछ देखेगा जिस का दिल में कभी ख़याल भी न आया होगा और न ही उसे कभी देखा होगा । ज़िन्दगी और मौत के दरमियान नींद की मिषाल ऐसे है जैसे दुन्या और आख़िरत के दरमियान बरज़ख़ ।

अनमोल मोती :

हज़रते सय्यिदुना लुक्मान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने बेटे से फ़रमाया : “ऐ बेटे ! अगर तुझे मौत के बारे में शक है तो मत सोना कि जैसे तू सोता है ऐसे ही तू मरेगा भी और अगर क़ियामत के दिन उठाए जाने में शक है तो सोने के बा'द बेदार मत होना कि जैसे तू सोने के बा'द बेदार होता है ऐसे ही मरने के बा'द क़ियामत के दिन उठाया जाएगा ।”

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “सीधी करवट और चेहरा क़िब्ला रू कर के सोया करो कि येह भी मौत है ।”

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :
सोते वक़्त प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का आख़िरी कलाम येह हुवा करता था :
اللَّهُمَّ رَبَّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ رَبَّنَا وَرَبَّ كُلِّ شَيْءٍ وَمَلِيكَهُ
अज़मत वाले अर्श के रब्ब ! हमारे रब्ब और हर चीज़ के रब्ब और मालिक ।

सोते वक़्त कैफ़ियत येह होती थी कि रुख़सार मुबारक दाहिने हाथ पर होता था और येह ख़याल फ़रमाते कि इसी रात विसाल फ़रमा जाएंगे ।^(१) येह मुकम्मल दुआ “दुआओं के बयान” में गुज़र चुकी है ।

बन्दा सोते वक़्त तीन बातों पर गौर करे :

बन्दे पर हक़ है कि सोते वक़्त दिल से तीन बातों के बारे में पूछ गछ करे : (1)....वोह किस बात पर सो रहा है ? (2).....उस के दिल पर किस चीज़ की महब्बत ग़ालिब है **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** और उस से मुलाक़ात की या दुनिया की ? (3)....येह यक़ीन करे कि मौत उसी हालत पर होगी जो दिल में ग़ालिब है और उसी हालत पर उठाय़ा जाएगा जिस पर मौत वाक़ेअ होगी क्यूंकि आदमी उसी के साथ होगा जिस से वोह महब्बत करता है या जिस चीज़ से वोह महब्बत करता है ।

बेदार हो तो येह दुआ पढे :

﴿10﴾.....बेदार होते वक़्त भी दुआ पढे । चुनान्चे, जब बेदार हो तो इधर उधर करवटे बदलते हुए वोह पढे जो मुस्तफ़ा जाने रहमत **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पढ़ा करते थे :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ

या'नी मा'बूद कोई नहीं एक **अल्लाह** सब पर ग़ालिब, मालिक आस्मानों और ज़मीन का और जो कुछ इन के दरमियान है, साहिबे इज़्ज़त बड़ा बख़्शाने वाला । (1)

कोशिश करे कि सोते वक़्त दिल पर जो आखिरी चीज़ जारी हो वोह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** का ज़िक्र हो और बेदार होते वक़्त जो चीज़ सब से पहले दिल पर वारिद हो वोह भी **अल्लाह** का ज़िक्र हो कि येह महब्बत की अ़लामत है । इन दोनों हालतों में दिल में वोही चीज़ होगी जो उस पर ग़ालिब है । लिहाज़ा दिल को इस के ज़रीए आज़माए कि येह महब्बत की अ़लामत है और येह अ़लामत दिल के बातिन से ज़ाहिर होती है । येह अज़कार सिर्फ़ इस लिये मुस्तहब हैं ताकि दिल ज़िक्रे इलाही की तरफ़ चल पड़े ।

बेदार होने के बा'द की दुआ :

जब बेदार हो तो येह कहते हुए उठे : **الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ** या'नी तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये जिस ने हमें मौत (नींद) के बा'द हयात (बेदारी) अ़ता फ़रमाई और हमें उसी की तरफ़ लौटना है । (2) पूरी दुआ हम ने “बेदार होने की दुआओं के बयान” में ज़िक्र कर दी है ।

①.....السنن الكبرى للنسائي، كتاب النعوت، العزيز الغفار، الحديث: ٤٢٨٨، ج ٢، ص ٢٠٠.

②.....سنن أبي داود، كتاب الادب، باب مايقول عندالنوم، الحديث: ٥٠٣٩، ج ٢، ص ٢٠٥.

चौथा वजीफ़ :

येह वजीफ़ा रात के पहले निस्फ़ से ले कर उस वक़्त तक है कि रात का छटा हिस्सा बाकी रह जाए, उस वक़्त बन्दा नमाज़े तहज्जुद के लिये उठ खड़ा होता है। लफ़्जे “तहज्जुद” उस नमाज़ के साथ खास है जो नींद से बेदार होने के बा’द होती है। येह वक़्त रात का दरमियानी हिस्सा होता है और येह वजीफ़ा उस वजीफ़े के मुशाबेह है जो ज़वाल के बा’द होता है क्योंकि वोह दिन का दरमियानी हिस्सा होता है। उस की क़सम याद करते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है :

وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ۖ (پ ۳۰، الضحیٰ: ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रात की (क़सम)

जब पर्दा डाले ।

या’नी जब साकिन हो जाए और उस का साकिन होना उसी वक़्त में होता है कि कोई आंख जागती बाकी नहीं रहती सिवाए उस के जो हय्युल कय्युम है, जिसे न ऊंघ आए न नींद। मन्कूल है कि “سَجَىٰ” का मा’ना फैलना और लम्बा होना है और येह भी कहा गया है कि इस का मा’ना है, “अन्धेरा होना है।”

इबादत के लिये कौन सा वक़्त अफ़ज़ल है ?

मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : “रात के किस हिस्से में दुआ ज़ियादा क़बूल होती है ?” इरशाद फ़रमाया : “جَوْفُ اللَّيْلِ” या’नी रात के दरमियानी हिस्से में।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में अर्ज़ की : “इलाही ! मैं तेरी इबादत करना पसन्द करता हूं कौन सा वक़्त अफ़ज़ल है ?” **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने वहुय फ़रमाई : “ऐ दावूद ! रात के पहले और आख़िरी हिस्से में इबादत न कर कि जो पहले हिस्से में इबादत करता है वोह दूसरे हिस्से में सो जाता है और जो आख़िरी हिस्से में इबादत करता है वोह पहले हिस्से में नहीं करता बल्कि रात के दरमियानी हिस्से में इबादत कर ताकि तू मेरे साथ और मैं तेरे साथ तन्हा होऊं और अपनी हाजतें मुझ तक पहुंचा ।”

मरवी है कि बारगाहे रिसालत में अर्ज़ की गई : “रात का कौन सा हिस्सा अफ़ज़ल है ?” तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया :

“نِصْفُ اللَّيْلِ الْغَابِرِ” या’नी रात का दूसरा निस्फ़ हिस्सा ।⁽²⁾

①.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب من رخص فیہما.....الخ، الحدیث: ۱۲۷۷، ج ۲، ص ۳۷۔

②.....قوت القلوب، الفصل الثامن فی ذکر اورار اللیل.....الخ، ج ۱، ص ۳۱۔

रात के दूसरे निस्फ की फ़ज़ीलत के बारे में बहुत सी रिवायात मरवी हैं, मषलन : इस वक़्त अर्श झूमता है, जन्नाते अदन से हवाएं चलती हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आस्माने दुन्या की तरफ़ नुज़ूल फ़रमाता है वगैरा ।

इस वज़ीफ़े की तरतीब :

इस वज़ीफ़े की तरतीब येह है कि बेदार होने की दुआओं से फ़ारिग़ हो कर वुजू की सुन्नतों, आदाब और दुआओं की रिआयत करते हुए वुजू करे फिर जाए नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह हो और क़िब्ला रू हो कर येह पढ़े :

“اللَّهُ أَكْبَرُ كَبِيرًا وَالْحَمْدُ لِلَّهِ كَثِيرًا وَسُبْحَنَ اللَّهِ بُكْرَةً وَأَصِيلًا” या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये बहुत ज़ियादा ता'रीफ़ें हैं और सुब्हो शाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पाकी है ।”

फिर दस दस बार येह पढ़े : سُبْحَنَ اللَّهِ، الْحَمْدُ لِلَّهِ और اللَّهُ أَكْبَرُ फिर येह पढ़े : या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सब से बड़ा है, वोह बादशाही व ताक़त, अज़मत व किब्रियाई और जलाल व कुदरत वाला है ।

तहज्जुद के लिये उठे तो येह पढ़े :

येह कलिमात भी कहे क्यूंकि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से तहज्जुद के लिये क़ियाम के वक़्त इन कलिमात का पढ़ना मरवी है :

اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ بَهَاءُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيُّومُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ وَمَنْ عَلَيْهِنَّ أَنْتَ الْحَقُّ وَمِنْكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ وَمُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَقٌّ - اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ أَمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْكَ أَتَيْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاعْفُ عَنِّي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ وَمَا أَسْرَفْتُ أَنْتَ الْمُقَدِّمُ وَأَنْتَ الْمُؤَخِّرُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ - اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا أَنْتَ وَلِيِّهَا وَمَوْلَاهَا - اللَّهُمَّ اهْدِنِي لِحَسَنِ الْأَعْمَالِ لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ وَأَصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ - أَسْأَلُكَ مَسْأَلَةَ الْبَائِسِ الْمُسْكِينِ وَادْعُوكَ دُعَاءَ الْمُفْتَقرِ الدَّالِّيلِ فَلَا تَجْعَلْنِي بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا وَكُنْ بِي رءُوفًا رَحِيمًا يَا خَيْرَ الْمُسْتَوْسِلِينَ وَأَكْرَمَ الْمُعْطِينَ -

या'नी ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तेरे ही लिये हम्द है तू आस्मानों और ज़मीन का नूर है। तेरे ही लिये हम्द है तू आस्मानों और ज़मीन का जमाल है। तेरे ही लिये हम्द है तू आस्मानों और ज़मीन का रब्ब है। तेरे ही लिये हम्द है आस्मानों और ज़मीन और जो कुछ इन में है और जो कुछ इन पर है तू ही इन का काइम रखने वाला है। तू ही हक़ है। तुझी से हक़ है। तुझ से मिलना हक़ है। जन्नत हक़ है। जहन्नम हक़ है। क़ियामत के दिन उठना हक़ है। अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** हक़ हैं और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** हक़ हैं। ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ तेरे लिये मैं इस्लाम लाया, तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर भरोसा किया, तेरी तरफ़ रुजूअ किया, तेरे भरोसे पर मैं कुफ़फ़ार से लड़ता हूँ, तुझ से फैसला चाहता हूँ, मेरे अगले पिछले, छुपे खुले गुनाह और मेरी ज़ियादतियां बख़्श दे, तू ही आगे बढ़ाने वाला है और तू ही पीछे हटाने वाला है, तू ही मा'बूद तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं। ⁽¹⁾ ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरे नफ़्स को तक्वा अता फ़रमा और इसे पाक कर दे कि तू बेहतर पाक करने वाला है तू ही इस का वाली व मौला है। ⁽²⁾ ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझे अच्छे आ'माल की तरफ़ हिदायत अता फ़रमा कि तू ही अच्छे आ'माल की तरफ़ हिदायत अता फ़रमाता है, और बुराइयों को मुझ से फेर दे कि तेरे सिवा बुराइयों को मुझ से कोई नहीं फेरता। ⁽³⁾ मैं ख़स्ता हाल मिस्कीन की तरह तुझ से सुवाल करता और ज़लीलो ख़वार हाजतमन्द की तरह तुझ से दुआ करता हूँ तो ऐ मेरे रब्ब ! मुझे ना मुराद न लौटाना और मुझ पर रऊफ़ुरहीम हो जा, ऐ उन सब से बेहतर ज़ात जिन से सुवाल किया जाता है और ऐ अता करने वालों में सब से मुअज़्ज़ज़ ज़ात ! ⁽⁴⁾

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** फ़रमाती हैं : मेरे सरताज, साहिबे मे'राज **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** जब रात में उठते और नमाज़ शुरू करते तो येह कहते : **اَللّٰهُمَّ رَبَّ جِبْرَائِیلَ وَمِیْكَائِیلَ وَاِسْرَافِیلَ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ الْغُیْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَیْنَ عِبَادِكَ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یُخْتَلَفُوْنَ اِهْدِنِیْ لِیْمَا اُخْتَلَفَ فِیْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِفْئِنْكَ اِنَّكَ تَهْدِیْ مَنْ تَشَآءُ اِلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ**

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الدعاء فی صلاة.....الخ، الحدیث: ۷۹، ص ۳۸۹، بتغییر۔

قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع.....الخ، ج ۱، ص ۶۸۔

②.....المسند للامام احمد بن حنبل، مسند السيدة عائشة رضى الله عنها، الحدیث: ۲۵۸۱، ج ۱۰، ص ۲۷۔

③.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الدعاء فی صلاة اللیل.....الخ، الحدیث: ۷۷۱، ص ۳۹۰۔

قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع.....الخ، ج ۱، ص ۶۸، "لاحسن الاخلاق" بدله "لاحسن الاعمال"۔

④.....المعجم الصغير، من اسمه عبدالملك، الحدیث: ۲۹۷، ج ۱، ص ۲۷۷، بتغییر۔

قوت القلوب، الفصل الثالث عشر کتاب جامع.....الخ، ج ۱، ص ۶۸۔

या'नी ऐ **अल्लाह** ! ऐ जिब्राईल, मीकाईल और इसराफ़ील के रब्ब ! आस्मानों और ज़मीन के बनाने वाले, छुपे खुले के जानने वाले तू ही अपने बन्दों का उन चीज़ों में फैसला करेगा जिस में वोह झगड़ते हैं, मुझे अपने करम से उस हक़ की हिदायत दे जिस में इख़िलाफ़ है तू जिसे चाहे सीधे रस्ते की हिदायत दे ।⁽¹⁾

फिर नमाज़ शुरूअ करे और हल्की हल्की (या'नी छोटी सूरतों के साथ) दो रकअतें पढ़े फिर जिस क़दर आसानी हो दो दो रकअतें पढ़ता रहे और अगर वित्र न पढ़े हों तो वित्र पर इख़िताम करे । दो नमाज़ों के दरमियान सलाम फेरने के बा'द **100** तस्बीह की मिक़दार फ़ासिला करे ताकि राहत हासिल हो और मज़ीद नमाज़ के लिये चुस्ती पैदा हो ।

हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ के बारे में सहीह सनद के साथ मरवी है कि पहले दो हल्की फुल्की रकअतें पढ़ते फिर दो तवील रकअतें अदा फ़रमाते फिर कमी फ़रमाते जाते हत्ता कि तेरह रकअतें हो जातीं ।⁽²⁾

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से इस्तिफ़सार किया गया कि “हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात की नमाज़ में बुलन्द आवाज़ से क़िराअत फ़रमाते थे या आहिस्ता आवाज़ में ?” आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : “कभी बुलन्द आवाज़ से कभी आहिस्ता आवाज़ से ।”⁽³⁾

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “रात की नमाज़ दो दो रकअतें हैं, फिर जब सुब्ह हो जाने का अन्देशा हो तो (दो रकअतों के साथ) एक और रकअत मिला कर वित्र बना लो ।”⁽⁴⁾

एक रिवायत में है कि “नमाज़े मग़रिब दिन की नमाज़ों को ताक़ बना देती है तो तुम रात की नमाज़ को भी ताक़ बना लो ।”⁽⁵⁾ हुज़ूरे पुर नूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रात की नमाज़ के बारे में मरवी सहीह रिवायात में से अक़षर में तेरह रकअत का ज़िक़्र है ।⁽⁶⁾ इन रकअत में अपना कुरआने पाक का वज़ीफ़ा पढ़े या वोह मख़सूस सूरतें पढ़े जो इस पर आसान हों, येह उस वज़ीफ़े का हुक्म है जो रात के आख़िरी छटे हिस्से के क़रीब तक है ।

①.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الدعاء فی صلاة اللیل.....الخ، الحدیث: ۷۷۰، ص ۳۹۰۔

②.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب الدعاء فی صلاة.....الخ، الحدیث: ۷۶۵، ص ۳۸۸، باختصار۔

③.....سنن ابی داود، کتاب الوتر، باب فی وقت الوتر، الحدیث: ۱۴۳۷، ج ۲، ص ۹۵۔

④.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة اللیل مثنی مثنی.....الخ، الحدیث: ۷۴۹، ص ۳۷۷۔

⑤.....السنن الکبریٰ للنسائی، کتاب الوتر، الامر بالوتر، الحدیث: ۱۳۸۳، ج ۱، ص ۴۳۵۔

⑥.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة اللیل.....الخ، الحدیث: ۷۳۸، ص ۳۷۲۔

पांचवां वजीफ़ा :

रात का आखिरी छटा हिस्सा है और येह सहरी का वक़्त है। **अबू** **عز وجل** इरशाद फ़रमाता है :

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿١٨﴾

(प २१, अ १८: १८)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और पिछली रात इस्तिग़फ़ार करते।

मन्कूल है कि यहां इस्तिग़फ़ार करने से मुराद नमाज़ पढ़ना है (और नमाज़ को इस्तिग़फ़ार का नाम इस लिये दिया गया है) क्यूंकि इस में इस्तिग़फ़ार भी होता है। येह वक़्त फ़ज़्र के करीब होता है क्यूंकि येह रात के फ़िरिश्तों के जाने और दिन के फ़िरिश्तों के आने का वक़्त है।

हर हक़ वाले को उस का हक़ दो :

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने भाई हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से जिस रात मुलाक़ात की तो उन्हें इसी वजीफ़े का हुक्म दिया। एक तवील रिवायत के आखिर में है कि जब रात हुई तो हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** नमाज़ के लिये उठने लगे तो हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया : “सो जा।” आप सो गए। कुछ देर बा’द फिर जाने लगे तो उन्होंने ने फिर येही फ़रमाया कि “सो जा।” आप फिर सो गए। फिर सुब्ह के करीब हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उन से फ़रमाया : “अब उठो।” फिर दोनों ने उठ कर नमाज़ पढ़ी। फिर हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने उन से फ़रमाया : “बेशक तुम्हारी जान का तुम पर हक़ है, तुम्हारे मेहमान का तुम पर हक़ है और तुम्हारी ज़ौजा का भी तुम पर हक़ है। लिहाज़ा हर हक़ वाले को उस का हक़ दो।” येह उन्होंने ने इस वजह से फ़रमाया क्यूंकि हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की ज़ौजए मोहतरमा ने हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** को ख़बर दी थी कि येह पूरी रात सोते नहीं। फिर दोनों ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर येह वाक़िआ अर्ज़ किया तो आकाए नामदार, मदीने के ताजदार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया : “सलमान ने सच कहा।” (1)

येही पांचवां वजीफ़ा है। इस वक़्त में सहरी करना मुस्तहब है। येह वोह वक़्त है जब तुलूए फ़ज़्र का अन्देशा होता है। इन दोनों वजीफ़ों में येही नमाज़ का वजीफ़ा है।

जब तुलूए फ़ज़्र हो जाए तो रात के वज़ाइफ़ ख़त्म हो जाएंगे और दिन के वज़ाइफ़ शुरू हो जाएंगे। इस वक़्त उठ कर फ़ज़्र की दो सुन्नतें पढ़ें। इस फ़रमाने बारी तआला से येही मुराद है :

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

(प ५२, الطور: ९)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : और कुछ रात में उस की पाकी बोलो और तारों के पीठ देते ।

फिर येह आयते मुबारका पढ़ें :

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَالْبَكِّيَّةُ

وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلَهَ إِلَّا

هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ (प ३, अल عمران: १८)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आलिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर उस के सिवा किसी की इबादत नहीं इज़्ज़त वाला हिक्मत वाला ।

फिर येह पढ़ें :

وَأَنَا أَشْهَدُ بِمَا شَهِدَ اللَّهُ بِهِ لِنَفْسِهِ وَشَهِدْتُ بِهِ مَلَائِكَتُهُ وَأُولُوا الْعِلْمِ مِنْ خَلْقِهِ وَاسْتَوْدَعَ اللَّهُ هَذِهِ الشَّهَادَةَ وَهِيَ لِي عِنْدَ اللَّهِ تَعَالَى وَدِيْعَةٌ وَأَسْأَلُهُ حِفْظَهَا حَتَّى يَتَوَفَّأَنِي عَلَيْهِمُ اللَّهُمَّ احْطُطْ عَنِّي بِهَا وَزَرًّا وَاجْعَلْهَا لِي عِنْدَكَ ذُخْرًا وَاحْفَظْهَا عَلَيَّ وَتَوَفَّنِي عَلَيْهَا حَتَّى أَلْقَاكَ بِهَا غَيْرَ مُبَدَّلٍ تَبْدِيلًا

या'नी और मैं उस की गवाही देता हूं जिस की **अल्लाह** ने खुद अपने लिये गवाही दी है और जिस की उस के फ़िरिश्तों ने और उस की मख़्लूक में से इल्म वालों ने गवाही दी, मैं इस गवाही को **अल्लाह** तआला के पास अमानत रखता हूं, येह मेरे लिये **अल्लाह** के पास अमानत है, मैं **अल्लाह** से उस की हिफ़ाज़त का सुवाल करता हूं हत्ता कि वोह मुझे इसी पर वफ़ात दे। ऐ **अल्लाह** मुझ से (गुनाहों का) बोझ उतार दे और मेरी इस गवाही को मेरे लिये अपने पास ज़ख़ीरा कर ले, इस की हिफ़ाज़त फ़रमा और मुझे इसी पर वफ़ात दे हत्ता कि जब मैं तुझ से मिलूं तो इस में कोई तब्दीली न हुई हो।

एक दिन में चार जम्अ करने पर मग़फ़िरत की बिशारत :

येह बन्दों के लिये वज़ाइफ़ की तरतीब है। इस के साथ साथ अस्लाफ़े किराम **رَحِمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام** हर रोज़ चार उमूर जम्अ करने को भी मुस्तहब जानते थे : (1)....रोज़ा रखना। (2)....सदका देना अगर्चे थोड़ा ही हो। (3)....मरीज़ की इयादत करना। (4)....जनाजे में हाज़िर होना। इन चार उमूर के मुतअल्लिक मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया :

الرَّجُلُ فِي ظِلِّ صَدَقَتِهِ حَتَّى يَقْضَى بَيْنَ النَّاسِ

1033

आप “ۛ” (या’नी नहीं) न फ़रमाते अगर वोह चीज़ आप के पास न होती तो ख़ामोश रहते ।”(1)

दो रकअतें तमाम के बराबर :

मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ‘इब्ने आदम इस हाल में सुब्ह करता है कि उस के जिस्म के हर हर जोड़ पर सदका होता है ।”(2)

इस की तफ़सील येह है कि जिस्म में 360 जोड़ हैं तो तेरा नेकी का हुक्म करना सदका है, बुराई से मन्अ करना सदका है। कमज़ोर का बोझ उठाना सदका है, किसी को रास्ता बताना सदका है और (रास्ते से) तकलीफ़ देह चीज़ दूर कर देना सदका है।” हत्ता कि तस्बीह व तहलील का भी ज़िक्र फ़रमाया। फिर फ़रमाया : इन सब के साथ चाश्त की दो रकअतें भी पढ़ लो। या फ़रमाया : येह दो रकअतें सब को जामेअ होंगी।

अहवाल बदलने से वज़ाइफ़ का बदल जाना

जानना चाहिये कि आख़िरत की खेती का इरादा करने वाला और इस राह पर चलने वाला छे हालतों से ख़ाली न होगा : (1)....या तो वोह आबिद होगा (2).....या आलिम (3).....या तालिबे इल्म (4).....या हुक्मरान (5).....या पेशावर (6)....या फिर मुवहिद्द होगा कि ग़ैरुल्लाह से ए’राज़ कर के यक्ता व बे नियाज़ ज़ात (की मा’रिफ़त) में मुस्तगरक़ होगा।

﴿1﴾.....आबिद : वोह शख्स है जो खुद को इबादते इलाही के लिये बिल्कुल फ़ारिग़ कर दे, इस के इलावा और कोई काम न हो कि अगर इबादत को तर्क कर दे तो बिल्कुल बेकार हो कर बैठ जाए। इस के वज़ाइफ़ की तरतीब वोही है जो हम ने बयान की। इस के वज़ाइफ़ में तब्दीली होना कुछ बर्ईद नहीं क्यूंकि उस के अक़षर अवकात या तो नमाज़ या तिलावते कुरआन या फिर तस्बीहात में गुज़रेंगे।

सहाबउ किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَانُ के मा’मूलात :

बा’ज़ सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن का वज़ीफ़ा एक दिन में 12 हज़ार तस्बीहात पढ़ना था, बा’ज़ का 30 हज़ार तस्बीहात का था। बा’ज़ 300 से ले कर 600 और हज़ार तक नवाफ़िल पढ़ते थे। इन से नमाज़ के वज़ीफ़े में से जो कम से कम मिक्दार मरवी है वोह दिन

1.....صحیح مسلم، کتاب الفضائل، باب مسائل رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیہ وسلم.....الخ، الحدیث: ۲۳۱۱، ص ۱۲۶۵، باختصار۔

المسند للامام احمد بن حنبل، مسند انس بن مالک بن النضر، الحدیث: ۱۲۹۷۶، ج ۴، ص ۳۸۰، مفهوماً۔

2.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب استحباب صلاة الضحی.....الخ، الحدیث: ۷۲۰، ص ۳۲۳، مفهوماً۔

रात में 100 रकअतें हैं। बा'ज का अकषर वजीफ़ा कुरआने पाक की तिलावत होता था, कोई दिन में एक बार कुरआने पाक ख़त्म करता, बा'ज से दो मरतबा भी मरवी है, जब कि बा'ज दिन रात एक ही आयत को बार बार पढ़ते और उस में गौरो फ़िक्र करते रहते।

हज़रते सय्यिदुना कुर्ज बिन वबरह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللَّهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا में मुक्मीम थे, हर दिन और हर रात 70-70 मरतबा तवाफ़ करते, इस के साथ साथ दिन रात में दो बार कुरआने पाक ख़त्म करते। जब इस का हिसाब किया गया तो रोज़ाना की मसाफ़त दस फ़रसंग हुई और हर चक्कर पर दो रकअतें होती हैं तो रोज़ाना 280 रकअतें, दो ख़त्मे कुरआन और दस फ़रसंग (या'नी 30 मील) मसाफ़त हुई।

एक सुवाल और इस का जवाब :

अगर तुम कहो कि अपने अकषर अवकात को इन वज़ाइफ़ में से किस में सर्फ़ करना बेहतर है ? तो जान लो कि नमाज़ में खड़े हो कर गौरो फ़िक्र के साथ कुरआने पाक की तिलावत करना इन तमाम को जामेअ है लेकिन बसा अवकात इस पर मुवाज़बत (हमेशगी) इख़्तियार करना मुश्किल होता है। लिहाज़ा अफ़ज़ल येही है कि येह वज़ाइफ़ आदमी की हालत के तब्दील होने से तब्दील हो जाएं।

अवरादो वज़ाइफ़ से मक्शूद :

अवरादो वज़ाइफ़ का मक्सद दिल को पाक व साफ़ करना और اَبْلَاह عَزَّوَجَلَّ के ज़िक्र से इसे मानूस व मुज़य्यन करना है। लिहाज़ा आख़िरत का इरादा रखने वाले को चाहिये कि अपने दिल की तरफ़ नज़र करे, जिस वज़ीफ़े को ज़ियादा अषर करने वाला ख़याल करे उसी पर मुवाज़बत इख़्तियार करे और जब इस से उक्ताहट महसूस करे तो दूसरे वज़ीफ़े की तरफ़ मुन्तक़िल हो जाए।

इसी लिये हम अकषर मख़्लूक के लिये येही बेहतर समझते हैं कि वोह इन वज़ाइफ़ को मुख़्तलिफ़ अवकात पर तक्सीम कर दें जैसा कि पीछे गुज़र चुका है और एक क़िस्म से दूसरी क़िस्म की तरफ़ मुन्तक़िल होते रहें क्यूंकि तबीअत पर उक्ताहट ग़ालिब आ जाती है, नीज़ एक आदमी की हालतें भी तब्दील होती रहती हैं। लेकिन जब वज़ाइफ़ का मक्सद व राज़ समझ ले तो इस मा'ना की पैरवी करे मषलन : अगर तस्बीह सुने और दिल में उस के लिये कोई आवाज़ महसूस करे तो जब तक आवाज़ महसूस हो उस का तकरार करता रहे।

हिक्कयत :- मरने से पहले जन्नत का नज़ारा :

हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم से एक अब्दाल के बारे में मरवी है कि वोह एक रात दरया के कनारे नमाज़ पढ़ने खड़े हुए तो बुलन्द आवाज़ से तस्बीह पढ़ने

की आवाज़ सुनी लेकिन कोई नज़र न आया। पूछ : “आप कौन हैं? मैं आप की आवाज़ तो सुनता हूँ लेकिन शक्लो सूरत नहीं देखता?” कहा : “मैं एक फ़िरिश्ता हूँ जो इस दरया पर मुक़रर हूँ, जब से पैदा हुवा हूँ इसी तरह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तस्बीह कर रहा हूँ।” पूछ : “तुम्हारा नाम क्या है?” कहा : “महलहयाईल।” पूछ : “जो इस तस्बीह को पढ़े उस का षवाब क्या है?” जवाब दिया : “जो 100 मरतबा इस तस्बीह को पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक कि जन्नत में अपनी जगह न देख ले या उसे दिखा न दी जाए।” वोह तस्बीह येह है :

سُبْحَنَ اللَّهِ الْعَلِيِّ الدِّيَّانِ سُبْحَنَ اللَّهِ الشَّدِيدِ الدَّرْكَانِ سُبْحَنَ مَنْ يَذْهَبُ بِاللَّيْلِ وَيَأْتِي بِالنَّهَارِ سُبْحَنَ مَنْ لَا يُشْغَلُهُ شَأْنٌ عَنْ شَأْنٍ سُبْحَنَ اللَّهِ الْخَنَّانِ الْمُتَنَانِ سُبْحَنَ اللَّهِ الْمُسَبِّحِ فِي كُلِّ مَكَانٍ

या'नी पाकी है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जो बुलन्द, बदला देने वाला है, पाकी है **अल्लाह** मज़बूत अरकान वाले को, पाकी है उसे जो रात को ले जाता और दिन को लाता है, पाकी है उसे जिसे कोई काम दूसरे काम से नहीं फेर सकता, पाकी है **अल्लाह** हन्नान व मन्नान को, पाकी है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को जिस की हर जगह तस्बीह की जाती है।

चुनान्चे, जब आख़िरत का इरादा करने वाला येह और इस तरह की दीगर तस्बीहात सुने और अपने दिल में कोई आहट पाए तो इसे लाज़िम पकड़ ले और जिस अमल के पास दिल को पाए और दिल के लिये इस में ख़ैरो बरक़त का दरवाज़ा खुले तो इस पर मुवाज़बत इख़्तियार कर ले।
﴿2﴾अलिम : वोह शख़्स है कि फ़तवा, तदरीस या तस्नीफ़ में उस के इल्म से लोग नफ़अ उठाएं।

इस के वज़ाइफ़ की तरतीब आबिद की तरतीब के मुख़ालिफ़ है क्यूंकि इसे किताबों का मुतालआ करने, तस्नीफ़ करने और फ़ाइदा पहुंचाने की ज़रूरत होती है और इन चीज़ों के लिये लाज़िमी तौर पर इसे वक़्त की ज़रूरत होती है। लिहाज़ा अगर इसे अपना तमाम वक़्त इसी में लगा देना मुमकिन हो तो इस के लिये फ़ाइज़ और सुन्नते मुअक्कदा की अदाएंगी के बा'द इसी में मशगूल रहना अफ़ज़ल है। इस पर वोह तमाम रिवायात दलालत करती हैं जिन्हें हम किताबुल इल्म के तहूत सीखने, सिखाने के बयान में ज़िक्र कर आए हैं। नीज़ ऐसा क्यूं न हो हालांकि इल्म में ज़िक्रे इलाही पर मुवाज़बत, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल ﷺ के फ़रामीन में ग़ौरो फ़िक्र करना पाया जाता है, इस में मख़्लूक की मन्फ़अत और राहे आख़िरत की तरफ़ हिदायत हासिल होती है, कई बार ऐसा होता है कि एक तालिबे इल्म कोई मस्अला सीखता है तो इस से उस की उम्र भर की इबादत दुरुस्त हो जाती है अगर वोह इसे न सीखता तो उस की येह तमाम कोशिश बेकार जाती।

इबादत पर मुक़द्दम इल्म से कौन सा इल्म मुराद है ?

इबादत पर मुक़द्दम इल्म से हमारी मुराद वोह इल्म है जिस से लोग आख़िरत की तरफ़ राग़िब हों और दुन्या से बे रग़बती इख़्तियार करें या इस से मुराद वोह इल्म है कि जब आख़िरत के रास्ते पर चलने में मदद लेने की निय्यत से उसे सीखा जाए तो वोह इस में उन की मदद करे । वोह उलूम मुराद नहीं जिन के ज़रीए माल व जाह और लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करने की रग़बत में ज़ियादती होती है ।

आलिम के वक़्त की तक्सीम :

आलिम के लिये भी बेहतर येह है कि वोह अपने अवकात को तक्सीम कर ले क्यूंकि तमाम अवकात को इल्म की तरतीब में मशगूल रखने को तबीअत बरदाश्त नहीं करती । लिहाज़ा मुनासिब है कि बा'दे सुब्ह से तुलूए आफ़ताब तक के वक़्त को अवरादो वज़ाइफ़ के साथ ख़ास कर दे जैसा कि हम ने पहले वज़ीफ़े के बयान में ज़िक्र किया है । तुलूए आफ़ताब के बा'द से चाश्त तक के वक़्त को फ़ाइदा पहुंचाने और ता'लीम देने के साथ ख़ास कर दे जब कि उस के पास कोई ऐसा शख्स हो जो आख़िरत के लिये इल्म सीखता हो और अगर ऐसा कोई न हो तो उस वक़्त को ग़ौरो फ़िक्र में सर्फ़ करे और उन मसाइले दीनिय्या में ग़ौरो फ़िक्र करे जो उस पर मुश्किल हैं क्यूंकि ज़िक्र से फ़ारिग़ होने के बा'द और दुन्यवी रन्जो अफ़कार में मशगूल होने से पहले जो दिल की सफ़ाई है वोह उन मुश्किलात को समझने में मुआविन होगी । चाश्त के वक़्त से वक़्ते अस्स तक तस्नीफ़ और मुतालआ करने में मसरूफ़ रहे, खाने, तहारत, फ़र्ज नमाज़ और अगर दिन बड़ा हो तो हल्के से कैलूला के इलावा किसी वक़्त इसे तर्क न करे । वक़्ते अस्स से सूरज के ज़र्द होने तक तफ़सीर, हदीष और जो इल्मे नाफ़ेअ इस के सामने पड़ा जा रहा हो उसे सुने । सूरज ज़र्द होने से गुरुब होने तक ज़िक्र, इस्तिग़फ़ार और तस्बीह वग़ैरा में मसरूफ़ रहे । यूं इस का पहला वज़ीफ़ा जो तुलूए आफ़ताब से पहले है वोह ज़बान का अमल होगा, दूसरा वज़ीफ़ा जो चाश्त तक है वोह ग़ौरो फ़िक्र करने की वजह से क़ल्बी अमल होगा, तीसरा वज़ीफ़ा जो अस्स तक है वो मुतालआ करने और लिखने की वजह से आंखों और हाथों का अमल होगा, चौथा वज़ीफ़ा जो अस्स के बा'द है वोह समाअत का अमल होगा ताकि इस वक़्त आंखें और हाथ आराम पाएं क्यूंकि बा'ज अवकात अस्स के बा'द मुतालआ करना और लिखना आंखों के लिये मुज़िर होता है, सूरज के ज़र्द होने के वक़्त वोह फिर ज़बान के ज़िक्र की तरफ़ लौट जाएगा । लिहाज़ा दिन का कोई हिस्सा आ'ज़ा के आ'माल से ख़ाली न होगा और उस के साथ साथ तमाम अवकात में हुज़ूरे क़ल्ब भी हासिल होगा ।

रात के बारे में हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन इदरीस शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِي की तक्सीम कितनी अच्छी है कि वोह रात को तीन हिस्सों में तक्सीम फ़रमाया करते थे : पहला तिहाई मुतालए के लिये, दरमियानी तिहाई नमाज़ के लिये और आखिरी तिहाई सोने के लिये। सर्दियों में येह तक्सीम आसान है लेकिन गर्मियों में नफ़्स बा'ज़ अवकात इस तक्सीम को क़बूल नहीं करता मगर जब कि दिन के वक़्त ज़ियादा सोए। येह वोह है जिसे हम अ़ालिम के अवरादो वज़ाइफ़ की तरतीब में से मुस्तहब जानते हैं।

﴿3﴾.....**तालिबे इल्म** : इल्म सीखने में मशगूल होना ज़िक्र और नवाफ़िल में मशगूल होने से अफ़ज़ल है, वज़ाइफ़ की तरतीब में तालिबे इल्म का हुक्म भी अ़ालिम के हुक्म की तरह है लेकिन जहां अ़ालिम फ़ाइदा देने में मसरूफ़ होता है येह फ़ाइदा लेने में मसरूफ़ होता है, जहां अ़ालिम तस्नीफ़ व तालीफ़ में मसरूफ़ होता है येह लिखने और याद करने में मसरूफ़ होता है, इस के अवकात को इसी तरह तरतीब दिया जाएगा जैसा कि हम ने ज़िक्र किया है। किताबुल इल्म में सीखने और सिखाने के बयान में हमारा ज़िक्र कर्दा कलाम इस बात पर दलालत करता है कि येह अफ़ज़ल है, अगर कोई शख्स इन मा'नों में अ़ालिम न भी हो कि वोह लिखता और याद करता हो ताकि अ़ालिम बन जाए बल्कि अ़वाम में से हो तो भी उस का ज़िक्र, वा'ज़ और इल्म की मजलिस में हाज़िर होना उन अवराद में मशगूल होने से बेहतर है जिन्हें हम ने सुब्ह के बा'द तुलूए आफ़ताब के बा'द और बक़िय्या अवकात में ज़िक्र किया है।

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी हदीषे पाक में है कि **إِنَّ حُضُورَ مَجْلِسٍ ذُكِرَ أَفْضَلُ مِنْ صَلَاةِ الْفِ رَكْعَةٍ وَشُهُودِ الْفِ جَنَازَةٍ وَعِيَادَةِ الْفِ مَرِيضٍ** या'नी मजलिसे ज़िक्र में हाज़िर होना हज़ार रक़अत नमाज़ पढ़ने, हज़ार जनाज़ों में शिर्कत करने और हज़ार मरीज़ों की इयादत करने से अफ़ज़ल है।⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब तुम जन्नत के बागात देखो तो इन में से कुछ चुन लिया करो।” अर्ज की गई : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जन्नत के बागात क्या हैं?” इरशाद फ़रमाया : “ज़िक्र के हल्के।”⁽²⁾

हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहबार رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया : “अगर उ-लमा की मजालिस का षवाब लोगों पर ज़ाहिर हो जाए तो वोह इस पर एक दूसरे से लड़ें हत्ता कि हर हुकूमत वाला अपनी हुकूमत और हर दुकानदार अपनी दुकान को तर्क कर दे।”

①.....قوت القلوب، باب ذكر الفرق بين علماء الدنيا.....الخ، ج 1، ص 254، بتقديم وتأخر۔

②.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، الحديث: 3521، ج 5، ص 303، “رايتم” بدله “مررتم”۔

मुअज़्ज़ मक़ाम :

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़रूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया :

“एक शख्स अपने घर से इस हाल में निकलता है कि उस पर तहामा पहाड़ के बराबर गुनाह होते हैं, जब वोह किसी अलमि (के बयान) को सुनता है तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की खुफ़्या तदबीर से डरता और अपने गुनाहों से तौबा करता है और इस हाल में घर लौटता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता। लिहाज़ा तुम उ-लमा की मजालिस से जुदाई इख़्तार न करो क्यूंकि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने सत्हे ज़मीन पर मजालिसे उ-लमा से ज़ियादा मुअज़्ज़ कोई जगह नहीं बनाई।”

एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की खिदमत में दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “ज़िक्र की मजलिसों में हाज़िर हुवा करो।”

हिक्वायत :- महफ़िले ज़िक्र में हाज़िर होने की फज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना मिस्कीना तुफ़ाविय्या उन औरतों में से थीं जो ज़िक्र के हल्कों पर हमेशगी इख़्तियार करती थीं, अम्मार ज़ाहिद ने उन्हें ख़्वाब में देख कर कहा : “ऐ मिस्कीना ! खुश आमदीद।” उन्होंने ने कहा : “दूर हो ! मिस्कीनी चली गई, मालदारी आ गई।” अम्मार ज़ाहिद ने कहा : “वोह कैसे ?” जवाब दिया : “उस के बारे में क्या पूछते हो जिस के लिये तमाम की तमाम जन्नत मुबाह कर दी गई।” पूछा : “येह किस सबब से हुवा ?” जवाब दिया : “अहले ज़िक्र की महफ़िलों में बैठने की वजह से।”

हाशिले कलाम :

जिस अच्छे कलाम और पाक सीरत वाले वाइज़ के वा'ज़ की बरकत से दिल से दुन्या की महब्बत की गिरह खुल जाती है तो उस का वा'ज़ उन बहुत सी रक्आत से ज़ियादा बुलन्द मर्तबा और नफ़अ देने वाला है जिन के बा वुजूद दिल में दुन्या की महब्बत बाकी रहे।

﴿4﴾.....पेशावर : जो अपने अहलो इयाल के लिये कमाने का मोहताज हो उस के लिये अहलो इयाल से बे परवाही बरत कर अपने तमाम अवक़ात को इबादत में सर्फ़ करना जाइज़ नहीं बल्कि काम-काज के वक़्त उस का वज़ीफ़ा बाज़ार की हाज़िरी और काम-काज में मसरूफ़ होना है लेकिन अपने काम-काज के दौरान भी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िक्र को न भूले बल्कि तस्बीहात, ज़िक्र और कुरआने पाक की तिलावत पर हमेशगी इख़्तियार करे कि काम के साथ इन आ'माल को जम्अ करना मुमकिन है लेकिन नमाज़ को काम के साथ इकठ्ठा करना आसान नहीं, अलबत्ता ! अगर वोह बाग़बान हो तो उस वक़्त बाग़बानी के साथ साथ नमाज़ के वज़ाइफ़ को भी क़ाइम कर सकता है।

सदके की निर्यत से ज़ाइद माल कमाना कैसा ?

जब बकदरे किफ़ायत रोज़ी कमाने से फ़ारिग़ हो जाए तो अपने वज़ाइफ़ की तरतीब की तरफ़ लौट आए लेकिन अगर मज़ीद कमाने पर हमेशगी इख़्तियार करे और हाज़त से ज़ाइद माल को सदका कर दे तो येह उन तमाम वज़ाइफ़ से अफ़ज़ल है जिन्हें हम ने ज़िक्र किया क्यूंकि वोह इबादात जिन का फ़ाइदा मुतअद्दी होता (या'नी दूसरों तक भी पहुंचता) है उन इबादात से ज़ियादा नफ़अ मन्द होती हैं जिन का फ़ाइदा ग़ैर मुतअद्दी होता है (या'नी दूसरों तक नहीं पहुंचता) । सदके की निर्यत से कमाना ब ज़ाते खुद उस के लिये भी इबादत है जो इसे **अल्लाह** तआला से करीब करती है फिर इस से दूसरों को भी फ़ाइदा हासिल होता है और मुसलमानों की दुआओं की बरकात इसे शामिल होती हैं जिन की वजह से इस का अज़्र दुगना हो जाता है ।

﴿5﴾.....**हुकमरान** : मषलन इमामुल मुस्लिमीन, काज़ी और मुतवल्ली कि येह मुसलमानों के मुआमलात में ग़ौरो फ़िक्र करते हैं । लिहाज़ा इन का इख़्लास के साथ, शरीअत के मुताबिक़ मुसलमानों की हाज़ात और उन के उमूर सर अन्जाम देना मज़कूरा अवराद में मशगूल होने से अफ़ज़ल है ।

अपने और मुसलमानों के हुक्क की पासदारी :

इन का हक़ येह है कि येह दिन के वक़्त लोगों के हुक्क में मशगूल हों और सिर्फ़ फ़र्ज नमाज़ों पर इक्तिफ़ा करें और अवरादे मज़कूरा को रात में पूरा कर लें जैसा कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ किया करते थे और फ़रमाते : “मुझे नींद से क्या वासिता ? अगर मैं दिन के वक़्त सोऊं तो मुसलमानों के हुक्क जाएअ कर दूंगा और अगर रात के वक़्त सोऊं तो अपना हक़ जाएअ कर दूंगा ।”

इबादते बदनिया पर दो चीज़ें मुक़द्दम होंगी :

हमारे गुज़श्ता बयान से येह बात मा'लूम हो गई कि इबादते बदनिया पर दो चीज़ों को मुक़द्दम किया जाएगा : (1)....इल्म (2)....मुसलमानों के साथ नर्मी (और इन के मसालेह में ग़ौरो फ़िक्र) करना । क्यूंकि इन में से हर एक बज़ाते खुद अमले ख़ैर और ऐसी इबादत है जिसे तमाम इबादात पर इस लिये फ़ज़ीलत हासिल है कि इन का फ़ाइदा दूसरों को भी पहुंचता और नफ़अ फैलता है । लिहाज़ा येह दोनों बकिय्या इबादात पर मुक़द्दम होंगे ।

﴿6﴾.....मुवहिहद : जो यक्ता व बे नियाज़ जात (या'नी जाते बारी तआला की मा'रिफ़त) में मुस्तगरक रहे, जिस की सुब्ह इस हाल में हो कि उस की एक ही फ़िक्र हो, जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के सिवा किसी से महब्बत न करे और उस के सिवा किसी से न डरे, जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के सिवा किसी से रिज़क की उम्मीद न रखे, जिस चीज़ की तरफ़ भी देखे उस में जाते बारी तआला का मुशाहदा करे । (1)

तो जो शख्स इस दर्जे तक पहुंच जाए उसे तरह तरह के वज़ाइफ़ की हाज़त नहीं होती बल्कि फ़र्ज़ नमाजों के बा'द उस का एक ही वज़ीफ़ा होता है और वोह येह है कि हर हाल में उस का दिल जाते बारी तआला के हुज़ूर हाज़िर रहे, उस के दिल में जो खयाल भी आता, कानों में जो आवाज़ भी पड़ती और आंखों को जो शै भी दिखाई देती है उन के लिये इस में इब्रत, ग़ौरो फ़िक्र और मज़ीद अहवाल होते हैं, उस वक़्त **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ही उन्हें हरकत देता और साकिन करता है ।

येह तमाम अहवाल इस बात की सलाहियत रखते हैं कि उन के लिये (बसीरत और मा'निये मक्सूद के जुहूर में) ज़ियादती का सबब हों । लिहाज़ा उन के नज़दीक एक इबादत दूसरी इबादत से मुमताज़ नहीं होती और येही वोह लोग हैं जो **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** की तरफ़ भाग गए । जैसा कि इरशादे बारी तआला है :

لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾ فَرُّوْا اِلَى اللّٰهِ ط

(प ५०, २५९: ५०, २५९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कि तुम ध्यान करो तो **اَللّٰهُ** की तरफ़ भागो ।

इन ही पर येह फ़रमाने खुदावन्दी भी सादिक आता है :

وَإِذَا عَزَمْتَ لَهُمُ وَمَا يَعْبُدُونَ إِلَّا اللّٰهَ
فَأَوَّاهٍ إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرُ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ
رَّحْمَتِهِ ﴿١٥﴾ (الكهف: १५)

(प ५०, २५९: ५०, २५९)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब तुम उन से और जो कुछ वोह **اَلलّٰهُ** के सिवा पूजते हैं सब से अलग हो जाओ तो ग़ार में पनाह लो तुम्हारा रब्ब तुम्हारे लिये अपनी रहमत फैला देगा ।

①.....इस की मिषाल यूं समझिये कि कोई शख्स आईना खाना में दाख़िल हो तो वोह हर तरफ़ अपने आप को ही देखेगा इस लिये कि येही अस्ल और बक़िय्या जितनी सूरतें हैं सभी उस के अक्स हैं बिला तमषील वुजूदे हस्ती बिज़्जात वाजिब तआला के लिये है, उस के सिवा जितनी मौजूदात हैं उस की ज़िल्ले परतौ (या'नी अक्स) हैं लिहाज़ा साहिबे मर्तबा हर शै में जाते बारी तआला का मुशाहदा करता है । (मुलख़बसन मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 109, 110)

इस फ़रमाने बारी तअ़ाला में भी इन्ही लोगों की तरफ़ इशारा है :

إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيِّئِينَ ﴿٩٩﴾ (پ ۲۳، الصّٰفّٰت: ۹۹)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : मैं अपने रब्ब की तरफ़ जाने वाला हूं अब वोह मुझे राह देगा ।

येह सिद्दीकीन के दर्जात की इन्तिहा है, वज़ाइफ़ की तरतीब और एक तवील ज़माने तक इन की पाबन्दी के ज़रीए ही इस दर्जे तक पहुंचा जा सकता है ।

जो शख्स आख़िरत का इरादा करे उसे येह बातें सुन कर धोका नहीं खाना चाहिये कि वोह अपने नफ़्स के लिये इस का दा'वा करने लग जाए और अपनी इबादत के वज़ाइफ़ से राहे फ़िरार इख़्तियार करे ।

सिद्दीकीन के मर्तबे पर फ़ाइज़ शख्स की अ़लामात :

जो शख्स इस दर्जे तक पहुंच जाता है उस की अ़लामात येह है कि न तो उस के दिल में वस्वसे आएँ, न उस के दिल में गुनाह का ख़याल आए, न परेशानियों का हुजूम उसे अपनी जगह से हटा सके और न ही बड़े बड़े और अहम मुआमलात उसे उस की जगह से हिला सकें । लिहाज़ा येह मर्तबा हर एक को कैसे मिल सकता है ?

पस तमाम लोगों पर वज़ाइफ़ की तरतीब लाज़िम है जैसा कि हम ने ज़िक्र किया और वोह तमाम उमूर जो हम ने ज़िक्र किये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तक पहुंचने के रास्ते हैं । चुनान्चे, इरशाद होता है :

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَىٰ شَاكْرَتِهِ ۖ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ
بِمَنْ هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ﴿٨٤﴾ (پ ۱۵، البّٰنّٰی: ۸۴)

तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ सब अपने कींडे (अन्दाज़) पर काम करते हैं तो तुम्हारा रब्ब ख़ूब जानता है कौन ज़ियादा राह पर है ।

येह तमाम हिदायत याफ़्ता हैं । अलबत्ता बा'ज़ बा'ज़ से ज़ियादा हिदायत याफ़्ता हैं ।

”الْإِيمَانُ ثَلَاثٌ وَثَلَاثُونَ وَثَلَاثُ مِائَةِ طَرِيقَةٍ مِّنْ لِّقَى اللَّهِ تَعَالَىٰ بِالشَّهَادَةِ عَلَىٰ طَرِيقٍ مِّنْهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ : ”

या'नी ईमान के 333 रास्ते हैं जो शख्स इन में से किसी रास्ते पर भी गवाही देते हुए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा दाख़िले जन्नत होगा ।”(1)

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام ने फ़रमाया : “ईमान रसूलों की ता'दाद के मुताबिक 313 औसाफ़ पर है तो जो कोई इन में से एक वस्फ़ पर भी ईमान रखता होगा वोह राहे खुदा पर चलने वाला है।” पस तमाम मोअमिनीन सीधी राह पर हैं अगर्चे इबादत में उन के तरीके मुख़लिफ़ हैं। (इरशादे बारी तआला है) :

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ
إِلَىٰ سَرَائِمٍ الْوَسِيلَةَ إِلَيْهِمْ أَقْرَبُ

(پ ۱۵، بقی اسراءیل: ۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह मक्बूल बन्दे जिन्हें येह काफ़िर पूजते हैं वोह आप ही अपने रब्ब की तरफ़ वसीला ढूँडते हैं कि उन में कौन ज़ियादा मुक़रब है।

इन में फ़र्क़ सिर्फ़ कुर्ब के दर्जात में है, अस्ल कुर्ब में कोई फ़र्क़ नहीं। इन में से **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ के ज़ियादा करीब वोह है जिसे मा'रिफ़ते इलाही ज़ियादा हासिल है और जिसे **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ की ज़ियादा मा'रिफ़त हासिल है उस के लिये ज़रूरी है कि वोह इबादत भी ज़ियादा करें क्यूंकि जिस ने **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ की मा'रिफ़त हासिल कर ली वोह उस के इलावा किसी की इबादत नहीं करता। **वज़ाइफ़ में अस्ल इन पर हमेशागी इख़्तियार करना है :**

इन्सानों की तमाम अक्साम के हक़ में वज़ाइफ़ में अस्ल चीज़ इन पर हमेशागी इख़्तियार करना है क्यूंकि इन का मक्सद येह है कि बातिनी सिफ़ात तब्दील हो जाएं और आ'माल अलाहिदा अलाहिदा तौर पर बहुत कम अषर करते हैं बल्कि इन के अषर करने का एहसास ही नहीं होता, अषर सिर्फ़ मजमूए पर मुरतब होता है लिहाज़ा एक अमल पर कोई अषर महसूस नहीं होता तो जब इस के पीछे दूसरा और तीसरा अमल नहीं लाएगा तो पहला अषर मिट जाएगा। येह उस फ़कीह की तरह होगा जिस का इरादा येह है कि वोह फ़कीहुन्नफ़्स हो, वोह फ़कीहुन्नफ़्स उसी वक़्त होगा जब कषरत के साथ तक़रार करे, अगर वोह एक रात तक़रार करने में ख़ूब मुबालगा करे, फिर एक महीने या एक हफ़्ते तक तक़रार न करे, फिर उस की तरफ़ लौटे और एक रात तक़रार में ख़ूब मुबालगा करे तो उस का कोई अषर नहीं होगा और अगर इतनी ही मिक्दाद को पै दर पै रातों पर तक्सीम कर दे तो इस का अषर ज़रूर होगा।

इसी राज़ की तरफ़ इशारा करते हुए **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ या'नी **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : “أَحَبُّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللَّهِ أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ” या'नी **اَعْلَاهُ** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा पसन्दीदा अमल वोह है जो हमेशा हो अगर्चे क़लील हो।” (1)

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अमल के बारे में पूछा गया तो आप رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने फ़रमाया : “मेरे सरताज, साहिबे मे’राज صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अमल दाइमी होता था और जब कोई अमल करते उसे बर करार रखते (या’नी हमेशा करते) ।”⁽¹⁾

इसी वजह से हुजूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जिसे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने किसी इबादत का आदी बनाया फिर उस ने उक्ताहट की वजह से इसे तर्क कर दिया तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस से नाराज़ है ।”⁽²⁾

नमाज़े अस्स के बा’द दो रकअतें पढ़ने का भी येही सबब है कि एक वफ़द के मुआमलात में मशगूलियत की वजह से आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم (की जोहर के बा’द) की दो रकअतें रह गईं तो बा’दे अस्स अदा पढ़ लीं, इस के बा’द हमेशा नमाज़े अस्स के बा’द येह दो रकअतें पढ़ते रहे लेकिन घर में पढ़ा करते थे मस्जिद में नहीं ताकि कोई आप صَلَّی اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी न करे । येह रिवायत उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका और उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा (رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا) से मरवी है ।

एक शुवाल और इस का जवाब :

क्या कोई शख्स इस अमल में हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैरवी कर सकता है ? हालांकि इस वक़्त में नफ़ल नमाज़ जाइज़ नहीं । इस का जवाब येह है कि उस वक़्त में नमाज़ के मकरूह होने के जो अस्बाब हम ने पीछे ज़िक्र किये हैं कि (1).....सूरज की इबादत करने वालों की मुशाबहत से बचना । (2).....शैतान का सींग ज़ाहिर होने के वक़्त सजदा करना । (3)....उक्ता जाने के ख़ौफ़ से इबादत से कुछ देर आराम करना । येह तीनों अस्बाब आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم के हक़ में मुतहक्किक नहीं । लिहाज़ा आप पर दूसरों को क़ियास नहीं किया जा सकता । इस पर दलील आप का येह मुबारक फै’ल है कि आप صَلَّय اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم इन दो रकअतों को अपने घर में अदा फ़रमाया करते थे कि कहीं कोई शख्स पैरवी न करे ।



①.....صحیح مسلم، کتاب الصلوة، باب فضیلة العمل الدائم.....الخ، الحدیث: ۴۸۴-۴۸۳، ص ۳۹۴۔

②.....قوت القلوب، الفصل التاسع فيه ذکر وقت الفجر.....الخ، ج ۱، ص ۴۴، بتغییر قلیل۔

बयान नम्बर 2 :

क्रिया मुल्लैल में आआनी पैदा करने वाले अस्बाब, शब बेदारी के लिये मुस्तहब रातें, मगरिब व इशा के दरमियानी वक़्त और शब बेदारी की फज़ीलत और शब के अवक़ाल की तक्सीम का बयान मगरिब व इशा के दरमियानी वक़्त की फज़ीलत बीस या चालीस साल के गुनाह मुआफ़ :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا से मरवी है कि मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **“अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के नज़दीक अफ़ज़ल नमाज़, मगरिब की नमाज़ है, इसे न तो मुसाफ़िर से कम किया और न ही मुक़ीम से, इस के ज़रीए रात की नमाज़ को शुरूअ फ़रमाया और दिन की नमाज़ को ख़त्म फ़रमाया तो जिस शख़्स ने नमाज़े मगरिब पढ़ी और इस के बा'द दो रकअतें पढ़ी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में दो महल बनाएगा।” (1) रावी का बयान है कि मुझे मा'लूम नहीं कि वोह दो महल सोने के होंगे या चांदी के। जिस ने चार रकअतें पढ़ी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के 20 साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा। या फ़रमाया : **“40 साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा।” (2)**

गोया शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ी :

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा और हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : **“जिस ने नमाज़े मगरिब के बा'द छे रकअतें पढ़ीं तो येह उस के हक़ में पूरा साल इबादत करने के बराबर है। या फ़रमाया : गोया उस ने शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ी :” (3)**

①.....تفسير القرطبي، پ ۲، البقرة، تحت الآية: ۲۳۸، ج ۲، جزء ۳، ص ۱۵۹، بذكر "قصر"۔

قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فيه کتاب فضل الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۸۔

②.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فيه کتاب فضل الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۸۔

تفسير القرطبي، پ ۲، البقرة، تحت الآية: ۲۳۸، ج ۲، جزء ۳، ص ۱۵۹۔

③.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فيه کتاب فضل الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۸۔

जन्नती महल :

हज़रते सय्यिदुना षौबान رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “जो मग़रिब व इशा के दरमियान मस्जिद में ठहरा रहे, नमाज़ और कुरआन के इलावा कोई बात न करे, तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के ज़िम्माए करम पर हक़ है कि उस के लिये जन्नत में दो महल बनाए जिन में से हर एक की मसाफ़त **100** साल होगी, दोनों के दरमियान उस के लिये दरख़्त लगाएगा कि अगर अहले दुन्या उस का चक्कर लगाएं तो वोह सब का इहाता कर ले।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “जिस ने मग़रिब व इशा के दरमियान **10** रकअतें पढ़ी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये जन्नत में एक महल बनाएगा।” अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तब तो हमारे महल बहुत ज़ियादा हो जाएंगे !” इरशाद फ़रमाया : “**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ सब से ज़ियादा कषरत व फज़ल फ़रमाने वाला है।” या फ़रमाया : “सब से ज़ियादा पाक है।”⁽²⁾

नमाज़े मग़रिब के बा'द दो रकअत पढ़ने की फज़ीलत :

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि मुस्तफ़ा जाने रहमत **10** आयत और दरमियान से येह दो आयत पढ़े :

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمَنُ
الرَّحِيمُ ۝ إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَ
اِخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي
الْبَحْرِ بِسَیْفَةٍ النَّاسِ وَمَا أُنْزِلَ اللّٰهُ مِنْ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक मा'बूद है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रहमत वाला । बेशक आस्मानों और ज़मीन की पैदाइश और रात व दिन का बदलते आना और कश्ती कि दरया में लोगों के फ़ाइदे ले कर चलती है और वोह जो **अल्लाह** ने आस्मान

①.....قوت القلوب، الفصل الحادی عشر فيه کتاب فضل الصلاة.....الخ، ج ۱، ص ۵۸

②.....الزهد لابن المبارك، الجزء العاشر، الحديث: ۲۶۲، ص ۴۶۶۔

السَّيِّئَاتِ مِنْ مَّا كَانَ حَيَاةِ الْأَرْضِ بَعْدَ مَوْتِهَا
وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيحِ
وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
لَا يَتَّبِعُ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٣﴾ (پ: البقرة: ۱۶۳، ۱۶۴)

से पानी उतार कर मुर्दा ज़मीन को इस से जिला
दिया और ज़मीन में हर किस्म के जानवर फैलाए
और हवाओं की गर्दिश और वोह बादल कि आस्मान
व ज़मीन के बीच में हुक्म का बांधा है इन सब में
अक्लमन्दों के लिये ज़रूर निशानियां हैं ।

फिर 15 मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ कर रुकूअ और सजदा करे । दूसरी रक्अत में सूरए
फ़ातिहा, आयतुल कुरसी और इस के बा'द की येह दो आयात पढ़े :

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ
الْغَىِّ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدْ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انْفِصَامَ لَهَا
وَاللَّهُ سَبِيْعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٦﴾ اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا
يُخْرِجُهُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا أَوْلِيَ لَهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُمْ
مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هُم فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥٧﴾ (پ: البقرة: ۲۵۶، ۲۵۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में
बेशक ख़ूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो
शैतान को न माने और **अल्लाह** पर ईमान लाए उस
ने बड़ी मोहकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं
और **अल्लाह** सुनता जानता है । **अल्लाह** वाली है
मुसलमानों का उन्हें अन्धेरियों से नूर की तरफ़ निकालता
है और काफ़िरों के हिमायती शैतान हैं वोह इन्हें नूर से
अन्धेरियों की तरफ़ निकालते हैं येही लोग दोज़ख
वाले हैं इन्हें हमेशा इस में रहना ।

फिर सूरए बकरह की आखिरी तीन आयात पढ़े :

لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِنْ
تُبَدَّلُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخَفُّوهُ يَحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ
فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٥﴾ آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا
أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ही का है जो
कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और
अगर तुम ज़ाहिर करो जो कुछ तुम्हारे जी में है या
छुपाओ **अल्लाह** तुम से इस का हिसाब लेगा तो
जिसे चाहेगा बख़्शेगा और जिसे चाहेगा सज़ा देगा और
अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है । रसूल ईमान लाया
उस पर जो उस के रब्ब के पास से उस पर उतरा और

بِاللّٰهِ وَمَلٰئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ لَا نُفَرِّقُ
بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ وَقَالُوا سُبْحٰنَا
اَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾
لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا
اِنْ نَسِينَا اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا
اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا
رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۚ وَاعْفُ
عَنَّا وَاعْفُرْ لَنَا ۖ وَارْحَمْنَا ۚ اَنْتَ مَوْلَانَا
فَاَنْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾

(پ ۳، المائدة: ۲۸۴ تا ۲۸۶)

ईमान वाले सब ने माना **अल्लाह** और उस के फ़िरिश्तों और उस की किताबों और उस के रसूलों को ये कहते हुए कि हम उस के किसी रसूल पर ईमान लाने में फ़र्क नहीं करते और अर्ज की, कि हम ने सुना और माना तेरी मुआफ़ी हो ऐ रब्ब हमारे और तेरी ही तरफ़ फ़िरना है। **अल्लाह** किसी जान पर बोझ नहीं डालता मगर उस की ताक़त भर उस का फ़इदा है जो अच्छा कमाया और उस का नुक़सान है जो बुराई कमाई ऐ रब्ब हमारे हमें न पकड़ अगर हम भूलें या चूकें ऐ रब्ब हमारे और हम पर भारी बोझ न रख जैसा तू ने हम से अगलों पर रखा था ऐ रब्ब हमारे और हम पर वोह बोझ न डाल जिस की हमें सहार (ताक़त) न हो और हमें मुआफ़ फ़रमा दे और बख़्शा दे और हम पर महर (रहूम) कर तू हमारा मौला है तो काफ़िरों पर हमें मदद दे।

फिर 15 बार सूरए इख़्लास पढ़े।⁽¹⁾ तो इस का इतना षवाब है कि शुमार से बाहर है।

ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशरफ़ हो :

हज़रते सय्यिदुना कुर्ज बिन वबरह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो अब्दाल में से हैं। फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से अर्ज की : “मुझे ऐसी चीज़ सिखाइये जिस पर मैं हर रात अमल किया करूं।” उन्होंने ने फ़रमाया : “जब तुम नमाज़ मगरिब पढ़ लो तो इशा के वक़्त तक किसी से कलाम किये बिग़ैर नमाज़ पढ़ते रहो, जो नमाज़ पढ़ रहे हो उस की तरफ़ मुतवज्जेह रहो और हर दो रकअतों पर सलाम फेर दो। हर रकअत में एक बार सूरए फ़ातिहा, तीन बार सूरए इख़्लास पढ़ो। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हो जाओ तो अपने घर की तरफ़ लौट जाओ और किसी से कलाम न करो फिर दो रकअतें पढ़ो, हर रकअत में एक मरतबा सूरए फ़ातिहा और सात मरतबा सूरए इख़्लास पढ़ो। फिर सलाम फेरने के बा’द सजदा करो और इस में सात मरतबा

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से इस्तिग़फ़ार करो, फिर सात बार ये कहो :

①..... قوت القلوب، الفصل الحادى عشر فيه كتاب فضل الصلاة..... الخ، ج 1، ص 58.

سُبْحَنَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

(तर्जमा माक़ब्ल में गुज़र चुका है)

फिर सजदे से सर उठा कर सीधे हो कर बैठ जाओ और हाथों को उठा कर यूँ दुआ करो :

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ يَا إِلَهَ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ يَا رَحْمَنَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَرَحِمَهُمَا يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا رَبِّ يَا إِلَهَ يَا إِلَهَ يَا إِلَهَ

(तर्जमा माक़ब्ल में गुज़र चुका है)

फिर इसी हालत में खड़े हो जाओ कि हाथ उठे हुए हों और इसी तरह दुआ करो, फिर जहां चाहो क़ब्ला रुख़ हो कर अपनी सीधी करवट पर लैट जाओ और हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरुदे पाक पढ़ते पढ़ते सो जाओ ।

हज़रते सय्यिदुना कुर्ज बिन वबरह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی फ़रमाते हैं : मैं ने अर्ज की : “मुझे बताइये कि आप ने येह दुआ किन से सुनी है ?” फ़रमाया : “जब रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह दुआ सिखाई उस वक़्त मैं वहां हाज़िर था और जब आप पर येह दुआ वहूय की गई तब भी मैं ख़िदमत में हाज़िर था, येह सब मेरी मौजूदगी में हुवा । लिहाज़ा मैं ने येह दुआ उसी वक़्त सीख ली थी ।”

मन्कूल है कि “जो शख्स मज़क़ूरा दुआ व नमाज़ को हुस्ने यकीन और सिद्के निय्यत के साथ हमेशा पढ़ा करे वोह मरने से पहले पहले ख़्वाब में प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशरफ़ होगा ।” बा’ज़ हज़रात ने ऐसा किया तो उन्होंने ने देखा कि वोह जन्नत में दाख़िल किये गए, वहां उन्होंने ने आकाए दो आलम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के साथ साथ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की ज़ियारत भी की । नीज़ आप صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से कलाम भी फ़रमाया और ता’लीम भी फ़रमाई ।

ख़ुलासए कलाम :

मग़रिब व इशा के दरमियान इबादत करने की फ़ज़ीलत में कधीर रिवायात मरवी हैं हत्ता कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह عَنْهُ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से पूछा गया : “क्या हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़र्ज नमाज़ के इलावा भी किसी नमाज़ का हुक्म फ़रमाया करते थे ?” फ़रमाया : “मग़रिब और इशा के दरमियान नमाज़ का हुक्म फ़रमाया करते थे ।”(1)

1.....المسند للإمام أحمد بن حنبل، حديث عبيد مولى النبي، الحديث: ۲۳۷۱۳، ج ۹، ص ۱۶۵ -

एक रिवायत में है कि हुजूर नबिय्ये करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “मग़रिब व इशा के दरमियान की नमाज़, अव्वाबीन (या'नी बहुत तौबा करने वालों) की नमाज़ है।”⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना असवद बिन यज़ीद नख़ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِيّ फ़रमाते हैं : मैं मग़रिब व इशा के दरमियान जब भी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो उन्हें नमाज़ पढ़ते पाया। जब इस के बारे में उन से सुवाल किया तो उन्होंने ने फ़रमाया : “येह ग़फ़लत का वक़्त है (इस लिये नमाज़ पढ़ता हूँ)।”

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इस नमाज़ पर हमेशगी इख़्तियार फ़रमाते और फ़रमाया करते : येह शब बेदारी है और फ़रमाते : येह फ़रमाने बारी तआला इसी के मुतअल्लिक नाज़िल हुवा है :

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
(پ ۲۱، السجدة: ۲۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं
ख़्वाब गाहों से।

हज़रते सय्यिदुना अहमद बिन अबू हवारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِيّ फ़रमाते हैं : “मैं ने अबू सुलैमान दारानी قُدَسَ سِرُّهُ الْتَوْرَانِ से अर्ज़ की : “मैं दिन में रोज़ा रखूँ और मग़रिब व इशा के दरमियान खाना खाऊँ आप के नज़दीक़ येह ज़ियादा पसन्दीदा है या फिर येह कि मैं दिन में रोज़ा तर्क कर दूँ और मग़रिब व इशा के दरमियान इबादत करूँ?” तो उन्होंने ने फ़रमाया : “इन दोनों को जम्अ करो।” मैं ने कहा : “अगर इन्हें जम्अ करना आसान न हो तो।” फ़रमाया : “रोज़ा तर्क कर दो और इस दौरान इबादत करो।”

शब बेदारी की फज़ीलत

शब बेदारी की फज़ीलत से मुतअल्लिक 6 फ़रामीने बारी तआला :

﴿1﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلَاثٍ
الَّيْلِ (پ ۲۹، مزمل: ۲۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब्ब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो कभी दो तिहाई रात के करीब।

﴿2﴾

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ قِيْلًا
(پ ۲۹، مزمل: ۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक रात का उठना वोह ज़ियादा दबाव डालता है और बात ख़ूब सीधी निकलती है।

﴿3﴾

تَجَافَى جُوبُهُمْ عَنِ النَّصَاجِعِ
(پ ۲۱، السجدة: ۱۶)

تर्जमए कन्जुल ईमान : उन की करवटें जुदा होती हैं ख्वाबगाहों से ।

﴿4﴾

أَمَّنْ هُوَ قَانَتْ آثَاءُ اللَّيْلِ
(پ ۲۳، الزمر: ۹)

तर्जमए कन्जुल ईमान : क्या वोह जिसे फ़रमा बदारी में रात की घड़ियां गुज़रें ।

﴿5﴾

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا
(پ ۱۹، الفرقان: ۲۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और वोह जो रात काटते हैं अपने रब के लिये सजदे और क़ियाम में ।

﴿6﴾

وَأَسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ
(پ ۱، البقرة: ۴۵)

तर्जमए कन्जुल ईमान : और सब्र और नमाज़ से मदद चाहो ।

मन्कूल है कि जिस पर सब्र कर के मुजाहदए नफ़्स पर मदद तलब की जाती है वोह किया मुल्लैल है ।

शब बेदारी की फज़ीलत पर मुश्तमिल 18 फ़रामीने मुश्तफ़ा :

﴿1﴾.....जब तुम में से कोई सोता है तो शैतान उस की गुद्दी (या'नी गर्दन के पिछले हिस्से) पर तीन गिरहें लगाता है, हर गिरह पर येह डालता है कि अभी रात बहुत है सो जा, फिर अगर बन्दा बेदार हो जाए और **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करे तो एक गिरह खुल जाती है, फिर अगर वुजू करे तो दूसरी गिरह खुल जाती है, फिर अगर नमाज़ पढ़े तो तीसरी गिरह भी खुल जाती है और वोह खुश दिल पाक नफ़्स सुब्ह करता है वगर्ना पलीद तबीअत और सुस्त सुब्ह पाता है ।⁽¹⁾ (2)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَلَأَن मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 253 पर “तीन गिरहें लगा देता है” के तहत फ़रमाते हैं : यहां गिरह के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं बिना वजह तावील की ज़रूरत नहीं जादूगर धागे या बालों में कुछ दम कर के गिरह लगा देते हैं जिस का अषर महसूस (जिस पर जादू किया गया) पर हो जाता है ऐसे ही शैतान इन्सान के बालों में या धागे में सुब्ह के वक़्त ग़फ़लत की तीन गिरहें लगा देता है इसी लिये सुब्ह के वक़्त बड़े मज़े की नींद आती है । हुज़ूर صَلَّى اللّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इन तीन गिरहों को खोलने के लिये तीन अमल इरशाद फ़रमाए ।

②.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب ماروی فیمن نام اللیل.....الخ، الحدیث: ۷۷۷، ص ۳۹۲، بتغیر الفاظ۔

﴿2﴾.....बारगाहे रिसालत में एक शख्स का तज़क़िरा किया गया कि वोह सुब्ह तक सोता रहा नमाज़ के लिये न उठा। आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : “उस शख्स के कान में शैतान ने पेशाब कर दिया।” (1)

﴿3﴾.....शैतान के पास सूंघने, चाटने और आंख में डाली जाने वाली चीज़ें होती हैं, जब वोह किसी बन्दे को कुछ सुंघाता है तो उस के अख़्लाक़ बुरे हो जाते हैं, जब वोह उस को कुछ चटाता है तो वोह फ़ोद्दश गो हो जाता है और जब उस की आंखों में कुछ डालता है तो वोह सुब्ह तक सोता रहता है। (2)

﴿4﴾.....वोह दो रकअतें जिन्हें बन्दा रात के वस्त (दरमियान) में अदा करता है, उस के लिये दुन्या व माफ़ीहा (दुन्या और जो कुछ इस में है) से बेहतर हैं, अगर मैं अपनी उम्मत पर इसे मुश्किल ख़याल न करता तो उन पर इसे फ़र्ज कर देता। (3)

﴿5﴾.....रात में एक घड़ी ऐसी है कि जिस में मुसलमान बन्दा **अल्लाह** عزّوجلّ से जो भी भलाई का सुवाल करता है **अल्लाह** عزّوجلّ उसे ज़रूर अता फ़रमाता है। (4)

एक रिवायत में है कि इस घड़ी में **अल्लाह** عزّوجلّ से दुन्या व आख़िरत की भलाई का सुवाल करे, येह घड़ी हर रात में होती है। (5)

﴿6﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुग़ीरा बिन शा'बा رضي الله تعالى عنه फ़रमाते हैं : हुज़ूर नबिय्ये अकरम ﷺ ने क़ियाम फ़रमाया हत्ता कि क़दमैन शरीफ़ैन में वरम आ गया। अर्ज की गई : “या रसूलल्लाह ﷺ क्या **अल्लाह** عزّوجلّ ने आप के सबब उम्मत के अगले, पिछले गुनाहों को मुआफ़ नहीं फ़रमा दिया?” इरशाद फ़रमाया : “क्या मैं अपने रब्ब عزّوجلّ का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं?” (6)

1.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب ماروى فيمن نام الليل.....الخ، الحديث: 444، ص 392-

2.....قوت القلوب، الفصل الرابع عشر فى ذكر تقسيم قيام الليل.....الخ، ج 1، ص 46-

المعجم الكبير، الحديث: 6855، ج 4، ص 206، باختصار-

3.....الزهد لابن المبارك، الجزء العاشر، الحديث: 1289، ص 256-

4.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فى الليل ساعة.....الخ، الحديث: 454، ص 380-

5.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فى الليل ساعة.....الخ، الحديث: 454، ص 380-

6.....صحيح البخارى، كتاب التهجد، باب قيام النبى.....الخ، الحديث: 130، ج 1، ص 382، بتغير-

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस जवाब से येह बात ज़ाहिर होती है कि आप का येह इरशाद ज़ियादतिये रुत्बा से किनाया है क्यूंकि शुक्र मज़ीद इन्आम मिलने का सबब है। जैसा कि इरशादे बारी तआला है :

لَیْنِ شَکْرْتُمْ لَا زَیْدٌ لَّکُمْ (پ ۱۳، ابرہیم: ۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान : अगर एहसान मानोगे तो मैं तुम्हें और दूंगा ।

﴿7﴾.....हुजुरे पुरनूर, शाफ़ेए यौमुन्नुशूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम चाहते हो कि हालते हयात व वफ़ात और क़ब्रों हशर में तुम पर **اَبْلَاح** की रहमत हो तो रात को उठ कर नमाज़ पढ़ो और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की रिज़ा तलाश करो। ऐ अबू हुरैरा ! अपने घर के कोनों में नमाज़ पढ़ो तो आस्मानों में तुम्हारे घर का नूर इस तरह होगा जैसे अहले दुन्या के नज़दीक सितारों की रोशनी होती है।”

﴿8﴾.....तुम रात में उठना लाज़िम पकड़ लो क्यूंकि येह तुम से पहले नेकों का तरीका है और रब्ब عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ कुर्बत का ज़रीआ, गुनाहों को मिटाने वाला और आयन्दा गुनाहों से बचाने वाला है।⁽¹⁾

﴿9﴾.....जिस शख्स का रात में नमाज़ पढ़ने का मा'मूल हो फिर (किसी दिन) उस पर नींद ग़ालिब आ जाए तो उस के लिये नमाज़ का षबाब लिखा जाएगा और नींद उस पर सदका होगी।⁽²⁾

﴿10﴾.....हुजुर नबिय्ये अकरम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ से इरशाद फ़रमाया : “अगर तुम सफ़र का इरादा करो तो इस के लिये कोई तय्यारी करोगे ?” अर्ज़ की : “जी हां !” इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के सफ़र का क्या हाल है ? ऐ अबू ज़र ! क्या मैं तुम्हें उन चीज़ों के बारे में न बताऊं जो तुम्हें उस दिन नफ़अ पहुंचाएगी ?” अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे मां बाप आप पर कुरबान ! ज़रूर।” इरशाद फ़रमाया : “क़ियामत के दिन के लिये सख़्त गर्मी के दिन रोज़ा रखो, क़ब्र की वहशत के लिये रात के अन्धेरे में दो रकअतें पढ़ो, बड़े बड़े (पेश आने वाले) उमूर के लिये हज़ करो और किसी मिस्कीन को कोई चीज़ दे कर या हक़ बात कह कर या किसी बुरे कलिमे से ख़ामोश रह कर सदका करो।”⁽³⁾

①.....سنن الترمذی، کتاب الدعوات، باب فی دعا النبی، الحدیث: ۳۵۶۰، ج ۵، ص ۳۲۲، “للذنوب” بدله “للسیئات”۔

②.....سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب من نوى القيام فنام، الحدیث: ۱۳۱۴، ج ۲، ص ۵۱۔

③.....موسوعة الامام ابن ابی الدنيا، التهجّد وقيام اللیل، الحدیث: ۱۰، ج ۱، ص ۲۷۔

﴿11﴾.....जमानए रिसालत में एक शख्स का मा'मूल था कि जब लोग सो जाते तो वोह नमाज़ पढ़ता, कुरआने पाक की तिलावत करता और बारगाहे इलाही में अर्ज करता : “يَا رَبَّ النَّارِ اجْرِنِي مِنْهَا” मुझे इस से नजात अता फ़रमा ।” बारगाहे रिसालत में उस शख्स का तज़क़िरा किया गया तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जब फिर ऐसा हो तो मुझे इत्तिलाअ देना ।” (चुनान्चे, जब इत्तिलाअ दी गई तो) आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उस के पास तशरीफ़ लाए और उस की बातों को सुना । जब सुब्ह हुई तो इरशाद फ़रमाया : “ऐ फुलां ! तू ने **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ से जन्नत का सुवाल क्यों न किया ?” उस ने अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मेरा इतना मक़ाम कहां और न ही मेरे आ'माल इस क़ाबिल हैं ।” कुछ ही देर गुज़री थी कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे अक्दस में हाज़िर हो कर अर्ज की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ इसे ख़बर दीजिये कि **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इसे आग से नजात अता फ़रमा कर जन्नत में दाख़िल फ़रमा दिया है ।”

﴿12﴾.....मरवी है कि हज़रते सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज की : “इब्ने उमर अच्छे आदमी हैं अगर वोह रात को नमाज़ पढ़ें ।” हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें इस के बारे में बताया तो इस के बा'द वोह हमेशा रात को नमाज़ पढ़ा करते थे ।⁽¹⁾

हज़रते सय्यिदुना नाफ़ेअ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रात में नमाज़ पढ़ा करते और मुझ से फ़रमाते : “ऐ नाफ़ेअ ! क्या सहरी का वक़्त हो गया है ?” मैं अर्ज करता : “नहीं ।” फिर नमाज़ के लिये खड़े हो जाते । फिर फ़रमाते : “ऐ नाफ़ेअ ! क्या सहरी का वक़्त हो गया है ?” मैं अर्ज करता : “जी हां ।” तो आप बैठ जाते और तुलूए फ़ज़्र तक **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में इस्तिग़फ़ार करते रहते ।

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना अली बिन अबुल ख़ैर رَحِمَهُ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन ज़करिया (عليهما الصلوة والسلام) ने एक बार जब की रोटी सैर हो कर खाई तो सुब्ह तक सोए रहे और अवरादो वज़ाइफ़ रह गए । **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने उन की तरफ़ वहूय फ़रमाई : “ऐ यहूया ! क्या तू ने मेरे घर से अच्छा घर पा लिया है ? या मुझ से अच्छा पड़ोस पा लिया है ? ऐ यहूया ! मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! अगर तुम जन्नत को देख लो तो उस के (हुसूल के) शौक में तुम्हारी चरबी पिघल जाए और तुम्हारी जान निकल जाए और अगर तुम जहन्नम को देख लो तो तुम्हारी चरबी पिघल जाए और इतना रो कि आंसूओं के बा'द पीप बहने लगे और तुम ऊन के बा'द चमड़े का लिबास पहनने लगे ।”

﴿14﴾.....बारगाहे रिसालत में अर्ज की गई : “फुलां शख्स रात में तो नमाज़ पढ़ता है जब सुब्ह होती है चोरी करता है।” आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “अन क़रीब उस का येह अमल उसे चोरी से रोक देगा।” (1) (2)

﴿15﴾.....**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस शख्स पर रहम फ़रमाए जो रात में उठ कर नमाज़ पढ़े और अपनी बीवी को जगाए कि वोह भी नमाज़ पढ़ ले अगर वोह इन्कार करे तो उस के मुंह पर पानी छिड़क दे। फिर फ़रमाया : **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस औरत पर रहम फ़रमाए जो रात में उठ कर नमाज़ पढ़े और अपने खावन्द को भी जगाए कि वोह भी पढ़ ले अगर वोह न माने तो उस के मुंह पर पानी छिड़क दे। (3)

﴿16﴾.....जब कोई शख्स रात में अपनी जौजा को जगाए फिर दोनों दो रक्अतें पढ़ लें तो वोह जि़क़र करने वालों और वालियों में लिखे जाएंगे। (4)

﴿17﴾.....फ़र्ज नमाज़ के बा'द रात की नमाज़ अफ़ज़ल है। (5)

﴿18﴾.....जो अपने रात के वज़ीफ़े या उस के कुछ हिस्से से सो जाए फिर फ़ज़्र व ज़ोहर के दरमियान पढ़ ले तो ऐसा ही लिखा जाएगा गोया उस ने रात में पढ़ा। (6)

①.....मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَانِ मिरआतुल मनाजीह, जि. 2 स. 261 पर इस के तहूत फ़रमाते हैं : नमाज़ की बरकत से वोह उन उयूब से तौबा करेगा येह हदीष इस बात की शर्ह है : إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْقِي عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और नमाज़ काइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मन्अ करती है बे हयाई और बुरी बात से) खयाल रहे कि सारे सहाबा आदिल हैं कोई फ़ासिक नहीं या'नी गुनाह पर काइम कोई न रहा। बा'ज तो पहले ही से गुनाहों से महफूज़ थे जैसे अबू बुक्र सिदीक़ और बा'ज से गुनाह सरज़द हुए और बा'द में ताइब हो गए जैसे येह शख्स जिस की शिकायत हुई येह भी खयाल रहे कि हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने न तो उस चोर के हाथ उस वक़्त कटवाए, क्यूंकि चोरी का षुबूत शर्ई न हुवा, न शिकायत करने वाले को ग़ीबत पर कोई तम्बीह फ़रमाई क्यूंकि वोह ग़ीबत न कर रहे थे, बल्कि उन की इस्लाह के ख़्वाहां थे, जैसे शागिर्द की शिकायत उस्ताद से। बा'ज लोग कहते हैं कि जब तुम फुलां गुनाह करते हो तो तुम्हें दाढ़ी रखने या नमाज़ पढ़ने से क्या फ़ाइदा, सख़्त ग़लत है إِنْ شَاءَ اللَّهُ येह नेकियां गुनाह छुड़ा देंगी। गुनाह की वजह से नेकियों को न छोड़ो, बल्कि नेकियों की वजह से गुनाह छोड़ दो।

②.....صحيح ابن حبان، كتاب الصلاة، فصل في قيام الليل، ذكر استحباب الاكثار.....الخ، الحديث: ٢٥٥١، ج ٢، ص ١١٦۔

③.....سنن ابی داود، كتاب التطوع، باب قيام الليل، الحديث: ١٣٠٨، ج ٢، ص ٢٩۔

④.....سنن ابی داود، كتاب الوتر، باب فاتحة الكتاب، الحديث: ١٢٥١، ج ٢، ص ١٠٠۔

⑤.....صحيح مسلم، كتاب الصيام، باب فضل صوم المحرم، الحديث: ١٦٣، ص ٥٩١، ”المكتوبة“ بدله ”الفرضية“۔

⑥.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب جامع صلاة الليل.....الخ، الحديث: ٤٢٤، ص ٣٤٦۔

शब बेदारी की फज़ीलत पर मुश्तमिल 24 अक्वाले बुजुर्गाने दीन :

﴿1﴾.....मरवी है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ रात में वज़ाइफ़ पढ़ते हुए एक आयत पर पहुंचे तो ज़मीन पर गिर पड़े हत्ता कि कई रोज़ तक इन की इयादत की जाती रही जैसे मरीज़ की (इयादत) की जाती है ।

﴿2﴾.....जब लोग सो जाते तो हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ खड़े हो जाते और सुबह तक शहद की मख्खी की भिनभिनाहट की तरह उन की आवाज़ सुनाई देती ।

﴿3﴾.....मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना सुफ़्यान शौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي ने एक रात सैर हो कर खाना खा लिया फिर फ़रमाया : “जब गधे के चारे में ज़ियादती की जाती है तो उस से काम भी ज़ियादा लिया जाता है ।” चुनान्चे, उस रात आप सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहे ।

﴿4﴾.....हज़रते सय्यिदुना ताऊस عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی जब अपने बिस्तर पर लैटते तो इस पर बेचैनी के साथ इस तरह करवटें बदलते जैसे कड़ाही में दाना उलट पलट होता है फिर उछल कर खड़े हो जाते और सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहते फिर फ़रमाते : “जहन्नम के ज़िक्र ने अ़बिदीन की नींदें उड़ा दी हैं ।”

﴿5﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “हमारे नज़दीक रात की मशक्कत और कारे ख़ैर में माल खर्च करने से ज़ियादा दुश्वार कोई अमल नहीं ।” अर्ज़ की गई : “क्या वजह है कि तहज्जुद पढ़ने वालों के चेहरे दीगर लोगों से ज़ियादा ख़ूब सूरत होते हैं ?” फ़रमाया : “चूँकि उन्होंने ने रहमान غَرْوَجَل के लिये तन्हाई इख़्तियार की तो उस ने भी उन्हें अपने नूर में से एक नूरानी लिबास पहना दिया ।”

﴿6﴾.....एक बुजुर्ग किसी सफ़र से वापस लौटे तो उन के लिये बिस्तर बिछाया गया, वोह उस पर सो गए हत्ता कि उन के रात के वज़ाइफ़ रह गए तो उन्होंने ने क़सम खाई कि आज के बा'द कभी भी बिस्तर पर नहीं सोएंगे ।

﴿7﴾.....हज़रते सय्यिदुना अब्दुल अज़ीज़ बिन अबू रवाद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْجَوَاد पर जब रात छा जाती तो बिस्तर के पास आते और इस पर हाथ फेर कर फ़रमाते : “तू नर्म ज़रूर है लेकिन

अब्बाह غَرْوَجَل की क़सम ! जन्नत में तुझ से भी ज़ियादा नर्म व मुलायम बिस्तर हैं ।” फिर पूरी रात नमाज़ पढ़ते रहते ।

﴿8﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّابِ ने फ़रमाया : “जब रात आती है तो शुरूअ में उस की तवालत मुझे डराती है फिर मैं कुरआने पाक की तिलावत शुरूअ कर देता हूँ हत्ता कि सुब्ह हो जाती है लेकिन मेरी हाज़त पूरी नहीं होती ।”

﴿9﴾.....हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی ने फ़रमाते हैं : “गुनाहों के सबब बन्दे को रात में उठ कर इबादत करने से महरूम कर दिया जाता है ।”

﴿10﴾.....हज़रते सय्यिदुना फुजैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب ने फ़रमाते हैं : “अगर तुम रात में उठ कर इबादत करने और दिन के वक़्त रोज़ा रखने पर कुदरत नहीं रखते हो तो जान लो कि तुम महरूम हो और तुम्हारी ख़ताएं बहुत ज़ियादा हो गई हैं ।”

﴿11﴾.....ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना सलह बिन अशैम अदवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِی पूरी रात नमाज़ पढ़ते जब सहरी का वक़्त होता तो बारगाहे इलाही में अर्ज़ करते : “ऐ **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ मेरे जैसे आदमी को येह लाइक् नहीं कि वोह तुझ से जन्नत त़लब करे लेकिन तू अपनी रहमत से मुझे जहन्म से पनाह अता फ़रमा ।”

﴿12﴾.....एक शख़्स ने किसी दाना (अक्लमन्द) से कहा : “मैं रात में उठ कर नमाज़ पढ़ने से अज़िज़ हूँ ।” दाना शख़्स ने फ़रमाया : “ऐ भाई ! दिन में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी न कर फिर शब बेदारी न करने में कोई हरज नहीं ।”

﴿13﴾.....हज़रते सय्यिदुना हसन बिन सालेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی के पास एक बांदी थी जिसे उन्हों ने बेच दिया, जब रात का दरमियानी हिस्सा आया तो वोह लौंडी उठ खड़ी हुई और कहने लगी : “ऐ घर वालो नमाज़, नमाज़ ।” वोह कहने लगे : “क्या सुब्ह हो गई ? क्या फ़ज़्र तुलूअ हो गई ?” बांदी ने कहा : “क्या तुम सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ ही पढ़ते हो ?” कहा : “हां !” तो बांदी ने हज़रते सय्यिदुना हसन बिन सालेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالٰی की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की : “ऐ मेरे आका ! आप ने मुझे ऐसी क़ौम को बेचा है जो सिर्फ़ फ़र्ज़ नमाज़ ही पढ़ते हैं, लिहाज़ा मुझे वापस ले लीजिये ।” चुनान्वे, आप ने उसे वापस ले लिया ।

﴿14﴾.....हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन सुलैमान मुरादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِی ने फ़रमाते हैं : “मैं ने हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَافِی के घर कई रातें गुज़ारीं हैं, (देखा है कि) आप रात में बहुत कम सोया करते थे ।”

﴿15﴾.....हज़रते सय्यिदुना अबू जुवैरिय्या अब्दुल हमीद बिन इमरान कूफी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَلِيِّ फ़रमाते हैं : “मैं छे माह हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى की सोहबत में रहा, इन छे माह में एक रात भी इन्हें सोते न देखा ।”

(मन्कूल है कि) हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم आधी रात इबादत किया करते थे । एक बार कुछ लोगों के पास से गुज़रे तो उन्हें येह कहते सुना कि “येह पूरी रात इबादत में गुज़रते हैं ।” आप عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “मैं इस से हया करता हूं कि मेरी तरफ़ ऐसी बात मन्सूब की जाए जिस पर मैं अमल नहीं करता ।” इस के बा'द से आप पूरी रात इबादत करने लगे । मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم के पास रात गुज़रने के लिये कोई बिस्तर नहीं था ।

﴿16﴾.....कहा जाता है कि हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار ने एक रात इस तरह गुज़ारी की सुब्ह तक येह आयत पढ़ते रहे :

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ
نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
سَوَاءً مَحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا
يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾

(प २५, الجاثية: २१)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क्या जिन्हों ने बुराइयों का इर्तीकाब किया येह समझते हैं कि हम इन्हें उन जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इन की उन की ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं !

﴿17﴾.....हज़रते सय्यिदुना मुगीरा बिन हबीब عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْحَسِيب फ़रमाते हैं : मैं ने हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ रَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار को देखा, उन्होंने ने नमाज़े इशा के बा'द वुजू किया और नमाज़ पढ़ने की जगह तशरीफ़ ले गए और अपनी दाढ़ी पकड़ ली (और रोने लगे) हत्ता कि आंसूओं की वजह से उन का सांस रुक गया, फिर बारगाहे इलाही में अर्ज करने लगे : “ऐ **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ मालिक के बुढ़ापे को आग पर हराम फ़रमा दे । इलाही ! तू जानता है कौन जन्नत में और कौन जहन्नम में रहेगा ? मालिक कहां रहेगा ? इस का घर कौन सा है (जन्नत या जहन्नम) ?” तुलूए फ़ज़्र तक येही कहते रहे ।

﴿18﴾.....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : एक रात मैं अपना रात का वजीफ़ा करना भूल गया और सो गया, मैं ने ख़्वाब में एक हसीनो जमील औरत को देखा । उस के हाथ में एक ख़त था उस ने कहा : “क्या आप इसे अच्छी तरह पढ़ सकते हैं ?” मैं ने कहा : “जी हां !” उस ने वोह ख़त मुझे दे दिया उस में येह अश्आर लिखे थे :

اَللّٰهُتَّكَ الْكَذٰبُ وَالْاَمَانِیُّ عَنِ الْبِیْضِ الْاَوَاكِسِ فِی الْجَنّٰنِ
تَعِیْشُ مُخَلَّدًا لَا مَوْتَ فِیْهَا وَتَلْهُوْ فِی الْجَنّٰنِ مَعَ الْحَسّٰنِ
تَنْبِیْهِ مِنْ مَنَامِكَ اَنْ خَبِرًا مِنْ النَّوْمِ التَّهَجُّدُ بِالْقُرْآنِ

तर्जमा : (1).....क्या लज्जात और ख्वाहिशात ने तुझे जन्नत में रहने वाली खूब सूरत हूरों से गाफ़िल कर दिया है ?

(2).....तू उस में हमेशा रहेगा, कभी मौत नहीं आएगी और जन्नतों में इसीनो जमील हूरों के साथ खेलेगा।

(3).....अपनी नींद से बेदार हो कि तहज्जुद में कुरआने पाक की तिलावत करना नींद से बेहतर है।

﴿19﴾.....मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना मसरूक़ बिन अजदअ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़ किया तो कोई रात बिगैर सजदा करते न गुज़ारी।

﴿20﴾.....हज़रते सय्यिदुना अज़हर बिन मुगीष رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो आबिदों में से थे, फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक औरत को देखा जो दुनिया की औरतों के मुशाबेह न थी, मैं ने उस से कहा : “तुम कौन हो ?” उस ने जवाब दिया : “हूर।” मैं ने कहा : “मुझ से शादी कर लो।” उस ने कहा : “मेरे आका को निकाह का पैग़ाम दो और महर भी अदा कर दो।” मैं ने कहा : “तुम्हारा महर क्या है ?” कहा : “रात में देर तक नमाज़ पढ़ना।”

﴿21﴾.....हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ बिन मेहरान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़रमाते हैं : “मुझे येह ख़बर पहुंची है कि अर्श के नीचे मुर्ग़ की शक़ल का एक फ़िरिश्ता है, उस के पंजे मोतियों के और कलगी सब्ज़ ज़बरजद की है, जब तिहाई रात गुज़रती है तो वोह परों को फड़ फड़ाता है और कहता है : आबिदों को उठ जाना चाहिये। जब आधी रात गुज़र जाती है तो फिर परों को फड़ फड़ाता है और कहता है : तहज्जुद पढ़ने वालों को उठ जाना चाहिये। जब दो तिहाई रात गुज़र जाती है तो फिर परों को फड़ फड़ा कर कहता है : नमाज़ियों को उठ जाना चाहिये। जब तुलूए फ़ज़्र होती है तो फिर परों को फड़ फड़ा कर कहता है : गाफ़िलों को उठ जाना चाहिये। इन पर (गुनाहों का) बोझ है।”

﴿22﴾.....मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह यमानी قُدْسٌ سِرُّهُ الثُّورَانِ ने 30 साल तक अपना पहलू ज़मीन पर नहीं रखा। फ़रमाया करते थे : “मुझे अपने घर में शैतान को देखना तकिया देखने से ज़ियादा पसन्द है क्यूंकि तकिया नींद की तरफ़ बुलाता है।” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास चमड़े का एक तकिया था जब नींद का ग़लबा होता तो अपना सीना उस पर रख कर कुछ देर सो जाते फिर नमाज़ के लिये उठ खड़े होते।

﴿23﴾.....एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं ख़्वाब में दीदारे इलाही से मुशर्रफ़ हुवा तो मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को येह कहते सुना : “मुझे अपनी इज़्ज़तो जलाल की क़सम ! मैं सुलैमान तीमी को अच्छा ठिकाना अता फ़रमाऊंगा क्यूंकि उस ने 40 साल मेरी खुशनूदी के हुसूल के लिये इशा के वुजू से सुब्ह की नमाज़ पढ़ी । मन्कूल है कि हज़रते सय्यिदुना सुलैमान तीमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي का मौक़िफ़ येह था कि जब नींद दिल पर छा जाए तो वुजू टूट जाता है ।

﴿24﴾.....बा'ज आस्मानी किताबों में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “मेरा सच्चा बन्दा वोह है जो रात को उठने में मुर्ग़ के बोलने का इन्तिज़ार नहीं करता ।”

शब बेदारी में आसानी के ज़ाहिरी व बातिनी अस्बाब

जो शख्स शब बेदारी को आसान करने वाले ज़ाहिरी व बातिनी अस्बाब का लिहाज़ नहीं करता उस के लिये रात में इबादत करना मुश्किल है ।

चार ज़ाहिरी अस्बाब :

﴿1﴾.....ज़ियादा खाने से परहेज़ : क्यूंकि शब बेदारी करने वाला अगर ज़ियादा खाना खाएगा तो पानी भी ज़ियादा पियेगा यूं उस पर नींद ग़ालिब आ जाएगी और शब बेदारी मुश्किल हो जाएगी । बा'ज शूयूख़ हर रात दस्तरख़्वान पर खड़े हो कर फ़रमाते : “ऐ राहे आख़िरत का इरादा करने वाले गुरौह ! ज़ियादा खाना न खाओ कि इस तरह तुम पानी भी ज़ियादा पियोगे, फिर सोओगे भी ज़ियादा और फिर मौत के वक़्त हसरत भी ज़ियादा करोगे ।”

येह (शब बेदारी व तन्दुरुस्ती का) बहुत बड़ा ज़ाबता है कि मे'दे को खाने के बोझ से हल्का रखा जाए ।

﴿2﴾.....दिन के वक़्त नफ़्स को न थकाना : शब बेदारी के ख़्वाहिश मन्द को चाहिये कि दिन के अवक़ात में नफ़्स को ज़ियादा न थकाए क्यूंकि दिन के वक़्त नफ़्स को ऐसे आ'माल के ज़रीए थका देना भी नींद का सबब है कि जिन की वजह से आ'ज़ा अज़िज़ आ जाते और आ'साब कमज़ोर पड़ जाते हैं ।

﴿3﴾.....दिन के वक़्त कैलूला करना : दिन में कैलूला भी तर्क न करे कि येह शब बेदारी में मदद लेने के लिये सुन्नत है ।

﴿4﴾.....दिन में गुनाहों से इजतिनाब करना : दिन में गुनाहों से इजतिनाब करे क्योंकि येह दिल की सख्ती का बाइष बनते और अस्बाबे रहमत के दरमियान हाइल हो जाते हैं ।

गुनाहों का कैदी :

एक शख्स ने हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى से अर्ज की : “ऐ अबू सईद ! मैं रात आफ़ियत में (या'नी सो कर) गुज़रता हूँ हालांकि मैं शब बेदारी को पसन्द करता हूँ, इसी लिये वुजू का पानी भी तय्यार रखता हूँ, फिर भी न जाने क्या वजह है कि मैं शब बेदारी नहीं कर पाता ?” आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने फ़रमाया : “तुम्हारे गुनाहों ने तुम्हें कैद कर रखा है ।”

हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى जब बाज़ार में दाख़िल होते तो लोगों का शोर और फुज़ूल गुफ़्तगू सुन कर फ़रमाते : “मेरा ख़याल है कि इन लोगों की रात बहुत बुरी है क्योंकि येह दिन के वक़्त कैलूला नहीं करते ।”

शब बेदारी से महरूम का सबब :

हज़रते सय्यिदुना सुफ़यान षौरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوَى फ़रमाते हैं : “मैं एक ख़ता के सबब पांच माह तक शब बेदारी से महरूम कर दिया गया ।” अर्ज की गई : “वोह कौन सी ख़ता थी ?” फ़रमाया : “मैं ने एक शख्स को रोते देख कर दिल में ख़याल किया कि येह रियाकारी कर रहा है ।”

एक गुनाह की सज़ा :

एक बुजुर्ग عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى फ़रमाते हैं : मैं हज़रते सय्यिदुना कुर्ज बिन वबरह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى के पास गया उन्हें रोते देख कर पूछा : “क्या अहलो इयाल में से किसी की मौत की ख़बर आई है ?” फ़रमाया : “इस से भी सख़्त बात है ।” मैं ने पूछा : “क्या कहीं दर्द है जिस की वजह से तक़लीफ़ हो रही है ?” फ़रमाया : “इस से भी सख़्त मुआमला है ।” पूछा : “क्या मुआमला है ?” फ़रमाया : “मेरा दरवाज़ा बन्द है, पर्दा लटका हुआ है और मैं ने गुज़स्ता रात अपना वज़ीफ़ा नहीं पढ़ा, येह महरूम मेरे एक गुनाह की सज़ा है ।” येह उन्होंने ने इस वजह से फ़रमाया क्योंकि नेकी, नेकी को लाती और बुराई, बुराई को लाती है और इन में से हर एक की थोड़ी भी मिक्दाद भी क़षरत की तरफ़ ले जाती है ।

जमाअत फ़ौत होने का सबब :

हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَس سرُّهُ السُّورَانِ फ़रमाते हैं : “किसी की जमाअत का फ़ौत हो जाना उस के किसी गुनाह के सबब है ।” मज़ीद फ़रमाते हैं : “रात में एहतिलाम होना एक सज़ा और जनाबत (रहमते इलाही से) दूरी का सबब है ।”

बा'ज़ उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “ऐ मिस्कीन ! जब तू रोज़ा रखे तो ग़ौर कर कि किस के पास और किस चीज़ पर इफ़तार करता है क्योंकि बन्दा जो लुक़्मा भी खाता है इस से उस का दिल पहली हालत से बदल जाता है और फिर पहली हालत की तरफ़ नहीं लौटता ।”

ख़ुलासए क़लाम :

अल ग़रज़ तमाम गुनाह क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख़्ती) का बाइष और शब बेदारी में रुकावट बनते हैं । जो गुनाह बिल ख़ुसूस दिल पर अषर करता है वोह लुक़्माए ह़राम है जब कि लुक़्माए ह़लाल दिल की सफ़ाई और इसे भलाई की तरफ़ राग़िब करने में इतना अषर करता है कि कोई और शै इतना अषर नहीं करती । अहले मुराक़्बा ने शरीअत की गवाही के बा'द तजरिबे के ज़रीए भी इस चीज़ को जाना है । इसी वजह से इन में से बा'ज़ हज़रात ने फ़रमाया : “कितने ही लुक़्मे ऐसे हैं जो शब बेदारी से रोक देते हैं और कितनी ही निगाहें ऐसी हैं जो कुरआने पाक की तिलावत से रोक देती हैं । क्योंकि बा'ज़ अवकात बन्दा कोई (ह़राम का) लुक़्मा खाता, या (ह़राम) काम करता है तो इस की वजह से उसे एक साल तक शब बेदारी से मह़रूम कर दिया जाता है ।”

जिस तरह नमाज़ बे ह़याई और बुरी बातों से रोकती है इसी तरह बे ह़याई नमाज़ और तमाम नेक क़र्मों में रुकावट का बाइष बनती है । जेल के एक दारोगा का बयान है कि मैं 30 साल से ज़ियादा अर्सा (दैनूर में) जेलर रहा, रात के वक़्त जब भी कोई नया कैदी आता तो मैं उस से पूछता : “क्या तुम ने नमाज़ इशा बा जमाअत पढ़ी है ?” तो वोह येही कहता कि “नहीं ।” येह इस बात पर तम्बीह है कि जमाअत की बरकत बे ह़याई और बुरे काम से रोक देती है ।

चार बातिनी अश्बाब :

❶.....दिल का सलामत होना : इस से मुराद येह है कि दिल मुसलमानों के बुग़ज़ व कीना, बिदअतों और फुज़ूल किस्म के दुन्यवी ख़यालात से पाक व साफ़ हो क्योंकि जो दुन्या की तदबीर

करने की फ़िक्र में मगन हो उस के लिये शब बेदारी करना आसान नहीं, अगर कर भी ले तो नमाज़ में ग़ौरो फ़िक्र नहीं कर पाता बल्कि दुन्यवी कामों के बारे में सोचता रहता और उसी के वस्वसों में घूमता रहता है। इसी किस्म की हालत के बारे में कहा गया है :

يُخْبِرُنِي الْبَوَّابُ أَنَّكَ نَائِمٌ وَأَنْتَ إِذَا اسْتَيْقَظْتَ أَيُّضًا فَنَائِمٌ

तर्जमा : दरबान ने मुझे ख़बर दी कि तू सोया हुआ था और तू जागते हुए भी सोया होता है।

(2).....दिल पर ख़ौफ़ तारी हो : दिल पर ख़ौफ़ का ग़लबा जब कि उम्मीद कम हो क्योंकि जब येह आख़िरत की हौलनाकियों और जहन्नम के दर्जात के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करेगा तो उस की नींद उड़ जाएगी और ख़ौफ़ में ज़ियादती होगी। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना त़ऊस बिन कैसान यमानी फ़रमाते हैं : “जहन्नम के ज़िक्र ने अ़बिदीन की नींदें उड़ा दी हैं।”

तो सुहैब को नींद नहीं आती :

इसी तरह बसरा के सुहैब नामी एक गुलाम का वाकि़आ है कि वोह पूरी रात नमाज़ पढ़ा करता था, उस की मालिका ने उस से कहा : “तेरा पूरी रात नमाज़ पढ़ना तेरे दिन के वक़्त काम में नुक़सान देह है।” उस ने कहा : “सुहैब को जब जहन्नम याद आता है तो उसे नींद नहीं आती।”

एक और गुलाम के बारे में मन्कूल है कि वोह भी पूरी रात नमाज़ पढ़ा करता था, उसे जब ऐसा कहा गया तो उस ने जवाब दिया : “जब मुझे जहन्नम का ख़याल आता है तो मेरा ख़ौफ़ बढ़ जाता है और जब जन्नत का ख़याल आता है तो मेरा शौक़ बढ़ जाता है, लिहाज़ा मुझे सोने पर कुदरत नहीं होती।”

हज़रते सय्यिदुना जुन्नून मिस्री عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने चन्द अश़आर कहे जिन का मफ़हूम कुछ यूं है : कुरआने पाक ने (बन्दों को) अपने वा'दा व वईद के ज़रीए रात में सोने से रोक दिया है। उन्होंने ने अज़मत व बुजुर्गी वाले बादशाह का कलाम समझ लिया तो उस की बारगाह में अ़जिज़ी की वजह से उन की गर्दन में झुक गई।

इसी मफ़हूम को एक शाइर ने यूं बयान किया है : ऐ लम्बी नींद और ग़फ़्लत में पड़ने वाले ! नींद की कषरत हसरत पैदा करती है। बेशक मरने के बा'द जब तू क़ब्र में मुन्तक़िल होगा तो क़ब्र में लम्बी नींद है। उस में तेरे लिये उसी का बिस्तर बिछाया जाएगा जो तू ने गुनाह या नेकियां की हैं। क्या तू रात के वक़्त अचानक मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام के आने से बे ख़ौफ़ है ? कितने ही लोग ऐसे हैं कि जो उन से बे ख़ौफ़ थे वोह उन के पास जा पहुंचे।

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : जब रात की तारीकी छा जाती है तो नेक लोग मेहनत (या'नी इबादत) में लग जाते हैं हत्ता कि जब सुब्ह की रोशनी फैलती है तो वोह रुकूअ में होते हैं। खौफ़ ने उन की नींदें उड़ा दी तो वोह इबादत के लिये कमर बस्ता हो गए जब कि बे खौफ़ लोग सोए हुए हैं।

﴿3﴾.....शब बेदारी की फ़ज़ीलत में वारिद आयात, अह्दादीष और आषारे सहाबा व ताबेईन पेशे नज़र हों : कि इस के सबब हुसूले षवाब के लिये उम्मीद व शौक़ मज़बूत होगा और फिर शौक़ मज़ीद मक़ामात तक तलब और जन्नत के दर्जात में रग़बत की तरफ़ उभारेगा। चुनान्वे, मरवी है कि एक बुजुर्ग जिहाद से वापस आए तो जौजा बिस्तर बिछा कर उन का इन्तिज़ार करने लगी, वोह बुजुर्ग मस्जिद में गए और सुब्ह तक नमाज़ पढ़ते रहे। जौजा ने अर्ज की : “मैं आप की तशरीफ़ आवरी की कब से मुन्तज़िर थी, आप आए हैं तो सुब्ह तक नमाज़ में ही मशगूल रहे हैं !” फ़रमाया : “खुदा की क़सम ! मैं इस तवील रात में जन्नत की हूरों में से एक हूर के बारे में ग़ौरो फ़िक्र करता रहा, तुम्हारे और घर के मुतअल्लिक कुछ ख़याल ही न आया और सारी रात इस के शौक़ में नमाज़ पढ़ता रहा।”

﴿4﴾.....जाते बारी तअ़ाला पर पुख़्ता ईमान और उस की कामिल महब्बत दिल में हो : येह सबब सब से ज़ियादा बुलन्द मर्तबा है कि **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की महब्बत और इस बात पर पुख़्ता ईमान हो कि हालते क़ियाम में येह जो कुछ भी कहता है हर हर हर्फ़ के ज़रीए बारगाहे इलाही में मुनाजात कर रहा है और वोह इस पर आगाह है। नीज़ (वस्वसों से ख़ाली) जो ख़यालात दिल में आएँ उन का भी मुशाहदा करे और यकीन रखे येह ख़तरात **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से उसे ख़िताब हैं। क्यूँकि जब कोई **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ से महब्बत करेगा तो वोह लाज़िमी तौर पर उस के साथ ख़लवत को भी पसन्द करेगा और उस से मुनाजात करने की लज़ज़त पाएगा और हबीब के साथ मुनाजात करने की लज़ज़त ज़ियादा देर क़ियाम करने पर उभारेगी।

इस लज़ज़त को कोई बईद न समझे क्यूँकि इस पर अक्ल व नक्ल दोनों गवाह हैं :

अक्ली दलील : उस शख्स के हाल से सबक़ हासिल कर जो किसी इन्सान से उस के हुस्नो ज़माल, या बादशाह से उस के इन्आम व इकराम की बदौलत महब्बत करता है कि वोह उन के साथ तन्हाई और हम कलामी से कैसे लज़ज़त पाता है हत्ता कि रात देर तक उसे नींद भी नहीं आती।

सुवाल जवाब :

(1)....अगर येह वस्वसा आए कि खूब सूरत शख्स की तरफ देख कर लज़्ज़त हासिल की जाती है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तो नज़र नहीं आता (फिर क्यूं कर लज़्ज़त हासिल होगी) ? तो इस का जवाब येह है कि अगर हसीनो जमील महबूब पर्दे के पीछे हो या अन्धेरे कमरे में हो तो फिर भी मुहिब्ब उसे देखे बिगैर सिर्फ उस की गुफ्तगू से लज़्ज़त पाता है और उस के इलावा किसी और चीज़ की ख्वाहिश भी नहीं करता, उस पर अपनी महब्बत का इज़हार करने और अपनी ज़बान से उस का ज़िक्र कर के उसे सुना कर खुश होता है अगर्चे येह बातें महबूब को पहले से ही मा'लूम हों ।

(2).....अगर येह वस्वसा आए कि हसीनो जमील शख्स के जवाब का इन्तिज़ार होता है फिर उस का जवाब सुन कर लज़्ज़त हासिल होती है लेकिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम नहीं सुना जाता (फिर क्यूं कर लज़्ज़त हासिल होगी ?) तो इस का जवाब येह है कि अगर येह शख्स जानता हो कि महबूब जवाब नहीं देगा बल्कि खामोश रहेगा तब भी महबूब पर अपने अहवाल ज़ाहिर करने और राज उस तक पहुंचाने में इसे लज़्ज़त ही हासिल होती है (तो फिर मुनाजात करने वाले को कैसे लज़्ज़त हासिल न होगी ?) हालांकि यकीने कामिल रखने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ से हर वोह बात सुनता है जो मुनाजात के दौरान उस के दिल पर वारिद होती है तो वोह उस से लज़्ज़त हासिल करता है । जैसे वोह कि जो किसी बादशाह के साथ खलवत में हो और रात के किसी हिस्से में बादशाह के सामने अपनी हाजात पेश करे तो वोह इन्आम की उम्मीद में उस से लज़्ज़त पाएगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इस बात का ज़ियादा हकदार है कि उस से उम्मीद रखी जाए और जो इस के पास है वोह बेहतर, बाकी रहने वाला और दूसरों से ज़ियादा नफ़अ मन्द है तो फिर तन्हाई में बारगाहे इलाही में अपनी हाजात पेश करने से क्यूं कर लज़्ज़त हासिल न होगी ?

नक्ली दलील : मुनाजात की लज़्ज़त हासिल होने पर रातों को क़ियाम करने वालों के अहवाल शाहिद हैं कि वोह रात के क़ियाम के ज़रीए लज़्ज़त पाते हैं और रात को यूं छोटा खयाल करते हैं जैसे मुहिब्ब, महबूब से मुलाक़ात की रात को बहुत छोटी समझता है ।

शब बेदारों के वाकिआत व अक्वाल :

✽.....मन्कूल है कि एक शब बेदार से पूछा गया : “आप की रात कैसी गुज़रती है ?” तो जवाब मिला : “मैं ने रात का कभी लिहाज़ नहीं रखा वोह मुझे अपना चेहरा दिखा कर पलट जाती है और इस के बा'द मैं उस के बारे में ग़ौर नहीं करता ।

❁.....एक बुजुर्ग फ़रमाते हैं : “मैं और रात, मुक़ाबला करने वाले दो घोड़ों की तरह हैं कभी तो वोह मुझे फ़त्र तक पहुंचा देती है और कभी मुझे ग़ौरो फ़िक्क से महरूम कर देती है।”

❁.....किसी शब बेदार से पूछा गया : “आप पर रात कैसे गुज़रती है?” रात ऐसी घड़ी है जिस में मेरी दो हालतें होती हैं : जब वोह आती है तो उस के अन्धेरे से खुश होता हूं अभी खुशी पूरी नहीं होती कि सुबह तुलूअ होने का ग़म लाहिक हो जाता है।”

❁.....हज़रते सय्यिदुना अली बिन बक्कार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفَّار फ़रमाते हैं : “40 साल से सुबह तुलूअ होने के इलावा किसी और चीज़ ने मुझे ग़मगीन नहीं किया।”

❁.....हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَهَّاب फ़रमाते हैं : “जब सूरज ग़रूब होता है तो अन्धेरे की वजह से मैं खुश हो जाता हूं क्योंकि उस वक़्त मैं रब्ब عَزَّ وَجَلَّ के साथ ख़ल्वत में होता हूं। जब सूरज तुलूअ होता है तो लोगों के अपने पास आने की वजह से ग़मजदा हो जाता हूं।”

❁.....हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान दारानी قُدَس سرُّهُ الْتُّورَانِي फ़रमाते हैं : “रातों में क़ियाम करने वाले रातों में खेल कूद करने वालों की ब निस्वत ज़ियादा लज़्ज़त पाते हैं और अगर रात न होती तो मैं दुनिया में ठहरना पसन्द न करता।” मज़ीद फ़रमाते हैं : “अगर रात में क़ियाम करने वालों को उन के आ'माल के षवाब के इवज़ वोह लज़्ज़त दे दी जाए जो वोह रात के क़ियाम में पाते हैं तो येह उन के आ'माल के षवाब से ज़ियादा होगी।”

❁.....बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : “आजिज़ी व इन्किसारी करने वाले अपने दिल में जो मुनाजात की लज़्ज़त पाते हैं इस के सिवा दुनिया में कोई वक़्त ऐसा नहीं जो जन्नती ने'मतों के मुशाबेह हो।”

❁.....मन्कूल है कि “मुनाजात की लज़्ज़त दुन्यवी नहीं बल्कि जन्नती ने'मतों में से है जिसे **اَللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ सिर्फ़ अपने औलियाए उज़्ज़ाम رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّلَام के लिये ज़ाहिर फ़रमाता है उन के सिवा किसी और को हासिल नहीं होती।

❁.....हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “दुन्यावी लज़्ज़ात में से सिर्फ़ तीन चीज़ें बाकी हैं :

(1).....रात का क़ियाम। (2).....मुसलमान भाइयों से मुलाक़ात। (3).....नमाज़े बा जमाअत।”

.....बा'ज अरिफ़ीन رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّيِّئِينَ फ़रमाते हैं : “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ सहरि के वक़्त जागने वालों के दिलों की तरफ़ नज़र फ़रमाता है तो उन्हें अन्वार व तजल्लियात से भर देता है। फ़वाइद उन के दिलों की तरफ़ लौटते हैं तो उन के दिल रोशन हो जाते हैं, जो अन्वार उन के दिलों से जाइद होते हैं वोह गाफ़िलीन के दिलों में फैल जाते हैं।

मुहिब्बे इलाही व महबूबे इलाही की अलामात :

मुतक़द्दिमीन उ-लमा में से किसी का क़ौल है कि “**اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने एक सिद्दीक़ की तरफ़ इल्हाम फ़रमाया कि मेरे बन्दों में से कुछ बन्दे ऐसे हैं कि मैं उन से महबूबत करता हूँ, वोह मुझ से महबूबत करते हैं। वोह मेरे मुश्ताक़ हैं, मैं उन का मुश्ताक़ हूँ। वोह मेरा ज़िक़र करते हैं, मैं उन का चर्चा करता हूँ। वोह मेरी तरफ़ नज़र करते हैं, मैं उन की तरफ़ नज़र फ़रमाता हूँ। अगर तू उन के रास्ते पर चला तो मैं तुझे महबूब बना लूंगा और अगर उन से मुंह फेरा तो मैं तुझ पर शदीद ग़ज़ब करूंगा।” सिद्दीक़ ने अर्ज़ की : “ऐ रब्ब عَزَّوَجَلَّ उन की अलामात क्या है?” इरशाद फ़रमाया : “वोह दिन के वक़्त साए पर इस तरह ध्यान देते हैं जिस तरह चरवाहा बकरियों पर तवज्जोह देता है और गुरुबे आफ़ताब की तरफ़ शौक़ के साथ इस तरह माइल होते हैं जैसे उस वक़्त परन्दे अपने घोंसले की तरफ़ माइल होते हैं। जब रात उन्हें छुपा लेती है, अन्धेरा छा जाता है और हर हबीब अपने हबीब के साथ तन्हाई इख़्तियार करता है तो वोह खड़े हो जाते हैं। अपने चेहरों को मेरे लिये बिछा देते और मेरे कलाम के ज़रीए मुझ से मुनाजात करते हैं। मेरे इन्आमात के सबब मेरी बारगाह में अज़िज़ी व इन्किसारी करते हैं। कोई चीख़ता है तो कोई रोता है। कोई आहें भरता है तो कोई शिकायत करता है। वोह मेरी वजह से जो मशक्क़त उठाते हैं मैं उसे देखता हूँ और मेरी महबूबत की वजह से जो शिकायत करते हैं उसे सुनता हूँ। **सब से पहली चीज़** जो मैं उन्हें अता करता हूँ वोह मेरा नूर है कि जब वोह उन के दिलों में डालता हूँ तो वोह मेरे बारे में बताने लगते हैं जैसे मैं उन के बारे में ख़बर देता हूँ। **दूसरी चीज़** जो उन्हें अता करता हूँ येह है कि अगर सातों आस्मान और सातों ज़मीन और जो कुछ इन के दरमियान है सब उन के मीज़ान में हों तो भी उन के हक़ में इसे क़लील जानता हूँ। **तीसरी चीज़** जो उन्हें अता करता हूँ येह है कि इन की तरफ़ खुसूसी तवज्जोह फ़रमाता हूँ और जिस की तरफ़ मैं खुसूसी तवज्जोह करता हूँ तो किसी को क्या ख़बर कि मैं ने उसे क्या देने का इरादा किया है?”

❁.....हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : “जो बन्दा तहज़ुद पढ़ने के लिये उठता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ (अपनी रहमत के साथ) उस से करीब हो जाता है और ऐसे लोग अपने दिलों में जो नमी, हलावत और अन्वार पाते हैं इस की वजह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कुर्ब जानते हैं।” यह एक राज़ और हकीक़त है अज़ करीब “महबबत के बयान” में इस की तरफ़ इशारा आएगा।

❁.....मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है : “ऐ बन्दे ! मैं **अल्लाह** हूँ जो तेरे दिल से करीब हुवा और तू ने ग़ैब में मेरे नूर को देखा।”

बख़्शिश के झोंके :

एक शागिर्द ने अपने उस्ताज़ से रात देर तक जागने की शिकायत की और नींद लाने की कोई तरकीब पूछी तो उस्ताज़ ने कहा : “ऐ बेटे ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पास रात और दिन में बख़्शिश के कुछ झोंके हैं जो बेदार दिलों को पहुंचते हैं और सोए हुए दिलों से गुज़र जाते हैं, तुम उन झोंकों को हासिल करने के दरपे रहो।” शागिर्द ने कहा : “या सय्यिदी ! आप ने मुझे इस हाल में छोड़ दिया है कि मैं न रात को सो सकता हूँ, न दिन को।”

जान लीजिये कि रात के वक़्त इन झोंकों की ज़ियादा उम्मीद होती है क्योंकि क़ियामुल्लैल में दिल की सफ़ाई होती और दुन्यावी मशाग़िल दूर होते हैं।

क़बूलिय्यत की घड़ी :

हज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अब्दुल्लाह अन्सारी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “रात में एक घड़ी है कि जिसे कोई बन्दए मोमिन पा कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से भलाई का सुवाल करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे वोह ज़रूर देता है।”⁽¹⁾

एक रिवायत में है कि “इस साअ़त में बन्दए मोमिन दुन्या व आख़िरत में से जिस भलाई का भी सुवाल करता है **अल्लाह** तआला वोह उसे ज़रूर देता है और येह साअ़त हर रात में होती है।”⁽²⁾

❶.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فی اللیل ساعة.....الخ، الحدیث: ۷۵۷، ص ۳۸۰۔

❷.....صحیح مسلم، کتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب فی اللیل ساعة.....الخ، الحدیث: ۷۵۷، ص ۳۸۰۔

रात में क़ियाम करने वालों का मतलूब इस साअत का हुसूल होता है। येह साअत पूरी रात में इस तरह पोशीदा होती है जिस तरह लैलतुल क़द्र पूरे माहे रमज़ान में पोशीदा होती है या जिस तरह जुमुआ के दिन की साअत है कि येह भी इन बख़्शिश के झोंकों में से है। واللّٰهُ تَعَالٰی اعْلَم

शब के अवक़ात की तक्सीम का तरीक़ा :

जानना चाहिये कि मिक्दार के ए'तिबार से शब बेदारी के सात मरातिब हैं :

(1).....पूरी रात शब बेदारी : येह उन मज़बूत लोगों की शान है जिन्हों ने खुद को फ़क़त इबादत के लिये फ़ारिग़ कर रखा है और बारगाहे इलाही में मुनाजात करने से लज़्ज़त पाते हैं। येही उन की ग़िज़ा और उन के दिलों की ज़िन्दगी है। लिहाज़ा येह देर तक क़ियाम करने से थकते नहीं, नींद को दिन के वक़्त की तरफ़ लौटा देते हैं जब कि लोग काम काज में मसरूफ़ होते हैं। सलफ़े सालेहीन رَحْمَهُمُ اللّٰهُ السَّيِّئِينَ के एक गुरौह का तरीक़ा था कि वोह इशा के वुजू से फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ा करते थे।

इशा के वुजू से फ़ज़्र अढ़ा करने वाले :

हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू तालिब मुहम्मद बिन अली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَلٰی फ़रमाते हैं : चालीस ताबेईन से तवातुर व शोहरत के तौर पर मन्कूल है कि वोह इशा के वुजू से फ़ज़्र की नमाज़ अदा करते थे। उन में से बा'ज़ वोह हैं कि जिन्हों ने चालीस साल तक इस की पाबन्दी की। उन में से चन्द येह हैं : (1).....हज़रते सय्यिदुना सईद बिन मुसय्यब मदनी। (2).....हज़रते सय्यिदुना सफ़वान बिन सुलैमान मदनी। (3).....हज़रते सय्यिदुना फुज़ैल बिन इयाज़ मक्की। (4).....हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द मक्की। (5).....हज़रते सय्यिदुना ताऊस बिन कैसान यमनी। (6).....हज़रते सय्यिदुना वहब बिन मुनब्बेह यमनी। (7).....हज़रते सय्यिदुना अबू यज़ीद रबीअ बिन खुषैम कूफ़ी। (8).....हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह हक़म बिन उतैबा कूफ़ी। (9).....हज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान अहमद बिन अब्दुर्रहमान दारानी शामी। (10).....हज़रते सय्यिदुना अबुल हसन अली बिन बक्कार शामी। (11).....हज़रते सय्यिदुना अबू अब्दुल्लाह ख़वास अबादी। (12).....हज़रते सय्यिदुना अबू आसिम अबादी। (13).....हज़रते सय्यिदुना अबू मुहम्मद हबीब बिन मुहम्मद अजमी फ़ारसी। (14).....हज़रते सय्यिदुना अबू जाबिर सलमानी फ़ारसी। (15).....हज़रते सय्यिदुना अबू यह्या मालिक बिन दीनार बसरी। (16).....हज़रते सय्यिदुना अबुल मो'तमिर सुलैमान बिन तरख़ान तीमी बसरी।

(17).....हज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन अब्बान रक्काशी बसरी । (18).....हज़रते सय्यिदुना हबीब बिन अबू षाबित बसरी । (19).....हज़रते सय्यिदुना यह्या बिन मसलमा बक्काअ बसरी और (20).....हज़रते सय्यिदुना अबू उषमान कहमस बिन मिन्हाल बसरी (رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ) मुअख़िख़रुज्ज़िक़ शख़िसय्यत के बारे में मन्कूल है कि महीने में 90 कुरआने पाक ख़त्म फ़रमाते, दौराने तिलावत अगर किसी आयत को समझ न पाते तो दोबारा पढ़ते । अहले मदीना में से हज़रते सय्यिदुना अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार और हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا भी इन्हीं में से हैं । यह ऐसी जमाअत है जिस की ता'दाद बहुत ज़ियादा है ।

﴿2﴾.....आधी रात शब बेदारी : सलफ़े सालिहीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السُّبِّين में जो आधी रात शब बेदारी पर हमेशगी इख़्तियार करते थे उन की ता'दाद शुमार से बाहर है । इस का बेहतर तरीक़ा येह है कि रात का पहला तिहाई और आख़िरी छटा हिस्सा सोया जाए और दरमियान वाले निस्फ़ हिस्से में क़ियाम किया जाए, येही अफ़ज़ल है ।

﴿3﴾.....एक तिहाई रात शब बेदारी : इस का बेहतर तरीक़ा येह है कि रात के पहले निस्फ़ और आख़िरी छटे हिस्से में सोया जाए ।

ख़ुलासए कलाम : येह है कि रात के आख़िरी हिस्से में सोना पसन्दीदा अमल है कि येह सुब्ह के वक़्त की ऊंघ को दूर करता है और अस्लाफ़ सुब्ह के वक़्त की ऊंघ को नापसन्द फ़रमाया करते थे । नीज़ येह चेहरे की ज़र्दी और इस के सबब शोहरत को भी कम करता है । लिहाज़ा अगर अकषर रात क़ियाम करे और सहरी के वक़्त सो जाए तो इस के चेहरे की ज़र्दी और सुब्ह के वक़्त ऊंघ कम होगी ।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना अइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं : “मेरे सरताज, साहिबे मे'राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रात के आख़िरी हिस्से में वित्र अदा फ़रमाते, फिर अगर हाज़त होती तो अज़वाज में से किसी से कुर्बत फ़रमाते वगर्ना मुसल्ले पर लैट जाते हत्ता कि हज़रते बिलाल आ कर नमाज़ के लिये अज़ान कहते ।”⁽¹⁾

इन्ही से मरवी एक रिवायत में है, फ़रमाती हैं : “मैं ने सहरी के बा'द आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हमेशा आराम करते ही पाया ।”⁽²⁾

①.....سنن النسائي، كتاب قيام الليل.....الخ، باب وقت الوتر، الحديث: ١٦٤٤، ص ٢٩١، باختصار۔

سنن ابی داود، کتاب التطوع، باب الاضطجاع بعدها، الحديث: ١٢٦٢، ج ٢، ص ٣٢، باختصار۔

②.....صحيح مسلم، كتاب صلاة المسافرين وقصرها، باب صلاة الليل.....الخ، الحديث: ٤٢٢، ص ٣٤٣، مفهوماً۔

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “सुब्ह से पहले येह सोना सुन्नत है ।

इस वक़्त की नींद ग़ैब के पर्दों के आगे कशफ़ और मुशाहदा करने का सबब है और येह अरबाबे कुलूब के लिये होता है । नीज़ इस वक़्त की नींद में आराम है जो दिन के वज़ाइफ़ में से पहले वज़ीफ़े में मददगार षाबित होता है ।

रात के दूसरे निस्फ़ में कुल रात का एक तिहाई क़ियाम करना और आख़िरी छटे हिस्से में आराम करना हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है ।

﴿4﴾.....रात का छटा या पंचवां हिस्सा क़ियाम करना : इस का अफ़ज़ल तरीक़ा येह है कि येह क़ियाम दूसरे निस्फ़ में और रात के आख़िरी छटे हिस्से से पहले हो ।

﴿5﴾.....किसी अन्दाज़े को मल्हूज़ न रखा जाए : येह बात सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के लिये आसान होती है इस लिये कि उन पर वहुय नाज़िल होती है । या उस के लिये आसान है जो चांद की मन्ज़िलों को जानता हो और फिर इस पर किसी को निगरान मुक़र्रर करे जो इस की निगरानी करता रहे और वक़्त पर उसे जगा दे फिर भी बसा अवक़ात बादल वाली रातों में येह मुआमला मुज़तरिब हो जाता है । लिहाज़ा उसे चाहिये कि रात के पहले हिस्से में क़ियाम करे जब नींद का ग़लबा हो तो सो जाए, बेदार हो तो फिर क़ियाम करे, फिर नींद का ग़लबा हो तो सो जाए यूं उस के लिये रात में दो नींदें और दो क़ियाम होंगे । येह रात की मशक्कत में से है सब से सख़्त और सब से अफ़ज़ल है । नीज़ येह प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के अख़लाक़ में से है । हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर, उलुल अज़म सहाबए किराम और ताबेईने इज़्ज़ाम رَضُوا لِلَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ में से एक जमाअत का भी येही तरीक़ा था ।

एक बुजुर्ग़ फ़रमाते हैं : “नींद पहली ही मरतबा है, जब मैं बेदार हो जाऊं और दोबारा सोना चाहूं तो **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ मुझे न सुलाए ।”

मिक़दार के ए'तिबार से आकाए दो अ़ालम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का क़ियाम फ़रमाना एक तरतीब पर नहीं था बल्कि कभी निस्फ़ रात क़ियाम फ़रमाते, कभी दो तिहाई और कभी रात का छटा हिस्सा । आप का येह तरीक़ा रातों के ए'तिबार से बदलता रहता था । इस पर **اللَّهُ** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमाने अ़ालीशान दलालत करता है जो सूरए मुज़्ज़िमिल के शुरूअ और आख़िर में है :

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِ
الَّيْلِ وَنُصْفَهُ وَثُلُثَهُ (پ ۲۹، مزمل: ۲۰)

तर्जमए कन्जुल ईमान : बेशक तुम्हारा रब्ब जानता है कि तुम क़ियाम करते हो, कभी दो तिहाई रात के करीब कभी आधी रात कभी तिहाई ।

उम्मुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا फ़रमाती हैं :
“मेरे सरताज, साहिबे मे’राज صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रात में उस वक़्त उठते जब मुर्ग़ की अज़ान सुनते ।”^(१) येह रात के छटे हिस्से से थोड़ा सा कम वक़्त है ।

रात में बेदार हो तो इस शुन्नत पर अमल करे :

मरवी है कि एक सहाबी फ़रमाते हैं : मैं ने सफ़र में रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को रात में नमाज़ पढ़ते देखा कि इशा के बा’द काफ़ी रात तक लैटे रहे, फिर जागे तो आस्मान के कनारे में नज़र की और इन आयाते मुबारका की तिलावत फ़रमाई :

رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا ۖ سُبْحَنَكَ فَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَا إِنَّكَ مَنْ تَدْخِلِ النَّارَ
فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ۝
رَبَّنَا إِنَّا سَمِعْنَا مُدَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيْمَانِ أَنْ
إِمْنُوا ۖ بِكُمْ فَأَمْنًا ۖ رَبَّنَا فَاعْفُ رُفْعًا لَنَا ذُنُوبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَقَّنَا مَعَ الْآبِرَارِ ۝
رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا
يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۖ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْبِعَادَ ۝

(پ ۴، آل عمران: ۹۱ تا ۹۴)

तर्जमए कन्जुल ईमान : ऐ रब्ब हमारे ! तूने येह बेकार न बनाया पाकी है तुझे तू हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा ले । ऐ रब्ब हमारे ! बेशक जिसे तू दोज़ख में ले जाए उसे ज़रूर तू ने रुस्वाई दी और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं । ऐ रब्ब हमारे ! हम ने एक मुनादी को सुना कि ईमान के लिये निदा फ़रमाता है कि अपने रब्ब पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए ऐ रब्ब हमारे ! तू हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयां महव फ़रमा (मिट) दे और हमारी मौत अच्छें के साथ कर । ऐ रब्ब हमारे ! और हमें दे वोह जिस का तू ने हम से वा’दा किया है अपने रसूलों की मा’रिफ़त और हमें क़ियामत के दिन रुस्वा न कर बेशक तू वा’दा ख़िलाफ़ नहीं करता ।

फिर बिस्तर के नीचे से मिस्वाक निकाल कर मिस्वाक की, फिर वुजू कर के नमाज़ अदा फ़रमाई हत्ता कि मैं ने कहा आप जितनी देर सोए थे उतनी ही देर नमाज़ पढ़ी है, फिर लैट गए

①.....صحیح البخاری، کتاب التہجد، باب من نام عند السحر، الحدیث: ۱۱۳۲، ج ۱، ص ۳۸۵۔

और जितनी देर नमाज़ पढ़ी उतनी ही देर आराम फ़रमाया, फिर बेदार हो कर वोही पढ़ा जो पहली मरतबा पढ़ा था और वोही किया जो पहली मरतबा किया था।⁽¹⁾

﴿6﴾.....दो या चार रक़अतों की मिक्दार क़ियाम करना : येह सब से कम मिक्दार है, फिर अगर उस के लिये त़हारत करना मुश्किल हो तो एक साअत के लिये ज़िक्रो दुआ में मशगूल हो और क़िब्ला रू हो कर बैठ जाए कि **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ की रहमत और उस के फज़ल से उस के लिये तमाम रात क़ियाम करने का षवाब लिखा जाएगा।

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : “रात के वक़्त नमाज़ पढ़ो अगरचें बकरी का दूध दोहने की मिक्दार ही सही।”⁽²⁾

﴿7﴾.....रात के दोनों कनारों में क़ियाम करना : अगर रात के वस्त (दरमियान) में क़ियाम करना मुश्किल हो तो मग़रिब व इशा के माबैन जो वक़्त है उसे और इशा के बा'द वाले वज़ीफ़े को न छोड़े, फिर सहरी के वक़्त बेदार हो जाए ताकि सुब्हे सादिक को सोते में न पाए और रात के दोनों कनारों में क़ियाम हो।

येह रात को तक्सीम करने के तरीके हैं। मुरीद को चाहिये कि जिस तरीके को खुद पर आसान समझे उसे इख़्तियार कर ले।

जब इन मरातिब को मिक्दार के ए'तिबार से देखा जाएगा तो इन की तरतीब वक़्त के त़वील और कम होने के ए'तिबार से होगी लेकिन पांचवें और सातवें मर्तबे में मिक्दार को मल्हूज़ नहीं रखा गया कि आगे और पीछे होने की वजह से इन में येह तरतीब जारी नहीं हो सकती, सातवां मर्तबा मिक्दार में छठे मर्तबे से कम नहीं और न ही पांचवां चौथे से कम है।

फ़ज़ीलत वाली रातें :

जान लीजिये कि साल में 15 मख़सूस रातें हैं जिन की फ़ज़ीलत के ज़ियादा होने के सबब इन में शब बेदारी का मुस्तहब होना ज़ियादा मुअक्कद है। त़ालिबे आख़िरत को इन से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिये कि येह नेकियां करने के मौसिम और तिजारत की मन्डियां हैं और जब ताजिर मौसिमों से ग़ाफ़िल रहता है तो वोह नफ़अ नहीं पाता इसी तरह अगर त़ालिबे आख़िरत मुख़लिफ़ अवकात के फ़ज़ाइल से ग़ाफ़िल हो तो कामयाब नहीं हो सकता।

①.....سنن النسائي، كتاب قيام الليل.....الخ، بای شیئ تستفتح صلاة الليل؟، الحديث: ۱۶۲۳، ص ۲۸۴، بتغير۔

②.....المصنف لابن ابی شيبه، كتاب صلاة التطوع والامامة، من كان يامر بقيام الليل، الحديث: ۳، ج ۲، ص ۱۷۳۔

छे रातें तो माहे रमज़ान में ही हैं : (1 ता 5).....रमज़ानुल मुबारक के आखिरी अंशे की पांच ताक़ रातें क्यूंकि इन में लैलतुल क़द्र को तलाश किया जाता है। (6).....माहे रमज़ान की सतरहवीं रात। येह वोह रात है जिस की सुब्ह को यौमुल फ़ुर्क़ान कहते हैं कि इस दिन वाक़िअए बद्र पेश आया और दो गुरौह आपस में टकराए थे। हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन जुबैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : “येही रात लैलतुल क़द्र है।”

बक़िय्या 9 रातें ये हैं : (7).....मुह्रमुल ह़राम की पहली रात (8).....आशूरा (दस मुह्रमुल ह़राम) की रात (9-10-11).....रजबुल मुर्ज्जब की पहली, पन्दरहवीं और सत्ताईसवीं रात। मुअख़िरुर्ज़ि़क्र मे'राज की रात है।

100 साल की नेकियों का षवाब :

मे'राज की रात नमाज़ पढ़ना अहादीष से षाबित है। चुनान्वे, हुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “इस (या'नी सत्ताईसवीं रजब की) रात अमल करने वाले के लिये 100 साल की नेकियों का षवाब है। जो इस रात बारह रकअतें दो दो कर के पढ़े, सलाम के बा'द 100 मरतबा येह कहे : سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ फिर 100 बार इस्तिग़फ़ार करे, फिर 100 मरतबा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़े और दुन्या व आख़िरत के मुआमलात में से अपने लिये जो चाहे दुआ करे और सुब्ह को रोज़ा रखे तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस की पूरी की पूरी दुआ क़बूल फ़रमाएगा सिवाए गुनाह की दुआ के।”⁽¹⁾

(12).....शा'बान की पन्दरहवीं रात : इस रात में 100 रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फ़ातिहा के बा'द 10 बार सूरए इख़लास पढ़े। अकाबिरीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْبَرِّينِ इसे तर्क नहीं किया करते थे “नफ़ल नमाज़ के बयान” में हम इसे ज़ि़क्र कर चुके हैं।

(13).....अरफ़ा (नव ज़िल हिज्जा) की रात (14-15).....ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़हा की रात।

दिल जिन्दा रहेगा :

मरवी है कि हुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने ईदैन की रात (या'नी शबे ईदुल फ़ित्र और शबे ईदुल अज़हा) त़लबे षवाब के लिये क़ियाम किया, उस दिन उस का दिल नहीं मरेगा, जिस दिन (लोगों के) दिल मर जाएंगे।”⁽²⁾

①.....شعب الايمان للبيهقي، باب في الصيام، تخصيص شهر رجب بالذكر، الحديث: ٣٨١٢، ج ٣، ص ٣٤٢-

②.....سنن ابن ماجه، كتاب الصيام، باب فيمن قام في ليلتي العيدين، الحديث: ١٤٨٢، ج ٢، ص ٣٦٥، بتغير قليل-

फ़ज़ीलत वाले अय्याम :

फ़ज़ीलत वाले दिन जिन में ख़ास तौर पर वज़ाइफ़ पढ़ना मुस्तहब है **19** हैं :

(1).....यौमे अरफ़ा (2)....यौमे आशूरा (3).....रजबुल मुरज्जब का सत्ताईसवां दिन । इस दिन की फ़ज़ीलत बहुत ज़ियादा है ।

60 माह के रोज़ों का षवाब :

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जिस ने सत्ताईसवीं रजब को रोज़ा रखा **अल्लाह** (1) येह वोह दिन है जिस में हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام मुस्तफ़ा जाने रहमत पर रिसालत ले कर उतरे । (4).....रमज़ानुल मुबारक का सतरहवां दिन, जिस दिन वाकिअए बद्र पेश आया । (5).....शा'बानुल मुअज़्ज़म का पन्दरहवां दिन (6)..... जुमुआ का दिन (7-8).....ईदुल फ़ित्र और ईदुल अज़्हा का दिन (9 ता 17)..... अय्यामे मा'लूमा, येह जुल हिज्जा के दस दिन हैं (चूँकि अरफ़ा का दिन पहले गुज़र गया है इस लिये यहां 9 दिन मुराद होंगे) । (18-19).....अय्यामे मा'दूदा येह अय्यामे तशरीक हैं ।

पूरा हफ़्ता और पूरा साल गुनाहों से सलामती :

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि मक्की मदनी सुल्तान, रहमत अलमियान صَلَّی اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फ़रमाया : “जुमुआ का दिन सलामती वाला हो तो तमाम दिन सलामती से गुज़रेंगे और माहे रमज़ान सलामती वाला हो तो पूरा साल सलामती से गुज़रेगा । (2) (3)

①.....تاریخ مدینه دمشق لابن عساکر، علی بن ابی طالب، الحدیث: ۸۴۳۹، ج ۴۲، ص ۲۳۴۔

②.....इस हदीष का मा'ना येह है कि अगर बन्दा जुमुआ के दिन गुनाहों से बचा रहे तो पूरा हफ़्ता गुनाहों से बचा रहता है और अगर रमज़ानुल मुबारक में गुनाहों से बचा रहे तो पूरा साल गुनाहों से बचा रहता है ।

(اتحاف السادة المتقين، کتاب ترتیب الاوراد فی الاوقات، الباب الثانی، ج ۵، ص ۵۶۷)

③.....شعب الایمان للبيهقي، باب فی الصیام، فصل فی لیلة القدر، الحدیث: ۳۷۰۸، ج ۳، ص ۳۴۰، بتقدم و تاخر۔

आखिरत की लज़्ज़त से महश्मी का बाइष :

बा'ज उ-लमाए किराम رَحْمَهُمُ اللَّهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : “जो दुन्या में पांच रोज़ लज़्ज़तों में रहेगा वोह आखिरत की लज़्ज़त नहीं पाएगा । पांच दिनों से इन की मुराद येह हैं : (1-2).....ईदुल फ़ित्र, ईदुल अज़्हा का दिन (3).....जुमुआ का दिन (4).....अरफ़े का दिन और (5).....आशूरे का दिन ।

हफ़्ते के दिनों में फ़ज़ीलत वाले दिन जुमा'रात और पीर का दिन हैं कि इन में बारगाहे इलाही में आ'माल पेश किये जाते हैं । रोज़े के लिये जो दिन और महीने फ़ज़ीलत वाले हैं उन्हें हम “रोज़ों के बयान” में ज़िक्र कर चुके हैं । लिहाज़ा दोबारा उन्हें ज़िक्र करने की हाज़त नहीं ।

وَصَلَّى اللَّهُ عَلَى كُلِّ عَبْدٍ مُصْطَفَى مِنْ كُلِّ الْعَالَمِينَ



﴿....फ़ज़ाइले कुरआने करीम....﴾

फ़रमाने मुस्तफ़ा : “येह कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से ज़ियाफ़त है तो तुम अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ इस की ज़ियाफ़त कबूल करो । बेशक येह कुरआने मजीद, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मज़बूत रस्सी, नूरे मुबीन, नफ़अ बख़्श शिफ़ा, जो इसे इख़्तियार करता है उस के लिये ढाल और जो इस पर अमल करे उस के लिये नजात है । येह हक़ से नहीं फिरता कि इस के इज़ाले के लिये थकना पड़े और येह टेढ़ी राह नहीं कि इसे सीधा करना पड़े । इस के फ़वाइद ख़त्म नहीं होते और कषरते तिलावत से पुराना नहीं होता (या'नी अपनी हालत पर काइम रहता है) । तो तुम इस की तिलावत किया करो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हें हर हर्फ़ की तिलावत पर 10 नेकियां अता फ़रमाएगा । मैं नहीं कहता कि “ال” एक हर्फ़ है बल्कि “ا” एक हर्फ़ “ل” एक हर्फ़ और “م” एक हर्फ़ है ।”

(المستدرک،، الحديث ٢٠٨٢، ج ٢، ص ٢٥٦)

फेहरिस्ते हिक्कायात

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
मोटापे का नुक्सान	124	पसन्दीदा हाजी	798
धोके बाज़	447	हाकिमे मदीना की अज़िज़ी	840
सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ الرّحمة का खौफ़े खुदा	471	खुश नसीब कारिये कुरआन	845
ख़ुशूअ, ख़ुज़ूअ से नमाज़ पढ़ने वालों की हिक्कायात	529	इस बारगाह से कैसे फिरूँ	850
आंखों का कुफ़ले मदीना	529	जन्तरी फूल	873
सय्यिदुना रबीअ عَلَيْهِ الرّحمة का खौफ़े खुदा	529	क़हूत साली के मुतअल्लिक 12 हिक्कायात	919
सय्यिदुना अमिर बिन अब्दुल्लाह عَلَيْهِ الرّحمة का ख़ुशूअ	530	﴿1﴾....चुग़ल खोरी का ववाल	919
तक्लीफ़ का एहसास तक न हुवा	530	﴿2﴾....क़हूत साली दूर हो गई	919
वस्वसों के खौफ़ से नमाज़ मुख़्तसर पढ़ी	531	﴿3﴾....जुल्म का अन्जाम	919
एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी	532	﴿4﴾....गुनाहों की नहूसत	920
बाइघे नजात और कुर्ब का ज़रीआ	533	﴿5﴾....च्यूंटी की फ़रयाद	920
दिल नमाज़ में हाज़िर नहीं	533	﴿6﴾....बारगाहे इलाही में मक़बूलिय्यत	920
बेटे की तर्बिय्यत	559	﴿7﴾....बारिश में ताख़ीर नहीं बल्कि....	921
किस हुक्मरान से दूरी इख़्तियार की जाए	568	﴿8﴾....एक आंख वाला आदमी	921
गोया वोह मुर्दा है	593	﴿9﴾....उ-लमाए किराम की अहम्मिय्यत	921
सदका ज़ाहिर करने की फ़ज़ीलत	692	﴿10﴾....सा'दून मजनून की दुआ	922
अब्बाह देख रहा है !	692	﴿11﴾....हब्शी गुलाम की दुआ	923
इन्सानी गोश्त ख़ोर रोज़ादार	714	﴿12﴾....वसीले की बरकत	923
जन्नत में दाख़िले की बिशारत	731	सअ़दत मन्दों का अ़मल	998
ख़्बाब में दीदारे इलाही	732	मरने से पहले जन्नत का नज़ारा	1035
हिफ़ाज़ते दीन की फ़िक़्र	742	महफ़िले ज़िक़्र में हाज़िर होने की फ़ज़ीलत	1039

तफ़सीली फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ज़िम्मी फ़ेहरिस्त	1	दूसरी फ़स्ल : इल्म हासिल करने की फ़ज़ीलत	55
इस किताब को पढ़ने की 23 "नियतें"	5	हुसूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल दो फ़रामैने बारी तआला	55
अल मदीनतुल इल्मिय्या का ता'रूफ़ (अज़ अमीरे अहल सुन्नत) <small>داست بر کتابهم العالیہ</small>	6	हुसूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्तफ़ा	55
पहले इसे पढ़ लीजिये !	8	हुसूले इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक्वाले बुजुग़ाने दीन	56
तआरुफ़े मुसन्निफ़	14	तीसरी फ़स्ल : इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत	59
इब्तिदाइय्या	36	इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल छे फ़रामीने बारी तआला	59
वजहे तस्नीफ़	36	इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 17 फ़रामीने मुस्तफ़ा	60
किताब की तरतीब और अववाब बन्दी	37	इल्म सिखाने की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 12 अक्वाले बुजुग़ाने दीन	63
किताब के मशमूलात पर एक नज़र	38	चौथी फ़स्ल : इल्म की फ़ज़ीलत पर अक्ली दलाइल	66
किताब की चन्द खुसूसिय्यात	39	फ़ज़ीलत का लुग़वी और इस्तिलाही मा'ना	66
किताब चार हिस्सों में तक्सीम करने की वजह	40	इल्म की अक्ली फ़ज़ीलत	66
इल्मे मुकाशफ़ा व इल्मे मुआमला की ता'रीफ़	40	मरग़ूब अश्या की अक्साम और इन की मिषालें	67
इल्मे मुआमला की अक्साम	41	इल्म का उख़रवी फ़ाइदा	67
इल्म का बयान	42	बारगाहे इलाही तक रसाई का ज़रीआ	68
बाब नम्बर 1 : इल्म, ता'लीम और तअल्लुम की फ़ज़ीलत		इन्सानी आ'जा की अक्साम	69
और इस के अक्ली व नक्ली दलाइल का बयान	42	हिक्मते अमली के मरातिब	69
पहली फ़स्ल : इल्म की फ़ज़ीलत	42	नबुव्वत के बा'द सब से अफ़ज़ल अमल	69
इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने बारी तआला	42	इबादते इलाही और ख़िलाफ़ते इलाही	70
इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 28 फ़रामीने मुस्तफ़ा	45	बाब नम्बर 2 : महमूद व मज़मूम इलूम और इन की	
इल्म की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 20 अक्वाले बुजुग़ाने दीन	50	अक्साम व अहक़ाम	71

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
पहली फ़स्ल : फ़र्जे ऐन इल्म का बयान	71	फ़लसफ़ा और इस की अक़साम	93
कौन सा इल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज है ?	71	इल्मे कलाम की हैषियत	94
अवारिज़ की अक़साम और मिषालें	73	एक सुवाल और इस का ज़वाब	95
हलाकत में डालने वाले उमूर	76	सहाब किराम عَلَيْهِمُ الرُّضْوَان की अफ़ज़लियत का एक सबब	96
दूसरी फ़स्ल : फ़र्जे किफ़ाय़ा इल्म का बयान	78	इल्म के दस हिस्सों में से नव हिस्से उठ गए	97
ग़ैर शरई उलूम की अक़साम	78	शैख़ैने करीमैन् رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की शोहरत व फ़ज़ीलत	97
उलूमे शरइय्या की अक़साम	79	शोहरत और फ़ज़ीलत में फ़र्क़	98
एक सुवाल और इस का ज़वाब	81	फ़ुक़हा और मुतकल्लिमीन की अक़साम	98
इल्मे फ़िक़ह का हासिल	81	अमल का दारोमदार निश्चय पर है	98
एक सुवाल और इस का ज़वाब	82	जिन आ'माल से कुर्बे इलाही हासिल होता है	98
तक्वा के मरातिब	84	मुक़तदा व पेशवा फ़ुक़हा	99
एक सुवाल और इस का ज़वाब	86	सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ के फ़ज़ाइल व मनाक़िब	100
फ़िक़ह की तिब्ब पर फ़ज़ीलत	86	﴿1﴾ इबादत व रियाज़त	100
तीसरी फ़स्ल : इल्मे तरीक़े आख़िरत की अक़साम	87	तमाम मुसलमानों के लिये रहमत व नज़ात की दुआ	100
इल्मे मुकाशफ़ा का नूर जब दिल में ज़ाहिर होता है तो !	87	शिक़म सैरी की आफ़ात	101
इल्मे मुकाशफ़ा से मक़सूद	89	अज़मतो इलाही	101
आईनए दिल की पाकीज़गी और सफ़ाई का ज़रीआ	89	ज़बान की हिफ़ाज़त	102
बुरे अफ़़ाल की बुन्यादेँ और नेक आ'माल का सर चश्मा	89	कानों और ज़बान का कुप्ले मदीना	102
मुतक़ीन उ-लमाए ज़ाहिर की आज़िजी	92	﴿2﴾ जोहदो तक्वा	103
इल्मे हदीष के बा'द इल्मे तसव्वुफ़ हासिल करो	92	आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की सखावत	103
एक सुवाल और इस का ज़वाब	93	जोहद की हकीक़त व बुन्याद	103

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
ज़माने का अफ़ज़ल शख्स	104	आख़िरत की सज़ा पर दुन्यावी सज़ा को तरज़ीह	116
कामिलुल ईमान होने की अ़लामत	104	10 हज़ार दिरहम क़बूल न किये	116
﴿3﴾ अस्सारे क़ल्ब और उ़लूमे आख़िरत के आ़लिम	106	मन्सब व ओहदा क़बूल न किया	117
खुद पसन्दी में मुब्तला को नसीहत	106	तरीके आख़िरत के आ़लिम	117
इल्म किसे नफ़अ नहीं देता ?	106	हमेशा फ़िक्रे आख़िरत में मगन	118
आदमी आ़लिम कब बनता है ?	108	मनाक़िबे इमाम अहमद बिन हम्बल और इमाम शैरी	118
﴿4﴾ इल्मे फ़िक़ह से मक़सूद	108	बाब नम्बर 3 : उन मज़मूम उ़लूम का बयान जिन्हें	
दुन्या के लिये आफ़ताब और लोगों के लिये आफ़िय्यत	110	लोग अच्छा समझते हैं	119
सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ الرّحمة के फ़ज़ाइल व मनाक़िब	111	पहली फ़स्ल : बा 'ज़ उ़लूम के मज़मूम होने का सबब	119
हदीषे रसूल की ता'ज़ीम	111	जादू के बुरा होने का सबब	119
हुसूले इल्मे दीन से मक़सूद	111	झूट बोलना कैसा ?	120
आ़लिम की शान	112	इल्मे नुजूम से मुमानअत की वुजूहात	121
चमकते सितारे	112	बे फ़ाइदा इल्म	123
कोड़े खा कर भी हदीष बयान की	112	ह़िकायत : मोटापे का नुक़सान	124
ज़ोहदो तक्वा	113	इत्तिबाए सुन्नत में सलामती है	124
मैं छोड़ कर मदीना नहीं जाता, नहीं जाता	113	उ़लूम दरख़्तो और फ़लों की मानिन्द हैं	126
मदीने की मिट्टी का अदबो एहतिराम	114	दूसरी फ़स्ल : अल्फ़ाज़े उ़लूम में तब्दीली का बयान	126
प्यासा कुंवें के पास जाता है न कि कुवां	114	तफ़्सील	126
सय्यिदुना इमामे आ 'ज़म عَلَيْهِ الرّحمة के फ़ज़ाइलो मनाक़िब	115	सब से बड़ा फ़कीह	128
सारी रात इबादत	115	गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा पसन्दीदा अ़मल	128
ज़ोहदो तक्वा	116	कामिल फ़कीह की अ़लामत	129

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
हकीकी तौहीद	131	नाम निहाद उ-लमा और उ-लमाए आखिरत	149
तौहीद के फ़वाइद व षमरात	131	बातिनी के बजाए ज़ाहिरी आ'माल इख़्तियार करने की वजह	150
हकीकी तौहीद से ख़ारिज उमूर	132	सब से बड़ा अहमक़	150
तौहीद का मर्कज़ व सर चश्मा	133	तफ़्सीर में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित और आ'ला	151
महफ़िले ज़िक्र की फ़ज़ीलत	134	हदीष में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित और आ'ला	151
किस्सा गो वाइज़ीन की मज़म्मत	135	फ़िक़ह में ब क़दरे किफ़ायत, मुतवस्सित और आ'ला	152
ज़िक्र की महफ़िल में हाज़िर होने की फ़ज़ीलत	136	इल्मे कलाम का मक्सूद	152
तकल्लुफ़ से कलाम करने की मुमानअत	137	उ-लमा ने तअस्सुब को आदत व आलाकार बना लिया	153
मेरे रुफ़का तो ख़ास लोग हैं	139	सिर्फ़ दो रक्अत ने फ़ाइदा दिया	153
शतह से क्या मुराद है ?	139	बाब नम्बर 4 : लोगों के इख़्तिलाफ़ में पड़ने की	
लोगों के लिये फ़ितना	142	वजह, मुनाज़रे की आफ़ात की तफ़्सील और इस के	
जाहिल और ज़ालिम	142	जवाज़ की शराइत	155
तामात क्या हैं ?	142	मुक़द्दमा : लोग इख़्तिलाफ़ात की तरफ़ क्यूं माइल हुए ?	155
अहले तामात की तावीलात की मिषालें	143	तालिब मतलूब और मुअज़्ज़ज़ ज़लील हो गए	156
मज़कूरा तावीलों का बुतलान	144	इख़्तिलाफ़ी मसाइल व मुनाज़रों में मशगूल होने की वजह	156
बदतरनीन मख़लूक	146	पहली फ़स्ल : मुनाज़रों को सहाबा के मशवरों और	
गुरबा कौन हैं ?	147	अस्लाफ़ के मुज़ाकरों से मुशाबहत	
हकीकी अ़ालिम की एक अ़लामत	147	देना धोका है	157
तीसरी फ़स्ल : अच्छे उलूम की क़ाबिले ता'रीफ़		तलबे हक़ के लिये मुनाज़रे की शराइत व अ़लामात	157
मिक्दार का बयान	148	तालिबे हक़ ऐसा होता है	160
इल्म के दर्जात	149	शैतान का खिलौना	163

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
दूसरी फ़स्ल : मुनाज़रे की आफ़ात और उस से जनम लेने वाली हलाकत ख़ैज़ आदात	164	मन्ज़िल, सुवारी और मक्सदे हकीकी	186
मुनाज़रे के बाइष पैदा होने वाली बुरी सिफ़ात	164	मरातिबे इल्म मिषाल के आईने में	186
मरबूत रिश्ता	168	एक सुवाल और इस का जवाब	188
हमेशा की हलाकत व बरबादी या हयाते जाविदानी	171	हासिले कलाम	188
एक सुवाल और इस का जवाब	171	दूसरी फ़स्ल : राहनुमा उस्ताज़ के फ़राइज़	190
आग और शम्अ की मिष्ल	172	माल के ए'तिबार से इन्सान की हालतें	190
उ-लमा की अक्साम	172	इल्म के ए'तिबार से इन्सान की हालतें	190
बाब नम्बर 5 : शागिर्द और उस्ताज़ के आदाब	173	इल्म पर अमल करने और न करने वाले की मिषाल	190
पहली फ़स्ल : तालिबे इल्म के आदाब	173	उस्ताज़ के आदाब	191
भोंकने वाले कुते	174	उस्ताज़ का मक्सूद सिर्फ़ रिज़ाए इलाही हो	192
एक शुबे का इज़ाला	174	मालो दौलत खादिम जब कि इल्म मख़्डूम है	193
शिकारी कुत्ता, ज़ालिम भेड़िया, चीता और शेर	175	हमें लोगों ने तिजारत गाह बना लिया	195
एक सुवाल और इस का जवाब	175	असातिज़ा की बुरी आदात	195
एक सुवाल और इस का जवाब	176	लोगों की अक्लों के मुताबिक़ कलाम करो	196
उ-लमा व अकाबिरीन और अहले बैत का मक़ाम व मर्तबा	177	ख़िन्ज़ीर के गले में मोतियों का हार	197
एक सुवाल और इस का जवाब	179	उस्ताज़ और शागिर्दों की मिषाल	199
अ़लिम के हुक्क	179	अ़लिम और जाहिल का धोका	200
समन्दर में जो ख़ासिय्यत है वोह कूजे में नहीं	180	बाब नम्बर 6 : इल्म की आफ़ात, उ-लमाए आख़िरत	201
पुर हिक्मत तहरीर	183	और उ-लमाए सू की अ़लामात का बयान	201
इल्मे आख़िरत के मुक़ाबले में दीगर उलूम की हैषिय्यत	184	पहली फ़स्ल : उ-लमाए सू की निशानियां	201
		आफ़ाते इल्म के मुतअल्लिक़ आठ फ़रामीने मुस्तफ़ा	201

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
आफ़ते इल्म के मुतअल्लिक नव अक़वाले बुजुर्गाने दीन	202	इल्म पर अमल न करने वाले की मिषाल	220
बे अमल आलिम का अन्जाम	204	आलिम की लगज़िश बाइषे हलाकत है	221
बुरे उ-लमा की मिषाल	206	आलिम और काज़ी	222
दूसरी फ़स्ल : उ-लमाए आख़िरत की 12 निशानियां	207	अब्बाह عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन	222
दुन्या व आख़िरत की मिषाल	207	इल्म की हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा कीमिया	223
दुन्यादार आलिम की कम से कम सज़ा	208	नुज़ूले कुरआन का मक़सद	224
इल्म नूर और गुनाह तारीकी है	209	आठ अनमोल हीरे	225
ऐ अस्हाबे इल्म ! शरीअते मुहम्मदिय्या कहां है ?	209	सय्यिदुना हातिम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का अन्दाज़े नसीहत	228
मा'रिफ़ते इलाही से महरूम की सबब	210	नसीहत का अनोखा अन्दाज़	230
इल्म दुन्या और अमल आख़िरत है	211	तीन ख़ुस्तें	230
वोह आलिम नहीं	211	दुन्या से बचने का तरीक़ा	231
उ-लमाए दुन्या और उ-लमाए आख़िरत के अवसाफ़	212	येह तो फिरऔन का शहर है	231
दुन्या की ख़ातिर इल्मे दीन सीखने वालों का अन्जाम	213	सय्यिदुना यहूया बिन यज़ीद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का ख़त	232
आलिम दो तरह के हैं	213	सय्यिदुना इमाम मालिक رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ का जवाब	233
दीन के बदले दुन्या तलब करने का अन्जाम	214	फ़ितनों की जगहें	235
उ-लमा और जहन्नम के तबक़ात	214	उ-लमा बन्दों पर रसूलों के अमीन हैं	235
किस आलिम की सोहबत इख़्तियार की जाए ?	216	बद तरीन उ-लमा और बेहतरीन उमरा	236
क़ब्रों की शिकायत	218	आग के समन्दर में ग़ौते लगाने वाला	236
सात बार हलाकत	218	उ-लमाए बनी इस्राईल से ज़ियादा बुरे	237
तुम्हें क्या चीज़ जहन्नम में ले गई	218	हुक्मरानों की सोहबत मुनाफ़क़त का बाइष है	237
नसीहत आमोज़ इबारत	219	आधा इल्म	240

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
आलिम की ढाल	240	इल्म का वज़ीर, बाप और लिबास	260
आलिम की ख़ामोशी शैतान की बेहोशी	240	जिस अमल में रिज़ाए इलाही मक़सूद न हो वोह मर्दूद है	260
ज़मीन का बेह तरीन और बद तरीन हिस्सा	241	सिपाही से ज़ियादा बुरे	261
ईषारे सहाबा	243	सब से बुरे लोग	261
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के पसन्दीदा काम	243	सब से बड़ा जाहिल	262
आम व ख़ास आलिम में फ़र्क़	244	उस्ताज़ व शाग़िर्द की तीन उम्दा ख़स्लतें	263
दरयाए दिजला और मिठे कुवें की मानिन्द	244	कुरआन से पहले ईमान	263
सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को नसीहत	245	पांच अच्छे अख़लाक़	264
फुलां से पूछो	245	“يَسْمُرُ صَدْرَهُ” से मुराद	265
इल्म तो तुम्हारे दिलों में है	247	वाजेह नुक़सान	266
कुर्बे इलाही के जल्वे	247	कलामे अम्बिया के मुशाबेह कलाम	266
उ-लमा ज़िन्दा रहते हैं	250	राज़दार सहाबी	267
यक़ीन की अहम्मियत व फ़ज़ीलत	251	इल्मे यक़ीन, अह्वाले क़ल्ब और बातिनी सिफ़ात के आलिम	268
नूरे तौहीद और शिर्क की आग	252	वोह इल्म का बरतन है न कि आलिम	269
एक सुवाल और इस का जवाब	253	सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا के उस्ताज़	270
यक़ीन के मुतअल्लिक़ मुतकल्लिमीन की इस्तिलाह	253	सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को फ़ज़ीलत देने की वजह	270
यक़ीन के मुतअल्लिक़ फ़ुकहा व सूफ़िया की इस्तिलाह	255	तस्नीफ़ व तालीफ़ की इब्तिदा कब से हुई	270
यक़ीन की अक़साम	256	कुरआने पाक किताबी सूरत में	271
एक सुवाल और इस का जवाब	256	इस्लाम में तस्नीफ़ की जाने वाली इब्तिदाई कुतुब	271
उ-लमा की अक़साम	259	हक़ के ज़ियादा क़रीब कौन ?	273
मुतक़ीन का इमाम	260	बुरी राए वाला और दुन्या का पुजारी	274

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
कलाम और सीरत	274	﴿अक्ल की फ़ज़ीलत व अज़मत में वारिद 14 फ़रामीने मुस्तफ़ा﴾	284
खुश बख़्त कौन ?	274	एक सुवाल और इस का जवाब	285
अच्छे शख्स की पहचान	275	दूसरी फ़स्ल : अक्ल की हकीकत और इस की अक्साम	289
आज के दौर की नेकी गुज़श्ता ज़माने की बुराई	275	अक्ल के चार मज़ानी	289
मसाजिद में चटाई बिछाना किस की ईजाद ?	276	अक्ल मन्द की पहचान	291
लोगों से बिदअत के बारे में न पूछो !	277	दिल का अन्धापन ज़ियादा नुक़सान देह है	295
मिम्बर रखना बिदअत नहीं	277	तीसरी फ़स्ल : अक्ल के ए'तिबार से इन्सानी	
हर नया काम जो दीन से न हो वोह मर्दूद है	278	नुफ़ूस में तफ़ावुत	296
शफ़ाअत से महरूम का सबब	278	अक्ल का लश्कर और सामाने जिहाद	296
ख़िलाफ़े सुन्नत बिदअत जारी करने वाले की मिषाल	278	अर्श से बढ़ कर अज़मत वाली चीज़	299
शैतान का लश्कर और गुरौहे सहाबा व ताबेईन	279	एक सुवाल और इस का जवाब	299
एक सुवाल और इस का जवाब	280	अक्काइद का बयान	301
सब से बड़ी मा'सिय्यत	281	पहली फ़स्ल : इस्लामी रुक्न कलिमए शहादत के	
लोगों से ज़ियादा मैल ज़ोल बाइषे हलाकत है	281	मुतअल्लिक अक्कीदए अहले सुन्नत की वज़ाहत	301
इन्सान की बेहतरीन हालत	282	कलिमए शहादत के पहले जुज़ अक्कीदए तौहीद की वज़ाहत	302
दुआ	282	हर ऐब व नुक़स से पाक ज़ात	302
बाब नम्बर 7 : अक्ल, इस की अज़मत, हकीकत		सिफ़ाते बारी तआला	303
और अक्साम का बयान	283	हयात व कुदरत	303
पहली फ़स्ल : अक्ल की अज़मत	283	इल्मे इलाही	303
बुढ़े शख्स को फ़ज़ीलत क्यूं हासिल है ?	283	इरादए खुदावन्दी	304
﴿अक्ल की फ़ज़ीलत व अज़मत में वारिद चार फ़रामीने बारी तआला﴾	284	समीअ व बसीर	304

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
कलामे इलाही	305	सय्यिदुना इमामे मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْخَالِق का नज़रिय्या	315
अफ़्आले इलाहिय्या	305	सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى का नज़रिय्या	315
कलिमए शहादत के दूसरे जुज़ की वज़ाहत	306	सय्यिदुना इमाम हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوَى का नज़रिय्या	315
मुन्कर नकीर के सुवालात	307	मुतअख़ि़बीन मुहदिषीन رَحْمَتُهُمُ اللَّهُ السَّيِّئِينَ का नज़रिय्या	316
मीज़ाने अमल	307	मुअव्वीदीन इल्मे कलाम के दलाइल	316
पुल सिरात	308	मुदल्लल और मुनाज़राना अन्दाज़ें गुफ़्तू के मुतअल्लिक कुरआनी दलाइल	317
हौजे कौषर	308	तौहीद, नबूव्वत और बिअ़षत के मुतअल्लिक कुरआनी दलाइल	319
हि़साब व किताब	308	सहाबा व ताबेईन عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुनाज़रों की चन्द मिषालें	320
मोमिन हमेशा जहन्नम में नहीं रहेगा	309	मुनाज़राना अन्दाज़ में अस्लाफ़ का तर्ज़े अमल	321
अक़ीदए शफ़ाअत	309	मुजादला व मुनाज़रा के तरीक़े वज़अ करने का मक़्सद	322
सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और उन का मक़ाम व मर्तबा	309	एक सुवाल और इस का जवाब	322
अहले सुन्नत की पहचान	310	इल्मे कलाम के मुतअल्लिक मुसन्निफ़ का नज़रिय्या	323
दूसरी फ़स्ल : मरहूला वार रहनुमाई करने की वजह		इल्मे कलाम के नुक्सानात	323
और ए'तिक़्ाद के दर्जात का बयान	310	इल्मे कलाम के फ़्वाइद	324
एक एहतियात	311	उ-लमाए किराम की जिम्मेदारी	324
आम नेक लोगों के मुनाज़िरीन व मुतकल्लिमीन के अक़ीदे में फ़र्क़	311	इल्मे कलाम के इस्ति'माल के तरीक़े	324
बुलन्द दर्जात के हुसूल का सबब	312	बे फ़ाइदा इल्मे कलाम की अक़साम	326
इल्मे कलाम सीखना कैसा ?	313	एक सुवाल और इस का जवाब	327
इल्मे कलाम और मुतकल्लिमीन के बारे में उ-लमा की आराअ	313	इल्मे कलाम दवा और इल्मे फ़िक़ह ग़िज़ा की मिषल है	327
सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَاف़ी का नज़रिय्या	313	इल्मे कलाम किसे सिखाया जाए ?	327
सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَك़ाल का नज़रिय्या	314	बा'ज़ अहक़ाम में तब्दीली का एक सबब	328

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
इल्मी वुस्अतें पाने का नुस्खा	329	तीसरी फ़स्ल : الرَّسَالَةُ الْقُدْسِيَّةُ فِي قَوَاعِدِ الْعُقَايِدِ	346
एक सुवाल और इस का जवाब	329	ईमान के चार बुन्यादी अरकान	346
उलूम की तक्सीम पर दलाइले शरइय्या	329	पहले रुक्न की तफ़्सील	347
मोमिने कामिल	332	वुजूदे बारी तआला पर कुरआनी दलाइल	347
एक सुवाल और इस का जवाब	332	वुजूदे बारी तआला पर अक्ली दलाइल	349
ख़वास के असरार की अक्सांम	333	एक सुवाल और इस का जवाब	351
اَلْبَلَاٰهُ عُرُوْجِلْ और मख़्लूक के इल्म व कुदरत में फ़र्क	334	दूसरे रुक्न की तफ़्सील	353
बे दीनी का बाइष	335	तीसरे रुक्न की तफ़्सील	355
दरज़ी और जुलाहा	336	मशिय्यते इलाही का षुबूत नक्ली दलाइल से	356
“मस्जिद सुकड़ती है” से मुराद	336	बिअषते अम्बिया	358
गधे जैसा मुंह	336	खातमुन्नबिय्यीन	359
मुरादी मा'ना की पहचान का तरीक़ा	337	चौथे रुक्न की तफ़्सील	360
ज़बाने हाल और ज़बाने क़ाल में फ़र्क और इन की मिषालें	340	एक सुवाल और इस के दो जवाब	361
ज़ाहिरबीन और अहले बसीरत के इल्मी मक़ाम में फ़र्क	341	एक सुवाल और इस का जवाब	361
हृद से बढ़ने वाले	341	दुआ	364
तावील करने से रोकने की वजह	343	चौथी फ़स्ल : ईमान और इस्लाम के माबैन इत्तिסाल व	
लफ़्जे “इस्तिवा” के मुतअल्लिक़ अक़ीदा	343	इन्फ़िसाल, इन के घटने बढ़ने और अस्लाफ़ का	
मियानारवी इख़्तियार करने वाला गुरौह	344	इस में (اِنْ شَاءَ اللّٰهُ) के साथ) इस्तिषना करने की	
तावीलात के मुतअल्लिक़ मो'तज़िला और फ़लासिफ़ा का नज़रिय्या	344	वजह का बयान	365
कौले फ़ैसल	344	मस्अला 1 : इमान व इस्लाम दो चीज़ें हैं या एक ?	365
मज़क़ूरा तमाम बहूष का मक्सूद	345	मुसनिफ़ का मौक़िफ़	365

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
पहली बहूष : लुग़वी मा'ना का बयान	365	क़ब्रिस्तान में सलाम करने का तरीका	386
दूसरी बहूष : मा'नए शरई का बयान	366	जिन दो का शक से तअल्लुक है	386
दोनों के हम मा'ना होने की मिषालें	366	अमल के मुतअल्लिक 5 फ़रामीने बारी तआला	387
दोनों के जुदा जुदा मा'ना में इस्ति'माल होने की मिषालें	367	अमल के मुतअल्लिक दो फ़रामैने मुस्तफ़ा	388
दोनों के एक दूसरे के मा'ना को शामिल होने की मिषालें	368	निफ़ाक़ की मज़म्मत में वारिद 19 रिवायात व अक्वाल	388
तीसरी बहूष : हुक्मे शरई का बयान	368	फ़ारूकी व दारानी तक्वा	392
आ'माले सालेहा जुज्जे ईमान नहीं	369	निफ़ाक़ की अक़साम	392
गौर त़लब मसाइल	372	या रब्ब ! वक्ते मौत सलामतिये ईमान नसीब फ़रमा !	393
फ़िर्क़ए मरजिआ का शुबा और इन के दलाइल	373	ईमान पर मिलने वाली मौत को शहादत पर तरजीह	394
मजकूरा दलाइल के जवाबात	374	त़हारत का बयान	396
मो'तज़िला का शुबा और इन के दलाइल	376	त़हारत के मुतअल्लिक तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	396
मजकूरा दलाइल के जवाबात	377	त़हारत के दर्जात	397
एक सुवाल और इस का जवाब	378	बुलन्द मक़ाम पर फ़ाइज़ होने से मानेअ अमल	398
मस्अला 2 : ईमान घटता बढ़ता है या नहीं	379	सब से पहली बिदअतें	398
ईमान घटने बढ़ने की कैफ़ियत जानने वाला	380	जूते पहन कर नमाज़ पढ़ना कैसा ?	399
आलमे ज़ाहिर और आलमे ग़ैब	380	बुराई नेकी और नेकी बुराई बन गई	400
चमकता निशान और सियाह नुक़्ता	381	एक सुवाल और इस का जवाब	401
मस्अला 3 : اِنْ شَاءَ اللّٰهِ के साथ अपने मोमिन होने का इक़रार करना	383	अश्या का मुबाह, मज़मूम और महमूद होना	401
ऐ हसन ! तू झूठा है	383	अहले इल्मो अमल के अवकात कीमती जोहर हैं	402
जिन दो का शक से तअल्लुक नहीं	384	फुज़ूल ख़र्ची पर मददगार	403
बुरा सच	385	दुन्या व माफ़ीहा से अफ़ज़ल	403

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
जाहिरी तहारत की अक्साम	404	वुजू से पहले की दुआ	417
बाब नम्बर 1 : नजासत से तहारत हासिल करना	405	हाथ धोने से पहले की दुआ	417
पहली फ़स्ल : जाइल की जाने वाली नजासत का बयान	405	कुल्ली करते वक़्त की दुआ	418
हैवानात के अज्जा की अक्साम और इन का हुक्म	405	नाक में पानी पहुंचाते वक़्त की दुआ	418
दूसरी फ़स्ल : नजासत जाइल करने वाली चीज़	408	नाक साफ़ करते वक़्त की दुआ	419
तीसरी फ़स्ल : नजासत जाइल करने के तरीक़े	409	चेहरा धोते वक़्त की दुआ	419
बाब नम्बर 2 : नजासते हुक्मी से पाकी		दायां बाजू धोते वक़्त की दुआ	420
हासिल करना	410	बायां बाजू धोते वक़्त की दुआ	420
क़ज़ाए हाज़त के आदाब	410	सर का मस्ह करते वक़्त की दुआ	421
खड़े हो कर पेशाब न करो	411	कानों का मस्ह करते वक़्त की दुआ	421
वस्वसे पैदा होने का सबब	412	गर्दन का मस्ह करते वक़्त की दुआ	422
बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले की दुआ	412	दायां पाउं धोते वक़्त की दुआ	422
बैतुल ख़ला से निकलने के बा'द की दुआ	413	बायां पाउं धोते वक़्त की दुआ	422
हड्डी और गोबर से इस्तिन्जा करने की मुमानअत	413	वुजू के बा'द की दुआ	422
इस्तिन्जा का तरीक़ा	414	वुजू के मकरूहात	423
पथ्थर इस्ति'माल करने का तरीक़ा	414	वुजू में वस्वसे डालने वाला शैतान	424
इस्तिन्जा से फ़राग़त के बा'द की दुआ	415	वुजू के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 10 फ़रामीने मुस्त्फ़ा	425
अहले कुबा की फ़ज़ीलत	415	गुस्ल का तरीक़ा	427
वुजू का तरीक़ा	416	गुस्ल के फ़राइज़	428
मिस्वाक के मुतअल्लिक़ सात फ़रामीने मुस्त्फ़ा	416	वुजू के फ़राइज़	428
मिस्वाक का तरीक़ा	417	गुस्ल फ़र्ज़ होने के अस्बाब	428

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
इन मवाकेअ पर गुस्ल करना सुन्नत है	429	सुर्मा लगाने का मसनून तरीका	443
जिन मवाकेअ पर गुस्ल करना मुस्तहब है	429	एक सुवाल और इस का जवाब	444
तयम्मूम का बयान	429	दाढ़ी के मकरूहात	446
तयम्मूम के जवाब की सूतें	429	सियाह खिजाब से मुमानअत की रिवायात	447
तयम्मूम का तरीका	429	हिकायत : धोके बाज	447
बाब नम्बर 3 : ज़ाहिरी नजासतों से पाकी		खुशबू जन्नत से महरूम लोग	447
हासिल करना	431	सुर्ख या जर्द रंग का खिजाब लगाने का हुक्म	448
आका صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की दाढ़ी मुबारक	432	फ़ज़ीलत का बाइष इल्म है न की बड़ी उम्र	448
अच्छी निय्यत से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना	432	आका صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सफ़ेद बाल	449
बुरी निय्यत से ज़ैबो ज़ीनत इख़्तियार करना	433	कम उम्र में ओहदए क़ज़ा	449
सब से बेहतर और सब से बदतर घर	435	बक़रे की भी दाढ़ी होती है	450
हम्माम में दाख़िल होने वाले पर वाजिब उमूर	435	बुढ़ा तालिबे इल्म	450
हम्माम में दाख़िल होने की दस सुन्नतें	436	हुसूले इल्म की जुस्तजू	450
हम्माम में दाख़िल होने से पहले की दुआ	437	मोमिन का नूर	451
राहे आख़िरत के मुसाफ़िर की पहचान	438	फ़िरिशतों की क़सम का अन्दाज़	451
चन्द मुफ़ीद बातें	439	बा-रीश जन्नती	452
सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की याद ताज़ा हो गई	441	दो शिकें ख़फ़ी	453
यहूद की मुख़ालफ़त करो	441	अहादीष से माखूज़ बारह सुन्नतें	453
शैतान के बैठने की जगह	442	नमाज़ का बयान	454
नाख़ुन काटने का मसनून तरीका	442	बाब नम्बर 1 : नमाज़, सुजूद, जमाअत और	
पाउं के नाख़ुन तराशने का अहसन तरीका	443	अज़ान वग़ैरा के फ़ज़ाइल	455

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
पहली फ़स्ल : अज़ान की फ़ज़ीलत	455	नमाज़ हो तो ऐसी	470
अज़ान की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्त्फ़ा	455	गाफ़िल ख़्वाहिश मन्द	470
अज़ान के बा'द की दुआ	456	हिकायत : सय्यिदुना ख़लफ़ बिन अय्यूब عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ का खौफ़े खुदा	471
फ़िरिशते मुक्त्तदी	456	सय्यिदुना मुस्लिम बिन यसार عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ और नमाज़	471
दूसरी फ़स्ल : फ़र्ज नमाज़ की फ़ज़ीलत	457	नमाज़ अमानत है	471
फ़र्ज नमाज़ की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 14 फ़रामीने मुस्त्फ़ा	457	सय्यिदुना इमाम जैनुल आबेदीन عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ और नमाज़	472
तसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ पूरा करने की फ़ज़ीलत	460	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के घर में रहने वाला खुश नसीब	472
छे फ़रामीने मुस्त्फ़ा	460	सय्यिदुना हातिमे असम عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ और नमाज़	472
चौथी फ़स्ल : नमाज़े बा जमाअत के फ़ज़ाइल	462	पूरी रात इबादत से बेहतर अमल	473
फ़ज़ीलते जमाअत पर मुश्तमिल पांच फ़रामीने मुस्त्फ़ा	462	सातवी फ़स्ल : मस्जिद और जाए नमाज़ की फ़ज़ीलत	474
तीन चीज़ों का शौक	463	मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल सात फ़रामीने मुस्त्फ़ा	474
इराक़ की बादशाहत से ज़ियादा महबूब	464	मस्जिद की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल आठ अक़्वाले बुजुर्गाने दीन	475
निफ़ाक़ और आग से आज़ादी का परवाना	464	बाब नम्बर 2 : ज़ाहिरी आ 'माल की कैफ़ियत व	
सूरज, चांद और सितारों की मानिन्द चमकते चेहरे	464	आदाब का बयान	477
पांचवी फ़स्ल : फ़ज़ाइले सजदा	465	पहली फ़स्ल : नमाज़ में ज़ाहिरी आ 'माल की कैफ़ियत और	
सजदे की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल चार फ़रामीने मुस्त्फ़ा	465	तकबीरे तहरीमा से इब्तिदा करना	477
बहुत ज़ियादा सजदे करने वाले	466	नमाज़ का तरीका	477
छठी फ़स्ल : खुशूअ की फ़ज़ीलत	467	पहला रुकन क़ियाम	477
खुशूअ के मुतअल्लिक़ तीन फ़रामीने बारी तआला	467	निय्यते नमाज़	478
किस की नमाज़ मक़बूल है ?	468	हाथ उठाने के आदाब	478
बिग़ैर तर्जुमान के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से हम कलामी	469	दूसरा रुकन तकबीरे तहरीमा	478

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
तक्बीर कब कही जाए	479	पहली फ़स्ल : खुशूअ, खुजूअ और हुजूरिये क़ल्ब	
फ़ैसलए ग़ज़ाली	479	की शराइत	495
तीसरा रुकन क़िराअत	480	खुशूओ खुजूअ से नमाज़ पढ़ने से मुतअल्लिक 3 फ़रामीने बारी तआला	495
चौथा रुकन रुकूअ और इस के मुतअल्लिक़ात	481	खुशूओ खुजूअ से नमाज़ पढ़ने से मुतअल्लिक 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा	495
पांचवां रुकन सजदा	482	नमाज़ में क़िराअत व अज़कार से मक्सूद	497
छटा रुकन का'दा	484	रुकूअ व सुजूद से मक्सूद	498
सातवां रुकन सलाम	484	एक सुवाल और इस का जवाब	499
इमाम व मुक्तादी के लिये मुस्तहब उमूर	485	हासिले कलाम	501
दूसरी फ़स्ल : ममनूआते नमाज़	487	दूसरी फ़स्ल : नमाज़ मुकम्मल करने वाले बातिनी उमूर	501
मजकूरा उमूर की तफ़्सील	487	इन उमूर की तफ़्सील	501
नमाज़ में सात चीज़ें शैतान की तरफ़ से हैं	490	मजकूरा उमूर के अस्बाब	502
नमाज़ में चार चीज़ें जुल्म से हैं	490	हासिले कलाम	504
तीसरी फ़स्ल : फ़राइज़ व सुनन में फ़र्क	491	ज़िक्रे इलाही के वक़्त आ'जा की कैफ़ियत	505
नमाज़ के फ़राइज़	491	नाफ़रमान मेरा ज़िक्र न करें	505
नमाज़ की सुन्नतें	492	दिल के मुतअल्लिक ज़िक्र कर्दा मआनी का इख़िलाफ़ और लोगों की अक्साम	505
अज़कार की सुन्नतें	492	तीसरी फ़स्ल : हुजूरे क़ल्ब में नफ़अ बख़्शा दवा	507
एक सुवाल और इस का जवाब	492	दिली खयालात का सबब	507
आ'जाए ज़िस्म के दर्जात	493	आक़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आज़िजी व इन्क़िसारी	509
इबादत के ज़ाहिरी अरकान	493	कफ़फ़ारे में बाग़ सदका कर दिया	510
नमाज़ी का सब से पहला दुश्मन	494	चौथी फ़स्ल : नमाज़ में हुजूरिये क़ल्ब की तफ़्सील	512
बाब नम्बर 3 : आ'माले क़ल्ब की बातिनी शराइत	495	नमाज़ की शराइत व फ़राइज़	512

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
अज़ान	512	फ़िरिश्तों के तअज़्जुब करने की वजह	526
तहारत	512	बा ए'तिबार तरक्किये दर्जात इन्सान फ़िरिश्तों से मुख़लिफ़ है	527
सित्रे औरत	513	दुआ	528
इस्तिक्बाले किब्ला	513	पहली फ़स्ल : खुशूअ, खुज़ूअ से नमाज़ पढ़ने वालों	
हुजूरे क़ल्ब के साथ नमाज़ अदा करने की फ़ज़ीलत	513	की ह़िकायात	529
सीधा खड़ा होना	514	आंखों का कुप्ले मदीना	529
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से कैसे हया करें	514	सय्यिदुना रबीअ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی का खौफ़े खुदा	529
निय्यत	515	सय्यिदुना आमिर बिन अब्दुल्लाह رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی का खुशूअ	530
तक्बीरे तहरीमा	515	तक्लीफ़ का एहसास तक न हुवा	530
दुआए आगाज़	515	वस्वसों के खौफ़ से नमाज़ मुख़सर पढ़ी	531
क़लअए इलाही	517	एक भी नमाज़ नहीं पढ़ी	532
किराअत	517	आयते मुबारका की तफ़्सीर	532
तिलावत के मअानी की तफ़्सील	517	बाइषे नजात और कुर्ब का ज़रीआ	533
नमाज़ में मुसलसल खड़े रहना	520	दिल नमाज़ में हाज़िर नहीं	533
दिल हाकिम और आ'जा रिआया हैं	521	बाब नम्बर 4 : इमामत का बयान	535
रुकूअ व सुजूद	521	पहली फ़स्ल : इमाम पर नमाज़ से पहले के , नीज़	
तशह्हुद	522	किराअत, अरकान और सलाम के बा'द के लाज़िम उमूर	535
नमाज़ को आफ़ात से महफूज़ रखने की फ़ज़ीलत	524	किन की नमाज़ मक्बूल नहीं होती	535
अहले कुलूब के मुकाशफ़ा का इन्कार मुनासिब नहीं	525	एक सुवाल और इस का जवाब	535
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नमाजी बन्दे पर फ़ख़्र फ़रमाता है	526	इमामत अफ़ज़ल है या मुअज़्ज़िनी	536
फ़िरिश्ते किस पर तअज़्जुब करते हैं ?	526	बिला हिसाब जन्नत में दाख़िला	537

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
70 साला इबादत से अफ़ज़ल	537	यौमल मज़ीद	551
अम्बिया व उ-लमा के बा'द अफ़ज़ल	537	जुमुआ के दिन मरने की फ़ज़ीलत	553
ख़िलाफ़ते सिद्दीकी पर एक दलील	538	दूसरी फ़स्ल : जुमुआ की शराइत	554
मुक्तदी ही बन जाओ	538	जुमुआ सहीह होने की शराइत	554
कषरते जमाअत के लिये नमाज़ियों का इन्तिज़ार करना कैसा ?	539	जुमुआ की सुन्नतें	555
इमामत पर उजरत लेने का हीला	540	जुमुआ वाजिब होने की शराइत	556
किन की इक्तीदा में नमाज़ जाइज़ नहीं ?	541	तर्क जुमुआ के पांच आ'ज़ार	556
अज़ान व इक़ामत के दरमियान कितना वक्फ़ हो ?	541	तीसरी फ़स्ल : आदत की तरतीब के मुताबिक़	
दूसरी फ़स्ल : क़िराअत में इमाम की ज़िम्मेदारी	542	आदाबे जुमुआ का बयान	557
सरकार ﷺ की आख़िरी नमाज़	544	﴿1﴾ जुमा'रात से जुमुआ की तय्यारी करना	557
खुलासाए कलाम	545	﴿2﴾ तुलूए फ़ज़्र के बा'द गुस्ल करना	558
तीसरी फ़स्ल : अरकाने नमाज़ में इमाम व मुक्तदी की		गुस्ले जुमुआ के मुतअल्लिक़ रिवायात	558
ज़िम्मेदारियां	545	रोज़े जुमुआ गुस्ल न करने का जवाज़	559
बा ए'तिबारे षवाब लोगों की नमाज़	546	एक ही निय्यत काफ़ी है	559
इमाम का किसी आने वाले के लिये रुकूअ को तूल देना	546	ह़िकायत : बेटे की तर्बिय्यत	559
चौथी फ़स्ल : सलाम फेरने के बा'द इमाम की		दोबारा गुस्ल का हुक्म देने की तौजीह	560
ज़िम्मेदारी	548	﴿3﴾ जीनत इख़्तियार करना	560
नमाज़े फ़ज़्र में दुआए कुनूत	549	रोज़े जुमुआ नाख़ुन तराशने की फ़ज़ीलत	560
बाब नम्बर 5 : जुमुअतुल मुबारक का बयान	550	मर्दों और औरतों की पसन्दीदा खुश्बू	560
पहली फ़स्ल : जुमुआ की फ़ज़ीलत	550	ग़म दूर और अक्ल में इज़ाफ़ा हो	561
बिला उज़्रे शरई जुमुआ न पढ़ने का ववाल	550	जुमुआ के दिन इमामा बांधने की फ़ज़ीलत	561

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
﴿4﴾ जामेअ मस्जिद की तरफ़ जल्दी जाना	561	नमाज़े जुमुआ के आदाब	571
जुमुआ के लिये जल्द आने की फ़ज़ीलत	562	बा'द नमाज़े जुमुआ सूरए फ़तिहा, इख़्लास और मुअव्वज़तैन पढ़ने की फ़ज़ीलत	571
तीन बेहतरीन अमल	562	मख़्लूक से बे नियाज़ी और हुसूले रिज़क़ की दुआ	572
फ़िरिश्ते खुश नसीबों के नाम लिखते हैं	563	﴿10﴾ मस्जिद में ठहरे रहना	573
फ़िरिश्तों की दुआ	563	चौथी फ़स्ल : जुमुआ की सुन्नतें और आदाब	573
पहली सदी में जुमुआ का ज़वा	563	इल्म की मजलिस में हाज़िर होने की फ़ज़ीलत	574
﴿5﴾ मस्जिद में दाख़िल होने के आदाब	564	क़िस्सा गोई बिदअत है	575
जुमुआ के दिन लोगों की गर्दन फ़लांगने पर वर्द	564	फ़ज़ीलत वाली घड़ी कौन सी है ?	575
﴿6﴾ हाज़िरीन का अदब	565	80 साल के गुनाह मुआफ़	577
नमाज़ी के आगे से गुज़रना गुनाह है	565	शफ़ाअते मुस्तफ़ा	577
﴿7﴾ पहली सफ़ की कोशिश करना	567	ख़ुलासए कलाम	579
दूर बैठने में ही अफ़ियत है	567	शबे जुमुआ सूरए कहफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत	579
दिलों का कुर्ब मतलूब है न कि अजसाम का	567	मरने से पहले जन्नत में अपना ठिकाना देख ले	580
हिकायत : किस हुक्मरान से दूरी इख़्तियार की जाए	568	जुमुआ के दिन वक़्त की तक्सीम	581
ईषार का अनोखा अन्दाज़	568	उस का सुवाल पूरा कर दिया जाता है	582
मस्जिदों में नमाज़ के लिये जगह मख़सूस कर लेना कैसा ?	569	जो दुआ मांगे क़बूल होगी	582
﴿8﴾ ख़ुतबे के आदाब	569	हासिले कलाम	583
तवज्जोह से ख़ुतबा सुनने की फ़ज़ीलत	570	बाब नम्बर 6 : मुतफ़र्रिक़ मसाइल का बयान	584
दौराने ख़ुतबा कलाम करने पर वर्द	570	अमले क़लील से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती	584
दौराने ख़ुतबा इशारे से ख़ामोश कराने का हुक्म	570	हालते नमाज़ में जूं और पिस्सू मारने का हुक्म	584
चार मकरूह अवक़ात	571	जूते पहने नमाज़ पढ़ने की दलील	585

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
जानिबे किब्ला थूकना कैसा ?	587	इब्तिदाए वक्ते मगरिब	599
इत्तिसाले सफूफ़	587	(5) इशा की सुन्नतें	600
मस्बूक के अहकाम	588	(6) नमाजे वित्र	601
क़ज़ा और बा जमाअत नमाज़ के अहकाम	589	वित्र कितनी रकअत पढ़ना अफ़ज़ल है ?	602
दौराने नमाज़ या बा'दे नमाज़ कपड़ों पर नज़ासत नज़र आना	589	वित्र के मआनी	603
सजदाए सहव के अहकाम	590	(7) नमाजे चाशत	603
नमाज़ की निय्यत करते वक़्त वस्वसे आना	590	चाशत का वक़्त	604
इक़्तिदा के अहकाम	591	(8) सलातुल अव्वाबीन	604
सफ़ें दुरुस्त करना और दाई जानिब की फ़ज़ीलत	592	सलातुल अव्वाबीन पढ़ने की फ़ज़ीलत	605
हिकायत : गोया वोह मुर्दा है	593	﴿2﴾ हफ़्तावार शबो रोज़ के नवाफ़िल	605
बाब नम्बर 7 : नवाफ़िल का बयान	594	इतवार के नवाफ़िल	605
इज़ाफ़त के ए'तिबार से नवाफ़िल की तक्सीम	594	जन्नत में ख़ालिस कस्तूरी का शहर	605
﴿1﴾ वोह नमाज़ें जो हर दिन रात पढ़ी जाती हैं	595	चार रकअत पढ़ने की फ़ज़ीलत	606
(1) फ़ज़्र की सुन्नतें	595	पीर के नवाफ़िल	606
(2) जोहर की सुन्नतें	596	तमाम गुनाह मुआफ़	606
जोहर की चार सुन्नतों की फ़ज़ीलत	596	फ़िरिशते इस्तिक़बाल करेंगे	606
हर रोज़ बारह रकअत सुन्नत अदा करने की फ़ज़ीलत	597	मंगल के नवाफ़िल	607
जवाल के वक़्त की पहचान	597	शहादत की मौत	607
इब्तिदाए वक्ते अ़स	598	बुध के नवाफ़िल	607
(3) अ़स की सुन्नतें	598	अज़ाबे क़ब्र और क़ियामत की सख़्तियों से नजात	607
(4) मगरिब की सुन्नतें	598	जुमा 'रात के नवाफ़िल	608

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
मोअमिनीन व मुतवक्किलीन की ता'दाद के बराबर नेकियां	608	﴿3﴾ सालाना नवाफ़िल	613
जुमुआ के नवाफ़िल	608	कुरबानी का वक़्त	615
नेकियां ही नेकियां	608	नमाज़े ईद का तरीक़ा	615
हफ़्ते के नवाफ़िल	609	कुरबानी	616
अर्शे इलाही के साए में अम्बिया व शुहदा का साथ	609	तरावीह तन्हा पढ़ना अफ़ज़ल है या बा जमाअत	616
शबे इतवार के नवाफ़िल	609	मस्जिदे नबवी और मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ने से अफ़ज़ल अमल	617
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ जन्नत में दाख़िला	609	वज़ाहत	617
शबे पीर के नवाफ़िल	610	खुलासए कलाम	618
सलातुल हाजत पढ़ने की फ़ज़ीलत	610	माहे रजबुल मुरज्जब के नवाफ़िल	618
शबे मंगल के नवाफ़िल	610	अहले ख़ाना के 700 अपराद की शफ़ाअत का हक़	618
जहन्नम से आज़ादी	611	माहे शा'बानुल मुअज़्ज़म के नवाफ़िल	619
शबे बुध के नवाफ़िल	611	70 बार नज़रे रहमत	619
चार लाख 90 हजार मलाइका का नुज़ूल	611	﴿4﴾ अस्बाब से मुतअल्लिक़ नवाफ़िल का बयान	920
अहले ख़ाना के 10 अपराद की शफ़ाअत का हक़	611	(1) ग्रहन की नमाज़	620
70 साल के गुनाह मुआफ़	611	नमाज़े ग्रहन का तरीक़ा व वक़्त	620
शबे जुमा'रात के नवाफ़िल	612	(2) नमाज़े इस्तिस्का	621
शुहदा व सिदीकीन का मर्तबा	612	दुआ	622
शबे जुमुआ के नवाफ़िल	612	(3) नमाज़े जनाज़ा	622
12 साल शबो रोज़ इबादत की मिष्ल	612	जनाज़े में 40 लोगों के शरीक होने की बरकत	624
शबे क़द्र की इबादत का षवाब	613	क़ब्रिस्तान में सलाम करने का तरीक़ा	624
शबे हफ़ता के नवाफ़िल	613	दफ़न करने के बा'द की दुआ	624

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
(4) तहिय्यतुल मस्जिद	625	बकरी की ज़कात	640
हदीष से हासिल शुदा दो फ़वाइद	625	निसाब में शरीक मालिकों की ज़कात की सूरत	640
खुलासए कलाम	626	﴿2﴾ ज़मीनी पैदावार की ज़कात	641
(5) तहिय्यतुल वुजू	627	ज़मीनी पैदावार में शरीक मालिकों के उ़श्र की सूरत	641
(6) घर में दाख़िल होते और निकलते वक़्त के नवाफ़िल	627	ज़मीनी पैदावार में उ़श्र कब वाजिब होगा ?	642
(7) नमाज़े इस्तिख़ारा	628	उ़श्र वाजिब होने का वक़्त	642
(8) नमाज़े हाज़त	629	﴿3﴾ सोने चांदी की ज़कात	642
दुआ ज़रूर क़बूल हो	630	﴿4﴾ माले तिजारत की ज़कात	643
जिसे चार ने'मतें मिलें वोह चार से महरूम न होगा	630	﴿5﴾ दफ़ीनों और मा'दनिय्यात की ज़कात	644
(9) सलातुत्तस्बीह और इस की फ़ज़ीलत	631	﴿6﴾ सदक़ए फ़ित्र	645
सलातुत्तस्बीह का उ़म्दा तरीक़ा	631	दूसरी फ़स्ल : ज़कात की अदाएगी और उस की	
अवक़ाते मकरूहा में मुमानअते नमाज़ की वुजूहात	633	ज़ाहिरी व बातिनी शराइत	646
ज़कात के असरार का बयान	635	﴿1﴾ निय्यत करना	646
ज़काद न देने वालों का अन्जाम	635	﴿2﴾ साल पूरा होने पर अदाएगी में जल्दी करना	647
पहली फ़स्ल : ज़कात की अक्साम और इस के		﴿3﴾ माल की जगह कीमत न देना	647
वुजूब के अस्बाब	637	﴿4﴾ ज़कात दूसरे शहर की तरफ़ मुन्तक़िल न करना	648
﴿1﴾ जानवरों की ज़कात	637	﴿5﴾ मसारिफ़े ज़कात की ता'दाद के मुताबिक़ माले ज़कात तक्सीम करना	648
माल में ज़कात फ़र्ज़ होने की शराइत	637	ज़कात के बातिनी आदाब की बारीकियां	649
तफ़्सील	638	वुजूबे ज़कात की तीन वुजूहात	649
ऊंट की ज़कात	639	अल्लाह ﷻ व रसूल ﷺ काफ़ी हैं	650
गाए की ज़कात	640	माल में ज़कात के इलावा भी कुछ हुकूक़ हैं	651

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
बुख़ल से बचने का तरीका	653	ज़कात लेने वाले को कैसा होना चाहिये ?	667
माली ने'मतों का शुक्र	653	हर हाल में नज़र मुसब्बिबुल अस्बाब पर हो	668
अदाएगिये ज़कात के अफ़ज़ल अवकात	654	कुफ़्फ़ार का तरीका	669
रमज़ान नहीं बल्कि माहे रमज़ान कहो	654	सफ़ेद पोश मुस्तहिक़ को सदका देने का षवाब	670
छुपा कर सदका करने की फ़ज़ीलत	654	एक गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा महबूब	671
छुपा कर सदका देने का फ़ाइदा	655	पहली फ़स्ल : ज़कात लेने वाला, मुस्तहिक़ होने के	
सदके में नुमूद व नुमाइश से बचने के तरीके	656	अस्बाब और क़ब्जे के वज़ाइफ़	672
बुख़ल और रियाकारी सांप और बिच्छू की सूरत में	656	मुस्तहिक़े ज़कात होने के अस्बाब	672
सदका ज़ाहिर कर के देने की सूरत	657	किताब की ज़रूरत के मक़ासिद	674
एहसान जताने और ईज़ा देने की हकीक़त	658	एक सुवाल और इस का जवाब	677
एहसान जताने की बुन्याद	658	ज़कात लेने वाले की ज़िम्मेदारी	677
अज़िय्यत पहुंचाने का ज़ाहिर	659	हासिल शुदा माल में मोहताज की निय्यत	678
अज़िय्यत पहुंचाने का बातिन और इस की बुन्याद	660	ज़कात लेने वाला देने वाले को यूं दुआ दे	679
मालदार शख़्स मोहताज ख़ादिम है	660	अतिरिया देने और लेने वाले की निय्यत	679
सुवाल-जवाब	661	सदकात से ली जाने वाली मिक्दार के हुक्म में मुख़लिफ़ मौक़िफ़	681
नेकी की तकमील	663	खज़ूरो का बाग़ सदका कर दिया	683
बुख़ल और खुद पसन्दी का इलाज	664	कौले फैसल	683
खुश बख़्त शख़्स	664	चौथी फ़स्ल : नफ़ली सदका के फज़ाइल और	
ज़कात मुत्तकी व परहेज़गार हाजत मन्द को दो	666	लेने देने के आदाब	684
औलिया में से एक वली	666	फज़ाइले सदका के मुतअल्लिक 18 फ़रामीने मुस्तफ़ा	684
अपने माल से उ-लमा की मदद करने का ज़न्ना	667	फज़ाइले सदका के मुतअल्लिक 17 अक्वाले बुजुगाने दीन	687

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
सदके को छुपाना और ज़ाहिर करना	689	तफ़्सील	708
पोशीदा तौर पर देने में पांच हिक्मतें	689	रोज़े का कफ़ारा	709
अस्लाफ़ ज़ाहिरन दी गई चीज़ क़बूल न करते	690	रोज़े की सुन्नतें	710
ज़ाहिरी तौर पर देने में चार हिक्मतें	692	ए'तिकाफ़ के अहकाम	711
हिक़ायत : सदका ज़ाहिर करने की फ़ज़ीलत	692	दूसरी फ़स्ल : रोज़े के असरार और इस की	
हिक़ायत : अल्लाह देख रहा है !	692	बातिनी शराइत	712
फ़ैसलए ग़ज़ाली	694	तफ़्सील	712
किसी के सामने उस की ता'रीफ़ करना कैसा ?	696	हिक़ायत : इन्साना गोश्त ख़ोर रोज़ादार	714
हर्फ़े आख़िर	697	हराम ज़हर जब कि हलाल दवा है	715
सदका लेना अफ़ज़ल है या ज़कात	697	शर्हें हदीष	715
फ़ैसलए ग़ज़ाली	698	रोज़े की रूह और राज़	716
दुआ	699	मुक़ाबले का मैदान	717
रोज़ों का बयान	700	एक सुवाल और इस का जवाब	717
फ़ज़ाइले रोज़ा के मुतअल्लिक 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	700	रोज़े का मक्सद	717
दीगर इबादात पर रोज़े की अफ़ज़लियत की वजह	703	पहाड़ों के बराबर इबादत से अफ़ज़ल व राज़ेह	718
पहली फ़स्ल : रोज़े के वाजिबात, ज़ाहिरी सुन्नतें और		गुनाहों में मुलव्विष रहने वाले रोज़ादार की मिषाल	719
रोज़ा तोड़ने वाले लाज़िम उमूर का बयान	705	आ'ज़ा भी अमानत हैं	719
ज़ाहिरी वाजिबात	705	तीसरी फ़स्ल : नफ़्ती रोज़े और इन में वज़ाइफ़	
नियत के मुतअल्लिक अहकाम	705	की तरतीब	720
कै के अहकाम	708	एक रोज़ा 30 रोज़ों से अफ़ज़ल	720
रोज़ा तोड़ने से लाज़िम होने वाले उमूर	708	900 साल की इबादत का षवाब	721

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
फ़ज़ीलत व हुरमत वाले महीने	721	माहे रमज़ान में उमरह करने की फ़ज़ीलत	734
राहे खुदा में जिहाद से अफ़ज़ल अमल	722	तवाफ़ और नमाज़ अदा करने वालों की बख़्शिश	735
कुछ सौमे दहर के बारे में	722	का'बा और कुरआन उठाए जाने का वक़्त	735
सब से अफ़ज़ल रोज़े	723	मक्कए मुकर्रमा में रिहाइश इख़्तियार करना कैसा ?	736
दुआ	725	हरम में इरादए गुनाह पर भी मुवाख़ज़ा है	738
हज़ का बयान	726	इज़ालए वहम	738
बाब नम्बर 1 : फ़ज़ाइले हज़ का बयान	727	मदीनए मुनव्वरा की अफ़ज़लियत	739
पहली फ़स्ल : हज़, बैतुल्लाह, मक्का व मदीना के फ़ज़ाइल		एक नमाज़ हज़ार नमाज़ों से बेहतर	739
और मसाजिद की जानिब सफ़र करने का बयान	727	शफ़ाअत की बिशारत	739
हज़ की फ़ज़ीलत	727	ज़ियारते कुबूर के लिये सफ़र करने का हुक्म	740
फ़ज़ाइले हज़ पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	728	मज़ारते औलिया की ज़ियारत का हुक्म	741
एक बुजुर्ग और शैतान का मुकालमा	728	ह़िकायत : ह़िफ़ाज़ते दीन की फ़ि़क़	742
दो इंदें	730	मैं कहां रिहाइश इख़्तियार करूं ?	743
ह़िकायत : जन्नत में दाख़िले की बिशारत	731	तीन वसिय्यतें	743
फ़ज़ाइले हज़ पर मुश्तमिल अक़वाले बुजुर्गाने दीन	731	दूसरी फ़स्ल : वुजूबे हज़ की शराइत, अरकान की	
छे के सदके छे लाख का हज़ क़बूल	732	दुरुस्ती और वाजिबात व ममनूअत का बयान	744
ह़िकायत : ख़्वाब में दीदारे इलाही	732	हज़ की शराइत	744
बैतुल्लाह शरीफ़ और मक्कए मुकर्रमा के फ़ज़ाइल	733	हज़ का वक़्त	744
हज़रे अस्वद नफ़अ भी देता है और नुक्सान भी	733	फ़र्ज़ हज़ अदा होने की शराइत	744
हज़रे अस्वद को बोसा देते वक़्त की दुआ	734	हज़जे नफ़ल अदा होने की शराइत	745
एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर	734	हज़ वाजिब होने की शराइत	745

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
इस्तिताअत की अक्सांम	746	﴿3﴾ दुखूले मक्का से तवाफ़ तक के आदाब	761
इस्तिताअत के बा वुजूद हज न करने वाले का हुक्म	747	हुदूदे हरम में दाख़िल होने से पहले की दुआ	762
हज के अरकान	748	मक्का शरीफ़ में दाख़िल होने और निकलने की सुन्नत	762
हज के वाजिबात	748	बैतुल्लाह पर पहली नज़र पड़ते वक़्त की दुआ	762
हज व उमरा की अदाएगी के तरीक़े	750	बैतुल्लाह के करीब पहुंच कर यह दुआ पढ़े	763
तमतोअ की शराइत	750	हज़रे अस्वद को बोसा दे कर यह दुआ पढ़े	764
हज व उमरा के ममनूआत	751	﴿4﴾ तवाफ़ के आदाब	764
बाब नम्बर 2 : इब्तिदाए सफ़र से वापसी तक के		तवाफ़ का तरीक़ा	765
दस आदाब	753	मक़ामे इब्राहीम को देख कर यह दुआ पढ़े	765
﴿1﴾ घर से निकलने से ले कर एहराम तक के आदाब	753	मीज़ाबे रहमत के पास यह दुआ पढ़े	766
किसी को रुख़्सत करते वक़्त की दुआ	754	तवाफ़ के बा'द की दुआ	767
सफ़रे हज पर रवाना होने से पहले की दुआ	754	दो रक्अत तवाफ़ के बा'द की दुआ	768
रवाना होते वक़्त की दुआ	755	गुलाम आज़ाद करने का षवाब	769
सुवार होते वक़्त की दुआ	756	﴿5﴾ सअूय के आदाब	769
किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो यह दुआ पढ़े	756	सफ़ा पर चढ़े तो यह दुआ पढ़े	770
रात के वक़्त यह दुआ पढ़े	757	﴿6﴾ वुकूफ़े अरफ़ा और इस से पहले के आदाब	771
दुश्मन या किसी दरिन्दे का ख़ौफ़ हो तो यह दुआ पढ़े	758	मिना में पहुंच कर यह दुआ पढ़े	772
डर ख़ौफ़ महसूस हो तो यह दुआ पढ़े	759	अरफ़ात की जानिब जाए तो यह दुआ पढ़े	772
﴿2﴾ एहराम बांधने से ले कर दुखूले मक्का तक के आदाब	759	वुकूफ़े अरफ़ा के दिन पढ़ी जाने वाली दुआएं	773
एहराम बांधने के बा'द यह दुआ पढ़े	760	दुआएं ख़िज़्र	773
कोई चीज़ अच्छी लगे तो यह पढ़ो	761	﴿7﴾ हज के बक़िया आ'माल व आदाब	774

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
मुजदलिफ़ा की दुआ	774	मस्जिदे नबवी के आदाब	784
मशअरे हराम में येह दुआ पढ़े	776	रौज़ए अक़दस पर हाज़िरी	784
कंकरियां मारने का तरीका	776	बारगाहे रिसालत में किसी का सलाम पहुंचाने का तरीका	786
तक्बीरे तशरीक	777	बारगाहे सिद्दीकी व फ़ारूकी में हदिय्यए सलाम	786
जब्द करने के बा'द की दुआ	778	हुज़ूर صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के वसीले से दुआ	787
बेहतरीन कुरबानी	778	रियाजुल जन्नह की फ़ज़ीलत	788
एक सफ़ेद दुम्बा दो सियाह दुम्बों से अफ़ज़ल	778	जन्नतुल बक़ीअ में हाज़िरी	788
वोह ऐब कि जिन के सबब कुरबानी जाइज़ नहीं	778	एक उमरे का षवाब	789
हल्क़ कराने के बा'द की दुआ	779	मदीनए मुनव्वरा से वापसी के आदाब	790
तवाफ़े ज़ियारत का वक़्त	779	सफ़र से वापसी के आदाब	791
एहराम से निकलने के अस्वाब	779	हज़्जे मक़बूल की अ़लामत	792
हज़ के खुतबात	780	बाब नम्बर 3 : हज़ की बारीकियां और बातिनी आ 'माल	793
﴿8﴾ उमरा और तवाफ़े वदाअ तक के दीगर आदाब	781	दस क़बिले तवज्जोह आदाब	793
मेरे क़दम तो इस क़ाबिल भी नहीं.....!	781	एक हज़ के बदले तीन का जन्नत में दाख़िला	793
जमज़म पिये और येह दुआ मांगे	782	हज़ पर उजरत लेने वाले की मिषाल	794
﴿9﴾ तवाफ़े वदाअ के आदाब	782	इसराफ़ में भलाई नहीं और भलाई में इसराफ़ नहीं	795
मक्कए मुकर्रमा से रुख़सती के आदाब	782	सख़ी होने की एक अ़लामत	795
﴿10﴾ ज़ियारते मदीना और इस के आदाब	783	सफ़र को सफ़र कहने की वजह	796
ज़ियारत के मुतअल्लिक़ तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	783	एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर	796
मदीनए मुनव्वरा के दरो दीवार पर नज़र पड़े तो येह पढ़ो !	783	ततबीक़	797
मदीनए मुनव्वरा के आदाब	784	जो नफ़्स पर गिरां गुज़रता हो वोह अ़मल अफ़ज़ल है	797

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
सुवार होने से मुतअल्लिक आदाब	797	रवानगी	809
हिकायत : पसन्दीदा हाजी	798	जंगल व बयाबान का सफ़र	810
हाजी को कैसा होना चाहिये ?	798	मीक़ात से एहराम बांधना और तल्बिय्या कहना	810
सुवारी के मुतअल्लिक आदाब	800	कहीं لَا تَبَيُّتُ وَلَا سَعْدَيْتُ न कह दिया जाए	810
खुलासए कलाम	800	मक्कए मुकर्रमा में दाखिला	811
तक्वा हो तो ऐसा	800	बैतुल्लाह शरीफ़ पर पहली नज़र	811
सय्यिदुना फ़ारूके आ'ज़म और 300 दीनार	801	तवाफ़े ख़ानए का'बा	812
बक़रह ईद के दिन सब से अफ़ज़ल नेकी	802	हज़रे अस्वद का इस्तिलाम	813
सफ़रे हज़ में मुसीबत पर सब्र करने की फ़ज़ीलत	803	दायां दस्ते कुदरत	813
क़बूलिय्यते हज़ की एक अलामत	803	ग़िलाफ़े का'बा से लिपटना और मुलतज़म से चिमटना	813
बातिनी आ'माल और इख़्लास	803	सफ़ा व मर्वा की सअूय	813
हज़ का मफ़हूम	804	बुकूफ़े अरफ़ा	814
सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिअषत का मक्सद	804	जमरात को कंकरियां मारना	815
आ'माले हज़ और दीगर इबादात में फ़र्क़	805	कुरबानी करना	815
हिक्मते इलाही का तकाज़ा	806	मदीनए तय्यिबा की हाज़िरी	816
हज़ का शौक़	806	ज़ियारते रौज़ए रसूल	818
हज़ का अज़म	806	दुरूदो सलाम बारगाह तक पहुंचता है	819
तमाम तर ख़यालात से दिल को पाक करना	807	एक के बदले दस	819
जादे राह	808	इख़ितामी कलिमात	819
सुवारी	808	तिलावते कुरआन का बयान	821
एहराम के कपड़े ख़रीदना	808	बाब नम्बर 1 : कुरआन और क़ारिये कुरआन की फ़ज़ीलत	823

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
फ़ज़ाइले तिलावत के मुतअल्लिक 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	823	हिक़ायत : हाकिमे मदीना की अज़िज़ी	840
17 अक़वाले बुजुर्ग़ाने दीन	825	बुलन्द आवाज़ से क़िराअत मुस्तहब	841
ग़फ़लत से तिलावत करने वालों की मज़म्मत	827	मज़क़ूरा रिवायात में ततबीक़	842
क्या तेरे नज़दीक मेरा कोई मर्तबा ही नहीं ?	830	बुलन्द आवाज़ से पढ़ने के फ़वाइद	842
बाब नम्बर 2 : तिलावत के ज़ाहिरी आदाब	831	जितनी निय्यतें ज़ियादा उतना षवाब भी ज़ियादा	842
﴿1﴾ क़ारिये कुरआन की हालत	831	क़षरते तिलावत के सबब.....?	843
हर हर्फ़ के बदले 100 नेकियां	831	सुब्ह तक इसे बन्द नहीं करता	843
﴿2﴾ क़िराअत की मिक्दार	831	﴿10﴾ खुश इल्हानी व उम्दगी से क़िराअत करना	843
ख़त्मे कुरआन के सिलसिले में दर्जात	832	सय्यिदुना सालिम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुश इल्हानी	844
खुलासए कलाम	833	सय्यिदुना इब्ने मसऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुश इल्हानी	844
﴿3﴾ मिक्दारे क़िराअत की तक्सीम	833	सय्यिदुना अबू मूसा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की खुश इल्हानी	844
﴿4﴾ किताबते कुरआन के आदाब	834	हिक़ायत : खुश नसीब क़ारिये कुरआन	845
कुरआन पर ए'राब किस ने लगवाए ?	835	बाब नम्बर 3 : तिलावत के बातिनी आदाब	846
﴿5﴾ तरतीले कुरआन के आदाब	835	﴿1﴾ कलाम की अज़मत व बुलन्दी को समझना	846
﴿6﴾ रोना	836	कलामे इलाही के मआनी को इस मिषाल से समझो	847
सब से बड़ी मुसीबत	836	खुलासए कलाम	848
﴿7﴾ आयात के हक़ की रिआयत के आदाब	837	﴿2﴾ मुतकल्लिम की ता'ज़ीम	848
सजदए तिलावत का तरीका	837	﴿3﴾ हुजूरे क़ल्ब के आदाब	849
﴿8﴾ क़िराअत शुरूअ करने के आदाब	838	कुरआन से ज़ियादा महबूब कुछ नहीं	849
﴿9﴾ बुलन्द आवाज़ से क़िराअत करना	840	बागात, हुजरे, दुल्हनें और रेशमी लिबास वग़ैरा	849
आहिस्ता आवाज़ से क़िराअत मुस्तहब	840	﴿4﴾ गोरो फ़िक़र करना	850

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
अनमोल मोती	850	अच्छी आवाज़ से तिलावत करने वाला कौन ?	868
हिकायत : इस बारगाह से कैसे फ़िरूं ?	850	सिर्फ़ छे हाफ़िज़े कुरआन	868
तिलावत हो तो ऐसी	851	तिलावते कुरआन का हक़	870
﴿5﴾ समझना	852	﴿9﴾ तरक्की	870
सिफ़ाते बारी तआला	852	तिलावते कुरआन के दर्जात	870
अफ़आले इलाहिय्या	853	गोया अल्लाह عزّوجلّ से सुन रहा हूँ	871
अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के अहवाल	854	बराअत का इज़हार	872
झुटलाने वालों का तज़क़िरा	855	हिकायत : जन्नती फूल	873
﴿6﴾ मआनी समझने में रुकावट बनने वाले अस्बाब का ख़ातिमा	856	खुलासए कलाम	873
कुरआन के मा'ना समझने में हाइल रुकावटें	856	बाब नम्बर 4 : फ़हमे कुरआन और तफ़सीर	
أَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ	858	बिर्आए का बयान	875
﴿7﴾ तख़सीस	859	मआनिये कुरआन का दाइरा बहुत वसीअ है	875
कुरआन किस निय्यत से पढ़ा जाए	861	सय्यिदुना अली رضي الله تعالى عنه का इल्म	876
कुरआन बहार है	862	कुरआने पाक कितने उलूम पर मुश्तमिल है ?	876
﴿8﴾ तअष्बुर	862	खुलासए कलाम	877
उस की ज़िन्दगी में इन्क़िलाब आ जाता है	863	मज़बूत रस्सी, नूरे मुबीन और नफ़अ बख़्श शिफ़ा	877
यूँ तिलावत करे	864	राहे नजात	878
कलामे इलाही हिकायत की निय्यत से न पढ़ा जाए	864	मन्कूल तफ़सीर पर इक्तिफ़ा करना कैसा ?	879
मेरे कलाम को भी छोड़ दे	866	तफ़सीर बिर्आए से मुमानअत की वुजूह	880
तिलावत करने वाले नाफ़रमान की मिषाल	866	रासिख़ फ़िल इल्म हज़रात का हिस्सा	882
उक्ताहट महसूस हो तो तिलावत न करो	867	एक मिषाल	883

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
दुआ के असरारे रमूज	883	शहीद को बे हिजाब रख तआला का दीदार	905
इख़ितामी कलिमात	884	बाब नम्बर 2 : इस्तिग़फ़ार, दुरूद और दुआ के	
जिक्रुल्लाह और दुआओं का बयान	885	फ़ज़ाइल व आदाब	907
बाब नम्बर 1 : कुरआन व हदीष और अक्वाले अस्ताफ़		पहली फ़स्ल : दुआ की फ़ज़ीलत	907
से जिक्रुल्लाह के फ़ज़ाइल व फ़वाइद का बयान	886	फ़ज़ीलते दुआ से मुतअल्लिक चार फ़रामीने बारी तआला	907
पहली फ़स्ल : जिक्रुल्लाह की फ़ज़ीलत	886	फ़ज़ीलते दुआ से मुतअल्लिक पांच फ़रामीने मुस्तफ़ा	907
जिक्र की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल नव फ़रामीने बारी तआला	886	दूसरी फ़स्ल : दुआ के दस आदाब	908
जिक्र की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	888	वक्ते सहूर के तीन फ़ज़ाइल	908
घड़ी भर रख तआला को याद करना	890	क़बूलिय्यते दुआ के अवकात	909
जिक्रुल्लाह से मुतअल्लिक तीन अक्वाले बुजुर्गान	890	सजदे में दुआ की क़षरत करो	910
दूसरी फ़स्ल : मजालिसे जिक्र की फ़ज़ीलत	891	दुआ क़िब्ला रुख़ हो कर मांगिये	911
मजालिसे जिक्र से मुतअल्लिक नव फ़रामीने मुस्तफ़ा	891	दुआ में हाथ उठाने का तरीक़ा	911
तीसरी फ़स्ल : कलिमा तौहीद पढ़ने के फ़ज़ाइल	893	दुआ के बा'द हाथ चेहरे पर फेरना	912
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ से मुतअल्लिक 15 फ़रामीने मुस्तफ़ा	893	दुआ में हाथ बुलन्द करने का तरीक़ा	912
चौथी फ़स्ल : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ, سُبْحَانَ اللَّهِ और दीगर		दुआ में आवाज़ पस्त रखने के मुतअल्लिक तीन फ़रामीने बारी तआला	913
अज़कार के फ़ज़ाइल	896	दुआ में हम वज़्न व मसजअ लफ़्ज़ों का तकल्लुफ़ करने की मुमानअत	913
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ और दीगर अज़कार के मुतअल्लिक 22 फ़रामीने मुस्तफ़ा	896	कुरआन व हदीष और बुजुर्गाने दीन से मन्कूल दुआ के अल्फ़ाज़	914
घर से निकलते वक्ते शयातीन से हिफ़ाज़त	901	ख़ौफ़ व उम्मीद से दुआ मांगने के मुतअल्लिक दो फ़रामैन बारी तआला	916
पांचवी फ़स्ल : हक़ीक़ते जिक्र और उस के फ़वाइद	901	कामिल यक़ीन के साथ दुआ मांगने के मुतअल्लिक तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा	916
एक सुवाल और इस का जवाब	901	दुआ की क़बूलिय्यत ज़ाहिर होने या न होने पर पढ़े जाने वाले कलिमात	917
एक सुवाल और इस का जवाब	903	दुआ की क़बूलिय्यत का सबब	918

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
क़हत साली के मुतअल्लिक 12 हिकायात	919	अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब बन्दे	934
﴿1﴾ चुगल खोरी का वबाल	919	इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 11 अक्वाले बुजुर्गाने दीन	934
﴿2﴾ क़हत साली दूर हो गई	919	बाब नम्बर 3 : अम्बियाए किराम व बुजुर्गाने दीन से	
﴿3﴾ जुल्म का अन्जाम	919	मन्कूल 16 दुआएं	937
﴿4﴾ गुनाहों की नहूसत	920	﴿1﴾ दुआए मुस्तफ़ा बा'द अज़ सुनने फ़ज़	937
﴿5﴾ च्यूटी की फ़रयाद	920	﴿2﴾ जामेअ और कामिल दुआ	939
﴿6﴾ बारगाहे इलाही में मक्बूलिय्यत	920	﴿3﴾ दुआए दाफ़ए रन्जो अलम व ग़म	939
﴿7﴾ बारिश में ताख़ीर नहीं बल्कि....	921	﴿4﴾ दुआए सिद्दीके अक्बर	940
﴿8﴾ एक आंख वाला आदमी	921	﴿5﴾ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ किस से भलाई का इरादा फ़रमाता है ?	941
﴿9﴾ उ-लमाए किराम की अहम्मिय्यत	921	﴿6﴾ कोढ़, बरस, फ़ालिज से नजात देने और दाख़िले	
﴿10﴾ सा'दून मजनून की दुआ	922	जन्नत करने वाले कलिमात	941
﴿11﴾ हब्शी गुलाम की दुआ	923	﴿7﴾ हर नुक्सान से हिफ़ाज़त की दुआ	942
﴿12﴾ वसीले की बरकत	923	﴿8﴾ सारे दिन के शुक्राने की दुआ	943
तीसरी फ़स्ल : दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत और		﴿9﴾ दुआए ईसा	943
अज़मते मुस्तफ़ा	924	﴿10﴾ डूबने और चोरी से हिफ़ाज़त की दुआ	944
फ़ज़ीलते दुरूद से मुतअल्लिक 11 फ़रामीने मुस्तफ़ा	924	﴿11﴾ दीनो दुन्या की भलाई के हुसूल की दुआ	944
ख़साइसे मुस्तफ़ा	926	﴿12﴾ जन्नत में दाख़िले की दुआ	945
रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आज़िज़ी	928	﴿13﴾ रन्जो अलम और मोहताजी से नजात की दुआ	946
दुरूद हमेशा मुकम्मल पढ़ें या लिखें	928	﴿14﴾ तस्बीहाते बारी तआला	946
चौथी फ़स्ल : इस्तिग़फ़ार की फ़ज़ीलत	929	﴿15﴾ बारगाहे रब्बुल इज़ज़त में बुलन्द मर्तबा तस्बीहात	947
इस्तिग़फ़ार से मुतअल्लिक 19 फ़रामीने मुस्तफ़ा	930	﴿16﴾ दुआए इब्राहीम बिन अदहम	948

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
बाब नम्बर 4 : कुरआनो हदीष में वारिद नमाज़ के बा'द की दुआएं		सदका देते वक़्त की दुआ	970
नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 27 दुआएं	952	कोई नुक्सान हो जाए तो येह दुआ पढ़िये	970
नमाज़ के बा'द मांगी जाने वाली 12 कुरआनी दुआएं	952	जाइज़ काम शुरूअ करते वक़्त की दुआ	970
20 मस्नून दुआएं और मुख़्तलिफ़ इस्तिआज़े	958	आस्मान की तरफ़ देखते वक़्त की दुआ	970
बाब नम्बर 5 : मुख़्तलिफ़ मस्नून दुआएं	960	बादल के गरजने पर पढ़ी जाने वाली दुआ	971
मस्जिद की तरफ़ जाते वक़्त की दुआ	964	जब आस्मानी बिजली चमके तो येह दुआ पढ़िये	971
घर से निकलते वक़्त की दुआ	964	बारिश के वक़्त की दुआ	971
मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	964	जब किसी पर गुस्सा आ जाए तो येह दुआ पढ़िये	971
रुकूअ की दुआ	965	किसी कौम से ख़तरे के वक़्त की दुआ	972
रुकूअ से उठते वक़्त की दुआ	965	कुपफ़ार से जिहाद करते वक़्त की दुआ	972
सजदे में जाते वक़्त की दुआ	966	कान बजते हों तो.....!	972
नमाज़ के बा'द की दुआ	966	दुआ की क़बूलिय्यत पर येह दुआ पढ़िये	972
मजलिस से उठते वक़्त की दुआ	967	अज़ाने मगरिब के वक़्त की दुआ	972
बाज़ार में दाख़िल होते वक़्त की दुआ	967	कोई ग़म पहुंचे तो येह दुआ पढ़िये	973
अदाएगिये क़र्ज की दुआ	967	जिस्म में दर्द हो तो येह दुआ पढ़िये	973
नया लिबास पहनते वक़्त की दुआ	968	मुसीबत के वक़्त की दुआ	974
जब कोई शगून दिल में खटके तो येह दुआ पढ़े	968	सोते वक़्त के अवराद व दुआएं	974
नया चांद देख कर पढ़ी जाने वाली दुआ	968	नींद से बेदार होते वक़्त की दुआएं	976
आंधी के वक़्त की दुआ	969	शाम के वक़्त की दुआ	978
किसी के इन्तिक़ाल की ख़बर सुन कर पढ़ी जाने वाली दुआ	969	आईना देखते वक़्त की दुआ	978
		कोई चीज़ ख़रीदते वक़्त की दुआ	978

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
निकाह की मुबारक बाद देते वक़्त की दुआ	979	नमाज़े फ़ज़्र के बा'द के वज़ाइफ़	994
कर्ज़ अदा करते वक़्त की दुआ	979	﴿1﴾ दुआएं	994
एक सुवाल और इस का जवाब	979	﴿2﴾ बार-बार किये जाने वाले अज़कार	995
अवराद की तरतीब और शब बेदारी की		बार-बार पढ़े जाने वाले दस कलिमात	995
तफ़सील का बयान	981	﴿3﴾ कुरआने पाक की तिलावत	997
बाब नम्बर 1 : अवराद की फ़ज़ीलत और तरतीब व		ह़िकायत : सअ़ादत मन्दों का अ़मल	998
अहक़ाम का बयान	983	﴿4﴾ ग़ौरो फ़ि़क़र करना	1000
अवराद को मुख़लिफ़ अक़्साम में तक़्सीम करने की वजह	983	सब से बुलन्द रुत्बा इबादत	1001
नफ़्स की फ़ि़त्रत	984	उन्स व महब्बत में फ़र्क़	1001
नजात के ख़्वाहिश मन्द का जदवल	984	आरिफ़ की महब्बत और ज़ाकिर के उन्स में निस्वत	1001
चन्द फ़रामीने बारी तअ़ाला	984	नूर के 70 हिज़ाबात	1002
फ़्लाह पाने वालों की ता'रीफ़ में वारिद आयात	986	ख़ुलासए कलाम	1003
सूरज और चांद का ख़याल रखने वाले	987	दूसरा वज़ीफ़ा	1003
अवराद की ता'दाद और तरतीब का बयान	989	रुजूअ़ करने वालों की नमाज़ का वक़्त	1004
दिन के वज़ाइफ़ की तफ़सील	989	तीसरा वज़ीफ़ा	1005
पहला वज़ीफ़ा	989	इस वक़्त का वज़ीफ़ा	1006
बेदार होने के बा'द की दुआ	990	मोमिन के मिलने की तीन जगहें	1006
फ़ज़्र की सुन्नतों के बा'द की दुआ	991	नींद भी इबादत है	1007
मक्बूल हज़ व उमरे का षवाब	991	दिन के आ'माल में सब से अफ़ज़ल अ़मल	1007
राहे खुदा में जिहाद के बराबर अ़मल	992	चौथा वज़ीफ़ा	1008
चार गुलाम आज़ाद करने से ज़ियादा महबूब अ़मल	993	पांचवा वज़ीफ़ा	1009

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
तीन चीज़ों पर अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ग़ज़ब फ़रमाता है	1009	बन्दा सोते वक़्त तीन बातों पर ग़ौर करे	1026
नींद की मिक़दार	1009	बेदार हो तो येह दुआ पढ़े	1026
छटा वज़ीफ़ा	1010	बेदार होने के बा'द की दुआ	1026
सातवां वज़ीफ़ा	1011	चौथा वज़ीफ़ा	1027
तौबा व इस्तिग़फ़र से मुतअल्लिक़ चन्द फ़रामिने बारी तआला	1012	इबादत के लिये कौन सा वक़्त अफ़ज़ल है ?	1027
मग़रिब की अज़ान के वक़्त की दुआ	1012	इस वज़ीफ़े की तरतीब	1028
मुहासबए नफ़्स	1013	तहज्जुद के लिये उठे तो येह पढ़े	1028
रात के वज़ाइफ़ का बयान	1014	पांचवां वज़ीफ़ा	1031
पहला वज़ीफ़ा	1014	हर हक़ वाले को उस का हक़ दो	1031
इस वज़ीफ़े की तरतीब	1015	एक दिन में चार जम्अ करने पर मग़फ़िरत की बिशारत	1032
दूसरा वज़ीफ़ा	1015	अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام का नापसन्दीदा अमल	1033
इस वज़ीफ़े की तरतीब	1015	दो रक्अतें तमाम के बराबर	1034
हज़ार आयात से अफ़ज़ल	1016	अहवाल बदलने से वज़ाइफ़ का बदल जाना	1034
तीसरा वज़ीफ़ा	1018	सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मा'मूलात	1034
आलिम का सोना इबादत है	1019	एक सुवाल और इस का जवाब	1035
सोने के 10 आदाब	1019	अवरादो वज़ाइफ़ से मक़सूद	1035
उसे कलाम की इजाज़त न दी जाएगी	1020	हिक़ायत : मरने से पहले जन्नत का नज़ारा	1035
अस्लाफ़े किराम رَحْمَتُهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की तीन ख़सलतें	1021	इबादत पर मुक़द्दम इल्म से कौन सा इल्म मुराद है ?	1037
सोते वक़्त की दुआ	1022	आलिम के वक़्त की तक्सीम	1037
वोह कुरआन न भूलेगा	1022	मुअज्जज़ मक़ाम	1039
अनमोल मोती	1025	हिक़ायत : महफ़िले ज़िक़्र में हाज़िर होने की फ़ज़ीलत	1039

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
हासिले कलाम	1039	शब बेदारी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 18 फ़रामीने मुस्तफ़ा	1051
सदके की निय्यत से ज़ाइद माल कमाना कैसा ?	1040	शब बेदारी की फ़ज़ीलत पर मुश्तमिल 24 अक्वाले बुजुगानि दीन	1056
अपने और मुसलमानों के हुक्क की पासदारी	1040	शब बेदारी में आसानी के ज़ाहिरी व	
इबादते बदनिय्या पर दो चीज़ें मुक़द्दम होंगी	1040	बातिनी अस्बाब	1060
सिद्दीकीन के मर्तबे पर फ़ाइज़ शख़्स की अ़लामात	1042	चार ज़ाहिरी अस्बाब	1060
वज़ाइफ़ में अस्ल इन पर हमेशगी इख़्तियार करना है	1043	गुनाहों का कैदी	1061
एक सुवाल और इस का जवाब	1044	शब बेदारी से महरूम का सबब	1061
बाब नम्बर 2 : क्रियामुल्लैल में आसानी पैदा करने		एक गुनाह की सज़ा	1061
वाले अस्बाब, शब बेदारी के लिये मुस्तहब रातें,		जमाअत फ़ौत होने का सबब	1062
मग़रिब व इशा के दरमियानी वक़्त और		खुलासए कलाम	1062
शब बेदारी की फ़ज़ीलत और रात के अवक़ात		चार बातिनी अस्बाब	1062
की तक्सीम का बयान	1045	तो सुहैब को नींद नहीं आती	1063
मग़रिब व इशा के दरमियानी वक़्त की फ़ज़ीलत	1045	सुवाल-जवाब	1065
बीस या चालीस साल के गुनाह मुआफ़	1045	शब बेदारों के वाकिआत व अक्वाल	1065
गोया शबे क़द्र में नमाज़ पढ़ी	1045	मुहिब्बे इलाही व महबूबे इलाही की अ़लामात	1067
जन्नती महल	1046	बख़्शिश के झोंके	1068
नमाज़े मग़रिब के बा'द दो रक्अत पढ़ने की फ़ज़ीलत	1046	क़बूलिय्यत की घड़ी	1068
ख़्वाब में ज़ियारते रसूल से मुशरफ़ हो	1048	शब के अवक़ात की तक्सीम का तरीक़ा	1069
खुलासए कलाम	1049	इशा के वुजू से फ़ज़्र अदा करने वाले	1069
शब बेदारी की फ़ज़ीलत	1050	रात में बेदार हो तो इस सुन्नत पर अ़मल करे	1072
शब बेदारी की फ़ज़ीलत से मुतअल्लिक़ छे फ़रामीने बारी तआला	1050	फ़ज़ीलत वाली रातें	1073

मजामीन	सफ़्हा नम्बर	मजामीन	सफ़्हा नम्बर
100 साल की नेकियों का षवाब	1074	आखिरत की लज़्ज़त से महरूम का बाइष	1076
दिल जिन्दा रहेगा	1074	हिकायात की फ़ेहरिस्त	1077
फ़ज़ीलत वाले अय्याम	1075	तफ़्सीली फ़ेहरिस्त	1078
60 माह के रोज़ों का षवाब	1075	माख़ज़ो मराजेअ	1114
पूरा हफ़्ता और पूरा साल गुनाहों से सलामती	1075	अल मदीनतुल इल्मिय्या की कुतुब का तआरुफ़	1119



.....सुन्नतों की बहारे.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !

अल्लाह व रसूल ﷺ की खुशनूदी के हुसूल और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये “दा'वते इस्लामी” के इशाअती इदारे मक्तबतुल मदीना से “मदनी इन्आमात” नामी रिसाला हासिल कर के इस के मुताबिक़ जिन्दगी गुज़ारने की कोशिश कीजिये और अपने अपने शहरों में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में पाबन्दिये वक़्त के साथ शिर्कत फ़रमा कर ख़ूब ख़ूब “सुन्नतों की बहारे” लूटिये। दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये बे शुमार मदनी काफ़िले शहर ब शहर, गाउं ब गाउं सफ़र करते रहते हैं, आप भी सुन्नतों भरा सफ़र इख़्तियार फ़रमा कर अपनी आख़िरत के लिये नेकियों का ज़ख़ीर इक़ठु करें। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप अपनी जिन्दगी में हैरत अंगेज़ तौर पर “मदनी इन्क़िलाब” बरपा होता देखेंगे।

अल्लाह करम ऐसा करे तुझ पे जहां में ऐ दा'वते इस्लामी तेरी धूम मची हो !

مأخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۳ھ
ترجمہ کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۳۳ھ
تفسیر النسفی	امام عبد اللہ بن احمد بن محمود نسفی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۱۰ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۱ھ
التفسیر الكبير	فخر الدین محمد بن عمر رازی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۰۶ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
تفسیر روح البیان	امام شیخ اسماعیل حقی البروسوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ پاکستان
تفسیر البغوی	امام ابو محمد حسین بن مسعود بغوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۱۶ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۴ھ
تفسیر الخازن	امام علامہ علی بن محمد بن ابراہیم خازن رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۴۱ھ	صدیقیہ کتب خانہ
تفسیر غرائب القرآن	علامہ نظام الدین حسن بن محمد نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۲۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۶ھ
روح المعانی	علامہ ابو فضل شہاب الدین آلو سی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۲۷۰ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۰ھ
تفسیر الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
تفسیر القرطبی	ابو عبد اللہ محمد بن احمد انصاری قرطبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۰ھ
صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۶۱ھ	دار ابن حزم ۱۴۱۹ھ
سنن ابی داؤد	امام ابو داؤد سلیمان بن اشعث سجستانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۵ھ	دار احیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۹ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
سنن النسائی	امام احمد بن شعبہ نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ
سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوی الشہیر بابن ماجہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۳ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
الموطا	امام مالک بن انس اصبحی حمیری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۷۹ھ	دار المعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
الادب المفرد	امام محمد بن اسماعیل بخاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۵۶ھ	ملتان پاکستان
صحیح ابن خزیمہ	امام ابو بکر محمد بن اسحاق نیشاپوری شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۱۱ھ	المکتب الاسلامی ۱۳۹۰ھ
السنن الکبریٰ	امام احمد بن شعبہ نسائی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۰۳ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۱۱ھ
السنن الکبریٰ	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ
دلائل النبوة	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۳ھ
شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن حسین بیہقی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ

الزهد الكبير	امام ابو بكر احمد بن حسين بيهقي رحمه الله عليه متوفى ٣٥٨هـ	مؤسسة الكتب الثقافية ١٢١هـ
المعجم الكبير	حافظ سليمان بن احمد طبراني رحمه الله عليه متوفى ٣٦٠هـ	دار احیاء التراث العربی ١٢٢هـ
المعجم الاوسط	حافظ سليمان بن احمد طبراني رحمه الله عليه متوفى ٣٦٠هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
المعجم الصغير	حافظ سليمان بن احمد طبراني رحمه الله عليه متوفى ٣٦٠هـ	دار الكتب العلمية ١٢٠٣هـ
كتاب الدعاء	حافظ سليمان بن احمد طبراني رحمه الله عليه متوفى ٣٦٠هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
المصنف	امام حافظ ابو بكر عبد الرزاق بن همام رحمه الله عليه متوفى ٢١١هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
المصنف	حافظ عبد الله محمد بن ابي شيبه عيسى رحمه الله عليه متوفى ٢٣٥هـ	دار الفكر بیروت ١٢١٣هـ
المسند	امام ابو عبد الله محمد بن ادریس شافعی رحمه الله عليه متوفى ٢٠٢هـ	دار الكتب العلمية بیروت
المسند	امام ابو عبد الله احمد بن محمد بن حنبل رحمه الله عليه متوفى ٢٤١هـ	دار الفكر بیروت ١٢١٢هـ
المسند	حافظ حارث بن ابي اسامه متوفى ٢٨٢هـ	المكتبة الشاملة
الموسوعة	ابو بكر عبد الله بن محمد بن عبيد ابن ابي الدنجل رحمه الله عليه متوفى ٢٨١هـ	المكتبة العصرية ١٢٢هـ
مسند ابي يعلى	امام ابو يعلى احمد بن على موصلى رحمه الله عليه متوفى ٣٠٤هـ	دار الكتب العلمية ١٢١هـ
سنن الدارمی	امام عبد الله بن عبد الرحمن رحمه الله عليه متوفى ٢٥٥هـ	دار الكتب العربی ١٢٠هـ
سنن الدارقطني	امام على بن عمر دارقطني رحمه الله عليه متوفى ٢٨٥هـ	ملتان پاکستان
المستدرک	امام ابو عبد الله محمد بن عبد الله حاكم رحمه الله عليه متوفى ٣٠٥هـ	دار المعرفة بیروت ١٢١٨هـ
الاحسان بترتيب.....	امام حافظ محمد بن حبان رحمه الله عليه متوفى ٣٥٢هـ	دار الكتب العلمية ١٢١هـ
مشكاة المصابيح	علامه ولى الدين تبریزی رحمه الله عليه متوفى ٤٢٢هـ	دار الفكر بیروت ١٢٢١هـ
الجامع	امام حافظ معمر بن راشد ازدی رحمه الله عليه متوفى ١٥١هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
شرح السنة	امام ابو محمد حسين بن مسعود بغوی رحمه الله عليه متوفى ١٥١هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
البحر الزخار بمسند البزار	امام ابو بكر احمد بن عمرو بزار رحمه الله عليه متوفى ٢٩٢هـ	مكتبة العلوم والحکم ١٢٢هـ
شرح معانی الآثار	ابو جعفر احمد بن محمد بن سلامة طحاوی حنفی رحمه الله عليه متوفى ٣٢١هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
الفردوس الاخبار	حافظ شيرويه بن شهر دارين شيرويه ديلمی رحمه الله عليه متوفى ٥٠٩هـ	دار الكتب العلمية ١٢٠هـ
جامع الاصول	امام ابو السعادات مبارک بن محمد ابن اثیر رحمه الله عليه متوفى ٦٠٦هـ	دار الكتب العلمية ١٢١هـ
معرفة السنن والآثار	امام ابو بكر احمد بن حسين بيهقي رحمه الله عليه متوفى ٣٥٨هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢هـ
إتحاف الخيرة المهرة	امام احمد بن ابي بكر بن اسماعيل بوسیری رحمه الله عليه متوفى ٨٣٠هـ	مكتبة الرشد ریاض ١٢١٩هـ
نوادير الاصول	ابو عبد الله محمد بن على بن حسن حکیم ترمذی رحمه الله عليه متوفى ٣٦٠هـ	مكتبة الامام البخاری
الاحاديث المختارة	ضياء الدين ابو عبد الله محمد بن عبد الواحد حنبل رحمه الله عليه متوفى ٢٣٣هـ	دار خضر بیروت ١٢٢١هـ

دارالفکر بیروت ۱۴۲۰ھ	حافظ نور الدین علی بن ابو بکر ہیشمی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۰۷ھ	مجمع الزوائد
دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ	امام زکی الدین عبدالعظیم منذری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۵۶ھ	الترغیب والترہیب
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	الجامع الصغیر
داراحیاء التراث العربی بیروت	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۷۹ھ	الشمائل المحمدیہ
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	حافظ ابو بکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۶۲ھ	تاریخ بغداد
دارالفکر بیروت ۱۴۱۶ھ	حافظ ابوالقاسم علی بن حسن ابن عساکر شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۷۱ھ	تاریخ مدینۃ دمشق
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	امام شمس الدین محمد بن احمد ذہبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۴۸ھ	تذکرۃ الحفاظ
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۴ھ	امام حافظ ابونعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	معرفة الصحابة
المکتبۃ الشاملۃ	محبی الدین ابو ذکریا حبیبی بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	تہذیب الاسماء واللغات
دار ابن جوزی ۱۴۲۸ھ	حافظ ابو بکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۶۲ھ	الفقیہ والمتفقہ
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	علامہ علی متقی بن حسام الدین برہان پوری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۷۵ھ	کنز العمال
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۲ھ	تلخیص الحبیر
المکتبۃ الشاملۃ	حافظ ابو عبید قاسم بن سلام رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۲۴ھ	الظہور
مکتبۃ المعارف ریاض ۱۴۰۳ھ	حافظ ابو بکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۶۲ھ	الجامع لاخلق الراوی
مکتبۃ القرآن قاہرہ	امام حافظ ابو بکر عبدالرزاق بن ہمام رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۱۱ھ	الامالی فی آثار الصحابة
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ	امام ابو احمد عبد اللہ بن عدی جرجانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۵ھ	الکامل فی ضعف الرجال
المکتبۃ الشاملۃ	حافظ ابو الشیخ عبد اللہ بن محمد اصبہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۶۹ھ	طبقات المحدثین
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۵ھ	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۲ھ	فتح الباری
دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ	امام بدر الدین ابو محمد محمود بن احمد عینی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۵ھ	عمدۃ القاری
دارالکتب العلمیہ	محبی الدین ابو ذکریا حبیبی بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	شرح النووی علی صحیح مسلم
پشاور ۱۹۸۵ء	امام شمس الدین محمد بن احمد ذہبی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۷۴۸ھ	الکبائر
دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۹ھ	امام شہاب الدین احمد بن حجر مکی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۷۴ھ	الزواجر عن اقتراف الکبائر
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ	امام جلال الدین عبدالرحمن سیوطی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	جمع الجوامع
دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۲ھ	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۲ھ	المطالب العالیۃ
دارالکتاب العربی ۱۴۲۵ھ	امام شمس الدین محمد بن عبدالرحمن سخاوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۰۲ھ	المقاصد الحسنۃ
دارالفکر بیروت ۱۴۲۲ھ	علامہ علی بن سلطان محمد قاری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۰۱۴ھ	مرقاۃ المفاتیح
دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۸ھ	سلیمان بن محمد بن عمرو متوفی ۱۲۲۱ھ	تحفۃ الحبيب علی

حديث ابی نعیم	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	المکتبۃ الشاملۃ
فیض القدیر	امام محمد عبد الرؤوف مناوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۰۳۱ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
تہذیب التہذیب	امام حافظ ابن حجر عسقلانی شافعی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
کتاب الضعفاء	ابو جعفر محمد بن عمرو بن موسیٰ عقیل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۲۲ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
المجروحین	امام حافظ محمد بن حبان رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۵۴ھ	دار الصمیعی ریاض ۱۴۲۰ھ
منحة الخالق.....	علامہ سید محمد امین ابن عابدین شامی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۲۵۲ھ	مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ
حاشیۃ إعانة الطالبین	علامہ ابو بکر عثمان بن محمد دمیاطی بکری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۳۰۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
البحر المحيط.....	امام بدرالدین محمد بن عبد اللہ زکشی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۹۴ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
حلیۃ الاولیاء	امام حافظ ابو نعیم اصفہانی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
سبل الہدی والرشاد	امام محمد بن یوسف صالحی شامی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
الزهد	امام ابو عبد اللہ احمد بن محمد بن حنبل رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۲۴۱ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
الزهد	امام عبد اللہ بن المبارک مرزوی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۸۱ھ	دار الکتب العلمیۃ
الحث علی طلب العلم	حافظ ابو ہلال حسن بن عبد اللہ عسکری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۹۰ھ	المکتب الاسلامی ۴۰۶ھ
اتحاف السادة المتقين	علامہ سید محمد بن محمد حسینی زبیدی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۱۲۰۵ھ	دار الکتب العلمیۃ
الشفاء	امام ابو فضل عیاض بن موسیٰ بن عیاض مالکی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۴۴ھ	مرکز اہلسنت بركات رضاہند
قوت القلوب	شیخ ابوطالب محمد بن علی مکی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۳۸۶ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
مختصر منهاج القاصدين	احمد بن محمد بن قدامہ رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۴۲ھ	المکتبۃ الشاملۃ
وفاء الوفاء	نور الدین علی بن احمد سمہودی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۹۱۱ھ	دار احیاء التراث العربی
المدخل	امام ابو عبد اللہ محمد بن محمد عبد ری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۴۳۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
التذکرۃ الحمدونیۃ	محمد بن حسن بن محمد بن علی بن حمدون رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۶۲ھ	المکتبۃ الشاملۃ
المستطرف	شہاب الدین محمد بن ابی احمد ابی فتح رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۵۰ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۹ھ
حیۃ الحيوان الكبرى	کمال الدین محمد بن موسیٰ بن عیسیٰ دمیری رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۸۰۸ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۱۵ھ
صفة الصفوة	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
صيد الخاطر	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ نزار مصطفیٰ البیروتی ۱۴۲۵ھ
المجموع شرح المہذب	محبی الدین ابو ذکریا حبیبی بن شرف نووی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۶۷۱ھ	دار الفکر بیروت
بستان الواعظین	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۹۷ھ	دار الکتب العلمیۃ ۱۴۲ھ
ذمّ الهوی	ابو الفرج عبد الرحمن بن علی بن محمد جوزی رحمۃ اللہ علیہ متوفی ۵۹۷ھ	مکتبۃ الكتاب والسنة پشاور

عيون الاخبار	ابو محمد عبد الله بن مسلم قتيبه دينوري رحمه الله عليه متوفى ٢٤٦هـ	دار الكتب العلمية ١٣١٨هـ
التذكرة في الوعظ	ابوالفرج عبدالرحمن بن علي بن محمد جوزي رحمه الله عليه متوفى ٥٩٤هـ	دار المعرفة بيروت ١٢٠٦هـ
كشف الخفاء	امام اسمعيل بن محمد بن هادي عجلو نبي رحمه الله عليه متوفى ١١٢٢هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢٨هـ
تذكرة الموضوعات	علامه محمد طاهر بن علي هندي پثنی رحمه الله عليه متوفى ٩٨٦هـ	كتب خانه مجيديه ملتان
تنزيه الشريعة	ابو الحسن علي بن محمد بن عراق كنانی رحمه الله عليه متوفى ٩٦٣هـ	دار الكتب العلمية ١٢٠٠هـ
الآلئ المصنوعة	امام جلال الدين عبدالرحمن سيوطي شافعي رحمه الله عليه متوفى ٩١١هـ	دار الكتب العلمية ١٢١٨هـ
العلل المتناهية	ابوالفرج عبدالرحمن بن علي بن محمد جوزي رحمه الله عليه متوفى ٥٩٤هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢٨هـ
كشف الظنون	مولي مصطفى بن عبد الله رومي حنفي رحمه الله عليه متوفى ١٠٦٤هـ	دار الفكر بيروت ١٢١٩هـ
تعريف الاحياء	علامه شيخ عبدالقادر بن شيخ بن عبد الله عيد روس رحمه الله عليه متوفى ١٠٣٨هـ	دار صادر بيروت ٢٠٠٠ء
تشبيد الاركان	امام جلال الدين عبدالرحمن سيوطي شافعي رحمه الله عليه متوفى ٩١١هـ	دار صادر بيروت ٢٠٠٠ء
الطبقات الشافعية الكبرى	تاج الدين عبدالوهاب بن علي سبكي رحمه الله عليه متوفى ٤٤١هـ	دار النشر ١٢١٣هـ
الثبات عند الممات	ابوالفرج عبدالرحمن بن علي بن محمد جوزي رحمه الله عليه متوفى ٥٩٤هـ	مؤسسة الكتب الثقافية ١٢٠٠هـ
العقد الفريد	احمد بن محمد عبد ربّه اندلسی رحمه الله عليه متوفى ٣٢٨هـ	دار الكتب العلمية ١٢١٨هـ
مفردات الفاظ القرآن	امام راغب ابو قاسم حسين بن محمد اصفهانی رحمه الله عليه متوفى ٥٠٢هـ	دار القلم دمشق ١٢١٦هـ
روضة العقلاء	امام حافظ محمد بن حبان رحمه الله عليه متوفى ٣٥٢هـ	دار الكتب العلمية ١٣٩٩هـ
جامع العلوم والحكم	عبدالرحمن بن شهاب الدين بن رجب خنبلی رحمه الله عليه متوفى ٤٩٥هـ	المكتبة الفيصلية مكة المكرمة
جامع بيان العلم وفضله	حافظ ابو عمر يوسف بن عبد الله ابن عبد البر رحمه الله عليه متوفى ٢٦٣هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢٨هـ
كتاب الفقه.....	عبد الرحمن بن محمد جزيري	دار الكتب العلمية ١٢٢٨هـ
الآداب الشرعية	ابو عبد الله محمد بن مفلح مقدسی رحمه الله عليه متوفى ٤٦٣هـ	المكتبة الشاملة
الانتقاء في فضائل الثلاثة.....	امام يوسف بن عبد الله محمد بن عبد البر رحمه الله عليه متوفى ٢٦٣هـ	دار الكتب العلمية بيروت
المجالسة وجواهر العلم	حافظ ابو بكر احمد بن مروان دينوري مالکی رحمه الله عليه متوفى ٣٣٣هـ	دار الكتب العلمية ١٢٢٨هـ
سير اعلام النبلاء	امام شمس الدين محمد بن احمد ذهبي رحمه الله عليه متوفى ٤٢٨هـ	دار الفكر بيروت ١٢١٤هـ



मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया की वरफ से पेश कर्दा क़ाबिले मुबालआ कुतुब

﴿शो'बउ कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ﴾

- (1) करन्सी नोट के शर्इ अहकामात :
(अल किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम फी क़िरतासिदराहिम) (कुल सफ़हात : 199)
- (2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
(अल याकूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
- (3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
- (4) मआशी तरक्की का राज़
(हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
- (5) शरीअत व तरीक़त
(मक़ालुल उ-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
- (6) पुबूते हिलाल के तरीके (तुरुक्कि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
- (7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब
(इज़हारिल हक्किल जली) (कुल सफ़हात : 100)
- (8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
(विशाहुल जीद फी तहलीलि मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
- (9) राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में खर्च करने के फ़ज़ाइल
(रदिल कहूति वल वबाअ बि दा'वतिल जीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)
- (10) वालिदैन्, जौजैन् और असातिज़ा के हुकूक
(अल हुकूक लि तर्हिल उकूक) (कुल सफ़हात : 125)
- (11) फ़ज़ाइले दुआ (अहूसनुल विआअ लि आदाबिहुआअ मअ शर्ह जैलुल मुद्आ लि अहूसनिल विआअ) (कुल सफ़हात : 326)

﴿शाएअ होने वाली अरबी कुतुब﴾

अज़ : इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

- (12) किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)
- (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)

- (14) अल इजाजातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)
 (15) इका-मतुल कियामह (कुल सफ़हात : 60)
 (16) अल फज़लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)
 (17) अज़लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)
 (18) अज़ज़म-ज़-मतुल क-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)
 (19,20,21) जदिल मुम्तार अला रदिल मुह्तार
 (अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

﴿शो'बउ इस्लाही कुतुब﴾

- (22) खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)
 (23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)
 (24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)
 (25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)
 (26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)
 (27) नमाज़ में लुक्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)
 (28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)
 (29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)
 (30) निसाबे मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 196)
 (31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)
 (32) फ़ैज़ाने एह्याउल उलूम (कुल सफ़हात : 325)
 (33) मुफ़्तये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
 (34) हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
 (35) तहक़ीकात (कुल सफ़हात : 142)
 (36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)
 (37) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
 (38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
 (39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 124)
 (40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
 (41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
 (42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)

- (43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
 (50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
 (51) गौषे पाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
 (52) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
 (53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
 (54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
 (55) मदनी कामों की तक्सीम (कुल सफ़हात : 68)
 (56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
 (57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
 (58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
 (59) अह्दादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
 (60) फ़ैज़ाने चहल अह्दादीष (कुल सफ़हात : 120)
 (61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

﴿शो'बए तराजिमे कुतुब﴾

- (62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल
 (अल मुत्जरुराबिह फ़ी षवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)
 (63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल अरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)
 (64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़हात : 74)
 (65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकुतअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)
 (66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)
 (67) अह्दा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)
 (68) आंसूओं का दरिया (बहूरुहुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)
 (69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुरतुल उयून) (कुल सफ़हात : 136)
 (70) उयूनुल हिकायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

﴿शो'बए दर्सी कुतुब﴾

- (71) ता'रीफ़ाते नह्विय्यह (कुल सफ़हात : 45)
 (72) किताबुल अकाइद (कुल सफ़हात : 64)
 (73) नुज़हतुन्नज़र शर्हे नख़बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)
 (74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)

- (75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़हात : 79)
 (76) गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)
 (77) वक़ा-यतिन्नह्व फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नह्व
 (78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ ह़ाशिया सर्फ़ बनाई

﴿शो'बए तख़रीज﴾

- (79) अज़ाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)
 (80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)
 (81) बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)
 (82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)
 (83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)
 (84) इस्लामी जिन्दगी (कुल सफ़हात : 170)
 (85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)
 (86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)
 (87) सहाबए किराम का इश्के रसूल (कुल सफ़हात : 274)

﴿शो'बए अमीरे अहले सुन्नत﴾

- (88) सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पैग़ाम अत्तार के नाम (कुल सफ़हात : 49)
 (89) मुक़द्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़हात : 48)
 (90) इस्लाह का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हिस्साए दुवुम) (कुल सफ़हात : 32)
 (91) 25 क्रिस्चैन कैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 33)
 (92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
 (93) वुजू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़हात : 48)
 (94) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त सिवुम (सुन्नते निकाह) (कुल सफ़हात : 86)
 (95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
 (96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक्र करने में हिकमत (कुल सफ़हात : 48)
 (97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
 (98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़हात : 48)
 (99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़हात : 55)
 (100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)

- (101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़हात : 33)
- (102) मैं ने मदनी बुर्क़अ क्यूं पहना ? (कुल सफ़हात : 33)
- (103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़हात : 32)
- (104) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त दुवुम (कुल सफ़हात : 48)
- (105) गाफ़िल दर्जी (कुल सफ़हात : 36)
- (106) मुख़ालिफ़त महब्बत में कैसे बदली ? (कुल सफ़हात : 33)
- (107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़हात : 32)
- (108) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त अव्वल (कुल सफ़हात : 49)
- (109) क़फ़न की सलामती (कुल सफ़हात : 33)
- (110) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत क़िस्त चहारूम (कुल सफ़हात : 49)
- (111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़हात : 32)
- (112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़हात : 32)
- (113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिगा कैसे बनी ? (कुल सफ़हात : 32)
- (114) बे कुसूर की मदद (कुल सफ़हात : 32)
- (115) अत़्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
- (117) आंखो का तारा (कुल सफ़हात : 32)
- (118) वली से निस्बत की ब-रकत (कुल सफ़हात : 32)
- (119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
- (120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
- (121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
- (125) नाकाम आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (126) नादान आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
- (129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)

- (130) खौफनाक दांतो वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
 (131) फिल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
 (132) सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
 (133) कब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
 (134) फैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
 (135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़हात : 32)
 (136) मोडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
 (137) क्रिस्चैन का कबूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
 (138) सलातो सलाम की आशिका (कुल सफ़हात : 33)
 (139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
 (140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़हात : 32)
 (141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)
 (142) म्यूज़िकल नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)

﴿मजलिसे तराजुमे कुतुब की तरफ़ से पेश कर्दा कुतुब﴾

बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي के इन रसाइल के अ-रबी तराजुम शाएअ हो चुके हैं :

- (1) बादशाहों की हड्डियां (इज़ामुल मलूक)
- (2) मुर्दे के सदमे (हुमूमिल मय्यित)
- (3) ज़ियाए दुरूदो सलाम (ज़ियाइस्सलाति वस्सलाम)
- (4) शजरए आलिया कादिरिया रजविया अत्तारिया

﴿इन रसाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं﴾

- (1) ज़ियाए दुरूदो सलाम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (2) ग़फ़लत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (3) अबू जहल की मौत (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (4) एहूतिरामे मुस्लिम (मुअल्लिफ़ : बानिये दा'वते इस्लामी मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि مَدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)
- (5) दा'वते इस्लामी का तआरुफ़ ।

﴿इस के इलावा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ के कई रशाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं﴾

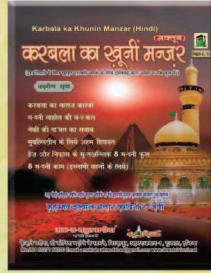
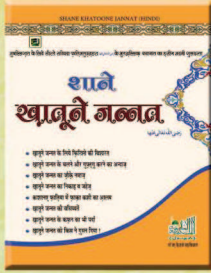
- | | |
|----------------------------|------------------------------------|
| (1) अहकामे नमाज़ | (10) आका जो महीने |
| (2) फैज़ाने रमज़ान | (11) अब्लक घोड़े सुवार |
| (3) फैज़ाने बिस्मिल्लाह | (12) पुल सिरात जी दहशत |
| (4) पेट जो कुफ़ले मदीना | (13) ज़ख़्मी नांग |
| (5) आदाबे त़आम | (14) कफ़न जी वापसी |
| (6) बयानाते अत्तारिय्या | (15) बरेली कान मदीना |
| (7) जिन्नात जो बादशाह | (16) मुलाज़िमीन जा लाइ 21 मदनी गुल |
| (8) सुब्हे बहारां | (17) शजरए अत्तारिय्या |
| (9) ज़लज़लो इन इनजा अस्बाब | (18) 40 रूहानी इलाज |

﴿अल मदीनतुल इल्मिय्या के इन रशाइल के सिन्धी तराजुम भी शाएअ हो चुके हैं﴾

- (1) मूवी इन टीवी
- (2) उ़शर जा अहकाम (हारीन जा लाइ)
- (3) मुफ़्तये दा'वते इस्लामी
- (4) आदाबे मुर्शिदे कामिल
- (5) इनफ़िरादी कोशिश
- (6) ख़ौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ
- (7) तंगदस्ती इन इनजा अस्बाब
- (8) निसाबे मदनी काफ़िला

﴿गुनाहों से नफ़रत करने का ज़ेहन﴾

“दा'वते इस्लामी” के सुन्नतों की तर्बियत के “मदनी काफ़िलों” में सफ़र और रोज़ाना “फ़िक़्रे मदीना” के ज़रीए “मदीनी इन्आमात” का रिसाला पुर कर के हर मदनी (इस्लामी) माह के इब्तिदाई 10 दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के (दा'वते इस्लामी के) ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से “पाबन्दे सुन्नत” बनने, “गुनाहों से नफ़रत” करने और “ईमान की हिफ़ाज़त” के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।



اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سुन्नत की बहारे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात इशा की नमाज' के बा'द आप के शहर में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, आशिक़ाने रसूल के मदनी काफ़िलों में ब निय्यते षबाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा 'मूल बना लीजिये, اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी काफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

मक़तबतुल मदीना की शाखें

अहमदाबाद : सिलेक्टेड हाऊस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद-1, गुजरात, MO. 9374031409
मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786

MAKTABATUL MADINA

421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID

DELHI - 110006, PH : 011-23284560

email : maktabadelhi@gmail.com

web : www.dawateislami.net